

**THE BOOK WAS  
DRENCHED**

UNIVERSAL  
LIBRARY

**OU\_184211**

UNIVERSAL  
LIBRARY











# दैवत-संहिता ।

(५)

अश्विनौ-देवता ।



सम्पादक

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

स्वाध्याय-मण्डल, औंध ( जि० सातारा )



संवत् २०००, शक १८६५, सन १९४३



---

---

मुद्रक और प्रकाशक

वसंत श्रीपाद सातवलेकर, B. A.

स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, भोंध ( जि० सातारा )

---

---

# “ अश्विनौ ” देवता का स्वरूप ।



बेदों में “ अश्विनौ ” देवता है । इस देवता का मन्त्र-संग्रह इस भूमिका के साथ पाठकों के सामने रखा जाता है । इस संग्रह में ६८९ मन्त्र हैं । इनमें ऋग्वेद के ६३३, वा० यजुर्वेद के ७, सामका १, अथर्व के ११ मंत्र हैं । सब मिलकर ६५२ मंत्र हुए । शेष ३७ मंत्र अश्विनसहचारी देवतागण के हैं । ये सब मिलकर ६८९ होते हैं । अन्य पुनरुक्त मंत्रों की गणना यहां की नहीं है । इन देवतामंत्रों के ऋषि ये हैं—

१ कक्षीवान् दैर्घतमसः	८३
२ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	५६
३ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३९
४ ब्रह्मातिथिः काण्वः	३७
५ घोषा काक्षीवती	२८
६ प्रस्कण्वः काण्वः	२५
७ कुरुस आंगिरसः	२५
८ श्यावाश्व आत्रेयः	२४
९ अथर्वा	२४
१० सध्वंसः काण्वः	२३
११ दशकर्णः काण्वः	२१
१२ प्रजापतिः [ यजुः ]	२१
१३ पौर आत्रेयः	२०
१४ विमना वैयश्वः	१९
१५ सोभरिः काण्वः	१८
१६ गोपवन आत्रेयः	१८
१७ पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ	१४
१८ हिरण्यस्तूप आंगिरसः	१२
१९ दीर्घतमा भौचध्यः	१२
२० गृत्समद्ः शौनकः	१२
२१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	११
२२ भूतांशः काश्यपः	११
२३ भौमोऽग्निः	११
२४ विश्वामित्रो गाथिनः	९

२६ अबस्युरात्रेयः	९
२७ सप्तवधिरात्रेयः	९
२८ कृष्ण आंगिरसः	९
२९ प्रगाथः काण्वः	६
३० कृष्णो शुम्नीको वासिष्ठः	६
३१ अग्निः सांख्यः	६
३२ मेधातिथिः काण्वः	५
३३ कृष्णो विश्वको वक्-काण्विण्डः	५
३४ जमदग्निभार्गवः	५
३५ मेध्यः काण्वः	४
३६ मधुच्छंदा वैश्वामित्रः	३
३७ शुनःशेष आजीगर्तिः	३
३८ गोतमो राहूगणः	३
३९ परुच्छपो दैवोदासिः	३
४० नाभाकः काण्वः	३
४१ विमद ऐन्द्रः	३
४२ विश्वामित्रः	३
४३ सुहस्त्यो धौपेयः	२
४४ सुकीर्तिः काक्षीवतः	२
४५ इरिम्बिठिः काण्वः	१
४६ स्वष्टा प्राजापत्यः	१
४७ अश्विनौ धैवस्वतौ	१
४८ ब्रह्मा	१

इस तरह मन्त्रसंख्या ऋषियोंके द्वारा देखी मिलती है । अब अश्विनी देवता के विषय में ब्राह्मणग्रंथों में जो निर्वचन मिलता है, वह यहां देते हैं—

## अश्विनौ देवता के विषय में ब्राह्मणवचन ।

अश्विनौ देवता के विषयमें ब्राह्मण-ग्रंथों में निम्नलिखित निर्वचन मिलते हैं, जो इस देवता-स्वरूप के बताने में सहायक हो सकते हैं—

इमे इ वै यावापृथिवी प्रत्यक्षं अश्विनौ, इमे हीदं सर्वं

पुष्करं आदित्योऽसुष्ये [दिवे] । [ शं० ब्रा० ४।१।५।१६ ]  
 ओम्ने अश्विनौ । [ शं० ब्रा० १२।९।१।१३ ]  
 नासिके अश्विनौ । [ शं० ब्रा० १२।९।१।१४ ]  
 तस्यै ह वा इमौ पुरुषाविवाक्ष्योः । एतावेवाश्विनौ ।

[ शं० ब्रा० १२।९।१।१२ ]

अश्विनावध्वर्यु । [ ऐ० ब्रा० १।१८; शं० ब्रा० १।१२।१।७;  
 ३।९।४।३; तै० ब्रा० ३।२।२।१; गो० ब्रा० ४० २।६ ]  
 अश्विनौ चै देवानां भिषजौ ।

[ ऐ० ब्रा० १।१८; कौ० ब्रा० १।८।१ ]

सुष्यौ वा अश्विनौ [ यज्ञस्य ] । [ शं० ब्रा० ४।१।५।१९ ]  
 श्वेताविव हि अश्विनौ । शं० ब्रा० ५।५।४।१ ]  
 स योनी वा अश्विनौ । [ शं० ब्रा० ५।३।१।८ ]  
 अश्विनाविव रूपेण [ भूयासं ] । सं० ब्रा० २।४।१।४ ]  
 आश्विनं द्विकपालं पुरोडाषां निर्वपति ।

[ शं० ब्रा० ५।३।१।८ ]

आश्विनो द्विकपालः [पुरोडाशः] । तां० ब्रा० २।१।१।२३ ]  
 वसन्तप्रीत्मावेवाभ्यां अश्विनाऽऽभ्यां [ अवरुन्धे ] ।

[ शं० ब्रा० १२।८।१।३४ ]

अश्विभ्यां धानाः । [ तै० ब्रा० १।५।१।१३ ]  
 अथ यदेनं [ अग्निं ] द्वाभ्यां बाहुभ्यां द्वाभ्यामरणीभ्यां  
 मन्धन्ति, द्वौ वा अश्विनौ, तदस्याश्विनं रूपम् ।

[ ऐ० ब्रा० ३।४ ]

देवस्य त्वा सविनुः प्रसवे । अश्विनोर्बाहुभ्याम् ।  
 [ तै० ब्रा० २।६।५।२ ]

गर्दभरथेनाश्विना उदजयताम् । [ ऐ० ब्रा० ४।९ ]  
 तदाश्विना उदजयतां रासभेन । [ कौ० ब्रा० १।८।१ ]  
 इममेव लोकमाश्विनेन [ अवरुन्धे ] ।

[ शं० ब्रा० १२।८।१।३२ ]

अश्विनमन्वाह तदमुं लोकं [ दिवं ] आप्नोति ।  
 [ कौ० ब्रा० १।१।२।१।८।२ ]

[ १ ] सब का भक्षण करते हैं, इसलिये चावापृथिवी ये  
 दोनों लोक अश्विनौ हैं, [ २ ] दोनों कान, [ ३ ] दोनों नाक,  
 [ ४ ] दोनों आंख अश्विनौ हैं, [ ५ ] दोनों अध्वर्यु अश्विनौ  
 हैं, [ ६ ] ये दोनों देवों के वैद्य हैं, [ ७ ] एक ही स्थानसे  
 ये दोनों उत्पन्न होते हैं, [ ८ ] गर्दभ के रथ से अश्विनी  
 देव आते हैं ।

उक्त वचनोंसे जो निर्वचन मिलते हैं, वे ये हैं । ' बहुत  
 खानेवाले, बहुत व्यापनेवाले ' ये ' अश् ' धातुके अर्थ हैं ।  
 येही यहां इन निर्वचनों में दीख रहे हैं । कान, नाक और  
 आंख अपनी शक्तिसे विश्व को व्यापते हैं, आंख तो अपनी  
 शक्ति से सब विश्व व्यापता है । इसलिये ये इंद्रिय अश्विनौ  
 हैं । मनुष्यशरीर में अश्विनौ के ये रूप हैं । वैद्य अपनी  
 चिकित्सा से बीमारी को घेरता और उसका नाश करता  
 है । अध्वर्यु यज्ञप्रक्रिया को व्यापते हैं । इस तरह इन  
 निर्वचनों का तात्पर्य है । इन निर्वचनों को देखने के बाद  
 अब निरुक्त के वचन देखिये—

अथातो धुस्थाना देवताः । तासामश्विनौ प्रथमागामिनौ  
 भवतः । अश्विनौ यद् व्यञ्जुवाते सर्वं, रसेनान्यो,  
 ज्योतिषान्यः । अश्वैरश्विनाविष्यौर्णवाभः । तत् कावाश्वि-  
 नौ ? चावापृथिव्यावित्येके । अहोरात्रावित्येके । सूर्या-  
 चन्द्रमसावित्येके । राजानौ पुण्यकृतावित्यैतिहासिकाः ।  
 तयोः काल ऊर्ध्वमर्धरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भमनु,  
 तमोभागो हि मध्यमः ज्योतिर्भाग आदित्यः ॥ १ ॥

तयोः समानकालयोः समानकर्मणोः संस्तुतप्राययोरसं-  
 स्तवेनैषोऽद्धर्चो भवति—वासात्यो अन्य उच्यते, षषः  
 पुत्रस्तवान्य इति ॥ २ ॥

इह चेह च जातौ संस्तुयते पापेनाल्पिमानतया तन्वा  
 नामभिश्च स्वैः । जिष्णुर्वामन्यः सुमहतो बलस्येरयिता  
 मध्यमः, दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊह्यत आदित्यः ॥३॥  
 प्रातर्युजा विबोधयाश्विनावेह गच्छताम् । [ क्र. १।२।१ ]  
 प्रातर्योगिनौ विबोधयश्विनाविहागच्छताम् ।

[ निरुक्त अ. १।३।१ ]

सृण्वेव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका ।  
 उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु ॥

[ क्र. १।०।१०।६ ]

सृण्वेवेति द्विविधा सृणिर्भवति भर्ता च हन्ता च, तथा  
 अश्विनौ चापि भर्तारौ, जर्भरी भर्तारावित्यर्थः, तुर्फरीतू  
 हन्तारौ । नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका— नितोशस्यापत्यं  
 नैतोशं, नैतोशेव तुर्फरी क्षिप्रहन्तारौ । उदन्यजेव जेमना  
 मदेरू— उदन्यजेवेष्युदकजे इव रथे सामुद्रे चान्द्रमसे  
 वा । जेमने जयमाने, जेमना मदेरू । ता मे जराय्वजरं

मरायु, एतज्जरायुजं शरीरं शरदं अजीर्णम् ॥ ५ ॥

[ निरुक्त, १३।५ ]

अब शुक्रोक्त की देवताओं की व्याख्या करते हैं। इनमें अश्विदेव प्रथम आनेवाले होते हैं। ये सब व्यापते हैं, इनमें एक रस से व्यापता है और दूसरा प्रकाश से व्यापता है। औरणवाभ ऋषि का मत है कि, अश्विदेवोंके पास बहुत घोड़े थे, घोड़े पास रखने के कारण उनका नाम अश्विनौ हुआ। कौन भला ये अश्विनौ हैं? 'शु और पृथिवी' ऐसा कई मानते हैं, 'दिन और रात्री' ऐसा कई समझते हैं, 'सूर्य और चन्द्र' ऐसा कइयों का मत है, ऐतिहासिक लोग मानते हैं कि, ये पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा हुए थे। इनका समय आधीरात व्यतीत होनेके पश्चात् का है, जब प्रकाश फटने लगता है, तब इनका उदय होता है। इस काल में जो अन्धकार का भाग है, वह मध्यम देवता है और जो ज्योति का भाग है, आदित्य का भाग है। इस तरह अन्धकार और प्रकाश इस समय इकट्ठे रहते हैं, येही अश्विनौ हैं।

ये दोनों देव एक ही काल में आते हैं, एक ही कर्म करते हैं। इनका वर्णन 'वसतिषु स्म०' आदि मन्त्र में किया है। इनमें से एक रात्री का और दूसरा उषा का पुत्र कहलाता है। अथवा इनमें से एक बड़े बल का प्रेरक है और दूसरा शुक्रोक्त का पुत्र आदित्य है। ये प्रातःकाल में आनेवाले हैं, ऐसा [ प्रातयुजा० ] मन्त्र में कहा है।

[ सृण्वेव० ] जिस प्रकार दात्री पोषण करनेवाली और नाश करनेवाली अर्थात् दोनों प्रकार की होती है, वैसे ही अश्विनौ में से एक देव पोषक है और दूसरा नाशक है।

इस तरह निरुक्त का अश्विनौ देवताओंके विषय में स्पष्टीकरण है। ब्राह्मणग्रन्थों के कथनों के अनुसार ही निरुक्तकारने अपना मत दिया है। [ १ ] छावा-पृथिवी, [ २ ] सूर्य-चन्द्र, [ ३ ] अहो-रात्र, [ ४ ] पुण्यकर्म करनेवाले दो राजा, [ ५ ] अंधेरा-प्रकाश, तथा [ ६ ] पोषक-संहारक इतने स्वरूप बताने के कारण अश्विनौ के विषय में किसी तरह का निश्चय नहीं होता। इसलिये वेदके मंत्रों में अश्विनौ देवता के स्वरूप के विषय में अधिक खोज करना चाहिये। देखिये मंत्रों में क्या क्या वर्णन आया है—

अश्विनौ देवता और 'तीन' संख्या ।

अश्विनौ देवता के वर्णन में 'तीन' [ ३ ] इस संख्या का महत्त्व विशेष दीखता है देखिये—

त्रिश्चिन्नो अथा भवतं नवेदसा । [ १२; ऋ. १।३।५ ]

आज तीन वार तुम हमारे बनो ।

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे० । त्रयः स्कंभासः० ।

त्रिनेक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा ॥ [ १३; ऋ. १।३।२ ]

ऐ अश्विदेवो! तुम्हारे रथ के तीन चक्र हैं, तीन खंभे लगाये हैं। तुम दिन में तथा रात्रीमें तीन तीन वार जाते हो ।

समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना भिमिक्ष-  
तम् । त्रिवांजवतीरिपो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यं  
उपसश्च पिन्वतम् । [ १४; ऋ. १।३।३ ]

आज एक ही दिन में तीन वार आओ और आज भी तीन वार आकर मधुलिचन करो। आप दिनमें तथा रात्रीमें तीन तीन वार आकर पुष्टिकारक अन्न प्रदान करो।

त्रिर्वतिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिःसुभावे त्रेधेव शिक्षतम् ।  
त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिःपृक्षो अस्मे अक्षरेव  
पिन्वतम् ॥ [ १५; ऋ. १।३।४ ]

तुम हमारे पास तीन वार आओ, अपने भक्त के पास तीन वार जाओ, सुरक्षाके लिये तीन वार जाओ, तीन वार शिक्षा दो। हमारे पास तीन वार आनन्द लाओ तथा तीन वार अन्न प्रदान करो ।

त्रिर्नो रथिं वहतं अश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावर्त  
धियः । त्रिःसौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नस्त्रिष्टं वां सूरैः  
दुहिता रुद्रदथम् । [ १६; ऋ. १।३।५ ]

'हमारे पास तीन वार संपत्ति ले आओ, इस देवकर्म में तीन वार हमारी रक्षा करो, तीन वार हमें सौभाग्य देओ, तीन वार अन्न दो, तुम्हारे तीन स्थानवाले रथ पर सूर्य की पुत्री आरूढ हुई है ।

त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिःपार्थिवानि त्रिरु दत्त-  
मज्जयः । त्रिधातु शर्मं वहतं शुभस्पती । [ १७; ऋ. १।३।६ ]  
हमें तीन वार दिव्य, पार्थिव और जलोद्भव औषधियाँ देते रहो; तथा तीनगुणा सुख हमें देते रहो ।

त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीम



शायतम् । त्रिस्तो नासत्या रथ्या परावत० ।

[ १८; क्र. ११३४१७ ]

तीन वार प्रति दिन यज्ञ करते हैं । पृथ्वीके चारों ओर तुम तीन वार घूमते हो । रथसे तीन वार तुम दूर जाते हो ।

कत्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य कत्रयो बन्धुरो ये सर्नीळाः ।

[ क्र. ११३४१९ ]

तुम्हारा त्रिकोणवाला रथ तीन चक्रोंवाला और तीन बैठने के स्थानों से युक्त है ।

आ नो नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेय-  
मश्विना । प्रायस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो  
भवतं सचाभुवा । [ २२; क्र. ११३४१११ ]

हे अश्विदेवो ! ३३ देवों को साथ लेकर मधुर रस का पान करने के लिये यहां आओ । हमारी आयु बढ़ाओ, रोग दूर करो, शत्रु का नाश करो और हमारे सहायक बनो ।

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेनायातमश्विना ।

[ ४०; क्र. ११४७१२ ]

तीन बैठकोंवाले त्रिकोणी सुंदर रथसे हे अश्विदेवो ! आओ ।  
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो० त्रिबन्धुरो० ।

[ १६५; क्र. १११५७३ ]

तं युञ्जाथो० त्रिबन्धुरो० यश्चिचक्रः ।

[ २०२; क्र. १११८३११ ]

अश्विदेवों का रथ त्रिकोणी है, तीन चक्रों से युक्त है,  
बैठने के तीन तीन स्थान उस में हैं ।

इस तरह अश्विदेवों के वर्णन में 'तीन' संख्याका बड़ा महत्त्व है ।

### अश्विदेव वैद्य हैं ।

युवं ह रथो भिषजा भेषजेभिः । [ १६८; क्र. १११५७१६ ]

'आप के पास औषधियां हैं, इसलिये आप वैद्य हैं ।'  
इससे स्पष्ट हो जाता है कि, अश्विदेव बड़े वैद्य हैं, उनके पास बहुत औषध हैं और वे रोगियों की चिकित्सा करते हैं । इनके वैद्य होनेके विषय में हम कुछ और मन्त्र यहां रखते हैं, पाठक इनका विशेष विचार करें—

अश्विनौ देवताभो का चिकित्सक होना सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखनेयोग्य है—

### वृद्ध को तरुण बनाया ।

अश्विदेवों ने अति जीर्ण च्यवनऋषि को तरुण बनाया था, यह कायाकल्प का प्रयोग अश्विदेवों ने किया था, यह बात जैसी पुराणों में वैसी वेदमंत्रों में भी दीखती है—

जुजुरुषो नासत्योत वस्त्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिष च्यवानात् ।

प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्त्रादित् पतिमकृणुतं कनीनाम् ।

[ ८६; क्र. १११६१० ]

हे अश्विदेवो ! तुमने च्यवननामक एक वृद्ध के शरीर से कवच जैसी खाल उतार कर [ बुढापा दूर किया और ] उस की आयु बढ़ायी और तरुण कन्याओंका पति बनाया ।

यहां कायाकल्प के प्रयोग का कुछ वर्णन है । [ च्यवनात् जुजुरुषः वस्त्रिं द्रापिं इव प्रामुञ्चतं ] वृद्ध च्यवन ऋषि के शरीर से कवच के समान संपूर्ण बुढापा दूर किया । शरीर से जैसा कोट या कुडता निकाल देते हैं, उस प्रकार शरीर से खाल निकाल कर उसको तरुण बनाया । यहां [ द्रापिं प्रामुञ्चतं ] चोगा उतारने का स्पष्ट उल्लेख है । सांप-नाग- भी अपने शरीर से चोगा उतारता है और फिर तरुण बनता है । सब शरीर से चर्म ऊपर की पतली त्वचा सांप के समान निकालने से शरीर पुनः तरुण हो जाता है ऐसा यहां प्रतीत होता है । आर्यवैद्यक ग्रंथों में जो कायाकल्प वर्णन किये हैं, उनमें भी कुटिरप्रवेशविधिसे कायाकल्पों का सेवन करनेसे शरीर की चमड़ी उतर जाती है और नवीन चमड़ी आती है, इस आशय के विधान हैं । इस विषय में सत्य क्या है, इसका विचार उत्तम वैद्यों को करना उचित है ।

'च्यवनप्राश' अवलेह का वर्णन वैद्यक ग्रन्थों में है, जो च्यवन के पुनः तरुण बनने का स्मरण कराता है ।

इस मन्त्र में वृद्ध को 'दीर्घायु' करने का भी उल्लेख है, तथा अनेक तरुणियों के साथ [ कनीनां पति ] विवाह च्यवनने किया, ऐसा भी कहा है । वृद्ध को तरुण बनाया, दीर्घायु बनाया और अनेक तरुणियों का पति भी बनाया गया था । यह अश्विदेवोंने अपने चिकित्सा के बलसे किया था । इस विषय में और मन्त्र देखिये—

युवं च्यवानं अश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः

दाचीभिः ॥

[ ११४; क्र० १११७११६ ]

पुनश्च्यवानं चक्रथुः युवानम् ॥ [ ऋ० १।११८।६ ]

विभिश्च्यवानं अश्विना नियाथः ॥ [ ऋ० ५।७५।५ ]

प्र च्यवानाञ्जुजुषो वामिं अत्कं न मुञ्चथः ।

युवा यदी कृथः पुनरा कामं ऋष्वे वध्वः ॥

[ २७२; ऋ० ५।७४।५ ]

उत स्यद्वां जुरते अश्विना भूच्यवानाय प्रतीस्यं हविर्दे ।

अधि षट्पर्ष इत ऊती धत्थः । [ ऋ० ७।६८।६ ]

युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं । [ ऋ० ७।७१।५ ]

युनं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।

[ ५८६; ऋ० १०।३९।४ ]

इन मन्त्रों का तात्पर्य यही है कि, अश्विदेव [ च्यवानं नियाथः ] च्यवन ऋषि के पास गये, उस वृद्ध ऋषि की चिकित्सा उन्होंने की, [ वामिं अत्कं न मुञ्चथः ] चोगे के समान सब खाल उतार दी, जिस से उस ऋषि का बुढापा दूर हुआ, [ पुनः युवानं चक्रथुः ] फिर से उसको जवान बनाया, वार्धक्य से उस की मुक्तता की, जैसा पुराना रथ [ यथा रथं ] कारीगर दुरुस्त करके नया बनाते हैं, वैसा ही च्यवन ऋषि को फिर से तरुण बनाया, यह च्यवन ऋषि अश्विदेवों को हवि अर्पण करता था। यह सब कार्य [ शचीभिः ] अपनी अद्भुत चिकित्सा की शक्तियों से अथवा औषधिविज्ञानों के प्रयोग से उन्होंने किया था। जो च्यवन चलनेफिरने में भी असमर्थ था, वही [ चरथाय ] अच्छी तरह धूमने लगा और [ वध्वः कामं ] स्त्रीसम्बन्ध का कामविकार उस में जाग्रत किया। अर्थात् यह ठीक तरह तरुण हुआ। इसी तरह वन्दनके विषयमें भी कहा है—

युवं वन्दनं निर्कृतं जरण्यया रथं न दत्त्वा करणा

समिन्वथः । [ ऋ. १।११९।७ ]

उद् वन्दनं पेरयतं स्वर्दशे । [ ऋ. १।११२।५ ]

प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्योपुषा । [ ऋ. १।११९।६ ]

हे अश्विदेवो ! तुमने वन्दन को निकृष्ट वृद्धावस्था को पहुँचे वन्दन को, उत्तम दृष्टि देकर, रथ दुरुस्त करने के समान तरुण अथवा हृष्टपुष्ट बनाया और [ दीर्घेण आयुषा प्र तारि ] दीर्घायु बनाया ।

रथ दुरुस्त करने के समान इसका शरीर तुमने नाना औषधों के प्रयोग से ठीक बनाया। प्रसूतिकर्म में अश्विदेवों की प्रवीणता थी, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र

में उल्लेख है—

क्षेत्रादा विप्रं जनथः ।

[ ऋ. १।११९।७ ]

क्षेत्र से [ अर्थात् माता के गर्भाशय से ] ब्राह्मणपुत्रको जन्म दिया। अर्थात् प्रसूतिकर्म की प्रवीणता से पुत्र को जन्म देकर माता की मुक्तता प्रसूतिवेदनाओं से की। इस मन्त्र में अश्विदेवों की प्रसूतिकर्म में प्रवीणता बतायी है।

घायल को दुरुस्त किया ।

त्रिधा ह श्यावं अश्विना विक्रस्तं उज्जीवसे पेरयतं

सुदानू ॥

[ ऋ० १।११७।२४ ]

तीन स्थान पर कटे या जखमी हुए श्याव को पुनः जीवन देकर चलनेफिरनेयोग्य बना दिया ।

तीन स्थान पर जिस के करीब करीब टुकड़े हो चुके थे, ऐसे जखमी के टूटे भागों को पुनः जोड़ दिया और उस को अच्छी तरह चलनेफिरनेयोग्य बना दिया ।

च्यवनऋषि की कथा शतपथब्राह्मण में निम्नलिखित प्रकार आ गयी है और उसमें अश्विदेवों का यही सम्बन्ध वर्णन किया गया है, वह कथा देखो—

च्यवनो वा भार्गवः, च्यवनो वाङ्गिरसः, तदेव जीर्णिः

कृत्यारूपो जहे ॥ १ ॥ शर्यातो ह वा इदं मानवो ग्रामेण

चचार । स तदेव प्रतिवेशो निविवेशे तस्य कुमाराः

क्रीडन्त इमं जीर्णिं कृत्यारूपमनर्थ्यं मन्यमाना लोष्टै-

र्विपिपियुः ॥ २ ॥ स शर्यातेभ्यश्चुक्रोध । तेभ्योऽसंज्ञां

चकार, पितैव पुत्रेण युयुधे, भ्राता भ्रात्रा ॥ ३ ॥ शर्यातो

ह वा ईक्षां चक्रे । यत्किमकरं तस्मादिदमापदीति स

गोपालांश्चाविपालांश्च संहयिरवा उवाच ॥ ४ ॥ स हो-

वाच । को वो अघेह किंचिद्द्राक्षीदिति, ते हीचुः, पुरुष

एवायं जीर्णिः कृत्यारूपः शैते, तमनर्थ्यं मन्यमानाः

कुमारा लोष्टैर्व्याक्षिपन्ति, स विदांचकार स वै च्यवन

इति ॥ ५ ॥ स रथं युक्त्वा । सुकन्यां शर्यातीमुपाधाय

प्रसिष्यन्द, स आजगाम, यत्रर्षिरास तत् ॥ ६ ॥ स हो-

वाच । ऋषे नमस्ते यन्नावेदिषं तेनाहिसिषिभियं सुकन्या

तया तेऽपह्नुषे संजानीतां मे ग्राम इति, तस्य ह तत

एव ग्रामः संजज्ञे स ह तत एव शर्यातो मानव उणुयुजे

नेदपरं हिनसानीति ॥ ७ ॥ अश्विनौ ह वा इदं भिपज्य-

न्तौ चेरतुः । तौ सुकन्यामुपेयतुः, तस्यां मिथुनमीषाते,

तन्न जज्ञौ ॥ ८ ॥ तौ हीचतुः । सुकन्ये कमिमं जीर्णि

कृप्यारूपमुपशेष भावामनुपेहीति, सा होवाच, यस्मै मां पितादाभैवाहं तं जीवन्तं हास्यामीति, तद्ध्यायमृधिराजज्ञौ ॥ ९ ॥ स होवाच । सुकन्ये किं स्वैतदवोचतामिति, तस्मा एतद्व्याचक्षे, स ह व्याख्यात उवाच, यदि स्वैतपुनर्भुवतः सा एवं भूतास्त वै सुसर्वाधिब स्थो, न सुसमृद्धाविवाथ मे पतिं निन्दथ इति, तौ यदि स्वाप्रवतः, केनावामसर्वौ स्वः, केनासमृद्धाविति, सा एवं भूतात्पतिं नु मे पुनर्युवाणं कुरुतमथ वां वक्ष्यामीति, तां पुनरुपेतुस्तां हैतदवोचतुः ॥ १० ॥ तौ ह्योचतुः । एतं हृदमभ्यवहर, स येन वयसा कमिष्यते तेनोदैष्यतीति, तं हृदमभ्यवजहार, स येन वयसा चक्रमे तेनोदेयायेति ॥ १२ ॥ [ श. ब्रा. ४।१।५।१-१२ ]

च्यवननामक एक ऋषि था, जो ऋगुकुल का समझा जाता है, अथवा आंगीरसकुल का भी माना जाता है। वह अति जीर्ण हो कर मरियलसा होकर एक स्थान पर पड़ा था। उस स्थान पर मनुवंश का शर्यात राजा आया। उस राजा के लडके वहां खेलने लगे। उन लडकों ने उस अति जीर्ण ऋषिके मुर्दे जैसे शरीर पर पथर मारे। इससे ऋषि को क्रोध आया, जिससे राजा के राज्य में सब प्रजाजनों की बुद्धि नष्ट हुई, वे आपस में लडने लगे। पिता पुत्रसे और भाई भाईसे लडने लगा। राजा शर्यात सोचने लगा कि, मैंने क्या ऐसा बुरा कर्म किया कि, जिसके कारण यह ऐसी आपत्ति आ गयी। उसने गवालियों को बुलाकर पूछा कि तुमने यहां कुछ देखा है? वे बोले कि, यह जो अतिजीर्ण मुर्दासा पड़ा है, वह मरा है, ऐसा मान कर तुम्हारे कुमारों ने उस पर पथर मारे, वह च्यवन ऋषि है, ऐसा उस राजाने जान लिया। पश्चात् अपनी कन्या को रथ पर बिठलाकर वह उस ऋषिके पास पहुंचा और उससे बोला कि 'हे ऋषि! नमस्ते। मुझे तुम्हारा ज्ञान नहीं था, इसलिये तुमको बहुत कष्ट पहुंचे। क्षमा करो। यह मेरी पुत्री है, यह तुम्हारे लिये अर्पण करता हूं। इसको प्राप्त करके सन्तुष्ट होओ। मेरे राज्य में जो बलवा उठा है, वह शान्त होवे।' तब ऋषि सन्तुष्ट हुआ और राजा का बलवा शान्त हुआ। यह देखकर शर्यात राजाने प्रतिज्ञा की कि, मैं अब इसके बाद किसी को कष्ट नहीं दूंगा। उस ऋषि के आश्रम के पास अश्विदेव किसी की चिकित्सा करने

के लिये आये थे, उन्होंने सुकन्याको देखा और उस तरुणी की इच्छा की। पर उस कन्याने उसके प्रस्ताव का स्वीकार नहीं किया। तब वे उससे पूछने लगे कि, 'हे सुकन्ये' तुम इस मुर्दा बने जीर्ण के पास क्यों रहती है? तू हमारा स्वीकार कर।' तब वह कन्या बोली कि- 'मेरे पिताने जिसको मेरा दान किया है, जब तक वह जीवित है, तब तक मैं उसे नहीं छोड़ूंगी।' सुकन्या का यह भाषण ऋषिने जान लिया, तब वह उस स्त्रीसे बोले कि, जिस समय ये अश्विनी कुमार फिर से तुम्हें ऐसा भाषण करने लगेंगे, तब तुम उनसे कहना कि- 'तुम मेरे पति की निंदा करते हो, परन्तु तुम तो अपूर्ण और सौभाग्यहीन से हो। यदि तुम मेरे पति को पुनः तरुण बनाओगे, तब सुपूर्ण तथा भाग्यसंपन्न बनाने का उपाय बताऊंगी।' सुकन्याने ऐसा अश्विनीकुमारों से कहा, तब वे बोले कि यदि तुम्हारा पति इस तालाव में गोता लगावे, तब जिस आयुका स्मरण करके वह गोता लगावेगा, उसी आयु को ऊपर आनेके पूर्व प्राप्त करेगा।' वैसा किया गया और च्यवन ऋषि उस तालावमें गोता लगाते ही तरुण बन गये। तब अश्विदेवोंने सौभाग्यसंपन्न बननेका मार्ग पूछा, तब उस ऋषिने यज्ञमें हविर्भाग प्राप्त करने का उपाय बताया। अश्विनीकुमार मानवों में जाते हैं, हर किसी की चिकित्सा करते हैं, इसलिये हमारी पंक्ति में बैठ कर हविर्भाग सेवन नहीं कर सकेंगे, ऐसा इन्द्रने निषेध किया, पर ऋषि के सामर्थ्य से इस समय से अश्विनी देवों को यज्ञ में हविर्भाग मिलने लगा।'

संक्षेप से यह कथा शतपथ ब्राह्मण में है। यही कथा पुराणों में अधिक विस्तृत रूपवाली हो गयी है। इस कथा का संबंध वेद के पूर्वोक्त मंत्रों के साथ स्पष्ट है।

### अन्धे को आंख दिये ।

अश्विनी देवोंने अन्धे को आंख और पंगु को चलनेबोग्य पांव दिये, यह चमत्कार निम्नलिखित मंत्र में है-

याभिः शचीभिः वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः ।

[ ५९, ऋ. १।११२।८ ]

अनेक अपनी शक्तियों के द्वारा परावृज का अन्धत्व दूर करके उत्तम दृष्टिसे युक्त तथा उसका लंगडेपन हटा के इस

को उत्तम चलनेफिरनेवाला बना दिया । ऐसा ही वर्णन इन्द्र के लिये भी आया है—

नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं भवयन्  
स्सास्युक्थयः । [ ऋ. २।१३।१२ ]

अन्धे और लूले परावृज को नीच अवस्था से उख बना कर [ उत्तम दृष्टि से संपन्न और चलनेफिरनेवाले बनाकर ] कीर्तिमान, यशस्वी बना दिया ।

जैसी परावृजको दृष्टि दी, वैसी ही ऋज्राश्वको भी अश्वि-देवोंने दृष्टि दी, देखिये—

शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानं ऋज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।  
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्त दत्त्वा भिषजाव-  
नर्वन् । [ ९१; ऋ. १।११६।१६ ]

शतं मेषान् वृक्ये ममहानं तमः प्रणीतमश्विनेन  
पित्रा । आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय  
चक्रथुर्विचक्षे ॥ १७ ॥

शुनमन्धाय भरमह्यत्सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।  
जारः कनीन इव चक्षदानं ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् ॥  
[ ११८-११९; ऋ० १।११७।१७-१८ ]  
श्रुतं गायत्रं तकवानस्य ... आक्षी शुभस्पती दन् ।

[ ऋ० १।१२०।६ ]

ऋज्राश्वने एकसौ एक मेष भेडिये को खाने दिये, यह देख कर उसके पिताने उस ऋज्राश्व को अन्धा बना दिया । परन्तु अश्विदेवोंने इस ऋज्राश्व के आंख पुनः देखनेयोग्य बना दिये ।

### कवि को आंख दिये ।

उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे ।

[ ऋ. १।११६।१४ ]

‘ दृष्टि की इच्छा से प्रार्थना करनेवाले कवि को उत्तम आंख दिये । ’ संभवतः यह दृष्टि कविकी क्रान्तदृष्टि होगी । बहुत करके इस स्थान पर की दृष्टि काव्य की दृष्टि है । तथापि पाठकों को ऐसे मंत्रों का विशेष विचार करना चाहिए ।

### मद्य के १०० घडे ।

शतं कुम्भां असिञ्जतं सुरायाः । [ ऋ. १।११६।७ ]

शतं कुम्भां असिञ्जतं मधूनाम् । [ ऋ. १।११७।६ ]

‘ सुरा के अथवा मधू के १०० घट तुमने भर दिये । ’ यहां सुरा, भासव, मद्य, मधु, अरिष्ट आदि पद किस पदार्थ का बोध कराते हैं, इसका निर्णय वैद्यों को करना चाहिये । अश्विदेव वैद्य हैं, यह वेद में सुप्रसिद्ध है । वैद्यों के पास भासव के १०० घट भर कर रहे, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । ‘ मधु ’ एक मीठा पेय है, यह मद्य नहीं है । ‘ सुरा ’ भाप से पुनः पानी बनाया जाता है, उसका नाम है ( Distilled Water ) शुंडाघंत्रसे जो अर्क निकालने हैं, वह सुरा है । इसमें इस तरह जो मद्य बनता है, वह मीठा शामिल है, पर इसका केवल यही अर्थ है, यह बात नहीं है । वृष्टिउदक, भांपसे बना जल आदि भी इसके अर्थ हैं । अतः वैद्यों को इस सुरा तथा मधुके विषय में अधिक खोज करके निर्णय करना उचित है ।

### विश्वला को लोहेकी टांग लगाई ।

विश्वलानामक राजपुत्री की एक टांग युद्ध में कट गयी थी । वह काटकर उस स्थानपर अश्विदेवोंने लोहेकी टांग लगा दी और उस स्त्रीको चलनेफिरनेयोग्य बना दिया, यह बात निम्नलिखित मन्त्रों में है—

चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।  
सद्यो जंघामायसीं विश्वलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्सम् ॥

[ ऋ० १।११६।१५ ]

सं विश्वलां नास्यारिणीतम् । [ ऋ० १।११७।११ ]

याभिविश्वलां धनसामथस्यं सहस्रमीळ्ह आजाद-  
जिन्वतम् । [ ऋ० १।११२।१० ]

प्रति जंघां विश्वलाया अधत्सम् [ ऋ० १।११।८ ]

धियंजिन्वा धिण्या विश्वलावस् । [ १।१८।११ ]

युवं सद्यो विश्वलामेतवे कृथः । [ १०।२१।८ ]

अथर्ववेदी कुल में उत्पन्न ( खेलस्य ) खेल राजा की पुत्री विश्वला ( धने हिते ) युद्ध में गयी थी । उसकी एक टांग टूट गयी । अश्विदेवोंने इसको लोहे की टांग ( भायसीं जंघां ) लगा दी । जिससे वह ( सर्तवे ) चलनेफिरनेयोग्य बनी । इसकी यह जखम भी अश्वि-देवोंने ठीक बना दी, इसलिये अश्विदेवों को ( विश्वला वस् ) विश्वला को निवासयोग्य बनानेवाले इस अर्थ का नाम प्राप्त हुआ ।

### दधीची ऋषि को घोड़े का सिर ।

दधीची ऋषि को घोड़े का सिर लगाने के उल्लेख वेद-मंत्रों में अनेक वार आ गये हैं देखिये—

दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वां अश्वस्य शीष्णां प्र यदी-  
मुवाच । [ ऋ. १।११६।१२ ]

‘आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् ।

[ ऋ. १।११७।२२ ]

अथर्वकुल में दधीची ऋषि के लिये तुमने घोड़े का सिर लगाया । इस अश्व के मुख से उस ऋषिने तुम दोनों को मधुविद्या सिखायी ।

यहां अश्वका सिर ऋषि के मस्तक के स्थान पर लगा देने का उल्लेख है । मनुष्य के कण्ठ पर घोड़े का सिर लग नहीं सकता, इसलिये यह उल्लेख विशेष अलंकार का सूचक है । अध्यात्मविद्या के संबंध में यह खोज करनेयोग्य वर्णन है । मधुविद्या दधीची ऋषि के पास थी, इन्द्रने यह विद्या दधीची को सिखायी थी । दधीची से यह विद्या अश्वि-देवोंको प्राप्त हुई । इस संबंध की कथा पुराणों में लंबी-चौड़ी है । यह सब वैदिक और पौराणिक सारस्वत एक-त्रित करके सब की मिलकर खोज करने का विचार है । स्वतंत्र लेखरूप से यह लेख प्रकाशित किया जायगा ।

### रेभका वर्णन ।

रेभ के विषयमें अश्विदेवों की सहायता का वर्णन निम्न-लिखित मंत्रों में है—

याभी रेभं निवृत्तं सितं अद्भ्यः । [ ऋ. १।११२।५ ]

विप्रुतं रेभं उदनि प्रवृक्तं उन्निन्यधुः ।

[ ऋ. १।११६।२४ ]

अश्वं न गूळ्हं अश्विना दुरैवैः ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।  
सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिः न वां जूर्यन्ति पूश्यां  
कृतानि ॥ [ ऋ. १।११७।४ ]

रेभ ऋषिको दुष्टोंने जखमी करके जल में डुबाया था । उसको आपने ऊपर निकाला और उसके अवयव फिर से ठीक कर दिये । यह अश्विदेवों का कर्म बड़ा प्रशंसनीय है और यह वैद्यकक्रिया के साथ संबंध रखता है । दूटे-फूटे अवयवों को पुनः ठीक करना यह कर्म वैद्यों का ही है ।

### बंध्या गौको दुधारू बनाया ।

अश्विदेवोंने बंध्या गौको दुधारू बनाया है, इसका वर्णन अब देखिये—

याभिर्धेनुं अस्वं पिन्वथो नरा । [ ऋ. १।११२।३ ]

अधेनुं दस्त्रा स्तर्यं विषक्तां अपिन्वतं शयवे अश्विना गाम् ।

[ ऋ. १।११७।२० ]

युवं शयोरवसं पिप्यधुर्गवि । [ ऋ. १।११९।६ ]

हे अश्विदेवो ! तुमने शयुके लिये बंध्या, कृश गौ को उपजाऊ और बहुत दूध देनेवाली बना दिया । यहां गौको पुष्ट करना, दुधारू बनाना और गर्भधारण के योग्य बनाने का उल्लेख है । औषधिप्रयोग से बंध्या को गर्भधारण-योग्य बनाना यह बड़ी भारी सफलताका चिन्ह है । तथा—

अश्विदेवोंने गाय में दूध उत्पन्न किया, इस विषय में निम्नलिखित मन्त्र देखनेयोग्य है—

युवं पय उन्नियायां अधत्तं पक्कं आमायां अव पूश्यां गोः ।

[ ऋ. १।१८०।३ ]

‘आपने गौ में दूध धारण किया और अपक्क गौ में परि-पक्क दूध उत्पन्न किया ।’ अश्विदेवों के यत्न से गौ में उत्तम दूध बना है ।

### स्त्री का दान किया ।

अश्विदेवोंने कइयोंको स्त्री देकर शादी कराई है देखिये—

याभिः पत्नीः विमदाय न्यूहथुः । [ ऋ. १।१०२।१९ ]

यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहत् रथेन ।

[ ऋ. १।११६।१ ]

युवं शचीभिः विमदाय जायां न्यूहथुः पुरमित्रस्य  
योषाम् ॥ [ ऋ. १।११७।२० ]

युवं श्यावाय रशतीमदत्तं । [ ऋ. १।११७।८ ]

विमद की शादी करने के लिये अश्विदेवोंने एक स्त्री उसको अर्पण की— तथा श्याव के लिये एक गौर वर्ण की सुन्दर स्त्री दी ।

इस तरह अश्विदेव शादी करानेवाले दीखते हैं ।

### स्त्री को पति दिया ।

योषायै चित्पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यत्या अश्विनावदत्तम् ॥

[ ऋ. १।११७।७ ]

घोषा नामक एक स्त्री अपने पिताके घरमें रहकर बढती गती थी । इसके लिये एक उत्तम पति अश्विदेवोंने दिया और घोषा के लिये सुख दिया ।

इस तरह पति को स्त्री और स्त्रीके लिये पति अश्वि-  
देवोंने दिया है ।

### अश्विदेवों का रथ ।

अश्विदेवों का रथ पक्षियों के समान आकाशमें उडता था, यह बात निम्न लिखित मन्त्रमें लिखी है—  
वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि त्रिष्टपि ।

यद् वां रथो विभिष्यतात् ॥ [ २६; ऋ० १।४६।३ ]

जब आप का रथ पक्षियों के समान आकाश में उडता था, तब आपके घोड़े अन्तरिक्ष में गमन करते हैं । इनके आकाशगामी रथ को पक्षी जोते जाते थे । इस विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखने योग्य है—

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः

पतंगाः । ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो  
नासत्या वहन्ति ॥ [ १३०; ऋ० १।११८।४ ]

आपके रथ को ( आकाशयान को, विमान को ) शीघ्र-  
गामी पक्षी ( आशवः पतंगाः युक्तासः ) जोते गये हैं, वे  
श्येन पक्षी आप को इधर ले आवे । वे त्वराशील शीघ्र-  
गामी हैं ।

इस से अश्वियों का रथ विमान जैसा आकाशगामी है  
यह बात सिद्ध होती है । इन का भूमिपर चलनेवाला भी  
रथ है । पर इन मंत्रों में उन के विमान का वर्णन है ।

अश्विदेवों का रथ घोड़े जोतने का नहीं था, इसलिये  
उसको ‘ अनश्व रथ ’ कहा है, देखिये—

अनश्वं याभी रथमावतं जिषे । [ ६३; ऋ० १।११२।१२ ]  
अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः ॥

[ १५७; ऋ० १।१२०।१० ]

जिस को घोड़े जोते नहीं जाते, ऐसा अश्विदेवोंका  
अनश्वः रथः ) अश्वरहित रथ है । इस से इस को पक्षी  
जोते जाते थे और वह आकाश में उडता था, यह बात  
स्पष्ट हो सकती है ।

### रथ को जोड़े श्येन पक्षी ।

अश्विदेवों के रथों अर्थात् आकाशयानों को पक्षी जोते  
रहते थे, इस विषय में ये मन्त्र देखिये—

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः  
पतंगाः । ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो  
नासत्या वहन्ति । [ १३०; ऋ० १।११८।४ ]

वेगवान् और उडनेवाले श्येन पक्षी तुम अश्विदेवों को  
वेग से यहां ले आवें । दिव्य गीधों के समान आकाश में  
उडनेवाले आप को हविष्यान्न के पास शीघ्र ले आवें ।

यहां ‘ श्येनासः, पतंगाः, गृध्राः ’ ये पद निःसंदेह  
पक्षीवाचक हैं । तथा ‘ आशवः, अप्तुरः ’ ये पद विशेष  
गति के वाचक हैं । ‘ दिव्यासः ’ पद आकाशगमन का  
सूचक है । ‘ रथे युक्ताः ’ पदोंसे ये पक्षी आकाशयान में  
जोड़े जाते थे, यह स्पष्ट हो जाता है । अर्थात् अश्विदेवोंके  
विमानों, हवाई जहाजों को गृध्र श्येन आदि वेगवान् पक्षी  
जोते जाते थे, यह बात इससे सिद्ध होती है ।

इनके रथों को घोड़े, गधे जोते जाते थे, इसका भी  
वर्णन अन्यत्र है ।

### उडनेवाली नौका = हवाई जहाज ।

युवमेतं चक्रधुः सिन्धुषु इवं आत्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्या-  
य कम् । येन देवत्रा मनसा निरूहधुः सुपसनी पेतधुः  
क्षोदसो महः ॥ [ १९८; ऋ० १।१८२।५ ]

आपने तुमपुत्रके लिये अपने सामर्थ्य से पंखयुक्त नौका  
महासागर में बनायी, वह पक्षीके समान थी । उस नौका  
से उत्तम प्रकार उडनेवाले तुम दोनों सहजही से समुद्र से  
उडकर ऊपर चले गये ।

यहां उडनेवाली नौका अश्विदेवोंने बनायी थी, यह  
स्पष्ट वर्णन है । यह जलमें तो चलती ही थी, पर आकाश  
में पक्षी के समान भी उडती थी । यही आकाशयान  
अथवा हवाई जहाज है । इन का रथ आकाश में घूमता है,  
इस विषय में देखिये—

उरु वां रथः परि नक्षति छां । [ २४८; ऋ० ४।४३।५ ]

आप का रथ आकाश में संचार करता है । अर्थात् यह  
हवाई जहाज है, इस में सन्देह नहीं है ।

### भुज्यु की सहायता ।

तुम एक सत्राट् था, उस का पुत्र भुज्यु बड़ा वीर था ।  
वह एक वार मरु देश के किसी शत्रु से लडने के लिये  
अपनी सेना के साथ समुद्र मार्ग से नौकाओं के द्वारा गया  
था । वहां उस का पराभव हुआ । वहां से भुज्युने अश्वि-

देवोंको सन्देश भेजा, अश्विदेव अपने विमानोंसे आकाश-मार्ग से आये, भुज्युको तथा उस की सेना को अपने विमानोंमें उठाकर भुज्यु को घर पहुंचाया । इस तरह युद्धोंमें- दर्याई युद्धोंमें भी अश्विदेवोंने सहायता की है, इनके वर्णन देखिये-

वीलुपत्समभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाश-  
दाना । तद्रासभो नासत्या सहस्रमाजा यमस्य प्रधने  
जिगाय ॥ [ ७८; ऋ० १।११६।२ ]

( वीलु-पत्समभिः ) बड़े वेग से उड़नेवाले, ( आशु-हेमभिः ) त्वरासे दौड़नेवाले, ( देवानां जूतिभिः ) दैवी शक्तियों से प्रेरित होनेवाले यानों से युक्त ( नासत्या ) अश्विदेव बड़े पराक्रम करनेवाले हैं । उनके वाहन से ही ( आज्ञा ) इस युद्धमें (सहस्रं) हजारों शत्रु सैनिक (यमस्य प्रधने) यमराज के युद्ध में, सर्वस्वनाशक युद्ध में मारे जाकर ( जिगाय ) विजय मिला है ।

इस मन्त्र में अश्विदेवों के वाहन बड़े प्रबल वेग से आकाश में उड़ते थे, ऐसा लिखा है ।

तुप्रो ह भुज्युं अश्विनोदमेघे रथिं न कश्चिन्ममृवां  
अवाहाः । तमूहथुः नौभिरात्मन्वतीभिः अन्तरिक्ष-  
पुञ्जिरपोदकाभिः । [ ७९; ऋ. १।११६।३ ]

तुप्र नामक सम्राट्ने अपने भुज्युनामक पुत्रको [उदमेघे] समुद्र में- अर्थात् समुद्र के परतीरनिवासी शत्रु पर हमला करने के लिये- भेजा था । जैसा कोई [ममृवां] मरनेवाला [रथिं न] अपने धनकी आशा छोड़ता है, वैसेही तुप्रने अपने पुत्र की आशा छोड़ कर उसे शत्रु पर भेजा था । पश्चात् भुज्यु का पराभव हुआ और वह समुद्र में डूब मरने लगा । उस राजकुमारको [आत्मन्वतीभिः नौभिः] सामर्थ्य-वाली नौकाओंद्वारा [ अन्तरिक्षपुञ्जिः ] जो नौकाएं आकाश में भी उड़ती थीं और [अप-उदकाभिः] जलमें से भी जाती थीं, अश्विदेवोंने उसके वर पहुंचाया ।

जो जहाज आकाश में उड़ते हैं, जल में जाते हैं और समय पर भूमि परसे भी जा सकते हैं, ऐसे जहाज अश्वि-देवों के थे ।

तिष्ठः क्षपः त्रिरहातिव्रजद्भिः नासत्या भुज्युं ऊहथुः पतंगैः ।  
समुद्रस्य धन्वन्नाद्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षडशैः ।

[ ८०; ऋ. १।११६।४ ]

[ तिष्ठः क्षपः ] तीन रात्री और [ त्रिः अहा ] तीन दिन तक [ अतिव्रजद्भिः पतंगैः ] अतिवेगसे दौड़नेवाले पक्षि-सदृश यानोंसे भुज्यु को- अर्थात् उसके साथियों के साथ- [ ऊहथुः ] आकाशमार्गसे वहन किया । [ आद्रस्य समुद्रस्य धन्वन् पारे ] जलमय समुद्र के परे रेतिले प्रदेश में रहनेवाले राजा पर आक्रमण करने के लिये भुज्यु गया था । वहां से उसको [ त्रिभिः रथैः ] तीन रथों से उसको घर पहुंचाया । जिन रथों को सैंकड़ों चक्र लगे थे और छह घोड़े अर्थात् वहन-साधन लगे थे ।

तीन अहोरात्र चलनेवाले ये हवाई जहाज थे, ऐसा यहाँ कहा है । सैनिकों को लेकर ये वायुयान तीन दिन रात उड़ते हुए तुप्र के राज्य में पहुंचे ।

अनारम्भणे तद्वीरयेथां अनास्थाने अग्रभणे समुद्रे ।  
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं क्षातरित्रां नावमात-  
स्थिवांसम् ॥ [ ८१; ऋ० १।११६।५ ]

जिस समुद्र के ( अनारम्भणे ) आदि अन्त का पता नहीं लगता, ( अनास्थाने ) जिस समुद्र के मध्यमें ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं है, और ( अग्रभणे ) जिस का ग्रहण भी नहीं हो सकता, ऐसे अथांग महासागरमें भुज्यु डूब रहा था । वहां अश्विदेव पहुंचे और उन्होंने अपने ( क्षातरित्रां नावं ) सौ बलियोंवाली नौकापर उस को ( आतस्थिवांसं ) बिठलाकर उस को ( अस्तं ऊहथुः ) अपने घर पहुंचा दिया ।

यहां कहा है कि अथांग समुद्र में अश्विदेवों के जहाज जाते थे । वे आकाश में भी उड़ते थे और अनेक सैनिकों को बिठला सकते थे ।

युवं तुप्राय पूर्येभिरैवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना ।  
युवं भुज्युं अर्णसो निः समुद्रात् विभिरूहथुः ऋज्रे-  
भिरश्रैः ॥ [ ११५; ऋ० १।११७।१४ ]

हे अश्विदेवों ! आप ( तुप्राय ) राजा तुप्र के लिये ( पूर्येभिः पूवैः ) पूर्व समय में की सहायताओं से प्रिय हो चुके थे ही, पर आप ( पुनः ) फिर भी ( मन्वौ अभवतं ) मान्य हो गये हैं, क्योंकि ( भुज्युं ) तुप्र के युवराज राजपुत्र भुज्युको ( अर्णसः समुद्रात् ) बड़े महासागर में से ( ऋज्रेभिः अश्रैः ) बड़े वेगवाले अपने ( विभिः ) पक्षि-सदृश वाहनोसे ( ऊहथुः ) ऊपर उठाया और घरको पहुंचाया ।

यहां बताया है कि, अश्विनों की पहले से ही मित्रता तुम्र के साथ थी । पर अब पुत्रको बचाने के कारण वह मित्रता सुदृढ हो गई है । पहले की अपेक्षा अब वह मित्रता अधिक बढ चुकी है ।

युवं भुज्युं भुरमाणं त्रिभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता  
पितृभ्य आ । यासिष्ठं वर्तिर्वृषणा विजेन्यम् ॥

[ १४१; ऋ० १।११९।४ ]

आपने ( भुरमाणं भुज्युं ) जलों में डूब मरनेवाले भुज्यु नामक राजपुत्रको ( त्रिभिः गतं ) उडनेवाले पक्षियों जैसे यानोंसे उठाकर ( स्वयुक्तिभिः ) अपनी खास युक्तियों से ( पितृभ्यः आ निर्वहन्ता ) पिताके पास लाया । आप ( वृषणा ) बलवान् हैं और ( विजेन्यं यासिष्ठं ) अतिदूर देशतक आप पहुंचे थे और भुज्युको आपने वहांसे लाया था ।

ता भुज्युं विभिरद्भयः समुद्रान्तप्रस्य सूनुं ऊहथूरजोभिः ।  
अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिः अर्णसो निरूप-  
स्थात् ॥ [ ३११; ऋ० ६।६२।६ ]

( तुम्रस्य सूनुं भुज्युं ) राजा तुम्र के पुत्र भुज्यु को ( निरूपस्थात् अर्णसः समुद्रात् अद्भयः ) अथाग महासागर के बड़े जलों से ( अरेणुभिः रजोभिः ) जहां धूली नहीं है, ऐसे अन्तरिक्षसे- आकाशमार्गसे- ( ऊहथुः ) उठाकर ( योजनेभिः ) विविध प्रकारकी योजनाओंसे युक्त ( त्रिभिः ) पक्षियों जैसे ( पतत्रिभिः ) पक्षिरूप यानों से तुमने उसके घर पहुंचाया ।

युवं भुज्युं अवविद्धं समुद्र ऊहथुरर्णसो अस्त्रिधानैः ।  
पतत्रिभिरभ्रमैरव्ययिभिर्दसनाभिः अश्विना पारयन्ता ॥

[ ३५३; ऋ० ७।६९।७ ]

आपने [ समुद्रे अवविद्धं भुज्युं ] समुद्र में जखमी होकर पड़े हुए भुज्यु को [ अस्त्रिधानैः ] जिनमें कुछ भी न्यूनता नहीं है, सब सुखसाधनों से जो परिपूर्ण हैं, [ अभ्रमैः ] जिनमें बैठनेवालोंको बिल्कुल श्रम नहीं होते, [ अव्ययि-

भिः ] जिनमें किसी को व्यथा नहीं होती, ऐसे [ पतत्रिभिः ] पक्षि जैसे यानों से [ अर्णसः उत् ऊहथुः ] समुद्र से ऊपर उठा कर अनेकानेक युक्तियों से [ पारयन्ता ] समुद्र के पार करके घर पहुंचा दिया ।

युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईश्वितम् ।  
यातमच्छा पतत्रिभिः नासत्या सातये कृतम् ।

[ ६३१; ऋ० १०।१४३।५ ]

उत्तयं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।  
निरीं पर्वदरावा यो युवाकुः । [ ३४४; ऋ० ७।६८।७ ]

आपने डूबनेवाले भुज्युको समुद्र से उठा कर [ रजसः ] अन्तरिक्ष के मार्ग से पार पहुंचा दिया । आप [ पतत्रिभिः ] पक्षी जैसे आकाश-यानों से वेगसे वहां पहुंचे थे ।

आपने समुद्र के बीच में जो कठिन अवस्था में पड़ा था, उस भुज्यु को मित्रभावसे उठा कर सुरक्षित घर पहुंचाया ।

इन मंत्रों से पता लगता है कि अश्विदेवों के पास पक्षियों के सदृश आकाश में उडनेवाले आकाश-यान थे । वे तीन अहोरात्र अतिवेग से चलाये जाते थे और इनमें सैनिकों को बिठलाना और इष्ट स्थान पर पहुंचाने का कार्य किया जाता था ।

अश्विदेवों की यह विद्या मननपूर्वक आलोचना करने-योग्य है ।

इस तरह अश्विदेवों के कर्तृत्व का वर्णन वेद-मंत्रों में है । अश्विदेवता के सब मंत्रों का मननपूर्वक अध्ययन करने पर तथा इनका जो वर्णन पुराणों में है वह देखने के बाद, तथा दोनों की संगति लगाने के बाद अश्विदेवों के संबंध में ठीक ठीक पता लग सकता है ।

ये देवता उषाके पूर्व आकाश में तारकारूप से उगते हैं, ऐसा भी वर्णन है । ये दो साथ साथ रहते हैं । अस्तु । देवत-संहितातर्गत अश्विनौ देवताका अध्ययन होनेके लिये यह मंत्रसंग्रह सहायक होगा, ऐसी हमें आशा है ।



×

×

×

×

इस दैवत-संहिता के द्वितीय विभाग में भाये सब देवताओं की उपमासूची, विशेषणसूची भादि अनेक उपयुक्त सूचियाँ श्री० पं० अनन्त दिनकर रास्ते, वार्ड ( जि० सातारा ) निवासीने बडी मेहेनत से तथा विशेष प्रयत्नपूर्वक बनायी हैं, इसलिये स्वाध्याय-मण्डल उन के विषय में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है ।

×

×

×

×

इस दैवत-संहिता के मुद्रण और प्रकाशन के व्यय के लिये मुंबई विश्वविद्यालय ( University of Bombay ) ने जो सहायता दी और जो उक्त विश्वविद्यालय से सम्पादक को मिली है, उस के लिये सम्पादक उक्त विश्वविद्यालय का बडा ऋणी है ।

स्वाध्याय-मण्डल, औध  
ता० ७।६।४३

}

निवेदनकर्ता  
श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर





# दैवत-संहिता ।

( ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान्, देवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता । )

## ५ अश्विनौ देवता ।

॥१॥ ( ऋ. १।३।१—३ )

( १—३ ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

अश्विना यज्वरीरिषो	द्रवत्पाणी शुभस्पती	। पुरुभुजा चनस्पतम्	१	
अश्विना पुरुदंससा	नरा शवीरया धिया	। धिष्ण्या वनतं गिरः	२	
दसा युवाकवः सुता	नासत्या वृक्तबर्हिषः	। आ यातं रुद्रवर्तनी	३	३

॥२॥ ( ऋ. १।१५।११ )

( ४—८ ) मेधातिथिः काण्वः । (ऋतुसहितौ) । गायत्री ।

अश्विना पिबतं मधु	दीर्घग्नी शुचिव्रता	। ऋतुना यज्ञवाहसा	११	
-------------------	---------------------	-------------------	----	--

॥३॥ ( ऋ. १।२१।१—४ )

प्रातर्युजा वि बोधया—	अश्विनावेह गच्छताम्	। अस्य सोमस्य पीतये	१	५
या सुरथा रथीतमो—	भा देवा दिविस्पृशा	। अश्विना ता हवामहे	२	
या वां कशा मधुमत्य—	श्विना सूनृतावती	। तथा यज्ञं मिमिक्षतम्	३	
नहि वामस्ति दूरके	यत्रा रथेन गच्छथः	। अश्विना सोमिनो गृहम्	४	८

॥४॥ ( ऋ. १।३०।१७—१९ )

( ९—११ ) शुनःशेष आजीगर्तिः स ऋत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः ।

आश्विनावश्वावत्ये—	षा यातं शवीरया	। गोमद् दसा हिरण्यवत्	१७	
समानयोजनो हि वां	रथो दसावमर्त्यः	। समुद्रे अश्विनेयते	१८	
न्युध्न्यस्य मूर्धनि	चक्रं रथस्य येमथुः	। परि द्यामन्यदीयते	१९	११

॥५॥ ( ऋ. १।३४।१—१२ )

(१२—१३) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । जगती; ९,१२ त्रिष्टुप् ।

त्रिश्चिन् नो अद्या भवतं नवेदसा विभ्रुर्वा याम उत रातिरश्विना ।	
युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससो ऽभ्यायंसेन्या भवतं मनीषिभिः	१
त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद् विदुः ।	
त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरभे त्रिनक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा	२
समाने अहन् त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।	
त्रिर्वाज्वतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम्	३
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुग्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम् ।	
त्रिनान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम्	४ १५
त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं धियः ।	
त्रिः सौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नस्त्रिष्टं वां सरे दुहिता रुहद् रथम्	५
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्भ्यः ।	
ओमानं शयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती	६
त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् ।	
तिस्रो नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम्	७
त्रिरश्विना सिन्धुभिः सप्तमातृभिस्त्रय आहावास्त्रेधा हविष्कृतम् ।	
तिस्रः पृथिवीरुपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम्	८
क्व त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व त्रयो वन्धुरो ये सनीळाः ।	
क्वदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः	९ २०
आ नासत्या गच्छतं ह्यते हविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।	
युवोर्हि पूर्वं सवितोषसो रथमुताय चित्रं घृतवन्तमिष्यति	१०
आ नासत्या त्रिभिरैकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।	
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभ्रवा	११
आ नो अश्विना त्रिवृता रथेना—स्वाञ्च रयिं वहतं सुवीरम् ।	
शृण्वन्ता वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ	१२ २३

॥६॥ ( ऋ. १।४६।१—१५ )

(१४—४८) प्रस्कण्वः काण्वः । गायत्री ।

एषो उषा अपूर्व्या	व्युच्छति प्रिया दिवः ।	स्तुषे वामश्विना बृहत्	१	
या दुस्रा सिन्धुमातरा	मनोतरा रथीणाम् ।	धिया देवा वसुविदा	२	२५
वच्यन्ते वां ककुहासौ	जूर्णायामधि विष्टपि ।	यद् वां रथो विभिष्पतात्	३	
हविषा जारो अपां	पिपतिं पपुरिर्नरा ।	पिता कुटंस्य चर्षणिः	४	
आदारो वां मतीनां	नासत्या मतवचसा ।	पातं सोमस्य धृष्णुया	५	
या नः पीपरदाश्विना	ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।	तामस्मे रासाथामिषम्	६	
आ नो नावा मतीनां	यातं पाराय गन्तवे ।	युञ्जाथामश्विना रथम्	७	३०
अरित्रं वां दिवस्पृथु	तीर्थे सिन्धूनां रथः ।	धिया युयुज्ज इन्दवः	८	
दिवस्कण्वास इन्दवो	वसु सिन्धूनां पदे ।	स्वं वृत्रि कुहं धित्सथः	९	
अभूद् भा उ अंशवे	हिरण्यं प्रति सूर्यः ।	व्यख्यजिह्वयासितः	१०	
अभूद् पारमेतवे	पन्थां क्रतस्य साधुया ।	अदर्शिं वि सुतिर्दिवः	११	
तत् तदिदश्विनोरवो	जरिता प्रति भूषति ।	मद्रे सोमस्य पिप्रतोः	१२	३५
वावसाना विवस्वति	सोमस्य पीत्या गिरा ।	मनुष्वच्छंभू आ गतम्	१३	
युवोरुषा अनु श्रियं	परिज्मनोरुपाचरत् ।	क्रता वनथो अक्तुभिः	१४	
उमा पिबतमश्विनो	भा नः शर्म यच्छतम् ।	अविद्रियाभिरूतिभिः	१५	

॥७॥ ( ऋ. १।४७।१—१० )

प्रगाथः = ( विषमा ) बृहती, ( समा ) सतो बृहती ।

अयं वां मधुमत्तमः	सुतः सोमं क्रतावृधा ।		
तमश्विना पिबतं तिरोअह्वयं	धत्तं रत्नानि दाशुषे	१	
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा	रथेना यातमश्विना ।		
कण्वासो वां ब्रह्म कण्वन्त्यध्वरे	तेषां सु शृणुतं हवम्	२	४०
अश्विना मधुमत्तमं	पातं सोममृतावृधा ।		
अथाद्य दस्रा वसु बिभ्रता रथे	दाश्वांसमुप गच्छतम्	३	
त्रिषधस्थे बर्हिषे विश्ववेदसा	मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।		
कण्वासो वां सुतसोमा अभिद्यवो	युवां हवन्ते अश्विना	४	४२

याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।	
ताभिः ष्वस्माँ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा	५
सुदासे दस्त्रा वसु विभ्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना ।	
रयिं समुद्रादुत वा दिवस्पर्यस्से धत्तं पुरुस्पृहम्	६
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अधि तुर्वशे ।	
अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः	७ ४५
अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ।	
इषं पृञ्चन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा	८
तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।	
येन शश्वदूहथुर्दाशुषे वसु मध्वः सोमस्य पीतये	९
उक्थेभिर्वागवसे पुरुवस्त्र अकैश्च नि ह्वयामहे ।	
शश्वत् कण्वानां सदासि प्रिये हि कं सोमं पपथुरश्विना	१० ४८

॥८॥ ( ऋ. १।९२।१६—१८ )

(४९—५१) गोतमो राहूगणः । उष्णिक् ।

अश्विना वर्तिरसदा गोमद् दस्त्रा हिरण्यवत् । अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम् १६	
यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः । आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् १७	
एह देवा मयोभ्रवा दस्त्रा हिरण्यवर्तना । उष्वुर्धो वहन्तु सोमपीतये १८ ५१	

॥९॥ ( ऋ. १।११२।१—२५ )

(५२—७६) कुत्स आङ्गिरसः । १ ( आद्यपादस्य ) द्यावापृथिव्यौ, १ ( द्वितीयपादस्य ) अग्निः,  
१ ( उत्तरार्धस्य ) अश्विनौ; २—२५ अश्विनौ । जगती; २४—२५ त्रिष्टुप् ।

ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तये ऽग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये ।	
याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथ स्ताभिरूषु ऋतिभिरश्विना गतम्	१
युवोर्दानाय सुभरा असश्चतो रथमा तस्थुर्वचसं न मन्तवे ।	
याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ताभिरूषु ऋतिभिरश्विना गतम्	२
युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमृतस्य मज्मना ।	
याभिर्धेनुमस्वंपि पिन्वथो नरा ताभिरूषु ऋतिभिरश्विना गतम्	३
याभिः परिज्मा तनयस्य मज्मना द्विमाता तूषु तरणिर्विभूषति ।	
ग्नाभिस्त्रिमन्तरभवद् विचक्षण स्ताभिरूषु ऋतिभिरश्विना गतम्	४ ५५

याभी रेभं निर्वृतं सितमद्भ्य उद् वन्दनमैरयतं स्वर्दशे ।	
याभिः कण्वं प्र सिषासन्तुमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	५
याभिरन्तकं जसमानमारणे भुज्युं याभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।	
याभिः कर्कन्धुं वृथं च जिन्वथुस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	६
याभिः शुचन्ति धनसां सुषंसदं तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्रये ।	
याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	७
याभिः शचीभिवृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कथः ।	
याभिर्वतिकां प्रसिताममृञ्चतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	८
याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसञ्चतं वसिष्ठं याभिरजरावर्जिन्वतम् ।	
याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	९ ६०
याभिर्विष्पलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळ्ह आजावर्जिन्वतम् ।	
याभिर्वशमश्व्यं प्रेणिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१०
याभिः सुदानू औशिजायं वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्षरत् ।	
कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिरावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	११
याभी रसां क्षोदंसोद्रः पिपिन्वथुं रनश्चं याभी रथमावतं जिषे ।	
याभिस्त्रिशोकं उस्त्रिया उदाजतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१२
याभिः सूर्यं परियाथः परावतिं मन्धातारं क्षैत्रपत्येष्वावतम् ।	
याभिर्विप्रं प्र भरद्वाजमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१३
याभिर्महामतिथिग्वं कशोजुवं दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम् ।	
याभिः पूभिद्यै त्रसदस्युमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१४ ६५
याभिर्वम्रं विपिपानमुपस्तुतं कलिं याभिर्वित्तजानिं दुवस्यथः ।	
याभिव्यंश्चमुत पृथिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१५
याभिर्नरा शयवे याभिरत्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः ।	
याभिः शरीराजतं स्यूमरश्मये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१६
याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मनाग्निर्नादीदेचित इद्धो अज्मन्ना ।	
याभिः शर्यातमवथो महाधने ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१७
याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथोऽग्रं गच्छथो विवरे गोअर्णसः ।	
याभिर्मनुं शूरमिषा समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१८ ६९

याभिः पत्नीर्विमदाय न्युहथु—रा घ वा याभिररुणीरशिक्षतम् ।	
याभिः सुदास ऊहथुः सुदेव्यं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	१९ ७०
याभिः शंताती भवथो ददाशुषे भुज्युं याभिरवथो याभिरधिगुम् ।	
ओम्यावतीं सुभरामतस्तुभं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	२०
याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे याभिर्युनो अर्वन्तमावतम् ।	
मधु प्रियं भरथो यत् सरड्भ्य—स्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	२१
याभिर्नरं गोषुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।	
याभी रथाँ अवथो याभिरवत—स्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	२२
याभिः कुत्समार्जुनेयं शतक्रतू प्र तुर्वीतिं प्र च दभीतिमावतम् ।	
याभिर्ध्वसन्ति पुरुषन्तिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्	२३
अम्रस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्ता वृषणा मनीषाम् ।	
अद्युत्येऽवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ	२४
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	२५ ७६

॥१०॥ ( ऋ. १।११६।१—२५ )

(७७—१५९) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । त्रिष्टुप् ।

नासत्याभ्यां बर्हिर्विं प्र वृञ्जे स्तोमाँ इयर्म्यभ्रियेव वातः ।	
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवां न्युहतू रथेन	१
वीळपत्माभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना ।	
तद् रासभो नासत्या सहस्र—माजा यमस्य प्रधने जिगाय	२
तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेधे रथे न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः ।	
तमूहथुनौभिरात्मन्वतीभि—रन्तरिक्षप्रुद्धिरपोदकाभिः	३
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्धि—र्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः ।	
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपङ्क्तिः षळश्वैः	४ ८०
अनारम्भणे तदवीरयेथा—मनास्थाने अग्रभूणे समुद्रे ।	
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमातास्थिवांसम्	५
यमश्विना ददथुः श्वेतमश्व—मघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।	
तद् वां दानं महिं कीर्तेन्यं भूत् पैद्वो वाजी सदमिद्वन्व्यो अर्थः	६ ८१

युवं नरा स्तुवते पञ्जियायं कक्षीवते अरदतं पुरंधिम् ।	
कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भां असिञ्चतं सुरायाः	७
हिमेनाग्निं घ्नंसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।	
ऋषीसे अत्रिमश्विनावनीत—मुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति	८
परावृतं नासत्यानुदेथा—मुच्चाबुधं चक्रथुर्जिह्ववारम् ।	
क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोतमस्य	९ ८५
जुजुरुषो नासत्योत वृत्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् ।	
प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्त्रा—दित् पतिमकृणुतं कनीनाम्	१०
तद् वां नरा शंस्यं राध्यं चा—भिष्टिमन्नासत्या वरूथम् ।	
यद् विद्वांसां निधिमिवापगूळह—मुद् दर्शतादूपथुर्वन्दनाय	११
तद् वां नरा सनये दंसं उग्र—माविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।	
दुध्यङ् ह यन्मध्वार्थवर्णो वा—मश्वस्य शीष्णां प्र यदीमुवाच	१२
अजोहवीन्नासत्या करा वां महे यामन् पुरुभुजा पुरंधिः ।	
श्रुतं तच्छासुरिव वधिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम्	१३
आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम् ।	
उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे	१४ ९०
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्ण—माजा खेलस्य परितकम्यायाम् ।	
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धनें हिते सतेवे प्रत्यधत्तम्	१५
शतं मेषान् वृक्ये चक्षदान—मुज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।	
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्त्रा भिषजावनर्वन्	१६
आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्ष्मेवातिष्ठदर्वता जयन्ती ।	
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे	१७
यदयातं दिवोदासाय वर्ति—भरद्वाजायाश्विना हर्यन्ता ।	
रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभश्च शिशुमारश्च युक्ता	१८
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यमायुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता ।	
आ जह्वावीं समनसोप वाजै—स्त्रिरहो भागं दधतीमयातम्	१९
परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः ।	
विभिन्दुनां नासत्या रथेन वि पर्वतां अजरयू अयातम्	२० ९६



एकस्या वस्तोरावतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा ।	
निरहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवंसो वृषणावरातीः	२१
शरस्य चिदार्वत् कस्यावतादा नीचादुच्चा चक्रथुः पातवे वाः ।	
शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तर्यं पिप्यथुर्गाम्	२२
अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः ।	
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय	२३
दश रात्रीरशिवेना नव द्यू नवनद्धं शथितमप्स्ववृन्तः ।	
विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्तं मुन्निन्यथुः सोममिव स्रुवेण	२४ १००
प्र वां दंसांस्यश्विनाववोच मस्य पतिः स्यां सुगवंः सुवीरं ।	
उत पश्यन्नश्रुवन् दीर्घमायु रस्तमिवेज्जरिमाणं जगम्याम्	२५

॥११॥ ( ऋ. १।११।७।१-२५ )

मध्वः सोमस्याश्विना मदाय प्रतो होता विवासते वाम् ।	
बर्हिष्मती रातिर्विश्रिता गीरिषा यातं नासत्योप वाजैः	१
यो वामश्विना मनसो जवीयान् रथः स्वश्वो विशं आजिगाति ।	
येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं तेन नरा वर्तिरस्मभ्यं यातम्	२
ऋषिं नरावंहंसः पाञ्चजन्यं मृवीसादत्रिं मुञ्चथो गुणेन ।	
मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता	३
अश्वं न गूळहमश्विना दुरेवैर्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।	
सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसांभिर्न वां जूर्यन्ति पुर्व्या कृतानि	४ १०५
सुषुप्त्वासं न निऋतेरुपस्थे सूर्यं न दंसा तमसि क्षियन्तम् ।	
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखात् मुदूपथुराश्विना वन्दनाय	५
तद् वां नरा शंस्यं पञ्जियेण कक्षीर्वता नासत्या परिज्मन् ।	
शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भां असिञ्चतं मधूनाम्	६
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय ।	
घोषायै चित् पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम्	७
युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं महः क्षोणस्याश्विना कण्वाय ।	
प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां यन्नापिदाय श्रवो अघ्यधत्तम्	८ १०९

पुरू वर्षीस्यश्विना दधाना नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।		
सहस्रसां वाजिनमप्रतीतमहिहनं श्रवस्यं तरुत्रम्	९	११०
एतानि वां श्रवस्यां सुदानू ब्रह्माङ्गुषं सदनं रोदस्योः ।		
यद् वां पुञ्जासो अश्विना हवन्ते यातमिषा च विदुषे च वाजम्	१०	
सूनोर्मानेनाश्विना गृणाना वाजं विप्राय भ्रुणा रदन्ता ।		
अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधाना सं विष्पलां नासत्यारिणीतम्	११	
कुह यान्तां सुष्टुतिं काव्यस्य दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा ।		
हिरण्यस्येव कलशं निखातमुदूपथुर्दशमे अश्विनाहन्	१२	
युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ।		
युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत	१३	
युवं तुग्राय पूर्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना ।		
युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद् विभिरूहथुर्ऋजोभिरश्वैः	१४	११५
अजोहवीदश्विना तौद्यो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।		
निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति	१५	
अजोहवीदश्विना वर्तिका वा मास्नो यत् सीममुञ्चतं वृकस्य ।		
वि जयुषा ययथुः सान्वद्रेर्जातं विष्वाचो अहतं विषेण	१६	
शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः प्रणीतमश्विनेन पित्रा ।		
आक्षी ऋजाश्वं अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे	१७	
शुनमन्धाय भरमहयत् सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।		
जारः कनीन इव चक्षदान ऋजाश्वः शतमेकं च मेषान्	१८	
मही वामुतिरश्विना मयोभूरुत स्रामं धिष्ण्या सं रिणीथः ।		
अथा युवामिदहयत् पुरंधि रागच्छतं सीं वृषणाववोभिः	१९	१२०
अधेनुं दस्त्रा स्तर्थुं विषक्तामपिन्वतं शयवै अश्विना गाम् ।		
युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम्	२०	
यवं वृकेणाश्विना वपन्तेषु दुहन्ता मनुषाय दस्त्रा ।		
अभि दस्युं बकुरेणा धर्मन्तो रु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय	२१	
आथर्वणायाश्विना दधीचे ऽश्वं शिरः प्रत्यैरयतम् ।		
स वां मधु प्र वोचदत्तायन् त्वाष्टं यद् दस्त्रावपिकक्ष्यं वाम्	२२	१२३

सदा कवी सुमतिमा चके वां विश्वा धियो अश्विना प्रावतं मे ।

अस्मे रथिं नासत्या बृहन्तं—मपत्यसाचं श्रुत्यं रराथाम् २३

हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वधिमत्या अदत्तम् ।

त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तं—मुजीवसं ऐरयतं सुदान् २४ १२५

एतानि वामश्विना वीर्याणि प्र पूर्याण्यायवोऽवोचन् ।

ब्रह्म कृण्वन्तो वृषणा युवभ्यां सुवीरांसो विदथुमा वंदेम २५

॥१२॥ (ऋ.१।११।१—११)

आ वां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृळीकः स्ववां यात्वर्वाङ् ।

यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा वातरंहाः १

त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ।

पिन्वतं गा जिन्वतमर्वतो नो वर्धयतमश्विना वीरमस्मे २

प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्त्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रैः ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गर्मिष्ठा—हुर्विप्रांसो अश्विना पुराजाः ३

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तासं आशवः पतङ्गाः ।

ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ४ १२०

आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्टी नरा दुहिता सूर्यस्य ।

परिं वामश्वा वपुषः पतङ्गा वयो वहन्त्वरुषा अभीके ५

उद् वन्देनमैरतं दंसनाभि—रुद्रेभं दस्त्रा वृषणा शचीभिः ।

निष्ठौग्न्यं पारयथः समुद्रात् पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ६

युवमत्रयेऽवनीताय तप्त—मूर्जमोमानमश्विनावधत्तम् ।

युवं कण्वायापरिस्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुषाणा ७

युवं धेनुं शयवे नाधिताया—पिन्वतमश्विना पूर्याय ।

अमृश्वतं वर्तिकामहंसो निः प्रति जङ्घां विश्वालाया अधत्तम् ८

युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूत—महिहनमश्विनादत्तमश्वम् ।

जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं सहस्रसां वृषणं वीङ्क्ष्वम् ९

ता वां नरा स्ववसे सुजाता हवामहे अश्विना नाधमानाः ।

आ न उप वसुमता रथेन गिरो जुषाणा सुविताय यातम् १० १३६

आ इयेनस्य जर्वसा नूतनेनास्मे यातं नासत्या सजोषाः ।	
इवे हि वामश्विना रातहंव्यः शश्वत्तमाया उषसो व्युष्टौ	११
॥१३॥ ( ऋ. १।१२९।१—१० ) जगती ।	
आ वां रथं पुरुमायं मनोजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवसे हुवे ।	
सहस्रकेतुं वनिनं शतद्वंसुं श्रुष्टीवानं वरिवोधामभि प्रयः	१
ऊर्ध्वा घीतिः प्रत्यस्य प्रयाम् न्यधायि शस्मन्त्समयन्त आ दिशः ।	
स्वदामि घर्मं प्रति यन्त्युतय आ वामूर्जानी रथमश्विनारुहत्	२
सं यन्मिथः पस्पृधानासो अगमत शुभे मखा अमिता जायवो रणे ।	
युवोरहं प्रवणे चैकिते रथो यदाश्विना वहथः सूरिमा वरम्	३ १४०
युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ ।	
यासिष्टं वर्तिवृषणा विजेन्यं दिवोदासाय महिं चेति वामवः	४
युवोरश्विना वपुषे युवायुजं रथं वाणीं येमतुरस्य शर्धम् ।	
आ वां पतित्वं सख्याय जग्मुषी योषावृणीत जेन्या युवां पती	५
युवं रेभं परिषूतेरुह्यथो हिमेन घर्मं परितप्तमत्रये ।	
युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गवि दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा	६
युवं वन्दनं निरुक्तं जरण्यया रथं न दस्त्रा करणा समिन्वथः ।	
क्षत्रादा विप्रं जनथो विपन्यया प्र वामत्र विधते दंसना भुवत्	७
अगच्छतं कृपमाणं परावति पितुः स्वस्य त्यजसा निवाधितम् ।	
स्वर्वतीरित ऊतीर्युवोरहं चित्रा अभीके अभवन्नभिष्टयः	८ १४५
उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारपन्मदे सोमस्यौशिजो हुवन्यति ।	
युवं दधीचो मन आ विवासथो ऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं वदत्	९
युवं पेदवे पुरुवारमश्विना स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुवस्यथः ।	
शरैरभिद्युं पृतनासु दुष्टरं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्षणीसहम्	१०
॥१४॥ ( ऋ. १।१२०।१—१२ )	

( ११ दुःस्वप्ननाशनम् ) । १ गायत्री, २ ककुप्, ३ का-विराट्, ४ नष्टरूपी, ५ तनुशिरा, ६ उष्णिक्, ७ विष्टार-बृहती, ८ कृतिः, ९ विराट्, १०—१२ गायत्री ।

का राधुद्धोत्राश्विना वां को वां जोष उभयोः । कथा विघात्यप्रचेताः	१
विद्वासाविद् दुरः पृच्छेदविद्वानित्थापरो अचेताः । न चिन्नु मते अक्रौ	२ १४९

ता विद्वांसां हवामहे वां ता नो विद्वांसा मन्म वोचेतमद्य । प्रार्चद् दर्यमानो युवाकुः ३	१५०
वि पृच्छामि पाकयाई न देवान् वर्षट्कृतस्याद्भुतस्य दस्रा । पातं च सदांसो युवं च रभ्यसो नः ४	
प्र या घोषे भृगवाणे न शोभे यया वाचा यजति पञ्जियो वाम् । प्रैष्युर्न विद्वान् ५	
श्रुतं गायत्रं तर्कवानस्याहं चिद्धि रिरिभाश्विना वाम् । आक्षी शुभस्पती दन् ६	
युवं ह्यास्तं महो रन् युवं वा यन्निरतंतसतम् । ता नो वस्र सुगोपा स्यातं पातं नो वृकादघायोः ७	
मा कस्यै धातमभ्यमित्रिणे नो माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः । स्तनाभृजो अश्विः ८	१५५
दुहीयन् मित्रधितये युवाकुं राये च नो मिमीतं वाजवत्यै । इषे च नो मिमीतं धेनुमत्यै ९	
अश्विनोरसनं रथं मनश्च वाजिनीवतोः । तेनाहं भूरिं चाकन १०	
अयं समह मा तनु ह्याते जनां अनु । सोमपेयं सुखो रथः ११	
अध स्वप्नस्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः । उभा ता बार्हि नश्यतः १२	१५९

॥१५॥ ( ऋ. १।२३९।३-५ )

(१६०-१६२) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ५ बृहती ।

युवां स्तोभेभिर्देवयन्तो अश्विना ऽऽश्रावयन्त इव श्लोकमायवो युवां हव्याभ्याश्चर्वः ।	
युवोर्विश्वा अधि भ्रियः पृक्षश्च विश्ववेदसा ।	
प्रुषायन्ते वां पवयो हिरण्यये रथे दस्रा हिरण्यये ३	१६०
अचेति दस्रा व्युनाकमृण्वथो युञ्जते वां रथयुजो दिविष्टिष्वध्वसानो दिविष्टिषु ।	
अधि वां स्थाम वन्धुरे रथे दस्रा हिरण्यये ।	
पथेव यन्तावनुशासता रजो ऽञ्जसा शासता रजः ४	
शचीभिर्नः शचीवसु दिवा नक्तं दशस्यतम् ।	
मा वां रातिरुप दसत् कदा चना सद् रातिः कदा चन ५	१६२

॥१६॥ ( ऋ. १।१५७।१-६ )

(१६३-१७४) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती, ५-६ त्रिष्टुप् ।

अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा म्हावो अर्चिषा ।	
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद् देवः संविता जगत् पृथक् १	
यद् युञ्जाथे वर्षणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् ।	
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि २	
अर्वाद् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।	
त्रिवन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ३	१६५

आ न ऊर्जी वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम् ।  
 प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं डेषो भवतं सचाधुवा ४  
 युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थो युवं विश्वेषु भुवनेष्वन्तः ।  
 युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतीरश्विनावैरयेथाम् ५  
 युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभिरथो ह स्थो रथ्याइ राथ्येभिः ।  
 अथो ह क्षत्रमग्निं धत्थ उग्रा यो वां हविष्मान् मनसा ददाश ६

॥१७॥ ( ऋ. १।१५८।१-६ ) त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप् ।

वसू रुद्रा पुरुमन्तू वृधन्ता दशस्यतं नो वृषणावभिष्टौ ।  
 दस्ता ह यद् रेवर्ण औचथ्यो वां प्र यत् सस्ताथे अक्वाभिरूती १  
 को वां दाशत् सुमतये चिदुस्यै वसू यद् धेथे नमसा पदे गोः ।  
 जिगृतमस्मे रेवतीः पुरंधीः कामप्रेणैव मनसा चरन्ता २ १७०  
 युक्तो ह यद् वां तौग्यायं पेरुर्वि मध्ये अर्णसो धार्यि पज्रः ।  
 उप वामवः शरणं गमेयं शूरो नाज्म पतयद्भिरेवैः ३  
 उपस्तुतिरौच्यमुरुष्ये न्मा मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।  
 मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद् वां बद्धस्मनि खार्दति क्षाम् ४  
 न मां गरन् नद्यो मातृत्मा दासा यदीं सुसमुब्धमवाधुः ।  
 शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत् स्वयं दास उरो असावपि ग्ध ५  
 दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।  
 अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ६ १७४

॥१८॥ ( ऋ. १।१८०।१-१० )

(१७५-२१३) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद् वां पर्यर्णांसि दीयत् ।  
 हिरण्यया वां पवयः प्रुषायन् मध्वः पिबन्ता उपसः सचेथे १ १७५  
 युवमत्यस्याव नक्षथो यद् विपत्मनो नर्यस्य प्रयज्योः ।  
 स्वसा यद् वां विश्वगूर्ती भराति वाजायेड्रे मधुपाविषे च २  
 युवं पर्य उस्त्रियायामधत्तं पक्कमामायामव पूव्यं गोः ।  
 अन्तर्यद् वनिनो वामृतप्स ह्यारो न शुचिर्यजते हविष्मान् ३ १७७

युवं हं घर्मं मधुमन्तमत्रये	ऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेवे ।	
तद् वां नरावश्विना पश्वइष्टी	रथ्येव चक्रा प्रतिं यन्ति मध्वः	४
आ वां दानाय ववृतीय दस्रा	गोरोहेण तौग्यो न जित्रिः ।	
अपः क्षोणी संचते माहिना वां	जूर्णो वामक्षुरंहसो यजत्रा	५
नि यद् युवेथे नियुतः सुदानु	उपं स्वधार्भिः सृजथः पुरंधिम् ।	
प्रेषद् वेषद् वातो न सूरि-रा	महे ददे सुव्रतो न वाजम्	६ १८०
वयं चिद्धि वां जरितारः सत्या	विपन्यामहे वि पणिहिंतावान् ।	
अघा चिद्धि ष्माश्विनावनिन्धा	पाथो हि ष्मा वृषणावन्तिदेवम्	७
युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु द्युन्	विरुद्रस्य प्रस्रवणस्य सातौ ।	
अगस्त्यो नरां नृषु प्रशस्तः	काराधुनीव चितयद् सहस्रैः	८
प्र यद् वहैथे महिना रथस्य	प्र स्पन्द्रा याथो मनुषो न होता ।	
धत्तं सूरिभ्य उत वा स्वश्व्यं	नासत्या रयिषाचः स्याम	९
तं वां रथं वयमद्या हुवेम	स्तोमैरश्विना सुविताय नव्यम् ।	
अरिष्टनेभिं परि धार्मियानं	विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	१०

॥६९॥ ( क्र. १।१८१।१—९ )

कदु प्रेष्ठाविषां रयीणा-	मध्वर्यन्ता यदुन्निनीथो अपाम् ।	
अयं वां यज्ञो अकृत प्रशस्ति	वसुधित्ती अविंतारा जनानाम्	१ १८५
आ वामश्वासः शुचयः पयस्पा	वातरंहसो दिव्यासो अत्याः ।	
मनोजुवो वृषणो वीतपृष्ठा	एह स्वराजो अश्विर्ना वहन्तु	२
आ वां रथोऽवनिर्न प्रवत्वा-	न्तसूप्रवन्धुरः सुविताय गम्याः ।	
वृष्णः स्थातारा मनसो जवीया-	नहंपूर्वो यजतो धिष्या यः	३
इहेह जाता समवावशीता-	मरेपसां तन्वाइ नामभिः स्वैः ।	
जिष्णुर्वामन्यः सुमखस्य सूरि-	र्दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊहे	४
प्र वां निचेरुः कंकुहो वशां	अनुं पिशङ्करूपः सदनानि गम्याः ।	
हरीं अन्यस्य पीपयन्त वाजै-	र्मथा रजांस्यश्विना वि घोषैः	५
प्र वां शरद्वान् वृषभो न निष्पाट्	पूर्वारिषश्चरति मध्वं इष्णन् ।	
एवैरन्यस्य पीपयन्त वाजै-	र्वेपन्तीरुध्वा नद्यौ न आगुः	६ १९०

असर्जिं वां स्थविरा वेधसा गीर्वाळहे अश्विना त्रेधा क्षरन्ती ।  
 उपस्तुताववतं नाधमानं यामन्नयामञ्जृणुतं हवै मे ७  
 उत स्या वां रुशतो वप्ससो गीर्खिवर्हिषि सदसि पिन्वते नृन् ।  
 वृषा वां मेघो वृषणा पीषाय गोर्न सेके मनुषो दशस्यन् ८  
 युवां पूषेवाश्विना पुरंधि रग्निमुषां न जरते हविष्मान्  
 हृषे यद् वां वरिवस्या गृणानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ९

॥२०॥ ( ऋ. १।१८२।१-८ ) जगती; ६, ८ त्रिष्टुप् ।

अभूदिदं वयुनमो पु भूषता रथो वृषण्वान् मदता मनीषिणः ।  
 धियजिन्वा धिष्ण्या विष्पलावस्र दिवो नपाता सुकृते शुचित्रता १  
 इन्द्रतमा हि धिष्ण्या मरुत्तमा दसा दंसिष्ठा रथ्या रथीतमा ।  
 पूर्णं रथं वहेथे मध्व आचितं तेन दाश्वान्समुप याथो अश्विना २ १९५  
 किमत्र दसा कृणुथः किमासाथे जनो यः कश्चिदहविर्महीयते ।  
 अति क्रमिष्टं जुरतं पणेरसुं ज्योतिर्विप्राय कृणुतं वचस्यवै ३  
 जम्भयतमभितो रायतः शुनो हतं मृधो विदथुस्तान्यश्विना ।  
 वाचंवाचं जरितू रलिनीं कृतमुभा शंसं नासत्यावतं मम ४  
 युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्याय क्रम् ।  
 येन देवत्रा मनसा निरूहथुः सुपप्तनी पैतथुः क्षोदंसो महः ५  
 अवविद्धं तौग्यमप्स्वन्त रनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।  
 चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदश्विभ्यामिषिताः पारयन्ति ६  
 कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्यो नाधितः पर्यषस्वजत् ।  
 पूर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय क्रम् ७ २००  
 तद् वां नरा नासत्यावतु ष्याद् यद् वां मानास उचथमवोचन् ।  
 असाद्युद्य सदसः सोम्यादा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ८

॥२१॥ ( ऋ. १।१८३।१-६ )

तं युञ्जाथां मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः ।  
 येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं त्रिधातुना पतथो विर्न पूर्णैः १  
 सुवृद् रथो वर्तते यन्नभि क्षां यत् तिष्ठथः क्रतुमन्तानुं पृक्षे ।  
 वर्षुर्वपुष्या संचतामियं गीर्दिवो दुहित्रोषसा सचेथे २ २०३



आ तिष्ठतं सुवृतं यो रथो वा मनु व्रतानि वर्तते हविष्मान् ।  
 येन नरा नासत्येष्यध्वै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ३  
 मा वां वृको मा वृकीरा दधर्षीन्मा परि वर्क्तमुत माति धक्तम् ।  
 अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्त्राविमे वां निधयो मधूनाम् ४ २०५  
 युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रिर्दस्त्रा हवतेऽवसे हविष्मान् ।  
 दिशं न दिष्टामृजूयेव यन्ता मे हवै नासत्योप यातम् ५  
 अतारिष्म तमसस्पाारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।  
 एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६

॥२२॥ ( ऋ. १।१८४।१—६ )

ता वामद्य तावपरं हुवेमोच्छन्त्यामुषसि वह्निरुक्थैः ।  
 नासत्या कुहं चित् सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय १  
 अस्मे ऊ पु वृषणा मादयेथा मुत् पर्णीर्हितमर्स्या मदन्ता ।  
 श्रुतं मे अच्छोक्तिभिर्मतीनामेष्टां नरा निचेतारा च कर्णैः २  
 श्रिये पूषभिषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः ।  
 वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जूर्णव वरुणस्य भूरैः ३ २१०  
 अस्मे सा वां माध्वी रातिरस्तु स्तोमं हिनोतं मान्यस्य कारोः ।  
 अनु यद् वां श्रवस्या सुदानू सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति ४  
 एष वां स्तोमो अश्विनावकारि मानैर्भिर्मघवाना सुवृक्ति ।  
 यातं वर्तिस्तनयाय त्मने चागस्त्ये नासत्या मदन्ता ५  
 अतारिष्म तमसस्पाारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।  
 एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६ २१३

॥२३॥ ( ऋ. २।३७।५ )

( २१४—२२५ ) गृत्समदः ( आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् ) भार्गवः शौनकः । ( ऋतुसहितौ ) । जगती ।

अर्वाञ्चमद्य यय्यं नुवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।  
 पृङ्क्तं हवीषि मधुना हि कै गतमथा सोमं पिबतं वाजिनीवस्र ५

॥२४॥ ( ऋ. २।३९।१—८ ) त्रिष्टुप् ।

ग्रावाणिव तदिदर्थं जरेथे गृध्रेव वृक्षं निधिमन्तमच्छे ।  
 ब्रह्माणेव विदथ उक्थशासा दूतेव हव्या जन्या पुरुत्रा १ २१५

प्रातर्यावाणा रथ्येव वीरा ऽजेत्र यमा वरमा संचेथे ।	
मेने इव तन्वाइ शुम्भमाने दम्पतीव ऋतुविदा जनेषु	२
शृङ्गेव नः प्रथमा गन्तमर्वाक् छुफाविव जर्भुराणा तरोभिः ।	
चक्रवाकेव प्रति वस्तोरुसा ऽर्वाञ्चा यातं रथ्येव शक्रा	३
नावेव नः पारयतं युगेव नभ्येव न उपधीव प्रधीव ।	
श्रानेव नो अरिषण्या तनूनां खृगलेव विस्रसः पातमस्मान्	४
वातेवाजुर्या नद्येव रीति रक्षी इव चक्षुषा यातमर्वाक् ।	
हस्ताविव तन्वेइ शंभविष्ठा पादेव नो नयतं वस्यो अच्छ	५
ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता स्तनाविव पिप्यतं जीवसे नः ।	
नासेव नस्तन्वो रक्षितारा कर्णाविव सुश्रुता भूतमस्ये	६ २२०
हस्तेव शक्तिमभि सैदुदी नः क्षामेव नः समजतं रजांसि ।	
इमा गिरो अश्विना युष्मयन्तीः क्ष्णोत्रेणेव स्वधितिं सं शिशीतम्	७
एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म स्तोमं गृत्समदासो अक्रन् ।	
तानि नरा जुजुषाणोप यातं बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	८

॥२५॥ ( ऋ. २।४१।७-९ ) गायत्री ।

गोमदू षु नासत्या ऽश्वावद् यातमश्विना । वर्ती रुद्रा नुपाय्यम्	७
न यत् परो नान्तर आदधर्षद् वृषण्वस्र । दुःशंसो मर्त्यो रिपुः	८
ता न आ वोळ्हमश्विना रयिं पिशङ्गसंदशम् । धिण्या वरिवोविदम्	९ २२५

॥२६॥ ( ऋ. ३।५८।१-९ )

( २२६—२३४ ) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहाना ऽन्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः ।	
आ द्योतनि वहति शुभ्रयामो षसः स्तोमो अश्विनावजीगः	१
सुयुग् वहन्ति प्रति वामृतेनो ऽर्वा भवन्ति पितरेव मेधाः ।	
जरेथामसद् वि पणेर्मेनीषां युवोरवश्चक्रुमा यातमर्वाक्	२
सुयुग्निरश्वैः सुवृता रथेन दस्ताविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।	
किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गर्भिष्ठा ऽऽहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः	३
आ मन्येथामा गतं कश्चिदेवै विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते ।	
इमा हि वां गोक्रजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुसो अग्ने	४ २२९

तिरः पुरू चिदश्विना रजाँ—स्याङ्गुषा वाँ मघवाना जनेषु । एह यातं पथिभिर्देवयानैर्दस्त्राविमे वाँ निधयो मधुनाम्	५	२३०
पुराणमोकः सख्यं शिवं वाँ युवोर्नैरा द्रविणं जह्वाव्याम् । पुनः कृष्णानाः सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः	६	
अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुञ्जिश्च सजोषसा युवाना । नासत्या तिरोअह्वयं जुषाणा सोमं पिबतमस्त्रिधा सुदानू	७	
अश्विना परिं वामिषः पुरूची—रीयुगीर्भिर्यतमाना अमृध्राः । रथो ह वामृतजा अद्रिज्रूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः	८	
अश्विना मधुपुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे । रथो ह वाँ भूरि वर्षः करिक्रत् सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः	९	२३४

॥२७॥ ( ऋ. ४।२।५९—१० )

( २३५—२४३ ) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

एष वाँ देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः । दीर्घायुरस्तु सोमकः	९	२३५
तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम् । दीर्घायुषं कृणोतन	१०	

॥२८॥ ( ऋ. ४।४।५।१—७ ) जगती, ७ त्रिष्टुप् ।

एष स्य भानुरुदियति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि । पृक्षासो अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रंशते	१	
उद् वाँ पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु । अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः	२	
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभि—रुत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम् । आ वर्तनि मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं वहेथे मधुमन्तमश्विना	३	
हंसासो ये वाँ मधुमन्तो अस्त्रिधो हिरण्यपर्णा उहुव उषर्बुधः । उदप्रुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सर्वनानि गच्छथः	४	२४०
स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्रयं उसा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना । यश्चित्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमाद्रिभिः	५	
आकेनिपासो अहंभिर्दविध्वतः स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः । स्त्रश्चिदश्वान् युयुजान ईयते विश्वाँ अनु स्वधया चेतथस्पथः	६	२४२

प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति ।  
येन सद्यः परि रजांसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ

७ २४३

॥२९॥ ( ऋ. ४।४३।१-७ )

(२४४-२५७) पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । त्रिष्टुप् ।

क उ श्रवत् कतमो यज्ञियांनां वन्दारु देवः कतमो जुषाते ।  
कस्येमां देवीममृतैषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम सुष्टुतिं सुहव्याम् १  
को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानांशु कतमः शंभविष्ठः ।  
रथं कर्माहुर्द्रवर्दश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत २ २४५  
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईवतो द्यूनिन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम् ।  
दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा ३  
का वां भूदुपमातिः कया न आश्विना गमथो ह्युमाना ।  
को वां महश्चित् त्यजसो अभीकं उरुष्यतं माध्वी दत्ता न ऊती ४  
उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत् समुद्राद्भि वर्तते वाम् ।  
मध्वा माध्वी मधु वां प्रुषायन् यत् सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः ५  
सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान् घृणा वयोऽरुषासः परि गमन् ।  
तदू पु वामजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः ६  
इहेह यद् वां समना पपुक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वीजरत्ना ।  
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक् ७ २५०

॥३०॥ ( ऋ. ४।४४।१-७ )

ते वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुजयमश्विना संगतिं गोः ।  
यः सूर्या वहति बन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम् १  
युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः ।  
युवोर्वपुंरभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत् ककुहासो रथे वाम् २  
को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वाकैः ।  
श्रुतस्य वा वनुषे पुन्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत् ३  
हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम् ।  
पिवाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय ४ २५४

आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।  
 मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद् ददे नाभिः पूर्या वाम् ५ २५५  
 नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दत्त्वा मिमाथामुभयेष्वस्मे ।  
 नरो यद् वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळहासो अगमन् ६  
 इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना ।  
 उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवत्रिक् ७ २५७

॥३१॥ ( ऋ. ५।७३।१—१० )

( २५८—२७७ ) पौर आश्रेयः । अनुष्टुप् ।

यद्य स्थः परावति यदत्रावत्यश्विना । यद् वां पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् १  
 इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि विभ्रता । वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे २  
 ईर्मान्यद् वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः । पर्यन्या नाहुषा युगा म्हा रजांसि दीयथः ३ २६०  
 तद् वु वामेना कृतं विश्वा यद् वामनु ष्वे । नानां जातावरेपमा समस्मे बन्धुमेयथुः ४  
 आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठद् रघुष्यदुं सदा । परिं वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः ५  
 युवोरत्रिशिकेतति नरां सुम्नेन चेतसा । घर्मं यद् वामरेपसं नासत्यास्ता भुरण्यति ६  
 उग्रो वां ककुहो ययिः शुण्वे यामेषु संतनिः । यद् वां दंसोभिरश्विना ऽत्रिर्नराववर्तति ७  
 मध्वं ऊषु मधूयवा रुद्रा सिषक्ति पिष्युषी । यत् समुद्राति पर्षथः पक्काः पृक्षो भरन्त वाम् ८ २६५  
 सत्यमिद् वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा । ता यामन् यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा ९  
 इमा ब्रह्माणि वर्धना ऽश्विभ्यां सन्तु शंतमा । या तक्षाम रथां इवा ऽवोचाम बृहन्नमः १०

॥३१॥ ( ऋ. ५।७४।१—१० ) अनुष्टुप्, ८ निचृत् ।

कृष्टो देवावश्विना ऽद्या दिवो मनावसू । तच्छ्वथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति १  
 कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या । कस्मिन्ना यंतथो जने को वां नदीनां सचा २  
 कं याथः कं ह गच्छथः कमच्छा युञ्जाथे रथम् । कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वामुइमसीष्टये ३ २७०  
 पौरं चिद्व्युदप्रुतं पौरं पौराय जिन्वथः । यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे ४  
 प्र च्यवानाञ्जुजुरुषो वत्रिमत्कं न मुञ्चथः । युवा यदीं कथः पुनरा काममृण्वे वध्वः ५  
 अस्ति हि वामिह स्तोता सासिं वां संदृशि श्रिये । नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू ६  
 को वामद्य पुरुणा मा वन्ने मर्त्यानाम् । को विप्रो विप्रवाहसा को यज्ञैर्वाजिनीवसू ७  
 आ वां रथो रथानां येषो यात्वश्विना । पुरू चिदस्मयुस्तिर आङ्गुषो मर्त्येष्वा ८ २७५

शम् पु वां मधुयवा ऽसाकमस्तु चर्कृतिः । अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम् ९  
अश्विना यद्द कर्हि चिच्छुश्रूयार्तमिमं हवम् । वस्वीरू पु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः १० २७७

॥३३॥ ( ऋ. ५।७५।१-२ )

( २७८-२८६ ) अवस्युरात्रेयः । पङ्क्तिः ।

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।	
स्तोता वामश्विनावृषिः स्तोमेन प्रति भूषति माध्वी मम श्रुतं हवम्	१
अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना ।	
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम्	२
आ नो रत्नानि विभ्रता वश्विना गच्छतं युवम् ।	
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम्	३ २८०
सुष्टुभो वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता ।	
उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम्	४
बोधिन्मनसा रथ्यैषिरा हवनश्रुता ।	
विभिश्चयवानमश्विना नि याथो अद्वयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम्	५
आ वां नरा मनोयुजो ऽश्वासः प्रुषितप्सवः ।	
वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम्	६
अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् ।	
तिरश्विदर्यया परिं वर्तिर्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम्	७
अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती ।	
अवस्युमश्विना युवं गृणन्तमुप भूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम्	८
अभूदुषा रुशत् पशु-राग्निरघायृत्वियः ।	
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्त्रावमर्त्यो माध्वी मम श्रुतं हवम्	९ २८३

॥३४॥ ( ऋ. ५।७६।१-५ )

( २८७-२९६ ) भौमोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद् विप्राणां देवया वार्चो अस्थुः ।	
अर्वाश्वा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ	१
न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठा ऽन्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह ।	
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्ति दाशुषे शंभविष्ठा	२ २८८

उता यातं संगत्रे प्रातरहो मर्च्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।	
दिवा नक्तमवसा शंतमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान	३
इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गुहा अश्विनेदं दुरोणम् ।	
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा ऽश्वो यातमिषमूर्जे वहन्ता	४ २९०
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभ्रुवा सुप्रणीती गमेम ।	
आ नो रयिं बृहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि	५

॥३५॥ ( ऋ. ५।७।१-५ )

प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः ।	
प्रातर्हि यज्ञमश्विना दुधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः	१
प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम् ।	
उतान्यो अस्मद् यजते वि चावः पूर्वेःपूर्वो यजमानो वनीयान्	२
हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो घृतस्नुः पृथो वहन्ना रथो वर्तते वाम् ।	
मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा	३
वो भूर्यिष्टं नासत्याभ्यां विवेष चर्निष्टं पित्वो ररते विभागे ।	
स तोकर्मस्य पीपरच्छमीभिर्नूर्ध्वभासः सदमित् तुतुर्यात्	४
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभ्रुवा सुप्रणीती गमेम ।	
आ नो रयिं बृहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि	५ २९६

॥३६॥ ( ऋ. ५।७।१-९ )

(२९७-३०५) सप्तवधिरात्रेयः । (५-९ गर्भस्त्राविष्युपनिषद्) । अनुष्टुप्,

१-३ उष्णिक्, ४ त्रिष्टुप् ।

अश्विनावेह गच्छतुं नासत्या मा वि वैनतम् । हंसाविव पततमा सुताँ उप १	
अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम् । हंसाविव पततमा सुताँ उप २	
अश्विना वाजिनीवस्र जुषेथो यज्ञमिष्टये । हंसाविव पततमा सुताँ उप ३	
अत्रिर्यद् वामवरोहंभृवीसु मजोहवीन्नाधमानेव योषा ।	

इनेनस्य चिज्वसा नूतनेना ऽऽगच्छतमश्विना शंतमेन ४ ३००

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः स्रग्यन्त्या इव । श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवधि च मुञ्चतम् ५  
 भीताः नसधमानाय ऋषये सप्तवधये । मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चावथः ६ ३०२

यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः । एवा ते गर्भे एजतु निरैतु दशमास्यः ७  
 यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति । एवा त्वं दशमास्य सहावैहि जरायुणा ८  
 दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि । निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि ९३०५

॥३७॥ ( ऋ. ६।६२।१-११ )

(३०६—३२७) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्तुषे नरां दिवो अस्य प्रसन्ता ऽश्विनां हुवे जरमाणो अकैः ।  
 या सद्य उस्ना व्युषि ज्मो अन्तान् युयूषतः पर्युरू वरांसि १  
 ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः ।  
 पुरू वरांस्यमिता मिमाना ऽपो घन्वान्यति याथो अजान् २  
 ता ह त्यद् वर्तिर्यदरध्रमुग्रे—त्था धिय ऊहथुः शश्वदश्वैः ।  
 मनोजवेभिरिषिरैः शयध्यै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य ३  
 ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मो—प भूषतो युयुजानसप्ती ।  
 शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत् प्रतो अधुग् युवाना ४  
 ता वल्लू दुस्ना पुरुशाकतमा प्रत्ना नव्यसा वचसा विवासे ।  
 या शंसते स्तुवते शम्भविष्ठा बभुवतुर्गुणते चित्रराती ५ ३१०  
 ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समुद्रात् तुग्रस्य सुनुमूहथू रजोभिः ।  
 अरेणुभियोजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात् ६  
 वि जयुषा रथ्या यातमद्रिं श्रुतं हवै वृषणा वधिमत्याः ।  
 दुशस्यन्ता शयवै पिप्यथुर्गामिति च्यवाना सुमतिं भ्रुरण्यू ७  
 यद् रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा ।  
 तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुंरघं दधात ८  
 य इ राजानावृतुथा विदधद् रजसो मित्रो वरुणश्चिकेतत् ।  
 गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद् वचस आनवाय ९  
 अन्तरैश्चक्रेस्तनेयाय वर्ति—द्युमता यातं नवता रथेन ।  
 सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम् १०  
 आ परमाभिरुत मध्यमाभि—नियुद्धिर्यातमवमाभिरर्वाक् ।  
 हुळ्हस्य चिद् गोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्त गृणते चित्रराती ११ ३१६



॥३८॥ ( ऋ. ६।६३।१—११ ) त्रिष्टुप्, १ विराट्, ११ एकपदा त्रिष्टुप् ।

क्व॑ त्या वल्गू॑ पुरु॒हूताद्य॑ दू॒तो न स्तोमो॑ऽविदु॒न्नम॑स्वान् ।	
आ यो अ॒र्वाङ् नास॑त्या व॒वर्त॑ प्रे॒ष्टा ह्यस॑था॒ अस्य॑ मन्मन् १	
अरं॑ मे गन्तं॑ ह॒वनाया॑स्मै गृ॒णाना॑ यथा पि॒बाथो॑ अन्धः ।	
परि॑ ह॒ त्यद् वर्ति॑र्याथो रि॒षो न यत् परो॑ नान्तर॑स्तुतु॒र्यात् २	
अकारि॑ वामन्ध॑सो वरी॒म—अस्तारि॑ ब॒र्हिः सु॒प्राय॑णतमम् ।	
उ॒त्तान॑हस्तो यु॒वयु॑र्वे॒वन्दा ऽऽ वां नक्ष॑न्तो अ॒द्रय॑ आञ्जन् ३	
ऊ॒र्ध्वो वा॑म॒भिर॑ध्वरे॒ष्वस्थात्॑ प्र रा॒तिरे॑ति जू॒णिनी॑ घृ॒ताची॑ ।	
प्र होता॑ गु॒र्तम॑ना उ॒राणो॑ ऽयु॒क्त यो नास॑त्या ह॒वीमन् ४ ३२०	
अधि॑ श्रि॒ये दु॒हिता॑ सूर्य॑स्य रथं तस्थौ॑ पुरु॒भुजा॑ श॒तोर्ति॑म् ।	
प्र मा॒याभि॑र्मा॒यिना॑ भू॒तमत्र॑ नरा॑ नृ॒तू जनि॑मन् य॒ज्ञिया॑नाम् ५	
यु॒वं श्री॑भिर्दे॒र्शता॑भिरा॒भिः शु॒भे पु॒ष्टिम्ह॑थुः सूर्या॑याः ।	
प्र वां वयो॑ व॒पुषे॑ऽनु॒ पप्त॑न् नक्ष॒द् वाणी॑ सु॒ष्टुता॑ धि॒ष्या वाम् ६	
आ वां वयो॑ऽश्वा॒सो ब॒र्हिष्ठा॑ अ॒भि प्रयो॑ नासत्या वहन्तु ।	
प्र वां रथो॑ मनो॒जवा॑ अस॒र्जा—षः॑ पृ॒क्ष इ॒षिधो॑ अनु॒ पूर्वीः ७	
पुरु॑ हि वां पुरु॒भुजा॑ दे॒ष्णां धे॒नुं न इ॒षं पि॒न्वत॑मस॒क्राम् ।	
स्तु॒तश्च॑ वां मा॒ध्वी सु॒ष्टुति॑श्च रसा॑श्च ये वाम॑नु॒ राति॑मगमन् ८	
उ॒त म॑ ऋ॒ज्रे पु॒रय॑स्य र॒ध्वी सु॒मीळ॑हे श॒तं पै॒रुके॑ च॒ प॒क्वा ।	
शा॒ण्डो दा॑द्वि॒रणि॑नः स्मदि॒ष्टीन् द॑र्श व॒शासो॑ अ॒भिषा॑चं ऋ॒ध्वान् ९ ३२५	
सं वां श॒ता ना॑सत्या स॒हस्रा॑ ऽश्वा॒नां पुरु॑प॒न्था॑ गि॒रे दा॑त् ।	
भ॒रद्वा॑जाय वी॒र नू॑ गि॒रे दा॑—द्व॒ता रक्षा॑सि पुरु॒दंस॑सा स्युः १०	
आ वां सु॒भे वरि॑मन्त्सू॒रिभिः॑ ष्याम् ११ ३२७	

॥३९॥ ( ऋ. ७।६७।१—१० ) त्रिष्टुप् ।

( ३२८—३८३ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

प्रति॑ वां रथं॑ नृ॒पती॑ ज॒रध॑र्यै ह॒विष्म॑ता॒ मन॑सा य॒ज्ञिये॑न ।	
यो वां दू॒तो न धि॑ष्या॒वजी॑ग—र॒च्छां सु॒नुर्न॑ पि॒तरा॑ वि॒वक्षि॑म १	
अशो॑च्य॒ग्निः संमि॑धानो अ॒स्मे उपो॑ अ॒दृश्र॑न् तम॑सश्चि॒दन्ताः॑ ।	
अचै॑ति॒ के॒तुरु॑षसः पुर॒स्ता—च्छ्र॑ये दि॒वो दु॒हित॑ज॒र्यमा॑नः २ ३२९	

अभि वां नूनमश्विना सुहोता	स्तोमैः सिषक्ति नासत्या विवृकान् ।	
पूर्वाभिर्यातं पृथ्याभिरर्वाक्	स्वविंदा वसुमता रथेन	३ ३३०
अवोर्वा नूनमश्विना युवाक्कु	हुवे यद् वां सुते माध्वी वसूयुः ।	
आ वां वहन्तु स्थविरासो अश्वाः	पिवाथो अस्मे सुषुता मधूनि	४
प्राचींषु देवाश्विना धियं मे	ऽमृध्रां सातये कृतं वसूयुम् ।	
विश्वा अविष्टं वाज आ पुरंधी	स्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः	५
अविष्टं धीर्ष्वश्विना न आसु	प्रजावद् रेतो अहयं नो अस्तु ।	
आ वां तोके तनये तूतुजानाः	सुरत्नासो देववीतिं गमेम	६
एष स्य वां पूर्वगत्वेव सख्ये	निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे ।	
अहेळता मनसा यातमर्वा	गभ्रन्ता हव्यं मानुषीषु विक्षु	७
एकस्मिन् योगे भुरणा समाने	परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।	
न वायन्ति सुभ्रवो देवयुक्ता	ये वां धूर्षु तरणयो वहन्ति	८ ३३५
असश्रता मघवद्भ्यो हि भूतं	ये राया मघदेयं जुनन्ति ।	
प्र ये बन्धुं सुनृताभिस्तिरन्ते	गव्यां पृश्चन्तो अश्यां मघानि	९
नू मे हवमा शृणुतं युवाना	यासिष्टं वतिरश्विनाविरावत् ।	
घत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्	यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	१०

॥४०॥ ( ऋ. ७।६८।१-९ ) विराट्; ८-९ त्रिष्टुप् ।

आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा	गिरो दस्ता जुजुषाणा युवाकोः ।	
हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः		१
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थु	ररं गन्तं हविषो वीतर्ये मे ।	
तिरो अयो हवनानि श्रुतं नः		२
प्र वां रथो मनोजवा इयति	तिरो रजांस्यश्विना शतोतिः ।	
अस्मभ्यं सूर्यावसु इयानः		३ ३४०
अयं ह यद् वां देवया उ अद्रि	रूध्रवो विवक्ति सोमसुद् युवभ्याम् ।	
आ बल्गू विप्रो बवृतीत हव्यैः		४
चित्रं ह यद् वां भोजनं न्वस्ति	न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।	
यो वामोमानं दधते प्रियः सन्		५ ३४२

उत ल्यद् वां जुरते अश्विना भू-च्च्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।

अधि यद् वर्षे इतऊति धत्थः

६

उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।

निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः

७

वृथाय चिञ्जसमानाय शक्त-मुत श्रुतं शयवे ह्यमाना ।

यावुध्न्यामपिन्वतमपो न स्तुर्थे चिच्छक्त्याश्विना शचीभिः

८

३४५

एष स्य कारुर्जरते सूक्तै-रग्रे बुधान उपसां सुमन्मा ।

इषा तं वर्धदुध्न्या पयोभि-र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

९

॥४१॥ ( ऋ. ७।६९।१-८ ) त्रिष्टुप् ।

आ वां रथो रोदसी बद्धधानो हिरण्ययो वृषभिर्यात्वश्वैः ।

घृतवर्तनिः पविभीं रुचान इषां वोळहा नृपतिर्वाजिनीवान्

१

स पप्रथानो अभि पञ्च भूमा त्रिवन्धुरो मनसा यातु युक्तः ।

विशो येन गच्छथो देवयन्तीः कुत्रा चिद् याममश्विना दधाना

२

स्वश्वा यशसा यातमवाग् दसा निधिं मधुमन्तं पिबाथः ।

वि वां रथो वध्वाइयादमानो ऽन्तान् दिवो बाधते वर्तनिभ्याम्

३

युवोः श्रियं परि योषावृणीत् सरो दुहिता परितक्म्यायाम् ।

यद् देवयन्तमवथः शचीभिः परिं ग्रंसमोमना वां वयो गात्

४

३५०

यो ह स्य वां रथिरा वस्त उसा रथो युजानः परियार्ति वर्तिः ।

तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन्

५

नरां गौरेवं विद्युतं तृषाणा ऽस्माकमद्य सवनोप यातम् ।

पुरुत्रा हि वां मतिभिर्हवन्ते मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः

६

युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र उदूहथुरणीसो अस्त्रिधानैः ।

पतत्रिभिरश्रमैरेव्यथिभिर्दसनाभिरश्विना पारयन्ता

७

नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।

धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन् युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

८

॥४२॥ ( ऋ. ७।७०।१-७ )

आ विश्ववाराश्विना गतं नः प्र तत् स्थानमवाचि वां पृथिव्याम् ।

अश्वो न वाजी शुनपृष्ठो अस्था-दा यत् सेदथुर्ध्रुवसे न योनिम्

९

३५५

सिर्षकित सा वां सुमतिश्चनिष्ठा ऽतापि घर्मो मनुषो दुरोणे ।	
यो वां समुद्रान्त्सरितः पिपत्ये—तंवा चिन्न सुयुजा युजानः	२
यानि स्थानान्यश्विना दुधार्थे दिवो यद्द्वीष्वोषधीषु विश्वु ।	
नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्ते—षं जनाय द्वाशुषे वहन्ता	३
चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु यद् योग्या अश्रवैथे ऋषीणाम् ।	
पुरूणि रत्ना दधतौ न्यस्मे अनु पूर्वाणि चख्यथुर्युगानि	४
शुश्रुवांसां चिदश्विना पुरूण्य—भि ब्रह्माणि चक्षाथे ऋषीणाम् ।	
प्रति प्र यातं वरमा जनाया—ऽस्मे वांमस्तु सुमतिश्चनिष्ठा	५
यो वां यज्ञो नासत्या हविष्मान् कृतब्रह्मा समर्योऽि भवाति ।	
उप प्र यातं वरमा वसिष्ठ—मिमा ब्रह्माण्यव्यन्ते युवभ्याम्	६ ३६०
इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृकित वृषणा जुषेथाम् ।	
इमा ब्रह्माणि युवयून्यगमन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	७

॥४३॥ ( ऋ. ७।७।११—६ )

अप स्वसुरुषसो नजिहीते रिणकित कृष्णीररुषाय पन्थाम् ।	
अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद् युयोतम्	१
उपायातं द्वाशुषे मर्त्याय रथेन वाममश्विना वहन्ता ।	
युयुतमस्मदर्निराममीवां दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः	२
आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ सुम्लायत्रो वृषणो वर्तयन्तु ।	
स्युमंगभस्तिमृतयुग्भिरश्वै—राश्विना वसुमन्तं वहेथाम्	३
यो वां रथो नृपती अस्ति वोळहा त्रिवन्धुरो वसुमाँ उन्नयामा ।	
आ न एना नासत्योषं यात—मभि यद् वां विश्वप्स्यो जिगाति	४ ३६५
शुवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।	
निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रि नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः	५
इयं मनीषा इयमश्विना गी—रिमां सुवृकित वृषणा जुषेथाम् ।	
इमा ब्रह्माणि युवयून्यगमन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	६

॥४४॥ ( ऋ. ७।७।२।१—५ )

आ गोमता नासत्या रथेना—ऽश्वावता पुरुश्वन्द्रेण यातम् ।	
अभि वां विश्वा नियुतः सचन्ते स्पर्हया श्रिया तन्वा शुभाना	१ ३६८

आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या रथेन ।	
युवोर्हि नः सख्या पित्र्याणि समानो बन्धुरुत तस्य वित्तम्	२
उदु स्तोमासो अश्विनोरबुध—ज्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः ।	
आविवासन् रोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति	३ ३७०
वि चेदुच्छन्त्यश्विना उपासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।	
ऊर्ध्व भानुं सविता देवो अश्रेद् बृहदुग्रयः समिधा जरन्ते	४
आ पश्चातान्नासत्या पुरस्ता—दाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।	
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५

॥४५॥ ( ऋ. ७।७३।१-५ )

अतारिष्म तमसस्परमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः ।	
पुरुदंसां पुरुतमा पुराजा ऽमर्त्या हवते अश्विना गीः	१
न्युं प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च ।	
अश्रीतिं मध्वो अश्विना उपाक आ वो वोचे विदथेषु प्रयस्वान्	२
अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।	
श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः	३ ३७५
उप त्या वह्नीं गमतो विशं नो रक्षोहणा संभृता वीळपाणी ।	
समन्धांस्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन	४
आ पश्चातान्नासत्या पुरस्ता—दाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।	
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५

॥४६॥ ( ऋ. ७।७४।१-६ ) प्रगाथः = ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती )

इमा उ वां दिविष्टय उस्ना हवन्ते अश्विना ।	
अयं वामहेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः	१
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदैथां सूनृतावते ।	
अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु	२
आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना ।	
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम्	३
अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीर्यन्ति बिभ्रतः ।	
मक्षूयुभिर्नरा हयेभिरश्विना ऽऽ देवा यातमस्मयू	४ ३८१

अधा ह यन्तो अश्विना पृक्षः सचन्त सूर्यः ।	
ता यंसतो मघवद्भ्यो ध्रुवं यश इच्छिर्दिस्मभ्यं नासत्या	५
प्र ये ययुर्वृकासो रथा इव नृपातारो जनानाम् ।	
उत स्वेन शर्वसा शूशुवुर्नर उत क्षियन्ति सुक्षितिम्	६ ३८३

॥४७॥ ( ऋ. ८।५।१-३७ )

( ३८४—४२० ) ब्रह्मातिथिः काण्वः । ( ३७ पूर्वार्धः ) । गायत्री; ३७ बृहती ।

दूरादिहेव यत् सत्यरुणप्सुरशिश्चितत् । वि भानुं विश्वधातनत्	१
नृवद् दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम्	२ ३८५
युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमां अदक्षत । वाचं दूतो यथोहिषे	३
पुरुप्रिया ण ऊतये पुरुमन्द्रा पुरुवसू । स्तुषे कर्णासो अश्विना	४
महिष्ठा वाजसातमे षयन्ता शुभस्पती । गन्तारा दाशुषो गृहम्	५
ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीम् । घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्	६
आ नः स्तोममृषं द्रवत् तूयं ज्येनेभिराशुभिः । यातमश्वैभिरश्विना	७ ३९०
येभिस्तिस्त्रः परावतो दिवो विश्वानि रोचना । त्रैरिक्तून् परिदीयथः	८
उत नो गोमतीरिष उत सातीरहर्विदा । वि पथः सातये सितम्	९
आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम् । वोळ्हमश्वावतीरिषः	१०
वावृधाना शुभस्पती दस्रा हिरण्यवर्तनी । पिबतं सोम्यं मधुं	११
अस्मभ्यं वाजिनीवसू मघवद्भ्यश्च सप्रथः । छिर्दिथन्तमदाभ्यम्	१२ ३९५
नि षु ब्रह्म जनानां याविष्टं तूयमा गतम् । मो ष्वान्यां उपारतम्	१३
अस्य पिबतमश्विना युवं मदस्य चारुणः । मध्वो रातस्यं घिष्ण्या	१४
अस्मे आ वहतं रयिं शतवन्तं सद्भ्रिणाम् । पुरुक्षुं विश्वधायसम्	१५
पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः । वाघद्भिरश्विना गतम्	१६
जनासो वृकतबर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः । युवां ह्वन्ते अश्विना	१७ ४००
अस्माकमघ वामयं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । युवाभ्यां भूत्वश्विना	१८
यो ह वां मधुनो दृतिराहितो रथचर्षणे । ततः पिबतमश्विना	१९
तेन नो वाजिनीवसू पश्वै तोकाय शं गवै । वहतं पीवरीरिषः	२०
उत नो दिव्या इष उत सिन्धूरहर्विदा । अप द्वारैव वर्षथः	२१ ४०४

कदा वां तौग्रयो विधत् समुद्रे जहितो नरा । यद् वां रथो विभिष्पतात् २२	४०५
युवं कण्वाय नासत्या ऽपरिस्नाय हर्म्ये । शश्वद्दूतीर्देशस्यथः २३	
ताभिरा यातमूतिभिर्नर्व्यसीभिः सुशस्तिभिः । यद् वां वृषण्वसू हुवे २४	
यथा चित् कण्वमावतं प्रियमैधमुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जारमश्विना २५	
यथोत कृत्वये धने ऽशुं गोष्वगस्त्यम् । यथा वाजेषु सोभरिम् २६	
एतावद् वां वृषण्वसू अतो वा भूयो अश्विना । गुणन्तः सुममीमहे २७	४१०
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना । आ हि स्थार्थो दिविस्पृशम् २८	
हिरण्ययीं वां रभिरीषा अक्षो हिरण्ययः । उभा चक्रा हिरण्यया २९	
तेन नो वाजिनीवसू परावतश्चिदा गतम् । उपेमां सुष्टुतिं मम ३०	
आ वहेथे पराकात् पूर्वीरश्वन्तावश्विना । इषो दासीरमर्त्या ३१	
आ नो द्युमैरा श्रवाभिरा राया यातमश्विना । पुरुश्वन्द्रा नासत्या ३२	४१५
एह वां प्रुषितप्सवो वयो वहन्तु पणिनः । अच्छा स्वध्वरं जनम् ३३	
रथं वामनुगायसं य इषा वर्तते सह । न चक्रमभि बाधते ३४	
हिरण्ययेन रथेन द्रवत्पाणिभिरश्वैः । धीज्वना नासत्या ३५	
युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वसू । ता नः पृङ्क्तमिषा रयिम् ३६	
ता मे अश्विना सनीनां विद्यातं नवानाम् । (पूर्वार्धः) ३७	४२०

॥४८॥ ( ऋ. ८।८।१-२३ )

(४२१—४४३) सध्वंसः काण्वः । अनुष्टुप् ।

आ नो विश्वाभिरूतिभिर्रश्विना गच्छतं युवम् ।	
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी पिवतं सोम्यं मधु १	
आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा ।	
भुजी हिरण्यपेशसा कवी गम्भीरचेतसा २	
आ यातं नहुषस्पर्या ऽन्तरिक्षात् सुवृक्तिभिः ।	
पिबाथो अश्विना मधु कण्वानां सवने सुतम् ३	
आ नो यातं दिवस्पर्या ऽन्तरिक्षादधप्रिया ।	
पुत्रः कण्वस्य वामिह सुषाव सोम्यं मधु ४	
आ नो यातमुपश्रुत्यश्विना सोमपीतये ।	
स्वाहा स्तोमस्य वर्धना प्र कवी धीतिर्भिर्नरा ५	४२५

यश्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहुरेऽर्वसे नरा ।	
आ यातमश्विना गतमुपेमां सुष्टुतिं मम	६
दिवश्चिद् रोचनादध्या नो गन्तं स्वर्विदा ।	
धीभिर्वत्सप्रचेतसा स्तोमैर्भिर्हवनश्रुता	७
किमन्ये पर्यासते ऽस्मत् स्तोमैभिरश्विना ।	
पुत्रः कर्णस्य वामृषिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत्	८
आ वां विप्र इहावसे ऽह्वत् स्तोमैभिरश्विना ।	
अरिंश्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं मयोभुवा	९
आ यद् वां योषणा रथमर्तिष्ठद् वाजिनीवसू ।	
विश्वान्यश्विना युवं प्र धीतान्यगच्छतम्	१० ४३०
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।	
वत्सो वां मधुमद् वचो ऽशंसीत् काव्यः कविः	११
पुरुमन्द्रा पुरुवसू मनोतरा रयीणाम् ।	
स्तोमं मे अश्विनाविममभि वहीं अनूपाताम्	१२
आ नो विश्वान्यश्विना धत्तं राधांस्यह्या ।	
कृतं न ऋत्वियावतो मा नो रीरघतं निदे	१३
यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यक्षरे ।	
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना	१४
यो वां नासत्यावृषिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् ।	
तस्मै सहस्रनिर्णिजमिषं धत्तं घृतश्रुतम्	१५ ४३५
प्रास्मा ऊर्जं घृतश्रुतमश्विना यच्छतं युवम् ।	
यो वां सुम्नाय तुष्टवद् वसूयाद् दानुनस्पती	१६
आ नो गन्तं रिशादसेमं स्तोमं पुरुश्रुजा ।	
कृतं नः सुश्रियो नरेमा दातमभिष्टये	१७
आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।	
राजन्तावध्वराणामश्विना यामहूतिषु	१८
आ नो गन्तं मयोभुवा ऽश्विना शंभुवा युवम् ।	



याभिः कण्वं मेधातिथिं	याभिर्वशं दशव्रजम् ।		
याभिर्गोशर्यमावतं	ताभिर्नोऽवतं नरा	२०	४४०
याभिर्नरा त्रसदस्यु-	मावतं कृत्वये धने ।		
ताभिः ष्वस्माँ अश्विना	प्रावतं वाजसातये	२१	
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो	गिरो वर्धन्त्वश्विना ।		
पुरुत्रा वृत्रहन्तमा	ता नो भूतं पुरुस्पृहा	२२	
त्रीणि पदान्यश्विनो-	राविः सान्ति गुहा परः ।		
कवी क्रतस्य पत्नभि-	रर्वाग् जीवेभ्यस्परि	२३	४४३

॥४९॥ (ऋ. ८।९।१-२१)

(४४४—४६४) शशकर्णः काण्वः । अनुष्टुप्; १,४,६,१४-१५, बृहती; २-३,२०-२१ गायत्री;  
५ क्रकुप्; १० त्रिष्टुप्; ११ विराट्; १२ जगती ।

आ नूनमश्विना युवं	वत्सस्यं गन्तमवसे ।		
प्रास्मै यच्छतमवृकं	पृथु च्छर्दि-र्युयुतं या अरातयः	१	
यदन्तरिक्षे यद् दिवि	यत् पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद् धत्तमश्विना	२	४४५
ये वां दंसांस्यश्विना	विप्रांसः परिमामृशुः । एवेत् काण्वस्य बोधतम्	३	
अयं वाँ घर्मो अश्विना	स्तोमैर्न परि पिच्यते ।		
अयं सोमो मधुमान्	वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः	४	
यदप्सु यद् वनस्पतौ	यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् ।		
तेन माविष्टमश्विना		५	
यन्नासत्या भुरण्यथो	यद् वाँ देव भिषज्यथः ।		
अयं वाँ वत्सो मतिभिर्न	धिन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः	६	
आ नूनमश्विनोर्ऋषिः	स्तोमै चिकेत वामया ।		
आ सोमं मधुमत्तमं	घर्मं सिञ्चादथर्वणि	७	४५०
आ नूनं रघुवर्तनिं	रथं तिष्ठथो अश्विना ।		
आ वां स्तोमा इमे मम्	नभो न चुच्यवीरत	८	
यदुद्य वाँ नासत्यो-	कथैराचुच्युवीमहि ।		
यद् वा वाणीभिरश्विने-	वंत् काण्वस्य बोधतम्	९	४५२

यद् वां कक्षीवाँ उत यद् व्यंश्च ऋषिर्यद् वां दीर्घतमा जुहावं ।	
पृथी यद् वां वैन्यः सार्दनेष्वे—वेदतो अश्विना चेतयेथाम्	१०
यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा ।	
वर्तिस्तोकाय तत्रयाय यातम्	११
यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद् वां वायुना भवथः समोकसा ।	
यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद् वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः	१२ ४५५
यदुद्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये ।	
यत् पृत्सु तुर्वणे सह—स्तच्छ्रेष्ठमश्विनोरवः	१३
आ नूनं यातमश्विने—मा हव्यानि वां हिता ।	
इमे सोमांसो अधि तुर्वशे यदा—विभे कर्णेषु वामथं	१४
यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।	
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम्	१५
अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।	
व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः	१६
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि स्रुते महि ।	
प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत्	१७ ४६०
यदुषो यासि भानुना सं स्रवेण रोचसे ।	
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम्	१८
यदापीतासो अंशवो गावो न दुह ऊर्धभिः ।	
यद् वा वाणीरनूषत् प्र देवयन्तो अश्विना	१९
प्र द्युम्नाय प्र शर्वसे प्र नृपाद्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा	२०
यस्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः । यद् वां सुम्नेभिरुक्थ्या	२१ ४६४

॥५०॥ ( ऋ. ८।१०।१-६ )

(४६५-४७०) प्रगाथो (घोरः) काण्वः । १ बृहती, २ मध्येज्योतिः, ३ अनुष्टुप्, (पिंगलमतेन-शंकुमती)

४ आस्तारपङ्क्तिः, ५-६ प्रगाथः = (५ बृहती+ ६ सतोबृहती)

यत् स्थो दीर्घप्रसन्नानि यद् वादो रोचने दिवः ।

यद् वा समुद्रे अघ्याकृते गृहे ऽत आ यातमश्विना

१ ४६५

६० [अश्विनौ] ५

यद् वा यज्ञं मनवे संमिक्षथु—रेवेत् काण्वस्य बोधतम् ।	
बृहस्पतिं विश्वान् देवाँ अहं हुव इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा	२
त्या न्वपुश्विना हुवे सुदंससा गुभे कृता ।	
ययोरस्ति प्र णः सख्यं देवेष्वध्याप्यम्	३
ययोरधि प्र यज्ञा असूरे सन्ति सूरयः ।	
ता यज्ञस्याध्वरस्य प्रचेतसा स्वधाभिर्या पिबतः सोम्यं मधु	४
यदद्याश्विनावपाग् यत् प्राक् स्थो वाजिनीवस्र ।	
यद् द्रुह्यव्यनवि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम्	५
यदुन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा यद् वेमे रोदसी अनु ।	
यद् वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथ—मत आ यातमश्विना	६ ४७०

॥५१॥ ( ऋ. ८।१८।८ )

( ४७१ ) इरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।

उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना । युयुयातामितो रपो अप सिधः ८ ४७१

॥५२॥ ( ऋ. ८।२२।१—१८ )

( ४७२-४८९ ) सोभरिः काण्वः । १—६ प्रगाथः = ( विषमा बृहती+समा सतोबृहती ),

७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ११ ककुप्, १२ मध्येज्योतिः, प्रगाथः =

( ९, १३, १५, १७, ककुप्; १०, १४, १६, १८ सतोबृहती )

ओ त्यमह आ रथ—मद्या दंसिष्ठमूतये ।	
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्याथै तस्थथुः	१
पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्यम् ।	
सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसम्	२
इह त्या पुरुभूतमा देवा नमोभिरश्विना ।	
अर्वाचीना स्ववंसे करामहे गन्तारा द्वाशुषो गृहम्	३
युवो रथस्य परि चक्रमीयत ईर्मान्यद् वामिषण्यति ।	
अस्माँ अच्छा सुमतिर्वा शुभस्पती आ धेनुरिव धावत	४
रथो यो वां त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।	
परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुत—स्तेन नासत्या गतम्	५ ४७६

दशस्यन्ता मनवे पूच्यं दिवि यवं वृकैण कर्षथः ।	
ता वामद्य सुमतिभिः शुभस्पती अश्विना प्र स्तुवीमहि	६
उप नो वाजिनीवसू यातमृतस्य पथिभिः ।	
येभिस्तृक्षि वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः	७
अयं वामद्रिभिः सुतः सोमो नरा वृषण्वसू ।	
आ यातं सोमपीतये पिबतं दाशुषो गृहे	८
आ हि रुहतमश्विना रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वसू । युञ्जाथां पीवरीरिषः	९ ४८०
याभिः पक्थमवथो याभिरधिगुं याभिर्बभ्रुं विजोषसम् ।	
ताभिर्नो मक्षू तूयमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम्	१०
यदधिगावो अधिगू इदा चिदहो अश्विना हवामहे । वयं गीभिर्विपन्यवः	११
ताभिरा यातं वृषणोप मे हवं विश्वप्सुं विश्ववार्यम् ।	
इषा महिष्ठा पुरुभूतमा नरा याभिः क्रिविं वावृधुस्ताभिरा गतम्	१२
ताविदा चिदहानां तावश्विना वन्दमान उप ब्रुवे । ता ऊ नमोभिरीमहे	१३
ताविद् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन् रुद्रवर्तनी ।	
मा नो मर्तीय रिपवे वाजिनीवसू परो रुद्रावति रुयतम्	१४ ४८५
आ सुगम्याय सुगम्यं प्राता रथेनाश्विना वा सक्षणी । हुवे पितेव सोमरी	१५
मनोजवसा वृषणा मदच्युता मक्षुंगमार्भिरुतिभिः ।	
आरात्ताच्चिद् भूतमस्मे अवसे पूर्वाभिः पुरुभोजसा	१६
आ नो अश्वावदश्विना वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा । गोमद् दन्ना हिरण्यवत् १७	
सुप्रावर्ग सुवीर्यं सुष्टु वार्यं—मनाधृष्टं रक्षस्विना ।	
अस्मिन्ना वामायाने वाजिनीवसू विश्वा वामानि धीमहि	१८ ४८९

॥५३॥ ( क्र. ८।२६।१—१९ )

(४९०-५०८) विश्वमना वैश्वः, व्यश्वो वाङ्गिरसः । उणिक्: १६—१९, गायत्री ।

युवोरु पू रथं हुवे सधस्तुत्याय सूरिषु	। अतूर्तदक्षा वृषणा वृषण्वसू	१ ४९०
युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या	। अवोभिर्याथो वृषणा वृषण्वसू	२
ता वामद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवसू	। पूर्वारिष इषयन्तावति क्षपः	३
आ वां वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतो नरा । उप स्तोमान् तुरस्य दर्शथः श्रियेष्ठ		४९३

जुहुराणा चिदश्विना	ऽऽमन्येथां वृषण्वसू	। युवं हि रुद्रा पर्षथो अति द्विषः ५	
दुस्रा हि विश्वमानुषद्	मक्षुभिः परिदीयथः	। धियंजिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती ६	४९५
उप नो यातमश्विना	राया विश्वपुषा सह	। मघवाना सुवीरावर्नपच्युता ७	
आ मे अस्य प्रतीव्यः	मिन्द्रनासत्या गतम्	। देवा देवेभिर्य सचनस्तमा ८	
वयं हि वां हवामह	उक्षण्यन्तो व्यश्ववत्	। सुमतिभिरुप विप्राविहा गतम् ९	
अश्विना स्वृषे स्तुहि	कुवित् ते श्रवतो हवम्	। नेदीयसः कूकयातः पर्णीरुत १०	
वैयश्वस्य श्रुतं नरो	तो मे अस्य वेदथः	। सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ११	५००
युवादत्तस्य धिण्या	युवानीतस्य सूरिभिः	। अहरहर्वृषणा मख्यं शिक्षतम् १२	
यो वां यज्ञेभिरावृतो	ऽधिवस्त्रा वधूरिव	। सपर्यन्ता शुभे चक्राते अश्विना १३	
यो वांमुरुच्यचस्तमं	चिकेतति नृपाय्यम्	। वृतिरश्विना परि यातमस्मयू १४	
अस्मभ्यं सु वृषण्वघ्न	यातं वृतिर्नृपाय्यम्	। विपुद्रुहेव यज्ञमूहथुर्गिरा १५	
वाहिष्ठो वां हवानां	स्तोमो दूतो हुवन्नरा	। युवाभ्यां भूत्वश्विना १६	५०५
यद्ददो दिवो अर्णव	इषो वा मदथो गृहे	। श्रुतमिन्मे अमर्त्या १७	
उत स्या श्वेतयावरी	वाहिष्ठा वां नदीनाम्	। सिन्धुहिरण्यवर्तनिः १८	
स्मदेतया सुक्रीत्या	ऽश्विना श्वेतया धिया	। वहेथे शुभ्रयावाना १९	५०८

॥५४॥ (क. ट।३५।१—२४)

(५०९—५३२) श्यावाश्व आत्रेयः । उपरिष्ठाज्ज्योतिः (त्रिष्टुप्), २२, २४ पङ्क्तिः, २३ महावृहती ।

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुना	ऽऽदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च	सोमं पिबतमश्विना	१
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन वाजिना	दिवा पृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च	सोमं पिबतमश्विना	२ ५१०
विश्वेदेवैस्त्रिभिरैकादशैरिहा	ऽद्भिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च	सोमं पिबतमश्विना	३
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे	विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च	पं नो वोळ्हमश्विना	४
स्तोमं जुषेथां युवशेवं कन्यनां	विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च	पं नो वोळ्हमश्विना	५ ५१३

गिरो जुषेथामध्वरं जुषेथां विश्वेह देवौ सवनावं गच्छतम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चोषं नो वोळ्हमश्विना	६
हारिद्रवेवं पतथो वनेदुप सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वित्तिर्यातमश्विना	७ ५१५
हंसारिव पतथो अध्वगाविव सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वित्तिर्यातमश्विना	८
श्येनाविव पतथो हव्यदातये सोमं सुतं महिषेवावं गच्छथः ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वित्तिर्यातमश्विना	९
पिबतं च तृष्णतं चा चं गच्छतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चोर्जी नो धत्तमश्विना	१०
जयतं च प्र स्तुतं च प्र चावतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चोर्जी नो धत्तमश्विना	११
हतं च शत्रून् यततं च मित्रिणः प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चोर्जी नो धत्तमश्विना	१२ ५२०
मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चाऽऽदित्यैर्यातमश्विना	१३
अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चाऽऽदित्यैर्यातमश्विना	१४
ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चाऽऽदित्यैर्यातमश्विना	१५
ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः	
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना	१६
क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नृन् हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना	१७ ५२५
धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना	१८
अत्रैरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चाऽऽश्विना तिरोअह्वयम्	१९ ५२७

सर्गा इव सृजतं सुष्टुतीरुषं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मंदच्युता ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअह्वयम्	२०
रश्मीरिव यच्छतमध्वराँ उषं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मंदच्युता ।	
सजोषसा उषसा सूर्येण चा—ऽश्विना तिरोअह्वयम्	२१
अर्वाग् रथं नि यच्छतं पिवंतं सोम्यं मधुं ।	
आ यातमश्विना गतं—मवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि द्वाशुषे	२२ ५३०
नमोवाके प्रस्थिते अध्वरे नरा विवर्क्षणस्य पीतये ।	
आ यातमश्विना गतं—मवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि द्वाशुषे	२३
स्वाहाकृतस्य तम्पतं सुतस्य देवान्धसः ।	
आ यातमश्विना गतं—मवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि द्वाशुषे	२४ ५३२

॥५५॥ ( क्र. ८१४२१४—६ )

( ५३३—५३५ ) नाभाकः काण्वः, अर्चनाना आश्रेयो वा । अनुष्टुप् ।

आ वां ग्रावाणो अश्विना धीभिर्विप्रा अचुच्यवुः ।	
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे	४
यथा वामत्रिरश्विना गीभिर्विप्रो अजोहवीत् ।	
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे	५
एवा वामह उतये यथाहुवन्त मेधिराः ।	
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे	६ ५३५

॥५६॥ ( क्र. ८१५७ । [ ९ बाल० ] १-४ )

( ५३६—५३० ) मेध्यः काण्वः । त्रिष्टुप् ।

युवं देवा क्रतुना पूर्येण युक्ता रथेन तविषं यजत्रा ।	
आगच्छतं नासत्या शचीभि—रिदं तृतीयं सर्वनं पिवाथः	१
युवां देवास्त्रय एकादुशासः सत्याः सत्यस्य ददशे पुरस्तात् ।	
अस्माकं यज्ञं सर्वनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीर्घशी	२
पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः ।	
सहस्रं शंसा उत ये गर्विष्टौ सर्वाँ इत् ताँ उषं याता पिव्रध्वै	३
अयं वां भागो निर्हितो यजत्रे—मा गिरो नासत्योषं यातम् ।	
पिवंतं सोमं मधुमन्तमस्मे प्र द्वाश्वाममवतं शचीभिः	४ ५३९

॥५७॥ ( ऋ. ८।७३।१-१८ )

( ५४०—५५७ ) गोपवन आत्रेयः सप्तवधिवर्षा । गायत्री ।

उदीराथामृतायते	युञ्जाथामश्विना रथम्	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१	५४०
निमिषाश्चिञ्जवीयसा	रथेना यातमश्विना	। अन्ति षड्भूतु वामवः	२	
उप स्तृणीतमत्रये	हिमेन घर्ममश्विना	। अन्ति षड्भूतु वामवः	३	
कुहं स्थः कुहं जग्मथुः	कुहं श्येनेव पेतथुः	। अन्ति षड्भूतु वामवः	४	
यदुद्य कर्हि कर्हि चि	च्छ्रुयातमिमं हवम्	। अन्ति षड्भूतु वामवः	५	
अश्विना यामहूतमा	नेदिष्ठं याम्याप्यम्	। अन्ति षड्भूतु वामवः	६	५४५
अवन्तमत्रये गृहं	कृणुतं युवमश्विना	। अन्ति षड्भूतु वामवः	७	
वरेथे अभिमातपो	वदते वल्गवत्रये	। अन्ति षड्भूतु वामवः	८	
प्र सप्तवधिराशसा	धारांमभेरशायत	। अन्ति षड्भूतु वामवः	९	
इहा गतं वृषण्वसू	शृणुतं मे इमं हवम्	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१०	
किमिदं वां पुराणव	जरतोरिव शस्यते	। अन्ति षड्भूतु वामवः	११	५५०
समानं वां सजात्यं	समानो बन्धुरश्विना	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१२	
यो वां रजांस्यश्विना	रथो वियाति रोदसी	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१३	
आ नो गव्येभिरश्व्यैः	सहसैरुप गच्छतम्	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१४	
मा नो गव्येभिरश्व्यैः	सहसैभिरति ख्यतम्	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१५	
अरुणप्सुरुषा अभू	दकज्योतिर्ऋतावरी	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१६	५५५
अश्विना सु विचाकशद्	वृक्षं परशुमां इव	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१७	
पुरं न धृष्णवा रुज	कृष्ण्या बाधितो विशा	। अन्ति षड्भूतु वामवः	१८	५५७

॥५८॥ ( ऋ. ८।८५।१-९ )

( ५५८—५६६ ) कृष्ण आङ्गिरसः । गायत्री ।

आ मे हवै नासत्या	ऽश्विना गच्छतं युवम्	। मध्वः सोमस्य पीतये	१	
इमं मे स्तोममश्विने	मं मे शृणुतं हवम्	। मध्वः सोमस्य पीतये	२	
अयं वां कृष्णो अश्विना	हवते वाजिनीवसू	। मध्वः सोमस्य पीतये	३	५६०
शृणुतं जरितुर्हवं	कृष्णस्य स्तुवतो नरा	। मध्वः सोमस्य पीतये	४	
छर्दिर्यन्तमदाभ्यं	विप्राय स्तुवते नरा	। मध्वः सोमस्य पीतये	५	
गच्छतं दाशुषो गृह	मित्था स्तुवतो अश्विना	। मध्वः सोमस्य पीतये	६	५६३



युञ्जाथां रासंभं रथे	वीङ्गै वृषण्वसू	। मध्वः सोमस्य पीतये	७
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता	रथेना यातमश्विना	। मध्वः सोमस्य पीतये	८
नू मे गिरो नासत्या	ऽश्विना प्रावतं युवम्	। मध्वः सोमस्य पीतये	९ ५६६

॥५९॥ (क. ८।८६।१—५)

(५६७—५७१) कृष्ण आङ्गिरसः, विश्वको वा कार्णिणः । जगती ।

उभा हि दुस्त्रा भिषजा मयोभ्रुवो	भा दक्षस्य वचसो बभूवथुः ।	
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे	मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	१
कथा नूनं वां विमना उप स्तव	द्युवं धियं ददथुर्वस्येष्टये ।	
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे	मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	२
युवं हि ष्मा पुरुभ्रुजेममैधतुं	विष्णाप्ये ददथुर्वस्येष्टये ।	
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे	मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	३
उत त्यं वीरं धनसामृजीषिणं	दूरे चित् सन्तमवसे हवामहे ।	
यस्य स्वादिष्ठा सुमतिः पितुर्यथा	मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	४
ऋतेन देवः सविता शमायत	ऋतस्य शृङ्गमुर्विया वि पप्रथे ।	
ऋतं सासाह महि चित् पृतन्यतो	मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम्	५ ५७१

॥६०॥ (क. ८।८७।१—६)

(५७२—५७७) कृष्ण आङ्गिरसो वासिष्ठो वा द्युस्त्रिकः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा ।

प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती )

द्युस्त्री वां स्तोमो अश्विना	क्रिविर्न सेक आ गतम् ।	
मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा	पातं गौराविवेरिणे	१
पिबतं धर्मं मधुमन्तमश्विना	ऽऽ बर्हिः सीदतं नरा ।	
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ	नि पातं वेदसा वयः	२
आ वां विश्वाभिरूतिभिः	प्रियमेधा अहूषत ।	
ता वर्तिर्यातद्युषं वृक्तबर्हिषो	जुष्टं यज्ञं दिविष्टिषु	३
पिबतं सोमं मधुमन्तमश्विना	ऽऽ बर्हिः सीदतं सुमत् ।	
ता वावृधाना उप सुष्टुतिं दिवो	गन्तं गौराविवेरिणम्	४
आ नूनं यातमश्विना	ऽश्वैभिः प्रुषितप्सुभिः ।	
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी शुभस्पती	पातं सोममृतावृधा	५ ५७६

वयं हि वां हवामहे विपन्यवो विप्रासो वाजसातये ।  
ता वल्गू दुस्त्रा पुरुदंससा धिया ऽश्विना श्रुष्ट्या गतम्

६ ५७७

॥६१॥ ( ऋ. ८।१०१।७-८ )

( ५७८-५७९ ) जमदग्निर्भागवः । प्रगाथः = ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

आ मे वचांस्युद्यता द्युमत्तमानि कर्त्वी ।  
उभा यातं नासत्या सजोषसा प्रति ह्वयानि वीतये  
रातिं यद् वामरक्षसं हवामहे युवाभ्यां वाजिनीवस्र ।  
प्राचीं होत्रां प्रतिरन्तावितं नरा गृणाना जमदग्निना

७

८ ५७९

॥६२॥ ( ऋ. १०।२४।४-६ )

( ५८०-५८२ ) ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुकृद्वा । अनुष्टुप् ।

युवं शक्रा मायाविना समीची निरमन्थतम् ।  
विमदेन यदीळिता नासत्या निरमन्थतम्  
विश्वे देवा अकृपन्त समीच्योर्निष्पतन्त्योः ।  
नासत्यावञ्चवन् देवाः पुनरा बहतादिति  
मधुमन्मे परार्यणं मधुमत् पुनरार्यनम् ।  
ता नो देवा देवतया युवं मधुमतस्कृतम्

४

५

६ ५८२

॥६३॥ ( ऋ. १०।३९।१-१४ )

( ५८३-६१० ) काक्षीवती घोषा । जगती, १४ त्रिष्टुप् ।

यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथो दोषामुषासो हव्यो हविष्मता ।  
शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे  
चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धिय उत् पुरंधीरीरयतं तदुश्मसि ।  
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम्  
अमाजुरश्विद् भवथो युवं भगो ऽनाशोश्विदवितारापमस्यं चित् ।  
अन्धस्यं चिन्नासत्या कृशस्यं चिद् युवामिदाहुभिषजा रुतस्यं चित्  
युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।  
निष्टौग्रयमूहथुरद्भ्यस्परि विश्वेत् ता वां सर्वनेषु प्रवाच्या  
पुराणा वां वीर्याई प्र ब्रवा जने ऽथो हासथुभिषजा मयोभुवा ।  
ता वां नु नव्याववसे करामहे ऽयं नासत्या अद्ररिथ्या दधत्

१

२

३ ५८५

४

५ ५८७

इयं वामहे शृणुतं मे अश्विना	पुत्रायैव पितरा मह्यं शिक्षतम् ।	
अनापिरज्ञा असजात्यामतिः	पुरा तस्या अमिशस्तेरव स्पृतम्	६
युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं	न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् ।	
युवं हवं वधिमत्या अगच्छतं	युवं सुषुतिं चक्रथुः पुरंधये	७
युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः	पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः ।	
युवं वन्दनमृश्यदादुदूपथु	युवं सद्यो विश्पलामेतवे कृथः	८ ५९०
युवं ह रेभं वृषणा गुहा हित	सुदैरयतं ममृवांसमश्विना ।	
युवमृवीसमुत तप्तमत्रय	ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवध्रये	९
युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं	नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ।	
चर्कृत्यं ददथुर्द्रावयत्सखं	भगं न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम्	१०
न तं राजानावदिते कुतश्चन	नाहो अश्रोति दुरितं नकिर्भयम् ।	
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी	पुरोरथं कृणुथः पत्न्या सह	११
आ तेन यातं मनसो जवीयसा	रथं ये वामृभवश्चक्रुरश्विना ।	
यस्य योगे दुहिता जायते दिव	उभे अहनी सुदिने विवस्वतः	१२
ता वर्तिर्यातं जयुषा वि पर्वत	मर्पिन्वतं शयवे धेनुमश्विना ।	
वृकस्य चिद् वर्तिकामन्तरास्याद्	युवं शचीभिर्गसिताममुञ्चतम्	१३ ५९५
एतं वां स्तोममश्विनावकर्मा	तक्षाम भृगवो न रथम् ।	
न्यमृक्षाम योषणां न मर्ये	नित्यं न सूनुं तनयं दधानाः	१४

॥६४॥ ( ऋ. १०।४०।१-१४ )

रथं यान्तं कुह को ह वां नरा	प्रति द्युमन्तं सुविताय भूषति ।	
प्रातर्यावाणं विभ्वं विशेविशे	वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धिया शर्मि	१
कुहं स्विद् दोषा कुह वस्तोरश्विना	कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः ।	
को वां शयुत्रा विधवेव देवरं	मर्यं न योषां कृणुते सधस्थ आ	२
प्रातर्जरेथे जरणेव कार्पया	वस्तोर्वस्तोर्यजता गच्छथो गृहम् ।	
कस्य ध्वस्ता भवथः कस्य वा नरा	राजपुत्रेव सवनाव गच्छथः	३
युवां मृगेव वारणा मृगण्यवो	दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे ।	
युवं होत्रामृतुथा जुहते नरे	षु जनाय वहथः शुभस्पती	४ ६००

युवां ह घोषा पर्यश्विना यती	राज्ञ ऊचे दुहिता पुच्छे वां नरा ।	
भूतं मे अहं उत भूतमक्तवे	ऽश्वावते रथिने शक्तमर्वते	५
युवं कवी ष्टः पर्यश्विना रथं	विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथः ।	
युवोर्ह मक्षा पर्यश्विना मध्वा	सा भरत निष्कृतं न योषणा	६
युवं ह भुज्युं युवमश्विना वशं	युवं शिञ्जारमुशनामुपारथुः ।	
युवो ररावा परिं सख्यमासते	युवोरुहमवसा सुस्रमा चके	७
युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं	युवं विधन्तं विधवांमुरुष्यथः ।	
युवं सनिभ्यः स्तनयन्तमश्विना	ऽपं व्रजमूर्णथः सप्तास्यम्	८
जनिष्ट योषां पतर्यत् कनीनको	वि चारुहन् वीरुधो दुंसना अनु ।	
आस्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवो	ऽस्मा अहं भवति तत् पतित्वनम्	९ ६०५
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते अध्वरे	दीर्घामनु प्रसिति दीधियुर्नरः ।	
धामं पितृभ्यो य इदं समेरिरे	मयः पतिभ्यो जनयः परिष्वजे	१०
न तस्य विद्म तद्दु षु प्र वोचत	युवां ह यद् युवत्याः क्षेति योनिषु ।	
प्रियोस्त्रियस्य वृषभस्य रेतिनो	गृहं गमेमाश्विना तदुश्मसि	११
आ वामगन्त्सुमतिर्वाजिनीवसू	न्यश्विना हत्सु कामा अयंसत ।	
अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती	प्रिया अर्यम्णो दुर्यां अशीमहि	१२
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ	धत्तं रथि सहवीरं वचस्यवे ।	
कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती	स्थाणुं पथेष्ठामपं दुर्मतिं हतम्	१३
कं स्विदद्य कतमास्वश्विना	विभु दस्ता मादयेते शुभस्पती ।	
क इ नि येमे कतमस्य जग्मतु	विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम्	१४ ६१०

॥६५॥ (ऋ. १०.४१।१-३)

(६११-६१३) सुहस्त्यो घौषेयः । जगती ।

समानमु त्यं पुरुहूतमुक्थ्यं	रथं त्रिचक्रं सर्वना गनिगमतम् ।	
परिजमानं विदुष्यं सुवृक्तिभिर्व्यं	व्युष्टा उषसो हवामहे	१
प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथः	प्रातर्यावाणं मधुवाहनं रथम् ।	
विशो येन गच्छथो यज्वरीनरा	कीरेश्चिद् यज्ञं होतृमन्तमश्विना	२
अध्वर्यु वा मधुपाणिं सुहस्त्यं	मग्निधं वा धृतदक्षं दमूनसम् ।	
विप्रस्य वा यत् सर्वनानि गच्छथो	ऽत् आ यातं मधुपेयमश्विना	३ ६१३

॥६६॥ ( ऋ. १०।१०६।१-११ )

(६१४-६२४) भूतांशः काश्यपः । त्रिष्टुप् ।

उभा उं नूनं तदिदर्थयेथे वि तन्वाथे धियो वस्त्रापसैव ।	
सुधीचीना यातवे प्रेमजीगः सुदिनेव पृक्ष आ तसयेथे	१
उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे प्रायोगेव श्वात्र्या शासुरेथः ।	
दूतेव हि षो यशसा जनेषु मापं स्यातं महिषेवावपानात्	२ ६१५
साक्युजा शकुनस्यैव पक्षा पश्वेव चित्रा यजुरा गमिष्टम् ।	
अग्निरिव देवयोदीदिवासा परिजमानेव यजथः पुरुत्रा	३
आपी वो अस्मे पितरेव पुत्रो—ग्रेव रुचा नृपतीव तुर्यै ।	
इर्येव पुष्ट्यै किरणैव भुज्यै श्रुष्टीवानेव हवमा गमिष्टम्	४
वंसगेव पूषयीं शिम्वाता मित्रेव ऋता शतरा शातपन्ता ।	
वाजेवोच्चा वयसा घर्म्येष्टा मेषेवेषा सपर्याइ पुरीषा	५
सृण्येव जर्भरीं तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरीं पर्फरीका ।	
उदुन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु	६
पञ्जेव चर्चरं जारं मरायु क्षत्रेवार्थेषु तर्तरीथ उग्रा ।	
ऋभू नापत् खरमज्जा खरज्जु—र्वायुर्न पर्फरत् क्षयद् रयीणाम्	७ ६२०
घर्मेव मधु जठरं सनेरू भगेविता तुर्फरी फारिवारम् ।	
पतरेव चचरा चन्द्रनिर्णिङ् मनऋङ्गा मनन्याइ न जग्मी	८
बृहन्तेव गम्भरेषु प्रतिष्ठां पादेव गाधं तरते विदाथः ।	
कर्णेव शासुरनु हि स्मराथो—ऽशैव नो भजतं चित्रमग्नः	९
आरङ्गरेव मध्वेरयेथे सारधेव गर्वि नीचीनवारे ।	
कीनारेव स्वेदमासिष्विदाना क्षामेवोर्जा स्यवसात् संचेथे	१०
ऋध्याम स्तोमं सनुयाम वाज—मा नो मन्त्रं सरथेहोपं यातम् ।	
यशो न पक्कं मधु गोष्वन्त—रा भूतांशो अश्विनोः काममप्राः	११ ६२४

॥६७॥ ( ऋ. १०।१३।४—५ )

(६२५-६२६) सुकीर्तिः काक्षीवतः । ४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

युवं सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा । विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ६२५

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावधुः काव्यैर्दसनाभिः ।  
यत् सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक्

५ ६१६

॥६८॥ ( ऋ. १०।१४३।१-६ )

(६२७-६३२) अत्रिः सांख्यः । अनुष्टुप् ।

त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे ।  
कक्षीवन्तं यदी पुना रथं न कृणुथो नर्वम्  
त्यं चिदश्वं न वाजिनमरेणवो यमत्त ।  
दृळ्हं ग्रन्थि न विष्यत्मत्रि यविष्ठमा रजः  
नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः ।  
अथा हि वां दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे  
चिते तद् वां सुराधसा रातिः सुमतिरश्विना ।  
आ यन्नः सदेने पृथौ समने पर्षथो नरा  
युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईङ्खितम् ।  
यातमच्छा पत्रिभिर्नासत्या सातर्ये कृतम्  
आ वां सुमैः शंयु इव मंहिष्ठा विश्ववेदसा ।  
समस्मे भूषतं नरोत्सं न पिप्युषीरिषः

१

२

३

४ ६३०

५

६ ६३२

॥६९॥ ( ऋ. १०।१८४।३ )

(६३३) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

हिरण्ययी अरणी यं निर्मन्थतो अश्विना ।  
तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि स्रतवे

३ ६३३

॥७०॥ (६३४-६३८) ( वा. य. १४।१-५ )

ध्रुवक्षितिध्रुवयोनिध्रुवासि ध्रुवं योनिमासीद साधुया ।  
उख्यस्य केतुं प्रथमं जुषाणाश्विनाध्वर्यु सादयतामिह त्वां  
कुलायिनीं घृतवती पुरन्धिः स्योने सीद सदेने पृथिव्याः ।  
अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणान्त्विमा ब्रह्म पीपिहि सौभगायाश्विनाध्वर्यु

१

सादयतामिह त्वां २ ६३५

स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीद देवानां सुम्ने बृहते रणाय ।

पितेवैधि सूनवऽआ सुशेवां स्वावेशा तन्वा संविशस्वाश्विनां ध्वर्यु सादयतामिह त्वा ३

पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वेऽअभिगृणन्तु देवाः ।

स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्वाश्विनां ध्वर्यु सादयतामिह त्वा ४

अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम् ।

ऊर्मिर्द्रप्सोऽअपामसि विश्वकर्मा तऽऋषिरश्विनां ध्वर्यु सादयतामिह त्वा ५ ६३८

॥७१॥ (६३९--६४०) ( वा. य. ३८।१०,१३ )

विश्वाऽआशा दक्षिणसद् विश्वान् देवानयाडिह ।

स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मर्धोः पिवतमश्विना १०

अपातामश्विनां घर्ममनु द्यावापृथिवीऽअमसाताम् ।

इहैव रातर्यः सन्तु १३ ६४०

॥७२॥ ( साम० ३०५ )

(६४१) अश्विनौ वैवस्यतौ । बृहती ।

कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः ।

घृता वामश्विनया क्षयमाणाऽशुनेत्थमु आद्रन्यथा ३ ६४१

॥७३॥ (अथर्व० २।२९।६)

(६४२—६४५) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चाः ।

सवासिनौ पिवतां मन्थमेतमश्विनो रूपं परिधाय मायाम् ६

॥७४॥ (अथर्व० ६।५०।१-३)

अथर्वा (अभयकामः) । १ विराड् जगती, २-३ पथ्यापङ्क्तिः ।

हतं तर्दं समङ्कमाखुमश्विना छिन्तं शिरो अपि पृष्ठीः शृणीतम् ।

यवान्नेददानपि नह्यतं मुखमथार्भयं कृणुतं धान्यायि १

तर्द है पतङ्ग है जभ्य हा उपक्वस ।

ब्रह्मेवासंस्थितं हविरनदन्त इमान्यवानहिंसन्तो अपोदित २ ६४४

तर्दीपते वर्धापते तृष्टंजम्भा आ शृणोत मे ।

य आरण्या व्यद्विरा ये के च स्थ व्यद्विरास्तान्त्सर्वान् जम्भयामसि ३ ६४५

॥७५॥ ( अथर्व० २।३०।२ )

(६४६) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

सं चेन्नयाथो अश्विना कामिना सं च वर्क्षथः ।

सं वां भगांसो अगमत सं चित्तानि समु व्रता २ ६४६

॥७६॥ ( अथर्व० ६।१०।१-३ )

( ६४७—६४९ ) जमदग्निः । अनुष्टुप् ।

यथायं वाहो अश्विना समैति सं च वर्तते । एवा मामभि ते मनः समैतु सं च वर्तताम् ।  
आहं खिदामि ते मनो राजाश्वः पृष्टयामिव । रेष्मच्छिन्नं यथा तृणं मयि ते वेष्टतां मनः ।  
आञ्जनस्य मद्दुर्घस्य कुष्ठस्य नलदस्य च । तुरो भगस्य हस्ताभ्यामनुरोधनमुद्गरे ३ ६४९

॥७७॥ ( अथर्व० ६।१४।१-३ )

( ६५०—६५२ ) विश्वामित्रः । अनुष्टुप् ।

वायुरेनाः समाकर्तु त्वष्टा पोषाय ध्रियताम् । इन्द्रं आभ्यो अधि ब्रवद् रुद्रो भूम्ने चिकित्सतु ।  
लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि । अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु २  
यथा चक्रुर्देवासुरा यथा मनुष्या उत । एवा संहस्रपोषाय कृणुतं लक्ष्माश्विना ३ ६५२

अश्विसहचारी-देवगणः ।

### (१) अश्विसरस्वतीन्द्राः ।

+॥७८॥ (६५३—६६९) ( वा. य. १९।३३-३५ )

यस्ते रसः सम्भृतऽओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य ।

तेन जिन्व यजमानं मदेन सरस्वतीमश्विना विन्द्रमग्निम् ३३

यमश्विना नमुचेरासुरादाधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय ।

इमं तं शुक्रं मधुमन्तमिन्दुं सोमं राजानमिह भक्षयामि ३४

यदत्र रिप्तं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रोऽर्पिबच्छचीभिः ।

अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमं राजानमिह भक्षयामि ३५ ६५५

+वा० य० २०।५५-६६; २१।२९-४० । दै०[अग्निः] २०२५-२०३६; २०४८-२०५९

„ „ १९।३२,८०-५९; २०।७३-७७,८०,९० । दै०[इन्द्रः] २९३७-२९५३; २९५७-२९६३ ।



॥७९॥ ( वा. य. २०।६७-६९ )

अश्विनां हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती ।

आ शुक्रमासुराद्रसु मधमिन्द्राय जध्रिरे

६७

यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयन् ।

स बिभेद वलं मघं नमुचावासुरे सचा

६८

तमिन्द्रं पशवः सचाश्विनोभा सरस्वती ।

दधानाऽअभ्युनूषत हविषा यज्ञऽइन्द्रियैः

६९

॥८०॥ ( वा. य. २१।४८-५८ )

देवं बर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रेऽअश्विनां ।

तेजो न चक्षुरक्ष्योर्बर्हिषां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

४८

देवीर्द्वारोऽअश्विनां भिषजेन्द्रे सरस्वती ।

प्राणं न वीर्यं नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

४९

६६०

देवीऽउषासावश्विनां सुत्रामेन्द्रे सरस्वती ।

बलं न वाचमास्य ऽउषाभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

५०

देवी जोष्टी सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन् ।

श्रोत्रं न कर्णयोर्यशो जोष्टीभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

५१

देवीऽऊर्जाहुती दुर्घे सुदुधेन्द्रे सरस्वत्यश्विनां भिषजावतः ।

शुक्रं न ज्योति स्तनयोराहुती धत्तऽइन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

५२

देवा देवानां भिषजा होताऽराविन्द्रमश्विनां ।

वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिं होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

५३

देवीस्तिस्तिस्तिस्त्रो देवीरश्विनेडा सरस्वती ।

शूषं न मध्ये नाभ्यामिन्द्राय दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

५४

६६५

देवऽइन्द्रो नराशंसस्त्रिवरूथः सरस्वत्यश्विभ्यामीयते रथः ।

रेतो न रूपममृतं जनित्रमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो ऽअश्विभ्यां सरस्वत्या सुपिप्पलऽइन्द्राय पच्यते मधु ।

ओजो न जूतिर्ऋषभो न भामं वनस्पतिर्नो दधदिन्द्रियाणि

वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

५६

६६७

देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सद्दः ।  
 ईशायै मन्युः राजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेर्यस्य व्यन्तु यज ५७  
 देवोऽग्निः स्विष्टकृद् देवान् यक्षद् यथायथः होताराविन्द्रमश्विना वाचा वाचः सरस्वती-  
 मग्निः सोमः स्विष्टकृत् स्विष्टऽइन्द्रः सुत्रामा सविता वरुणो भिषगिष्टो देवो वनस्पतिः स्विष्टा  
 देवाऽआज्यपाः स्विष्टोऽग्निरग्निना होता होत्रे स्विष्टकृद् यज्ञो न दधदिन्द्रियमूर्जमपचितिः  
 स्वधां वसुवने वसुधेर्यस्य व्यन्तु यज ५८ ६६९

### (२) अश्विसूर्यादयः ।

॥८१॥ (वा० य० ३८।१२)

अश्विना घर्म पातः हार्द्वानमहर्दिवाभिरूतिभिः ।  
 तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम्

१२ ६७०

### (३) अश्विनौ, बृहस्पतिः ।

॥८२॥ (अथर्व० ५।२६।१२)

( ६७१ ) ब्रह्मा । परानिशक्वरी चतुष्पदा गायत्री ।

अश्विना ब्रह्मणा यातमर्वाञ्चौ वषट्कारेण यज्ञं वर्धयन्तौ ।  
 बृहस्पते ब्रह्मणा याहर्वाङ् यज्ञो अयं स्वरिदं यजमानाय स्वाहा

१२ ६७१

### (४) इयेनः, अश्विनौ ।

॥८३॥ (अथर्व० ३।३।४)

(६७२-६८८) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

इयेनो ह्वयं मेयत्वा परस्मादन्यक्षेत्रे अपरुद्धं चरन्तम् ।  
 अश्विना पन्थां कृणुतां सुगं त इमं संजाता अभिसंविशध्वम्

४

### (५) अश्विनौ, द्यौष्पिता ।

॥८४॥ (अथर्व० ६।४।३) त्रिपदा विराङ् गायत्री ।

धिये समश्विना प्रावतं न उरुष्या ण उरुज्मन्नप्रयुच्छन् ।  
 द्यौष्पितर्यावयं दुच्छुना या

५ ६७३

## (६) बृहस्पतिः, अश्विनौ ।

॥८५॥ ( अथर्व० ६।६९।१-३ ) अनुष्टुप् ।

गिरावरगराटेषु हिरण्ये गोषु यद्यशः । सुरायां सिच्यमानायां कीलाले मधु तन्मयि १  
 अश्विना सारधेर्ण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती । यथा भर्गस्वतीं वाचमावदानि जनां अनु२ ६७५  
 मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत् पर्यः । तन्मयि प्रजापतिं दिवि घामिब दंहतु३

## (७) सांमनस्यं, अश्विनौ ।

॥८६॥ ( अथर्व० ७।५२।१-२ ) १ ककुम्मत्यनुष्टुप्, २ जगती ।

संज्ञानं नः स्वैभिः संज्ञानमरणेभिः ।  
 संज्ञानमश्विना युवमिहास्मासु नि यच्छतम् १  
 सं जानामहै मनसा सं चिकित्वा मा युष्महि मनसा दैव्येन ।  
 मा घोषा उत्सुर्बहुले विनिर्हते मेषुः पप्रदिन्द्रस्याहन्यागते २

## (८) घर्मः, अश्विनौ ।

॥८७॥ ( अथर्व० ७।७३।१-५, ८ ) १, ४ जगती, २ पथ्याबृहती, ३, ५, ८ त्रिष्टुप् ।

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुह्यते वामिषे मधु ।  
 वयं हि वां पुरुदमासो अश्विना हवामहे सधमादेषु कारवः १  
 समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो वां घर्म आ गतम् ।  
 दुह्यन्ते नूनं वृषणेह धेनवो दस्रा मदन्ति वेधसः २ ६८०  
 स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञो यो अश्विनोश्चमसो देवपानः ।  
 तसु विश्वे अमृतासो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति ३  
 यदुस्त्रियास्वाहुतं घृतं पयोऽयं स वामश्विना भाग आ गतम् ।  
 माध्वीं धर्तारा विदथस्य सत्पती तप्तं घर्मं पिबतं रोचने दिवः ४  
 तप्तो वां घर्मो नक्षतु स्वहोता प्र वामध्वर्युश्चरतु पर्यस्वान् ।  
 मधोर्दुग्धस्याश्विना तनायां वीतं पातं पर्यस उस्त्रियायाः ५  
 द्विङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसा न्यागन् ।  
 दुहामश्विभ्यां पयो अण्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय ६ ६८४

## (९) मधु, अश्विनौ ।

॥८८॥ ( अथर्व० ९।१।११, १६-१७, १९ ) अनुष्टुप्, १७ उपरिष्ठाद्विराड् बृहती ।

यथा सोमः प्रातःसवने अश्विनोर्भवति प्रियः ।

एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि ध्रियताम् ११ ६८५

यथा मधु मधुकृतः संभरन्ति मधावधि ।

एवा मे अश्विना वर्च आत्मनि ध्रियताम् १६

यथा मक्षा इदं मधु न्यञ्जन्ति मधावधि ।

एवा मे अश्विना वर्चस्तेजो बलमोजश्च ध्रियताम् १७

अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती ।

यथा वर्चस्वतीं वाचमावदानि जनां अनु १९ ६८८

## (१०) सिनीवालीसरस्वत्यश्विनः ।

॥८९॥ ( ऋ. १०।१८४।२ )

(६८९) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

गर्भे धेहि सिनीवाल्लि गर्भे धेहि सरस्वति ।

गर्भे ते अश्विनौ देवावा धत्तां पुष्करस्रजा

२ ६८९



# अश्विनौ-देवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [५] १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)  
अश्विनावेह गच्छताम् ।  
अस्य सोमस्य पीतये ।  
(२८४) ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)  
अश्विनावेह गच्छतं ।  
(२९७) ५।७८।१ (सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ)  
(इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायुः)  
—हवामहे ।  
अस्य सोमस्य पीतये ।  
(इन्द्रः ३३२१) ४।४९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्राबृहस्पती)  
५।७१।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणा)  
अस्य... ।  
(इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)  
अस्य... ।  
(इन्द्रः ६३३) ८।७६।६ (कुरुमुक्तिः काण्वः । इन्द्रः)  
अस्य... ।  
(मरुतः ४०४-६) ८।९४।१०-१२ (विन्दुः पूतदक्षो  
वा आङ्गिरसः । मरुतः)
- [६] १।२२।२ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)  
उभा देवा दिविस्पृशा । ...हवामहे ।  
(इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायुः)  
उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।
- [७] १।२२।३ तथा यज्ञं मिमिक्षतम् ।  
(४२) १।४७।४ मन्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
- [१०] १।३०।१८ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अश्विनौ)  
समानयोजनो हि वां रथो दस्त्रावमर्त्यः ।  
(२८६) ५।७५।९ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)  
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्त्रावमर्त्यः ।
- [११] १।३०।१९ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अश्विनौ)  
चक्रं रथस्य येमथुः। परि दामन्यदीयते ।  
(२६०) ५।७३।३ (पीर आत्रेयः । अश्विनौ)  
ईर्मन्यद् वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः ।  
पर्यन्या... दीयथः ।
- [११] १।३४।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
मध्वः पिवतं मधुपेभिरासभिः ।  
...रथम् ।  
(२३९) ४।४५।३ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)  
.....आ रजः । —रथम् ।
- [१२] १।३४।११ आ नासत्या त्रिभिरेकादशैः ।  
(५११) ८।३५।३ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)  
विश्वेद्वैस्त्रिभिरेकादशैः ।
- [१३] १।३४।११ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो  
भवतं सचाभुवा ।  
(१६६) १।१५।७।४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ)
- [१३] १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।  
(७५) १।११।२।४ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
अवसे नि ह्ये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।
- [१५] १।४६।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)  
मनोतरा रयीणाम् ।  
(४३२) ८।८।२ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
- [१६] १।४६।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)  
यद् वां रथो विभिष्पतात् ।  
(४०५) ८।५।२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
- [१७] १।४६।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)  
युञ्जाथामश्विना रथम् ।  
(५४०) ८।७३।१ (गोपवन आत्रेयः सप्तवधिरा । अश्विनौ)
- [१९] १।४७।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)  
अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृधा ।  
२।४१।४ (युत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ)  
अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा ।
- [४०] १।४७।२ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)  
रथेना यातमश्विना ।  
(४३१) ८।८।११ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)  
अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।

(४३४) ८।८।१४ ( सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
अतः— ।

[४१] १।४७।३ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

पातं सोममृतावृधा ।

—दाध्वांसमुप गच्छतम् ।

(४३) १।४७।५ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

पातं— ।

३।६१।१८ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)

पातं— ।

७।६६।१९ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ )

पातं— ।

(५७६) ८।८७।५ ( कृष्ण आङ्गिरसो युन्नीको वा वासिष्ठः,  
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ )

पातं— ।

(इन्द्रः३२२४) ४।४६।५ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवाय )

दाध्वांसमुप गच्छतम् ।

[४१:४४] १।४७।३,६ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

अथात्र (६ सुदासे) दक्ष्णा वसु विभ्रता ।

[४२] १।४७।४ मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।

(७) १।२२।३ तथा यज्ञं— ।

[ ,, ] १।४७।४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

युवां हवन्ते अश्विना ।

(४००) ८।५।१७ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

[४३] १।४७।५ ताभिः प्वरिस्मा अवतं शुभस्पती ।

(इन्द्रः ३२०४) ८।५९ ( वारु ११ ) । ३

(सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ )

ताभिर्दाश्वींसमवतं शुभस्पती ।

[४५] १।४७।७ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अधि तुर्वशे ।

अतो रथेन सुव्रता न आ गतं साकं सूर्यस्य  
रश्मिभिः ॥

(४३४) ८।८।१४ ( सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ )

यन्नासत्या परावति यद् वा स्थो अध्यम्बरे ।

अतः सहस्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विनां ।

१।१३७।२ ( परुच्छेपो दैतोदासेः । मित्रावरुणौ )

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

५।७९।८ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

८।१०।२ ( जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ )

साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

[४६] १।४७।८ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

अर्वाञ्चवा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु  
सवनेदुप ।

इषं पृञ्जन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिःसीदतं नरा ॥

(इन्द्रः २४२) ८।४।१४ ( देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः )

अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो— ।

१।९२।३ ( गोतमो राहूगणः । उषाः )

इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।

(५७३) ८।८७।२ ( कृष्ण आङ्गिरसो युन्नीको वा वासिष्ठः,  
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ )

आ बर्हिः सीदतं नरा ।

(५७५) ८।८७।४ ( कृष्ण आङ्गिरसो... । अश्विनौ )

आ बर्हिः सीदतं सुमन् ।

[४७] १।४७।९ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।

(४७६) ८।२२।५ ( सोभरिः काण्वः । अश्विनौ )

...तेन नासत्या गतम् ।

(४२२) ८।८।२ ( सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ )

रथेन सूर्यत्वचा ।

[ ,, ] १।४७।९ मध्वः सोमस्य पीतये ।

(५५८-५६६) ८।८५।१-९ ( कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ )

[४९] १।९२।१६ ( गोतमो राहूगणः । अश्विनौ )

अर्वाग् रथं समनसा नि यच्छतम् ।

(३७९) ७।७४।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )

(५३०) ८।३५।२२ ( श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ )

अर्वाग् रथं नि यच्छतं ।

[५०] १।९२।१७ ( गोतमो राहूगणः । अश्विनौ )

आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ।

(२६६) १।१५७।४ ( दीर्घतमा औचथ्यः । अश्विनौ )

[५२] १।९२।१८ ( गोतमो राहूगणः । अश्विनौ )

दक्ष्णा हिरण्यवर्तनी ।

(२७९) ५।७५।२ ( अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ )

(३९४) ८।५।११ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

(४२१) ८।८।१ ( सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ )

(५७६) ८।८७।५ ( कृष्ण आङ्गिरसो युन्नीको वा वासिष्ठः,  
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ )

[ ,, ] १।९२।१८ उपवृथो वहन्तु सोमपीतये ।

(इन्द्रः ११०) ८।१।२४ ( मेधातिथि-मेधातिथी  
काण्वौ । इन्द्रः )

- [५२-७४] १।१११।१-२३ (कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ।
- [५६] १।१११।५ ( कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ )  
यामी रेभं निवृतं सितमद्भ्य उद्वन्दनमैरयतं स्वदृशे ।  
(१३२) १।११८।६ ( कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः ।  
अश्विनौ )  
उद्वन्दनमैरयतं दंसानाभिरुद् रेभं ।
- [५९] १।११२।८ याभिर्वर्तिकां प्रसिताममुञ्चतं ।  
(५९५) १।३९।१३ ( कक्षीवती घोषा । अश्विनौ )  
वर्तिकां... युवं शचीभिर्प्रसिताममुञ्चतम् ।
- [७१] १।११२।२० ( कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ )  
भुज्युं याभिरवथो याभिरधिगुम् ।  
(४८१) ८।२२।१० ( सोभरिः काण्वः । अश्विनौ )  
याभिः पन्थमवथो याभिरधिगुम् ।
- [७५] १।११२।२४=(२३) १।३४।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः।  
अश्विनौ)  
वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।
- [७६] १।११२।२५ तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम-  
दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।  
=(अग्निः २७१) १।९४।१६; (१८७८) १।९५।११;  
(१८७८) १।९६।९; (१७२६) १।९८।३  
=(इन्द्रः ९७५) १।१००।१९; (८२७) १।१०१।११;  
(८३८) १।१०२।११; (८४६) १।१०३।८; (३०२०)  
१।१०८।१३; (३०२८) १।१०९।८  
१।१०५।१९ (त्रित आत्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)  
=१।१०६।७=१।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)  
=१।११०।९=१।१११।५ (कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः)  
=१।११३।२० ( कुत्स आङ्गिरसः । उषाः )  
=१।११४।११ ( कुत्स आङ्गिरसः । रुद्रः )  
=१।११५।६ ( कुत्स आङ्गिरसः । मरुतः )  
(सोमः ९१४) ९।९७।५८ ( „ । सोमः )
- [८३] १।११६।७ ( कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ )  
युवं नरा स्तुवते पञ्जियाय कक्षीवते ।  
कारोतराच्छपादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भाँ असि-  
ञ्चतं सुरायाः ।  
(१०८) १।११७।७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)  
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय ।  
(१०७) १।११७।६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः। अश्विनौ)  
तद् वां नरा शंस्यं पञ्जियेण कक्षीवता... ।  
शपादश्वस्य पाजिनो जनाय शतं कुम्भाँ ।

- असिञ्चतं मधूनाम् ।
- [९२] १।११६।१६ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
शतं मेषान् वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं  
पितान्धं चकार ।  
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं ।  
(११८) १।११७।१७ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः ।  
अश्विनौ )  
शतं मेषान् वृक्ये मामहानं तमः... पित्रा ।  
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं... विचक्षे ।  
(११९) १।११७।१८ चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं  
च मेषान्
- [१०३] १।११७।२ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
यो वामश्विना मनसो जवीयान् ।  
येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं ।  
(२०२) १।१८३।१ ( अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )  
मनसो यो जवीयान् ।  
येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं ।
- [१०७] १।११७।६=(८३) १।११६।७ (कक्षीवान् औशिजो  
दैर्घतमसः । अश्विनौ )  
शतं कुम्भाँ असिञ्चतं मधूनाम् (७सुरायाः)।
- [१०८] १।११७।७=(८३) १।११६।७ युवं नरा स्तुवते  
कृष्णियाय (७ पञ्जियाय) ।
- [११०] १।११७।९ ( कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ )  
पेद्व ऊदथुराशुमश्वम् ।  
(३६६) ७।७१।५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )
- [११८] १।११७।१७=(९२) १।११६।१६ शतं मेषान्  
वृक्ये मामहानं (१६ चक्षदानम्) ।
- [१२१] १।११७।२० (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरु-  
मित्रस्य योषाम् ।  
(५८९) १।३९।७ (कक्षीवती घोषा । अश्विनौ )  
युवं रथेन विमदाय शुन्धुयुवं न्यूहथुः पुरु-  
मित्रस्य योषणाम् ।
- [१२२] १।११७।२१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
अभि दस्युं वकुरेणा धमन्तो रु ज्योतिश्चक्रु-  
रार्याय ।  
(अग्निः १७९२) ७।५।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वान-  
नरोऽग्निः)  
त्वं दस्युरोकमो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनय-  
त्वार्याय ।

[१२४] १।१७।२३ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
अपत्यसाचं ध्रुत्यं रराथाम् ।

(इन्द्रः ३२७५) ६।७२।५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रासोमौ)  
—ध्रुत्यं रराथे ।

[१२६] १।१७।२५ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
एतानि वामश्विना वीर्याणि... ।

ब्रह्म कृण्वन्तो... सुवीरासो विदथमा वदेम ।  
(२२२) २।३९।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)

एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म... अकन ।  
.....वदेम विदथे सुवीराः ।

(इन्द्रः ११३६) २।१२।१५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)  
सुवीरासो विदथमा वदेम ।

(सोमः ११४८) ८।४८।१४ (प्रगाथो धौरः काण्वः । सोमः)  
सुवीरासो विदथमा वदेम ।

[१२७] १।१८।१=१।३५।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)  
सुमृळीकः स्ववां यात्वर्वाङ् ।

[.,.] १।१८।१ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान् त्रिवन्धुरो  
वृषणा वातरंहाः ।

(२०२) १।१८।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)  
मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा  
यस्त्रिचक्रः ।

[१२९] १।१८।३ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्त्राविमं शृणुतं  
श्लोकमद्रेः ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति गमिष्ठाहुर्विप्रासो  
अश्विना पुराजाः ॥

(२२८) ३।५८।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)  
सुगुभिरश्वैः सुवृता रथेन... ।

किमङ्ग वां प्रत्यवर्ति... अश्विना हवन्ते ॥

[१३०] १।१८।४ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
आ वां श्वेनासो अश्विना वहन्तु... ।

...अभि प्रयो नास्तया वहन्ति ॥

(३२३) ६।६३।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ)  
आ वां वयोऽश्वसो वहिष्ठा अभि प्रयो  
नास्तया वहन्तु ।

[१३२] १।१८।६ = (५६) १।१२।५ उद् वन्दनमैरतं  
दंसनाभिः (५ स्वहृशे) ।

[१३५] १।१८।९ (कक्षीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)  
युषं श्वेतं पेद्व इन्द्रजुतमहिहनमश्विना-

दत्तमश्वम् ।

जोहृत्रमयो... ।

(५९२) १०।३९।१० (काक्षावता घोषा । अश्विनौ)

युषं श्वेतं पेद्वेऽश्विनाश्वं ।

चर्कृत्यं ददयुः ।

[१६०] १।१३।३ युवोर्विश्वा अधि श्रियः ।

(इन्द्रः २४१६) ८।९२।२० (श्रुतकक्षः सुकक्षो  
वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

यस्मिन् विश्वा अधि श्रियः ।

[१६३] १।१५।१ (दाघतमा औचथ्यः । अश्विनौ)

आयुक्षातामश्विना यातवे रथं ।

१०।३५।६ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः )

आयुक्षातामश्विना तृतुजि रथं ।

[१६६] १।१५।४ = (५०) १।९२।१७

आ न ऊर्जं वहतमश्विना युषम् ।

[.,.] १।१५।५ = (२२) १।३४।१२

प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं

द्वेषो भवतं सचाभुवा ।

[१८४] १।१८।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

तं वां रथं वयमद्या हुवेम ।

(२५१) ४।४४।१ (पुरुमाळ्हाजमिळ्हा सौहोत्रौ । अश्विनौ)

[१९९] १।१८।१६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

अनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।

(इन्द्रः ३२८०) ७।१०४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः [राक्षोर्ष] ।  
इन्द्रासोमौ)

—प्र विध्यतम् ।

[२०२] १।१८।१= (१२७) १।१८।१

त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः (श्वातरंहाः) ।

[२०४] १।१८।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

यो रथो... ।

येन नरा नास्त्येवयध्यै वर्तिर्याथस्तन-  
याय त्मने च ।

(२१२) १।१८।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

यातं त्रतिस्तनयाय त्मने च ।

६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

...यो रथो...

येन नरा— ।

[२०५] १।१८।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)

अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्त्राविमे  
वां निधयो मधूनाम् ।



- (५३९) ८।५७ (वाल०९)।४ (मध्यः काण्वः । अश्विनौ)  
अयं वां भागो निहितो यजत्रा ।  
(२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)  
दस्त्राविमे वां निधयो मधूनाम् ।  
[२०६] १।१८३।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)  
मे हवं नासत्योप यातम् ।  
(५५८) ८।८५।१ (ऋष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
आ मे हवं नासत्या ।  
[२०७] १।१८३।६ = (२१३)१।१८४।६ = (३७३)७।७३।१  
अतारिष्म तमसस्पाारमस्य ।  
१।९२।६ (गोतमो राहृगणः । उषा.)  
अतारिष्म तमसस्पाारमस्य ।  
[ ,, ] १।१८३।६ = (२१३)१।१८४।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।  
अश्विनौ)

- अतारिष्म तमसस्पाारमस्य प्रति वां  
स्तोमो अश्विनावधायि ।  
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेघं वृजनं  
जीरदानुम् ॥  
(२३०) ३।५८।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अश्विनौ)  
एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।  
[२०९] १।१८४।२ अस्मे ऊ पु वृषणा मादयेथाम् ।  
(अग्निः ७४८)४।१४।४ अस्मिन् यज्ञे वृषणा ।  
[२१२] १।१८४।५ = (२०४)१।१८३।३  
यातं वर्तिस्तनयाय त्मने च ।  
६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)  
येन नरा...वर्तिर्यास्तनयाय... ।  
[२१३] १।१८४।६ = (२०७)१।१८३।६

### ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [२२२] २।३९।८-(१२६)१।११७।२५  
एतानि वामश्विना वर्धनानि (२५व्यांयाणि) ।  
[२२४] २।४१।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)  
न यत् परो नान्तर... ।  
दुःशंसो मर्त्यो रिपुः ।

- (३१८) ६।६३।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अश्विनौ)  
न यत् परो नान्तरस्तुतुर्यात् ।  
८।१८।१४ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)  
दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।

### ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [२२८] ३।५८।३=(१२९)१।११८।३  
[२३०] ३।५८।५=(२०७) १।१८३।६=(२१३) १।१८४।६  
(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)  
[ ,, ] ३।५८।५=(२०५) १।१८३।४

- [२३३] ३।५८।८ (गाथिनो विश्वामित्रः । अश्विनौ)  
परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ।  
१।११।३ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)  
परि द्यावापृथिवी यान्ति सद्यः ।

### ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

- [२५०] ४।४३।७=(२५७) ४।४४।७  
(पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)  
इहेह यद् वां समना पपृक्षे सेयमस्मे  
सुमतिर्वाजरत्ना ।  
उरुध्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो  
नासत्या युवद्विक् ॥  
[२५१] ४।४४।१=(१८४) १।१८०।१०  
तं वां रथं वयमद्या हुवेम ।  
[२५४] ४।४४।४ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)  
तद्यज्ञो रत्नं विधत्ते जनाय ।

- ७।७।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषाः)  
दधाति रत्नं विधत्ते जनाय ।  
[२५५] ४।४४।५ हिरण्येन सुवृता रथेन ।  
१।३।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता)  
[ ,, ] ४।४४।५ (पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ)  
—यातं— ।  
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।  
(३५२) ७।६९।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)  
...यातम् ।  
मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।

- [२५६] ४।४४।६ नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं ।  
(अग्निः ९९२) ६।६।७ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । वैश्वानरोऽग्निः)  
चन्द्रं रयिं — ।
- [२५७] ४।४४।७ = (२५०) ४।४३।७
- [२३८] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)  
उद् वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।  
७।६०।४ (वसिष्ठा मित्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)  
— मधुमन्तो अस्थुः ।
- [ , ] ४।४५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)

- रथा अश्वस उषसो व्युष्टिषु ।  
(अग्निः ७४८) ४।१४।४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)  
— उषसो व्युष्टौ ।
- [२३८] ४।४५।२ = (२४२) ४।४५।६  
स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः ।
- [२३९] ४।४५।३ = (२१) १।३४।१०  
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः ।
- [२४१] ४।४५।५ सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः ।  
(सोमः १०००) ९।१०७।१ सुषाव सोममाद्रिभिः ।

### ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [२५८] ५।७३।१ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)  
यदन्तरिक्ष आ गतम् ।  
(इन्द्रः ९८०) ८।९७।५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)  
— आ गहि ।
- [२५९] ५।७३।२ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)  
इह त्या पुरुभूतमा ।  
(४७४) ८।२२।३ (सोभारः काण्वः । अश्विनौ)
- [२६०] ५।७३।३ = (११) १।३०।१९ चक्रं रथस्य येमथुः ।
- [२६२] ५।७३।५ (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)  
आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठत् ।  
(४३०) ८।८।१० (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)  
आ यद् वां योषणा रथमतिष्ठत् ।
- [२६७] ५।७३।१० इमा ब्रह्माणि वर्धना ।  
(इन्द्रः ५६९) ८।६२।४ (प्रगाथो घौरः काण्वः । इन्द्रः)  
इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
- [२७७] ५।७४।१० (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)  
अश्विना यद् कर्हि विच्छुभ्रूयातमिमं हवम् ।  
(५४४) ८।७३।५ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा ।  
अश्विनौ)  
यद्य कर्हि कर्हि विच्छुभ्रूयातमिमं हवम् ।
- [२७८-८६] ५।७५।१-९ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)  
माध्वी मम भ्रुतं हवम् ।
- [२७९] ५।७५।२ = (५१) १।९२।१८ = (४२१) ८।८।१  
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी ।
- [२८०] ५।७५।३ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)  
आ नो...अश्विना गच्छतं युवम् ।

- स्त्रा हिरण्यवर्तनी ।  
(४२१) ८।८।१ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)  
आ नो...अश्विना गच्छतं युवम् ।  
दस्त्रा हिरण्यवर्तनी ।
- (५५८) ८।८५।१ (कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
आ मे...अश्विना गच्छतं युवम् ।
- [२८४] ५।७५।७ = (५) १।२२।१ = (२९७) ५।७८।१  
अश्विनावेह गच्छतं (१।२२।१ गच्छताम्) ।
- [ , ] ५।७५।७ (अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ)  
नासत्या मा वि वेनतम् ।  
(२९७) ५।७८।१ (सप्तवध्रारात्रेयः । अश्विनौ)
- [२८६] ५।७५।९ = (१०) १।३०।१८ रथो दस्त्रावमर्त्यः ।
- [२८९] ५।७६।३ मध्यंदिनं उदिता सूर्यस्य ।  
५।६९।३ (उरुचक्रिरात्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [२९०] ५।७६।४ आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा ।  
५।४३।११ (भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
- [२९१] ५।७६।५ = ५।४२।१८ = ५।४३।१७  
(भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः)
- [२९६] ५।७७।५ = ५।४२।१८ = (२९१) ५।७६।५
- [२९७] ५।७८।१ = (५) १।२२।१ = (२८४) ५।७५।७
- [ , -२९९] ५।७८।१-३ हंसाविव पततमा सुतां उप ।
- [२९९] ५।७८।३ जुषेयां यज्ञमिष्टये ।  
५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [३०४] ५।७८।८ यथा वातो यथा वनम् ।  
१०।२३।४ धूनोति वातो यथा वनम् ।

## ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[ ३०८ ] दाद३।३ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ )

ता ह स्यद् वर्तिर्यद्वरध्र.... ।

.....परि... ।

( ३१८ ) दाद३।२ परि ह स्यद् वर्तिर्याथो...यम्... ।

[ ३१० ] दाद३।५ वभूवतुर्गुणते चित्रराती ।

( ३१६ ) दाद३।११ दुरो वर्त गृणते चित्रराती ।

[ ३१८ ] दाद३।२ = ( २२४ ) २।४।१८ न यत् परो नान्तरः ।

[ ३२० ] दाद३।४ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ )

प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ।

( अग्निः ६८४ ) ४।६।३ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )

यता सुजूर्णि रातिनी घृताची ।

[ ३२३ ] दाद३।७ = ( १३० ) १।११८।४

अभि प्रयो नासत्या वहन्तु ( ४ वहन्ति ) ।

[ ,, ] दाद३।७ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अश्विनौ )

—प्र वां रथो मनोजवा असर्जि ।

( ३४० ) ७।६८।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )

...मनोजवा इयति ।

## ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[ ३३३ ] ७।६७।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )

आ वां तोकं तनये तूतुजानाः सुरस्तासो

देववीति गमेम ।

( इन्द्रः ३१९६ ) ७।८४।५ = ( इन्द्रः ३२०१ ) ७।८५।५

( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ )

प्रावत् तोकं तनये तूतुजाना ।

सुरस्तासो देववीति गमेम ।

[ ३३७ ] ७।६७।१० = ( ३५४ ) ७।६९।८ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।

अश्विनौ )

नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विना-

विरावत् ।

धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[ ३४० ] ७।६८।३ = ( ३२३ ) दाद३।७

[ ३४८ ] ७।६९।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )

विशो येन गच्छथो देवयन्ताः ।

( ६१२ ) १०।४।२ ( सुहस्त्यो घौषेयः । अश्विनौ )

—गच्छथो यज्वरीर्नरा ।

[ ३५२ ] ७।६९।६ = ( २५५ ) ४।४४।५

मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः ।

[ ३५४ ] ७।६९।८ = ( ३३७ ) ७।६७।१० = ( ३४६ ) ७।६८।९

= ( ३६१ ) ७।७०।७ = ( ३६७ ) ७।७१।६ = ( ३७२, ३७७ )

७।७२-७३।५ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

( अग्निः १११९ ) ७।१।२०, २५; ( ११३३ )

७।३-४।१०; ( ११४८ ) ७।७-८।७; ( ११६० ) ७।९।६;

( ११७० ) ७।११।५; ( ११७३ ) ७।१२-१३।३; ( ११७६ )

७।१४।३; ( १६८२ ) १०।१२।१८ ।

( इन्द्रः २१५० ) ७।१९।११; ( २१६० ) २०।१०;

( २१७० ) २१।१०; ( २१७९ ) २२।९; ( २१८५ )

२३।६; ( २१९१ ) २४।६; ( २१९७ ) २५।६

( २२०२ ) २६।५; ( २२०७ ) २७।५; ( २२१२ ) २८।५;

( २२१७ ) २९।५; ( २२२२ ) ३०।५; ( ३०७८ )

९३।८; ( ३१९६ ) ८४।५; ( ३२०१ ) ८५।५; ( ३२३५ )

९०।७; ( ३२४० ) ९१।७; ( ३३२५ ) ९७-९८।१०, ७।

( सोमः ८०५ ) ९।९०।६; ( ८५२, ८६२ ) ९७।३, ६।

( मरुतः ३६९ ) ७।५६।२५; ( ३७६ ) ५।७।७; ( ३८२ )

५८।६। ( विश्वे देवाः ) ७, ३४, २५; ३५, १५; ३६, ९;

३७, ८; ३९-४१, ७; ४२, ६; ४३, ५; ४८, ४;

१०, ६५-६६, १५ । ( सविता ) ७।४५।४ । ( रुद्रः )

७।४६।४। ( आपः ) ७।४७।४। ( आदित्याः ) ७।५१।३।

( यावापृथिवी ) ७।५३।३। ( वास्तोष्पतिः ) ७।५४।३।

( मित्रावरुणौ ) ७।६०।१२; ६१, ७; ६२-६३, ६;

६४-६५, ५। ( उषाः ) ७।७५।८; ७६, ७; ७७, ६;

७८-७९।५, ८०, ३। ( वरुणः ) ७।८६।८; ८७-८८,

७। ( वायुः ) ७।९२।५। ( सरस्वती ) ७।९५।६।

( विष्णुः ) ७।९९-१००।७। ( पर्जन्यः ) ७।१०१।६

[ ३५९ ] ७।७०।५ प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।

७।६५।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )

प्रति वामत्र वरमा जनाय ।

[ ,, ] ७।७०।५ अस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ।

( मरुतः ३७३ ) ७।५७।४ ( वसिष्ठो मैत्रा०। मरुतः )

[ ३६१ ] ७।७०।७ = ( ३६७ ) ७।७१।६

( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )

इयं मनीषा ह्यमश्विना गीरिमां सुवृत्तिं वृषणा जुषेथाम् ।

इमा ब्रह्माणि युवयून्धरमन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

( ३७५ ) ७।७३।३ इमां सुवृत्तिं वृषणा जुषेधाम् ।  
[३६६] ७।७१।५ = (११०) १।११।७।९

नि पेदव ऊहथुराशुमश्चम् ।

[३६७] ७।७१।६ = (३६१) ७।७०।७

[३७१] ७।७२।४ ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् ।

( अग्निः ६८३ ) ४।६।२ ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेद् ।

( " ७४१ ) ४।१३।२ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )

( " ७४६ ) ४।१४।२ ऊर्ध्वं क्रेतुं सविता देवो अश्रेद् ।

[३७२] ७।७२।५ = (३७७) ७।७३।५

( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )

आ पश्चाताज्ञासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।

आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः

सदा नः ।

[३७३] ७।७३।१=१।९२।६=(२०७) १।१८३।६  
=(२१३) १।१८४।६

[३७५] ७।७३।३ = (३६१) ७।७०।७

[३७६] ७।७३।४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ )

मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ।

(३८०) ७।७४।३ मा नो मर्धिष्टमा गतम् ।

[३७७] ७।७३।५ = (३७२) ७।७२।५

[३७९] ७।७४।२ = (४९) १।९२।१६

अवांग् रथं समनसा नि यच्छतम् ।

[ ,, ] ७।७४।२ = (४२१) ८।८।१ पिबतं सोम्यं मधु ।

( इन्द्रः ३०७० ) ६।६०।१५

( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी )

[३८०] ७।७४।३ = ( ३७६ ) ७ ७३।४

## ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[३८५] ८।५।२ = ( इन्द्रः ३२२४ ) ४।४६।५

( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायु )

[३८७] ८।५।४ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

पुरुमन्द्रा पुरुवस्म् ।

( ४३२ ) ८।८।१२ ( सभ्वंसः काण्वः । अश्विनौ )

[३८८] ८।५।५ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

गन्तारा दाशुषो गृहम् ।

( इन्द्रः ३३० ) ८।१३।१० ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )

— गृहं नमस्विनः ।

( ४७४ ) ८।२१।३ ( सोभारिः काण्वः । अश्विनौ )

[३८९] ८।५।६ घृतैर्गव्युतिमुक्षतम् ।

३।६२।२६ (गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)

[३९०] ८।५।७ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

आ नः स्तोममुप द्रवत् ।

(३९०) ८।४९ (वाल०१)।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)

[३९२] ८।५।९ उत नो गोमतीरिषः ।

( सोमः ४४१ ) ९।६२।२४ ( जमदग्निर्भार्गवः ।

पवमानः सोमः )

५।७९।८ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )

[३९४] ८।५।११ = (५१) १।९२।१८ दक्षा हिरण्यवर्तनी ।

[ ,, ] ८।५।११ पिबतं सोम्यं मधु ।

( इन्द्रः ३०७० ) ६।६०।१५

( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी )

[३९५] ८।५।१२ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

छर्दिर्यन्तमदाभ्यम् ।

( ५६२ ) ८।८।५।५ ( कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ )

[३९८] ८।५।१५ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

अस्मे आ वहतं रथिं

पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।

( मरुतः ५८ ) ८।७।१३ ( पुनर्वसुः काण्वः । मरुतः )

आ नो रथिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम् ।

[४००] ८।५।१७ = ३।५९।९ ( गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः )

[ ,, ] ८।५।१७ हविष्मन्तो अरंकृतः ।

१।१४।५ ( मेघातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )

[ ,, ] ८।५।१७ = (४२) १।४७।४ युवां हवन्ते अश्विना ।

[४०१] ८।५।१८ = (इन्द्रः २०८९) ६।४५।३०

स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।

[ ,, ] ८।५।१८ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )

स्तोमो वाहिष्ठो.....।

युवाभ्यां भूवश्विना ।

(५०५) ८।२६।१६ ( विश्वमना वैयश्वः

व्यश्वो वाङ्गिरसः । अश्विनौ )

वाहिष्ठो.....स्तोमो ।

युवाभ्यां भूवश्विना ।

[४०३] ८।५।२० = (४२३) ८।५।३० तेन नो वाजिनीवस्म् ।

[४०५] ८।५।२२ = (२६) १।४६।३

यद् वां रथो विभिष्यतात् ।

- [ ४११ ] ८।५।२८ = (इन्द्रः ३२२३) ४।४६।४  
( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायु )
- [ " ] ८।५।२८ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीष्टुमश्विना ।  
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।  
( ४७६ ) ८।२।५ ( सोभारिः काण्वः । अश्विनौ )  
रथो...त्रिवन्धुरो हिरण्याभीष्टुरश्विना ।  
...चावापृथिवी... ।  
( इन्द्रः ३२२३ ) ४।४६।४ रथं हिरण्यवन्धुरम्...।  
आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ।
- [ ४१३ ] ८।५।३० ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
उपेमां सुष्टुतिं मम ।  
( ४२६ ) ८।८।६ ( सन्वंसः काण्वः । अश्विनौ )
- [ ४१८ ] ८।५।३५ हिरण्ययेन रथेन ।  
१।३।५।२ ( हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । मविता )  
हिरण्ययेन...रथेना ।
- [ ४२१ ] ८।८।१ आ नो विश्वाभिरुतिभिः ।  
( इन्द्रः २१८९ ) ७।२४।४ ( मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । इन्द्रः )  
( ४३८ ) ८।८।१८ = ( ५७४ ) ८।८।७।३  
आ वां विश्वाभिरुतिभिः ।
- [ " ] ८।८।१ = ( २८० ) ५।७।५।३ ( अवस्युरात्रेयः । अश्विनौ )
- [ " ] ८।८।१ = ( ५१ ) १।९।२।१८  
( गौतमो राहूगणः । अश्विनौ )
- [ " ] ८।८।१ = ( इन्द्रः ३०७० ) ६।६।०।१५  
( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी )
- [ ४२२ ] ८।८।२ ( सन्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
आ नूनं यातमश्विना ।  
( ४५७ ) ८।९।१४ ( शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ )  
( ५७६ ) ८।८।७।५ ( कृष्ण आङ्गिरसो शुम्नीको वा वासिष्ठः,  
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ )
- [ " ] ८।८।२ = ( ४७ ) १।४।७।९
- [ ४२४ ] ८।८।४ = ( ४२८ ) ८।८।८  
पुत्रः कण्वस्य वामिह ( ८ वामृषिः ) ।
- [ ४२५ ] ८।८।५ ( सन्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
आ नो यातमुपश्रुति ।  
( इन्द्रः ४३५ ) ८।३।१।१ ( नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
आ नो यातमुपश्रुति ।
- [ " ] ८।८।५ अश्विना सोमपीतये ।  
( ५३५ ) ८।४।१।६ नासत्या सोमपीतये ।  
( इन्द्रः ३०९७-३०९९ ) ८।३।८।७-९

- ( शावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी )  
इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
- [ ४२६ ] ८।८।६ जुहुरेऽवसे नरा ।  
१।४।८।१४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )  
जुहुरेऽवसे महि ।
- [ " ] ८।८।६ = ( ५३०-५३२ ) ८।३।५।२२-२४  
आ यातमश्विना गतम् ।
- [ " ] ८।८।६ = ( ४१३ ) ८।५।३० उपेमां सुष्टुतिं मम ।
- [ ४२७ ] ८।८।७ दिवश्चिद् रोचनादधि ।  
१।४।९।१ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )
- [ " ] ८।८।७ स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।  
( इन्द्रः ३०५५ ) ६।५।९।१०  
( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी )
- [ ४२८ ] ८।८।८ = ( ४३५ ) ८।८।१५ = ( ४३९ ) ८।८।१९  
गीभिर्वसो अवीवृधत् ।
- [ ४३० ] ८।८।१० = ( २६२ ) ५।७।३।५  
आ यद् वां योषणा ( ५ सूर्या ) रथमतिष्ठत् ।
- [ ४३१ ] ८।८।११ = ( ४० ) १।४।७।२ रथेना यातमश्विना ।
- [ ४३२ ] ८।८।१२ = ( ३८७ ) ८।५।४ पुरुमन्द्रा पुरुवसू ।
- [ " ] ८।८।१२ = ( २५ ) १।४।६।२ मनोतरा रथिणाम् ।
- [ ४३३ ] ८।८।१३ = ७।९।४।३ मा नो रीरधत् निदे ।  
( इन्द्रः ३०८१ ) ७।९।४।३ ( मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । इन्द्राग्नी )
- [ ४३४ ] ८।८।१४ = ( ४५ ) १।४।७।७  
( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )
- [ " ] ८।८।१४ = ( ४० ) १।४।७।२
- [ ४३६ ] ८।८।१६ ( सन्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
वमूयाद् दानुनस्पती ।  
१।१३।६।३ ( परुच्छेपो देवोदामिः । मित्रावरुणौ )  
आदित्या दानुनस्पती ।  
१।४।१।६ ( गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ )  
आदित्या..... ।
- [ ४३७ ] ८।८।१७ आ नो गन्तं रिशादसा ।  
५।७।१।१ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )
- [ ४३८ ] ८।८।१८ = ( ५७४ ) ८।८।७।३ =  
( ४२१ ) ८।८।१ = ( इन्द्रः २१८९ ) ७।२।४।४  
( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )  
आ वां ( ८।८।१, ७।२।४।४ नो ) विश्वाभिरुतिभिः ।
- [ " ] ८।८।१८ = ( ५७४ ) ८।८।७।३ =  
( अग्निः १०३ ) १।४।५।४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः )  
प्रियमेधा अहूयत् ।

- [४३८] ८।८।१८ राजन्तावध्वराणाम् ।  
(अग्निः ८; १०३) १।१।८; १।४।४ राजन्तमध्वराणाम् ।  
(अग्निः ३८) १।२।७।१ सन्नाजन्तमध्वराणाम् ।
- [४४४] ८।९।१ मास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।  
१।४।८।१५ (प्रस्कण्वः काण्वः । उपाः )  
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।
- [४४६] ८।९।३ = (४५२) ८।९।९ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ )  
एवेत् काण्वस्य बोधतम् ।  
(४६६) ८।१०।२ (प्रगाथो घौरः काण्वः । अश्विनौ )
- [४५६] ८।९।३३ हुवेय वाजसातये ।  
(इन्द्रः २७९) ८।६।३७; (इन्द्रः ४२८) ८।३।४।४;  
(इन्द्रः १७४१) ५।३।५।६ हवन्ते वाजसातये ।  
(इन्द्रः ३३३०) ६।५।७।१ (वार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।  
इन्द्राप्रषणौ)  
हुवेम वाजसातये ।  
(५७७) ८।८।७।६ विप्रासो वाजसातये ।
- [४५७] ८।९।१४ = (४२२) ८।८।२ = (५७६) ८।८।५  
आ नूनं यातमथिना ।
- [४६१] ८।९।१८ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ )  
सं सूर्येण रोचसे ।  
(सोमः १६) ९।२।६ (मेधातिथिः काण्वः । पत्रमानः सोमः)  
..... रोचते ।
- [४६६] ८।१०।२ = (४४६) ८।९।३ = (४५२) ८।९।९
- [४६७] ८।१०।३ देवेष्वभ्याप्यम् ।  
१।१०।५।१३ (त्रित आप्त्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)  
देवेष्वस्त्याप्यम् ।
- [४७२] ८।२२।१ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ )  
यमद्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।  
(५९३) १०।३।९।११ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ )
- [४७३] ८।२२।२ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ )  
भुज्यु वाजेषु पूर्व्यम् ।  
(इन्द्रः १८३६) ८।४।६।२० (वशोऽद्वयः । इन्द्रः )
- [४७४] ८।२२।३ = (२५९) ५।७।३।२ इह त्या पुरुभूतमा ।  
[ " ] ८।२२।३ अर्वाचीना स्ववसे करामहे ।  
(इन्द्रः २५४४) १०।३।८।४ (मुष्कवानिन्द्रः । इन्द्रः )  
अर्वाञ्जमिन्द्रमवसे करामहे ।
- [ " ] ८।२२।३ = (३८८) ८।५।५ = (इन्द्रः ३३०) ८।१३।१०  
गन्तारा दाशुषो गृहम् ।
- [४७६] ८।२२।५ = (४११) ८।५।२।८  
(सर्वंस; काण्वः । अश्विनौ ।)

- [४७६] ८।२२।५ = (४७) १।४।७।९ तेन नासत्या गतम् ।
- [४७९] ८।२२।८ आ यातं सोमपीतये ।  
(इन्द्रः ३२२८) ४।४।७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
- [ " ] ८।२२।८ पिबतं दाशुषो गृहे ।  
(इन्द्रः ३२२५) ४।४।६।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
- [४८०] ८।२२।९ रथे कोशे हिरण्यथे ..... ।  
(मरुतः ८९) ८।२०।८ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)
- [४८१] ८।२२।१० = (७१) १।११।२०  
(कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ )
- [४८५] ८।२२।१४ (सोभरिः काण्वः । अश्विनौ )  
मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवस् ।  
(अग्निः १३९६) ८।६।०।८ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)  
... रिपवे रक्षस्विने ।
- [४८९] ८।२२।१८ विश्वा वामानि धीमहि ।  
५।८।२।६ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता )  
(अग्निः १२६१) ८।१०।३।५ (सोभरिः काण्वः । अग्निः)
- [४९८] ८।२६।९ (विश्वमना वैश्वः व्यश्वो वाङ्गिरसः । अश्विनौ)  
वयं हि वां हवामहे ।  
(५७७) ८।८।७।६ (कृष्ण आङ्गिरसो युष्नीको वा  
वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ )
- [५००] ८।२६।११ सजोषसा वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
१।४।०।५ (कण्वो घौरः । ब्रह्मणस्पतिः)  
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
७।६।६।१२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः )  
यदोहते वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
(इन्द्रः ३१८१; ३१९१) ७।८।२।१०; ८।३।१०  
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)  
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
(अग्निः १२३९) येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
१०।३।६।१ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः )  
यावाश्रामा वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
१०।६।५।१,९ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
अग्निरिन्द्रो ( ९ इन्द्रवायू ) वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
१०।९।१।६ (शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः )  
तेमिथष्टे वरुणो मित्रो अर्थमा ।
- [५०५] ८।२६।१६ = (४०१) ८।५।१।८  
युवाभ्यां भूस्वद्विना ।
- [५०९] ८।३।५।१ आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।  
२।३।१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः ।)
- [५०९-२९] ८।३।५।१-२१ सजोषसा उषसा सूर्येण च ।

- [५०९-११] ८३५।१-३ सोमं पिबतमश्विना ।  
 [५११] ८३५।३ = (२२) १।३४।११  
 (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अश्विनौ)  
 [५१२-१४] ८३५।४-६ विश्वेह देवो सवनाव गच्छतम् ।  
 [ ,, ] ८३५।४-६ इषं नो वोळ्ङ्मश्विना ।  
 [५१५-१७] ८३५।७-९ सोमं सुतं महिषेवाव गच्छथः ।  
 [ ,, ] ८३५।७-९ त्रिर्वर्तियांतमश्विना ।  
 [५१८-२०] ८३५।१०-१२ प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।  
 [ ,, ] ८३५।१०-१२ ऊर्जे नो धत्तमश्विना ।  
 [५२१-२३] ८३५।१३-१५ मरुवन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।  
 [ ,, ] ८३५।१३-१५ आदित्यैर्यांतमश्विना ।  
 [५२४-२६] ८३५।१६-१८ हतं रक्षांसि सेधतमर्मावाः ।  
 [ ,, ] ८३५।१६-१८ सोमं सुन्वतो अश्विना ।  
 [५२७-२९] ८३५।१९-२१ इयावाइवस्य सुन्वतो मदच्युता ।  
 [ ,, ] ८३५।१९-२१ अश्विना तिरोभङ्गयम् ।  
 [५३०] ८३५।२२ = (४९) १।९२।१६ = (३७९) ७।७४।२  
 अर्वाग् रथं (१।९२।१६; ७।७४।२ समनसा) नि यच्छतम् ।  
 [ ,, ] ८३५।२२ = (३७९) ७।७४।२ = (३९४) ८।५।११  
 = (४२१) ८।८।१ पिबतं सोम्यं मधु ।  
 (इन्द्रः ३०७०) ६।६०।१५ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)  
 (उन्द्रः १८०२) ८।२४।१३ (विश्वमना वैश्वः । उन्द्रः)  
 पिबाति सोम्यं मधु ।  
 [५३०-३२] ८३५।२२-२४ = (४२६) ८।८।६  
 = (३९) १।४७।१ आ यातमश्विना  
 गतमवस्युर्वामहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ।  
 [५३३] ८३५।२३ विवक्षणस्य पीतये ।  
 (इन्द्रः ११) ८।१।२५ (मेधातिथि--मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)  
 [५३३-३५] ८।४२।४-६ = (४२५) ८।८।५  
 नासत्या (८।८।५ अश्विना ) सोमपीतये ।  
 (इन्द्रः ३०९७-९९) ८।३८।७-९ इन्द्राग्नी सोमपीतये ।  
 [५३५] ८।४२।६ ( नाभाकः काण्वः, अर्चनाना आत्रेयो वा ।  
 आश्विनौ )  
 एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।  
 नासत्या सोमपीतये ॥  
 ( इन्द्रः ३०९९ ) ( इयावाइव आत्रेयः । इन्द्राग्नी )  
 एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।  
 इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥  
 [५३७] ८।५७ ( वाल० २ )।२ युवां देवास्त्रय एकादशासः ।  
 ( मोमः ८१५ ) ९।९२।४ ( करथपो मारीचः । मोमः )  
 विद्वे देवास्त्रय एकादशासः ।

- [५३९] ८।५७ (वाल०२)।४ अयं वां भागो निहितो यजत्रा ।  
 (२०५) १।१८३।४ अयं वां भागो निहित इयं गीः ।  
 [५४०] ८।७३।१ = (३०) १।४६।७ युञ्जाथामश्विना रथम् ।  
 [५४०-५७] ८।७३।१-१८ अन्ति षड्रतु वामवः ।  
 [५४४] ८।७३।५ = (२७७) ५।७४।१० (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)  
 [५४९] ८।७३।१० शृणुतं म इमं हवम् ।  
 २।४१।१३ ( गृत्समदः शौनकः । विद्वे देवाः )  
 = ६।५२।७ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विद्वे देवाः )  
 शृणुता म इमं हवम् ।  
 (५५९) ८।८।५ इमं मे शृणुतं हवम् ।  
 ( इन्द्रः ३०७० ) ६।६०।१५ इन्द्राग्नी शृणुतं हवम् ।  
 [५५३] ८।७३।१४ = (इन्द्रः ३०६९) ६।६०।१४  
 आ नो गव्येभिरइवैः ।  
 [५५७] ८।७३।१८ पुरं न घृष्णवा रुज ।  
 (मोमः १०३१) ९।१०८।६ वर्माव घृष्णवा रुज ।  
 [५५८] ८।८।५१ = (२०६) १।१८३।५  
 आ मे हवं नासत्योप यातम् ।  
 [ ,, ] ८।८।५१ = (२८०) ५।७५।३ = (४२१) ८।८।१  
 अश्विना गच्छतं युवम् ।  
 [५५८-६६] ८।८।५१-२ = (४७) १।४७।९  
 मध्वः सोमस्य पीतये ।  
 [५५९] ८।८।५२ = (५४२) ८।७३।१० =  
 (विश्वे देवाः) २।४१।१३ = (विद्वे देवाः) ६।५२।७  
 [५६१] ८।८।५४ शृणुतं जरितुर्हवम् ।  
 (इन्द्रः ३२७) ८।१३।७ शृणुमी-।  
 (इन्द्रः ३०८०) ७।९४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)  
 [५६२] ८।८।५५ = (३९५) ८।५।२२ छर्दिर्यन्तमदाभ्यम् ।  
 [५६३] ८।८।५६ = (३८८) ८।५।५ = (४७४) ८।२२।३  
 [५६७-६९] ८।८।६१-३ ता वां विश्वको हवते तनूकृथे ।  
 [५६७-७१] ८।८।६१-५ मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ।  
 [५७३] ८।८।७२ (ऋण आङ्गिरसो शुभ्रीको वा वासिष्ठः प्रियमेध  
 आङ्गिरसो वा । अश्विनौ )  
 पिबतं घर्मं मधुमन्तमश्विना बर्हिः सीदतं नरा ।  
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।  
 (५७५) ८।८।७४ पिबतं सोमं... सीदतं सुमत ।  
 (६०९) १।४०।१३ (काक्षीवती घोषा । अश्विनौ)  
 ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ ।  
 [ ,, ] ८।८।७२ = (४६) १।४७।८ आ बर्हिः सीदतं नरा ।  
 [५७४] ८।८।७३ = (इन्द्रः २१८९) ७।२४।४  
 = (४२१) ८।८।१ = (४३८) ८।८।१८

- [५७४] ८१८७३ = (अग्निः १०३) १४५४ =  
(४३८) ८१८१८ प्रियमेधा अहूषत ।
- [५७५] ८१८७४ = (४६) १४७८ = (५७३) ८१८७२  
= (अग्निः १९२४) ११४२७
- [५७६] ८१८७५ = (४२२) ८१८१२ = (४५७) ८१९१४  
आ नूनं यातमश्विना ।
- [ ,, ] ८१८७५ = (इन्द्रः ३३१) ८१३१११  
भश्वेभिः प्रुषितसुभिः ।
- [ ,, ] ८१८७५ = (५१) ११९११८ = (२७९) ५१७५२  
= (३९४) ८१५११ = (४२१) ८१८११
- [ ,, ] ८१८७५ = (४१) १४७३ =

- (मित्रावरुणौ) ३१६२१८ = (मित्रावरुणौ) ७१६११९
- [५७७] ८१८७६ = (५२८) ८१२६१९ वयं हि वां हवामहे ।
- [५७८] ८१२०१७ प्रति हव्यानि वीतये ।  
८१२०११० (जमदग्निर्भागवः । वायुः )
- [५७९] ८१२०१८ गृणाना जमदग्निना ।  
३१६२१८ (विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ)  
७१६१३ ( वसिष्ठो मित्रावरुणः । सरस्वती )  
गृणाना जमदग्निवत् ।  
(सोमः ४४१) ९१६२१४ गृणानो जमदग्निना ।  
(सोमः ५३२) ९१६५२५ शृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो  
वा । पवमानः सोमः)

### ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [५८६] १०३९१४ = (इन्द्रः ७५७) १५११३  
= (इन्द्रः ९९६) ८१२००६  
विश्वेत् ता वां (ते) सवनेषु प्रवाच्या ।
- [५८९] १०३९१७ = (१२१) ११२७२०  
न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् (२० योषाम्) ।
- [५९२] १०३९१० = (१३५) ११२८१  
(कक्षीवान् औशिजो दर्धतमसः । अश्विनौ)
- [५९३] १०३९११ = (४७२) ८१२२१  
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी ।

- [५९५] १०३९१३ = (५९) ११२२१८  
(कुत्स आङ्गिरसः । अश्विनौ)
- [५९६] १०३९१४ अतक्षाम भृगवो न रथम् ।  
(इन्द्रः १४८६) ४१६१२० (वामदेवो गांतमः । इन्द्रः)  
ब्रह्मकर्मा भृगवो न रथम् ।
- [६०९] १०४०१३ = (५७३) ८१८७२  
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण अः ।
- [६१२] १०४१२ विशो येन गच्छथो यज्वरानरा ।  
(३४८) ७१६१२ विशो येन गच्छतो देवयन्ताः ।



“ अश्विनौ-देवता-”

# मन्त्रान्तर्गतानां उपमानां सूची ।



अंशा इव १०,१०६,९; ६२२ नः भजतं चित्रममः ।  
अक्षरा इव १,३४,४; १५ त्रिः पृक्षो अस्मे पिन्वतम् ।  
अक्षी इव २,३९,५; २१९ चक्षुषा यातमर्वाक् ।  
अग्निर्न चित इव १,११२,१७; ६८ जठरस्य मज्जना पठर्वा ।  
अग्निर्वि देवयोः १०,१०६,३; ६१६ दीदिवांसा ।  
अग्निम् उषाम् न १,१८१,९; १९३ जरते हविष्मान् ।  
अजा इव २,३९,२; २१६ यमा परमा सचेथे ।  
अत्कम् न ५,७४,५; २७२ वत्रिं प्र मुञ्चथः ।  
( यथा ) अत्रिः ८,४२,५; ५३४ विप्रः भजोहवीत् ।  
अत्रेः इव ८,३५,१९; ५२७ पूर्व्यस्तुतिं शृणुतम् ।  
अध्वगौ इव ८,३५,८; ५१६ सुतं सोमं पतथः ।  
अपः न १,१८०,४; १७८ क्षोदोऽवृणीतमेधे ।  
अपः न स्तयम् ७,६८,८; ३४५ अन्व्याम् अपिन्वतम् ।  
अपसा इव वस्त्रा १०,१०६,१; ६१४ धियः वि तन्वाथे ।  
अभ्रिया इव वातः १,११६,१; ७७ सोमान् ह्यग्निं ।  
अवनिः न १,१८१,३; १८७ प्रवत्वान् सुविताय गम्याः ।  
अश्वम् न १,११७,४; १०५ गूळम् रेभं सं रिणीथः ।  
अश्वम् न १०,१४३,१; ६२७ अत्रिं अर्थं यातवे कृणुथः ।  
अश्वम् न वाजिनम् १०,१४३,२; ६२८ अरेणवो यमन्तत ।  
अस्तम् इव १,११६,२५; १०१ जरिमाणं जगम्याम् ।  
आत्मा इव वातः १,३४,७; १८ तिस्रः [वेदीः] गच्छतम् ।  
आरुणा इव १०,१०६,१०; ६२३ मधु प्रयेथे ।  
ह्यर्था इव १०,१०६,४; ६१७ पुष्ट्यै ।  
इन्द्रो न शक्तिम् ४,४३,३; २४६ ईवतो धून् ।  
इन्द्रमिव चर्षणीसहम् १,११९,१०; १४७ गार्ग्यैरभिष्टुं चर्क्यम् ।  
तुम्बा इव रुचा १०,१०६,४; ६१७ हवम् आ गमिष्टम् ।  
उत्सं न १०,१४३,६; ६३२ समस्मे भूषतम् ।  
उदन्यजा इव १०,१०६,६; ६१९ जेमना मदेरु ।  
उपधी इव २,३९,४ २१८ नः पारयतम् ।  
उष्टारा इव १०,१०६,२; ६१५ फर्वरेषु श्रयेथे ।  
भू न १०,१०६,७; ६२० खरमज्रा ।

एतग्वा चित् न ७,७०,२; ३५६ समुद्रान् सरितः पिपार्ति ।  
ओष्ठौ इव २,३९,६; २२० आस्ने मधु वदन्ता ।  
कृतीन् इव जारः १,११७,१८; ११९ चक्षदानः शतमेकं च ।  
कर्णा इव १०,१०६,९; ६२२ वासुः अनु हि स्मराथः ।  
कर्णौ इव २,३९,६; २२० सुश्रुता भूतमस्मे ।  
काराधुनी इव १,१८०,८; १८२ प्रशस्तः चितयस्सहस्रैः ।  
कार्म इव १,११६,१७; ९३ अतिष्ठद्वता जयन्ती ।  
किरणा इव १०,१०६,४; ६१७ भुज्यै ( भवथः । )  
कीनारा इव १०,१०६,१०; ६२३ स्वेदं आसिष्विदाना ।  
कुसः न १०,४०,६; ६०२ जरितुर्नशायथः ।  
क्रिविः न सेके ८,८७,१; ५७२ स्तोमः आ गतम् ।  
क्ष्म इव १०,१०६,७; ६२० मरायु अर्थेषु तर्तरीथः ।  
क्षामा इव २,३९,७; २२१ नः रजांसि समजतम् ।  
क्षामा इव सूयवसात् १०,१०६,१०; ६२३ ऊर्जा सचेथे ।  
क्षोत्रेण इव २,३९,७; २२१ गिरः स्वधितिं सं शिशीतम् ।  
खृगला इव २,३९,४; २१८ विस्त्रसः अस्मान् पातम् ।  
गावः न ऊधभिः ८,९,१९; ४६२ अंशवः (ऊधभिः) दुहे ।  
गृध्रा इव वृक्षम् २,३९,१; २१५ निधिमन्तम् अच्छ ।  
गोः न सेके १,१८१,८; १९२ पीपाय मनुषो दशस्यन् ।  
गौरा इव विष्टुतम् ७,६९,६; ३५२ तृषाणा सवनोप यातम् ।  
(यवसम् अनु) गौरौ इव ५,७८,२; २९८ आगच्छतम् ।  
गौरौ इव ह्रिणो ८,८७,१; ५७२ मध्वः सुतस्य पातम् ।  
गौरौ इव ह्रिणम् ८,८७,४; ५७५ सुष्टुतिम् षप गन्तम् ।  
(दृळ्हं) ग्रन्थिम् न १०,१४३,२; ६२८ अत्रिम् वि व्यतम् ।  
प्रावाणा इव २,३९,१; २१५ तत् अर्थं जरथे ।  
घर्मा इव १०,१०६,८; ६२१ जठरे मधु सनेरु ।  
चक्रवाका इव २,३९,३; २१७ वस्तोः प्रति अर्वाञ्जा यातम् ।  
(कांपया) जरणा इव १०,४०,३; ५९९ वस्तोः वस्तोः प्रातः ।  
जरतोः इव पुराणवत् ८,७३,११; ५५० अन्ति षड्भूत ।  
(युगा ) जूर्णा इव १,१८४,३; २१० वच्यन्ते वां ककुहा ।  
तन्यतुः न वृष्टिम् १,११६,१२; ८८ सनये दंस उग्रम् ।

(रेवमपिच्छं यथा) तृणम् अथ० ६, १०२, २; ६४८ मनः मयि ।  
 दृम्पती इव २, ३९, २; २१६ ऋगुविदा जनशु ।  
 दिव्यासः न गृध्राः १, ११८, ४. १३० अन्तरः अभि प्रयः ।  
 विशं न दिष्टाम् ऋजूयेव १, १८३, ५; २०६ मे हवं उपयातम् ।  
 कृतः न ६, ६३, १; ३१७ स्तोमोऽविदक्षमस्वान् ।  
 कृतः न ७, ६७, १; ३२८ रथः अजीगः ।  
 (यथा) कृतः ८, ५, ३; ३८६ तथा वाचम् ऊहिषे ।  
 कृता इव २, ३९, १; २१५ हव्या जन्वा पुरुत्रा ।  
 कृता इव १०, १०६, २; ६१५ जनेषु यशसा स्थः ।  
 (यथा चक्रुः) देवामुराः अथ० ६, १४१, ३; ६५२ सहस्रपोषाय ।  
 (दिवि) घाम् इव अथ० ६, ६९, ३; ६७६ तत् (वर्चः) मयि ।  
 द्रापिम् इव १, ११६, १०; ८६ वसिं प्रासुञ्जतं वयवानात् ।  
 द्वारा इव ८, ५, २१; ४०४ अप वर्षथः ।  
 धेनुः इव ८, २२, ४; ४७५ सुमतिः अस्मान् अष्ट ।  
 ध्रुवसे न योनिम् ७, ७०, १; ३५५ यत् (अइवं) आ सेदथुः ।  
 नषा इव २, ३९, ५; २१९ युवां रीतिः ।  
 नभः न ८, ९, ८; ४५१ स्तोमाः वां आ चुच्यवीरत ।  
 नभ्या इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।  
 नावा इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।  
 नासा इव २, ३९, ६; २२० नः तन्वो रक्षितारा भूतम् ।  
 निर्यं न सूनुम् १०, ३९, १४; ५९६ वां स्तामं न्यसृक्षाम ।  
 निधिम् इव अपगूळहम् १, ११६, ११; ८७ उद् दर्शत कूपथुः ।  
 निवना इव सिन्धवः १०, ४०, ९; ६०५ आसै रीयन्ते ।  
 निष्कृतम् न योषणा १०, ४०, ६; ६०२ मधु आसा भरत ।  
 नृपती इव १० १०६ ४; ६१७ तुर्वे ।  
 नैतोशा इव १० १०६, ६; ६१९ तुर्गी पर्फरीका ।  
 पञ्चा इव १०, १०६, ७; ६२० चचैरम् ।  
 पतरा इव १०, १०६, ८; ६२१ चचरा ।  
 (वृक्षं) पशुमान् इव ८, ७३, १७; ५५६ अश्विना... ।  
 परिजमाना इव १०, १०६, ३; ६१६ पुरुत्रा यजथः ।  
 पर्णा मृगस्य पतरोः इव १ १८२, ७; २०० श्रोमताय कम् ।  
 पशुं न नष्टमिव १, ११६, २३; ९९ दर्शनाय विष्णात्वं ददथुः ।  
 पद्वा इव १०, १०६, ३; ६१६ चित्रा यजुः आ गमिष्टम् ।  
 पादा इव २, ३९, ५; २१९ तन्वे शम्भविष्टा ।  
 पादा इव १०, १०६, ९; ६२२ गाधं तरते ।  
 पिला इव ८, २२, १५; ४८६ हुवे ।  
 पितरा इव ३, ५८, २; २२७ मेघाः ऊर्ध्वा भवन्ति ।  
 पितरा इव पुत्रा १०, १०६, ४; ६१७ आपी वो अस्मे ।  
 (यथा) पितुः ८, ८६, ४; ५७० सुमतिः स्वादिष्टा ।  
 पितुः न नाम १०, ३९, १; ५८३ सुइवं हवामहे ।

६०[अश्विनौ] ९

पुत्रम् इव पितरो १०, १३१, ५; ६२६ अवथुः काव्यैः ।  
 पुत्राय पितरा इव १०, ३९, ६; ५८८ मद्यां शिक्षतम् ।  
 पु'म् न ८, ७३, १८; ५५७ आ रुज ।  
 पूर्वगत्वा इव सखे ७, ६७, ७; ३३४ निधिः माध्वी ।  
 पूषा इव १, १८१, २; १९३ पुरन्धिः हविष्मान् जरते ।  
 प्रधी इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।  
 प्रवृक्तम् १, ११६, २४; १०० विप्रुतं रेभं उदनि उक्षिन्यथुः ।  
 प्रायोगा इव १०, १०६, २; ६१५ श्वाभ्या शासुः आ इथः ।  
 खर्हिः इव १, ११६, १; ७७ प्र वृक्जे स्तोमान् ।  
 वृहन्ता इव १० १०६ ९; ६२२ गम्भेषु प्रतिष्ठाम् ।  
 ब्रह्मा इव अथ० ६, ५०, २; ६४४ स्थितं हविः ।  
 ब्रह्माणा इव २, ३९, १; २१५ (युवां) विदथे उक्थशासा ।  
 भृगवः न १०, ३९, १४; ५९६ रथम् अतक्षाम ।  
 मक्षः मध्वः न ४, ४५, ४; २४० सवनानि गच्छथः ।  
 (यथा) मक्षा इदं अथ० ९ १ १७; ६८७ वर्चः तेजः ।  
 (यथा) मधु मधुकृतः अथ० ९ १, १६; ६८६ वर्चः ।  
 मनन्या न १०, १०६, ८; ६२१ मनःकाङ्गा जग्मी ।  
 मनुषः न होता १, १८०, ९; १८३ प्र स्पन्द्रा याथः ।  
 मनुष्यत् १, ४६, १३; ३६ गम्भू आ गतम् ।  
 (यथा चक्रुः) पनुष्याः अथ० ६, १४१, ३; ६५२ सहस्रपोषाय ।  
 मयं न योषा १०, ४०, २; ५९८ कृणुते सधथ आ ।  
 महिषा इव ८, ३५, ७-९; ५१५-५१७ सुनं मोमं अत्र गच्छथः ।  
 महिषा इव अवपानात् १० १०६ २; ६१५ पानात् मा ।  
 मित्रा इव ऋता १० १०६ ५ ६१८ शतरा शातपन्ता ।  
 मित्रासः न ३, ५८, ४; २२९ प्र ददुः उक्तो अग्ने ।  
 मृगा इव वारणा १०, ४०, ४; ६०० दोषा वस्तोर्हविषा ।  
 (यथा) मेधिराः आहुवन्त ८, ४२, ६; ५३५ एवा वामहे ।  
 मेने इव २, ३९, २; २१६ तन्वा शुम्भमाने ।  
 मेघा इव १०, १०६, ५; ६१८ इषा सपर्या पुगीषा ।  
 युगा इव २, ३९, ४; २१८ नः पारयतम् ।  
 युवशा इव कन्यताम् ८, ३५, ५; ५१३ इह स्तोमं जुषेथाम् ।  
 योनिः सूष्यन्त्याः इव ५, ७८, ५; ३०१ इव जिहीष्व वनस्पते ।  
 (नाधमाना इव) योषा ५, ७८, ४; ३०० अत्रियद् वाम० ।  
 योषणां न मयं १०, ३९, १४; ५९६ न्यसृक्षाम स्तोमं वाम् ।  
 रथाः इव ७, ७४, ६; ३८३ प्र ये ययुः अवृक्षामः ।  
 रथम् न १, ११९, ७; १४४ वन्दनं निरुक्तं जरण्यया ।  
 रथम् न १०, १४३ १; ६२७ अग्निं नवं कृणुथः ।  
 रथान् इव ५, ७३, १०; २६७ ब्रह्माणि तक्षाम ।  
 रथ्या इव २, ३९, २; २१६ वीरा वरं आ सचेथे ।  
 रथ्या इव २, ३९, ३; २१७ वाक्का अवाञ्छा वातम् ।



# अश्विनौ-देवताया गुणबोधक-पदसूची ।

['अश्विना-नौ' इति द्विवचनामन्तं पदम्, अतस्तद्वोधकपदान्यपि द्विवचनान्तानि वर्तन्ते ।]

अङ्गिरस्वन्ता ८,३५,१४; ५२२  
 अजरो १,११२,९; ६०  
 अर्तुर्दक्षा ८,२६,१; ४९०  
 अदाभ्या ५,७५,७-८; २८४-२८५  
 अधप्रिया ८,८,४; ४२४  
 अध्रिगू ५,७३,२; २५९ । ८,२२,११; ४८२  
 अध्वर्यन्ता १,१८१,१; १८५  
 अनपच्युता ८,२६,७; ४९६  
 अनिन्द्या १,१८०,७; १८१  
 अनुशासिता १,१३९,४; १६१  
 अभ्यायसैन्या १,३४,१; १२  
 अमर्त्या ८,२६,१७; ५०६  
 अरिप्रा ८,८,९; ४२९  
 अरिपसा १,१८१,४; १८८ । ५,७३,४; २६१  
 अर्वाचीना ५,७४,९; २७६ । ८,२२,३; ४७४  
 अवद्यगोहना १,३४,३; १४  
 अवितारा जनानाम् १,१८१,१; १८५  
 अश्रन्तौ ८,५,३१; ४१४  
 अश्वामघा ७,७१,१; ३६२  
 अस्मयू ७,७४,४; ३८१ । ८,२६,१४; ५०३  
 अस्त्रिधा ३,५८,७; २३२  
 अहर्विदा ८,५,९,२१; ३९२, ४०४  
 आज्ञाता दिवः ४,४३,३; २४६  
 आशुह्येषसा ८,१०,२; ४६६  
 इन्द्रतमा १,१८२,२; १९५  
 इषयन्ता ८,५,५,२६,३; ३८८,४९२  
 ईळिता विमदेन १०,२४,४; ५८०  
 उग्रा १,१५७,६; १६८ । ६,६२,३; ३०८ ।  
 १०,१०६,७; ६२०  
 उपस्तुता १,१८१,७; १९१  
 उभा १,४६,१५; १२०,१२, ३८,१५९ । ८,८६,१;  
 १०१,७; १३१,५; ५६७,५७८,६२६  
 उला २,३९,३; २१७  
 ऋतासू १,१८०,३; १७७  
 ऋतावृषा १,४७,१,३,५; ३९ ४१,४३ । ८,८७,५; ५७६  
 ऋभुमन्ता ८,३५,१५; ५२३

कवी १,११७,२३; १२४ । ८,८,२,५,२३; ४२२,४२५,  
 ४४३ । १०,४०,६; ६०९  
 क्रतुमन्ता १,१८३,२; २०३  
 क्रतुविदा २,३९,२; २१६  
 गन्तारा दाशुषो गृहम् ८,५,६; २२,३; ३८८,४७४  
 गम्भीरचेतसा ८,८,२; ४२२  
 गृणाना जमदग्निना ८,१०१,८; ५७२  
 गोपा १०,४०,१२; ६०८  
 गोमघा ७,७१,१; ३६२  
 चक्रमाणा यज्ञम् आ ६,६२,७; ३०७  
 चरन्ता कामप्रेणेव मनसा १,१५८,२; १७०  
 चित्रराती ६,६२,५,११; ३१०,३१६  
 च्यवाना ६,६२,७; ३१२  
 छर्विष्णौ ८,९,११; ४५४  
 जगत्पौ ८,९,११; ४५४  
 जर्भुराणा २,३९,३; २१७  
 जाता अप्सु १,१८४,३; २१०  
 ,, इहेह १,१८१,४; १८८  
 जुजुषाणा गिरः ७,६८,१; ३३८  
 ,, ब्रह्म स्तोमम् २,३९,८; २२२  
 जुषाणा ५,७५,३; २८०  
 ,, उख्यस्य केतुं प्रथमम् वा० य० १४,१; ६३४  
 ,, गिरः १,१८,१०; १३६  
 ,, तिरोअहयम् ३,५८,७; २३२  
 ,, सृष्टुतिम् १,११८,७; १३३  
 जुहुराणा आ ८,२६,५; ४९४  
 जेन्यावसू ७,७४,३; ३८०  
 तनूपा ८,९,११; ४४९  
 तिरोअहयं जुषाणा ३,५८,७; २३२  
 तृषाणा विद्युत्तम् ७,६२,६; ३५२  
 दंसिष्ठा १,१८२,२; १९५ । १०,१४३,३; ६२९  
 दक्षपिता वा० य० १४,३; ६३६  
 दधाना यामम् ७,६९,२; ३४८  
 दशस्यन्ता ६,६२,७; ३१२ । ८,२२,६; ४७७  
 दत्ता १,३,३; ३ । ३०,१७-१८, २-१०। ४६,२; २५। ४७.  
 ३,६; ४१,४४। ९२,१८; ५१। ११६,१०,१६; ८६,९२।

१, ११७, ५, २०-२२; १०६, १२१-१२३ । ११८, ३, ६;  
 १२९, १३२ । ११९, ७; १४४ । १२०, ४; १५१ ।  
 १३९, ३-४; १६०-१६१ । १५८, १; १६९ ।  
 १८२, २-३; १९५-१९६ । १८३, ४-५; २०५-२०६ ।  
 ३, ५८, ३, ५; २२८, २३० । ४, ४३, ४; २४७ । ४४, ६;  
 २५६ । ५, ७५, २, ९; २७९, २८६ । ६, ६२, ५; ३१० ।  
 ७, ६८, १; ३३८ । ६९, ३; ३४९ । ८, ५, २, ११; ३८५,  
 ३९४ । ८, १; ४२१ । २२, १७; ४८८ । २६, ८; ४९७ ।  
 ८६, १; ५६७ । ८७, ५-६; ५७६-५७७ । १०, ४४,  
 १४; ६१०

दानुनस्पती ८, ८, १६; ४३६  
 दिवः आजाता ४, ४३, ३; २४६  
 दिवि स्पृशा १, २२, २; ६  
 दिवो नपाता १, ११७, १२; ११३ । १८२, १; १९४ । १८४,  
 १; २०८ । ४, ४४, २; २५२

दिवो नरा १०, १४३, ३; ६२९  
 दिव्या ४, ४३, ३; २४६  
 दीर्घा १, १५, ११; ४ । ८, ५७, २; ५३७  
 देव ८, ९, ६; ४४९ । ( छान्दसः ह्रस्वः )

देवा-वो १, २२, २; ६ । २४, २; २५ । १८४, ३; २१० । ४,  
 १५, ९-१०; २३५-२३६ । ५, ७४, १-२; २६८-२६९ ।  
 ७, ६७, ५; ३३२ । ७४, ४; ३८१ । ८, २२, ३; ४७४ ।  
 ५७, १; ५३६ । १०, २४, ६; ५८२ । साम० ३०५;  
 ६४१ । वा० य० २१, ५३; ६६४

देवौ १०, १८४, २; ६८७ । ८, ३५, ४-६; ५१२-५१४  
 द्रवत्पाणी १, ३, १; १

धर्तारो विदथस्य अथर्व ७, ७३, ४; ६८२  
 धर्मवन्ता ८, ३५, १३; ५२१  
 धियंजिन्वा १, १८२ १; १२४ । ८, २६, ६; ४९५  
 धिष्ण्या १, ३, २; २ । १८२, १-२; १९४-१९५ । २, ४१, ९;  
 २२५ । ५, ६३, ६; ३२२ । ७, ६७, १; ३२८ । ७२, ३;  
 ३७० । ८, ५, १४; ३९७ । २६, १२; ५०१

धीजवना ८, ५, ३५; ४१८

नपाता दिवः ४, ४, २; २५२  
 नरा १, ३, २; २ । ४६, ४; २७ । ४७ ८; ४६ । ११२, ३,  
 १६; ५४, ६७ । ११६ ७, ११-१२; ८३, ८७-८८ । ११७,  
 ३-४ ६-७, १८, २४; १०४-१०५, १०७-१०८, ११९, १२५ ।  
 ११८, ५, १०; १३१, १३६ । १८२, ८; २०१ । १८३,  
 ३; २०४ । १८४, २; २०९ । २, ३९, ६; २२२ । ३, ५८,  
 ६; २३१ । ५, ७३, ६-७; २६३, २६४ । ५, ७५, ६; २८३ ।

६, ६२, १; ३०६ । ६३, ५; ३२१ । ६९, ६; ३५२ ।  
 ७४, २ ४; ३७९, ३८१ । ८५, १६, २२; ३९९, ४०५ ।  
 ८, ८, ५-६, १७, २०-२१; ४२५-४२६, ४३७, ४४०-  
 ४४१ । २२, ८ १२, १७; ४७९, ४८३, ४८८ । २६, ४, ११,  
 १६; ४९३, ५००, ५०५ । ३५, २३; ५३१ । ८५, ४-५;  
 ५६१-५६२ । ८७, १-२; ५७२-५७३ । १०१, ८, ५७२ ।  
 १०, ४०, १, ३-५; ५९७, ५९९-६०१ । ४१, २; ६१२ ।  
 १४३, ३-४, ६; ६२९-६३०, ६३२

नवेदसा १, ३४, १; १२  
 नव्यौ १०, ३९, ५; ५८७  
 नाना जातौ ५, ७३, ४; २६१

नासत्या १, ३, ३; ३ । ३४, ७, ९-१०; १८, २०-२१ ।  
 ४६, ५; २८ । ४७, ७, ९; ४५, ४७ । ११६ १-२, ४, ९-१०,  
 १३, १६-१७, १९-२० २२ २३; ७७-७८, ८०, ८५ ८६,  
 ८९, ९२-९३, ९५-९६, ९८-९९ । ११७, १, १३, २३;  
 १०२, ११४, १२४ । ११८, ४, ११; १३०, १३७ । १८०,  
 ९; १८३ । १८२, ८; २०१ । १८३, ३, ५; २०४,  
 २०६ । १८४, १, ३, ५; २०८, २१०, २१२ । २, ४१, ७;  
 ३२३ । ३, ५८, ७; २३२ । ४, ४३, ७; २५० । ४४,  
 ४, ७; २५४, २५७ । ५, ७३, ६-७; २६३-२६४ ।  
 ७५, ६; २८३ । ६ ६२, १; ३०६ । ६३, ५; ३२१ ।  
 ७, ६९, ६; ३५२ । ७४, २, ४; ३७९, ३८१ । ८, ५, १६,  
 २२; ३९९, ४०५ । ८, ५, ६, १७, २०-२१; ४२५-४२६,  
 ४३७, ४४०-४४१ । २२, ८, १२, १७; ४७९, ४८३,  
 ४८८ । २६, ४, ११, १६; ४९३, ५००, ५०५ । ३५, २३;  
 ५३१ ।

नासत्या- ल्यौ ५, ७४, २; २६९ । ७५, ७; २८४ । ७८, १;  
 २९७ । ६, ६३, १, ४, ७, १०; ३१७, ३२०, ३२३, ३२६ ।  
 ७, ६७, ३; ३३० । ७० ६; ३६० । ७१, ४; ३६५ । ७२,  
 २-३ ५; ३६९-३७०, ३७२ । ७३, २, ५; ३७४, ३७७ ।  
 ७४, ५; ३८२ । ८, ५ २३, ३२, ३५; ४०६, ४१५ ४१८ ।  
 ८, १४-१५; ४३४-४३५ । ९, ६ ६, १५; ४४९, ४५२,  
 ४५८ । २२, ५; ४७६ । २६, २, ८; ४९१, ४९७ । ४२,  
 ४-६; ५३३-५३५ । ५७, १, ४; ५३६, ५३९ । ८५, १,  
 ९; ५५८, ५६६ । १०१, ७; ५७८ । १०, २४, ४-५; ५८०-  
 ५८१ । ३९, ३, ५; ५८५, ५८७ । १४३, ५; ६३१

निचेतारा १, १८४, २; २०९  
 नृपती ७ ६७, १; ३२८ । ७१, ४; ३६५  
 पारस्या ८, ९, ११; ४५४  
 परिज्मानौ १, ४६, १४; ३७

पि गतौ मदे सोमस्य १, ४६, १२; ३५  
 पुनर्मन्यौ १, ११७, १४; ११५  
 पुराजा ७, ७३, १; ३७३  
 पुरुतमा ७, ७३, १; ३७३  
 पुरुत्रा २, ३९, १; २१५ । ७, ६९, ६; ३५२ । ८, ५, १६;  
 ३९९ । ८, २२; ४४२  
 पुरुदंससा १, ३, २; २ । ६, ६३, १०; ३२६ । ८, ९, ५;  
 ४४८ । ८७, ६; ५७७  
 पुरुदंसा ७, ७३, १; ३७३  
 पुरुपन्था ६, ६३, १०; ३२६  
 पुरुप्रिया ८, ५, ४; ३८७  
 पुरुभुजा १, ३, १, १ । ५, ७३, १; २५८ । ६, ६३, ५, ८; ३२१,  
 ३२४ । ८, ८, १७; ४३७ । १०, ६; ४७० । ८६, ३; ५६२  
 पुरुभू ४, ४४, ४; २५४  
 पुरुभोजसा ८, २२, १६; ४८७  
 पुरुमन्त १, १५८, १; १६९  
 पुरुमन्त्रा ८, ५, ४; ३८७ । ८, १२; ४३२  
 पुरुषाकृतमा ६, ६२, ५; ३१०  
 पुरुश्वन्ना ८, ५, ३२; ४१५  
 पुरुस्पृहा ८, ८, २२; ४४२  
 पुरुहृता ६, ६३, १; ३१७  
 पुरु ५, ७३, १; २५८ । ६, ६२, २; ३०७  
 पुरुवसू १, ४७ १०; ४८ । ८, ५, ४; ३८७ । ८, १२, ४३२  
 पौर [ एकवचनम् ] ५, ७४, ४; २७१  
 प्रचेतसा यज्ञस्य अध्वरस्य ८, १०, ४; ४६८  
 प्रत्ना ६, ६२, ५; ३१०  
 प्रथमा २, ३९, ३; २१७ । ५, ७७, १; २९२  
 प्रातर्यावाणा २, ३९, २; २१६ । ५, ७७, १ २९२  
 प्रातर्युजा १, २२, १; ५  
 प्रिया अर्यम्णः १०, ४०, १२; ६०८  
 प्रियमेधा ८, ८, १८; ४३८  
 प्रेष्ठा ६, ६३, १; ३१७  
 प्रेष्ठौ १, १८१, १; १८५  
 बिभ्रता पुरु दंसांसि ५, ७३, २; २५९,  
 बिभ्रतौ रत्नानि ५, ७५, ३; २८०  
 भिषजा १, ११६, १६; ९२ । १५७, ६; १६८ । ८, ८६, १;  
 ५६७ । १०, ३९, ३, ५; ५८५, ५८७ । वा० य० २१, ५२;  
 ६६३  
 भिषजा देवानाम् वा० य० २१, ५३; ६६४  
 १० देव्या ८, १८, ८; ४७१

भुजी ८, ८, २; ४२२  
 भुरणा ७, ६७, ८; ३३५  
 भुरण्यू ६, ६२, ७; ३१२  
 महिष्ठा ८, ५, ५; ३८८ । २२, १२; ४८३ । १०, १४३ ६; ६३२  
 मघवानः १, १८४, ५; २२२ । ३, ५८ ५; २३० । ८, २६, ७; ४९६  
 मदच्युता ८, २२, १६; ४८७ । ३५, १९, २१; ५२७-५२९  
 मदन्ता १, १८४, २, ५; २०९, २१२  
 मधुपौ १, १८०, २; १७६  
 मधुपातमा ८, २२, १७; ४८८ । ३५, २०-२१; ५२८-५२९  
 मधुमत् १, ११९, ९; १४६  
 मधुवर्णा ८ २६, ६; ४९२  
 मधूयुवा ५ ७३ ८; २६५ । ७४ ९; २७६  
 मनावसू ५, ७४, १; २६८  
 मनोजवसा १, ११७, १५; ११६ । ८, २२, १६; ४८७  
 मनोतरा रयीणाम् १, ४६, २; २५ । ८, ८, १२; ४३२  
 मन्दसाना ८, ८७, २; ५७३ । १०, ४०, १३; ६०९  
 मयोभुवा १ २२, १८; ५१ । ५, ७३, ९; २६६ । ८, ८ ९, १९;  
 ४२९, ४३९ । ८६, १; ५६७ । १०, ३९, ५; ५८७  
 मरुत्तमा १, १८२, २; १९५  
 मरुत्वन्ता ८, ३५, १३-१५; ५२१-५२३  
 मर्यत्रा ६, ६२, ८; ३१३  
 मायाविना १० २४, ४; ५८०  
 मायिना ६, ६३, ५; ३२१  
 मित्रावरुणवन्ता ८ ३५, १३; ५२१  
 मिथुना १०, ४०, १२; ६०८  
 मिमाना पुरु वरांसि अमिता ६, ६२, २; ३०७  
 यजत्रा १, १८०, ५; १७९ । ८, ५७, १ ४; ५३६, ५३९  
 यज्ञवाहसा १, १५, ११; ४  
 यन्तौ पथा इव रजः १, १३२, ४; १६१  
 यमा २, ३९, २; २१६  
 यामहृतमा ८, ७३, ६; ५४५  
 यावाणा प्रातः २, ३९ २; २१६ । ५, ७७ १; २९२  
 युयुजानसप्तौ ६, ६२, ४; ३०९  
 युवाना १, ११७ १४; ११५ । ३ ५८, ७; २३२ । ६, ६२, ४;  
 ३०९ । ७ ६७, १०; ३३७ । ६९, ८; ३५४  
 रक्षितारा २, ३९, ६; २२०  
 रक्षोहणा ७ ७३, ४; ३७६  
 रत्नानि बिभ्रतौ ५, ७५, ३; २८०  
 रथी अथर्व० ७, ७१, १; ६७२  
 रथीतमा १, २२, २; ६ । १८२, २; १९५

रथ्या १,३४,७; १८। १५७,६; १६८। १८२,२; १९५  
 ५,७५,५; २८२। ६,६२,७; ३१२  
 रथिरा ७,६९,५; ३५१  
 रराणा १,११७,२४ १२५  
 राजन्तौ अध्वराणां ८,८ १८; ४३८  
 राजानौ ६,६२,२; ३१४। १०,३९,११; ५९३  
 रिणादसा ८,८,१७; ४३७  
 रुद्रवर्तनी १,३,३, ३। ८,२२,१,१४; ४७२,४८५। १०,  
 ३९,११; ५९३  
 रुद्रा १,१५८,१; १६२। २,४१,७; २२३। ५,७३,८;  
 २६५। ७५,३, २८१। ८,२६,५; ४९४  
 सत्सप्रचेतसा ८,८,७; ४२७  
 सधना ८,८,५; ४२५  
 सल्यू ६,६२,५; ३१०। ६३,१; ३१७। ७,६८,४; ३४१  
 ८,८७,६; ५७७  
 ससुधिति १,१८१,१; १८५  
 ससुविदा धिया १,४६,२; २५  
 ससू ८,१५८,१-२; १६९-१७०  
 सक्ती ८,८,१२; ४३२  
 साजयन्ता ८,३५,१५; ५२३  
 साजसातमा ८५,५; ३८८  
 साजिनीवन्तौ १,१२०,१०; १५७  
 साजिनीवसू २,३७,५; २१४। ५७४,६-७; २७३-२७४।  
 ७५,३; २८०। ७८,३; २९९। ८,५,३, १२,२०,३०;  
 ३८६,३९५,४०३,४१३। ८,१०, ४३०। ९,४; ४४७  
 १०,५; ४६२। २२,७,१४,१८, ४७८,४८५,४८९।  
 २६,३; ४९२। ८५,३; ५६०। १०७,८; ५७९। १०,  
 ४०,१२; ६०८  
 वावसाना विवस्वति १,४६ १३; ३६  
 वावृधाना ८,५,११; ३९४। ८७,४; ५७९  
 विचेतसा ५,७४,९; २७६  
 विद्वांसा सौ १,११६,११; ८७। १२०,२-३; १४९-१५०  
 विपन्यू ८,८,१९, ४३९  
 विप्रौ ८,२६,९; ४९८  
 विप्रवाहसा ५,७४,७; २७४  
 विपियाना १०,१३१,४; ६२५  
 विप्रलावसू १,१८२,१; १९४  
 विश्वगूर्ती १ १८० २; १७६  
 विश्ववारा ७,७०,१; ३५५  
 विश्ववेदसा १,४७,४; ४२। १३९,३; १६०। १०,१४३,  
 ६; ६३२

विश्वा ५,७३,४; २६१  
 विष्णुवन्ता ८,३५,१४; ५२२  
 वीरा २,३९,२; २१६  
 वीळुपाणी ७ ७३,४; ३७६  
 वृत्रहन्तमा ८,८ ९ २२; ४२९,४४२  
 वृधन्ता १,१५८,१; १६९  
 वृषणा- णौ १,११२,८,२३; ५२,७४। ११६,२१; ९७।  
 ११७,३-४ ८,१२,१५,१८-१९; १०४-१०५,१०९,  
 ११३,११६ ११९-१२०। ११८,६; १३२। ११९,४;  
 १४१। १५७,५; १६७। १५८,१; १६९। १८० ७;  
 १८१। १८१,८; १९२। १८३,१; २०२। १८४,२;  
 २०९। ६,६२,७; ३२२। ७,७०,७; ३६१। ७१,६;  
 ३६७। ७३,३; ३७५। ७४,३; ३८०। ८,२२,७,१२,  
 १६; ४७८,४८३,४८७। २६ १-२,१२; ४९०-४९१,  
 ५०१। ३५,१५, ५२३। १०,३९,९; ५२१। अथर्व०  
 ७,७३,१; ६७९  
 वृषण्वसू २,४१,८; २२४। ५ ७४,१; २६८। ७५,४ ९;  
 २८१,२८६। ८,५,२४,२७,३६; ४०७,४१०,४१९।  
 २२ ८-९; ४७९-४८०। २६,१-२,५,१५; ४२०-  
 ४२१,४२४,५०४। ७३,१०; ५४९। ८५,७; ५६४  
 शक्रा २,३९,३; २१७। १०,२७,४; ५८०।  
 शशिष्ठा ४ ४३,३; २४६।  
 शचीपती ७,६७,५,३३२  
 शचीवसुः १,१३९,५; १६२। ७,७४,१; ३७८  
 शतक्रतू १,११२,२३; ७४  
 शम्भविष्ठा २,३९,५; २१९। ५,७६,२; २८८। ६,६२,५;  
 ३१०  
 शम्भुवा ८ ८,१९; ४३९  
 शम्भू १ ४६,१३; ३६  
 शयुत्रा १,११७,१२; ११३। १०,४०,२; ५९८  
 शासता अञ्जसा रजः १,१३९,४; १६१  
 शुचिन्नता १,१५,११; ४। १८२,१; १९४।  
 शुभस्पती १,३,१; १। ३४,६; १७। ४७,५; ४३। १२०,  
 ६; १५३। ५,७५,८; २८५। ८,५,५,११; ३८८,३९४।  
 २२,४,६,१४; ४७५,४७७,४८५। २६,६; ४९५।  
 ८७,५; ५७६। १०,४०,४,१२-१४; ६००,६०८-६,१०।  
 १३१,४; ६२५  
 शुभाना स्पर्हया श्रिया ७,७१,१; ३६८  
 शुभ्रा ७,६८,१; ३३८

शुभ्रयावाना ८, २६, १९; ५०८  
 शुम्भमाने तन्वा २, ३९, २; २१६  
 शुश्रुवांसा पुरुणि ब्रह्माणि ७, ७०, ४; ३५८  
 शरसाता १, १५७, २; १६४  
 शृण्वन्ता स्तुतिम् १, ३४, १२; २३  
 स्वक्षणी ८, २२, १५; ४८६  
 सचनस्तमा ८, २६ ८, ४९७  
 सचाभुवा १, ३४, ११; २२ । १५७, ४; १६६  
 सजोषसा ३, ५८, ७; २३२ । ७, ७२, २; ३३९ । ८, ९, १२;  
 ४५५ । १०७, ७; ५७८  
 सत्पती विदथस्य अथर्व० ७ ७३, ४; ६८२  
 सत्या १, १८०, ७; १८१  
 सधीचीना यातवे १०, १०६, १; ६१४  
 सन्तौ १, १८४, १; २०८  
 सपर्यन्ता ८, २६, १३; ५०२  
 समनसा १, ९२, १६; ४९ । ७, ७४, २; ३७९  
 सम्भृता ७ ७३, ४; ३७६  
 सवासिनौ अथर्व० २, २९, ६; ६४२  
 सिन्धुमातरा १, ४६, २; २५  
 सुगोपा १, १२०, ७; १५४  
 सुजाता १, ११८, १०; १३६

सुदंससा ८, १०, ३; ४६७  
 सुदक्षा ३, ५८, ७; २३२  
 सुदान् १, ११२, ११; ६२ । ११७, २०, २४; १२१, १२५ ।  
 १८०, ६; १८० । १८४, ४; २११ । ३, ५८, ७; २३२  
 सुपर्णा ४, ४३, ३; २४६  
 सुयुजा ७, ७०, २; ३५६  
 सुरथा १ २२, २; ६  
 सुवीरा ८ २६ ७; ४९६  
 सुश्रुता २, ३९, ६; २२०  
 सुष्टुता ६, ६३, ६; ३२२  
 सुहवा ८, २२, १; ४७२ । १०, ३९, ११; ५९३  
 सूर्यावसू ७, ६८ ३; ३४०  
 स्थविरा १, १८१ ७; १९१  
 स्थातारा १, १८१, ३; १८७  
 स्वविदा ८, ८ ७; ४२७  
 स्वश्वा ७, ६८, १; ३३८ । ६९, ३; ३४९  
 हवनश्रुता ५, ७५ ५; २८२ । ८, ८, ७; ४२७  
 हिरण्यपेशसा ८, ८, २; ४२२  
 हिरण्यवर्तनी १, ९२, १८; ५१ । ५, ७५, २-३; २७९-२८० ।  
 ८, ५, ११; ३९४ । ८, १; ४२१ । ८७, ५; ५७६  
 होतारा देवानाम् वा० य० २१, ५३; ६६४

## ( १ ) सुरथा अश्विनौ । [ अश्विनोः रथः । ]

अक्षः हिरण्ययः यस्य ८, ५, २९; ४१२  
 अजरः ४, ४५, ७; २४३  
 अत्यः १, १८०, २; १७६  
 अद्रिजूतः ३, ३९, ८; २३३  
 अनश्वः १, १२०, १०; १५७  
 अनुगायस् ८, ५, ३४; ४१७  
 अनेहस् ८, २२, २; ४७३  
 अमर्त्यः ५, ७५, २; २८६  
 अरिष्टनेमिः १, १८०, १०; १८४  
 अश्वः ७, ७०, १; ३५५  
 अश्वासः ४ ४५, २; २३८  
 अश्ववत् ७, ७२, १; ३६८  
 असनः १, १२०, १०; १५७  
 अहंपूर्वः १, १८१, ३; १८७  
 आचितः १, १८२, २; १९५  
 आशुः ४, ४३, २; २४५

इयानः अस्मभ्यम् ७, ६८, ३; ३४०  
 इयानः याम् १, १८०, १०; १८४  
 इषा वर्तते सह ८, ५, ३४; ४१७  
 इषां वोळ्हा ७ ६९, १; ३४७  
 ईषा हिरण्ययी रभिः ८, ५, २९; ४१२  
 उक्थयः १०, १४१, १; ६११  
 उग्रः ५, ७३, ७; २६४  
 उक्षयामः ७, ७१, ४; ३६५  
 उसाः वस्ते ७, ६२, ५; ३५१  
 ऋतः २, ५८, २; २२७  
 ऋतजाः ३, ३९, ८; २३३  
 ककुहः १, १८१, ५; १८९ । ५, ७३, ७; २४४  
 करिकत् भूरि वर्षः ३, ५८, ९; २३४  
 क्षाम् अभियन् १, १८३, २; २०३  
 निर्वाहस् ४, ४४, १; २५१  
 गोमान् ७, ७२, १; ३६८



गोः संगतिः ४, ४४, १; २५१  
 घृतवर्तनिः ७, ६९, १; ३४७  
 घृतस्तुः ५, ७७, ३; २७४  
 चक्रा उभा हिरण्यया ८, ५, २९; ४१२  
 चक्रा त्री रथस्य १, ३४, ९; २०  
 चक्रैः अन्तरैः युक्त. ६, ६२, १०; ३१५  
 जयुस् १, ११७, १६; ११७ । १०, ३९, १३; ५९५  
 जवीयान् निमिषाश्वत् ८, ७३, २; ५४१  
 जवीयान् मनसः १, ११७, २; १०३ । १०, ३९, १२; ५९४  
 जीराश्वः १, ११९, १; १३८ । १५७, ३; १६५  
 तमः अपोर्णुवन् ४, ४५, २; २३८  
 त्रिचक्रः १, ११८, २; १२८ । १८३, १; २०२ । १०, ४१, १; ६११  
 त्रिधातुः १, १८३, १; २०२  
 त्रिवन्धुरः १, ४७, २; ४० । ११८, १-२; १२७-१२८ । १८३, १; २०२ । ७, ६९, २; ३४८ । ७१, ४; ३६५ । ८, २२, ५; ४७६ । ८५, ८; ५६५  
 त्रिद्वत् १, ३४, ९, १२; २०, २३ । ४७, २; ४० । ११८, २; १२८ । ८, ८५, ८; ५६५  
 त्रिष्टः १, = ४. ५। १६  
 द्वंसिष्टः ८, २२, १; ४७२  
 दिविस्पृक् ८, ५, ३५; ४१८  
 दक्षिः तुरीयः मधुनः ४, ४५, १; २३७  
 द्युमान् ६, ६२, १०; ३१५ । १०, ४०, १; ५९७  
 द्रवत्पाणि ८, ५, ३५; ४१८  
 द्रवदश्वः ४, ४३, २; २४५  
 नर्यः १, १८०, २; १७६  
 नव्यः १, १८०, १०; १८४  
 निचेरुः १, १८१, ५; १८९  
 निष्वाट् १, १८१, ६; १९०  
 नूतनः ५, ७८, ४; ३०२  
 नृपतिः ७, ६९, १; ३४७  
 नृवान् ६, ६२, १०; ३१५  
 नृवाहणः २, ३७, ५; २१४  
 पप्रथानः पञ्च भूम ७, ६९, २; ३४८  
 परिजमन् १०, ३९, १; ५८३ । ४१, १; ६११  
 पवयः त्रयः तस्य १, ३४, २; १३ । १५७, ३; १६५ । १०, ४१, २; ६१२  
 पवयः प्रुषायन्ते १, १३९, ३; १६०  
 पविभिः रुचानः ७, ६९, १; ३४७

पिशा.रूपः १, १८१, ५; १८९  
 पुरुतमः ४, ४४, १; २५१  
 पुरुमुष्-ट् ८, २२, २; ४७७  
 पुरुमायः १, ११९, १; १३८  
 पुरुश्वन्द्रः ७, ७२, १; ३६८  
 पुरुस्तुहः ८, २२, २; ४७३  
 पुरुहूतः १०, ४१, २; ६११  
 पूर्वापुष ८, २२, २; ४७३  
 पूर्यः वाजेषु ८, २२, २; ४७३  
 पृक्षः वहन् ५, ७७, ३; २९४  
 पृक्षासः ४, ४५, २; २३८  
 पृक्षासः अस्मिन् मिथुना अधि त्रयः ४, ४५, १; २३७  
 पृथुज्जयः ४, ४४, १; २५१  
 पृथुपाजस् ८, ५, २; ३८५  
 प्रयज्युः १, १८०, २; १७६  
 प्रवत्वान् १, १८१, ३; १८७  
 प्रवद्यामन् १, ११८, ३; १२९  
 प्रातर्यावान् १०, ४०, १; ५९७ । ४१, २; ६१२  
 प्रातर्युज् १०, ४१, २; ६१२  
 प्रियतमः ५, ७५, १; २७८  
 बद्धधानः रोदसी ७, ६९, १; ३४७  
 बाधते न चक्रमभि ८, ५, ३५. ४१७  
 भुज्युः ८, २२, २; ४७३  
 मघवान् १ १५७, ३; १६५  
 मधुमन्तः ४, ४५, २; २३८  
 मधुवर्णः ५, ७७, ३; २९४  
 मधुवाहनः १, ३४, २; १३ । १५७, ३; १६५ । १०, ४१, २, ६१२  
 मध्वः पूर्णः १, १८२, २; १९५  
 मनसः जवीयान् १, ११७, २; १०३ । १८३, १; २०२ । १०, ३९, १२; ५९४  
 " " मर्त्यस्य १ ११८, १; १२७  
 " " वृष्णः १, १८१, ३; १८७  
 मनसा युक्तः ७, ६९, २; ३४८  
 मनोजवाः १, ११७, १५; ११६ । ५, ७७, ३; २९४ । ६, ६३, ७; ३२३ । ७, ६८, ३; ३४०  
 मनोजः १, ११९, १; १३८  
 मनोयुज्-क् ८, ५, २; ३८५  
 यशियः १, ११९, १; १३८  
 ययि. ५, ७३, ७; २६४  
 यय्यः २, ३७, ५; २१०

यात् १०४०,१; ५९७  
यामः १,३४,१; १२  
युक्तः मनसा ७,६९,२; ३४८  
युजानः ७,६९,५; ३५१  
युवायुजम् (द्वितीया) १,११९,५; १४२  
रघुवर्तनिः ८,९,८ ४५१  
रघुस्य-ष्य-द् ५ ७३,५; २६२  
रजः शुक्रं तन्वन्तः ४ ४५,२; २३८  
रथानां येष्ठ ५,७४,८; २७५  
रातिः १,३४,१; १२  
घनिन् ( नी ) १,११९,१; १३८  
वन्धुरायुः ४,४४,१; २५१  
वर्षः करिक्रत् भूरि ३,५८,९; २३४  
वसुमान् १,११८,१०; १३६ । ७,६७,३; ३३० । ७१,३-४,  
३६४-३६५  
वसुवाहनः ५,७५,१; २७८  
वसूयुः ४,४४,१; २५१  
वस्ते उस्त्राः ७,६९,५; ३५१  
वहमानः विशेविशे वस्तोःवस्तोः १०,४०,१; ५९७  
वाजिनीवान् ७,६९,१; ३४७  
वाजी ७,७०,१; ३५५  
वाजेषु पूर्व्यः ८,२२,२; ४७३  
वातरंहाः १,११८,१; १२७ । ५,७७,३; २९४  
वाहिष्ठः ८,२६,४; ४९३  
विद्ध्यः १०,४१,१; ६११  
विद्वेषसः ८,२२,२; ४७३  
विपत्सन् १,१८०,२; १७६  
विभिन्दुना ( तृतीया ) १,११६,२०; ९६  
विभुः १,३४,१; १२  
विभ्वः १०४०,१; ५९७  
विमोचनः वाम् २,३७,५; २१४  
विश्वप्स्यः ७,७१,४; ३६५  
विश्वसौभगः १,१५७,३; १६५  
वीड्वङ्गः ८,८५,७; ५६४  
वृक्षः निष्ठितः १,१८२,७; २००  
वृषणः-णम् १,१५७,२; १६४ । ५,७५,१; २७८  
वृषण्वान् १,१८२,१; १२४  
वृषभिः अश्वैः युक्तः ७,६९,१; ३४७  
वोल्हा ७,७१,४; ३६५  
वोल्हा इषाम् ७,६९,१; ३४७  
व्रतानि अनु वर्तते यः १,१८३,३; २०४

दै०[अश्विनो] १०

शतद्रसुः १,११९,१; १३८  
शतोतिः ६,६३,५; ३२० । ७,६८,३; ३४०  
शन्तमः ५,७८,४; ३००  
शरद्वान् १ १८१,६; १९०  
शुनपृष्ठः ७ ७०,१; ३५५  
श्येनपत्वा १ ११८,१; १२७  
श्येनस्य चित् जवसा (रथेन) ५,७८,४; ३००  
श्रुतः ८ २२,५; ४७६ । २६,४; ४९३  
श्रुष्टीवान् १,११९,१; १३८  
सचनः १,११६ १८; ९४  
सचनावान् सुमतिभिः ८,२२ २; ४७३  
सन्तनिः ५,७३,७; २६४  
समानः १०,४१,१; ६११  
समानयोजनः १,३०,१८; १०  
सहस्रकेतुः १,११९,१; १३८  
सहस्रनिर्णिक् ८,८ ११,१४; ४३१,४३४  
सुखः १,१२०,११; १५८  
सुपेशस् (शाः) १,४७,२; ४०  
सुमतिभिः सचनावान् ८,२२,२; ४७३  
सुमूर्त्कीकः १,११८,१; १२७  
सुयुज् १,११७,१५; ११६  
सुवृत् १ ४७ ७; ४५ । ११८,२-३; १२८-१२९ । १८३;  
२-३; २०३-२०४ । ३,५८,३; २२८ । ४,४४,५;  
२५५ । १०,३९,१; ५८३  
सुन्दुतः १,१५७,३; १६५  
सुहृवः ८,२२,२; ४७३  
सूर्यत्वक् १,४७,९; ४७ । ८,८,२; ४२२  
सूर्या यः वहति ४,४४,१; २५१  
सुप्रवन्धुरः १,१८१,३; १८७  
सेनाजः [जुवा-तृतीया] १,११६,१; ७७  
स्कम्भासः (यस्य) त्रयः स्कभितासः १,३४,२; १३  
स्यूमगभस्तिः ७,७१,३; ३६४  
स्वर्विद् ७,६७,३; ३३०  
स्ववान् १,११८,१; १२७  
स्वश्वः १,११७,२; १०३ । ४,४५,७; २४३  
हविष्मान् १,१८३,३; २०४  
हिरण्यत्वक् ५ ७७,३; २९४  
हिरण्ययः १,१३९,३-४; १६०-१६१ । ४,४४,४-५; २५४-  
२५५ । ७,६९,१; ३४७ । ८,५,३५; ४१८ । ८,२२,९; ४८०  
हिरण्यवन्धुर ८,५,२८; ४११  
हिरण्यामीड्युः ८,५,२८; ४११ । २२,५; ४७६

## ( २ ) स्वश्रौ अश्विनौ । [ अश्विनोः अश्राः । ]

अज्राः ६, ६२, २; ३०७  
 अत्याः १, १८१, २; १८६  
 अध्वरश्रियः १, ४७, ८, ४६  
 अप्तुरः १, ११८, ४; १३०  
 अरुषाः-पासः १, ११८, ५; १३१ । ४, ४३, ६; २४९  
 अवमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६  
 अध्याः-श्वासः १, ११८, ५; १३१ । ६, ६३, ७; ३२३ । ८, ५, ७  
 ३९०  
 अस्त्रिधः ४, ४५, ४; २४०  
 अहभिः दविश्वतः ४, ४५, ६; २४२  
 आकेनिपासः ४, ४५, ६; २४२  
 आशवः १, ११८, ४; १३० । ८, ५, ७; ३९०  
 आशुहेमानः १, ११६, २; ७८  
 इषिराः ६, ६२, ३; ३०८  
 उदमुतः ४, ४५, ४; २४०  
 उषर्बुधः १, ९२, १८; ५१ । ४, ४५, ४; २४०  
 उहुवः ४, ४५, ४; २४०  
 ऋतयुजः ७, ७१, ३; ३६४  
 एवाः १, १८१, ६; १९०  
 ककुहासः ४, ४४, २; २५२  
 तरणयः ७, ६७, ८; ३३५  
 दिव्यासः १, १८१, २; १८६  
 दिव्यासो न गृध्राः १, ११८, ४; १३०  
 देवयुक्ताः ७, ६७, ८; ३३५  
 द्रवत्पाणयः ८, ५, ३५; ४१८  
 नियुतः ६, ६२, ११; ३१६  
 पतङ्गाः १, ११८, ४-५; १३०-१३१  
 पयस्याः १, १८१, २; १८६  
 परमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६  
 पर्णिनः ८, ५, ३३; ४१६  
 प्रुषितप्सवः ८, ५, ३३; ४१६ । ८७, ५; ५७६  
 मक्षयवः ७, ७४, ४; ३८१

मधुमनाः ४, ४५, ४; २४०  
 मध्यमाभिः (तृतीया) ६, ६२, ११; ३१६  
 मनोजवसः ६, ६२, ३; ३०८  
 मनोजुवः १, १८१, २; १८६  
 मन्दिनः ४, ४५, ४; २४०  
 मन्दिनिस्पृशाः ४, ४५, ४; २४०  
 युक्ता वृषभश्च शिशुमारश्च १, ११६, १८; ९४  
 युक्तासः रथे १, ११८, ४; १३०  
 रजः शुकं आतन्वन्तः ४, ४५, ६; २४२  
 रजांसि सुयमासः १, १८०, १; १७५  
 रासभः १, ११६, २; ७८ । ८, ८५, ७; ५६४  
 वपुषः १, ११८, ५; १३१  
 वयः १, ११८, ५; १३१ । ४, ४३, ६; २४९ । ६, ६३, ६-७;  
 ३२२-३२३ । ८, ५, ३३; ४१६  
 वहिष्ठाः ६, ६३, ७; ३२३  
 वाजाः १, १८१, ६; १९०  
 वातरंहसः १, १८१, २; १८६  
 वीतपृष्ठाः १, १८१, २; १८६  
 वील्लुपत्मानः १, ११६, २; ७८  
 वृषणः १, १८१, २; १८६ । ७, ६९, १; ३४७ । ७१, ३; ३६४  
 शुचयः १, १८१, २; १८६  
 श्येनासः १, ११८, ४; १३० । ८, ५, ७; ३९०  
 सप्तयः १, ४७, ८; ४६  
 सुभ्वः ७, ६७, ८; ३३५  
 सुन्नायवः ७, ७१, ३; ३६४  
 सुयमासः रजांसि १, १८०, १; १७५  
 सुयुजः ३, ५८, २-३; २२७-२२८  
 स्थविरासः ७, ६७, ४; ३३१  
 स्वराजः १, १८१, २; १८६  
 हंसासः ४, ४५, ४; २४०  
 हयाः ७, ७४, ४; ३८१  
 हरी १, ११८, ५; १८९  
 हिरण्यपर्णाः ४, ४५, ४; २४०

( ३ ) अश्विनोः सञ्चारः ।

(१) पृथिव्याम् ।

४,४५ ७; २४३ येन ( रथेन ) सद्यः परि रजांसि याथः ।  
५,७३,३; २६० ईर्मान् यद् वपुषे वपुः चक्रं रथस्य येमथुः ।  
पर्यन्या नाहुषा युगा महा रजांसि दीयथः ॥  
७,६९,२; ३४८ स [ रथः ] पप्रथानः अधि पञ्च भूमा ।

(२) दिवि ।

१,११९,३; १४० युवोरह प्रवणे चेकिते रथः ।  
१,१३९,४; १६१ अचेति दसा व्युनाकमृष्वथः युञ्जते वां  
रथयुजो दिविष्टिषु पथेव यन्ता... रजः ।  
१,१८०,१०; १८४ तं वा रथं वयमया हुवेम ... धामियानम् ।  
८,९,२१; ४६४ यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः ॥  
८,२९,४; ४७५ युवो रथस्य परि चक्रमीयते ईर्मान् यद्वा  
इषण्यति ।  
८,८३,७; ४२७ दिवश्चिद्रोचनादाधि आ नो गन्तं स्वर्विदा ।  
१,१८३,६; २०७ एह यातं पथिभिर्देवयानैः ।  
१,१८४,६; २१३  
३,५८,५; २३०  
७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाथे दिवो यही-  
ष्णोषधीषु विश्वु । नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्त ॥

(३) द्यावापृथिव्योः ।

१,३४,८; १९ तिस्रः पृथिवीरपरि प्र वा दिवो नाकं रक्षेथे  
षुभिरक्तुभिर्हितम् ।  
३,५८,८; २३३ रथो ह वां ऋतजा अद्रिजृतः परि द्यावा-  
पृथिवी याति सद्यः ।  
४,४४,५; २५५ आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्य-  
येन सुवृता रथेन ।  
८,१०,६; ४७० यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजो यद्रेमे रोदसी  
अनु । यद्वा स्वधाभिराधितिष्ठथो रथे...  
अत आयातमश्विना ॥  
८,२२,५; ४७६ [ वां रथः ] परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुतः ।  
८,७३,३; ५५२ यो वां रजांस्यश्विना रथो वि याति रोदसी ।  
८,८३,३; ४२३ आ यातं नहुषस्परि आन्तरिक्षात् सुवृत्किभिः ।  
८,८३,४; ४२४ आ नो यातं दिवस्परि अन्तरिक्षादध प्रिया ।

(४) परावति ।

१,३४,७; १८ परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम् । तिस्रो  
नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः  
स्वसराणि गच्छतम् ॥

१,४७,७; ४५ यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे ।  
अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य  
रश्मिभिः ॥  
५,७३,१; २५८ यदद्य स्थः परावति यदर्वावति अश्विना ।  
यद्वा पुरु पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम् ॥  
८,५,८; ३९१ येभिस्तिष्ठः परावतो दिवो विधानि रोचना ।  
त्रौरक्तृन् परि दीयथः ॥  
८,८,१४; ४३४ यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अभ्यम्बरे ।

(५) जले ।

१,३०,१८; १० समानयोजनो हि वां रथः ... समुद्रे अश्विने-  
यते ।  
५,७३,८; २६५ यत् समुद्राति पर्वथः ।  
६,६२,२; ३०७ पुरु वरांसि अमिता मिमाना अपो धन्वा-  
न्यति याथो अजान् ।  
७,६७,८; ३३५ परि वां सप्त स्रवतो रथो गात ।  
४,४३,६; २४९ सिन्धुर्ह वां रसया सिमदधान् वृणा वयो-  
ऽरुपासः परि म्मन् ।

(६) दिवि जले च ।

१,४६,८; ३१ अरित्रं वा दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।  
१,१८०,१; १७५ युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद्वां  
परि अर्णांसि दीयत् ।  
४,४३,५; २४८ उरु वां रथः परि नक्षति वामा यत् समुद्रा-  
दाभि वर्तते वाम् ।  
५,७६,४; २९० आ नो दिवो बृहतः पर्वतान् आ अद्भ्यः  
यातम् ।  
८,२६,१७; ५०६ यददो दिवो अर्णव ऽपो वा मदथो गृहे ।  
८,१०,१; ४६५ यत् स्थो दीर्घप्रसङ्गनि यद्वादो रोचने दिवः ।  
यद्वा समुद्रे अध्याकृते गृहेऽत आ यात-  
मश्विना ॥

(७) सर्वदिक्षु ।

७,७२,५; ३७२ } आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तान् अश्विना  
७,७३,५; ३७७ } यातमधरादुदकान् ।  
८,१०,५; ४६९ यदद्याश्विनावपाग् यत् प्राक् स्थो वाजि-  
नीवस् । यद् द्रुह्यवि अनवि तुर्वशे यदौ हुवे  
वामथ मा गतम् ॥

## (८) अन्यदेवैः सह ।

८,९,१३; ४५५ यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना  
यद्वा वायुना भवथः समोकसा ।  
यदादित्येभिर्ऋग्भुभिः सजोषसा  
यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥

## (९) आशातः ।

१,२२,४; २८ न हि वामास्ति दूरके यत्रा रथेन गच्छथः ।

५,७५,७; २८४ तिरश्विर्दर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या ।  
५,७४,१; २६८ कूष्ठो देवावश्विनाऽद्या दिवो मनावसू ?  
५,७४,२; २६९ कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या?  
८,७३,४; ५४३ कुह स्थः ? कुह जग्मथुः ? कुह श्येनेव पेतथुः ?  
८,७३,५; ५४४ यदद्य कर्हि कर्हिचित् शुभ्रूयातमिमं हवम् ।  
१०,४०,२; ५९८ कुह स्विद् दोषा ? कुह वस्तोरश्विना ?  
कुहाभिपित्वं करतः ? कुहोषतुः ? ।

## (४) अश्विनोः आवाहनकालः ।

१,११८,११; १३७ हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया  
उषसो व्युष्टौ ।  
७,६८,९; ३४६ अग्ने बुधानः उषसां सुमन्मा ।  
७,६९,५; ३५१ तेन नः शंयोरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं  
यज्ञेऽस्मिन् ।  
७,७१,३; ३६४ आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ...वर्तयन्तु ।  
७,७१,४; ३६५ यो वां रथः.. उन्नयामा ।  
७,७२,४; ३७१ विचेदुच्छन्ति उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो  
भरन्ते ।  
१०,४१,१; ६११ वयं व्युष्टौ उषसो हवामहे ।  
५,७६,१; २८७ आ भात्यामिषसामनीकं अर्वाञ्चा ... नूनं  
रथेह यातम् ।  
५,७६,२; २८८ दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा ।  
१,११२,२४; ७५ अयूत्येऽवसे नि ह्ये वाम् ।  
२,३९,२; २१६ प्रातर्यावाणा ।  
५,७७,१; २९२ , , ।  
" " प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते ।  
५,७७,२; २९३ प्रातर्यजध्वमश्विना ।  
८,२२,१५; ४८६ आ सुगम्याय...प्राता रथेनाश्विना हुवे ।  
१०,४०,१; ५९७ प्रातर्यावाणं रथम् ।  
१०,४०,३; ५९९ प्रातर्जरेथे जरणेव कापया ।  
१०,४१,२; ६१२ प्रातर्युजं नामत्याधि तिष्ठथः प्रातर्यावाणं...

रथम् ।

८,२२,११; ४८२ इदा चिदहो हवामहे ।  
८,२२,१३; ४८४ ताविदा चिददानाम्...वन्दमान उप ह्रुवे ।  
८,२२,१४; ४८५ तावित् दोषा ता उषसि शुभस्पती ता  
यामन् [ हवामहे ] ।  
१०,३९,१; ५८३ यो वां रथो दोषामुषासो हव्यः...तमु  
वामिदं वयं सुहवं हवामहे ।  
१०,४०,४; ६०० दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्ययामहे ।  
७,७१,२; ३६३ उपायातं दाशुषे... ।  
दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः ॥  
१,११२,२५; ७६ युभिः अक्तुभिः पारे पातमस्मान् ।  
१,३४,१; १२ त्रिश्विन्नो अद्या अवतम् ।  
१,३४,३; १४ समाने अहः त्रिरवद्यगोहना त्रिरथ यज्ञं  
मधुना मिमिक्षतम् ।  
१,३४,४; १५ त्रिर्वतिर्यातम् ।  
८,३५,७-९; ५१५-५१७ ,,  
८,२६,३; ४९२ ता वामय हवामहे... अति क्षपः ।  
८,७३,६; ५४५ अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम् ।  
१,४६,१४; ३७ ऋता वनथो अक्तुभिः ।  
५,७६,३; २८९ उता यातं संगवे प्रातरहो मध्यन्दिन उदिता  
सूर्यस्य । दिवा नक्तमवसा शतमेन ॥

## (५) अश्विनोः भिषक्कर्म ।

## (१) भिषजा ।

भिषजा १,११६,१६; ९२ । १५७,६; १६८ । ८,८६,१;  
५६७ । १०,३९,५; ५८७ । वा० य० २१,५२; ६६३  
भिषजा स्तस्य चित् १०,३९,३; ५८५ अन्धस्य चित् ...  
कृशस्य चित्... ।

भिषजा देवानाम् वा० य० २१,५३; ६६४

भिषजा देव्या ८,१८,८; ४७१

## (२) भिषक्कर्म ।

१,३४,६; १७ त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थि-  
वानि त्रिरदत्तमद्भ्यः ।

१.१५७,६; १६८ युवं ह स्थः भिपजा भैषजेभिः ।  
 ८,२,६; ४४२ यन्नासत्या भुरण्यथः यद् वा देव भिषज्यथः।  
 ८,९,१५, ४५८ यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।  
 तेन नूनं विमदाय प्रचेतरा छर्दिर्वत्साय  
 यच्छतम् ।  
 ८,२२,१०; ४८१ ताभिर्नो मक्षू त्वमश्विना गतं भिषज्यतं  
 यदातुरम् ॥

८,३५,१६-१८; ५२४-५२६ सेधतममीवाः ।  
 ७,७०,३; ३५७ यानि स्थानानि अश्विना दधाथे दिवो यक्षीषु  
 ओषधीषु विक्षु ।  
 ७,७०,४; ३५८ चनिदं देवा ओषधीष्वप्सु  
 १,१५७,५; १६७ युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थः युवं विश्वेषु  
 भुवनेषु अन्तः । युवमग्निं च वृषणावपश्च  
 वनस्पतीरश्विना वैरयेथाम् ॥  
 ७,७१,२; ३६३ युयुतमम्मदनिराममीवान् ।

### (६) अश्विनोः सूर्याङ्ग्युषसां च सम्बन्धः ।

१.४६,१; २४ ण्षो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।  
 स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥  
 १.४६,२०; ३३ अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः ।  
 व्यख्यज्जिह्वासित ॥ (तत्तदिदश्विनोरवः)  
 १.४६,१४; ३७ युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुषाचरत् ।  
 १,१५७,१; १६३ अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यः व्युषाश्चन्द्रा  
 मह्यावो अर्चिषा । आयुक्षातामश्विना यातवे  
 रथं पासावीद् देवः सविता जगत् प्रुधक् ॥  
 १,१८०,१; १७५ मन्वः पिषन्ता उषसः सचेथे ।  
 १. ८३,२; २३ दिवो दुहित्रा उषसा सचेथे ॥  
 ३,५८,१; २२६ धेनु प्रत्नस्य काम्यं दुहान ऽन्तः पुत्रश्ररति  
 दक्षिगायाः । आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामा  
 उषसः स्तोमो अश्विनावजीगः ॥  
 ३,५८ ४; २२७ इमा हि वां गोऋजीका मधूनि प्र मित्रासो  
 न ददुरुत्वो अग्रे ।  
 ४,४५,१-२; २३७-२३८ एष स्य भानुरुदियर्ति गुज्यते रथः  
 परिज्मा दिवो अस्य सानवि । पृक्षासो  
 अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो हतिस्तुरीयो  
 मधुनो वि रप्शते ॥  
 उद्रां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास  
 उषसो व्युष्टिषु । अपोर्ण्वन्तस्तम आ परी-  
 वृतं स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः ॥  
 १,९२,१८; ५१ ( अश्विनोः अश्वासः ) उषर्वुधः ।  
 ४.४५,४; २४० अभूदुषा रुशत् पशुरामिरधायृत्वियः ।  
 ५,७५,९; २८६ अयोजि वां वृषण्वसू रथः ।

५,७६,१; २८७ आ भात्यग्निरुषसामनीकम् उद् विप्राणां  
 देवया वाचो अस्थुः । अर्वात्रा नूनं रभ्येह  
 यातम् ।  
 ६,६२,१; ३०६ या सद्य उष्वा व्युषि ज्मो अन्तान् युयुषतः  
 पर्युरु वरांसि ॥  
 ६,६३,६; ३२२ युवं श्रीभिर्दर्शताभिराभिः शुभे पुष्टिमृहथुः  
 सूर्यायाः ।  
 ७,६७,२-३; ३२९-३३० अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उपो अदधन्  
 तमसश्विदन्ताः । अचेति केतुरुषसः पुर-  
 स्तात् श्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥  
 अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति  
 नासत्या विवक्कान् ।  
 ७,७२,३; ३७० जामि ब्रह्माणि उषसश्च देवीः ।  
 ७,७२,४; ३७१ वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि  
 कारवो भरन्ते । ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो  
 अश्रेत् बृहदमयः समिधा जरन्ते ॥  
 ८,५,२; ३८५ रथेन पृथुपाजसा । सचेथे अश्विनोषसम् ।  
 ८,८,२ ४२२ आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा ॥  
 ८,९,१६-१८ ४५९-४६१ अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।  
 व्यावदेव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः ॥  
 प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनूते महि  
 प्र यज्ञहोतरानुषक् प्र मदाय श्रवो बृहत् ॥  
 यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।  
 आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्यानि नृपाय्यम् ॥

८, ३५, १-३; ५०९-५११ सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं  
पिबतमश्विना ॥  
४-६; ५१२-५१५ ,, इषं नो वोळ्हमश्विना ॥  
७-९; ५१५-५१७ ,, त्रिर्वतिर्यातमश्विना ॥  
१०-१२; ५१८-५२० ,, ऊर्जं नो धत्तमश्विना ॥  
१३-१५; ५२१-५२३ ,, आदित्यैर्यातमश्विना ॥  
१६-१८; ५२४-५२६ ,, सोमं सुन्वतो अश्विना ॥

८, ३५, १९-२१; ५२७-५२९ ,, अश्विना तिरोअहयम् ॥  
८, ७३, १६-१७; ५५५-५५६ अरुणसुरुषा अभूदकज्योतिर्ऋतावरी ।  
अन्ति षम्भूतु वामवः ॥  
अश्विना सुविचाकशत् वृक्षं परशुमो इव ।  
अन्ति षम्भूतु वामवः ॥  
१०, ३९, १२; ५९४ यस्य [रथस्य] योगे दुहिता जायते दिवः  
उभे अहनी सुदिने विवस्वतः ॥

## अश्विनोः मन्त्रेषु व्यक्तिनामानि ।

अंशुः स्तोता । ८, ५, २६; ४०९  
अगस्त्यः स्तोता । १, १८०, ८; १८२ । १८४, ५; २१२ ।  
८, ५, २६; ४०९  
अघाश्वः अवितः । ( पेदुनामा राजर्षिः ) १, ११६, ६; ८२  
अङ्गिराः स्तोता । १, ११२, १८; ६९  
अत्रिः द्रष्टा । ५, ५३, ६-७; २६३-२६४ । ७४, १; २६८ ।  
१०, १४३, १-३; ६२७-६२९ । (अवितः) १, ११२, ७, १६;  
५८, ६७ । ११६, ८; ८४ । ११७, ३; १०४ । ११८, ७;  
१३३ । ११९, ६; १४३ । १८०, ४; १७८ । १८३,  
५; २०६ । ७, ६८, ५; ३४२ । ७१, ५; ३६६ । ८, ५,  
२५; ४०८ । ३५, १९; ५२७ । (स्तोता) ८, ४२, ५;  
५३४ । ७३, ३, ७-८; ५४२, ५४६-५४७ । १०, ३९, ९;  
५९१ । ५, ७८, ४; ३००  
अग्निगुः राजा । १, ११२, २०; ७१ । ८, २२, १०; ४८१  
अनुः स्तोता । ८, १०, ५; ४६२  
अन्तकः राजर्षिः अवितः । १, ११२, ६; ५७  
अवस्युः द्रष्टा । ५, ७५, ८; २८५  
आजमीढहासः द्रष्टारः । ४, ४४, ६; २५६  
आर्चत्कः शरः अवितः । १, ११६, २२; ९८  
आर्जुनेयः कुत्सः अवितः । १, ११२, २३; ७४  
उपस्तुतः अवितः । १, ११२, १५; ६६ । ८, ५, २५; ४०८  
ऋज्राश्वः १, ११६, १६; ९२ । ११७, १७-१८; ११८-११९ ।  
१२०, ६; १५३  
ऋतस्तुम् १, ११२, २०; ७१  
औचथ्यः मन्त्र-द्रष्टा । १, १५८, १, ४; १६९, १७२  
औशिजः द्रष्टा । १, ११९, ९; १४६  
औशिजः कक्षीवान् ( दीर्घतमसः पत्नी उशिक् तस्याः पुत्रः  
दीर्घश्रवाः ) अवितः । १, ११२, ११; ६२  
कक्षीवान् १, ११२, ११; ६२ । ११६, ७; ८३ । ११७, ६;  
१०७ । १२०, ५; १५२ । (स्तोता) ८, ९, १०; ४५३  
कण्वः, कण्वस्य पुत्रः, कण्वागः वा द्रष्टारः । १, ४६, ९; ३२।

४७, २, ४-५, १०; ४०, ४२-४३, ४८ । ८, ५, ४-५, २३,  
२५; ३८७-३८८, ४०६, ४०८ । ८, ३; ४२३ । ९, २४;  
४५७ । १०, २; ४६६  
कण्वः अवितः । १, ११२, ५; ५६ । ११७, ८; १०९ । ११८,  
७; १३३ । ८, ८, २०; ४४०  
कर्कन्धुः अवितः । १, ११२, ६; ५७  
कलिः अवितः । १, ११२, १५; ६६ । १०, ३९, ८; ५९०  
कविः अवितः । १, ११६, १४; ९१ । ११९, ७; १४४  
काण्वः द्रष्टा । ८, ९, ३, ९; ४४६, ४५२  
काव्यः स्तोता । १, ११७, १२; ११३  
कुत्सः अवितः । १, ११२, ९; ६० । ११२, २३; ७४ । १०,  
४०, ६; ६०२  
कृशः अवितः । १०, ४०, ८; ६०४  
कृशानुः अवितः । १, ११२, २१; ७२  
कृष्णः द्रष्टा । ८, ८५, ३-४; ५६०-५६१  
कृष्णियः विश्वकः अवितः । १, ११६, २३; ९९  
गृत्समदासः द्रष्टारः । २, ३९, ८; २२२  
गोतमः अवितः । १, ११६, ९; ८५ । (स्तोता) १, १८३, ५; २०६  
घोषः स्तोता । १, १२०, ५; १५२  
घोषा अविता । १, ११७, ७; १०८  
घोषा द्रष्टा । १०, ४०, ५; ६०१  
च्यवानः अवितः । १, ११६, १०, ८६ । ११७, १३; ११४ ।  
११८, ६; १३२ । ५, ७४, ५; २७२ । ७५, ५; २८२ । ७,  
६८, ६; ३४३ । ७२, ५; ३६६ । १०, ३९, ४; ५८६  
जमदग्निः द्रष्टा । ८, १०१, ८; ५७९  
जहावी अवितः । १, ११६, १९; ९५ । ३, ५८, ६; २३१  
जाहुषः अवितः । १, ११६, २०, ९६ । ७, ७१, ५; ३६६  
नुमः अवितः । १, ११७, १४, ११५  
तुमस्य सनुः तौमन्यः भुज्युः अवितः । १, ११२, ६; ५७ ।  
११२, २०; ७१ । ११६, ३-५; ७२-८१ । ११७, १४-१५,  
११५-११६ । ११८, ६; ३३२ । ११९, ४, ८; १४१, १४५।

१,१५८, ३; १७१ । १८०, ५; १७९ । १८२, ५-७;  
 १९८-२०० । ६, ६२, ६; ३११ । ७, ६८, ७; ३४४ ।  
 ६९, ७; ३५२ । १०, ३९, ४; ५८५ । ४०, ७; ६०३ ।  
 १४३, ५; ६३१

तुर्वशाः स्तोता । ८, ९, १४; ४५७ । १०, ५; ४६९

तुर्वीतिः अवितः । १, ११२, २३; ७४

तृक्षिः त्रासदस्यवः स्तोता । ८, २२, ७; ४७८

त्रासदस्युः अवितः । १, ११२, १४; ६५; ८, ८, २१; ४४१

त्रिमन्तुः (कक्षीवान्) अवितः । १, ११२, ४; ५५

त्रिशोकः अवितः । १, ११२, १२; ६३

त्रैतनः (दासः) १, १५८, ५; १७३

द्वीचिः अवितः । १, ११६, १२; ८८ । ११७, २२; १२३ ।  
 ११९, ९; १४६

दर्भीतिः अवितः । १, ११२, २३; ७४

दशव्रजः अवितः । ८, ८, २०; ४४०

दिवोदासः अवितः । १, ११२, १४; ६५ । ११६, १८; ९४ ।  
 ११९, ४; १४१

दीर्घतमाः स्तोता । ८, ९, १०; ४५३

,, मामतेयः द्रष्टा । १, १५८, ६; १७४

दीर्घश्रवाः (औशिजः) अवितः । १, ११२, ११; ६२

दुष्टुः स्तोता । ८, १०, ५; ४६९

ध्वसन्तिः अवितः । १, ११२, २३; ७४

नर्यः अवितः । १, ११२, ९; ६०

नार्षदः अवितः । १, ११७, ८; १०९

पक्थः अवितः । ८, २२, १०; ४८१

पञ्जासः स्तोता । १, ११७, १०; १११

पञ्जियः स्तोता । १, १२०, ५; १५२

पठर्वा अवितः । १, ११२, १७; ६८

परावृज् अवितः । १, ११२, ८; ५९ । [(इन्द्रः) २, १३, १२;  
 ११४८ । २, १५, ७; ११६८]

पुरयः दाता । ६, ६३, ९; ३२५

पुरुकुत्सः अवितः । १, ११२, ७; ५८

पुरुपन्थाः दाता । ६, ६३, १०; ३२६

पुरुमित्रः १०, ३९, ७; ५८९

पुरुमीळ्हः स्तोता । १, १८३, ५; २०६

पुरुषन्तिः अवितः । १, ११२, २३; ७४

पृथिः अवितः । १, ११२, १५; ६६

पृथी (वैन्यः) स्तोता । ८, ९, १०; ४५३

पृथुश्रवाः अवितः । १, ११६, २१; ९७

पृथ्रियुः अवितः । १, ११२, ७; ५८

पेटुः अवितः । १, ११६, ६; ८२ । ११७, ९; ११० । ११८,  
 ९; १३५ । ११९, १०; १४७ । ७, ७१, ५; ३६६ । १०,  
 ३९, १०; ५९२

पेरुकः दाता । ६, ६३, ९; १२५

पौरः स्तोता । ५, ७४, ४; २७१

प्रियमेधः अवितः । ८, ५, २५; ४०८ । स्तोता ८, ८७, ३; ५७४

वम्हः अवितः । ८, २२, १०; ४८१

भरद्वाजः अवितः । १, ११२, १३; ६४ । द्रष्टा ६, ६३, १०; ३२६

भुज्युः द्रष्टव्यं- 'तुमस्य सूनुः तौग्न्यः' ।

भृगवाणः स्तोता । १, १२०, ५; १५२

मनुः अवितः । १, ११२, १६, १८; ६७, ६२ । ८, २२, ६; ४७७  
 ,, स्तोता । ८, १०, २; ४६६

मन्धाता अवितः । १, ११२, १३; ६४

मेधातिथिः अवितः । ८, ८, २० ४४०

यदुः स्तोता । ८, ९, १४; ४५८ । १०, ५; ४६९

रेभः अवितः । १, ११२, ५; ५६ । ११६, २४; १०० ।  
 ११७, ४, २२; १०५, ११३ । ११८, ६; १३२ । ११९, ६;  
 १४३ । १०, ३९, ९; ५९१

वत्सः स्तोता । ८, ८, १५, १९; ४३५, ४३९ । ९, १, ६, १५;  
 ४४४, ४४९, ४५८

वध्रिमती अविता । १, ११६, १३; ८९ । ११७, २४; १२५ ।  
 ६, ६२, ७; ३१२ । १०, ३९, ७; ५८९

वन्दनः अवितः । १, ११२, ५; ५६ । ११६; ११; ८७ ।  
 ११७, ५; १०६ । ११८, ६; १३२ । ११९, ६-७; १४३-  
 १४४ । १०, ३९, ८; ५९०

वम्रः अवितः । १, ११२, १५; ६६

वय्यः अवितः । १, ११२, ६; ५७ । [(इन्द्रः) १, ५४, ६;  
 ७९१ । २, १३, १२, ११४८ । ४, १९, ६; १५२७]

वरुः ८, २६, २; ४९१

वशः अवितः । १, ११२, १०; ६१

वसिष्ठः अवितः । १, ११२, ९; ६० । स्तोता ७, ७०, ६;  
 ३६० । ७३, ३; ३७५

विधवा (वध्रिमती) अविता । १०, ४०, ८; ६०४

विमदः अवितः । १, ११२, १९; ७० । ११६, १; ७७ ।  
 ११७, २०; २१ । ८, ९, १५; ४५८ । १०, ३९, ७; ५८९  
 द्रष्टा । १०, २४, ४; ५८०

विमनाः स्तोता । ८, ८६, २; ५६८

विश्वला अविता । १, ११२, १०; ६१ । ११६, १५; ९१ ।  
 ११७, ११; ११२ । ११८, ८; १३४ । १८२, १; १९४ ।  
 १०, ३९, ८; ५९०



विश्वकः द्रष्टा । ८, ८६, १-३; ५६७-५६९  
 विष्वावः अवितः । ८, ८६, ३; ५६९  
 विष्वाचः (षष्ठी)-व्वक् असुरः १, ११७, १६; ११७  
 वैन्यः (पृथी) अवितः । ८, ९, १०; ४५३  
 वैयश्वः द्रष्टा । ८, २६, ११; ५००  
 व्यश्वः अवितः । १, ११२, १५; ६६ । स्तोता ८, ९, १०;  
 ४५३ । २६, ९; ४२८  
 शंयुः १, ३४, ६; १७  
 शयुः अवितः । १, ११२, ३, १६; ५४, ६७ । ११६, २२;  
 ९८ । ११७, १२, २०; ११३, १२१ । ११८, ८; १३४।  
 ११९, ६; १४३ । ६, ६२, ७; ३१२ । ७, ६८, ८; ३४५।  
 १०, ३९, १३; ५९५ । ४०, ८; ६०४  
 शरः (आर्चकः) अवितः । १, ११६, २२; ९८  
 शर्यातः अवितः । १, ११२, १७; ६८  
 शाण्डः दाता । ६, ६३, ९; ३२५  
 शुचन्तिः अवितः । १, ११२, ७; ५८  
 शुन्ध्युः अविता । १०, ३९, ७; ५८९

श्यावः अवितः । १, ११७ ८, २४; १०९, १२५  
 श्यावाग्वः द्रष्टा । ८, ३५, १९-२१; ५२७-५२९  
 श्रुतर्यः अवितः । १, ११२, ९; ६०  
 सप्तवधिः द्रष्टा । ५, ७८, ५-६; ३०१-३०२  
 ,, अवितः । ८, ७३, ९; ५४८ । १०, ३९, ९; ५२१  
 साहदेव्यः द्रष्टा । ४, १५, १०; २३६  
 साहदेव्यः सोमकः द्रष्टा । ४, १५, ९; २३५  
 गुदाः अवितः । १, ४७, ६; ४४ । ११२, १९; ७०  
 सुमीळहः दाता । ६, ६३, ९; ३२५  
 सुषामा अवितः । ८, २६, २; ४९१  
 सुहस्त्यः द्रष्टा । १०, ४१, ३; ६१३  
 सोभरिः स्तोता । ८, ५, २६; ४०९ । द्रष्टा ८, २२, २, १५;  
 ४७३, ४८६  
 सोमकः साहदेव्यः द्रष्टा । ४, १५, ९; २३५  
 स्युमरदिमः अवितः । १, ११२, १६; ६७  
 हिरण्यहस्तः अवितः । १, ११७, २४; १२५

## अश्विनौ-देवता-मन्त्रेषु अन्याः-देवताः ।

अग्निः १, ११२, १ (द्वितीयः पादः); ५२ । ५, ७५, ९; २८६ ।  
 ७६, १; २८७ । ७, ६७, २; ३२९, १ । ७२, ४; ३७१ ।  
 ८, ३५, १; ५०९  
 अङ्गिराः ८, ३५, १३; ५२१  
 अदितिः १, ११२, २५; ७६  
 अद्रिः ८, ३५, २; ५१०  
 अर्यमा ८, २६, ११; ५००  
 अश्वः (अश्विनोः) १, १८१, २; १८६  
 अश्विरथः १, ११९, १-३; १३८-१४० । १२०, १०-११;  
 १५७-१५८ । १५७, ३; १६५ । १८०, १०; १८४ ।  
 १८१, ३; १८७ । ४, ४३, २; २४५ । १०, ४१, १; ६११  
 आदित्यः १, ४६, ४; २७  
 आदित्याः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, १; ५०९  
 आपः ८, ३५, ३; ५११  
 इन्द्रः ८, ३५, १; ५०९  
 इन्द्राविष्णु ८, १०, २; ४६६  
 इष्टका वा० य० १४, १-५; ६३४-६३८  
 ऋतु- ( सहितौ ) १, १५, ११; ४  
 उषाः १, ४६, १, १४; २४, ३७ । ५, ७५, ९; २८६ । ७६, १;  
 २८७ । ७, ७२, ३-४; ३००-३०१ । ८, ५, १; ३८४ ।

९, १६-१८; ४५९-४६१ । ७३, १६; ५५५  
 उषःसूर्यसहितौ अश्विनौ ८, ३५, १-२१; ५०९-५२९  
 ऋभवः ८, ३५, १५; ५२३  
 कः ४, ४३, १; २४४  
 चन्द्रादित्यौ १, १८१, ४; १८८  
 तपाः २, ३७, ५; २१४  
 दीर्घतमाः १, १५८, ६; १७४  
 देवाः (त्रयस्त्रिंशत्) १, ३४, ११; २२  
 योः १, ११२, २५; ७६ । ८, ३५, २; ५१०  
 यावापृथिव्यौ १, ११२, १ ( प्रथमः पादः ); ५२ । ६, ६२, ८;  
 ३१३ । ७, ७२, ३; ३७०  
 धर्मः ८, ३५, १३; ५२१  
 धियः विद्वाः ८, ३५, २; ५१०  
 पतयः १०, ४०, १०; ६०९  
 पृथिवी १, ११२, २५; ७६ । ८, ३५, २; ५१०  
 प्रजापतिः वा० य० २०, ६७-६९; ६५६ ६५८ । ११, ४८-५८;  
 ६५९-६६९  
 बृहस्पतिः ८, १०, २; ४६६  
 भुवनम् ८, ३५, २; ५१०  
 मृगवः ८, ३५, ३; ५११

मरुतः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, ३, १३-१५; ५११, ५२१-  
५२३  
मित्रः १, ११२, २५; ७६ । ६, ६२, ९; ३१४ । ८, २६, ११;  
५००  
मित्रावरुणौ ८, ३५, १३; ५२१  
रथः अश्विनोः- द्रष्टव्यम् 'अश्विनोः'  
रुद्राः ८, ३५, १; ५०९  
रुद्रियाः ६, ६२, ८; ३१३  
रोदसी ६, ६२, ८; ३१३  
वरुणः १, ११२, २५; ७६ । ६, ६२, ९; ३१४ । ८, २६, ११;  
५०० । ३५, १; ५०९  
वसवः ६, ६२, ८; ३१३ । ८, ३५, १; ५०९

विश्वः ८, ३५, २; ५१० ।  
विश्वे देवाः ८, १०, २; ४६६ । ३५, ३; ५११  
विष्णुः ८, ३५, १, १३; ५०९, ५२१  
सप्तवह्निः ८, ७३, १८; ५५७  
सरस्वती वा० य० २०, ६७-६९; ६५६-६५८ । २१, ४८-५८;  
६५९-६६९  
सिन्धुः १, ११२, २५; ७६  
सविता १, १५७, १; १६३ । ७, ७२, ५; ३०१  
सूर्यः ७, ६७, २; ३२९  
सूर्यसहितौ उपसा च ८, ३५, १-२१; ५०९-५२९  
सोमः वा० य० १९, ३४; ६५४  
सोमरसः वा० य० १९, ३५; ६५५

### (१) निर्विशेषितत्वेन\* वर्णितं अश्विनोः भवनकर्म ।

अग्निः ८, ५, २५; ४०८ । [ द्रष्टव्यम् '(५) परकृतविविधा-  
पञ्चयः भवनम् । ]  
अग्निगुः १, ११२, २०; ७१ । ८, २२, १०; ४८१  
उपस्तुतः १, ११२, १५; ६६ । ८, ५, २५; ४०८  
कक्षीवान् (स्तोता) १, ११२, ११; ६२  
कण्वः ( प्रसिपासन् ) ८, ५, २५; ४०८ । ८, २०; ४४० ।  
[ द्रष्टव्यम् '(५) परकृतविविधापञ्चयः भवनम् । ]  
कर्कन्धुः १, ११२, ६; ५७  
कलिः ( वित्तजानिः ) १, ११२, १५; ६६ । [ द्रष्टव्यम्  
'(६) भिषक्कर्मणा भवनम् । ]  
कुत्सः १, ११२, ९; ६०  
कुत्सः आञ्जनेयः १, ११२, २३; ७४  
कृशः १०, ४०, ८; ६०४  
गोचार्यः ८, ८, २०; ४४०  
तुर्वीतिः १, ११२, २३; ७४ ×  
दर्भोतिः १, ११२, २३; ७४  
ध्वसन्तिः १, ११२, २३; ७४  
नर्यः १, ११२, ९, ६० ×  
पक्कः ८, २२, १०; ४८१  
पुरुकुत्सः १, ११२, ७; ५८  
पुरुषन्तिः १, ११२, २३; ७४

पृथिः १, ११२, १५; ६६  
पृथिगुः १, ११२, ७; ५८  
प्रियमेघः ८, ५, २५; ४०८  
वभ्रुः ( विजोपस् ) ८, २२, १०; ४८१  
भरद्वाजः ( विप्रः ) १, ११२, १३; ६४  
भुज्युः १०, ४०, ७; ६०३ । [ द्रष्टव्यम् '(५) परकृतविविधा-  
पञ्चयः भवनम् । ]  
मेधातिथिः ८, ८, २०; ४४०  
वम्रः ( विपिपानः ) १, ११२, १५; ६६  
वय्यः १, ११२, ६; ५७ ×  
वशः अश्व्यः ( प्रेणिः ) १, ११२, १०; ६१  
वशः दशमजः ८, ८, २०; ४४०  
वशः १०, ४०, ७; ६०३  
वसिष्ठः १, ११२, ९; ६०  
विधवा १०, ४०, ८; ६०४  
व्यश्वः १, ११२, १५; ६६  
शयुः १०, ४०, ८; ६०४ । [ द्रष्टव्यम् '(७) अन्येषां प्राणिनां  
भवनम् । ]  
शिजारः ८, ५, २५; ४०८+ । १०, ४०, ७; ६०३  
श्रुतर्थाः १, ११२, ९; ६०

\* ' यथा चित्कण्वमावतम् ' ' याभिर्व्यश्वमुत पृथिमावतम् ' इति एतादृशमन्त्रैः वर्णितम् ।

× द्रष्टव्यम् ' स्वमाविथ नर्यं तुर्वीशं यहुं एवं तुर्वीति वर्यं शतकृतौ । ' ( इन्द्रः० ) १, ५४, ६; ७९१ ' अरमयः सरपसस्तराय  
कं तुर्वीतये च वरयाय च स्तुतिम् । ' ( इन्द्रः० ) २, १३, १२; ११४८ ' एवं महीमवनिं विश्वेभ्योनां तुर्वीतये वरयाय क्षरन्तीम् ।  
अरमयो ममसैजदर्णः सुतरणौ अकृणोरिन्द्र सिन्धुन् । ' ( इन्द्रः० ) ऋ० ४, १९, ६; १५२७ ।

+ अत्र सायनाचार्याः ' शिआरः ' इति शब्दस्य शब्दयन्, स्तुवन् इत्यर्थं दत्त्वा अयं शब्दः अत्रेर्विशेषणं इति मन्यन्ते ।

द्वै० [ अश्विनौ ] ११

## (२) इष्टवस्तुप्रदानेन अवनम् ।

	घनम् ।	
अंशुः	८,५,२६; ४०९	यथोत कृत्व्ये धने अंशुम् (आवतम्) ।
त्रासदस्युः	८,८,२१; ४४१	याभिर्नरा त्रासदस्युं आवतं कृत्व्ये धने ।
त्रासदस्यवः तृक्षिः	८,२२,७; ४७८	येभिः (ऋतस्य पथिभिः) तृक्षि वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः ।
दिवोदासः	१,११६,१८; ९४	यदयातं दिवोदासाय वर्तिः भरद्वाजायाश्विना ह्यन्ता । रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभथ शिंशुमारश्च युक्ता॥
विमनाः	८,८६,२; ५६८	कथा नूनं वां विमना उप स्तवद् युवं धियं ददथुः वस्य इष्टये ।
विष्णापूः	८,८६,३; ५६९	युवं हि ष्मा पुरुभुजा इमं एधतुं विष्णाप्वे ददथुः वस्य इष्टये ।
सुदाः	१,११२,१९; ७०	याभिः सुदासे ऊहथुः सुदेव्यम् ।
सुषामा	८,२६,२; ४९१	युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या ।
वशः	१,११२,१०; ६१	याभिर्वशमश्च्यं प्रेणिं आ- वतम् ।
	१,११६,२१; ९७	एकस्या वस्तोः आवतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा ।
	८,८,२०; ४४०	याभिः वशं दशत्रजं ... आवतं कृत्व्ये धने ।
जह्वावी	१० ४०,७; ६०३ ३,५८,६; २३१ १,११६,१९; ९५	युवमश्विना वशं...उपारथुः। युवोर्नरा व्रविणं जह्वाव्याम् । रथि सुक्षत्रं स्वपत्यं आयुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता । आ जह्वावीं समनसोप वाजैः त्रिरहो भागं दधतीमयातम् ।
		<b>अक्षम् ।</b>
मनुः	१,११२,१६; ६७ १,११२,१८; ६९	मनवे पुरा गातुमीषथुः । मनुं शरं इषा समावतम् ।

	१,११७,२१; १२२	इषं दुहन्ता मनुषाय दद्या । यवं वृकेणाश्विना वपन्ता ।
	८,२२,६; ४७७	दशस्यन्ता मनवे पूर्वं दिशि यवं वृकेण कर्षथः ।
	८,१०,२; ४६६	यद् वा यज्ञं मनवे संमिभि- क्षथुः ।
विप्रः	१,११७,११; ११२	सूनोर्मानेन अश्विना गृणाना वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता ।
सोभरिः	८,५,२६; ४०९	यथा वाजेषु सोभरिम् (आवतम्) ।
		<b>सद्ः ।</b>
शुचन्तिः	१,११२,७; ५८	याभिः शुचन्ति धनसां सुषंसदम् ।
		<b>क्षेत्रपतित्वादि ।</b>
मन्धाता	१,११२,१३; ६४	मन्धातारं क्षेत्रपत्येषु आव- तम् ।
जाहुषः	७,७१,५; ३६६ १,११६,२०; ९६	नि जाहुषं शिथिरं धातमन्तः। परिविष्टं जाहुषं विश्वतःसीं सुगोभिर्नकमूहथू रजोभिः ।
		<b>स्त्री ।</b>
कलिः	१,११२,१५; ६६	याभिः कलिं वित्तजानिं दुवस्यथः ।
	१०,३९,८; ५९०	युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः।
श्यावः	१,११७,८; १०९ १,११७,२४; १२५	युवं श्यावाय रुशतीं अदत्तम् । त्रिधा ह श्यावमश्विना वि- कस्तमुज्जीवस ऐरयतं सुदान् ।
विमदः	१,११२,१९; ७० १,११६,१; ७७	याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथुः। यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहथू रथेन ।
	१,११७,२०; १२१	युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम् ।
	१०,३९,७; ५८९	युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् ।
	८,९,१५; ४५८	यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् । तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्व- त्साथ यच्छतम् ॥

विमदः (मन्त्रद्रष्टा) १०, २४, ४; ५८० युवं शक्रा मायाविना समीची  
निरमन्थतम् । विमदेन  
यदीकृता नासत्या निरम-  
न्थतम् ॥

पतिः ।

बोषा १, ११७, ७; १०८ घोषायै चित् पितृषु दे दुरोगे  
पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम् ।  
१०, ४०, २ ६०५ जनिष्ठ योषा पतयत् कनी-  
नको वि चारुहन् वीरुधो  
दंसना अनु । आस्मे रीयन्ते  
निवनेव सिन्धवोऽस्मा अहे  
भवति तत् पतित्वनम् ॥

पुत्रः ।

कृष्णियः १, ११६, २३; ९९ अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय  
ऋजूयते नासत्या शचीभिः ।  
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय  
विष्णाप्यं ददथुः विश्वकाय ॥  
१, ११७, ७; १०८ युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय  
विष्णाप्यं ददथुः विश्वकाय ।  
वधिमती १, ११६, १३; ८९ अजोहवीनासत्या करा वां  
महे यामन् पुरुभुजा पुरन्धिः ।  
श्रुतं तत् शासुरिष वधिमत्या  
दिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम् ॥  
१, ११७, २४; १२५ हिरण्यहस्तमश्विना रराणा  
पुत्रं नरा वधिमत्या अदत्तम् ।  
६, ६२, ७; ३१२ श्रुतं हवं वृषणा वधिमत्याः ।  
१०, ३९, ७; ५८९ युवं हवं वधिमत्या अगच्छतं  
युवं सुषुतिं चक्रथुः पुरन्धये ।

गावः ।

अगस्त्यः ८, ५, २६; ४०९ यथा गोषु अगस्त्यम्  
( आवतम् । )  
त्रिशोकः १, ११२, १२; ६३ याभिः त्रिशोकः उस्त्रिया  
उदाजत ।

अश्वः ।

पेटुः १, ११६, ६; ८२ यदश्विना ददथुः श्वेतमश्वं  
अघाश्वाय शश्वदित् स्वस्ति ।  
तद् वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत्  
पैद्वो वाजी सदमिद्व्यो अर्येः ॥  
१, ११७, ९; ११० पुरु वपास्याश्विना दधाना  
नि पेटव ऊहथुराशुमश्वम् ।  
सहस्रसां वाजिनमप्रतीत-  
महिहनं श्रवस्यं तरुत्रम् ॥  
१, ११८, ९; १३५ युवं श्वेतं पेटव इन्द्रजूत-  
महिहनमश्विनादत्तमश्वम् ।  
जोहृश्रमयो अभिभूतिमुग्रं  
सहस्रसां वृषणं वीड्वङ्गम् ॥  
१, ११९, १०; १४७ युवं पेटवे पुरुवारमश्विना  
स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुव-  
स्यथः । शयंरभिष्टुं पृतनासु  
दुष्टं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्ष-  
णीमहम् ॥  
७, ७१, ५; ३६६ नि पेटव ऊहथुराशुमश्वम् ।  
१०, ३९, १०; ५९२ युवं श्वेतं पेटवेऽश्विनाश्वं  
नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ।  
चर्कृत्यं ददथुर्द्रावित्सखं भगं  
न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम् ॥

### ( ३ ) शुद्ध-पीडानिवारणम् ।

अन्तकः १, ११२, ६; ५७ याभिः अन्तकं जसमानं  
आऽरणे... जिजिन्वधुः ।  
वस्रः १, ११२, १५; ६६ याभिः वस्रं विपिपानं ...  
दुवस्यथः ।  
क्षरः १, ११६, २२; ९८ क्षरस्य चिद् आर्चकस्याव-  
तादा नीचादुच्चा चक्रथुः  
पातवे वाः ।  
अंशः १, ११२, १; ५२ याभिः भरे कारं अंशाय  
जिन्वथः ।

ऋतस्तुम् १, ११२, २०; ७१ ओम्यावतीं शुतरां ऋत-  
स्तुभम् ।  
ददाशुः १, ११२, २०; ७१ याभिः शन्ताती भवथः  
ददाशुषे ।  
धीः-प्रवृत्तिः १, ११२, २; ५३ याभिः धियः अवथः कर्म-  
क्षिष्टये ।  
त्रिमन्तुः १, ११२, ४; ५५ याभिः त्रिमन्तुः अभवत्  
विचक्षणः ।

## ( ४ ) संग्रामे शत्रुहननेन रक्षणम् ।

आर्यः	१, ११७, २१; १२२	आभि दस्युं बकुरेणा धमन्ता उरु ज्योतिश्चक्रुः आर्याय ।	पठर्वा	१, ११२, १७; ६८	याभिः पठर्वा जठरस्य मज्जनाभिर्नादीदेक्षित इद्धो अज्मत्ता ।
कृशानुः	१, ११२, २१; ७२	याभिः कृशानुं असने दुवस्यथः ।	पृथुश्रवाः	१, ११६, २१; ९७	निरहृतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृषणावरातीः ।
त्रसदस्युः	१, ११२, १४; ६५	याभिः पूर्वमेधे त्रसदस्युं आवतम् । [ धनप्रदानं-द्रष्टव्यं । ८, ८, २१; ४४१ ]	शर्यातः	१, ११२, १७; ६८	याभिः शर्यातं अवथः महाधने ।
दिवोदासः	१, ११२, १४; ६५	याभिः दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम् ।	स्यूमरसिः	१, ११२, १६; ६७	याभिः शारीः आजतं स्यूमर-श्मये ।
नरः	१, ११२, २२; ७३	याभिः नरं गोपुयुधं वृषाद्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः ।		१, ११६, २; ७८	वील्लुपत्मभिः आशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना ।
		याभी रथान् अवथुः याभिः अर्वतः ।		१, ११७, १६; ११७	जातं विष्वाचो अहतं विषेण ।
				१, ११२, १२; ६३	अनश्वं याभी रथमावतं जिषे ।

## ( ५ ) परकृतविविधापन्नयः अवनम् ।

आग्निः	१, ११२, ७; ५८	याभिः... तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्रये... आवतम् ।	५, ७३, ६; २६३	युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुव्रेन चेतसा । घर्म यद् वामरेपसं नासत्यान्वा भुरप्यति ।	
	१, ११२, १६; ६७	याभिर्नरा... अत्रये... गातुमीपथुः ।	५, ७३, ७; २६४	उग्रो ह वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु सन्तनिः । यद् वां दंसोभिरश्विनाऽत्रिर्नराववर्तति ॥	
	१, ११६, ८; ८४	हिमेनाग्निं घ्नंसमवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् । ऋद्वीसे अत्रिमश्विनावनीतमुभिन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति ॥	५, ७४, १; २६८	अत्रिर्वामा विवासति ।	
	१, ११७, ३; १०४	ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्य-श्रुवासादत्रिं मुञ्चथो गणेन । मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥	७, ६८, ५; ३४२	चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वास्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् । यो वामोमानं दधते प्रियः सन् ॥	
	१, ११८, ७; १३३	युवमत्रयेऽवनीताय तप्तमूर्ज-मोमानमश्विनावधत्तम् ।	७, ७१, ५; ३६६	निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रिम् ।	
	१, ११९, ६; १४३	युवं ... उरुप्यथः हिमेन घर्म परितप्तमत्रये ।	८, ५, २५; ४०८	यथा चित्कण्वमवतं प्रियमेध-मुपस्तुतम् । अत्रिं शिञ्जर-मश्विना ॥	
	१, १८०, ४; १७८	युवं ह घर्म मधुमन्तमत्रये-ऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेधे ।	८, ३५, १९; ५२७	अत्रैरिव शृणुतं पूर्व्वस्तुतिं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मद-च्युता ।	
	१, १८३, ५; २०६	युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रिर्दत्सा हवतेऽवसे हवि-ष्मान् ।	अर्चनाना	८, ४२, ५; ५३४	यथा वामत्रिरश्विना गर्भि-र्विप्रा अजोहवीत् ।
			(आत्रेयः)		
			श्यावाश्व		
			(आत्रेयः)		
			अर्चनाना		
			(आत्रेयः)		

गौपवन (आत्रेयः)	८,७३,३; ५४२	उप स्तृणीतमत्रये हिमेन धर्ममश्विना । अन्ति पङ्क्तु वामवः ॥	दीर्घतमा (औचथ्यः)	१,१५८,४; १७२	उपस्तु तिरौचथ्यमुरुष्येत मा मामिमे पतात्रिणी वि दुग्धाम् । मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद् वां बद्धस्मनि खादति क्षाम् ॥
	८,७३,७; ५४६	अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना । अन्ति पङ्क्तु वामवः ॥		१,१५८,५; १७३	न मा गरन् नद्यो मातृतमा दासा यदीं सुसमुब्धमवाधु । शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत् स्वयं दास उरो अंसावपि ग्ध ॥
	८,७३,८; ५४७	वरेथे अग्निमातपो वदते वल्गवत्रये । अन्ति० ...॥			
	५,७८,४; ३००	अत्रिर्यद् वामवरोहन्वृषीस- मजोहवीन्नाधमानेव योपा । इयेनस्य चिज्जवसा नूतनेना- ऽऽगच्छतमश्विना शन्तमेन ॥	रेभः	१,११२,५; ५६	याभी रेभं निवृतं सित- मद्भयः ... । ताभिरू पु ऊतिभिरदिना गतम् ।
	१०,३९,९; ५९१	युवमृषीसमुत तप्तमत्रय ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्त वध्रये ।		१,११६,२४; १००	दश रात्रीरशिवेना नव धून- वनद्धं श्रथितमप्स्वन्तः । विमुतं रेभमुदनि प्रवृक्त- मुभिन्यथुः सोमसिव खुवेण ॥
अग्निः सांख्यः	१०,१४३,१; ६२७	त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमधं न यातवे ।		१,११७,४; १०५	अधं न गूळहमश्विना दुरैवै- र्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु । सं तं रिणीथो विमुतं दंसोभिर्न ... ॥
	१०,१४३,२; ६२८	त्यं चिदधं न वाजिनमरे- णवो यमत्नत । दृळ्हं प्रन्धि न वि प्यतमत्रिं यविष्ठमा रजः ॥		१,११७,१२; ११३	हिरण्यस्येव कलशं निखात- मुद्गपथुर्दशमे अधिनाहन् ॥
	१०,१४३,३; ६२९	नरा दंसिष्टावत्रये शुभ्रा सिपासतं धियः ।		१,११८,६; १३२	उद् रेभं दम्बा वृषणा शचीभिः ।
कण्वः	१,४७,५; ४३	याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।		१,११९,६; १४३	युवं रेभं परिपूतेरुष्यथः ।
	१,११२,५; ५६	याभिः कण्वं प्र सिपासन्त- मावतम् ।		१०,३९,९; ५९१	युवं ह रेभं वृषणा गुहा- हितमुदैरयतं ममृवांसम- श्विना ॥
	१,११७,८; १०९	युवं ... अदत्तं महः क्षोण- स्याश्विना कण्वाय ।	वन्दनः	१,११२,५; ५६	याभिः [ ऊतिभिः ] उद् वन्दनमैरयतं स्वर्हरे ।
	१,११८,७; १३३	युवं कण्वायापिरिमाय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुपाणा ।		१,११६,११; ८७	तद् वां नरा शंस्यं राथ्यं चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम् । यद् विद्वांसा निधिमिवापगू- ळहमुद् दर्शतादूपथुर्वन्दनाय ॥
	८,५,२३; ४०६	युवं कण्वाय नासत्याऽपिरि- प्ताय हर्म्ये । शद्वद्तीर्दे- शस्यथः ॥		१,११७,५; १०६	सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे सूर्यं न दम्बा तमसि क्षियन्तम् । शुभे रुक्मं न दर्शतं निखा- तमुद्गपथुरश्विना वन्दनाय ॥
	८,५,२५; ४०८	यथा चित् कण्वमावतम् ।		१,११८,६; १३२	उद् वन्दनमैरतं दंसनाभिः ॥
	८,८,२०; ४४०	याभिः कण्वं मेधातिथि ... आवतम् ।			
जाहुषः	१,११६,२०; ९६	परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सी सुगेभिर्नक्तं ऊहथुः रजोभिः ॥			
	७,७१,५; ३६६	नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः ॥			

१,११९,६; १४३ प्र दक्षिणं वन्दनस्तार्यायुषाः॥  
 १,११९,७; १४४ युवं वन्दनं निर्ऋतं जरण्यया  
 रथं न दत्त्वा करणा समिन्वथः ॥  
 १०,३९,८; ५९० युवं वन्दनमृश्यदादुदपथुः ।  
 भुज्युः तौग्न्यः १,११२,६; ५७ भुज्युं याभिः [ ऊतिभिः ]  
 अव्यथिभिर्जिजिन्वथुः ।  
 १,११२,२०; ७१ भुज्युं याभिः ( ऊतिभिः )  
 अवथः ।  
 १,११६,३-५; ७९-८१ तुषो ह भुज्युमश्विनोदमेधे  
 रथिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः ।  
 तमूह्युनौभिरात्मन्वतीभि-  
 रन्तरिक्षमुद्भिरपोदकाभिः ॥  
 तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भि-  
 र्नासत्या भुज्युमूह्युः पतङ्गैः ।  
 समुद्रस्य धन्वन्नाद्रस्य पारे  
 त्रिभी रथैः शतपद्भिः पळ-  
 श्वैः ॥ अनारम्भणे तदवी-  
 रयेथामनास्थाने अग्रभणे  
 समुद्रे । यदश्विना ऊह्युर्भुज्यु-  
 मस्तं शतारित्रां नावमात-  
 स्थिवांसम् ॥  
 १,११७,१४; ११५ युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद्  
 विभिरूह्युर्ऋजैभिरश्वैः ॥  
 १,११७,१५; ११६ अजोहवीदश्विना तौग्न्यो वां  
 प्रोब्हः समुद्रमव्यथिर्जग-  
 न्वान् ।  
 निष्टमूह्युः सुयुजा रथेन  
 मनोजवसा वृषणा स्वस्ति ॥  
 १,११८,६; १३२ निष्टौर्ध्वं पारयथः समुद्रात् ।  
 १,११९,४; १४१ युवं भुज्युं भुरमाणं वि भिर्गतं  
 स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य  
 आ । यामिष्टं वर्तिर्वृषणा  
 विजेन्यम् ... ।  
 १,११९,८; १४५ अगच्छतं कृपमाणं परावति  
 पितुः स्वस्य त्यजसा निवा-  
 धितम् ।  
 १,१५८,३; १७१ युक्तो ह यद् वां तौग्न्याय  
 पेरुर्विं मध्ये अर्णसो धायि पद्मः ।  
 १,१८०,५; १७९ आ वां दानाय ववृतीय दत्त्वा  
 गोररोहेण तौग्न्यो न जित्रिः ।

१,१८२,५-७; १९८-२०० युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु  
 ल्लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं तौ-  
 ग्न्याय कम् । येन देवत्रा  
 मनसा निरूह्युः सुपत्नी  
 पेतथुः क्षोदसो महः ॥ अव-  
 विद्धं तौग्न्यमप्स्वन्तरनार-  
 म्भणे तमसि प्रविद्धम् ।  
 चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा  
 उदश्विभ्यामिषिताः पारय-  
 न्ति ॥ कः सिवद् वृक्षो  
 निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं  
 तौग्न्यो नाधितः पर्यषस्व-  
 जत् । पर्णा मृगस्य पतरो-  
 रिवारभ उदश्विना ऊह्युः  
 श्रोमताय कम् ॥  
 ६,६२,६; ३११ ता भुज्युं विभिरङ्गथः समु-  
 द्रात्तुग्रस्य सूनूमूह्यु रजो-  
 भिः । अरेणुभिर्योजनेभिर्भु-  
 जन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरु-  
 पस्थात् ॥  
 ७,६८,७; ३४४ उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो  
 मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।  
 निरीं पर्वदरावा यो युवाकुः ॥  
 ७,६९,७; ३५३ युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र  
 उदह्युर्णसो अस्त्रिधानैः ।  
 पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दस-  
 नाभिरश्विना पारयन्ता ॥  
 ८,५,२२; ४०५ कदा वां तौग्न्यो विधत्  
 समुद्रे जहितो नरा । यद्  
 वां रथो विभिष्यतात् ॥  
 १०,३९,४; ५८६ निष्टौग्न्यमूह्युर्ऋथस्पाः ।  
 १०,४०,७; ६०३ युवं ह भुज्युं... उपारथुः ।  
 १०,१४३,५ ६३१ युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः  
 पार ईळ्खितम् । यातम-  
 च्छापतत्रिभिर्नासत्या सातये  
 कृतम् ॥  
 सप्तवध्रिः ५,७८,५; ३०१ वि जिहीष्व वनस्पते योनिः  
 सूप्यन्त्या इव । श्रुतं मे  
 अश्विना हवं सप्तवध्रिं च  
 मुष्यतम् ॥

५,७८,६; ३०२ भीताय नाधमानाय ऋषये  
सप्तवधये । मायाभिरश्विना  
युवं वृक्षं सं च वि चाचथः॥  
८,७३,९; ५४८ प्रसप्तवधिराशसा धारामभे-

रशायत ।

१०,३९,९; ५९१ ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवधये।  
८,२२,१२; ४८३ 'याभिः क्विं वावृधुः'  
[ वन्दनपीडानिवारणार्थं एतत् कर्म इति केचित् ]

## ( ६ ) भिषक्कर्मणा अवनम् ।

स्नामः १,११७,१९; १२० मही वामूतिरश्विना मयोभूः  
उत स्नामं धिष्या सं रिणीथः॥  
नार्षदः १,११७,८; १०९ प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां  
यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ।  
परावृज् १,११२,८; ५९ याभिः शचीभिः वृषणा परा-  
वृजं प्रान्धं श्रोगं चक्षस  
एतवे कृथः । ×  
कविः १,११६,१४; ९० उतो कविं पुरुभुजा युवं ह  
कृपमाणं अकृणुतं विचक्षे ।  
ऋज्राश्वः १,११६,१६; ९२ शतं मेषान् वृक्ये चक्षदान-  
मुज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।  
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष  
आधत्तं दस्त्रा भिषजावनर्वन् ।  
१,११७,१७; ११८ शतं मेषान् वृक्ये मामहानं  
तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा ।  
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विना-  
वधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्र-  
थुर्विचक्षे ॥  
१,११७,१८; ११९ शुनमन्धाय भरमह्यत् सा  
वृकीरश्विना वृषणा नरेति ।  
जारः कनीन इव चक्षदान  
ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् ॥  
१,१२०,६; १५३ श्रुतं गायत्रं तकवानस्याहं  
चिद्धि रिरेभाश्विना वाम् ।  
आक्षी शुभस्पती दन् ॥  
विश्वला १,११२,१०; ६१ याभिविश्वलां धनसामथर्व्यं  
सहस्रमीळह आजावजिन्व-  
तम् ।  
१,११६,१५; ९१ चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्ण-  
माजा खेलस्य परितकम्या-  
याम् । सद्यो जङ्घामायसीं  
विश्वलायै धने हिते सतवे

प्रत्यधत्तम् ।  
१,११७,११; ११२ सं विश्वलां नासत्यारिणी-  
तम् ।  
१,११८,८; १३४ प्रति जङ्घां विश्वलाया अध-  
त्तम् ।  
१,१८२,१; १९४ विश्वलावस् दिवो नपाता ।  
१०,३९,८; ५९० युवं सद्यो विश्वलामेतवे कृथः॥  
१,११६,१२; ८८ तद् वां नरा सनये दंस उग्रं  
आविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।  
दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वेणो  
वामश्वस्य शीर्ष्णां प्र यदी-  
मुवाच ॥  
१,११७,२२; १२३ आथर्वणायाश्विना दधीचेऽ-  
श्व्यं शिरः प्रत्यैरयत्तम् । स  
वां मधु प्र वोचदतायन् त्वाहं  
यद् दस्त्रावपिकक्ष्यं वाम् ।  
१,११९,९; १४६ युवं दधीचो मन आ विवा-  
सथोऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं  
वदत् ।  
च्यवनः १,११६,१०; ८६ जुजुरुषो नासत्योत वरिं  
प्रामुश्रतं प्रापिमिष च्यवानात् ।  
प्रातिरतं जरितस्यायुर्दस्त्रा-  
दित् पतिमकृणुतं कनीनाम् ॥  
१,११७,१३; ११४ युवं च्यवानमश्विना जरन्तं  
पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ।  
१,११८,६; १३२ पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ॥  
५,७४,५; २७२ प्र च्यवानाज्जुजुरुषो वत्रि-  
मत्कं न मुश्रथः । युवा यदी  
कृथः पुनरा काममृष्वे वश्वः ॥  
५,७५,५; २८२ विभिश्च्यवानमश्विना नि  
याथो अद्रयाविनं माश्वी  
मम श्रुतं हवम् ॥

× द्रष्टव्यम्—'नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोगं श्रवयन्त्सास्युकथ्यः (इन्द्रः) । २,१३,१२; ११४८ । स विद्वां अपगोहं  
कनीनामात्रिमैवमुदतिष्ठत् परावृज् । प्रति श्रोगः स्थाद् व्यनगच्छ सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ।' (इन्द्रः) २,१५,७; ११६८ ।



	७,६८,६; ३४३	उत त्यद् वां जुरते अश्विना भूच्चयवानाय प्रतीत्यं हविर्दे। अभि यद् वर्ष इत ऊति धत्थः॥			१,११२,१५; ६६	याभिः कलिं वित्तजानि दुवस्यथः।
	७,७१,५; ३६६	युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तम्।		श्यावाश्वः	१,११७,२४; १२५	त्रिधा ह श्यावं अश्विना विकस्तं उज्जीवस ऐरयतं सुदान्।
	१०,३९,४; ५८६	युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षयुः।			१,११७,८; १०९	युवं श्यावाय रुशतीं अदत्तम्।
कलिः	१०,३९,८; ५९०	युवं विप्रस्य जरणां उपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद् वयः।		विप्रः-	१,११९,७; १४४	क्षेत्राद् आ विप्रं जनयो विपन्यया।

### ( ७ ) अन्येषां प्राणिनामवनम् ।

अर्वा	१,११२,२१; ७२	जवे याभिः यूनः अर्वन्तं आवतम् ।				यावच्यामपिन्वतमपो न स्तर्यं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः ।
गावः	१,११२,१९; ७०	आ घ वा याभिः अरुणाः आशिक्षतम् ।			१०,३९,१३; ५९५	अपिन्वतं शयवे धेनुमश्विना ।
	१,११२,१८; ६९	अप्रं गच्छथः विंवरे गो- अर्णसः ।			१०,४०,८; ६०४	युवमश्विना शयुं युवं ... उरुष्यथः ।
	१,११२,३; ५४	याभिः [ ऊतिभिः ] धेनुं अस्वं पिन्वथो नरा ।	मक्षिका	१,११२,२१; ७२		मधु प्रियं भरथः यत् सरड्भ्यः ।
शयुः	१,११२,१६; ६७	याभिः [ऊतिभिः] नरा शयवे...गातुमीषथुः ।			१,११२,९; १४६	उत स्या वां मधुमन्मक्षि- कारपत् ।
	१,११६,२२; ९८	शयवे चिन्नासत्या शचीभि- र्जसुरये स्तर्यं पिप्यथुर्गाम् ।	वर्तिका	१,११२,८; ५९		याभिर्वर्तिकां प्रसिताम- मुञ्चतम् ।
	१,११७,२०; १२१	अधेनुं दद्या स्तर्यं विषक्ताम- पिन्वतं शयवे अश्विना गाम्।			१,११६,१४; ९०	आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम् ।
	१,११७,१२; ११३	दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा।			१,११७,१६; ११७	अजोहवीदारिवना वर्तिका वा- माहो यत् सीममुञ्चतं वृकस्या।
	१,११८,८; १३४	युवं धेनुं शयवे नाधिताया- पिन्वतमश्विना पूर्याय ।			१,११८,८; १३४	अमुञ्चतं वर्तिकामहसो निः।
	१,११९,६; १४३	युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गाम् ।			१०,३९,१३; ५९५	वृकस्य चिद् वर्तिकामन्तरा- स्याद् युवं शचीभिर्प्रसिताम- मुञ्चतम् ।
	६,६२,७; ३१२	दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गाम्				
	७,६८,८; ३४५	उत श्रुतं शयवे ह्यमाना ।				

### ( ८ ) अतिमानुषाणि कर्माणि ।

१,११६,२०; ९६	विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वतां अजरयू अया- तम् ।				क्षरजापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोत- मस्य ।
१,११७,१६; ११७	वि जयुषा ययथुः सान्द्रेः ।			१,११६,७; ८३	कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भो असिञ्चतं सुरा- याः ।
१,११६,९; ८५	परावतं नासत्यानुदेथाम् । उच्चाबुध्रं चक्रथुर्जिह्वारम् ।				

१,११७,६; १०७	शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भान् आसिञ्चतं मधूनाम् ॥
१,११२,१२; ६३	याभी रसां क्षोदसोद्गः पिपिन्धुः ।
१,११२,९; ६०	याभिः सिन्धुं मयुमत्तमसश्चतम् ।
१,११२,११; ६२	याभिः सुदान् औशिजाय वाणिजे दीर्घश्रवसे मधुकोशो अक्षरत् ।
१,११२,४; ५५	याभिः परिज्मा तनयस्य मज्जमना द्विमाता तूर्धु तरणिर्विभूषति ।
१,११२,१३; ६४	याभिः सूर्यं परियाथः परावति ।
सूर्यस्य दुहिता १,३४,५; १६	त्रिष्ठं वां सुरे दुहिता रुहद्रथम् ।
१,११६,१७; ९३	आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्पमेवातिष्ठदर्वता जयन्ती । विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे ॥
१,११७,१३; ११४	युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत ॥
१,११८,५; १३१	आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदन्न जुष्टवी नरा दुहिता सूर्यस्या ।
१,११९,२; १३९	आ वामूर्जानी रथमदिवना-

रुहत् ॥	
१,११९,५; १४२	युवोरश्विना वपुषे युवायुजं रथं वाणी येमतुरस्य शश्वर्यम् । आ वां पतित्वं सख्याय जग्मुषी योषावृणीत जेन्या युवां पती ॥
१,१८४,३; २१०	श्रिये पूषन्निषुकृतेषु देवानासत्या बहतुं सूर्यायाः । वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य भूरेः ॥
५,७३,५; २६२	आ यद् वां सूर्या रथं तिष्ठद् रघुच्यदं सदा । परि वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः ॥
६,६३,५; ३२१	अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ पुरुभुजा शतोत्तिम् ।
७,६९,३; ३४९	वि वां रथो बध्वा यादमानोऽन्तान् दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् ।
७,६९,४; ३५०	युवोः श्रियं परि योषावृणीत सूरौ दुहिता परितकम्यायाम् । आ यद् वां योषणा रथमतिष्ठद् वाजिनीवम् । विश्वान्यदिवना युवं प्र धीतान्यगच्छतम् ॥
८,८,१०; ४३०	

## अश्विनौ-देवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची ।

दीदि - अग्नी १,१५,११; ४
रिश - अदसा ८,८,१७; ४३७
अन् - अपच्युता ८,२७,६; ४९६
न - असत्या १,३,३; ३
सु - अश्व ७,६८,१; ३३८
शत - क्रतू १,११२,२३; ७४
स - क्षणी ८,२२,१५; ४८६
अग्नि - गू ५,७३,२; २५९
विश्व - गूर्तां १,१८०,२; १७६
सु - गोपा १,१२०,७; १५४

अवथ - गोहना १,३४,३; १४
पुरु (श्व) - चन्द्रा ८,५,३२; ४१५
गम्भीर - चेतसा ८,८,२; ४२२
वत्स-प्र - चेतसा ८,८,७; ४२७
वि - चेतसा ५,७४,९; २७६
मद - च्युता ८,२२,१६; ४८७
अ - जरी १,११२,९; ६०
धी - जवना ८,५,३५; ४१८
मनो - जवसा १,११७,१५; ११६
पुरा - जा ७,७३,१; ३७३

सु - जाता १,११८,१०; १३६  
 धियं - जिन्वा १,१८२,१; १९४  
 स - जोषसा ३,५८,७; २३२  
 सचनस् - तमा ८,२६,८; ४९७  
 मनस् (नो) - तरा १,४६,२; २५  
 अ - तूर्तदक्षा ८,२६,१; ४९०  
 पुरु - त्रा २,३९,१; २१५  
 मर्त्य - त्रा ६,६२,८; ३१३  
 शायु - त्रा १,११७,१२; ११३  
 पुरु - दंसा ७,७३,१; ३७३  
 पुरु - दंससा १,३,२; २  
 सु - दंससा ८,१०,३; ४६७  
 अतूर्त - दक्षा ८,२६,१; ४९०  
 सु - दक्षा ३,५८,७; २३२  
 सु - दानू १,११२,११; ६२  
 अ - दाभ्या ५,७५,७; २८४  
 वसु - धिती १,१८१,१; १८५  
 दिवो ( वः ) - नपाता १,११७,१२; ११३  
 दिवो ( वः ) - नरा १०,१४३,३; ६२९  
 अ - निन्वा १,१८०,७; १८१  
 दानुनः ( स ) - पती ८,८,१६; ४३६  
 वृ - पती ७,६७,१; ३२८  
 शची - पती ७,६५,५; ३३२  
 शुभ ( स ) - पती १,३,१; १  
 सन् - पती अथर्व ७,७३,४; ३७६  
 पुरु - पन्था ६,६३,१०; ३२६  
 सु - पर्णा ४,४३,३; २४६  
 तनू - पा ८,९,११; ४४९  
 पर ( स् ) - पा ८,९,११; ४४९  
 सु-गो - पा १,१२०,७; १५४  
 छदिम् - पौ ८,९,११; ४४९  
 जगत् - पौ ८,९,११; ४४९  
 मधु - पौ १,१८०,२; १७६  
 द्रवन् - पाणी १,३,१; १  
 वीळ - पाणी ७,७३,४; ३७६  
 मधु - पातमा ८,२२,१७; ४८८  
 दक्ष - पिता वा० य० १४,३; ६३६  
 हिरण्य - पेदासा ८,८,२; ४२२  
 वत्स - प्रचेतसा ८,८,७; ४२७  
 अरि - प्रा ८,८,९; ४२९

अध - प्रिया ८,८,४; ४२४  
 पुरु - प्रिया ८,५,४; ३८७  
 ऋत - प्सू १,१८०,३; १७७  
 पुरु - भुजा १,३,१; १  
 पुरु - भू ४,४४,४; २५४  
 मयम् ( यो ) - भुवा १,९२,१८; ५१  
 शम् - भू १,४६,२३; ३६  
 शम् - भुवा ८,८,१२; ४३९  
 शम् - भविष्ठा २,३९,५; २१९  
 सचा - भुवा १,३४,११; २२  
 पुरु - भोजसा ८,२२,१६; ४८७  
 अश्व ( श्वा ) - मघा ७,७१,१; ३६२  
 गो - मघा ७,७१,१; ३६२  
 पुरु - मन्त् १,१५८,१; १६९  
 पुरु - मन्द्रा ८,५,४; ३८७  
 पुनर् - मन्थो १,११७,१४; ११५  
 अ - मर्त्या ८,२६,१७; ५०६  
 सिन्धु - मातरा १,४६,२; २५  
 प्रिय - मेन्ना ८,८,१८; ४३८  
 प्रातर - यावाणा २,३९,२; २१६  
 शुभ्र - यावाना ८,२६,१९; ५०८  
 प्रातर - युजा १,२२,१; ५  
 सु - युजा ७,७०,२; ३५६  
 गधु ( धृ ) - युवा ५,७३,८; २६५  
 सु - रथा १,२२,२; ६  
 चित्र - राती ६,६२,५; ३१०  
 अ - रेपसा १,१८१,४; १८८  
 मधु - वर्णा ८,२६,६; ४९२  
 रुद्र - वर्तनी १,३,३; ३  
 हिरण्य - वर्तनी १,९२,१; ५१  
 जिन्या - वसू ७,७४,३; ३८०  
 पुरु - वसू १,४७,१०; ४८  
 मना - वसू ५,७४,१; २६८  
 वाजिनी - वसू २,३७,५; २१४  
 विदपला - वसू १,१८२,१; १९४  
 वृषन् ( ण् ) - वसू २,४१,८; २२४  
 शची - वसू १,६७,५; ३३२  
 सूर्या - वसू ७,६८,३; ३४०  
 विश्व - वारा ७,७०,१; ३५५  
 यज्ञ - वाहसा १,१५,११; ४  
 विप्र - वाहसा ५,७४,७; २७४

अहर् - विदा ८,५,९; ३९२
कतु - विदा २,३९,२; २१६
बसु - विदा १,४६,२; २५
स्वर - विदा ८,८,७; ४२७
सु - वीरा ८,२६,७; ४९६
ऋत ( ता ) - वृधा १,४७,१; ३९
न - वेदसा १,३४,१; १२
विश्व - वेदसा १,४७,४; ४२
शुचि - व्रता १,१५,११; ४
पुरु - शाकतमा ६,६२,५; ३१०
सु - श्रुता २,३९,६; २२०
हवन - श्रुता ५,७५,५; २८२
न - अ-सत्या १,३,३; ३

युयुजान -- सती ६,६२,४; ३०९
वाज -- सातमा ८,५,५; ३८८
शूर -- साता १,१५७,२; १६४
सु -- स्तु [ ष्टु ] ता ६,६३,६; ३२२
दिवि -- स्पृशा १,२२,२; ६
पुरु - स्पृहा ८,८,२२; ४४२
अ -- लिधा ३,५८,७; २३२
रक्षः ( क्षो ) -- हना ( णा ) ७,७३,४; ३७६
वृत्र -- हन्तमा ८,८,९; ४२२
सु -- हवा ८,२२,१; ४७२
पुरु -- हुता ६,६३,१; ३१७
याम -- हुतमा ८,७३,६; ५४५
आशु -- हेषसा ८,१०,२; ४६६

## अश्विनौ-देवतामन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अकारि वामन्धसो	३१९	अन्तरैश्वरैस्तनयाय	३१५	अरित्रं वां दिवस्पृथु	३१
अगच्छतं कृपमाणं	१४५	अप स्वसुरुषसो	३६२	अरुणम्पुरुषा अभूद्	५५५
अग्निनेन्द्रेण वरुणेन	५०९	अपातामश्विना घर्मम्	६४०	अर्वाग् रथं नि यच्छतं	५३०
अञ्जिरस्वन्ता उत	५२२	अप्रस्वतीमश्विना	७५	अर्वाङ् त्रिचक्रो मधु०	१६५
अचेति दक्षा व्युनाकम्	१६१	अबोध्यमिजर्म उदेति	१६३	अर्वाक्षमद्य ययं	२१४
अजोहवीदश्विना तौद्यो	११६	अभि वां नूनमश्विना	३३०	अर्वाक्षा वां सप्तयो	४६
अजोहवीदश्विना वर्तिका	११७	अमुत्स्यु प्र देव्या साकं	४५९	अवन्तमत्रथे गृहं	५४६
अजोहवीणासत्या	८९	अभूदिदं वयुनमो	१९४	अवविद्धं तौग्न्यम्	१९९
अतः सहस्रनिर्णिजा	४३१	अभूदु पारमेतवे	३४	अवस्यते स्तुवते	९९
अतारिष्म तमसः	२०७; २१३; ३७३	अभूदु भा उ अंशवे	३३	अविष्टं धीश्वश्विना	३३३
अत्यायातमश्विना	२७९	अभूदुषा रुशत् पशुः	२८६	अवोर्वा नूनमश्विना	३३१
अत्रिर्यद् वामवरोहन्	३००	अमाजुरश्विद् भवथो	५८५	अशोच्यमिः समिधानो	३२९
अत्रेरिष शृणुतं	५२७	अयं वां कृष्णो अश्विना	५६०	अश्वं न गृह्णमश्विना	१०५
अदित्यास्तवा पृष्ठे सादयामि	६३८	अयं वां घर्मो अश्विना	४४७	अश्वो यो वामुप	३८१
अथ स्वप्नस्य निर्विदे	१५९	अयं वामद्विभिः सुतः	४७२	अश्विना घर्म पातः	६७०
अथा ह यन्तो अश्विना	३८२	अयं वां भागो निहितो	५३९	अश्विना परि वामिषः	२३३
अधि श्रिये दुहिता	३२१	अयं वां मधुमत्तमः	३९	अश्विना पिषतं मधु	४
अधेनुं दक्षा स्तर्यं विषक्तं	१२१	अयं समह मा तनूहि	१५८	अश्विना पुरुदंससा	२
अध्वर्यु वा मधुपाणिं	६१३	अयं ह यद् वां देवया	३४१	अश्विना ब्रह्मणा यातम्	६७१
अनारम्भणे तदवीरयेधाम्	८१	अरं मे गन्तं हवनाय	३१८	अश्विना मधुमत्तमं	४१

अश्विना मधुपुत्तमो	२३४	आ नूनमश्विना युवं	४४४	आ वां वाहिष्ठो अश्विना	४९३
अश्विना यज्वरीरिषो	१	आ नूनमश्विनोऋषिः	४५०	आ वां विप्र इहावसे	४९९
अश्विना यद्ध कर्हि	२७७	आ नो अश्वान्दश्विना	४८८	आ वां विश्वाभिरुतिभिः	४३८; ५७४
अश्विना यामहूतमा	५४५	आ नो अश्विना त्रिवृता	२३	आ वां श्येनासो अश्विना	१३०
अश्विना वर्तिरस्मदा	४९	आ नो गन्तं मयोभुषा	४३९	आ वां सुम्ने वरिमन्	३२७
अश्विना वाजिनीवसू	२९९	आ नो गन्तं रिशादसा	४३७	आ वां सुम्नेः शंयू इव	६३२
अश्विना वायुना युधं	२३२	आ नो गव्येभिरदम्यैः	५५३	आ वां प्राषाणो अश्विना	५३३
अश्विनावेह गच्छतं	२८४; २९७	आ नो गोमन्तमश्विना	३९३	आ वां दानाय ववृतीय	१७९
अश्विना सारधेण मा	६७५; ६८८	आ नो देवेभिरुप	३६९	आ वां नरा मनोयुजो	२८३
अश्विना सु विचाकृशद्	५५६	आ नो शुम्नैरा श्रवोभिः	४१५	आ वामगन्तुमतिः	६०८
अश्विना श्वपे स्तुहि	४९९	आ नो नावा मतीनां	३०	आ वामश्वासः ह्युच्यः	१८६
अश्विना हरिणाविष	२९८	आ नो यातं दिवस्पर्था	४२४	आ विश्ववाराश्विना गतं	३५५
अश्विना हविरिन्द्रियं	६५६	आ नो यातं दिवो अच्छा	२५५	आ शुभ्रा यातमश्विना	३३८
अश्विनोरसनं रथम्	१५७	आ नो यातमुपश्रुति	४२५	आ श्येनस्य जवसा	१३७
असजिं वां स्थविरा	१९१	आ नो रत्नानि भिभ्रतौ	२८०	आश्विनाषत्रवावती	९
असश्वता मघवद्भयो	३३६	आ नो विश्वान्यश्विना	४३३	आ सुगम्याय सुगम्यं	४८६
अस्ति हि वामिह स्तोता	२७३	आ नो विश्वाभिरुतिभिः	४२१	आस्नो वृकस्य वर्तिका०	९०
अस्मभ्यं वाजिनीवसू	३९५	आ परमाभिरुत	३१६	आहं खिदामि ते मनो	३४८
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू	५०४	आ पश्चातावासत्या	३७२; ३७७	आ हि रहतमश्विना	४८०
अस्माकमद्य वामयं	४०१	आपी षो अस्मे पितरेष	६१७	हृदं हि वां प्रदिवि	२९०
अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या	२८५	आ भात्यभिरुषसाम्	२८७	इन्द्रतामा हि धिष्ण्या	१९५
अस्मे आ वहतं रथि	३९८	आ मन्येथामा गतं	२२९	इमं मे स्तोममश्विना	५५९
अस्मे ऊ शु वृषणा	२०९	आ मे अस्य प्रतीव्यम्	४९७	इमा उ वां दिविष्टय	३७८
अस्मे सा वां माध्वी रातिः	२११	आ मे वचांस्युद्यता	५७८	इमा ब्रह्माणि वर्धना	२६७
अस्य पिवतमश्विना	३९७	आ मे हवं नासत्या	५५८	इयं मनीषा इयमश्विना	३६१; ३६७
अहेम यज्ञं पथा०	३७५	आ यद् वां योषणा	४३०	इयं वामहे शृणुतं	५८८
आकेनिपासो अहभिः	२४२	आ यद् वां सूर्या रथं	२६२	इह त्या पुरुभूतमा	२५९; ४७४
आ गोमता नासत्या	३६८	आ यातं नहुषस्पर्था	४२३	इहा गतं वृषण्वसू	५४९
आञ्जनस्य मदुघस्य	६४९	आ यात सुप भूषतं	३८०	इहेह जाता समवाष०	१८८
आ तिष्ठतं सुवृत्तं	२०४	आरङ्गरेव मध्वरेयेथे	६२३	इहेह यद् वां समना	२५०; २५७
आ तेन यातं मनसो	५९४	आ वहेथे पराकात्	४१४	ईळे खावापृथिवी	५२
आथर्वणायाश्विना	१२३	आ वां रथं युवतिः	१३१	ईर्मान्यद् वपुषे वपुः	२६०
आदारो वां मतीनां	२८	आ वां रथं दुहिता	९३	इकथेभिरर्वागवसे	४८
आ न ऊर्जं वहतम्	१६६	आ वां रथमवमस्यां	३६४	उग्रो वां ककुहो ययिः	२६४
आ नः स्तोममुप व्रथत्	३९०	आ वां रथं पुरुमायं	१३८	उत त्वं वीरं धनसाम्	५७०
आ नासत्या गच्छतं	२१	आ वां रथो अश्विना	१२७	उत त्वद् वां जुरते	३४३
आ नासत्या त्रिभिरेकादशैः	२२	आ वां रथो रथानां	२७५	उत त्वं भुज्युमश्विना	३४४
आ नूनं यातमश्विना ४२२; ४५७; ५७६		आ वां रथो रोदसी	३४७	उत त्या दैव्या भिषजा	४७१
आ नूनं रघुवर्तनिं	४५१	आ वां रथोऽवनिर्न	१८७	उत नो गोमतीरिष	३९२
		आ वां वयोऽधासो	३२३		

उत नो दिव्या इष	४०४	एषो उषा अपूर्व्या	१४	चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि	९१
उत म ऋञ्जे पुरयस्य	३२५	एह देवा मयोभुवा	५१	चित्ते तद् वा सुराधसा	६३०
उत स्या वां मधुमत्	१४६	एह वां प्रुषितप्सवो	४१६	चित्रं ह यद् वां भोजनं	३४२
उत स्या वां रुशतो	१९२	ओ ल्यमह आ रथम्	४७२	चोदयतं सूनुताः	५८४
उत स्या श्वेतयावरी	५०७	ओष्ठाविष मध्वास्त्रे	२२०	छूर्दिर्धन्तमदाभ्यं	५३२
उता मातं संगवे	२८९	क उ श्रवत् कतमो	२४४	जनासो वृक्तबर्हिषो	४००
उदीराधामृतायसे	५४०	कं याधः कं ह गच्छथः	२७०	जनिष्ट योषा पतयत्	६०५
उदु स्तोमासो अश्विनोः	३७०	कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो	२००	जम्भयतमभितो	१९७
उद् वन्दनमैरतं	१३२	कथा नूनं वां विमना	५६८	जयतं च प्र स्तुतं च	५१९
उद् वां पृक्षासो मधुमन्तः	२३८	कदा वां तौग्न्यो विधत्	४०५	जीवं रुदन्ति वि मयन्ते	६०६
उप स्या वर्हां गमतो	३७६	कदु प्रेष्ठाविषां रयीणाम्	१८५	जुजुरुषो नास्योत	८६
उप नो यातमश्विना	४९६	का राधद्वोत्र श्विना	१४८	जुषेथां यज्ञं बोधतं	५१२
उप नो वाजिनीवसू	४७८	का वां भूदुपमातः	२४७	जुहुराणा चिदश्विना	४९४
उपस्तुतिरौचध्यम्	१७२	किमत्र दस्त्रा ऋणुधः	१९६	तं युञ्जाथां मनसो	२०२
उप स्तृणीतमत्रये	५४२	किमन्ये पर्यासत	४२८	तं युवं देवावश्विना	२३६
उपायातं दाशुषे मर्त्याय	३६३	किमिदं वां प्राणवत्	५५०	तं वां रथं वयमया	१८४; २५१
उभा उ नूनं तदिदर्थ०	६१४	कुलायिना घतवती	६३५	तत् तदिदश्विनोरवोः	३५
उभा पिबतमश्विना	३८	कृष्णः को वामश्विना	६४१	तद् पु वामेना कृतं	२६१
उभा हि दस्त्रा भिषजा	५६७	कुह त्या कुह नु ध्रुता	२६९	तद् वां नरा नासत्यावनु	२०१
उरु वां रथः परि	२४८	कुह यान्ता सुष्टुतिं	११३	तद् वां नरा शंस्यं	८७; १०७
उष्टारेव फर्बरेषु	६१५	कुह स्थः कुह जग्मथुः	५४३	तद् वां नरा सनये	८८
ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य	१३९	कुह स्विद् दोषा कुह	५९८	तप्तो वां घर्मां नक्षतु	६८३
ऊर्ध्वां वामभिरध्वरेषु	३२०	कृष्टो देवावाश्विना	२६८	तमिन्द्रं पशवः सचा	६५८
ऋतेन देवः सविता	५७१	को मृळाति कतम	२४५	तर्द है पतज्ञ है	६४४
ऋध्याम स्तोमं सनुयाम	६२४	को वां दाशत् सुमतये	१७०	तर्दापते वघापते	६४५
ऋभुमन्ता वृषणा	५२३	को वामथ पुरूणाम्	२७४	ता न आ वोळ्हमाश्विना	२२५
ऋषिं नरावंहसः	१०४	को वामथा करते	२५३	ता नव्यसो जरमाणस्य	३०९
एकस्मिन् योगे भुरणा	३३५	क त्या वन्गू पुरुहूताथ	३१७	ताभिरा यातमूर्तिभिः	४०७
एकस्या वस्तोरावतं	९७	क त्री चक्रा त्रिवृतो	२०	ताभिरा यातं वृषणा	४८३
एतं वां स्तोममश्विनौ	५९६	क स्विदथ कतमासु	६१०	ता भुज्युं विभिरङ्गथः	३११
एतानि वां श्रवस्या	१११	क्षत्रं जिन्वतमुत्	५२५	ता मन्दसाना मनुवो	६०९
एतानि वामश्विना	१२६; २२२	गच्छतं दाशुषो गृहम्	५६३	ता मे अश्विना सनीनां	४२०
एतावद् वां वृषध्वसू	४१०	गर्भं धेहि सिनीवालि	६८९	ता यज्ञमा शुचिभिः	३०७
एषा वामह ऊतये	५३५	गिरावरगराटेषु	६७४	ता वर्तिर्यातं जयुषा	५९५
एष वां देवावश्विना	२३५	गिरो जुषेयामध्वरं	५१४	ता वल्गू दस्त्रा पुरु०	३१०
एष वां स्तोमो अश्विनौ	२१२	गोमदू षु नासत्या	२२३	ता वां नरा खवते	१३६
एष स्य कारुर्जरते	३४६	प्रावाणेव तदिदर्थं	२१५	ता वामथ तावपरं	२०८
एष स्य भानुरुदियर्ति	२३७	घर्मव मधु जठरे	६२१	ता वामथ हवामहे	४९२
एष स्य वां पूर्वगतैव	३३४	चनिष्ठ देवा ओषधीषु	३५८	ताविदां चिदहानां	४८३

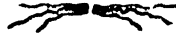
ताविद् दोषा ता उपसि	४८५	देवीद्वारो अश्विना	६६०	पुराणमोकः सख्यं	२६१
ता विद्वांसा हवामहे	१५०	देवीस्तिस्तिस्तिस्ति देवीः	६६५	पुराणा वां वीर्यां प्र	५८७
ता सुदेवाय दाशुषे	३८९	देवो अग्निः स्वष्टकृद्	६६९	पुरुत्रा चिद्धि वां नरा	३९९
ता ह त्यद् वृत्तिर्यद०	३०८	देवो देवैर्वनस्पतिः	६६७	पुरप्रिया ण ऊतये	३८७
तिरः पुरु चिदश्विना	२३०	शुभिरक्तुभिः पारि	७६	पुरुमन्त्रा पुरुवसू	४३२
तिष्ठः क्षणस्त्रिहाति	८०	शुभ्री वां स्तोमो अश्विना	५७९	पुरु हि वां पुरुभुजा	३२४
तुप्रो ह भुज्युमश्विनो	७९	श्रिये रामदिवना प्रावतं	६७३	पुरु वर्षास्यदिवना	११०
तेन नासत्या गतं	४७	धेनुः प्रत्नस्य कामं	२२६	पूर्वापुषं सुहवं	४७३
तेन नो वाजिनीवसू	४०३; ४१३	धेनूर्जिन्वतमुत	५२६	पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो	६३७
त्यं चिदत्रिमृतजुरम्	६२७	ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिः	६३४	पौरं चिद्धयुदमुतं	२७१
त्यं चिदध्वं न वाजिनम्	६२८	न तं राजानावदिते	५९३	प्र च्यवानाञ्जुजुषो	२७२
त्या न्वश्विना हुषे	४६७	न तस्य विद्य तद्दु	६०७	प्रति प्रियतमं रथं	२७८
प्रयः पशयो मधुवाहने	१३	न मा गरन् नयो	१७३	प्रति वां रथं नृपती	३२८
त्रिरश्विना सिन्धुभिः	१९	नमोवाके प्रस्थिते	५३१	प्र शुभ्राय प्र शक्से	४६३
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि	१७	न यत् परो नान्तर	२२४	प्र बोधयोषो अश्विना	४६०
त्रिर्नो अश्विना यजता	१८	नरा गौरिष विष्टुतं	३५२	प्र यद् वहेथे महिना	१८३
त्रिर्नो रथि बहतम्	१६	नरा दंसिष्ठावत्रये	६२९	प्र या घोषे भृगवाणे	१५२
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुप्रते	१५	न संस्कृतं प्र मिमीतो	२८८	प्र ये ययुरवृकासो	३८३
त्रिवधुरेण त्रिभृता ४०:	१२८; ५६५	नहि वामस्ति दूरके	८	प्रवद्यामना सुवृता	१२९
त्रिश्चिन् नो अथा भवर्तं	१२	नावेचनः पारयतं	२१८	प्र वां रथो मनोजवा	३४०
त्रिपशस्ते बर्हिषि	४२	नासत्याभ्यां बर्हिरिष	७७	प्र वां शरद्वान् शृषभो	१९०
त्राणि पदान्यश्विनोः	४४३	निमिपश्विज्जवीयसा	५४१	प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो	४४२
दश मासाञ्छशयानः	३०५	नि यद् युवेथे नियुतः	१८०	प्र वां दंसांस्यदिवनाववोचम्	१०१
दश रात्रीरश्विना	१००	नि पु ब्रह्म जनानां	३९६	प्र वां निचेरुः ऋकुहो	१८९
दशस्यन्ता मनवे	४७७	नू नो रथि पुरुवीरं	२५६	प्र वामन्धांसि मथान्यरथुः	३३९
दक्षा युवाकवः सुता	३	नू मे गिरो नासत्या	५६६	प्र वामवोचमदिवना	२४३
दक्षा हि विश्वमानुषद्	४९५	नू मे हवमा शृणुतं	३३७; ३५४	प्र सप्तवाधिराशसा	५४८
दिवश्चिद् रोचनादध्या	४२७	नृवद् दक्षा मनोयुजा	३८५	प्राचीमु देवादिवना	३३२
दिवस्कृष्वास इन्दवो	३२	न्यध्न्यभ्य मूर्धनि चक्रं	११	प्रातर्जरेथे जरणेव	५२९
दीर्घतमा मामतेथो	१७४	न्यु प्रियो मनुषः सादि	३७४	प्रातर्थावाणा प्रथमा	२९२
दुहीयन् मित्राधितये	१५६	पनाय्यं तददिवना	५३८	प्रातर्थावाणा रथेष्व	२१६
दुरादिहेव यत्	३८४	पत्रेव चर्चरं जारं	६२०	प्रातर्जुजं नासत्याधि	६१२
देव इन्द्रो नराशःराः	६६६	परायतं नासत्यान्	८५	प्रातर्जुजा वि बोधय	५
देवं बर्हिर्वारीतीनां	६६८	परिविष्टं जाहुषं	९६	प्रास्वा ऊर्जं घृतदत्तुतम्	४३६
देवं बर्हिः सरस्वती	६५९	पिबतं सोमं मधुमन्तं	५७५	बृहन्तेव गम्भरेपु	६२२
देवा देवानां भिपजा	६६४	पिबतं घर्मं मधुमन्तं	५७३	बोधिन्मनसा रथ्येषिरा	२८२
देवी उषासावश्विना	६६१	पिबतं च तृणुतं चा	५१८	ब्रह्म जिन्वतमुत	५२४
देवी ऊर्जाहुती दुषे	६६३	पुत्रमिव पितरौ	६२६	भ्रीताय नाधमानाय	३०२
देवी जौष्टी सरस्वती	६६२	पुरं न वृष्णवा दज	५५७		

मधू हि ष्मा गच्छथ	२४६	यदिन्द्रेण रारथं	४५५	याभिर्नरा शयवे	६७
मधुमन्त्रे परायणं	५८१	यदुषो यासि भानुना	४६१	याभिर्महामतिधिवं	६५
मध्व ऊ पु मधूयुवा	२६५	यदुभियास्त्राहुतं घृतं	६८२	याभिर्वर्चं विपिपानम्	६६
मध्वः पिबतं मधुपेभिः	२३९	यद् युञ्जाथे वृषणम्	१६४	याभिर्विदपलां धनसा	६१
मध्वः सोमस्याश्विना	१०२	यद् रोदसी प्रदिषो	३१३	याभी रसां क्षोदसोद्गः	६३
मनोजवसा वृषणा	४८७	यद् वां कक्षीवां उत	४५३	याभी रेभं निवृत्तं	५६
मयि वयो अथो यशो	६७६	यद् वा यज्ञं मनवे	४६६	या वां कशा मधुमती	७
मंहिष्ठा वाजसातमा	३८८	यज्ञासत्या पराक्ते	४५८	याविस्था श्लोकमा दिवो	५०
मही वामूतिरश्विना	१२०	यज्ञासत्या परावति	४५९	या सुरथा रथीतमा	६
मा कस्मे धातमभ्यमिन्निषे	१५५	यज्ञासत्या भुरप्यथो	४४९	युक्तोह यद् वां तौग्न्याय	१७१
मा नो गव्येभिरद्वयैः	५५४	यन्नूनं धीभिरश्विना	४६४	युञ्जायां रासभं रथे	५६४
मा वां वृको मा वृकीरा	२०५	यमश्विना ददयुः	८२	युवं रथेन विमदाय	५८९
मित्रावृषणवन्ता उत	५२१	यमाश्विना नमुचेरासुरादधि	६५४	युवं रेभं परिपूते	१४३
य ई राजानावृत्तुथा	३१४	यमश्विना सरस्वती	६५७	युवं वन्दनं निर्कृतं	१४४
यत्किञ्चि वां पुर ऋषयो	४२६	ययोरधि प्र यज्ञा	४६८	युवं वरो सुषाम्णे	४९१
यत् स्त्रो दीर्घप्रसम्पनि	४६५	यवं वृकेणाश्विना	१२२	युवं विप्रस्य जरणाम्	५९०
यथा चक्रुर्देवासुरा	६५२	यस्ते रसः सम्भृत	६५३	युवं शका मायाविना	५८०
यथा चित् कण्वमावतं	४०८	यातं छदिष्वा उत नः	४५४	युवं श्यावाय रज्ञातीम्	१०९
यथा मक्षा इदं मधु	६८७	या दक्षा सिन्धुमातरा	२५	युवं श्रियमाश्विना	२५२
यथा मधु मधुकृतः	६८६	या नः पांपरदश्विना	२९	युवं श्रीभिर्दर्शताभिः	३२२
यथायं वाहो अश्विना	६४७	यानि स्थानान्यश्विना	३५७	युवं श्वेतं पेदवे	१३५, ५९२
यथा वातः पुष्करिणीं	३०३	याभिः कण्वमाभिष्टिभिः	४३	युवं सुरामश्विना	६२५
यथा वातो यथा वनं	३०४	याभिः कण्वं मेधातिथि	४४०	युवं ह कृशं युवमाश्विना	६०४
यथा वामत्रिरश्विना	५३४	याभिः कुत्समारुनेयं	७४	युवं ह गर्भं जगतीपु	१६७
यथा सोमः प्रातःसवने	६८५	याभिः कृशातुमसने	७२	युवं ह घर्मं मधुमन्तं	१७८
यथोत कृत्वे धनेंशुं	४०९	याभिः पक्थमवधो	४८१	युवं ह भुज्युं युवमाश्विना	६०३
यदत्र रिप्तं रसिनः	६५५	याभिः पठर्वा जठररथ	६८	युवं ह रेभं वृषणा	५९१
यददो दिवो अर्णवः	५०६	याभिः पत्नोविमदाय	७०	युवं ह श्लो भिपजा	१६८
यदद्य कर्हि कर्हि चित्	५४४	याभिः पारंजमा तनयस्य	५५	युवं हि ष्मा पुरुभुजा	५६९
यदद्य वां नासत्या	४५२	याभिः शान्चीभिवृषणा	५९	युवं ह्यास्तं महो रज्	१५४
यदद्य स्थः परावति	२५८	याभिः शान्ताती भवथो	७१	युवं कण्वाय नासत्या	४०६
यदद्याश्विनावपाग्	४६९	याभिः शुचन्ति धनसां	५८	युवं कवी पठः पर्यश्विना	६०२
यदद्याश्विनावहं	४५६	याभिः सिन्धुं मधुमन्तम्	६०	युवं चित्रं ददयुः	३७९
यदधिगावो आग्निग्	४८२	याभिः सुदानू औशिजाय	६२	युवं च्यवानं सनधं	५८६
यदन्तरिक्षे पतथः	४७०	याभिः सूर्यं पारंयाथः	६४	युवं च्यवानं जरसो	३६६
यदन्तरिक्षे यद् दिवि	४४५	याभिरज्ञिरो मनसा	६९	युवं च्यवानमाश्विना	११४
यदप्सु यद् वनस्पतौ	४४८	याभिरन्तकं जसमानं	५७	युवं तासां दिव्यस्य	५४
यदयातं दिवोदासाय	९४	याभिर्नरं गोशुयुधं	७३	युवं तुषाय पूर्वभिः	११५
यदाप्रीतासो अंवावो	४६२	याभिर्नरा त्रसदस्युं	४४१	युवं देवा कतुना	५३६



युवं धेजुं शयवे	१३४	यो ह वां मधुनो हति०	४०२	शुनमन्धाय भरमह्वयत्	११९
युवं नरा स्तुवते	८३; १०८	यो ह स्य वां रथिरा	३५१	शुश्रुवांसा चिदभिवना	३५९
युवमत्यस्याव नक्षत्रो	१७६	रथं मान्तं कुह को ह	५९७	शृश्रेव नः प्रथमा	२१७
युवमत्रयेऽवनीताय	१३३	रथं वामनुगायसं	४१७	शृणुतं जरितुर्हवं	५६१
युवमेतं चक्रथुः	१९८	रथं हिरण्यधनुरं	४११	श्येनाविव पतथो	५१७
युवं पय उल्लियायाम्	१७७	रथो यो वां त्रिवन्धुरो	४७६	श्येनो ह्वयं नयत्वा	६७२
युवं पेदेवे पुरुवार०	१४७	रथिं सुक्षत्रं स्वपत्य०	९५	श्रिये पूषण्णिकृतेव	२१०
युवं भुज्युं समुद्र आ	६३१	रश्मीरिव यच्छतम्	५२९	श्रुतं गायत्रं तकवानस्य	१५३
युवं भुज्युमवविद्धं	३५३	रातिं यद् वामरक्षसं	५७९	सं यन्मिथः पस्पृधानासो	१४०
युव भुज्युं भुरमाणं	१४१	लोहितेन स्वधितिना	६५१	सं वां शता नासत्या	३२६
युवं मृगं जागृवांसं	४१९	संसगेव पूषया	६१८	सं चेषयाथो अश्विना	६४६
युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो	१६०	वच्यन्ते वां ककुहासो	२६	सं जानामहे मनसा	६७८
युवां ह घोषा पर्याश्विना	६०१	वयं हि वां हवामहे	४२८; ५७७	संज्ञानं नः स्वभिः	६७७
युवां गोतमः पुरुमीळ्हो	२०६	वयं चिद्धि वां जरितारः	१८१	सत्यामिद् वा उ अश्विना	२६६
युवां चिद्धि ध्माश्विनौ	१८२	वरेथे अग्निमातपो	५४७	सदा कवी सुमतिमा	१२४
युवाद्सस्य धिष्ण्या	५०१	वस् रुद्रा पुरुमन्तू	१६९	स प्रथानो अभि	३४८
युवां देवास्त्रय एका०	५३७	वातेवाजुर्या नशेष	२१९	समश्विनोरवसा	२९१; २९६
युवाभ्यां वाजिनीवस्	३८६	वायुरेनाः समाकरत्	६५०	समानं वां सजात्यं	५५१
युवां पूषेवाश्विना	१९३	वावसाना विवस्वति	३६	समानमु त्यं पुरुहूतम्	६११
युवां मृगेव वारणा	६००	वावृधाना जुमस्पती	३९४	समानयोजनो हि वां	१०
युवोः श्रियं परि योषा०	३५०	वाहिष्ठो वां हवानां	५०५	समाने अहन् त्रिरवय०	१४
युवो रजांसि सुयमासो	१७५	वि चेदुच्छन्त्यश्विना	३७१	समिद्धो अमिराश्विना	६८०
युवोरत्रिश्चिकेनति	२६३	वि जयुषा रथ्या यात०	३१२	समिद्धो अमिर्वृषणा	६७९
युवो रथस्य परि	४७५	वि जिहीष्व वनस्पते	३०१	सर्गां इव सृजतं	५२८
युवोरश्विना वपुषे	१४२	विद्वांसाविद् दुरः	१४९	साकंयुजा शकुनस्य	६१६
युवोरुषा अनु श्रियं	३७	वि पृच्छामि पाक्या	१५१	सिन्धुर्हं वां रसया	२४९
युवोरु पू रथं हुवे	४९०	विदवा आदा दक्षिणसद्	६३९	शिषक्ति सा वां सुमतिः	३५६
युवोर्दानाय सुभरा	५३	विदवाभिर्धोभिर्भुवनेन	५१०	सुदासे दद्या वसु	४४
येभिस्त्रिः परावतो	३९१	विदवे देवा अकृपन्त	५८१	सुप्रावर्ग सुवीर्यं	४८९
ये वां दंसांश्विना	४४६	विदवैर्देवैस्त्रिभिरैका०	५११	सुयुग्भिर्दवैः सुवृता	२२८
यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां	२९५	वीळ्यत्माभिराशुहेमाभिः	७८	सुयुग् वहन्ति प्रति	२२७
यो वां यज्ञेभिरावृतो	५०२	वृक्राय चिज्जसमानाय	३४५	सुवृद् रथो वर्तते	२०३
यो वां यज्ञो नासत्या	३६०	वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो	५००	सुषुष्वांसं न निर्ऋतेः	१०६
यो वां रजांश्विना	५५२	शचीभिर्नः शचीवसू	१६२	सुष्टुभो वां वृषण्वसू	२८१
यो वां रथो नृपतो	३६५	शतं मेषान् वृक्ये	९२; ११८	सूनोर्मानिनाश्विना	११२
यो वां नासत्यावृषिः	४३५	शमू घु वां मधूयुवा	२७६	सुष्येव जर्भरी तुर्करीत्	६१९
यो वामश्विना मनसो	१०३	शरस्य चिदाचैत्कस्य	९८	स्तुषे नरा दिवो अस्य	३०६
यो वामुरुभ्यचस्तमं	५०३	शियाभिष्टे हृदयं	६४२	स्तोमं जुषेथा युवशेष	५१३
यो वां परिज्मा सुवृद्	५८३			स्वदेतया सुकीर्त्या	५८८

स्व ध्वरासो मधुमन्तो	२४१	हतं च क्षत्रान् यततं	५२०	हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो	२९४
स्वस्था यशसा यातम्	३४९	हतं तर्दं समङ्कमाखुं	६४३	हिरण्ययो धरणी यं	६३३
स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु	६८१	हविषा जारो अपां	२७	हिरण्ययो वां रभिरीषा	४१२
स्वाहाकृतस्य तृम्पतं	५३२	हृस्तेव शक्तिमभि	२२१	हिरण्ययेन पुरुभू	२५४
स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह	६३६	हारिद्रवेव पतथो	५१५	हिरण्ययेन रथेन	४१८
हंसाविव पतथो	५१६	हिङ्कृण्वती वसुपत्नी	६८४	हिरण्यहस्तामदिवना	१२५
हंसासो ये वां मधुमन्तो	२४०	हिमेनाग्निं प्रंसम०	८४		



## शुद्धिपत्रम् ।

पृष्ठम् ।	मन्त्राङ्कः ।	अशुद्धम् ।	शुद्धम् ।
८	१,११६,२२ [९८]	चिदार्चत कस्यावतादा	चिदार्चकस्यावतादा
११	१,११९,६ [१४३]	वृर्घेण	प्र वृर्घेण
२६	७,६८,८ [३४५]	हयमाना	ह्रयमाना
२९	८,५,५ [३८८]	महिष्ठा	मंहिष्ठा
३१	८,८,१३ [४३३]	रीरघतं	रीरधतं
८७	अन्त्या पङ्क्तिः	०विर्भव०	०विर्भव०







# दैवत-संहिता

( ६ )

## आयुर्वेद-प्रकरण

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय-मण्डळ, औंध ( जि. सातारा )

संवत् २०००, शक १८६५; सन् १९४३

---

मुद्रक और प्रकाशक

वसंत श्री. सातवळेकर, B. A.

भारत मुद्रणालय, भोंध ( जि. सातारा )

---

# आयुर्वेद-प्रकरण

चारों वेदोंमें आयुर्वेद-विषयक मन्त्र इधर उधर बिखरे हैं। उन सब को इस प्रकरण में इकट्ठा किया है। इन में करीब ७५ ऋषियों के देखे मन्त्र हैं और ये मन्त्र करीब ८२ शीर्षकों में विभक्त हुए हैं। इनका ब्यौरा देखिये-

## आयुर्वेद-प्रकरण के ऋषि क्रमानुसार मन्त्र

ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या	ऋषि	सूक्तसंख्या	मन्त्रसंख्या
१ अथर्वा	५८	५९८	२३ कवष ( ऐल्लषः )	१	१५
२ ब्रह्मा	४२	२७२	२४ ऋभुः	२	१४
३ यमः	१३	१६७	२५ भरद्वाजो ( बाह्रस्पत्यः )	१	१४
४ ऋगुः	१०	१४७	२६ सविता	१	१४
५ ऋग्वंगिराः	१९	११८	२७ अंगिराः ( प्रचेताः )	४	१४
६ शुक्रः	७	७५	२८ शंखो ( यामायनः )	१	१३
( यजुः )	३१	६२	२९ सर्पः ( काद्रवेय आर्षुदिः )	१	१४
७ गरुस्मान्	७	५९	३० यमो यमी च	१	१४
८ शन्तातिः	१२	५९	३१ विवृहा ( काश्यपः )	२	१३
९ चातनः	७	४४	३२ बादरायणिः	२	१३
१० सृगारः	६	४२	३३ शौनकः	४	११
११ विश्वामित्रः ( गाथिनः )	६	४१	३४ शुनःशेषः	३	११
१२ वसिष्ठः ( मैत्रावरुणिः )	१०	४१	३५ अत्रिः ( भौमः )	१	१०
१३ बृहस्पतिः	१	३५	३६ सप्तवध्रिः ( आत्रेयः )	१	९
१४ मातृणामा	२	३५	३७ भिक्षुः ( आंगिरसः )	१	९
१५ प्रस्कण्वः ( काण्वः )	८	३३	३८ मेधातिथिः ( काण्वः )	१	८
१६ प्रत्यङ्गिराः	१	३२	३९ संकुसुको ( यामायनः )	१	८
१७ अथर्वाङ्गिराः	६	२७	४० सर्प ( ऐरावतो जारत्कर्णः )	१	८
१८ अगस्त्यो ( मैत्रावरुणिः )	२	२७	४१ भगः	२	८
१९ भिषग् ( आथर्वणः )	१	२३	४२ वामदेवः	२	८
२० देवश्रवाः ( यामायनः )	३	२२	४३ कुमारो ( यामायनः )	१	७
( मथितश्च )			४४ प्रजापतिः	१	७
२१ त्रिशिराः ( त्वाष्ट्रः )			४५ रक्षोहा	१	६
सिन्धुद्वीप ( आंबरीषः )	५	२०	४६ अंगिराः	१	६
२२ उन्मोचनः	२	२०	४७ वीतहृद्यः	२	६
			४८ हविर्धान ( आंगिः )	१	५
			४९ यक्ष्मनाशनः	१	५
			५० शंभुः	१	५
			५१ ऋषभो ( वैराजः )	१	५
			५२ सूर्या ( सावित्री )	२	४
			५३ द्रविणोदाः	१	४
			५४ मनुः ( वैवस्वतः )	१	४
			५५ ऊर्ध्वश्रवा ( आर्षुदिः )	१	४
			५६ गुःसमद ( आंगिरसः )	२	४

५७ कबंधः	१	४
५८ भागलिः	१	३
५९ जाटिकायनः	१	३
६० बभ्रुपिंगलः	१	३
६१ वरुणः	१	३
६२ कौशिकः	१	३
६३ गोतमो ( राहूगणः )	३	३
६४ मधुच्छंदा ( वैश्वामित्रः )	१	३
६५ उपरिबभ्रवः	१	३
६६ शिरिंबिठिः	१	२
६७ इन्द्राणी	१	२
६८ प्रजावान् ( प्राजापत्यः )	१	२
६९ कौरुपथिः	१	२
७० कक्षीवान् ( दैर्घतमसः )	२	२
७१ कण्वो ( घौरः )	१	२
७२ कूर्मो ( गार्समदः )	१	१
७३ वसुक्रः ( ऐंद्रः )	१	१
७४ दीर्घतमा ( भौचथ्यः )	१	१
७५ गार्ग्यः	१	१

## आयुर्वेद-प्रकरण के मंत्रों की विषयानुसार गणना

आयुर्वेद-प्रकरण में नासाविषयों के शीर्षकों के नीचे जो मंत्र इकट्ठे किये गये हैं उनकी विषयानुसार गणना इस प्रकार है—

	मंत्र-संख्या
१ दीर्घ-आयुष्य की प्राप्ति	१६०
अरिष्टानि भंगानि	२
सुमंगलौ दन्तौ	३
२ यक्ष्मनाशन	१५०
३ ओषधिवनस्पतयः	७७
अन्न	३
सोम	४
वनस्पतिसूर्यगावः	३
वनस्पतयः	२

	मंत्र-संख्या
अपामार्ग	२७
अरुंधती	३
कुष्ठ औषधि	३
कुष्ठनाशनी	२०
पिप्पली	३
पृष्णिपर्णा	८
रोहिणी	८
लक्षा	९
केशवर्धनी	९
अक्षिरोगनाशनी	४
मधुवनस्पति	५
रामायणी	१
अजशृंगी	१२
४ पापनाशनं	१२८
आस्त्रावभेषजं	६
रक्तस्त्रावनिवृत्तये धमनीबंधनं	४
मिर्कतिनाशनं	४
हृद्दोग-कामिला-नाशनं	४
कासनाशनं ( बलासनाशनं )	६
हृदीवस्वनाशनं	५
सौभाग्यवर्धनं	५
सपत्नीबाधनं	७
उचरनाशनं ( तक्मनाशनं )	१८
गण्डमाला-चिकित्सा	१०
श्वेतकुष्ठनाशनं	८
रोगात् उन्मोचनं	३
रोगनिवारणं	२५
स्वापनं	७
मूत्रमोचनं	९
सूर्यः	३
५ इषुनिष्कासनं	३
६ अञ्जनं	३३
ईर्ष्याविनाशनं	४
उन्मत्ततामोचनं	४
७ विषनाशनं	८६

८ क्रिमिनाशनं ( यातुधा, रक्ष, पिशाच, असुर आदीनां नाशनं )	८३
९ कृत्यादूषणं दस्युनाशनं बंधमोचनं मन्याविनाशनं शापमोचनं अरातिनाशनं अरिष्टनाशनं दुःखमोचनं अलक्ष्मीनाशनं	५७ ६ २ ३ ६ १० १२ ३४ ६
१० दुष्प्वपनाशनं सुखप्राप्तिः मन्युशमनं वृषरोगशमनं	९८ १ ३ ११
११ जलचिकित्सा	२४८
१२ मणिधारणं	१५५
१३ अन्नं	२२४
१४ घाजीकरणं गर्भाधानं गर्भहृणं गर्भरोगनिवारणं गर्भसंत्वावः सुखप्रसूतिः मेधाजननं	१४ १६ ४ २६ २५ ११ १२
१५ धर्मः यज्ञः दर्भः नवशालायां घृतहोमः पितृमेधः यज्ञः यजमानः वेदी यूपः हविर्धाने जलखलमुसले घ्रावाणः अन्नदानं	५ ५ १० २९४ १७ १७ ५ ४ २६ ९

गोष्ठः

अग्निः

१

आयुर्वेद-प्रकरण के २३३५ मन्त्रों यह व्यौरा है । यहां यज्ञ-प्रकरण के अत्यावश्यक मन्त्र ही लिये हैं । यज्ञके विषय में कहा है—

ऋतुसंधिषु वै व्याधिर्जायते ।

ऋतुसंधिषु यज्ञाः क्रियन्ते ॥

( गो. ब्रा. उ. १।१९; कौ. ब्रा. ५।१ )

अर्थात् ऋतु के संधिकाल में व्याधियां उत्पन्न होती हैं, अतः उनके शमन के लिये यज्ञ किये जाते हैं । यह प्रक्रिया वैदिक ग्रन्थों में दीखती है । इस प्रक्रिया के अनुसार यज्ञ-विषयक जितने मन्त्र लेनेकी आवश्यकता थी, उतने ही मन्त्र यहां लिये हैं । यज्ञ-प्रकरण के अन्य मन्त्र और अन्य यज्ञविधि का मन्त्र-संग्रह अन्यत्र किया जायगा ।

दीर्घ आयु की प्राप्तिके मन्त्र यहां सबसे प्रथम दिये हैं । क्योंकि आयुर्वेद की उत्पत्ति इसी इच्छा से ही हुई है । दीर्घ आयु का उपभोग करने की प्रबल इच्छा प्रत्येक मानव में रहती है और यही इच्छा आयुर्वेद की उत्पत्ति और उन्नति करती रहती है ।

दीर्घ आयु की इच्छा का घात करनेवाला यक्ष्म है । यक्ष्म का अर्थ नाना प्रकार के क्षयरोग हैं । मुख्य यक्ष्म का नाम क्षयरोग है, परन्तु सभी रोग क्षय उत्पन्न करते हैं, इसलिये गौण दृष्टि से सभी रोग यक्ष्म ही कहलाते हैं । दीर्घ आयु चाहिये, तो यक्ष्म का दूर करना अत्यावश्यक ही है ।

इसी कार्य के लिये नाना प्रकार की औषधियों की खोज हो गयी । वेद में जो औषधियां मिलती हैं, वे सोम, अपा-मार्ग, अरुंधती, कुष्ठ, पिप्पली, पृश्निपर्णी, रोहिणी, लाक्षा, केशवर्धनी, मधुला, राभायणी, अजशृंगी इत्यादि हैं । इनके अतिरिक्त यज्ञप्रकरण में ऋषभ, तारके, वचः आदि भी औषधियां मिलती हैं । इन औषधियों के वर्णन पाठक इन सूक्तों में देख सकते हैं । ये वर्णन पढ़ने से निश्चयपूर्वक हम कह सकते हैं कि इन औषधियों का अनुभव इस समय हो चुका था ।

औषधिवनस्पतियोंके विषयमें ब्राह्मण ग्रन्थों में निम्न लिखित प्रकार वर्णन मिलते हैं—



## ब्राह्मणग्रंथोभे औषधिवनस्पतियाँ ।

१ ओषं धयेति तत ओषधयः समभवंस्तस्मा-  
दौषधयो नाम । ( श. ब्रा. २।२।४।५ )

२ प्रजापतेर्विस्रस्तस्य यानि लोमानि अशी-  
यन्त, ता इमा ओषधयोऽभवन् ।

( श. ७।४।२।११ )

३ द्वयो वा ओषधयः पुष्पेभ्यो अन्याः फलं  
गृह्णति । मूलेभ्योऽन्या ॥ ( तै. ब्रा. ३।८।१७।४ )

४ उभय्यो ( ओषधयो ) ऽस्मै स्वादिताः पच्य-  
न्तेऽकृष्टपच्यश्च कृष्टपच्यश्च । ( तां. ब्रा. ६।१।९ )

५ ततोऽसुरा उभयीरोषधीर्याश्च मनुष्या उप-  
जीवन्ति, याश्च पशवः...ने ( देवा ) होचुर्ह-  
न्तेदमासां ( ओषधीनां अपजिघांसामेति केनेति  
यज्ञेनैवेति । ( श. २।४।३।२-३ )

६ एतद्धैतासां ( ओषधीनां ) समृद्धं रूपं  
यत्पुष्पवत्यः सुपिप्पलाः । ( श. ब्रा. ६।४।४।१७ )

७ पशूनां ओषधयः, ओषधीनां आपः ।

( जै. उ. १।५।९।१४ )

८ आपो ह वा ओषधीनां रसः । ( श. ३।६।१।७ )

९ अपां ओषधः, ओषधीनां पुष्पाणि, पुष्पाणां  
फलानि ( रसः ) । ( श. १।४।१।४।१ )

१० तस्मादौषधयः केवल्यः खादिता न  
धिन्वन्ति, ओषधय उ हापां रसः ।

( श. ३।६।१।७ )

११ एष ह वै सर्वासामोषधीनां रसो यत्पयः ।

( कौ. ब्रा. २।१ )

१२ तस्माद्दक्षिणतो अग्र ओषधयः पच्यमाना  
आयन्ति, आग्नेय्यो ह्यौषधयः । ( ऐ. ब्रा. १।७ )

१३ अग्नेर्वा एषा तनूः, यदौषधयः ।

( तै. ब्रा. ३।२।५।७ )

१४ यदुग्रो देव ओषधयो वनस्पतयः ।

( कौ. ब्रा. ६।५ )

१५ ओषधयो वै पशुपतिः, तस्माद्यदा पशवं  
ओषधीर्लभन्तेऽथ पतीर्यति । ( श. ६।१।३।१२ )

१६ ओषधयो वै मदः । ओषधीभिर्हीदं सर्वं

मोदते ।

( श. ९।४।१।७ )

१७ ओषधयः खलु वाजः । ( तै. ब्रा. १।३।७।१ )

१८ ओषधयो मधुमतीः । ( तै. ३।२।८।२ )

१९ रसो वा एष ओषधिवनस्पतिषु यन्मधु ।

( श. १।१।५।४।१८ )

२० सौम्या ओषधयः । ( श. ३।२।१।१।२ )

२१ सोम ओषधीनामधिराजः ।

( गो. ब्रा. उ. १।१७ )

२२ सोमो वै राजाँषधीनाम् ।

( कौ. ४।१२; तै. ३।१।१।७।१ )

२३ या ओषधीः सोमराज्ञीः । ( मं. ब्रा. २।८।३, ४ )

२४ औषधो हि सोमो राजो । ( ऐ. ब्रा. ३।४० )

२५ विष्णोरध्योषधीरसृज्यत । ( तै. २।३।२।४ )

२६ ओषधिलोको वै पितरः । ( श. १।३।८।१।२० )

२७ जगत्य ओषधयः । ( श. १।२।२।३ )

२८ सप्त ग्राम्या ओषधयः सप्तारण्याः ।

( तै. १।३।८।१ )

२९ वर्षवृद्धा वा ओषधयः ।

( तै. ३।२।२।५; ३।२।५।१० )

३० ओषधयो वै देवानां पत्न्यः ।

( श. ६।५।४।४ )

३१ तस्मात् शरदं ओषधयोऽभिपिच्यन्ते ।

( तां. ब्रा. २।१।५।३ )

३२ शरदि हि खलु वै भूयिष्ठा ओषधयः  
पच्यन्ते ।

( जै. उ. १।३।५।५ )

३३ मेनान्यं वा एतदौषधीनां यद्यवाः ।

( ऐ. ८।२६ )

३४ साम्राज्यं वा एतदौषधीनां यन्महा-  
वीर्यः ।

( ऐ. ८।१६ )

३५ ओषधीवनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः ।

( तै. ३।१०।८।७ )

३६ वनस्पतयो वै द्रु । ( तै. ब्रा. १।३।९।१ )

३७ भौज्यं वा एतद्वनस्पतीनां ( यदुदुम्बरः ) ।

( ऐ. ब्रा. ७।३२; ८।१६ )

३८ अथो सर्व एते वनस्पतयो यदुदुम्बरः ।

( श. ७।५।१।१५ )

३९ तेजो ह वा एतद्वनस्पतीनां यद्वाह्या शकलः,  
तस्माद्यदा बाह्याशकलमपतक्ष्णुवन्त्यथ शुष्यन्ति ।

( श. ३।७।१।८ )

४० वनस्पतयो हि यक्षिया, न हि मनुष्या  
यजेरन् यद्वनस्पतयो न स्युः । ( श. ३।२।२।९ )

४१ अग्निर्वै वनस्पतिः ( कौ. ब्रा. १।०।६ )

४२ प्राणो वनस्पतिः । ( कौ. १।२।७ )

४३ स ( वनस्पतिः ) उ वै पयोभाजनः ।  
( कौ. १।०।६ )

४३ यद् भेषजं तदमृतम् । ( गो. पू. ३।४ )

४४ शान्तिर्वै भेषजमापः ।  
( कौ. ३।६,७,८,९ । गो. उ. १।२५ )

ये औषधिवनस्पतियोंके सम्बन्ध में ब्राह्मणग्रंथोंके वचन हैं, अब इस आयुर्वेद-प्रकरण में आयुके सम्बन्ध के ब्राह्मण-वचन देखने योग्य हैं, वे ये हैं --

१ वरुण एव आयुः । ( श. ४।१।४।१० )

२ अग्निर्वा आयुः । ( श. ६।७।३।७; ७।२।१।१५ )

३ अग्निर्वा आयुष्मानायुष ईष्टे । ( श. १३।८।४।८ )

४ संवत्सर आयुः । ( श. ४।१।४।१०; ४।२।४।४ )

५ यशो वा आयुः । ( तां. ६।४।४ )

६ असौ लोकः (= युलोकः) आयुः । ( ऐ. ४।१।५ )

७ असावुत्तमः ( लोकः ) आयुः । ( तां. ४।१।७ )

८ अन्नम् वा आयुः । ( श. ९।२।३।१६ )

९ आयुर्वा उद्गाता । आयुः क्षत्तसंगृहीतारः ।  
( तै. ३।८।५।४ )

१० प्राणो वा आयुः । ( ऐ. २।३।८ )

११ यो वै प्राणः स आयुः । ( श. ५।२।४।१० )

१२ आयुर्वा उष्णिक् । ( ऐ. १।५ )

१३ स यो हैवं विद्वान् सायंप्रातराशी भवति,  
सर्वं हैवायुरेति । ( श. २।४।२।६ )

१४ य एवं विद्वान्, स्यात् न मृण्मये भुञ्जीत ।  
तथा हास्य आयुर्न रिष्येत तेजश्च । ( आर्षेय ब्रा. १।१ )

१५ आयुर्वै दीर्घम् । ( तां. १३।१।१।२२ )

आयु के सम्बन्ध में ये वचन ब्राह्मण ग्रंथोंमें हैं । अब औषधियोंके नामनिर्देश से जो वचन ब्राह्मण ग्रंथों में आते हैं, उन्हें देखिये—

## अपामार्ग औषधि ।

१ अपामार्गैरपमृज्यते । ( श. १३।८।४।४ )

२ अपामार्गहोमं जुहोति । अपामार्गैर्वै देवा  
दिशु नाप्रा रक्षांसि अपामृजत, ते व्यजयन्त ।  
( श. ५।२।४।१४ )

३ यदपामार्गं हामो भवति, रक्षसामपहत्यै ।  
( तै. १।७।१।८ )

४ प्राचीनफलो वा अपामार्गः ।  
( श. ५।२।४।२ )

## रोहिणी ।

१ तत ऊर्ध्वाऽरोहत् । सा रोहिण्यभवत् ।  
तद्देहिण्यै रोहिणित्वम् । ( तै. १।१।१।०।६ )

२ ततौ वै ते सर्वानरोहानरोहन् तद्देहिण्यै  
रोहिणित्वम् । ( तै. १।१।२।२ )

इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुछ विषयों के विषय में ब्राह्मण वचन ये हैं । ये आयुर्वेद-प्रकरण की बातें विशेषसी खोलते नहीं हैं । इनका आशय प्रायः स्पष्ट है, अतः इन सब का अर्थ यहां देनेकी आवश्यकता नहीं है । अब आयुर्वेद-प्रकरण में आए अनेक विषयों के सम्बन्ध में थोडासा वर्णन करके परिचय कराना आवश्यक प्रतीत होता है—

## दीर्घ आयुष्य ।

सब से प्रथम ' दीर्घायुष्य ' का प्रकरण है, इसमें करीब १६० मन्त्र हैं । इनमें दीर्घायुष्य की कामना मुख्य विषय है । पहिले ही सूक्त में ' मन्यु ' अर्थात् क्रोध आदि मनो-विकार आयु की क्षीणता करते हैं, उन से बचने की सूचना मुख्य है । द्वितीय सूक्त में बोधप्रतिबोध ( ज्ञान-विज्ञान ), निद्रा और जाग्रति, ये सब मनुष्य को सुरक्षित रखें ऐसा कहा है, वह बडे महत्त्व का विषय है । क्योंकि मनुष्य का ज्ञान ही उम को ऐसे फंदे में फंसाता है कि जो उसकी आयु क्षीण करता है । अतः मानव का ज्ञान तथा न्यवसाय उस की आयु क्षीण न करें । यह सूचना बडी महत्त्वपूर्ण है ।

पञ्चम सूक्त में ' द्वाक्षायण सुवर्ण ' आयुष्य बढ़ाने-वाला है, ऐसा कहा है । इस सुवर्ण की सिद्धता किस तरह करना चाहिये, यह एक बडा महत्त्वपूर्ण खोज का विषय है । आर्य वैद्यक में सुवर्ण विषम है और हृदय का बल बढ़ाता

है ऐसा कहा है। इस से सुवर्ण दीर्घायु देनेवाला है, ऐसा हम अनुमान कर सकते हैं। निःसंदेह दीर्घायु देनेवाले धातुओं में सुवर्ण की प्रमुखता से गणना हो सकती है।

सप्तम सूक्त में जंगिडमणि के धारण से दीर्घायु की प्राप्ति होने का वर्णन है। यह अरण्य से लाया और कृषिके रसों से बना मणि है ( मं. ५ )। इस का विचार करके इस का प्रयोग सिद्ध करना चाहिये।

अष्टम सूक्त में हवन से दीर्घ जीवन का विषय पाठक देख सकते हैं। हवन से राजयक्ष्मा, ज्वर तथा अन्यान्य रोग दूर हो जाते हैं। घृतके हवन से वायुकी शुद्धता होती और वहां के रोगबीज दूर होते हैं। नाना प्रकार की ओषधियों के हवन करने से उन के सूक्ष्म अणु नासिका मुख आदि स्थान से शरीर में जाते, और वहां बड़ा प्रभाव करते तथा मानव की नीरोगता सिद्ध करते हैं। हवन से जैसे रोग दूर होते हैं वैसे बुरे पदार्थों के हवन से रोग उत्पन्न भी होते हैं। चरक ग्रन्थ में अतिसार-चिकित्सा में कहा है कि गौका मेध करने की प्रथा पृषध्र राजाने अपनी इच्छा से शुरू की, पहिले नहीं थी। उस यज्ञ से ' अतिसार ' की उत्पत्ति हुई। वह अतिसार रोग अब तक जनता को सता रहा है। पृषध्रराजा के पूर्व गोमेध नहीं था, अतः अतिसार भी नहीं था। यह उस कथा का तात्पर्य है। बुरे यज्ञों का यह कुप्रभाव है। शत्रु के राज्यों में ऐसे कुयज्ञ करके नाना प्रकार के रोगों का फैलाव शत्रु देशों में करने के भी विधान कई ग्रन्थों में हैं। ये बुरे यज्ञ हैं। इसी तरह अच्छे यज्ञ करने से जनता को आरोग्य प्राप्त होकर उनकी दीर्घायुता भी सिद्ध हो सकती है। यह बड़ा शास्त्र है और खोज करने योग्य यह विषय है।

नवम सूक्त में ' दशवृक्ष ' का वर्णन है। ये दशवृक्ष नाम से दस वनस्पतियां हैं; जो दीर्घकालीन रोग को दूर करती हैं और मानव को दीर्घजीवी बना देती हैं।

तेरहवें सूक्त में अंगस्थ ज्वरों का वर्णन है। इस सूक्त में विशेषतः रोगी मनुष्य के मनको विश्वास दिलाकर आरोग्य-प्राप्ति में सहायता करने का विधान है। ' हे रोगी मानव ! ज्ञान विज्ञान तथा निद्रा और जाग्रति ये सब तेरे प्राणों की रक्षा कर रहे हैं। यह अग्नि ( यहां हवन कुण्ड में ) जल रहा है, यह सूर्य उदय को प्राप्त हो रहा है। ये तेरी रक्षा

करें, इनकी सहायता से तू गंभीर मृत्यु से अब ऊपर उठा है, ( अब तेरी मृत्यु नहीं होगी; ) ( मन्त्र १०-११ ) ' इस तरह रोगी को विश्वास दिलाया जाता है। इस मन्त्रपर दृढ विश्वास रखनेवाला रोगी इस से लाभ उठा सकता है।

पंद्रहवें सूक्त में ' सौ वर्षों से भी अधिक जौघन ' की इच्छा धारण करने की सूचना है। इस पृथ्वीपर मनुष्य सौ वर्षों से भी अधिक जीवित रहे, यह वैदिक विचारधारा थी। आगे पच्चीसवें सूक्त तक सूक्तों में दीर्घायुप्राप्ति के प्रार्थना समेत अनेक उपयोगी निर्देश हैं। विशेषकर चौबीसवें सूक्त में उत्तम अवयवों की धारण और पच्चीसवें सूक्त में उत्तम स्वच्छ दांतों का होना दीर्घायु के लिये अत्यंत आवश्यक है ऐसा जो कहा है, वह विशेष रीतिले द्रष्टव्य है। दांत बिगडनेसे शरीर का स्वास्थ्य बिगडता है और उसके बिगडनेसे आयुष्य का नाश होता है। इस तरह इन सूक्तों में जो उपेयुक्त निर्देश हैं, उन का विचार पाठकों को करना चाहिये।

### यक्ष्म-नाशन ।

यक्ष्म-नाशन इस आयुर्वेद-प्रकरण का दूसरा विभाग है। इस में करीब करीब डेढ़ सौ मन्त्र हैं। छब्बीसवें सूक्तसे इस प्रकरण का प्रारंभ होता है। छब्बीसवें सूक्त में शरीर के नाना अवयवों का उल्लेख करके प्रत्येक अवयव से यक्ष्मरोग दूर करने का विषय है। मानस-चिकित्सा का यह सूक्त दीखता है। चिकित्सक रोगी को विश्वास दिलाता है कि, इस प्रयोग से तेरा यक्ष्मरोग निःसन्देह दूर होगा और तू निर्दोष होगा। इस सूक्त से यह बात सिद्धसी दीखती है कि यक्ष्मरोग शरीरके प्रत्येक अवयवमें हो सकता है और उसको वहां से हटाना चाहिये। इस सूक्त का ' अङ्गादङ्गा-ह्योम्नो लोम्नो० ' यह मन्त्र अंतिम है, वह मन्त्र प्राचीन काल से मृत्तिकास्नान के समय बोलने की परिपाठी महाराष्ट्र में तथा दक्षिण भारत में श्रावणी पर्व के समय है। अच्छी स्वच्छ मिट्टी जिस में खाद आदि कुछ भी मिला नहीं, ऐसी शुद्ध मृत्तिका जल में मिलाकर शरीरपर लगायी जाती है और शरीरपर लेप देकर कुछ देरके बाद स्वच्छ जल से स्नान किया जाता है। इस मिट्टी में खाद मूत अथवा कंकर आदि कुछ भी नहीं रहना चाहिये। यह मिट्टी स्वच्छ शुद्ध मलरहित मक्खन जैसी मृदु रहनी चाहिये। खादवाली मिट्टी हानिकारक होती है। खेत की मिट्टी लेनी

हो तो, एक हाथ के] नीचे की लेनी उचित है। अन्यथा जहां खेती नहीं होती, वहां से शुद्ध मिट्टी ली जाय तो वह इस प्रयोग के लिये अच्छी है। मिट्टी के प्रयोग से नाना रोगबीज शरीरसे दूर हो जाते हैं। अन्तिम मन्त्रका उपयोग मिट्टी शरीरपर मलने के लिये करते हैं। इस से हम अनुमान कर रहे हैं कि यह सब सूक्त मृत्तिका से यक्ष्म-दोष हटाने के लिये होना संभव है। पाठक इस का अधिक विचार करें।

आगे का सताईसवां सूक्त भी इसी दृष्टि से विचार करने योग्य है। इस सूक्त का अन्तिम ग्यारहवां मन्त्र पर्जन्य की वृष्टि से प्राप्त जल का उपयोग करके अ-मृत अर्थात् नीरोग बनने के कार्य के लिये स्पष्ट है। सब पाप, सब यक्ष्म और सब प्रकार के मरणकारक रोग-बीज वृष्टिजल के प्रयोग से दूर होते हैं। पर्जन्य के पहिले नक्षत्रों की वृष्टि होनेके पश्चात्, उस वृष्टि से वायु पवित्र होनेके पश्चात् की वृष्टि का जल लेना उचित है। प्रायः हस्त, चित्रा, स्वाती नक्षत्रों की वृष्टि का जल लेकर घड़े भरकर घरमें अच्छी तरह बंद करके रख देनेसे, यह वृष्टि-जल सालभर इस प्रयोग के लिये मिलता रहता है। ख्याल इस बात का रखना चाहिये कि प्रथम वृष्टि होकर शुद्ध वायु में जो वृष्टि होगी, उसी का जल लेना चाहिये। नहीं तो वायु के दोष जल में आवेंगे और वैसे जल का परिणाम ठीक नहीं निकलेगा। यह जल पीनेसे भी अंदर की शुद्धता होती है। उपवास या लंघन में यह वृष्टि-जल पीनेसे बहुत ही लाभ होते हैं। वृष्टि का जल घडों में भर कर रख देना और सालभर पीनेके लिये बर्तना, इससे लाभ होगा, परन्तु अच्छी युक्ति से जल लेना चाहिये।

अठाईसवें सूक्त में तक्मा नामक ज्वर का उल्लेख है। जिस ज्वर में बड़ी रूक्षता होती है, वह तक्मा ज्वर है। इस ज्वर से कामिला (हरिमा) होती है, पण्डुरोग का यह एक प्रकार है। इस रोग के निवारण के लिये कई औषधियाँ हो सकती हैं। रक्त की क्षीणता करनेवाला यह ज्वर है। यह ज्वर (अ-मृत) नियमरहित व्यवहार करनेवाले को अधिक कष्ट देता है। पाठक इस सूचना का विचार अवश्य करें।

उनत्तीसवें सूक्त में 'वृत्र' नाम आता है। पसीना न छोड़नेवाला यह ज्वर है। जिसमें ज्वर आता है, पर पसीना

नहीं आता, इस तरह के ज्वर को दूर करने के लिये अग्नि का ही प्रयोग कहा है। (वृत्रः आपः तस्तंब) वृत्र जल-प्रवाह को रोकता है, वैसे यह ज्वर पसीने को रोकता है, इस कारण रोगी ज्वरमुक्त नहीं होता। इस यक्ष्म को दूर करने के लिये (वैश्वानरेण अग्निना वारये) वैश्वानर अग्नि का प्रयोग कहा है। इस प्रयोग का पता हमें, अभी तक लगा नहीं, परन्तु भांप से शरीर को सेक देकर पसीना निकालने का यह प्रयोग होगा। द्वितीय मन्त्र में (वाचा यक्ष्मं वारयामहे) मन्त्र-प्रयोग से रोग दूर करने का भी विधान है।

आगे के तीसवें सूक्तमें रक्तयुक्त कफमिश्रित खांसी अर्थात् कफक्षय-नामक रोगों का उल्लेख है। इसमें (पिशितं) रक्त-दोष, (हृदयामय) हृदय का रोग इसी तरह अन्यान्य रोगों का उल्लेख है। (वेदाहं तस्य भेषजं) उन रोगों की दवा मैं जानता हूँ, ऐसा भी यहां कहा है। मन्त्रों का विचार करके विशेष खोजपूर्वक इस सूक्त के प्रत्येक पद का विचार करना उचित है। तब रोगनिवृत्ति के उपाय का पता लगना संभव है।

इक्तीसवें सूक्त में हवन-चिकित्सा दीखती है। बत्तीमंत्र सूक्त में हरिण के सिर में उगनेवाले सींगसे रोगविशेष की चिकित्सा लिखी है। आजकल सिर की गर्मां हटानेके लिये सिर पर हरिण के सींग को पत्थर पर घिसकर उससे उत्पन्न विलेपन का लेप करते हैं। इससे सिर की गर्मां हटती है, मस्तक शान्त होता है। चतुर्थ मन्त्र में 'तारके' नामकी दो औषधियाँ कहीं हैं।

'तारके' नामक दो औषधियाँ इकट्टी सेवन की जाती हैं। इस के नंतर जल को सब रोग निवारण करनेवाला बताया है। क्षेत्रिय रोग अर्थात् वंशपरंपरासे प्राप्त रोग और इसी शरीर में उत्पन्न ऐसे दोनों प्रकार के रोगों को हटाने के लिये जल उपयोगी है। इस तरह जल-चिकित्सा का वर्णन यहां है। अगले (३३ वें) सूक्त में भी जल का वर्णन बड़े प्रभावी शब्दों से किया है।

तैंतीसवें सूक्त में अष्टायोग और षड्योग से उत्पन्न ज्वर का उपयोग लिखा है। अष्टायोग और षड्योग का आज समझा जानेवाला अर्थ आठ बैल जोतने योग्य और छः बैल जोतने योग्य हल से उत्पन्न ज्वर। परन्तु यदि वैद्यकीय

परिभाषा ली जाय, तो आठ अथवा छः वनस्पतियों के योग से सिद्ध किया औषध। इस विषय में निश्चय वेदों को विचारपूर्वक करना चाहिये।

चात्सीसवें सूक्त में सुगंधवाली गुल्गुल औषधिका वर्णन है। अरुंधति, गुल्गुल आदि औषधियों के प्रयोगसे चिकित्सा होती है। अरिष्टताति अर्थात् नीरोगता की वृद्धि करने के ये उपाय इस सूक्तमें हैं।

पैनीसवें सूक्त में हवन-चिकित्सा से यक्ष्म, राजयक्ष्म, पुराना रोग आदि सब दूर होते हैं, ऐसा कहा है। मृत्युके पाश से मुक्त करके रोगी को शतायुषी करता हूँ, ऐसा निश्चयपूर्वक यहाँ कहा है। हवन-चिकित्साका विचार करने के समय यह सूक्त अधिक विचार करने योग्य है। पुनः नवीन शरीर देने का अर्थात् मृत्यु से पुनरुत्थान होने का यहाँ का वर्णन देखने योग्य है।

छत्तीसवें सूक्त में शरीर के प्रत्येक अंगसे रोग को दूर करने का उल्लेख है। छत्तीसवें सूक्तके साथ इस छत्तीसवें सूक्त का विचार करना योग्य है। ये दोनों सूक्त कुछ पाठ-भेद के साथ एक जैसे ही हैं। एक ऋग्वेद का है, दूसरा अथर्ववेद का है। अथर्ववेद के सूक्त में एक मन्त्र अधिक है और पदोंके क्रम में पर्याप्त भिन्नता है। अतः पाठक इन दो सूक्तों का विचार इकट्ठा करें। आगे उनचालीसवाँ सूक्त भी यहाँ से पुनरुक्त हुआ है। केवल ऋषि की और देवताकी भिन्नता है। इस सूक्त की चन्द्रमा देवता सर्वानुक्रमणीकार देते हैं। मन्त्रों से वह देवता हमें प्रतीत नहीं होती। तथापि भिन्न देवता और भिन्न ऋषि होने से ही केवल यह सूक्त यहाँ पुनः लिया है। हमारे विचार से इस का देवता केवल यक्ष्मनाशन ही है। चन्द्रमा का कोई सम्बन्ध हमें यहाँ प्रतीत नहीं होता। परन्तु अथर्ववेद की बृहत्सर्वानुक्रमणी में जहाँ तहाँ 'चन्द्रमा' देवता लिखी मिलती है। कदाचित् कोई अपूर्वता उम्र में हो, ऐसी कल्पना करके यहाँ देवता-भेद के कारण यह सूक्त पुनः लिया है। वास्तव में इसके यहाँ पुनः लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। विद्वान् पाठक इस का विचार करें।

पैंतीस और अठतीस ये दो सूक्त नाना प्रकार के शरीर-स्थ रोग दूर करने के दिये हैं। मृत्यु से पुनर्जीवन प्राप्त होनेतक वर्णन यहाँ पाठक देख सकते हैं। अठतीसवें सूक्त

में सिरकी पीडा का विशेष वर्णन देखने योग्य है।

इस तरह यह यक्ष्मनाशन विभाग यहाँ समाप्त होता है। शरीरसे यक्ष्म दूर होने से दीर्घ जीवन मिलता है, यह इस प्रकरण का पूर्व प्रकरण से सम्बन्ध है। अब रोग दूर करने के लिये औषधियों का उपयोग करने के विषय में तीसरा विभाग है, उसे अब देखिये—

### औषधि वनस्पतियाँ

चालीसवें सूक्तसे करीब दो सौ मन्त्र औषधिवनस्पतियों के हैं। चालीसवाँ और इक्क्यालीसवाँ दोनों सूक्त सामान्यतः सर्वसाधारण औषधियों का वर्णन करने के लिये हैं। पहिला सूक्त ऋग्वेद का है और दूसरा अथर्ववेद का है। जिनके पास औषधियाँ सिद्ध रहती हैं उसको भिषक् कहते हैं (मं. ६), वह वैद्य रोजबीजरूप राक्षसों का नाश करता है और आमसे उत्पन्न सब रोगोंको दूर करता है। इस मंत्र में 'रक्षः' पद रोगक्रिमियों का वाचक है। रक्षः, राक्षस ये पद रोगजन्तुओं के लिये वेद में आते हैं। मन्त्र २२ में औषधियों की प्रतिज्ञा लिखी है, वह यह है कि जिस रोगी को औषधियाँ दी जाती हैं, वह रोगमुक्त हो जाता है, निःसन्देह आरोग्य प्राप्त करता है।

इकतालीसवें सूक्त में अंशुमती, जीवला, काण्डिनी आदि-कोंका उल्लेख है। गौओं के तथा मनुष्यों के रोग औषधियों से दूर होते हैं, ऐसा भी १५ वें मन्त्र में कहा है। पशु-चिकित्सा का इस तरह यहाँ मूल है। यमके पाश से रोगी को मुक्त करने की प्रतिज्ञा औषधियाँ करती हैं, यह विषय इस सूक्त के अन्त में पाठक देख सकते हैं।

छियालीसवें सूक्त में अन्न का विषय है। अन्नसे बल और बलवीर्य से वीर संतान उत्पन्न होनेका विषय इस सूक्त में देखनेयोग्य है। आगे सूक्त ५५ तक वनस्पतियों का ही सर्व सामान्य वर्णन है। किसी विशेष वनस्पति का वर्णन नहीं है, तथापि सर्वसाधारणतः वनस्पतियों के प्रभाव का वर्णन यहाँ है।

छप्पन्नवें सूक्तसे उनसाठ सूक्त तकके चार सूक्तोंमें अपामार्ग वनस्पति का वर्णन है। इस को औषधियों में मुख्य कहा है। हजारहों दवाइयाँ इस से बनती हैं। अनेक रोगोंपर उन का उपयोग होता है। क्षुधा की न्यूनता, तृष्णाके कष्ट,

पुत्र न होना इन सब दौषोंपर इस औषधि का प्रयोग किया जाता है। कृत्या नामक मारक पयोग के हटाने के लिये, गौके रोग दूर करने के लिये, इस औषधिका उपयोग होता है।

आगे के सूक्तों में अरुन्धती, पि-पली, पृथ्वीपर्णा, रोहिणी, लक्षा, कुष्ट, कुष्टनाशनी, यक्ष्मनाशिनी, केशवर्धनी, नितन्नी, अक्षिरोगनाशनी, शमी, सोम, मधु इन वनस्पतियों का क्रमशः वर्णन है। यहां यह औषधि-प्रकरण समाप्त होता है। दश वृक्ष, तारके आदि अनेक औषधियोंके प्रयोग छोड़ दिये जायँ, तो शेष सब प्रयोग एक एक औषधिके ही हैं। इसके पश्चात् रोग-चिकित्सा-विभाग शुरू होता है—

### रोगोंकी चिकित्सा

नाना प्रकार के रोगों का नाम लेकर उनकी चिकित्सा कई सूक्तों में कही है। ये सूक्त इस विभाग में संग्रहित हुए हैं, करीब करीब २१० मन्त्र इस विभागमें संग्रहित हुए हैं।

सत्तरवाँ सूक्त इस प्रकरण का प्रथम सूक्त है। कफ, बलगम, कास श्वास का यहां प्रथम स्थान है। उनासीवें सूक्त में हृद्दोग, हृदय का रोग और कामिलाका विचार हुआ है। आनुवंशिक क्षेत्रिय रोग को दूर करने का विचार अस्मीवें सूक्त में हुआ है। आगे एकाम्बीवें सूक्तसे क्रमपूर्वक क्षेत्रिय रोग, क्लीबन्ध, गण्डमाला, श्वेतकुष्ठ, ज्वर, रुधिरस्त्राव, स्त्राव, मूत्र-प्रतिबन्ध आदि रोगों की चिकित्सा ९६ सूक्त तक है। बीच में ८४ वे सूक्त में रोहिणी, रामायणी आदि औषधियों का भी वर्णन है।

इसके नंतर १०२ सूक्त तक 'अंजन' का विषय है। नेत्र का सुधार, दृष्टिके दोष को दूर करना आदि अंजन का विषय सुप्रसिद्ध है। साथ साथ अंजन के अन्यान्य गुण भी इन सूक्तों में देखने योग्य हैं।

सूक्त १०३ में निद्रानाश को दूर करके उत्तम निद्रा-प्राप्ति होने के लिये मन्त्रयोग है। १०४ सूक्त में शरीर से बाण को निकालने का विषय है, आगे ७ सूक्तोंमें दुष्ट स्वप्न न होनेके लिये मन्त्रयोग लिखा है। ११३ वें सूक्त में क्रोध का शमन करने का विषय है। क्रोध का शमन भी आरोग्य-दायी है।

११४ वें सूक्त में बैल के रोग का शमन है। आगे के सूक्त में मधुला वनस्पति का वर्णन है। ११९ वें सूक्त में

सौभाग्यवर्धन का विषय है। १२० वें सूक्त में ईर्ष्याविनाशन और १२२ वें सूक्त में उन्मत्तता-निवारण है। इस तरह यह विभाग इस सूक्त के साथ समाप्त होता है।

### रोगक्रिमी का नाश

इस विभाग में रोग उत्पन्न करनेवाले क्रिमियों का नाश करने के विषय का विवेचन है। इस विवेचनके लिये श्रीम ८० मन्त्र हैं। रक्षः, राक्षस, यातुधान, पिशाच, अप्सरस, अप्सरस, आदि अनेक नाम रोगक्रिमियोंके यहां दिये हैं। प्रत्येक नाम का अर्थ रोगक्रिमि का विशेष लक्षण ज्ञात है। अतः यह विषय बड़ा महत्वपूर्ण है।

ये रोग के कृमी (अ-दृष्ट) न दीखनेवाले होते हैं और कई दीखनेवाले (दृष्ट) भी होते हैं, इन का नाश दूर करना चाहिये। ये रोग आँतों में, भ्रिमें, पेटमें, पीठ की रीढ़में, हड्डीमें होते हैं। ये कीड़े पर्वतों, पर्वतों, औषधियों, पशुओं, तथा हमारे शरीरों में भी होते हैं। इन सब को दूर करना चाहिये और आरोग्य ही प्राप्त करनी चाहिये (सूक्त १२३)।

ये कृमी आंखों, नाकों, दांतों में रहकर कष्ट देते हैं, अतः इनका नाश करना आवश्यक है। ये कृमी नाना प्रकार के रंगरूप और आकारोंके होते हैं। सूर्य के प्रकाश से इनका नाश होता है (सूक्त १२४)।

ये कृमि सूर्य-किरण से नष्ट होते हैं। अन्धकारों से उनकी वृद्धि होती है, इसलिये सूर्य उदय से कृमियों का नाश होता है (सू० १२५)।

अजशृंगी औषधि इन राक्षसों अर्थात् रोगकृमियों का नाश करती है। राक्षस, पिशाच, गन्धर्व, अप्सरस इन सब कृमियों का नाश इस वनस्पति से होता है। अश्वत्थ, न्यग्रोध (वट) ये वृक्ष भी इन रोगकृमियों का नाश करते हैं। जिन से क्षीणता होती है, वे रक्षस हैं, जो मूल खाते उनको पिशाच कहा है, जो जल के आश्रय से रहते हैं उनको अप्सरस कहते हैं, तथा जो मिट्टी में बचते हैं, वे गन्धर्व हैं। ये सब मनुष्य के आरोग्य को दूर करते हैं, इसलिये इनका नाश करना चाहिये (सू० १२६)।

अग्नि भी इन कृमियों का नाश करता है, अग्निमें पिघलनेवाले द्रव्यों का हवन करने से और अधिक लाभ होता है। वृत्त के हवन से सब रोगबीज नष्ट हो जाते हैं। अग्नि में नाना

ओषधियां, घृत आदि के हवन से, सूर्य प्रकाश से, केवल अभि से भी ये रोग-कृमि नष्ट होते हैं ।

### विष को दूर करना

आगे करीब करीब ८० मन्त्र विषनाशन के हैं । १३६ वां सूक्त सर्पविष दूर करने के लिये है । मन्त्र के जाप से विष दूर होता है, ऐसा इस का वर्णन है, परन्तु इस के लिये जाप करके सिद्धि प्राप्त करना चाहिये । इक्कीस मोरनियाँ सर्पका विष दूर करती हैं, ऐसा यहां ( मं० १४ में ) कहा है । इस विषय में महाराष्ट्र में अनुभव यह है कि नाग सर्प का जहां दंश होता है, उस स्थान पर जीवित मुर्गी को पकड़कर उस का गुद्द्वार लगाया जाता है । मुर्गी विष खींचती है और मर जाती है । इस तरह लगातार एक के पीछे दूसरी ऐसी लगाते जाना चाहिये । विष के प्रमाण के अनुसार मुर्गियां मरती हैं । जब मुर्गी की गुदां वहां लगातेपर मुर्गी न मरेगी, तो समझना चाहिये कि वहां विष रहा नहीं है और रोगी ठीक नीरोग हुआ है । इस मन्त्र में २१ मोरनियां विष दूर करती हैं, ऐसा कहा है । सम्भव है मुर्गियां न्यून वा अधिक लगतीं हों । यह प्रयोग करके देखना चाहिये । महाराष्ट्र में सर्वत्र यह कहते हैं कि मुर्गी के योग से विष हटता है । बिच्छू के विष के विषयमें इसी सूक्त में कुछ कहा है ( सू० १३६ ) । सर्प के विषयमें निम्नलिखित मन्त्र बड़ा देखने योग्य है—

यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्पिह पुनः ।

( अथर्व. ६।१३९।५ )

‘ नेवला सांपको काटता है और फिर से उसको जोड़ता है । ’ यह अथर्ववेदका मन्त्र है । क्या यह सत्य हो सकता है ? महाराष्ट्र के पिण्ड पिण्ड में यह विश्वास है, परन्तु इसपर हमारा विश्वास नहीं बैठता । निःसन्देह यह खोजका विषय है । नेवला सांप को पकड़ता और काटता है, परन्तु फिर जोड़ देता है, यह मानना कठिन है ।

### जलचिकित्सा

इसके पश्चात् करीब अठारह सौ मन्त्र जलका वर्णन करने वाले हैं । इन में कुछ जल-चिकित्सा के भी हैं । जल में अनेक औषधिगुण हैं । जलप्रयोग से बहुत से रोग दूर हो जाते हैं । जलप्रयोगसे रोग-बीज शरीरसे बह जाते हैं ।

जल वृष्टि से मिलता है, कृवा खोदकर जल प्राप्त होता है, स्वयं निर्झर से जल मिलता है, नदीका भी जल प्रसिद्ध है, जल सुख देनेवाला और दोष दूर करनेवाला है ।

आवर्तन, निवर्तन, न्यथन, परायण, अभिषिचन, प्रसिचन, उपासिचन आदि जल के प्रयोग हैं, जिन से जल-चिकित्सा होती है ।

हिमालयपर्वत से जो जल आता है, वह बर्फ का जल होनेसे वह बड़ा ही शुद्ध रहता है । गंगानदी का जल इसी कारण अतिपवित्र है । इसी तरह हिमालय से चलनेवाली सब नदियों का जल उत्तम है ।

सूर्य के किरणों से जल की भांप बनकर वह ऊपर जाती है । उसके मेघ बनते हैं । मेघों से वृष्टि होती है । वृष्टिका जल दिव्य जल कहा जाता है । सचमुच यह दिव्य आरोग्य देनेवाला जल है । इस कारण पञ्जय को पिता कहते हैं, क्योंकि वही सब प्राणी और वृक्षवनस्पतियों का पालन करता है ।

सब नदियां वृष्टि से ही भरती और चलती हैं । वृष्टि न हुई तो नदी चलेगी नहीं । केवल हिमालय से चलनेवाली नदियां गर्मी से बर्फ पिघल कर चलती हैं । इसलिये इन नदियों को महापूर गर्मी के दिनों में आता है ।

### अन्न

इसके आगे करीब सवाढ़ो सौ मन्त्र अन्न के वर्णन के लिये हैं । अन्न सब विश्वरूप में हमारे सम्मुख है । सभी अन्न है और सभी अन्न खानेवाले हैं । ओदन सूक्त ( २०७-२१४ तक ) पाठक देख सकते हैं । अन्न का महत्त्व जितना इन सूक्तोंमें बताया है, उतना सबका सब मननके योग्य है ।

### वाजीकरण तथा गर्भाधान ।

आगे ये विषय हैं- गर्भधारणा होने के पश्चात् ‘ गर्भदोष-निवारण ’ सूक्त २२३ में है । ‘ गर्भस्त्राव ’ का उपाय सू० २२३ में पाठक देख सकते हैं । ‘ सुख-प्रसूति ’ का विषय सू० २२६ में है । आगे के ४ सूक्तों में ‘ मेधाजनन ’ का महत्त्वपूर्ण विषय है, जो बालक के हित होने के लिये अत्यंत आवश्यक है ।

### मणिधारण

आगे दस सूक्तों में ‘ मणिधारण ’ का विषय है । प्रतिसर,

घरण, काल, दर्भ, औदुम्बर, जंगिड, शतवार, अस्तृत ये मणि यहां वर्णन किये हैं। जैसे ताबीज बांधते हैं, वैसे ही ये मणि हैं। इनके वर्णन में अन्यान्य विषय भी बड़े मनोरंजक हैं। किस को किसने यह मणि बांधा था, यह भी यहां इन सूक्तों में बताया है। किसी किसी मणि में सेंकड़ों सामर्थ्य हैं, ऐसा भी वर्णन है। ये मणि कैसे बनाये और धारण किये जाते हैं, यह बड़ी खोज का विषय है। इस कार्य के लिये अथर्ववेदके वेदाङ्ग ग्रन्थों का तथा तदंगभूत विविध ग्रन्थों की खोज करनी चाहिये। भाष्य में जो इस समय लिखा मिलता है, उस से हमारे हाथ में कुछ भी विशेष बात नहीं पडती।

इसके पश्चात् अरिष्टनिवारण, पापनाशन, कृत्याद्रीकरण, यज्ञादि विषय के मन्त्र हैं। इससे इस प्रकरण की समाप्ति होती है। इस आयुर्वेद-प्रकरण के कुल मन्त्र २३४५ हैं। करीब करीब सवा दो हजार हैं। आयुर्वेद का यह वैदिक

मूल है। इस मूलका विस्तार आयुर्वेद है, जो चरक सुश्रुत के रूप में आज हमें उपलब्ध है।

इस सवा दो हजार के मन्त्रसंग्रह में आयुर्वेद के अनेक विषय हैं। इस का विचार करते समय पद पद का सूक्ष्म और खोजपूर्ण विचार करना चाहिये और आयुर्वेदके ग्रन्थों के साथ इन वेदमन्त्रों का मिलान करना चाहिये। तब जाकर इस विषय का समझने योग्य विवरण हो सकता है।

इस भूमिका में इस आयुर्वेद-प्रकरण के साथ पाठकों का केवल परिचय ही कराना था। वह इतने लेख से किया है। आशा है कि पाठक आयुर्वेद के इस मूल का कहां कैसा विस्तार हो गया है, इसका विचार करेंगे और लाभ उठावेंगे।

औध ( जि. सातारा )

१ पौष

संवत् २०००

निवेदनकर्ता

श्री. दा. सातवलेकर

अध्यक्ष, स्वाध्याय-मण्डल





# आयुर्वेद-प्रकरण की विषयसूची

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
दीर्घायुष्यं	१-२४	१-१५८	१-१३	यक्षमनाशनं	८०	४९३-४९७	॥
सुमंगलौ दन्तौ	२५	१५९-१६१	१३	क्षेत्रिय	॥	॥ ॥	॥
यक्षमनाशनं	२६-३९	१६२-३००	१३-२३	कृत्वात्व	८१	४९८-५०२	॥
ओषधि-				गण्डमालाचिकित्सा	८२-८३	५०३-१२	७३-८३
वनस्पतयः	४०-७६	३०१-४०२	२३-३६	रोहिणी	८४	५१३-१६	३८
ओषधयः	४०-४५	३०१-३५८	२३-२७	रामायणी	॥	॥ ॥	॥
अन्नं	४६	३५८-३६१	२७	आसिक्निः	८५	५१७-२०	३८-३९
वातसिन्धो-				श्वेतकुष्ठनाशनं	८५-८६	५१७-२४	॥ ॥
पथयः	४७	३६२	॥	आसुरी	८६	५२१-२४	३९
सूर्यभरीचयः	४८	३६३	॥	ज्वरनाशनं	८७-८८	५२५-३१	॥
वनस्पतिः	४९-५५	३६४-३८९	२७-२९	यक्षमनाशनोऽसिः	८७	५२५-२८	॥
अपामार्गः	५६-५९	३८०-४०६	२९-३०	तक्मनाशनं	८९	५३१-४४	३९-४०
अरुंधती	६०	४०७-४०९	३१	रोगघ्नं	९०	५४५-४७	४०
कुष्ठः	६१	४१०-४१२	॥	रोगनिवारणं	९१	५४८-५४	४१
पिप्पली	६२	४१३-४१५	॥	धमनीबन्धनं	९२	५५५-५८	॥
पृथिवी	६३	४१६-४२०	॥	रोगनाशनं	९३	५५९-६१	॥
रोहिणी	६४	४२१-४२७	३१-३२	सूर्यगौभेषजं	९४	५६२-६४	४२
लाक्षा	६५	४२८-४३६	३२	आस्त्रावभेषजं	९५	५६५-७०	॥
कुष्ठः	६६-६७	४३७-४५६	३३-३४	मूत्रमोचनं	९६	५७१-७९	४२-४३
केशवर्धिनी	६८	४५७-४५९	३४	त्रैकाकुट्टमाशनं	९७	५८०-८२	४३
नितगनी	६९	४६०-४६२	॥	अन्नं	९८-१०२	५९०-६१२	४४-४५
केशदंष्ट्रं	॥	॥ ॥	॥	स्वापनं	१०३	६१३-१९	४५
केशवर्धनं	७०	४६३-४६५	३५	इण्डुनिकात्मनं	१०४	६२०-२२	४६
अक्षिरोगभेषज्यं	७१	४६६-४६९	॥	दुग्धपननाशनं	१०५-१११	६२३-३७	४६-४७
शमी	७२	४७०-४७२	॥	सुखं	११२	६३८	४७
वनस्पतिसूर्यगावः	७३	४७३	॥	मन्युशमनं	११३	६३९-४१	॥
सोमः	७४-७५	४७४-७७	३५-३६	वृषरोगशमनं	११४	६४२-५२	४८
मधुवनस्पतिः	७६	४७८-८२	३६	मधुला	११५	६५३-६३	॥
रोगाचिकित्सा	७७-१२२	४८३-६९०	३६-५०	शरः	११६	६६४-६७	४८-४९
बलासनाशनं	७७	४८३-४८५	॥	शापमोचनं	११७	६६८-७२	४९
कासा	७८	४८६-४८८	॥	अलक्ष्मीनाशनं	११८	६७३-७६	॥
हृद्रोगकामिला-				सौभाग्यवर्धनं	११९	६७७-८१	४९-५०
नाशनं	७९	४८९-४९२	३७	ईर्ष्याविनाशनं	१२०	६८२-८४	५०

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
ईर्ष्याऽपनयनं	१२१	६८५-८६	५०	स्वर्गादिनः	२१४	१२७२-१३३१	९७-१०१
उन्मत्ततामोचनं	१२२	६८७-९०	,,	वाजीकरणं	२१५-१७	१३३२-४५	१०१-२
क्रिमिनाशनं	१२३-३५	६९१-७७३	५०-५६	गर्भाधानं	२१८-३९	१३४६-१४२९	१०२-८
क्रिमिजम्भनं	१२३	६९१-९५	५०-५१	योनिगर्भः	२१८	१३४६-५८	१०२-१०३
क्रिमिघ्नं	१२४-१२५	६९५-७१४	५१-५२	गर्भाधानं	२१९	१३५९-६०	१०३
अजशृंगी	१२६	७१५-२६	५२-५३	गर्भहृंहणं	२२०	१३६१-१३६५	,,
यातुधानानाशनं	१२७-२८	७२७-३३	५३	आत्मा	२२१	१३६६	,,
रक्षोघ्नं	१२५-३१	७३४-५३	५३-५५	गर्भदोषनिवारणं	२२२	१३६७-१३९२	१०४-१०५
पिशाचक्षयणं	१३२	७५४-६२	५५	,, संस्त्रावः	२२३	१३९३-१३९८	१०५-१०६
असुर ,,	१३३-३४	७६३-६६	५६	,, स्त्राविणो	२२४	१३९९-१४०२	१०६
यातुधाननाशनं	१३५	७६७-७३	,,	,, धारणं	२२५	१४०३	,,
विषनाशनं	१३६-४५	७७४-८५९	५७-६२	सुखप्रसूतिः	२२६	१४०५-१४१०	१०६-१०७
विषघ्नं	१३६-३७	७७४-९७	५७-५८	मेघा	२२७	१४११-१४१४	१०७
,, नाशनं	१३८	७९८-८०४	५८-५९	,, जननं	२२८	१४१५-१४१८	,,
,, दूषणं	१३९	८०५-७	५९	,, वर्धनं	२२९	१४१९-२३	१०७-८
,, दूरीकरणं	१४०	८०८-३३	५९-६०	मणिधारणं	२३०-४१	१४२४-१५७८	१०८-११९
सर्पविषनाशनं	१४१-४३	८३४-४८	६०-६१	शंखः	२३०	१४२४-१४३०	१०८
सर्पेभ्यो रक्षणं	१४४	८४९-५१	६२	प्रतिसरः	२३१	१४३१-१४५२	१०८-११०
विषभेषज्यं	१४५	८५२-५९	,,	त्ररणः	२३२	१४५३-१४७७	११०-११२
जलचिकित्सा	१४६-२०२	८६०-११०७	६२-८३	फालः	२३३	१४७८-१५१२	११२-११४
आपः	१४६-६५	८६०-९५५	६२-६९	दर्भः	२३४-२३६	१५१३-१५३६	११५-११६
दिव्या आपः	१६६-१६७	९५६-६२	७०	औदुम्बरः	२३७	१५३७-१५५०	११६-११७
अपां भेषजं	१६८-७२	९६३-७३	७०-७१	जंगिडः	२३८-२३९	१५५१-१५६५	११७-११८
पर्जन्यः	१७३-७९	९७४-१०२१	७१-७५	शतवारः	२४०	१५६६-१५७१	११८-११९
नद्यः	१८०-८२	१०२२-४४	७५-७७	अस्तृतः	२४१	१५७२-१५७८	११९
सरस्वान्	१८३-८५	१०४५-५०	७७-७८	अरिष्टनाशनं	२४२-२४५	१५७९-१५९०	११९-२०
सरस्वती	१८६-९७	१०५१-९२	७८-८१	,, क्षयणं	,,	,,	,,
आपः	१९८-२०२	१०९३-११०७	८१-८३	कृत्यादुपणं	२४६-२४९	१५९१-१६५३	१२१-२५
अन्नादिकं	२०३-१४	११०८-१३३१	८३-१०१	,, परिहरणं	२४६-२४७	१५९१-१६१५	१२१-२२
अन्नं	२०३-६	११०८-२६	८३-८४	,, दूषणं	२४८	१६१६-१६४७	१२२-२४
ओदनः	२०७	११२७-८२	८४-८९	दस्युनाशनं	२४९	१६४८-१६५३	१२४-२५
पञ्चोदनः	२०८	११८३-१२२०	८९-९२	पापादिनाशनं	२५०-२९३	१६५४-१९१७	१२५-४३
ब्रह्मोदनं	२०९-१९	१२२१-६५	९३-९६	पापमोचनं	२५०-२५५	१६५४-१६७९	१२५-२७
मधुमदन्नं	२११	१२६६-१२६८	९६	बन्ध ,,	२५६	१६८०-१६८२	१२७
वासः	२१२-१३	१२६९-१२७१	,,	मन्यात्रिनाशनं	२५७	१६८२-१६८४	१२७-२८

	सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ		सूक्त	मन्त्र	पृष्ठ
पापमोचनं	२५८-२६८	१६८५-१७५५	१२८-३३	पितरः	३०४	१९८७-२०००	१४८-४९
,, नाशनं	२६९-२७५	१७५७-१७७६	१३३-३५	पितृमेधः	३०५-७	२००१-२१५०	१४९-६०
अराति ,,	२७६	१७७६-१७८६	१३५	यमः पितरः	३०८	२१५१-२२३९	१६१-६६
एनो ,,	२७७	१७८७-१७८९	१३६	यज्ञः	३०९-१४	२२४०-५६	१६६-६७
निर्ऋतिमोचनं	२७८	१७९०-१७९३	,,	वेदी	३१५-२०	२२५७-७३	१६८-६९
उन्मोचनं	२७९	१७९४-१७९६	,,	हविः	३२१	२२७४	१७०
दुरितनाशनं	२८०	X X	,,	हविर्धानि	३२२	२२७५-७९	,,
दुःखनाशनं	२८१	१७९७-१८०२	१३६-३७	उल्लूखलमुसले	३२३	२२८०-८३	,,
,, मोचनं	२८२-२८५	१८०३-१८३२	१३७-३८	प्रावाणः	३२४-२७	२२८४-२३१०	१७०-७२
दुःस्वप्ननाशनं	२८६-२९३	१८३५-१९१७	१३९-४३	धनान्नदानं	३२८	२३११-२३१९	१७३
अवनं	२९४	X X	१४३	गावः	३२९	२३२०-२३२५	१७३-७४
यज्ञादिकं	२९५-३३७	१९१८-२३२४	१४३-७६	अग्निः	३३०	२३२६	१७४
घर्मः	२९५	१९१९-१९२०	१४३	दीर्घायुष्यं	३३१-३३	२३२७-२३३५	१७४-७५
अग्निः	२९६	१९२१-२२	,,	दम्पत्योर्यक्ष्म-			
दर्भः	२९७-९८	१९२३-३७	१४३-४४	नाशनं	३३४	२३३६	१७५
घृतहोमः	२९९	१९३८-४५	१४५	अलक्ष्मीघ्नं	३३५	२३३७-२३३८	,,
पितृमेधः	३००	१९४६-५३	१४५-४६	सपत्नघ्नं	३३६-३७	२३३९-२३४५	१७५-७६
यमः	३०१-३	१९५४-८६	१४६-४८				



# दैवत-संहिता ।

( ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् विषयानुसारेण संगृह्य निर्मितम् । )

## ६ आयुर्वेद-प्रकरणम् ।

दीर्घायुष्यम् । ( १-१५१ )

॥१॥ ( अथर्व० २।२८।१-५ )

शम्भुः । १,३ जरिमा, आयुः; २ मित्रावरुणौ; ३-५ द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, १ जगती, ५ भुरिक् ।

तुभ्यमेव जरिमन् वर्धतामयं मेममन्ये मृत्यवो हिंसिषुः शतं ये ।

मातेव पुत्रं प्रमना उपस्थे मित्र एनं मित्रियात् पात्वंहसः १

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जरामृत्युं कृणुतां संविदानौ ।

तदग्निर्होता वयुर्नानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति २

त्वमींशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।

मेमं प्राणो हासीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः ३

द्यौश्चा पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने ।

यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४

इममग्र आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।

मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५ ५

॥२॥ ( अथर्व० ८।१।१-२१ )

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप्; १ पुरोबृहती त्रिष्टुप्; २-३, १७-२१ अनुष्टुप्; ४, ९, १५-१६ प्रस्तारपङ्क्तिः; ७ त्रिपदा विराड्गायत्री; ८ विराट्पथ्याबृहती; १२ व्यवसाना पञ्चपदा जगती; १३ त्रिपाद्भुरिङ्महाबृहती; १४ एकावसाना द्विपदा साम्नी भुरिबृहती ।

अन्तकाय मृत्यवे नमः प्राणा अपाना इह ते रमन्ताम् ।

इहायमस्तु पुरुषः सहासुना सूर्यस्य भागे अमृतस्य लोके १

उदेनं भगो अग्रभीदुदेनं सोमो अंशुमान् ।

उदेनं मरुतो देवा उदिन्द्राग्नी स्वस्तये २

इह तेऽसुरिह प्राण इहायुरिह ते मनः ।

उत् त्वा निर्ऋत्याः पार्श्वेभ्यो दैव्या वाचा भरामसि ३ ८

उत् क्रामार्तः पुरुष माव पत्था मृत्योः पङ्कीशमवमुश्चमानः ।	
मा च्छित्था अस्माह्लोकादुभेः सूर्यस्य संचशः	४
तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यार्पः ।	
सूर्यस्ते तन्वेइं शं तपाति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मैष्टाः	५ १०
उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।	
आ हि रोहेमममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वंदासि	६
मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो भून्मा जीवेभ्यः प्र मंदो मानु गाः पितृन् ।	
विश्वे देवा अभि रक्षन्तु त्वेह	७
मा गतानामा दीधीथा ये नयन्ति परावतम् ।	
आ रोह तमसो ज्योतिरेह्या ते हस्तौ रभामहे	८
श्यामश्च त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ ।	
अर्वाडेहि मा वि दीध्यो मात्र तिष्ठः पराङ्मनाः ।	९
मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि ।	
तम एतत् पुरुष मा प्र पत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक्	१० १५
रक्षन्तु त्वाग्रयो ये अप्सवन्ता रक्षतु त्वा मनुष्याइ यमिन्धते ।	
वैश्वानरो रक्षतु जातवेदा दिव्यस्त्वा मा प्र धाग् विद्युता सह	११
मा त्वा क्रव्यादभि मैस्तारात् संकसुकाच्चर ।	
रक्षतु त्वा द्यौ रक्षतु पृथिवी सूर्यश्च त्वा रक्षतां चन्द्रमाश्च ।	
अन्तरिक्षं रक्षतु देवहेत्याः	१२
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च रक्षतामस्वप्नश्च त्वानवद्राणश्च रक्षताम् ।	
गोपायंश्च त्वा जागृविश्च रक्षताम्	१३
ते त्वा रक्षन्तु ते त्वा गोपायन्तु तेभ्यो नमस्तेभ्यः स्वाहा	१४
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुरिन्द्रो धाता दधातु सविता त्रायमाणः ।	
मा त्वा प्राणो बलं हासीदसुं तेऽनु ह्यामसि	१५ २०
मा त्वा जम्भः संहनुर्मा तमो विदन्मा जिह्वा बर्हिः प्रमयुः कथा स्याः ।	
उत् त्वादित्या वसवो भरन्तुदिन्द्राग्नी स्वस्तये	१६
उत् त्वा द्यौरुत् पृथिव्युत् प्रजापतिरग्रभीत । उत् त्वा मृत्योरोषधयः सोमराज्ञीरपीपरन्	१७
अयं देवा इहैवास्त्वयं मामुत्र गादितः । इमं सहस्रवीर्येण मृत्योरुत् पारयामसि	१८ २३

उत् त्वां मृत्योरपीपरं सं धमन्तु वयोधसः । मा त्वां व्यस्तकेश्योर्इ मा त्वांघरुदौ रुदन् १९  
 आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्ग सर्वे ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् २० २५  
 व्यवात् ते ज्योतिरभूदप त्वत् तमो अक्रमीत् ।  
 अप त्वन्मृत्युं निर्ऋतिमप यक्ष्मं नि दध्मसि २१

॥३॥ ( अथर्व० ८।२।१-२८ )

ब्रह्मा । आयुः । त्रिष्टुप् ; १-२, ७ भुरिक् ; ३, २६ आस्तारपङ्क्तिः, ४ प्रस्तारपङ्क्तिः, ६, १५  
 पथ्यापङ्क्तिः ; ८ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती जगती ; ९ पञ्चपदा जगती ; ११ विष्टारपङ्क्तिः ; १२, २२, २८  
 पुरस्ताद्बृहती ; १४ व्यवसाना षट्पदा जगती ; १९ उपरिष्ठाद्बृहती ; २१ सतः पङ्क्तिः ;  
 ५, १०, १६-१८, २०, २३-२५, २७ अनुष्टुप् ( १७ त्रिपाद् ) ।

आ रभस्वेमाममृत्यस्य श्रुष्टिमच्छिद्यमाना जरदष्टिरस्तु ते ।  
 अस्तुं त आयुः पुनरा भेरामि रजस्तमो मोषं गा मा प्र भेष्टाः १  
 जीवतां ज्योतिरभ्येह्यर्वाडा त्वां हरामि शतशारदाय ।  
 अवमुञ्चन् मृत्युपाशानशस्तिं द्राघीय आयुः प्रतरं ते दधामि २  
 वातात् ते प्राणमविदं सूर्याचक्षुरहं तव ।  
 यत् ते मनस्त्वयि तद् धारयामि सं वित्स्वाङ्गैर्वदं जिह्वयालपन् ३  
 प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदामग्निमिव जातमभि सं धमामि ।  
 नमस्ते मृत्यो चक्षुषे ममः प्राणाय तेऽकरम् ४ ३०  
 अयं जीवतु मा मृतेमं समीरयामसि ।  
 कृणोम्यस्यै भेषजं मृत्यो मा पुरुषं वधीः ५  
 जीवलां नघारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।  
 त्रायमाणां सहमानां सहस्वतीमिह हुवेऽस्मा अरिष्टतातये ६  
 अधि ब्रह्मि मा रभथाः सृजेमं तवैव सन्तसर्वहाया इहास्तु ।  
 भवाश्रवो मृडतं शर्म यच्छतमपसिध्यं दुरितं धत्तमायुः ७  
 अस्यै मृत्यो अधि ब्रह्मीमं दयस्वोदितोरेयमेतु ।  
 अरिष्टः सर्वाङ्गः सुश्रुजरसां शतहायन आत्मना भुजमश्रुताम् ८  
 देवानां हेतिः परिं त्वा वृणक्तु पारयामि त्वा रजसं उत् त्वां मृत्योरपीपरम् ।  
 आरादग्निं क्रव्यादं निरूहं जीवातवे ते परिधिं दधामि ९  
 यत् ते नियानं रजसं मृत्यो अनवधर्ष्यम् ।  
 पथ इमं तस्माद् रक्षन्तो ब्रह्मास्मै वर्मं कृणमसि १० ३६

कृणोमि ते प्राणापानौ जरां मृत्युं दीर्घमायुः स्वस्ति । वैवस्वतेन प्रहितान् यमदूतांश्चरतोऽपि सेधामि सर्वान्	११	
आरादरातिं निर्ऋतिं परो ग्राहिं ऋव्यादः पिशाचान् । रक्षो यत् सर्वं दुर्भूतं तत् तम इवापि हन्मसि	१२	
अग्नेष्टे प्राणममृतादायुष्मतो वन्वे जातवेदसः । यथा न रिष्या अमृतः सज्जरसस्तत् ते कृणोमि तद् तु ते समृध्यताम्	१३	
शिवे ते स्तां द्यावापृथिवी असंतापे अभिश्रियौ । शं ते सूर्य आ तपतु शं वातो वातु ते हृदे ।		
शिवा अभि क्षरन्तु त्वापो दिव्याः पर्यस्वतीः शिवास्ते सन्त्वोषधय उत त्वाहार्षमधरस्या उत्तरां पृथिवीमभि ।	१४	४०
तत्र त्वादित्यौ रक्षतां सूर्याचन्द्रमसांबुभा यत् ते वासः परिधानं यां नीधिं कृणुषे त्वम् ।	१५	
शिवं ते तन्वेष्टु तत् कृणमः संस्पर्शेऽद्रूक्ष्णमस्तु ते यत् क्षुरेण मर्चयता सुतेजसा वमा वपासि केशदमश्रु ।	१६	
शुभं मुखं मा न आयुः प्र मोषीः शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमर्धौ ।	१७	
एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतो अंहसः यदश्नासि यत् पिबसि धान्यं कृष्याः पर्यः ।	१८	
यदाद्यं यदनाद्यं सर्वं ते अन्नमविषं कृणोमि अहं च त्वा रात्रये चोभाभ्यां परि ददासि ।	१९	४५
अरायेभ्यो जिघत्सुभ्य इमं मे परि रक्षत शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृणमः ।	२०	
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहणीयमानाः शरदे त्वा हेमन्तार्य वसन्तार्य ग्रीष्माय परि ददासि ।	२१	
वर्षाणि तुभ्यं स्योनानि येषु वर्धन्त ओषधीः मृत्युरीशे द्विपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम् । तस्मात् त्वां मृत्योर्गोपतेरुङ्करामि स मा बिभेः	२२	२३
सोऽरिष्ट न मरिष्यसि न मरिष्यसि मा बिभेः । न वै तत्र म्रियन्ते नो यन्त्यधमं तमः	२४	
सर्वो वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः । यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम्	२५	५१

परिं त्वा पातु समानेभ्योऽभिचारात् सबन्धुभ्यः ।	
अमग्निर्भवाभृतोऽतिजीवो मा ते हासिषुरसवः शरीरम्	२६
ये मृत्यव एकशतं या नाष्ट्रा अतितायाः ।	
मुञ्चन्तु तस्मात् त्वां देवा अग्नेर्वैश्वानरादधि	२७
अग्नेः शरीरमसि पारयिष्णु रक्षोहासि सपत्नहा ।	
अथो अमीवचार्तनः पूतुर्दुर्नाम भेषजम्	२८

॥४॥ (अथर्व० १।३०।१-४)

अथर्वा ( आयुष्कामः ) । विश्वे देवाः ( १ वसवः, आदित्याः, १-४ देवाः ) ।  
त्रिष्टुप्, ३ शाक्तरगर्भा विराड्जगती ।

विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन् ।	
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः	१ ५५
ये वो देवाः पितरो ये च पुत्राः सचेतसो मे शृणुतेदमुक्तम् ।	
सर्वेभ्यो वः परिं ददाम्येतं स्वस्त्येनिं जरसे वहाथ	२
ये देवा दिवि छ ये पृथिव्यां ये अन्तरिक्ष ओषधीषु पशुष्वस्वन्तः ।	
ते कृणुत जरसमार्युस्मै शतमन्यान् परिं वृणक्तु मृत्यून्	३
येषां प्रयाजा उत वानुयाजा हुतभागा अहुतादश्च देवाः ।	
येषां वः पश्च प्रदिशो विभक्तास्तान् वो अस्मै सत्रसदः कृणोमि	४

॥५॥ (अथर्व० १।३५।१-४)

अथर्वा ( आयुष्कामः ) । हिरण्यम्, इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः । जगती, ४ अनुष्टुप्गर्भा  
चतुष्पदा त्रिष्टुप् ।

यदावधन् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।	
तत् ते बध्नाभ्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वार्थं शतशारदाय	१
नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते देवानामोजः प्रथमजं ह्येतेतत् ।	
यो विभर्ति दाक्षायणं हिरण्यं स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः	२ ६०
अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं च वनस्पतीनामुत वीर्याणि ।	
इन्द्रं इवेन्द्रियाण्यधि धारयामो अस्मिन् तद् दक्षमाणो विभरद्विरण्यम्	३
समानां मासामृतभिष्ठा वयं संवत्सरस्य पर्यसा पिपभिं ।	
इन्द्राग्नी विश्वे देवास्तेऽनु मन्यन्तामहणीयमानाः	४ ६१



॥६॥ ( अथर्व० ६।४१।१-३ )

ब्रह्मा । चन्द्रमाः, २ सरस्वती, ३ दैव्या ऋषयः । अनुष्टुप्, १ भुरिक्, ३ त्रिष्टुप् ।  
मनसे चेतसे धिय आकृतय उत चित्तये । मृत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम् १  
अपानाय व्यानाय प्राणाय भूरिधायसे । सरस्वत्या उरुव्यचे विधेम हविषा वयम् २  
मा नो हासिषुर्ऋषयो दैव्या ये तनूपा ये नस्तन्वस्तनूजाः ।  
अमर्त्या मर्त्या अभि नः सचध्वमायुर्धत्त प्रतरं जीवसे नः ३ ६५

॥७॥ ( अथर्व० २।४।१-६ )

अथर्वा । ( चन्द्रमाः, ) जङ्गिडः । अनुष्टुप्, १ विराद् प्रस्तारपङ्क्तिः ।  
दीर्घायुत्वार्थं बृहते रणायारिष्यन्तो दक्षमाणाः सदैव ।  
मणिं विष्कन्धदूषणं जङ्गिडं विभृमो वयम् १  
जङ्गिडो जम्भाद् विशराद् विष्कन्धादभिश्चोचनात् ।  
मणिः सहस्रवीर्यः परि णः पातु विश्वतः २  
अयं विष्कन्धं सहतेऽयं बाधते अत्त्रिणः ।  
अयं नो विश्वभेषजो जङ्गिडः पात्वंहसः ३  
देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा ।  
विष्कन्धं सर्वा रक्षांसि व्यायामे सहामहे ४  
शणश्च मा जङ्गिडश्च विष्कन्धादभि रक्षताम् ।  
अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसेभ्यः ५ ७०  
कृत्यादूर्ध्विण्यं मणिरथो अरातिदूषिः ।  
अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयुषि तारिपत् ६

॥८॥ ( अथर्व० ३।१।१-८ )

ब्रह्मा, भृग्वङ्गिराश्च । इन्द्राग्नी, आयुष्यं, यक्षमनाशनम् । त्रिष्टुप्, ४ शकरीगर्भा जगती,  
५-६ अनुष्टुप्, ७ उष्णिग्वृहतीगर्भा पथ्यापङ्क्तिः, ८ त्र्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा जगती ।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।  
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम् १  
यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।  
तमा हरामि निऋतेरुपस्थादस्पर्शमेनं शतशारदाय २  
सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतार्थुषा हविषार्हार्षमेनम् ।  
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य हरितस्य पारम् ३ ७४

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमुं वसन्तान् ।		
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषार्हमेनम्	४	७५
प्र विशतं प्राणापानावनुद्वाहाविव व्रजम् ।		
व्युन्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम्	५	
इहैव स्तं प्राणापानौ मापं गातमितो युवम् ।		
शरीरमस्याङ्गानि जरसे वहतं पुनः	६	
जरायै त्वा परि ददामि जरायै नि धुवामि त्वा ।		
जरा त्वा भद्रा नेष्ट व्युन्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितरान् छतम्	७	
अभि त्वा जरिमाहितं गामुक्षणमिव रज्ज्वा ।		
यस्त्वा मृत्युरभ्यर्धत्त जायमानं सुपाशया ।		
तं ते सत्यस्य हस्ताभ्यामुदमुञ्चद् बृहस्पतिः	८	

॥९॥ ( अथर्व० २।९।१-५ )

भृग्वक्त्रिः । वनस्पतिः, यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप्, १ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

दर्शवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो ग्राह्या अधि यैनं जग्राह पर्वसु ।		
अथो एनं वनस्पते जीवानां लोकमुन्नय	१	८०
आगादुदगादयं जीवानां व्रातमप्यगात् ।		
अभूदु पुत्राणां पिता नृणां च भगवत्तमः	२	
अधीतीरध्यगादयमर्धि जीवपुरा अगन् ।		
शतं ह्यस्य भिषजः सहस्रमुत वीरुधः	३	
देवास्ते चीतिमविदन् ब्रह्माणं उत वीरुधः ।		
चीतिं ते विश्वे देवा अविदन् भूम्यामधि	४	
यश्चकार स निष्करत् स एव सुभिषक्तमः ।		
स एव तुभ्यं भेषजानि कृणवद् भिषजा शुचिः	५	

॥१०॥ ( अथर्व० ६।११०।१-३ )

अथर्वा । अग्निः । त्रिष्टुप्, १ पङ्क्तिः ।

प्रतो हि कमीढ्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सस्ति ।		
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रायस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व	१	८५

ज्येष्ठ्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलवर्हेणात् परि पाद्येनम् ।  
 अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशारदाय २  
 व्याघ्रेऽह्वयंजनिष्ट वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः ।  
 स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीज्जनित्रीम् ३

॥११॥ ( अथर्व० ६।४७।१-३ )

अङ्गिराः प्रचेताः । १ अग्निः, २ विश्वे देवाः, ३ सुधन्वा । त्रिष्टुप् ।

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशंभूः ।  
 स नः पावको द्रविणे दधात्वायुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम १  
 विश्वे देवा मरुत इन्द्रो अस्मानस्मिन् द्वितीये सवने न जह्युः ।  
 आयुष्मन्तः प्रियमेषां वदन्तो वयं देवानां सुमतौ स्याम २  
 इदं तृतीयं सवनं कवीनामृतेन ये चमसमैर्यन्त ।  
 ते सौधन्वनाः स्वरानशानाः स्विष्टिं नो अभि वस्यो नयन्तु ३ ९०

॥१२॥ ( अथर्व० २।२९।१-७ )

अथर्वा । १ अग्निः, सूर्यः, बृहस्पतिः; २ जातवेदाः, सविता; ३ इन्द्रः; ४-५ द्यावापृथिवी, विश्वे देवाः,  
 मरुतः, आपः; ६ अश्विनौ, ७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप्,  
 ४ पराबृहती निचृत्प्रस्तारपङ्क्तिः ।

पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वोऽङ्गे बले ।  
 आयुष्यमिस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः १  
 आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेद्यस्मै ।  
 रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदुस्तवायम् २  
 आशीर्णं ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ ।  
 जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधरान्तसपत्नान् ३  
 इन्द्रेण दुत्तो वरुणेन शिष्टो मरुद्भिरुग्रः प्रहितो न आगन् ।  
 एष वा द्यावापृथिवी उपस्थे मा क्षुधन्मा तृषत् ४  
 ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती धत्तं पयो अस्मै पयस्वती धत्तम् ।  
 ऊर्जमस्मै द्यावापृथिवी अधातां विश्वे देवा मरुत ऊर्जमापः ५  
 शिवाभिष्टे हृदयं तर्पयाम्यनमीवो मोदिषीष्ठाः सुवर्चाः ।  
 सुवासिनो पिबतां मन्थमेतमश्विनो रूपं परिधाय मायाम् ६ ९६

इन्द्र एतां संसृजे विद्धो अग्रं ऊर्जां स्वधामजरां सा त एषा ।

तया त्वं जीव शरदः सुवर्चा मा त आ सुस्रोद् भिषजस्ते अक्रन्

७

॥१३॥ ( अथर्व० ५।३०।१-१७ )

उन्मोचनः ( आयुष्कामः ) । आयुष्यम् । अनुष्टुप् ; १ पथ्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक्, १२ चतुष्पदा  
विराड्जगती, १४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः, १७ त्र्यवसाना षट्पदा जगती ।

आवतस्त आवतः परावतस्त आवतः ।

इहैव भव मा नु गा मा पूर्वाननु गाः पितृनसुं वधामि ते दृढम् १  
यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः स्वो यदरणो जनः उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते २  
यद् दुद्रोहिथ शेपिषे स्त्रियै पुंसे अचिन्त्या । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ३ १००  
यदेनसो मातृकृताच्छेषे पितृकृताश्च यत् । उन्मोचनप्रमोचने उभे वाचा वदामि ते ४  
यत् ते माता यत् ते पिता जामिभ्राता च सर्जितः । प्रत्यक्सैवस्व भेषजं जरदष्टिं कृणोमि त्वा ५  
इहैधि पुरुष सर्वेण मनसा सह । दूतौ यमस्य मानुं गा अधि जीवपुरा इहि ६  
अनुहृतः पुनरेहि विद्वानुदर्यनं पथः । आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् ७  
मा विभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिं कृणोमि त्वा । निरवोचमहं यक्षममङ्गैभ्यो अङ्गज्वरं तव ८ १०५  
अङ्गभेदो अङ्गज्वरो यश्च ते हृदयामयः । यक्षमः श्येन इव प्रार्पसद् वाचा साढः परस्तराम् ९  
ऋषी बोधप्रतीबोधावस्वमो यश्च जागृविः । तौ ते प्राणस्य गोप्सारौ दिवा नक्तं च जागृताम् १०  
अयमग्निरुपसद्य इह सूर्य उदेतु ते । उदेहि मृत्योर्गम्भीरात् कृष्णाञ्चित् तमसुस्परि ११  
नमो यमाय नमो अस्तु मृत्यवे नमः पितृभ्य उत ये नयन्ति ।  
उत् पारणस्य यो वेद तमग्निं पुरो दधेऽस्मा अरिष्टतातये १२  
एतु प्राण एतु मन एतु चक्षुरथो बलेम् । शरीरमस्य सं विदां तत् पद्भ्यां प्रति तिष्ठतु १३ ११०  
प्राणेनाग्ने चक्षुषा सं सृजेमं समीरय तन्वाइ सं बलेन ।  
वेत्थामृतस्य मा नु गान्मा नु भूमिगृहो भवत् १४  
मा ते प्राण उप दसन्मो अपानोऽपि धायि ते । सूर्यस्त्वाधिपतिर्मृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः १५  
इयमन्तर्वदति जिह्वा बद्धा पनिष्पदा । त्वया यक्षं निरवोचं शतं रोपीश्च त्वमनः १६  
अयं लोकः प्रियतमो देवानामपराजितः । यस्मै त्वमिह मृत्यवे दिष्टः पुरुष जज्ञिषे ।  
स च त्वानुं ह्यामसि मा पुरा जरसो मृथाः १७ ११४

॥१४॥ ( अथर्व० १९।६४।१—४ )

ब्रह्मा । अग्निः ( दीर्घायुत्वम् ) । अनुष्टुप् ।

अग्ने॑ स॒मिध॒माहा॑र्षं बृ॒हते॑ जा॒तवे॑दसे । स मे॑ श्र॒द्धां च॑ मे॒धां च॑ जा॒तवै॑दाः प्र य॑च्छतु १ ११५
इ॒ध्मेन॑ त्वा जा॒तवे॑दः स॒मिधा॑ वर्धयामसि । तथा॑ त्वम॒स्मान् वर्ध॑य प्र॒जया॑ च॒ धने॑न च २
यद॑ग्ने॒ यानि॑ कानि॒ चिदा॑ ते दा॒रूणि॑ दु॒ध्मसि॑ । सर्व॑ तद॑स्तु मे शि॒वं तज्जु॑षस्व यवि॒ष्ठ्य ३
ए॒तास्ते॑ अग्ने॒ समिध॑स्त्वमि॒द्धः समि॑द्धव । आ॒युर॑स्मासु॒ धेह्य॑मृत॒त्वमा॑चार्या॒यि ४

॥१५॥ ( अथर्व० १९।६७।१-८ )

ब्रह्मा । सूर्यः ( दीर्घायुत्वम् ) । प्रजापत्या गायत्री ।

प॒श्येम॑ श॒रदः॑ श॒तम् १	जी॒वेम॑ श॒रदः॑ श॒तम् २
बु॒ध्येम॑ श॒रदः॑ श॒तम् ३	रो॒हेम॑ श॒रदः॑ श॒तम् ४
पू॒षेम॑ श॒रदः॑ श॒तम् ५	भ॒वेम॑ श॒रदः॑ श॒तम् ६
भू॒येम॑ श॒रदः॑ श॒तम् ७	भू॒यसीः॑ श॒रदः॑ श॒तात् ८ ११६

॥१६॥ ( अथर्व० ५।२८।१-१४ )

अथर्वा । त्रिवृत्, अग्न्यादयः ( दीर्घायुः ) । त्रिष्टुप्, ६ पञ्चपदातिशकरीः

७, ९, १०, १२ ककुम्मत्यनुष्टुप्; १३ पुरउष्णिक् ।

नवं प्रा॒णान् न॒वभिः॑ सं मि॒मीते॑ दीर्घायु॒त्वार्य॑ श॒तशार॑दाय ।	
हरि॑ते त्रीणि र॒जते॑ त्रीण्य॒सि त्रीणि॑ तप॒सार्वि॑ष्ठितानि १	
अग्निः॑ सूर्यश्चन्द्र॒मा भूमि॑रापो द्यौरन्तरि॒क्षं प्रदि॑शो दि॒शश्च॑ ।	
आ॒र्त॒वा ऋ॒तुभिः॑ संवि॒दाना॑ अ॒नेन॑ मा त्रि॒वृता॑ पारयन्तु २	
त्रयः॑ पोषा॒स्त्रिवृ॑तिं श्रयन्ताम॒नक्तु॑ पूषा पर्यसा घृ॒तेन॑ ।	
अ॒न्नस्य॑ भू॒मा पुरु॑षस्य भू॒मा भू॒मा पशू॑नां त इ॒ह श्र॑यन्ताम् ३	
इ॒ममा॑दि॒त्या वसु॑ना॒ समु॑क्षतेम॒मग्ने॑ वर्धय वावृ॒धानः॑ ।	
इ॒ममिन्द्र॑ सं सृ॒ज वी॒र्ये॑णा॒स्मिन् त्रि॒वृच्छ्र॑यतां पोषयि॒ष्णु ४ १२०	
भूमि॑ष्ठा पातु हरि॑तेन विश्वभृ॒दग्निः॑ पि॒प॒र्त्व॒र्यसा॑ स॒जोषाः॑ ।	
वी॒रुद्भि॑ष्टे अ॒र्जुनं॑ संवि॒दानं दक्षं॑ दधातु सु॒मन॑स्य॒मानम् ५	
त्रे॒धा जा॑तं जन्म॒नेदं॑ हिर॒ण्यम॒ग्नेरेकं॑ प्रियत॒मं बभू॑व सोम॒स्यैकं॑ हिं॒सित॑स्य॒ परा॑पतत् ।	
अ॒पामे॑कं वे॒धसां॑ रेतं आहु॒स्तत् ते॑ हिर॒ण्यं त्रि॒वृदु॑स्त्वायु॒षे ६ १२१	

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।	
त्रेभामृतस्य चक्षुषं त्रीण्यायुषि तेऽकरम्	७
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदार्यभेकाक्षरमभिसंभूर्य शक्राः ।	
प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकमन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा	८
दिवस्त्वा पातु हरितं मघ्यात् त्वा पात्वर्जुनम् ।	
भूम्या अयस्मर्यं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम्	९ १३५
इमास्तिस्रो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः ।	
तास्त्वं विभ्रद् वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव	१०
पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आत्रेधे प्रथमो देवो अग्ने ।	
तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदावर्धे मे	११
आ त्वा चृतत्वर्यमा पूषा बृहस्पतिः ।	
अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि	१२
ऋतुभिर्घ्रातवैरायुषे वर्चसे त्वा ।	
संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृणमसि	१३
घृतादुल्लुप्तं मधुना समकतं भूमिद्वहमच्युतं पारयिष्णु ।	
भिन्दत सप्तनानधरांश्च कृण्वदा मां रोह सहते सौभगाय	१४ १४०

॥१७॥ ( अथर्व० ७।३१।१ )

ब्रह्मा । आयुः । अनुष्टुप् ।

उपे प्रियं पनिमृतं युवानमाहुतीवृधम् ।	
अगन्म विभ्रतो नमो दीर्घमार्युः कृणोतु मे	१

॥१८॥ ( अथर्व० ७।३३।१ )

ब्रह्मा । मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः, ( दीर्घार्युः ) । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मां सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।	
सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजया च धनेन च दीर्घमार्युः कृणोतु मे	१

॥१९॥ ( अथर्व० ७।५३।१-७ )

ब्रह्मा । आयुः, बृहस्पतिः अश्विनौ च । त्रिष्टुप्, ३ भुरिक्, ४ उणिगर्भावी पङ्क्तिः, ५-७ अनुष्टुप् ।

अमुत्रभूयादधि यद् यमस्य बृहस्पतेरभिर्शस्तेरमुञ्चः ।	
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मद् देवानामग्ने भिषजा शचीभिः	१ १४३

सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं प्राणापानौ ते सयुजाविह स्ताम् ।  
 शतं जीव शरदो वर्धमानोऽग्निष्टे गोपा अधिपा वसिष्ठः २  
 आयुर्यत् ते अतिहितं पराचैरपानः प्राणः पुनरा ताविताम् ।  
 अग्निष्टदाहानिर्ऋतेरुपस्थात् तदात्मनि पुनरा वेशयामि ते ३ १४५  
 मेमं प्राणो हांसीन्मो अपानो विहाय परां गात् ।  
 समर्षिभ्य एनं परि ददामि त एनं स्वस्ति जरसे वहन्तु ४  
 प्र विशतं प्राणापानावनङ्गाहाविव व्रजम् । अयं जरिष्णः शैवधिररिष्ट इह वर्धताम् ५  
 आ ते प्राणं सुवामसि परा यक्ष्मं सुवामि ते । आयुर्नो विश्वतो दधद्यमभिर्वरेण्यः ६  
 उद्वयं तमसस्परि रोहन्तो नाकश्रुत्तमम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ७

॥२०॥ (अथर्व० ६।७६।१-४)

कबन्धः । सान्तपनाग्निः ( आयुष्यम् ) । अनुष्टुप्, ३ ककुम्मती ।

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे । संप्रेद्धो अभिर्जिह्वाभिरुदेतु हृदयादधि १ १५०  
 अग्नेः सान्तपनस्याहमायुषे पदमा रभे । अद्वातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः २  
 यो अस्य समिधं वेदं क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे ३  
 नैनं म्रन्ति पर्यायिणो न स्र्नां अवं गच्छति । अग्नेर्यः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे ४

॥२१॥ (अथर्व० १९।६३।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः ( आयुर्वर्धनम् ) । विराडुपरिष्ठाद्बृहती ।

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय । आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय १

॥२२॥ (अथर्व० १९।६१।१)

ब्रह्मा । ब्रह्मणस्पतिः ( सर्वमायुः ) । विराद् पथ्याबृहती ।

तनुस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय । स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे १

॥२३॥ (अथर्व० १९।७०।१)

ब्रह्मा । इन्द्रसूर्यादयः ( सर्वमायुः ) । गायत्री ।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् १ १५६

अरिष्टानि अङ्गानि । (१५७-१६१)

॥२४॥ (अथर्व० १९।६०।१-२)

ब्रह्मा । वाक्, अङ्गानि च । १ पथ्याबृहती; २ ककुम्मती पुरउष्णिक् ।

वाङ् म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः ।

अपलिताः केशा अक्षोणा दन्ता बहु बाहोर्बलम् १ १५७

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः । प्रतिष्ठा अरिष्ठानि मे सर्वात्मानिभृष्टः २

सुमङ्गलौ दन्तौ ।

॥२५॥ ( अथर्व० ६।१४०।१-३ )

अथर्वा । ब्रह्मणस्पतिः, दन्ताः । ( अनुष्टुप् ? ) १ उरोबृहती, २ उपरिष्ठाज्ज्योतिष्मती  
त्रिष्टुप्, ३ आस्तारपङ्क्तिः ।

यौ व्याघ्रावर्वरूढौ जिघत्सतः पितरं मातरं च ।

यौ दन्तौ ब्रह्मणस्पते शिवौ कृणु जातवेदः १

व्रीहिर्मत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम् ।

एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च । २

उपहूतौ सयुजौ स्योनौ दन्तौ सुमङ्गलौ ।

अन्यत्र वां घोरं तन्वः परैतु दन्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च ३ १६१

यक्ष्म-नाशनम् ।

( १६२-३०० ) ॥२६॥ ( ऋ० १०।१६३।१-६ )

विवृहा काश्यपः । यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।

यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्का—जिज्हाया वि वृहामि ते १

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।

यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते २

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि ।

यक्ष्मं मत्स्राभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो वि वृहामि ते ३

ऊरुभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां पार्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।

यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासद्वा—ङ्गंससो वि वृहामि ते ४ १६५

मेहनादनंकरणा—ल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ।

यक्ष्मं सर्वस्माद्वात्मन—स्तमिदं वि वृहामि ते ५

अङ्गादङ्गाल्लोमोलोमो जातं पर्वणिपर्वणि ।

यक्ष्मं सर्वस्माद्वात्मन—स्तमिदं वि वृहामि ते ६ १६७



॥२७॥ ( अथर्व० ३।३।१-११ )

ब्रह्मा । पाप्महाः १ अग्निः, २ शक्रः, ३ पशवः, ४ द्यावापृथिवी, ५ त्वष्टा, अग्निः, इन्द्रः; ७ देवाः, सूर्यः; ८-१० आयुः, ११ पर्जन्यः ( यक्षमनाशनम् ) । अनुष्टुप्, ४ भुरिक्, ५ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

वि देवा ज॒रसा॑वृ॒तन् वि त्व॑म॒ग्ने अ॑रा॒त्या ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा १

व्या॒त्या प॑व॒मानो॑ वि श॒क्रः पा॑प॒कृत्य॑या ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा २

वि ग्रा॒म्याः प॒शव॑ आ॒रण्यै॒र्व्या॑पि॒स्तृष्ण॑यासरन् ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ३ १७०

वी॒श्रमे॑ द्यावा॒पृथि॒वी इ॒तो वि प॑न्थानो दि॒शंदि॑शम् ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ४

त्वष्टा॑ दु॒हित्रे॑ व॒हतुं॑ यु॒नक्ती॑तीदं वि॒श्वं भु॑वं॒नं वि या॑ति ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ५

अ॒ग्निः प्रा॒णान्त्सं द॑धाति च॒न्द्रः प्रा॒णेन॑ सं॒हितः॑ ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ६

प्रा॒णेन॑ वि॒श्वतो॑वीर्यं देवाः सूर्यं स॒मैर॑यन् ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ७

आयु॑ष्मतामायु॒ष्कृतां॑ प्रा॒णेन॑ जीव॒ मा मृ॑थाः ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ८ १७५

प्रा॒णेन॑ प्राण॒तां प्रा॒णेहै॒व भ॑व॒ मा मृ॑थाः ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ९

उदा॑युषा॒ समा॑युषोदोष॒धीनां॑ रसेन ।

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा १०

आ पर्जन्य॑स्य वृ॒ष्ट्योद॑स्थामा॒मृता॑ व॒यम्

व्य॑हं सर्वेण पा॒प्मना॑ वि यक्ष॑मेण॒ समा॑युषा ११

॥२८॥ ( अथर्व० ६।२०।१-३ )

भृ॒ग्वङ्गि॑राः । यक्षमनाशनम् । १ जगती, २ ककुम्भतीप्रस्तारपङ्क्तिः, ३ सतः पङ्क्तिः ।

अ॒ग्नेरि॑वास्य॒ दहत॑ एति शु॒ष्मिण॑ उ॒तेवं॑ म॒त्तो वि॒लप॑न्नपा॒यति॑ ।

अ॒न्यम॑स्मदिच्छ॒तु कं चि॑द॒व्रत॑स्त॒र्षुर्वे॒धाय॑ नमो॒ अस्तु॑ त॒कम॑ने

नमो रुद्राय नमो अस्तु त्कमने नमो राज्ञे वरुणाय त्विषीमते ।

नमो दिवे नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः

२ १८०

अयं यो अभिशोचयिष्णुर्विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि ।

तस्मै तेऽरुणाय बभ्रवे नमः कृणोमि वन्याय त्कमने

३

॥१९॥ ( अथर्व० ६।८५।१-३ )

अथर्वा । वनस्पतिः ( यक्षमनाशनम् ) । अनुष्टुप् ।

वरुणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्षमो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमुं देवा अवीवरन् १

इन्द्रस्य वर्चसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च । देवानां सर्वेषां वाचा यक्षमं ते वारयामहे २

यथा वृत्र इमा आपस्तस्तम्भं विश्वधा यतीः ।

एवा ते अग्निना यक्षमं वैश्वानरेण वारये ३

॥३०॥ (अथर्व० ६।१२७।१-३)

भृग्वक्त्रिराः । यक्षमनाशनम्, वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ३ त्र्यवसाना पट्टपदा जगती ।

विद्रुधस्य बलासस्य लोहितस्य वनस्पते । विसर्पकस्योषधे मोच्छिषः पिशितं चन १ १८५

यौ ते बलास तिष्ठतः कक्षे मुष्कावपश्रितौ । वेदाहं तस्य भेषजं चीपुद्गुरभिचक्षणम् २

यो अङ्गथो यः कर्ण्यो यो अक्षयोर्विसर्पकः । वि वृहामो विसर्पकं विद्रुधं हृदयामयम् ।

परा तमज्ञातं यक्षर्ममधराञ्च सुवामसि ३

॥३१॥ ( अथर्व० १।१२।१-४ )

भृग्वक्त्रिराः । यक्षमनाशनम् । जगती ( त्रिष्टुप् ? ), ४ अनुष्टुप् ।

जरायुजः प्रथम उस्त्रियो वृषा वार्तभ्रजा स्तनयन्नेति वृष्ट्या ।

स नो मृडाति तन्वृ ऋजुगो रुजन् य एकमोजस्त्रेधा विचक्रमे १

अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम ।

अङ्कान्तसमङ्कान् हविषा विधेम यो अग्रभीत पर्वीस्या ग्रभीता २

मुञ्च शीर्षिक्त्या उत कास एनं परुष्परुराविवेशा यो अस्य ।

यो अभ्रजा वार्तजा यश्च शुष्मो वनस्पतीन्त्सचतां पर्वतांश्च ३

शं मे परस्मै गात्राय शमस्त्ववराय मे ।

शं मे चतुभ्यो अङ्गेभ्यः शमस्तु तन्वेडु मम ४ १९१

॥३२॥ ( अथर्व० ३।७।१-७ )

भृग्वहिराः । १-३ हरिणः, ४ तारके, ५ आपः, ६-७ यक्षमनाशनम् । अनुष्टुप्, ६ भुरिक् ।

हरिणस्य रघुष्यदोऽधि शीर्षणि भेषजम् ।	
स क्षेत्रियं विषाणया विषुचीनमनीनशत्	१
अनु त्वा हरिणो वृषा पद्भिश्चतुर्भिरकमीत् ।	
विषाणे वि ष्य गुष्पितं यदस्य क्षेत्रियं हृदि	२
अदो यदवरोचते चतुष्पक्षमिव च्छदिः ।	
तेना ते सर्वे क्षेत्रियमङ्गैभ्यो नाशयामसि	३
अमू ये दिवि सुभगे विचृतौ नाम तारके ।	
वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पार्श्वमुत्तमम्	४ १९५
आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचार्तनीः ।	
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात्	५
यदासुतेः क्रियमाणायाः क्षेत्रियं त्वा व्यानशे ।	
वेदाहं तस्य भेषजं क्षेत्रियं नाशयामि त्वत्	६
अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसामुत् ।	
अपास्मत् सर्वे दुर्भूतमप क्षेत्रियमुच्छतु	७

॥३३॥ ( अथर्व० ६।९।१-३ )

भृग्वहिराः । यक्षमनाशनम्, ३ आपः । अनुष्टुप् ।

इमं यवमष्टायोगैः षड्योगैर्भिरचर्कषुः । तेना ते तन्वोऽरपोऽपाचीनमप व्यये	१
न्यग् वातो वाति न्यक् तपति सूर्यः । नीचीनमभ्या दुहे न्यग् भवतु ते रपः	२ २००
आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचार्तनीः ।	
आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्	३

॥३४॥ ( अथर्व० १९।३।१-३ )

अथर्वा । गुल्गुलुः ( यक्षमनाशनम् ) । अनुष्टुप्; २ चतुष्पदा उष्णिक्; ३ एकाक्षसाना प्राजापत्यानुष्टुप् ।

न तं यक्षमा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते ।	
यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते	१
विष्वस्तस्माद् यक्षमा मुगा अश्वा इवेरते । यद् गुल्गुलु सैन्धवं यद् वाप्यासि समुद्रियम्	२
उभयोरग्रभं नामास्मा अरिष्टतातये	३ २०४

॥३५॥ ( अथर्व० २०।९६।६-१० )

यक्ष्मनाशनः । यक्ष्मनाशनम् । त्रिष्टुप् ।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात् ।	
ग्राहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्	६ २०५
यदि भितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीति एव ।	
तमा हराभि निर्ऋतेरुपस्थादस्पांशमेनं शतशारदाय	७
सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषा हविषाहार्षमेनम् ।	
इन्द्रो यथैनं शरदो नयात्यति विश्वस्य दुरितस्य पारम्	८
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्तान् छतमु वसन्तान् ।	
शतं त इन्द्रो अग्निः सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषाहार्षमेनम्	९
आहार्षमविदं त्वा पुनरागाः पुनर्णवः । सर्वाङ्ग सर्वे ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् १०	

॥३६॥ ( अथर्व० २०।९६।१७-२३ )

विषृहाः । यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां लुबुकादधि ।	
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काजिह्वाया वि वृहामि ते	१७ २१०
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यात् ।	
यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते	१८
हृदयात् ते परि क्लोमो हलीक्षणात् पाश्वाभ्याम् ।	
यक्ष्मं मत्स्राभ्यां प्लीहो यकनस्ते वि वृहामसि	१९
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।	
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते	२०
उरुभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां पार्थिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।	
यक्ष्मं भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदुं भंससो वि वृहामि ते	२१
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।	
यक्ष्मं पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते	२२
अङ्गेअङ्गे लोमिलोमि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।	
यक्ष्मं त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि	२३ २१६

॥३७॥ ( अथर्व० १२।२।१-५५ )

भृगुः । अग्निः; मन्त्रोक्ताः; २१-३३ मृत्युः ( यक्षमरोगनाशनम् ) । त्रिष्टुप्; २, ५, १२-२०, ३४-३६; ३८-४१, ४३, ५१, ५४ अनुष्टुप् ( १६ ककुम्मती पराबृहती, १८ निचृत्, ४० पुरस्तात्ककुम्मती ) ।  
३ आस्तारपङ्क्तिः; ६ भुरिगार्षी पङ्क्तिः; ७, ४५ जगती; ८, ४८-४९ भुरिग्;  
९ अनुष्टुब्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः; ३७ पुरस्ताद्बृहती; ४२ त्रिप०  
एकाव० भुरिगार्ची गायत्री; ४४ एकाव० द्विप० आर्ची बृहती;  
४६ एका० द्विप० साम्नी त्रिष्टुप्; ४७ पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा  
जगती; ५० उपरिष्टाद्विराड् बृहती; ५२ पुरस्ताद्विराड्  
बृहती; ५५ बृहतीगर्भा ।

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि ।

यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकमधराड् परेहि १

अघशंसदुःशंसाभ्यां करेणानुकरेण च । यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरंजामसि २  
निरितो मृत्युं निरंति निरंतिमजामसि ।

यो नो द्वेष्टि तमद्वयग्रे अक्रव्याद्यमुं द्विष्मस्तमुं ते प्र सुवामसि ३

यद्यग्निः क्रव्याद् यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।

तं मापाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुषदोऽप्यग्नीन् ४ २२०

यत् त्वां क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते । सुकल्पमग्रे तत् त्वया पुनस्त्वोदीपयामसि ५

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्रे ।

पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वायं शतशारदाय ६

यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेशं नो गृहमिमं पश्यन्नितरं जातवेदसम् ।

तं हरामि पितृयज्ञाय दूरं स घर्मभिन्धां परमे सधस्थे ७

क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।

इहायमितरो जातवेदा देवो देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ८

क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् दृंहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।

नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितृणां लोकेऽपि भागो अस्तु ९ २२५

क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यैः प्र हिणोमि पथिभिः पितृयाणैः ।

मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधिं पितृषु जागृहि त्वम् १०

समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुच्यः पावकाः ।

जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति ११

वो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्टान्यारुहत् । मुच्यमानो निरेणसोऽमोगस्माँ अशस्त्याः १२ २२८

अस्मिन् वयं संकसुके अग्रौ रिप्राणि मृज्महे ।	
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयुषि तारिषत्	१३
संकसुको विकसुको निर्ऋथो यश्च निस्वरः । ते ते यक्ष्मं सर्वेदसो दूराद् दूरमनीनशन्	१४ २३०
यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु ।	
ऋव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः	१५
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।	
निः ऋव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितयोपनः	१६
यास्मिन् देवा अमृजत यस्मिन् मनुष्या उत ।	
तस्मिन् घृतस्तावो मृष्टा त्वमग्रे दिवं रुह	१७
सभिद्धो अग्र आहुत स नो माभ्यर्षक्रमीः ।	
अत्रैव दीदिहि घन्नि ज्योक् च सूर्यं दृशे	१८
सीसे मृड्द्वं नडे मृड्द्वमग्रौ संकसुके च यत् ।	
अथो अव्यां रामायां शीर्षिक्तिसुपवर्हणे	१९ २३५
सीसे मलं सादयित्वा शीर्षिक्तिसुपवर्हणे । अव्यामसिक्न्यां मृष्टा शुद्धा भवत यज्ञियाः	२०
परं मृत्यो अनु परैहि पन्थां यस्त एष इतरो देवयानात् ।	
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु	२१
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद् भद्रा देवहृतिर्नो अद्य ।	
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय सुवीरासो विदथमा वंदेम	२२
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।	
शतं जीवन्तः शरदः पुरुचीस्तिरो मृत्युं दधतां पर्वतेन	२३
आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति स्थ ।	
तान्वस्त्वष्टा सुजनिमा सजोषाः सर्वमार्युर्नयतु जीवनाय	२४ २४०
यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्तव ऋतुभिर्यन्ति साकम् ।	
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायुषि कल्पयैषाम्	२५
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः ।	
अत्रा जहीत ये असन्दुरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान्	२६
उत्तिष्ठता प्र तरता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम् ।	
अत्रा जहीत ये असन्नाशिवाः शिवान्त्स्योनानुत्तरेमाभि वाजान्	२७ २४३

वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।		
अतिक्रामन्तो दुरिता पदानि शतं हिमाः सर्ववीरा मदेम	२८	
उदीचीनैः पथिभिर्वायुमाद्भिरतिक्रामन्तोऽवरान् परेभिः ।		
त्रिः सप्त कृत्व ऋषयः परेता मृत्युं प्रत्यौहन् पदयोर्पनेन	२९	२४५
मृत्योः पदं योपयन्त एत द्राघीय आयुः प्रतुरं दधानाः ।		
आसीना मृत्युं जुदता सधस्येऽथ जीवासो विदथमा वदेम	३०	
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं स्पृशन्ताम् ।		
अनश्रवो अनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे	३१	
व्याकरोमि हविषाहमेतौ तौ ब्रह्मणा व्युहं कल्पयामि ।		
स्वधां पितृभ्यो अजरां कृणोमि दीर्घेणायुषा समिमान्त्सृजामि	३२	
यो नो अग्निः पितरो हृत्स्वऽन्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।		
मय्यहं तं परि गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम्	३३	
अपावृत्य गार्हपत्यात् क्रव्यादा प्रेतं दक्षिणा ।		
प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम्	३४	२५०
द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः	३५	
यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्त्रेण विन्दते । सर्व मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः	३६	
अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद्यं क्रव्यादनुवर्तते	३७	
सुहृगृध्यैः प्र वदत्याति मर्त्यो नीत्य । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकार्दनुविद्वान् वितारति	३८	
ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।		
ब्रह्मैव विद्वानेष्योऽ यः क्रव्यादं निरादधत्	३९	२५५
यद् रिप्रं शर्मलं चकृम यच्च दुष्कृतम् ।		
आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत्	४०	
ता अंधरादुदीचीराववृत्रन् प्रजानतीः पथिभिर्देव्यानैः ।		
पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्वरन्ति सरितः पुराणीः	४१	
अग्ने अक्रव्याभिः क्रव्यादं नुदा देवयजनं वह	४२	
इमं क्रव्यादा विवेशायं क्रव्यादुमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम्	४३	
अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणामग्निर्गार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः	४४	२६०

जीवानामायुः प्र तिर् त्वमग्ने पितृणां लोकमपि गच्छन्तु ये मृताः ।	
सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिमुषामृषां श्रेयसीं धेह्यस्मै	४५
सर्वानग्ने सहमानः सपत्नानैषामूर्जे रयिमस्मासु धेहि	४६
इममिन्द्रं वह्निं पाग्निमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवघ्यात् ।	
तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परि पातास्ताम्	४७
अनङ्गाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवघ्यात् ।	
आ रोह त सवितुर्नावमेतां षड्भिरुर्वीभिरमतिं तरेम	४८
अहोरात्रे अन्वेषि विभ्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः ।	
अनातुरान्तसुमनसस्तल्प विभ्रज्ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि	४९
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा ।	२६५
ऋव्याद्यानग्निरन्तिकादश्व इवानुवपते नडम्	५०
येऽश्रद्धा धनकाम्या ऋव्यादा समासते । ते वा अन्येषां कुम्भीं पर्यादधति सर्वदा	५१
प्रेवं पिपतिषति मनसा सुहुरा वर्तते पुनः । ऋव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान् वितार्वति	५२
अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं ऋव्यादपि चन्द्रं त आहुः ।	
माषाः पिष्टा भागधेयं ते हव्यमरण्यान्या गह्वरं सचस्व	५३
इषीकां जरतीमिष्टा तिलिपञ्जं दण्डनं नडम् । तमिन्द्र इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ	५४
प्रत्यश्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पन्थां वि ह्यविवेश ।	२७०
परामीषामस्रन् दिदेश द्विर्घेणायुषा समिमान्तसृजामि	५५

॥३८॥ ( अथर्व० ९।८।१-२२ )

भृग्वक्त्रिः । सर्वशीर्षामयाथपाकरणम् ( यक्षमवितारणम् ) । अनुष्टुप्; १२ अनुष्टुब्गर्भा ककुम्भती  
चतुःपदोष्णिक्; १५ विराडनुष्टुप्; २१ विराट् पथ्यावृहती;  
२२ पथ्यापङ्क्तिः ।

शीर्षक्तिं शीर्षामयं कर्णशूलं विलोहितम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे १  
कर्णाभ्यां ते कङ्कूषेभ्यः कर्णशूलं विसर्पकम् ।

सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे २

यस्य हेतोः प्रच्यवन्ते यक्ष्मः कर्णत आस्यतः ।

सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ३

यः कृणोति प्रमोतमन्धं कृणोति पूरुषम् । सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे ४ २७५



अङ्गभेदमङ्गज्वरं विश्वाङ्ग्यं विसर्पकम् ।	
सर्वं शीर्षण्यं ते रोगं बहिर्निर्मन्त्रयामहे	५
यस्य भीमः प्रतीकाश उद्वेपयति पूरुषम् । त्वमानं विश्वशारदं बहिर्निर्मन्त्रयामहे	६
य ऊरु अनुसर्पत्यथो एति गृवीनिके । यक्षं ते अन्तरङ्गभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे	७
यदि कामादपकामाद्भृदयाजायते परि । हृदो बलासमङ्गभ्यो बहिर्निर्मन्त्रयामहे	८
हरिमाणं ते अङ्गभ्योऽप्वामन्तरोदरात् । यक्षमोधामन्तरात्मनो बहिर्निर्मन्त्रयामहे	९ २८०
आसौ बलासो भवतु मूत्रं भवत्वामयत् । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	१०
बहिर्विलं निर्द्रवतु काहाबाहं तवोदरात् । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	११
उदरात् ते क्लोमो नाभ्या हृदयादधि । यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	१२
याः सीमानं विरुजन्ति मुर्धानं प्रत्यर्षणीः । अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम्	१३
या हृदयमुपसर्पन्त्यनुतन्वन्ति कीकसाः ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम्	१४ २८५
याः पार्श्वे उपसर्पन्त्यनुनिक्षन्ति पृष्ठीः ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम्	१५
यास्तिरश्चीरुपसर्पन्त्यर्षणीर्विक्षणांसु ते ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम्	१६
या गुदा अनुसर्पन्त्यान्त्राणि मोहयन्ति च ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम्	१७
या मज्जो निर्धयन्ति परूषि विरुजन्ति च ।	
अहिंसन्तीरनामया निर्द्रवन्तु बहिर्विलम्	१८
ये अङ्गानि मदयन्ति यक्षमासो रोपणास्तव ।	
यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	१९ २९०
विसर्पस्य विद्रुधस्य वातीकारस्य बालजेः ।	
यक्षमाणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत्	२०
पादाभ्यां ते जानुभ्यां श्रोणिभ्यां परि भंससः ।	
अनूकादर्षणीरुष्णिहाभ्यः शीर्ष्णो रोगमनीनशम्	२१
सं ते शीर्ष्णः कपालानि हृदयस्य च यो विधुः ।	
उद्यन्नादित्य रश्मिभिः शीर्ष्णो रोगमनीनशोऽङ्गभेदमशीशमः	२२ २९३

॥३९॥ ( अथर्व० २।३।२-७ )

ब्रह्मा । यक्षमविबर्हणं, चन्द्रमाः, आयुष्यम् । अनुष्टुप्, ३ ककुम्मती, ४ चतुष्पदा भुरिगुणिक्,  
५ उपरिष्ठाद्विराड्बृहती, ६ उष्णिग्गर्भा निचृदनुष्टुप्, ७ पथ्यापङ्क्तिः ।

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां लुबुकादधि ।	
यक्षमे शीर्षण्यं मस्तिष्काञ्जिह्वाया वि वृहामि ते	१
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनुक्यति ।	
यक्षमे दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते	२ २९५
हृदयात् ते परिं क्लोमो हलीक्षणात् पार्श्वभ्याम् ।	
यक्षमे मतस्नाभ्यां प्रीहो यवनस्ते वि वृहामसि	३
आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।	
यक्षमे कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या वि वृहामि ते	४
ऊरुभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां पार्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् ।	
यक्षमे भसद्यं श्रोणिभ्यां भासदं भंसो वि वृहामि ते	५
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनिभ्यः ।	
यक्षमे पाणिभ्यामङ्गुलिभ्यो नखेभ्यो वि वृहामि ते	६
अङ्गुलैः लोमिलोमि यस्ते पर्वणिपर्वणि ।	
यक्षमे त्वचस्यं ते वयं कश्यपस्य वीबर्हेण विष्वञ्चं वि वृहामसि	७ ३००

ओषधिवनस्पतयः । ( ३०१-४८२ )

॥४०॥ ( ऋ० १०।९।११-२३ )

आथर्वणो भिषग् । ओषधयः । अनुष्टुप् ।

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।	
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च	१
शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः ।	
अघा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत	२
ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रस्रवरीः ।	
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः	३
ओषधीरिति मातरस्तद् वो देवीरुषं बुवे ।	
सनेयमश्चं गां वास आत्मानं तव पूरुष	४ ३०४

अश्वत्थे वो निषदनं पूर्णे वो वसतिष्कृता ।	
गोभाज इत् किलासथ यत् सनवथ पूरुषम्	५ ३०५
यत्रौषधीः समगमत् राजानः समिताविव ।	
विप्रः स उच्यते भिषग् रक्षोहामीवचातनः	६
अश्वावतीं सोमावती—मूर्जयन्तीमुदौजसम् । अर्वित्ति सर्वा ओषधी—रस्मा अरिष्टतातये	७
उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते । धने सनिष्यन्तीना—मात्मानं तव पूरुष	८
इष्कृतिर्नाम वो माता ऽथो यूयं स्थ निष्कृतीः ।	
सीराः पतत्रिणीः स्थन यदामयति निष्कृथ	९
अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेन इव ब्रजमक्रमुः । ओषधीः प्राचुच्यवु—र्यत् किं च तन्वोऽरे रपः	१० ३१०
यदिमा वाजयन्नह—मोषधीर्हस्त आदुधे । आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा	११
यस्यौषधीः प्रसर्पथा—ङ्गमङ्गं परुष्परुः । ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव	१२
साकं यक्ष्म प्र पत चाषेण किकिदीविना ।	
साकं वार्तस्य ध्राज्या साकं नश्य निहाकया	१३
अन्या वो अन्यामव—त्वन्यान्यस्या उपावत ।	
ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः	१४
याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।	
बृहस्पतिप्रसूता—स्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः	१५ ३१५
मुञ्चन्तु मा शपथ्याऽ—दथो वरुण्यादुत ।	
अथो यमस्य पड्बीशात् सर्वस्माद् देवकिल्बिषात्	१६
अवपतन्तीरवदन् दिव ओषधयस्परि । यं जीवमश्रवामहै न स रिष्याति पूरुषः	१७
या ओषधीः सोमराज्ञी—बह्वीः शतविचक्षणाः । तासां त्वमस्युत्तमा—रं कामाय शं हृदे	१८
या ओषधीः सोमराज्ञी—विष्टिताः पृथिवीमनु । बृहस्पतिप्रसूता अस्यै सं दत्त वीर्यम्	१९
मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः । द्विपञ्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम्	२० ३२०
याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः । सर्वाः संगत्य वीरुधो ऽस्यै सं दत्त वीर्यम्	२१
ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मण—स्तं राजन् पारयामसि	२२
त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः ।	
उपस्तिरस्तु सोऽस्माकं यो अस्माँ अभिदासति	२३ ३२३

॥४१॥ ( अथर्व० ८।७।१-२८ )

अथर्वा । भैषज्यं, आयुष्यं, ओषधयः । अनुष्टुप्; २ उपरिष्टान्भ्रुग्वृहती; ३ पुर उष्णिक्; ४ पञ्चपदा  
परानुष्टुबतिजगती; ५-६, १०, २५ पथयापञ्चक्तिः ( ६ विराड्गर्भा भुरिक् ); ९ द्विपदार्ची  
भुरिगनुष्टुप्; १२ पञ्चपदा विराडतिशक्ती; १४ उपरिष्टान्भ्रुवृहती;  
२६ निचृत्; २८ भुरिक् ।

या बभ्रवो याश्च शुक्रा रोहिणीरुत पृश्रयः ।

असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छावदामसि १

त्रायन्तामिमं पुरुषं यक्ष्माद् देवेषितादधि ।

यासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समद्रो मूलं वीरुधां बभूव २ ३२५

आपो अग्रं दिव्या ओषधयः । तास्ते यक्ष्ममेनस्यं मङ्गादङ्गादनीनशन् ३

प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकशुङ्गाः प्रतन्वतीरोषधीरा वदामि ।

अंशुमतीः काण्डिन्या विशाखा ह्यामि ते वीरुधां वैश्वदेवीरुग्राः पुरुषजीवनीः ४

यद् वः सहः सहमाना वीर्यं यच्च वो बलम् ।

तेनेममस्माद् यक्ष्मात् पुरुषं मुञ्चतौषधीरथो कृणोमि भेषजम् ५

जीवलां नधारिषां जीवन्तीमोषधीमहम् ।

अरुन्धतीमुन्नयन्तीं पुष्पां मधुमतीमिह ह्रुवेऽस्मा अरिष्टातये ६

इहा यन्तु प्रचेतसो मेदिनीर्वचसो मम । यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि ७ ३३०

अग्नेर्घासो अपां गर्भो या रोहन्ति पुनर्नवाः ।

ध्रुवाः सहस्रनाम्नीभेषजीः सन्त्वाभृताः ८

अवकौल्बा उदकात्मान ओषधयः । व्युषिन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्गयः ९

उन्मुञ्चन्तीर्विवरुणा उग्रा या विषदूषणीः ।

अथो बलासनाशनीः कृत्यादूषणीश्च यास्ता इहा यन्त्वोषधीः १०

अपक्नीताः सहीयसीवीरुधो या अभिष्टुताः । त्रायन्तामस्मिन् ग्रामे गामश्च पुरुषं पशुम् ११

मधुमन्मूलं मधुमदग्रमासां मधुमन्मध्यं वीरुधां बभूव ।

मधुमत् पूर्णं मधुमत् पुष्पमासां मधोः संभक्ता अमृतस्य भक्षो घृतमन्नं दुहतां गोपुरोगवम् १२ ३३५

यावन्तीः कियतीश्चेमाः पृथिव्यामध्योषधीः । ता मां सहस्रपण्यां मृत्योर्ध्वञ्चन्त्वंहंसः १३

वैर्याग्नो मणिर्वीरुधां त्रायमाणोऽभिशस्तिपाः । अमीवाः सर्वा रक्षांस्यप हन्त्वाधि दूरमस्मत् १४

सिंहस्यैव स्तनथोः सं विजन्तेऽग्नेरिव विजन्त आभृताभ्यः ।

गवां यक्ष्मः पुरुषाणां वीरुद्भिरतिनुत्तो नान्या एतु स्रोत्याः १५ ३३८

मुमुक्षाना ओषधयोऽग्नेर्वैश्वानरादधि । भूमिं संतन्वतीरित यासां राजा वनस्पतिः	१६	
या रोहन्त्याङ्गिरसीः पर्वतेषु समेषु च । ता नः पर्यस्वतीः शिवा ओषधीः सन्तु शं हृदे	१७	३४०
याश्चाहं वेद वीरुधो याश्च पश्यामि चक्षुषा । अज्ञाता जानीमश्च या यासु विद्य च संभृतम्	१८	
सर्वाः समग्रा ओषधीर्वोधन्तु वचंसो मम । यथेमं पारयामसि पुरुषं दुरितादधि	१९	
अश्वत्थो दूर्धो वीरुधां सोमो राजामृतं हविः । त्रीहिर्यवश्च भेषजौ दिवस्पुत्रावमृत्यौ	२०	
उज्जिहीध्वे स्तनयत्यभिक्रन्दत्योषधीः । यदा वः पृश्निमातरः पर्जन्यो रेतसावति	२१	
तस्यामृतस्येमं बलं पुरुषं पाययामसि । अथो कृणोमि भेषजं यथासच्छतहायनः	२२	३४५
वराहो वेद वीरुधं नकुलो वेद भेषजीम् । सर्पा गन्धर्वा या विदुस्ता अस्मा अवसे हुवे	२३	
याः सुपर्णा आङ्गिरसीर्दिव्या या रघटो विदुः । वयांसि हंसा या विदुर्याश्च सर्वे पतत्रिणः ।		
मृगा या विदुरोषधीस्ता अस्मा अवसे हुवे	२४	
यावतीनामोषधीनां गावः प्राश्नन्त्यध्वन्या यावतीनामजावयः ।		
तावतीस्तुभ्यमोषधीः शर्म यच्छन्त्वाभृताः	२५	
यावतीषु मनुष्या भेषजं भिषजौ विदुः । तावतीर्विश्वभेषजीरा भरामि त्वाममि	२६	
पुष्पवतीः प्रस्रमतीः फलिनीरफला उत । समातरं इव दुहामस्मा अरिष्टतातये	२७	३५०
उत् त्वाहार्षं पञ्चशलादथो दशशलादुत । अथो यमस्य पद्मीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात्	२८	

॥४२॥ ( अथर्व० ६।९६।१-३ )

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः (चिकित्सा), ३ सोमः । अनुष्टुप्, ३ त्रिपदा विराणनाम गायत्री ।  
या ओषधयः सोमराज्ञीर्विह्वीः शतविचक्षणाः । बृहस्पतिप्रस्रतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहंसः १  
मुञ्चन्तु मा शपथ्याइदथो वरुण्यादुत ।

अथो यमस्य पद्मीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् २  
यच्चक्षुषा मनसा यच्च वाचोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।  
सोमस्तानि स्वधया नः पुनातु ३

॥४३॥ ( वा० य० ४।१; ५।४२; ६।१५ )  
( ओषधयः । )

ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैर्नः हिःसीः १

॥४४॥ ( वा० य० ११।४७-४८ )  
( ओषधयः । )

ओषधयः प्रतिमोदध्वमग्निमेतः शिवमायन्तमभ्यत्र युष्माः ४७ ३५६

ओषधयः प्रतिगृभ्णीत् पुष्पवतीः सुपिप्पलाः ।

अयं वो गर्भे ऽ ऋत्विर्यः प्रत्नः सधस्थमासदत्

४८

॥४५॥ ( वा० य० १२।७९;३५।४ )

( ओषधिः । )

अश्वत्थे वो निषदनं पणे वो वसतिष्कृता ।

गोभाज् ऽ इत्किलासथ यत् सनवथ पूरुषम्

७९

॥४६॥ ( वा० य० १८।३२-३४ )

( अन्नम् । )

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वा परावतः ।

वाजो नो विश्वेदेवैर्धनसाताविहावतु

३२

वाजो नो ऽ अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाँऽ ऋतुभिः कल्पयाति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा ऽ आशा वाजपतिर्जयेयम्

३३

३६०

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति ।

वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा ऽ आशा वाजपतिर्भवेयम्

३४

॥४७॥ ( ऋ० १।९०।६ )

गोतमो राहूगणः । विश्वे देवाः ( वानसिन्धोषधयः ) । गायत्री ।

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः

६

॥४८॥ ( ऋ० ३।५७।३ )

गाथिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः ( ओषधयः सूर्यमरीचयो वा ) । त्रिष्टुप् ।

या जामयो वृष्णा इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन् ।

अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति भिभ्रतं वपूषि

३

॥४९॥ ( अथर्व० ३।१८।१-६ )

अथर्वा । वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ४ अनुष्टुभर्भा चतुष्पदा उष्णिक्, ६ उष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः ।

इमां खनाभ्योषधिं वीरुधां बलवत्तमाम् । यया सपत्नीं वाधते यया संविन्दते पतिम् १

उत्तानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वति । सपत्नीं मे परां शुद्र पतिं मे केवलं कृधि २

३६५

नहि ते नाम जग्राह नो अस्मिन् रमसे पतौ । परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ३

उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः । अधः सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः ४

अहमस्मि सहमानाथो त्वमसि सासहिः । उभे सहस्वती भूत्वा सपत्नीं मे सहावहैः ५

३६८

अभि तैऽधां सहमानामुप तेऽधां सहीयसीम् ।

मामनु प्र ते मनो वृत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु

६

॥५०॥ ( वा० य० ५।४२-४३ )

( वनस्पतिः । )

अत्यन्याँऽऽ अगां नान्याँऽऽ उपांगामुर्वाक् त्वा परेभ्योऽविदं पुरोऽवरेभ्यः ।

तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै देवास्त्वा देवयज्यायै जुषन्तां विष्णवे त्वा ।

ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनं हिंसीः

४२ ३७०

द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हिंसीः पृथिव्या सम्भव ।

अयं हि त्वा स्वधितिस्तेतिजानः प्रणिनायं महते सौभगाय ।

अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा वि वयं रुहेम

४३

॥५१॥ ( वा० य० २०।४५ )

( वनस्पतिः । )

वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्त्वान्या समञ्जच्छमिता न देवः ।

इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन

४५

॥५२॥ ( वा० य० २१।२१ )

( वनस्पतिः । )

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।

ककुप् छन्दं ऽ इहेन्द्रियं वशा वेहद् वयो दधुः

२१

॥५३॥ ( वा० य० २७।२१ )

( वनस्पतिः । )

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्त्वना देवेषु । अग्निर्हव्यं शमिता स्रदयाति

२१

॥५४॥ ( वा० य० २८।१०, ३३, ४३ )

( वनस्पतिः । )

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।

मध्वां समञ्जन् पृथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यजं १०

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं हिरण्यपर्णमुक्थिनं रशनां विभ्रतं

वाशै भगमिन्द्रं वयोधसम् ।

ककुभं छन्दं ऽ इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं

३३

३७६





अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति ।	
अश्मानस्तस्यां दुग्धायी बहुलाः फट् करिक्रति	३ ३९०
सहस्रधामन् विशिखान् विग्रीवां छायया त्वम् ।	
प्रति स्म चक्रुषे कृत्यां प्रियां प्रियावते हर	४
अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम् ।	
यां क्षेत्रे चक्रुर्या गोषु यां वां ते पुरुषेषु	५
यश्चकार न शशाककर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः ६	
अपामार्गोऽपं मार्ष्टुं क्षेत्रियं शपथश्च यः । अपाह यातुधानीरप सर्वा अराग्यः ७	
अपमृज्य यातुधानानप सर्वा अराग्यः । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ८	३९५

॥५८॥ ( अथर्व० ४।१९।१-८ )

शुक्रः । अपामार्गो वनस्पतिः । अनुष्टुप्, २ पथ्यापङ्क्तिः ।

उतो अस्यबन्धुकृदुतो असि नु जामिकृत् ।	
उतो कृत्याकृतः प्रजां नडमिवा छिन्धि वार्षिकम्	१
ब्राह्मणेन पर्युक्तासि कण्वेन नार्षदेन ।	
सेनेवैषि त्विषीमती न तत्र भयमस्ति यत्र प्राप्नोष्योषधे	२
अग्रमेण्योषधीनां ज्योतिषेवाभिदीपयन् । उत त्रातासि पाकस्यार्थो हन्तासि रक्षसः	३
यदुदो देवा असुरांस्त्वयाग्रे निरकुर्वत । ततस्त्वमध्योषधेऽपामार्गो अजायथाः	४
विभिन्दुती शतशाखा विभिन्दन् नाम ते पिता ।	
प्रत्यग् वि भिन्धि त्वं तं यो अस्मां अभिदासति	५ ४००
असद् भूम्याः समभवत् तद् यामेति महद् व्यचः ।	
तद् वै ततो विधूपायत् प्रत्यक् कर्तारमृच्छतु	६
प्रत्यङ् हि संबभूविथ प्रतीचीनफलस्त्वम् । सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया वधम् ७	
शतेन मा परि पाहि सहस्रेणाभि रक्ष मा । इन्द्रस्ते वीरुधां पत उग्र ओजमानमा दधत् ८	

॥५९॥ ( अथर्व० ७।६५।१-३ )

शुक्रः । अपामार्गवीरुत् ( दुरितनाशनम् ) । अनुष्टुप् ।

प्रतीचीनफलो हि त्वमपामार्ग रुरोर्हित्थ । सर्वान् मच्छपथां अधि वरीयो यावया इतः १	
यद् दुष्कृतं यच्छमलं यद् वां चेरिम पापया । त्वया तद् विश्वतोमुखापामार्गार्पं मृज्महे २	
अयावदंता कनखिनां वण्डेन यत सहासिम । अपामार्ग त्वया वयं सर्वं तदपं मृज्महे ३	४०६

॥६०॥ ( अथर्व० ६।५९।१-३ )

अथर्वा । रुद्रः, अरुन्धती औषधिः । अनुष्टुप् ।

अनुडुद्धयस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वमरुन्धति । अधेनवे वयंसु शर्म यच्छ चतुष्पदे १  
शर्म यच्छत्वोषधिः सह देवीररुन्धती । करत् पर्यस्वन्तं गोष्ठमयुक्ष्मां उत पूरुषान् २  
विश्वरूपां सुभगां मच्छावदामि जीविलाम् । सा नो रुद्रस्यास्तां हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः ३

॥६१॥ ( अथर्व० ६।९५।१-३ )

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः ( कुष्ठोषधिः ) । अनुष्टुप् ।

अश्वत्थो देवसदनस्तुतीर्यस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षणं देवाः कुष्ठमवन्वत १ ४१०  
हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यवन्धना दिवि । तत्रामृतस्य पुष्यं देवाः कुष्ठमवन्वत २  
गर्भो अस्योषधीनां गर्भो हिमवतामुत । गर्भो विश्वस्य भूतस्येमं मे अगदं कृधि ३

॥६२॥ ( अथर्व० ६।१०९।१-३ )

अथर्वा । पिप्पली-भेषज्यं, आयुः । अनुष्टुप् ।

पिप्पली क्षिप्तभेषज्युः तार्तिविद्धभेषजी । तां देवाः समकल्पयन्नियं जीवित्वा अलम् १  
पिप्पल्यंशुः समवदन्तायतीर्जननादधि । यं जीवमश्रवामहै न स रिष्याति पूरुषः २  
असुरास्त्वा न्यखिनन् देवास्त्वोदवपन् पुनः । वातीकृतस्य भेषजीमथो क्षिप्तस्य भेषजीम् ३ ४१५

॥६३॥ ( अथर्व० २।२५।१-५ )

चातनः । पृश्निपर्णी वनस्पतिः । अनुष्टुप्, ४ भुरिक् ।

शं नो देवी पृश्निपर्ण्यंशं निर्रेत्या अकः ।  
उग्रा हि कण्वजम्भनी तामभक्षि सहस्वतीम् १  
सहमानेयं प्रथमा पृश्निपर्ण्यजायत । तयाहं दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि शकुनेरिव २  
अरायमसृक् पावानं यश्च स्फातिं जिहीर्षति ।  
गर्भादं कण्वं नाशय पृश्निपर्णिं सहस्व च ३  
गिरिमेनां आ वेशय कण्वान् जीवितयोर्पनान् ।  
तांस्त्वं देवि पृश्निपर्ण्यग्निरिवानुदहन्निहि ४  
पराच एनान् प्र णुदु कण्वान् जीवितयोर्पनान् ।  
तमांसि यत्र गच्छन्ति तत् क्रव्यादो अजीगमम् ५

॥६४॥ ( अथर्व० ४।१२।१-७ )

ऋभुः । रोहणी वनस्पतिः । अनुष्टुप्, १ त्रिपदा गायत्री, त्रिपदा यवमध्या  
भुरिगायत्री, ७ बृहती ।

रोहण्यसि रोहण्यश्रच्छिन्नस्य रोहणी । रोहयेदमरुन्धति १ ४२१

यत् ते रिष्टं यत् ते द्युत्तमस्ति पेष्टं त आत्मनि ।	
धाता तद् भद्रया पुनः सं दधत् परुषा परुः	२
सं ते मज्जा मज्जा भवतु समु ते परुषा परुः ।	
सं ते मांसस्य विस्रस्तं समस्थयपि रोहतु	३
मज्जा मज्जा सं धीयतां चर्मणा चर्म रोहतु ।	
असृक् ते अस्थि रोहतु मांसं मांसेन रोहतु	४
लोम लोम्ना सं कल्पया त्वचा सं कल्पया त्वचम् ।	
असृक् ते अस्थि रोहतु च्छिन्नं सं धेहोषधे	५ ४२५
स उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रव रथः सुचक्रः सुपविः सुनाभिः । प्रति तिष्ठोर्ध्वः	६
यदि कर्तं पतित्वा संश्रे यदि वाश्मा प्रहतो जघान ।	
ऋभू रथस्येवाङ्गानि सं दधत् परुषा परुः	७

॥६५॥ ( अथर्व० ५।५।१-९ )

अथर्वा । लाक्षा । अनुष्टुप् ।

रात्री माता नभः पितार्यमा ते पितामहः ।	
सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा	१
यस्त्वा पिबति जीवति त्रायसे पुरुषं त्वम् ।	
भर्त्री हि शश्वतामसि जनानां च न्यञ्चनी	२
वृक्षंवृक्षमा रोहसि वृषण्यन्तीव कन्यला । जयन्ती प्रत्यातिष्ठन्ती स्पर्णी नाम वा असि	३ ४३०
यद् दण्डेन यदिष्वा यद् वारुहरसा कृतम् ।	
तस्य त्वमसि निष्कृतिः सेमं निष्कृधि पूरुषम्	४
भद्रात् प्लक्षान्निस्तिष्ठस्यश्चत्थात् खदिराद्रवात् ।	
भद्राक्यग्रोघात् पर्णात् सा न एह्यरुन्धति	५
हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्यवर्णे वपुष्टमे । रुतं गच्छासि निष्कृते निष्कृतिर्नाम वा असि	६
हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे लोमशवक्षणे । अपामसि स्वसा लाक्षे वातो हात्मा ऋभूव ते	७
सिलाची नाम कानीनोऽजबभ्रु पिता तव ।	
अश्वो यमस्य यः श्यावस्तस्य हास्त्रास्युक्षिता	८
अश्वस्यास्त्रः संपतिता सा वृक्षा अभि सिष्यदे ।	
सरा पतत्रिणी भूत्वा सा न एह्यरुन्धति	९ ४३६

॥६६॥ ( अथर्व० ५।४।१-१० )

भृग्वङ्गिराः । कुष्ठो, यक्ष्मनाशनम् ( कुष्ठतकमनाशनम् ) । अनुष्टुप्, ५ भुरिक्, ६ गायत्री,  
१० उष्णिग्गर्भा निचुत् ।

यो गिरिष्वजायथा वीरुधां बलवत्तमः । कुष्ठेहिं तकमनाशन तकमानं नाशयन्नितः १  
सुपर्णसुवने गिरौ जातं हिमवतस्परिं । धनैरभि श्रुत्वा यन्ति विदुहिं तकमनाशनम् २  
अश्वत्थो देवसर्दनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षणं देवाः कुष्ठमवन्वत ३  
हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य पुष्पं देवाः कुष्ठमवन्वत ४ ४४०  
हिरण्ययाः पन्थान आसन्नरित्राणि हिरण्यया ।  
नावो हिरण्ययीरासन् याभिः कुष्ठं निरावहन् ५  
इमं मे कुष्ठं पूरुषं तमा वहं तं निष्कुरु । तमु मे अगदं कृधि ६  
देवेभ्यो अर्धि जातोऽसि सोमस्यासि सखा हितः ।  
स प्राणायं व्यानाय चक्षुषे मे अस्मै मूढ ७  
उदङ् जातो हिमवतः स प्राच्यां नीयसे जनम् ।  
तत्र कुष्ठस्य नामान्युत्तमानि वि भैजिरे ८  
उत्तमो नाम कुष्ठास्युत्तमो नाम ते पिता ।  
यक्ष्मं च सर्वं नाशयं तकमानं चारुसं कृधि ९ ४४५  
शीर्षामयमुपहत्यामक्षयोस्तन्वोऽरे रपः । कुष्ठस्तत् सर्वं निष्करद् दैवं समह वृष्ण्यम् १०

॥६७॥ ( अथर्व० १९।३९।१-१० )

भृग्वङ्गिराः । कुष्ठः ( कुष्ठनाशनम् ) । अनुष्टुप्, २, ३ इयवसाना पथ्यापङ्क्तिः; ४ पदपदा  
जगती; ५ सप्तपदा शकरी; ६-८ अष्टिः ( ५-८ चतुरवसाना ) ।

एतुं देवस्त्रायमाणः कुष्ठो हिमवतस्परिं । तकमानं सर्वं नाशयं सर्वाश्च यातुधान्यः १  
त्रीणि ते कुष्ठं नामानि नद्यमारो नद्यारिषः । नद्यायं पूरुषो रिषत् ।  
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवां २  
जीवला नाम ते माता जीवन्तो नाम ते पिता । नद्यायं पूरुषो रिषत् ।  
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवां ३  
उत्तमो अस्योर्षधीनामनङ्गान् जगतामिव व्याघ्रः श्वर्षदामिव । नद्यायं पूरुषो रिषत् ।  
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवां ४ ४५०  
दे० [ आयुर्वेद० ] ५

त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यस्त्रिरादित्येभ्यस्परिं । त्रिर्जातो विश्वदेवेभ्यः ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ५

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि । तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ६

हिरण्ययी नौरचरद्विरण्यबन्धना दिवि । तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ७

यत्र नावप्रभ्रंशनं यत्र हिमवतः शिरः । तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।

स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति ।

तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ८

यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं वा त्वा कुष्ठ काम्यः ।

यं वा वसो यमात्स्यस्तेनासि विश्वभेषजः ९ ४५५

शीर्षिलोकं तृतीयकं सदुन्दिर्यश्च हायनः । तक्मानं विश्वधावीर्याधुराञ्च परां सुव १०

॥६८॥ (अथर्व० ६।२१।१-३)

शन्तातिः । चन्द्रमाः (केशवर्धनी औषधिः) । अनुष्टुप् ।

इमा यास्तिस्त्रः पृथिवीस्तासां ह भूमिरुत्तमा ।

तासामधि त्वचो अहं भेषजं समुं जग्रभम् १

श्रेष्ठमसि भेषजानां वसिष्ठं वीरुधानाम् । सोमो भग इव यामेषु देवेषु वरुणो यथा २

रेवतीरनाधृषः सिषासर्वः सिषासथ । उत स्थ केशदृहणीरथो ह केशवर्धनीः ३

॥६९॥ (अथर्व० ६।१३६।१-३)

वीतहव्यः । नितली वनस्पतिः (केशदृहणम्) । अनुष्टुप्, २ एकावसाना द्विपदा साङ्गी बृहती ।

देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे ।

तां त्वां नितलि केशेभ्यो दृहणाय खनामसि १ ४६०

दृहं प्रलान् जनयाजातान् जातानु वर्षीयसस्कृधि २

यस्ते केशोऽवपद्यते समूलो यश्च वृश्चते । इदं तं विश्वभेषज्यामि विश्वामि वीरुधा ३ ४६२

॥७०॥ ( अथर्व० ६।१३७।१-३ )

वीतहव्यः । वनस्पतिः ( केशवर्धनम् ) । अनुष्टुप् ।

यां जुमदमिरखनद् दुहित्रे केशवर्धनीम् । तां वीतहव्य आभरदसितस्य गृहेभ्यः १  
अभीशुना मेया आसन् व्यामेनानुमेयाः । केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि २  
दंह मूलमाग्रे यच्छ वि मध्यं यामयौषधे । केशा नडा इव वर्धन्तां शीर्ष्णस्ते असिताः परि ३ ४६५

॥७१॥ ( अथर्व० ६।१६।१-४ )

शौनकः । चन्द्रमाः, मन्त्रोक्तदेवताः ( अक्षिरोगभैषजम् ) । अनुष्टुप्, १ निचृत्त्रिपदा गायत्रीः  
३ बृहतीगर्भा ककुम्मत्यनुष्टुप्, ४ त्रिपदा प्रतिष्ठा ।

आवयो अनावयो रसस्त उग्र आवयो । आ ते कर्मभमन्नसि १  
विहहो नाम ते पिता मदावती नाम ते माता । स हि न त्वमसि यस्त्वमात्मानमावयः २  
तौर्विलिकेऽवैलयावायमैलव ऐलयीत् । बभ्रुश्च बभ्रुर्कर्णश्चापेहि निराल ३  
अलसालामि पूर्वा सिलाञ्जालास्युत्तरा । नीलामलसाला ४

॥७२॥ ( अथर्व० ६।३०।१-३ )

उपरिबभ्रवः । शमी ( पापशमनम् ) । जगती, २ त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पाच्छकुमत्यनुष्टुप् ।

देवा इमं मधुना संयुतं यवं सरस्वत्यामधि मणावचक्रुषुः ।  
इन्द्र आसीत् सीरंपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः १ ४७०  
यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो येनाभिहस्यं पुरुषं कृणोषि ।  
आरात् त्वदन्या वनानि वृक्षि त्वं शमि शतवल्शा वि रोह २  
बृहत्पलाशे सुभगे वर्षवृद्ध ऋतावारि । मातेव पुत्रेभ्यो मृड केशेभ्यः शमि ३

॥७३॥ ( ऋ० १।९०।८ )

गोतमो राहगणः । विश्वे देवाः ( वनस्पतिसूर्यगावः ) । गायत्री ।

मधुमात्रो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ८

॥७४॥ ( ऋ० १०।८५।२-४ )

मावित्री सूर्या ऋषिका । सोमः । अनुष्टुप् ।

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही ।  
अथो नक्षत्राणामेपा—मुपस्थे सोम आहितः १  
सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिषन्त्योषधिम् ।  
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ३ ४७५

आच्छद्विधानैर्गुपितो बर्हितैः सोम रक्षितः ।

ग्राव्णामिच्छृण्वन् तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः

४

॥७५॥ ( ऋ० १।९।१६ )

गोतमो राहूगणः । सोमवनस्पतिः । गायत्री ।

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः

६

॥७६॥ ( अथर्व० १।३४।१-५ )

अथर्वा । मधुवनस्पतिः (मधुविद्या) । अनुष्टुप् ।

इयं वीरुन्मधुजाता मधुना त्वा खनामसि ।

मधोरधि प्रजातासि सा नो मधुमतस्कृधि

१

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम् ।

ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि

२

मधुमन्मे निकर्मणं मधुमन्मे परायणम् ।

वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः

३

४८०

मधोरस्मि मधुतरो मदुघ्नन्मधुमत्तरः ।

मामित् किल त्वं वनाः शाखां मधुमतीमिव

४

परिं त्वा परितन्नुनेक्षुणागामविद्विपे । यथा मां कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः

५ ४८१

रोगचिकित्सा । (४८३ ६८०)

॥७७॥ ( अथर्व० ६।१४।१-३ )

वध्रुपिङ्गलः । बलासः ( बलासनाशनम् ) । अनुष्टुप् ।

अस्थिसंसं परुसंममास्थितं हृदयामयम् । बलासं सर्वं नाशयाङ्गेष्टा यश्च पर्वसु

१

निर्वलासं बलासिनः क्षिणोमि मुष्करं यथा । छिनदयस्य बन्धनं मूलमुर्वावा इव

२

निर्वलासेतः प्र पंताशुंगः शिशुको यथा । अथो इट इव हायनोप द्राव्यवीरहा

३

४८५

॥७८॥ (अथर्व० ६।१०५।१-३)

उन्मोचनः । कासा ( कासशमनम् ) । अनुष्टुप् ।

यथा मनो मनस्केतैः परापतत्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत मनसोऽनु प्रवाय्यम्

१

यथा बाणः सुसंशितः परापतत्याशुमत् । एवा त्वं कासे प्र पत पृथिव्या अनु संवतम्

२

यथा सूर्यस्य रश्मयः परापतन्त्याशुमत् । एवा त्वं कामे प्र पत समुद्रस्यानु विक्षरम्

३

४८८

॥७९॥ ( अथर्व० १।२२।१-४ )

ब्रह्मा । सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च ( हृद्रोग-कामिला-नाशनम् ) । अनुष्टुप् ।

अनु सूर्यमुदयतां हृद्योतो हरिमा च ते ।

गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि १

परि त्वा रोहितैर्वर्णैर्दीर्घायुत्वाय दध्मसि । यथायमरपा असदथो अहरितो भुवत् २ ४९०

या रोहिणीर्देवत्याश्च गावो या उत रोहिणीः ।

रूपंरूपं वयोवयस्ताभिद्ध्वा परि दध्मसि ३

शुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि ४

॥८०॥ ( अथर्व० २।८।१-५ )

भृग्वङ्गिराः । वनस्पतिः, यक्षमनाशनम् ( क्षेत्रियरोगनाशनम् ) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः, ४ विराट्, ५ निचृत्पथ्यापङ्क्तिः ।

उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके । वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् १

अपेयं रात्र्युच्छत्वपोच्छन्त्वभिकृत्वंरीः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु २

बभ्रोरर्जुनकाण्डस्य यवस्य ते पलाल्या तिलस्य तिलपिड्या ।

वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ३ ४९५

नमस्ते लाङ्गलेभ्यो नम ईषायुगेभ्यः । वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ४

नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो नमः संदेश्येभ्यः ।

नमः क्षेत्रस्य पतये वीरुत् क्षेत्रियनाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु ५

॥८१॥ ( अथर्व० ६।१३।१-५ )

अथर्वा । वनस्पतिः ( क्लीबत्वम् ) । अनुष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमाभिभ्रुतास्योषधे । इमं मे अद्य पूरुषं क्लीबमोपशिनं कृधि १

क्लीबं कृध्योपशिनमथो कुरीरिणं कृधि । अथास्येन्द्रो प्रावभ्यामुभे भिनत्त्राण्ड्यौ २

क्लीबं क्लीबं त्वाकरं वध्रे वध्रि त्वाकरमरसारसं त्वाकरम् ।

कुरीरमस्य शीर्षणि कुम्भं चाधिनिदध्मसि ३ ५००

ये ते नाड्यौ देवकृते ययोस्तिष्ठति वृष्यम् । ते ते भिनन्नि शम्ययामुष्या अधि मुष्कयोः ४

यथा नडं कृशिपुने स्त्रियो भिन्दन्त्यश्मना । एवा भिनन्नि ते शेपोऽमुष्या अधि मुष्कयोः ५

॥८२॥ ( अथर्व० ७।७४।१-४ )

अथर्वाङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः, ४ जातवेदाः ( गण्डमालाचिकित्सा ) । अनुष्टुप् ।

अपचित्तां लोहिनीनां कृष्णा मातेति शुश्रुम । मुनेर्देवस्य मूलेन सर्वा विध्यामि ता अहम् १ ५०३



विध्याम्यासां प्रथमां विध्याम्युत मध्यमाम् । इदं जघन्यामिासामा च्छिनन्नि स्तुकाभिव २  
 त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि त ईर्ष्याममीमदम् । अथो यो मन्युष्टे पते तमु ते शमयामसि ३ ५०५  
 व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।  
 तं त्वा वयं जातवेदुः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे ४

॥८३॥ ( अथर्व० ७।७६।१-६ )

अथर्वा । १,२ अपचिद्धैपज्यं, ३-६ जायान्यः, इन्द्रः, ( गण्डमालाचिकित्सा ) । अनुष्टुप्, १ विराट्,  
 २ परोष्णिक्, ३ त्रिष्टुप्, ५ भुगिगनुष्टुप् ।

आ सुस्रसः सुस्रसो असतीभ्यो असत्तराः । सेहोररसतरा लवणाद् विक्केदीयसीः १  
 या ग्रैव्या अपचितोऽथो या उपपक्ष्याः । विजाम्नि या अपचितः स्वयंस्रसः २  
 यः कीकसाः प्रशृणाति तलीधमवतिष्ठति । निर्हास्तं सर्वं जायान्यं यः कश्च ककुदि श्रितः ३  
 पक्षी जायान्यः पतति स आ विशति पूरुषम् । तदक्षितस्य भेषजमुभयोः सुक्षतस्य च ४ ५१०  
 विभ्र वै ते जायान्य जानं यतो जायान्य जायसे । कथं ह तत्र त्वंहनो यस्य कृणो हविर्गृहेऽ  
 धृषत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।  
 माध्यन्दिने सर्वान् आ वृषस्व रयिष्ठानो रयिमस्मासु धेहि ६

॥८४॥ ( अथर्व० ६।८३।१-४ )

भगः । १ सूर्यः चन्द्रमाः, २ रोहिणी, ३ रामायणी ( भैषज्यम् ) । अनुष्टुप्, ४ एकावसाना  
 छिपदा निचृदार्यनुष्टुप् ।

अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसतेरिव । सूर्यः कृणोतु भेषजं चन्द्रमा वोऽपौच्छतु १  
 एन्येका श्येन्येका कृष्णैका रोहिणी द्वे । सर्वसामग्रभं नामावीरघ्नीरपेतन २  
 असूर्तिका रामायण्यपचित् प्र पतिष्यति ।  
 ग्लौरितः प्र पतिष्यति स गलुन्तो नशिष्यति ३ ५१५  
 वीहि स्वामाहुतिं जुषाणो मनसा स्वाहा मनसा यदिदं जुहोमि ४

॥८५॥ ( अथर्व० १।२३।१-४ )

अथर्वा । घनस्पतिः [ असिक्लिः ] ( श्वेतकृष्णाशनम् ) । अनुष्टुप् ।

नक्तंजातास्योषधे रामे कृष्णे असिक्विन च ।  
 इदं रंजनि रजय किलासं पलितं च यत् १  
 किलासं च पलितं च निरितो नाशया पृषत् ।  
 आ त्वा स्वो विशतां वर्णः परां शुक्लानि पातय २  
 असितं ते प्रलर्यनमास्थानममितं तव । असिक्न्यस्योषधे निरितो नाशया पृषत् ३ ५१९

अस्थिजस्य किलासस्य तनूजस्य च यत् त्वचि ।

दूष्या कृतस्य ब्रह्मणा लक्ष्मं श्वेतमनीनशम्

४ ५२०

॥८६॥ ( अथर्व० १।२४।१-४ )

ब्रह्मा । आसुरी वनस्पतिः ( श्वेतकुष्ठनाशनम् ) । अनुष्टुप्, २ निचृत्पथ्यापहृक्तिः ।

सुपर्णो जातः प्रथमस्तस्य त्वं पित्तमासिथ ।

तदासुरी युधा जिता रूपं चक्रे वनस्पतीन्

१

आसुरी चक्रे प्रथमेदं किलासभेषजमिदं किलासनाशनम् ।

अनीनशत् किलासं सरूपामकरत् त्वर्चम्

२

सरूपा नाम ते माता सरूपो नाम ते पिता ।

सरूपकृत् त्वमोषधे सा सरूपमिदं कृधि

३

श्यामा सरूपंकरणी पृथिव्या अध्येद्भृता । इदम् पु प्र साधय पुना रूपाणि कल्पय ४

॥८७॥ ( अथर्व० १।२५।१-४ )

भृग्वक्त्रिः । यक्षमनाशनोऽग्निः ( ज्वर-नाशनम् ) । त्रिष्टुप्, २-३ विराड्गर्भा, ४ पुरोऽनुष्टुप् ।

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमांसि ।

तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृद्धिं तक्मन्

१

५२५

यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः शकल्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।

हूडुर्नामांसि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृद्धिं तक्मन्

२

यदि शोको यदि वाभिः शोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।

हूडुर्नामांसि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृद्धिं तक्मन्

३

नमः शीतार्यं तक्मने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।

यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने

४

॥८८॥ ( अथर्व० ७।११६।१-२ )

अथर्वाङ्गिराः । चन्द्रमाः ( ज्वर-नाशनम् ) १ पुरोष्णिक्, २ एकावसाना द्विपदा आर्च्यनुष्टुप् ।

नमो रूराय च्यवनाय नोदनाय धृष्णवे । नमः शीतार्यं पूर्वकामकृत्वने

१

या अन्येद्युरुभयद्युरभ्येतीमं मण्डूकमभ्येत्स्वित्तः

२

॥८९॥ ( अथर्व० ५।२२।१-२४ )

भृग्वक्त्रिः । तक्मनाशनः । अनुष्टुप्, १ भुरिक् त्रिष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ५ विराट् पथ्याबृहती ।

अग्निस्तक्मानमर्षं बाधतामितः सोमो ग्रावा वरुणः पूतदक्षाः ।

वेदिर्बहिः समिधः शोशुचाना अप द्वेषांस्यमुया भवन्तु

१

५३१

अयं यो विश्वान् हरितान् कृणोष्युच्छोचयन्नाग्निरिवाभिदुन्वन् ।	
अथा हि तक्मन्नरसो हि भूया अथा न्यङ्कुधराड् वा परेहि	२
यः परुषः पारुषेयोऽवध्वंस इवारुणः । तक्मानं विश्वधावीर्याधराश्रं परां सुव	३
अधराश्रं प्र हिणोमि नमः कृत्वा तक्मने । शकम्भरस्य मुष्टिहा पुनरेतु महावृषान् ४	
ओको अस्य मूर्जवन्त ओको अस्य महावृषाः ।	
यावज्जातस्तक्मंस्तावानसि बल्लिकेषु न्योचरः	५ ५३५
तक्मन् व्यलि वि गदु व्यङ्ग भूरि यावय ।	
दासीं निष्टकरीमिच्छ तां वज्रैण समर्पय	६
तक्मन् मूर्जवतो गच्छ बल्लिकान् वा परस्तराम् ।	
शूद्रामिच्छ प्रफर्व्ये तां तक्मन् वीवि धूनुहि	७
महावृषान् मूर्जवतो बन्ध्वद्वि परेत्ये । प्रैतानि तक्मने ब्रूमो अन्यक्षेत्राणि वा इमा ८	
अन्यक्षेत्रे न रमसे वशी सन्मृडयासि नः ।	
अभूदु प्रार्थिस्तक्मा स गमिष्यति बल्लिकान्	९
यत् त्वं शीतोऽथो रुरः सह कासावैषयः ।	
भीमास्ते तक्मन् हेतयस्ताभिः स्म परि वृङ्गि नः	१० ५४०
मा स्मैतान्तसखीन् कुरुथा बलासे कासमुद्युगम् ।	
मा स्मातोऽर्वाडैः पुनस्तत् त्वा तक्मन्नुप ब्रुवे	११
तक्मन् भ्रात्रा बलासेन स्वस्रा कारिकया सह ।	
पाप्मा भ्रातृव्येण सह गच्छामुमरणं जनम्	१२
तृतीयकं वितृतीयं सन्दुन्दिमुत् शरदम् ।	
तक्मानं शीतं रुरं ग्रैष्मं नाशय वार्षिकम्	१३
गन्धारिभ्यो मूर्जवद्भ्योऽङ्गैभ्यो मगधेभ्यः ।	
प्रैष्यन् जनमिव शेवधिं तक्मानं परि दन्नसि	१४

॥९०॥ ( क्र० १५०।११-१३ )

प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः ( रोगघ्न्य उपनिषद्, १३ अन्त्योऽर्धर्चः द्विषद्गन्ध ) । अनुष्टुप् ।

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवंम् । हद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय	११ ५४५
शुकैषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि	१२
उदंगादुयमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम्	१३ ५४७

॥९१॥ (अथर्व० ४।१३।१-७)

शन्तातिः । चन्द्रमाः, विश्वे देवाः, १ देवाः, २-३ वातः, ४ मरुतः, ६-७ हस्तः, (रोगनिवारणम्) । अनुष्टुप् ।

उत देवा अर्वाहितं देवा उन्नयथा पुनः । उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः १

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः ।

दक्षं ते अन्य आवातु व्युन्यो वातु यद् रपः २

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः ।

त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईर्यसे ३ ५१०

त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ४

आ त्वागमं शन्तातिभिरथो अरिष्टतातिभिः ।

दक्षं त उग्रमाभारिषं परा यक्षमं सुवामि ते ५

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः । अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिर्मर्शनः ६

हस्ताभ्यां दर्शशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।

अनामयित्नुभ्यां हस्ताभ्यां ताभ्यां त्वाभि मृशामसि ७

॥९२॥ (अथर्व० १।१७।१-४)

ब्रह्मा । योषितः धमन्यश्च ( रुधिरस्त्रावनिवृत्तये धमनीबन्धनम् ) । अनुष्टुप्, १ भुरिगनुष्टुप्,  
४ त्रिपदा र्षी गायत्री ।

अमूर्या यन्ति योषितो हिरा लोहितवाससः ।

अभ्रातर इव जामयस्तिष्ठन्तु हतवर्चसः १ ५११

तिष्ठावरे तिष्ठ पर उत त्वं तिष्ठ मध्यमे ।

कनिष्ठिका च तिष्ठति तिष्ठादिद्धमनिर्मही २

शतस्य धमनीनां सहस्रस्य हिराणाम् । अस्थुरिन्मध्यमा इमाः साकमन्ता अरंसत ३

परि वः सिकतावती धनूर्ध्वहृत्यक्रिमीत् । तिष्ठतेलयता सु कम् ४

॥९३॥ (अथर्व० ६।४४।१-३)

विश्वामित्रः । वनस्पतिः ( रोगनाशनम् ) । अनुष्टुप्, ३ त्रिपदा महाबृहती ।

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिव्यस्थाद् विश्वमिदं जगत् ।

अस्थुर्वृक्षा ऊर्ध्वस्वप्नास्तिष्ठाद् रोगो अयं तव १

शतं या भेषजानि ते सहस्रं संगतानि च । श्रेष्ठमास्त्रावभेषजं वसिष्ठं रोगनाशनम् २

रुद्रस्य मूत्रमस्यमृतस्य नाभिः ।

विषाणका नाम वा असि पितृणां मूलादुत्थिता वातीकृतनाशनी ३ ५६१

दे० । आयुर्वेद० । ६

॥९४॥ ( अथर्व० ६।५२।१-३ )

भागलिः । १ सूर्यः, २ गाघः, ३ भेषजम् । अनुष्टुप् ।

उत् सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्ध्वन् । आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १  
नि गावो गोष्ठे असदुन् नि मृगासो अविक्षत । न्यूङ्मयो नदीनां न्युष्टा अलिप्तत २  
आयुर्ददं विपश्चितं श्रुतां कण्वस्य वीरुधम् । आभारिषं विश्वभेषजीमस्यादृष्टान् नि शमयत् ३

॥९५॥ ( अथर्व० २।३।१-६ )

आङ्गिराः । भेषज्यं, आयुः, धन्वन्तरिः, ( आस्त्रावस्य भेषजम् ) । अनुष्टुप्, ६ त्रिपदा  
स्वराडुपरिष्ठान्महावृहती ।

अदो यदवधावत्यवत्कमधि पर्वतात् ।

तत् ते कृणोमि भेषजं सुभेषजं यथासंसि १ ५६५

आदुङ्गा कुविदुङ्गा शतं या भेषजानि ते ।

तेषामसि त्वमुत्तममनास्त्रावमरोगणम् २

नीचैः खनन्त्यसुरा अरुस्त्राणमिदं महत् ।

तदास्त्रावस्यं भेषजं तदु रोगमनीनशत् ३

उपजीका उद् भरन्ति समुद्रादधि भेषजम् ।

तदास्त्रावस्यं भेषजं तदु रोगमशीशमत् ४

अरुस्त्राणमिदं महत् पृथिव्या अध्युद्धृतम् ।

तदास्त्रावस्यं भेषजं तदु रोगमनीनशत् ५

शं नो भवन्त्वप ओषधयः शिवाः ।

इन्द्रस्य वज्रो अप हन्तु रक्षसं आराद् विसृष्टा इषवः पतन्तु रक्षसाम् ६ ५७०

॥९६॥ ( अथर्व० १।३।१-९ )

अथर्वा । १ पर्जन्यः, २ मित्रः, ३ वरुणः, ४ चन्द्रः, ५ सूर्यः, ( मूत्रमोचनम् ) । अनुष्टुप्,  
१-५ पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्वा शरस्यं पितरं पर्जन्यं शतवृष्ण्यम् ।

तेनां ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति १

विद्वा शरस्यं पितरं मित्रं शतवृष्ण्यम् ।

तेनां ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति २

विद्वा शरस्यं पितरं वरुणं शतवृष्ण्यम् ।

तेनां ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ३ ५७३

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृष्यम् ।	
तेना ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति	४
विद्या शरस्य पितरं सूर्यं शतवृष्यम् ।	
तेना ते तन्वेद् शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्ठे अस्तु बालिति	५ ५७५
यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद्वस्तावधि संश्रुतम् । एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम् ६	
प्र ते भिनन्नि मेहनं वत्र वेशन्त्या इव ।	
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम्	७
विषितं ते वस्तिषिलं समुद्रस्योदधेरिव ।	
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम्	८
यथेषुका परापतदवसृष्टाधि धन्वनः ।	
एवा ते मूत्रं मुच्यतां बहिर्बालिति सर्वकम्	९

॥७७॥ (अथर्व० ४।९।१-१०)

भृगुः । त्रैकाकुदाञ्जनम् । अनुष्टुप्, २ ककुम्मती, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

एहि जीवं त्रायमाणं पर्वतस्यास्यक्ष्यम् । विश्वेभिर्देवैर्दत्तं परिधिर्जीवनाय कम्	१ ५८०
परिपाणं पुरुषाणां परिपाणं गवामसि । अश्वानामर्वतां परिपाणाय तस्थिषे	२
उतासि परिपाणं यातुजम्भेनमाञ्जन ।	
उतामृतस्य त्वं वेत्थाथो असि जीवभोजनमथो हरितभेषजम्	३
यस्याञ्जन प्रसर्पस्यङ्गमङ्गं परुषपरुः । ततो यक्ष्मं वि बाधस उग्रो मध्यमशीरिव	४
नैनं प्रामोति शपथो न कृत्या नाभिशोचनम् ।	
नैनं विष्कन्धमश्रुते यस्त्वा विभर्त्याञ्जन	५
असन्मन्त्राद् दुष्वप्याद् दुष्कृताच्छर्मलादुत ।	
दुर्हार्दश्क्षुषो घोरात् तस्मान्नः पाह्याञ्जन	६ ५८५
इदं विद्वानाञ्जन सत्यं वक्ष्यामि नानृतम् । सनेयमश्वं गामहमात्मानं तव पूरुष	७
त्रयो दासा आञ्जनस्य त्वमा बलास आदहिः ।	
वर्षिष्ठः पर्वतानां त्रिककुभाम ते पिता	८
यदाञ्जनं त्रैककुदं जातं हिमवतस्परि । यातूश्च सर्वाञ्जम्भयत् सर्वाश्च यातुधान्यः	९
यदि वासि त्रैककुदं यदि यामुनमुच्यसे ।	
उमे ते भद्रे नाम्नी ताभ्यां नः पाह्याञ्जन	१० ५८९

॥९८॥ ( अथर्व० ७।३०।१ )

भृग्वङ्गिराः । द्यावापृथिवी, मित्रः, ब्रह्मणस्पतिः, सविता च ( अञ्जनम् ) । बृहती ।

स्वाक्तं मे द्यावापृथिवी स्वाक्तं मित्रो अंकरयम् ।

स्वाक्तं मे ब्रह्मणस्पतिः स्वाक्तं सविता करत्

१ ५९०

॥९९॥ ( अथर्व० ७।३६।१ )

१ अथर्वा । आक्षि, मनः ( अञ्जनम् ) । अनुष्टुप् ।

अक्षयौ नौ गधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम् ।

अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति

१

॥१००॥ ( अथर्व० १९।४५।१-१० )

भृगुः । आञ्जनम्, मन्त्रोक्तदेवताः । १-२ अनुष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ६-१० पञ्चाक्षराना  
महाबृहती ( ६ विराट्, ७-१० निचृत् ) ।

ऋणाट्टणमिव संनयन् कृत्यां कृत्याकृतो गृहम् ।

चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हृदिः पृष्टीरपि शृणाञ्जन

१

यद्दस्मासु दुष्वण्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे ।

अनामगस्तं च दुर्हृदिः प्रियः प्रति मुञ्चताम्

२

अपामूर्ज ओजसो वावृधानमग्नेर्जातमधि जातवेदसः ।

चतुर्वारं पर्वतीयं यदाञ्जनं दिशः प्रदिशः करदिच्छिवास्ते

३

चतुर्वारं बध्यत आञ्जनं ते सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु ।

ध्रुवस्तिष्ठासि सवितेव चार्य इमा विशो अभि हरन्तु ते बलिम्

४

५९५

आक्ष्वैकं मणिमेकं कृणुष्व स्नाह्येकेना पिवैकमेषाम् ।

चतुर्वारं नैर्ऋतेभ्यश्चतुर्भ्यो ग्राह्या बन्धेभ्यः परि पात्वस्मान्

५

अग्निर्माग्निनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

६

इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

७

सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

८

भगो मा भगेनावतु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा

९

६००

मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायानायायुषे वर्चस ओजसे तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा १०

॥१०१॥ ( अथर्व० १९।४४।१-१० )

भृगुः । आञ्जनम्, ८-९ ब्रह्मणः ( भैषज्यम् ) । अनुष्टुप्; ४ चतुष्पदा शंकुमती उष्णिक्; ५ निचृष्टिषमा  
त्रिपदा गायत्री ।

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यते । तदाञ्जनं त्वं शीताते शमापो अभयं कृतम् १

६०२

यो हरिमा जायान्योऽङ्गभेदो विसर्पकः । सर्वे ते यक्षमङ्गभ्यो बहिर्निहन्त्वाञ्जनम्	२	
आञ्जनं पृथिव्यां जातं मद्रं पुरुषजीवनम् । कृणोत्वप्रमायुकं रथजूतिमनागसम्	३	
प्राणं प्राणं त्रायस्वासो असेवे मृड । निर्ऋते निर्ऋत्या नः पाशैभ्यो मुञ्च	४	६०५
सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां पुष्पम् । वार्तः प्राणः सूर्यश्चक्षुर्दिवस्पयः	५	
देवाञ्जनं त्रैककुदं परि मा पाहि विश्वतः । न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्याः पर्वतीया उत	६	
वीडुदं मध्यमवांसुपद् रक्षोहामीवचातनः । अमीवाः सर्वाश्चातयन् नाशयदभिभा इतः	७	
बह्वीडुदं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः । तस्मात् सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यहसः	८	
यदापो अघ्न्या इति वरुणेति यदूचिम । तस्मात् सहस्रवीर्यं मुञ्च नः पर्यहसः	९	६१०
मित्रश्च त्वा वरुणश्चानुप्रेयतुराञ्जन । तौ त्वानुगत्य दूरं भोगाय पुनरोहतुः	१०	

॥१०२॥ ( वा० य० ४।३ )

( अञ्जनम् । )

वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽ असि चक्षुर्मे देहि ३

॥१०३॥ ( अथर्व० ४।५।१-७ )

ब्रह्मा । स्वापनं, वृषभः । अनुष्टुप्, २ भुक्तिक, ७ पुरस्ताज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् ।

सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।	
तेना सहस्येना वयं नि जनान्तस्वापयामसि	१
न भूमिं वातो अतिं वाति नातिं पश्यति कश्चन ।	
स्त्रियश्च सर्वाः स्वापय शुनश्चेन्द्रसखा चरन्	२
ग्रोष्टेशयास्तल्पेशया नारीर्या बह्यशीवरीः ।	
स्त्रियो याः पुण्यगन्धयस्ताः सर्वाः स्वापयामसि	३
एजदेजदजग्रभं चक्षुः प्राणमजग्रभम् । अङ्गान्यजग्रभं सर्वा रात्रीणामतिशर्वरे	४
य आस्ते यश्चरति यश्च तिष्ठन् विपश्यति ।	
तेषां सं दध्मो अक्षीणि यथेदं हर्म्य तथा	५
स्वमु माता स्वमु पिता स्वमु श्वा स्वमु विश्पतिः ।	
स्वपन्त्वस्यै ज्ञातयः स्वप्त्वयमभितो जनः	६
स्वप्नं स्वप्नाभिकरणेन सर्वं नि स्वापया जनम् ।	
ओत्सूर्यमन्यान्त्स्वापयाव्युषं जागृतादुहमिन्द्र इवारिष्टो अक्षितः	७



॥१०४॥ ( अथर्व० ६।९०।१-३ )

अथर्वा । रुद्रः ( इषुनिष्कासनम् ) । अनुष्टुप्, ३ आर्षां भुरिगुणिक् ।  
यां ते रुद्र इषुमास्यदङ्गैभ्यो हृदयाय च । इदं तामद्य त्वद्वयं धिषूचीं विवृहामसि १ ६२०  
यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनु विष्टिताः । तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्वयामसि २  
नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै । नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै ३

॥१०५॥ ( ऋ० १।१२०।१२ )

कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । अश्विनौ ( दुःष्वप्प्रनाशनम् ) । गायत्री ।  
अध स्वप्स्य निर्विदे ऽभुञ्जतश्च रेवतः । उभा ता बस्त्रि नश्यतः १२

॥१०६॥ ( ऋ० २।२८।१० )

कर्मो गात्समदो गृत्समदो वा । वरुणः ( दुःष्वप्प्रनाशिनी ) । त्रिष्टुप् ।  
यो मे राजन् युज्यो वा सर्वा वा स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमार्ह ।  
स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद् वरुण पाह्यस्मान् १०

॥१०७॥ ( ऋ० १०।१६४।१-५ )

प्रचेता आङ्गिरसः । दुःष्वप्प्रनाशनम् । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।  
अपेहि मनसस्पते ऽपं काम पुरश्चर ।  
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतां मनः × १ ६२५  
भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम् ।  
भद्रं वैवस्वते चक्षुर्वहुत्रा जीवतो मनः २  
यदाशसां निःशसांभिशसां पारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।  
अग्निर्विश्वान्यप दुकृता न्यजुष्टान्यार अस्मद् दधातु ३  
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते ऽभिद्रोहं चरामसि ।  
प्रचेता न आङ्गिरसो द्विपतां पात्वंहसः ४  
अजैष्माद्यासनाम् चा ऽभूमानांसो वयम् ।  
जाग्रत्स्वप्नः संकल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ५

॥१०८॥ ( अथर्व० ६।४५।१-३ )

अङ्गिराः प्रचेता यमश्च । दुःष्वप्प्रनाशनम् । १ पथ्यापङ्क्तिः, २ भुरिक् त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप् ।

परोऽपेहि मनस्पाप् किमशस्तानि शंससि ।

परैहि न त्वां कामये वृक्षां वनानि सं चर गृहेषु गोषु मे मनः १ ६३०

अवशसा निःशसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः ।

अग्निर्विश्वान्यपं दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे असद् दधातु २

यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽपि मृषा चरामसि । प्रचेता न आङ्गिरसो दुरितात् पात्वंहंसः ३

॥१०९॥ ( अथर्व० ६।४६।१-३ )

अङ्गिराः प्रचेता यमश्च । दुःष्वप्ननाशनम् । १ विष्टारपङ्क्तिः, २ त्र्यवसाना शकरीगर्भा पञ्चपदा जगती, ३ अनुष्टुप् ।

यो न जीवोऽसि न मृतो देवानाममृतगर्भोऽसि स्वप्न ।

वरुणानी ते माता यमः पिताररुर्नामासि १

विश्व ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ।

अन्तकोऽसि मृत्युरसि ।

तं त्वां स्वप्न तथा सं विश्व स नः स्वप्न दुष्पन्त्यात् पाहि २

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति । एवा दुष्पन्त्यं सर्वं द्विपते सं नयामसि ३ ६३५

॥११०॥ ( अथर्व० ७।१००।१ )

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

पर्यावर्ते दुष्पन्त्यात् पापात् स्वपन्यादभूत्याः ।

ब्रह्माहमन्तरं कृण्वे परा स्वप्नमुखाः शुचः १

॥१११॥ ( अथर्व० ७।१०१।१ )

यमः । दुःष्वप्ननाशनम् । अनुष्टुप् ।

यत् स्वप्ने अन्नमश्रामि न प्रातरधिगम्यते ।

सर्वं तदस्तु मे शिवं नहि तद् दृश्यते दिवा १

॥११२॥ ( अथर्व० ७।११।१ )

शन्तातिः । सुखम् । पथ्यापङ्क्तिः ।

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।

अहान्ति शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु १

॥११३॥ ( अथर्व० ६।४३।१-३ )

भृग्वङ्गिराः ( परस्परचित्तैकीकरणकामः ) । मन्युशमनम् । अनुष्टुप् ।

अयं दुर्भो विमन्युकः स्वाय चारणाय च । मन्योर्विमन्युकस्यायं मन्युशमन उच्यते १

अयं यो भूरिमूलः समुद्रमवतिष्ठति । दुर्भः पृथिव्या उत्थितो मन्युशमन उच्यते २

वि ते हनव्यां शरणि वि ते मुख्यां नयामसि ।

यथावशो न वार्दियो मर्म चित्तमुपायसि ३ ६४१

॥११४॥ ( अथर्व० ५।१६।१-११ )

त्रिध्वामित्रः । एकवृषः ( वृषरोगशमनम् ) । एकावसानं द्वैपदम् : १,४,५,७-१० साम्नी उष्णिक् ;  
२,३,६. आसुरी अनुष्टुप् ; ११ आसुरी गायत्री ।

यद्येकवृषोऽसिं सृजारसोऽसि	१ यदि द्विवृषोऽसिं सृजारसोऽसि	२
यदि त्रिवृषोऽसिं सृजारसोऽसि	३ यदि चतुर्वृषोऽसिं सृजारसोऽसि	४
यदि पञ्चवृषोऽसिं सृजारसोऽसि	५ यदि षड्वृषोऽसिं सृजारसोऽसि	६
यदि सप्तवृषोऽसिं सृजारसोऽसि	७ यद्यष्टवृषोऽसिं सृजारसोऽसि	८
यदि नववृषोऽसिं सृजारसोऽसि	९ यदि दशवृषोऽसिं सृजारसोऽसि	१०
यद्येकादशोऽसिं सोऽपोदकोऽसि	११	६५२

॥११५॥ ( अथर्व० ५।१५।१-११ )

विध्वामित्रः । मधुला वनस्पतिः ( रोगोपशमनम् ) । अनुष्टुप्, ४ पुरस्ताद्बृहती ; ५,७-९ भुरिक् ।

एका च मे दश च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः १	
द्वे च मे विंशतिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः २	
तिस्रश्च मे त्रिंशच्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ३	६५५
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मेऽपवृत्तारं ओषधे ।	
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः	४
पञ्च च मे पञ्चाशच्च मेऽपवृत्तारं ओषधे ।	
ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः	५
षट् च मे षष्टिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ६	
सप्त च मे सप्ततिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ७	
अष्ट च मेऽशीतिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ८	६६०
नव च मे नवतिश्च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ९	
दश च मे शतं च मेऽपवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः १०	
शतं च मे सहस्रं चापवृत्तारं ओषधे । ऋतजात ऋतावरि मधु मे मधुला करः ११	

॥११६॥ ( अथर्व० १।२।१-४ )

अथर्वा । पर्जन्यः, ( १,४ पृथिवी, ३ इन्द्रः, [चन्द्रमाश्च] ) ( रोगोपशमनम् ) । अनुष्टुप्, ३ त्रिपदा विराणनाम गायत्री ।

विष्वा शरस्य पितरं पर्जन्यं भूरिधायसम् । विष्वा ष्वस्य मातरं पृथिवीं भूरिर्वपसम् १	
ज्याकिं परिं णो नुमाश्मानं तन्वं कृधि । वीडुर्वरीयोऽरातीरप द्वेषांस्या कृधि २	
वृक्षं यद् गावः परिष्वजाना अनुस्फुरं शरमर्चन्त्यृधुम् । शरुमसद्यावय दिद्युमिन्द्र ३	६६६

यथा द्यां च पृथिवीं चान्तस्तिष्ठति तेजन्म ।

एवा रोगं चास्त्रावं चान्तस्तिष्ठतु मुञ्ज इत्

४

॥११७॥ ( अथर्व० २।७।१-५ )

अथर्वा । भैषज्यं, आयुः, वनस्पतिः ( शापमोचनम् ) । अनुष्टुप्, १ भुरिक्, ४ विराडुपरिष्ठाद्बृहती ।

अघद्विष्टा देवजाता वीरुच्छपथयोपनी ।

आपो मलमिव प्राणैक्षीत् सर्वान् मच्छपथाँ अधि

१

यश्च सापत्नः शपथो जाम्याः शपथश्च यः ।

ब्रह्मा यन्मन्युतः शपात् सर्वं तन्नो अधस्पदम्

२

दिवो मूलमवततं पृथिव्या अध्युत्ततम् । तेन सहस्रकाण्डेन परि णः पाहि विश्वतः ३

६७०

परि मां परि मे प्रजां परि णः पाहि यद्वनम् ।

अरातिर्नो मा तारीन्मा नस्तारिपुरभिमातयः

४

शप्तारमेतु शपथो यः सुहार्त् तेन नः सह । चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हर्दिः पृथीरपि भृणीमसि ५

॥११८॥ ( अथर्व० १।१८।१-४ )

द्रविणोदाः । १ विनायकः; (२ सविता, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, देवाः; ३ सविता) (अलक्ष्मीनाशनम्) ।

१ विराडुपरिष्ठाद् बृहती, २ निचृज्जगती, ३ विराडास्तारपङ्क्तिस्त्रिष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।

निर्लेक्ष्म्यं ललाम्यं१ निररातिं सुवामसि ।

अथ या भद्रा तानि नः प्रजाया अरातिं नयामसि

१

निररणिं सविता साविष्क् पदोर्निर्हस्तयोर्वरुणो मित्रो अर्यमा ।

निरसभ्यमनुमती रराणा प्रेमां देवा असाविषुः सौभगाय

२

यत् त आत्मनि तन्वां घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।

सर्वं तद्वाचार्य हन्मो वयं देवस्त्वा सविता सूदयतु

३

६७५

रिश्यपदीं वृषदतीं गोपेधां विधमामुत । विलीढ्यं ललाम्यं१ ता असन्नाशयामसि ४

॥११९॥ (अथर्व० ६।१३९।१-५)

अथर्वा । वनस्पतिः (सौभाग्यवर्धनम्) । अनुष्टुप्, १ व्यवसाना पट्पदा विराड् जगती ।

न्यस्तिका रुरोहिथ सुभगंकरणी मम । शतं त्वं प्रतानास्त्रयस्त्रिंशन्नितानाः ।

तया सहस्रपर्ण्या हृदयं शोषयामि ते

१

शुष्यंतु मयि ते हृदयमथो शुष्यत्वास्यम् । अथो नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर २

संवर्ननी समुष्पला बभ्रु कल्याणि सं नुद । अमूं च मां च सं नुद समानं हृदयं कृधि ३

६७९

दौ [ आयुर्वेद० ] ७

यथोदुकमपंपुषोऽपशुष्यत्यास्यमि । एवा नि शुष्य मां कामेनाथो शुष्कास्या चर ४ ६८०  
यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः । एवा कामस्य विच्छिन्नं सं धेहि वीर्यावति ५

॥१२०॥ ( अथर्व० ६।१८।१-३ )

अथर्वा । ईर्ष्याविनाशनम् । अनुष्टुप् ।

ईर्ष्याया घ्राजिं प्रथमां प्रथमस्या उतापराम् । अग्निं हृदय्यं शोकं तं ते निर्वापयामसि १  
यथा भूमिर्मृतमना मृतान्मृतमनस्तरा । यथोत मम्रुषो मन एवेर्ष्यामृतं मनः २  
अदो यत् ते हृदि श्रितं मनस्कं पतयिष्णुकम् ।  
ततस्त ईर्ष्या मुञ्चामि निरूष्माणं दृतेरिव ३

॥१२१॥ ( अथर्व० ७।४५।१-२ )

प्रस्कण्वः, २ अथर्वा । ईर्ष्यापनयनं, भेषजम् । अनुष्टुप् ।

जनाद् विश्वजनीनात् सिन्धुतस्पर्याभृतम् । दूरात् त्वा मन्य उद्भृतमीर्ष्याया नाम भेषजम् १ ६८५  
अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य दहतः पृथक् । एतामेतस्येर्ष्यामुद्राग्निमिव शमय २

॥१२२॥ ( अथर्व० ६।१११।१-४ )

अथर्वा । अग्निः ( उन्मत्ततामोचनम् ) । अनुष्टुप्, १ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् ।

इमं मे अग्ने पुरुषं मुमुग्ध्ययं यो बद्धः सुर्यतो लालपीति ।  
अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति १  
अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् । कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽसति २  
देवैन्सादुन्मदितमुन्मत्तं रक्षसस्परिं । कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति ३  
पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भर्गः । पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽससि ४ ६९०

क्रिमिनाशनम् । ( ६९१-७७३ )

॥१२३॥ ( अथर्व० २।३१।१-५ )

काण्वः । मही, चन्द्रमाः ( क्रिमिजम्भनम् ) । अनुष्टुप्; २, ४ उपरिष्ठाद्विराड् वृहती, ३, ५ आशीं त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य या मही दृषत् क्रिमेर्विश्वस्य तर्हणी ।  
तया पिनष्मि सं क्रिमीन् दृषदा खल्वी इव १  
दृष्टमदृष्टमतृहमथो कुरूरुमतृहम् ।  
अलगण्डुन्त्सर्वान् छलुनान् क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि २  
अलगण्डून् हन्मि महता वधेन दूना अदूना अरसा अभूवन् ।  
शिष्टानशिष्टान् नि तिरामि वाचा यथा क्रिमीणां नकिरुच्छिपातै ३ ६९३

अन्वान्त्र्यं शीर्षण्युमथो पाष्टैयं क्रिमीन् ।	
अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि	४
ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वुत्सवंतः ।	
ये असाकं तन्वमाविविशुः सर्वं तद्वन्मि जनिम क्रिमीणाम्	५ ६९५
॥१२४॥ ( अथर्व० ५।२३।१-१३ )	
कण्वः । इन्द्रः ( क्रिमिघ्नम् ) । अनुष्टुप्, १३ विराट् ।	
ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती ।	
ओतो म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति	१
अस्येन्द्रं कुमारस्य क्रिमीन् धनपते जहि । हता विश्वा अरातय उग्रेण वचसा मम	२
यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति ।	
दतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि	३
सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ ।	
बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः	४
ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिवाहवः ।	
ये के च विश्वरूपास्तान् क्रिमीन् जम्भयामसि	५ ७००
उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।	
दृष्टांश्च मन्त्रदृष्टांश्च सर्वाश्च प्रमृणन् क्रिमीन्	६
येवाषासः कक्काषास एजत्काः शिपविलुकाः ।	
दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिरुतादृष्टश्च हन्यताम्	७
हतो येवाषः क्रिमीणां हतो नदनिमोत । सर्वान् नि मग्मषाकरं दृषदा खल्वा इव	८
त्रिशिर्षाणं त्रिककुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः	९
अत्त्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदशिवत् ।	
अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनभ्यहं क्रिमीन्	१० ७०५
हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा	११
हतासौ अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः ।	
अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः	१२
सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् ।	
भिनदयश्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम्	१३ ७०६

॥१२५॥ ( अथर्व० २।३२।१-६ )

काण्वः । आविश्यः ( क्रिमिनाशनम् ) । अनुष्टुप्, १ त्रिपदा भुरिगायत्री, ६ चतुष्पदा निचृदुष्णिक ।

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिभिः ।

ये अन्तः क्रिमयो गर्वि १

विश्वरूपं चतुरक्षं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्वाभि यच्छिरः २ ७१०

अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्रमदग्निवत् ।

अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनम्यहं क्रिमीन् ३

हतो राजा क्रिमीणामुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिर्हतभ्राता हतस्वसा ४

हतासौ अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः ।

अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः ५

प्र ते शृणामि शृङ्गे याभ्यां वितुदायसि । भिनन्ति ते कुषुम्भं यस्तं विषधानः ६

॥१२६॥ ( अथर्व० ४।३७।१-१२ )

बादरायणिः । अजशृङ्गीः १ अप्सरसः १-२, ६, १० औषधी अजशृङ्गीः ३-५ अप्सरसः ७-१२ गन्धर्वाप्सरसः

( क्रिमिनाशनम् ) । अनुष्टुप्, ३ व्ययसाना षट्पदा त्रिष्टुप्, ५ प्रस्तरपङ्क्तिः,

७ परोष्णिक, ११ षट्पदा जगती, १२ निचृत् ।

त्वया पूर्वमथर्वाणो जघ्न रक्षांस्योषधे ।

त्वया जघान कश्यपस्त्वया कण्वो अगस्त्यः १ ७१५

त्वया व्यमप्सरसो गन्धर्वाश्चातयामहे । अजशृङ्गचज रक्षः सर्वान् गन्धेन नाशय २

नदीं यन्त्वप्सरसोऽपां तारमवश्वसम् ।

गुल्गुलूः पीला नलद्यौऽक्षगन्धिः प्रमन्दुनी ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ३

यत्राश्वत्था न्यग्रोधा महावृक्षाः शिखण्डिनः ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ४

यत्र वः प्रेङ्हा हरिता अर्जुना उत यत्राघाटाः कर्कर्यः संवदन्ति ।

तत् परेताप्सरसः प्रतिबुद्धा अभूतन ५

एयमगन्धोर्षधीनां वीरुधां वीर्यावती । अजशृङ्गचिराटकी तीक्ष्णशृङ्गी व्यृषितु ६ ७२०

आनृत्यतः शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः । भिनन्ति मुष्कावपि यामि शेषः ७

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीरयस्यीः । तामिर्हविरदान् गन्धर्वानवक्रान् व्यृषितुः ७२२

भीमा इन्द्रस्य हेतयः शतमृष्टीर्हिरण्ययीः। तार्भिर्हविरदान् गन्धर्वानवकादान् व्यृषितु९  
अवकादानभिश्चोचानप्सु ज्योतय मामकान् ।

पिशाचान्तसर्वानोषधे प्र मृणीहि सहस्र च १०

श्वैकैः कपिरिवैकैः कुमारः सर्वकेशकः ।

प्रियो दृश इव भूत्वा गन्धर्वः संचते स्त्रियस्तमितो नाशयामसि ब्रह्मणा वीर्याविता ११ ७२५

जाया इद् वो अप्सरसो गन्धर्वाः पतयो यूयम् ।

अप धानतामर्त्या मर्त्यान् मा संचध्वम् १२

॥१२७॥ ( अथर्व० १।८।१-४ )

चातनः । १-२ बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च; ३-४ अग्निः [जातवेदाः] ( यातुधाननाशनम् ) । १-३ अनुष्टुप्,  
४ बार्हतगर्भा त्रिष्टुप् ।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनेमिवा वंहत् ।

य इदं स्त्री पुमानकरिह स स्तुवतां जनः १

अयं स्तुवान आर्गमदिमं स्म प्रति ह्येत । बृहस्पते वशे लब्ध्वाग्नीषोमा वि विध्यतम् २

यातुधानस्य सोमप जुहि प्रजां नयस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्षुतावरम् ३

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहां सतामत्त्रिणां जातवेदः ।

तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने ४ ७३०

॥१२८॥ ( अथर्व० ६।३२।१-३ )

चातनः; ३ अथर्वा । १ अग्निः, २ रुद्रः, ३ मित्रावरुणौ ( यातुधानक्षयणम् ) । त्रिष्टुप्,  
२ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तर्दावे जुहुता स्वेत्तद् यातुधानक्षयणं घृतेन ।

आराद् रक्षोसि प्रति दह त्वमग्ने न नो गृहाणामुप तीतपासि १

रुद्रो वो ग्रीवा अशरैत् पिशाचाः पृष्टीर्वोऽपि शृणातु यातुधानाः ।

वीरुद् वो विश्वतोवीर्या यमेन समजीगमत २

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिपात्त्रिणां नुदतं प्रतीचः ।

मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विद्वाना उप यन्तु मृत्युम् ३

॥१२९॥ ( अथर्व० १।२८।१-४ )

चातनः । १-२ अग्निः, ३-४ यातुधानीः ( रक्षोघ्नम् ) । अनुष्टुप्, ३ चिरात्पथ्याबृहती, ४ पथ्यापङ्क्तिः ।

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः ।

दहन्नप इयाविनो यातुधानान् किमीदिनः १ ७३४



प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः ।

प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः ।

२ ७३५

या शशाप शर्पनेन याघं मूरमादधे । या रसस्य हरणाय जातमारिभे तोकर्मत्तु सा ३  
पुत्रमत्तु यातुधानीः स्वसारमुत नृत्यम् ।

अर्धा मिथो विक्रेयोऽे वि प्रतां यातुधान्योऽे वि तृह्यन्तामराय्यः ।

४

॥१३०॥ ( अथर्व० ५।२९।१-१५ )

चातनः । जातवेदाः, मन्त्रोक्ताः ( रक्षोघ्नम् ) । त्रिष्टुप्; ३ त्रिपदा विराण्नाम गायत्री; ५ पुरोऽति-  
जगती विराड्जगती; १२-१५ अनुष्टुप् ( १२ भुरिकः १४ चतुष्पदा परावृहती ककुम्भती । )

पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।

त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुषं सनेम

१

तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ।

यो नो दिदेव यतमो जघासु यथा सो अस्य परिधिष्पताति

२

यथा सो अस्य परिधिष्पताति यथा तदग्ने कृणु जातवेदः ।

विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः

३

७४०

अक्ष्योऽे नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्द्भि प्र दतो मृणीहि ।

पिशाचो अस्य यतमो जघासाग्ने यविष्ट प्रति तं शृणीहि

४

यदस्य हृतं विहृतं यत् पराभृतमात्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।

तदग्ने विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः

५

आमे सुपर्के शबले विपर्के यो मां पिशाचो अशने द्रुदम्भं ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽेयमस्तु

६

क्षीरे मां मन्थे यतमो द्रुदम्भाकृष्टपच्ये अशने धान्येऽे यः ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽेयमस्तु

७

अपां मा पाने यतमो द्रुदम्भं क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽेयमस्तु

८

७४५

दिवा मा नक्तं यतमो द्रुदम्भं क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदोऽेयमस्तु

९

क्रव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।

तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः

१०

७४७

सनांदमे मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।	
सहमूराननु दह क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षतु दैव्यायाः	११
समाहर् जातवेदो यद्भुतं यत् पराभृतम् । गात्राण्यस्य वर्धन्तामंशुरिवा प्यायतामयम् १२	
सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् ।	
अग्ने विरप्शिनं मेघ्यमयक्ष्मं कृणु जीवतु	१३ ७५०
एतास्ते अग्ने समिधः पिशाचजम्भनीः ।	
तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः	१४
ताष्टाघीरग्ने समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा ।	
जहातु क्रव्याद् रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति	१५

॥१३१॥ ( वा० य० ५।२२ )

( रक्षोघ्नम् । )

इदमहं रक्षसां ग्रीवा ऽ अपिकृन्तामि	२२
------------------------------------	----

॥१३२॥ ( अथर्व० ४।२०।१-९ )

मातृनामा । मातृनामा ( पिशाचक्षयणम् ) । अनुष्टुप्; १ स्वराट्, ९ भुरिक् ।

आ पश्यति प्रति पश्यति परां पश्यति पश्यति ।	
दिवमन्तरिक्षमाद् भूमिं सर्वं तद् देवि पश्यति	१
तिस्रो दिवस्तिस्त्रः पृथिवीः षट् चेमाः प्रदिशः पृथक् ।	
त्वयाहं सर्वा भूतानि पश्यानि देव्योषधे	२ ७५५
दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य हासि कनीनिका ।	
सा भूमिमा रुरोहितं वह्यं श्रान्ता वधूरिव	३
तां मे सहस्राक्षो देवो दक्षिणे हस्त आ दधत् ।	
तयाहं सर्वं पश्यामि यश्च शूद्र उतार्यः	४
आविष्कृणुष्व रूपाणि मात्मानमप गूहथाः ।	
अथो सहस्रचक्षो त्वं प्रति पश्याः किमीदिनः	५
दर्शय मा यातुधानान् दर्शय यातुधान्यः । पिशाचान्तसर्वान् दर्शयेति त्वा रंभ ओषधे ६	
कश्यपस्य चक्षुरसि शुन्याश्च चतुरक्ष्याः ।	
वीध्रे सूर्यमिव सर्पन्तं मा पिशाचं तिरस्करः	७
उदग्रं परिपाणाद् यातुधानं किमीदिनम् । तेनाहं सर्वं पश्याम्युत शूद्रमुतार्यम् ८	७६१

यो अन्तरिक्षेण पतति दिवं यश्चातिसर्पति ।  
भूमिं यो मन्यते नाथं तं पिशाचं प्र दर्शय

९

॥१३३॥ ( अथर्व० ६।७।१-३ )

अथर्वा । सोमः, अदितिः, ३ देवाः ( असुरक्षयणम् ) । गायत्री, १ निवृत्त ।  
येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः । तेना नोऽवसा गहि १  
येन सोम साहन्त्यासुरान् रन्धयासि नः । तेना नो अर्धि वोचत २  
येन देवा असुराणामोजास्यवृणीध्वम् । तेना नः शर्म यच्छत ३ ७६५

॥१३४॥ ( अथर्व० १९।६६।१ )

ब्रह्मा । जातवेदाः सूर्यो वज्रश्च ( असुरक्षयणम् ) । अतिजगती ।  
अयोजाला असुरा मायिनोऽयुस्यैः पाशैरङ्गिनो ये चरन्ति ।  
तास्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रक्रष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः १

॥१३५॥ ( अथर्व० १।७।१-७ )

चातन । अग्निः (जातवेदाः), ३ अग्निन्द्रो (यातुधाननाशनम्) । अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।  
स्तुवानमग्र आ वह यातुधानं किमीदिनम् ।  
त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्बभूविथ १  
आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदुस्तनूवशिन् ।  
अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय २  
वि लपन्तु यातुधाना अन्त्रिणो ये किमीदिनः ।  
अथेदमग्ने नो हविरिन्द्रश्च प्रति हर्यतम् ३  
अग्निः पूर्वं आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान् ।  
ब्रवीतु सर्वो यातुमानयमस्मीत्येत्य ४ ७७०  
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान् नृचक्षः ।  
त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम् ५  
आ रभस्व जातवेदोऽस्माकार्थीय जज्ञिषे ।  
दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय ६  
त्वमग्ने यातुधानानुपबद्धो इहा वह ।  
अथैषामिन्द्रो वज्रेणापि शीर्षाणि वृश्चतु ७ ७७३

## विषनाशनम् । ( ७७४-८५९ )

॥१३६॥ ( ऋ० १।१९१।१-१६ )

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अष्टृणसूर्याः (विपन्नोपनिषद्) । अनुष्टुप्; १०-१२ महापङ्क्तिः; १३ महाबृहती ।

कङ्कतो न कङ्कतो ऽथो सतीनकङ्कतः ।

द्राविति प्लुषी इति न्युदृष्टा अलिप्सत

१

अदृष्टान् हन्त्यायत्यथो हन्ति परायती ।

अथो अवघ्नती हन्त्यायत्यथो पिनष्टि पिंषती

२

७७५

शरासः कुशरासो दुर्भासः सैर्या उत ।

मौञ्जा अदृष्टा बैरिणाः सर्वे साकं न्यलिप्सत

३

नि गावो गोष्ठे असदन् नि मृगासो अविक्षत ।

नि केतवो जनानां न्युदृष्टा अलिप्सत

४

एत उ त्प्ये प्रत्यदृष्टान् प्रदोषं तस्करा इव ।

अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबुद्धा अभूतन

५

द्यौर्वैः पिता पृथिवी माता सोमो भ्रातादितिः स्वसा ।

अदृष्टा विश्वदृष्टा स्तिष्ठतेलयता सु कम्

६

ये अस्या ये अङ्गर्थाः सूचीका ये प्रकङ्कताः ।

अदृष्टाः किं चनेह वः सर्वे साकं नि जस्यत

७

७८०

उत् पुरस्तात् सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।

अदृष्टान्तसर्वाङ्गम्भयन्तसर्वाश्च यातुधान्यः

८

उदपप्तदुसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन् ।

आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा

९

सूर्ये विषमा संजामि दृतिं सुरावतो गृहे ।

सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १०

इयत्तिका शकुन्तिका सका जघास ते विषम् ।

सो चिन्नु न मराति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला

चकार

११

त्रिः सप्त विष्णुलिङ्गका विषस्य पुष्पमक्षन् ।

ताश्चिन्नु न मरन्ति नो वयं मरामाऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार १२

७८५

नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम् ।	
सर्वासामग्रभं नामा—ऽऽरे अस्य योजनं हरिष्ठा मधुं त्वा मधुला चकार	१३
त्रिः सप्त मयूर्यः सप्त स्वसारो अग्रुवः ।	
तास्ते विषं वि जभ्रिर उदकं कुम्भिनीरिव	१४
इयत्तकः कुषुम्भक—स्तकं भिनङ्गयश्मना ।	
ततो विषं प्र वावृते पराचीरनु संवतः	१५
कुषुम्भकस्तदब्रवीद् गिरेः प्रवर्तमानकः ।	
वृश्चिकस्यारसं विष—मरुसं वृश्चिक ते विषम्	१६

॥१३७॥ ( अथर्व० ४।६।१-८ )

गरुत्मान् । नक्षकः, १ ब्राह्मणः; २ द्यावापृथिवी, सप्तसिन्धवः; ३ सुपर्णः; ४-८ विषम् (विषघ्नम्) । अनुष्टुप् ।

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः ।	
स सोमं प्रथमः पपौ स चकारारसं विषम्	१ ७९०
यावती द्यावापृथिवी वरिम्णा यावत् सप्त सिन्धवो वितष्ठिरे ।	
वाचं विषस्य दूर्षणीं तामितो निरवादिषम्	२
सुपर्णस्त्वा गरुत्मान् विषं प्रथममावयत् ।	
नामीमदो नारूरुप उतास्मा अभवः पितुः	३
यस्त आस्यत् पञ्चाङ्गुरिर्वक्राच्चिदधि धन्वनः ।	
अपस्कम्भस्य शल्याभ्रिर्वोचमहं विषम्	४
शल्याद् विषं निरवोचं प्राञ्जनादुत पर्णधेः ।	
अपाष्ठाच्छृङ्गात् कुल्मलाभ्रिर्वोचमहं विषम्	५
अरसस्तं इषो शल्योऽथो ते अरसं विषम् । उतारसस्य वृक्षस्य धनुष्टे अरसारसम्	६ ७९५
ये अपीषन् ये अदिहन् य आस्यन् ये अवासृजन् ।	
सर्वे ते वध्रयः कृता वध्रिर्विषगिरिः कृतः	७
वध्रयस्ते खनितारो वध्रिस्त्वमस्योषधे ।	
वध्रिः स पर्वतो गिरिर्यतो जातमिदं विषम्	८

॥१३८॥ ( अथर्व० ४।७।१-७ )

गरुत्मान् । वनस्पतिः ( विषनाशनम् ) । अनुष्टुप्, ४ स्वराद् ।

वारिदं वारयातै वरणावत्यामधि । तत्रामृतस्थार्सिक्तं तेना ते वारये विषम्	१ ७९८
--	-------

अरसं प्राच्यं विषमरसं यदुदीच्यम् । अथेदमधराच्यं करम्भेण वि कल्पते	२
करम्भं कृत्वा तिर्यं पीवस्पाकमुदारथिम् ।	
क्षुधा किल त्वा दुष्टनो जक्षिवान्त्स न रूरुपः	३ ८००
वि ते मदं मदावति शरमिव पातयामसि ।	
प्र त्वां चरुमिव येषन्तं वचसा स्थापयामसि	४
परि ग्राममिवाचितं वचसा स्थापयामसि ।	
तिष्ठा वृक्ष इव स्थाम्न्यभिखाते न रूरुपः	५
पवस्तैस्त्वा पर्यक्रीणन् दूर्शोभिरजिनैरुत । प्रक्रीरसि त्वमोषधेऽभिखाते न रूरुपः	६
अनाम्ना ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।	
वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे	७

॥१३९॥ (अथर्व० ६।१००।१-३)

गरुत्मान् । वनस्पतिः ( विषदूषणम् ) । अनुष्टुप् ।

देवा अदुः सूर्यो अदाद् द्यौरदात् पृथिव्यदात् ।	
तिस्रः सरस्वतीरदुः सचित्ता विषदूषणम्	१ ८०५
यद् वो देवा उपजीका आसिञ्चन् धन्वन्द्युदुकम् ।	
तेन देवप्रसूतेनेदं दूषयता विषम्	२
असुराणां दुहितासि सा देवानामसि स्वसा ।	
दिवस्पृथिव्याः संभूता सा चकर्थारसं विषम्	३

॥१४०॥ (अथर्व० १०।४।१-२६)

गरुत्मान् । तक्षकः ( सर्पविषहूरीकरणम् ) । अनुष्टुप्; १ पथ्यापाङ्क्तिः; २ त्रिपदा यवमध्या गायत्री; ३-४ पथ्याबृहती; ८ उष्णिग्गर्भा परा त्रिष्टुप्; १२ भुरिग्गायत्री; १६ त्रिपदा प्रतिष्ठा गायत्री; २१ ककुम्मती; २३ त्रिष्टुप्; २६ ज्यवसाना षट्पदा बृहतीगर्भा ककुम्मती भुरिक् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानामपरो रथो वरुणस्य तृतीय इत् ।	
अहीनामपमा रथं स्थाणुमारदर्थापत्	१
दुर्मः शोचिस्तूरुणकमश्वस्य वारः परुषस्य वारः । रथस्य बन्धुरम्	२
अव श्वेत पदा जहि पूर्वेण चापरेण च । उदुष्टुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्	३ ८१०
अरंघुषो निमज्योन्मज्य पुनरब्रवीत् । उदुष्टुतमिव दार्वहीनामरसं विषं वारुग्रम्	४
पैदो हन्ति कसर्णालं पैदः श्चित्रमुतासितम् । पैदो रथव्याः शिरः सं बिभेद पृदाक्ताः	५ ८१२

पैद्दु प्रेहिं प्रथमोऽनु त्वा वयमेमसि । अहीन् व्यस्यतात् पथो येन स्मा वयमेमसि	६
इदं पैद्दो अजायतेदमस्य परायणम् । इमान्यर्वतः पदाहिन्धयो वाजिनीवतः	७
संयतं न विष्परद् व्यात्तं न संयमत् । अस्मिन् क्षेत्रे द्वावही स्त्री च पुमांश्च तावुभावरसा	८ ८१५
अरसासं इहाहयो ये अन्ति ये च दूरके । घनेन हन्मि वृश्चिकमहिं दुण्डेनागतम्	९
अघाश्चस्येदं भेषजमुभयोः स्वजस्य च । इन्द्रो मेऽहिमघायन्तमहिं पैद्दो अरन्धयत्	१०
पैद्दस्य मन्महे वयं स्थिरस्य स्थिरधाम्नः । इमे पश्चा पृदाकवः प्रदीध्यत आसते	११
नष्टासवो नष्टविषा हता इन्द्रेण वज्रिणा । जघानेन्द्रो जघ्निमा वयम्	१२
हतास्तिरश्चिराजयो निषिष्टासः पृदाकवः । दिवि करिकतं श्वित्रं दुर्भेष्वसितं जहि	१३ ८२०
कैरातिका कुमारीका सका खनति भेषजम् । हिरण्ययीभिरभिभिर्गिरीणामुप सानुषु	१४
आयमगन् युवा भिषक् पृश्निहापराजितः । स वै स्वजस्य जम्भेन उभयोर्वृश्चिकस्य च	१५
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयन्मित्रश्च वरुणश्च । वातापर्जन्योऽुभा	१६
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत् पृदाकुं च पृदाकम् । स्वजं तिरश्चिराजिं कसर्णालं दशानसिम्	१७
इन्द्रो जघान प्रथमं जनितारमहे तव । तेषामु तुह्यमाणानां कः स्वित् तेषामसद् रसः	१८ ८२५
सं हि शीर्षाण्यग्रभं पौञ्छिष्ठ इव कर्वरम् । सिन्धोर्मध्यं परेत्य व्यनिजमहेर्विषम्	१९
अहीनां सर्वेषां विषं परां वहन्तु सिन्धवः । हतास्तिरश्चिराजयो निषिष्टासः पृदाकवः	२०
ओषधीनामहं वृण उर्वरीरिव साधुया । नयाम्यर्वतीरिवाहे निरैतु ते विषम्	२१
यदुग्रौ सूर्ये विषं पृथिव्यामोषधीषु यत् । कान्दाविषं कनककं निरैत्वैतु ते विषम्	२२
ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां ये अप्सुजा विद्युत आवभूवुः ।	
येषां जातानि बहुधा महान्ति तेभ्यः सर्वेभ्यो नमसा विधेम	२३ ८३०
तौदी नामासि कन्या घृताची नाम वा असि । अधस्पदेन ते पदमा ददे विषदूषणम्	२४
अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय हृदयं परि वर्जय । अघा विषस्य यत् तेजोऽवाचीनं तदेतु ते	२५
आरे अभूद् विषमरौद् विषे विषमप्रागपि । अग्निर्विषमहेनिरघात् सोमो निरणथीत् ।	
दंष्टारमन्वगाद् विषमहिरमृत	२६

॥१४१॥ (अथर्व० ५।२३।१-११)

गरुत्मान् । तश्चकः (सर्पविषनाशनम्) । जगती, २ आस्तारपङ्क्तिः, ४, ७-८ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप्,  
६ पथ्यापङ्क्तिः, ९ भुरिक, १०-११ निचृद्गायत्री ।

दुदिहिं मह्यं वरुणो दिवः क्विर्वचोभिरुग्रैर्नि रिणामि ते विषम् ।

खातमखातमुत् सक्तमग्रभामिरेव धन्वन् नि जजास ते विषम्

१ ८३४

यत् ते अपोदकं विषं तत् त एतास्वग्रभम् ।	
गृह्णामि ते मध्यममुत्तमं रसमुतावमं भियसां नेशदादु ते	२ ८३५
वृषां मे रवो नभसा न तन्यतुरुग्रेण ते वचसा चाध आदु ते ।	
अहं तमस्य नृभिरग्रभं रसं तमस इव ज्योतिरुदेतु सूर्यः	३
चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि विषेण हन्मि ते विषम् ।	
अहे भ्रियस्व मा जीवीः प्रत्यगभ्येतु त्वा विषम्	४
कैरात पृश्न उपतृण्य बभ्र आ मे शृणुतासिता अलीकाः ।	
मा मे सख्युः स्तामानमपि छाताश्रावयन्तो नि विषे रमध्वम्	५
असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च ।	
सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो वि मुञ्चामि रथां इव	६
आलिङ्गी च विलिङ्गी च पिता च माता च ।	
विद्य वः सर्वतो बन्ध्वरसाः किं करिष्यथ	७ ८४०
उरुगूलाया दुहिता जाता दास्यसिक्न्या ।	
प्रतङ्गं दद्रुषीणां सर्वासामरसं विषम्	८
कर्णा श्वावित् तदब्रवीद् गिरेरेवचरन्तिका ।	
याः काश्रेमाः खनित्रिमास्तासामरसतमं विषम्	९
ताबुवं न ताबुवं न घेत् त्वमसि ताबुवंम् । ताबुर्वेनारसं विषम्	१०
तस्तुवं न तस्तुवं न घेत् त्वमसि तस्तुवंम् । तस्तुर्वेनारसं विषम्	११

॥१४२॥ ( अथर्व० ७।८८।१ )

गरुमान् । तक्षकः ( सर्पविषनाशनम् ) । ज्यवसाना बृहती ।

अपेहारिरस्यरिर्वा असि । विषे विषमपृक्था विषमिद् वा अपृक्थाः ।

अहिमेवाभ्यपेहि तं जहि

१ ८४५

॥१४३॥ ( अथर्व० ६।१२।१-३ )

गरुमान् । तक्षकः ( सर्पविषनिवारणम् ) । अनुष्टुप् ।

परि ग्रामिव सूर्योऽहीनां जनिमागमम् ।

रात्री जगदिवान्यद्भंसात् तेना ते वारये विषम्

१

यद् ब्रह्मभिर्यदपिभिर्यद् देवैर्विदितं पुरा । यद् भूतं भव्यमासन्वत् तेना ते वारये विषम्

२

मध्वा पृश्ने नद्यः पर्वता गिरयो मधु । मधु परुष्णी शीपाला शमास्ने अस्तु शं हृदे

३

८४८



॥१४४॥ ( अथर्व० ६।५६।१-३ )

शन्तातिः । १ विश्वे देवाः, २-३ रुद्रः ( सर्पेभ्यो रक्षणम् ) । १ उष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः,  
२ अनुष्टुप्, ३ निचृत् ।

मा नो देवा अर्हिर्वधीत् सतोऽकान्तसहपूरुपान् ।

संयतं न वि ष्परद् व्यात्तं न सं यमन्नमो देवजनेभ्यः १

नमोऽस्त्वसिताय नमस्तिरश्चिराजये । स्वजाय ब्रध्वे नमो नमो देवजनेभ्यः २ ८५०

सं ते हन्मि द्रता द्रतः समु ते हन्वा हन् ।

सं ते जिह्वया जिह्वां सम्वास्ताह आस्यम् ३

॥१४५॥ ( अथर्व० ७।५६।१-८ )

अथर्वा । वृश्चिकादयः, २ वनस्पतिः, ४ ब्रह्मणस्पतिः ( विषभैषज्यम् ) । अनुष्टुप्, ४ विराट्प्रस्तारपङ्क्तिः ।

तिरश्चिराजेरसितात् पृदाकोः परि संभृतम् । तत् कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुदनीनशत् १

इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्रुन्मधुला मधूः । सा विहुतस्य भेषज्यथो मशकजम्भनी २

यतो दुष्टं यतो धीतं ततस्ते निर्ह्वयामसि । अर्भस्य तृप्रदंशिनो मशकस्यारसं विषम् ३

अयं यो वक्रो विपरुर्व्यङ्गो मुखानि वक्रा वृजिना कृणोषि ।

तानि त्वं ब्रह्मणस्पत इपीकामिव सं नमः ४ ८५५

अरसस्य शर्कोटस्य नीचीनस्योपसर्पतः । विषं ह्यस्यादिव्यथो एनमजीजभम् ५

न ते बाहोर्बलमस्ति न शीर्षे नोत मध्यतः । अथ किं पापयामुया पुच्छे विभर्ष्यर्भकम् ६

अदन्ति त्वा पिपीलिका वि वृश्चन्ति मयूर्यः । सर्वे भल ब्रवाथ शर्कोटमरसं विषम् ७

य उभाभ्यां प्रहरसि पुच्छेन चास्येन च । आस्येऽ न ते विषं किमु ते पुच्छधावसत् ८ ८५९

जलचिकित्सा । ( ८६०-१११९ )

॥१४६॥ ( अथर्व० ६।५७।१-३ )

शन्तातिः । रुद्रः । १-२ अनुष्टुप्, ३ पथ्याबृहती ।

इदमिद् वा उं भेषजमिदं रुद्रस्य भेषजम् ।

येनेषुमेकतेजनां शतशल्यामपब्रवत् १

जालापेणाभि पिञ्चत जालापेणोप सिञ्चत ।

जालापमुग्रं भेषजं तेन नो मृड जीवसे २

शं च नो मयश्च नो मा च नः किं चनाममत् ।

क्षमा रपो विश्वं नो अस्तु भेषजं सर्वं नो अस्तु भेषजम् ३ ८६९

॥१४७॥ ( ऋ० १।२३।१६-२३ )

मेघातिथिः काण्वः । आपः, २३ आपः अग्निश्च । १६-१८ गायत्री, १९ पुर उष्णिक्, २१ प्रतिष्ठा ।  
२०, २२-२३ अनुष्टुप् ।

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जाभयो अध्वरीयताम् । पृञ्चतीर्मधुना पयः	१६	
अमूर्या उप सूर्ये यामिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्	१७	
अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः । सिन्धुभ्यः कर्त्वी हविः	१८	८६५
अप्स्वृन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये । देवा भवत वाजिनः	१९	
अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंभुवमपश्च विश्वभेषजीः	२०	
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वेरे मम । ज्योक् च सूर्ये दृशे	२१	
इदमापः प्र बहत् यत् किं च दुरितं मयि । यद् वाहमभिदुद्रोह यद् वा शेष उतानृतम्	२२	
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पर्यस्वानग्र आ गहि तं मा सं सृज वरिषा	२३	८७०

॥१४८॥ ( ऋ० ७।४७।१-४ )

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

आपो यं वः प्रथमं देवयन्तं इन्द्रपानमूर्मिमकृण्वतेळः ।	
तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम	१
तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वो ऽपां नपादवत्वाशुहेमा ।	
यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाते तमश्याम देवयन्तो वो अद्य	२
शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पार्थः ।	
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो ह्वयं घृतवज्जुहोत	३
याः सूर्यो रश्मिभिराततान याभ्य इन्द्रो अरदद् गातुमूर्मिम् ।	
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	४

॥१४९॥ ( ऋ० ७।४९।१-४ )

वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आपः । त्रिष्टुप् ।

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः ।		
इन्द्रो या वृज्जी वृषभो रराद् ता आपो देवीरिह मामवन्तु	१	८७५
या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः ।		
समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु	२	
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम् ।		
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु	३	८७७

यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासुर्ज मदन्ति ।  
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु

४

+॥१५०॥ ( ऋ० १०।९।१-९ )

त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीप आम्बरीषो वा । आपः । गायत्री, ५ वर्धमाना गायत्री,  
७ प्रतिष्ठा गायत्री, ८-९ अनुष्टुप् ।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन	। महे रणाय चक्षसे	१
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः	। उशतीरिव मातरः	२ ८८०
तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ	। आपो जनयथा च नः	३
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये	। शं योरभि सवन्तु नः	४
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्वर्षणीनाम्	। अपो याचामि भेषजम्	५
अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा	। अग्निं च विश्वशोभुवम्	६
आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वेरे मम	। ज्योक् च सूर्ये दृशे	७ ८८५
इदमापः प्र बहत् यत् किं च दुरितं मयि ।		
यद् बाहर्माभिदुद्रोह यद् वा शेष उतानृतम्		८
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि ।		
पर्यस्वानग्र आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा		९

॥१५१॥ ( ऋ० १०।१७।१०-१४ )

देवधवा यामायनः । १०-१४ आपः, ११-१३ सोमो वा । त्रिष्टुप्, १३-१४ अनुष्टुप्,  
( १३ पुरस्ताद्बृहती वा । )

आपो अस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।		
विश्वं हि रिग्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि		१०
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु द्यूनिमं च योनिमनु यश्च पूर्वेः ।		
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः		११
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।		
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वर्षट्कृतम्		१२
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशुर्वश्च यः परः स्रुचा ।		
अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे		१३ ८९१

पर्यस्वतीरोषधयः पर्यस्वन्मामकं वचः ।

अपां पर्यस्वदित् पयुस्तेन मा सह शुन्धत

१४

॥१५२॥ (ऋ० १०।१९।१-८)

मथितो यामायनः, भृगुर्वाहाणिर्वा, च्यवनो भार्गवो वा । आपः, गावो वा, १ उत्तरार्धर्चस्य  
अग्नीषोमौ । अनुष्टुप्, ६ गायत्री ।

नि वर्तध्वं मानुं गाताऽस्मान्त्सिषक्त रेवतीः ।

अग्नीषोमा पुनर्वच्च अस्मे धारयतं रयिम्

१

पुनरेना नि वर्तय पुनरेना न्या कुरु ।

इन्द्र एणा नि यच्छ त्वग्निरेना उपाजतु

२

पुनरेता नि वर्तन्ता मस्मिन् पुष्यन्तु गोपतौ ।

इहैवाग्ने नि धारये ह तिष्ठतु या रयिः

३

८९५

यन्नियानं न्ययनं संज्ञानं यत् परायणम् ।

आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं ह्वे

४

य उदानड् व्ययनं य उदानट् परायणम् ।

आवर्तनं निवर्तनं मपि गोपा नि वर्तताम्

५

आ निवर्त नि वर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि । जीवाभिर्भुनजामहै

६

परि वो विश्वतो दध ऊर्जा घृतेन पर्यसा ।

ये देवाः के च यज्ञियास्ते रय्या सं सृजन्तु नः

७

आ निवर्तन वर्तय नि निवर्तन वर्तय ।

भूम्याश्चतस्रः प्रदिशस्ताभ्य एना नि वर्तय

८

९००

॥१५३॥ (ऋ० १०।३०।१-१५)

कवष ऐलूषः । आपः, अपां नपात् वा । त्रिष्टुप् ।

प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरे त्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति ।

महीं मित्रस्य वरुणस्य धासि पृथुजयसे रीरघा सुवृक्तिम्

१

अध्वर्यवो हविर्मन्तो हि भूताऽच्छाप इतोशतीरुशन्तः ।

अव याश्चष्टे अरुणः सुपर्णस्तमास्यध्वमूर्धिमद्या सुहस्ताः

२

अध्वर्यवोऽप इता समुद्रमपां नपातं हविषा यजध्वम् ।

स वो दददूर्धिमद्या सुपूतं तस्मै सोमं मधुमन्तं सुनोत

३

९०३

दे० [ आयुर्वेद० ] ९

यो अनिध्मो दीदयद्वस्वन्त—र्यं विप्रांसु ईळते अध्वरेषु ।	
अपां नपान्मधुमतीरपो दा याभिरिन्द्रो वावुधे वीर्यीय	४
याभिः सोमो मोदते हर्षते च कल्याणीभिर्युवतिभिर्न मर्यैः ।	
ता अध्वर्यो अपो अच्छा परेहि यदासिञ्चा ओषधीभिः पुनीतात्	५ ९०५
एवेधूने युवतयो नमन्त यदीमुशन्नुशतीरेत्यच्छ ।	
सं जानते मनसा सं चिकित्त्रे ऽध्वर्यवो धिषणापश्च देवीः	६
यो वो वृताभ्यो अकुणोदु लोकं यो वो महा अभिशस्तेरमुञ्चत् ।	
तस्मा इन्द्राय मधुमन्तमूर्मि देवमादनं प्र हिणोतनापः	७
प्रास्मै हिनोत मधुमन्तमूर्मि गर्भो यो वः सिन्धवो मध्व उत्सः ।	
घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेष्व्वा—ऽऽपो रेवतीः शृणुता हवं मे	८
तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपान—मूर्मि प्र हेत य उभे इयति ।	
मदच्युतमौशानं नभोजां परि त्रितन्तुं विचरन्तमुत्सम्	९
आवर्ष्वततीरधु नु द्विधारा गोषुयुधो न नियवं चरन्तीः ।	
ऋषे जनित्रीर्भुवनस्य पत्नी—रपो वन्दस्व सवृधः सयोनीः	१० ९१०
हिनोता नो अध्वरं देवयज्या हिनोत ब्रह्म सनये धनानाम् ।	
ऋतस्य योगे वि ष्यध्वमूधः श्रुष्टीवरीभूतनास्मभ्यमापः	११
आपो रेवतीः क्षयथा हि वस्वः क्रतुं च भद्रं विभ्रथामृतं च ।	
रायश्च स्थ स्वपत्यस्य पत्नीः सरस्वती तद् गृणते वयो धात्	१२
प्रति यदापो अदृश्रमायती—धृतं पयोसि विभ्रतीर्मधूनि ।	
अध्वर्युभिर्मनसा संविदाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः	१३
एमा अगमन् रेवतीर्जीवधन्त्या अध्वर्यवः सादयता सखायः ।	
नि ब्रह्मिणि धत्तन सोम्यासो ऽपां नप्रां संविदानास एनाः	१४
आगमन्नाप उशतीर्ब्रह्मिरेदं न्यध्वरे असदन् देवयन्तीः ।	
अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोम—मभूदु वः सुशका देवयज्या	१५

॥१५४॥ (अथर्व० १।३३।१-४)

शन्तातिः । ( चन्द्रमाः ) आपः ( च ) । त्रिष्टुप् ।

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः सविता यास्वभिः ।

या अभि गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु

१ ९१६

यासां राज्ञा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अत्रपश्यन् जनानाम् ।  
 या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु २  
 यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति ।  
 या अग्निं गर्भं दधिरे सुवर्णास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ३  
 शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोषं स्पृशत त्वचं मे ।  
 घृतश्रुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ४

॥१५५॥ (अथर्व० ३।१३।१-७)

भृगुः । वरुणः, सिन्धुः, आपः; २-३ इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ निचृत्, ५ विराड्जगती, ६ निचृदनुष्टुप् ।  
 यद्ददः संप्रयतीरहावनदता हते ।

तस्मादा नद्योऽं नामं स्थ ता वो नामानि सिन्धवः १ ९२०  
 यत् प्रेषिता वरुणेनाच्छीभं समवल्गत ।  
 तदाप्रोदिन्द्रो वो यतीस्तस्मादापो अनुं घ्न २  
 अपक्रामं स्यन्दमाना अधीवरत वो हि कम् ।  
 इन्द्रो वः शक्तिभिर्देवीस्तस्माद् वानामं वो हितम् ३  
 एको वो देवोऽप्यतिष्ठत् स्यन्दमाना यथावशम् ।  
 उदानिषुर्महीरिति तस्माद्दुदकमुच्यते ४  
 आपो भद्रा घृतमिदापं आसन्नग्नीषोमौ विभ्रत्याप इत् ताः ।  
 तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसा गमेत् ५  
 आदित् पश्याम्युत वा ऋणोम्या मा घोषो गच्छति वाङ् मासाम् ।  
 मन्ये भेजानो अमृतस्य तर्हि हिरण्यवर्णा अतृपं यदा वः ६ ९२५  
 इदं वं आपो हृदयमयं वत्स क्रतावरीः । इहेत्थमेतं शकरीर्यत्रेदं वेश्यामि वः ७

॥१५६॥ (अथर्व० ७।३९।१)

प्रस्कण्वः । आपः, सुपर्णः, वृषभः । त्रिष्टुप् ।

दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तमपां गर्भं वृषभमोषधीनाम् ।  
 अभीपतो वृष्ट्या तर्पयन्तमा नो गोष्ठे रथिष्ठां स्थापयाति १

॥१५७॥ (अथर्व० १९।२।१-५)

सिन्धुद्वीपः । आपः । अनुष्टुप् ।

शं त आपो हैमवतीः शम्भुं ते सन्तुत्स्याः । शं ते सनिष्यदा आपः शम्भुं ते सन्तु वर्याः १  
 शं त आपो धन्वन्याः । शं ते सन्तवनूप्याः । शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः २ ९२९

अनभ्रयः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः ।	
भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपो अच्छा वदामसि	३ ९३०
अपामहं दिव्यानिमपां स्रोतस्यानिाम् ।	
अपामहं प्रणेजनेऽश्वा भवथ वाजिनः	४
ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः । यथैव तृष्यते मयस्तास्त आ दत्त भेषजीः	५

॥१५८॥ ( अथर्व० १९।६९।१-४ )

ब्रह्मा । आपः । १ आसुर्यनुष्टुप्; २ साम्न्यनुष्टुप्; ३ आसुरी गायत्री; ४ साम्न्युष्णिक् ।

जीवा स्थं जीव्यासं सर्वमार्युर्जीव्यासम्	१
उपजीवा स्थोपं जीव्यासं सर्वमार्युर्जीव्यासम्	२
संजीवा स्थं सं जीव्यासं सर्वमार्युर्जीव्यासम्	३ ९३५
जीवला स्थं जीव्यासं सर्वमार्युर्जीव्यासम्	४

॥१५९॥ ( वा० य० १।१२-१३, २१, ३१ )

( आपः । )

सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।  
देवीरापो अग्नेगुवो अग्नेपुवोऽग्रं इममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिं सुधातुं यज्ञपतिं

देवयुवम् १२

युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीष्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिता स्थ  
समाप ओषधीभिः समोषधयो रसेन । १३

स रेवतीर्जगतीभिः पृच्यन्तां सं मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम् २१

सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ३१ ९४०

॥१६०॥ ( वा० य० १।२, ३४ )

( आपः । )

अदित्यै व्युन्देनमसि २

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधा स्थं तर्पयत मे पितृन् ३४

॥१६१॥ ( वा० य० ४।१, १२ )

( आपः । )

हमा आपः शम्भु मे सन्तु देवीः १

श्वात्राः पीता भवत यूयमापो ऽ अस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः ।

ता अस्मभ्यमयक्ष्मा अनमीवा अनागसः स्वदन्तु देवीरमृता ऋतावृधः १२ ९४४

॥१६२॥ ( वा० य० ५।११ )

( आपः । )

इदमहं तप्तं वार्षहिर्घा यज्ञान्निः सृजामि

११ ९४५

॥१६३॥ ( वा० य० ६।१०, १३, ३०-३१ )

( आपः । )

आपो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद् देवहविः

१०

देवीरापः शुद्धा वोद्वं सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा वयं परिविष्टारो भूयास्म

१३

निग्राभ्या स्थ देवश्रुतस्तर्पयत मा

३०

मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे

तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून् मे तर्पयत गणान् मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन्

३१

॥१६४॥ ( वा० य० ६।१७, २२, २४, २७-२८ )

( आपः । )

इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत् ।

यच्चाभिद्रोहानृतं यच्च शोषे अभीरुणम् ।

आपो मा तस्मादेनसुः पवमानश्च सुश्रुतु

१७ ९५०

मापो मौषधीर्हिंसीः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः

२२

अप्रेर्वोऽर्पन्नगृहस्य सदासि सादयामीन्द्राग्नयोर्भागधेयीं स्थ मित्रावरुणयोर्भागधेयीं स्थ

विश्वेषां देवानां भागधेयीं स्थ ।

अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह । ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्

२४

देवीरापो अपां नपाद्यो व ऊर्मिर्हिविष्य इन्द्रियावान् मदिन्तमः ।

तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा

२७

समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरंगमत समोषधीभिरोषधीः

२८

॥१६५॥ ( वा० य० ८।२६ )

( आपः । )

देवीराप एष वो गर्भस्तं सुप्रीतं सुभृतं विभृत ।

देवं सोमैष ते लोकस्तस्मिच्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व

२६ ९५५



॥१६६॥ ( अथर्व० ६।१२४।१-३ )

अथर्वा । दिव्या आपः ( निर्ऋत्यपस्तरणम् ) । त्रिष्टुप् ।

दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षादुपां स्तोको अभ्यपिप्तुद् रसेन ।  
 सर्भिन्द्रियेण पर्यसाहमग्ने छन्दोभिर्यज्ञैः सुकृतां कृतेन १  
 यदि वृक्षादुभ्यपिप्तु फलं तद् यद्यन्तरिक्षात् स उ वायुरेव ।  
 यत्रास्पृक्षत् तन्वोऽे यच्च वासस आपो नुदन्तु निर्ऋतिं पराचैः २  
 अभ्यञ्जनं सुरभि सा समृद्धिर्हिरण्यं वर्चस्तदु पुत्रिममेव ।  
 सर्वा पवित्रा वितताध्यस्मत् तन्मा तारीर्निर्ऋतिर्मो अरातिः ३

॥१६७॥ ( अथर्व० ७।८९।१-४ )

सिन्धुद्वीपः । अग्निः ( दिव्या आपः ) । अनुष्टुप्, ४ टिपदा निचृत् परोष्णिक् ।

अपो दिव्या अचायिषं रसेन समपृक्षमहि ।  
 पर्यस्वानग्ने आगमं तं मा सं सृज वर्चसा १  
 सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।  
 विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः २ ९६०  
 इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत् । यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेषे अभीरुणम् ३  
 एधोऽस्येधिषीय समिदसि समेधिषीय । तेजोऽसि तेजो मयि धेहि ४

॥१६८॥ ( अथर्व० १।४।४ )

सिन्धुद्वीपः । आपः ( अपां भेषजम् ) । पुरस्ताद्बृहती ।

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम् ।  
 अपामुत् प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः ४

॥१६९॥ ( अथर्व० १।६।४ )

सिन्धुद्वीपः ( अथर्वा कृतिर्वा ) । आपः ( अपां भेषजम् ) । पथ्यापङ्क्तिः ।

शं न आपो घन्वन्याऽेः शमु सन्त्वनूप्याऽिः ।  
 शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः ४

॥१७०॥ ( अथर्व० ६।२२।१-३ )

शन्तातिः । १ आदित्यराक्षिः, २-३ मरुतः ( भेषज्यम् ) । त्रिष्टुप्, २ चतुष्पदा भुक्तिजगती ।

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत् पतन्ति ।  
 त आर्ववृत्रन्त्सर्दनादृतस्यादिद घृतेन पृथिवीं व्युद्भिः १ ९६५

पर्यस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजंथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।  
 ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु २  
 उदुप्रुतो मरुतस्ताँ इयते वृष्टिर्या विश्वा निवतस्पृणार्ति ।  
 एजाति ग्लहा कन्येवि तुभ्रैरुं तुन्दाना पत्यैव जाया ३

॥१७१॥ (अथर्व० ६।२३।१-३)

शन्तातिः । आपः ( अपां भैषज्यम् ) । १ अनुष्टुप्, २ त्रिपदा गायत्री, ३ परोष्णिक् ।  
 सस्रुषीस्तदुपसो दिवा नक्तं च सस्रुषीः । वरेण्यक्रतुरहमपो देवीरुपं ह्ये १  
 ओता आपः कर्मण्या मुञ्चन्वितः प्रणीतये । सद्यः कृण्वन्त्वेतवे २  
 देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः । शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः ३ ९७०

॥१७२॥ (अथर्व० ६।२४।१-३)

शन्तातिः । आपः ( अपां भैषज्यम् ) । अनुष्टुप् ।

हिमवतः प्र स्रवन्ति सिन्धौ समह संगमः ।  
 आपो ह मह्यं तद् देवीर्ददन् हृद्योतभेषजम् १  
 यन्मे अक्षयोरादिद्योत पाण्योः प्रपदोश्च यत् ।  
 आपस्तत् सर्वं निष्करन् भिषजां सुभिषक्त्वाः २  
 सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्यं स्थनं ।  
 दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै ३

॥१७३॥ ( ऋ० ५।८३।१-१० )

भौमोऽग्निः । पर्जन्यः । त्रिष्टुप्, २-४ जगती, ९ अनुष्टुप् ।

अच्छा वद तवसें गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास ।  
 कर्निक्रदद् वृषभो जीरदान् रेतो दघ्नात्योषधीषु गर्भम् १  
 वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधान् ।  
 उतानांगा ईषते वृष्ण्यावतो यत् पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः २ ९७५  
 रथीव कश्याश्वाँ अभिक्षिपन् आविर्दूतान् कृणुते वर्ष्याँ इ अहं ।  
 दूरात् सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत् पर्जन्यः कृणुते वर्ष्याँ नमः ३  
 प्र वाता वान्ति पतरान्ति विद्युत् उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः ।  
 इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत् पर्जन्यः पृथिवीं रेतसार्वति ४ ९७७

यस्य व्रते पृथिवी ननमीति	यस्य व्रते शफवज्जर्धरीति ।	
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः	स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ	५
दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं	प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः ।	
अर्वाङ्ङितेन स्तनयित्नुनेह्य	पो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः	६
अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा	उदुन्वता परि दीया रथेन ।	
दृति सु कर्ष विषितं न्यञ्चं	समा भवन्तूद्वतो निपादाः	७ ९८०
महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च	स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात् ।	
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि	सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः	८
यत् पर्जन्य कनिक्रदत्	स्तनयन् हंसि दुष्कृतः ।	
प्रतीदं विश्वं मोदते	यत् किं च पृथिव्यामधि	९
अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभाया	ऽकर्धन्वान्यत्येतवा उ ।	
अजीजन ओषधीर्भोजनाय	कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषां	१०

॥१७४॥ ( ऋ० १०।२७।१६ )

ऐन्द्रो वसुकः । इन्द्रः ( पर्जन्यः ) । त्रिष्टुप् ।

दशानामेकं कपिलं समानं	तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय ।	
गर्भं माता सुधितं वक्षणा	स्ववेनन्तं तुषयन्ती विभर्ति	१६

॥१७५॥ ( ऋ० ७।१०।१-६ )

मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः ( वृष्टिकामः ), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । त्रिष्टुप् ।

तिस्रो वाचः प्र वदु ज्योतिरग्रा	या एतद् दुहे मधुदोघमूषः ।	
स वत्सं कृण्वन् गर्भमोषधीनां	सद्यो जातो वृषभो रौरवीति	१ ९८५
यो वर्धन ओषधीनां यो अपां	यो विश्वस्य जगतो देव ईशे ।	
स त्रिधातुं शरणं शर्म यंसत्	त्रिवर्तु ज्योतिः स्वभिष्टयस्मे	२
स्तरीरुं त्वद् भवति सूत उ त्वद्	यथावशं तन्वं चक्र एषः ।	
पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता	तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः	३
यस्मिन् विश्वानि भ्रवन्नानि तस्थु	स्तिस्रो द्यावस्त्रेधा ससुरापः ।	
त्रयः कोशास उपसेचनासो	मध्वः श्रोतन्त्यभितो विरप्शम्	४ ९८८

इदं वचः पर्जन्याय स्वराजै हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत् ।	
मयोभ्रुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः	५
स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगत्स्तस्थुषश्च ।	
तन्म श्रुतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	६ ९९०

॥१७६॥ ( ऋ० ७।१०२।१-३ )

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ( वृष्टिकामः ), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः । गायत्री, २ पादनिचृत् ।	
पर्जन्याय प्र गायत दिवस्पुत्राय मीळहुषे । स नो यवसमिच्छतु	१
यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यवताम् । पर्जन्यः पुरुषीणाम्	२
तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम् । इळां नः संयतं करत्	३

॥१७७॥ ( ऋ० ७।१०३।१-१० )

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मण्डूकाः ( पर्जन्यः ) । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप् ।	
संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।	
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः	१
दिव्या आपो अभि यदेनमायन् दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् ।	
गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वमुरत्रा समेति	२ ९९५
यदीमेनां उशतो अभ्यवर्षात् तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् ।	
अक्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति	३
अन्यो अन्यमनु गृष्णात्येनो रपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् ।	
मण्डूको यदुभिवृष्टः कनिष्कन् पृश्निः संपृङ्क्ते हरितेन वाचम्	४
यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्यैव वदति शिक्षमाणः ।	
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत् सुवाचो वदथनाध्यप्सु	५
गोमाथुरेको अजमाथुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।	
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः	६
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः ।	
संवत्सरस्य तदहः परिं ष्ट यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूवं	७
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृष्वन्तः परिवत्सुरीणम् ।	
अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित्	८ १००१

देवर्हितं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्रमिनन्त्येते ।  
 संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्रुवते विसर्गम् ९  
 गोमापुरदादुजमायुरदात् पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि ।  
 गर्वा मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्रतिरन्त आयुः १०

॥१७८॥ (अथर्व० ४।१५।१-१६)

अथर्वा । १ दिशः, २-३ वीरुधः, ४ मरुत्पर्जन्यौ, ५-१० मरुतः आपः, ११ प्रजापतिः स्तनयित्नुः,  
 १२ वरुणः, १३-१५ मण्डूकाः पितरश्च, १६ वातः ( वृष्टिः ) । त्रिष्टुप्, १-२, ५ विराट्  
 जगती, ४ विराट् पुरस्ताद्बृहती; ७, १३ अनुष्टुप्, ९ पथ्यापङ्क्तिः, १० भुरिक्,  
 १२ पञ्चपदानुष्टुग्गर्भा भुरिक्, १५ शंकुमत्यनुष्टुप् ।

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजृतानि यन्तु ।  
 महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु १  
 समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम् ।  
 वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः २ १००५  
 समीक्षयस्व गायतो नभस्यपां वेगासः पृथगुद् विजन्ताम् ।  
 वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग् जायन्तां वीरुधो विश्वरूपाः ३  
 गुणास्त्वोषं गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।  
 सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु ४  
 उदीरयत मरुतः समुद्रतस्त्वेषो अर्को नभ उत् पातयाथ ।  
 महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु ५  
 अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधि भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्ग्धि ।  
 त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारेषी कृशगुरेत्वस्तम् ६  
 सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।  
 मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु ७ १०१०  
 आशामाशां वि द्यौततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।  
 मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु ८  
 आपो विद्युद्भ्रं वर्षं सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।  
 मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु ९  
 अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।  
 स नो वर्षं वन्तुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्पति १० १०१३

प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादाप ईरयन्नुदुधिर्मर्दयाति ।	
प्र प्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङ्ङेतेन स्तनयित्नुनेहिं	११
अपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः श्वसन्तु गर्गैरा अपां वरुणाव नीचीरपः संज ।	
वदन्तु पृथिवीबाहवो मण्डूका हरिणानु	१२ १०१५
संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।	
वाचं पर्जन्याजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः	१३
उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि । मध्ये हृदस्यं प्लवस्व विगृह्यं चतुरं पदः	१४
खण्वखाइह खैमखाइह मध्ये तदुरि । वर्षं वनुध्वं पितरो मरुतां मन इच्छत	१५
महान्तं कोशमृदंचामि षिञ्च सविद्युतं भवतु वातु वातः ।	
तन्वतां यज्ञं बहुधा विसृष्टा आनन्दिनीरोषधयो भवन्तु	१६
॥१७९॥ ( अथर्व० ७।१८।१-२ )	
अथर्वा । पृथिवी, पर्जन्यः ( वृष्टिः ) । १ चतुष्पदा भुरिगुष्णिक्, २ त्रिष्टुप् ।	
प्र नभस्व पृथिवि भिन्द्हीइदं दिव्यं नभः ।	
उद्रो दिव्यस्य नो धातरीशानो वि प्या दृतिम्	१ १०२०
न घंस्तताप न हिमो जघान प्र नभतां पृथिवी जीरदानुः ।	
आपश्चिदस्मै घृतमित् क्षरन्ति यत्र सोमः सद्रमित् तत्र भद्रम्	२
॥१८०॥ ( ऋ० ३।३३।१-१३ )	
गाथिनो विश्वामित्रः; ४,६,८,१० नद्यः ऋषिकाः । नद्यः; ४,८,१० विश्वामित्रः;	
६,७ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, १३ अनुष्टुप् ।	
प्र पर्वतानामुशती उपस्था—दश्वे इव विषिते हासमाने ।	
गावैव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पर्यसा जवेते	१
इन्द्रैषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः ।	
समारणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे	२
अच्छा सिन्धुं मातृत्तमामयासं विपाशमुर्वी सुभगागन्म ।	
वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनुं संचरन्ती	३
एना वयं पर्यसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः ।	
न वर्तवे प्रसवः सर्गैतक्तः कियुर्विप्रो नद्यो जोहवीति	४
रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुपं मुहूर्तमेवैः ।	
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा ऽवस्युरहे कुशिकस्यं सूनुः	५ १०२६

इन्द्रो असाँ अरदुद् वज्रबाहु—रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् । देवोऽनयत् सविता सुपाणि—स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः	६
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं त—दिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्वत् । वि वज्रेण परिषदो जघाना—ऽऽयन्नापोऽयं नमिच्छमानाः	७
एतद् वचो जरितर्मापिं मृष्टा आ यत् ते घोषानुत्तरा युगानि । उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते	८
ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन । नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः	९ १०३०
आ ते कारो शृणवामा वचोसि ययार्थं दूरादनसा रथेन । नि ते नसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते	१०
यदुङ्ग त्वा भरताः संतरेयु—र्गव्यन् ग्राम इषित इन्द्रजतः । अर्षादहं प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्	११
अतारिषुर्भरता गव्यवः स—मभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम् । प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वृक्षणाः पूणध्वं यात शीभम्	१२
उद् व ऊर्मिः शम्या ह—न्त्वापो योक्त्राणि मुश्वत । मादुष्कृतौ व्येनसा—ऽऽन्यौ शूनमारताम्	१३

॥१८१॥ ( ऋ० ७।५०।४ )

मैत्रावरुणिवसिष्ठः । नद्यः । अतिजगती शकरी वा ।

याः प्रवतो निवर्त उद्वत उदुन्वतीरनुदुकाश्च याः । ता असभ्यं पर्यसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु सर्वी नद्यो अशिमिदा भवन्तु	४ १०३५
--	--------

॥१८२॥ ( ऋ० १०।७।५।१-९ )

सिन्धुक्षित प्रेयमेधः । नद्यः । जगती ।

प्र सु व आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदाने विवस्वतः । प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरोजसा प्र तेऽरदुद् वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद् वाजो अभ्यद्रवस्त्वम् । भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यासि	१ २ १०३७
--	-------------

दिवि स्वनो यंतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियति भानुना ।	
अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत्	३
अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पर्यसेव धेनवः ।	
राजैव युष्वा नयसि त्वमित् सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि	४
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुण्या ।	
असिकन्या मरुद्वृधे वितस्तया ऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया	५ १०४०
तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या ।	
त्वं सिन्धो कुर्मया गोमतीं क्रुमुं मेहत्त्वा सरथं याभिरीयसे	६
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि जयांसि भरते रजांसि ।	
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमा ऽश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता	७
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती ।	
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम्	८
सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ ।	
महान् ह्यस्य महिमा पनस्यते ऽदब्धस्य स्वयंशसो विरग्निनः	९

॥१८३॥ ( ऋ० ७।९।५।३ )

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । त्रिष्टुप् ।

स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु ।	
स वाजिनं मधुवृधयो दधाति वि सातर्ये तन्वं मामृजीत	३ १०४५

॥१८४॥ ( ऋ० ७।९।६।४--६ )

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सरस्वान् । गायत्री ।

जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः । सरस्वन्तं हवामहे	४
ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्रुतः । तेभिर्नोऽविता भव	५
पीपिवांसं सरस्वतः स्तनं यो विश्वदर्शतः । भक्षीमहिं प्रजामिषम्	६

॥१८५॥ ( अथर्व० ७।४०।१-२ )

प्रस्कण्वः । सरस्वान् । १ भुरिक्, २ त्रिष्टुप् ।

यस्य व्रतं पशवो यन्ति सर्वे यस्य व्रत उपतिष्ठन्त आपः ।	
यस्य व्रते पुष्टपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे हवामहे	१ १०४९



आ प्रत्यश्च द्वाशुषे द्वाश्वसं सरस्वन्तं पुष्टपतिं रयिष्ठाम् ।

रायस्पोषं श्रवस्युं वसाना इह हुवेम सदनं रयीणाम्

२ १०५०

॥१८६॥ ( ऋ० १।३।१०-११ )

मधुच्छन्दावैश्वामित्रः । सरस्वती । गायत्री ।

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः

१०

चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती

११

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति

१२

॥१८७॥ ( ऋ० १।१६४।४९ )

दीर्घतमा औचथ्यः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।

यो रतन्धा वसुविद् यः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः

४९

×॥१८८॥ ( ऋ० १।३०।८ [पूर्वार्धः] )

गृत्समदः ( आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः ) शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून्

८ १०५५

॥१८९॥ ( ऋ० २।४१।१६-१८ )

गृत्समदः ( आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः ) शौनकः । सरस्वती । अनुष्टुप्, १८ षट्ठी ।

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति ।

अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि

१६

त्वे विश्वा सरस्वति श्रितार्येषि देव्याम् ।

शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि नः

१७

इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति ।

या ते मन्म गृत्समदा ऋतावारि प्रिया देवेषु जुह्वति

१८

॥१९०॥ ( ऋ० ६।६१।१-१४ )

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । सरस्वती । गायत्री, १-३, १३ जगती; १४ त्रिष्टुप् ।

इयमददाद् रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्यश्वायं द्वाशुषे ।

या अश्वन्तमाचखादावसं पणि ता ते द्वात्राणि तविषा सरस्वति

१

इयं शुष्मेभिर्विसुखा इवारुजत् सानु गिरीणां तविषेभिरूमिभिः ।

पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः

२ १०६०

सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य वृसंस्य मायिनः ।	
उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति	३
प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । धीनामचित्र्यवतु	४
यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते । इन्द्रं न वृत्रतूर्ये	५
त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि । रदा पूषेव नः सुनिम्	६
उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः । वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्	७ १०६५
यस्या अनन्तो अहृतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः । अमश्चरति रोरुवत्	८
सा नो विश्वा अति द्विषः स्वसरन्या ऋतावरी । अतन्नहेव सूर्यः	९
उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सृजुष्टा । सरस्वती स्तोम्या भूत्	१०
आपप्रुषी पार्थिवा न्युरु रजो अन्तरिक्षम् । सरस्वती निदस्पातु	११
त्रिषधस्था सप्तधातुः पञ्च जाता वर्धयन्ती । वाजेवाजे हव्या भूत्	१२ १०७०
प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा ।	
रथं हव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती	१३
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पर्यसा मा न आ धक् ।	
जुषस्व नः सख्या वेद्या च मा त्वत् क्षेत्राण्यरणानि गन्म	१४

॥१९१॥ ( ऋ० ७।९५।१-२,४-६ )

मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

प्र श्वोदसा धार्यसा सन्न एषा सरस्वती धरुणमार्यसी पूः ।	
प्रवारधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः	१
एकाचितत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात् ।	
रायश्चेतन्ती भुवन्स्य भूरैर्धृतं पयो दुदुहे नाहुषाय	२
उत स्या नः सरस्वती जुषाणोप श्रवत् सुभगा यज्ञे असिन् ।	
मितज्ञुभिर्नमस्यैरियाना राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्यः	४ १०७५
इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः प्रति स्तोमं सरस्वति जुषस्व ।	
तव शर्मन् प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम्	५
अयम्भु ते सरस्वति वसिष्ठो द्वारावृतस्य सुभगे व्यावः ।	
वर्धे शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान् युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	६ १०७७

॥१९२॥ ( ऋ० ७।९६।१-३ )

मैत्रावरुणिवर्षसिष्ठः । सरस्वती । १-२ प्रगाथः- ( १ बृहती, २ सतो बृहती ), ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

बृहद् गायिषे वचो ऽसुर्या नदीनाम् ।

सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभिः स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी १

उभे यत् ते महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरवः ।

सा नो बोध्यवित्री मरुत्सखा चोद् राधो मघोनाम् २

भद्रमिद् भद्रा कृणवत् सरस्वत्यकवारी चेतति वाजिनीवती ।

गृणाना जमदाश्रिवत् स्तुवाना च वसिष्ठवत् ३ १०८०

॥१९३॥ ( ऋ० १०।१७।१-२, ७-९ )

देवश्रवा यामायनः । १-२ सरण्यूः, ७-९ सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति ।

यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश १

अपांगूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सर्वर्णामददुर्विवस्वते ।

उताश्रिनावभरद् यत् तदासीदजहाद् द्वा मिथुना सरण्यूः २

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।

सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती द्वाशुषे वार्यं दात् ७

सरस्वति या सरथं ययार्थं स्वधार्भिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।

आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयस्वाऽनमीवा इष आ धेह्यस्मे ८

सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।

सहस्रार्धमिलो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि ९ १०८५

॥१९४॥ ( अथर्व० ७।१०।१ )

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते स्तनः शशयुर्यो मयोभूर्यः सुम्रयुः सुहवो यः सुदन्नः ।

येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवे कः १

॥१९५॥ ( अथर्व० ७।११।१ )

शौनकः । सरस्वती । त्रिष्टुप् ।

यस्ते पृथु स्तनयित्थुर्य ऋष्वो देवः केतुर्विश्वमाभूषतीदम् ।

मा नो वधीर्विद्युता देव सस्यं मोत वधी रश्मिभिः सूर्यस्य १ १०८७

॥१९६॥ (अथर्व० ७।५७।१-२)

वामदेवः । सरस्वती । जगती ।

यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे यद् याचमानस्य चरतो जनां अनु ।  
यदात्मनि तन्वो मे विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद् घृतेन १  
सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रामो अप्यवीवृतन्नृतानि ।  
उभे इदस्याभे अस्य राजत उभे यतेते उभे अस्य पुष्यतः २

॥१९७॥ (अथर्व० ७।६८।१-३)

शन्तातिः । सरस्वती । १ अनुष्टुप्, २ त्रिष्टुप्, ३ गायत्री ।

सरस्वति व्रतेषु ते दिव्येषु देवि धामसु । जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि ररास्व नः १ १०९०  
इदं ते हव्यं घृतवत् सरस्वतीदं पितृणां हविरास्यं यत् ।  
इमानि त उदिता शंतमानि तेभिर्वयं मधुमन्तः स्याम २  
शिवा नः शंतमा भव सुमृडीका सरस्वति । मा ते युयोम संदशः ३

॥१९८॥ (वा० य० १०।१-४, ६, १९)

(आपः ।)

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जेस्वती राजस्वश्चिदानाः ।

याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन् याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः १

वृष्णा ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णा ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि  
राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि २

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहाअर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तौर्जस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं  
मे दत्त स्वाहौर्जस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तार्पः परिव्राहिणीं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः  
परिव्राहिणीं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां पतिरसि राष्ट्रदा  
राष्ट्रममुष्मै देह्यापां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ३ १०९५

सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त सूर्यवर्चस स्थ  
राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त  
स्वाहा मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त व्रजक्षितं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षितं स्थ  
राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त वाशां स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वाशां स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त  
शर्विष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शर्विष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त शक्वरी स्थ राष्ट्रदा  
राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा

जनभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृतं स्थ राष्ट्रदा  
राष्ट्रममुष्मै दत्तापः स्वराजं स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त । मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्तां महिं क्षत्रं  
क्षत्रियाय वन्वाना अनाष्टृष्टाः सीदत सहौजसो महिं क्षत्रं क्षत्रियाय दधतीः ४

सवितुर्वैः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ६

प्र पर्वतस्य वृषभस्यं पृष्ठान्नावश्वरन्ति स्वसिचं इयानाः ।

ता आववृत्रन्नधरागुदक्ता अहिं बुध्न्यमनु रीर्यमाणाः १९

॥१९९॥ ( वा० य० ११।३८ )

( आपः । )

अपो देवीरुपसृज मधुमतीर्यक्ष्मायं प्रजाभ्यः ।

तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः ३८

॥२००॥ ( वा० य० १२।३५,५५ )

( आपः । )

आपो देवीः प्रतितृग्णीत भस्मैतत् स्योने कृणुष्वं सुरभा उं लोके ।

तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेवं पुत्रं बिभृताप्स्वेनत् ३५ ११००

ता अस्य स्रददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।

जन्मन् देवानां विशस्त्रिष्वा रोचने दिवः ५५

॥२०१॥ ( वा० य० १४।८ )

( आपः । )

अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादत्र चतुष्पात् पाहि दिवो वृष्टिमेरय ८

॥२०२॥ ( वा० य० २०।१८-२०,२२-२३ )

( आपः । )

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शर्पांमहे ततो वरुण नो मुञ्च ।

अवभृथ निचुम्पुण निचुरसि निचुम्पुणः ।

अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि १८

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽसान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः १९

द्रुपदादिव मृष्टुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव ।

पूतं पवित्रेणैवाज्यमार्षः शुन्धन्तु मैर्नसः २० ११०

अपो अद्यान्वचारिषु रसेन समसृक्षमहि ।

पर्यस्वानम आगमं तं मा सः सुज वचसा प्रजया च धनेन च

२२

एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि तेजोऽसि तेजो मयि धेहि

२३ ११०७

अन्नादिकम् । ( ११०८-१३३१ )

॥२०३॥ ( ऋ० १।१८७,१-११ )

अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । अन्नं । १ अनुष्टुप्गर्भा उष्णिक्, ३,५-७,११ अनुष्टुप्; ( ११ बृहती वा );  
२,४,८-१० गायत्री ।

पितुं नु स्तौषं महो धर्माणं तर्विषीम् । यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत्+ १

स्वादो पितो मधो पितो वयं त्वां ववृमहे । अस्माकमविता भव २

उप नः पितवा चर शिवः शिवाभिरूतिभिः । मयोभ्ररद्विषेण्यः सखा सुशेनो अद्वयाः ३ १११०

तव त्ये पितो रसा रजांस्यनु विष्टिताः । दिवि वाता इव श्रिताः ४

तव त्ये पितो ददतस्तव स्वादिष्ट ते पितो । प्र स्वान्नानो रसानां तुविग्रीवा इवेरते ५

त्वे पितो महानां देवानां मनो हितम् । अकारि चारु केतुना तवाहिमवसावधीत् ६

यद्दो पितो अजगन् विवस्व पर्वतानाम् । अत्रा चिन्नो मधो पितो ऽरं भक्षाय गम्याः ७

यदुपामोषधीनां परिशमारिशामहे । वातापि पीव इद् भव ८ १११५

यत् ते सोम गवाशिरो यवाशिरो भजामहे । वातापि पीव इद् भव ९

करम्भ औषधे भव पीवो वृक्क उदारथिः । वातापि पीव इद् भव १०

तं त्वा वयं पितो वचोभिर्गावो न हव्या सुषूदिम ।

देवेभ्यस्त्वा सधमादमुस्मभ्यं त्वा सधमादम् ११

॥२०४॥ (अथर्व० ६।७१।१-३)

ब्रह्मा । अग्निः, ३ वैश्वानरः, देवाः (अन्नम्) । जगती, ३ त्रिष्टुप् ।

यदन्नमधि बहुधा विरूपं हिरण्यमश्नुत गामजामविम् ।

यदेव किं च प्रतिजग्रहाहमग्निष्टदोता सुहुतं कृणोतु १

यन्मा हुतमहुतमाजगाम दुत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः ।

यस्मान्मे मन उदिव रारजीत्यग्निष्टदोता सुहुतं कृणोतु २

यदन्नमद्यनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नत संगुणामि ।

वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मह्यं मधुमदुस्त्वन्नम् ३ ११२१

॥२०५॥ ( अथर्व० ७।५८।१-२ )

कौरुपथिः । इन्द्रावरुणौ ( अन्नम् ) । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रावरुणा सुतपात्रिमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रतौ ।  
युवो रथो अध्वरो देवव्रतये प्रति स्वसरमुप यातु पीतये १  
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृष्णा वृषेथाम् ।  
इदं वामन्धः परिषिक्तमासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम् २

॥२०६॥ ( अथर्व० ६।१४२।१-३ )

विश्वामित्रः । वायुः ( अन्नसमृद्धिः ) । अनुष्टुप् ।

उच्छ्रयस्व बहुभैव स्वेन महसा यत्र । मृणीहि विश्वा पात्राणि मा त्वां दिव्याशनिर्वधीत् १  
आशृण्वन्तं यवं देवं यत्र त्वाच्छ्रावदांसि । तदुच्छ्रयस्व द्यौरिव समुद्र इवैष्यक्षितः २ ११२५  
अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः । पूणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः ३

॥२०७॥ ( अथर्व० ११।३।१-५६ )

[ प्रथमः पर्यायः । १-३१ ]

अथर्वा । ओदनः ( वार्हस्पत्यौदनः ) ।

१, १४ आसुरी गायत्राः; २ त्रिपदा समविषमा गायत्री; ३, ६, १० आसुरी पङ्क्तिः;

४.८ सामन्यनुष्टुप्; ५.१३, १५, २५ सामन्युष्णिक्; ७, १९-२२ प्राजापत्या-

ऽनुष्टुप्; ९, १७-१८ आसुर्यनुष्टुप्; ११ भुरिगार्च्यनुष्टुप्; १२ याजुषी

जगती; १६, २३ आसुरी बृहती; २४ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती;

२६ आर्च्युष्णिक्; २७-२९ साम्ना बृहती (२८-२९ भुरिक्);

३० याजुषी त्रिष्टुप्; ३१ अल्पशः पङ्क्तिरुत याजुषी ।

तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् १  
द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रममावर्क्षिणी सप्तऋषयः प्राणापानाः २  
चक्षुर्मुसलं कामं उल्लखलम् । ३ । दितिः शूर्पमदितिः शूर्पग्राही वातोऽपाविनक् ४ ११३०  
अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः ५  
कञ्चु फलीकरणाः शरोऽभ्रम् ६  
इयाममयोऽस्य मांसानि लोहितमस्य लोहितम् ७  
त्रपु भस्म हरितं वर्णाः पुष्करमस्य गन्धः ८  
खलः पात्रं स्फयावंसाव्रीषे अनुक्ये । ९ । आन्त्राणि जत्रयो गुदा वरत्राः १०  
इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् ११  
सीताः पर्शवः सिकता ऊबध्यम् । १२ । ऋतं हस्तावनेजनं कुल्योपिसेचनम् १३ ११३९

ऋचा कुम्भ्यधिहितात्विज्येन प्रेषिता	१४	११४०
ब्रह्मणा परिगृहीता साम्ना पर्युढा ।१५। बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः	१६	
ऋतवः पक्तरं आर्तवाः समिन्धते ।१७। चरुं पञ्चबिलमुखं घर्मोद्भूमीन्धे	१८	
ओदनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः	१९	११४५
यस्मिन्त्समुद्रो द्यौर्भूमिस्रयोऽवरपरं श्रिताः	२०	
यस्य देवा अकल्पन्तोच्छिष्टे षडशीतयः	२१	
तं त्वौदनस्य पृच्छामि यो अस्य महिमा महान्	२२	
स य ओदनस्य महिमानं विद्यात्	२३	
नाल्प इति ब्रूयान्नानुपसेचन इति नेदं च किं चेति	२४	११५०
यावद् दाताभिमनस्येत तन्नार्ति वदेत्	२५	
ब्रह्मवादिनो वदन्ति पराञ्चमोदनं प्राशीः प्रत्यश्चाऽमिति	२६	
त्वमोदनं प्राशीःस्त्वामोदनाऽ इति	२७	
पराञ्चं चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह	२८	
प्रत्यश्चं चैनं प्राशीरपानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह	२९	११५५
नैवाहमोदनं न मामोदनः ।३०। ओदन एवौदनं प्राशीत्	३१	

[ द्वितीयः पर्यायः । ३२-४९ ]

मन्त्रोक्ताः । ३२, ३८, ४१ ( प्रथमा ), ३२-४९ ( सप्तमी ) साम्नी त्रिष्टुप्; ३२, ३५, ४२ ( द्वितीया ), ३२-४९ ( तृतीया ), ३३-३४, ४४-४८ ( पञ्चमी ) एकपदाऽऽसुरी गायत्री; ३२, ४१, ४३, ४७ दैवी जगती; ३८, ४४, ४६ ( द्वि० ), ३२, ३५-४३, ४९ ( पञ्चमी ) एकपदाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३२-४९ ( षष्ठी ) साम्भ्यनुष्टुप्; ३३-४९ ( प्र० ) आर्च्यनुष्टुप्; ३७ ( प्र० ) साम्नी पङ्क्तिः; ३३, ३६, ४०, ४७-४८ ( द्वि० ) आसुरी जगती; ३४, ३७, ४१, ४३, ४५ ( द्वि० ) आसुरी पङ्क्तिः; ३४ ( चतुर्थी ) आसुरी त्रिष्टुप्; ३५, ४६, ४८ ( च० ) याजुषी गायत्री; ३६-३७, ४० ( च० ) दैवी पङ्क्तिः; ३८-३९ ( च० ) प्राजापत्या गायत्री; ३९ ( द्वि० ) आसुर्युष्णिक्; ४२, ४५, ४९ ( चतुर्थी ) दैवी त्रिष्टुप्; ४९ ( त्रि० ) एकपदा भुरिक्साम्नी बृहती ।

ततश्चैनमन्थेन शीर्ष्णा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् ।१।

ज्येष्ठतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह ।२।

तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यश्चम् ।३।

बृहस्पतिना शीर्ष्णा ।४। तेनैनं प्राशिषुं तेनैनमजीगमम् ।५।

एष वा ओदनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।



ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।  
 बधिरो भविष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।  
 द्यावापृथिवीभ्यां श्रोत्राभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।  
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।  
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३३

ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।  
 अन्धो भविष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।  
 सूर्याचन्द्रमसाभ्यामक्षीभ्याम् ।४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् ।५।  
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।  
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३४ ११६०

ततश्चैनमन्येन मुखेन प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।  
 मुखतस्ते प्रजा मरिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।  
 ब्रह्मणा मुखेन ।४। तेनैनं प्राशिषं तेनैनमजीगमम् ।५।  
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।  
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३५

ततश्चैनमन्यया जिह्वया प्राशीर्यया चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।  
 जिह्वा ते मरिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।  
 अग्नेजिह्वया ।४। तयैनं प्राशिषं तयैनमजीगमम् ।५।  
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।  
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३६

ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।  
 दन्तास्ते शत्स्यन्तीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।  
 ऋतुभिर्दन्तैः ।४। तैरेनं प्राशिषं तैरेनमजीगमम् ।५।  
 एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।  
 सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७। ३७ ११६३

ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः प्राशीर्यैश्चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।  
 प्राणापानास्त्वा हास्यन्तीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

सप्तर्षिभिः प्राणापानैः ।४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

३८

ततश्चैनमन्येन व्यचसा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

राज्यक्षमस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

अन्तरिक्षेण व्यचसा ।४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

३९ ११६५

ततश्चैनमन्येन पृष्ठेन प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

विद्युत् त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

दिवा पृष्ठेन ।४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

४०

ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

कृष्या न रात्स्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

पृथिव्योरसा ।४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

४१

ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

उदुरद्वारस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

सत्येनोदरेण ।४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ।६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ।७।

४२ ११६८

ततश्चैनमन्येन वृस्तिना प्राशीर्येन चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्नन् ।१।

अप्सु मरिष्यसीत्येनमाह ।२। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ।३।

सुमद्रेण वृस्तिना ।४। तेनैतं प्राशिषं तेनैतमजीगमम् ।५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४३

ततश्चैनमन्याभ्यामरुभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् । १।

ऊरू ते मरिष्यत इत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

मित्रावरुणयोरुभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४४ ११७०

ततश्चैनमन्याभ्यामष्टिवद्भ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् । १।

सामो भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

त्वष्टुरष्टिवद्भ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४५

ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् । १।

बहुचारी भविष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

अश्विनोः पादाभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४६

ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् । १।

सर्पस्त्वा हनिष्यतीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

सवितुः प्रपदाभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४७

ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां प्राशीर्याभ्यां चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् । १।

ब्राह्मणं हनिष्यसीत्येनमाह । २। तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् । ३।

ऋतस्य हस्ताभ्याम् । ४। ताभ्यामेनं प्राशिषं ताभ्यामेनमजीगमम् । ५।

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः । ६।

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद । ७।

४८ ११७४

तत्तच्चैनमन्यया प्रतिष्ठया प्राशीर्यया चैतं पूर्वं ऋषयः प्राश्रन् ॥१॥

अप्रतिष्ठानोऽनायतनो मरिष्यसीत्येनमाह ॥२॥

तं वा अहं नार्वाञ्चं न पराञ्चं न प्रत्यञ्चम् ॥३॥

सत्ये प्रतिष्ठाय ॥४॥ तथैनं प्राशिषं तथैनमजीगमम् ॥५॥

एष वा ओदुनः सर्वाङ्गः सर्वपरुः सर्वतनूः ॥६॥

सर्वाङ्ग एव सर्वपरुः सर्वतनूः सं भवति य एवं वेद ॥७॥

४९ ११७५

[ तृतीयः पर्यायः । ५०-५६ ]

मन्त्रोक्ताः । ५० आसुर्यनुष्टुप्; ५१ आच्युष्णिक्; ५२ त्रिपदा भुरिक् साम्नी  
त्रिष्टुप्; ५३ आसुरी बृहती; ५४ द्विपदा भुरिक् साम्नी बृहती; ५५ साम्युष्णिक्;  
५६ प्राजःपत्या बृहती ।

एतद् वै ब्रह्मस्य विष्टपं यदौदुनः

५०

ब्रह्मलोको भवति ब्रह्मस्य विष्टपि श्रयते य एवं वेद

५१

एतस्माद् वा ओदुनात् त्रयस्त्रिंशत् लोकान् निर्मिमीत प्रजापतिः

५२

तेषां प्रज्ञानाय यज्ञमसृजत

५३

स य एवं विदुषं उपदृष्ट्वा भवति प्राणं रुणद्धि

५४

११८०

न च प्राणं रुणद्धि सर्वज्यानि जीयते

५५

न च सर्वज्यानि जीयते पुरेनै जरसः प्राणो जहाति

५६

॥२०८॥ ( अथर्व० ९।५।१-३८ )

भृगुः । पञ्चौदनोऽजः; मन्त्रोक्ताः । त्रिष्टुप्; ३ चतुष्पदा पुरोऽतिशकरी जगती; ४.१०

जगती; १४.१७,२७-३० अनुष्टुप् (३० ककुम्मती); १६ त्रिपदाऽनुष्टुप्; १८,३७ त्रिपदा

धिराद् गायत्री; २३ पुर उष्णिक्; २४ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्ठाद्विराद् जगती;

२०-२२,२६ पञ्चपदाऽनुष्टुबुष्णिग्गर्भोपरिष्ठाद्वाहता भुरिक्; ३१ सप्तपदाऽष्टिः;

३२-३५ दशपदा प्रकृतिः; ३६ दशपदाऽऽकृताः; ३८ एकावसाना

द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

आ नयैतमा रभस्व सुकृतां लोकमपि गच्छतु प्रजानन् ।

तीर्त्वा तमांसि बहुधा महान्त्यजो नाकृमा क्रमतां तृतीयम्

१

इन्द्राय भागं परि त्वा नयाम्यसिन् यज्ञे यजमानाय सूरिम् ।

ये नो द्विषन्त्यनु तान् रभस्वानागसो यजमानस्य वीराः

२

११८४

३० [ आयुर्वेद० ] १२

प्र पदोऽव नेनिग्धि दुश्चरितं यच्चचारं शुद्धैः शकैरा क्रमतां प्रजानन् ।	
तीर्त्वा तमांसि बहुधा विपश्यन्नजो नाकमा क्रमतां तृतीयम्	३ ११८५
अनु च्छद्य श्यामेन त्वचमेतां विशस्तर्यथापर्वसिना मामि मंस्थाः ।	
माभि द्रुहः परुशः कल्पयैनं तृतीये नाके अधि वि श्रयैनम्	४
ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ श्रयाम्या सिञ्चोदकमव धेहेनम् ।	
पर्याधत्ताग्निना शमितारः शृतो गच्छतु सुकृतां यत्र लोकः	५
उत् क्रामातः परि चेदत्तस्तप्ताच्चरोरधि नाकं तृतीयम् ।	
अग्नेरग्निरधि सं बभूविथ ज्योतिष्मन्तमभि लोकं जयैतम्	६
अजो अग्निर्जमु ज्योतिराहुरजं जीवता ब्रह्मणे देयमाहुः ।	
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमसिल्लोके श्रद्धानेन दत्तः	७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमतामाक्रंस्यमानस्त्रीणि ज्योतीषि ।	
ईजानानां सुकृतां प्रेहि मध्यं तृतीये नाके अधि वि श्रयस्व	८ ११९०
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः शरभो न चत्तोऽति दुर्गाण्येषः ।	
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानः स दातारं तृप्त्या तर्पयाति	९
अजस्त्रिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे नाकस्य पृष्ठे ददिवान्सं दधाति ।	
पञ्चौदनो ब्रह्मणे दीयमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुघास्येकां	१०
एतद् वो ज्योतिः पितरस्तृतीयं पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।	
अजस्तमांस्यप हन्ति दूरमसिल्लोके श्रद्धानेन दत्तः	११
ईजानानां सुकृतां लोकमीप्सन् पञ्चौदनं ब्रह्मणेऽजं ददाति ।	
स व्याप्तिमभि लोकं जयैतं शिवोऽस्मभ्यं प्रतिगृहीतो अस्तु	१२
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकाद् विप्रो विप्रस्य सहसो विपश्चित् ।	
इष्टं पूर्तमभिर्पूर्तं वर्षत्कृतं तद् देवा क्रतुशः कल्पयन्तु	१३ ११९५
अमोतं वासो दद्याद्विरण्यमपि दक्षिणाम् ।	
तथा लोकान्तसमाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः	१४
एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः सोम्या देवीर्धृतपृष्ठा मधुश्रुतः ।	
स्तभान पृथिवीमुत घां नाकस्य पृष्ठेऽर्धे सप्तरेश्मां	१५
अजोऽभ्यजं स्वर्गोऽसि त्वया लोकमङ्गिरसः प्राजानन् । तं लोकं पुण्यं प्र ज्ञेषम्	१६
येनां सहस्रं वहसि येनाग्निं सर्ववेदुसम् । तेनेमं यज्ञं नो वह स्वर्दिवेषु गन्तवे	१७ ११९९

अजः पृक्कः स्वर्गे लोके दधाति पञ्चौदनो निर्ऋतिं बाधमानः । तेन लोकान्त्सूर्यवतो जयेम	१८	१२००
यं ब्राह्मणे निदुधे यं च विक्षु या विप्रुष ओदनानामजस्यं । सर्वं तदग्ने सुकृतस्य लोके जानीतान्नः संगमने पथीनाम्	१९	
अजो वा इदमग्रे व्यक्रमत तस्योर इयमभवद् द्यौः पृष्ठम् । अन्तरिक्षं मध्यं दिशः पार्श्वं समुद्रौ कुक्षी	२०	
सत्यं चर्त च चक्षुषी विश्वं सत्यं श्रद्धा प्राणो विराट् शिरः । एष वा अपरिमितो यज्ञो यदुजः पञ्चौदनः	२१	
अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोत्यपरिमितं लोकमव रुन्धे । योऽज्ञं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति	२२	
नास्यास्थीनि भिन्द्यान्न मज्ज्ञो निर्धयेत् । सर्वमेनं समादायेदमिदं प्र वैशयेत् इदमिदमेवास्य रूपं भवति तेनैनं सं गमयति ।	२३	१२०५
इषं मह ऊर्जमस्मै दुहे योऽज्ञं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति पञ्चं रुक्मा पञ्च नवानि वस्त्रा पञ्चास्मै धेनवः कामदुघा भवन्ति ।	२४	
योऽज्ञं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति पञ्चं रुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति ।	२५	
स्वर्गं लोकमश्नुते योऽज्ञं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति या पूर्वं पतिं विच्चाथान्यं विन्दतेऽपरम् । पञ्चौदनं च तावजं ददातो न वि योषतः २७	२६	
समानलोको भवति पुनर्भुवापरः पतिः । योऽज्ञं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति अनुपूर्ववत्सां धेनुमनद्वाहंमुपवर्हेणम् । वासो हिरण्यं दुच्चा ते यन्ति दिवंमुत्तमाम् २९ आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम् । जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुषं ह्ये ३० यो वै नैदाघं नामर्तु वेद । एष वै नैदाघो नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः । निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना । योऽज्ञं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति यो वै कुर्वन्तं नामर्तु वेद । कुर्वतीकुर्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते । एष वै कुर्वन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः । निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना । योऽज्ञं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति	२८	१२१०
	३१	
	३२	१२१४

यो वै संयन्तं नामर्तु वेदं । संयतींसंयतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै संयन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३३ १२१५

यो वै पिन्वन्तं नामर्तु वेदं । पिन्वतींपिन्वतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वै पिन्वन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३४

यो वा उद्यन्तं नामर्तु वेदं । उद्यतीमुद्यतीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वा उद्यन्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३५

यो वा अभिभुवं नामर्तु वेदं ।

अभिभवन्तीमभिवन्तीमेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियमा दत्ते ।

एष वा अभिभूर्नामर्तुर्यदुजः पञ्चौदनः ।

निरेवाप्रियस्य भ्रातृव्यस्य श्रियं दहति भवत्यात्मना ।

योऽजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति

३६

अजं च पचत पञ्च चौदनान् ।

सर्वा दिशः संमनसः सध्रीचीः सान्तर्देशाः प्रतिं गृह्णन्तु त एतम्

३७

तास्ते रक्षन्तु तत्र तुभ्यमेतं ताभ्य आज्यं हविरिदं जुहोमि

३८ १२२०

॥२०९॥ ( अथर्व० ४।३४।१-८ )

अथर्वा । ब्रह्मौदनम् । त्रिष्टुप्, ४ उत्तमा भुरिक्, ५ ज्यवसाना सप्तपदा कृतिः;

६ पञ्चपदातिशकरी, ७ भुरिक् शकरी, ८ जगती ।

ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य पृष्ठं वामदेव्यमुदरमोदनस्य ।

छन्दांसि पक्षौ मुखमस्य सत्यं विष्टारी जातस्तपसोऽधि यज्ञः

१

अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपि यन्ति लोकम् ।

नैषां शिश्रं प्र दहति जातवेदाः स्वर्गे लोके बहु स्त्रैणमेषाम्

२

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनानवर्तिः सचते कदा चन ।

आस्ते यम उप याति देवान्तसं गन्धर्वैर्भदते सोम्यभिः

३ १२२३

विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति नैनान् यमः परिं मुष्णाति रेतः ।

रथी ह भूत्वा रथयानं ईयते पक्षी ह भूत्वाति दिवः समैति

४

एष यज्ञानां विततो वहिष्ठो विष्टारिणं पक्त्वा दिवमा विवेश ।

आण्डीकं कुमुदं सं तेनोति विसं शालूकं शफको म्बुलाली ।

एतास्त्वा धारा उपं यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना

उपं त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः

५ १२२५

घृतहृदा मधुकूलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदुकेन दध्ना ।

एतास्त्वा धारा उपं यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना

उपं त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः

६

चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णा उदुकेन दध्ना ।

एतास्त्वा धारा उपं यन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत् पिन्वमाना

उपं त्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः

७

इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेषु विष्टारिणं लोकजितं स्वर्गम् ।

स मे मा क्षेष्ट स्वधया पिन्वमानो विश्वरूपा धेनुः कामदुर्घा मे अस्तु

८

॥२१०॥ ( अथर्व० ११।१।१-३७ )

ब्रह्मा । ओदनः ( ब्रह्मौदनम् ) । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप्गर्भा भुरिक्पङ्क्तिः; २ बृहतीगर्भा विराट्; ३ चतुष्पदा शाकरगर्भा जगती; ४, १५-१६, २९, ३१ भुरिक्; ५ बृहतीगर्भा विराट्; ६ उष्णिक्; ८ विराट् गायत्री;

९ शाकरातिजागतगर्भा जगती; १० विराट् पुरोऽतिजगती विराट्जगती; ११ जगती;

१७, २१, २४ २६, ३७ विराट् जगती; १८ अतिजागतगर्भा परातिजागता विराडतिजगती;

२० अतिजागतगर्भा परा शाकरा चतुष्पदा भुरिक्जगती;

२७ अतिजागतगर्भा जगती; ३५ चतुष्पदा

ककुम्मत्युष्णिक्; ३६ पुरोविराट्

( व्याघ्रादिष्ववगन्तव्या )

अग्ने जायस्वादितिर्नाथितेयं ब्रह्मौदनं पचति पुत्रकामा ।

सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वा मन्थन्तु प्रजया सहेह

१

कृणुत धूमं वृषणः सखायोऽद्रोघाविता वाचमच्छ ।

अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवा असहन्त दस्यून्

२

अग्नेऽर्जनिष्ठा महते वीर्याय ब्रह्मौदनाय पक्तवे जातवेदः ।

सप्तऋषयो भूतकृतस्ते त्वाजीजनन्नस्यै रयिं सर्ववीरं नि यच्छ

३ १२३१



समिद्धो अग्ने समिधा समिध्यस्व विद्वान् देवान् यज्ञियाँ एह वक्षः ।	
तेभ्यो ह्रविः श्रपयं जातवेद उत्तमं नाकमधि रोहयेमम्	४
त्रेधा भागो निहितो यः पुरा वो देवानां पितृणां मर्त्यानाम् ।	
अंशान् जानीध्वं वि भंजाभि तान् वो यो देवानां स इमां पारयाति	५
अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि नीचो न्युञ्ज द्विषतः सपत्नान् ।	
इयं मात्रा मीयमाना मिता च सजातास्ते बलिहृतः कृणोतु	६
साकं सजातैः पर्यसा सहैध्युदुञ्जैनां महते वीर्यायि ।	
ऊर्ध्वो नाकस्याधि रोह विष्टपं स्वर्गो लोक इति यं वदन्ति	७ १२३५
इयं मही प्रति गृह्णातु चर्मं पृथिवी देवी सुमनस्यमाना ।	
अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्	८
एतौ ग्रावाणौ सयुजा युङ्ग्धि चर्मणि निर्भिन्ध्यंशन् यजमानाय साधु ।	
अवम्रती नि जहि य इमां पृतन्यव ऊर्ध्वं प्रजामुद्गरन्त्युदूह	९
गृहाण ग्रावाणौ सकृतौ वीर हस्त आ ते देवा यज्ञियां यज्ञमगुः ।	
त्रयो वरा यतमास्त्रं वृणीषे तास्ते समृद्धीरिह राधयामि	१०
इयं ते धीतिरिदंष्ट्र ते जनित्रं गृह्णातु त्वामदितिः शरपुत्रा ।	
परां पुनीहि य इमां पृतन्यवोऽस्ये रयि सर्ववीरं नि यच्छ	११
उपश्वसे द्रुवये सीदता युयं वि विच्यध्वं यज्ञियासस्तुषैः ।	
श्रिया समानानति सर्वान्त्स्यामाधस्पदं द्विषतस्पादयामि	१२ १२४०
परिहि नारि पुनरेहि क्षिप्रमपां त्वा गोष्ठोऽध्यरुक्षद् भराय ।	
तासां गृह्णीताद् यतमा यज्ञिया असन् विभाज्य धीरीतरा जहीतात्	१३
एमा अगुर्योषितः शुभमाना उत्तिष्ठ नारि त्वसं रभस्व ।	
सुपत्नी पत्यां प्रजयां प्रजावत्या त्वागन् यज्ञः प्रति कुम्भं गृभाय	१४
ऊर्जो भागो निहितो यः पुरा व ऋषिप्रशिष्टाप आ भरैताः ।	
अयं यज्ञो गातुविन्नाथवित् प्रजाविदुग्रः पशुविद् वीरविद् वो अस्तु	१५
अग्ने चरुर्यज्ञिस्त्वाध्यरुक्षच्छुचिस्तपिष्टस्तपसा तपैनम् ।	
आर्वेया देवा अभिसंगत्य भागमिमं तपिष्ठा ऋतुभिस्तपन्तु	१६
शुद्धाः पूता योपितो यज्ञिया इमा आपश्चरुमव सर्पन्तु शुभ्राः ।	
अदुः प्रजां बहुलान् पशन् नः पक्तौदनस्य सुकृतामेतु लोकम्	१७ १२४५

ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता घृतेन सोमस्यांश्वस्तण्डुला यज्ञिया इमे । अपः प्र विशत प्रति गृह्णातु वञ्चरिमं पक्त्वा सुकृतामेत लोकम् उरुः प्रथस्व महता महिम्ना सहस्रपृष्ठः सुकृतस्य लोके ।	१८
पितामहाः पितरः प्रजोपजाहं पक्त्वा पञ्चदशस्ते अस्मि सहस्रपृष्ठः शतधारो अर्क्षितो ब्रह्मौदनो देवयानः स्वर्गः । अमूंस्त आ दधामि प्रजया रेषयैनान् बलिहाराय मृडतान्मह्यमेव उदेहि वेदिं प्रजया वर्धयैनां नुदस्व रक्षः प्रतरं धेहेनाम् ।	१९
श्रिया समानानति सर्वान्तस्यामाधस्पदं द्विषतस्यादयामि अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां प्रत्यङ्गेनां देवताभिः सहैधि । मा त्वा प्रावच्छपथो माभिचारः स्वे क्षेत्रे अनमीवा वि राज ऋतेन तष्टा मनसा हितैषा ब्रह्मौदनस्य विहिता वेदिरग्रे ।	२०
अंसद्रां शुद्धामुप धेहि नारि तत्रौदनं सादय दैवानाम् अदितेर्हस्तां सुचमेतां द्वितीयां सप्तऋषयो भूतकृतो यामकृष्वन् । सा गात्राणि विदुष्योदनस्य दर्विवेद्यामध्येनं चिनोतु भूतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु दैवा निःस्पृयाग्नेः पुनरेनान् प्र सीद ।	२१
सोमैन पूतो जठरे सीद ब्रह्मणामार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः सोम राजन्तसंज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान् । ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान् ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि ।	२२ १२५०
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्तस ददादिदं मे इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं पक्कं क्षेत्रात् कामदुर्घा म एषा । इदं धनं नि दधे ब्राह्मणेषु कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः अग्नौ तुषाना वप जातवेदसि परः कम्बूकां अप मृड्ढि दूरम् ।	२३
एतं शुश्रुम गृहराजस्य भागमथो विद्य निर्ऋतेर्भागधेयम् श्राम्यतः पचतो विद्धि सुन्वतः पन्थां स्वर्गमधि रोहयैनम् । येन रोह्यात् परमापद्य यद् वयं उत्तमं नाकं परमं व्योमि बभ्रेरध्वयो मुखमेतद् वि मृड्ढयाज्याय लोकं कृणुहि प्रविडान् ।	२४
घृतेन गात्रान् सर्वा वि मृड्ढि कृण्वे पन्थां पितृषु यः स्वर्गः	२५
	२६
	२७ १२५५
	२८
	२९
	३०
	३१ १२५९

बभ्रे रक्षः समदुमा वपैभ्योऽब्राह्मणा यत्मे त्वोपसीदान् । पुरीषिणः प्रथमानाः पुरस्तादार्षेयास्ते मा रिषन् प्राशितारः	३२ १२६०
आर्षेयेषु नि दध ओदन त्वा नानार्षेयाणामप्यस्त्यत्र । अग्निर्मे गाप्ता मरुतश्च सर्वे विश्वे देवा अभि रक्षन्तु पक्वम्	३३
यज्ञं दुहानं सदामित् प्रपीनं पुमांसं धेनुं सदनं रयीणाम् । प्रजामुतत्वमुत दीर्घमायू रायश्च पोषैरुप त्वा सदेम	३४
वृषभोऽसि स्वर्ग ऋषीनार्षेयान् गच्छ । सुकृतां लोके सीदु तत्र नौ संस्कृतम्	३५
समार्चिनुष्वानुसंप्रयाह्यग्रे पथः कल्पय देवयानान् । एतैः सुकृतैरनु गच्छेम यज्ञं नाके तिष्ठन्तमति सप्तरश्मौ	३६
येन देवा ज्योतिषा द्यामुदार्यन् ब्रह्मौदनं पक्त्वा सुकृतस्य लोकम् । तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकयुत्तमम्	३७ १२६५

॥२११॥ ( अथर्व० ६।११६।१-३ )

जाटिकायनः । विवस्वान् ( मधुमदन्नम् ) । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया । वैवस्वते राजनि तजुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम्	१
वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति । मातुर्यदेन इषितं न आगन् यद् वां पितापराद्धो जिहीडे	२
यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन् । यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः	३

॥२१२॥ ( अथर्व० ७।३७।१ )

अथर्वा । वासः । अनुष्टुप् ।

अभि त्वा मनुजातेन दधामि मम वाससा । यथासो मम केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन	१
--	---

॥२१३॥ ( वा० य० ४।२, १० )

( वासः । )

दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाः शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि	२ १० १२७१
---	--------------

॥२१४॥ ( अथर्व० १२।३।१-६० )

यमः । स्वर्गः, ओदनः, अग्निः ( स्वर्गोदनः ) । त्रिष्टुप्; १,४२-४३, ४७ भुरिक; ८,१२,२६-२२,  
२४ जगती; १३,१७ स्वराडार्षी पङ्क्तिः; ३४ विराड्गर्भा; ३९ अनुष्टुप्गर्भा;  
४४ पराबृहती; ५५-६० त्र्यवसाना सप्तपदा शङ्कुमत्यतिजागतशाकराति-  
शाकरधार्त्यगर्भातिधृतिः ( ५५,५७-६० कृतिः, ५६ विराट् कृतिः ) ।

पुमान् पुंसोऽधि तिष्ठ चर्मेहि तत्र ह्वयस्व यतमा प्रिया तै ।

यार्वन्तावग्रे प्रथमं समेयथुस्तद् वां वर्यो यमराज्ये समानम् १

तावद् वां चक्षुस्तति वीर्याणि तावत् तेजस्ततिधा वार्जिनानि ।

अग्निः शरीरं सचते यदैधोऽर्धा पृक्कान्मिथुना सं भवाथः २

समस्मिच्छोके समु देवयाने सं सां समेतं यमराज्येषु ।

पुतौ पवित्रैरुप तद्भव्येथां यद्यद् रेतो अधि वां संवभूव ३

आपस्पृत्रासो अभि सं विशध्वमिमं जीवं जीवधन्याः समेत्यं ।

तासां भजध्वममृतं यमाहुर्यमोदनं पचति वां जनित्री ४ १२७५

यं वां पिता पचति यं च माता रिप्रान्निर्मुक्त्यै शर्मलाच्च वाचः ।

स ओदनः शतधारः स्वर्ग उभे व्यापि नभसी महित्वा ५

उभे नभसी उभयांश्च लोकान् ये यज्वनामभिर्जिताः स्वर्गाः ।

तेषां ज्योतिष्मान् मधुमान् यो अग्रे तस्मिन् पुत्रैर्जरसि सं श्रयेथाम् ६

प्राचीं प्राचीं प्रदिशमा रभेथामेतं लोकं श्रद्धधानाः सचन्ते ।

यद् वां पृक् परिविष्टमग्नौ तस्य गुप्तये दंपती सं श्रयेथाम् ७

दक्षिणां दिशमभि नक्षमाणौ पर्यावर्तेथामभि पात्रमेतत् ।

तस्मिन् वां यमः पितृभिः संविदानः पृक्काय शर्म बहुलं नि यच्छात् ८

प्रतीचीं दिशामियमिद् वरं यस्यां सोमो अधिपा मृडिता च ।

तस्यां श्रयेथां सुकृतः सचेथामर्धा पृक्कान्मिथुना सं भवाथः ९ १२८०

उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद् दिशामुदीची कृणवन्नो अग्रम् ।

पाङ्क्तं छन्दुः पुरुषो बभूव विश्वैर्विश्वाङ्गैः सह सं भवेम १०

ध्रुवेयं विराण्णमो अस्त्वस्यै शिवा पुत्रेभ्यं उत मह्यमस्तु ।

सा नो देव्यदिते विश्ववार इर्य इव गोपा अभि रक्ष पृक्कम् ११

पितेव पुत्रानामि सं स्वजस्व नः शिवा नो वाता इव वान्तु भूमौ ।

यमोदनं पचतो देवते इह तं नुस्तप उत सत्यं च वेत्तु १२ १२८३

यद्यत् कृष्णः शकुन एह गत्वा त्सरन् विषक्तं बिलं आससाद ।	
यद् वा दास्याइर्द्रहस्ता समङ्क्त उल्लखलं मुसलं शुम्भतापः	१३
अयं ग्रावां पृथुबुध्नो वयोधाः पूतः पवित्रैरपं हन्तु रक्षः ।	
आ रोह चर्म महि शर्म यच्छ मा दंपती पौत्रमघं नि गाताम्	१४ १२८५
षनस्पतिः सह देवैर्न आगन् रक्षः पिशाचाँ अप्बार्धमानः ।	
स उच्छ्रयातै प्र वंदाति वाचं तेन लोकाँ अभि सर्वाँन् जयेम	१५
सप्त मेधाँन् पशवः पर्यगृह्णन् य एषाँ ज्योतिष्माँ उत यश्चर्षी ।	
त्रयस्त्रिंशद् देवतास्तान्त्सचन्ते स नः स्वर्गमभि नैष लोकम्	१६
स्वर्गं लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रैः स्याम ।	
गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्निर्ऋतिर्मा अरातिः	१७
ग्राहिँ पाप्मानमति ताँ अयाम् तमो व्यस्यि प्र वंदासि वल्गु ।	
वानस्पत्य उद्यतो मा जिहिँसीर्मा तण्डुलं वि शरीर्देवयन्तम्	१८
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्त्सयोर्निलोकमुप याद्येतम् ।	
वर्षवृद्धमुप यच्छ शूर्पं तुषं पलावानप तद् विनक्तु	१९ १२९०
त्रयो लोकाः संभिता ब्राह्मणेन द्यौरेवासौ पृथिव्यन्तरिक्षम् ।	
अंशून् गृभीत्वान्वारभेथामा प्यायन्तां पुनरा यन्तु शूर्पम्	२०
पृथग् रूपाणि बहुधा पशूनामेकरूपो भवसि सं समृद्ध्या ।	
एतां त्वचं लोहिनीं तां नुदस्व ग्रावां शुम्भाति मलग इव वस्त्रा	२१
पृथिवीं त्वां पृथिव्यामा वेशयामि तनूः समानी विकृता त एषा ।	
यद्यद् द्युत्तं लिखितमर्पणेन तेन मा सुस्रोर्ब्रह्मणापि तद् वपामि	२२
जनित्रीव प्रति हर्यासि सुनुं सं त्वां दधामि पृथिवीं पृथिव्या ।	
उखा कुम्भी वेद्यां मा व्यथिष्ठा यज्ञायुधैराज्येनातिषक्ता	२३
अग्निः पचन् रक्षतु त्वा पुरस्तादिन्द्रो रक्षतु दक्षिणतो मरुत्वान् ।	
वरुणस्त्वा वंहाद्गुरुणे प्रतीच्या उत्तरात् त्वा सोमः सं ददातै	२४ १२९५
पूताः पवित्रैः पवन्ते अत्राद् दिवँ च यन्ति पृथिवीं च लोकान् ।	
ता जीवला जीवधन्याः प्रतिष्ठाः पात्र आसिक्ताः पर्यागिरिन्धाम्	२५
आ यन्ति दिवः पृथिवीं सचन्ते भूम्याः सचन्ते अध्यन्तरिक्षम् ।	
शुद्धाः सतीस्ता उ शुम्भन्त एव ता नः स्वर्गमभि लोकं नयन्तु	२६ १२९७

उतेव प्रभ्वीरुत संमितास उत शुक्राः शुच्यश्चामृतासः ।	
ता औदुनं दंपतिभ्यां प्रशिष्टा आपः शिक्षन्तीः पचता सुनाथाः	२७
संख्याता स्तोकाः पृथिवीं सचन्ते प्राणापानैः संमिता ओषधीभिः ।	
असंख्याता ओप्यमानाः सुवर्णाः सर्वं व्यपुः शुच्यः शुचित्वम्	२८
उद्योषन्त्यभि बल्गन्ति तप्ताः फेनमस्यन्ति बहुलांश्च बिन्दून् ।	
योषेव दृष्ट्वा पतिमृत्विद्यायैतैस्तण्डुलैर्भवता समापः	२९ १३००
उत्थापय सीदतो बुध एनानद्भिरात्मानमभि सं स्पृशन्ताम् ।	
अमासि पात्रैरुदकं यदेतन्मितास्तण्डुलाः प्रदिशो यदीमाः	३०
प्र यच्छ पशुं त्वरया हरौषमहिंसन्त ओषधीदान्तु पर्वन् ।	
यासां सोमः परि राज्यं बभूवामन्युता नो वीरुधौ भवन्तु	३१
नवं बहिरौदनाय स्तृणीत प्रियं हृदश्चक्षुषो वल्ग्वस्तु ।	
तस्मिन् देवाः सह दैवीर्विशन्त्विमं प्राशन्त्वृतुभिर्निषद्यं	३२
वनस्पते स्तीर्णमा सीद बहिरग्निष्टोमैः संमितो देवताभिः ।	
त्वष्ट्रेव रूपं सुकृतं स्वधित्यैना एहाः परि पात्रे ददृशाम्	३३
षष्ट्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात् स्वः पक्वेनाभ्यश्रवातै ।	
उपैनं जीवान् पितरंश्च पुत्रा एतं स्वर्गं गमयान्तमग्नेः	३४ १३०५
धर्ता प्रियस्व धरुणे पृथिव्या अच्युतं त्वा देवताश्चयावयन्तु ।	
तं त्वा दंपती जीवन्तौ जीवपुत्रावुद् वासयातः पर्याग्नेधानात्	३५
सर्वान्तसमागां अभिजित्य लोकान् यावन्तः कामाः समतीतृपस्तान् ।	
वि गाहेथामायवनं च दविरेकेस्मिन् पात्रे अभ्युद्धरैनम्	३६
उपं स्तृणीहि प्रथयं पुरस्ताद् घृतेन पात्रमभि धारयैतत् ।	
वाश्रेवोस्ना तरुणं स्तनस्युमिमं देवासो अभिहिडकृणोत	३७
उपास्तरिर्करो लोकमेतमुरुः प्रथतामसमः स्वर्गः ।	
तस्मिच्छयातै महिषः सुपर्णो देवा एनं देवताभ्यः प्र यच्छान्	३८
यद्यज्ञाया पचति त्वत् परापरः पतिर्वा जाये त्वत् तिरः ।	
सं तत् सृजेथां सह वां तदस्तु संपादयन्तौ सह लोकमेकम्	३९
यावन्तो अस्याः पृथिवीं सचन्ते अस्मत् पुत्राः परि ये सैवभूवुः ।	
सर्वास्तां उप पात्रे ह्येथां नाभिं जानानाः शिशवः समायान्	४० १३११

वसोर्या धारा मधुना प्रपीना घृतेन मिश्रा अमृतस्य नाभयः । सर्वास्ता अव रुन्धे स्वर्गः षष्ट्यां शरत्सु निधिपा अभीच्छात्	४१
निधिं निधिपा अभ्येनिमिच्छादनीश्वरा अभितः सन्तु येइन्द्ये । अस्माभिर्दुत्तो निहितः स्वर्गस्त्रिभिः काण्डैस्त्रीन्स्वर्गानरुक्षत्	४२
अग्नी रक्षस्तपतु यद् विदेवं क्रव्यात् पिशाच इह मा प्र पास्त । नुदाम एनमप रुध्मो अस्मदादित्या एनमङ्गिरसः सचन्ताम्	४३
आदित्येभ्यो अङ्गिरोभ्यो मध्विदं घृतेन मिश्रं प्रति वेदयामि । शुद्धहस्तौ ब्राह्मणस्यानिहत्यैतं स्वर्गं सुकृतावपीतम्	४४ १३१५
इदं प्रापमुत्तमं काण्डमस्य यस्माल्लोकात् परमेष्ठी समाप । आ सिञ्च सर्पिर्धृतवत् समङ्गध्येष भागो अङ्गिरसो नो अत्र	४५
सत्याय च तपसे देवताभ्यो निधिं शेवधिं परि दन्न एतम् । मा नो घृतेऽव गान्मा समित्यां मा स्मान्यस्मा उत् सृजता पुरा मत्	४६
अहं पंचाम्यहं ददामि ममेदु कर्मन् करुणेऽधि जाया । कौमारो लोको अजनिष्ट पुत्रोऽन्वारभेथां वयं उत्तरावत्	४७
न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः समममान एति । अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तरं पक्वः पुनरा विशाति	४८
प्रियं प्रियाणां कृणवाम तमस्ते यन्तु यतमे द्विषन्ति । धेनुरनङ्गान् वयोवय आयदेव पौरुषेयमपं मृत्युं नुदन्तु	४९ १३२०
समग्रयो विदुरन्यो अन्यं य ओषधीः सचते यश्च सिन्धून् । यावन्तो देवा दिव्याश्तपन्ति हिरण्यं ज्योतिः पचतो बभूव	५०
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूवानग्राः सर्वे पशवो ये अन्ये । क्षत्रेणात्मानं परि धापयाथोऽमोतं वासो मुखमोदनस्यं	५१
यदुक्षुषु वदा यत् समित्यां यद् वा वदा अनृतं वित्तकाम्या । समानं तन्तुमभि संवसानौ तस्मिन्सर्वं शर्मलं सादयाथः	५२
वर्षं वनुष्वापि गच्छ देवांस्त्वचो धूमं पर्युत् पातयासि । विश्वव्यचा घृतशृष्टो भविष्यन्त्सयोनिर्लोकमुपं याह्येतम्	५३
तन्वं स्वर्गो बहुधा वि चक्रे यथा विद आत्मन्नन्यवर्णाम् । अपाजैत् कृष्णां रुशतीं पुनानो या लोहिनी तां तं अग्नौ जुहोमि	५४ १३२५

प्राच्यै त्वा दिशेऽग्नेयेऽधिपतयेऽसिताय रक्षित्र आदित्यायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वर्थं पक्केन सह सं भवेम ५५  
दक्षिणायै त्वा दिश इन्द्रायाधिपतये तिरंश्विराजये रक्षित्रे यमायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वर्थं पक्केन सह सं भवेम ५६  
प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणायधिपतये पृदाकवे रक्षित्रेऽन्नायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वर्थं पक्केन सह सं भवेम ५७  
उदीच्यै त्वा दिशे सोमायाधिपतये स्वजाय रक्षित्रेऽशन्या इषुमत्यै ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वर्थं पक्केन सह सं भवेम ५८  
ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवेऽधिपतये कल्माषग्रीवाय रक्षित्र ओषधीभ्य इषुमतीभ्यः ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वर्थं पक्केन सह सं भवेम ५९  
ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतयेऽधिपतये श्वित्राय रक्षित्रे वर्षायेषुमते ।

एतं परि दद्मस्तं नो गोपायतास्माकमैतोः ।

दिष्टं नो अत्र जरसे नि नैषज्जरा मृत्यवे परि णो ददात्वर्थं पक्केन सह सं भवेम ६० १३३१

वाजीकरणम् । ( १३३२-१३४५ )

॥२१५॥ ( अथर्व० ४।४।१-८ )

अथर्वा । वनस्पतिः; १-२ सूर्यः, प्रजापतिः; ४ इन्द्रः; ५ आपः, सोमः; ६ आग्निः, सरस्वती,  
ब्रह्मणस्पतिः ( वाजीकरणम् ) । अनुष्टुप्, ४ पुर उष्णिक, ६-७ भुरिक् ।

यां त्वा गन्धर्वो अखनद् वरुणाय मृतभ्रजे ।

तां त्वा वयं खनामस्योषधिं शेपुर्हर्षणीम् १

उदुषा उदु सूर्य उदिदं मामकं वचः । उदैजतु प्रजापतिर्वृषा शुष्मेण वाजिनां २

यथा स्म ते विरोहतोऽभितप्तमिवानति । ततस्ते शुष्मवत्तरभियं कृणोत्वोषधिः ३

उच्छुष्मौषधीनां सारं ऋषभाणाम् । सं पुंसामिन्द्र वृष्ण्यमस्मिन् धैहि तनूवशिन् ४

अपां रसः प्रथमजोऽथो वनस्पतीनाम् । उत सोमस्य आतास्युतार्शमासि वृष्ण्यम् ५ १३३६



अद्यात्रे अद्य संवितरद्य देवि सरस्वति । अद्यास्य ब्रह्मणस्पते धनुर्वा तानया पसः६  
 आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।  
 क्रमस्वशी इव रोहितमनवग्लायता सदा ७  
 अश्वस्याश्वतरस्याजस्य पेट्वस्य च ।  
 अथ ऋषभस्य ये वाजास्तानस्मिन् धेहि तनूवशिन् ८

॥२१६॥ ( अथर्व० ६।७२।१-३ )

अथर्वाङ्गिराः । शेषोऽर्कः (वाजीकरणम्) । १ जगती, २ अनुष्टुप्, ३ भुरिक् ।

यथासितः प्रथयते वशाँ अनु वपूषि कृण्वन्नसुरस्य मायया ।  
 एवा ते शेषः सहसायमर्कोऽङ्गेनाङ्गं संसमकं कृणोतु १ १३४०  
 यथा पसस्तायादुरं वार्तेन स्थूलभं कृतम् ।  
 यावत् परस्वतः पसस्तावत् ते वर्धतां पसः २  
 यावदङ्गीनं पारस्वतं हास्तिनं गार्दभं च यत् ।  
 यावदश्वस्य वाजिनस्तावत् ते वर्धतां पसः ३

॥२१७॥ ( अथर्व० ६।१०१।१-३ )

अथर्वाङ्गिराः । ब्रह्मणस्पतिः ( वाजीकरणम् ) । अनुष्टुप् ।

आ वृषायस्व श्वसिहि वर्धस्व प्रथयस्व च । यथाङ्गं वर्धतां शेषस्तेन योषितमिज्जहि १  
 येन कृशं वाजयन्ति येन हिन्वन्त्यातुरम् । तेनास्य ब्रह्मणस्पते धनुर्वा तानया पसः२  
 आहं तनोमि ते पसो अधि ज्यामिव धन्वनि ।  
 क्रमस्वशी इव रोहितमनवग्लायता सदा ३ १३४५

गर्भाधानम् । ( १३४६-१४२३ )

॥२१८॥ ( अथर्व० ५।२५।१-१३ )

ब्रह्मा । योनिगर्भः, पृथिव्यादयो देवताः । अनुष्टुप्, १३ विराट्पुरस्ताद्बृहती ।

पर्वेताद् दिवो योनेरङ्गादङ्गात् समाभृतम् । शेषो गर्भस्य रेतोधाः सरौ पूर्णमिवा दधत् १  
 यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादधे । एवा दधामि ते गर्भं तस्मै त्वामवसे हुवे २  
 गर्भं धेहि सिनीवाल्लि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा ३  
 गर्भं ते मित्रावरुणौ गर्भं देवो बृहस्पतिः । गर्भं त इन्द्रश्चाग्निश्च गर्भं धाता दधातु ते ४  
 विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु । आ सिंश्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ५  
 यद् वेद राजा वरुणो यद् वा देवी सरस्वती । यदिन्द्रो बृत्रहा वेदु तद् गर्भकरणं पिब ६ १३५१

गर्भो अस्थोर्षधीनां गर्भो वनस्पतीनाम् । गर्भो विश्वस्य भूतस्य सो अग्ने गर्भमेह धाः ७  
 अर्धि स्कन्द वीरयस्व गर्भमा धेहि योन्याम् । वृषासि वृष्ण्यावन् प्रजायै त्वा नयामसि ८  
 वि जिहीष्व बार्हत्सामे गर्भस्ते योनिमा शयाम् । अदुष्टे देवाः पुत्रं सोमपा उभयाविर्नम् ९  
 धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १० १३५५  
 त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे ११  
 सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १२  
 प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः । पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे १३

॥२१९॥ ( अथर्व० ६।८।१।१-३ )

अथर्वा । आदित्यः, ३ त्वष्टा ( गर्भाधानम् ) । अनुष्टुप् ।

यन्तासि यच्छसे हस्तावप रक्षांसि सेधसि । प्रजां धने च गृह्णानः परिहस्तो अभूदयम् १  
 परिहस्तं वि धारय योनिं गर्भाय धातवे । मर्यादे पुत्रमा धेहि तं त्वमा गमयागमे २ १३६०  
 यं परिहस्तमर्बिभरदितिः पुत्रकाम्या । त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद् यथा पुत्रं जनादिति ३

॥२२०॥ ( अथर्व० ६।१७।१-४ )

अथर्वा । गर्भदहनम्, पृथिवी । अनुष्टुप् ।

यथेयं पृथिवी मही भूतानां गर्भमादुधे । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे १  
 यथेयं पृथिवी मही दाधारेमान् वनस्पतीन् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे २  
 यथेयं पृथिवी मही दाधार पर्वतान् गिरीन् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे ३  
 यथेयं पृथिवी मही दाधार विष्टितं जगत् । एवा ते ध्रियतां गर्भो अनु सूतुं सवितवे ४ १३६५

॥२२१॥ ( अथर्व० ७।११।१-१ )

ब्रह्मा । वृषभः ( आत्मा ) । परावृहती त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधानं आत्मा देवानामुत मानुषाणाम् ।  
 इह प्रजा जनय यास्त आसु या अन्यत्रेह तास्तै रमन्ताम् १

॥२२२॥ ( अथर्व० ८।६।१-२६ )

मातृनामा । मन्त्रोक्ताः, मातृनामा, १५ ब्रह्मणस्पतिः ( गर्भदोषनिवारणम् ) । अनुष्टुप्, २ पुरस्ताद्वृहती;

१० ज्यवसाना षट्पदा जगती; ११-१२, १४, १६, पथ्यापङ्क्तिः; १५ ज्यवसाना सप्तपदा शकरी;

१७ ज्यवसाना सप्तपदा जगती ।

यौ ते मातोन्ममार्जे जातायाः पतिवेदनौ । दुर्णामा तत्र मा गृधदलिंश उत वत्सपः १  
 पलालानुपलालौ शर्कु कोकं मलिम्लुचं पलीजकम् ।  
 आश्रेषं वृत्रिवाससमृक्षग्रीवं प्रमीलिनम् २ १३६८

मा सं वृतो मोषे सृप ऊरू माव सृपोऽन्तरा ।	
कृणोर्भ्यस्यै भेषजं वृजं दुर्णामिचार्तनम्	३
दुर्णामां च सुनामा चोभा संवृतमिच्छतः । अरायानप हन्मः सुनामा स्त्रैणमिच्छताम्	४ १३७०
यः कृष्णः केश्यसुर स्तम्बज उत तुण्डिकः ।	
अरायानस्या मुष्काभ्यां भंससोप हन्मसि	५
अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं क्रव्यादमुत रेरिहम् ।	
अरायांश्चकिष्किणो वृजः पिङ्गो अननिशत्	६
यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते भ्राता भूत्वा पितेव च ।	
वृजस्तान्तसंहतामितः ह्रीवरूपांस्तिरीटिनः	७
यस्त्वा स्वपन्तीं त्सरति यस्त्वा दिप्सति जाग्रतीम् ।	
छायामिव प्र तान्तसूर्यः परिक्रामन्ननीनशत्	८
यः कृणोति मृतवत्सामवतोकाभिमां स्त्रियम् ।	
तमोषधे त्वं नाशयास्याः कमलमञ्जिवम्	९ १३७५
ये शालाः परिनृत्यन्ति सायं गर्दभनादिनः ।	
कुसुला ये च कुशिलाः ककुभाः करुमाः स्त्रिमाः ।	
तानोषधे त्वं गन्धेन विषूचीनान् वि नाशय	१०
ये कुकुन्धाः कुकूरभाः कृत्तीर्दृशानि विभ्रति ।	
ह्रीवा इव प्रनृत्यन्तो वने ये कुर्वते घोषं तानितो नाशयामसि	११
ये सूर्यं न तितिक्षन्त आतर्पन्तमष्टं दिवः ।	
अरायान् वस्तवासिनो दुर्गन्धींल्लोहितास्यान् मर्ककान् नाशयामसि	१२
य आत्मानमतिमात्रमंसं आधाय विभ्रति।स्त्रीणां श्रोणिप्रतोदिन इन्द्र रक्षांसि नाशय	१३
ये पूर्वे वध्वोऽ यन्ति हस्ते शृङ्गाणि विभ्रतः ।	
आपाकेष्ठाः प्रहासिनं स्तम्बे ये कुर्वते ज्योतिस्तानितो नाशयामसि	१४ १३८०
येषां पश्चात् प्रपदानि पुरः पाष्णीः पुरो मुखी ।	
खलजाः शकधूमजा उरुण्डा ये च मट्मटाः कुम्भमुष्का अयाशवः ।	
तानस्या ब्रह्मणस्पते प्रतीबोधेन नाशय	१५
पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा अस्त्रैणाः सन्तु पण्डगाः ।	
अवं भेषज पादय य इमां संविष्टसत्यपतिः स्वपतिं स्त्रियम्	१६ १३८९

- उद्धर्षिणं मुनिकेशं जम्भयन्तं मरीमशम् । उपेवन्तमुदुम्बलं तुण्डेलमुत शालुहम्  
 पदा प्र विध्य पाण्यी स्थालीं गौरिव स्पन्दना १७
- यस्ते गर्भं प्रतिमृशाज्जातं वा मारयाति ते ।  
 पिङ्गस्तमुग्रधन्वा कृणोतु हृदयाविधम् १८
- ये अमो जातान् मारयन्ति स्र्तिका अनुशेरते ।  
 स्त्रीभागान् पिङ्गो गन्धर्वान् वातो अभ्रमिवाजतु १९ १३८५
- परिसृष्टं धारयतु यद्धितं मावं पादि तत् ।  
 गर्भं त उग्रौ रक्षतां भेषजौ नीविभार्यौ २०
- पूवीनसात् तङ्गत्वाश्छायाकादुत नग्नकात् ।  
 प्रजायै पत्यै त्वा पिङ्गः परिं पातु किमीदिनः २१
- आस्यात्तुरक्षात् पञ्चपादादनङ्गुरेः । वृन्तादुभि प्रसर्पतः परिं पाहि वरिवृतात् २२
- य आमं मांसमदान्ति पौरुषेयं च ये ऋविः ।  
 गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि २३
- ये स्र्यात् परिसर्पन्ति स्नुषेव शशुरादधि ।  
 वज्रश्च तेषां पिङ्गश्च हृदयेऽधि नि विध्यताम् २४ १३९०
- पिङ्ग रक्ष जायमानं मा पुमांसं स्त्रियं क्रन् ।  
 आण्डादो गर्भान् मा दभन् बाधस्वेतः किमीदिनः २५
- अग्रजास्त्वं मार्तवत्समाद् रोदमघमात्रयम् । वृक्षादिव स्रजं कृत्वाप्रिये प्रतिं मुञ्च तत् २६
- ॥२२३॥ ( अथर्व० २०।९६।११-१६ )  
 रक्षोहा । गर्भसंस्त्राव । अनुष्टुप् ।
- ब्रह्मणाभिः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।  
 अभीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाश्रये ११
- यस्ते गर्भमभीवा दुर्णामा योनिमाश्रये । अघिष्टं ब्रह्मणा सह निष्कृष्यादमननिश त् १२
- यस्ते हन्ति पतयन्तं निष्पत्सुं यः संरीसृपम् ।  
 जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि १३ १३९५
- यस्त ऊरु विहरत्यन्तरा दम्पती श्रये । योनिं यो अन्तरारोह्ति तमितो नाशयामसि १४
- यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।  
 प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि १५ १३९७

यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।  
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि

१६

॥२२४॥ ( ऋ० ५।७८५-९ )

सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ ( गर्भस्त्राविण्युपनिषद् ) । अनुष्टुप् ।

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूर्यन्त्या इव ।  
श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवधिं च मुञ्चतम् ५  
भीताय नार्धमानाय ऋषये सप्तवध्रये ।  
मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ६ १४००  
यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः । एवा ते गर्भे एजतु निरैतु दशमास्यः७  
यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति ।  
एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा ८  
दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि ।  
निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि ९

॥२२५॥ ( ऋ० ९।७४।५ )

कक्षीवान् दैर्घतमसः । पवमानः सोमः ( अदितेर्गर्भः ) । जगती ।

अरात्रीदुशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।  
दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे ५

॥२२६॥ ( अथर्व० १।११।१-६ )

अथर्वा । पूषा, अर्यमा, वेधाः, दिशः, देवाः ( नारी-सुखप्रसूतिः ) । १ पङ्क्तिः; २ अनुष्टुप्; ३ चतुष्पदोष्णिग्गर्भा  
ककुम्भत्यनुष्टुप्; ४-६ पथ्यापङ्क्तः ।

वषट् ते पूषन्मस्मिन्स्रतावर्यमा होता कृणोतु वेधाः ।  
सिस्रतां नार्युतप्रजाता वि पर्वाणि जिहतां सूतवा उ १ १४०५  
चतस्रो दिवः प्रदिशश्चतस्रो भूम्या उत । देवा गर्भं समैरयन् तं व्यूर्ण्वन्तु स्रतवे २  
सुषा व्यूर्णोतु वि योनिं हापयामसि । श्रथया स्रषणे त्वमव त्वं विष्कले सृज ३  
नेवं मांसे न पीवसि नेवं मञ्जस्वाहृतम् ।  
अत्रैतु पृश्नि शेवलं शुने जरायवत्तवेऽव जरायु पद्यताम् ४  
वि ते भिनश्चि मेहनं वि योनिं वि गवीनिके ।  
वि मातरं च पत्रं च वि कुमारं जरायणाव जरायु पद्यताम् ५ १४०९

यथा वातो यथा मनो यथा पतन्ति पक्षिणः ।

एवा त्वं देशमास्य साकं जरायुणा पतावं जरायुं पद्यताम्

६ १४२०

॥२२७॥ ( अथर्व० १९।४०।१-४ )

ब्रह्मा । बृहस्पतिः, विश्वे देवाश्च (मेधा) । १ पराऽनुष्टुप् त्रिष्टुप्; २ पुरःककुम्मत्युपरिष्टाद्बृहती;  
३ बृहतीगर्भाः; ४ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री ।

यन्मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तं जुगाम् ।

विश्वैस्तद् देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः

१

मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।

सुष्यदा यूयं स्यन्दध्वमूर्पहतोऽहं सुमेधां वर्चस्वी

२

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत् तपः ।

शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः

३

या नः पीपरदुश्चिना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासतामिषम्

४

॥२२८॥ ( अथर्व० १।१।१-४ )

अथर्वा । वाचस्पतिः ( मेधाजननम् ) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा विराडुरोबृहती ।

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि विभ्रतः ।

वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे

१

पुनरोहिं वाचस्पते देवेन मनसा सह ।

वसोष्पते निरमय मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

२

इहैवाभि वि तनुभे आर्त्ता इव ज्यया ।

वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम्

३

उपहतो वाचस्पतिरुपास्मान् वाचस्पतिह्वयताम् ।

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि

४

॥२२९॥ अथर्व० ६।१०८।१-५ )

शौनकः । मेधा, ४ अग्निः ( मेधावर्धनम् ) । अनुष्टुप्, २ उरोबृहती, ३ पथ्याबृहती ।

त्वं नो मेधे प्रथमा गोभिरश्वैभिरा गंहि । त्वं सूर्यस्य रश्मिभिस्त्वं नो असि यज्ञियां

मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मज्जतामृषिष्टुताम् । प्रपीतां ब्रह्मचारिभिर्देवानामवसे हुवे

यां मेधामभवो विदुर्या मेधामसुरा विदुः ।

ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तं मया वैद्ययामसि -

३ १४२१

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः । तथा मामद्य मेधयाभै मेधाविनै कृणु ४  
मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यंदिनं परि । मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वैश्यामहे ५ १४२९

मणिधारणम् । ( १४२४-१५७८ )

॥२३०॥ ( अथर्व० ४।१०।१-७ )

अथर्वा । शङ्खमणिः, कृशनः । अनुष्टुप्, ६ पथ्यापङ्क्तिः, ७ पञ्चपदा पराऽनुष्टुप्शकरी ।  
वाताञ्जातो अन्तरिक्षाद् विद्युतो ज्योतिष्वपरि ।

स नो हिरण्यजाः शङ्खः कृशनः पात्वंहसः १

यो अग्रतो रोचनानां समुद्रादधि जज्ञिषे । शङ्खेन हत्वा रक्षांस्यत्त्रिणो वि बहामहे २ १४२५

शङ्खेनामीवाममतिं शङ्खेनोत सदान्वाः ।

शङ्खो नो विश्वभेषजः कृशनः पात्वंहसः ३

दिवि जातः समुद्रजः सिन्धुतस्पर्याभृतः ।

स नो हिरण्यजाः शङ्ख आयुष्प्रतरणो मणिः ४

समुद्राञ्जातो मणिर्वृत्राज्जातो दिवाकरः । सो अस्मान्तसर्वतः पातु हेत्या देवासुरेभ्यः ५

हिरण्यानामेकोऽसि सोमात् त्वमधि जज्ञिषे ।

रथे त्वमसि दर्शत इषुधौ रोचनस्त्वं प्र ण आयुषि तारिषत् ६

देवानामस्थि कृशनं बभूव तदात्मन्वचरत्यप्स्वं १न्तः ।

तत् ते बभ्राम्यायुषे वर्चसे बलाय दीर्घायुत्वाय शतशारदाय कार्शनस्त्वाभि रक्षतु ७ १४३०

॥२३१॥ ( अथर्व० ८।५।१-२२ )

शुक्रः । कृत्यादूषणं, मन्त्रोक्ताः ( प्रतिसरो मणिः । अनुष्टुप्; १, ६ उपरिष्ठाद्बृहती; २ त्रिपदा विराट्

गायत्री; ३ चतुष्पदा भुरिगजगताः ५ भुरिकसंस्तारपङ्क्तिः; ७-८ ककुम्मती; ९

पुरस्कृतिर्जगती; १० त्रिष्टुप्; ११ पथ्यापङ्क्तिः; १४ व्यवसाना षट्पदा जगती;

१५ पुरस्ताद्बृहती; १९ जगतीगर्भा त्रिष्टुप्; २० विराट्गर्भा प्रस्तारपङ्क्तिः

२१ विराट् त्रिष्टुप्; २२ व्यवसाना सप्तपदा विराट्गर्भा भुरिकशकरी ।

अयं प्रतिसरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।

वीर्यवान्सपत्नहा शूरवीरः परिपाणः समङ्गलः १

अयं मणिः सपत्नहा सुवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।

प्रत्यक् कृत्या दूषयन्नेति वीरः २

अनेनेन्द्रो मणिना वृत्रमहन्ननेनासुरान् पराभाव्यन्मनीषी ।

अनेनाजयद् द्यावापृथिवी उभे इमे अनेनाजयत् प्रदिशुभ्वत्सः ३ १४३३

अयं स्राक्त्यो मणिः प्रतीवर्तः प्रतिसरः ।	
ओजस्वान् विमृधो वशी सो अस्मान् पातु सर्वतः	४
तदुगिराह तद् सोमं आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ।	
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु	५ १४३५
अन्तर्दधे द्यावापृथिवी उताहरुत सूर्यम् ।	
ते मे देवाः पुरोहिताः प्रतीचीः कृत्याः प्रतिसरैरजन्तु	६
ये स्राक्त्यं मणिं जना वर्माणि कृण्वते । सूर्य इव दिवमारुह्य वि कृत्या बाधते वशी ७	
स्राक्त्येन मणिं ऋषिणेव मनीषिणा । अजैषं सर्वाः पृतना वि मृधो हन्मि रक्षसः ८	
याः कृत्या अङ्गिरसीर्याः कृत्या असुरीर्याः कृत्याः स्वयंकृता या उ चान्येभिराभृताः ।	
उभयीस्ताः परा यन्तु परावतो नवति नाव्याङ् अति	९
अस्मै मणिं वर्मं बध्नन्तु देवा इन्द्रो विष्णुः सविता रुद्रो अग्निः ।	
प्रजापतिः परमेष्ठी विराड् वैश्वानर ऋषयश्च सर्वे	१० १४४०
उत्तमो अस्योषधीनामनङ्गान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव ।	
यमैच्छामाविदाम् तं प्रतिस्पाशन्मन्तितम्	११
स इद् व्याघ्रो भवत्यथो सिद्धो अथो वृषा । अथो सपत्नकर्शनो यो विभर्तमिं मणिम् १२	
नैनं घ्नन्त्यप्सरसो न गन्धर्वा न मर्त्याः ।	
सर्वा दिशो वि राजति यो विभर्तमिं मणिम्	१३
कश्यपस्त्वामसृजत कश्यपस्त्वा समैरयत् ।	
अविभस्वेन्द्रो मानुषे विभ्रत् संश्रेषिणेऽजयत् ।	
मणिं सहस्रवीर्यं वर्मं देवा अकृण्वत	१४
यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा दीक्षाभिर्यज्ञैर्यस्त्वा जिघांसति ।	
प्रत्यक् त्वमिन्द्र तं जहि वज्रेण शतपर्वणा	१५ १४४५
अयमिद् वै प्रतीवर्त ओजस्वान् संजयो मणिः ।	
प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमङ्गलः	१६
असपत्नं नो अधरादसपत्नं न उत्तरात् । इन्द्रासपत्नं नः पश्चाज्ज्योतिः शूर पुरस्कृषि १७	
वर्मं मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्मं सूर्यः । वर्मं म इन्द्रश्चाग्निश्च वर्मं धाता दधातु मे १८	
ऐन्द्राभं वर्मं बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यान्ति सर्वे ।	
वर्मं तन्वं त्रायतां सर्वतो बृहदायुष्मां जरदक्षिर्यथासानि	१९ १४४९



आ मारुक्षद् देवमणिर्मेघा अरिष्टतांतये ।	
इमं मेथिमभिसंविशध्वं तनूपानं त्रिवरूथमोजसे	२० १४५०
अस्मिन्निन्द्रो नि दधातु नृम्णमिमं देवासो अभिसंविशध्वम् ।	
दीर्घायुत्वायं शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासत्	२१
स्वास्तिदा विशां पतिर्वृत्रहा विमृषो वृशी ।	
इन्द्रो बध्नातु ते मणिं जिगीवाँ अपराजितः सोमपा अभयंकरो वृषा ।	
स त्वा रक्षतु सर्वतो दिवा नक्तं च विश्वतः	२२

॥२३२॥ ( अथर्व० १०।३।१-२५ )

अथर्वा । ( सपत्नक्षयणो ), वरणमणिः, वनस्पतिः, चन्द्रमाः । अनुष्टुप्; २-३, ६ भुरिक् भ्रिष्टुप्;  
८, १३-१४ पथ्यापङ्क्तिः; ११, १६ भुरिक्; १५, १७-२५ षट्पदा जगती ।

अयं मे वरणो मणिः सपत्नक्षयणो वृषा ।	
तेना रभस्व त्वं शत्रून् प्र मृणीहि दुरस्यतः	१
प्रैणान्छृणीहि प्र मृणा रभस्व मणिस्तं अस्तु पुरएता पुरस्तात् ।	
अवारयन्त वरणेन देवा अभ्याचारमसुराणां श्वःश्वः	२
अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः सहस्राक्षो हरितो हिरण्ययः ।	
स ते शत्रून्धरान् पादयाति पूर्वस्तान् दभ्नुहि ये त्वा द्विषन्ति	३ १४५५
अयं ते कृत्यां विततां पौरुषेयादयं भयात् ।	
अयं त्वा सर्वस्मात् पापाद् वरणो वारयिष्यते	४
वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः । यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तु देवा अवीवरन्	५
स्वप्नं सुप्त्वा यदि पश्यासि पापं मृगः सृतिं यति धावादजुष्टाम् ।	
परिक्ष्वाच्छकुनेः पापवादादयं मणिर्वरणो वारयिष्यते	६
अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या अभिचारादथो भयात् ।	
मृत्योरोजीयसो वधाद् वरणो वारयिष्यते	७
यन्मे माता यन्मे पिता भ्रातरो यच्च मे स्वा यदेनश्चक्रुमा वयम् ।	
ततो नो वारयिष्यतेऽयं देवो वनस्पतिः	८ १४६०
वृगेन प्रव्यथिता भ्रातृष्या मे सबन्धवः । अघूर्तं रजो अप्यंगुस्ते यन्त्वधमं तमः	९
अरिष्टोऽहमरिष्टगुरायुष्मान्त्सर्वपूरुषः ।	
तं मायं वरणो मणिः परि पातु दिशोदिशः	१० १४६२

अयं मे वरण उरसि राजा देवो वनस्पतिः । स मे शत्रून् वि बाधतामिन्द्रो दस्युनिवासुरान्	११
इमं विभर्षि वरणमायुष्मान्छतशारदः । स मे राष्ट्रं च क्षत्रं च पशूनोजश्च मे दधत्	१२
यथा वातो वनस्पतीन् वृक्षान् भनक्त्योजसा । एवा सपत्नान् मे भङ्ग्धि पूर्वीन् जाताँ उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु	१३ १४६५
यथा वार्तश्चाग्निश्च वृक्षान् प्सातो वनस्पतीन् । एवा सपत्नान् मे प्साहि पूर्वीन् जाताँ उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु	१४
यथा वार्तेन प्रक्षीणा वृक्षाः शोरे न्यर्षिताः । एवा सपत्नास्त्वं मम प्र क्षिणीहि न्यर्षय पूर्वीन् जाताँ उतापरान् वरणस्त्वाभि रक्षतु	१५
तांस्त्वं प्र च्छिन्द्वि वरण पुरा दिष्टात् पुरायुषः । य एनं पशुषु दिप्सन्ति ये चास्य राष्ट्रदिप्सवः	१६
यथा सूर्यो अतिभाति यथास्मिन् तेज आहितम् । एवा मे वरणो मणिः कीर्ति भूतिं नि यच्छतु	
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा यथा यशश्चन्द्रमस्यादित्ये च नुचक्षसि ।	१७
एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा	१८ १४७०
यथा यशः पृथिव्यां यथास्मिन् जातवेदसि । एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु	
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा यथा यशः कन्यायां यथास्मिन्संभृते रथे ।	१९
एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा	२०
यथा यशः सोमपीथे मधुपर्के यथा यशः । एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु	
तेजसा मा समुक्षतु यशसा समनक्तु मा	२१ १४७३

यथा यज्ञोऽग्निहोत्रे वषट्कारे यथा यज्ञः ।  
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु  
 तेजसा मा समृक्षतु यज्ञसा समनक्तु मा  
 यथा यज्ञो यजमाने यथास्मिन् यज्ञ आहितम् ।  
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु  
 तेजसा मा समृक्षतु यज्ञसा समनक्तु मा  
 यथा यज्ञः प्रजापतौ यथास्मिन् परमेष्ठिनि ।  
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु  
 तेजसा मा समृक्षतु यज्ञसा समनक्तु मा  
 यथा देवेष्वमृतं यथैषु सत्यमाहितम् ।  
 एवा मे वरणो मणिः कीर्तिं भूतिं नि यच्छतु  
 तेजसा मा समृक्षतु यज्ञसा समनक्तु मा

२२

२३ १४७५

२४

२५

॥२३३॥ ( अथर्व० १०।६।१-३५ )

बृहस्पतिः । फालमणिः, वनस्पतिः, ३ आपः ( मणिबन्धनम् ) । अनुष्टुप्; १,४,२१ गायत्री; ५ षट्पदा  
 जगती; ६ सप्तपदा विराट् शकरी; ७-१० त्र्यवसाना अष्टपदाऽष्टिः ( १० नवपदा धृतिः ); ११,२०,  
 २३-२७ पद्यापङ्क्तिः, १२-१७ त्र्यवसाना षट्पदा शकरी; ३१ त्र्यवसाना षट्पदा  
 जगती; ३५ पञ्चपदा त्र्यनुदुग्भा जगती ।

अरातीयोर्भ्रातृव्यस्य दुर्हादौ द्विषतः शिरः । अपि वृश्चाम्योजसा १  
 वर्म महामयं मणिः फालाज्जातः करिष्यति । पूर्णो मन्थेन मागंमद् रसेन सह वर्चसा २  
 यत् त्वा शिक्षः परावधीत् तक्षा हस्तेन वास्या ।  
 आपस्त्वा तस्माज्जीवलाः पुनन्तु शुच्यः शुचिम् ३ १४८०  
 हिरण्यस्रगयं मणिः श्रद्धां यज्ञं महो दधत् । गृहे वसतु नोऽतिथिः ४  
 तस्मै घृतं सुरां मध्वन्नमन्नं क्षदामहे ।  
 स नः पितेव पुत्रेभ्यः श्रेयःश्रेयश्चिकित्सतु भूयोभूयः श्वःश्वो देवेभ्यो मणिरेत्य ५  
 यमबन्धाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।  
 तमग्निः प्रत्यमुञ्चत सो अस्मै दुह आज्यं भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ६  
 यमबन्धाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।  
 तमिन्द्रः प्रत्यमुञ्चतौजसे वीर्यायि कम् ।  
 सो अस्मै बलमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ७ १४८४

- यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।  
तं सोमः प्रत्यमुञ्चत महे श्रोत्राय चक्षसे ।  
सो अस्मै वर्च इद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ८ १४८५  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।  
तं सूर्यः प्रत्यमुञ्चत तेनेमा अजयद् दिशः ।  
सो अस्मै भूतिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ९  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्मणिं फालं घृतश्रुतमुग्रं खदिरमोजसे ।  
तं बिभ्रच्चन्द्रमा मणिमसुराणां पुरोऽजयद् दानवानां हिरण्ययीः ।  
सो अस्मै श्रियमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १०  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे ।  
सो अस्मै वाजिनं दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि ११  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तेनेमां मणिनां कृषिमश्विनावभि रक्षतः ।  
स भिषग्भ्यां महो दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १२  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं बिभ्रत् सविता मणिं तेनेदमजयत् स्वः ।  
सो अस्मै सूनृतां दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १३ १४९०  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमापो बिभ्रतीर्मणिं सदा धावन्त्यक्षिताः ।  
स आभ्योऽमृतमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १४  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं राजा वरुणो मणिं प्रत्यमुञ्चत शंभुवम् ।  
सो अस्मै सत्यमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १५  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तं देवा बिभ्रतो मणिं सर्वाँल्लोकान् युधाजयन् ।  
स एभ्यो जितिमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १६  
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्वाताय मणिमाशवे । तमिमं देवतां मणिं प्रत्यमुञ्चन्त शंभुवम् ।  
स आभ्यो विश्वमिद् दुहे भूयोभूयः श्वःश्वस्तेन त्वं द्विषतो जहि १७  
ऋतवस्तमबधतार्त्वास्तमबधत । संवत्सरस्तं बद्ध्वा सर्वं भूतं वि रक्षति १८ १४९५  
अन्तर्देशा अबधत प्रदिशस्तमबधत । प्रजापतिसृष्टो मणिविषतो मेऽधराँ अकः १९  
अथर्वाणो अबधताथर्वणा अबधत ।  
तैर्मेदिनो अङ्गिरसो दस्यूनां विभिदुः पुरस्तेन त्वं द्विषतो जहि २०  
तं धाता प्रत्यमुञ्चत स भूतं व्यकल्पयत् । तेन त्वं द्विषतो जहि । २१ १४९८

यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमद् रसेन सह वर्चसा	२२
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सह गोभिरजाविभिरन्नेन प्रजया सह	२३ १५००
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् सह त्रींहियत्राभ्यां महमा भूत्या सह	२४
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमन्मधोर्धृतस्य धारया कीलालेन मणिः सह	२५
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमदूर्जया पयसा सह द्रविणेन श्रिया सह	२६
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमत् तेजसा त्विष्या सह यज्ञसा कीर्त्या सह	२७
यमबध्नाद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो असुरक्षितिम् ।	
स मायं मणिरागमन् सर्वाभिर्भूतिभिः सह	२८ १५०५
तमिमं देवतां मणिं महीं ददतु पुष्टये । अभिभुं क्षत्रवर्धनं सपत्नदम्भनं मणिम्	२९
ब्रह्मणा तेजसा सह प्रतिं मुञ्चामि मे शिवम् ।	
असपत्नः सपत्नहा सपत्नान् मेऽधराँ अकः	३०
उत्तरं द्विषतो मामयं मणिः कृणोतु देवजाः ।	
यस्य लोका इमे त्रयः पयो दुग्धमुपासते ।	
स मायमधि रोहतु मणिः श्रेष्ठयाय मूर्धतः	३१
यं देवाः पितरो मनुष्या उपजीवन्ति सर्वदा ।	
स मायमधि रोहतु मणिः श्रेष्ठयाय मूर्धतः	३२
यथा बीजमुर्वरायां कृष्टे फालेन रोहति ।	
एवा मयि प्रजा पशवोऽन्नमन्नं वि रोहतु	३३ १५१०
यस्मै त्वा यज्ञवर्धन मणे प्रत्यग्रुचं शिवम् ।	
तं त्वं शतदाक्षिण मणे श्रेष्ठयाय जिन्वतात्	३४
एतमिध्मं समाहितं जुषाणो अग्रे प्रतिं हर्य होमैः ।	
तस्मिन् विदेम सुमतिं स्वस्ति प्रजां चक्षुः पशून्त्समिद्धे जातवेदसि ब्रह्मणा	३५ १५१२

॥२३४॥ ( अथर्व० १९।२८।१-१० )

ब्रह्मा ( सपत्नक्षयकामः ) । दर्भमणिः मन्त्रोक्ताश्च । अनुष्टुप् ।

इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे । दुर्भं सपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः १	
द्विषतस्तापयन् हृदः शत्रूणां तापयन् मनः ।	
दुर्हार्दुः सर्वास्त्वं दर्भं घर्भं इवाभिन्तसंतापयन् २	
घर्भं इवाभितपन् दर्भं द्विषतो नितपन् मणे ।	
हृदः सपत्नानां भिन्द्धीन्द्रं इव विरुजं बलम् ३	१५१५
भिन्द्धि दर्भं सपत्नानां हृदयं द्विषतां मणे ।	
उद्यन् त्वर्चमिव भूम्याः शिरं एषां वि पातय ४	
भिन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे भिन्द्धि मे पृतनायतः ।	
भिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो भिन्द्धि मे द्विषतो मणे ५	
छिन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे छिन्द्धि मे पृतनायतः ।	
छिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो छिन्द्धि मे द्विषतो मणे ६	
वृश्च दर्भं सपत्नान् मे वृश्च मे पृतनायतः ।	
वृश्च मे सर्वान् दुर्हार्दो वृश्च मे द्विषतो मणे ७	
कृन्त दर्भं सपत्नान् मे कृन्त मे पृतनायतः ।	
कृन्त मे सर्वान् दुर्हार्दो कृन्त मे द्विषतो मणे ८	१५२०
पिंश दर्भं सपत्नान् मे पिंश मे पृतनायतः ।	
पिंश मे सर्वान् दुर्हार्दो पिंश मे द्विषतो मणे ९	
विष्यं दर्भं सपत्नान् मे विष्यं मे पृतनायतः ।	
विष्यं मे सर्वान् दुर्हार्दो विष्यं मे द्विषतो मणे १०	

॥२३५॥ ( अथर्व० १९।२९।१-९ )

ब्रह्मा । दर्भमणिः । अनुष्टुप् ।

निक्षं दर्भं सपत्नान् मे निक्षं मे पृतनायतः ।	
निक्षं मे सर्वान् दुर्हार्दो निक्षं मे द्विषतो मणे १	
तृन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे तृन्द्धि मे पृतनायतः ।	
तृन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दोस्तृन्द्धि मे द्विषतो मणे २	
रुन्द्धि दर्भं सपत्नान् मे रुन्द्धि मे पृतनायतः ।	
रुन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो रुन्द्धि मे द्विषतो मणे ३	१५२५

मूण दर्म सपत्नान् मे मूण मे पृतनायतः ।	
मूण मे सर्वान् दुर्हादो मूण मे द्विषतो मणे	४
मन्थं दर्म सपत्नान् मे मन्थं मे पृतनायतः ।	
मन्थं मे सर्वान् दुर्हादो मन्थं मे द्विषतो मणे	५
पिण्डिदं दर्म सपत्नान् मे पिण्डिदं मे पृतनायतः ।	
पिण्डिदं मे सर्वान् दुर्हादोः पिण्डिदं मे द्विषतो मणे	६
ओषं दर्म सपत्नान् मे ओषं मे पृतनायतः ।	
ओषं मे सर्वान् दुर्हादो ओषं मे द्विषतो मणे	७
दहं दर्म सपत्नान् मे दहं मे पृतनायतः ।	
दहं मे सर्वान् दुर्हादो दहं मे द्विषतो मणे	८ १५१०
जहि दर्म सपत्नान् मे जहि मे पृतनायतः ।	
जहि मे सर्वान् दुर्हादो जहि मे द्विषतो मणे	९

॥२३६॥ ( अथर्व० १९।३०।१-५ )

ग्रह्या । दर्भमणिः । अनुष्टुप् ।

यत् ते दर्म जरामृत्युः शतं वर्मसु वर्म ते । तेनेमं वर्मिणं कृत्वा सपत्नां जहि वीर्यैः १	
शतं ते दर्म वर्माणि सहस्रं वीर्याणि ते । तमस्मै विश्वे त्वां देवा जरसे भर्तवा अदुः २	
त्वामाहुर्देववर्म त्वां दर्म ब्रह्मणस्पतिम् । त्वामिन्द्रस्याहुर्वर्म त्वं राष्ट्राणि रक्षसि ३	
सपत्नक्षयणं दर्म द्विषतस्तपनं हृदः । मणिं क्षत्रस्य वर्धनं तनूपानं कृणोमि ते ४	१५१५
यत् समुद्रो अभ्यक्रन्दत् पर्जन्यो विद्युता सह ।	
ततो हिरण्ययो बिन्दुस्ततो दुर्भो अजायत ५	५

॥२३७॥ ( अथर्व० १९।३१।१-१४ )

मविता ( पुष्टिकामः ) । औदुम्बरमणिः । अनुष्टुप् ; ५, १२ त्रिष्टुप् ; ६ विराट् प्रस्ताव-  
पङ्क्तिः ; ११, १३ पञ्चपदा शकरीः १४ विराडास्तारपङ्क्तिः ।

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय वेधसा । पशूनां सर्वेषां स्फातिं गोष्ठे मे सविता करत् १	
यो नो अग्निर्गाहिपत्यः पशूनामधिपा असत् ।	
औदुम्बरो वृषा मणिः स मां सृजतु पुष्ट्या २	२
करीषिणीं फलवतीं स्वधामिरां च नो गृहे ।	
औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु मे ३	३ १५३९

यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च यान्यन्नानि ये रसाः ।	
गृह्णेद्गृहं त्वेषां भूमानं बिभ्रदौदुम्बरं मणिम्	४ १५४०
पुष्टिं पशूनां परिं जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम् ।	
पर्यः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात्	५
अहं पशूनामधिपा असानि मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु ।	
मण्मौदुम्बरो मणिर्द्रविणानि नि यच्छतु	६
उप मौदुम्बरो मणिः प्रजया च धनेन च ।	
इन्द्रेण जिन्वितो मणिरा मागन्त्सह वर्चसा	७
देवो मणिः संपत्नहा धनसा धनसातये ।	
पशोरन्नस्य भूमानं गवां स्फातिं नि यच्छतु	८
यथाग्रे त्वं वनस्पते पुष्ट्या सह जज्ञिषे ।	
एवा धनस्य मे स्फातिमा दधातु सरस्वती	९ १५४५
आ मे धनं सरस्वती पर्यस्फातिं च धान्यम् ।	
सिनीवाल्युपा बहादयं चौदुम्बरो मणिः	१०
त्वं मणीनामधिपा वृषासि त्वयि पुष्टं पुष्टपतिर्जजान ।	
त्वयिमे वाजा द्रविणानि सर्वौदुम्बरः स त्वमस्सत् सहम्बारादरानिममति क्षुधं च ११	
ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थायाभिषिक्तोऽभि मां सिञ्च वर्चसा ।	
तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि	१२
पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्ग्धि गृहमेधी गृहपतिं मा कृणु ।	
औदुम्बरः स त्वमस्सासु धेहि रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छ	
रायस्पोषाय प्रति मुञ्चे अहं त्वाम्	१३
अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।	
स नः सनि मधुमतीं कृणोतु रयिं च नः सर्ववीरं नि यच्छात्	१४ १५५०

॥२३८॥ ( अथर्व० १९।३४।१-२० )

अङ्गिराः । वनस्पतिः, लिंगोक्ताः ( जङ्गिडमणिः ) । अनुष्टुप् ।

जङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिडः । द्विपाच्चतुष्पादुस्माकं सर्वं रक्षतु जङ्गिडः १  
या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः शतं कृत्याकृतश्च ये ।  
सर्वान् विनक्तु तेजसोऽरसां जङ्गिडस्करत्



अरसं कृत्रिमं नादमरसाः सप्त विस्रसः । अपेतो जङ्गिडामितिभिषुमस्तेव शातय ३  
कृत्यादूषण एवायमथो अरातिदूषणः । अथो सहस्वान् जङ्गिडः प्र ण आयूषि तारिषत् ४  
स जङ्गिडस्य महिमा परि णः पातु विश्वतः ।

विष्कन्धं येन सासह संस्कन्धमोज ओजसा ५ १५५५

त्रिष्टा देवा अंजनयन् निष्ठितं भूम्यामधि । तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणाः पूर्या विदुः ६  
न त्वा पूर्वा ओषधयो न त्वा तरन्ति या नवाः ।

विबाध उग्रो जङ्गिडः परिपाणः सुमङ्गलः ७

अथोपदान भगवो जङ्गिडामितवीर्य । पुरा तं उग्रा ग्रसन् उपेन्द्रो वीर्यं ददौ ८

उग्र इत् तं वनस्पत इन्द्रं ओजमानमा दधौ । अमीवाः सर्वाश्चातयं जहि रक्षांस्योषधे ९  
आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ठ्यामयम् । त्वमानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत् १० १५६०

॥२३९॥ ( अथर्व० १९।३५।१-५ )

अङ्गिराः । वनस्पतिः ( जङ्गिडः ) । अनुष्टुप्; ३ पद्यापङ्क्तिः; ४ निष्पत् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त ऋषयो जङ्गिडं ददुः ।

देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम् १

स नो रक्षतु जङ्गिडो धनपालो धनेव । देवा यं चक्रुर्ब्राह्मणाः परिपाणमरातिहम् २

दुर्हार्दुः संघोरं चक्षुः पापकृत्वान्मागमम् ।

तांस्त्वं सहस्रचक्षो प्रतीबोधेन नाशय परिपाणोऽसि जङ्गिडः ३

परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् परि मा वीरुद्धयः ।

परि मा भूतात् परि मोत भव्याद् दिशोदिशो जङ्गिडः पात्वस्मान् ४

य ऋष्णवो देवकृता य उतो ववृतेऽन्यः ।

सर्वास्तान् विश्वभेषजोऽरसां जङ्गिडस्करत् ५ १५६५

॥२४०॥ ( अथर्व० १९।३६।१-६ )

ब्रह्मा । शतवारो मणिः । अनुष्टुप् ।

शतवारो अनीनशद् यक्षमान् रक्षांसि तेजसा ।

आरोहन् वर्चसा सह मणिर्दुर्णाम्चातनः १

शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते मूलैर्न यातुधान्यः । मध्येन यक्षमं बाधते नैर्न पाप्मार्ति तत्रति २

ये यक्षमासो अर्भका महान्तो ये च शब्दिनः ।

सर्वा दुर्णामहा मणिः शतवारो अनीनशत् ३ १५६८

शतं वीरानजनयच्छतं यक्षमानपावपत् । दुर्गाभ्यः सर्वान् हत्वाव रक्षांसि धूनुते ४  
 हिरण्यशृङ्ग ऋषभः शातवारो अयं मणिः । दुर्गाभ्यः सर्वास्तृड्द्वाव रक्षांस्यक्रमीत् ५ १५७०  
 शतमहं दुर्गाभ्यानां गन्धर्वाप्सरसां शतम् । शतं शश्वन्वतीनां शतवारेण वारये ६

॥२४१॥ ( अथर्व० १९।४६।१-७ )

प्रजापतिः । अस्तृतमणिः । त्रिष्टुप्; १ पञ्चपदा ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्; २ षट्पदा भुरिक्षशकरीः  
 ३, ७ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः; ४ चतुष्पदा; ५ पञ्चपदा अतिशकरी; ६ पञ्चपदोष्णिग्गर्भा  
 विराड् जगती ।

प्रजापतिष्ठा बध्नात् प्रथममस्तृतं वीर्यायि कम् ।  
 तत् ते बध्नाभ्यायुषे वर्चस ओजसे च बलाय चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु १  
 ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादुमस्तृतेमं मा त्वा दभन् पणयो यातुधानाः ।  
 इन्द्र इव दस्युनवं धूनुष्व पृतन्यतः सर्वाँलत्रून् वि षहस्वास्तृतस्त्वाभि रक्षतु २  
 शतं च न प्रहरन्तो निघ्नन्तो न तस्तिरे ।  
 तस्मिन्निन्द्रः पर्यदत्त चक्षुः प्राणमथो बलमस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ३  
 इन्द्रस्य त्वा वर्मेणा परि धापयामो यो देवानामधिराजो बभूव ।  
 पुनस्त्वा देवाः प्र णयन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ४ १५७५  
 अस्मिन् मणावेकशतं वीर्याणि सहस्रं प्राणा अस्मिन्नस्तृते ।  
 व्याघ्रः शत्रून्भि तिष्ठ सर्वान् यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्त्वस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ५  
 घृतादुल्लुभो मधुमान् पर्यस्वान्तसहस्रप्राणः शतयोनिर्वयोधाः ।  
 शंभूर्ध्व मयोभूश्चोर्जस्वाँश्च पर्यस्वाँश्चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ६  
 यथा त्वमुत्तरोऽसौ असपलः सपलहा ।  
 सजातानामसद् वशी तथा त्वा सविता करदस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ७ १५७८

अरिष्टनाशनम् । ( १५७९-१५९० )

॥२४२॥ ( अथर्व० ६।२७।१-३ )

भृगुः । यमः, निर्ऋतिः ( अरिष्टक्षयणम् ) । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम ।  
 तस्मा अर्चाम कृण्वाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे १  
 शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनां गृहं नः ।  
 अग्निहिं विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पृथिणी नो घृणक्तु २ १५८०

हेतिः पश्चिणी न दंभात्यस्मानाष्ट्री पदं कृणुते अग्निधाने ।  
शिवो गोभ्य उत पुरुषेभ्यो नो अस्तु मा नो देवा इह हिंसीत् कपोतः ३

॥२४३॥ ( अथर्व० ६।२८।१-३ )

शृगुः । यमः, निर्ऋतिः ( अरिष्टक्षयणम् ) । १ त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती ।

ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदमिषं मर्दन्तः परि गां नयामः ।  
संलोभयन्तो दुरिता पदानि हित्वा न ऊर्जे प्र पदात् पथिष्ठः १  
परीमेदुभिर्मर्षत परीमे गार्मनेषत ।

देवेष्वकृत श्रवः क इमां आ दधर्षति २

यः प्रथमः प्रवर्तमाससाद बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानः ।

योऽस्येशे द्विपदो यश्चतुष्पदस्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ३

॥२४४॥ ( अथर्व० ६।२९।१-३ )

शृगुः । यमः, निर्ऋतिः ( अरिष्टक्षयणम् ) । ( बृहती ) १-२ विराण्नाम गायत्री, ३ व्यवसाना  
सप्तपदा विराडष्टिः ।

अमून् हेतिः पतत्रिणी न्येतु यदुल्लको वदति मोघमेतत् ।

यद् वा कपोतः पदमग्नौ कृणोति १ १५८५

यौ ते दूतौ निर्ऋत इदमेतोऽप्रहितौ प्रहितौ वा गृहं नः ।

कपोतोलूकाभ्यामपदं तदस्तु २

अवैरहत्यायेदमा पपत्यात् सुवीरताया इदमा संसद्यात् ।

पराङ्घ्रि परा वद् पराचीमनु संवर्तम् ।

यथा यमस्य त्वा गृहेऽसं प्रतिचाकशानाभूकं प्रतिचाकशान् ३

॥२४५॥ ( अथर्व० ६।८०।१-३ )

अथर्वा । चन्द्रमाः ( अरिष्टक्षयणम् ) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप्, ३ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अन्तरिक्षेण पतति विश्वा भूताञ्चाकशत् ।

शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम १

ये त्रयः कालक्राञ्जा दिवि देवा इव श्रिताः ।

तान्त्सर्वानह ऊतयंऽस्मा अरिष्टतातये २

अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थं समुद्रे अन्तर्मेहिमा ते पृथिव्याम् ।

शुनो दिव्यस्य यन्महस्तेना ते हविषा विधेम ३ १५९०

## कृत्यादूषणम् । ( १५९१-१६५३ )

॥२४६॥ ( अथर्व० ५।१४।१-१३ )

शुक्रः । वनस्पतिः, कृत्यापरिहरणम् । अनुष्टुप्; ३,५,१२ भुरिक्; ८ त्रिपदा विराट् ।  
१० निष्प्रदृष्टती; ११ त्रिपदा साञ्जी त्रिष्टुप्; १३ स्वराट् ।

सुपर्णस्त्वान्वविन्दत् स्रक्स्त्वाखनन्नसा । दिप्सौषधे त्वं दिप्सन्तमत्रं कृत्याकृतं जहि १  
अत्रं जहि यातुधानानव कृत्याकृतं जहि ।

अथो यो अस्मान् दिप्सन्ति तमु त्वं जह्योषधे २  
रिश्यस्येव परीशासं परिकृत्य परिं त्वचः ।

कृत्यां कृत्याकृतं देवा निष्कर्मिव प्रतिं मुञ्चत ३  
पुनः कृत्यां कृत्याकृतं हस्तगृह्य परां णय ।

समक्षमस्मा आ धेहि यथा कृत्याकृतं हनत् ४  
कृत्याः संन्तु कृत्याकृतं शपथः शपथीयते ।

सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः ५ १५९५  
यदि स्त्री यदि वा पुमान् कृत्यां चकार पाप्मने ।

तामु तस्मै नयामस्यश्चमिवाश्वाभिधान्या ६  
यदि वारिं देवकृता यदि वा पुरुषैः कृता । तां त्वा पुनर्णयामसीन्द्रेण सयुजा वयम् ७

अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः सहस्व । पुनः कृत्यां कृत्याकृतं प्रतिहरणेन हरामसि ८  
कृतव्यधनि विध्य तं यश्चकार तमिज्जहि । न त्वामचक्रुषे वयं वधाय सं शिशीमहि ९

पुत्र इव पितरं गच्छ स्वज इवाभिष्टितो दश ।  
बन्धमिवावक्रामी गच्छ कृत्यं कृत्याकृतं पुनः १० १६००

उदेणीवं वारण्यभिस्कन्दं मृगीवं । कृत्या कर्तारमृच्छतु ११  
इवा ऋजीयः पततु द्यावापृथिवी तं प्रति ।

सा तं मृगमिव गृह्णातु कृत्या कृत्याकृतं पुनः १२  
अभिरिवैतु प्रतिकूलमनुकूलमिवोदुकम् । सुखो रथ इव वर्ततां कृत्या कृत्याकृतं पुनः १३

॥२४७॥ ( अथर्व० ५।३१।१-१२ )

शुक्रः । कृत्यादूषणम् ( कृत्यापरिहरणम् ) । अनुष्टुप्; ११ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्; १२ पथ्याबृहती ।

यां तं चक्रुरामे पात्रे यां चक्रुर्मिश्रधान्ये ।

आमे मासे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रतिं हरामि ताम्

१ १६०४

यां ते चक्रुः कृकवाकावजे वा यां कुरीरिणि ।	
अव्यां ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	२ १६०५
यां ते चक्रुरेकशफे पशूनामुभयादति ।	
गर्दभे कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	३
यां ते चक्रुरमूलायां वलगं वा नराचयाम् ।	
क्षेत्रे ते कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	४
यां ते चक्रुर्गाहपत्ये पूर्वाग्रावुत दुश्चितः ।	
शालायां कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	५
यां ते चक्रुः सभायां यां चक्रुरधिदेवेन ।	
अक्षेषु कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	६
यां ते चक्रुः सेनायां यां चक्रुरिष्वायुधे ।	
दुन्दुभौ कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	७ १६१०
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः श्मशाने वा निचखनुः ।	
सन्नानि कृत्यां यां चक्रुः पुनः प्रति हरामि ताम्	८
यां ते चक्रुः पुरुषास्थे अग्नौ संकसुके च याम् ।	
म्रोक् निर्दाहं क्रव्यादुं पुनः प्रति हरामि ताम्	९
अपथेना जभारिणां तां पथेतः प्र हिणमसि ।	
अधीरो मर्याधीरेभ्यः सं जभाराचिन्या	१०
यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम् । चकार भद्रमसभ्यमभुगो भगवद्भयः ११	
कृत्याकृतं वलगिनं मूलिनं शपथेऽयम् ।	
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेनाग्निर्विध्यत्वस्तया	१२

॥२४८॥ ( अथर्व० १०।१।१-३२ )

प्रत्यङ्गिरसः । कृत्यादूषणम् । अनुष्टुप्; १ महाबृहती; २ विराण्नाम गायत्री; ९ पथ्यापङ्क्तिः; १२ पङ्क्तिः; १३ उरोवृहती; १५ चतुष्पदा विराङ्जगती; १७, २०, २४ प्रस्तारपङ्क्तिः (२० विराङ्); १६, १८ त्रिष्टुप्; १९ चतुष्पदा जगती; २२ एकावसाना द्विपदाऽऽर्ची उष्णिक्; २३ त्रिपदा भुरिग्विषमा गायत्री; २८ त्रिपदा गायत्री; २९ मध्ये ज्योतिष्मती जगती; ३२ द्व्यनुष्टुब्भाभा पञ्चपदाऽतिजगती ।

यां कल्पयन्ति वहतौ वधूमिव विश्वरूपां हस्तकृतां चिकित्सवः ।

सारादेत्वर्षं नुदाम एनाम्

१ १६१६

शीर्षवतीं नस्वतीं कर्णिनीं कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा । सारादेत्वपं नुदाम एनाम्	
शुद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृता । जाया पत्यां नुत्तेवं कर्तारं बन्ध्वच्छतुः	
अनयाहमोषध्या सर्वाः कृत्या अद्दुषम् । यां क्षेत्रे चक्रुर्यां गोषु यां वां ते पुरुषेषु	
अधमस्त्वघकृते शपथः शपथीयते । प्रत्यक् प्रतिप्रहिण्मो यथा कृत्याकृतं हनत्	५ १६२०
प्रतीचीनं आङ्गिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः ।	
प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामून् कृत्याकृतो जहि	६
यस्त्वोवाच परेहीतिं प्रतिकूलमुदायम् ।	
तं कृत्येऽभिनिर्वर्तस्व मास्मानिच्छो अनागसः	७
यस्ते परूपि संदुधौ रथस्येवर्धुधिया । तं गच्छ तत्र तेऽयं नमजातस्तेऽयं जनः	८
ये त्वां कृत्वालेभिरे विद्वला अभिचारिणः ।	
शंभ्वीडेदं कृत्यादूषणं प्रतिवर्त्म पुनःसरं तेन त्वा स्नपयामसि	९
यद् दुर्भगां प्रस्नपितां मृतवत्सामुपेयिम । अपंतु सर्वं मत् पापं द्रविणं मोषं तिष्ठतु	१० १६२५
यत् तै पितृभ्यो ददतो यज्ञे वा नाम जगूहुः ।	
संदेश्याडेत् सर्वस्मात् पापादिमा मुञ्चन्तु त्वौर्षधीः	११
देवैन्सात् पित्र्यान्नामग्राहात् संदेश्यादिभिनिष्कृतात् ।	
मुञ्चन्तु त्वा वीरुधो वीर्येण ब्रह्मण ऋग्भिः पयस ऋषीणाम्	१२
यथा वातश्चयावयति भूम्यां रेणुमन्तरिक्षाच्चाभ्रम् ।	
एवा मत् सर्वं दुर्भूतं ब्रह्मनुत्तमपायति	१३
अपं क्राम नानदतो विनेद्धा गर्दभीव ।	
कर्तृन् नक्षस्वेतो नुत्ता ब्रह्मणा वीर्याविता	१४
अयं पन्थाः कृत्येतिं त्वा नयामोऽभिप्रहितां प्रति त्वा प्र हिण्मः ।	
तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनीं विश्वरूपा कुरूटिनीं	१५ १६३०
पराक् ते ज्योतिरपथं ते अर्वाग्न्यत्रास्मदयना कृणुष्व ।	
परेणेहि नवतिं नाव्याडे अति दुर्गाः स्रोत्या मा क्षणिष्ठाः परेहि	१६
वात इव वृक्षान् नि मृणीहि पादय मा गामश्चं पुरुषमुच्छिष एषाम् ।	
कर्तृन् निवृत्त्येतः कृत्येऽप्रजास्त्वायं बोधय	१७
यां तै बर्हिषि यां इमंशाने क्षेत्रे कृत्यां वलगं वां निचख्नुः ।	
अमौ वां त्वा गार्हिपत्येऽभिचेरुः पाकं सन्तं धीरतरा अनागसम्	१८ १६३३

उपाहृतमनुबुद्धं निखातं वैरं त्सार्यन्वविदाम् कर्त्रम् । तदेतु यत् आभृतं तत्राश्वं इव वि वर्ततां हन्तु कृत्याकृतः प्रजाम् स्त्रायुसा असयः सन्ति नो गृहे विद्या तै कृत्ये यतिधा परूषि ।	१९
उत्तिष्ठैव परेहीतोऽज्ञाते किमिहेच्छसि ग्रीवास्ते कृत्ये पादौ चार्पि कत्स्यामि निर्द्रव । इन्द्राग्नी अस्मान् रक्षतां यौ प्रजानां प्रजार्वती सोमो राजाधिपा मृडिता च भूतस्य नः पतयो मृडयन्तु भवाशर्वावस्यतां पापकृते कृत्याकृते । दुष्कृते विद्युतं देवहेतिम् यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी कृत्याकृता संभृता विश्वरूपा । सेतोरेष्टापदी भूत्वा पुनः परेहि दुच्छुने अभ्यङ्क्ताक्ता स्वरिकृता सर्वं भरन्ती दुरितं परेहि । जानीहि कृत्ये कर्तारं दुहितेव पितरं स्वम् परेहि कृत्ये मा तिष्ठो विद्धभ्येव पदं नय । मृगः स मृगयुस्त्वं न त्वा निकर्तुमर्हति उत्त हन्ति पूर्वासिनं प्रत्यादायापरं इष्वा । उत्त पूर्वस्य निघ्नतो नि हन्त्यपरः प्रति एतद्धि शृणु मे वचोऽर्थेहि यत एयथ । यस्त्वा चकार तं प्रति अनागोहृत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्च पुरुषं वधीः । यत्रयत्रासि निर्हिता ततस्त्वोत्थापयामसि पर्णाल्लघीयसी भव यदि स्थ तमसावृता जालेनाभिहिता इव । सर्वाः संलुप्येतः कृत्याः पुनः कर्त्रे प्र हिण्मसि कृत्याकृतो वलगिनोऽभिनिष्कारिणः प्रजाम् । मृणीहि कृत्ये मोच्छिषोऽमून् कृत्याकृतो जहि यथा सूर्यो मुच्यते तमसस्परि रात्रिं जहात्युषसश्च केतून् । एवाहं सर्वं दुर्भूतं कर्त्रे कृत्याकृता कृतं हस्तीव रजो दुरितं जहामि	२० १६३५ २१ २२ २३ २४ २५ १६४० २६ २७ २८ २९ ३० १६४५ ३१ ३२

॥२४९॥ (अथर्व० २।१४।१-६)

चातनः । शालाग्निवैवत्यं ( दस्युनाशनम् ) । अनुद्दुप्, २ भुरिक्, ४ उपरिष्ठाद्विराद्बृहती ।

निःसालां धृष्णुं धिषणमेकवाद्यां जिघत्स्वम् ।

सर्वाश्चण्डस्य नप्त्यो नाशयामः सदान्वाः

३ १६४८

निर्वो गोष्ठादजामसि निरक्षाभिरुपानुसात् ।	
निर्वो मगुन्द्या दुहितरो गृहेभ्यश्चातयामहे	२
असौ यो अंधराद् गृहस्तत्र सन्त्वरान्यः ।	
तत्र सेदिन्यु च्यतु सर्वाश्च यातुधान्यः	३ १६५०
भूतपतिर्निरजत्विन्द्रश्चेतः सदान्वाः ।	
गृहस्य बुध्ना आसीनास्ता इन्द्रो वज्रेणाधि तिष्ठतु	४
यदि स्थ क्षेत्रियाणां यदि वा पुरुषेषिताः ।	
यदि स्थ दस्युभ्यो जाता नश्यतेतः सदान्वाः	५
परि धामान्यासामाशुर्गाष्ठांमिवासरन् ।	
अजैषं सर्वानाजीन्वो नश्यतेतः सदान्वाः	६ १६५३

पापादिनाशनम् । (१६५४-१९३०)

॥१५०॥ (अथर्व० १।१०।१-४)

अथर्वा । असुरो वरुणः ( पाश-विमोचनम् ) । त्रिष्टुप्, ३ ककुम्भत्यनुष्टुप्, ४ अनुष्टुप् ।	
अयं देवानामसुरो वि राजति वशा हि सत्या वरुणस्य राज्ञः ।	
ततस्परि ब्रह्मणा शाशदान उग्रस्य मन्योरुदिमं नयामि	१
नमस्ते राजन् वरुणास्तु मन्यवे विश्वं ह्यग्र निचिकेषि द्रुग्धम् ।	
सहस्रमन्यान् प्र सुवामि साकं शतं जीवाति शरदस्तवायम्	२ १६५५
यदुवकथानृतं जिह्वया वृजिनं बहु । राज्ञस्त्वा सत्यधर्मणो मुञ्चामि वरुणादुहम्	३
मुञ्चामि त्वा वैश्वानरार्दणवान्महतस्परि ।	
सजातानुग्रेहा वंद ब्रह्म चापं चिकीहि नः	४

॥२५१॥ (अथर्व० १।३१।१-४)

ब्रह्मा । आशापालाः, [ वास्तोष्पतिः ] ( पाशमोचनम् ) । अनुष्टुप्, ३ विराट् त्रिष्टुप्, ४ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् ।

आशानामाशापालेभ्यश्चतुभ्यो अमृतैभ्यः । इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् ।	
य आशानामाशापालाश्चत्वार स्थन देवाः ।	
ते नो निर्रेत्याः पार्श्वेभ्यो मुञ्चतांहसोअहसः	२
अस्त्रामस्त्वा हविषा यजाम्यश्लोणस्त्वा घृतेन जुहोमि ।	
य आशानामाशापालस्तुरीयो देवः स नः सुभूतमेह वक्षत्	३ १६६०



स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।  
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दशम सूर्यम्

४

॥२५२॥ (अथर्व० २।१०।१-८)

भृग्वङ्गिराः । १-८ द्यावापृथिवी, ब्रह्म; २ अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः; ३ वातः, दिशः; ४-८ वातपत्नीः, सूर्यः, यक्ष्मं, निर्ऋतिः ( पाशमोचनम् ) । १ त्रिष्टुप्; २ सप्तपदाऽष्टिः; ३-५, ७-८ सप्तपदा धृतिः; ६ सप्तपदाऽत्यष्टिः; ८ ( १-३ ) द्वौ पादौ उष्णिहौ ।

क्षेत्रियात् त्वा निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् १

शं ते अग्निः सहाङ्गिरंस्तु शं सोमः सहोषधीभिः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् । अना० । २

शं ते वातो अन्तरिक्षे वयो धाच्छं ते भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः । एवाहं० । अना० । ३

इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो वातपत्नीरभि सूर्यो विचष्टे । एवाहं० । अना० । ४ १६६५

तासु त्वान्तर्जरस्या दधामि प्र यक्ष्म एतु निर्ऋतिः पराचैः । एवाहं० । अना० । ५

अमुक्था यक्ष्माद् दुरितादवद्याद् द्रुहः पाशाद् ग्राह्याश्चोदमुक्थाः । एवाहं० । अना० । ६

अहा अरातिमविदः स्योनमप्यभूर्भद्रे सुकृतस्य लोके । एवाहं० । अना० । ७

सूर्यमृतं तमसो ग्राह्या अधि देवा मुञ्चन्तो असृजन्निरेणसः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रियान्निर्ऋत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ८

॥२५३॥ ( अथर्व० ६।१११।१-३ )

अथर्वा । अग्निः ( पाशमोचनम् ) । त्रिष्टुप् ।

मा ज्येष्ठं वधीदुयमग्न एषां मूलवर्हणात् परि पाह्येनम् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे १ १६७०

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् २

येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धोऽङ्गैरङ्ग आपित उत्सितश्च ।

वि ते मुच्यन्तां विमुचो हि सन्ति भ्रूणानि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व ३ १६७१

॥२५४॥ ( अथर्व० ६।११९।१-३ )

कौशिकः । वैश्वानरोऽग्निः [आनुष्यम्] ( पाशमोचनम् ) । त्रिष्टुप् ।

यददीव्यन्नृणमहं कृणोम्यदास्यन्नग्र उत संगृणामि ।

वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् १

वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्युणं संगरो देवतासु ।

स एतान् पाशान् विचृतं वेदु सर्वांनथ पक्केन सह सं भवेम २

वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संगरमभिधात्राम्याशाम् ।

अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि ३ १६७५

॥२५५॥ ( अथर्व० ७।८३।१-४ )

शुनःशेषः । वरुणः ( पाशमोचनम् ) । १ अनुष्टुप्, २ पथ्यादङ्क्तिः, ३ त्रिष्टुप्, ४ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

अप्सु ते राजन् वरुणगृहो हिरण्ययो मिथः ।

ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु १

धाम्नोधाम्नो राजन्नितो वरुण मुञ्च नः ।

यदापो अद्या इति वरुणेति यदूचिम ततो वरुण मुञ्च नः २

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय ।

अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ३

प्रासत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उत्तमा अधमा वारुणा ये ।

दुष्वप्यन्यं दुरितं नि ध्वास्मदर्थं गच्छेम सुकृतस्य लोकम् ४

॥२५६॥ ( अथर्व० ७।७८।१-२ )

अथर्वा । अग्निः ( वन्धमोचनम् ) । १ परोष्णिक्, २ त्रिष्टुप् ।

वि ते मुञ्चामि रशनां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमजस्र एध्यमे १ १६८०

अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनजिम त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।

दीदिहोऽस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दा देवतासु २

॥२५७॥ ( अथर्व० ६।२५।१-३ )

शुनःशेषः । मन्याविनाशनम् । अनुष्टुप् ।

पञ्च च याः पञ्चाशच्च संयन्ति मन्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव १

सप्त च याः सप्ततिश्च संयन्ति प्रैव्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव २ १६८३

नव च या नवतिश्च संयन्ति स्कन्ध्या अभि ।

इतस्ताः सर्वा नश्यन्तु वाका अपचितामिव

३

॥२५८॥ ( अथर्व० ४।२३।१-७ )

मृगारः । प्रचेता अग्निः ( पाप-मोचनम् ) । त्रिष्टुप्, ३ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, ४ अनुष्टुप्, ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसुः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्घते ।

विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः

१ १६८५

यथा ह्वयं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन् ।

एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः

२

यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभगम् ।

अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः

३

सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विशुम् । हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः

४

येन ऋषयो बलमघोतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः ।

येनाग्निना पृणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः

५

येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।

येन देवाः स्वपूराभरन्त्स नो मुञ्चत्वंहसः

६ १६९०

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यजातं जनितव्यं च केवलम् ।

स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः

७

॥२५९॥ ( अथर्व० ४।२४।१-७ )

मृगारः । इन्द्रः ( पापमोचनम् ) । त्रिष्टुप्, १ शाकरीगर्भा पुरःशकरी ।

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उप मेम आगुः ।

यो दाशुषः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः

१

य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययुर्यो दानवानां बलमारुरोज ।

येन जिताः सिन्धवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः

२

यश्र्षणिप्रो वृषभः स्वविद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।

यस्याध्वरः सप्तहोता मदिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः

३

यस्य वशासं ऋषभासं उक्षणो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वविदे ।

यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः

४

यस्य जुष्टिं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इष्टुमन्तं गविष्टौ ।

यसिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः

५ १६९६

यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।

येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहसः

६

यः संग्रामाभ्यति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति द्रयानि ।

स्तौमीन्द्रं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः

७

॥२६०॥ ( अथर्व० ४।२५।१-७ )

मृगारः । सविता, वायुः ( पापमोचनम् ) । त्रिष्टुप्, ३ अतिशकरी, ७ पथ्यावृहता ।

वायोः सवितुर्विदथानि मन्महे यावात्मन्वद् विशथो यौ च रक्षथः ।

यौ विश्वस्य परिभू बभूवथुस्तौ नो मुञ्चतमंहसः

१

ययोः संख्याता वरिमा पार्थिवानि याभ्यां रजो युपितमन्तरिक्षे ।

ययोः प्रायं नान्वानशे कश्चन तौ नो मुञ्चतमंहसः

२ १७००

तर्षं व्रते नि विशन्ते जनासस्त्वयुदिते प्रेरते चित्रभानो ।

युवं वायो सविता च भुव्नानि रक्षथस्तौ नो मुञ्चतमंहसः

३

अपेतो वातो सविता च दुष्कृतमप रक्षांसि शिभिदां च सेधतम् ।

सं ह्युर्जया सृजथः सं बलैर्न तौ नो मुञ्चतमंहसः

४

रयिं मे पोषं सवितोत वायुस्तनू दक्षमा सुवतां सुशेवम् ।

अयक्ष्मतातिं मह इह धत्तं तौ नो मुञ्चतमंहसः

५

प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये महस्वन्तं मत्सरं मादयाथः ।

अर्वाग् वामस्य प्रवतो नि यच्छतं तौ नो मुञ्चतमंहसः

६

उप श्रेष्ठा न आशिषो देवयोर्धामन्नस्थिरन् ।

स्तौमि देवं सवितारं च वायुं तौ नो मुञ्चतमंहसः

७ १७०५

॥२६१॥ ( अथर्व० ४।२६।१-७ )

मृगारः । द्यावापृथिवी ( पापमोचनम् ) । त्रिष्टुप्, १ अष्टिः, २-३ जगती,

७ शाकरगभातिमध्येज्योतिः ।

मन्वे वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ सचेतसौ ये अप्रथेथामर्मिता योजनानि ।

प्रतिष्ठे ह्यभवंतं वधनां ते नो मुञ्चतमंहसः

१

प्रतिष्ठे ह्यभवंतं वधनां प्रवृद्धे देवी सुभगे उरूची ।

द्यावापृथिवी भवंतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः

२

असंतापे सुतपसौ हुवेऽहमुर्वी गम्भीरे क्विभिर्नमस्ये । द्यावापृथिवी० ।

३ १७०८

दे० [ आयुर्वेद० ] १७

ये अमृतं विभृथो ये हवींषि ये स्रोत्या विभृथो ये मनुष्यानि । द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः	४
ये उस्त्रिया विभृथो ये वनस्पतीन् ययोर्वा विश्वा भुवनान्यन्तः । द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः	५ १७२०
ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन याभ्यामृते न किं चन शक्नुवन्ति । द्यावापृथिवी भवतं मे स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः	६
यन्मेदमभिशोचति येनयेन वा कृतं पौरुषेयान्न दैवात् । स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः	७

॥२६२॥ ( अथर्व० ४।२७।१-७ ) [ पापमोचनम् ] । x

॥२६३॥ ( अथर्व० ४।२८।१-७ )

मृगारोऽथर्वा वा । भवाशर्वो रुद्रो वा ( पापमोचनम् ) । त्रिण्डुप्, १ अतिजागतगर्भा भुरिक् । भवाशर्वो मन्वे वां तस्य वित्तं ययोर्वामिदं प्रदिशि यद् विरोचते । यावस्येशथे द्विपद्मो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः	१
ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे चिद् यौ विदिताविषुभृतामसिष्ठौ । यावस्येशथे० ।	२
सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवेऽहं दूरेगव्यूती स्तुवन्नेम्युग्रौ । यावस्येशथे० ।	३ १७१५
यावारेभार्थे बहु साकमग्रे प्र चेदस्राष्टमभिभां जनेषु । यावस्येशथे० ।	४
ययोर्विधान्नापपद्यते कश्चनान्तदेवेषूत मानुषेषु । यावस्येशथे० ।	५
यः कृत्याकृन्मूलकृद् यातुधानो नि तस्मिन् धत्तं वज्रमुग्रौ । यावस्येशथे० ।	६
अधि नो ब्रूतं पृतनाघ्रौ सं वज्रेण सृजतं यः किमीदी । स्तौमि भवाशर्वो नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः	७

॥२६४॥ ( अथर्व० ४।२९।१-७ )

मृगारः । मित्रावरुणो ( पापमोचनम् ) । त्रिण्डुप्, ७ शकरीगर्भाऽतिजगती । मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ सचेतसौ द्रुहणो यौ नुदथे । प्र सत्यावानमवथो भरेषु तौ नो मुञ्चतमंहसः	१
सचेतसौ द्रुहणो यौ नुदथे प्र सत्यावानमवथो भरेषु । यौ गच्छथो नृचक्षसौ बभ्रुणा सुतं तौ नो मुञ्चतमंहसः	२ १७२१

यावङ्गिरसमवथो यावगस्ति मित्रावरुणा जमदग्निमत्रिम् ।

यौ कश्यपमवथो यौ वसिष्ठं तौ नो मुञ्चतमंहसः ३

यौ श्यावाश्वमवथो वध्यश्वं मित्रावरुणा पुरुभीटमत्रिम् ।

यौ विमदमवथः सप्तवधिं तौ नो मुञ्चतमंहसः ४

यौ भरद्वाजमवथो यौ गविष्ठिरं विश्वामित्रं वरुण मित्र कुत्सम् ।

यौ कक्षीवन्तमवथः प्रोत कण्वं तौ नो मुञ्चतमंहसः ५

यौ मेधातिथिमवथो यौ त्रिशोकं मित्रावरुणावुशनां काव्यं यौ ।

यौ गोतममवथः प्रोत मुद्गलं तौ नो मुञ्चतमंहसः ६ १७२५

ययो रथः सत्यवर्त्मर्जुरश्मिर्मिथुया चरन्तमभियातिं दूपयन् ।

स्तौमि मित्रावरुणौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः ७

॥२६५॥ ( अथर्व० ६।११५।१-३ )

ब्रह्मा । विश्वे देवाः ( पापमोचनम् ) । अनुष्टुप् ।

यद् विद्वांसो यदविद्वांस एनांसि चकृमा वयम् ।

यूयं नस्तस्मान्मुञ्चत विश्वे देवाः सजोषसः १

यदि जाग्रद् यदि स्वप्नेन एनस्योऽकरम् ।

भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम् २

द्रुपदादिव मुमुक्षानः स्विन्नः स्नात्वा मलादिव ।

पूतं पवित्रेणैवाज्यं विश्वे शुम्भन्तु मैनसः ३

॥२६६॥ ( अथर्व० ७।४२।१-२ ) +

प्रस्कण्वः । सोमारुद्रौ ( पापमोचनम् ) । त्रिष्टुप् ।

सोमारुद्रा वि बृहतं विष्चीममीवा या नो गर्यमाविवेश ।

बाधेथां दूरं निर्कृतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुक्तमस्मत् १ १७३०

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मद् विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।

अवं स्यतं मुञ्चतं यन्नो असत् तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत् २

॥२६७॥ ( अथर्व० ७।६४।१-२ )

यमः । आपः, अग्निः, निर्कृतिः ( पापमोचनम् ) । १ अरिगनुष्टुप्, २ न्यङ्कुसारिणी बृहती ।

इदं यत् कृष्णः शुकुनिरभिनिष्पतन्नपीपतत् ।

आपो मा तस्मात् सर्वस्माद् दुरितात् पान्त्वंहसः १ १७३२

इदं यत् कृष्णः शकुनिरवामृक्षभिर्ऋते ते मुखेन ।

अभिर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्यः प्र मुञ्चतु

२

॥२६८॥ ( अथर्व० ११।६।१-२३ )

शन्तातिः । चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताः ( पापमोचनम् ) । अनुष्टुप्; २३ बृहतीगर्भा ।

अग्निं ब्रूमो वनस्पतीनोषधीरुत वीरुधः ।

इन्द्रं बृहस्पतिं सूर्यं ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१

ब्रूमो राजानं वरुणं मित्रं विष्णुमथो भर्गम् ।

अंशं विवस्वन्तं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

२ १७३५

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम् । त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

३

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।

अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

४

अहोरात्रे इदं ब्रूमः सूर्याचन्द्रमसावुभा ।

विश्वानादित्यान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

५

वातं ब्रूमः पर्जन्यमन्तरिक्षमथो दिशः । आशाश्च सर्वा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

६

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादहोरात्रे अथो उषाः ।

सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति

७ १७४०

पार्थिवा दिव्याः पशवं आरण्या उत ये मृगाः ।

शकुन्तान् पक्षिणो ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

८

भवाशर्वाविदं ब्रूमो रुद्रं पशुपतिंश्च यः ।

इषूर्या एषां संविद्य ता नः सन्तु सदा शिवाः

९

दिवे ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।

समुद्रा नद्यो विशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१०

सप्तर्षान् वा इदं ब्रूमोऽपो देवीः प्रजापतिम् ।

११

पितृन् यमश्रेष्ठान् ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये । पृथिव्यां शक्रा ये श्रितास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१२ १७४५

आदित्या रुद्रा वसवो दिवि देवा अथर्वाणः ।

अङ्गिरसो मनीषिणस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१३

यज्ञं ब्रूमो यजमानमृचः सामानि भेषजा । यजूषि होत्रा ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१४ १७४७

पञ्च राज्यानि वीरुधां सोमश्रेष्ठानि ब्रूमः ।	
दुर्भो भङ्गो यवः सहस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः	१५
अरायान् ब्रूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजनान् पितृन् ।	
मृत्यूनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः	१६
ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।	
समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः	१७ १७५०
एतं देवा दक्षिणतः पश्चात् प्राञ्च उदेत ।	
पुरस्तादुत्तराच्छक्रा विश्वे देवाः समेत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः	१८
विश्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतवृधः ।	
विश्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः	१९
सर्वान् देवानिदं ब्रूमः सत्यसंधानृतवृधः ।	
सर्वाभिः पत्नीभिः सह ते नो मुञ्चन्त्वंहसः	२०
भूतं ब्रूमो भूतपतिं भूतानामुत यो वशी ।	
भूतानि सर्वा संगत्य ते नो मुञ्चन्त्वंहसः	२१
या देवाः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः ।	
संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः	२२ १७५५
यन्मातली रथक्रीतममृतं वेदं भेषजम् ।	
तदिन्द्रो अप्सु प्रावेशयत् तदापो दत्त भेषजम्	२३

॥२६९॥ ( अथर्व० ४।३३।१-८; ऋ० १।९७।१-८; अग्निः १८८७-९४ )

ब्रह्मा । पाप्मनाशनोऽग्निः ( पाप-नाशनम् ) । गायत्री ।

अपं नः शोशुचदुधमग्ने शुशुग्ध्या रयिम् । अपं नः शोशुचदुधम्	१
सुक्षेत्रिया सुगातुया वंसूया च यजामहे । अपं नः शोशुचदुधम्	२
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां प्रासाकासश्च सूरयः । अपं नः शोशुचदुधम्	३
प्र यत् ते अग्ने सूरयो जायेमहि प्र ते वयम् । अपं नः शोशुचदुधम्	४ १७६०
प्र यदग्नेः सहस्वतो विश्वतो यन्ति भानवः । अपं नः शोशुचदुधम्	५
त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि । अपं नः शोशुचदुधम्	६
द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय । अपं नः शोशुचदुधम्	७
स नः सिन्धुमिव नावार्ति पर्वा स्वस्तये । अपं नः शोशुचदुधम्	८ १७६४



॥२७०॥ ( अथर्व० ६।११३।१-३ )

अथर्वा । पूषा ( पापनाशनम् ) । त्रिष्टुप्, ३ पङ्क्तिः ।

त्रिते देवा अमृजतैतदेनस्त्रित एनन्मनुष्येषु ममृजे ।

ततो यदि त्वा ग्राहिरानुशे तां तै देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु १ १७६५

मरीचीर्धूमान् प्र विशानुं पाप्मन्नुदारान् गच्छोत वा नीहारान् ।

नदीनां फनां अनु तान् वि नश्य भ्रूणानि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व २

द्वादशधा निहितं त्रितस्यापमृष्टं मनुष्यैरसानि ।

ततो यदि त्वा ग्राहिरानुशे तां तै देवा ब्रह्मणा नाशयन्तु ३

॥२७१॥ ( अथर्व० ७।११२।१-२ )

वरुणः । आपः, वरुणश्च ( पापनाशनम् ) । १ भुरिक्, २ अनुष्टुप् ।

शुम्भनी द्यावापृथिवी अन्तिसुम्ने महिर्व्रते ।

आपः सप्त सुसुवुर्देवीस्ता नो मुञ्चन्त्वंहंसः १

मुञ्चन्तु मा शपथ्याइदथो वरुण्यादितु ।

अथो यमस्य पद्मीशाद् विश्वस्माद् देवकिल्बिषात् २

॥२७२॥ ( अथर्व० ७।११५।१-४ ) [ पापलक्षणनाशनम् ] :

॥२७३॥ ( अथर्व० ६।२६।१-३ )

ब्रह्मा । पाप्मा ( पाप्मनाशनम् ) । अनुष्टुप् ।

अवं मा पाप्मन्सृज वशी सन् मृडयासि नः ।

आ मा भद्रस्य लोके पाप्मन् धेह्यविहुतम् १ १७७०

यो नः पाप्मन् न जहासि तमुं त्वा जहिमो वयम् ।

पथामनु व्यावर्तनेऽन्यं पाप्मानु पद्यताम् २

अन्यत्रास्मन्न्यु च्यितु सहस्राक्षो अमर्त्यः ।

यं द्वेषाम तमृच्छतु यमुं द्विष्मस्तमिज्जहि ३

॥२७४॥ ( अथर्व० ६।३७।१-३ )

अथर्वा । ( स्वस्त्ययनकामः ) । चन्द्रमाः ( शापनाशनम् ) । अनुष्टुप् ।

उप प्रागात् सहस्राक्षो युक्त्वा शपथो रथम् ।

शुसारमन्विच्छन् मम वृक इवाविमतो गृहम् १

परिणो वृङ्ग्धि शपथ हृदमगिरिवा दहेन् ।

शुसारमत्रं नो जहि दिवो वृक्षमिवाशानिः २ १७७४

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।

शुने पेष्ट्रमिवात्रक्षामं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे

३ १७७५

॥१७५॥ ( अथर्व० ७।५९।१ )

बादरायणिः । अरिनाशनम् ( शाप-मोचनम् ) । अनुष्टुप् ।

यो नः शपादशपतः शपतो यश्च नः शपात् ।

वृक्ष इव विद्युता हत आ मूलादनु शुष्यतु

१

॥१७६॥ ( अथर्व० ५।७।१-१० )

अथर्वा । बहुदैवत्यम्; १-३, ६-१० अरातयः; ४-५ सरस्वती ( अरातिनाशनम् ) । अनुष्टुप्; १ विराङ्गर्भा प्रस्तारपङ्क्तिः; ४ पथ्याबृहती; ६ प्रस्तारपङ्क्तिः ।

आ नो भर मा परिं ष्टा अराते मा नो रक्षीर्दक्षिणां नीयमानाम् ।

नमो वीत्साया असमृद्धये नमो अस्त्वरातये

१

यमराते पुरोधत्से पुरुषं परिरापिणम् ।

नमस्ते तस्मै कृण्मो मा वनि व्यथयीर्मम

२

प्र णो वनिर्देवकृता दिवा नक्तं च कल्पताम् ।

अरातिमनुप्रेमो वयं नमो अस्त्वरातये

३

सरस्वतीमनुमतिं भगं यन्तो हवामहे ।

वाचं जुष्टां मधुमतीमवादिषं देवानां देवहृतिषु

४ १७८०

यं याचाम्यहं वाचा सरस्वत्या मनोयुजा ।

श्रद्धा तमद्य विन्दतु दुत्ता सोमेन बभ्रुणां

५

मा वनिं मा वाचं नो वीत्सीरुभाविन्द्राग्नी आ भरतां नो वसूनि ।

सर्वे नो अद्य दित्सन्तोऽरातिं प्रतिं हर्यत

६

पुरोऽपेह्यसमृद्धे वि ते हेतिं नयामसि ।

वेदं त्वाहं निमीवन्तीं नितुदन्तीमराते

७

उत नग्ना बोभ्रुवती स्वप्नया संचसे जनम् ।

अराते चित्तं वीत्सन्त्याकूतिं पुरुषस्य च

८

या महती महोन्माना विश्वा आशा व्यानशे ।

तस्यै हिरण्यकेश्यै निर्ऋत्या अकरं नमः

९

हिरण्यवर्णा सुभगा हिरण्यकशिपुर्मही ।

तस्यै हिरण्यद्रापयेऽरात्या अकरं नमः

१० १७८६

॥२७७॥ ( अथर्व० ६।५१।१-३ )

शन्तातिः । आपः, ३ वरुणः ( एनोनाशनम् ) । १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा १  
 आपो अस्मान् मातरः सृदयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।  
 विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि २  
 यत् किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याङ्गुश्वरन्ति ।  
 आर्चिस्या चेत् तव धर्मा युगोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ४

॥२७८॥ ( अथर्व० ६।८४।१-४ )

भगः । निर्ऋतिः ( निर्ऋतिमोचनम् ) । १ भुरिजगतीः, २ त्रिपदार्षी बृहतीः, ३ जगतीः

४ भुरिक् त्रिष्टुप् ( जगती ) ।

यस्यास्त आसनि घोरे जुहोम्येषां बद्धानामवसर्जनाय कम् ।  
 भूमिरिति त्वाभिप्रमन्वते जना निर्ऋतिरिति त्वाहं परि वेद सर्वतः १ १७९०  
 भूते हविष्मती भवैष ते भागो यो अस्मासु । मुञ्चेमानमूनेनसः स्वाहा २  
 एवो ष्वऽस्मन्निर्रतेऽनेहा त्वमयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।  
 यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ३  
 अयस्मये द्रुपदे वैधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।  
 यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ४

॥२७९॥ ( अथर्व० ६।११४।१-३ )

ब्रह्मा । विश्वे देवाः ( उन्मोचनम् ) । अनुष्टुप् ।

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चक्रमा वयम् । आदित्यास्तस्मान्नो यूयमृतस्युतेन मुञ्चत १  
 ऋतस्यतेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः ।

यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेक्मि २ १७९५  
 मेदस्वता यजमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः ।  
 अक्रामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेक्मि ३

॥२८०॥ ( अथर्व० ७।६३।१ ) [ दुरितनाशनम् ] ×

॥२८१॥ ( अथर्व० ३।९।१-६ )

वामदेवः । द्यावापृथिवी, देवाः ( दुःखनाशनम् ) । अनुष्टुप्, ४ चतुष्पदा निष्टुद्बृहती, ६ भुरिक्

कृशफस्य विशफस्य द्यौः पिता पृथिवी माता ।

यथाभिचक्र देवास्तथाप कृणुता पुनः १ १७९७

अश्रेष्माणो अधारयन् तथा तन्मनुना कृतम् ।	
कृणोमि वधि विष्कन्धं मुष्कावृहो गवामिव	२
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं तदा वध्नन्ति वेधसः ।	
श्रवस्युं शुष्मं कावचं वधि कृण्वन्तु चन्धुरः	३
येनां श्रवस्यवश्वरथ देवा इवासुरमायया ।	
शुनां कपिरिव दूषणो बन्धुग कावचस्य च	४ १८००
दुष्टयै हि त्वा भत्स्यामि दूषयिष्यामि कावचम् ।	
उदाशवो रथा इव शपथेभिः सरिष्यथ	५
एकशतं विष्कन्धानि विष्टिता पृथिवीमनु ।	
तेषां त्वामग्र उज्जरुर्मणिं विष्कन्धदूषणम्	६

॥२८२॥ ( अथर्व० १६।१।१-१३ ) [प्रथमः पर्यायः। ]

अथर्वा । प्रजापतिः ( दुःखमोचनम् ) । १,३ द्विपदा सास्त्री बृहती; २,१० याजुषी त्रिष्टुप्; ४ आसुरी गायत्री; ५,८ सास्त्री पङ्क्तिः ( ५ द्विपदा ); ६ सास्त्री अनुष्टुप्; ७ निचृद् विराड् गायत्री; ९ आसुरी पङ्क्तिः; ११ साम्युष्णिक्; १२-१३ आर्च्यनुष्टुप् ।

अतिसृष्टो अपां वृषभोऽतिसृष्टा अग्रयो दिव्याः	१
रुजन् परिरुजन् मृणन् प्रमृणन्	२
म्रोको मनोहा खनो निर्दाह आत्मदूषिस्तनूदूषिः	३ १८०५
इदं तमति सृजामि तं माभ्यवनिक्षि	४
तेन तमभ्यतिसृजामो योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः	५
अपामग्रमसि समुद्रं वोऽभ्यवसृजामि	६
योऽहंस्वश्रिमिरति तं सृजामि म्रोकं खनि तनूदूषिम्	७
यो व आपोऽग्निराविवेश स एष यद् वो घोरां तदेतत्	८ १८१०
इन्द्रस्य व इन्द्रियेणाभि विञ्चेत्	९
अरिप्रा आपो अप रिप्रमस्मत्	१०
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र दुष्वप्ये वहन्तु	११
शिवेन मा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोप स्पृशत त्वचं मे	१२
शिवानग्नीनप्सुषदो हवामहे मयि क्षत्रं वर्च आ धत्त देवीः	१३ १८१५

दै० [ आयुर्वेद० ] १८

॥२८३॥ ( अथर्व० १६।२।१-६ ) [ द्वितीयः पर्यायः । ]

अथर्वा । वाक् १ आसुर्यनुष्टुप्; २ आसुर्युष्णिक्; ३ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदा सास्त्री बृहती;  
५ आर्च्यनुष्टुप्; ६ निचृद् विराङ्गायत्री ।

निर्दुरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक् .	१
मधुमती स्थ मधुमती वाचमुदेयम्	२
उपहूतो मे गोपा उपहूतो गोपीथः	३
सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ भद्रं श्लोकं श्रूयासम्	४
सुश्रुतिश्च मोषश्रुतिश्च मा हासिष्टां सौपर्णं चक्षुरजस्रं ज्योतिः	५ १८२०
ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु देवाय प्रस्तराय	६

॥२८४॥ ( अथर्व० १६।३।१-६ ) [ तृतीयः पर्यायः । ]

ब्रह्मा । आदित्यः । १ आसुरी गायत्री; २-३ आर्च्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप्; ५ साम्न्युष्णिक्;  
६ त्रिपदा सास्त्री त्रिष्टुप् ।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्	१
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्टाम्	२
उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्टां घर्ता च मा धुरुणश्च मा हासिष्टाम्	३
विमोकश्च मार्द्रपविश्च मा हासिष्टामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्टाम्	४ १८२५
बृहस्पतिर्म आत्मा नृमणा नाम हृद्यः	५
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा	६

॥२८५॥ ( अथर्व० १६।४।१-७ ) [ चतुर्थः पर्यायः । ]

ब्रह्मा । आदित्यः । १,३ साम्न्यनुष्टुप्; २ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्;  
५ आसुरी गायत्री; ६ आर्च्युष्णिक्; ७ त्रिपदा विराङ्गार्भाऽनुष्टुप् ।

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम्	१
स्वासदसि सुषा अमृतो मर्त्येष्व	२
मा मां प्राणो हामीन्मो अपानोऽवहाय परा गात्	३ १८३०
सूर्यो माहः पान्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः	४
प्राणापानौ मा मा हासिष्टं मा जने प्र मौष	५
स्वस्त्यं घोषसौ घोषसश्च सर्वे आपः सर्वेगणो अशीय	६
शर्करा स्थ पशवो मोषं स्थेषुमित्रावरुणौ मे प्राणापानान्नाग्निमे दक्षं दधातु	७ १८३४

॥२८६॥ ( अथर्व० १६।५।१-१० ) [पञ्चमः पर्यायः।]

यमः । ×दुःस्वप्ननाशनम् । १-६ (प्रथमा) विराड् गायत्री [ ५ (प्रथमा) भुरिक, ६ (प्रथमा) स्वराद् ];  
१-६ ( द्वितीया ) प्राजापत्या गायत्री; १-६ (तृतीया) द्विपदा साम्नी बृहती ।

विद्य तै स्वप्न जनित्रं ग्राह्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥	१	१८३५
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ॥२॥	२	
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्य स नः स्वप्न दुष्वप्यात् पाहि ॥३॥	३	
विद्य तै स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तं०।२ तं०।३	४	
विद्य तै स्वप्न जनित्रमभृत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तं०।२ तं०।३	५	
विद्य तै स्वप्न जनित्रं निर्भृत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तं०।२ तं०।३	६	१८४०
विद्य तै स्वप्न जनित्रं पराभृत्याः पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥ अन्तं०।२ तं०।३	७	
विद्य तै स्वप्न जनित्रं देवजामीनां पुत्रोऽसि यमस्य करणः ॥१॥	८	
अन्तकोऽसि मृत्युरसि ॥२॥	९	
तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्य स नः स्वप्न दुष्वप्यात् पाहि ॥३॥	१०	

॥२८७॥ ( अथर्व० १६।६।१-११ ) [षष्ठः पर्यायः ।]

यमः । दुःस्वप्ननाशनं, उषा । १-४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्; ५ साम्ना पङ्क्तिः; ६ निचृदापि बृहती;  
७ द्विपदा साम्नी बृहती; ८ आसुरी जगती; ९ आसुरी बृहती; १० आच्युष्णिक्;  
११ त्रिपदा यवमध्या गायत्री वा आच्यनुष्टुप् ।

अजैष्माद्यासनापाद्याभूमानागसो वयम्	१	१८४५
उषो यस्माद् दुष्वप्यादभैष्माप तदुच्छतु	२	
द्विषते तत् परा वह शपते तत् परा वह	३	
यं द्विष्मो यच्च नो द्वेष्टि तस्मा एनद् गमयामः	४	
उषा देवी वाचा संविदाना वाग् देव्युषसां संविदाना	५	
उषस्पतिर्वाचस्पतिना संविदानो वाचस्पतिरुषस्पतिना संविदानः	६	१८५०
नेर्मुष्मै परा वहन्त्वायान् दुर्णाम्नः सदान्ताः	७	
कुम्भीका दूषीकाः पीयकान्	८	
जाग्रदुष्वप्यं स्वप्नेदुष्वप्यम्	९	
अनागमिष्यतो वरानवित्तेः संकल्पानमुष्या द्रुहः पाशान्	१०	
तदमुष्मा अमे देवाः परा वहन्तु वधिर्यथासद् विथुरो न माधुः	११	१८५५

॥२८८॥ ( अथर्व० १६।७.१-१३ ) [ सप्तमः पर्यायः । ]

यमः । दुःस्वप्ननाशनं, उषा । १ पङ्क्तिः; २ साम्यनुष्टुप्; ३ आसुर्युष्णिक्; ४ प्राजापत्या गायत्री; ५ आर्च्युष्णिक्; ६,९,११ सास्त्री बृहती, ७ याजुषी गायत्री; ८ प्राजापत्या बृहती; १० सास्त्री गायत्री; १२ भुरिक् प्राजापत्यानुष्टुप्; १३ आसुरी त्रिष्टुप् ।

तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं विध्यामि निर्भूत्यैनं विध्यामि

पराभूत्यैनं विध्यामि ग्राह्यैनं विध्यामि तमसैनं विध्यामि	१
देवानामेनं घोरैः क्रूरैः प्रैरैरभिप्रेष्यामि	२
वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोरपि दधामि ॥३॥ एवानेवाव सा गरत्	४
योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा द्वेष्टु यं वयं द्विष्मः स आत्मानं द्वेष्टु	५ १८६०
निद्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या निरन्तरिक्षाद् भजाम ॥६॥ सुयामंश्चाक्षुष	७
इदमहमागुष्यायणेऽगुष्याः पुत्रे दुष्वप्ययं मृजे	८
यदुदोअदो अभ्यगच्छन् यद् दोषा यत् पूर्वा रात्रिम्	९
यज्याग्द यत् सुप्तो यद् दिवा यन्नक्तम्	१० १८६५
यदहरहरभिगच्छामि तस्मादेनमव दये	११
तं जहि तेन मन्दस्र तस्य पृष्टीरपि शृणीहि	१२
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु	१३

॥२८९॥ ( अथर्व० १६।८।१-२७ ) [ अष्टमः पर्यायः । ]

यमः । दुःस्वप्ननाशनम् । १-२७ ( प्रथमा ) एकपदा यजुर्ब्राह्मयनुष्टुप्; १-२७ ( द्वितीया ) डिपदा निचृद्गायत्री; १ ( तृतीया ) प्राजापत्या गायत्री; १-२७ ( चतुर्थी ) त्रिपदा प्राजापत्या त्रिष्टुप्; २-४,९,१७, १९,२४ ( तृतीया ) आसुरी जगती; ५,७-८,१०-११,१३ १८ ( तृतीया ) आसुरी त्रिष्टुप्; ६,१२, १४-१६,२०-२३,२७ ( तृतीया ) आसुरी पङ्क्तिः; २५-२६ ( तृतीया ) आसुरी बृहती ।

जितमम्माकृमुद्भिन्नमस्माकंमृतमस्माकं तेजाऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं

यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१॥	१
तस्मादमुं निर्भजामोऽमुमागुष्यायणमगुष्याः पुत्रमसौ यः ॥२॥	२ १८७०
स ग्राह्याः पाशान्मा मौचि ॥३॥	३
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वैष्टयाभीदमैनमधराश्रं पादयामि ॥४॥	१ । ४
जितम० । स निर्भेत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥१-४॥	२ । ५
जितम० । सोऽभूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥१-४॥	३ । ६
जितम० । स निर्भेत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं० ॥१-४॥	४ । ७ १८७५

जितम० । स पराभूत्याः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	५ ।	८	
जितम० । स देवजामीनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	६ ।	९	
जितम० । स बृहस्पतेः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	७ ।	१०	
जितम० । स प्रजापतेः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	८ ।	११	
जितम० । स ऋषीणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	९ ।	१२	१८८०
जितम० । स आर्षेयाणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१० ।	१३	
जितम० । सोऽङ्गिरसां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	११ ।	१४	
जितम० । स आङ्गिरसानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१२ ।	१५	
जितम० । सोऽथर्वणां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१३ ।	१६	
जितम० । स आथर्वणानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१४ ।	१७	१८८५
जितम० । स वनस्पतीनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१५ ।	१८	
जितम० । स वानस्पत्यानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१६ ।	१९	
जितम० । स ऋतूनां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१७ ।	२०	
जितम० । स आर्तवानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१८ ।	२१	
जितम० । स मासानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	१९ ।	२२	१८९०
जितम० । सोऽर्धमासानां पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२० ।	२३	
जितम० । सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२१ ।	२४	
जितम० । सोऽह्नोः संप्रतोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२२ ।	२५	
जितम० । स द्यावापृथिव्योः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२३ ।	२६	
जितम० । स इन्द्राग्नयोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२४ ।	२७	१८९५
जितम० । स मित्रावरुणयोः पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२५ ।	२८	
जितम० । स राज्ञो वरुणस्य पाशान्मा मौचि । तस्येदं०	॥१-४॥	२६ ।	२९	
जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरिस्माकं				
यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम् ॥१॥				३०
तस्मादमुं निर्भेजामोऽमुर्मांमुष्यायणमुष्याः पुत्रमसौ यः ॥२॥				३१
स मृत्योः पञ्चीशात् पाशान्मा मौचि ॥३॥				३२
तस्येदं वर्चस्तेजः प्राणमायुर्नि वैष्टयाम्दिमेनमधुराश्च पादयामि ॥४॥		२७ ।	३३	१९०१



॥२९०॥ ( अथर्व० १६।९।१-४ ) [ नवमः पर्यायः । ]

यमः । १ प्रजापतिः; २ अग्निः, सोमः, पूषा; ३-४ सूर्यः । १ प्राजापत्या अर्च्यनुष्टुप्; २ आर्च्युष्णिक्;  
३ साक्षी पङ्क्तिः; ४ परोष्णिक् ।

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमभ्युष्टिं विश्वाः पृतना अरातीः १  
तदुगिराह तदु सोम आह पूषा मा धात् सुकृतस्य लोके २  
अगन्म स्वः१ः स्वरिगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म ३  
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो वसु वंशिषीय वसुमान् भूयासं वसु मयि धेहि ४ १९०५

॥२९१॥ ( अथर्व० ७।२३।१ )

यमः । दुःष्वप्नाशनम् । अनुष्टुप् ।

दौष्वप्यं दौर्जावित्यं रक्षो अभ्रमरायः ।  
दुर्णाम्नीः सर्वा दुर्वाचस्ता असन्नाशयामसि १

॥२९२॥ ( अथर्व० १९।५६।१-६ )

यमः । दुःष्वप्नाशनम् । त्रिष्टुप् ।

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः ।  
एकाकिना सुरथं यासि विद्वान्स्वभ्रं मिमानो असुरस्य योनौ १  
बन्धस्त्वार्धे विश्वर्चया अपश्यत् पुरा रात्र्या जनिंतोरेके अहिं ।  
ततः स्वप्नेदमध्या बभूविथ भिषग्भ्यो रूपमपगूहमानः २  
बृहद्वावासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन् ।  
तस्मै स्वप्नाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशसः स्वरानशानाः ३  
नैतां विदुः पितरो नोत देवा येषां जल्पिश्चरंत्यन्तरेदम् ।  
त्रिते स्वप्नमदधुराप्त्ये नर आदित्यासो वरुणेनानुशिष्टाः ४ १९१०  
यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतोऽस्वप्नेन सुकृतः पुण्यमार्युः ।  
स्वर्गमदासि परमेण बन्धुना तप्यमानस्य मनसोऽधि जज्ञिषे ५  
विद्य ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद् विद्य स्वप्न यो अधिपा इहा ते ।  
यशस्विनो नो यशसेह पाद्भाराद् द्विषेभिरप याहि दूरम् ६

॥२९३॥ ( अथर्व० १९।५७।१-५ )

यमः । दुःष्वप्नाशनम् । १ अनुष्टुप्; २-३ त्रिष्टुप् (व्यवसाना); ४ षट्पदा उष्णिग्बृहती; गर्भा विराद् शकरी;  
५ व्यवसाना पञ्चपदा परशाकरातिजगती ।

यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयन्ति ।

एवा दुष्वप्यं सर्वमधिये सं नयामसि

१ १९१३

सं राजानो अगुः समृणान्यगुः सं कुष्ठा अगुः सं कला अगुः ।

समस्मासु यद् दुष्वप्यं निर्विषते दुष्वप्यं सुवाम २

देवानां पत्नीनां गर्भं यमस्य कर यो भद्रः स्वप्न ।

स मम यः पापस्तद् द्विषते प्र हिणमः । मा तृष्टानामसि कृष्णशकुनेर्मुखम् ३ १९१५

तं त्वां स्वप्न तथा सं विद्म स त्वं स्वप्नाश्च इव कायमश्च इव नीनाहम् ।

अनाम्नाकं देवपीयुं पियारुं वपु यदुस्मासु दुष्वप्यं यद् गोषु यच्च नो गृहे ४

अनाम्नाकस्तद् देवपीयुः पियारुर्निष्कर्मिव प्रति मृञ्चताम् ।

नवारत्नीनपमया अस्माकं ततः परि । दुष्वप्यं सर्वं द्विषते निर्दयामसि ५ १९१७

॥२९४॥ (अथर्व० १९।६५।१) [ अवमम् ]\*

यज्ञादिकम् । (१९१८-२३२४)

॥२९५॥ (अथर्व० ७।७३।६-७,११) X

अथर्वा । घर्मः, अश्विनौ । ६ जगती; ७,११ त्रिष्टुप् ।

उपं द्रव पर्यसा गोधुगोषमा घर्मे सिञ्च पर्य उस्त्रियायाः ।

वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुपसो वि राजति ६

उपं ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दौहदेनाम् ।

श्रेष्ठं सवं मविता साविषन्नाऽभीद्विं घर्मस्तदु षु प्र वोचत् ७

सुयवसाद् भगवती हि भूया अघा वयं भगवन्तः स्याम ।

अद्वि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिबं शुद्धमुदकमाचरन्ती ११ १९२०

॥२९६॥ (अथर्व० ७।६१।१-२)

अथर्वा । अग्निः (तपः) अनुष्टुप् ।

यदग्ने तपसा तप उपतप्यामहे तपः । प्रियाः श्रुतस्य भूयास्मायुष्मन्तः सुमेधसः १

अग्ने तपस्तप्यामह उप तप्यामहे तपः ।

श्रुतानि शृण्वन्तो वयमायुष्मन्तः सुमेधसः २

॥२९७॥ (अथर्व० १९।३२।१-१०)

भृगुः (आयुष्कामः) । धर्मः । अनुष्टुप्; ८ पुरस्ताद्बृहती; ९ त्रिष्टुप्; १० जगती ।

शतकाण्डो दुश्चयवनः सहस्रपर्ण उत्तिरः । दुर्भो य उग्र ओषधिस्तं ते बध्नाम्यायुषे १९२३

\* दै० [ अग्निः ] २३४९

X अथर्व० ७।७३।१-५, ८ = दै० [ अश्विनौ ] ६७९-६८४ ।

., ७।७३।९-१० = दै० [ अग्निः ] ७९४, ९३५ ।

नास्य केशान् प्र वर्पन्ति नोरसि ताडमा प्रते ।	
यस्मा अञ्छिन्नपर्णेन दुर्भेण शर्मै यच्छति	२
दिवि ते तूलमोपधे पृथिव्याममि निष्ठितः । त्वया सहस्रकाण्डेनायुः प्र वर्धयामहे ३	१९२५
तिस्रो दिवो अत्यंतृणत् तिस्र इमाः पृथिवीरुत ।	
त्वयाहं दुर्हादो जिह्वां नि तृणन्नि वचांसि	४
त्वमसि सहमानोऽहमास्मि सहस्वान् । उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा सपत्नान्तसहिषीवहि ५	
सहस्व नो अभिमांति सहस्व पृतनायतः ।	
सहस्व सर्वान् दुर्हादोः सुहादो मे बहून् कृधि	६
दुर्भेण देवजातेन दिवि घृम्भेन शश्वदित् ।	
तेनाहं शश्वतो जनां असनं सनवानि च	७
प्रियं मां दर्भ कृणु ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च ।	
यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै च विपश्यते	८ १९३०
यो जायमानः पृथिवीमदृहद् यो अस्तभ्रादुन्तरिक्षं दिवं च ।	
यं बिभ्रंतं ननु पाप्मा विवेद स नोऽयं दुर्भो वरुणो दिवा कः	९
सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वानोषधीनां प्रथमः सं बभूव ।	
स नोऽयं दुर्भः परिं पातु विश्वतस्तेन साक्षीय पृतनाः पृतन्यतः	१०

॥२९८॥ ( अथर्व० १९।३३।१-५ )

भृगुः । दर्भः । १ जगती; २,५ त्रिष्टुप्; ३ आर्षी पङ्क्तिः; ४ आस्तारपङ्क्तिः ।

सहस्रार्धः शतकाण्डः पर्यस्वानपामग्निर्वीरुधो राजसूर्यम् ।	
स नोऽयं दुर्भः परिं पातु विश्वतो देवो मणिरायुषा सं सृजाति नः	१
घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पर्यस्वान् भूमिदंहोऽच्युतश्चयावयिष्णुः ।	
नुदन्त्सपत्नानधरांश्च कृण्वन् दर्भा रोह महतामिन्द्रियेण	२
त्वं भूमिमत्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुं रघ्वरे ।	
त्वां पवित्रमृषयोऽभरन्त् त्वं पुनीहि दुरितान्यस्सत्	३ १९३५
तीक्ष्णो राजा विषासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः ।	
ओजो देवानां बलमुग्रमेतत् तं ते बभामि जुरसें स्वस्तये	४
दुर्भेण त्वं कृणवद् वीर्याणि दुर्भं बिभ्रद्वात्मना मा व्यथिष्ठाः ।	•
अतिष्ठाया वर्चसाधान्यान्त्सूर्य इवा भाहि प्रदिशश्चतस्रः	५ १९३७

॥२९९॥ (अथर्व० ५।२६।२-४,६-९,११)†

ब्रह्मा । वास्तोष्पतिः, २ सविता, ३,११ इन्द्रः, ४ निविदुः, ६ अदितिः, ७ विष्णुः,  
८ त्वष्टा, ९ भगः, (नवशालायां घृतहोमः) । २,४,६-८,११ द्विपदा  
प्रजापत्या बृहती; ३ त्रिपदा धिराङ् गायत्री; ९ त्रिपदा  
पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक्; ( सर्वा एकावसानाः )

युनक्तु देवः सविता प्रजान्नास्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा	२
इन्द्र उक्थामदान्यस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा	३
श्रैषा यज्ञे निविदुः स्वाहा शिष्टाः पत्नीभिर्वहतेह युक्ताः	४ १९४०
एयमगन् बर्हिषा प्रोक्षणीभिर्यज्ञं तन्वानादितिः स्वाहा	६
विष्णुर्युनक्तु बहुधा तपांस्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा	७
त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा	८
भगो युनक्त्वाशिषो न्वस्मा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा	९
इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याण्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा	११ १९४५

॥३००॥ (ऋ० १०।१८।७-१४)×

संक्रुसुको यामायनः । ७-१४ पितृमेघः, १४ प्रजापतिर्वा । त्रिष्टुप्, ११ प्रस्तारपङ्क्तिः, १३ जगती, १४ अनुष्टुप् ।

इमा नारीरविध्रवाः सुपत्नी—राञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु ।	
अनश्रवोऽनमीवाः सुरन्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे	७
उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतस्युषं शेष एहि ।	
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ	८
धनुर्हस्तादादानो मृतस्या—ऽस्मे क्षत्राय वर्चसे बलाय ।	
अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वाः स्पृधो अभिमातीर्जयेम	९
उप सर्प मातरं भूमिमेता—मुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम् ।	
ऊर्णप्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निऋतेरुपस्थात्	१०
उच्छ्वस्व पृथिवि मा नि बाधथाः स्रपायनास्मै भव स्रपवञ्चना ।	
माता पुत्रं यथा सिचा ऽभ्येनं भूम ऊर्णुहि	१०
उच्छ्वस्माना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम् ।	
ते गृहासो घृतभृतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वन्नं	१२ १९५१

+ अथ० ५।२६।१ = अग्निः २३४५; ५।२६ ५ = मरुतः ४३२; ५।२६।१० = सोमः ११८९; ५।२६।१२ = अश्विनो ६७१

× अथर्व० १८।३।२, ५०-५१, ५७

६० [ आयुर्वेद ] १९

उत् ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत् परी—मं लो०गं निदधन्मो अहं रिषम् । एतां स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रा यमः सार्दना ते मिनोतु	१३
प्रतीचीने मामहनी—ष्वाः पूर्णमिवा दधुः । प्रतीचीं जग्रभा वाच—मश्वं रशनया यथा	१४

॥३०१॥ ( ऋ० १०।१०।१-१४ )

नवमीवज्यानामयुजां षष्ठ्याश्च वैवस्वती यमी ऋषिका । यमः । षष्ठीवज्यानां युजां  
नवम्याश्च वैवस्वतो यमः ऋषिः । यमी । त्रिष्टुप्, १३ विराट्स्थाना ।

ओ चित् सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान् । पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमिं प्रतरं दीध्यानः	१
न ते सखा सख्यं वष्टयेतत् सलक्ष्मा यद् विषुरूपा भवाति । महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तारं उर्विया परि ख्यन्	२ १९५५
उशान्तिं घा ते अमृतास एत—देकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य । नि ते मनो मनसि घाट्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वृमा विविश्याः	३
न यत् पुरा चक्रुमा कर्द्ध नून—मृता वदन्तो अनृतं रपेम । गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ	४
गर्भे नु नौ जनिता दंपती क—देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः । नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेदं नावस्य पृथिवी उत द्यौः	५
को अस्य वेदं प्रथमस्याहः क ई ददर्श क इह प्र वोचत् । बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कर्द्ध ब्रव आहनो वीच्या नृन्	६
यमस्य मा यम्यं काप आग—न्त्समाने योनौ सहशेय्याय । जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् वृहेव रथ्येव चक्रा	७ १९६०
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पशं इह ये चरन्ति । अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृहृ रथ्येव चक्रा	८
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् । दिवो पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्यं बिभृयादजामि	९
आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि । उप बर्द्धहि वृषभार्यं बाहु—मन्यामिच्छस्व सुभगे पतिं मत्	१० १९६३

किं भ्रातासद् यदेनाथं भवति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात् ।	
काममृता बहुहेतुद रपाभि तन्वा मे तन्वं सं पिपृग्धि	११
न वा उ ते तन्वा तन्वं सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।	
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्टयेतत्	१२ १९६५
बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम ।	
अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परिं ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्	१३
अन्यम् पु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिं ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ।	
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवा ऽर्धा कृणुष्व संविदं सुभद्राम्	१४
॥३०२॥ ( ऋ० १०।१४।१-५,७-९,१३-१६ )+	
वैवस्वतो यमः । यमः, ७-९ लिङ्गोक्ताः, पितरो वा । त्रिष्टुप्; १३-१४, १६ अनुष्टुप्; १५ बृहती ।	
परेयिवासं प्रवतो महीरजुं बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।	
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषां दुवस्य	१
यमो नो गातुं प्रथमो विवेदु नैषा गव्युतिरपमर्त्वा उ ।	
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेषु रेना जज्ञानाः पथ्याद् अनु स्वाः	२
मातली क्वैर्यमो अङ्गिरोभि बृहस्पतिर्ऋक्भिर्वावृधानः ।	
याँश्च देवा वावृधुर्ये च देवा न्त्स्वाहान्ये स्वधयान्यं मदन्ति	३ १९७०
इमं यम प्रस्तरमा हि सीदा ऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।	
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता बहन्त्वेना राजन् हविषां मादयस्व	४
अङ्गिरोमिरा गहि यज्ञियेभि र्यम वैरूपैरिह मादयस्व ।	
विवस्वन्तं हुवे यः पिता ते ऽस्मिन् यज्ञे बहिष्ण्या निषद्यं	५
प्रेहि प्रेहि पृथिभिः पूर्येभि र्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेषुः ।	
उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्	७
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेने ष्टापूनेन परमं व्योमन् ।	
द्वित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः	८
अपेत वीत वि च सर्पतातो ऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् ।	
अहोभिरङ्गिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो देदात्यवसानमस्मै	९
यमाय सोमं सुनुत यमार्य जुहुता हविः ।	
यमं ह यज्ञो गच्छ त्पग्निदूतो अरंकृतः	१३ १९७६

यमाय घृतवद्वविर्जुहोत् प्र च तिष्ठत् ।	
स नो देवेष्वायमद् दुर्धमायुः प्र जीवसे	१४
यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।	
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वैभ्यः पथिकृद्भ्यः	१५
त्रिकद्रुकेभिः पतति पलुर्वरिकमिद् बृहत् ।	
त्रिष्टुब्न् गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आहिता	१६

॥३०३॥ (ऋ० १०।१३५।१-७)

कुमारो यामायनः । यमः । अनुष्टुप् ।

यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः संपिबते यमः ।	
अत्रा नो विश्वपतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति	१ १९८०
पुराणाँ अनुवेनेन्तं चरन्तं पापर्यामया ।	
असुयन्नभ्यचाकशं तस्मा अस्पृहयं पुनः	२
यं कुमार नवं रथं मचक्रं मनसाकृणोः ।	
एकैषं विश्वतः प्राञ्च मपश्यन्नाधि तिष्ठसि	३
यं कुमार प्रार्वर्तयो रथं विप्रैभ्यस्परि ।	
तं सामानु प्रार्वर्तत् समितो नाव्याहितम्	४
कः कुमारमजनयद् रथं को निरवर्तयत् ।	
कः स्वित् तदद्य नो ब्रूयादनुदेयी यथार्भवत्	५
यथार्भवदनुदेयी ततो अग्रमजायत ।	
पुरस्ताद् बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम्	६ १९८५
इदं यमस्य सार्दनं देवमानं यदुच्यते ।	
इयमस्य घम्यते नाळीरयं गीर्भिः परिष्कृतः	७

॥३०४॥ (ऋ० १०।१५।१-१४)

शङ्खो यामायनः । पितरः । त्रिष्टुप्, ११ जगती ।

उदीरतामवरं उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।	
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु	१
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः ।	
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विश्व	२ १९८८

आहं पितॄन्सुविदत्राँ अविस्ति नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।	
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः	३
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चक्रमा जुषध्वम् ।	
त आ गतावसा शंतमेना—ऽथा नः शं योररपो दधात	४ १९९०
उर्षहृताः पितरः सोम्यासौ बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।	
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वर्धि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्	५
आच्या जानु दक्षिणतो निषद्ये—मं यज्ञमभि गृणीत विश्वे ।	
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता करां	६
आसीनासो अरुणीनामुपस्थं रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।	
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहार्जि दधात	७
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासौ ऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ।	
तेभिर्धमः संरराणो हवींष्यु—शन्नुशङ्गिः प्रतिकाममत्तु	८
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदुः स्तोमं तष्टासो अकैः ।	
आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्धर्मसङ्गिः	९ १९९५
ये सत्यासौ हविरदौ हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः ।	
आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वेः पितृभिर्धर्मसङ्गिः	१०
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।	
अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्य—था रयिं सर्ववीरं दधातन	११
त्वमम ईळितो जातवेदो ऽवाङ्मुव्यानि सुरभीणि कृत्वी ।	
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्ष—न्नाद्रि त्वं देव प्रयता हवींषि	१२
ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च त्रिभ याँ उ च न प्रविभ्र ।	
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व	१३
ये अग्निदग्धा ये अनाग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते ।	
तेभिः स्वराळसूनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयस्व	१४

॥३०५॥ ( अथर्व० १८।१।६, १३-१४, १७, ३९-४०, ५१-५४, ५७-६१ )X

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः, ४० रुद्रः ४१-४३ सरस्वती, ४४-४६, ५१-५२ पितरः ( पितृमेधः ) ।

त्रिष्टुप्; १४, ४९ भुरिक्, ५७, ६१ अनुष्टुप्; ५९ पुरोबृहती ।

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून ।

आसुभिषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात्

६ २००१



न ते नाथं यम्यत्राहमस्मि न ते तनूं तन्वाइ सं पृच्याम् ।	
अन्येन मत् प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्टयेतत्	१३
न वा उ ते तनूं तन्वाइ सं पृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात् ।	
असंयदेतन्मनसो हृदो मे भ्राता स्वसुः श्यने यच्छयीय	१४
त्रीणि च्छन्दांसि कवयो त्रि येतिरे पुरु रूपं दर्शतं विश्वचक्षणम् ।	
आपो वाता ओषधयस्तान्येकस्मिन् भुवंन आपितानि	१७
स्तेगो न क्षामत्येषि पृथिवीं मही नो वाता इह वान्तु भूमौ ।	
मित्रो नो अत्र वरुणो युज्यमानो अग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम्	३९ २००५
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहृत्नुमुग्रम् ।	
मूढा जरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यमस्मत् ते नि वपन्तु सेन्यम्	४०
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।	
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्	४१
सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।	
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे	४२
सरस्वति या सरथं ययाथोकथैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।	
सहस्रार्धमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि	४३
उदीरतामवरं उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।	
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु	४४ २०१०
आहं पितृन्त्सुविदत्रां अविस्ति नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।	
बर्हिषदो ये स्वधयां सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः	४५
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो ये अपरास ईयुः ।	
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु दिक्षु	४६
मातली कृच्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋकभिर्वावृधानः ।	
यांश्च देवा वावृधुर्ये च देवास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु	४७
स्वाहुक्किलायं मधुमां उतायं तीव्रः किलायं रसवां उतायम् ।	
उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु	४८
परेयिवांसं प्रवतो महीरिति बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।	
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत	४९ २०१५

वर्हिषदः पितर ऊर्त्यशुर्वाग्निमा वो हृष्या चक्रुमा जुषध्वम् ।	
त आ गतावसा शंतमेनाधा नः शं योररपो दधात	५१
आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येदं नो हविरभि गृणन्तु विश्वे ।	
मा हींसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद् व आगः पुरुषता करांम	५२
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति तेनेदं विश्वं भुवनं समेति ।	
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश	५३
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणैर्येना ते पूर्वे पितरः परेताः ।	
उभा राजानौ स्वधया मदन्तौ यमं पश्यासि वरुणं च देवम्	५४
द्युमन्तस्त्वेधीमहि द्युमन्तः समिधीमहि ।	
द्युमान् द्युमत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे	५७ २०२०
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।	
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनमे स्याम	५८
अङ्गिरोभिर्यज्ञियैरा गहीह यमं वैरूपैरिह मादयस्व ।	
विवस्वन्तं ह्रुवे यः पिता तेऽस्मिन् बर्हिष्या निषद्य	५९
इमं यम प्रस्तरमा हि रोहाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः ।	
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषो मादयस्व	६०
इत एत उदारुहन् दिवस्पृष्ठान्यारुहन् ।	
प्र भूर्जयो यथा पथा घामङ्गिरसो ययुः	६१

॥३०६॥ ( अथर्व० १८।२।१-६० )

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः; ४, ३४ अग्निः; ५ जातवेदाः; २९ पितरः ( पितृमेधः ) । त्रिष्टुप्; १-३, ६, १४-१८, २०, २२-२३, २५, ३०, ३४, ३६, ४६, ४८, ५०-५२, ५६ अनुष्टुप्; ४, ७, ९, १३ जगती; ५, २६, ४९, ५७ भुरिक्; १९ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; २४ त्रिपदा समविषमाऽऽर्षी गायत्री; ३७ विराड् जगती; ३८-४४ आर्षी गायत्री; (४०, ४२-४४ भुरिक्) ४५ ककुम्मती अनुष्टुप् ।

यमाय सोमः पवते यमार्य क्रियते हविः । यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निर्दूतो अरंकृतः १	२०२५
यमाय मधुमत्तमं जुहोता प्र च तिष्ठत ।	
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकुङ्कथः	२
यमार्य घृतवत् पयो राज्ञे हविर्जुहोतन ।	
स नो जीवेत्वा यमेद् दीर्घमायुः प्र जीवसे	३ २०२७

मैनमग्ने वि देहो माभि शूशुचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।	
शृतं यदा करासि जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितृरुपं	४
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमेनं परि दत्तात् पितृभ्यः ।	
यदो गच्छात्यसुनीतिमेतामथ देवानां वशनीर्भवाति	५
त्रिकद्रुकोभिः पवते षडुर्वीरेकमिद् बृहत् ।	
त्रिष्टुब् गांयत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आपिता	६ २०३०
सूर्यं चक्षुषा गच्छ वातमात्मना दिवं च गच्छ पृथिवीं च धर्मभिः ।	
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः	७
अजो भागस्तपसस्तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः ।	
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभिर्वहैनं सुकृतास्तु लोकम्	८
यास्ते शोचयो रंहयो जातवेदो याभिरापृणासि दिवमन्तरिक्षम् ।	
अजं यन्तमनु ताः समृण्वतामथेतराभिः शिवर्तमाभिः शृतं कृधि	९
अवं सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुतश्चरति स्वघावान् ।	
आयुर्वसान् उप यातु शेषः सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः	१०
अति द्रव श्वानौ सारमेयौ चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा ।	
अघा पितृन्सुविदत्रा अपीहि यमेन ये संधमादं मदान्ति	११ २०३५
यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिषदी नृचक्षसा ।	
ताभ्यां राजन् परि धेद्येनं स्वस्त्यस्मा अनमीवं च धेहि	१२
उरूणसावसुतृपावुदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो जना अनु ।	
तावस्मभ्यं हृशये सूर्योय पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम्	१३
सोम एकेभ्यः पवते घृतमेक उपासते ।	
येभ्यो मधु प्रधावति तांश्चिदेवापि गच्छतात्	१४
ये चित् पूर्वं ऋतसाता ऋतजाता ऋतावृधः ।	
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजा अपि गच्छतात्	१५
तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्व र्ययुः ।	
तपो ये चक्रिरे महस्तांश्चिदेवापि गच्छतात्	१६
ये युध्यन्ते प्रघनेषु शूरासो ये तनूत्यजः ।	
ये वा सहस्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापि गच्छतात्	१७ २०४१

सहस्रणीथाः क्वयो ये गोपायन्ति सूर्यम् ।	
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात्	१८
स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी । यच्छास्मै शर्म सप्रथाः	१९
असबाधे पृथिव्या उरौ लोके नि धीयस्व ।	
स्वधा याश्चकृषे जीविन् तास्ते सन्तु मधुश्रुतः	२०
ह्वयामि ते मनसा मन इहेमान् गुहाँ उप जुजुषाण एहि ।	
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन स्योनास्त्वा वाता उप वान्तु शग्माः	२१ २०४५
उत् त्वा वहन्तु मरुत उदवाहा उदप्रुतः । अजेन कृण्वन्तः शीतं वर्षेणोक्षन्तु बालिति	२२
उदहमायुरायुषे कृत्वे दक्षाय जीवसे ।	
स्वान् गच्छतु ते मनो अधा पितृरुपं द्रव	२३
मा ते मनो मासोर्माङ्गानां मा रसस्य ते ।	
मा ते हास्त तन्वः किं चनेह	२४
मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट मा देवी पृथिवी मही ।	
लोकं पितृषु विस्वैधस्व यमराजसु	२५
यत् ते अङ्गमतिहितं पराचैरपानः प्राणो य उ वा ते परेतः ।	
तत् ते संगत्य पितरः सनीडा घासाद् घासं पुनरा वैशयन्तु	२६ २०५०
अपेमं जीवा अरुधन् गृहेभ्यस्तं निर्वहत् परि ग्रामादितः ।	
मृत्युर्यमस्यासीद् दूतः प्रचेता असन् पितृभ्यो गमयां चकार	२७
ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा ज्ञातिमुखा अहुतादुश्चरन्ति ।	
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्ठानसात् प्र धमाति यज्ञात्	२८
सं विशन्तिवह पितरः स्वा नः स्योनं कृण्वन्तः प्रतिरन्त आयुः ।	
तेभ्यः शकेम हविषा नक्षमाणा ज्योग् जीवन्तः शरदः पुरुचीः	२९
यां ते धेनुं निपृणामि यम्बु ते क्षीर औदुनम् ।	
तेना जनस्यासो भर्ता योऽत्रासदजीवनः	३०
अर्धावतीं प्र तर या सुशेवाक्षार्कं वा प्रतरं नवीयः ।	
यस्त्वा जघान वध्यः सो अस्तु मा सो अन्यद् विदत भागधेयम्	३१
यमः परोऽवरो विवस्वान् ततः परं नाति पश्यामि किं चन ।	
यमे अघ्वरो अधि मे निविष्टो भवो विवस्वानन्वार्ततान	३२ २०५६

अपाङ्गूहस्रमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वा सर्वर्णामदधुर्विवस्वते । उताश्विर्नावभरद् यत् तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्युः ये निखाता ये परोमा ये दुग्धा ये चोद्धिताः ।	३३
सर्वास्तानग्र आ वह पितृन् हविषे अत्तवे ये अग्निदुग्धा ये अग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते । त्वं तान् वैत्थ यदि ते जातवेदः स्वधया यज्ञं स्वधितिं जुषन्ताम् शं तप मातिं तपो अग्ने मा तन्वैः तपः ।	३४
वनेषु शुष्मो अस्तु ते पृथिव्यामस्तु यद्भरः ददाम्यस्मा अवसानमेतद् य एष आगन् मम चेदभूदिह । यमश्चिकित्वान् प्रत्येतदाह ममैष राय उप तिष्ठतामिह	३५ २०६०
इमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा प्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा अपेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा वीड्रेमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा निरिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा	३७
उदिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा समिमां मात्रां मिमीमहे यथापरं न मासातै । शते शरत्सु नो पुरा अमासि मात्रां स्वरिगामायुष्मान् भूयासम् । यथापरं न मासातै शते शरत्सु नो पुरा प्राणो अपानो व्यान आयुश्चक्षुर्दृश्ये सूर्याय । अपरिपरेण पथा यमराज्ञः पितृन् गच्छ ये अग्रवः शशमानाः पर्युर्हित्वा द्वेषांस्यनपत्यवन्तः । ते घामुदित्याविदन्त लोकं नार्कस्य पृष्ठे अधि दीध्यानाः उदन्वती द्यौरवमा पीलुमतीति मध्यमा । तृतीया ह प्रद्यौरिति यस्यां पितर आसते ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम् । य आश्रियन्ति पृथिवीमुत द्यां तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम	३८ ३९ ४० ४१ २०६५ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ २०७० ४७ ४८ ४९ २०७३

इदमिद् वा उ नापरं दिवि पश्यसि सूर्यम् । माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनिं भूम ऊर्णुहि	५०
इदमिद् वा उ नापरं जरस्यन्यदितोऽपरम् । जाया पतिमिव वाससाभ्येनिं भूम ऊर्णुहि	५१ २०७५
अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या मातुर्वल्लेण भद्रया । जीवेषु भद्रं तन्मयि स्वधा पितृषु सा त्वयि	५२
अग्नीषोमा पथिकृता स्योनं देवेभ्यो रत्नं दधथुर्वि लोकम् । उप प्रेष्यन्तं पूषणं यो वहात्यञ्जोयानैः पथिभिस्तत्र गच्छतम्	५३
पूषा त्वेतश्चयावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः । स त्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्योऽग्निदेवेभ्यः सुविदुत्रियेभ्यः	५४
आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात् । यत्रासते सुकृतो यत्र त इयुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु	५५
इमौ युनज्मि ते वह्नी असुनताय वोढवे । ताभ्यां यमस्य सार्दनं समितीश्चाव गच्छतात्	५६ २०८०
एतत् त्वा वासः प्रथमं न्वागन्नपैतदूह यदिहाविमः पुरा । इष्टापूतेमनुसंक्राम विद्वान् यत्र ते दुत्तं बहुधा विबन्धुषु	५७
अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व मेदसा पीवसा च । नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हषाणो दधृग् विधक्षन् परीङ्खयातै	५८
दण्डं हस्तादाददानो गतासोः सह श्रोत्रेण वर्चसा बलेन । अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वा मृधो अभिमातीर्जयेम	५९
धनुर्हस्तादाददानो मृतस्य सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन । समागृभाय वसु भूरिं पुष्टमर्वाङ् त्वमेहुषं जीवलोकम्	६० २०८४

॥३०७॥ ( अथर्व० १८।३।१, ३-४९, ५२, ५४, ५६, ५८-६६, ६८-७३ )X

अथर्वा । यमः; ४४, ४६ मन्त्रोक्ताः, ५-६ अग्निः; ५४ इन्द्रः, ५६ आपः (पितृमेघः) । त्रिष्टुप्; ४, ८, ११, २३  
सतः पङ्क्तिः; ५ त्रिपदा निचृद्गायत्री; ६, ५६, ६८, ७०, ७२ अनुष्टुप् (५६ आर्षी); १८, २५-२९,  
४४, ४६ जगती ( १८ भुरिक्, २९ विराट् ); ३० पञ्चपदाऽतिजगती; ३१ विराट् शक्करी;  
३२-३५, ४७, ४९, ५२ भुरिक्; ३६ एकावसानाऽऽसुर्यनुष्टुप्; ३७ एकाव-  
सानाऽऽसुरी गायत्री; ३९ परा त्रिष्टुप् पङ्क्तिः; ५४ पुरोऽनुष्टुप्;  
५८ विराट्; ६० त्र्यवसाना षट्पदा जगती;  
६४ भुरिक् पथ्यापङ्क्तिः;  
६९, ७१ उपरिष्टाद् बृहती ।

इयं नारीं पतिलोकं वृणाना नि पद्यत उप त्वा मर्त्यं प्रेतम् ।

धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धैहि १ २०८५

अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम् ।

अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम् ३

प्रज्ञानत्यङ्घ्रिये जीवलोकं देवानां पन्थामनुसं चरन्ती ।

अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्गं लोकमधि रोहयैनम् ४

उप द्यामुप वेतसमर्वत्तरो नदीनाम् । अग्ने पिप्तमपामसि ५

यं त्वमग्ने समदहस्तमु निर्वापया पुनः ।

क्याम्बूरत्र रोहतु शाण्डदूर्वा व्यल्कशा ६

इदं त एकं पर ऊं त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।

संवेशने तन्वाङ्गे चारुरोधि प्रियो देवानां परमे सधस्थे ७ २०९०

उत् तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः कृणुष्व सलिले सधस्थे ।

तत्र त्वं पितृभिः संविदानः सं सोमेन मदस्व सं स्वधाभिः ८

प्र च्यवस्व तन्वां सं भरस्व मा ते गात्रा वि हायि मो शरीरम् ।

मनो निविष्टमनुसं विशस्व यत्र भूर्मेर्जुपसे तत्र गच्छ ९

वर्चसा मां पितरः सोम्यासो अज्जन्तु देवा मधुना घृतेन ।

चक्षुषे मा प्रतरं तारयन्तो जरसे मा जरदष्टिं वर्धन्तु १०

वर्चसा मां समनक्त्वग्निर्मेधां मे विष्णुर्न्यनिक्त्वासन् ।

रयि मे विश्वे नि यच्छन्तु देवाः स्योना मापः पवनैः पुनन्तु ११ २०९४

मित्रावरुणा परि मामधातामादित्या मा स्वरवो वर्धयन्तु । वर्चो म इन्द्रो न्युनक्तु हस्तयोर्जरदष्टि मा सविता कृणोतु	१२	२०९५
यो ममारं प्रथमो मर्त्यानां यः प्रेयार्थं प्रथमो लोकमेतम् । वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा सपर्यत	१३	
परा यात पितर आ च यातायं वो यज्ञो मधुना समक्तः । दत्तो अस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं रथिं च नः सर्ववीरं दधात	१४	
कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो अगस्त्यः श्यावाश्वः सोम्यर्चनानाः । विश्वामित्रोऽयं जमदग््निरत्रिरवन्तु नः कश्यपो वामदेवः	१५	
विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ भरद्वाज गोतम वामदेव । शर्दिनो अत्रिरग्रभीन्नमोभिः सुसंशासः पितरो मृडता नः	१६	
कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रमायुर्दधानाः प्रतरं नवीयः । आप्यार्यमानाः प्रजया धनेनाथं स्याम सुरभयो गृहेषु	१७	२१००
अञ्जते व्यञ्जिते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जिते । सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमांसु गृह्णते	१८	
यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं च तेनो सचध्वं स्वयंशसो हि भूत । ते अर्वाणः कवय आ शृणोत सुविदुत्रा विदथे ह्यमानाः	१९	
ये अत्रयो अङ्गिरसो नवग्वा इष्टावन्तो रातिषाचो दधानाः । दक्षिणावन्तः सुकृतो य उ स्थासद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्	२०	
अथा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्र क्रतमांशशानाः । शुचीदयन् दीध्यत उक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरपं व्रन्	२१	
सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमन्तः । शुचन्तो अग्निं वावृधन्त इन्द्रमुर्वी गव्यां परिषदं नो अक्रन्	२२	२१०५
आ यूथेव क्षुमति पश्वो अरुयद् देवानां जनिमान्त्युग्रः । मर्तासश्चिदुर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदुर्य उपरस्यायोः	२३	
अकर्म ते स्वर्पसो अभूम क्रतमवसन्नृषसो विभातीः । विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वंदेम विदथे सुवीराः	२४	
इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ	२५	२१०६



- धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २६
- अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २७ २११०
- सोमो मा विश्वैर्देवैरुदीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २८
- धर्ता ह त्वा धरुणो धारयाता ऊर्ध्व भानुं सविता धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ २९
- प्राच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३०
- दक्षिणायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३१
- प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३२ २११५
- उदीच्यां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३३
- ध्रुवायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३४
- ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा संवृतः स्वधायामा दधामि बाहुच्युता पृथिवी धामिवोपरि ।  
 लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ ३५
- धर्तासि धरुणोऽसि वंसगोऽसि ॥३६॥ उदूपूरसि मधुपूरसि वातपूरसि ३७ २१२०  
 इतश्च मामृतश्चावतां यमे इव यतमाने यद्वैतम् ।  
 प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तो आ सीदतां स्वम् लोकं विदानि ३८  
 स्वासस्थे भवतमिन्दवे नो युजे वां ब्रह्म पूर्य नमाभिः ।  
 वि श्लोक एति पथ्येवि सूरिः शृण्वन्तु विश्वे अमृतांस एतत् ३९  
 श्रीणि पदानि रूपो अन्वरोहच्चतुष्पदीमन्वैतद् व्रतेन ।  
 अक्षरेण प्रति मिमीते अर्कमृतस्य नाभावभि सं पुनाति ४० २१२३

देवेभ्यः कर्मवृणीत मृत्युं प्रजायै किममृतं नावृणीत ।	
बृहस्पतिर्यज्ञमतनुत ऋषिः प्रियां यमस्तन्वमा रिरिच	४१
त्वमग्न ईडितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा ।	
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नाद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि	४२ २१२५
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।	
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात	४३
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः ।	
अचो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि रयिं च नः सर्ववीरं दधात	४४
उपहृता नः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।	
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधिं ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्	४५
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा अनूजहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ।	
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्धिः प्रतिकाममत्तु	४६
ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदुः स्तोमतष्टासो अकैः ।	
आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः सत्यैः क्वभिर्ऋषिभिर्धर्मसद्धिः	४७ २१३०
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेण ।	
आग्ने याहि सुविदत्रैभिरवाङ् परैः पूर्वैर्ऋषिभिर्धर्मसद्धिः	४८
उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुन्यचंसं गृथिवीं सुशेवाम् ।	
ऊर्णम्रदाः पृथिवी दक्षिणावत एषा त्वां पातु प्रपथे पुरस्तात्	४९
उत् ते स्तभामि पृथिवीं त्वत् परीमं लोगं निदधन्मो अहं रिषम् ।	
एतां स्थूणां पितरो धारयन्ति ते तत्र यमः सादना ते कृणोतु	५२
अथर्वा पूर्णं चमसं यमिन्द्रायाविभर्वाजिनीवते ।	
तस्मिन् कृणोति सुकृतस्य भक्षं तस्मिन्निन्दुः पवते विश्वदानीम्	५४
पर्यस्वतीरोषधयः पर्यस्वन्मामकं पर्यः ।	
अपां पर्यसो यत् पर्यस्तेन मा सह शुम्भत	५६ २१३५
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूतेन परमे व्योमिन् ।	
द्वित्वावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छतां तन्वा सुवर्चाः	५८
ये नः पितुः पितरो ये पितामहा य आविविशुरुर्वन्तरिक्षम् ।	
तेभ्यः स्वराडसुनीतिर्नो अद्य यथावशं तन्वः कल्पयाति	५९ २१३७

शं तै नीहारो भवतु शं तै प्रुष्वाव शीयताम् ।	
शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति ।	
मण्डुक्य१प्सु शं भ्रुव इमं स्व१ग्निं शमय	६०
विवस्वान् नो अभयं कृणोतु यः सुत्रामा जीरदानुः सुदानुः ।	
इहेमे वीरा बहवो भवन्तु गोमदश्ववन्मयस्तु पुष्टम्	६१
विवस्वान् नो अमृतत्वे दधातु परैतु मृत्युरमृतं न ऐतु ।	
इमान् रक्षतु पुरुषाना जरिम्णो मो ष्वेषामसवो यमं गुः	६२ २१४०
यो दुध्रे अन्तरिक्षे न मृहा पितृणां कविः प्रमतिर्मतीनाम् ।	
तमर्चत विश्वमित्रा हविभिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात्	६३
आ रोहत दिव्युत्तमामृषयो मा विभीतन ।	
सोमपाः सोमपायिन इदं वः क्रियते हविरगन्म ज्योतिरुत्तमम्	६४
प्र केतुना बृहता भात्यग्निरा रोदसी वृषभो रौरवीति ।	
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडुपामुपस्थे महिषो ववर्ध	६५
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हुदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।	
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भ्रुण्युम्	६६
अपूपार्पितान् कुम्भान् यास्ते देवा अधारयन् ।	
ते तै सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः	६८ २१४५
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।	
तास्ते सन्तु विम्बीः प्रम्बीस्तास्ते यमो राजानुं मन्यताम्	६९
पुनर्देहि वनस्पते य एष निहितस्त्वयि ।	
यथा यमस्य सादन आसातै विदथा वदन	७०
आ रभस्व जातवेदस्तेजस्वद्भरो अस्तु ते ।	
शरीरमस्य सं दुहाथैनं घेहि सुकृतासु लोके	७१
ये ते पूर्वे परागता अपरे पितरंश्च ये ।	
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैति शतधारा व्युन्दती	७२
एतदा रोह वयं उन्मृजानः स्वा इह बृहदु दीदयन्ते ।	
अभि प्रेहि मभ्यतो माप हास्थाः पितृणां लोकं प्रथमो यो अत्र	७३ २१५१

॥३०८॥ ( अथर्व० १८।४।१-८९ )+

अथर्वा । यमः, मन्त्रोक्ताः, ८१ पितरः, ८८ अग्निः, ८९ चन्द्रमाः । त्रिष्टुप्; १.४.७, १४, ३६, ६० भुरिक्; २, ५.११  
२९, ५०-५१, ५८ जगती; ३ पञ्चपदा भुरिगतिजगती; ६ ९, १३ पञ्चपदा शकरी ( ९ भुरिक्, १३ इयवसाना );  
८ पञ्चपदाऽतिशकरी; १२ महाबृहती; १६-२४ त्रिपदा भुरिङ्महाबृहती; २६, ३३, ४३ उपरि-  
ष्टाबृहती ( २६ विराट् ); २७ याजुषी गायत्री; २५, ३१-३२, ३८, ४१-४२, ५५-५७, ५९, ६१  
अनुष्टुप् ( ५६ ककुम्मती ); ३९, ६२-६३ आस्तारपङ्क्तिः; ( ३९ पुरोविराट्,  
६२ भुरिक्, ६३ स्वराट् ); ४९ अनुष्टुग्भा त्रिष्टुप्; ५३ पुरोविराट् सतः  
पङ्क्तिः; ६६ त्रिपदा स्वराट् गायत्री; ६७ द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्;  
६८, ७१ आसुर्यनुष्टुप्, ७२-७४, ७९ आसुरी पङ्क्तिः; ७५  
आसुरी गायत्री; ७६ आसुर्युष्णिक्; ७७ दैवी जगती;  
७८ आसुरी त्रिष्टुप्; ८० आसुरी जगती; ८१ प्राजा-  
पत्याऽनुष्टुप्; ८२ साम्नी बृहती; ८३-८४ साम्नी  
त्रिष्टुप्; ८५ आसुरी बृहती; ( ६७-६८, ७१-८६  
एकावसाना ); ८६-८७ चतुष्टुपदा उष्णिक्;  
( ८६ ककुम्मती, ८७ शंकुमती );  
८८ इयवसाना पथ्यापङ्क्तिः; ८९ पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः ।

आ रोह॑त॒ जनि॑त्रीं॒ जा॒तवे॑दसः॒ पित॑र्याणैः॒ सं व॒ आ रो॑हयामि ।

अवा॑द्दृ॒ष्ये॒षितो॑ ह॒व्यवा॑ह॒ ईजा॑नं यु॒क्ताः सु॒कृता॑ ध॒त्त लो॒के १

दे॒वा य॒ज्ञमु॑तवः॒ कल्प॑यन्ति॒ ह॒विः पु॑रोडा॒शं सु॒चो य॑ज्ञायु॒धानि॑ ।

तेभि॑र्याहि॒ पथि॑भिर्दे॒वयानै॑र्यैरी॒जानाः॑ स्व॒र्गं यन्ति॑ लो॒कम् २

ऋ॒तस्य॑ पन्था॒मनु॑ पश्य॒ साध्व॑ङ्गिरसः॒ सु॒कृतो॑ येन॒ यन्ति॑ ।

तेभि॑र्याहि॒ पथि॑भिः स्व॒र्गं यत्रा॑दित्या मधुं॒ भक्ष॑रन्ति॒ तृती॑ये॒ नाके॑ अधि॒ वि श्र॑यस्व३

त्रयः॑ सु॒पर्णा॑ उपर॒स्य मा॒यू नाक॑स्य॒ पृष्ठे॑ अधि॒ विष्ट॑पिं श्रिताः ।

स्व॒र्गा लो॒का अ॒मृते॑न॒ विष्टा॑ इष॒मूर्जे॑ यज॒मानाय॑ दु॒हाम् ४

जुह॑र्दी॒धार॒ घामु॑प॒भृद॑न्तरि॒क्षं ध्रु॒वा दा॑धार॒ पृथि॑वीं प्रति॒ष्ठाम् ।

प्रती॑मां लो॒का घृ॒तपृ॑ष्ठाः स्व॒र्गाः कामै॑कामं॒ यज॑मानाय॒ दुहाम् ५ २१५५

ध्रु॒व आ रो॑ह॒ पृथि॑वीं॒ विश्व॑भोजस॒मन्तरि॑क्षमु॒पभृ॑दा क्रमस्व ।

जुहु॑ घां गच्छ॒ यज॑मानेन॒ साकं॑ सु॒वेण॑ व॒त्सेन॑ दि॒शः प्रपी॑नाः॒ सर्वा॑ धु॒क्वाह॑णीयमानः॒ ६

तीर्थै॑स्तरन्ति॒ प्र॒वतो॑ म॒हीरि॑ति॒ यज्ञ॑कृतः॒ सु॒कृतो॑ येन॒ यन्ति॑ ।

अत्रा॑दध्रु॒यज॑मानाय॒ लोकं॑ दि॒शो भू॑तानि॒ यद॑कल्पयन्त ७ २१५७

अङ्गिरसामयनं पूर्वीं अभिरादित्यानामयनं गार्हपत्यो दक्षिणानामयनं दक्षिणाग्निः ।	
महिमानमग्नेर्विहितस्य ब्रह्मणा समङ्गः सर्वं उप याहि शग्मः	८
पूर्वीं अग्निष्ठां तपतु शं पुरस्ताच्छं पश्चात् तपतु गार्हपत्यः ।	
दक्षिणाग्निष्टे तपतु शर्म वर्मोत्तरतो मध्यतो अन्तरिक्षाद् दिशोदिशो	
अग्ने परि पाहि घोरात्	९
युयमग्ने शतमाभिस्तन्भिरीजानमभि लोकं स्वर्गम् ।	
अथा भूत्वा पृष्टिवाहो वहाथ यत्र देवैः संधमादुं मदन्ति	१० २१६०
शमग्ने पश्चात् तपु शं पुरस्ताच्छमुत्तराच्छमधरात् तपैनम् ।	
एकस्त्रेधा विहितो जातवेदः सम्यगेनं धेहि सुकृतांस्तु लोके	११
शमग्रयः समिद्धा आ रभन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।	
शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन्	१२
यज्ञ एति विवर्ततः कल्पमान ईजानमभि लोकं स्वर्गम् ।	
तमग्रयः सर्वहुतं जुषन्तां प्राजापत्यं मेध्यं जातवेदसः ।	
शृतं कृण्वन्त इह माव चिक्षिपन्	१३
ईजानश्चितमारुक्षदग्निं नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत् पतिष्यन् ।	
तस्मै प्र भाति नभसो ज्योतिषामान्स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः	१४
अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिरिन्द्रो ब्रह्मा दक्षिणतस्ते अस्तु ।	
हुतोऽयं संस्थितो यज्ञ एति यत्र पूर्वमयनं हुतानाम्	१५ २१६५
अपूपवान् क्षीरवांश्चरुहे सीदतु ।	
लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ	१६
अपूपवान् दधिवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	१७
अपूपवान् द्रप्सवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	१८
अपूपवान् घृतवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	१९
अपूपवान् मांसवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	२० २१७०
अपूपवान् भवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	२१
अपूपवान् मधुमांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	२२
अपूपवान् रसवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	२३
अपूपवान् पवांश्चरुहे सीदतु । लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये०	२४ २१७४

अपूपार्पिहितान् कुम्भान् यांस्ते देवा अधारयन् । ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः	२५ ११७५
यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः । तास्ते सन्तुदुग्धीः प्रग्धीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम्	२६
अक्षितिं भूर्यसीम्	२७
द्रुप्तसर्षस्कन्द पृथिवीमनु घामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वं । समानं बोनिमनु संचरन्तं द्रुप्तं जुहोम्यनु सप्त होत्राः	२८
शतधारं वायुमर्कं स्वविदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते रयिम् । ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति सर्वदा ते दुहते दक्षिणां सप्तमातरम्	२९
कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्विलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये । ऊर्जं मदन्तीमदिति जनेष्वग्रे मा हिंसीः परमे व्योमिन्	३० ११८०
एतत् ते देवः सविता वासो ददाति भर्तवे । तत् त्वं यमस्य राज्ये वासानस्ताप्यं चर	३१
धाना धेनुरभवद् वत्सो अस्यास्तिलांऽभवत् । तां वै यमस्य राज्ये अक्षितामुप जीवति	३२
एतास्ते असौ धेनवः कामदुधा भवन्तु । एनीः श्येनीः सरूपा विरूपास्तिलवत्सा उप तिष्ठन्तु त्वात्रं	३३
एनीर्धाना हरिणीः श्येनीरस्य कृष्णा धाना रोहिणीर्धेनवस्ते । तिलवत्सा ऊर्जमस्मै दुहाना विश्वाहा सन्त्वनपस्फुरन्तीः	३४
वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्सम् । स बिभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान् बिभर्ति पिन्वमानः	३५ ११८५
सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं व्यच्यमानं सलिलस्यं पृष्ठे । ऊर्जं दुहानमनपस्फुरन्तमुपासते पितरः स्वधाभिः	३६
इदं कसाम्बु चर्यनेन चितं तत् संजाता अव पश्यतेतं । मत्स्योऽयममृतत्वमेति तस्मै गृहान् कृणुत यावत्सबन्धु	३७
इहैवैधि धनसनिरिहाचित इहकृतुः । इहैधि वीर्यवित्तरो वयोधा अपराहतः पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीरापो मधुमतीरिमाः ।	३८
स्वधां पितृभ्यो अपृतं दुहाना आपो देवीरुभयांस्तर्पयन्तु	३९ ११८९

आपो अग्निं प्र हिणुत पितॄरुपेमं यज्ञं पितरो मे जुषन्ताम् । आसीनामूर्जमुप ये सचन्ते ते नो रयिं सर्ववीरं नि यच्छान्	४०	११९०
समिन्धते अमर्त्यं हव्यवाहं घृतप्रियम् । स वेदु निहिताभिधीन् पितॄन् परावतो गतान् ४१ यं ते मन्थं यमोदुनं यन्मांसं निपृणामि ते । ते ते सन्तु स्वधावन्तो मधुमन्तो घृतश्रुतः ४२ यास्ते धाना अनुकिरामि तिलमिश्राः स्वधावतीः ।		
तास्ते सन्तुदुभ्वीः प्रभ्वीस्तास्ते यमो राजानु मन्यताम् इदं पूर्वमपरं नियानं येनां ते पूर्वं पितरः परैताः ।	४३	
पुरोगवा ये अभिशाचो अस्य ते त्वा वहन्ति सुकृताश्च लोकम् सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने ।	४४	
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् सरस्वतीं पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः ।	४५	११९५
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वमनमीवा इष आ धेह्यस्मे सरस्वति या सरथं ययाथोकथैः स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती ।	४६	
सहस्रार्धमिडो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानाय धेहि पृथिवीं त्वां पृथिव्यामा वेश्यामि देवो नो धाता प्र तिरात्यायुः ।	४७	
परापरैता वसुविद् वो अस्त्वधा मृताः पितृषु सं भवन्तु आ प्र च्यवेथामप तन्मृजेथां यद् वामभिभा अत्रोचुः ।	४८	
अस्मादेतमघ्न्यौ तद् वशीयो दातुः पितृष्विहभोजनौ मम एयमगन् दक्षिणा भद्रतो नो अनेन दत्ता सुदुर्घा वयोधाः ।	४९	
यौवने जीवानुपपृञ्चती जरा पितृभ्य उपसंपराणयादिमान् इदं पितृभ्यः प्र भंरामि बर्हिर्जीवं देवेभ्य उत्तरं स्तृणामि ।	५०	११९०
तदा रोह पुरुष मेध्यो भवन् प्रति त्वा जानन्तु पितरः परैतम् एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभूः प्रति त्वा जानन्तु पितरः परैतम् ।	५१	
यथापरु तन्वैषु सं भरस्व गात्राणि ते ब्रह्मणा कल्पयामि पर्णो राजापिधानं चरूणामूर्जो बलं सह ओजो न आगन् ।	५२	
आयुर्जीवेभ्यो विदधद् दीर्घायुत्वार्यं शतशारदाय ऊर्जो भागो य इमं जजानाश्मान्नामाधिपत्यं जगाम ।	५३	
तमर्चेत विश्वामित्रा हविर्भिः स नो यमः प्रतरं जीवसे धात्	५४	११९४

यथा यमाय हर्म्यमवपन् पञ्च मानवाः ।	
एवा वपामि हर्म्यं यथा मे भूरयोऽसत	५५ २२०५
इदं हिरण्यं विभृहि यत् ते पिताविभः पुरा ।	
स्वर्गं यतः पितुर्हस्तं निर्मृङ्क्षि दक्षिणम्	५६
ये च जीवा ये च मृता ये ज्ञाता ये च यज्ञियाः ।	
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैति मधुधारा व्युन्दती	५७
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सरो अह्नां प्रतरीनोषसां दिवः ।	
प्राणः सिन्धूनां कलशां अचिक्रदुदिन्द्रस्य हार्दिमाविशन् मनीषया	५८
त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु दिवि षंल्लुक आततः ।	
सरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे	५९
प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतिं सखा सख्युर्न प्र भिनाति संगिरः ।	
मर्थ इव योषाः समर्षसे सोमः कलशे शतयामना पथा	६० २२१०
अक्षन्मीमदन्त स्रवं प्रियां अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा यविष्ठा ईमहे	६१
आ यात पितरः सोम्यासौ गम्भीरैः पथिभिः पितृयाणैः ।	
आयुस्मभ्यं दधतः प्रजां च रायश्च पोषैरभि नः सचध्वम्	६२
परां यात पितरः सोम्यासौ गम्भीरैः पथिभिः पूर्याणैः ।	
अघा मासि पुनरा यात नो गृहान् हविरत्तु सुप्रजसः सुवीराः	६३
यद् वो अग्निरजहादेकमङ्गं पितृलोकं गमयं जातवेदाः ।	
तद् व एतत् पुनरा प्याययामि साङ्गाः स्वर्गे पितरो मादयध्वम्	६४
अभूद् दूतः प्रहितो जातवेदाः सायं न्यह्न उपवन्द्यो नृभिः ।	
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि	६५ २२१५
असौ हा इह ते मनः ककुत्सलमिव जामयः । अम्येनि भूम ऊर्णुहि	६६
शुम्भन्तां लोकाः पितृषदना पितृषदने त्वा लोक आ सादयामि	६७
येऽस्माकं पितरस्तेषां बहिरसि ॥६८॥ उदुत्तमं वरुण०+	६९
प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् यैः समामे बध्यते यैर्व्यामे ।	
अधा जीवेम शरदं शतानि त्वया राजन् गुपिता रक्षमाणाः	७०
अम्ये कव्यवाहनाय स्वधा नमः ॥७१॥ सोमाय पितृमते स्वधा नमः	७२ २२२२



पितृभ्यः सोमवद्भ्यः स्वधा नमः ॥७३॥ यमाय पितृमते स्वधा नमः	७४
एतत् ते प्रततामह स्वधा ये च त्वामनु	७५ २२२५
एतत् ते ततामह स्वधा ये च त्वामनु	७६
एतत् ते तत स्वधा ॥७७॥ स्वधा पितृभ्यः पृथिविषद्भ्यः	७८
स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्षसद्भ्यः ॥७९॥ स्वधा पितृभ्यो दिविषद्भ्यः	८० २२३०
नमो वः पितर ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय	८१
नमो वः पितरो भामाय नमो वः पितरो मन्यवे	८२
नमो वः पितरो यद् घोरं तस्मै नमो वः पितरो यत् क्रूरं तस्मै	८३
नमो वः पितरो यच्छिवं तस्मै नमो वः पितरो यत् स्योनं तस्मै	८४
नमो वः पितरः स्वधा वः पितरः	८५ २२३५
येऽत्र पितरः पितरो येऽत्र यूयं स्थ युष्माँस्तेऽनु यूयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्थ	८६
य इह पितरो जीवा इह वयं स्मः । अस्माँस्तेऽनु वयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्म	८७
आ त्वाम इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।	
यद् घ सा ते पनीयसी समिद् द्वीदयति घवि । इषं स्तोतृभ्य आ भर	८८
चन्द्रमा अस्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।	
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी	८९

॥३०९॥ (ऋ० ८।३।१-४)

मनुर्वैवस्वतः । यज्ञः, यजमानश्च । गायत्री ।

यो यजाति यजात इत् सुनवच्च पचाति च । ब्रह्मोदिन्द्रस्य चाकनत्	१ २२४०
पुरोळाशं यो अस्मै सोमं ररत आशिरम् । पादित् तं शक्रो अंहसः	२
तस्य द्युमाँ असद् रथो देवजूतः स शशुवत् । विश्वा वन्वन्नमित्रिया	३
अस्य प्रजावती गृहे ऽसश्चन्ती दिवेदिवे । इळा धेनुमती दुहे	४

॥३१०॥ (ऋ० १०।१८३।१-२)

प्रजावान् प्राजापत्यः । १ यजमानः; २ यजमानपत्नी । त्रिष्टुप् ।

अपश्यं त्वा मनसा चेकितानं तपसो जातं तपसो विभूतम् ।	
इह प्रजामिह रयिं रराणः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकाम	१
अपश्यं त्वा मनसा दीर्घ्यानां स्वायां तनू ऋत्वये नाधमानाम् ।	
उप मामुष्वा युवतिर्भूयाः प्र जायस्व प्रजया पुत्रकामे	२ २२४५

॥३११॥ ( अथर्व० ७।९७।१-८ ) [ यज्ञः । ]+

॥३१२॥ ( अथर्व० १९।१।१-३ )

ब्रह्मा । यज्ञः, चन्द्रमाश्च । १-२ पथ्यावृहती, ३ पङ्क्तिः ।

सं सं स्रवन्तु नद्यः सं वाताः सं पतत्रिणाः ।

यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि १

इमं होमा यज्ञमवतेमं संस्रावणा उत ।

यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि २

रूपरूपं वयोवयः संरभ्यैनं परिं ष्वजे ।

यज्ञमिमं चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु संस्राव्येण हविषा जुहोमि ३

॥३१३॥ ( अथर्व० १९।५८।१-६ )

ब्रह्मा । यज्ञः, बहुदैवत्यम् । त्रिष्टुप्, २ पुरोऽनुष्टुप्; ३ चतुष्पदाऽतिशक्ती; ५ भूरिक् ।

धृतस्य जूतिः समना सदेवा संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती ।

श्रोत्रं चक्षुः प्राणोच्छिन्नो नो अस्त्वच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः १

उपास्मान् प्राणो ह्ययताम्रपं वयं प्राणं हवामहे ।

वर्चो जग्राह पृथिव्यं नृतरिक्षं वर्चः सोमो बृहस्पतिर्विधत्ता २ १२५०

वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुर्वर्चो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ।

यशसं गावो गोपतिमुप तिष्ठन्त्यायतीर्यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ३

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मा सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।

पुरः कृणुध्वमार्यसीरधृष्टा मा वः सुस्रोचमसो दंहता तम् ४

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि ।

इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः ५

ये देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम् ।

इमं यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम् ६

॥३१४॥ ( अथर्व० १९।५९।२ )\*

ब्रह्मा । अग्निः (यज्ञः) । त्रिष्टुप् ।

यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।

अग्निष्टद् विश्वादा पृणातु विद्वान्तसोमस्य यो ब्राह्मणां आविवेश २ १२५५

+ दे० [ इन्द्रः ] ३२०-३२७ ।

● अथर्व० १९।५९।१-३, = दे० [ अग्निः ] १२१४, १४९४-१४९५ ।

॥३१५॥ ( अथर्व० ७।९९।१ )

अथर्वा । वेदी । भुरिक् त्रिष्टुप् ।

परिं स्तृणीहि परिं धेहि वेदिं मा जामिं मीषीरमुया शयानाम् ।

होतृषदं हरितं हिरण्ययं निष्का एते यजमानस्य लोके

१

॥३१६॥ ( ऋ० १।३६।१३-१४ )

कण्वो घौरः । ( अग्निः ) यूपः । प्रगाथः [ विषमा बृहती+समा सतोबृहती ] ( १३ उपरिष्टाद्बृहती ।

ऐ. प्रा. २।२ चरणच्छेदः ) ।

ऊर्ध्वं ऊ षु णं ऊतये तिष्ठां देवो न संविता ।

ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्विर्विह्वयामहे

१३

ऊर्ध्वो नः पाह्यंसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह ।

कृधी न ऊर्ध्वाश्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः

१४

॥३१७॥ ( ऋ० ३।८।१-१० )

गाथिनो विश्वामित्रः । यूपः, ६-१० यूपाः, ८ विश्वे देवा वा । त्रिष्टुप्; ३,७ अनुष्टुप् ।

अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन ।

यदूर्ध्वस्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद् यद् वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे

१

समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद् ब्रह्म वन्वानो अजरं सुवीरम् ।

आरे अस्मदमतिं बाधमान उच्छ्रयस्व महते सौमगाय

२ १२६०

उच्छ्रयस्व वनस्पते वर्ष्मन् पृथिव्या अर्धि ।

सुमिती मीयमानो वर्चो धा यज्ञवाहसे

३

युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः ।

तं घीरांसः क्वय उन्नयन्ति स्वाभ्योऽ मनसा देवयन्तः

४

जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः ।

पुनन्ति घीरा अपसो मनीषा देव्या विप्र उदियति वाचम्

५

यान् वो नरो देवयन्तो निमिम्युर्वनस्पते स्वधितिर्वा ततक्ष ।

ते देवासः स्वरवस्तस्थिवांसः प्रजावदुस्मे दिधिषन्तु रत्नम्

६

ये बृकणासो अधि क्षमि निर्मितासो यतस्तुचः ।

ते नो व्यन्तु वार्यं देवत्रा क्षेत्रसाधंसः

७

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा धावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।

सुजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्यं केतुम्

८ १२६६

इंसा इव भेणिशो यतानाः झुक्रा वसानाः स्वरवो न आगुः ।  
 उन्नीयमानाः कविभिः पुरस्ताद् देवा देवानामपि यन्ति पार्थः ९  
 शृङ्गाणीवेच्छुङ्गिणां सं ददृश्रे च्चालवन्तः स्वरवः पृथिव्याम् ।  
 वाघान्निर्वा विह्वे भोषमाणा अस्माँ अवन्तु पृतनाज्येषु १०

॥३१८॥ ( वा० य० ६।२-३,६ )  
 ( यूपः । )

अग्नेणीरसि स्वावेश उन्नेतुणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता  
 मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः ।

धामग्रेणास्पृक्ष आन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादृहीः २  
 या ते धामान्युश्मसि गमध्वै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।  
 अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमवभारि भूरि ।

ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्युहामि ।  
 ब्रह्म दृह क्षत्रं दृहायुर्दृह प्रजां दृह ३ २१७०  
 परिवीरसि परि त्वा दैवीविशो व्ययन्तां परीमं यजमानं रायो मनुष्याणाम् ।  
 दिवः सनुरस्येष ते पृथिव्याँल्लोक आरण्यस्ते पशुः ६

॥३१९॥ ( वा० य० २।१४६ )  
 ( यूपः । )

होता यक्षद् वनस्पतिमभि हि पिष्टतमया रभिष्टया रश्नयाधित ।  
 यत्राशिनोश्छागंस्य हविषः प्रिया धामानि यत्र सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया  
 धामानि यत्रेन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामानि यत्राग्नेः प्रिया धामानि यत्र  
 सोमस्य प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि यत्र सवितुः प्रिया धामानि  
 यत्र वरुणस्य प्रिया धामानि यत्र वनस्पतेः प्रिया पार्थाँसि यत्र देवानामाज्यपानाँ  
 प्रिया धामानि यत्राग्नेर्होतुः प्रिया धामानि तत्रैतान् प्रस्तुत्येवोपस्तुत्येवोपारवस्रक्षद्  
 रभीयस इव कुत्वी करदेवं देवो वनस्पतिर्जुषताँ हविर्होतयर्ज ४६

॥३२०॥ ( वा० य० २।१९० )  
 ( यूपः । )

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो मधुशास्त्रः सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्षयत् ।  
 दिवमग्नेणास्पृक्षदान्तरिक्षं पृथिवीमदृहीद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज २० २१७३

॥३२१॥ ( अथर्व० ७।९८।१ )

अथर्वा । इन्द्रः, विश्वे देवाः (हविः) । विराद् त्रिष्टुप् ।

सं धर्हिरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।

सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा

१

॥३२२॥ ( ऋ० १०।१३।१-५ )

आग्निर्हविर्धानः विवस्वानादित्यो वा । हविर्धाने× । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

युजे वां ब्रह्म पूर्य नमोभिर्वि श्लोकं एतु पृथयेव सुरैः ।

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः

१ १२७५

यमे इव यतमाने यदैतं प्र वां भरन् मानुषा देवयन्तः ।

आ सीदतं स्वर्गं लोकं विदाने स्वासस्थे भवतमिन्द्रवे नः

२

पञ्च पदानि रूपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वेमि व्रतेन ।

अक्षरेण प्रति मिम एतामृतस्य नाभावधि सं पुनामि

३

देवेभ्यः कर्मवृणीत मृत्युं प्रजायै कममृतं नावृणीत ।

बृहस्पतिं यज्ञमकृण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं प्रारिरेचीत्

४

सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वन्ते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतभृतम् ।

उभे इदस्योभयस्य राजत उभे यतते उभयस्य पुष्यतः

५

॥३२३॥ ( ऋ० १।२८।५-८ )

आजीगतिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । ५-६ उल्लूखलं, ७-८ उल्लूखलमुसले ।

५-६ अनुष्टुप्, ७-८ गायत्री ।

याश्चिद्धि त्वं गृहेगृह उल्लूखलक युज्यसे ।

इह द्युमत्तमं वदु जयतामिव दुन्दुभिः

५ १२८०

उत स्म ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।

अथो इन्द्राय पातवे सुनु सोममुल्लूखल

६

आयजी वाजसार्तमा ता ह्युश्चा विजर्भतः । हरीं इवान्धांसि बप्सता

७

ता नो अद्य वनस्पती ऋष्वावृष्वेभिः सोतृभिः । इन्द्राय मधुमत् सुतम्

८

॥३२४॥ ( ऋ० ७।१०४।१७ )

मैत्रावरुणिवस्तिष्ठः । प्रावाणः । त्रिष्टुप् ।

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमपं द्रुहा तन्वं गृहमाना ।

वव्राँ अनन्ताँ अव सा पदीष्ट प्रावाणो भन्तु रक्षसं उपब्दैः

१७ १२८४

॥२२५॥ ( अ० १०।७६।१-८ )

सर्पं पेरावतो जरत्कर्णः । प्राघाणः । जगती ।

आ व ऋञ्जस ऊर्जा व्युष्टि—ष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन ।	
उभे यथा नो अहनी सचाभुवा सर्दःसदो वरिवस्यात उम्निदा	१ २२८५
तदु श्रेष्ठं सर्वनं सुनोतना—ऽत्यो न हस्तयतो अद्रिः सोतरि ।	
विदद्ध्यर्षो अभिभूति पौंस्यं महो राये चित् तरुते यदर्वतः	२
तदिद्वयस्य सर्वनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्रैत् ।	
गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिर्णिजि प्रेमध्वरेष्वध्वराँ अशिश्रयुः	३
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत् निर्ऋतिं सेधतामतिम् ।	
आ नो रयि सर्ववीरं सुनोतन देवाव्यं भरत श्लोकमद्रयः	४
दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः ।	
वायोश्चिदा सोमरभस्तरेभ्यो ऽग्नेश्चिदर्च पितुकुत्तरेभ्यः	५
भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो ग्रावाणो वाचा दिवितां दिविर्मता ।	
नरो यत्र दुहते काम्यं मध्वा—घोषयन्तो अभितो मिथस्तुरः	६ २२९०
सुन्वन्ति सोमं रथिरासो अद्रयो निरस्य रसं गविषो दुहन्ति ते ।	
दुहन्त्युधरुपसेचनाय कं नरो हव्या न मर्जयन्त आसभिः	७
एते नरः स्वर्पसो अभूतन य इन्द्राय सुनुथ सोममद्रयः ।	
वामवामं वो दिव्याय धाम्ने वसुवसु वः पार्थिवाय सुन्वते	८

॥२२६॥ ( अ० १०।९४।१-२४ )

अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः । प्राघाणः । जगती; ५,७,१४ त्रिष्टुप् ।

प्रैते वदन्तु प्र वयं वदाम ग्रावभ्यो वाचं वदता वदद्ध्यः ।	
यदद्ध्यः पर्वताः साकमाशवः श्लोकं घोषं भरथेन्द्राय सोमिनः	१
एते वदन्ति शतवत् सहस्रव—दुभि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः ।	
विष्टी प्रावाणः सुकृतः सुकृत्यया होतुश्चित् पूर्वं हविरद्यमाशत	२
एते वदन्त्यविदञ्जना मधु न्यूङ्खयन्ते अर्धि पक्क आमिषि ।	
वृक्षस्य शाखामरुणस्य वपसत—स्ते स्रभर्वा वृषभाः प्रेमराविषुः	३
बुहद् वदन्ति मदिरेण मन्दिने—न्द्रं क्रोशन्तोऽविदञ्जना मधु ।	
संरभ्या चीराः स्वसुभिरनतिषु—राघोषयन्तः पृथिवीमुपब्दिभिः	४ २२९६

सुपर्णा वाचमक्रतोप घव्या खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।	
न्यङ्ङि यन्त्युपरस्य निष्कृतं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्चितः	५
उग्रा इव प्रवहन्तः समायसुः साकं युक्ता वृषणो विभ्रतो धुरः ।	
थच्छ्वसन्तो जग्रसाना अराविषुः शृण्व एषां प्रोथथो अर्वतामिव	६
दशावनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो दशयोक्त्रेभ्यो दशयोजनेभ्यः ।	
दशाभीशुभ्यो अर्चताजरैभ्यो दश धुरो दश युक्ता वहद्भयः	७
ते अद्रयो दशयन्त्रास आशव स्तेषामाधानं पर्येति हर्यतम् ।	
त ऊं सुतस्य सोम्यस्यान्धसोऽशोः पीयूषं प्रथमस्य भेजिरे	८ १३००
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निसतेऽशुं दुहन्तो अध्यासते गर्वि ।	
तेभिर्दुग्धं पपिवान्तसोम्यं मन्विन्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते	९
वृषा वो अंशुर्न किला रिषाधने कावन्तः सद्मिन् स्थनाशिताः ।	
रैवत्येव महसा चारवः स्थन यस्य ग्रावाणो अजुषध्वमध्वरम्	१०
तुदिला अतृदिलासो अद्रयोऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः ।	
अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृपिता अतृणजः	११
ध्रुवा एव वः पितरो युगेयुगे क्षेमकामासः सदसो न युञ्जते ।	
अजुर्यासो हरिपाचो हरिद्रव आ घां रवेण पृथिवीमंशुश्रवुः	१२
तदिद् वदुन्त्यद्रयो विमोचने यामन्नञ्जस्पा इव घेदुपन्दिभिः ।	
वर्षन्तो बीजाभिव धान्याकृतः पृञ्चन्ति सोमं न मिनन्ति वपसतः	१३ १३०५
मुते अध्वरे अधि वाचमक्रताऽऽ क्रीळयो न मातरं तुदन्तः ।	
वि वृ मुञ्चा सुपुषो मनीषां वि वर्तन्तामद्रयश्वायमानाः	१४

॥३२७॥ (ऋ० १०।१७।१-४)

ऊर्ध्वग्रावा सर्प आर्धुदिः । ग्रावाणः । गायत्री ।

प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मणा । धूर्षु युज्यध्वं सुनुत	१
ग्रावाणो अप दुच्छुना मर्षं सेधत दुर्मतिम् । उस्ताः कर्तन भेषजम्	२
ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः । वृष्णे दधतो वृष्ण्यम्	३
ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मणा । यजमानाय सुन्वते	४ १३१०

॥३२८॥ ( ऋ० १०।११।७।१-९ )

मिक्षुराङ्गिरसः । घनान्नदानम् । त्रिष्टुप्, १-२ जगती ।

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददु-रुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः ।	
उतो रयिः पृणतो नोप दस्य-त्युतापृणन् मर्दितारं न विन्दते	१
य आधाय चक्रमानाय पित्वो ऽन्नवान्तसन् रफितायोपजग्मुषे ।	
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरो-तो चित् स मर्दितारं न विन्दते	२
स इन्द्रो जो यो गृहवे ददा-त्यन्नकामाय चरते कृशाय ।	
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्	३
न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः ।	
अपास्मात् प्रेयान्न तदोक्तौ अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्	४
पूणीयादिन्नार्थमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनु पश्येत् पन्थाम् ।	
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा ऽन्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः	५ २३१५
मोषमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् स तस्य ।	
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी	६
कृषन्ति फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः ।	
वदन् ब्रह्मावदतो वनीयान् पृणन्नापिरपृणन्तमभि ध्यात्	७
एकपाद् भूयो द्विपादो वि चक्रमे द्विपात् त्रिपादमभ्येति पश्चात् ।	
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे संपश्यन् पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः	८
समौ चिद्वस्तौ न समं विविष्टः समातरां चिन्न समं दुहाते ।	
यमयोश्चिन्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित् सन्तौ न समं पृणीतः	९

॥३२९॥ ( अथर्व० ३।१४।१-६ )

ब्रह्मा । गोष्ठः, अहः, २ अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः, १-६ गावः, ५ गोष्ठश्च ।

अनुष्टुप्, ६ आर्षी त्रिष्टुप् ।

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रथ्या सं सुभृत्या ।	
अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि	१ २३२०
सं वः सृजत्वर्थमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।	
समिन्द्रो यो धनंजयो मयि पुष्यत् यद् वसु	२
सृजमाना अविभ्युषीरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः ।	
विभ्रंतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन	३ २३२१





परिं धत्त धत्त नो वर्धसेमं ज़रामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।  
 बृहस्पतिः प्रार्यच्छद् वास एतत् सोमाय रात्रे परिधातुवा उं २  
 परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्गृहीनामभिशस्तिपा उं ।  
 श्रुतं च जीवं शरदः पुरुची रायश्च पोषंष्टुपसंध्ययस्व ३  
 एषश्मानमा तिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः ।  
 कृण्वन्तु विश्वे देवा आयुष्टे शरदः शतम् ४  
 यस्य ते वासः प्रथमवास्थं हरांस्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः ।  
 तं त्वा भ्रातरः सुवृधा वर्धमानमनु जायन्तां बहवः सुजातम् ५ २३३५

॥३३४॥ ( ऋ० १०।८।५।३१ )

सावित्री सूर्या ऋषिका । दम्पत्योर्यक्ष्मनाशनम् । अनुष्टुप् ।  
 ये वृष्वंक्षन्द्रं बहंतु यक्ष्मा यन्ति जनादनु ।  
 पुनस्तान् यज्ञियां देवा नयन्तु यत् आगताः ३१

॥३३५॥ ( ऋ० १०।१५।१।४ )

शिरिम्बिठो भारद्वाजः । अलक्ष्मीघ्नम् । अनुष्टुप् ।  
 अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ।  
 शिरिम्बिठस्य सत्वमिस्तेभिष्ठा चातयामसि १  
 यद्वा प्राचीरजगन्तो रौ मण्डूरधाणिकीः ।  
 इता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्धुदयाश्रवः ४

॥३३६॥ ( ऋ० १०।१४।५।४, ६ )

इन्द्राणी । सपत्नीबाधनम् ( उपनिषत् ) । ४ अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।  
 नहास्या नामं गुभ्यामि नो अस्मिन् रमते जने ।  
 परामिव परावतं सपत्नीं गमयामसि ४  
 उप तेऽधां सहमानामभि त्वाधां सहीयसा ।  
 मामनु प्र ते मनो वृत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ६

॥३३७॥ ( ऋ० १०।१६।१।१-५ )

ऋषभो वैराजः, ऋषभः शाकरो वा । सपत्नघ्नम् । अनुष्टुप्, ५ महापङ्क्तिः ।  
 ऋषभं मां समानानां सपत्नानां विषासहिम् ।  
 हुन्तारं शत्रूणां कृषि विराजं गोपतिं गवाम् १ २३४१

अहमस्मि सपत्नहेन्द्र इवारिष्टो अक्षतः ।	
अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्वे अभिष्टिताः	२
अत्रैव वोऽपि नह्याम्युमे आत्नी इव जयया ।	
वाचस्पते नि वैधेमान् यथा मदधरं वदान्	३
अभिभूरहमार्गमं विश्वकर्मण धाम्ना ।	
आ वक्षित्तमा वो व्रतमा वोऽहं समितिं ददे	४
योगक्षेमं व आदायाऽहं भूयासमुत्तम आ वो मुर्धानमक्रमीम् ।	
अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूका इवोदुका न्मण्डूका उदुकादिव	५ २३४५

इत्यायुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ।

# दैवतसंहितायां आयुर्वेद-प्रकरणस्य उपमा-सूची ।

अंशुः इव अथ. ५,२९,१२; ७४९ आ प्यायतां अयम् ।  
 अंशुगः शिशुकः यथा अथ. ६,१४,३; ४८५ निर्बलासः प्र पत ।  
 अग्निः इव अथ. २,२५,४; ४१९ तान् अनुदहन् इहि ।  
 अग्निः इव अथ. ५,१४,१३; १६०३ एतु प्रतिकूलम् ।  
 अग्निः इव अथ. ५,२२,२; ५३२ अभिदुन्वन् । उच्छोचयन् ।  
 अग्निः वने न अ. १८,१,३९; २००५ व्यसृष्ट शोकम् ।  
 (यथा) अग्निः वृक्षान् अ. १०,३,१४; १४६६ एवा सपत्नान् ।  
 अग्नि इव अ. ८,२,४; ३० जातं अग्नि सं धमामि ।  
 अग्नेः इव अ. ७,४५,२; ६८६ अस्य दहतः दावस्य पृथक् ।  
 अग्नेः इव अ. ८,७,१५; ३३८ विजन्त आभृताभ्यः ।  
 अग्नेः इव अ. ६,२०,१; १७९ अस्य दहतः एति शुष्मिणः ।  
 (यथा यशः) अग्निहोत्रे अ. १०,३,२२; १४७४ एवा मणिः ।  
 (यथा) अध्या नीचीनं दुहे अ. ६,९१,२; २०० न्यग् भवतु ते रपः ।  
 अजः पाः इव ऋ. १०,९४,१३; २३०५ अत्रयः यामन् तद् इद् ।  
 अत्रिवत् अ. ५,२३,१०; ७०५ क्रिमयः हन्मि ।  
 अधि ज्यामिव धन्वनि अ. ४,४,७; १३३८ अहं ते पसः  
 अ. ६,१०१,२; १३४५ आ तनोमि ।  
 अत्यः न ऋ. १०,७६,२; २२८६ अद्रिः हस्तयतः सौतरि ।  
 अध्वर्यवः घर्मिणः सिष्वि० ऋ. ७ १०३,८; १००१ मण्डूकाः गुह्याः ।  
 अनड्वान् जगतामिव अ. ८,५,११; १४४१ उच्यते ओष-  
 ,, अ. १९,३९,४; ४५० धानाम् ।  
 अनड्वान् इव व्रजम् अ. ३,११,५; ७६ प्रविशतं प्राणापानौ ।  
 अ. ७,५३,५; १४७  
 अनस्वती इव वाहिनी अ. १०,१,१५; १६३० तेनाभि गाहि भञ्जती ।  
 अनुकूलं इव उदकम् अ. ५,१४,१३; १६०३ वर्ततां कृत्या ।  
 (यथा) अभिचक्रं देवाः अ. ३,९,१; १७९७ तथाप कृणुता पुनः ।  
 (यथा स्म ते विरोहतः) अभि तप्तं अ. ४,४,३; १३३४ शुष्मवत्तरं ।  
 अत्रात् इव वृष्टयः ऋ० १०,७५,३; १०३८ सिन्धुः एति ।  
 अत्रात् इव जामयः अ. १,१७,१; ५५५ हिराः हतवर्चसः तिष्ठन्तु  
 (यथा) अमृतं देवेषु अ. १०,३,२५; १४७७ एवा मणिः ।  
 अयः न अ. १८,३,२२; २१०५ देवाः जनिमा धमन्तः ।

अर्वता इव ऋ. १०,९४,६; २२९८ एषां रोथथः गृष्वे ।  
 अर्वतीः इव अ. १०,४,२१; ८२८ नयामि ।  
 अवध्वमः इव अ. ५,२२,३; ५३३ अरणः ।  
 अवसृष्टः न पशौः वा. य. २०,४५; ३७२ स्मन्या समञ्ज ।  
 अश्रेष्माणः अधारयन् अ. ३,९,२; ७९८ तथा तत् मनुना ।  
 अश्वः इव अ. १०,१,१९; ६३४ वि वर्तताम् ।  
 अश्व इव अ. ५,५७,४; १९१६ कायम् ।  
 अश्व इव अ. १९,५७,४; १९१६ नीनाहम् ।  
 अश्व इव नडम् अ. १२,२,५०; २६६ अग्निः आन्तकात् अनुवपते ।  
 अश्वं इव अश्वामिधान्या अ. ५,१४,६; १५९६ ता तस्मै नयामि से ।  
 अश्वः इव ऋ. १०,९७,३; ३०३ बोरुधः सजित्वरीः ।  
 (मृगाः) अश्वः इव अ. १९,३८,२; २०३ विष्वक्चः यक्षमाः ईरते ।  
 अश्वः न ऋ. १०,७५,७; १०४२ चित्रा सिन्धुः ।  
 (विषिते हासमाने) अश्वे इव ऋ. ३,३३,१; १०२२ पर्वतानां ।  
 (यथा) ऽसितः प्रथयते अ. ६,७२,१; १३४० एवा ते अङ्गेन ।  
 (इषुम्) अस्ता इव अ. १९,१४,३; १५५३ अपेतो जङ्घिडामतिं  
 (यथा) अहानि अनुपूर्वम् अ. १२,२,२५; २४१ एवा आशि  
 (यथा) अह्ना रात्री समवती अ. ४,१८,१; ३८८ तथा ऋणोमि  
 अहा इव सूर्यः ऋ. ६,६१,९; १०६७ ऋताक्वी अन्याः स्वमूः  
 (यथा यशः) आदित्ये अ. १०,३,१८ १४७० एवा मणिः कीर्ति  
 आपः मलं इव अ. २,७,१; ६६८ सर्वान् शपथान् अधि ।  
 (पक्के) आमिषे अधि ऋ. १०,९४,३; २२९५ सूभर्वाः वृषभाः  
 आर्त्नी इव ज्यया अ. १,१,३; १४१७ इहैव उर्भा अभि वि तनु ।  
 आर्त्नी इव ज्यया ऋ. १०,१६६,३; २३४३ अत्रैव व. अपि ।  
 इष्टः इव अ. ६,१४,३; ४८५ हायन, उप द्राहि ।  
 इन्द्र इव विहजं बलम् अ. १९,२८,३; १५१५ हृदः सपत्नानां  
 इन्द्रः इव ऋ. १,१६६,२; २३४२ अहं अक्षत अस्मि ।  
 इन्द्रः इव अ. ४,५,७; ६१९ अहं अरिष्टः अक्षितः ।  
 इन्द्रः इव दस्यून् असुगन् अ. १०,३,११; १४६३ मे शत्रून् ।  
 इन्द्र इन्द्रियाणि इव अ. १,३५,३; ६१ दक्षमाण. हिरण्यं भिन्नत ।

इन्द्रं न वृत्रतूर्ये धने हिते ऋ. ६, ६१, ५; १०६३ यः त्वा उप ब्रूते  
( धन्वन् ) इरा इव अ. ५, १३, १; ८३४ ते विषं नि जजास ।  
इषांकां इव अ. ७, ५६, ४; ८५५ तानि त्वं सं नमः ।  
( यथा ) इषुका परापतदव सृष्टा अ. १, ३, ९; ५७९ एवा ते मूत्रं ।  
इळावन्तः इव ऋ. १०, ९४, १०; २३०२ सदमित् आशिताः ।  
( मध्यमशीः ) उग्रः इव अ. ४, ९, ४; ५८३ ततः यक्षं वि बाधसे ।  
उग्राः इव प्रवहन्तः ऋ. १०, ९४, ६; २२९७ ग्रावाणः समाययुः ।  
( यथा ) उदकं अपपुषः अ. ६, १३९, ४; ६८० एवा नि शुष्य ।  
उदद्गुतमिव दारु अ. १०, ४, ३-४; ८१०-११ अरसं विषं उग्रम् ।  
उद्गा अग्निं इव अ. ७, ४५, २; ६८६ ईर्ष्यां शमय ।  
उर्वरीः इव साधुया अ. १०, ४, २१; ८२८ ओषधीनां अहं वृणे ।  
( यथा ) ऋणं सं नयन्ति अ. १९, ५७, १; १९१३ एवा दुष्वन्त्यं  
अ. ६, ४६, ३; ६३५ अप्रिये ।  
ऋणात्, ऋणं इव अ. १९, ४५, १; ५९२; संनयन् कृत्यां ।  
( यथा ) ऋतवः ऋतुभिः अ. १२, २, २५; २४१ एवा धातः ।  
ऋषिणा इव मर्नषिणा अ. ८, ५, ८; १४३८ स्नाक्त्येन मणिना ।  
( वारणी ) एणी इव अ. ५, १४, ११; १६०१ कृत्या कर्तारं उत् ।  
ककुत्सलमिव जामयः अ. १८, ४, ६६; २२१६ अभि एनं भूम ।  
कक्ष्या युक्तं इव ऋ. १०, १०, १३; १९६६ त्वां अन्या परि ।  
कण्ववत् अ. ५, २३, १०; ७०६ किमयः हन्मि ।  
कन्या इव तुज्ञा अ. ६, २२, ३; ९६७ एजाति गल्हा ।  
( मर्याय इव ) कन्या ऋ. ३, ३३, १०; १०३१ शश्वचै ते ।  
( यथा यशः ) कन्यायाम् अ. १०, ३, २०; १४७२ एवा मणिः ।  
कर्पः इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।  
( यथा ) कलां संनयन्ति अ. १९, ५७, १; १९१३ एवा सर्वं  
अ. ६, ४६, ३; ६३५ अप्रिये ।  
कुमारः सर्वकेशकः इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।  
( उदकं ) कुम्भिनीः इव ऋ. १, १९१, १४, ७८७ मयूर्यः ते विषं ।  
कशः इव रोहितम् अ. ४, ४, ७; १३३८ अनवगलायता सदा ।  
अ. ६, १०१, ३; १३४५ ।  
क्रीलयः न मातरम् ऋ. १०, ९४, १४, २३०६ सुतं अश्वरे अधि ।  
क्रीवा इव अ. ८, ६, ११; १३७८ वने प्रनृत्यन्तः ।  
खर्गलाः इव ऋ. ७, १०४, १७; २२८४ या नक्तं प्राजिगाति ।  
( दृषदा ) खल्वान् इव अ. २, ३१, १; ६९१ सं पिनाष्मि किमीन् ।  
( दृषदा ) खल्वान् इव अ. ५, २३, ८; ७०३ मष्मषा नि आकरम् ।  
गवां अह न मायुः ऋ. ७, १०३, २; ९९५ मण्डूकानां वग्नुः ।

( मुष्काबहो ) गवामिव अ. ३, ९, २; १७९८ कृणोमि वध्नि ।  
गां उक्षणमिव रज्ज्वा अ. ३, ११, ८; ७९ अभि त्वा ।  
गावः गोघ्रात् इव ऋ. १०, ९७, ८; ३०८ ओषधीनां शुष्माः ।  
( रिहाणा मातरा शुभ्रे ) गावा ऋ. ३, ३३, १; १०२२ पर्वतानां ।  
गावो न हव्या ऋ. १, १८७, ११; १११८ हे पितो वचोभिः ।  
गोषु युधः न ऋ. १०, ३०, १०; ९१० नियवं चरन्तीः ।  
गोष्ठामिव अ. २, १४, ६; १६५३ आसां धामानि परि असरन्  
( वत्सं ) गौः इव ऋ. १०, १४५, ६; २३४० ते मनः मां अनु ।  
" " अ. ३, १८, ६; ३६९ मामनु ते मनः प्र धावतु ।  
( स्पन्दना ) गौः स्थालीं अ. ८, ६, १७; १३८३ पाण्यो पदा ।  
( अचितं ) ग्रामं इव अ. ४, ७, ५; ८०२ वचसा परि स्थाप० ।  
घर्म इव अभितपन् अ. १९, २८, ३; १५१५ द्विषतो नितपन् मणे ।  
चतुष्पदामिव च्छदिः अ. ३, ७, ३; १९४ अदो यदवरोचते ।  
( यथा यशः ) चन्द्रमसि अ. १०, ३, १८; १४७० मणिः कर्ति भूति ।  
( येषन्तं ) चरुमिव अ. ४, ७, ४; ८०१ वचसा परि स्थापयामसि ।  
छायां इव अ. ८, ६, ८; १३७४ प्र तान् सूर्यः अनीनशत् ।  
( रात्री ) जगत् इव अ. ६, १२, १; ८४६ हंसात् अन्यत् विषं ।  
जनं इव शेवाधिम् अ. ५, २२, ४; ५४४ तक्मानं परि दग्मसि ।  
जमदग्निवत् अ. ५, २३, १०; ७०५ किमयः हन्मि ।  
जयतां इव दुन्दुभिः ऋ. १, २८, ५; २२८० द्युमतमं वद ।  
( यथा यशः ) जातवेदसि अ. १०, ३, १९; १४७१ एवा मणिः कर्ति  
जाया पतिं इव अ. १८, २, ५१; २०७५ वाससा अभ्येनं ।  
( पत्या नुशा ) जाया इव अ. १०, १, ३; १६१८ शद्रकृता कर्तार  
जाया इव पत्ये ऋ. १०, १०, ७; १९६० अहं तन्वं वि रिरिच्याम् ।  
जालेन अभिहिता इव अ. १०, १, ३०; १६४५ तमसा आश्रुताः ।  
( यथा ) जीवाः अदितेः उपस्थे अ. २, २८, ४, ४ त्वां पिता गुपिता ।  
( यथा ) जीवगृभः अ. १०, ९७, ११; ३११ तथा यक्षस्य आत्मा ।  
ज्यामिव धन्वनः अ. ५, १३, ६; ८३९ मन्योः विमुञ्चामि ।  
( यथा ) समं ज्योतिः सूर्येण अ. ४, १८, १; ३८८ तथा कृणोमि ।  
ज्योतिषा इव अ. ४, १९, ३; ३९८ अभि दीपयन् अग्रमेषि ।  
तक्मन्वी इव अ. ५, २२, ७; ५३७ तां धूनुहि ।  
तम इव अ. ८, २, १२; ३८ सर्वं दुर्भूतं अपहन्मसि ।  
तमस इव ज्योतिः अ. ५, १३, ३; ८३६ उदेतु सूर्यः ।  
( प्रदोषं ) तस्काराः इव ऋ. १, १९१, ५, ७७८ अदृष्टाः विरवदृष्टाः ।  
( यथैव ) तृप्यते मयः अ. १९, २, ५; ९३२ तास्त आदत्त भेषजीः ।

(यथा) तेज आहितम् अ. १०,३,१७ १४६९ एवा मणिः कीर्ति  
 (यथा अन्तस्तिष्ठति) तेजन्म अ. १,२,४; ६६७ एवा रोमं च ।  
 (उद्यन्) त्वचमिव भूम्याः अ. १९,२८,४; १५१६ शिर एषां ।  
 दिवि देवाः इव अ. ६,८०,२; १५८९ त्रयः कालकाजाः त्रिताः ।  
 दिवो वृक्षमिवाशनि अ. ६,३७,२; १७७४ शतारं अत्र नो जहि ।  
 दुहिता इव पितरम् अ. १०,१,२६; १६४१ जानीहि कृत्ये ।  
 हतिं न शुष्कम् ऋ. ७,१०३,२; ९९५ आपः शयानं एनम् ।  
 हतिं (इव) सुरावतो ऋ. १,१२१,१०; ७८३ सूर्यं विषम् ।  
 (निरूमाणं) इतोरिव अ. ६,१८,३; ६८४ ते ईर्ष्यां मुद्यामि ।  
 दशः इव अ. ४,३७,११; ७२५ प्रियः भूत्वा ।  
 देवः न सविता ऋ. १,३६,१३; २२५७ (यूप), ऊर्ध्वः तिष्ठ ।  
 देवा इव असुरमायया अ. ३,९,४; १८०० येन श्रवस्यवः चरथा  
 यां इव उपरि अ. १८,३,२९; २११२ ऊर्ध्वं भानुं सविता ।  
 " " अ. १८,३,२५-२८, ३०-३५; २१०८-  
 ११, २११३-१८ बाहुच्युता पृथिवी  
 (परि) यां इव सूर्यः अ. ६,१२,१; ८४६ अहीनां जनिमागमम् ।  
 (इमे) यावापृथिवी वि इतः अ. ३,३१,४; १७१ अहं सर्वेण ।  
 यौः इव अ. ६,१४२,२; ११२५ तत् उच्छ्रयस्व ।  
 द्रुपदादिव मुसुचानः वा. य. २०,२०; ११०५ आपः मा एनसः ।  
 " " अ. ६,११५,३; १७२९ आपः शुन्धन्तु ।  
 धनपालः धना इव अ. १९,३५,२; १५६२ स नो रक्षतु जङ्घिः ।  
 धनुः इव अ. ६,१०१,२; १३४४ आ तानय पसः ।  
 " " अ. ४,४,६; १३३७ " "  
 (यथा) नकुलः विच्छिद्य अ. ६,१३९,५; ६८१ एवा कामस्य  
 नडं इव अ. ४,१९,१; ३९६ प्रजां छिन्धि वार्षिकम् ।  
 (यथा) नडं काशिपुने स्त्रियो अ. ६,१३८,५; ५०२ एवा भिनद्या  
 नडाः इव अ. ६,१३७,२-३; ४६४-६५ केशाः वर्धन्ताम् ।  
 नदी फेनमिवा वहत् अ. १,८,१; ७२७ इदं हविः यातुधानान् ।  
 नावा इव अ. ४,३३,७; १७६२ द्विषो नो अति पारय ।  
 निष्कमिव अ. ५,१४,३; १५९३ कृत्यां देवाः प्रति मुञ्चत ।  
 (यथा) पतन्ति पक्षिणः अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं जरायुणा  
 पत्या इव जाया अ. ६,२२,३; ९६७ एहं तुन्दाना ।  
 पथ्या इव सूरिः अ. १८,३,३९; २१२२ वि श्लोक एति ।  
 (सूरेः) पथ्या इव ऋ. १०,१३,१; २२७५ श्लोकः एतु ।  
 पन्थानः दिशं दिशं वि अ. ३,३१,४; १७१ अहं सर्वेण ।  
 पयसा इव धेनवः ऋ. १०,७५,४; १०३९ त्वां वाश्याः अर्षन्ति ।

(यथा यशः) परमेष्ठिनि अ. १०,३,२४; १४७६ एवा मणिः कीर्ति  
 (इष्वाः) पर्ण इव ऋ. १०,१८,१४; १९५३ मां प्रतीचीन ।  
 (सरौ) पर्ण इव अ. ५,२५,२; १३४६ शेषो गर्भस्य रेतोधाः ।  
 (पूतं) पवित्रेण इव वा. य. २०,२०; ११०५ आपः शुन्धन्तु ।  
 आज्यं अ. ६,११५, ३; १७१९  
 पिता इव पुत्रान् अ. २,१३,१; २३३१ अभिरक्षतात् इमम् ।  
 पितरं न पुत्रः ऋ. ७,१०३,३; ९९६ अन्यः अन्यं (मण्डकं) ।  
 पियासः निष्कमिव अ. १९,५७,५; १९१७ देवपीयुः प्रति ।  
 पुत्र इव पितरम् अ. ५,१४,१०; १६०० कृत्ये गच्छ ।  
 (यथा) पुत्रं जनादिति अ. ६,८१,३; १३६१ त्वष्टा तं अस्त्यै ।  
 (यथा न) पूर्वं अपरः जहाति अ. १२,२,२५; २४१ एवा धातः ।  
 पूषा इव ऋ. ६,६१,६; १०६४ नः सनिं रद ।  
 (यथेयं) पृथिवी गर्भं आ दधे अ. ५,२५,२; १३४७ एवा दधामि  
 " " अ. ६,१७,१-४; १३६२-६५ एवा तं ।  
 (यथा यशः) पृथिव्याम् अ. १०,३,१९; १४७१ एवा मणिः ।  
 पौञ्जिष्ठ इव कर्वरम् अ. १०,४,१९; ८२६ शीर्षाणि अग्रभ्रम ।  
 (यथा यशः) प्रजापतौ अ. १०,३,२४; १४७६ एवा मणिः कीर्ति  
 बन्धमिव अ. ५,१४,१०; १६०० अवकामी ।  
 (यथा) बाणः सुसंशितः अ. ६,१०५,२; ४८७ एया त्वं कासे ।  
 बिसखा इव ऋ. ६,६१,२; १०६० ऊर्मिभिः गिरीणां सानु ।  
 (वपन्तः धान्यकृतः) बीजम् ऋ. १०,९४,१३; २३०५ प्रावाणः ।  
 (यथा) बीजं उर्वराया अ. १०,६,३३; १५१० एवा मथि प्रजा ।  
 ब्राह्मणा इव व्रतचारिणः ऋ. ७,१०३,१; ९९४ मण्डकाः वाचं ।  
 ब्राह्मणासः अतिरात्रे न सोमे ऋ. ७,१०३,७; १००० मण्डकाः ।  
 भग इव यामेषु अ. ६,२१,२; ४५८ भेषजानां श्रेष्ठं असि ।  
 (इदं) भुवनं विश्वं वि अ. ३,३१,५; १७२ अहं सर्वेण पाप्मना ।  
 (यथा) भूमिः मृतमनाः अ. ६,१८,२; ६८३ एवा ईर्ष्याः ।  
 मण्डकाः उदकात् इव ऋ. १०,१६६,५; २३४५ मे पदान् अधः  
 मत्तः इव अ. ६,२०,१; १७९ विलपन् ।  
 मधुपर्कं यथा यशः अ. १०,३,२१; १४७३ एवा मणिः ।  
 (उग्रः) मध्यमशीः इव ऋ. १०,९७,१२; ३१२ ओषधीः यश्मं ।  
 (यथा) मनः (पतति) अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं जरायुणा ।  
 यथा मनः मनस्कैतैः परा अ. ६,१०५,१; ४८६ एवा कासे प्रपत ।  
 (यथा पुरा) मनवे गातुम् ऋ. १०,७६,३; २२८७ तद्वत् व्याप्तोत् ।  
 मनसः न प्रयुक्ति ऋ. १०,३०,१; ९०१ सोमः देवत्रा अपः ।  
 (यथा) मञ्जुषो मनः अ. ६,१८,२; ६८३ एवा ईर्ष्यां मृतं मनः ।

मर्यः न कन्याणीभिः ऋ. १०,३०,५; २०५ याभिः सोमः ।  
 मर्य इव योषाः अ. १८,४,१०; २२१० सोमः शतयामना ।  
 माता इव अ. २,२८,५; ५ अस्मै शर्म यच्छ ।  
 माता इव पुत्रम् अ. २,२८,१; १ मित्रः एवं पात्वंहसः ।  
 (सं)मातरः इव अ. ८,७,२७; ३५० पुष्पवतीः दुहामस्या ।  
 (उगनी इव) मतरः ऋ. १०,९,२; ८८० तस्य भाजयत इहनः  
 (स) मातरा चित् न ऋ १०,११७,९; २३१९ ज्ञाती चित् ।  
 माता पुत्रं यथा अ. १८,२,५०; २०७४ अभ्येनं भूम ऊर्णुहि ।  
 (यथा) माता पुत्रं सिचा ऋ. १०,१८,११; १२५० एनं हे भूमे  
 माता इव पुत्रम् वा. य. १२,३५; ११०० सुपत्नीः विभ्रत ।  
 माता इव पुत्रेभ्यः अ. ६,३०,३; ४७२ शमि केशेभ्यः मृड ।  
 मुष्करं यथा अ. ६,१४,२; ४८४ बलासं निः क्षिणोमि ।  
 मूलमुर्गवा इव अ. ६,१४,२; ४८४ छिनाद्यि अस्य बन्धनम् ।  
 मृगं इव अ. ५,१४,१२; १६०२ तं कृत्याकृतं पुनः गृह्णातु ।  
 मृगी इव अ. ५,१४,११; १६०१ कृत्या कर्तारं उद् ऋच्छतु ।  
 यथा यमस्य गृहे त्वा अ. ६,२९,३; १५८७ तथा आभूकम् ।  
 यथा यमस्य सादन अ. १८,३,७०; २१४७ पुनर्देहि वनस्पते ।  
 यथा यमाथ हर्म्य अ. १८,४,५५; २२०५ एवा वपामि ।  
 यमे इव ऋ. १०,१३,२; २२७६ युवां यतमने यदा एतम् ।  
 अ. १८,३,३८; २१२१ ।  
 यथा यशः यजमाने अ. १०,३,२३; १४७५ एवा मणिः कीर्तिं ।  
 यथा यशः यज्ञे अ. १०,३,२३; १४७५ एवा मणिः कीर्तिं ।  
 युषयोः चित् न समा ऋ. १०,११७,९; २३१९ तथा ज्ञाती चित् ।  
 यूथा इव सुमति पश्वः अ. १८,३,२३; २१०६ उग्रः देव ना ।  
 पीप्यान यं षा इव ऋ. ३,३३,१०; १०३१ वयं ते नि नंसै ।  
 (सुखः) रथः इव अ. ५,१४,५; १५९५ कृत्या कृत्याकृतं ।  
 अ. ५,१४,१३; १६०३ ।  
 रथः इव ऋ. ६,६१,३; १०७१ बृहती विभ्वने कृता ।  
 (यथा सुचक्र सुपावः रथः अ. ४,१२,६; ४२६ तथा प्रति ।  
 (आशवः) रथाः इव अ. ३,९,५; १८०१ शपथेभिः उत् ।  
 रथान् इव अ. ५,१३,६. ८३९ सात्रास हस्य मन्योः वि सुम्नामि ।  
 (ऋभुः) रथस्य अगानि इव अ. ४,१२,७; ४२७ परुषा परुः ।  
 रथस्य इव अ. १०,१,८; १६९३ यस्ते परुषि संदधौ ।  
 (यथा यशः) रथे अ. १०,३,२०; १४७२ एवा मणिः ।  
 रथी इव ऋ. ५,८३,३; ९७६ कश्या अश्वान् अभिशिपन् ।  
 रथ्या इव ऋ. ३,३३,२; १०२३ युवां समुद्रं अच्छा याथः ।

(प्रबाबधाना) रथ्या इव ऋ. ७,९५,१; १०७३ अप. प्रबाबधाना ।  
 रथ्या इव चका ऋ. १०,११७,५; २३१५ रायः आ वर्तन्ते ।  
 " ऋ. १०,१०,७ १९६० [आवां] वि वृहेव चित् ।  
 " ऋ. १०,१०,८ १९६१ तेन अन्येन वि वृह ।  
 राजा इव युष्वा ऋ. १०,७५,४; १०३९ त्वमित् सिचौ नयसि ।  
 राजानः समितौ इव ऋ. १०,९७,६; ३०६ ओषधीः समगमत ।  
 रिश्यस्य इव परिशासम् अ. ५,१४,३; १५२३ त्वचः परि ।  
 रैवत्या इव ऋ. १०,९४,१०; २३०२ महसा चारतः स्थन ।  
 लिबुजा वृक्षं इव ऋ. १०,१०,१३; १९६६ त्यां अन्या ।  
 " " ऋ. १०,१०,१४; १९६७ अन्यः त्वां ।  
 वत्सो धारुरिव मातरम् अ. ४,१८,२; ३८९ त प्रत्यगुप पयताम् ।  
 वत्समिव मातरा संरिहाणे ऋ. ३,३३,३; १०२४ युवां अया०  
 वधूं इव वहतौ अ. १०,१,१; १६१६ चिकित्सवः यां ।  
 वपुषी इव ऋ. १०,७५,७; १०४२ दर्शता ।  
 (देवेषु) वरुणो यथा अ. ६,२१,२; ४५८ भेषजानां श्रेष्ठं असि ।  
 वर्चं वेशन्त्या इव अ. १,३,७; ५७७ प्र ते भिनक्षि मेहनम् ।  
 वषट्कारे यथा यशः अ. १०,३,२२; १४७४ एवा मणिः ।  
 वशंश्रान्ता वधूः इव अ. ४,२०,३; ७५६ स भूमिं आ ।  
 वाका अपचिता इव अ. ६,२५,१-३; १६८२-८४ताः सर्वाः नश्यन्तु  
 (यथा) वातः अ. १,११,६; १४१० एवा त्वं पत ।  
 वातः अभ्रं इव अ. ८,६,१९; १३८५ पिङ्गः स्त्रीभागान् ।  
 (यथा) व तश्च्यावयति अ. १०,१,१३; १६२८ एवा सर्वं ।  
 (यथा) वातश्च्यावयति अन्तरिक्षाद्भ्रम् " " ।  
 यथा वातः न्यग् वाति अ. ६,९१,२; २०० न्यग भवतु ते रपः ।  
 वात इव वृक्षान् अ. १०,१,१७; १६३२ नि मृणीहि ।  
 (यथा) वातः वनस्पतीन् अ. १०,३,१३; १४६५ एवा मे ।  
 (यथा) वातश्च अभिश्च अ. १०,३,१४; १४६६ " " ।  
 (दिवि) वाता इव श्रिताः ऋ. १,१८७,४; १०११ त्ये रसाः ।  
 (यथा) वातेन प्रक्षीणाः अ. १०,३,१५; १४६७ एवा सपत्नान् ।  
 (पथा) वार् इव ऋ. १०,१४५,६; २३४० मनः मामनु ।  
 विद्धस्य इव अ. १०,१,२६; १६४१ कृत्ये पदं नय ।  
 (नानदती) विनद्धा गर्दभी इव अ. १०,१,१४; १६२९ कृत्ये  
 वृक इव अविमतः अ. ६,३७,१; १७७३ सहस्राक्षः उप प्रागात् ।  
 वृक्षः इव अ. ४,७,५; ८०२ तिष्ठ स्थान्नि ।  
 वृक्ष इव विद्युता हतः अ. ७,५९,१; १७७६ आ मूलात् अनु ।  
 वृक्षादिव स्रजम् अ. ८,६,२६; १३९२ कृत्वा त्रिये प्रति ।

(यथा) वृत्रः अपः तस्तम्भ अ. ६, ८५, ३; १८४ एवा ते यक्ष्मां वृषण्यन्ती इव कन्यला अ. ५, ५, ३; ४३० वृक्षं वृक्षं आरोहसि ।  
 वृषभः न ऋ. १०, ७५, ३; १०३८ सिन्धुः रोहवत् एति ।  
 व्याघ्रः श्वपदामिव अ. १९, ३९, ४; ४५० उत्तमोऽसि ओषधीनाम् ।  
 ,, ,, अ. ८, ५, ११; १४४१  
 शका इव अ. ३, १४, ४; २३२३ इहो पुष्यत ।  
 शकुनेः इव अ. २, २५, २; ४१७ दुर्णाम्नां शिरो वृश्चामि ।  
 शतवत् ऋ. १०, ९४, २; २२९४ एते वदन्ति ।  
 (यथा) शकं संनयन्ति अ. ६, ४६, ३; ६३५ दुष्वप्यं द्विषते ।  
 ,, ,, ,, अ. १९, ५७, १; १९१३ दुष्वप्ये अप्रियो ।  
 शमिता न त्मन्या समञ्जन् वा. य. २०, ४५; ३७२ देवः यशं ।  
 शरं इव अ. ४, ७, ४; ८०१ ते मदं मदावति वि पातयामसि ।  
 शरणं न वृक्षम् ऋ. ७, ९५, ५; १०७६ शर्मन् दधानाः उप स्थयाम  
 शाक्तस्य इव शिक्षमाणः ऋ. ७, १०३, ५; ९९८ मण्डूकानां ।  
 शाखां मधुमतीं इव अ. १, ३४, ४, ४८१ मां इत किलत्वं ।  
 शारिशाका इव अ ३, १४, ५; २३२४ शिवो वो गोष्ठो भवतु ।  
 शिशुं इत् न मातरः ऋ. १०, ७५, ४; १०३९ त्वां वाश्राः अर्षन्ति ।  
 शुने पेष्ट्रं इव अवक्षामम् अ. ६, ३७, ३; १७७५ तं प्रत्यस्यामि ।  
 शुनां कपिः इव दूषणः अ. ३, ९, ४; १८०० बन्धुरा कावचस्य च ।  
 शृंगिणां शृंगाणि इव ऋ. ३, ८, १०; २२६८ स्वरवः पृथिव्यां ।  
 श्येनः इव अ. ५, ३०, ९; १०६ यक्षमः प्राप्यत ।  
 श्वा इव अ. ४, ३७, ११; ७२५ एकः गन्धर्वः ।  
 सखा सख्युः न अ. १८, ४, ६०; २२१० प्र वा एति इन्दुः ।  
 (यथा) सत्यं आहितम् अ. १०, ३, २५; १४७७ एवा मणिः ।  
 समुद्रः इव अ. ६, १४२, २; ११२५ अधि अक्षितः ।  
 समुद्रं न सुभुवः अ. ४, ८, ७; ८०४ आस्वन्तः तस्थिषांसं ।  
 समुद्रस्य उदधेः इव अ. १, ३, ८; ५७८ ते वस्तिविलं विषितम् ।  
 सविता इव अ. १९, ४५, ४; ५९५ ध्रुवस्तिष्ठसि चार्थः ।

सहस्रवत् ऋ. १०, ९४, २; २२९४ एते प्रावाणः वदन्ति ।  
 सिंहस्य इव अ. ८, ७, १५; ३३८ स्तनधोः सं विजन्ते ।  
 सिन्धुं इव नावा अ. ४, ३३, ८; १७६३ अति पर्षा स्वस्तये ।  
 सुपर्णो वसतेः इव अ. ६, ८३, १; ५१३ अपचितः प्र पतत ।  
 सूरौ न श्रुता अ. १८, ४, ५९; २२०९ त्वं कृपा रोचसे ।  
 सूर्यः इव अ. १९, ३३, ५; १८३७ आभाहि प्रदिशः चतस्रः ।  
 सूर्य इव दिवमारुह्य अ. ८, ५, ७; १४३७ वशी कृत्या वि बाधते ।  
 (यथा) सूर्यः अतिभाति अ. १०, ३, १७; १४६९ मणिः कीर्ति ।  
 (यथा न्यक तप ते) सूर्यः अ. ६, ९१, २; २०० न्यग् भवतु ते ।  
 (यथा) सूर्यो मुच्यते तमसः अ. १०, १, ३२; १६४७ एव अहं ।  
 (वीधे) सूर्यमिव सर्पन्तम् अ. ४, २०, ७; ७६० मा पिशाचं ।  
 (यथा) सूर्यस्य रश्मयः अ. ६, १०५, ३; ४८८ एवा त्वं कासे ।  
 सेना इव अ. ४, १९, २; ३९७ एषि त्विषीमती ।  
 सोमः इव यामेषु अ. ६, २१, २; ४५८ वीरुधानां वसिष्ठम् ।  
 (यथा यशः) सोमर्षाधे अ. १०, ३, २१; १४७३ मणिः कीर्ति ।  
 स्तुकां इव अ. ७, ७४, २; ५०४ जघन्यां आसां आ छिनद्मि ।  
 स्तेनः इव व्रजम् ऋ. १०, ९७, १०; ३१० ओषधीः विश्वाः ।  
 स्नुषा इव श्वशुरादधि अ. ८, ६, २४; १३९० सूर्यात् परि सर्पन्ति ।  
 स्वजः इव अ. ५, १४, १०; १६०० अभिष्ठितः दश ।  
 स्विन्नः स्नात्वा मलादिव अ. ६, ११५, ३; १७२९ आपः शुन्धन्तु  
 वा. य. २०, २०, ११०५ मैनसः ।  
 हंसाः इव ऋ. ३, ८, ९; २२६७ स्वगवः नः आगुः ।  
 हरी इव अन्यांसि ऋ. १, २८, ७; २२८२ आयजी उल्लखल०  
 (यथेदं) हर्म्यम् अ. ४, ५, ५; ६१७ तेषां अक्षीणि सं दध्मः ।  
 (यथा) हव्यं नहसि अ. ४, २३, २; १६८६ एवा देवेभ्यः ।  
 (यथा) यज्ञं कल्पयसि अ. ४, २३, २; १६८६ ,, ,,  
 (समौषित्) हस्तौ न समं ऋ. १०, ११७, ९; २३१९ तथा शाती ।  
 हस्ती इव रजः अ. १०, १, ३२; १६४७ दुरितं जहामि ।  
 हदं अग्निः इवा दहन् अ. ६, ३७, २; १७७४ परि णः वृद्धिश्च शपथा





# विषय-सूची ।

विषयः ।	मंत्रांकाः	प्रकरणम् ।	विषयः ।	मंत्रांकाः	प्रकरणम् ।
आक्षि ७, ३६, १; ५२१		रोगचि.	अग्निस्तवः ६, ४९, ३; २३२६		यज्ञादि.
आक्षिरोगभैषज्यम् ६ १६, १-४; ४६६-६९		ओषधि.	अमीन्द्रौ १, ७, ३; ७६९		क्रिमिना.
आभिः ६, ११, १-३; ८५-८७ । ६, ४७, १; ८८ ।			अमीषोमौ १, ८, १-२; ७२७-२८		"
२, २९, १; ९१ । १९, ६४, १-४; ११५-१८ ।		दीर्घायु.	" ऋ. १०, १९, १ उत्तरार्धः; ८९३		जलचि.
७, ३३, १; १४२ । २, १३, १; २३३१			अग्न्यादयः त्रिवृत् ५, २८, १-१४; १२७-४०		दीर्घायु.
" ३, ३१, १, ६; १६८, १७३ । १२, २, १-५५:		यक्षमना.	अंगानि १९, ६०, १-२; १५७-५८		"
२१७-७१			(अरिष्टानि अंगानि)		
" १, २५, १-४; ५२५-२८ । ६, १११, १-४;		रोगचि.	अजः ९, ५, १-३८; ११८३-१२२०		अन्नादि.
६८७-९०			अजशृंगी ( ओषधिः ) ४, ३७, १-१२; ७१५-२६		क्रिमिना.
" ६, ३२, १; ७३१ । १, २८, १-२; ७३४-३५		क्रिमिना.	अज्जनम् ७, ३०, १; ५९० । ७, ३६, १; ५९१ ।		
" १, २३, २३; ८७० । ७, ८५, १-४; ९५९-६२		जलचि.	वा० य० ४, ३; ६१२		रोगचि.
" ६, ७१, १-३; १११९-२१ । १२, ३, १-६०;		अन्नादि.	अदितिः ६, ७, १-३; ७६३-६५		क्रिमिना.
१२७२-१३३१		वाजी.	" ५, २६, ६; १९४१		यज्ञादि.
" ४, ४, ६; १३३७		गर्भाधा.	अदितेर्गर्भः ऋ. ९, ७४, ५, १४०४		गर्भाधानं
" ६, १०८, ४; १४२२			अन्नम् वा० य० १८, ३२-३४; ३५९-६१ [वाजः]		ओषधि.
" २, १०, २; १६६३ । ६, ११२, १-३;			" ऋ. १, १८७, १-११; ११०८-१८ । अ. ६,		
१६७०-७२ । ७, ७८, १-२; १६८०-८१ ।			७२, १-३; १११९-२१ । ७, ५८, १-२; ११२२-२३ ।		
४, २३, १-७; १६८५-९१ । ७, ६४, १-२;			६, ११६, १-३; १२६६-६८		अन्नादि.
१७३२-३३ । ४, ३३, १-८; १७५७-६४ ।			अन्नसमृद्धिः ६, १४२, १-३; ११२४-२६		
१६, ९, २; १९०३		पापादि.	अन्नादिकम् । (११०८-१३३१)		
" ७, ६१, १-२; १९२१-२२ । १८, २, ४, ३४;			अपचिद्-भैषज्यम् ७, ७६, १-२; ५०७-८		रोगचि.
२०२८, २०५८ । १८, ३, ५-६; २०८८-८९ ।			अपामार्गो वनस्पतिः ४, १७, १-८ । १८, १-८ । १९, १-८;		
१८, ४, ८८; २२३८ । १९, ५९, २; २२५५ ।			३८०-४०३		ओषधि.
ऋ. १, ३६, १३-१४; २२५७-५८ । ६, ४९, ३;			अपामार्गवीरुत् ७, ६५, १-३; ४०४-६		"
२३२६		यज्ञादि.	अपां नपात् ऋ. १०, ३०, १-१५; ९०१-१५		जलचि.
" ऋ. १०, १५५, १, ४; २३३७-३८ (अलक्ष्मी)		रोगचि.	अपां भैषज्यम् १, ४, ४; ९६३ । १, ६, ४; ९६४		"
आमिः जातवेदाः १, १८, ३-४; ७२९-३० । १, ७,		क्रिमिना.	अपां भैषज्यम् ६, २३, १-३; ९६८-७० । ६, २४,		"
१-७; ७६७-७३			१-३; ९७१-७३		"
" वैश्वानरः ६, ११९, १-३; १६७३-७५		पापादिना.	अप्सरसः ४, ३७, १, ३-५; ७१५, ७१७-१९		क्रिमिना.

अरातयः ५, ७, १-३, ६-१०; १७७७-७९, १७८२-८६ पापादि.  
अरातिनाशनम् ५, ७, १-१०; १७७७-८६  
अरिनाशनम् ७, ५९, १; १७७६

अरिघ्ननाशनम् । (१५७९ १५९०)

अरिघ्नक्षयणम् ६, २७, १-३; १५७९ ८१ । ६, २८,  
१-३। २९, १-३ । ८०, १-३; १५८२-९०

अरिघ्नानि अंगानि । (१५७-१५८)

अरुन्धती (औषधिः) ६, ५९, १-३; ४०७-९  
अर्कः ६, ७२, १-३; १३४०-४२

अर्यमा १, १८, २; ६७४  
" १, ११, १-६; १४०५-१०

" ३, १४, २; २३२१  
अलक्ष्मीघ्नम् ऋ. १०, १५५, १, ४; २३३७-३८

अलक्ष्मीनाशनम् २, १८, १-४; ६७३-७६  
अवनम् १९, ६५, १ [अग्निः २३४९]

अश्विनौ २, २९, ६; ९६ । ७, ५३, १-७; १४३-४९  
" ऋ. १, १२०, १; ६२३

" ऋ. ५, ७८, ५-९; १३२९-१४०३  
(गर्भस्त्राविष्युपनिषद्) गर्भाधानं.

" ७, ७३, ६-७, ११; १९१८-२०  
आसिकिः १, २३, १४; ५१७-२०

असुरक्षयणम् ६, ७, १-३; ७६३-६५  
असुरः वहणः १, १०, १-४; १६५४-५७

अस्तृतमणिः १९, ४६, १-७; १५७२-७८  
अहः ३, १४, १; २३२०

अहानि ७, ६९, १; ६३८  
आञ्जनम् ४, ९, १-१०; ५८०-८९ । १९, ४५, १-१०;

५९२ ६०१ । १९, ४४, १-१२; ६०२-११  
आत्मा ७, १११, १; १३६६

आदित्यः २, ३२, १-६; ७०९-१४  
" ६, ८१, १-३; १३५९-६१

" १६, ३, १-६। ४, १-७; १८२२-३४  
आदित्याः १, ३०, १; ५५

आदित्यरश्मयः ६, २२, १; ९६५  
अनृण्यम् ६, ११९, १-३; १६७३-७५

आपः २, २९, ४-५; ९४-९५

आपः ३, ७, ५; १९६ । ६, २१, ३; २०१  
" ऋ० १, १९१, १-१६; ७७४-८९

" ऋ० १, २३, १६-२३ । ७, ४७, १-४ ।  
४९, १-४ । १०, ९, १-९ । १७, १०-१४ । १९,

१-८ । ३०, १-१५ । अ० १, ३३, १-४;  
८६३-९१९ । ३, १३, १-४-७; ९२०, ९२३-२६ ।

७, ३९, १; ९२७ । १९, २, १-५ । ६९, १-४;  
९२८-३६ । वा. य. १, १२-१३. २१. ३१ ।

२, २. ३४; ४. १. १२। ५, ११। ६, १०-१३. ३०-३१।  
६, १७. २२. २४. २७-२८ । ८, २६; ९३७-५५ ।

१, ४. ४। ६, ४, ९६३-६४। ६, २३, १-३। २४, १-३;  
९६८-७३ । ४, १५, ५-१०; १००८-१३ । वा० य०

१०, १-४. ६. १९। ११, ३८। १२, ३५. ५५। १४, ८।  
२०, १८-२०, २२-२३, १०९३-११०७

" ४, ४, ५; १३३६  
" १०, ६, ३; १४८०

" २, १०, २; १६६३ । ७, ६४, १-२; १७३२-  
३३। ११२, १-२; १७६८-६९। ६, ५१, १-३;

१७८७-८९  
" १८, ३, ५६; २१३५

आपः दिव्याः ६, १२४, १-३। ७, ८९, १-४; ९५६-६२  
आयुः २, २८, १, ३; १, ३ । ८, १, १-२१। २, १-२८;

६-५४ । ७, ३२, १; १४१ ।  
७, ५३, १-७; १४३-४९

" ३, ३१, ८-१०; १७५-७७  
" ६, १०९, १-३; ४१३-१५

" २, ३, १-६; ५६५-७० । ७, १-५; ६६८-७२  
आयुः सर्वम् १९, ६१, १; १५५ । ७०, १; १५६

आयुष्यम् ३, ११, १-८; ७२-७९ । ५, ३०, १-१७;  
९८-११४ । ६, ७६, १-४; १५०-५३

" २, ३३, १-७; २९४-३००  
" ८, ७, १-२८; ३२४-५१

आयुष्कामः द्रष्टा १, ३०, १-४; ५५-५८ । ३५, १-४;  
५९-६२ । ५, ३०, १-१७; ९८-११४

" १९, ३२, १-१० । ३३, १. ५; १९२३-३७  
आयुर्वधनम् १९, ६३, १; १५४

यक्षमना.  
विषना.  
जलचि.  
वाजीक.  
मणिधारणं  
पापादिना.  
यज्ञादि.  
जलचि.  
दीर्घायुष्यम्  
यक्षमनाश.  
ओषधिव.  
रोगचिकि.  
दीर्घायु.  
दीर्घायु.  
यक्षमनाश.  
ओषधिव.  
दीर्घायु.  
यज्ञादि.  
दीर्घायु.

आशापालाः १, ३१, १-४; १६५८-६१	पापादिना.	ओषधिवनस्पतयः । (३०१-४८२)	
आसुरी वनस्पतिः १.२४, १-४; ५२१-२४	रोगाचिकि.	ओषधिः वा० य० १२, ७९; ३५८	ओषधि.
आस्त्रावस्य भेषजम् २, ३, १-६; ५६५-७०	,,	ओषधयः ऋ० १०, ९७, १-२३; ३०१-२३ । अ० ८, ७,	
इन्द्रुः १८, ३, ५४; २१३४	यज्ञादि.	१-२८; ३२४-५१ । ऋ० ३, ५३, ७; ३६३	,,
इन्द्रः २.२९, ३, ९३	दीर्घायु.	ओषधयः २, १०, २; १६६३	पापादि.
" ७, ७६, ३-६; ५०९-१२ । १, २, ३; ६६६	रोगाचिकि.	ओषधिः अजशृंगी ४, ३७, १-२, ६, १०; ७१५-१६,	
" ५, २३, १-१३; ६९६-७०८	क्रिमिना.	७२०, ७२४	क्रिमिनाश.
" ३.१२, २-३; ९२१-२२ । ऋ० १०, २७, १६;		,, अरुन्धती ६, ५९, १-३; ४०७-९	ओषधिव.
९८४ । ऋ० ३, ३३, ६-७; १०२७-२८	जलाचि.	,, केशवर्धनी ६, २१, १-३; ४५७-५९	,,
" ४, ४ ४; १३३५	अन्नादि.	औदुम्बरमणिः १९, ३१, १-१४; १५३७-५०	मणिधार.
" ४, २४, १-७; १६९२ ९८	पापादिना.	कामिलानाशनम् १, २२, १-४; ४८९-९२	रोगाचि.
" ५, २६, ३, ११; १९३९, १९४५ । ३, १४, २;	यज्ञादि.	कासा क सशमनम् ६, १०५, १-३; ४८६-८८	,,
२३२१	दीर्घायु.	कुष्ठः ५, ४, १-१०; ४३७-४६ । १९, ३९, १-१०;	
इन्द्रसूर्यादयः १९, ७०, १; १५६		४४७-५६	ओषधिव.
इन्द्राम्नी १, ३५, १-४; ५९-६२ । ३, ११, १-८;	अन्नादि.	कुष्ठतकमनाशनम्* ५, ४, १-१०; ४३७-४६	,,
७२-७९	रोगाचि.	,, १९, ३९, १-१०; ४४७-५६	,,
इन्द्रावृणौ ७, ५८, १-२; ११२२-२३	रोगाचि.	कुष्ठौषधिः ६, ९५, १-३; ४१०-१२	,,
इष्टुनिष्कासनम् ६, ९०, १-३; ६२०-२२	,,		
ईर्ष्यापनयनम् ७, ४५, १-२; ६८५-८६		<b>कृत्यादूषणम् । (१५९१-१६५३)</b>	
ईर्ष्याविनाशनम् ६, १८, १-३; ६८२-८४		कृत्यादूषणम् ८, ५, १-२२; १४३१-५२	मणिधारणम्.
उन्मत्ततामोचनम् ६, १११, १-४; ६८७-९०		,, १०, १, १-३२; १६१६-४७ । ५, ३१,	
उन्मोचनम् ६, ११४, १-३; १७९४ ९६	पापादिना.	१-१२; १६०४-१५	कृत्यादू.
उल्लखलम् ऋ० १, २८, ५-६; २२८०-८१	यज्ञादि.	कृत्यापरिहरणम् ५, १४, १-१३; १५९१-१६०३ ।	
उल्लखलमुसले ऋ० १, २८, ७-८; २२८२-८३	,,	५, ३१, १-१२; १६०४-१५	,,
उषा ७, ६९, १; ६३८	रोगाचि.	क्रिमिनाशनम् ४, ३७, १-२; ७१५-२६	क्रिमिना.
,, १६, ६, १-११ । ७, १-१३; १८४५-६८	पापादिना.	क्रशनः ४, १०, १-७; १४२४-३०	मणिधा.
एकशृषः ५, १६, १-११; ६४२-५२	रोगाचि.	केशदंहणम् ६, १३६, १-३; ४६०-६२	ओषधि.
एनोनाशनम् ६, ५१, १-३; १६८७-८९	पापादिना.	केशवर्धनम् ६, १३७, १-३; ४६३-६५	,,
ओदनम् पञ्च ९, ५, १-३८; ११८३-१२२०	अन्नादि.	केशवर्धनी औषधिः ६, २१, १-३; ४५७-५९	,,
,, बार्हस्पत्य ११, ३ १-५६; ११२७-८२	,,	क्रिमिघ्नम् ५, २३, १-१३; ६९६-७०८	क्रिमिना.
,, ब्रह्म ११, १, १-३७; १२२९-६५	,,	क्रिमिजम्भनम् २, ३२, १-५; ६९१-९५	,,
,, स्वर्ग १२, ३, १-६०; १२७२-१३३१	,,	<b>क्रिमिनाशनम् । (६९१-७७३)</b>	
		क्रिमिनाशनम् २, ३२, १-६; ७०९-१४	,,
		क्रीबत्वम्* ६, १३८, १-५; ४९८-५०२	रोगाचि.

\* 'कुष्ठः' वीरुधां बलवत्तमा ओषधिः । सा तकमानं नाशयति । अतः अत्र 'कुष्ठः तकमनाशनः ।' इति प्रथमस्थले, 'तकमनाशनम्' इति द्वितीयस्थले पाठः योग्यः ।

\* अत्र 'क्रीबत्वापादनम्' इति पाठः समीचीनतरः भवति ।

क्षेत्रियरोगनाशनम् २,८,१-५; ४९३-९७	रोगचिकित्सा
गण्डमालाचिकित्सा ७,७४,१-४। ७६,१-६; ५०३-१२ "	"
गन्धर्वाप्सरसः ४,३७,७-१२; ७२१-२६	किमिना.
<b>गर्भाधानम् । ( १३४६-१४१० )</b>	
गर्भहृण्णम् ६,१७,१-४; १३६२-६५	गर्भाधानम्
गर्भदोषनिवारणम् ८,६,१-२६; १३६७-९२	"
गर्भसंस्त्रावः २०,९६,११-१६; १३९३-९८	"
गर्भस्त्राविण्युपनिषद् क्र० ५,७८,५-९; १३२९-१४०३ "	"
गर्भाधानम् ६,८१,१-३; १३५९ ६१	"
गावः क्र० १,९०,८; ४७३	ओषधि
" ६,५२,२; ५६३	रोगाचि.
" क्र. १०,१९,१-८; ८९३-९००	जलचि.
" ३,१४,१-६; २३२०-२५	यज्ञादि.
गोष्ठः ३,१४,१.५; २३२०,२३२४	"
प्रावाणः क्र० ७।१०४,१७। १०,७६,१-८। ९४,	"
१-१४। १७५,१ ४; २२८४-२३१०	"
घर्मः ७,७३,६-७.११; १९१८-२०	"
घृतहोमः ५,६२,२-४, ६-९,११, १९३८-४५	"
स्रन्द्रः ३,३१,६; १७३	यक्षमना.
" १,३,४; ५७४	रोगाचि.
चन्द्रमाः २,४,१ ६; ६६-७१। ४,१,१-३; ६३-६५	दीर्घायु.
" २,३३,१-७; २९४-३००	यक्षमना.
" ६,२,१-३; ४५७-५९। ६,१६,१-४; ४६६-६९	ओषधि.
" ६,८३,१; ५१३। ७,११६,१-२; ५२९-३०।	"
" ४,१३,१-७; ५४८ ५४। १,२,३; ६६६	रोगाचि.
" २,३१,१-५; ६९१-९५	किमिना.
" १,३३,१-४; ९१६ १२	जलचि.
" १०,३,१ २५; १४५३-७७	मणिधा.
" ६,८०,१-३; १५८८-९०	अरिष्टना.
" ११,६,१-२३; १७३४-५६। ६,३७,१-३;	"
१७७३-७५	पापादि.
" १८,४,८९; २२३२। १९,१,१-३; २२४६-४८	यज्ञादि.
चिकित्सा ६,२६,१-३; ३५२-५४	ओषधि.
जङ्घिः २,४,१-६; ६६-७१	दीर्घायु.
" १९,३५,१-५; १५६१-६५	मणिधा.
जङ्घिमणिः १९,३४,१-१०; १५५१-६०	"

जरिमा २,२८,१-३; १,३	दीर्घायु
<b>जलचिकित्सा । (८६०-११०७)</b>	
जातवेदा ६,२९,२, ९२	"
" ७,७४,४; ५०४	रे गचि.
" १,१८ ३ ४; ७२९-३०। ५ २९,१-१५;	"
७३८-५२। १९,६६,१; ७६६। १,७	"
१-७, ७६७ ७३	किमिना.
" १८,२,५; २०२९	यज्ञादि.
जायन्त्यः ७,७६,३-६; ५०९-१२	रोगाचि.
ज्वरनाशनम् १,२५,१-४; ५२५ २८। ७,११६,१-२;	"
५२९-३०	"
तकमनाशनः ५,२२,१-१४; ५३१-४४	"
तक्षकः ४, ६, १-८; ७९०-९७। १०, ४, १-२६;	"
५, १३, १-११। ७ ८८, १; ६, १२, २-३; ८०८ ४८	विपना.
तपः ७, ६१, १-२; १९२१-२२	यज्ञादि.
तारके ३, ७, १; १७५	यक्षमना.
तृणम् क्र० १ १९१, १ १६; ७७४-८९ (अतृणमूर्त्या)	विपना.
त्रिष्टुत् ५, २८, १-१४; १२७-४०	दीर्घायु.
त्रैकाकुदन्नम् ४, २, १-१०; ५८०-८९	रोगाचि.
त्वष्टा ३, ३१, ९; १७२	यक्षमना.
" ६, ८१, ३; १३६१	गर्भाधानं
" ५, २६, ८; १९४३	यज्ञादि.
दन्तौ ६, १४०, १-३; १५९ ६१ (सुमंगली दन्तौ)	दीर्घायु.
दर्भः १९ ३२, १ १०; १९२३-३२। ३३, १-५;	"
१९३३-३७	यज्ञादि.
दर्भमणिः १९, २८, १ १०। २९, १-९। ३०, १-५;	"
१५१३-३६	मणिधा.
दस्त्युनाशनम् २, १४, १-६; १६४८-५३	कृत्यादः
दिशः ४, १५, १; १००४	जलचि.
" १, ११, १-६; १००५-१०	गर्भाधानं
" २, १०, ३; १६६४	पापादिना.
<b>दीर्घायुष्यम् । (१-१६१)</b>	
दीर्घायुः ५, २८, १-१४; १२७-४०। ७, ३३, १; १४२	दीर्घायु
दीर्घायुत्वम् १९, ६४, १-४; ११५ १८। ६७, १ ८;	"
११९-२६	"

दीर्घायुष्यम् वा० य० १२, १०० । ३४, ५०-५२;  
२३२७-३० दीर्घायु.  
दीर्घायुः प्राप्तिः २, १३, १-५; २३३१-३५ ”  
दुरितनाशनम् ७, ६५, १-३; ४०४-६ ओषधि.  
” ७, ६३, १; [ अग्निः २३७४ ] पापादि.  
दुःखनाशनम् ३, ९, १-६; १७९७-१८०३ ”  
दुःखमोचनम् १६, १, १-१३। २, १-६। ३, १-६। ४, १-६। ५, १-६। १८०३-३४ ”  
दुःस्वप्ननाशनम् ऋ० १, १२०, १२। २, २८, १०। १०, १६४, १-५; ६२३-२९ रोगचि.  
” अ० ६, ४५, १-३। ४६, १-३। ७, १००, १। ”  
१०१, १; ६३०-३७ ”  
” १६, ५, १-१०। ६, १-११। ७, १-१३। ८, १-३३। ९, १-४; ७, २३, १; १९, ५६, १-६। ”  
५७, १-५; १८३५-१९१७ पापादि.  
इवाः १, ३०, १-४; ५५-५८ दीर्घायु.  
” ३, ३१, ७; १७४ यक्षमना.  
” ४, १३, १; ५४८ । १, १८, २; ६७४ रोगचि.  
” ६, ७, ३; ७६५ क्रिमिना.  
” ६, ७१, ३; ११२१ अन्नादि.  
” १, ११, १-६; १४०५-१० गर्भाधानं  
” ३, ९, १-६; १७९७-१८०२ पापादि.  
इव्याः ऋषयः ६, ४१, १-३; ६३ ६५ दीर्घायु.  
शावाप्रथिवी २, २९, ४-५; ९४-९५ ”  
” ३, ३१, ४; १७१ यक्षमना.  
” ७, ३०, १; ५९० रोगचि.  
” ४, ६, २; ७९१ विषना.  
” २, १०, १-८; १६६२-६९ । ४, २६, १-७; १७०६-१२ । ३, ९, १-६; १७९७-१८०२ पापादि.  
शावाप्रथिव्यादयः २, २८, ४-५; ४-५ दीर्घायु.  
धनान्नदानम् ऋ. १०, ११७, १-९; २३११-१९ यज्ञादि.  
धन्वन्तरिः २, ३, १-६; ५६५-७० रोगचि.  
धमन्यः धमनीबन्धनम् १, १७, १-४; ५५५-५८ ”  
नद्यः ऋ. ३, ३३, १-३. ५. ९. ११-१३; १०२२-३४ ”  
ऋ० ७, ५०, ४; ऋ० १०, ७५, १-९; १०३५-४४ जलचि.  
नारीमुखप्रसूतिः १, ११, १-६ १४०५-१० गर्भाधानं

नित्तनी ( वनस्पतिः ) ६, १३६, १-३; ४६०-६२ ओषधि.  
निर्ऋतिः ६, २७, १-३ । २८, १-३ । २९, १-३; १५७९-८७ अरिष्टना.  
” २, १०, ४-८; १६६५-६९ । ७, ६४, १-२; १७३२-३३ पापादि.  
निर्ऋतिमोचनम् ६, ८४, १-४; १७९०-९३ ”  
निविदः ५, २६, ४; १९४० यज्ञादि.  
पञ्चोदनः अजः ९, ५, १-३८; ११८३-१२२० अन्नादि.  
परस्परचित्तौकीकरणकामः [ द्रष्टा ] ६, ४३, १-३; ६३९-४१ रोगचि.  
पर्जन्यः ३, ३१, ११; १७८ यक्षमना.  
” १, ३, १; ५७१ । १, २, १ ४; ६६४-६७ रोगचि.  
” ऋ० ५, ८३, १-१०; १०, २७, १६। ७, १०१, १-६। १०२, १-३ । १०३, १-१०; ९७४-१००३ ”  
४, १५, ४; १००७ । ७, १८, १-२; १०२०-२१ जलचि.  
पवमानः सोमः ऋ० ९, ७४, ५; १४०४ गर्भाधानं  
पशवः ३, ३१, ३; १७० यक्षमना.

## पापादिनाशनम् । ( १६५४-१९१७ )

पापनाशनम् ४, ३३, १-८; १७५७-६४। ६, ११, १-३; १७६५-६७। ७, ११२, १-२; १७६८-६९ पापादि.  
पापमोचनम् ४, २३, १-७। २४, १-७। २५, १ ७। २६, १-७। १६८५-१७१२ । २७, १-७। [ मरुतः ४४०-४६ ] । २८, १-७। २९, १-७। ६, १५, १-३; ७, ४२, १-२। ६४, १-२। ११, ६, १-२३; १७१३-५६ ”  
पापलक्षणनाशनम् ७, ११५, १-४; [ अग्निः २२०१-४ ] ”  
पापशमनम् ६, ३०, १-३; ४७०-७२ ओषधि.  
पाप्मनाशनः ( अग्निः ) ४, ३३, १-८; १७५७-६४ पापादि.  
पाप्मनाशनम् ६, २६, १-३; १७७०-७२ ”  
पाप्महा ३, ३१, १-११; १६८-७८ यक्षमना.  
पाप्मा ६, २६, १-३; १७७० ७२ पापादि.  
पाशमोचनम् १, ३१, १-४। २, १०, १-८। ६, ११२, १-३। ११९, १-३ । ७, ८३, १-४; १६५८-७९ ”  
पाशविमोचनम् १, १०, १-४; १६५४-५७ ”  
पितरः ४, १५, १३-१५; १०१६-१८ जलचि.  
” १०, १४, ७-९; १९७३-७५ । १५, १-१४; १९८७-२००० । १८, १, ४४-४६; ५१, ५२; २०१०-१२, २०१६-१७ । १८, २, २९; २०५३। ४, ८१; २२३१ यज्ञादि.



मंत्रोक्ताः १९, ४५ १-१०; ५९२-६०१ । (आञ्जनम्)	रोगचि.
५, २९, १-१५; ७३८ ५२ । (रक्षोघ्नम्)	क्रिमिना.
११, ३ ३२-५६; ११५८-८२ । ९, ५, १-३८; ११८३-१२२० (ओदनः)	अन्नादि.
८, ६, १-२६; १३६७-९२ । (मातृनाम)	गर्भाधानं
८, ५, १-२२; १४३१-५२ (कृत्यादूषणम्)	मणिधा.
११, ६, १-२३; १७३४-५६	पापादि.
१८, १, ६, १३-१४ १७, ३९-४९. ५१-५४. ५७-६१। २, १-६०; २००१-८४ । (वितुमेधः)	यज्ञादि.
३, ४४, ४६; २२२७, २२२९ । १८, ४, १-८९; २६५१-२२३९	पापादि.
मन्याविनाशनम् ६, २५, १-३; १६८२-८४	रोगचि.
मन्युशमनम् ६, ४३, १-३; ६३९-४१	दीर्घायु.
महतः २, २९ ४-५; ९४-९५ । ७, ३३, १; १४२	रोगचि.
४, १३, ४; ५५१	जलचि.
६, २२, २-३; ९६६-६७ । ४, १५, ४-१०; १००७-१३	पापादि.
४, २७, १-७; [महतः ४४०-४६]	क्रिमिना.
मही २, ३१, १-५; ६९१-९५	गर्भाधानं
मातृन मा ४, २०, १-९; ७५४-६२	रोगचि.
८, ६, १-२६; १३६७-९२	यक्षमना.
भिन्नः १, ३, २, ५७२ । ७, ३०, १; ५९०; १, १८, २; ६७४	गर्भाधानं
त्रित्रावरुणौ २, २८, २; २	रोगचि.
६, ३२, ३; ७३३	दीर्घायु.
मूत्रमोचनम् १, ३, १ ९; ५७१-७९	क्रिमिना.
मृत्युः १२, २, २१-३३; २३७-४९	रोगचि.
मेधा १९, ४० १-४; १४११-१४ । ६, १०८, १-५; १४१९-२३	यक्षमना.
मेधाजननम् १ १ १-४; १४१५-१८	गर्भाधानं
मेधावर्धनम् ६, १०८, १-५; १४१९-२३	यक्षमना.
यक्ष्म २, १०, ४-८: १६६५-६९	पापादि.
यक्ष्मनाशनम् । (१६२ ३००. २३३६)	
यक्ष्मनाशनम् ३, ११, १-८; ७२-७९ । २, ९, १-५; ८०-८४	दीर्घायु.

यक्ष्मनाशनम् ऋ. १०, १६३, १-६; अ. ३, ३१, १-११। ६, २०, १-३। ८५, १-३। १२७, १-३। १, १२, १-४; १६२-९१। ३, ७, ६-७। ६, ९१, १-३; १९७-२०१। २०, ९६, ६-१०; २०५-९ । १९, ३८, १-३; २०२-४ । २०, ९६, १७-२३; २१०-१६	यक्षमना.
दम्पत्योः ऋ. १०, ८५, ३१; २३३६	ओषधि.
५, ४, १-१०; ४३७ ४६	रोगचि.
(वनस्पतिः) २, ८, १-५; ४९३-९७	
यक्ष्मनाशनः अग्निः १, २५, १-४; ५२५-२८	
यक्ष्म विबर्हणम् २, ३३, १-७; २९४-३००	यक्षमना.
यक्ष्मनिवारणम् ९, ८, १-२२; २७२-९३	
यक्ष्मरोगनाशनम् १२, २, १-५५; २१७-७१	
यजमानः ऋ ८, ३१, १-४; २२४०-४३। ऋ. १०, १८३, १; २२४४	यज्ञादि.
यजमानपत्नी ऋ. १०, १८३, २; २२४५	
<b>यज्ञादिकम् । ( १९१८-२३२४ )</b>	
यज्ञः ऋ. ८, ३१, १-४; २२४०-४३। अ. ७, १७, १-८। [इन्द्रः ३१२० २७]। १९, १, १-३। ५८, १-६। ५९, २; २२४६-५५ । ५९, १, ३ [अग्निः १२१४, १४९४] यज्ञादि.	
यमः ६, २७, १-३ २८, १-३ । २९, १-३, १५७९-८७ अरिष्ट. ऋ. १०, १४, १-५. १३-१६; १९६८-७२, १९७६-७९	यज्ञादि.
यमी ऋ. १०, १०, १-१४; १९५४-६७	
ऋ १०, १३५, १-७; १९८०-८६। १८, १, ६. १३-१४. १७, ३९-४९. ५१-५४. ५७-६१ । २, १-६०। ३, १, ३-४९. ५२. ५४. ५६. ५८-६६. ६८-७३ । ४, १-८९; २००१-२२३९	
य तुधानीः १, २८, ३-४. ७३६-३७	क्रिमिना.
यातुधानक्षयणम् ६, ३२, १-३; ७३१-३३	
यातुधाननशनम् १, १८, १-४; ७२७-३० । १, ७, १-७; ७६७-७३	
यूपः १, ३६, १३-१४; २२५७-५८। ऋ. ३, ८, १-५; २२५९ ६३	यज्ञादि.
वा य ६, २-३, ६। २१, ४६। २८, १०; २२६९-७३	
यूपाः ऋ. ३, ८, १-५; २२६४-६८	
योनिगर्भः ५, २५, १-१३; १३४६-५८	गर्भाधानं

योषितः ( धमन्यः ) १, १७, १-४; ५५५-५८ रोगचि.  
 रक्षोम्रम् १, २८.१-४; ७३४-३७ । ५, २९, १-१५; क्रिमिना.  
 ७३८-५२ । वा. य. ५, २२; ७५३ रोगचि.  
 रात्रिः ७, ६९, १; ६३८ (सुखम्) ”  
 रामायणी ६, ८३, ३; ५१५ ”  
 क्रूरः ५, ५९, १-३; ४०७-९ । ६, ९०, १-३; ६२०-२२ ओषधि.  
 ,, ६, ३२, २; ७३२ क्रिमिना.  
 ,, ६, ५६, २-३; ८५०-५१ विषना.  
 ,, ६, ५७, १-३; ८६०-६२ जलचि.  
 ,, ४, २८, १-७; १७१३-१९७ पापदि.  
 ,, १८, १, ४०; २००६ यज्ञादि.  
 रुधिरस्त्रावनिवृत्तये धमनीबंधनम् १, १७, १-४; ५५५-५८ रोगचि.  
**रोगचिकित्सा । ( ४८३-६९० )**  
 रोगघ्न्यः उपनिषदः क्र. १, ५०, ११-१३; ५४५-४७ ”  
 रोगनाशनम् ( वनस्पतिः ) ६, ४४, १-३; ५५९-६१ ”  
 रोगनिवारणम् ४, १३, १-७; ५४८-५४ ”  
 रोगोपशमनम् ५, १५, १-११ । १, २, १-४; ६५३-६७ ”  
 रोहणी ४, १२, १-७; ४२१-२७ ओषधि.  
 रोहिणी २, ८, १-५; ४९३-९७७ । ६, ८३, २; ५१४ रोगचि.  
 लाक्षा ५, ५, १-९; ४२८-३६ ओषधि.  
 लिङ्गोक्ताः १९, ३४, १-१०; १५५१-६० (जंगिडमणिः) मणिधारणं  
 ,, १०, १४, ७-९; १९७३-७५ यज्ञादि.  
 वज्र १९, ६६, १; ७६६ क्रिमिना.  
 वनस्पतिः ६, ८५, १-३ । १२७, १-३; १८२-८७ यक्षमना.  
 ,, ६, २६, १-३; ३५४-५६ । ३, १८, १-६; ३६४-६९ ।  
 वा. य. ५, ४२-४३ । २०, ४५ । २१, २१ । २७, २१ ।  
 २८, १०. ३३. ४३ । २९, १०, ३५; ३७०-७९ ओषधि.  
 ,, २, ८, १-५ । ६, १३८, १-५; ४९३-५०२ । ६, ४४,  
 १-३; ५५९-६१ । २, ७, १-५; ६६८-७२ ।  
 ६, १३९, १-५; ६७७-८१ रोगचि.  
 ,, ४, ७, १-७; ७९८-८०४ । ६, १००, १-३; ।  
 ८०५-७ । ७, ५६, २; ८५३ विषना.  
 ,, ४, ४, १-८; १३३२-३९ वाजीक.  
 ,, १०, ३, १-२५; १४५३-७७ । ५, १४, १-१३; ।  
 १५९१ १६०३ मणिधा.  
 वनस्पतिसूर्यगावः क्र. १, ९०, ८; ४७३ ओषधि.

वनस्पतिः, अपामार्गः ४, १७, १-८ । १८, १-८ । १९,  
 १-८; ३८०-४०३ ”  
 ,, असिकी १, २३, १-४; ५१७-२० रोगचि.  
 ,, आसुरी १, २४, १-४; ५२१-२४ ”  
 ,, कुग्रौषधिः ६, ९५, १-३ । ४१०-१२ ओषधि.  
 ,, जंगिडः १९, ३४, १-१० । ३५, १-५; १५५१-६५ मणिधा.  
 ,, दशत्रक्षः २, ९, १-५; ८०-८४ दीर्घायु.  
 ,, वृश्चिपर्णी २, २५, १-५; ४१६-२० ओषधि.  
 ,, फालमणिः १०, ६, १-३५; १४७८-१५७२ मणिधा.  
 ,, मधुला ५, १५, १-११; ६५३-६३ रोगचि.  
 ,, रोहणी ४, १२, १-७; ४२१-२७ ओषधि.  
 ,, वरणमणिः १०, ३, १, २५; १४५३ ७७ मणिधा.  
 वरणमणिः १०, ३, १-२५; १४५३-७७ ”  
 वरुणः १, ३, ३; ५७३ । १९, ४४, ८९; ६०९-१०; रोगचि.  
 क्र. २, २८, १०; ६२४ । १, १८, २; ६७४ ”  
 ,, ४, ५, १२; १०१५ जलचि.  
 ,, ७, ८३, १-४; १६७६-७९ । ७, ११२, १-२; ।  
 १७६८-६९ पापादि.  
 वरुणः आसुरः १, १०, १-४; १६५४-५७ ”  
 वसवः १, ३०, १; ५५, दीर्घायु.  
 वाक् १९, ६०, १-२; १५७-५८ ( अरिष्टानि अंगानि ) ”  
 ,, १६, २, १-६; १८१६-२१ पापादि.  
 वाचस्पतिः १, १, १-४; १४१५-१८ ( मेधाजननम् ) गर्भाधानं  
**वाजीकरणम् । ( १३३२-१३४५ )**  
 वाजीकरणम् ४, ४, १-८ । ६, ७२, १-३ । १०१, १-३; ।  
 १३३२-४५ वाजीक.  
 वानः ४, १३, २-३; ५४९-५० । ७, ६९, १; ६३८ रोगचि.  
 ,, ४, १५, १६; १०१९ जलचि.  
 ,, २, १०, ३; १६६४ पापादि.  
 वातपत्नीः २, १०, ४-८; १६६५-६९ ”  
 वातसिन्ध्वोषधयः क्र. १, ९०-६; ३६२ ओषधि.  
 वायुः ६, १४२, १-३; ११२४-२६ अन्नादि.  
 ,, ४, २५, १-७; १६९९-१७०५ पापादि.  
 वासः ( सस् ) ७, ३७, १; १२६९ । वा. य. ४, २, १०; ।  
 १२७०-७१ अन्नादि.  
 वास्तोष्पतिः १, ३१, १-४; १६५८-६१ पापादि.  
 ,, ५, २६, २-४. ६-९. १.१; १९३८-४५ यज्ञादि.



विनायकः १, १८, १; ६७३  
 विवस्वान् ६, ११६, १-३; १२६६-६८  
 विश्वामित्रः ऋ. ३, ३३, ४.८.१०; १०२५, १०२९,  
 १०३१  
 विश्वे देवाः १, ३०, १-४। ३५, १-४; ५५-६२। ६, ४७,  
 २; ८९। २, २९, ४-५; ९४-९५। २, १३,  
 ४.५; २३३४-३५  
 ,, ऋ. १, ९०, ६; ३६२। ऋ. ३, ५७, ३; ३६३।  
 ऋ. १, ९०, ८; ४७३  
 ,, ४, १३, १-७; ५४८-५४  
 ,, ६, ५६, १, ८४९  
 ,, १९, ४०, १-४; १४११-१४  
 ,, ६, १५, १-३; १७२७-२९। ११४, १-३;  
 १७९४-९६।  
 ,, ऋ. ३, ८, ८; २२६६। अ. ७, ९८, १; २२७४

### विषनाशनम् । (७७४-८५२)

विषम् ४, ६, ४-८; ७९३-९७  
 विषघ्नम् ४, ६, १-८; ७९०-९७  
 विषघ्नोपनिषद् ऋ. १, ९१, १-१६; ७७४-८९  
 विषदूषणम् ६, १००, १-३; ८०५-७  
 विषनाशनम् ४, ७, १-७; ७९८-८०४  
 विषभैज्यम् ७, ५६, १-८; ८५२-५९  
 विष्णुः ५, २६, ७; १९४२  
 वीरुधः ४, १५, २-३; १००५-६  
 वृश्चिकादयः ७, ५६, १-८; ८५२-५९  
 वृषभः ४, ५, १-७; ६३३-१९  
 ,, ७, ३९, १; ९२७  
 ,, ७, ११, १; १३३६  
 वृषरोगशमनम् ६, १६, १-११; ६४२-५२  
 वृष्टिः ४, १५, १-१६; १००४-१९। ७, १८, १-२;  
 १०२०-२१  
 वृष्टिकामः (द्रष्टा) ऋ. ७, १०२, १-६। १०२, १-३;  
 ९८५-९३  
 वेदी ७, ९९, १; २२५६  
 वेधाः १, ११, १-६; १४०५-१०  
 वैश्वानरः (अग्निः) ६, ७१, ३; ११२१

रोगचि.  
 अत्रादि.  
 जलचि.  
 दीर्घायु.  
 ओषधि.  
 रोगचि.  
 विषना.  
 गर्भाधानं  
 पापादि.  
 यज्ञादि.  
 विषना.  
 ,,  
 ,,  
 ,,  
 ,,  
 ,,  
 यज्ञादि.  
 जलचि.  
 विषना.  
 रोगचि.  
 जलचि.  
 गर्भाधानं  
 रोगचि.  
 जलचि.  
 ,,  
 यज्ञादि.  
 गर्भाधानं  
 अत्रादि.

,, ६, ११९, १-३; १६७३-७५ पापादि.  
 शक्रः ३, ३१, २; १६९ यक्षमना.  
 शंखमणिः ४, १०, १-७; १४२४-३० मणिधा.  
 शतवारः मणिः १९, ३६, १-६; १५६६-७१ ,,  
 शमी ६, ३०, १-३; ४७०-७२ ओषधि.  
 शापनाशनम् ६, ३७, १-३; १७७३-७५ पापादि.  
 शापमोचनम् २, ७, १-५; ६६८-७२ रोगचि.  
 ,, ७, ५९, १; १७७६ पापादि.  
 शालामिद्वैत्यम् २, १४, १-६; १६४८-५३ कृत्याद्.  
 शेषः ६, ७२, १-३; १३४०-४२ वाजीक.  
 श्वेतकुष्ठनाशनम् १, २३, १-४; ५१७-२० रोगचि.  
 स्वपत्नक्षयकामः (द्रष्टा) १९, २८, १-१०; १५१३-२२ मणिधा.  
 स्वपत्नक्षयणः १०, ३, १-२५; १४५३-७७ ,,  
 स्वपत्नघ्नम् ऋ० १०, १६६, १-५; २३४१-४५ ओषधि.  
 स्वपत्नीजयः ३, १८, १-६; ३६४-६९ ,,  
 स्वपत्नीबाधनम् ऋ० १०, १४५, ४.६; २३३९-४० ,,  
 सप्तसिन्धवः ४, ६, २; ७९१ विषना.  
 सरण्युः ऋ० १०, १७, १-२; १०८१-८२ जलचि.  
 सरस्वान् ऋ० ७, ९५, ३। ९६, ४-६। अ. ७, ४०, १-२; १०४५-५० ,,  
 सरस्वती ६, ४१, २; ६४ दीर्घायु.  
 ,, ' ऋ० १, ३, १०-१२। १६४, ४९। २, ३०, ८ पूर्वार्धः।  
 ४१, १६-१८। ६, ६१, १-१४। ७, ९५, १-२,  
 ४-६। ९६, १-३। १०५१-८०। १०, १७, ७-९;  
 १०८३-८५। अ० ७, १०, १। ११, १। ५७, १२।  
 ६८, १-३; १०८६-९२ जलचि.  
 ,, ४, ४, ६; १३३७ वाजीक.  
 ,, ५, ७, ४-५; १७८०-८१ पापादि.  
 ,, १८, १, ४१-४३; २००७-९ यज्ञादि.  
 सर्पविषहारीकरणम् १०, ४, १-२६। ५, १३, १-११; १०८-४४ विषना.  
 सर्पविषनाशनम् ७, ८८, १; ८४५ ,,  
 सर्पविषनिवारणम् ६, १२, १-३; ८४६-४८ ,,  
 सर्पेभ्यो रक्षणम् ६, ५६, १-३; ८४९-५१ ,,  
 सर्वमायुः १९, ६१, १; १५५। ७०, १; १५६ दीर्घायु.  
 सर्वशीर्षामयाद्यपाकरणम् ९, ८, १-२२; २७२-९३ यक्षमना.

सविता २, २९, २; ९२	दीर्घायु.	सोमः ६, २६, ३; ३५४ । ऋ० १०, ८५, २-४; ४७४-७६ ,,	
" ७, ३०, १; ५९० । १, १८, २-३; ६७४-७५	रोगाचि.	" ६, ७, १-३; ७६३-६५	किमिना.
" ४, २५, १-७; १६९९-१७०५	पापादि.	" ऋ० १०, १७, ११-१३; ८४९-५१	जलचि.
" ५, २६, २; १९३८	यज्ञादि	" ४, ४, ५; १३३६	वार्जाक.
सान्तपन अग्निः ६, ७६, १-४; १५०-५३	दीर्घायु.	" २, १०, २; १६६३ । १६, ९, २; १९०३	पापादि.
सुखम् ७, ६९, १; ६३८	रोगाचि.	सोमः पवमानः ऋ० ९, ७४, ५; १४०४	गर्भाधानं
सुधन्वा ६, ४७, ३; ९०	दीर्घायु.	सोमवनस्पतिः ऋ० १, ९१, ६; ४७७	ओषधि.
सुपर्णः ४, ६, ३; ७९२	विषना.	सोमारुद्रौ ७, ४२, १-२; १७३०-३१	पापादि.
" ७, ३९, १; ९२७	जलचि.	सौभारयवर्धनम् ६, १३९; १-५; ६७७-८१	रोगाचि.
सूर्यः २, २९, १; ९१ । १९, ६७, १-८; ११९-२६	दीर्घायु.	स्तनयित्तुः ४, १५, ११; १०१४	जलचि.
" ३, ३१, ७; १७४	यक्ष्मना.	स्वर्गः स्वर्गादेनः १२, ३, १-६०; १२७२-१३३१	अत्रादि.
" ऋ० १, ९०, ८; ४७३	ओषधि.	रवस्त्ययनकामः (द्वष्टा) ६, ३७, १-३; १७७३-७५	पापादि.
" १, २२, १-४; ४८९-९२ । ६, ८३, १; ५१३ ।		रवापनम् ४, ५, १-७; ६१३-१९	रोगाचि.
ऋ० १, ५०, ११-१३; ५४५-४७ । ६, ५२, १;		हरिणः ३, ७, १-३; १९२-९४	यक्ष्मना.
५६२ । १, ३, ७; ५७५ । ७, ६९, १; ६३८	रोगाचि.	हरिमा १, २२, १-४; ४८९-९२	रोगाचि.
" १९, ६६, १; ७६६	किमिना,	हविः ७, ९८, १; २२७४	यज्ञादि.
" ऋ० १, १९१, १-१६; ७७४-८९ (अप्तृणसूर्याः)	विषना.	हविर्धाने ऋ० १०, १३, १-५; २२७५-७९	"
" ४, ४, १-२; १३३२-३३	वार्जाक.	हरतः ४, १३, ६-७; ५५३-५४	रोगाचि.
" २, १०, ४-८; १६६५-६९ । १६, ९, ३-४;	पापादि.	हिरण्यम् १, ३५, १-४; ५९-६२	दीर्घायु.
१९०४-५	ओषधि.	हृद्रोगः ( कामिलानाशनम् ) १, २२, १-४; ४८९-९२	रोगाचि.
सूर्यमरीचयः ऋ० ३, ५७, ३; ३८३			

## अभावकरणार्थं निर्दिष्टाः विषयाः ।

निस् + कस् ।

इषु निष्कासनम् ।

अपा + दूरी + क्त ।

सर्वृशीर्षामयादि अपाकरणम् ।

सर्पविषदूरीकरणम् ।

क्षि ।

अरिष्ट— क्षयणम् ।

अमुर— "

पिशाच— "

यानुधान— "

सपत्न— "

जम्भ् ।

किमिजम्भनम् ।

दुष् ।

कृत्यादूषणम् ।

विषदूषणम् ।

वि + नश् ।

अरातिनाशनम् ।

अरि— "

अलक्ष्मी— "

एनः— नाशनम् ।

कामिला— "

कृमि— "

क्षेत्रियरोग— "

ज्वर— "

तक्म— "

दस्यु— "

दुरित— "

दुःख— "

दुष्प्र— "

पाप— नाशनम्  
 पापलक्षण—,  
 पापम्—,  
 बलास—,  
 यक्षम्—,  
 यक्षमरोग—,  
 रोग—,  
 विष—,  
 श्वेतकुष्ठ—,  
 सर्पविष—,  
 ईर्ष्याविनाशनम् ।  
 मन्या—,  
 अप+ नि ।  
 ईर्ष्या— अपनयनम् ।  
 चि+ बर्ह् ।  
 यक्षमविबर्हणम् ।  
 वाध् ।  
 सपत्नीबाधनम् ।  
 उत्+वि+ मुच् ।  
 उन्मत्तता-मोचनम् ।  
 दुःख—,  
 निर्ऋति—,  
 पाप—,  
 पाश—,  
 बन्ध—,

मूत्र-- मोचनम् ।  
 शाप-- ,,  
 उत् - ,,  
 पाश - विमोचनम् ।  
 नि + वृ ।  
 गर्भदोष-निवारणम् ।  
 यक्षम्-- ,,  
 रोग-- ,,  
 सर्पविष-- ,,  
 उप+ शम् ।  
 कास-शमनम् ।  
 पाप-- ,,  
 मन्यु-- ,,  
 वृषरोग-- ,,  
 शाप-- ,,  
 रोग-उपशमनम् ।  
 हन् ।  
 अलक्ष्मी-घ्नम् ।  
 क्रिमि-- ,,  
 रक्षो-- ,,  
 रोग-- ,,  
 विष-- ,,  
 पाप्म-- हा  
 पारि+ ह् ।  
 कृत्यापरिहरणम् ।

### भावकरणार्थं निर्दिष्टाः विषयाः ।

दीर्घायुःप्राप्तिः ।  
 मेधा- जननम् ।  
 सपत्नी- जयः ।  
 केश- दृंहणम् ।  
 गर्भ- दृंहणम् ।  
 धमनी- बन्धनम् ।  
 सर्पेभ्यः- रक्षणम् ।  
 आयुर्- वर्धनम् ।  
 केश- वर्धनम् ।

मेधा- वर्धनम् ।  
 सौभाग्य- वर्धनम् ।  
 द्रष्टुः कामः ।  
 आयुष्कामः ।  
 परस्परैकचित्तीकरणकामः ।  
 पुष्टि- कामः ।  
 वृष्टि- कामः ।  
 सपत्नक्षय- कामः ।  
 स्वस्त्ययन- कामः ।

# यक्षमनाशनम् ।

( १ ) गुणबोधक-पदसहिता मन्त्रोक्त-देवताः ।

अग्निः अ. ३, ३१, १, ६; १६८, १७३ । २०, ९६, २; २०८ ।  
१२, २, ३-५, १७-१८, ५०, ५२; २१९-२१, २३३-३४,  
२६६, २६८ । १२, २, १-५५; २१७-७१

अग्निः क्रव्यात् १२, २, ७-१०, १५-१६, ३५-३८; २२३-२६,  
२३१-२३२, २५१-५४

,, गार्हपत्यः १२, २, ३४, ४४-४६; २५०, २६०-६२

,, वैश्वानरः ६, ८५, ३; १८४

,, संकुसुक्तः १२, २, ११-१४, १९, ४०; २२७-३०, २३५,  
२५६

अध्या ६, ९१, २; २००

अनड्वान् १२, २, ४८; २६४

अशमन्वती १२, २, २६-२७; २४२-४३

आदित्यः १२, २, ६; २२२ । १९, ८, २१-२२; २९२-९३

आदित्याः ९, ८, २२; २९३

आपः ३, ३१, ३; १७० । ३, ७, ५; १९६ । ६, ९१, ३; २०१ ।

१२, २, ४०-४१; २५६-५७

आयुः ३, ३१, ८-१०; १७५-७७

आयुष्यम् २, ३३, १-७; २९४-३००

इन्द्रः ६, ८५, २; १८३ । २०, ९६, ९; २०८ । १२, २, ४७,  
५४; २६३, २७०

इन्द्रामी २०, ९६, ६; २०५

ऋषयः १२, २, २९-३०; २४५-४६

ओषधयः ६, २०, २; १८०

गुल्युल्लुः अ. १९, ३८, १-३, २०२-४

ग्राम्याः पशवः ३, ३१, ३; १७०

चन्द्रः ३, ३१, ६; १७३

चन्द्रमाः २, ३३, १-७, २९४-३००

तक्षमा ६, २०, १-३; १७९-८१

तारके ३, ७, ४; १९५ । विवृतौ सुभगे ।

त्वष्टा ३, ३१, ५; १७३ । १२, २, २४; २४०

दै०[आयुर्वेद०] २५

देवाः ३, ३१, १, ७; १६८, १७४ । ६, ८५, १-२; १८२-८३ ।

ऋ. १०, ८५, ३१; २३३६ यज्ञियाः ।

द्यौः ६, २०, २; १८०

द्यावापृथिवी ३, ३१, ४; १७१

धाता १२, २, २५; २४१

पन्थानः ३, ३१, ४; १७१

पर्जन्यः पर्जन्यस्य ऋष्टिः ३, ३१, ११; १७८

पवमानः ३, ३१, २; १६९

पशवः ग्राम्याः ३, ३१, ३; १७०

पाप्महा ३, ३१, १-११; १६८-७८

पृथिवी ६, २०, २; १८०

बृहस्पतिः २०, ९६, ९; २०८

ब्रह्मा १२, २, ६; २२२ । वसुर्नातिः ।

ब्रह्मणस्पतिः १२, २, ६; २२२

मन्त्रोक्ताः १२, २, १-५५; २१७-७१

मित्रः अ. ६, ८५, २; १८३

मृत्युः १२, २, २१-३३; २३७-४९

यक्षमनाशनम् ऋ. १०, १६३, १-६; १६२-६७ । अ. ३, ३१,

१-११; १६८-७८ । ६, २०, १-३; १७९-८१ । ८५, १-३;

१८२-१८४ । १२७, १-३; १८५-८७ । १, १२, १-४;

१८८-१९१ । ३, ७, ६-७; १९७-९८ । ६, ९१, १-३;

१९९-२०१ । १९, ३८, १-३; २०२-४ । २०, ९६, ६-१०;

२०५-९ । ९६, १७-२३; २१०-१६ । ऋ. १०, ८५, ३१;

२३३६

यक्षमनिवारणम् अ. ९, ८, १-२२; २७२-९३

यक्षमरोग नाशनम् अ. १२, २, १-५५; २१८-७१

यक्षम विबर्हणम् अ. २, ३३, १-७; २९४-३००

रुद्रः ६, २०, २; १८०

रुद्राः १२, २, ६; २२२

वनस्पतिः ६, ८५, १; १८२ । १२७, १-३; १८५-८७

वहणः ६, २०, २; १८० । ६, ८५, २; १८३  
 वसवः १२, २, ६; २२२  
 वातः ६ ९१, २; २००  
 विचृतौ तारके ३, ७, ४; १९५ । सुभगे ।  
 विश्वे देवाः ६, ८५, २; १८३ । १२, २, २८, २४४  
 शक्रः अ. ३, ३१, २; १६९  
 सर्वशीर्षामयायपाकरणम् २, ८, १-२२; २७२-९३

सविता २०, ९६, ९; २०८  
 सुपत्नी १२, २, ३१; २४७ । अनमीवाः अनश्रवः अविधवाः  
 नारीः सुरत्नाः ।  
 सूर्यः ३, ३१, ७; १७४ ( विश्वतोवीर्यः ) । १, १२, १-४;  
 १८८-९१ । ६, ९१, २; २०० । आग्निवायुसूर्यात्मा ।  
 हरिणः ३, ७, १; १९२ रघुष्यद् । ३, ७, २-३; १९३-९४

## (२) यक्षमस्य शरीरगतस्थानानि ।

अंसौ ऋ. १०, १६३, २; १६३ । अ. २०, ९६, १८; २११ ।  
 २, ३३, २; २९५  
 अक्षिणी ऋ. १०, १६३, १; १६२ । अ. २०, ९६, १७;  
 २१० । २, ३३, १; २२४  
 अंगम् ऋ. १०, १६३, ६; १६७ । अ. २०, ९६, २३; २१६ ।  
 २, ३३, ७; ३००  
 अंगानि अ. ९, ८, ९, १९; २८०, २९०  
 अङ्गुलयः अ. २०, ९६, २२; २१५ । २, ३३, ६; २९९  
 अनुक्यम् ऋ. १०, १६३, २; १६३ । अ. २०, ९६, १८;  
 २११ । २, ३३, २; २९५  
 अन्तरात्मा अ. ९, ८, ९; २८०  
 अष्टीवन्तौ ऋ. १०, १६३, ४; १६५ । अ. २०, ९६, २१;  
 २१४ । २, ३३, ५; २९८  
 अस्थानि ऋ. १०, १६३, ४; १६५ । अ. २०, ९६, २२;  
 २१५ । २, ३३, ६; २९९  
 आत्मा ऋ. १०, १६३, ५; १६६ । अ. २०, ९६, २२;  
 २१५ । २, ३३, ६; २९९  
 आन्त्राणि ऋ. १०, १६३, ३; १६४ । अ. २०, ९६, १९;  
 २१२ । २, ३३, ३; २९६  
 आस ( आसः पद्म ) अ. ९, ८, १०; २८१  
 आस्यम् अ. ९, ८, ३; २७४  
 उदरम् अ. ९, ८, ९, ११-१२; २८०, २८२-२८३ । २०,  
 ९६, २०; २१३ । २, ३३, ४; २९७  
 उष्णिहाः ऋ. १०, १६३, २; १६३ । अ. २०, ९६, १८; २११ ।  
 २, ३३, २; २९५

ऊरु ऋ. १०, १६३, ४; १६५ । अ. २०, ९६, २१; २१४ ।  
 २, ३३, ५; २९८ । अ. ९, ८, ७; २७८  
 कक्षम् अ. ६, १२७, २; १८६  
 कङ्कषाः अ. ९, ८, २; २७३  
 कर्णौ ऋ. १०, १६३, १; १६२ । अ. २०, ९६, १७; २१० ।  
 २, ३३, १; २९४ । अ. ९, ८, २-३; २७३-७४  
 कीकसाः ऋ. १०, १६३, २; १६३ । अ. २०, ९६, १८;  
 २११ । २, ३३, २; २९५  
 कुक्षी ऋ. १०, १६३, २; १६३ । अ. २०, ९६, २०; २१३ ।  
 २, ३३, ४; २९७  
 क्लोमन् अ. ९, ८, १२; २८३  
 गवीनिके अ. ९, ८, ७; २७८  
 गुदाः ऋ. १०, १६३, ३; १६४ । अ. २०, ९६, १९; २१२ ।  
 २, ३३, ३; २९६ । अ. ९, ८, १७; २८८  
 ग्रीवाः ऋ. १०, १६३, २; १६३ । अ. २०, ९६, १८; २११ ।  
 २, ३३, २; २९५  
 छुबुकम् ऋ. १०, १६३, १; १६२ । अ. २०, ९६, १७;  
 २१० । २, ३३, १; २९४  
 जानू अ. ९, ८, २१; २९२  
 जिह्वा ऋ. १०, १६३, १; १६२ । अ. २०, ९६, १७; २१० ।  
 २, ३३, १; २९४  
 त्वक् ( त्वचस्यम् )..... अ. २०, ९६, २३; २१६ । २, ३३,  
 ७; ३००  
 दोस् ( दोषण्यम् ) ऋ. १०, १६३, २; १६३ । अ. २०, ९६, २३;  
 २१६ । २, ३३, ७; ३००

धमन्यः ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, २२; २१५।  
 २, ३३, ६; २९९  
 नखानि ऋ. १०, १६३, ५; १६६। अ. २०, ९६, २२; २१५।  
 २, ३३, ६; २९९  
 नाभिः अ. ९, ८, १२; २८३। २०, ९६, २०; २१३। २,  
 ३३, ४; २९७  
 नासिका ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, १७;  
 २१०। २, ३३, १; २९४  
 परुस्-रूपि अ. ९, १८, १८; २८९  
 पर्वन्-र्व ऋ. १०, १६३, ६; १६७। अ. २०, ९६, २३;  
 २१६। २, ३३, ७; ३००  
 पाणी ऋ. १०, १६३, ६; १६७। अ. २०, ९६, २२; २१५।  
 २, ३३, ६; २९९  
 पादौ अ. ९, १८, २१; २९२  
 पार्श्वे अ. ९, ८, १५; २८६। अ. २०, ९६, १९; २१२।  
 २, ३३, ३; २९६  
 पाष्णीं ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।  
 २, ३३, ५; २९८  
 पृष्ठयः अ. ९, ८, १५; २८६  
 प्रपदे ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।  
 २, ३३, ५; २९८  
 प्लाशयः ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, २०; २१३।  
 २, ३३, ४; २१७  
 णीहा ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।  
 २, ३३, ३; २९६  
 बाहू ऋ. १०, १६३, २; १६३। अ. २०, ९६, १८; २११।  
 २, ३३, २; २९५  
 भंसस् ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।  
 २, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२  
 भासदः ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१;  
 २१४। २, ३३, ५; २९८

मज्जा अ. ९, ८, १८, २८२। अ. २०, ९६, २२; २१५।  
 २, ३३, ६; २९९  
 मतस्नौ ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।  
 २, ३३, ३; २९६  
 मस्तिष्कम् ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०, ९६, १७;  
 २१०। २, ३३, १; २९४  
 मुष्कौ अ. ६, १२७, २; १८६  
 मूर्धा अ. ९, ८, १३; २८७  
 मेहनम् ऋ. १०, १६३, ५; १६६  
 यकृत्-यकन् ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९;  
 २१२। अ. २, ३३, ३; २९६  
 लोम-मानि ऋ. १०, १६३, ५-६; १६६-१६७। अ. २०,  
 ९६, २३; २१६। २, ३३, ७; ३००  
 वक्षणाः अ. ९, ८, १६; २८७  
 वनंकरणम् ऋ. १०, १६३, ५; १६६  
 वनिष्ठुः ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, २०;  
 २१३। २, ३३, ४; २९७  
 शीर्षन् अ. ९, ८, १-५, २२; २७२-७६, २९३  
 शीर्षन् (शीर्षण्यम्) ऋ. १०, १६३, १; १६२। अ. २०,  
 ९६, १७; २१०। २, ३३, १; २९४  
 श्रेणी ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २१; २१४।  
 २, ३३, ५; २९८। अ. ९, ८, २१; २९२  
 सीमन्-मा अ. ९, ८, १३; २८४  
 स्नावन्-वा ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, २२;  
 २१५। २, ३३, ६; २९९  
 हलीक्षणम् ऋ. १०, १६३, ४; १६५। अ. २०, ९६, १९;  
 २१२। २, ३३, ३; २९६  
 हृदयम् ऋ. १०, १६३, ३; १६४। अ. २०, ९६, १९; २१२।  
 २, ३३, ३; २९६। अ. ९, ८, १२, १४, २२; २७९, २८३;  
 २८५, २९३

### (३) गुणबोधकपदसहिताः यक्षमभेदाः ।

अक्षयोः विसल्पकः अ. ६, १२७, ३; १८७  
 अघशंसः १२, २, २; २१८  
 अंगज्वरः ९, ८, ५; २७६

अंगभेदः ९, ८, ५; २७६। ९, ८, २२; २९३  
 अंगयः विसल्पकः ६, १२७, ३; १८७  
 अज्ञातः यक्षमः ६, १२७, ३; १८७

अज्ञातयक्ष्मः २०,९६,६; २०५  
 अधराञ्च् ६,१२७,३; १८७  
 अन्धः पुरुषः ( अन्धत्वम् ) ९,८,४; २७५  
 आवा ९,८,९; २८०  
 अभिशोचयिष्णुः ६,२०,३; १८१  
 अभ्रजाः १,१२,३; १९०  
 अरातिः ३,३१,१; १६८ । १२,२,३; २१९  
 अरुणः ६,२०,३; १८१  
 अर्षणीः ९,८,१३,१६,२१; २८४,२८७,२९२  
 अलाजिः ९,८,२०; २८१  
 आर्तिः ३,३१,२; १६९  
 आसौ बलासः ९,८,१०; २८१  
 कर्ण्यः विसल्पकः ६,१२७,३; १८७  
 कर्णशूलः ९,८,१-२; २७२-७३  
 कासः १,१२,३; १९०  
 काहाबाहः ९,८,११; २८२  
 कीकसाः ९,८,१४; २८५  
 क्षेत्रियः ३,७,१-७; १९२-९८  
 गुष्पितः हृदि ३,७,२; १९३  
 गोष्ठु यक्ष्मः १२,२,१; २१७  
 ग्राहिः २०,९६,६; २०५  
 जातः पर्वणि पर्वणि ऋ. १०,१६३,६; १६७  
 तक्मा ६,२०,१-३; १७९-८१ । ९,८,६; २७७  
 तपुर्वधः ६,२०,१, १७९  
 तिलिपजः १२,२,५४; २७०  
 त्वचस्यः २०,९६,२३; २१६  
 दण्डनम् १२,२,५४; २७०  
 दुःशंसः १२,२,२; २१८  
 दुर्भूतं सर्वम् ३,७,७; १९८  
 दोषण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,२; १६३  
 निर्ऋतिः २०,९६,७; २०६ । १२,२,३; २१९  
 पापकृत्या ३,३६,२; १६९  
 पाप्मा सर्वः ३,३१,१-११; १६८-७८  
 पुरुषेषु यक्ष्मः १२,२,१; २१७  
 प्रमोतः पुरुषः ( प्रमोतत्वम् ) ९,८,४; २७५

बभ्रुः ( तक्मा ) ६,१०,३; १८१  
 बलासः ६,१२७,२; १८६ । ९,८,८,१०; २७९,२८१  
 मूत्रं आमयत् ९,८,१०; २८१  
 मृत्युः १२,२,३; २१९  
 यक्ष्मः ( बहुशः प्रतिसूक्तम् )।  
 रपः ६,९१,१-२; १९९-२००  
 राजयक्ष्मः २०,९६,६; २०५  
 रोपणाः ९,८,१९; २९०  
 लोहितः ६,१२७,२; १८६  
 वन्यः ६,२०,३; १८१  
 वातजाः १,१२,३; १९०  
 वातीकारः ९,८,२०; २९१  
 विद्रधः ६,१२७,१,३; १८५,१८७ । ९,८,२०; २९१  
 विलोहितः ९,८,१; २७२  
 विश्वशारदः ९,८,६; २७७  
 विश्वाङ्ग्यः ९,८,५; २७६  
 विपूचीनः ३,७,१; १९२  
 विष्वङ् २०,९६,२३; २१६  
 विसल्पः ९,८,२०; २९१  
 विसल्पकः ६,१२७,३; १८७ । ९,८,२,५; २७३,२७६  
 शपथः १९,३८,१; २०२  
 शरुः १२,२,४७; २६३  
 शीर्ष्णः रोगः ९,८,२२; २९३  
 शीर्ष्ण्यः यक्ष्मः ऋ. १०,१६३,१; १६२ । अ. २०,९६,  
 १७; २१०  
 शीर्ष्ण्यः रोगः ९,८,१-५; २७२-७६  
 शीर्ष्ण्यः १, १२, ३; १९० । १२,२,१९-२०;  
 २३५-३६ । ९,८,१, २७२  
 शीर्ष्ण्यः ९,८,१; २७२  
 शुष्मः १,१२,३; १९०  
 शुष्मी ६,२०,१; १७९  
 सीसम् १२,२,२०; २३६  
 हरिमा ९,८,९; २८०  
 हृदयामयः ६,१२७,३; १८७

## (४) दीर्घायुत्वपर्यायाः ।

आयुः	३,३१,१-११; १६८-७८ । १२,२,२५; २४१
„ दीर्घम्	१२,२,६,३२,५५; २२२,२४८,२७१
„ द्राघीयः	१२,२,३०; २४६
„ सर्वम्	२०,९६,१०; २०९ । १२,२,२४; २४०
„ शतम्	२०,९६,८-९; २०७-८
„ जरसम्	१२,२,२४; २४०

शतं वसन्ताः	२०,९६,९; २०८
„ शरदः	२०,९६,९; २०८
„ हेमन्ताः	२०,९६,९; २०८
„ हिमाः	१२,२,८, २४४
शतशरदम्	२०,९६,७; २०६

## (५) भैषज्यम् ।

( १ ) ओषधयः ।

गुल्गुलुः	१९,३८,१-३; २०२-४
गुल्गुलु, सैन्धवम्	१९,३८,१; २०३
„ समुद्रियम्	१९,३८,२; २०३
गुल्गुलोः सुरभिः गन्धः	१९,३८,१; २०२
चीपु-द्रुः	६,१२७,२; १८६
यवः	६,९१,१८; १९९

वरणः ( वनस्पतिः देवः )	६,८५,१; १८२
वनस्पतिः	६,१२७,१; १८५

( २ ) अन्ये पदार्थाः ।

आपः	३,७,५; १९६ । ६,९१,३; २०१
हरिणस्य शीर्षाणि भैषजम्	३,७,१; १९२
हरिण- विषाणम्	३,७,१-२; १९-२९३

# ओषधिवनस्पतयः ।

## ओषधिदेवता-गुणबोधक पदानि ।

पदानि ।	स्थानम् ।	विशेषनाम ।	पदानि ।	स्थानम् ।	विशेषनाम ।
अंशुमत्यः	अ० ८,७,४; ३२७	ओषधयः	अपक्वीताः	८,७,११; ३३४	ओषधयः
अग्नेः घासः	अ. ८,७,८ ३३१	„	अपां स्वसा	५,५,७; ४३४	लाक्षा
अग्रं आपः	अ० ८,७,३; ३२६	„	अपां गर्भः	८,७,८; ३३१	ओषधयः
अग्रं ओषधीनाम् एषि	४,१९,३; ३९८	अपामार्गः	अपामार्गः	४,१७,१-८ । १८,१-८ । १९,१-८ ।	
अग्रं मधुमत्	८,७,१२; ३३५	ओषधयः		७,६५,१-३; ३८०-४०६	विशेषनाम
अजबधु पिता	५,५,८; ४३५	लाक्षा	अपुष्पाः	ऋ० १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः
अतिविद्धभेषजी	६,१०९,१; ४१३	पिप्पली	अफलाः	ऋ० १०,९७,१५; ३१५ । ८,७,२७; ३५०	„
अनड्वान् जगताम्	१९,३९,४; ४५०	कुष्ठः	अबन्धुकृत्	४,१९,१; ३९६	अपामार्गः
अनाधुषः	६,२१,३; ४५९	रेवतीः	अभिदीपयन्	४,१९,३; ३९८	„
अनावयुः	६,१६,१; ४६६	विशेषनाम	अभिष्टुताः	८,७,११; ३३४	ओषधयः
अन्नं घृतं आसाम्	८,७,१२; ३३५	ओषधयः	अमृतस्य भक्षः	८,७,१२; ३३५	„



अयक्ष्मान् पुरुषान् करत् ६,५९,२; ४०८	अरुन्धती	ऊर्जयन्ती ऋ. १०,२७,७; ३०७	वि. नाम
अरुन्धती ८,७,६; ३२९ । ६,५९,१-३	ओषधिविशेषः	ऋतावरी ६,३०,३; ४७२	शमी
,, ६,५९,१-३; ४०७ ९	,,	एकशुक्लाः ८,७,४; ३२७	ओषधयः
,, ४,१२,१; ४२१	रोहणी	ओषधिः ओषधयः ( बहुलं दृश्यते )।	सामान्यनाम
,, ५,५,५; ४३२	लाक्षा	ओषधीनां गर्भः ६,२५,३; ४१२	कुष्ठः, अश्वत्थो वा
अर्यमा पितामहः ५,५,१; ४२८	,,	कण्वजम्भनी २,२५,१; ४१६	पृथ्विपर्णी
अलसाला ( पूर्वा ) ६,१६,४; ४६९	विशेषनाम	काण्डिनीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः
अषकोल्वाः ८,७,९; ३३२	ओषधयः	कानीनः ५,५,५; ४३५	लाक्षा
अवपतन्तीः दिवः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	,,	कुष्ठः ६,९५,१-३; ४१०-१२ । ५,४,१-१० । १९,	वि. नाम
अश्वत्थः ५,५,५; ४३२ । ५,४,३; ४३९ । १९,३९,६;	विशेषनाम	३९,१-१०; ४३७-४५६	वि. नाम
४५२	ओषधयः	कृत्यादृषणीः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः
अश्वत्थः, दर्भः ८,७,२०; ३४३	ओषधयः	कृष्णाः ८,७,१; ३२४	,,
अश्वत्थे निषूदनम् ऋ. १०,९७,५; ३०५ । वा० य०	,,	केशहंहणीः ६,२१,३; ४५९	रेवतीः
१२,७९; ३५,४; ३५८	,,	केशवर्धनीः ६,२१,३; ४५९	,,
अश्रावती ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम	केशवर्धनी ६,१३,७,१; ४६३	वनस्पतिः
असिक्नी ८,७,१; ३२४	ओषधयः	क्षिप्तभेषजी ६,१०९,१; ४१३	पिप्पली
आंगिरसीः ८,७,१७,२४; ३४०,३४७	,,	क्षिप्तस्य भेषजी ६,१०९,३; ४१५	,,
आत्मा वातः ५,५,७; ४३४	लाक्षा	खदिरः ५,५,५; ४३२	ओषधिविशेषः
आपः अप्रम् ८,७,३; ३२६	ओषधयः	गर्भः अपाम् ८,७,८; ३३१	ओषधयः
आबयुः ६,१६,१; ४६६	वि. नाम	,, ओषधीनाम् ६,९५,३; ४१२	अश्वत्थः कुष्ठो वा
आभृताः ८,७,८,२५; ३३१,३४८	ओषधयः	,, विश्वस्य भूतस्य ” ” ” ”	,,
इक्ष्वाकुः १९,३९,९; ४५५	,,	,, हिमवताम् ” ” ” ”	,,
इक्षुतिः माता ऋ. १०,९७,९; ३०९	,,	गोभाजः ऋ. १०,९७,५; ३०५ । वा० य० १२,७९;	वि. नाम
उक्थिन्-क्थी वा० य० २८,३३; ३७६	वनस्पतिः	३५,४; ३५८	ओषधयः
उक्षिता अश्वस्य अन्वा ५,५,८; ४३५	लाक्षा	गोष्ठं पयस्वन्तं करत् ६,५९,२; ४०८	अरुन्धती
उग्राः ८,७,४,१०; ३२७,३३३	ओषधयः	घासः अमेः ८,७,८; ३३१	ओषधयः
उग्रा २,२५,१; ४१६	पृथ्विपर्णी	जनानां न्यखनी ५,५,२; ४२९	लाक्षा
उत्तमः ५,४,९; ४४५	कुष्ठः	जयन्ती ५,५,३; ४३०	,,
उत्तमः नाम ते पिता ५,४,९; ४४५	,,	जातः त्रिः आदित्येभ्यः परि १९,३९,५; ४५१	कुष्ठः
उत्तमः ओषधीनाम् १९,३९,४; ४५०	,,	,, ,, विश्वेभ्यो देवेभ्यः १९,३९,५; ४५१	,,
उत्तरा ३,१,४; ३६७	वि. नाम	,, ,, शाम्बुभ्यो अंगिरीभ्यः १९,३९,५; ४५१	,,
उत्तानपर्णा ३,१,२; ३६५	वि. नाम	,, देवेभ्यः अधि ५,४,७; ४४३	,,
उदकात्मानः ८,७,९; ३३२	ओषधयः	,, सुपर्णसुवने गिरौ ५,४,२; ४३८	,,
उदोजस्-जाः ऋ. १०,९७,७; ३०७	वि. नाम	,, हिमवतः उदङ् ५,४,८; ४४४	,,
उद्ययन्ती ८,७,६; ३२९	अरुन्धती	जामयः ऋ. ३,५७,३; ३६३	ओषधयः
उन्मुघन्तीः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः	जामिकृत् ४,१९,१; ३९६	अपामार्गः

जीवन्ती ८,७,६; ३२९	विशेषनाम	नमस्यन्तीः ऋ. ३,५७,३; ३६३	औषधयः
जीवन्ती नाम पिता १९,३९,३; ४४९	कुष्ठः	नितत्नी ६,१३६,१; ४६०	वि. नाम
जीषला ८,७,६; ३२९	वि. नाम	निषदनं अश्वत्थे ऋ. १०,९७,५; ३०५	औषधयः
जीवला नाम ते माता १९,३९,३; ४४९	कुष्ठः	निष्कृतिः ५,५,६; ४३३	लाक्षा
जीषला ६,५९,३; ४०९	अश्वत्थी	निष्कृतीः ऋ. १०,९७,९; ३०९	औषधयः
जोष्टा धियः वा. य. २८,१०; ३७५	वनस्पतिः (यूपः)	नीलागलसाला ६,१६,४; ४६९	वि. नाम
तकमनाशनः ५,४,१-२; ४३७-४३८	कुष्ठः	न्यग्रोधः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
तीक्ष्णशृंग्यः ८,७,९; ३३२	औषधयः	न्यग्रचनी जनानाम् ५,५,१; ४२८	लाक्षा
त्विषीमती ४,१९,२; ३९७	अपामार्गः	पतात्रिणी ५,५,९; ४३६	"
त्राता पाकस्य ४,१९,३; ३९८	"	"	"
त्रायमाणः १९,३९,१; ४४७	कुष्ठः	पतात्रिणीः ऋ. १०,९७,२; ३०९	औषधयः
दुर्भः अश्वत्थः वीरुधाम् ८,७,२०; ३४३	अश्वत्थः	पयस्वतीः ८,७,१७; ३४०	"
दिव्याः ८,७,३,२४; ३२६,३४७	औषधयः	परागताः दूरम् ऋ. १०,९७,२१; ३२१	"
देवः १९,३९,१; ४४७	कुष्ठः	परिष्ठाः ऋ. १०,९७,१०; ३१०	"
देवः वा. य. ५,४२-४३; ३७०-३७१ । २०,४५;		पर्णः ५,५,५; ४३२	वि. नाम
३७२ । २८,४३; ३७७ २९,३५; ३७९	वनस्पतिः (यूपः)	पर्णं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	औषधयः
देवीः ऋ. १०,९७,४; ३०४	औषधयः	पर्णं वसतिः ऋ. १०,९७,५; ३०५	"
देवी ६,१३६,१; ४६०	नितत्नी	पर्युक्ता कण्ठेन नार्षदेन ४,१९,२; ३९७	अपामार्गः
देवजूता ३,१८,२; ३६५	उत्तानपर्णा	पाकस्य त्राता ४,१९,३; ३९८	"
देवलोकं प्रजानन् २९,१०; ३७८	वनस्पतिः (यूपः)	पारयिष्णवः ऋ. १०,९७,३; ३०३	औषधयः
देवसदनः ५,४,३; ४३९	अश्वत्थः	पिता अजबभ्रः ५,५,८; ४३५	(सिलाची)लाक्षा
देवेभ्यः त्रियुगं पुरा ऋ. १०,९७,१; ३०१	औषधयः	" द्यौः ८,७,२; ३२५	औषधयः
देवानां स्वसा ५,५,१; ४२८	लाक्षा	" नमः ५,५,१; ४२८	(सिलाची)लाक्षा
द्यौः पिता ८,७,२; ३२५	औषधयः	" विभिन्दिन् नाम ४,१९,५; ४००	अपामार्गः
धनं सनिध्यन्तीः ऋ. १०,९७,८; ३०८	"	" विहहो नाम ६,१६,२; ४६७	आबयुः
धवः ५,५,५; ४३२	वि. नाम	पितामहः अर्यमा ५,५,१; ४२८	लाक्षा
धामानि शतम् ऋ. १०,९७,२; ३०२	औषधयः	पिप्पली-लयः ६,१०९,१-२; ४१३-४१४	वि. नाम
धामानि शतं सदा च ऋ. १०,९७,१; ३०१	"	पुनर्नवाः ८,७,८; ३३१	औषधयः
धियः जोष्टा वा. य. २८,१०; ३७५	वनस्पतिः (यूपः)	पुनः सरा ४,१७,२; ३८१	अपामार्गः
धेनवः ऋ. ३,५७,३; ३६३	औषधयः	पुरुषजीवनीः ८,७,४; ३२७	औषधयः
ध्रुवाः ८,७,८; ३३१	"	पुष्पा ८,७,६; ३२९	वि. नाम
नद्यमारः १९,३९,२; ४४८	कुष्ठः	पुष्पं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	औषधयः
नद्यायम् १९,३९,२; ४४८	"	पुष्पिणीः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	"
नद्यारिषः ८,७,६; ३२९	औषधयः	पुष्पवतीः ऋ. १०,९७,३; ३०३ । अ. ८,७,२७;	"
नद्यारिषः १९,३९,२; ४४८	कुष्ठः	३५०	"
नभः पिता ५,५,१; ४२८	लाक्षा	पूर्वा जाताः ऋ. १०,९७,१; ३०१	"
		पृथिवी माता ८,७,२; ३२५	"

पृथयः ८,७,१; ३२४	ओषधयः	मधुमान् ऋ. १,९०,८; ४७३	वनस्पतिः
पृथ्विपर्णी २,२५,१-४; ४१६-४१९	वि. नाम	मधुमती ८,७,६; ३२९	ओषधयः
प्रचेतसः ८,७,७; ३३०	ओषधयः	मधुना संयुतः ६,३०,१; ४७०	यवः
प्रजाता मधोः अधि १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः	मधुजाता १,३४,१; ४७८	मधुवनस्पतिः
प्रजानन् देवलोकम् वा० य० २९,१०; ३७८	वनस्पतिः	मधोः अधि प्रजाता " "	"
प्रतन्वतीः ८,७,४; ३२७	ओषधयः	मधोः सम्भक्ताः ८,७,१२; ३३५	ओषधयः
प्रतीचीन फलः ४,१९,७; ४०२	अपामार्गः	मध्यं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	"
प्रत्यातिष्ठन्ती ५,५,३; ४३०	लाक्षा	मातरः ऋ. १०,९७,४; ३०४	"
प्रथमा (सहमाना) २,२५,२; ४१७	पृथ्विपर्णी	माता इच्छतिः ऋ. १०,९७,९; ३०९	"
प्रसूमतीः ८,७,२७; ३५०	ओषधयः	माता पृथिवी ८,७,२; ३२५	"
प्रसूवरीः ऋ. १०,९७,३; ३०३	,,	माता मदावती नाम ६,१६,२; ४६७	आबयुः
प्रस्तृणतीः ८,७,४; ३२७	,,	माता रात्रिः ५,५,१; ४२८	लाक्षा
ऋक्षः ५,५,५; ४३२	वि. नाम	माध्वीः ऋ. १,९०,६; ३६२	ओषधयः
फलिनीः ऋ. १०,९७,१५; ३१५	ओषधयः	मूलं मधुमत् ८,७,१२; ३३५	"
ब्रध्रवः ऋ. १०,९७,१; ३०२ । ८,७,१; ३२४	,,	मूलं समुद्रः ८,७,२; ३२५	"
बलवत्तमा वीरुधाम् ३,१८,१; ३६४	उत्तानपर्णा	मेदिनीः ८,७,७; ३३०	"
बलासनाशनीः ८,७,१०; ३३३	ओषधयः	यवः ८,७,२०; ३४३ । ६,३०,१; ४७०	वि. नाम
बर्हाः ऋ. १०,९७,१५; ३१५ । ६,९६,१; ३५२	"	रक्षसः हन्ता ४,१९,३; ३२८	अपामार्गः
बृहस्पत्याशा ६,३०,३; ४७२	शमी	रराणः त्मना देवेषु वा. य. २७,२१; ३७४	वनस्पतिः (यूपः)
बृहस्पतिप्रसूताः ऋ. १०,९७,१५,१९; ३१५,३१९; ६,९६,१; ३५२	ओषधयः	रशानां बिभ्रत् वा. य. २८,३३; ३७६	" "
भक्षः अमृतस्य ८,७,१२; ३३५	"	राजा वनस्पतिः यासाम् ८,७,१६; ३३९	ओषधयः
भगः वा० य० २८,३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)	राजा वीरुधाम् ८,७,२०; ३४३	सोमः
भद्रः ५,५,५; ४३२	वि. नाम	रात्रिः माता ५,५,१; ४२८	लाक्षा
भद्रा ४,१२,२; ४२२	रोहणी	रुहः सहस्रं यासाम् ऋ. १०,९७,२; ३०२	ओषधयः
भर्त्री शश्वताम् ५,५,२; ४२९	लाक्षा	रेवतीः ६,२१,३; ४५९	वि. नाम
भूमिं सन्तन्वतीः ८,७,१६; ३३९	ओषधयः	रोहणी ४,१२,१; ४२१	वि. नाम
भेषजीः ८,७,८; ३३१	"	रोहिणीः ८,७,१; ३२४	ओषधयः
भेषजौ ८,७,२०; ३४३	वीहिः यवश्च	लाक्षा ५,५,७; ४३४	लाक्षा
भेषजानां श्रेष्ठः ६,२१,२; ४५८	चन्द्रमाः	लोमशवक्षणा ५,५,७; ४३४	"
भणिः वैयाघ्रः यासाम् ८,७,१४; ३३७	वीरुधः	वनस्पतिः वा० य० ५,४२-४३ । २०,४५ । २१,२१ । २७,२१ । २८,१०. ३३. ४३;	वनस्पतिः (यूपः)
मदावती नाम माता ६,१६,२; ४६७	आबयुः	३७०-३७७	वनस्पतिः (यूपः)
मधुमत् अग्रम् ८,७,१२; ३३५	ओषधयः	वनस्पतिः (उपर्युक्तान्यस्थले सामान्यनाम रूपेण निर्देशः) ।	
" पर्णम् " "	"	वपुष्टमा ५,५,६; ४३३	लाक्षा
" पुष्यम् " "	"	वर्षवृद्धा ६,३०,३; ४७२	शमी
" मध्यम् " "	"	वशिः वा० य० २८,३३; ३७६	(वनस्पतिः) यूपः
" मूलम् " "	"		

वशी ४, १७, ८; ३८७	अपामार्गः	शतशाखा ४, १९, ५; ४००	अपामार्गो वनस्पतिः
वसतिः पर्णं वः ऋ. १०, ९७, ५; ३०५ । वा० व्य०		शपथयावनी ४, १७, २; ३८१	" "
१२, ७९; ३५, ४; ३५८	ओषधयः	शमिता वा. य. २१, २१; २७, २१;	
वातः आत्मा ५, ५, ७; ४१४	लक्षा	२८, १०, ३३; ३७३-३७६	वनस्पतिः (यूपः)
वालीकृतस्य भेषजी ६, १०९, ३; ४१५	पिप्पली	शमी ६, ३०, ३; ४७२	वि. नाम
वावशानाः पुत्रम् ऋ. ३, ५७, ३; ३६३	ओषधयः	शश्वतो भर्त्री ५, ५, २; ४२९	लाक्षा
विभिन्दन् नाम पिता ४, १९, ५; ४००	अपामार्गः	शिवाः ८, ७, १७; ३४०	ओषधयः
विभिदन्तो ४, १९, ५; ४००	"	शुक्राः ८, ७, १; ३२४	"
विवरुणाः ८, ७, १०; ३३३	ओषधयः	शुष्मा ५, ५, ७; ४३४	लाक्षा
विशाखाः ८, ७, ४; ३२७	"	सज्जिवरीः ऋ. १०, ९७, ३; ३०३	ओषधयः
विश्वः ऋ. १०, ९७, १०; ३१०	"	सत्यजित् ४, १७, २; ३८१	अपामार्गः
विश्वधार्वायः १९, ३९, १०; ४५६	कुष्ठः	सनिष्यन्तीः धनम् ऋ. १०, ९७, ८; ३०८	ओषधयः
विश्वभेषजः १२, ३९, ५-९; ४५१-४५५	"	सन्तन्वन्ती भूमिम् ८, ७, १६; ३३९	"
विश्वभेषजी ६, १३६, ३; ४६२	नितन्ती	समुद्रः मूलम् ८, ७, २; ३२५	"
विश्वभेषजीः ८, ७, २६; ३४९	ओषधयः	सम्पतिता अश्वस्य अस्नः ५, ५, ९; ४३६	लक्षा
विश्वतोमुखः ७, ६५, २; ४०५	अपामार्गः	सम्भक्ता मधोः ८, ७, १२; ३३५	ओषधयः
विश्वरूपा ६, ५२, ३; ४०९	अरुन्धती	सरा ५, ५, ९; ४३६	लाक्षा
विश्वस्य भूतस्य गर्भः ६, ९५, ३; ४१२	कुष्ठौषधिः	सहमानाः ८, ७, ५; ३२८	ओषधयः
विषदूषणीः ८, ७, १०; ३३३	ओषधयः	" २, २५, २; ४१७	पृथिवीर्णा
विष्णुः वा. य. ५, ४२; ३७०	वनस्पतिः (यूपः)	" ४, १७, २; ३८१	अपामार्गः
विष्ठिताः पृथिवीं अनु ऋ. १०, ९७, १९; ३१९	"	सहस्रधामा ४, १८, ४; ३९१	"
विहह्लो नाम ते पिता ६, १६, २; ४६७	आवयुः	सहस्रनाम्नीः ८, ७, ८; ३३१	ओषधयः
वीरुधः ऋ. १०, ९७, ३, २१; ३०३, ३२१ । ८, ७, २;		सहस्रपर्यः ८, ७, १३; ३३६	"
३२५	सामान्यव ची	सहस्वती ३, १८, २, ५; ३६५, ३६८	उत्तरा उत्तनपर्णा वा
वीरुधां पतिः ४, १२, ४; ४०३	अपामार्गः	" २, २५, १; ४१६	पृथिवीर्णा
वीरुधां बलवत्तमा ३, १८, १; ३६४	उत्तानपर्णा	सासहिः ३, १८, ५; ३६८	उत्तरा
वीरुधां बलवत्तमः ५, ४, १; ४३७	कुष्ठः	सिलाची ५, ५, १, ८; ४२८, ४३५	लाक्षा
वीरुधानां वसिष्ठः ६, २१, २; ४५८	चन्द्रमाः	सिलाञ्जाला ६, १६, ४; ४६२	आवयुः
वृक्षाः उपस्तयः तव ऋ. १०, ९७, २३; ३२३	सोमः	सिषासवः ६, २१, ३; ४५९	रेवतीः केशवर्धनीः
वैश्वदेवीः ८, ७, ४; ३२७	ओषधयः	सीराः ऋ १०, ९७, ९; ३०९	ओषधयः
व्रीहिः ८, ७, २०; ३४३	वि. नाम	सुपर्णाः ८, ७, २४; ३४७	"
शतक्रतुः वा. य. २८, १०, ३३; ३७५-३७६	वनस्पति (यूपः)	सुपिप्पलाः वा. य. ११, ४८; ३५७	"
शतक्रवः ऋ. १०, ९७, २; ३०२	ओषधयः	सुभगा ३, १८, २; ३६५	उत्तानपर्णा
शतवल्शाः वा. य. ५, ४३; ३७१	वनस्पतिः (यूपः)	" ६, ५९, ३; ४०९	अरुन्धती
शतवल्शा ६, ३०, २; ४७१	शमः	" ५, ५, ६-७; ४३३-४३४	लाक्षा
शातविचक्षणः ऋ. १०, ९७, १८; ३१८ । ६, ९६, १;	ओषधयः	" ६, ३०, ३; ४७२	शमी
३५२			

सूर्यवर्णा ५, ५, ६; ४३३	लाक्षा	स्वधितिः वा० य० ४, १; ५, ४२; ६, १५; ३५५ ।	
सोमः ६, २१, २; ४५८	चन्द्रमाः	५, ४२; ३७०	ओषधिः
सोमः (राजा) ऋ. १०, ९७, २२-२३; ३२२-३२३	वि. नाम	स्वसा अपाम् ५, ५, ७; ४३४	लाक्षा
८, ७, २०; ३४३ । ६, ९६, ३; ३५४	ओषधयः	स्वसा देवानाम् ५, ५, १; ४२८	सिलाची (लाक्षा)
सोम-राज्ञीः ऋ. १०, ९७, १८-१९; ३१८-१९,	वि. नाम	ह्यन्ता रक्षसः ४, १२, ३; ३९८	अपामार्गः
६, ९६, १; ३५२	ओषधयः	हितः सखा सोमस्य ५, ४, ७; ४४३	कुष्ठः
सोमावती ऋ. १०, ९७, ७; ३०७	वि. नाम	हिमवतां गर्भः ६, ९५, ३; ४१२	”
स्तम्बिनीः ८, ७, ४; ३२७	ओषधयः	हिरण्यवर्णः वा० य० २८, ३३; ३७६	वनस्पतिः (यूपः)
स्पर्णी ५, ५, ३; ४३०	लाक्षा	हिरण्यवर्णा ५, ५, ६-७; ४३३-३४	लाक्षा

## रोगचिकित्सान्तर्गता ओषधयः ।

घनस्पतिः सौभाग्यवर्धनी । ६, १३९, १-५; ६७७-६८१

कल्याणी ३; ६७९

त्रयस्त्रिंशत् नितानाः १; ६७७

न्यस्तिका १; ६७७

बभ्रु ३; ६७९

वीर्यावती ५; ६८१

शतं प्रतानाः १; ६७७

संवननी ३; ६७९

समुष्पला ३; ६७९

सद्वस्त्रवर्णा १; ६७७

सुभगंकरणं १; ६७७

घनस्पतिः मधुला (रोगोपशमनम्) । ५, १५, १-११;

६५३-६६३

ऋतजाता १-११; ६५३-६६३

ऋतापरी १-११; ६५३-६६३

घनस्पतिः (शापमोचनम्) । २, ७, १-५; ६६८-६७२

अर्षद्विष्टा १; ६६८

देवजाता १; ६६८

मूलं दिवः अवततम् ३; ६७०

मूलं पृथिव्या अधि उत्तमम् ३; ६७०

शापथयोपनी वीरुत् १; ६६८

सद्वस्त्रकाण्डः ३; ६७०

अलक्ष्मी- (दोषः) । १, १८, १-४; ६७३-६७६

अरणिः पदोः २; ६७४

” हस्तयोः २, ६७४

अरातिः १, ६७३

गोषेधा ४; ६७६

घोरः आत्मनि ३; ६७५

” केशेषु ”

” तन्वाम् ”

” प्रतिचक्षणे ”

निर्लक्ष्म्यम् १, ६७३

रिश्यपदी ४; ६७६

ललाम्यम् १, ४; ६७३, ६७६

विधमा ४; ६७६

विलीढ्यम् ४; ६७६

वृषदती ४; ६७६

# रोगचिकित्सा ।

( १ ) रोगाणां नामानि, तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अपचितः गण्डमालाः वा ( ५०३-५१६ )  
 अपचित-तः ६,८३,१,३; ५१३,५१५  
 अरसतराः सेहोः ७,७६,१; ५०७  
 असतराः असतीभ्यः ७,७६,१; ५०७  
 अवीरघ्नीः ६,८३,२; ५१४  
 असूतिवत् ६,८३,३; ५१५  
 उपपक्ष्याः अपचितः ७,७६,२; ५०८  
 एनी ६,८३,२; ५१४  
 ककुदिभ्रितः ७,७६,३; ५०९  
 कीकसाः प्रशृणाति यः ७,७६,३; ५०९  
 कृष्णा ६,८३,२; ५१४  
 गलुन्तः ६,८३,३; ५१५  
 ग्रैव्याः अपचितः ७,७६,२; ५०८  
 ग्लौः ६,८३,३; ५१५  
 जायान्यः ७,७६,३-५; ५०९-५११  
 तलीयं अवतिष्ठमाना ७,७६,३; ५०९  
 माता यासां कृष्णा ७,७६,१; ५०३  
 रामायणी ६,८३,३; ५१५  
 रोहिणी ६,८३,२; ५१४  
 लोहिनी ७,७६,१; ५०३  
 विक्लेदीयसीः लवणात् ७,७६,१; ५०७  
 विजाम्नि याः अपचिताः ७,७६,२; ५०८  
 श्येनी ६,८३,२; ५१४  
 सुस्रसः सुस्रसः ७,७६,१; ५०७  
 स्वयंस्रसः ७,७६,२; २  
 अलक्ष्मी दोषः । १,१८,१४; ६७३-७६  
 इषु- ( वेधः ) । ६,१०,१-३; ६२०-६२२  
 इषुः अस्यमाना १,३; ६२०,६२२  
 " निपतिता ३; ६२२  
 " प्रतिदिता ३; ६२२  
 " विसृज्यमाना ३; ६२२  
 ईर्ष्या । ६८२-६८६

अग्निः हृदयः ६,१८,१; ६८२  
 मनस्कं पतयिष्णुकम् ६,१८,३; ६८४  
 मृतं मनः ईर्ष्याः ६,१८,२; ६८३  
 शोकः हृदयः ६,१८,१; ६८२  
 उन्मत्तता । ६,१११,१-४; ६८७-६९०  
 उन्मत्तं रक्षसस्परि ६,१११,३; ६८९  
 उन्मदितं देव एनसात् " "  
 उद्युतं मनः ६,१११,२; ६८८  
 सुयतः ल.लपीति यः ६,१११,१; ६८७  
 कासा । ६,१०५,१-३; ४८६-४८८  
 क्षेत्रियरोगः । २,८,१-५; ४९३-९७  
 अभिकृत्वरीः २; ४९४  
 ज्वरः । १,२५,१-४ । ७,११६,१-२; ५२५-३०  
 अन्येषुः अभ्येता १,२५,४; ५२८ । ७,११६,२; ५३०  
 अभिशोकः १,२५,३; ५२७  
 अर्चिः ,, २; ५२६  
 अव्रतः ७,११६,२; ५३०  
 उभयषुः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,२; ५३०  
 च्यवनः ७,११६,१; ५२९  
 जनित्रं शकल्येषु १,२५,२; ५२६  
 तकमा १,२५,१-४; ५२५-२८  
 तृतीयकः १,२५,४; ५२८  
 धृष्णुः ७,११६,१; ५२९  
 नोऽनः ७,११६,१; ५२९  
 पुत्रः राज्ञः वरुणस्य १,२५,३; ५२७  
 पूर्वकामकृत्वन् ७,११६,१; ५२९  
 रुरः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,१; ५२९  
 वरुणस्य पुत्रः १,२५,३; ५२७  
 शकल्येषु जनित्रम् १,२५,२; ५२६  
 शतः १,२५,४; ५२८ । ७,११६,१; ५२९  
 शोकः १,२५,३; ५२७  
 शोचिः १,२५,२,४; ५२५,५२८

हरितस्य देवः १, २५, ३, ५२७

ह्रुडुः नाम ”

तकमा । ५, २२, १-१४; ५३१-४४

अधराङ् ३, ५३३

अभितुन्वन् अग्निः इव २; ५३२

अरसः २; ५३२

अवध्वंसः इव अरुणः ३; ५३३

उच्छेद्यन् अग्निः इव २; ५३२

उद्युगः यस्य सखा ११; ५४१

कासः ” ” ११; ५४१

कासा सह अवेपयः १०; ५४०

कासिका यस्य स्वरा १२; ५४२

ऋणमः १३; ५४३

तकमा १-१४; ५३१-४४

तृतीयकः १३; ५४३

परुषः पारुषेयः ३; ५३३

पाप्मा भ्रातृव्यः १२; ५४२

प्रार्थः ९; ५३९

बहिकेषु न्योचरः ५; ५३५

बलासः यरय भ्राता १२; ५४२

बलासः यरय सखा ११; ५४१

महातृपाः अरय ओकः ५; ५३५

मूजवन्तः अस्य ओकः ५; ५३५

रुः १०, १३; ५४०, ५४३

वशी ९; ५३९

वार्षिकः १३; ५४३

वितृतीयः १३; ५४३

व्यंगः ६; ५३६

व्यालः ६; ५३६

शक्रम्भारस्य मुष्टिदा ४; ५३४

शाः दः १३; ५४३

शीतः १०, १३; ५४०, ५४३

सदन्दिः १३; ५४३

हरितान् विश्वान् यः कृणोति २; ५३२

हेतयः यस्य भीमाः १०; ५४०

दुःस्वप्नानि ।

बलासः । ६, १४, १-३; ४८३-४८५

अंगेष्ठाः १, ४८३

अवीरहा ३; ४८५

अस्थिसंसः १, ४८३

पर्वसु ( तिष्ठमानः ) १; १४३

पुरासंसः १; ४८३

हृदयामयः १, ४८३

मूत्र - ( कृच्छ्रम् ) । १, ३, १-९; ५७१-७९

आन्त्रेषु अधि संश्रुतं मूत्रम् ६; ५७६

गवीन्धोः ” ”

वस्तौ ” ”

यक्षमनाशनम् । २, ८, १-५; ४९३ ९६

इदं सूक्तं क्षेत्रियरोगनाशनपरम्, न यक्षमनाशनपरम् ।

‘ यक्षमनाशनम् ’ नाम स्वतन्त्रं प्रकरणं ( १६२-३०० मंत्रांकाः ) अस्यां संहितायां वर्तते ।

रुधिरास्त्रावः । १, १७, १-४ । ६, ४४, १-३ । २, ३, १-६;

५५५-६१, ५६५-५७०

श्वेत कुष्ठम् । १, २३, १-४ । २४, १-४; ५१७-२४

अस्थिजः किलासः १, २३, ४; ५२०

किलासः १, २३, १-२; ५१७-१८

तनूजः किलासः १, २३, ४; ५२०

दृश्या कृतः ” ”

पलितम् १, २३, १-२; ५१७-१८

पृषत् १, २३, २-३; ५१८-१९

लक्ष्म श्वेतं त्वचि १, २३, ४; ५२०

शुक्लानि १, २३, २; ५१८

हरिमा । १, २२, १-४; ४८९-४९२ ।

ऋ. १, ५०, ११-१३; ५४५-५७

हरिगा १, २२, १, ४; ४८९, ४९२

ऋ. १, ५०, ११-१२; ५४५-४६

द्वयोतः १, २१, १; ४८९

हृद्रोगः १, ५०, ११; ५४५

(२) रोगाणां परिहार-साधनानि ।

अपचितः गण्डमाला वा ।

मुनेः देवस्य मूलम् ७, ७४, १; ५०३

त्वाष्ट्रं वचः ७, ७४, ३; ५०५

इष्टुनिष्कासनम् ।

ईर्ष्यापनयनम् ।

भेषजम् ७, ४५, १; ६८५

उन्मत्ततामोचनम् ।

भेषजम् ६, १११, २-३; ६८८-६८९

कासा-शमनम् ।

क्षेत्रियरोगनाशनम् । २, ८, १-५; ४९३-९७

क्षेत्रियनाशनी वीहत् २-५; ४९४-९७

तिलस्य तिलपिञ्जी ३; ४९५

यवस्य पटाली अर्जुनकाण्डस्य ३; ४९५

यवस्य पटाली बभ्रोः ३; ४९५

विचृतौ नाम तरके १; ४९३

ईषायुगेभ्यः क्षेत्रस्य पतये लांगलेभ्यः गनिस्त्रसाक्षेभ्यः

सन्देशेभ्यः च नमस्कृतिः ४-५; ४९६-९७

ज्वरनाशनम् ।

तक्मनाशनम् ।

दुःश्वप्ननाशनम् ।

बलासनाशनम् ।

मूत्रमोचनः ।

प्र ते भिनद्धि मेहनम् १, ३, ७; ५७७

विषितं ते वस्तिबिलम् १, ३, ८; ५७८

यक्ष्मनाशनम् । २, ८, १-५; ४९३-९६

इदं सूक्तं न यक्ष्मनाशनम् [ स्वतन्त्रं प्रकरणं द्रष्टव्यम्  
१६२ ३०० ]

रुधिरास्त्राविनिवृत्तिः ।

योषितः हिराः लोहितवारराः धमन्यः अभातरः इय ज मयः

तिष्ठन्तु १, १७, १; ५५५

आस्त्रावभेषजम् ६, ४४, २; ५६०

रुद्रस्य मूत्रम् ६, ४४ ३; ५६१

वातीकृतनाशनी ६, ४४, ३; ५६१

विषणका नाम ,, ,,

अन्वास्त्रावम् २, ३, २; ५६६

अरुखाणम् २, ३, ३, ५; ५६७-५६९

अरोगणम् २, ३, २; ५६६

आस्त्रावस्य भेषजम् २, ३, ३-५; ५६७-६९

श्वेतकुष्ठनाशनम् ।

असिक्ती (वनस्पतिः) १, २३, १-४; ५१७-२०

असितं आस्थानम् १, २३, ३; ५१९

असितं प्रलयनम् ,, ,,

आसुरी (वनस्पतिः) १, २४, १-४; ५२१-२४

किलासनाशनम् १, २४, २; ५२२

कितामभेषजम् १, २४, २; ५२२

कृष्णा १, २३, १; ५१७

पृथिव्या अधि उन्नता १, २४, ४; ५२४

रामा १, २३, १; ५१७

श्यामा १, २४, ४; ५२४

सरूपं करणी ,, ,,

सरूपकृत् १, २४, ३; ५२३

सरूपो नाम पिता ,, ,,

सरूपा नाम माता ,, ,,

हरिमा- ( हृद्रोग-कामिला नाशनम् )।

नाशनम् । १, २२, १-४; ४८९-९२

रोगध्न्यः उपनिषदः ऋ १, ५०, ११-१३; ५४५-४७

रोपणाकासु ध्मानम् १, २२, ४; ४९२ । ऋ. १, ५०,

१२; ५४६

रोहितैः वर्णैः ध्मनम् १, २२, २; ४९०

रोहितस्य वर्णेन ,, १, २२, १; ४८९

रोहिणीभिः ,, १, २२, ३; ४९१

रोहिणीः देवत्याः गवः ताभिः ध्मानम् १, २२, ३; ४९१

शुक्रेषु ध्मानम् १, २२, ४; ४९२ । ऋ. १, ५०, १२; ५४६

हारिद्रवेषु ,, १, २२, ४; ४९२ । ऋ. १, ५०, १२; ५४६



## (३) भैषज्यम् ।

## आञ्जनं । गुणबोधक पदानि

आञ्जनं वा ४,९,१-१० । ७,३०,१ । ३६,१ ।  
 १९,४५,१-१०; १९,४४,१-१० । वा. य. ४,३;  
 ५८०-६१२  
 अपां ऊर्जः १९,४५,३; ५९४  
 अभयम् १९,४४,१; ६०२  
 आञ्जनम् १९,४४,३; ६०४  
 आयुषः प्रतरणम् १९,४४,१; ६०२  
 ओजसः वातृधानम् १९,४५,३; ५९४  
 कम् ४,९,१; ५८०  
 चक्षुर्दोः वा. य. ४,३; ६१२  
 चतुर्वीरम् १९,४५,३-५; ५९४-९६  
 जम्भयत् यातून ४,९,९; ५८८  
 ,, यातुधान्यः ४,९,९; ५८८  
 जातं अग्नेः जातवेदसः १९,४५,३; ५९४  
 जातं हिमवतः परि ४,९,९; ५८८  
 जीवं त्रायमाणम् ४,९,१; ५८०  
 जीवभोजनम् ४,९,३; ५८२  
 त्रिककुद् नाम ते पिता ४,९,८; ५८७  
 त्रैककुदम् ४,९,९-१०; ५८८-५८९  
 ,, १९,४४,६; ६७०  
 दत्तं विश्वेभिः देवैः ४,९,१; ५८०  
 देवः १९,४४,६; ६०७  
 परिधिः जीवनाय १९,४५,३; ५९४  
 परिपाणं अर्वताम् ४,९,२; ५८१  
 ,, अश्वानाम् ,,  
 ,, गवाम् ,,  
 ,, पुरुषाणाम् ,,

पर्वतस्य अक्षयम् ४,९,१; ५८०  
 पर्वतीयम् १९,४५,३; ५९४  
 पुरुषजीवनम् १९,४४,३; ६०४  
 पृथिव्यां जातम् १९,४४,३; ६०४  
 भद्रम् १९,४४,३; ६०४  
 भेषजम् १९,४४,१; ६०२  
 यातुजम्भनम् ४,९,३; ५८२  
 यामुनम् ४,९,१०; ५८९  
 विष्टुतां पुष्पम् १९,४४,५; ६०६  
 विप्रम् १९,४४,१; ६०२  
 वृत्रस्य कनीनकः वा. य. ४,३; ६१२  
 शन्तातिः १९,४४,१; ६०२  
 सहस्रवीर्यम् १९,४४,८-९; ६०९-६१०  
 सिन्धोः गर्भः १९,४४,५; ६०६  
 हरितभेषजम् ४,९,३; ५८२

## आञ्जनेन परिहरणीयाः रोगाः

अंगभेदः विसल्पकः १९,४४,२; ६०३  
 अत्रमायुकः १९,४४,३; ६०४  
 आदादिः ( अञ्जनस्य दातः ) ४,९,८; ५८७  
 तक्मा ( ,, ) ,, ,,  
 बलासः ( ,, ) ,, ,,  
 यक्ष्म १९,४४,२; ६०३  
 रथजूतिः १९,४४,३; ६०४  
 विसल्पकः अंगभेदः १९,४४,२; ६०३  
 हरिमा जायान्य ,, ,,

## क्रिमिनाशनम् ।

(१) क्रिमीणां विविधप्रकाराः; तेषां गुणबोधकपदानि च ।

अक्षयौ परिसर्पन् ५,२३,३; ६९८  
 अङ्गिनः अयस्मयैः पादौः १९,६६,१; ७६६  
 आत्त्रिणः ६,३२,३; ७३३ । १,७,३; ७६९  
 अदनाः २,३१,३; ६९३

अदृष्टः २,३१,२; ६९२  
 अदृष्टाः ५,२३,६-७; ७०१-७०२  
 अन्तः ये अप्सु २,३१,५; ६९५  
 ,, ओषधीषु ,,

अन्तः ये गवि २, ३२, १; ७०२  
 " पर्वतेषु २, ३१, ५; ६९५  
 " पशुषु " "  
 " वनेषु " "  
 अन्वान्यः २, ३१, ४; ६९४  
 अप्सरसः ४, ३७, २-५; ७१६-७१९  
 अप्सरसः जाया ४, ३७, १२; ७२६  
 अप्सरापतिः ४, ३७, ७; ७२१  
 अभिशोचाः ४, ३७, १०; ७२४  
 अयोजालाः १९, ६६, १; ७६६  
 अरसाः २, ३१, ३; ६९३  
 अराग्यः १, २८, ४ ७३७  
 अर्जुनः २, ३२, २; ७१० । ५, २३, ९; ७०४  
 अलगण्डवः २, ३१, २; ६९२  
 अवक दाः गन्धर्वाः ४, ३७, ८-१०; ७२२-७२४  
 अवस्कवः २, ३१, ४; ६९४  
 अशिष्टाः २, ३१, ३; ६९३  
 असुराः ६, ७, २-३; ७६४-६५ । १९, ६६, १; ७६६  
 आनृत्यत् ४, ३७, ७; ७२१  
 एजत्काः ५, २३, ७; ७०२  
 कपिः इव ४, ३७, ११; ७२५  
 कष्कषासः ५, २३, ७; ७०२  
 किमीदिनः ४, २०, ८; ७६१ । १, ७, १, ३; ७६७, ७६९।  
 १, २८, १-२; ७३४-७३५  
 कुमारः इव सर्वकेशकः ४, ३७, ११; ७२५  
 कुरूहः २, ३१, २; ६९२  
 कृष्णौ ष्णाः ५, २३, ४-५; ६९९-७००  
 कोकः ५, २३, ४; ६९९  
 क्व्यात् ५, २९, ८-११, १५; ७४५-४८, ७५२  
 किमयः २, ३१, १-५; ५, २३, १-१३; २, ३२, १-५;  
 ६९२-७१३ सर्वत्र  
 क्षुल्लकाः २, ३२, ५; ७१३  
 गन्धर्वाः ४, ३७, २ ७; ७१६, ७२१  
 गन्धर्वाः पतयः ४, ३७, १२; ७२६

गृध्रः ५, २३, ४; ६९९  
 चतुरक्षः २, ३२, २; ७१०  
 छलुनाः २, ३१, २; ६९२  
 त्रिककुब् ५, २३, ९; ७०४  
 त्रिशीर्षा ५, २३, ९; ७०४  
 दतां मध्ये गच्छन् ५, २३, ३; ६९८  
 दूनाः २, ३१, ३; ६९३  
 दृष्टः-ष्टाः २, ३१, २; ६९२ । ५, २३, ६-७; ७०१-७०२  
 द्वयाविनः १, २८, १; ७३४  
 नासे परिसर्पन् ५, २३, ३; ६९८  
 परिवेशसः २, ३२, ५; ७१३  
 पार्श्वेयः २, ३१, ४; ६९४  
 पिशाचाः ६, ३२, २; ७३२ । ५, २९, ४-१०; ७४१-७४७  
 ४, २०, ६-७, ९; ७५९-६०, ७६२। ४, ३७, १०; ७२४  
 भियः दशः इव ४, ३७, ११; ७२५  
 बभ्रुः ५, २३, ४; ६९९  
 बभ्रुकर्णः ५, २३, ४; ६९९  
 मनोहनः ५, २९, १०; ७४७  
 मायिनः १९, ६६, १; ७६६  
 यातुधानाः १, ८, १; ७२७ X  
 यातुधानः १, ८, ३; ७२९ X  
 यातुधानाः ६, ३२, २; ७३२ । १, २८, १-२; ७३४-३५  
 ५, २९, ११; ७४८ । ४, २०, ६, ८; ७५९, ७६१ । १,  
 ७, १-३, ५-७; ७६७-७६९, ७७१-७७३  
 यातुधान्यः १, २८, २, ४; ७३५, ७३७। ४, २०, ६; ७५९  
 यातुमान् १, ७, ४; ७३०  
 येवाषः-षासः ५, २३, ७-८; ७०२-७०३  
 रक्षः ४, ३७, २; ७१६  
 रक्षसि ४, ३७, १; ७१५। ६, ३२, १; ७३१। ५, २९, १०;  
 ७४७ । वा. य. ५, २२; ७५३  
 राजा किमीणाम् २, ३२, ४; ७१२  
 रुधिरः ५, २२, १०; ७४७  
 रोहिनी ५, २३, ४; ६९९  
 विरूपी ५, २३, ४; ६९९

विश्वरूपः ५, २३, ५; ७००। २, ३१, २; ७१०  
 वेशसः २, ३२, ५; ७१३  
 व्यध्वरः २, ३१, ४; ६९४  
 शिखण्डा ४, ३७, ७, ७२१  
 शिनिकक्षाः ५, २३, ५; ७००  
 शितिबाहवः ५, २३, ५; ७००  
 शिपवित्तुकाः ५, २३, ७; ७०२  
 शिष्टाः २, ३१, ३; ६९३  
 शार्षण्यः २, ३१, ४; ६९४

श्वा इव ४, ३७, ११; ७२५  
 सारूपी ५, २३, ४; ६९९  
 सहमूराः ५, २९, ११; ७४८  
 सारङ्गः २, ३२, २; ७१०। ५, २३, ९; ७०४  
 स्थपतिः २, ३२, ४; ७१२  
 हनभ्राता २, ३२, ४; ७१२  
 हतमाता ,,  
 हतस्वरा ,,  
 हविरदाः ४, ३७, ८-९; ७२२-७२३

## (२) ओषधिनामानि ।

तासां गुणबोधकपदानि च ।

अजशृङ्गी ४, ३७, २, ६; ७१६, ७२०  
 अराटकी ४, ३७, ६; ७२०  
 अर्जुनाः ४, ३७, ५; ७१९  
 अश्वत्थाः ४, ३७, ४; ७१८ ( महावृक्षाः )  
 अघाटाः ४, ३७, ५; ७१९  
 ओषधिः देवी ४, २०, २; ७५५  
 ओषधीनां वीरुधां वीर्यावती ४, ३७, ६; ७२०  
 औक्षगन्धिः ४, ३७, ३; ७१७  
 कर्कर्यः ४, ३७, ५; ७१९  
 गुल्गुलः ४, ३७, ३; ७१७

तीक्ष्णशृङ्गी ४, ३७, ६; ७२०  
 नलदी ४, ३७, ३; ७१७  
 न्यग्रोधाः ४, ३७, ४; ७१८ ( महावृक्षाः )  
 पीला ४, ३७, ३; ७१७  
 प्रमन्दनी ४, ३७, ३; ७१७  
 ब्रह्म ४, ३७, २१; ७२५  
 विश्वतोवीर्या वीरुत् ६, ३२, २, ७३२  
 शिखण्डिनः ४, ३७, ४; ७१८ ( महावृक्षाः )  
 हरिताः ४, ३७, ५; ७१९

## विषनाशनम् ।

(१) विष-उत्पत्ति-हेतवः ।

अंस्याः ऋ. १, १९१, ७; ७८०  
 अग्निविषम् १०, ४, २२; ८२९  
 अग्निजाः सर्पाः १०, ४, २३; ८३०  
 अघाश्वः १०, ४, २०; ८१७  
 अङ्गथाः ऋ. १, १९१, ७; ७८०  
 अट्टाः ऋ. १, १९१, १-८; ७७४ ७८१  
 अपोदकाः ५, १३, ६; ८३९  
 अम्बुजाः सर्पाः १०, ४, २३; ८३०  
 अलीकाः ५, १३, ६; ८३९  
 असिकन्या दासी ५, १३, ८; ८४१

असितं-ताः १०, ४, ५, १३; ८१२, ८२०। ५, १३, ५-६;  
 ८३८-८३९  
 अहिः-हयः १०, ४, ६, ८-९, १६-१७, १९-२१, २६;  
 ८१३, ८१५-१६, ८२३-२४, ८२६-२८, ८३३ । ७,  
 ८८, १; ८४५ । ६, ५६, १; ८४९  
 आलिगी ५, १३, ७; ८४०  
 उपतृण्यः ५, १३, ५; ८३८  
 उरुगूलायाः दुहिता ५, १३, ८; ९४१  
 ओषधिः ४, ६, ८; ७९७  
 ओषधिजाः सर्पाः १०, ४, २३; ८३०



करम्भः ४,७,२-३; ७९९-८००  
 गरुडमान् ४,६,३; ७९२  
 कुम्भकः ऋ. १,१९१,१६; ७८९  
 गिर्यः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८  
 घृताची नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१  
 तरुणकम् १०,४,२; ८०९  
 तन्नुवम् ५,१३,११; ८४४  
 तानुवम् ५,१३,१०; ८४३  
 तौमी नाम (कन्या) १०,४,२४; ८३१  
 दर्भः १०,४,२; ८०९  
 दशार्धः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०  
 दशम्यः (ब्राह्मणः) ४,६,१; ७९०  
 देवजनाः ६,५६,२; ८५०  
 देवाः ६,१००,१; ८०५  
 गौः ६,१००,१; ८०५  
 धन्वनि उदकम् ६,१००,२; ८०६  
 नयः (ताम्रं मधु) ६,१२,३; ८४८  
 परुष्णी (ओषधिः) ६,१२,३; ८४८  
 पर्जन्यः १०,४,१६; ८२३  
 पर्वताः (तेषां मधु) ६,१२,३; ८४८  
 पार्ष्णाकः तिर्यः उदारधिः ४,७,३; ८००  
 पुरुषरथवारः १०,४,२; ८०९  
 पेडः १०,४,५ ७,१०-११; ८१२-१४, ८१७-१८  
 ब्रह्मणरपतिः ७,५६,४; ८५५  
 ब्राह्मणः (दशार्धः दशस्य) ४,६,१; ७९०  
 मधु (नयः पर्वता गिर्यः एतेषां) ६,१२,३; ८४८  
 मधुता (वीरुः) ७,५६,२; ८५३

मशकजम्भनी (वीरुः) ७,५६,२; ८५३  
 मयूर्यः त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१४; ७८७  
 मित्रः १०,४,१६; ८२३  
 रोषुष्यः नव नवत्यः ऋ. १,१९१,१३; ७८६  
 वचस् (ओषधिः) ४,७,४-५; ८०१-२  
 वरणावल्यां अधि (ओषधिः) ४,७,१; ७९८  
 वरुणः १०,४,१६; ८२३  
 वातः १०,४,१६; ८२३  
 विश्वदृष्टः (सूर्यः) ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२  
 विश्वुलिगा त्रिः सप्त ऋ. १,१९१,१२; ७८५  
 वीरुः ७,५६,२; ८५२  
 ,, मधुजाता ७,५६,२; ८५३  
 ,, मधुला ,,  
 ,, मधुश्चुत् ,,  
 ,, मधूः ,,  
 ,, मशकजम्भनी ,,  
 शकुन्तिका इयत्तिका ऋ. १,१९१,११; ७८४  
 शोचिः १०,४,२; ८०९  
 श्वेतः (ओषधिः) १०,४,३; ८१०  
 शीपाला ,, ६,१२,३; ८४८  
 सरस्वतीः तिस्रः ६,१००,१; ८०५  
 मिन्धवः १०,४,२०; ८२७  
 सुपर्णः (गरुडमान्) ४,६,३; ७९२  
 सूर्यः ६,१००,१; ८०५। ऋ. १,१९१,१०; ७८३  
 सूर्यः अदृष्टहा विश्वदृष्टः ऋ. १,१९१,८-९; ७८१-८२  
 सोमः १०,४,२६; ८३३  
 स्वमारः सप्त (अध्रुवः) ऋ. १,१९१,१४; ७८७

## मणिधारणम् ।

### अस्तृतादि-मणिदेवता-गुणबोधकपदानि ।

( १ ) अस्तृतमणिः । १९,४६,१-७; १५७२-१५७८  
 असपत्नः ७; १५७८  
 ऊर्जरवान् ६; १५७७  
 घृतात् उल्लूताः ६; १५७७  
 पयस्वान् ६; १५७७

मधुमान् ६; १५७७  
 मयोभूः ६; १५७७  
 वयोधाः ६; १५७७  
 वशी सजातानाम् ७; १५७८  
 क्षतयोनिः ६; १५७७

शम्भुः ६; १५७८

सपत्नहा ७, १५७८

सहस्रप्राणः ६; १५७७

( २ ) औदुम्बरमणिः । १९, ३१, १-१४; १५३७-५०

अधिपाः मर्णानाम् ११; १५४७

शुद्धमेधी १३; १५४९

ग्रामणीः १२; १५४८

तेजः १२; १५४८

देवः ८, १५४४

धनसाः ८; १५४४

पुष्टपतिः ६; १५४२

पुष्टिः १३; १५४९

रविः १२; १५४८

वनस्पतिः ९; १५४५

वीरः १४; १५५०

वृषा ३, ११, १५३८, १५४६

सपत्नहा ८; १५४४

( ३ ) जङ्गिडमणिः । २, ४, १-६; ६६-७१ । १९,

३४, १-१०; ३५, १-५; १५५१-६५

अंगिराः ३४, ६; १५५६

अमितवीर्यः ३४, ८; १५५८

अरातिदूषणः ३४, ४; १५५४

अरातिदूषिः २, ४, ६; ७१

अरतिहा ३५, २; १५६२

आमृतः अरण्यान् २, ४, ५; ७०

उग्रः ३४, ७; १५५७

उपदानः ३४, ८; १५५८

ओजः ३४, ५; १५५५

ओषधिः ३४, ९; १५५९

शुश्यादूषणः ३४, ४; १५५४

कृत्यादूषिः २, ४, ६; ७१

कृष्णाः रसेभ्यः २, ४, ५; ७०

देवैः दत्तः २, ४, ४; ६९

परिपाणः ३४, ७; १५५७ । ३५, २-३; १५६२-६३

भगवान् ३४, ८; १५५८

भूम्यां अधि निष्ठितः ३४, ६; १५५६

भेषजम् ३५, १; १५६१

मयोभूः २, ४, ४; ६९

वनस्पतिः ३४, ९; १५५९

विश्वभेषजः २, ४, ३; ६८ । १९, ३५, ५; १५६५

विष्कन्धदूषणः २, ४, १; ६६ । १९, ३५, १; १५६१

सहस्रचक्षुः १९, ३५, ३; १५६३

सहस्रवीर्यः २, ४, २; ६७

सहस्रवान् २, ४, ६; ७१ । १९, ३४, ५; १५५४

सुमालः १९, ३४, ७; १५५७

( ४ ) दर्भमणिः । १९, २८, १-१०; २९, १-३;

३०, १-५; १५१३-३६

अभितपन् धर्मः द्य २८, ३; १५१५

इन्द्रस्य वर्म ३०, ३; १५३४

क्षत्रस्य वर्धनः ३०, ४; १५३५

दुर्हार्दः सन्नाययन् २८, २; १५१४

देववर्म ३०, ३; १५३४

द्विषतः नितपन् २८, ३; १५१५

द्विषतः हृदः तपनः २८, १-२; १५१३-१४

ब्रह्मणस्पतिः ३०, ३; १५३४

वर्माणि ते शतम् ३०, २; १५३३

वीर्याणि ते सहस्रम् ३०, २; १५३३

शत्रूणां मनः तापयन् २८, २; १५१४

सपत्नक्षयणः ३०, ४; १५३५

सपत्नसम्भनः २८, १; १५१३

यक्षादि-प्रकरणे 'दर्भः' देवता-गुणबोधकपदानि ।

१९, ३३, १-१०; १९२३-३२ । ३३, १-५; १९३३-३७

अच्युतः ३३, २; १९३४

अयां अग्निः ३३, १; १९३३

उग्रः ३२, १; १९२३

उत्तरः ३२, १; १९२३

उग्रं बलम् ३३, ४; १९३६

ओजः देवानाम् ३३, ४; १९३६

ओषधिः ३२, १, ३; १९२३, १९२५

ओषधीनां प्रथमः ३२, १०; १९३२

पृथान् उन्मुभः ३३, २; १९३४

च्यावयिष्णुः ३३, २; १९३४

तीक्ष्णः १९, ३३, ४; १९३६  
दिवि तूलं ते ३२, ३; १९२५  
दिविष्टम्भः ३२, ७; १९२९  
दुश्च्यवनः ३२, १; १९२३  
देवजातः ३२, ७; १९२९  
मुदन् सपत्नान् ३३, २; १९३४  
पयस्वान् ३३, १-२; १९३३-३४  
पवित्रः ३३, ३; १९३५  
पृथिव्यां निष्ठितः ३२, ३; १९२५  
भूमिदंडः ३३, २; १९३४  
मधुमान् ३३, २; १९३४  
रक्षोदा ३३, ४; १९३६  
राजा ३३, ४; १९३६  
विश्वचर्षणिः ३३, ४; १९३६  
विषासहिः ३३, ४; १९३६  
वीरुधां राजगूयः ३३, १; १९३३  
शतकाण्डः १९, ३२, २, १०; १९२३, १९३२ । ३३, १; १९३३  
सपत्नहा ३२, १०; १९३२  
सहमानः ३२, ५; १९२७  
सहस्रकाण्डः ३२, ३; १९२५  
सहस्रपर्णः ३२, १; १९२३  
सहस्रार्धः ३३, १; १९३३

( ५ ) प्रतिसरमणिः । ८, ५, १-२२; १४३१-५२

अनड्वान् जगतामिव ११; १४४१  
उग्रः २; १४३२  
उत्तमः ओषधीनाम् ११; १४४१  
आजरावान् ४, १६; १४३४, १४४६  
ओषधीनां उत्तमः ११; १४४१  
तनूपानः २०; १४५०  
त्रिदह्यः २०; १४५०  
देवमणिः २०; १४५०  
नृमणः २१; १४५१  
परिपाणः १, १६; १४३१, १४४६  
प्रतिसरः (मणिः) १, ४; १४३१, १४३४  
प्रतीवर्तः ४, १६; १४३४, १४४६

मणिः १, ४, ७, ८, २२; १४३१, १४३४, १४३७-३८; १४५२  
मेधिः २०, १४५०  
वशी ४, ७; १४३४, १४३७  
वाजी २; १४३२  
विश्वधः ४; १४३४  
वीरः १-२; १४३१-३२  
वीर्यवान् १; १४३१  
व्याघ्रः श्वपदां इव ११, १४४१  
शूरीरः १; १४३१  
सञ्जयः १६, १४४६  
सपत्नहा १-२, १४३१-३२  
सहमानः २; १४३२  
सहस्रवीर्यः १४; १४४४  
सहस्वान् २; १४३२  
सुमंगलः १, १६; १४३१, १४४६  
सुवीरः २; १४३२  
स्वाकल्यः ४, ७-८; १४३४, १४३७-३८

( ६ ) फालमणिः । १०, ६, १-३५, १४७८-१५१२

अभिभूः २९, १५०६  
असपत्नः ३०; १५०७  
असुराक्षितिः २२-२८; १४९९-१५०५  
उग्रः ६-१०; १४८३-८७  
क्षत्रवर्धनः २९; १५०६  
खदिरः ६-१०; १४८३-८७  
घृतश्चुतः ६-७; १४८३-८४  
देवजाः ३१; १५०८  
प्रजापतिमृष्टः १९; १४९६  
यज्ञवर्धनः ३४; १५११  
शतदाक्षिणः ३४; १५११  
शंभुवः १५, १७; १४९२, १४९४  
सपत्नदम्भनः २९; १५०६  
सपत्नहा ३०; १५०७  
द्विरण्यस्रकू ४; १४८१

( ७ ) वरणमणिः । १०, ३, १-२५; १४५३-७७  
देवः ५, ८, ११; १४५७, १४६०, १४६३

पुरणता २; १४५४  
मणिः २; १४५४  
वनस्पतिः ५, ८, ११; १४५७, १४६०, १४६३  
विश्वभेषजः ३; १४५५  
वृषा १; १४५३  
सपत्नक्षयणः १; १४५३  
सहस्राक्षः ३; १४५५  
हरितः ३; १४५५  
हिरण्ययः ३; १४५५

( ८ ) शाङ्गमणिः । ४, १०, १-७; १४२४-३०

आयुष्प्रतरणः ४; १४२७  
कार्शनः ७; १४३०  
कृशानः १, ३; १४२४, १४२६  
जातः अन्तरिक्षात् १; १४२४  
,, दिवि ४; १४२७  
,, वातात् १; १४२४  
,, विष्णुतः १; १४२४  
,, वृत्रात् ५; १४२८

जातः समुद्रात् ५; १४२८  
ज्योतिषःपरि १; १४२४  
दर्शतः ६; १४२९  
दिवाकरः ५; १४२८  
पर्याभृतः सिन्धुतः ४; १४२७  
मणिः ४; १४२७  
रोचनः ६; १४२९  
विश्वभेषजः ३; १४२६  
शंखः १-४; १४२४-२७  
समुद्रजः ४; १४२७

हिरण्यजाः १, ४; १४२४, १४२७  
हिरण्यानां एकः ६; १४२९

( ९ ) शातवारमणिः । १९, ३६, १६; १५६६ ७१

ऋषभः ५; १५७०  
दुर्णामचातनः १; १५६६  
दुर्णामहा ३; १५६८  
शातवारः मणिः ५; १५७०  
हिरण्यशृंगः ५; १५७०

## यज्ञादिकम् ।

### (१) यम-देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनुपरपशानः बहुभ्यः पन्थाम् ऋ. १०, १४, १; १९६८।  
अ. १८, १, ४९; २०१५। व, २८, ३; १५८४  
ईशो वः द्विपदः चतुष्पदः व, २८, ३; १५८४  
उषान् ऋ. १०, १५, ८; १९९४  
कविः १८, ३, ६३; २१४१  
चिकित्वात् १८, २, ३७; २०६१  
छन्दांसि आहिताः यस्मिन् ऋ. १०, १४, १६; १९७९  
जनानां संगमनः ऋ. १०, १४, १; १९६८। अ. १८, १, ४९;  
२०१५। १८, ३, १३; २०९६  
न.भिः आसु गन्धर्वाः अप्या च योषा यस्य ऋ. १०, १०, ४;  
१९५७  
परोयिवाम् ऋ. १०, १४, १; १९६८। अ. १८, १, ४९; २०१५  
निता ऋ. १०, १३५, १; १९८०

पिता विवस्वान् यस्य ऋ. १०, १४, ५; १९७२  
पितृमान् १८, ४, ७४; २२२४  
प्रथमः ऋ. १०, १४, २; १९६९। अ. व, २८, ३; १५८४  
प्रेयाय यः प्रथमः लोकमेतम् १८, ३, १३; २०९६  
मदन् स्वधया ऋ. १०, १४ ७; १९७३। अ. १८, १, ५४;  
२०१९  
ममार य प्रथमः मर्त्यानाम् १८, ३, १३; २०९६  
मृत्युः व, २८, ३; १५८४  
यमः व, २७-२९, १-३; १५७९-१५८७। ऋ. १०,  
१०, १-१४; १४, १-५, ७ ९, १३-१६; १३५, १-७;  
१९५४-८६। २००१ २२३९ मंत्रेषु बहुषु स्थलेषु।  
यमी (यमस्य भगिनी) ऋ. १०, १०, ९; १९६२







आपः ८, १, ५; १०। ५, २८, २; २२८  
 " दिव्याः पयस्वतीः ८, २, १४; ४०  
 " पयस्वतीः २, २९, ५; ९५  
 आयुः २, २८, १, ३; १, ३। ८, १, १-२१; ६-२६। ८  
 २, १ २८; २७-५४। ७, ३२, १; १४१। ७, ५३, १-७;  
 १४३-४९  
 आयुर्वर्धनम् १९, ६३, १; १५४। वा. य. ३४, ५०-५२;  
 २३२८-३०  
 आयुष्यम् ३, ११, १-८; ७२-७९। ५, ३०, १-१७; २८-  
 ११४। ६, ७६, १-४; १५०-१५३। ५, २८, १-१४,  
 १२७-४०। ७, ३३, १; १४२। २, १३, ४, ५; २३३४  
 दीर्घायुत्वम् अ. १९, ६४, १-४; ११५-१८। १९, ६७,  
 १-८; ११९-२६। ५, २८, १-१४; १२७-४०। ७, ३३,  
 १; १४२। २, १३, ४-५; २३३४-३५। वा. य. १२,  
 १००; २३२७  
 सर्वमायुः १९, ६१, १; १५५। १९, ७०, १; १५६  
 इन्द्रः ८, १, १५; २०। ३, ११, ३-४; ७४-७५। ६, ४७,  
 २; ८९। २, २९, ३-४, ७; ९३-९४, २७। ५, २८, ४,  
 १३०। १९, ७०, २; १५६  
 इन्द्राम्नी ८, १, २, १६; ७, २१। ८, २, २१; ४७। १,  
 ३५, ४; ६२। ३, ११, १-८; ७२-७९  
 ऋतवः आर्तिवाः ५, २८, २, १३; १२८, १३९  
 ऋषयः दैव्याः ६, ४१, ३; ६५, अमर्त्याः तन्वः तनूजाः  
 तनूपाः।  
 ,, सप्त ७, ५३, ४; १४६  
 ओषधी-धयः ८, २, ६, १५; ३२, ४१  
 गोपायन् ८, १, १३; १८  
 चन्द्रमाः ८, १, १२; १७। ६, ४१, १; ६३। ५, २८, २,  
 १२८  
 जङ्घिः मणिः २, ४, १-६; ६६-७१  
 जरिमा २, २८, १, ३; १, ३  
 जागृविः ८, १, १३; १८। ५, ३०, १०; १०७  
 त्रिष्टुत् ५, २८, १-१४; १२७-४०  
 ,, आयुः ५, २८, ७; १३३  
 ,, देवपुराः ५, २८, ९-१०; १३५-३६  
 ,, पोषाः भूमा वा ५, २८, ३; १२९  
 ,, प्राणाः ५, २८, १; १२७

,, सुपर्णाः ५, २८, ८; १३४  
 ,, हिरण्यम् ५, २८, ६; १३२  
 त्वष्टा २, २९, २; ९२  
 दशगृक्षः २, २, १, ८०  
 दाक्षायणाः १, ३५, १; ५९  
 दाक्षायणं हिरण्यम् १, ३५, २; ६०। वा. य. ३४, ५०-  
 ५२; २३२८-२३३०  
 दिशः ५, २८, २; १२८  
 देवाः ८, १, १८; २३। ८, २, २७; ५३। १, ३०, २, ४,  
 ५६, ५८ (अहुतादः सत्रसदः हुतभागाः)। २, २९, १;  
 ९१। १९, ७०, १; १५६  
 द्यौः १, १२, १७; १७, २२  
 द्यावापृथिवी २, २८, ४; ४। ८, २, १४; ४० (अभिध्रियौ  
 असन्तापे शिवे)। २, २९, ४-५; ९४-९५ (ऊर्ध्वस्वती  
 पयस्वती)।  
 धाता ८, १, १५; २०  
 पितरः ५, ३०, १२; १०९  
 पूषा ५, २८, ३, १२; १२९, १३८। ७, ३२, १; १४२  
 पृथिवी ८, १, १२; १७  
 प्रजापतिः ८, १, १७; २२  
 प्रतीबोधः ८, १, १३; १८। ५, ३०, १०; १०७  
 प्रदिशः ५, २८, २; १२८  
 बृहस्पतिः ३, ११, ४, ८; ७५, ७९। २, २९, १; ९१। ५,  
 २८, २२; १३८। ७, ३३, २; १४२। ७, ५३, १; १४३।  
 २, १३, २-३; २३३२-३३  
 बोधः ८, १, १३; १८। ५, ३०, १०; १०७  
 ब्रह्मणस्पतिः १९, ६३, १; १५४। ६१, १; १५५  
 भगः ८, १, २; ७  
 भवाशर्वौ ८, २, ७, ३३  
 भूमिः ५, २८, २, ५; १२८, १३१  
 मरुतः ८, १, २; ७। ६, १७, २; ८९। २, २९, ४-५;  
 ९४-९५। ७, ३३, १; १४२  
 मातरिश्वा वातः ८, १, ५; १०। ८, २, ३, १४; २९, ४०  
 मित्रः २, २८, १; १  
 मित्रावरुणौ २, २८, २, ५; २, ५ रिशादा संविदानौ।  
 मृत्युः ८, १, १, ६; ६, १०। ५, ३०, १२; १०९  
 यक्ष्मनाशनम् ३, ११, १-८; ७२-७९। २, ९, १-५; ८०-८४

यमः ५, ३०, १२, १०९ । ७, ५३, १; १४३  
 राणः ८, १, १३; १८  
 वनस्पतिः २, ९, १-५; ८०-८४  
 वरुणः २, २९, ४; ९४  
 वसवः ८, १, १६; २१ । १, ३०, १; ५५  
 वायुः ८, १, १५; २०  
 विश्वे देवाः २, २८, ५; ५ । ८, १, ७; १२ । ८, २, २१; ४७ ।  
 १, ३५, ४; ६२ ( अहणीयमनाः ) । १, ३०, १-४;  
 ५५-५८ । २, ९, ४; ८३ । ६, ४७, २; ८९ । २, २९, ५;  
 ९५ । २, १३, ४-५; २३३४-२३३५  
 शणः २, ४, ५; ७०  
 शबलः ८, १, ९; १४  
 श्यामः ८, १, ९; १४

सरस्वती ६, ४१, २; ६४  
 सविता ८, १, १५; २० । ३, ११, ४; ७५ । २, २९, २; ९२  
 सूर्यः ८, १, ५, १२; १०, १७ । ८, २, ३, १४; २९, ४० ।  
 २, २९, १; ९१ । ५, ३०, ११; १०८ । ५, ३०, १५;  
 ११२ (अधिपतिः) । १९, ६७, १-८; ११९-१२६ । ५,  
 २८, २; १२८ । ७, ५३, ७; १४९ । १९, ७०, १; १५६  
 सूर्याचन्द्रमसौ ८, २, १५; ४१  
 सोमः ८, १, २; ७ । ७, ३२, १; १४१ । २, १३, २; २३३२  
 सोमराज्ञी ८, १, १७; २२  
 सौधन्वनाः ६, ४७, ३; ९० स्वर् आनशानाः ।  
 सुधन्वा ६, ४७, ३; ९०  
 हिरण्यम् १, ३५, १ ४; ५९-६२

## (२) अग्निदेवता-गुणबोधकपदानि ।

अन्तः अशु ८, १, ११, १६  
 आयुर्दा २, १३, १, २३३१  
 इन्द्रः १९, ६४, ४; ११८  
 ईज्यः ६, ११०, १; ८५  
 घृतपृष्ठः २, १३, १; २३३१  
 घृतप्रतीकः " "  
 जरसं शृणानः " "  
 जातवेदाः १९, ६४, १-२; ११५-११६  
 नक्ष्यः ६, ११०, १; ८५  
 पावकः ६, ४७, १; ८८  
 प्रत्नः ६, ११०, १, ८५  
 यविष्ठयः १९, ६४, ३, ११७  
 विद्वान् वयुनानि २, २८, २, २  
 विश्वकृत् ६, ४७, १; ८८  
 विश्वशंभूः " "

वैश्वानरः ६, ४७, १; ८८  
 सनात् ६, ११०, १; ८५  
 संपेद्रः ६, ७६, १; १५०  
 सान्तपनः ६, ७६, १-४; १५०-१५३  
 होता २, २८, २, २ । ६, ११०, १; ८५

## जंगिडमणिदेवता-गुणबोधकपदानि ।

अरातिदूषिः २, ४, ६; ७१  
 कृत्यादूषिः " ६, ७१  
 देवैः दत्तः " ४; ६९  
 मयोभूः " ४; ६९  
 विश्वभेषजः २, ४, ३; ६८  
 विश्वन्धदूषणः " १; ६६  
 सहस्रवीर्यः " २; ६७  
 सहस्वान् " ६; ७१

## (३) ' दीर्घायुष्यम् ' पर्यायशब्दाः ।

अमृतत्वम् १९, ६४, ४; ११८  
 आयुः " "  
 आयुः दीर्घम् १, ३५, २; ६० । ७, ३२, १; १४१ ।  
 ३३, १; १४२ । वा. य. ३४, ५१; २३२९ । २, १३,  
 २; २३३२  
 वै० आयुर्वेद० १८

दीर्घायुत्वम् १, ३५, १; ५९ । ६, ११०, २; ८६ । ५, २८,  
 १; १२७ । वा. य. १२, १००; २३२७  
 द्राघीयः आयुः ८, २, २; २८  
 जरदष्टिः २, २८, ५; ५ । ८, २, १; २७ । ५, ३०, ५, ८;  
 १०२, १०५ । वा. य. ३४, ५२; २३३०

जरसं आयुः १,३०,३; ५७  
 जरमे बहू ७,५३,४; १४६  
 जरामृत्युः २,२८,२,४; २,४  
 शतशारदम् ८,२,२; २८ । १,३५,१; ५९ । ३,११,२;  
 ७३ । ६,११०,२; ८६ । ५,२८,१; १२५ । वा. य.  
 ३४,५२; २३३०  
 शतहायनम् ८,२,१; ३४

शतं शारदः ३,११,४; ७५ । २,२९,२; ९२ । १९,  
 ६७,१-८; ११९-१२६ । ७,५३,२; १४४  
 ,, वसन्ताः ३,११,४; ७५  
 ,, हेमन्ताः ,, ,,  
 ,, हिमाः २,२८,४; ४  
 शतं अयुतं हायनात् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि ८,२,२१; ४७  
 सर्व आयुः १९,६१,१; १५५ । १९,७०,१; १५६

### (४) दीर्घायुस्वे परिहरणीयम् ।

अंहः २,२८,१; १ । २,४,३; ६८  
 अंगज्वरः ५,३०,९; १०६  
 अंगमेः ,, ,,  
 अजातयक्ष्मः ३,११,१; ७२  
 अभिगस्तिः ७,५३,१; १४३  
 अभिशोचनम् २,४,२; ६७  
 ग्राहिः ३,११,१; ७२  
 अम्भः २,४,२; ६७

मृत्युः ७,५३,१; १४३  
 मृत्यवः शतम् २,२८,१; १  
 यक्ष्मः ५,३०,९; १०६  
 राजयक्ष्मः ३,११,१; ७२  
 विशरः २,४,२; ६७  
 विरुन्धः २,४,२,५; ६७,७०  
 हृदयामयः ५,३०,९; १०६

### (५) ओषधयः, तासां विकाराः, गुणबोधकपदानि च ।

ओषधिः वा. य. १२,१००; २३२७  
 जांगुटः मणिः २,४,१-६; ६६-७१  
 ज्वन्ता ८,२,६; ३२  
 जीवला ,, ,,  
 त्रायमाणा ,, ,,  
 दशवृदाः २,९,१; ८०  
 नधारिषा ८,२,६; ३२

पूतुदुः नाम भेषजम् ८,२,२८; ५४  
 वनस्पतिः २,९,१; ८०  
 वीरुधः ८,७,२; ३२५  
 शतशल्शा वा. य. १२,१००; २३२७  
 सर्वहा ८,२,७; ३३  
 सहमाना ८,२,६; ३२  
 सहस्रती ,, ,,

## जलचिकित्सा ।

### (१) आपः [उदकम्] गुणबोधकपदानि ।

अग्नेयुवः वा. य. १,१२; ९३७  
 अग्नेयुवः वा. य. १,१२; ९३७  
 अध्याः वा. य. २०,१८; ११०३  
 अध्वरीयतां अम्भयः ऋ. १,२३,१६; ८६३

अध्वरीयतां जामयः ऋ. १,२३,१६; ८६३  
 अध्वर्युभिः मनसा संविदानाः ऋ. १०,३०,१३; ९१३  
 अनभ्रयः अ. १९,२,३; ९३०  
 अनमीषाः वा. य. ४,१२; ९४४

अनागसः वा. य. ४, १२; ९४४  
 अनाघृष्टाः वा. य. १०, ४; १०९६  
 अनिभृष्टम् वा. य. १०, ६; १०९७  
 अनिविशमानाः अ. ७, ४९, १; ८७५  
 अनूप्याः अ. १९, २, २; ९२९ । १, ६, ४; ९६४  
 अन्तरिक्षेयाः बहुधा भवन्ति अ. १, ३३, ३; ९१८  
 अपां गर्भः वा. य. १०, ३; १०९५  
 अपां पतिः वा. य. १०, ३; १०९५  
 अपां गर्भः [ सुपर्णः वृषभः वा ] अ. ७, ३९, १; ९२७  
 अमृतं अप्सु अन्तः ऋ. १, २३, १९; ८६६ । अ. १, ४, ४; ९६३  
 अमृताः वा. य. ४, १२; ९४४  
 अयक्ष्मंकरणीः अ. १९, २, ५; ९३२  
 अयक्ष्माः वा. य. ४, १२; ९४४  
 अरिपः [ सोमरसः ] ऋ. ७, ४७, १; ८७१  
 अर्थेतः वा. य. १०, ३; १०९५  
 अर्हि बुध्न्यं अनुरीयमाणाः वा. य. १०, १९; १०९८  
 आपः वा. य. ११, ३८; १०९९ । १२, ३, ५; ११०० ।  
 ऋ. १०, ९, १, ४-५; ८७९, ८८२-८८३ । अ. ७, ४९, १-४; ८७५-७८  
 आपः ( निर्वचनम् ) अ. ३, १३, २; ९२१  
 आयतीः ऋ. १०, ३०, १३; ९१३  
 आवर्णततीः ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
 इन्द्रपानः [ सोमः ] अ. ७, ४७, १; ८७१ । ऋ. १०, ३०, ९; ९०९  
 इयानाः पर्वतस्य पृष्ठात् वा. य. १०, १९; १०९८  
 ईक्ष्यः ऋ. १०, ३०, ८; ९०८  
 ईशानाः वार्याणाम् ऋ. १०, ९, ५; ८८३  
 उत्स्याः अ. १९, २, १; ९२८  
 उदकम् ( निर्वचनम् ) अ. ३, १३, ४; ९२३  
 उदक्ताः वा. य. १०, १९; १०९८  
 उपजीवाः अ. १९, ६९, २; ९३४  
 उशतीः ऋ. १०, ३०, १५; ९१५  
 ऊर्जं बहन्तीः वा. य. २, ३४; ९४२  
 ऊर्जस्वतीः वा. य. १०, १; १०९३  
 ऊर्मिः ( सोमः ) ऋ. ७, ४७, १; ८७१ । १०, ३०, ७-९; ९०७-९०९

ऊर्मिः वृष्णाः वा. य. १०, २; १०९४  
 ऋतावरीः अ. ३, १३, ७; ९२६  
 ऋतावृधः वा. य. ४, १२; ९४४  
 ओजस्वतीः वा. य. १०, ३; १०९५  
 ओषधीनां वृषभः [ सुपर्णः ] अ. ७, ३९, १; ९२७  
 औशानः [ सोमः ] ऋ. १०, ३०, ९; ९०९  
 कन्याणीः ऋ. १०, ३०, ५; ९०५  
 कुम्भेभिः-भे-आमृताः अ. १९, २, २; ९२९ । १, ६, ४; ९६४  
 क्षत्रियाय महि क्षत्रं वन्वानाः वा. य. १०, ४; १०९६  
 क्षयन्तीः चर्षणीनाम् ऋ. १०, ९, ५; ८८२  
 खनमानाः अ. १९, २, ३; ९३०  
 खनित्रिमाः ऋ. ७, ४९, २; ८७६ । अ. १२, २, २; ९२७ ।  
 १, ६, ४; ९६४  
 घृतावः ऋ. १०, १७, १; ८८८  
 घृतप्लुष् ऋ. १०, ३०, ८; ९०८  
 घृतमुष ( सोमः ) ऋ. ७, ४७, १; ८७१  
 घृतं बिभ्रतीः ऋ. १०, ३, १३; ९१३ । अ. ३, १३, ५; ९२४  
 घृतश्चुतः अ. १, ३३, ४; ९१९  
 चरन्तीः नियवम् ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
 चितानाः वा. य. १०, १; १०९३  
 जनभृतः वा. य. १०, ४; १०९६  
 जनयः वा. य. १२, ३५; ११००  
 जनित्रीः भुवनस्य ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
 जानयः अध्वरीयताम् ऋ. १, २३, १६; ८६३  
 जालषम् ( जलम् ) अ. ६, ५७, २; ८६१  
 जीवाः अ. १९, ६९, १; ९३३  
 जीवधन्याः ऋ. १०, ३०, १४; ९१४  
 जीवलाः अ. १९, ६९, ४; ९३६  
 तपोजाः वा. य. १०, ६; १०९७  
 त्रितनुः [ सोमः ] ऋ. १०, ३०, ९; ९०९  
 दिव्यः ऋ. ७, ४९, २; ८७६ । अ. ७, ३९, १; ९०७ ।  
 १९, २, ४; ९३१  
 दुर्मित्रियाः द्विषे वा. य. २०, १९; ११०४  
 देवमादनः [ सोमः ] ऋ. १०, ३०, ७; ९०७

देवश्रुतः वा. य. ६, ३०; ९४८  
 देवीः ऋ. १, २३, १८; ८६५ । ७, ४७, ३; ८७३ ।  
 ४९, १-४; ८७५-७८ । १०, १७, १०; ८८८ । वा. य.  
 ४, १, १२; ९४३-४४ । ६, १०, १३; ९४६-४७ ।  
 अ. ६, २४, १; ९७१ । वा. य. ११, ३८; १०९९ ।  
 ६२, ३५; ११००  
 द्विधाराः ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
 धन्वन्याः अ. १९, २, २; ९२९ । १, ६, ४; ९६४  
 नद्यः (निर्वचनम्) अ. ३, १३, १; ९२०  
 नभोजाः (सोमः) ऋ. १०, ३०, ९; ९०९  
 नावः वा. य. १०, १९; १०९८  
 निग्राभ्यः वा. य. ६, ३०; ९४८  
 द्रासः [सोमः] ऋ. १०, १७, ११-१३; ८८९-९१  
 पत्नीः भुवनस्य ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
 पत्नीः रायः ऋ. १०, ३०, १२; ९१२  
 ,, स्वपत्न्यस्य ऋ. १०, ३०, १२; ९१२  
 पयम् [सुपर्णः वृषभः] अ. ७, ३९, १; ९२७  
 पयस्वत् इत् पयः अपाम् (सोमः) ऋ. १०, १७, १४;  
 ८९२  
 पयः पृथ्वतीः मधुना ऋ. १, २३, १६; ८६३  
 परिवर्हिणाः वा. य. १०, ३; १०९५  
 पावकाः ऋ. ७, ४९, २-३; ८७६-८७७ । अ. १, ३०,  
 १, ४; ९१६, ९१९  
 पीताः वा. य. ४, १२; ९४४  
 पुनानाः ऋ. ७, ४९, १; ८७५  
 पृथ्वयः वा. य. १२, ५५; ११०१  
 बृहज् [सुपर्णः] अ. ७, ३९, १; ९२७  
 भद्राः अ. ३, १३, ५; ९२४  
 भिषक्ताराः भिषग्भ्यः अ. १९, २, ३; ९३०  
 भिषक्तमाः भिषजाम् अ. ६, २४, २; ९७२  
 भुवनस्य जनित्रीः ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
 भुवनस्य पत्नीः ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
 भेषजम् (जलम्) अ. ६, ५७, १-३; ८६०-६२  
 भेषजीः अ. १९, २, ५; ९३२  
 मत्सरः (सोमः) ऋ. १०, ३०, ९; ९०९  
 मदच्युतः (सोमः) ऋ. १०, ३०, ९; ९०९  
 मदन्तीः स्वधया ऋ. ७, ४७, ३; ८७३

मधुमतीः वा. य. १०, १, ४; १०९३, १०९६ । ११, ३८,  
 १०९९ । १, २१; ९३९ । ऋ. १०, ३०, ४; ९०४  
 मधुमान् (सोमः) ऋ. ७, ४७, १; ८७१ । १०, ३०, ७-  
 ८; ९०७-८  
 मधुमत्तमः (सोमः) ऋ. ७, ४७, २; ८७२  
 मध्व उत्सः (सोमः) ऋ. १०, ३०, ८; ९०८  
 मधुश्चुतः ऋ. ७, ४९, ३; ८७७  
 मधुपृचः अ. ३, १३, ५; ९२४  
 मयोभुवः ऋ. १०, ९, १; ८७९  
 मातरः ऋ. १०, १७, १०; ८८८  
 मान्दाः वा. य. १०, ४; १०९६  
 रसः यासां शिवतमः ऋ. १०, ९, २; ८८०  
 राजस्वः वा. य. १०, १, ६; १०९३, १०९७  
 रायः पत्नीः ऋ. १०, ३०, १२; ९१२  
 राष्ट्रदाः वा. य. १०, २-४; १०९४-१०९६  
 रेवतीः ऋ. १०, ३०, ८, १२, १४; ९०८, ९१२, ९१४ ।  
 वा. य. १, २१; ९३९  
 वर्ध्याः अ. १९, २, १; ९२८  
 वाः (रू) अ. ३, १३, ३; ९२२ निर्वचनम् । वा. य. ५,  
 ११, ९४५  
 वाचः बन्धुः वा. य. १०, ६; १०९७  
 वार्षिकीः अ. १, ६, ३; ९६४  
 वाशाः वा. य. १०, ४; १०९६  
 विचरन् (सोमः) ऋ. १०, ३०, ९; ९०९  
 विश्वमृतः वा. य. १०, ४; १०९६  
 विश्वभेषजीः ऋ. १, २३, २०; ८६७  
 वृषण ऊर्मिः वा. य. १०, २; १०९४  
 वृषसेनः वा. य. १०, २; १०९४  
 वृषभः ओषधीनाम् (सुपर्णः) अ. ७, ३९, १; ९२७  
 वृष्टया अभीपतः तर्पयन् (सुपर्णः) अ. ७, ३९, १; ९२७  
 व्रजक्षितः वा. य. १०, ४, १०९६  
 शं भवन्तः अ. १, ३३, १-४; ९१६-१९ । वा. य. ४, १, ९४३  
 शक्ररीः अ. ३, १३, ७; ९२६ । वा. य. १०, ४; ९९६  
 शतपवित्राः ऋ. ७, ४७, ३; ८७३  
 शविष्ठाः वा. य. १०, ४; १०९६  
 शिवाः अ. १९, २, ५; ९३२

शुचयः ऋ. ७, ४९, २-३; ८७६-७७ । अ. १, ३३, १, ४;  
९१६, ९१९  
शुचिः ( सोमः ) ऋ. ७, ४७, १; ८७१  
शुद्धाः वा. य. ६, १३; ९४७  
श्रुष्टीवरीः ऋ. १०, ३०, ११; ९११  
श्वानाः वा. य. ४, १२; ९४४  
संजीवाः अ. १९, ६९, ३; ९३५  
सनिष्यदाः अ. १९, २, १; ९२८  
समुद्रज्येष्ठाः ऋ. ७, ४९, १; ८७५  
समुद्रार्थाः ऋ. ७, ४९, २; ८७६  
सयोनिः ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
सवृधः ऋ. १०, ३०, १०; ९१०  
सहोजसः वा. य. १०, ४; १०९६  
सिन्धवः ( निर्वचनम् ) अ. ३, ३३, १; ९२०  
सिन्धवः ऋ. १, २३, १८; ८६५ । ७, ४७, ३-४; ८७३-  
७४ । १०, ३०, ८-९; ९०८-९  
सुपत्नीः वा. य. १२, ३५; ११००  
सुपरिविष्टाः वा. य. ६, १३; ९४७

सुपर्णः ( देवता ) अ. ७, ३९, १; ९२७  
सुमित्रियाः नः वा. य. ६, २२; ९५१ । २०, १९; ११०४  
सुवर्णाः अ. १, ३३, १-३; ९१६-१८  
सुशेवाः वा. य. ४, १२; ९४४  
सूददोहसः वा. य. १२, ५५; ११०१  
सूर्यत्वचसः वा. य. १०, ४; १०९६  
सूर्यवर्चसः वा. य. १०, ४; १०९६  
सोमस्य दात्रम् वा. य. १०, ६; १०९७  
स्योनाः अ. १, ३३, १-४; ९१६-१९  
स्रवन्ति याः ऋ. ७, ४९, २; ८७६  
स्रोतस्याः अ. १९, २, ४; ९३१  
स्वपत्यस्य पत्नीः ऋ. १०, ३०, १२; ९१२  
स्वयंजाः ऋ. ७, ४९, २; ८७६  
स्वराजः वा. य. १०, ४; १०९६  
स्वसिचः वा. य. १०, १९; १०९८  
हिरण्यवर्णाः अ. १, ३३, १; ९१६ । ३, १३, ६; ९२५  
हैमवतीः अ. १२, २, १; ९२८

## (२) सरस्वत्यादि-नदी-नामानि, तासां गुणबोधकपदानि च ।

अकय-अरी ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९३, ३; १०८०  
अघ्न्यौ ( विपाद् शुतुद्रौ ) ऋ. ३, ३३, १३; १०३४  
अदग्धा ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२  
अदुष्कृतौ ( विपाद् शुतुद्रौ ) ऋ. ३, ३३, १३; १०३४  
अधोअक्षाः ( नद्यः ) ऋ. ३, ३३, ९; १०३०  
अनन्तः ( सरस्वत्याः अमः ) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६  
अनुदकाः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
अपसां अपसामा ( नद्या ) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२  
( सरस्वती ) ६, ६१, १३; १०७१  
अप्येति अन्या अन्याम् ( विपाद् शुतुद्रौ ) ऋ. ३, ३३, २;  
१०२३  
अमृता ( सरण्युः ) ऋ. १०, १७, २; १०८२  
अम्बितमा ( सरस्वती ) ऋ. २, ८१, १६; १०५६  
अर्णवः ( सरस्वत्याः अमः ) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६  
अवित्री ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९३, २; १०७९ । ऋ. ६,  
६१, ४; १०६२

अशिपदाः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
अशिपिदाः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
असिन्नी [ विशेषनाम ] ऋ. १०, ७५, ५; १०४०  
अहृतः ( सरस्वत्याः अमः ) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६  
आर्जाकीया [ विशेषनाम ] ऋ. १०, ७५, ५; १०४०  
इन्द्रेषिते [ विराद् शुतुद्रौ ] ऋ. ३, ३३, २; १०२३  
इयाना भित्तुभिः नमस्यैः [ सरस्वती ] ऋ. ७, ९५, ४;  
१०७५  
इषयन्तीः ( नद्यः ) ऋ. ३, ३३, १२; १०३३  
उत्तरा सखिभ्यः [ सरस्वती ] ऋ. ७, ९५, ४; १०७५  
उदन्वतीः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
उदधिः ( समुद्रः ) अ. ४, १५, ११; १०१४  
उद्वतः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०५०  
उपस्तुत्या चिकितुषा ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १३; १०७१  
उर्वा ( विपाद् ) ऋ. ३, ३३, ३; १०२४  
उशती ( विपाद् शुतुद्रौ ) ऋ. ३, ३३, १; १०२२



ऊर्णावती ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
 ऋजीती ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२  
 ऋत.वरीः ( नद्यः ) ऋ. ३, ३३, ५; १०२६ ( सरस्वती )  
 २, ४१, १८; १०५८  
 ऋष्वः ( सरस्वती स्तनः ) अ. ७, ११, १; १०८७  
 एनी ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२  
 कुमा ( सिन्धुसंगता ) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१  
 केतुः [ सरस्वती स्तनः ] अ. ७, ११, १; १०८७  
 गंगा ( नदीविशेषः ) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०  
 गोमती ( सिन्धुसंगता ) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१  
 घृतश्रुतः ( सरस्वदूर्मयः ) ऋ. ७, ९६, ५; १०४७  
 घोरा ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, ७; १०६५  
 चरन्ती देवकृतं योनिं अनु ( विपाट् शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३,  
 ४; १०२५  
 चरिष्णुः [ सरस्वत्याः अमः ] ऋ. ६, ६१, ८; १०६६  
 चित्रा अश्वा न ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२  
 चेतन्ती भुवनस्य भूरैः रायः ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, २;  
 १०७४  
 चेतन्ती सुमतीनाम् ( सरस्वती ) ऋ. १, ३, ११; १०५२  
 चोदयित्री सूनुतानाम् ( सरस्वती ) ऋ. १, ३, ११; १०५२  
 जुषाणा ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, ४; १०७५  
 तृष्टामा ( सिन्धुसंगतानदी ) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१  
 त्वेषः ( सरस्वत्याः अमः ) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६  
 त्रिषधस्था ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०  
 दर्शिता वपुषी इव ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२  
 दाश्वान् ( सरस्वान् ) अ. ७, ४०, २; १०५०  
 देवी ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, ४-६; १०६२-६४ । २,  
 ४१, १७; १०५७ । ... ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
 देविनमा ( सरस्वती ) ऋ. २, ४१, १६; १०५६  
 दैवः ( सरस्वती स्तनः ) अ. ७, ११, १; १०८७  
 धरणा ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, १; १०७३  
 धियावसुः ( सरस्वती ) ऋ. १, ३, १० १०५१  
 धीनां अवित्री ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, ४; १०६२  
 धृषती ( सरस्वती ) ऋ. २, ३०, ८; १०४५  
 नदीनमा ( सरस्वती ) ऋ. २, ४१, १६; १०५६  
 नर्यः ( सरस्वान् ) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५  
 निवतः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५

पञ्चजाता वर्धयन्ती ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०  
 परुष्णी ( नदीविशेषा ) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०  
 पार.वतघ्नी ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, २; १०६०  
 पावका ( सरस्वती ) ऋ. १, ३, १०; १०५१  
 पिन्वमाने ऊर्मिभिः ( विपाट् शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३, २; १०२३  
 पिन्वमानाः पयसा ( विपाट् शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३, ४; १०२५।  
 ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
 पीपिवान् ( सरस्वतः स्तनः ) ऋ. ७, ९६, ६; १०४८  
 पुष्टपतिः ( सरस्वन् ) अ. ७, ४०, २; १०५०  
 पृथुः ( सरस्वती स्तनः ) अ. ७, ११, १; १०८७  
 प्रचेतयति महः अर्णः केतुना ( सरस्वती ) ऋ. १, ३, १२;  
 १०५३  
 प्रत्यङ् आ दाशुषे ( सरस्वान् ) अ. ७, ४०, २; १०५०  
 प्रबाभधाना महिना विधा अपः ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, १;  
 १०७३  
 प्रवतः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
 प्रिया प्रियासु ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८  
 बृहती कृता विम्बने ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १३; १०७१  
 भद्रा ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९६, ३; १०८०  
 भद्रं कृणवत् ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९६, ३; १०८०  
 भिक्षमाणे प्रसवम् ( विपाट् शुतुद्री ) ३, ३३, २; १०२३  
 मधुमन्तः ( सरस्व ऊर्मयः ) ऋ. ७, ९६, ५; १०४७  
 मथोभूः ( सरस्वती स्तनः ) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४ ।  
 अ. ७, १०, १; १०८६  
 मरुस्वती ( सरस्वती ) ऋ. २, ३०, ८; १०५५  
 मरुत्सखा ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९६, २; १०७९  
 मरुद्वृधा ( नदीविशेषः ) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०  
 मातृत्मा ( शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३, ३; १०२४  
 मेहल्लुः ( सिन्धुसंगतानदी ) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१  
 यती गिरिभ्यः आ समुद्रात् ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, १;  
 १०७४  
 यमुना ( नदीविशेषा ) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०  
 याति रथ्या इव ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, १; १०७३  
 ( युक्ता ) युन्नेभिः- ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १३; १०७१  
 ( युक्ता ) महिना महिना ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १३;  
 १०७१  
 युजा राया ( सरस्वती ) ७, ९५, ४; १०७५

युयुजे सुखं अश्विनं रथम् (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ९; १०४४  
युवतिः ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
रथिष्ठाः ( सरस्वान् ) अ. ७, ४०, २; १०५०  
रसा ( सिन्धुसंगतानदी ) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१  
रायस्पोषः ( सरस्वान् ) अ. ७, ४०, २; १०५०  
रुशती ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ७; १०४२  
रोक्षवत् एति ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ३; १०३८  
रोक्षवत् चरति (सरस्वत्याः अमः) ऋ. ६, ६१, ८; १०६६  
वक्षणाः ( नद्यः ) ऋ. ३, ३३, १२; १०३३  
वर्धयन्ती पञ्चजाता (सरस्वती) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०  
वस्ते मधुवृधं अधि (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
वाजिनी ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, ६; १०६४  
वाजिनीवती ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, ३-४; १०६१-  
१०६२ । ७, २६, ३; १०८० । २, ४, १८; १०५८ ।  
१, ३, १०; १०५१। (सिन्धुः) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
वि-एनसा ( विपाद् शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३, १३; १०३४  
वितस्ता ( नदीविशेषः ) ऋ. १०, ७५, ५; १०४०  
विपाद् ( नदीविशेषः ) ऋ. ३, ३३, १; १०२२  
विश्वदर्शतः ( सरस्वान् ) ऋ. ७, ९६, ६; १०४८  
वृत्रघ्नी ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, ७; १०६५  
वृषभः ( सरस्वान् ) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५  
वृषा ( सरस्वान् ) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५  
शशयः ( सरस्वती स्तनः ) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४  
शशयुः ( सरस्वती स्तनः ) अ. ७, १०, १; १०८६  
शिवाः ( नद्यः ) अ. ७, ५०, ४; १०३५  
शिशुः ( सरस्वान् ) ऋ. ७, ९५, ३; १०४५  
शुचिः ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, २; १०७४  
शुतुद्रिः ( नदीविशेषः ) ऋ. ३, ३३, १; १०२२ । १०, ७५,  
५, १०४०  
शुभ्रा-ध्रे ( विपाद् शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३, २, १०२३ ।  
( सरस्वती ) ऋ. ७, २५, ६; १०७७ । ७, ९६, १;  
१०७८  
श्रवस्युः ( सरस्वान् ) अ. ७, ४०, २; १०५०  
श्वेती ( सिन्धुसंगता ) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१  
संरिहाणे बत्समिव (विपाद् शुतुद्री) ऋ. ३, ३३, ३; १०२४  
संघरन्ती समानं योनिं अतु ( विपाद् शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३,  
३; १०२४

सप्तधातुः ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १२; १०७०  
सप्तस्वसा ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १०; १०६८  
समुद्रः अ. ४, १५, ५; १००८ । ऋ. ३, ३३, २,  
१०२३। ७, ९५, २; १०७४। वा. य. २०, १९; ११०४  
समारारणे ( विपाद् शुतुद्री ) ऋ. ३, ३३, २; १०२३  
सरण्युः ( नदीविशेषः ) ऋ. १०, १७, १-२; १०८१-८२  
सरस्वती ( नदीविशेषः ) ऋ. १०, ७५, ५; १०४० । १, ३,  
१०-१२; १०५१-५३ । १, १६४, ४९; १०५४ । २,  
३०, ८; १०५५ । २, ४१, १६-१८; १०५६-५८ । ६,  
६१, १-७, १०-११, १३-१४; १०५९-६५, १०६८-६९,  
१०७१-७२ । ७, ९५, १-२, ४-६; १०७३-७७ । ९६,  
१, ३; १०७८, १०८० । १०, १७, ७-९; १०८३-८५ ।  
अ. ७, १०, १; १०८६ । ५७, १; १०८८; ६८, १-३;  
१०९०-९२  
सरस्वान् ऋ. ७, २६, ४-६; १०४६-४८ । अ. ७, ४०,  
१-२; १०४९-५०  
सिन्धुः ऋ. ३, ३३, ३, ५ (शुतुद्री), ९ (नद्यः); १०२४,  
१०२६, १०३०  
, ( समुद्रः ) अ. ६, २४, १; ९७१ । ऋ. १०, ७५,  
१-४, ६-९; १०३६-३९, १०४१-४४। (विशेषनाम)  
सिन्धुपत्नीः ( नद्यः ) अ. ६, २४, ३; ९७३  
सिन्धुरार्जः , , ,  
सालमावती ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
सुकृता ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
सुजुष्टा ( सरस्वती ) ऋ. ६, ६१, १०, १०६८  
सुदत्रः ( सरस्वती स्तनः ) ऋ. १, १६४, ४९; १०५४ ।  
अ. ७, १०, १; १०८६  
सुपाराः ( नद्यः ) ऋ. ३, ३३, २, १०३०  
सुभगा ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३ । (विपाद्)  
ऋ. ३, ३३, ३; १०२४  
, ( सरस्वती ) ऋ. ७, ९५, ४, ६; १०७५, १०७७  
सुमतीनां चेतन्ती ( सरस्वती ) ऋ. १, ३, २१; १०५२  
सुरथा ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
सुराधाः ( नद्यः ) ऋ. ३, ३३, १२; १०३३  
सुवासाः ( सिन्धुः ) ऋ. १०, ७५, ८; १०४३  
सुसर्तुः ( सिन्धुसङ्गता ) ऋ. १०, ७५, ६; १०४१

सुसोमा ( नदीविशेषः ) ऋ. १०,७५,५; १०४०  
 सुहवः ( सरस्वती स्तनः ) अ. ७,१०,१; १०८६  
 सूतृतानां चोदयित्री ( सरस्वती ) ऋ. १,३,११; १०५२  
 स्तनः ( सरस्वत्याः ) ऋ. १,१६४,४९; १०५४ । अ.  
 ७,१०,१; १०८६  
 स्तनयित्नुः ( सरस्वत्याः ) अ. ७,११,१; १०८७

स्ताम्या ( सरस्वती ) ऋ. ६,६१,१०; १०६८  
 स्वश्वा ( सिन्धुः ) ऋ. १०,७५,८; १०४३  
 स्वसारः ( नद्यः ) ऋ. ३,३३,९; १०३०  
 हासमाने ( विपाद् शुतुद्री ) ऋ. ३,३३,१; १०२२  
 हिरण्ययी ( सिन्धुः ) ऋ. १०,७५,८; १०४३  
 हिरण्यवर्तनिः ( सरस्वती ) ऋ. ६,६१,७; १०६५

### (३) 'पर्जन्य' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजगराः ( मेघाः ) अ. ४,१५,९; १०१२  
 असुरः ऋ. ५,८३,६; ९७९ । अ. ४,१५,१२; १०१५  
 ईशः विश्वस्य जगतः ऋ. ७,१०१,२; ९८६  
 उत्साः ( मेघाः ) अ. ४,१५,९; १०१२  
 ऊधः ऋ. ७,१०१,१; ९८५  
 कनिक्रदत् ऋ. ५,८३,१,९; ९७४,९८२  
 कृणोति गर्भं ओषधीनाम् ऋ. ७,१०२,२; ९९२  
 " " गवाम् ऋ. ७,१०२,२; ९९२  
 " " परुषीणाम् ऋ. ७,१०२,२; ९९२  
 कृष्वन् ओषधीनां गर्भम् ऋ. ७,१०१,१; ९८५  
 कृष्वन् वत्सम् ऋ. ७,१०१,१; ९८५  
 जीरदानुः ऋ. ५,८३,१; ९७४  
 दिवस्पुत्रः ऋ. ७,१०२,१; ९९१  
 देवः ऋ. ७,१०२,२; ९८६  
 निषिञ्चन् अपः ऋ. ५,८३,६; ९७९ । अ. ४,१५,१२;  
 १०१५  
 पर्जन्यः ऋ. ५,८३,१-५,९; ९७४-७८,९८२ । ७,  
 १०१,५; ९८९ । १०२,१; ९९१  
 पिता नः ऋ. ५,८३,६; ९७९ । अ. ४,१५,१२; १०१५

प्रच्युताः मरुद्भिः (मेघाः) अ. ४,१५,७९; १०१०-१२  
 मधुदोघः ( मेघः ) ऋ. ७,१०१,१; ९८५  
 मीढ्वान् ऋ. ७,१०२,१; ९९१  
 मेघाः अ. ४,१५,७-९; १०१०-१२  
 यंसत् त्रिधातु शरणं शर्म ऋ. ७,१०१,२; ९८६  
 रेतोधाः ऋ. ७,१०१,६; ९९०  
 वर्धनः अपाम् ऋ. ७,१०१,२; ९८६  
 वर्धनः ओषधीनाम् ऋ. ७,१०१,२; ९८६  
 वर्षम् ( वृष्टिः ) ऋ. ५,८३,१०; ९८३ । अ. ७,१५,२-४,  
 ६,१०,१४-१५; १००५-७,१००९,१०१३,१०१७-१८  
 वर्ष्यम् ( वृष्टयोपेतम् ) ऋ. ५,८३,३; ९७६  
 वर्ष्याः ( मेघाः ) ऋ. ५,८३,३; ९७६  
 वृषभः ऋ. ५,८३,१; ९७४ । ७,१०१,१,६; ९८५,९९०  
 वृष्टिः-ष्टयः ऋ. ५,८३,६; ९७९ । ७,१०१,५; ९८९  
 सयोजातः ऋ. ७,१०१,१; ९८५  
 सुदानवः ( मेघाः ) अ. ४,१५,९; १०१२  
 स्तनयन् ऋ. ५,८३,२,९; ९७५,९८२  
 स्वराट् ऋ. ७,१०१,५; ९८९

### (४) 'मण्डूक' देवताया गुणबोधकपदानि ।

अजमायुः ऋ. ७,१०३,६,१०, ९९९, १००३  
 अभिवृष्टः ४; ९९७  
 उशन ३; ९९६  
 कनिष्क ४; ९९७  
 गुह्याः न ८, १००१  
 गोमायुः ६,१०; ९९९, १००३  
 घर्माः ९, १००२

घर्मिणः ऋ. ७,१०३, ८; १००१  
 तप्ताः ९, १००२  
 वृष्यावन्तः ३, ९९६  
 नरः न ९; १००२  
 पुरुत्रा वाचं वदन्तः ६; ९९९  
 पृथिः ४, ६, १०; ९९७, ९९९, १००३  
 पृथिवाहवः अ. ४, १५, १२; १०१५

ब्राह्मणाः-गासः न ऋ. ७, १०३; १, ७, ९९४, १००० ।  
 अ. ४, १५, १३; १०१६  
 मण्डूकाः ऋ. ७, १०३, १-२, ७, १०; ९९४-९५, १०००,  
 १००३ । अ. ४, १५, १२-१३;  
 १०१५-१६  
 मण्डूकी अ. ४, १५, १४; १०१७  
 वदन, वदन्तः ऋ. ७, १०३, ३, ७; ९९६, १०००

विरूपाः ७, १०३, ६; ९९९  
 व्रतचारिणः १; ९९४ । अ. ४, १५, १३; १०१६  
 शायानः २; ९९५  
 शशायानः संवत्सरम् १; ९९४ । अ. ४, १५, १३; १०१६  
 समानं नाम बिभ्रतः ६; ९९९  
 सिध्दिदानाः ८; १००१  
 हरितः ४, ६, १०; ९९७, ९९९, १००३

### (५) 'आपः' देवतान्तरसम्बन्धः ।

पयस्वान् अम आ गहि । तं मा सं सृज षर्चसा । ऋ. १,  
 २३, २३; ८७० । १०, ९, ९; ८८७ । अ. ७, ८९, १;  
 ९५९

अमिः अप्सु अन्तः ऋ. १, २३, २०; ८६७  
 अमिं याः गर्भं दधिरे अ. १, ३३, १-३; ९१६-१८  
 अमिः यासु जातः अ. १, ३३, २; ९१६  
 वैश्वानरो यासु अमिः प्रविष्टः ऋ. ७, ४९, ४; ८७८  
 इन्द्रो याभ्यः अरदद् गातुर्मूर्तिम् ऋ. ७, ४७, ४; ८७४  
 इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद ऋ. ७, ४९, १; ८७५  
 इन्द्रो याभिः वावृषे वीर्याय ऋ. १०, ३०, ४; ९०४  
 यः ( इन्द्रः ) वो वृताभ्यो अकृणोडु लोकम् ऋ. १०, ३०,  
 ७; ९०७  
 यः ( इन्द्रः ) वो मर्या अभिशस्त्रेरमुञ्चत् ऋ. १०, ३०,  
 ७; ९०७

युष्मा इन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये वा. य. १, १३; ९३८;  
 यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये " " "  
 याभिः इन्द्रमनयन्नत्यरातीः वा. य. १०, १; १०९३  
 इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः ऋ. १०, ३०, १३; ९१३  
 अध्वर्यवः " " सुवुत ऋ. १०, ३०, १५; ९१५  
 तां इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि ऋ. ७, ४७, ३; ८७३  
 यं वः प्रथमं इन्द्रपानमूर्तिमकृण्वतेलः ऋ. ७, ४७, १; ८७१  
 तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपानं ऊर्वि प्र हेत ऋ. १०, ३०, ९;  
 ९०९  
 इन्द्राय मधुमन्तं ऊर्मिं प्र हिणोतनापः ऋ. १०, ३०, ७; ९०७  
 प्रास्मि ( इन्द्राय ) मधुमन्तमूर्तिम् ऋ. १०, ३०, ८; ९०८  
 इन्द्राग्नयोः भागधेयीः स्थ । वा. य. ६, २४; ९५२  
 यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षम् ऋ. १, ३३, ३; ९१८  
 देवानां अपि यन्ति पाथः ऋ. ७, ४७, ३; ८७३  
 वै०[आयुर्वेद०] १९

याभिर्मित्रावहणावभ्यषिञ्चन् वा. य. १०, १; १०९३  
 मित्रावरुणयोः भागधेयी स्थ वा. य. ६, २४; ९५२  
 यासां राजा वरुणो यति मध्ये सत्याच्यते अ. १, ३३, २; ९१७।  
 अवपश्यन्नानाम् ऋ. ७, ४९, ३; ८७७  
 यासु राजा वरुणः ( वर्तते ) ऋ. ७, ४९, ४; ८७८  
 विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति ऋ. ७, ४९, ४; ८७८  
 विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ वा. य. ६, २४; ९५२  
 अपामुत प्रशस्तये । देवा भवत वाजिनः॥ ऋ. १, २३,  
 १९; ८६६  
 यासु जातः सविता अ. १, ३३, १; ९१६  
 सूर्यः रश्मिभिर्याः ( आपः ) आततान ऋ. ७, ४७, ४; ८७४  
 अमूः ( आपः ) याः उप सूर्ये ऋ. १, ३३, १७; ८६४ ।  
 याभिर्वा सूर्यः सह वा. य. ६, २४; ९५२  
 आपः पृणीत भेषजं ज्योक् च सूर्ये दृशे ऋ. १, २३, २१;  
 ८६८ । १०, ९, ७; ८८५  
 यासु सोमः ( वर्तते ) ऋ. ७, ४९, ४; ८७८  
 याभिः सोमः मोदते हर्षते च ऋ. १०, ३०, ५; ९०५  
 आसु मे सोमोऽब्रवाँदन्तर्विश्वानि भेषजा ऋ. १, २३, २०;  
 ८६७  
 अमिं च विश्वशंसुवं आपश्च विश्वभेषजीः ऋ. १०, ९, ६;  
 ८८४  
 तमूर्तिमापो मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा । ऋ. ७,  
 ४७, २; ८७२  
 अध्वर्यवोऽप इता समुद्रं अपां नपातं हविषा यजध्वम् । ऋ.  
 १०, ३०, ३; ९०३  
 नि बर्हिषि धत्तन सोम्यालोऽपां नपत्रा संविदानास एनाः ।  
 ऋ. १०, ३०, १४; ९१४  
 अपां नपाथो व ऊर्मिर्हविष्यः वा. य. ६, २७; ९५३

# आयुर्वेदमन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अकर्म ते स्वपसो अभूम	२१०७	अग्ने सहस्वानभिभूरभीदसि	१२३४
अक्षन्नमिमिदन्त ह्यव	२२११	अग्नेः शरीरमसि	५४
अक्षितास्त उपसदो	११२६	अग्नेः सान्तपनस्य	१५१
अक्षितिं भूयसांम्	२१७७	अग्नेरिवास्य दहत एति	१७९
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां	१६२, २१०, २९४	अग्नेरिवास्य दहतो दावस्य	६८६
अक्ष्यौ नि विध्य हृदयं	७४१	अग्नेर्घासो अपां गर्भो	३३१
अक्ष्यौ नौ मधुमंकाशे	५९१	अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः	१६८५
अगन्म स्वः स्वरगन्म	१९०४	अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व	२०८२
अमये कव्यवाहनाय	२२२१	अग्नेर्वोऽपन्नगृहस्य सदसि	९५२
अग्निः पचन् रक्षतु त्वा	१२९५	अग्नेष्टे प्राणममृताद्	३९
अग्निः पूर्वं आ रभतां	७७०	अग्नौ तुषाना वप जातवेदसि	१२५७
अग्निः प्राणान्त्सं दधाति	१७३	अग्नेष्व्योषधीनां ज्योतिषा	३९८
अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान्	८८	अग्नेणीरसि स्वावेश	२२६९
अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो	१२८	अघद्विष्टा देवजाता	६६८
अग्निं झूमो वनस्पतीन्	१७३४	अघमस्त्वघकृते शपथः	१६२०
अग्निरिवैतु प्रतिकूलम्	१६०३	अघशंसदुःशांसाभ्यां	२१८
अग्निर्माग्निनावतु प्राणाय	५९७	अघाश्वस्येदं भेषजम्	८१७
अग्निर्होताध्वर्युष्टे बृहस्पतिः	२१६५	अङ्गभेदमङ्गज्वरं	२७६
अग्निष्टे नि शमयतु	६८८	अङ्गभेदो अङ्गज्वरो	१०६
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत	१९९७, २१२७	अङ्गादङ्गात् प्र च्यावय	८३२
अग्निस्तकमानमप बाधतामितः	५३१	अङ्गादङ्गाल्लोत्रोलोत्रो	१६७
अग्ना रक्षस्तपतु यद् विदेवं	१३१४	अङ्गिरसामयनं पूर्वो	२१५८
अग्नाषोमा पथिकृता स्योनं	२०७७	अङ्गिरसो नः पितरो नवगवा	२०२१
अग्ने अकव्यग्निः कव्यादं	२५८	अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिः	१९७२
अग्ने चरुर्यज्ञियस्त्वाध्यरुक्षन्	१२४४	अङ्गिरोभिर्भ्यश्चैरा गहीह	२०२२
अग्नेऽजनिष्टा महते वीर्याय	१२३१	अङ्गेअङ्गे लोत्रिलोत्रि	२१६, ३००
अग्ने जायस्वादितिनाथितेयं	१२२२	अङ्गेअङ्गे शोचिषा शिश्रियाणं	१८९
अग्ने तपस्त्यामह उप	१९२२	अच्छा वद तवसं गर्भिराभिः	९७४
अग्ने पृतनाषाट् पृतनाः	१५९८	अच्छा सिन्धुं मातृतमा	१०२४
अग्ने समिधमाहार्षं	११५	अजं च पचत पञ्च	१२१९
		अजः पक्कः स्वर्गे लोके	१९००

अञ्जलिनाके त्रिदिवे त्रिपृष्ठे	११९२	अध्वर्यवोऽप इता समुद्रं	९०३
अजा रोह सुकृतां यत्र लोकः	११९१	अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि	९०२
अजैष्माद्यासनाम च	६२९	अनहुद्भ्यस्तवं प्रथमं	४०७
अजैष्माद्यासनामाद्याभूम	१८४५	अनड्वाहं प्लवमन्वारभध्वं	२६४
अजो अभिरजमु ज्योतिराहुः	११८९	अनध्रयः खनमाना	९३०
अजो भागस्तपसस्तं तपस्व	२०३२	अनयाहमौषध्या सर्वाः	३९२, १६१९
अजो वा इदमग्रे व्यक्रमत	१२०२	अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः	१२२२
अजोऽस्यज स्वर्गोऽसि त्वया	११९८	अनागमिष्यतो वरानवित्तेः	१८५४
अजो ह्यग्रेरजनिष्ट शोकाद्	११९५	अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये	१६४४
अजले व्यञ्जते समञ्जते	२१०१	अनाप्ता ये वः प्रथमा	८०४
अजन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो	२२५९	अनास्माकस्तद् देवपीयुः	१९१७
अतारिषुर्भरता गव्यवः	१०३३	अनु च्छथ श्यामेन त्वचमेतां	११८६
अति द्रव श्वानौ सारमेयौ	२०३५	अनुजिघ्रं प्रमृशन्तं	१३७२
अति विश्वाः परिष्टाः	३१०	अनु त्वा हरिणो वृषा	१९३
अतिसृष्टो अपां वृषभो	१८०३	अनुपूर्ववत्सां धेनुम्	१२११
अत्यन्याँ अगां नान्याँ	३७०	अनुसूर्यमुदयतां	४८९
अत्रिवद् वः क्रिमयो हन्मि	७०५, ७११	अनुहृतः पुनरोहि	१०४
अत्रैव वोऽपि नह्यामि	२३४३	अनेनेन्द्रो माणिना वृत्रमहन्	१४३३
अथर्वाणो अबध्नत	१४९७	अन्तकाय मृत्यवे नमः	६
अथर्वा पूर्णं चमसं	२१३४	अन्तकोऽसि मृत्युरसि	१८३६, १८४३
अथोपदान भगवो	१५५८	अन्तरिक्षेण पतति	१५८८
अदन्ति त्वा पिपीलिका	८५८	अन्तर्दधे द्यावापृथिवी	१४३६
अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः	२११०	अन्तर्दावे जुहुता स्वेतद्	७३१
अदितेर्दस्तां स्तुचमेतां द्वितीयां	१२५२	अन्तर्देशा अबध्नत	१४९६
अदित्यै व्युन्दनमसि	९४१	अन्तर्धिर्देवानां परिधिः	२६०
अदृष्टान् हन्त्यायति	७७५	अन्यक्षेत्रे न रमसे	५३९
अदो यत् ते हृदि श्रितं	६८४	अन्यत्रास्मन्न्युच्यतु	१७७२
अदो यदवभावति	५६५	अन्यमू षु त्वं यभ्यन्य	१९६७
अदो यदवरोचते	१९४	अन्या वो अन्यामवतु	३१४
अद्याग्ने अद्य सवितः	१३३७	अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	२३२
अधरात्रं प्र हिणोमि	५३४	अन्यो अन्यमनुगृभ्णात्येनोः	९९७
अध स्वप्नस्य निर्विदे	६२३	अन्वान्त्र्यं शिषिण्यमथो	६९४
अघा यथा नः पितरः	२१०४	अपकामं स्यन्दमाना	९२२
अधि नो ब्रूतं पृतनासूप्तौ	१७१९	अप काम नानदती	१६२९
अधि ब्रूहि मा रभथाः	३३	अपक्रीताः सहीयसाः	३३४
अधि स्कन्द वीरयस्व	१३५३	अपचितः प्र पतत	५१३
अधीतीरध्यगादयम्	८२	अपचितां लोहिनीनां	५०३

अपथेना जभारैणां	१६६३	अपेहि मनसस्पते	६२५
अप नः शोशुचदघममे	१७५७	अपेहारिरस्यरिर्वा असि	८४५
अपः पिन्वौषधीर्जिन्व	११०२	अपो अद्यान्वचारिषः	११०६
अपमृज्य यातुधानान्	३९५	अपो दिव्या अचायिषं	९५९
अपरिमितमेव यज्ञमाप्नोति	१२०४	अपो देवा मधुमतीः	१०९३
अपवासे नक्षत्राणाम्	१९८	अपो देवीरुपसृज	१०९९
अपश्यं युवतिं नीयमानां	२०८६	अपो देवीरुप ह्ये	८६५
अपश्यं त्वा मनसा चैकितानं	२२४४	अपो निषिञ्चसुरः	१०१५
अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां	२२४५	अप्रजास्त्वं मार्तवत्समात्	१३९२
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः	२२८८	अप्सु ते जन्म दिवि ते	१५९०
अपां रसः प्रथमजोऽथो	१३३६	अप्सु ते राजन् वरुण	१६७६
अपागूहन्नमृतां मत्थेभ्यः	१०८२, २०५७	अप्सु मे सोमो अब्रवीद्	८६७, ८८४
अपानाय व्यानाय	६४	अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्	८६६, ९६३
अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं	६१	अभयं मित्रावरुणाविहास्तु	७३३
अपःमग्निस्तन्भिः संविदानो	१०१३	अभि क्रन्द स्तनयं गर्भेमा	९८०
अपामघ्रमसि समुद्रं वो	१८०८	अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधि	१००९
अपमह दिव्यानाम्	९३१	अभि तेऽथां सहमानाम्	३६१
अपामार्ग ओषधीनां	३८७	अभि त्वा जरिमाहित	७९
अपामार्गोऽप मार्तु	३९४	अभि त्वा मनुजातेन	१२६९
अपामूर्ज ओजसो वावृधानं	५९४	अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न	१०३९
अपां मा पाने यतमो ददम्भ	७४५	अभि त्वोर्णोमि पृथिव्या	२०७६
अपा वृत्त्य गार्हपत्यात्	२५०	अभिभूरहमागमं	२३४४
अपूपवानन्नवान्	२१७१	अभीशुना मेया आसन्	४६४
अपूपवानपवान्	२१७४	अभूद् दूतः प्रहितो जातवेदाः	२२१५
अपूपवान् क्षीरवात्	२१६६	अभ्यक्ताक्ता स्वरंकृता	१६४०
अपूपवान् घृतवान्	२१६९	अभ्यजनं सुरभि सा समृद्धिः	९५८
अपूपवान् दधिवान्	२१६७	अभ्यावर्तस्व पशुभिः सहैनां	१२५०
अपूपवान् द्रव्यवान्	२१६८	अमा कृत्वा पाप्मानं	३९०
अपूपवान् मधुमान्	२१७२	अभासि मात्रां स्वरगाम्	२०६९
अपूपवान् मांसवान्	२१७०	अमुकथा यक्षमाद् दुरितादवद्याद्	१६६७
अपूपवान् रसवान्	२१७३	अमुत्रभूयादधि यद्यमस्य	१४३
अपूपापिहितान् कुम्भान्	२१४५, २१७५	अमून् हेतिः पतत्रिणी	१५८५
अपेत वीत वि च सर्पतातो	१९७५	अमू ये दिवि सुभगे	१९५
अपेतो वातो सविता च	१७०२	अमूर्या उप सूर्ये याभिः	८६४
अपेमं जीवा अदधन्	२०५१	अमूर्या यन्ति योषितो	५५५
अपेमां मात्रां मिमीमहे	२०६४	अमोतं वासो दयात्	११९६
अपेयं रात्र्युच्छत्वपे.०	४९४	अम्बयो यःत्यध्वभिः	८६३

अम्बितमे नदीतमे	१०५६	अरायमसृक् पाव.नं	४१८
अयं यो अभिशोचायिष्णुः	१८१	अरायान् ब्रूमो रक्षांसि	१७४९
अयं यो भूरिमूलः	६४०	अरायि वाणे विकटे	२३३७
अयं यो वक्रो विपरु०	८५५	अरावीदंशुः सचमानः	१४०४
अयं यो विश्वान् हरितान्	५३२	अरिप्रा अपो अप	१८१२
अयं लोकः प्रियतमो	११४	अरिष्टोऽहमरिष्टगुः	१४६२
अयं विष्कन्धं सहते	६८	अरुह्माणमिदं महत्	५६९
अयं स्तुवान् आगमन्	७२८	अर्थेत् स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं	१०९५
अयं स्राक्स्थो मणिः	१४३४	अलसालासि पूर्वा	४६९
अयं प्रावा पृथुबुध्रो वयोधाः	१२८५	अत्गाण्डून् हन्मि महता	६९३
अयं जीवतु मा मृत	३१	अवकादानभिशोचानामु	७२४
अयज्ञियो हतवर्चा भवति	२५३	अवकोल्वा उदकात्मान	३३२
अयं ते कृत्यां विततां	१४५६	अव जहि यातुधानान्	१५९२
अयं दर्भो विमन्युकः	६३९	अवपतन्तीरवदन्	३१७
अयं देवा इहैवास्तु	२३	अव मा पापमन्त्यज	१७७०
अयं देवानामसुरो वि राजति	१६५४	अवर्षावर्षमुदू पू गृभाय	९८३
अयमग्निरुपसद्य इह	१०८	अवशसा निःशसा यत्	६३१
अयमिद् वै प्रतीवर्त	१४४६	अव श्वेत पदा जहि	८१०
अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो	१०७७	अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो	२०३४
अयमौदुम्बरो मणिः	१५५०	अविः कृष्णा भागधेयं	२६९
अयं पन्थाः कृत्येति त्वा	१६३०	अवैरहत्यायेदमा पपत्यात्	१५८७
अयं प्रतिसरो मणिः	१४३१	अदमन्वनी रीयते सं रभन्वं	२४२
अयं मणिर्वरणो विश्वभेषजः	१४५५	अश्रेष्माणो अधारयन्	१७९८
अयं मणिः सपत्नहा सुवीरः	१४३२	अश्वस्थे वो निषदनं	३०५, ३५८
अयं मे वरण उरसि	१४६३	अश्वत्थो दर्भो वीरुधां	३४३
अयं मे वरणो मणिः	१४५३	अश्वत्थो देवसदनः	४१०, ४३९, ४५२
अयं मे हस्तो भगवान्	५५३	अश्वस्याश्वनरस्याजस्य	१३३९
अयस्मये रुपदे बेधिष इह	१७९३	अश्वस्याङ्गः संपतिता सा	४३६
अयोजाला असुरा मायिनो	७६६	अश्व्याः कणा गावः	११३१
अरंघुषो निमज्य	८११	अश्व्यावतीं प्र तर या	२०५५
अरसं कृत्रिमं नादम्	१५५३	अश्व्यावतीं सोमावतीं	३०७
अरसं प्राक्त्यं विषम्	७९९	अश्वो घृतेन त्मन्या समन्त	३७८
अरसस्त इषो शल्यो	७९५	अग्र च मेऽशीतिश्च मे	६६०
अरसस्य शर्कोटस्य	८५६	असद् भूम्याः समभवत्	४०१
अरसास इहाहयो	८१६	असंतापं मे हृदयमुर्वा	१८९७
अरातीयोऽर्नातृव्यस्य	१४७८	असंतापे सुतपसौ हुवे	१७०८
अरात्यास्त्वा निर्ऋत्या	१४५९	असन्मन्त्राद् दुःश्वप्याद्	५८५



असपत्नं नो अधराद्	१४४७	आज्यस्य परमेष्ठिन्	७६८
असंबाधे पृथिव्या उरौ	२०४४	आञ्जनं पृथिव्यां जातं	६०४
असितं ते प्रलयनम्	५१९	आ ते कारो शृणवामा	१०३१
असितस्य तैमातस्य	८३९	आ ते प्राणं सुवामसि	१४८
असुराणां लुहितासि	८०७	आत्मानं पितरं पुत्रं	१२१२
असुरास्त्वा न्यखनन् देवाः	४१५	आ त्वागमं शंतातिभिः	५५२
असूतिका रामायणी	५१५	आ त्वाग्न इधीमहि	२२३८
असौ यो अधराद् गृहः	१६५०	आ त्वा नृतत्वर्थमा	१३८
असौ हा इह ते मनः	२२१६	आदज्ञा कुविदज्ञा	५६६
अस्थाद् यौरस्थाद् पृथिवी	५५९	आदित् पर्यामुत वा	९१५
अस्थिजस्य किलासस्य	५२०	आदित्या रुद्रा वसवः	१७४६, २२६६
अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः	२१५, २९९	आदित्येभ्यो अग्निरोभ्यो	१३१५
अस्थिस्त्रंसं परस्त्रंसम्	४८३	आ नयैतमा रभस्व	११८३
अस्मिन्द्रो नि दधातु	१४५१	आ निवर्तन वर्तय	९००
अस्मिन् मणावेकशतं	१५७६	आ निवर्त नि वर्तय	८९८
अस्मिन् षयं संकसुके	२२९	आनृत्यतः शिखण्डिनो	७२१
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तम्	१६८१	आ नो भर मा परि द्या	१७७७
अस्मै मणिं वर्म बध्नन्तु	१४४०	अन्त्राणि जत्रवो गुदा	११३६
अस्मै मृत्यो अधि ब्रूहि	३४	आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो	१६४, २१३, २९७
अस्य प्रजावती गृहे	२२४३	आप इद् वा उ भेषजीः	१२६, २०१
अस्येन्द्र कुमारस्य	६९७	आपः पृणीत भेषजं	८६८, ८८५
अस्त्रामस्त्वा हविषा यजामि	१६६०	आपमुषी पार्थिवानि	१०६२
अहमस्मि सपत्नहेन्द्रो	२३४२	आ पर्जन्यस्य वृष्टयो०	१७८
अहमस्मि सहमानाथो	३६८	आ पश्यति प्रति पश्यति	७५४
अहं पचाम्यहं ददामि	१३१८	आपस्पुत्रासो अभि सं	१२७५
अहं पश्लामधिषा असानि	१५४२	आपो अग्निं प्र हिणुत	२१९०
अहा अरातिमविदः स्योनम्	१६६८	आपो अप्रं विव्या	३२६
अहीनां सर्वेषां विषं	८२७	आपो अयान्वचारिषं	८७०, ८८७
अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत्	२६५	आपो अस्मान् मातरः	८८८, १७८८
अहोरात्रे इदं ब्रूमः	१७३८	आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत	११००
अहो च त्वा रात्रये च	४६	आपो देवीः स्वदन्तु	९४६
आश्वैकं मणिमेकं कृष्णुष्व	५९६	आपो भद्रा घृतमिदाप	९२४
आगादुदगादयं	८१	आपो यं वः प्रथमं देवयन्ते	८७१
आममन्नाप उशतीर्षाहिरेंदं	९१५	आपो रेवतीः क्षयथा हि	९१२
आ घा ता गच्छानुत्तरा	१९६३	आपो विष्णुदं वर्षं सं वो	१०१२
आच्छाद्विधानैर्गुपितो	४७६	आपो हि द्या मयोभुवः	८७९
आच्या जानु दक्षिणतो	१९९२, २०१७	आ प्र न्यवेधामप तन्मृजेथां	२१९९

आ प्रत्यञ्चं दाशुषे दाश्वंसं	१०५०	आशृण्वन्तं यवं देवं	११२५
आबयो अनाबयो रसः	४६६	आसीनासो अरुणीनाम्	१९९३, २१२६
आ मारुक्षद् देवमणिः	१४५०	आसुरी चक्रे प्रथमेदं	५२२
आ मे धनं सरस्वती	१५४६	आ सुखसः सुखसो	५०७
आमे सुपक्के शबले विपक्के	७४३	आसो बलासो भवतु	२८१
आयजी वाजसातमा	२२८२	आहं तनोमि ते पसो	१३३८, १३४५
आ यन्ति दिवः पृथिवीं	१२९७	आहं पितृन्सुविदत्रां	१९८९, २०११
आयमगन् युवा भिषक्	८२२	आहर्षिमविदं त्वा	२५, २०९
आ यत पितरः सोम्यासो	२२१२	इत एत उदारुहन्	२०२४
आयुरस्मै धेहि जातवेदः	९२	इतश्च मामुतश्चावतां	२१२१
आयुर्ददं विपश्चितं	५६४	इदं यत् कृष्णः शकुनि०	१७३२, १७३३
आयुर्दा अग्ने जरसं वृणानो	२३३१	इदं यमस्य सादनं	१९८६
आयुर्यत् ते अतिहितं पराचैः	१४५	इदं व आपो हृदयमयं	९२६
आयुर्विश्वायुः परि पातु त्वा	२०७९	इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे	९८९
आयुषोऽसि प्रतरणं	६०२	इदं विद्वानाजन सत्यं	५८६
आयुष्मतामायुष्कृतां	१७५	इदं हविर्यातुधानान्	७२७
आयुष्यं वर्चस्य० राय०	२३२८	इदं हिरण्यं बिभृहि	२२०६
आ यूथेव क्षुमति पशो	२१०६	इदं कसाम्बु चयनेन चितं	२१८७
आ रभस्व जातवेदः	७७२, २१४८	इदं त एकं पर ऊ त एकं	२०९०
आ रभस्वेमाममृतस्य	२७	इदं तमति सृजामि	१८०६
आरादरातिं निर्ऋतिं परो	३८	इदं तुतीयं सवनं कवीनाम्	९०
आरे अभूद् विषमरौद्	८३३	इदं ते हव्यं घृतवत्	१०२१
आ रोहत जनित्रीं जातवेदसः	२१५१	इदमह० रक्षसां प्रीवा	७५३
आ रोहत दिवमुत्तमाम्	२१४२	इदमहं तप्तं वार्षहिर्धा	९४५
आ रोहतायुर्जरसं वृणाना	२४०	इदमहमामुष्यायणेऽमुष्याः	१८६३
आर्षेषु नि दध ओन्न	१२६१	इदमापः प्र वहत	८६९, ८८६
आलिगि च विलिगी च	८४०	इदमापः प्रवहतावयं	९५०, ९६१
आ व ऋजस ऊर्जा व्युष्टिषु	२२८५	इदमिदमेवास्य रूपं	१२०६
अवतस्त आवतः	९८	इदमिद् वा उ नापरं	२०७४, २०७५
आवर्धृततीरध नु द्विधारा	९१०	इदमिद् वा उ भेषजम्	८६०
आ वात वाहि भेषजं	५५०	इदं पितृभ्यः प्र भरामि	२२०१
आविष्कृणुष्व रूपाणि	७५८	इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य	१९८८, २०१२
आ वृषायस्व श्वसिहि	१३४३	इदं पूर्वमपरं नियानं	२१९४
आशरीकं विशरीकं	१५६०	इदं पैदो अजायत	८१४
आशानामाशापालेभ्यः	१६५८	इदं प्रापमुत्तमं काण्डम्	१३१६
आशामाशां वि द्योततां	१०११	इदं मे ज्योतिरमृतं हिरण्यं	१२५६
आशीर्णं ऊर्जेमुत सौप्रजास्वं	९३		

इन्मेन त्वा जातवेदः	११६
इन्द्र उक्थामदान्यस्मिन्	१९३२
इन्द्र एतां ससृजे विद्वो	९७
इन्द्र जीव सूर्य जीव	१५६
इन्द्रस्य कुक्षिरसि सोमधान	१३६६
इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि	१५७५
इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त	१५६१
इन्द्रस्य प्रथमो रथो देवानाम्	८०८
इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य	१६९२
इन्द्रस्य या मही दधत्	६९१
इन्द्रस्य व इन्द्रियेण	१८११
इन्द्रस्य वचसा वयं	१८३
इन्द्राय भागं परि त्वा	११८४
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य	११२३
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं	११२२
इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो	९४
इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे	१०२३
इन्द्रो अस्मां अरदद्	१०२७
इन्द्रो जघ न प्रथमं	८२५
इन्द्रो मा मरुत्वान् प्राच्या	२१०८
इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु	५९८
इन्द्रो मेऽहिमरन्धयत्	८२३, ८२४
इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्याणि	१९४५
इमं यम प्रस्तरमा	१९७१, २०२३
इमं यवमष्टायोगैः	१९९
इमं होमा यज्ञमवतेमं	२२४७
इमं क्रव्यादा विवेशायं	२५२
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि	२३९
इममग्र अ युषे वर्चसे जय	५
इममादित्या वसुना समुक्षत	१३०
इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमन्तु	२६३
इममोदनं नि दधे ब्राह्मणेपु	१२२८
इमं बभ्रामि ते मणिं	१५१३
इमं बिभामि वरणम्	१४६४
इमं मे अग्ने पुरुषं सुसुरध्वयं	६८७
इमं मे कुष्ठं पूरुषं	४४२
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति	१०४०

इमा आपः शमु मे सन्तु	९४३
इमां खनाम्योषधिं	३६४
इमा जुह्वाना युग्मदा नमोभिः	१०७६
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीः	२४७, १९४६
इमा ब्रह्म सरस्वति	१०५८
इमां मात्रां मिमीमहे	२०६२
इमा या देवीः प्रदिशश्चतस्रो	१६६५
इमा य स्तित्मः पृथिवी	४५७
इमास्तिस्रो देवपुराः	१३६
इमे जीवा वि मृतैरावृत्रन्	२३८
इमौ युनक्ति ते वही	२०८०
इयं वीरुन्मधुजाता	४७८, ८५३
इयं शुष्मेभिर्बिसखा इव	१०६०
इयत्तकः कुषुम्भकः	७८८
इयतिका शकुन्तिका	७८४
इयं ते धीतिरिदमु ते जनित्रं	१२३९
इयं नारी पतिलोकं वृणाना	२०८५
इयमददाद् रभसमृणन्त्युतं	१०५९
इयमन्तर्वदति जिह्वा	११३
इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति	११३७
इयं मही प्रति गृह्णातु	१२३६
इषीकां जरतीमिष्ट्वा	२७०
इष्टुतिर्नाम वो माता	३०९
इष्वा ऋजीयः पततु	१६०२
इह तेऽसुरिह प्राण	८
इहा यन्तु प्रचेतसो	३३०
इहैधि पुरुष सर्वेण	१०३
इहैव गाव एतनेहो	२३२३
इहैव स्तं प्राणापानौ	७७
इहैवाभि वि तन्मे	१४१७
इहैवैधि धनसनिः	२१८८
ईजानश्चितमारुक्षद्	२१६४
ईजानानां सुकृतां लोकम्	११९४
ईर्ष्याया ध्राजिं प्रथमां	६८२
ईशानां त्वा भेषजानाम्	३८०
ईशाना वार्याणां क्षयन्तीः	८८३

उम इत् ते वनस्पते	१५५९	उदगाता भगवती	४९३
उम्रा इव प्रवहन्तः	२२९८	उदगादयमादित्यो	५४७
उच्छुष्मा ओषधीनां	३०८	उदग्रभं परिपाणाद्	७६१
उच्छुष्मौषधीनां सार	१३३५	उदङ् जातो हिमवतः	४४४
उच्छ्रयस्व बहुर्भव स्वेन	११२४	उदन्वती यौरवमा	२०७२
उच्छ्रयस्व वनस्पते	२२६१	उदपप्तदसौ सूर्यः	७८२
उच्छ्रवश्चमाना पृथिवी सु	१९५१	उदपूरसि मधुपूरसि	२१२०
उच्छ्रवश्चस्व पृथिवि मा	१९५०	उदप्रुतो मरुतस्ताँ इयर्त	९६७
उज्जिहीष्वे स्तनयति	३४४	उदरात् ते क्लोत्रो नाभ्या	३८३
उत देवा अवहितं	५४८	उदह्ममायुरायुषे कृत्वे	२०४७
उत नमा बोभुवती	१७८४	उदायुषा समायुषा	१७७
उत नः प्रिया प्रियासु	१०६८	उदिमां मात्रां मिमीमहे	२०६७
उत स्म ते वनस्पते	२२८१	उदीर्चनैः पथिभिर्वायुमाद्भिः	२४५
उत स्या नः सरस्वती	१०६५, १०७५	उदीच्यां त्वा दिशि पुरा	२११६
उत हन्ति पूर्वोसिनं	१६४२	उदीच्यै त्वा दिशे सोमाय	१३२२
उतासि परिपाणं	५८२	उदीरतामवर उत् परासः	१९८७, २०१०
उतेव प्रभ्वीरुत संमितासः	१२९८	उदीरयत महतः समुद्रतः	१००८
उतो अस्यबन्धुकुदुतो	३९६	उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं	१९४७
उत् क्रामातः परि चेद्	११८८	उदुत्तमं वरुण पाशम्	१६७८, २२१९
उत् क्रामातः पुरुष माव	९	उदुषा उदु सूर्य उदिवं	१३३३
उत्तमो अस्थोषधीनाम्	४५०, १४४१	उदेणीव वारण्यभिस्कन्दं	१६०१
उत्तमो नाम कुष्ठासि	४४५	उदेनं भगो अप्रभीद्	७
उत्तरं द्विषतो मामयं	१५०८	उदेहि वेदिं प्रजया वर्धय	१२४९
उत्तरं राष्ट्रं प्रजयोत्तरावद्	१२८१	उद्यन्नय मित्रमह	५४५
उत्तराहमुत्तर उत्तरेद्	३६७	उद्यन्नादित्यः किमीन् हन्तु	७०९
उत्तानपणं सुभगे	३६५	उद्यानं ते पुरुष नावयानं	११
उत्तिष्ठता प्र तरता सखायो	२४३	उद्योधन्त्यभि वल्गन्ति तप्ताः	१३००
उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौकः	२०९१	उद् व ऊर्मिः शम्भ्या हन्तु	१०३४
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते	१५४	उद्वयं तमसस्परे रोहन्तो	१४९
उत् ते स्तभ्रामि पृथिवीं	१९५२, २१३३	उद्भिणं मुनिकेशं	१३८३
उत् त्वा यौरुत पृथिवी	२२	उन्मुञ्चन्तीर्विवरणा	३३३
उत् त्वा मृत्योरपीपरं	२४	उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां	१६७१
उत् त्वा वहन्तु मरुतः	२०४६	उपजीका उद् भरन्ति	५६८
उत् त्वाहार्षं पञ्चशलाद्	३५१	उपजीवा स्थोप जीव्यासं	९३४
उत्थापय सीदतो बुध एनान्	१३०१	उप तेषां सहमानाम्	२३४०
उत् पुरस्तात् सूर्य एति	७०१, ७८१	उप द्यामुप वेतसमवत्तरो	२०८८
उत् सूर्यो दिव एति	५६२	उप द्रव पयसा गोधु गोषमा	१९१८

उप नः पितवा चर	१११०	ऊर्ध्व ऊ पु ण ऊतये	२२५७
उपप्रवद मण्डूके वर्षमा	१०१७	ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्नप्रमादम्	१५७३
उप प्रागात् सहस्रक्षो	१७७३	ऊर्ध्वायां त्वा दिशि पुरा	२११८
उप प्रागाद् देवो अग्नी	७३४	ऊर्ध्वायै त्वा दिशे बृहस्पतये	१३३१
उप प्रियं पनिप्रतं	१४१	ऊर्ध्वो नः पाहाहसो नि	२२५८
उप मौदुम्बरो मणिः	१५४३	ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जिह्व	१५८
उप श्रेष्ठा न आशिषो	१७०५	ऋचा कपोतं नुदत	१५८२
उपश्वसे हुवये सीदता यूयं	१२४०	ऋचा कुम्भीमध्यग्नौ	११८७
उप सर्प मातरं भूमिम्	१९४९, २१३२	ऋचा कुम्भ्यधिहिता	११४०
उप स्तृणीहि प्रथय पुरस्ताद्	१३०८	ऋजीत्येनी रुशती महित्वा	१०४२
उपहृता नः पितरः सोम्यासो	२१२८	ऋणाङ्गणमिव संनयन्	५९२
उपहृताः पितरः सोम्यासो	१९९१	ऋतं हस्तावनेजनं	११३९
उपहृतो मे गोपा	१८१८	ऋतवः पक्कार आर्तवाः	११४३
उपहृतो वाचस्पतिः	१४१८	ऋतवस्तमबध्नत	१४९५
उपहृतौ सयुजां स्योनौ	१६१	ऋतस्य पन्थामनु परय	२१५३
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां	१९१९	ऋतस्यर्तेनादित्या	१७९५
उपावसृज त्मन्या समञ्जन्	३७९	ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे	१३९
उपास्तरोरकरो लोकम्	१३०९	ऋतून् भूम ऋतुपतीन्	१७५०
उपास्मान् प्राणो ह्ययताम्	२२५०	ऋतेन तष्टा मनसा	१२५१
उपाहृतमनुबुद्धं निखातं	१६३४	ऋषभं मा समानानां	२३४१
उभयोरग्रभं नामास्मा	२०४	ऋषीणां प्रस्तरोऽसि	१८२१
उभे नभसी उभयांश्च	१२७७	ऋषी बोधप्रतीबोधा	१०७
उभे यत् ते महिना	१०७९	एकपाद् भूयो द्विपदो	२३१८
उरुगूलाया बुहिता	८४१	एकशतं विष्कन्धानि	१८०२
उरुः प्रथस्व महता	१२४७	एका च मे दश च मे	६५३
उरुणसावसुतृपावुदुम्बलौ	२०३७	एकाचेतत् सरस्वती नदीनां	१०७४
उर्वश्च मा चमसश्च मा	१८२४	एको वो देवोऽप्यतिष्ठत्	९२३
उशन्ति घा ते अमृतासः	१९५६	एजदेजदजप्रमं चक्षुः	६१६
उषस्पतिर्वाचस्पतिना	१८५०	एत उ त्ये प्रत्यदश्रन्	७७८
उषा देवी वाचा संविदाना	१८४९	एतत् ते तत स्वधा	२२२७
उषो यस्माद् दुष्वन्त्याद्	१८४६	एतत् ते ततामह स्वधा	२२२६
ऊरुभ्यां ते अष्टीवद्भ्यां	१६५, २१४, २९८	एतत् ते देवः सविता	२१८१
ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं	९४२	एतत् ते प्रततामह स्वधा	२२२५
ऊर्जमस्मा ऊर्जस्वती	९५	एतत् त्वा वासः प्रथमं	२०८१
ऊर्जो भागो निहितो यः	१२४३	एतदा रोह वय उन्मृजानः	२१५०
ऊर्जो भागो य इमं जजाना	२२०४	एत देवा दक्षिणतः	१७५१

एतद्धि ऋणु मे वचो	१६४३
एतद् वचो जरितर्मापि	१०२९
एतद् वै ब्रध्नस्य विष्टपं	११७६
एतद् वो ज्योतिः पितरः	११९३
एतमिध्मं समाहितं जुषाणो	१५१२
एतस्माद् वा ओदनाद्	११७८
एतास्ते अग्ने समिधः	११८, ७५१
एतास्ते असौ धेनवः	२१८३
एतास्त्वाजोप यन्तु धाराः	११९७
एते नरः स्वपसो अभूतन	२२९२
एते वदन्ति शतवत्	२२९४
एते वदन्यविदक्षना मधु	२२९५
एतौ प्रावाणौ सयुजा	१२३७
एदं बर्हिरसदो मेध्योऽभुः	२२०२
एधोऽस्येधिषीमहि समिदसि	११०७
एधोऽस्येधिषीय समिदसि	९६२
एना वयं पयसा पिन्वमाना	१०२५
एनीर्धाना हरिणीः श्येनीः	२१८४
एन्येका श्येन्येका कृष्णैका	५१४
एमा अगुर्योषितः शुम्भमाना	१२४२
एमा अगमन् रेवतीः	९१४
एयमगन्नोषधीनां	७२०
एयमगन् दक्षिणा भद्रतो	२२००
एयमगन् बर्हिषा श्रोक्षणीभिः	१९४१
एवानेवाव सा गरत्	१८५९
एवेष्टूने युवतयो नमन्त	९०६
एवो ष्वस्मन्निर्ऋतेऽनेहा	१७९२
एष यज्ञानां विततो	१२२५
एषा त्वचां पुरुषे सं बभूव	१३२२
एहि जीवं त्रायमाणं	५८०
एह्यदमानमा तिष्ठारमा	२३३४
ऐतु देवन्नायमाणः	४४७
ऐतु प्राण ऐतु मनः	११०
ऐन्द्रां वर्म बहुलं	१४४९
ओको अस्य मूजवन्त	५३५
ओ चित् सखायं सख्या	१९५४

ओता आपः कर्मण्या	९६९
ओते मे यावापृथिवी	६९६
ओदन एवौदनं	११५७
ओदनेन यज्ञवचः	११४५
ओष दर्भ सपत्नान् मे	१५२९
ओषधयः प्रतिगृभ्णीत	३५७
ओषधयः प्रतिमोदध्वं	३५६
ओषधयः सं वदन्ते	३२२
ओषधीः प्रति मोदध्वं	३०३
ओषधीनामहं वृण	८२८
ओषधीरिति मातरः	३०४
ओषधे त्रायस्व स्वधिते	३५५
ओ पु स्वसारः कारवे	१०३०
औदुम्बरेण मणिना	१५३७
कः कुमारमजनयद्	१९८४
कङ्कतो न कङ्कतो	७७४
कण्वः कक्षीवान् पुरुमीढो	२०२८
कणु फलीकरणाः	११३२
करम्भ ओषधे भव	१११७
करम्भं कृत्वा तिर्य	८००
करीषिणीं फलवतीं	१५३९
कर्णाभ्यां ते कङ्कषेभ्यः	२७३
कर्णा श्वावित् तदब्रवीद्	८४२
कर्षाफस्य विशाफस्य	१७९७
कश्यपस्त्वामसृजत	१४४४
कश्यपस्य चक्षुरसि	७६०
कस्ये मृजाना अति	२१००
किं भ्रातासद् यदनाथं	१९६४
किलासं च पलितं च	५१८
कुम्भीका दूषीकाः	१८५२
कुपुम्भकस्तदब्रवीद्	७८९
कृणुत धूमं वृषणः	१२३०
कृणोमि ते प्राणापानौ	३७
कृतव्यधनि विध्य तं	१५९९
कृत्याकृतं बलगिनं	१६१५
कृत्याकृतो बलगिने	१६४६

कृत्यादूषण एवायमथो	१५५४	प्रावाणो अप दुच्छुनाम्	२३०८
कृत्यादूर्ध्वरथं मणिः	७१	प्राहिं पाप्मानमति ताँ	१२८९
कृत्याः सन्तु कृत्याकृते	१५९५	प्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते	२५५
कृन्त दर्भे सपत्नान् मे	१५२०	प्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः	१६३, २११, २९५
कृषन्ति फाल आशितं	२३१७	प्रीवास्ते कृत्ये पादौ	१६३६
कृष्णं नियानं हरयः	९६५	घर्म इवाभितपन् दर्भ	१५१५
कैरात पृश्न उपतृप्य	८३८	घृतस्य जूतिः समना	२२४९
कैरातिका कुमारिका	८२१	घृतहृदा मधुकूलाः सुरोदकाः	१२२६
को अद्य युङ्क्ते धुरि	२००१	घृतादुल्लसं मधुना समक्तं	१४०
को अस्य वेद प्रथमस्य	१९५९	घृतादुल्लसो मधुमान् पयस्वान्	१५७७, १९३४
कोशं दुहन्ति कलशं	२१८०	चक्षुर्मुसलं काम उल्लखलम्	११२९
कव्यादमग्निं शशमान	२२६	चक्षुषा ते चक्षुर्हन्मि	८३७
कव्यादमग्निमिषितो हरामि	२२५	चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मे	६५६
कव्यादमग्निं प्र दूरं द्विणोमि	२२४	चतस्रो दिवः प्रदिशः	१४०६
कव्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं	७४७	चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि	१२२७
क्लीब क्लीबं त्वाकरं वध्रे	५००	चतुर्वारं बध्यत आज्ञनं ते	५९५
क्लीबं कृध्योपशिनम्	४९९	चन्द्रमा अप्स्वन्तरा	२२३९
क्षीरे मा मन्थे यतमो	७४४	चरुं पञ्चबिलमुखं	११४४
क्षुधामारं तृष्णामारम्	३८५	चोदयित्री सूनृतानां	१०५२
क्षेत्रियात् त्वा निर्कृत्या	१६६२	छिन्दि दर्भे सपत्नान् मे	१५१८
खण्वस्वाद् खैमस्वाद्	१०१८	जङ्घिडो जम्भाद् विशराद्	६७
खलः पात्रं स्फद्यावंसावीधे	११३५	जङ्घिडोऽसि जङ्घिडो	१५५१
गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः	१००७	जनाद् विश्वजनीनात्	६८५
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो	१७३७	जनित्रीव प्रति हर्षासि	१२९४
गन्धारिभ्यो मूजवद्भयो	५४४	जनीयन्तो न्यग्रवः	१०४६
गर्भं ते मित्रावरुणौ	१३४९	जरायुजः प्रथम उस्त्रियो	१८८
गर्भं धेहि सिनीवालि	१३४८	जरायै त्वा परि ददामि	७८
गर्भे नु नौ जनिता दंपती	१९५८	जहि दर्भे सपत्नान् मे	१५३१
गर्भो अस्योषधीनां	४१२, १३५२	जाम्रदुष्प्रप्यं स्वप्ने	१८५३
गिरिमेनाँ आ वेशय	४१९	जातो जायते सुदिनत्वे	२२६३
गृहाण प्रावाणौ सकृतौ	१२३८	जाया इद् वो अप्सरसो	७२६
गोमायुरदादजमायुरदात्	१००३	जालाषेणाभे विञ्चत	८६१
गोमायुरेको अजमायुरेकः	९९९	जितम० । स आङ्गिरसानां	१८८३
ग्रामणीरसि ग्रामणीः	१५४८	जितम० । स आथर्वणानां	१८८५
ग्रावाण उपरेष्वा	२३०९	जितम० । स आर्तवनां	१८८९
ग्रावाणः सविता नु वो	२३१०	जितम० । स आर्षेयाणां	१८८१

जितम० । स इन्द्राग्न्योः	१८९५	तकमन् मूजवतो गच्छ	५३७
जितम० । स ऋतूनां	१८८८	तकमन् व्याल वि गद्	५३६
जितम० । स ऋषीणां	१८८०	तं जहि तेन मन्दस्व	१८६७
जितम० । स देवजामीनां	१८७७	ततश्चैनमन्यया जिह्वया	११६२
जितम० । स यावापृथिव्योः	१८९४	ततश्चैनमन्यया प्रतिष्ठया	११७५
जितम० । स निर्ऋत्याः	१८७३	ततश्चैनमन्याभ्यां श्रोत्राभ्यां	११५९
जितम० । स निर्भूत्याः	१८७५	ततश्चैनमन्याभ्यां हस्ताभ्यां	११७४
जितम० । स पराभूत्याः	१८७६	ततश्चैनमन्याभ्यामक्षीभ्यां	११६०
जितम० । स प्रजापतेः	१८७९	ततश्चैनमन्याभ्य मष्ठीवद्भ्यां	११७१
जितम० । स बृहस्पतेः	१८७८	ततश्चैनमन्याभ्यामूहभ्यां	११७०
जितम० । स मासानां	१८९०	ततश्चैनमन्याभ्यां पादाभ्यां	११७२
जितम० । स मित्रावरुणयोः	१८९६	ततश्चैनमन्याभ्यां प्रपदाभ्यां	११७३
जितम० । स राज्ञो वरुणस्य	१८९७	ततश्चैनमन्येन पृष्ठे	११६६
जितम० । स वनस्पतीनां	१८८६	ततश्चैनमन्येन मुखेन	११६१
जितम० । स वानस्पत्यानां	१८८७	ततश्चैनमन्येन वस्तिना	११६९
जितम० । सोऽङ्गिरसां	१८८२	ततश्चैनमन्येन व्यचसा	११६५
जितम० । सोऽथर्वणां	१८८४	ततश्चैनमन्येन शीर्ष्णां	११५८
जितम० । सोऽभूत्याः	१८७४	ततश्चैनमन्यैः प्राणापानैः	११६४
जितम० । सोऽर्धमासानां	१८९१	ततश्चैनमन्यैर्दन्तैः प्राशीः	११६३
जितम० । सोऽहोरात्रयोः	१८९२	ततश्चैनमन्येनोदरेण प्राशीः	११६८
जितम० । सोऽहोः संयतोः	१८९३	ततश्चैनमन्येनोरसा प्राशीः	११६७
जितमस्माकमुद्दिज्ञमस्माकम्	१८६९, १८९८, १९०२	तथा तदग्ने कृणु जातेवेदो	७३९
जिह्वाया अग्ने मधु मे	४७९	तदग्निराह तदु सोम आह	१४३५, १९०३
जीवतां ज्योतिरभि	२८	तदमुष्मा अग्ने देवाः परा	१८५५
जीवलां नधारिषां	३२, ३२९	तदिद्धयस्य सवनं विवेरपो	२२८७
जीवला नाम ते माता	४४९	तदिद् वदन्त्यद्रयो	२३०५
जीवला स्थ जीव्यासं	९३६	तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतना	२२८६
जीवानामायुः प्र तिर	२६१	तनूस्तन्वा मे सहे	१५५
जीवा स्थ जीव्यासं	९३३	तं त्वा वयं पितो वचोभिः	१११८
जीवेभ्यस्त्वा समुदे वायुः	२०	तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म	१८३७, १८४४, १९१६
जीवेम शरदः शतम्	१२०	तं त्वौदनस्य पृच्छामि	११४८
जुहूर्दाधार द्यामुपभृदन्तरिक्षं	२१५५	तं धाता प्रत्यमुञ्चत	१४९८
ज्याके परि णो नमादमानं	६६५	तन्वं स्वर्गो बहुधा	१३२५
ज्येष्ठभ्यां जातो विचृतोः	८६	तपसा ये अनाधृष्याः	२०४०
तं सिन्धवो मत्सरम्	९०९	तमिमं देवता मणि	१५०६
तकमन् भ्रात्रा बलासेन	५४२	तमूर्मिमापो मधुमत्तमं	८७२
		तत्र ल्ये पितो ददतः	१११२



तव ल्ये पितो रसा	११११	तृष्टामया प्रथमं यातवे	१०४१
तव व्रते नि विशन्ते	१७०१	ते अद्रयो दशयन्त्रासः	२३००
तस्तुवं न तस्तुवं	८४४	ते त्वा रक्षन्तु ते	१९
तस्मा अरं गमाम वो	८८१	ते देवेभ्य आ वृक्षन्ते	२६६
तस्मा इदास्ये हविः	९९३	तेन तमभ्यतिसृजामो	१८०७
तस्मादमुं निर्भजामो	१८७०, १८९९	तेनैनं विध्याम्यभूत्यैनं	१८५६
तस्मै घृतं सुरां मधु	१४८२	तेऽमुष्मै परा वहन्तु	१८५१
तस्य धुमां असद्	२२४२	तेषां प्रज्ञानाय यज्ञम्	११७९
तस्यामृतस्येमं बलं	३४५	ते सोमादो हरी इन्द्रस्य	२३०१
तस्येदं वर्चस्तेजः	१८७२, १९०१	तौदी नामासि कन्या	८३१
तस्यौदनस्य बृहस्पतिः	११२७	तौ विलिकेऽवेलया०	४६८
ता अधरादुदीचीः	२५७	त्रपु भस्म हरितं वर्णाः	११३४
ता अपः शिवा अपो	९३२	त्रयः पोषास्त्रिवृति	१२९
ता अस्मभ्यमयक्ष्मा	९४४	त्रयः सुपर्णा उपरस्य	२१५४
ता अस्य सूदोहसः	११०१	त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता	१३४
ता नो अद्य वनस्पती	२२८३	त्रयो दासा आज्ञनस्य	५८७
ताबुवं न ताबुवं	८४३	त्रयो लोकाः संमिता	१२९१
तां मे सहस्राक्षो देवो	७५७	त्रायन्तामिमं देवाः	५५१
तार्घाधीरमे समिधः	७५२	त्रायन्तामिमं पुरुषं	३२५
तावद् वां चक्षुस्तति	१२७३	त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यः	४५१
तासु त्वान्तर्जरस्या	१६६६	त्रिः सप्त मयूर्यः	७८७
तास्ते रक्षन्तु तव	१२२०	त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका	७८५
तांस्त्वं प्र च्छिन्दि	१४६८	त्रिकद्रुकेभिः पतति	१९७९
तिरश्चिराजेरसितात्	८५२	त्रिकद्रुकेभिः पवते	२०३०
तिष्ठावरे तिष्ठ पर	५५६	त्रिते देवा अमृजत	१७६५
तिस्त्रक्ष मे त्रिशच्च मे	६५५	त्रिशिर्षाणं त्रिककुदं	७०४
तिस्रो दिवास्त्रिः पृथिवीः	७५५	त्रिषधस्था सप्तधातुः	१०७०
तिस्रो दिवो अत्यतृणत्	१९२६	त्रिष्ट्वा देवा अजनयन्	१५५६
तिस्रो वाचः प्र वद	९८५	त्रीणि च्छन्दासि कषयो	२००४
तीक्ष्णो राजा विषासही	१९३६	त्रीणि ते कुष्ठ नामानि	४४८
तीर्थैस्तरन्ति प्रवतो	२१५७	त्रीणि पदानि रूपो	२१२३
तुभ्यं वातः पवतां	१०	त्रेधा जातं जम्भनेदं	१३२
तुभ्यमेव जरिमन्	१	त्रेधा भागो निहितो	१२३३
तृतीयकं वितृतीयं	५४३	त्र्यायुषं जमदमेः	१३३
तृदिला अतृदिलःसो अद्रयो	२३०३	त्वं वीरुधां श्रेष्ठतमा	४९८
तृदिह्यं दर्भ सपत्मान् मे	१५२४	त्वं हि विश्वतोमुख	१७६२
तृष्णामारं क्षुधामारम्	३८६	त्वं च सोम नो वशी	४७७

त्वं देवि सरस्वत्यवा	१०६४
त्वं नो मेधे प्रथमा	१४१९
त्वमग्र ईळि ( ०डि० ) तो जातवेदो	१९९८, २१२५
त्वमग्ने यातुधानान्	७७३
त्वमसि सहमानो	१९२७
त्वमीशिषे पञ्चानां	३
त्वमुत्तमास्योषधे	३२३
त्वमोदनं प्राशीस्त्वाम्	११५३
त्वं भूमिमत्येव्योजसा	१९३५
त्वं मणीनामधिपा वृषासि	१५४७
त्वया पूर्वमथर्वाणो	७
त्वया वयमप्सरसो	७१६
त्वष्टः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५६
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोति	१०८१, २०१८
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्ति	१७२
त्वष्टा युनक्तु बहुधा	१९४३
त्वामाहुर्देववर्म त्वां	१५३४
त्वाष्ट्रेणाहं वचसा वि	५०५
त्वे पितो महानां देवानां	१११३
त्वे विश्वा सरस्वति	१०५७
त्वेषस्ते धूम ऊर्णोतु	२२०९
दक्षिणां दिशमभि	१२७९
दक्षिणायां त्वा दिशि	२११४
दक्षिणायै त्वा दिश	१३२७
दण्डं हस्तादाददानो	२०८३
ददाम्यस्मा अवसानम्	२०६१
ददिर्हि मयां वरुणो दिवः	८३४
दर्भः शोचिस्तरुणकम्	८०९
दर्भेण त्वं कृणवद् वार्याणि	१९३७
दर्भेण देवजातेन	१९२९
दर्शय मा यातुधानान्	७५९
दश च मे शतं च मे	६६२
दश मासाञ्छशयानः	१४०३
दशवृक्ष मुञ्चेमं रक्षसो	८०
दशानामेकं कपिलं समानं	९८४
दशावनिभ्यो दशकक्षेभ्यो	२२९९

दह दर्भ सपत्नान् मे	१५३०
दितिः शूर्पमदितिः	११३०
दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि	१७४३
दिवाश्विदा वोऽमवतरेभ्यो	२२८९
दिवस्त्वा पातु हरितं	१३५
दिवा मा नक्तं यतमो	७४६
दिवि जातः समुद्रजः	१४१७
दिवि ते तूलमोषधे	१९२५
दिवि स्वनो यतते	१०३८
दिवो तु मां बृहतो	९५६
दिवो नो वृष्टिं मरुतो	९७९
दिवो मूलमवततं	६७०
दिव्यं सुपर्णं पयसं	९२७
दिव्यस्य सुपर्णस्य तस्य	७५६
दिव्या आपो अभि	९२५
दीक्षातपसोस्तनूरसि	१२७०
दीर्घायुत्वाय बृहते रणाय	६६
दीर्घायुस्त ओषधे खनिता	२३२७
दुर्णामा च सुनामा च	१३७०
दुर्हार्दः संघोरं चक्षुः	१५६३
दुष्ट्यै हि त्वा भर्स्यामि	१८०१
दंह मूलमाग्रं यच्छ	४६५
दंह प्रत्नान् जनयाजातान्	४६१
दृष्टमदृष्टमत्तृहम्	६९२
देवस्य सवितुः सवे	९७०
देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य	१००२
देवा अदुः सूर्यो अदाद्	८०५
देवा इमं मधुना संयुतं	४७०
देवाः कपोत इषितो	१५७९
देवाञ्जन त्रैककुदं	६०७
देवानां हेतिः परि त्वा	३५
देवानामस्थि कृशानं बभूव	१४३०
देवानामेनं घोरैः	१८५७
देवानां पत्नीनां गर्भं	१९१५
देवा यज्ञमृतवः कल्पयन्ति	२१५२
देवास्ते चीतिमविदन्	८३

देवी देव्यःमधि जाता	४६०	धाना धेनुरभवद् वत्सो	२१८२
देवीराप एष वो गर्भः	९५५	धाम्रोधाम्रो राजभितो	१६७७
देवीरापः शुद्धा वोढ्वः	९४७	धृषत् पिब कलशे सोमम्	५१२
देवीरापो अपां नपाद्यो	९५३	ध्रुव आ रोह पृथिवीं	२१५६
देवेभ्यः कमशृणाति मृत्युं	२१२४, २२७८	ध्रुवा एव वः पितरो	२३०४
देवेभ्यो अधि जातोऽसि	४४३	ध्रुवायां त्वा विशि पुरा	२११७
देवैनसात् पित्र्यान्नाम	१६२७	ध्रुवायै त्वा दिशे विष्णवे	१३३०
देवैनसा दुन्मदितम्	६८९	ध्रुवेयं विराणमो अस्तु	१२८२
देवैर्दत्तेन मणिना	६२	न किल्बिषमत्र नाधारो	१३१९
देवो अग्निः संक्रमुको	२२८	नक्तंजातास्योषधे रामे	५१७
देवो देवैर्वनस्पतिः	२२७३	न प्रंस्तताप न हिमो	१०२१
देवो मणिः सपत्नहा	१५४४	न च प्राणं रुणद्धि	११८१
देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	३७७	न च सर्वज्यानिं जीयते	११८२
दौष्वप्यं दौर्जाविल्यं	३८१, १९०६	नडमा रोह न ते	२१७
पां मा खीरन्तरिक्षं	३७१	न तं यक्ष्मा अरुन्धते	२०२
द्यावापृथिवी श्रोत्रे	११२८	न तद् रक्षांसि न	२३२९
धुमन्तस्त्वेधीमहि	२०२०	न तिष्ठन्ति न नि मिषन्ति	१९६१
द्यौर्वः पिता पृथिवी माता	७७९	न ते नाथं यम्यत्राहमस्मि	२००२
द्यौष्ट्वा पिता पृथिवी माता	४	न ते बाहोर्बलमस्ति	८५७
द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	२१७८	न ते सखा सख्यं वष्टयेतत्	१९५५
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमो अनु	८८९	न त्वा पूर्वो ओषधयो	१५५७
द्रुपदादिव मुमुचानः	११०५, १७२९	नदीं यन्त्वप्सरसो	७१७
द्वादशधा निहितं त्रितस्या०	१७६७	न भूमि वातो अति	६१४
द्वाविमौ वातौ वात आ	५४९	नमः शीताय तक्मने	५२८
द्विभागधनमादाय प्र	२५१	नमः सनिस्त्रसाक्षेभ्यो	४२७
द्विषतस्तापयन् हृदः	१५१४	नमस्ते राजन् वरुणास्तु	१६५५
द्विषते तत् परा वह	१८४७	नमस्ते रुद्रास्यते	६२२
द्विषो नो विश्वतोमुखाति	१७६३	नमस्ते लाङ्गलेभ्यो	४९६
द्वे च मे विशतिश्च मे	६५४	नमो यमाय नमो अस्तु	१०९
द्यास्याच्चतुरक्षात्	१३८८	नमो रुद्राय नमो अस्तु	१८०
धनुर्हस्तादादानो मृतस्य	१९४८, २०८४	नमो रूराय ष्यवनाय	५२९
धर्ता प्रियस्व धरुणे पृथिव्या	१३०६	नमो वः पितर ऊर्जे	२२३१
धर्तासि धरुणोऽसि	२११२	नमो वः पितरः स्वधा	२२३५
धर्ता ह त्वा धरुणो	२११२	नमो वः पितरो भामाय	२२३२
धातः श्रेष्ठेन रूपेणास्या	१३५५	नमो वः पितरो यच्छिवं	२२३४
धाता मा निर्ऋत्या	२१०९	नमो वः पितरो यद् घोरं	२२३३

नमोऽस्त्वसिताय नमः	८५०
न यत् पुरा चक्रुमा कद्ध	१९५७
नव च मे नवतिश्च मे	६६१
नव च या नवतिश्च	१६८४
नव प्राणान् नवभिः सं	१२७
नवं बर्हिरोदनाय स्तृणीत	१३०३
न वा उ ते तन्नू तन्वा सं	२००३
न वा उ ते तन्वा तन्वं सं	१९६५
न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं	२३११
नवानां नवतीनां	७८६
नष्टासवो नष्टविषा	८१९
न स सखा यो न ददाति	२३१४
नहि ते नाम जग्राह	३६६
नह्यस्या नाम गृभ्णामि	२३३९
नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं	२१४४
नाभिरहं रयीणां	१८२८
नाल्प इति श्रूयान्नातुसेचन	११५०
नास्य केशान् प्र वपन्ति	१९२४
नास्यास्थीनि भिन्त्यान्न	१२०५
निःसालां धृष्णुं धिषणम्	१६४८
निक्ष दर्भ सपत्नान् मे	१५२३
नि गावो गोष्ठे असदन्	५६३, ७७७
निग्राभ्या स्थ देवश्रुतः	९४८
निधि निधिपा अभ्येनम्	१३१३
निररणि सविता साविषक्	६७४
निरितो मृत्युं निर्रति	२१९
निरिमां मात्रां मिमीमहे	२०६६
निर्दुरर्मण्य ऊर्जा	१८१६
निर्द्विषन्तं दिवो निः पृथिव्या	१८६१
निर्बलासं बलासिनः	४८४
निर्बलासेतः प्र पताश्रुतः	४८५
निर्लक्ष्यं ललाम्यं	६७३
निर्बो गोष्ठादजामसि	१६४९
नि बर्तध्वं मानु गात	८९३
नीचैः खनन्त्यसुरा	५६७
नेतां विदुः पितरो नोत	१९१०
नेव मांसि न पीवसि	१४०८

नैनं रक्षांसि न पिशाचाः	६०
नैनं घ्नन्ति पर्यायिणो	१५३
नैनं घ्नन्त्यप्सरसो	१४४३
नैनं प्राप्नोति शपथो	५८४
नैवाहमोदनं न मामोदनः	११५६
न्यग् वातो वाति न्यक्	२००
न्यस्तिका हरोहिथ	६७७
पक्षी जायान्यः पतति	५१०
पद्म च मे पद्माशच्च मे	६५७
पद्म च याः पद्माशच्च	१६८२
पद्म पदानि हपो अन्वरोहं	२२७७
पञ्च राज्यानि वीरुधां	१७४८
पञ्च हक्मा ज्योतिरस्मै	१२०८
पञ्च हक्मा पञ्च नवानि	१२०७
पञ्चौदनः पञ्चधा वि क्रमताम्	११९०
पयस्वतीः कृणुथाप ओषधीः	९६६
पयस्वतीरोषधयः	८२२, २१३५
परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां	२३७
पराक् ते ज्योतिरपथं ते	१६३१
पराच एनान् प्र णुद	४२०
पराञ्चं चैनं प्राशीः प्राणास्त्वा	११५४
परा यात पितर आ व यात	२०९७
परा यात पितरः सोम्यासो	२२१३
परि ग्राममिवाचितं	८०२
परि णो वृद्धिर्ध शपथ	१७७४
परि त्वा परितन्नुना	४८२
परि त्वा पातु समानेभ्यो	५२
परि त्वा रोहितैर्वर्णैः	४९०
परि द्यामिव सूर्योऽहीनां	८४६
परि धत्त धत्त नो बर्चसा	२३३२
परि धामान्यासामाशुः	१६५३
परिपाणं पुरुषाणां	५८१
परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः	१५६४
परि मां परि मे प्रजां	६७१
परि वः सिकतावती	५५८
परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो	२२७१

परि वो विश्वतो दध	८९९	पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीः	२१८९
परिमृष्टं धारयतु यद्धितं	१३८६	पुनः कृत्यां कृत्याकृते	१५२४
परि स्तृणीहि परि धेहि	२२५६	पुनरेता नि वर्तन्ताम्	८९५
परिहस्त वि धारय	१३६०	पुनरेना नि वर्तय	८९४
परीदं वासो अधिथाः	२३३३	पुनरेहि वाचस्पते	१४१६
परीमेऽभिमर्षत परि	१५८३	पुनर्देहि वनस्पते य	२१४७
परेयिवांसं प्रवतो मर्हाः	१९६८, २०१५	पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः	२२२
परेहि कृत्ये मा तिष्ठो	१६४१	पुनस्त्वा दुरप्सरसः	६९०
परेहि नारि पुनरेहि क्षिप्रम्	१२४१	पुमान् पुंसोऽधि तिष्ठ	१२७२
परोऽपेहि मनस्पाप किम्	६३०	पुरं देवानाममृतं हिरण्यं	१३७
परोऽपेह्यसमृद्धे वि	१७८३	पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदो	७३८
पर्जन्याय प्र ग.यत	९९१	पुराणां अनुवेनन्तं	१९८१
पर्णो राजापिधानं चरुणाम्	२२०३	पुरोळाशं यो अस्मै	२२४१
पर्यस्ताक्षा अप्रचङ्कशा	१३८२	पुष्टिं पशनां परि जप्रभ	१५४१
पर्यावर्ते दुष्वन्यात्	६३६	पुष्टिरसि पुष्टया मा समङ्ग्रिध	१५४९
पर्वताद् दिवो योनेः	१३४६	पुष्पवतीः प्रसूमतीः	३५०
पलालानुपलालौ शकुं	१३६८	पूताः पवित्रैः पवन्ते अभ्राद्	१२९६
पवस्तैस्त्वा पर्यक्राणन्	८०३	पूर्वो अभिष्ट्वा तपतु शं	२१५२
पवीनसात् तद्गल्वात्	१३८७	पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र	२०७८
पश्याम ते वीर्यं जातवेदः	७७१	पूषेम शरदः शतम्	१२३
पश्येम शरदः शतम्	११९	पृणीयादिन्नाधमानाय तभ्यान्	२३१५
पादाभ्यां ते जानुभ्यां	२९२	पृथग् रूपाणि बहुधा पशनाम्	१२९२
पार्थिवस्य रसे देवा	९१	पृथिवीं त्वा पृथिव्यामा वेशयामि	१२९३, २१९८
पार्थिवा दिव्याः पशवः	१७४१	पैद्व प्रेहि प्रथमोऽनु	८१३
पावका नः सरस्वती	१०५१	पैद्वस्य मन्महे वयं	८१८
पिंश दर्भ सपत्नान् मे	१५२१	पैद्वो हन्ति कसर्णालं	८१२
पिङ्ग रक्ष जायमानं	१३९१	प्र केतुना बृहता भार्यभिः	२१४३
पिण्डु दर्भ सपत्नान् मे	१५२८	प्र क्षोदसा धायसा सन्न	१०७३
पितुं नु स्तोषं महो	११०८	प्र च्यवस्व तन्वं सं भरस्व	२०९२
पितृभ्यः सोमवद्भ्यः	२२२३	प्रजापतिष्वा भद्रात् प्रथमम्	१५७२
पितेव पुत्रानभि सं	१२८३	प्रजापतिः सलिलादा समुद्राद्	१०१४
पिंपली क्षिप्तभेषजी	४१३	प्रजापते श्रेष्ठेन रूपेण	१३५८
पिंपल्यः समवदन्त	४१४	प्रजानस्यन्त्ये जीवलोकं	२०८७
पिशङ्गे सूत्रे खृगलं	१७९९	प्र णो देवी सरस्वती	१०६२
पीपिवांसं सरस्वतः	१०४८	प्र णो बनिर्देवकृता	१७७२
पुत्र इव पितरं गच्छ	१६००	प्रति दह यातुधानान्	७३५
पुत्रमत्तु यातुधानीः	७३७	प्रति यदापो अदृश्रमायतीः	९१३

प्रतिष्ठे अभवतं वसूनां	१७०७
प्रतीची दिशामियमिद्	१२८०
प्रतीचीन आश्रितसो	१६२१
प्रतीचीनफलो हि	४०४
प्रतीचीने मामहनीष्वाः	१९५३
प्रतीच्यां त्वा दिशि पुरा	२११५
प्रतीच्यै त्वा दिशे वरुणाय	१३२८
प्र ते भिनधि मेहनं	५७७
प्र तेऽरदद् वरुणो यातवे	१०३७
प्र ते शृणामि शृते	७१४
प्रत्नो हि कमीज्यो अश्वरेषु	८५
प्रत्यक् हि संबभूविथ	४०२
प्रत्यश्चं चैनं प्राशीरपानाः	११५५
प्रत्यश्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा	२७१
प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुः	९०१
प्र नभस्व पृथिवि	१०२०
प्र पदोऽव नेनिविध दुश्चरितं	११८५
प्र पर्वतस्य वृषभस्य	१०९८
प्र पर्वतानामुशती उपस्थाद्	१०२२
प्र यच्छ पशुं त्वरया	१३०२
प्र यत् ते अमे सूरयो	१७६०
प्र यदग्नेः सहस्वतो	१७६१
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	१७५९
प्र या जिगाति खर्गलेव	२२८४
प्र या महिन्ना महिनासु	१०७१
प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य	२२१०
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तद्	१०२८
प्र वाता वान्ति पतयन्ति	९७७
प्र विशतं प्राणापानौ	७६, १४७
प्र वो प्रावाणः सवित्ता	२३०७
प्र सुमतिं सवितर्वाय ऊतये	१७०४
प्र सु व आपो महिमानम्	१०३६
प्रस्तृणती स्तम्बिनीरेकशुक्राः	३२७
प्राचींप्राचीं प्रदिशमा	१२७८
प्राच्यां त्वा दिशि पुरा	२११३
प्राच्यै त्वा दिशेऽप्रये	१३२६
प्राण प्राणं त्रावस्त्रासो	६०५

प्राणापानौ मा मा हासिष्टं	१८३२
प्राणेन त्वा द्विपदां चतुष्पदां	३०
प्राणेन प्राणतां प्राण	१७६
प्राणेन विश्वतोवीर्यं	१७४
प्राणेनामे चक्षुषा सं सृजेमं	१११
प्राणो अपानो व्यान आयुः	२०७०
प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च	१६७९, २२२०
प्रास्मदेनो वहन्तु प्र	१८१३
प्रास्मै हिनोत मधुमन्तमूर्मि	९०८
प्रियं प्रियाणां कृणवाम तमः	१३२०
प्रियं मा दर्भं कृणु ब्रह्म०	१९३०
प्रेमां मात्रां मिमीमहे	२०६३
प्रेव पिपतिषति मनसा	२६८
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्योणिः	२०१९
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्येभिः	१९७३
प्रेणान्छणीहि प्र मृणा रभस्व	१४५४
प्रेते वदन्तु प्र वयं वदाम	२२९३
प्रेषा यज्ञे निविदः स्वाहा	१९४०
प्रेष्ठेशयास्तल्पेशया	६१५
स्वतो बतासि यम नैव ते	१९६६
वन्धस्त्वाग्ने विश्वचया	१९०८
वज्रे रक्षः समदमा वर्षभ्यो	१२६०
वज्रेरध्वर्यो मुखमेतद्	१२५९
वज्रोर्जुनकण्डस्य यवस्य	४९५
वर्हिषदः पितर ऊत्यर्वाग्	१९९०, २०१६
वर्हिषिलं निर्द्रवतु	२८२
वह्निदं राजन् वरुणान्	६०९
बुध्येम शरदः शतम्	१२१
बृहत्पलाशे सुभगे	४७२
बृहदायवनं रथन्तरं दर्विः	११४२
बृहदु गायिषे वचो	१०७८
बृहद्रावासुरेभ्योऽधि देवान्	१९०९
बृहद् वदन्ति मदिरेण	२२९६
बृहस्पतिर्म आत्मा	१८२६
बोधश्च त्वा प्रतीबोधश्च	१८
ब्रह्मलोको भवति ब्रह्मस्य	११७७

ब्रह्मणाभिः संविदानो	१३९३	मधुमाजो वनस्पतिः	४७३
ब्रह्मणा तेजसा सह	१५०७	मधु वाता ऋतायते	३६१
ब्रह्मणा परिगृहीता	११४१	मध्वा पृथ्ने नद्यः पर्वता	८४८
ब्रह्मणा शुद्धा उत पूता	१२४६	मधोरस्मि मधुतरो	४८१
ब्रह्मवादिनो वदन्ति पराश्वम्	११५२	मनसे चेतसे धियः	६३
ब्रह्मास्य शीर्षं बृहदस्य	१२२१	मनो मे तर्पयत वाचं मे	९४९
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचम्	१००१	मन्थ दर्भ सपत्नान् मे	१५२७
ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे	१०००	मन्वे वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ	१७०६
ब्रह्मणेन पर्युक्तासि	३९७	मन्वे वां मित्रावरुणावृतावृधौ	१७२०
ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो	७९०	मया गावो गोपतिना सचध्वम्	२३२५
ब्रूमो देवं सवितारं	१७३६	मरीचीर्धूमान् प्र विशानु	१७६६
ब्रूमो राजानं वरुणं	१७३५	मरुतो मा गणैरवन्तु	६०१
भृगो मा भगेनावतु प्राणाय	६००	महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च	९८१
भगो युनक्तव शिषो न्वम्मा	१९४४	महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च	१०१९
भद्रं वै वरं वृणते	६२६	महावृषान् मूजवतो	५३८
भद्रमिद् भद्रा वृणवत्	१०८०	महो अर्णः सरस्वती	१०५३
भद्रात् ऋक्षाञ्जिस्तिस्रसि	४३२	मा गतानामा दीधीथा	१३
भवाशर्वावस्यतां पापकृते	१६३८	मा ज्येष्ठं वधीदयमम एषां	१६७०
भवाशर्वाविदं ब्रूमो	१७४२	मातली कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिः	१९७०, २०१३
भवशर्वो मन्वे वा तस्य	१७१३	मा ते प्राण उप दसन्मो	११२
भवेम शरदः शतम्	१२४	मा ते मनस्तत्र गान्मा तिरो	१२
भिन्दिद दर्भ सपत्नानां	१५१६	मा ते मनो मासोर्माज्ञानां	२०४८
भिन्दिद दर्भ सपत्नान मे	१५१७	मा त्वा क्वयादभि मंस्त	१७
भीताय नाधमानाय	१४००	मा त्वा जम्भः संहनुर्मा	२१
भीमा इन्द्रस्य हेतयः	७२२, ७२३	मा त्वा वृक्षः सं बाधिष्ट	२०४९
भुगन्तु नो यशमः मोत्वन्धसो	२२९०	मा न आपो मेधां मा	१४१२
भूतपतिर्निरजतु	१६५१	मा नो देवा अहिर्वधीत्	८४९
भूतं ब्रूमो भूतपति	१७५४	मा नो मेधां मा नो दीक्षां	१४१३
भूते हविष्मती भवैष ते	१७९१	मानो हासिषुर्भ्रूषयो दैव्या	६५
भूमिष्ट्वा पातु हरितेन	१३१	मापो मौषधीर्हिंसीः	९५१
भूयमीः शरदः शतात्	१२६	मा बिभेर्न मरिष्यसि	१०५
भूयेम शरदः शतम्	१२५	मा मां प्राणो हासीन्मो	१८३०
भज्जा मञ्जा सं धीयतां	४२४	मा वनिं मा वाचं नो	१७८२
मधुमती स्थ मधुमती	१८१७	मा वो रिषत् खनिता	३२०
मधुमन्मे निकमणं	४८०	मा सं वृतो मोप स्य	१३६९
मधुमन्मूलं मधुमदप्रमासां	३३५	मा स्तैतान्सखीन् कुरुथा	५४१

मित्र एनं वरुणो वा	२
मित्रश्च त्वा वरुणश्च	६११
मित्रावरुणा परि माम्	२०९५
मुञ्चन्तु मा शपथ्याद् ३१६, ३५३, १७४०, १७६९	
मुख शीर्षकत्या उत कासः	१९०
मुञ्चामि त्वा वैश्वानराद्	१६५७
मुञ्चामि त्वा हविषा	७२, २०५
मुमुचाना ओषधयो	३३९
मुहुर्गृध्रैः प्र वदति	२५४
मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१८२२
मृण दर्भं सपत्नान् मे	१५२६
मृत्युरीशो द्विपदां	४९
मृत्योः पदं योपयन्त	२४६
मेदस्वता यजमानाः	१७९६
मेधां सायं मेधां प्रातः	१४२३
मेधामहं प्रथमां ब्रह्मण्वतीं	१४२०
मेमं प्राणो हासीन्मो	१४६
मेहनाद्वनंकरणात्	१६६
मैतं पन्थामनु गा भीम	१५
मैनममे वि दहो माभि	२०२८
मोघमभं विन्दते अप्रचेताः	२३१६
म्रोको मनोहा खनो निः	१८०५
य आत्मानमतिमात्रमस	१३७९
य आधाय चकमानाय	२३१२
य आमं मांसमदन्ति	१३८९
य आशानामाशापालाः	१६५९
य आस्ते यश्चरति यश्च	६१७
य इह पितरो जीवा	२२३७
य उर्प्रीणामुप्रबाहुर्ययुः	१६९३
य उदानङ् व्ययनं	८९७
य उभाभ्यां प्रहरसि	८५९
य ऊरू अनुसर्पति	२७८
य ऋष्यवो देवकृता	१५६५
य एनं परिषीदन्ति	१५०
यं याचाम्यहं वाचा	१७८१
यं वां पिता पचति यं	१२७६

यः कीकसाः ऋणाति	५०९
यः ऋणाति प्रमोतम्	२७५
यः कृणोति गृतवत्साम्	१३७५
यः कृत्याकृन्मूलकृद्	१७१८
यः कृष्णः केदयसुर	१३७१
यः पक्षः पारुषेयो	५३३
यः प्रथमः कर्मकृत्याय	१६९७
यः प्रथमः प्रवतमाससाद	१५८४
यः संग्रामाज्ञयति सं युधे	१६९८
यं कुमार नवं रथम्	१९८२
यं कुमार प्रावर्तये	१९८३
यञ्चक्षुषा मनसा यञ्च	३५४
यच्चिच्छि त्वं गृहेगृहे	२२८०
यज्जाग्रद् यत् सुप्तो	१८६५
यज्ञ एति विततः कल्पमानः	२१६३
यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं	१२६२
यज्ञं ब्रह्मो यजमानम्	१७४७
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं	२२५३
यतो दष्टं यतो र्धातं	८५४
यत् किं चेदं वरुण दैव्ये	१७८९
यत् कृषते यद् वनुते	२५२
यत् क्षुरेण मर्चयता	४३
यत् त आत्मनि तन्वां	६७५
यत् ते अङ्गमतिहितं	२०५०
यत् ते अपोदकं विषं	८३५
यत् ते दर्भं जराभृत्युः	१५३२
यत् ते नियानं रजसं	३६
यत् ते पितृभ्यो ददतो	१६२६
यत् ते माता यत् ते पिता	१०२
यत् ते रिष्टं यत् ते छुत्तम्	४२२
यत् ते वासः परिधानं	४२
यत् ते सोम गवाशिरो	१११६
यत् त्वं शीतोऽथो रूरः	५४०
यत् त्वा क्रुद्धः प्रचक्रुः	२२१
यत् त्वाभिचेरुः पुरुषः	९९
यत् त्वा शिक्वः पराव०	१४८०
यत् पर्जन्य कनिकदत्	९८२



यत् प्रेषिता वरुणेन	९२१	यथा वृत्र इमा आपः	१८४
यत्र नावप्रभ्रंशनं	४५४	यथासितः प्रथयते वशां	१३४०
यत्र वः प्रेङ्गा हरिता	७१९	यथा सूर्यस्य रश्मयः	४८८
यत्राश्वत्था न्यप्रोधा	७१८	यथा सूर्यो अतिभाति	१४६९
यत्रैषामग्ने जनिमानि	७३०	यथा सूर्यो मुच्यते तमसः	१६४७
यत्रौषधीः समगमत	३०६	यथा सो अस्य परिधिः	७४०
यत् समुद्रो अभ्यकन्दत्	१५३६	यथा स्म ते विरोहतो	१३३४
यत् स्वप्ने अजमश्रामि	६३७	यथा हव्यं वहसि जातवेदो	१६८६
यथा कलां यथा शर्फं	६३५, १९१३	यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति	२४१
यथाप्रे त्वं वनस्पते	१५४५	यथेयं पृथिवी मही दाधार	१३६३-६५
यथा त्वमुत्तरोऽसौ	१५७८	यथेयं पृथिवी मही भूतानां	१३४७, १३६२
यथा देवेष्वमृतं यथा	१४७७	यथेषुका परापतद्	५७९
यथा यां च पृथिवीं च	६६७	यथोदकमपपुषो	६८०
यथा नकुलो विच्छिद्य	६८१	यदक्षेषु वदा यत् समित्यां	१३२३
यथा नडं कशिपुने	५०२	यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य	५२५
यथा पसस्तायादरं	१३४१	यदग्ने तपसा तपः	१९२१
यथा बाणः सुसंशितं	४८७	यदग्ने यानि कानि	११७
यथा बीजमुर्वरायां	१५१०	यदग्नौ सूर्ये विषं पृथिव्याम्	८२९
यथाभवदनुदेयी ततो	१९८५	यदङ्ग त्वा भरताः संतरेयुः	१०३२
यथा भूमिर्भूतमना	६८३	यददः संप्रयतीरहा०	९२०
यथा मनो मनस्कैतैः	४८६	यददीव्यन्नृणमहं कृणोमि	१६७३
यथा यमाय हर्म्यम्	२२०५	यददो अदो अभ्यगच्छन्	१८६४
यथा यशः कन्यायां	१४७२	यददो देवा असुरान्	३९९
यथा यशः पृथिव्यां	१४७१	यददो पितो अजगन्	१११४
यथा यशः प्रजापतौ	१४७६	यदक्षमग्नि बहुधा विरूपं	१११९
यथा यशः सोमपीथे	१४७३	यदक्षमदुम्यनृतेन देवा	११२१
यथा यशश्चन्द्रमसि	१४७०	यदपामोषधीनां परि०	१११५
यथा यशोऽग्निद्वेत्रे	१४७४	यदध्रासि यत् पिबसि	४५
यथा यशो यजमाने	१४७५	यदश्मासु दुष्वप्यं यद्	५९३
यथा वातः पुष्करिणीं	१४०१	यदस्य हृतं विद्वतं यत्	७४२
यथा वातश्चामिश्रं वृक्षान्	१४६६	यदहरहरभिगच्छामि	१८६६
यथा वातश्चयावयति	१६२८	यदाजनं त्रैककुदं	५८८
यथा वातेन प्रक्षीणा	१४६७	यदान्त्रेषु गर्वाभ्योः	५७६
यथा वातो यथा मनो	१४१०	यदापो अघ्न्या इति	६१०, ११०३
यथा वातो यथा वनं	१४०२	यदावध्रन् दाक्षायणा	५९, २३३०
यथा वातो वनस्पतीन्	१४६५	यदाशसा निःशसाभिशासो	६२७
		यदाशसा वसतो मे विचुक्षुभे	१०८८

यदा शृतं कृण्वो जातवेदो	२०२९	यद्यत् कृष्णः शक्रुनः	१२८४
यदासुतेः क्रियमाणायाः	१९७	यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः	५२६
यदि कर्तं पतित्वा संशभ्रे	४२७	यद्यष्टवृषोऽसि सृजारसो	६४९
यदि कामादपकामाद्	२७९	यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो	१२६६
यदि क्षितायुर्यदि वा	७३, २०६	यद्येकवृषोऽसि सृजारसो	६४२
यदि चतुर्वृषोऽसि सृजा०	६४५	यद्येकादशोऽसि सोऽपो	६५२
यदि जाग्रद् यदि स्वपञ्जेन	१७२८	यद्येयथ द्विपदी चतुष्पदी	१६३९
यदि त्रिवृषोऽसि सृजारसो	६४४	यद् रिप्रं शमलं चक्रुम	२५६
यदि दशवृषोऽसि सृजा०	६५१	यद् वः सहः सहमाना	३२८
यदि द्विवृषोऽसि सृजा०	६४३	यद् विद्वांसो यदविद्वांसः	१७२७
यदि नववृषोऽसि सृजा०	६५०	यद् द्विपाच्च चतुष्पाच्च	१५४०
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते	६२८, ६३२	यद् वेद राजा वरुणो	१३५१
यदि पञ्चवृषोऽसि सृजा०	६४६	यद् वो अग्निरजहादेकं	२२१४
यदिमा वाजयज्ञहम्	३११	यद् वो देवा उपजीका	८०६
यदि वासि त्रैककुदं	५८९	यद् वो मुहं पितरः सोम्यं	२१०२
यदि वासि देवकृता	१५९७	यद् वो वयं प्रमिनाम	२२५५
यदि वृक्षादभ्यपत्तत्	९५७	यन्तासि यच्छसे हस्तौ	१३५२
यदि शोको यदि वाभि	५२७	यं ते मन्थं यमोदनं	२१९२
यदि षड्वृषोऽसि सृजा०	६४७	यं त्वमग्ने समदहस्तमु	२०८९
यदि सप्तवृषोऽसि सृजा०	६४८	यं त्वा वेद पूर्वं इक्ष्वाको	४५५
यदि स्त्री यदि वा पुमान्	१५९६	यं देवा पितरो मनुष्या	१५०९
यदि स्थ क्षेत्रियाणां	१६५२	यं द्विभ्यो यच्च नो द्वेष्टि	१८४८
यदि स्थ तमसाश्रुता	१६४५	यन्नियानं न्ययनं	८९६
यदीदं मातुर्यदि वा पितुर्नः	१२६८	यन्मातली रथक्रीतम्	१७५६
यदीमेनाँ उशतो अभि	९९६	यन्मा हुतमहुतमाजगाम	११२०
यदुक्कथानृतं जिह्वया	१६५६	यन्मे अक्ष्योरादियोत	९७२
यदेनसो मातृकृता०	१०१	यन्मे छिप्रं मनसो यच्च	१४११
यदेषामन्यो अन्यस्य	९९८	यन्मेदमभिशोचति येनयेन	१७१२
यद् दण्डेन यदिष्वा	४३१	यन्मे माता यन्मे पिता	१४६०
यद् दुरोहिथ शेषिषे	१००	यमः परोऽवरो विवस्वान्	२०५६
यद् दुर्भगां प्रस्नपितां	१६२५	यमबभ्राद् बृहस्पतिर्देवेभ्यो	१४९९-१५०५
यद् दुष्कृतं यच्छमलं	४०५	यमबभ्राद् बृहस्पतिर्मणिं	१४८३-८७
यद् देवा देवहेडनं	१७९४	यमबभ्राद् बृहस्पतिर्बाताय	१४८८-९४
यद्वा प्राचीरजगन्तोरो	२३३८	यमराते पुरोधसे पुरुषं	१७७८
यद् ब्रह्मभिर्यदेषिभिः	८४७	यमस्य मा यम्यं कामः	१९६०
यद्यमिः क्रव्याद् यदि	२२०	यमस्य लोकादध्या बभूविथ	१९०७
यद्यज्याया पचति त्वत्	१३१०		

यमाय घृतवत् पयो	२०२७	यस्त्वा स्वप्ने निपद्यते	१३७३
यमाय घृतवद्धविः	१९७७	यस्त्वोवाच परेहीति	१६२२
यमाय पितृमते स्वधा	२२२४	यस्मिन्समुद्रो यौर्भूमिः	११४६
यमाय मधुमत्तमं	१९७८, २०२६	यस्मिन् देवा अमृजत	२३३
यमाय सोमं सुनुत	१९७६	यस्मिन् विधानि भुवनानि	९८८
यमाय सोमः पवते	२०२५	यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे	१९८०
यमे इव यतमाने यदैतं	२२७६	यस्मै त्वा यज्ञवर्धन मणे	१५११
यमो नो गातुं प्रथमो	१९६९	यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतो	१९११
यं परिहरतमविभः	१३६१	यस्य जुष्टिं सोमिनः	१६९६
यं ब्राह्मणे निदधे यं च	१२०१	यस्य ते वासः प्रथमवास्यं	२३३५
ययो रयः सत्यवर्त्मजुर्गदिमः	१७२६	यस्य देवा अकल्पन्त	११४७
ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे	१७१४	यस्य भीमः प्रतीकाशः	२७७
ययोर्वधाम्नापपयते कश्चन	१७१७	यस्य वशास ऋषभासः	१६९५
ययोः संख्याता वरिमा	१७००	यस्य व्रतं पशवो यन्ति	१०४९
यश्चकार न शशाक कर्तुं	३९३, १६१४	यस्य व्रते पृथिवी ननमीति	९७८
यश्चकार स निष्करत्	८४	यस्य हेतोः प्रच्यवते	२७४
यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वविन्द	१६२४	यस्या अनन्तो अहतः	१०६६
यश्च सापत्नः शपयो	६६९	यस्याञ्जन प्रसर्पसि	५८३
यस्त आस्यत् पनाङ्गुरिः	७९३	यस्यास्त आसनि घोरे	१७९०
यस्त ऊरू विहरति	१३९६	यस्येदं प्रदिशि यद्	१६९१
यस्ते केशोऽन्नपद्यते	४६२	यस्यौषधीः प्रसर्पथ	३१२
यस्ते गर्भमर्मावा दुर्णामा	१३९४	या अन्येषु रुभयद्युः	५३०
यस्ते गर्भं प्रतिमृशान्त	१३८४	या आपो दिव्या उत	८७६
यस्यो द्रप्सः रकन्दति	८९०	या ओषधयः सोमराज्ञीः	३५२
यस्ते द्रप्सः रकञ्चो यस्ते	८९१	या ओषधीः पूर्वा जाता	३०१
यस्ते पर्लषि मंदधौ	१६२३	या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः	३१८
यस्ते पृथु स्तनयित्नुर्यः	१०८७	या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः	३१९
यस्ते मदोऽवकेशो विकेशो	४७१	याः कृत्या आङ्गिरसीयाः	१४३९
यस्ते स्तनः शशयुर्यो	१०८६	याः पार्श्वे उपर्षन्ति	२८६
यस्ते स्तनः शशयो यो	१०५४	याः प्रवतो निवत उद्वतः	१०३५
यस्ते हन्ति पतयन्तं	१३९५	याः फलिनीर्या अफला	३१५
यस्त्वा कृत्याभिर्यस्त्वा	१४४५	याः सीमानं विरुजन्ति	२८४
यस्त्वा देवि सरस्वति	१०६३	याः सुपर्णा आङ्गिरसीः	३४७
यस्त्वा पिबति जीवति	४२९	याः सूर्यो रश्मिभिराततान	८७४
यस्त्वा भ्राता पांतेभूर्त्वा	१३९७	या गुदा अनुसर्पन्ति	२८८
यस्त्वा स्वपन्ती त्सरति	१३७४	यां गृह्यन्ति पञ्चाशीः	१५५२
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा	१३९८	या प्रैव्या अपचितो	५०८

यां कल्पयन्ति बहुते	१६१६	यावद् दाताभिमनस्येत	११५१
या जामयो वृष्ण इच्छन्ति	३६३	यावन्तो अस्याः पृथिवीं	१३११
यां जमदग्निरखनद्	४६३	यावारेभाये बहु साकम्	१७१६
यातुधानस्य सोमप	७२२	या शशाप शपनेन	३८२, ७३६
या ते धामान्युदमसि	२२७०	याश्वाहं वेद वीरुधो	३४१
या देवीः पञ्च प्रदिशो	१७५५	याश्चेदमुपशृण्वन्ति	३२१
या नः पीपरदक्षिना	१४१४	यासां राजा वरुणो याति	८७७, ९१७
यां ते कृत्यां कूपेऽवदधुः	१६११	यासां देवा दिवि कृण्वन्ति	९१८
यां ते चक्रुः कुरुनाकावजे	१६०५	यामु राजा वरुणो यासु	८७८
यां ते चक्रुः पुरुभास्थे	१६१२	यास्तिरश्वीरुपर्षन्ति	२८७
यां ते चक्रुः रभायां	१६०९	यास्ते धाना अनुकिरामि	२१४६, २१७६, २१९३
यां ते चक्रुः मूलायां	१६०७	यास्ते शतं धमनयो	६२१
यां ते चक्रुरामे पात्रे	३८३, १६०४	यास्ते शोचयो रंहयो	२०३३
यां ते चक्रुरेकशफे	१६०६	या हृदयमुपर्षन्ति	२८५
यां ते चक्रुर्गार्हपत्ये	१६०८	युजे वां ब्रह्म पूज्यं	२२७५
यां ते चक्रुः सेनायां	१६१०	युनक्तु देवः सविता प्रजानन्	१९३८
यां ते धेनुं निपृणामि	२०५४	युवा सुवासाः परिवीत आगात्	२२६२
यां ते बर्हिषि यां इमशाने	१६३३	युष्मा इ द्वोऽवृणीत वृत्रतूर्ये	९३८
यां ते रुद्र इषुमास्यद्	६२०	यूयमग्ने शंतमाभिस्तनूभिः	२१६०
यां त्वा गन्धर्वो अखनद्	१३३२	ये अस्या ये अज्ञपा	७८०
यान् वो नरो देवयन्तो	२२६४	ये अग्निजा ओषधिजा अहीनां	८३०
या पूर्वं पतिं विरवाथ	१२०९	ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा	२०००, २०५९
या बभ्रवो याश्च शुका	३२४	ये अप्रवः शशमानाः परेयुः	२०७१
याभिः सोमो मोदते	९०५	ये अज्ञानि मदयन्ति	२९०
या मज्ज्ञो निर्धयन्ति	२८९	ये अत्रयो अज्ञिरसो नवग्वा	२१०३
यामन्यामन्नुपयुक्तं बहिष्ठं	१६८७	ये अपीषन् ये अदिहन्	७९६
या महती महोन्माना	१७८५	ये अमृतं बिभृथो ये हर्वाषि	१७०९
यामृषयो भूतकृतौ	१४२२	ये अन्नो जातान् मारयन्ति	१३८५
यां मेधामृभवो विदुर्यां	१४२१	ये उखिया बिभृथो ये वनरपतीन्	१७१०
या रोहन्त्याज्ञिरसीः	३४०	ये कीलालेन तर्पयथो ये घृतेन	१७२१
या रोहिणीर्देवत्याः	४९१	ये कुकुन्धाः कुकुरभाः	१३७७
याबज्ञिरसमवथो यावगस्ति	१७२२	ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेषु	६९५
यावतीः क्रियतीश्वेमाः	३३६	ये क्रिमयः शितिकक्षा	७००
यावती यावापृथिवी वरिष्णा	७९१	ये च जीवा ये च मृता	२२०७
यावतीनामोषधीनां गावः	३४८	ये चित् पूर्वं ऋतसाता	२०३९
यावतीषु मनुष्या भेषजं	३४९	ये चेह पितरो ये च नेह	१९९९
यावदग्निं पारस्वतं	१३४२	ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना	१९९५, २१३०

ये ते नाञ्जौ देवकृते	५०१
ये ते पूर्वे परागता	२१४९
ये ते सरस्व ऊर्मयो	१०४७
येऽत्र पितरः पितरो	२२३६
ये त्रयः कालकाञ्जा	१५८९
ये त्रिषप्ताः परियन्ति	१४१५
ये त्वा कृत्वालेभिरे	१६२४
ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा	२०५२
ये देवा दिविषदो	१७४५
ये देवा दिवि ष्ट ये पृथिव्यां	५७
ये देवानामृत्विजो ये च	२२५४
येन ऋषयो बलमयौतयन्	१६८९
येन कृशं वाजयन्ति	१३४४
येन देवा अमृतमन्वाविन्दन्	१६९०
येन देवा असुराणाम्	७६५
येन देवा ज्योतिषाद्याम्	१२६५
ये नः पितुः पितरो ये	२०७३, २१२९, २१३७
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो	१९९४
येन सोम साहन्त्यासुरान्	७६४
येन सोमादितिः पथा	७६३
येना ध्रुवस्यवश्चरथ	१८००
येना सहस्रं वहसि	११९२
ये निखाता ये परोप्ता	२०५८
ये पूर्वे बभूवो यन्ति	१३८०
येभिः पाशैः परिवित्तो	१६७२
ये मृत्यव एकशतं	५३
ये यक्षमासो अर्भका	१५६८
ये युध्यन्ते प्रधनेषु	२०४१
ये बध्वश्चन्द्रं वहतुं	२३३६
येनाषासः कृकषासः	७०२
ये वृकणासो अधि क्षमि	२२६५
ये वो देवाः पितरो ये च	५६
ये शालाः परिनृन्ति	१३७६
येऽश्रद्धा धनकाम्या	२६७
येषां पश्चात् प्रपदानि	१३८१
येषां प्रयाजा उत वानुयाजा	५८

ये सत्यासो हविरदो	१९९६, २१३१
ये सूर्यं न तितिक्षन्त	१३७८
ये सूर्यात् परिसर्पन्ति	१३९०
येऽस्माकं पितरस्तेषां	२२१८
ये ह्याकस्यं मणिं जना	१४३७
यो अक्षयौ परिसर्पति	६९८
यो अग्निः क्रव्यात् प्रविशे	२२३
यो अज्ञयो यः कप्यो	१८७
यो अप्रतो रोचनानां	१४२५
यो अनिध्मो दीदयदस्वन्तर्ष	९०४
यो अन्तरिक्षेण पतति	७६२
यो अस्य समिधं वेद	१५२
योगक्षेमं व आदाय	२३४५
यो गर्भमोषधीनां	९२२
यो गिरिष्वजायथा	४३७
यो जायमानः पृथिवीम्	१९३१
यो दध्रे अन्तरिक्षे न महा	२१४१
यो देवाः कृत्यां कृत्वा	३८९
यो न जीबोऽसि न मृतो	६३३
यो नः पाप्मन् न जहासि	१७७१
यो नः शपादशपतः	१७७५, १७७६
यो नो अग्निः पितरो हृत्सु	२४९
यो नो अग्निर्गार्हपत्यः	१५३८
यो नो अश्वेषु वीरेषु	२३१
योऽस्वामिरति तं सृजामि	१८०९
यो ममार प्रथमो मर्त्यानां	२०९६
यो मे राजन् युज्यो वा	६२४
यो यजाति यजात इत्	२२४०
यो व आपोऽमिराविवेश	१८१०
यो वर्धन ओषधीनां	९८६
यो वः शिवतमो रसः	८८०
यो वा अभिभुवं नामर्तु	१२१८
यो वा उद्यन्तं नामर्तु	१२१७
यो वै कुर्वन्तं नामर्तु	१२१४
यो वै नैदाघं नामर्तु	१२१३
यो वै पिम्बन्तं नामर्तु	१२१६
यो वै संयन्तं नामर्तु	१२१५

यो वो वृताभ्यो अकृणोडु	९०७
योऽस्मान् द्वेष्टि तमात्मा	१८६०
यो हरिमा जायान्यो	६०३
यौ ते वृत्तौ निर्ऋत इदम्	१५८६
यौ ते बलास तिष्ठतः	१८६
यौ ते मातोन्ममार्ज	१३६७
यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ	२०३६
यौ भरद्वाजमवथो यौ	१७२४
यौ मेधातिथिमवथो यौ	१७२५
यौ व्याघ्राववरूढौ जिघत्सतः	१५९
यौ श्यावाश्वमवथो वक्ष्यश्वं	१७२३
रक्षन्तु त्वामयो ये अप्स्वन्ता	१६
रधीव कशयाश्वौ अभिक्षिपन्	९७६
रमश्वं मे वचसे सोम्याय	१०२६
रथि मे पोषं सवितोत वायुः	१७०३
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत	१९६२
रात्री माता नभः पिता	४२८
रिश्यपर्दी वृषदती	६७६
रिश्यस्येव परीशासं	१५९३
रुजन् परिरुजन् मृणन्	१८०४
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्टां	१८२३
रुद्रस्य मूत्रमस्यमृतस्य नाभिः	५६१
रुद्रो वो प्रीवा अशरैत्	७३२
रुन्धि दर्भं सपत्नान् मे	१५२५
रूपरूपं वयोवयः	२२४८
रेवतीरन.पुषः सिषासवः	४५९
रोहण्यसि रोहणी	४२१
रोहेम शरदः दातम्	१२२
लोम लोत्रा सं कल्पया	४२५
सध्रयस्ते खनितारो	७९७
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैः	३७२
वनस्पतिः सह देवैर्न आगन्	१२८६
वनस्पतेऽव सृजा रराणः	३७४
वनस्पते स्तीर्णमा सीद बर्हिः	१३०४
वरणेन प्रव्यथिता	१४६१
वरणो वारयाता अयं	१८२, १४५७

वराहो वेद वीरुधं	३४६
वर्चसा मां समनक्स्वग्निर्मेधां	२०९४
वर्चसा मां पितरः सोम्यासो	२०९३
वर्चसो द्यावापृथिवी संप्रहणी	२२५१
वर्म मह्यमयं ऋणिः	१४७९
वर्म मे द्यावापृथिवी	१४४८
वर्षं वनुष्वापि गच्छ देवान्	१३२४
वषट् ते पूषन्नस्मिन्सूतौ	१४०५
वसोर्या धारा मधुना प्रपीना	१३१२
वस्योभूयाय वसुमान् यज्ञो	३९०५
वाङ् म आसन्नसोः प्राणः	१५७
वाजः पुरस्तादुत मभ्यतो	३६१
वाजो नः सप्त प्रदिशः	३५९
वाजो नो अद्य प्रसुवाति	३६०
वात इव वृक्षान् नि मृणीहि	१६३२
वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्	१४२४
वात.त् ते प्राणमविदं	२९
वातं ब्रूमः पर्जन्यम्	१७३९
वायोः पूतः पवित्रेण	१७८७
वायोः सवितुर्विदधानि	१६९९
वारिदं वारयातै	७९८
वि प्राम्याः पशव आरण्यैः	१७०
वि जिहीष्व बार्हत्सामे	१३५४
वि जिहीष्व वनस्पते	१३९९
वि ते भिनन्नि मेहनं	१४०९
वि ते मदं मदावति	८०१
वि ते मुञ्चामि रशनां	१६८०
वि ते हनक्यां शरणि	६४१
वि देवा जरसावृतन्	१६८
विद्य ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद्	१९१२
विद्य ते स्वप्न जनित्रं प्राह्याः	१८३५
विद्य ते स्वप्न जनित्रं देवजामीनां	६३४, १८४२
विद्य ते स्वप्न जनित्रं निर्ऋत्याः	१८३८
विद्य ते स्वप्न जनित्रं निर्भृत्याः	१८४०
विद्य ते स्वप्न जनित्रमभृत्याः	१८३९
विद्य ते स्वप्न जनित्रं पराभृत्याः	१८४१
विद्य वै ते जायान्म जानं	५११

विद्या शरस्य पितरं चन्द्रं	५७४	वृषभोऽसि स्वर्गं ऋषीन्	१२६३
विद्या शरस्य पितरं पर्जन्यं	५७१, ६६४	वृषा मतीनां पवते विचक्षणः	२२०८
विद्या शरस्य पितरं मित्रं	५७२	वृषा मे रवो नभसा न	८३६
विद्या शरस्य पितरं वरुणं	५७३	वृषा वो अंशुर्न किला	२३०२
विद्या शरस्य पितरं सूर्यं	५७५	वृष्ण ऊर्मैरसि राष्ट्रदा	१०९४
विद्रधस्य बलासस्य	१८५	वैयाघ्रो मणिर्बोद्धा	३३७
विध्य दर्भ सप्तान् मे	१५२२	वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं	१२६७
विध्याम्यासां प्रथमा	५०४	वैश्वदेवीं वर्चस आ रभध्वं	२४४
विभिन्दती शतशाखा	४००	वैश्वानरः पविता मा पुनातु	१६७५
विमोक्षश्च मार्द्रपविश्व मा	१८२५	वैश्वानरस्यैनं दंष्ट्रयोः	१८५८
वि लपन्तु यातुधाना	७६९	वैश्वानराय प्रति वेदयामि	१६७४
विवस्वान् नो अभयं कृणोतु	२१३९	वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि	२१८५
विवस्वन् नो अमृतत्वे दधातु	२१४०	व्यवात् ते ज्योतिरभूद्	२६
वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति	९७५	व्याकरोमि हविषाहमेती	२४८
विश्वरूपं चतुरक्षं किर्मि	७१०	व्याघ्रोऽह्यजनिष्ट वीरो	८७
विश्वरूपां सुभगाम्	४०९	व्याथ्या पवमानो ि	१६९
विश्वव्यचा घृतपृष्ठो भविष्यन्	१२९०	व्रजं कृणुध्वं स हि वो	२२५२
विश्वान् देवानिदं ब्रूमः	१७५२	व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो	५०६
विश्वामित्र जमदग्ने वसिष्ठ	२०९९	व्रीहिमतं यवमत्तम्	१६०
विश्वे देवा मरुत इन्द्रो	८९	शकवरी स्थ पशवो	१८३४
विश्वे देवा वसवो रक्षते०	५५	शङ्खेनामीवाममतिं	१४२६
विश्वितं ते वस्तिबिलं	५७८	शं च नो मयथ नो	८६२
विष्टारिणमोदनं ये पचन्ति	१२२३, १२२४	शणश्च मा जङ्गिडश्च	७०
विष्णुर्युनक्तु बहुधा तर्पासि	१९४२	शतं या भेषजानि ते	५६०
विष्णुर्योनि कल्पयतु	१३५०	शतं वीरानजनयच्छतं	१५६९
विष्णोः शर्मासि शर्भ	१२७१	शतं वो अम्ब धामानि	३०२
विष्वच्चस्तम्माद् यक्ष्मा	२०३	शतकाण्डो दुश्च्यवनः	१९२३
विसत्पस्य विद्रधारय	२९१	शतं च न प्रहरन्तो	१५७४
विहृहो नाम ते पिता	४६७	शतं च मे सहस्रं च	६६३
वीदं मयमवासृपद्	६०८	शतं जीव शरदो वर्धमानः	७५, २०८
वीमां मात्रां मिमीमेहे	२०६५	शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं	२१७९
वीमे थावापृथिवी इतो	१७१	शतं ते दर्भं वर्माणि	१५३३
वीहि स्वामाहुति जुषाणो	५१६	शतं तेऽयुतं हायन न्	४७
वृक्षं यद् गावः परिविष्यजाना	६६६	शतपवित्राः स्वधया मदन्तीः	८७३
वृक्षं वृक्षमा रोदसि वृष०	४३०	शतमहं दुर्णम्रिनां	१५७१
वृत्रस्यासि कर्नानकः	६१२	शतवारो अनीनशद् यक्ष्मान्	१५६६
वृश्च दर्भ सप्तान् मे	१५१९		

शतस्य धमनीनां	५५७
शतेन मा परि पाहि	४०३
शं त आपो धन्वन्थाः	९२९
शं त आपो हैमवतीः	९२८
शं तप माति तपो अग्ने	२०६०
शं ते अभिः सहाङ्गिरस्तु	१६६३
शं ते नीहारो भवतु	२१३८
शं ते वातो अन्तरिक्षे	१६६४
शं न आपो धन्वन्थाः	९६४
शं नो देवी पृथिवीर्ध्वं	४१६
शं नो देवीरभिष्टय	८८२
शं नो भवन्स्वप	५७०
शं नो वातो वातु	६३८
शप्तारमेतु शपथो यः	६७२
शममयः समिद्धा आ	२१६२
शममे पश्चात् तप शं	२१६१
शमिता नो वनस्पतिः	३७३
शं मे परस्मै गात्राय	१९१
शरदे त्वा ह्मन्ताय	४८
शरासः कुशरासो	७७६
शर्म यच्छत्रोषधिः	४०८
शाल्याद् विषं निरवोचं	७९४
शिशुः कपोत इषितो	१५८०
शिवा नः शान्तमा भव	१०९२
शिवानम्रीनप्सुषदो हवामहे	१८१५
शिव भिष्टे हृदयं तर्पयामि	९६
शिवास्ते सन्वोषधय उत	४१
शिवे ते स्तां थावापृथिवी	४०
शिवेन मा चक्षुषा पर्यतापः	९१९, १८१४
शिवो वो गोष्ठो भवतु	२३२४
शिवी ते स्तां प्रीष्टियवी	४४
शीर्षाङ्गि शीर्षामयं	२७२
शीर्षण्वती नस्वती कर्णिनी	१६१७
शीर्षलोकं तृतीयकं	४५६
शीर्षामयमुपहस्याम्	४४६
शुक्रेषु ते हरिमाणं	४९२, ५४६
शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया	१२४५, १२५५

शुम्भनी थावापृथिवी	१७६८
शुम्भन्तां लोकाः पितृषदना	२२१७
शुष्यतु मयि ते हृदयम्	६७८
शुद्धकृता राजकृता	१६१८
शृङ्गाणविक्षृङ्गिणां सं दहध्रे	२२६८
शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते	१५६७
शृतं त्वा हव्यमुप सीदन्तु	१२५३
श्याममयोऽस्य मांसानि	११३३
श्यामश्च त्वा मा शबलः	१४
श्यामा सरूपं करणी	५२४
श्यावदता कुनस्त्रिना	४०६
श्राम्यतः पचतो विद्धि	१२५८
श्रेष्ठमसि भेषजानां	४५८
श्वेवैकः कपिरिवैकः	७२५
षट् च मे षष्टिश्च मे	६५८
षष्ठ्यां शरत्सु निधिपा	१३०५
स इन्द्रो जो यो गृहवे	२३१३
स इद् व्याघ्रो भवत्यथो	१४४२
स उत तिष्ठ प्रेहि प्र ब्रव	४२६
संयतं न वि ष्यद्	८१५
सं राजानो अगुः समृणानि	१९१४
सं बः सृजत्वर्थमा	२३२१
संवत्सरं शशयाना	९९४, १०१६
संवन्नी समुष्पला	६७९
सं विशन्तिवह पितरः	२०५३
सं वो गोष्ठेन सुपदा	२३२०
सं बोऽवन्तु सुदानव	१०१०
सं सं स्रवन्तु नद्यः	२२४६
सं हि शीर्षाण्यप्रभं	८२६
स प्राथाः पाशान्मा मोचि	१८७१
संकसुको विकसुको	२३०
सं क्रामतं मा जहीतं शरीरं	१४४
संग्ल्याता स्तोकाः पृथिवीं	१२९९
सं गच्छस्व पितृभिः सं	१९७४, २१३६
सचेतसौ बुद्धिगो यौ	१७२१
स जङ्गिडस्य महिमा	१५५५



संजग्माना अभिभ्युषीः	२३२२	समुद्रस्य त्वा क्षित्या	९५४
संजीवा स्थ सं जीव्यासं	९३५	समुद्राज्जातो मणिः	१४२८
सत्याजितं शपथयावनीं	३८१	समुद्रे ते हृदयमास्वन्तः	११०४
सत्यं चर्तं च चक्षुषी विश्वं	१२०३	स मृत्योः पङ्क्यात् पाशान्मा	१९००
सत्याय च तपसे देवताभ्यो	१३१७	समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः	२३१९
स नः सिन्धुमिष नावाति	१७६४	सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन	२२७४
सनादग्ने ऋणसि यातुधानान्	७४८	सं मामे वर्चसा सृज	९६०
स नो रक्षतु जङ्घिडो	१५६२	सं मा सिञ्चन्तु महतः	१४२
सं ते मज्जा मज्जा भवतु	४२३	स य एवं विदुष उपद्रष्टा	११८०
सं ते शीर्ष्णाः कपालानि	२९३	स य ओदनस्य महिमानं	११४९
सं ते हन्मि दता दतः	८५१	सरस्वति त्वमस्मौ अविड्ढि	१०५५
सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वान्	१९३२	सरस्वति देवनिदो नि बर्हय	१०६१
सपत्नक्षयणं दर्भं द्विषतः	१५३५	सरस्वति या सरथं ययाध	१०८४, २००९, २१९७
सप्त क्षरन्ति शिशवे महत्त्वते	१०८९, २२७९	सरस्वति व्रतेषु ते	१०९०
सप्त च मे सप्ततिश्च मे	६५९	सरस्वती यां पितरो हवन्ते	१०८५
सप्त च याः सप्ततिश्च	१६८३	सरस्वती देवयन्तो हवन्ते	१०८३, २००७, २१९५
सप्त मेधान् पशवः पर्यगृह्णन्	१२८७	सरस्वतीमनुमतिं भगं	१७८०
सप्तर्षीन् वा इदं ब्रूमो	१७४४	सरस्वतीं पितरो हवन्ते	२००८, २१९६
सप्तमयो विदुरन्यो अन्यं य	१३२१	सरस्वत्याभि नो नेषि वस्यो	१०७२
समं ज्योतिः सूर्येण	३८८	सरूपा नाम ते म ता	५२३
समस्मिन्लोकैः समु देवयाने	१२७४	सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ	६९९
समाचिनुष्वानुसंप्रयाह्यमे	१२६४	स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां	९९०
स मा जीवीत् तं प्राणो	१८६८	सर्वाः समप्रा ओषधीः	३४२
समानलोको भवति	१२१०	सर्वानग्ने सहमानः सपत्नान्	२६२
समानां मासामृतुभिर्घ्वा वयं	६२	सर्वान्तसमागा अभिजित्य	१३०७
समाप ओषधीभिः सम्	९३९	सर्षान् देवानिदं ब्रूमः	१७५३
समाहर जातघेदो	७४९	सर्वेषां च क्रिमीणां	७०८
समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद्	२२६०	सर्वा वै तत्र जीवति	५१
समिद्धो अग्न आहुत	२३४	स वावृधे नर्यो योषणासु	१०४५
समिद्धो अग्ने समिधा समिभ्यस्व	१२३२	सवितः श्रेष्ठेन रूपेण	१३५७
समिद्धते अमर्त्यं	२१९१	सवितुर्वः प्रसव उत्पुनामि	९३७, ९४०, १०९७
समिद्धते संकसुकं स्वस्तये	२२७	सस्रुषीस्तदपसो दिवा	२६८
समिमां मात्रां मिमांहे	२०६८	सहमानेयं प्रथमा	४१७
समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवो	१००५	सहस्रणीथाः कवयो	२०४२
समीक्षयस्व गायतो नभांसि	१००६	सहस्रधामन् विशिखान्	३९१
समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वीतः	१००४	सहस्रधारं शतधारमुत्समक्षितं	२१८६
समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्	८७५	सहस्रपृष्ठः शतधारो अक्षितो	१२४८

सहस्रशृङ्गो वृषभो	६१३	सोमं मन्यते पपिवान्	४७५
सहस्राक्षेण शतवीर्येण	७४, २०७	सोम राजन्संज्ञानमा	१२५४
सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवे	१७१५	सोमस्येव जातवेदो	७५०
सहस्रार्धः शतकाण्डः	१९३३	सोमाय पितृमते स्वधा	२२२२
सहस्र नो अभिमातिं	१९२८	सोमारुद्रा युवमेतानि	१७३१
साकं यक्ष्म प्र पत	३१३	सोमारुद्रा वि वृहतं	१७३०
साकं सजातैः पयसा सह	१२३५	सोमेनादित्या बलिनः	४७४
सा नो विश्वा अति द्विषः	१०६७	सोमो मा विश्वेदेवैरुद्याच्या	२१११
सिंहस्येव स्तनयोः सं	३३८	सोमो मा सौम्येनावतु	५९९
सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञाः	९७३	सोमो राजाधिपा मृडिता	१६३७
सिन्धोर्गर्भोऽसि विष्णुतां	६०६	सोऽरिष्ट न मरिष्यसि	५०
सिलाची नाम कानीनो	४३५	स्तरिह त्वद् भवति सूते	९८७
सीताः पर्शवः सिकता	११३८	स्तुवानमम्र आ वह	७६७
सीसे मलं सादयित्वा	२३६	स्तुहि श्रुतं गर्तमदं	२००६
सीसे मृड्ङ्गं नडे मृड्ङ्गं	२३५	स्तेगो न क्षामत्येषि	२००५
सुकर्माणः सुकचो देवयन्तो	२१०५	स्योनास्मै भव पृथिवि	२०४३
सुक्षेत्रिया सुगातुया	१७५८	स्त्राक्त्येन मणिन ऋषिणा	१४३८
सुखं रथं युयुजे सिन्धुः	१०४४	स्वधा पितृभ्यः पृथिवि	२२२८
सुजातं जातवेदसम्	१६८८	स्वधा पितृभ्यो अन्तरिक्ष	२२२९
सुते अध्वरे अधि वाचमकृत	२३०६	स्वधा पितृभ्यो दिवि	२२३०
सुन्वन्ति सोमं रथिरासो	२२९१	स्वप्नु माता स्वप्नु पिता	६१८
सुपर्णसुवने गिरौ	४३८	स्वप्नं सुप्त्वा यदि	१४५८
सुपर्णस्त्वा गरुमान्	७९२	स्वप्न स्वप्नाभिकरणेन	६१९
सुपर्णस्त्वान्वाविन्दत्	१५९१	स्वर्गं लोकमभि नो	१२८८
सुपर्णा वाचमकृतोप षवि	२२९७, २३२६	स्वश्वा सिन्धुः सुरथा	१०४३
सुपर्णो जातः प्रथमः	५२१	स्वस्तितदा विशां पतिः	१४५२
सुषामंश्वाशुष	१८६२	स्वस्ति मात्र उत पित्रे	१६६१
सुश्रुतिश्च मोपश्रुतिश्च मा	१८२०	स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च	१८३३
सुश्रुतौ ऋणौ भद्रश्रुतौ	१८१९	स्वाक्तं मे यावापृथिवी	५९०
सुश्रुतौ ऋणौ भद्रश्रुतौ	१९२०	स्वातुष्किलायं मधुमौ	२०१४
सूर्ये चन्द्रो मरुत	२०३१	स्वाद्यो पितो मधो पितो	११०९
सूर्ये चन्द्रो मरुत	१०९६	स्वायसा असयः सन्ति	१६३५
सूर्यमृतं तमसो प्राणाः	१६६९	स्वासदसि सूषा अमृतो	१८२९
सूर्ये विषमा सजामि	७८३	स्वासस्थे भवतमिन्द्रवे	२१२२
सूर्यो माहः पात्वभिः	१८३१	हंसा इव भ्रेणिशो	२२६७
सूषा म्यूर्णोतु वि योनिं	१४०७	हतासो अस्य वेशसो	७०७, ७१३
सोम एकैभ्यः पवते	२०३८		

हतास्तिरश्विराजयो	८१०	हिरण्यवर्णा सुभगा	१७८६
हतो येवाषः किमीणां	७०३	हिरण्यवर्णे सुभगे शुष्मे	४३४
हतो राजा किर्मणाम्	७०६, ७१२	हिरण्यवर्णे सुभगे सूर्ये	४३३
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां	५५४	हिरण्यशृङ्ग ऋषभः	१५७०
हरिणस्य रघुण्यदो	१९२	हिरण्यस्रगथं मणिः	१४८१
हरिमाणं ते अङ्गेभ्यो	२८०	हिरण्यानामेकोऽसि	१४२९
हिनोता नो अश्वरं	९११	हृदयात् ते परि क्लोत्रो	२१२, २९६
हिमवतः प्र स्रवन्ति	९७१	हेतिः पक्षिणी न	१५८१
हिरण्ययाः पन्थानः	४४१	होता यक्षद् वनस्पतिमभि	२२७२
हिरण्ययी नौरचरद्	४११, ४४०, ४५३	हो । यक्षद् वनस्पतिः	३७५, ३७६
हिरण्यवर्णाः शुचयः	९१६	ह्वयामि ते मनसा	२०४५

॥ आयुर्वेद-प्रकरणं समाप्तम् ॥



# दैवत-संहिता ।

(७)

## रुद्रदेवता ।

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,  
स्वाध्याय-मण्डल, भोंध ( जि० सातारा )

संवत् २०००, शके १८६५, सन १९४३

मुद्रक और प्रकाशक- वसंत श्रीपाद सातवळेकर, B. A.  
भारतमुद्रणालय, स्वाध्याय-मंडल, औंध, (जि. सातारा.)

# रुद्रदेवताका परिचय ।



## ‘रुद्र’ के विषयमें निरुक्तका मत ।

‘निघण्टु’ नामक वैदिक कोश में अ० ३।१६ में ‘स्तोत्रनामो’ में ‘रुद्र’ शब्दका निर्देश किया गया है । इससे ‘रुद्र’ शब्दका ‘स्तोता’ स्तुति करनेवाला, ऐसा अर्थ निघण्टुकार के मतसे है । इसलिये निघण्टुकारके मतानुसार ‘रुद्र’ शब्द मनुष्यवाचकही प्रतीत होता है । परंतु निरुक्तकार यास्काचार्यने इस ‘रुद्र’ देवताका परिगणन मध्यस्थानीय देवगण ( निघ० अ० १०।१ ) में किया है ।

अथातो मध्यस्थाना देवताः ॥ १ ॥ रुद्रो  
रौतीति सतः रोरुयमाणो द्रवतीति वा,  
रोदयतेर्वा, ‘यद् रुद्रोत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्’ इति  
काठकम् ‘यद् रोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम्’ इति  
हारिद्रविकम् ॥

( निरुक्त, देवतकाण्ड १०।१।१-६ )

“ अब मध्यम स्थान अर्थात् अंतरिक्ष स्थानके देवोंका विचार करना है । ‘रु’ अर्थात् शब्द करना, इस अर्थका यह शब्द है, किंवा शब्द करता हुआ पिघलता है, ऐसा इसका अर्थ है । रौनेके कारण इसको रुद्र कहा है, ऐसा काठक और हरिद्रविक शाखा संप्रदायवालोंका मत है । ” अर्थात् ‘रुद्र’ देवता अंतरिक्षमें है । मेघोंमें रहकर यह गर्जनारूप शब्द करता है, और गर्जना करता हुआ, मेघोंको द्रवरूप बनाकर वृष्टि कराता है । काठक और हरिद्रविक शाखा-संप्रदाय-वालोंका मत ऐतिहासिक है; देखिए—

( १ ) स किल पितरं प्रजापतिमिषुणा विध्यन्त-  
मनुशोचन्नरुदत् तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥

( २ ) यद् रोदीत्तद्रुद्रस्य रुद्रत्वम् ॥

( नि० भाष्य १०।१।६ )

“ वह रुद्र अपने प्रजापति पिताको बाणसे विद्ध करता हुआ देखकर रोया, इसलिये उसका नाम रुद्र हुआ । ” यह मत ऐतिहासिकोंका है । तथा—

एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयः ।

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभू भ्याम् ।

.....इति ॥

( नि० १।१३ )

“ एक मंत्र कहता है कि ‘ एकही रुद्र है, वह अ-द्वितीय है ’ । परंतु दूसरे मंत्रमें कहा है कि ‘ पृथ्वीमें असंख्य और हजारों रुद्र हैं ।

इस विषय में निरुक्तकार कहते हैं—

तासां महाभाग्यादेकैकस्या अपि बहूनि नाम-  
धेयानि भवन्ति ॥१॥.....तत्र संस्थानैकत्वं  
संभोगैकत्वं चोपेक्षितव्यम् ।..... ॥  
तत्रैतन्नरराष्ट्रमिव ॥ ५ ॥ ( नि० दे. ७।२।५ )

“ उन देवताओंमें एकएक देवताका महत्त्व विशेष होनेके कारण एक-एक देवताके अनेक नाम होते हैं । .....परंतु उन का स्थानसे और भोगसे एकत्व देखना चाहिए । ..... जैसा मनुष्योंका राष्ट्र । ”

अर्थात् एकएक देवताके विशेष गुणोंके कारण अनेक नाम हुआ करते हैं । नाम अनेक होनेपर भी भिन्न देवता नहीं होते हैं । अनेक शब्दोंसे एकही देवताका बोध होता है । .... क्योंकि उनके स्थान और भोगकी एकता देखकर उनकी विविधतामें एकता देखनी चाहिए । ..... जैसा राष्ट्रमें रंग-रूप-जातिके कारण अनेक प्रकारके लोग होनेपर भी उन सबमें एक राष्ट्रीयत्व होता है, उसी प्रकार अनेक देवताओंके ‘ स्थानके और भोगके एकत्व ’ के कारण उन अनेकोंमें एकत्व मानना उचित है ।

इसलिये यद्यपि किसी मंत्रमें ‘ एकही रुद्र है ’ ऐसा वचन आया अथवा दूसरे किसी मंत्रमें ‘ हजारों रुद्र हैं ’ ऐसा विधान

आगया, तथापि इतनेसे ही उनमें भेद है, ऐसा नहीं सिद्ध होता । यह उक्त निरुक्तवचनोंका तात्पर्य है ।

निरुक्तकार और क्या क्या कहते हैं, यह पहिले यहां देखेंगे और पश्चात् अन्य मतोंका विचार करेंगे—

**अग्निरपि रुद्र उच्यते ॥** ( नि. १०।७।२ )

“अग्निको भी रुद्र कहते हैं ।” इस प्रकार ‘रुद्र’ शब्दका ‘अग्नि’ ऐसा अर्थ यहां निरुक्तकारने दिया है ।

‘रुद्र’ शब्दका ‘परमात्मा, परमेश्वर’ ऐसा अर्थ स्पष्टतापूर्वक यद्यपि निरुक्तकारने नहीं दिया, तथापि ‘एकही देवताके अनेक नाम देवताके महत्त्वके कारण हुआ करते हैं ।’ ऐसा कहकर सूचित किया है कि परमात्माके अनेक नामोंमें ‘रुद्र’ भी एक नाम है; अर्थात् ‘रुद्र’ शब्दका परमेश्वरपर अर्थ भी हो सकता है ।

स्थानके एकत्वके कारण, भिन्न वर्णन होने पर भी, एकत्वकी कल्पना करनेकी सूचना निरुक्तकार यास्काचार्य पूर्वोक्त वचनमें देते हैं । सर्वव्यापक परमात्मा जैसा पृथ्वी पर है, वैसाही अंतरिक्षमें और ऊपर शूलोकमें भी व्यापक होनेसे उसका स्थान सर्वत्र है; इसलिये सब स्थानके देवताओंके सब शब्द उस एक अद्वितीय महा देवताके वाचक हो सकते हैं । इस तर्कशास्त्रसे हम निरुक्तकारका भाव जान सकते हैं । यही भाव श्वेताश्वतर उपनिषद्में विलकुल स्पष्ट है । देखिए—

**रुद्रके विषयमें उपनिषत्कारोंकी संमति ।**

श्वेताश्वतर उपनिषद्में ‘एक रुद्र है,’ इस विषयमें निम्न मंत्र आया है—

**एको ह रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य इमांल्लोकानी-  
शत ईशनीभिः ॥ प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सं-  
चुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि  
गोपाः ॥ २ ॥** (श्वे. उ. ३।२)

यही मंत्र निरुक्तभाष्यकारने निम्न प्रकार दिया है—

**एक एव रुद्रोऽवतस्थे न द्वितीयो रणे निघ्नन्  
पृतनासु शत्रून् ॥ संसृज्य विश्वा भुवनानि  
गोप्ता प्रत्यङ् जनांसंचुकोचान्तकाले ॥**

( नि. १।१४ दुर्गाचार्यटीका )

**एक एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थे ॥** (तै. सं. १।८।६।१)

“एकही रुद्र है, दूसरा रुद्र नहीं है । वह शत्रुओंको युद्धमें पराजित करता है । सब भुवनोंको उत्पन्न करके, उस सब

विश्वका संरक्षण करता है और अंतकालमें सबका संकोच (प्रलय) करता है ।”

ऊपर दिये हुए श्वेताश्वतर मंत्रका अर्थ—“एकही रुद्र है, वह किसी दूसरेकी सहायताकी अपेक्षा नहीं करता । वह अपनी शक्तियोंसे इन सब लोकोंको स्वाधीन रखता है । और प्रत्येक मनुष्यके अंदर रहता है । यह संरक्षक प्रभु सब विश्वको उत्पन्न करने और पालन करनेके पश्चात् अंतकालमें सबको संकुचित करता है ।” तथा—

**एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै य इमांल्लोका-  
नीशत ईशनीभिः ॥** (अथर्व-शिर. ५)

**रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणम् ॥** (अथर्व-शिर. ५)  
**यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध  
आविवेश ॥ य इमा विश्वा भुवनानि चकल्पे  
तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये ॥** (अथर्व-शिर. ६)

“एक ही रुद्र है । वह किसी दूसरेकी सहायता नहीं चाहता । जो इन सब लोक-लोकान्तरोंको अपनी शक्तियोंद्वारा स्वाधीन रखता है । “रुद्र” एकही है ऐसा कहते हैं । वह शाश्वत और प्राचीन है ।” “जो रुद्र अग्नि, जल, ओषधी, वनस्पति, आदिमें व्यापक है और जो इन सब भुवनोंको बनाता है, उस एक अद्वितीय तेजस्वी रुद्रके लिये नमस्कार है ।” तथा—

**यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो  
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स नो  
बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ ४ ॥** (श्वेता. उ. ३।४)  
**यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो  
महर्षिः ॥ हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स  
नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥ ११ ॥** (श्वेता. उ. ४।१२)

“जो सब देवताओंको जन्म देता है, जो सर्व द्रष्टा और सब विश्वका अधिपति है, जिसने पहिले हिरण्यगर्भ को उत्पन्न किया था, वह एक प्रभु रुद्र हम सबको शुभ बुद्धि देवे ।”

इस प्रकार ‘रुद्र’ शब्दसे ‘एक परमात्मा’ का बोध उपनिषदोंमें लिया है । इससे सिद्ध है कि ‘रुद्र’ शब्द परमात्म-वाचक है । यद्यपि इस समयका कोई कोशकार ‘रुद्र’ शब्दका ‘परमात्मा’ ऐसा अर्थ नहीं देता, तथापि कृष्णयजुर्वेदीय श्वेताश्वतर उपनिषद्के उक्त वचनद्वारा उस शब्दका परमात्म-वाचक अर्थ निःसंदेह सिद्ध है ।

### रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी संमति ।

‘रुद्र’ के एकत्वके विषयमें निरुक्तकारने दिया हुआ मंत्र पूर्व स्थलमें दिया ही है । वह आजकल किसी संहितामें नहीं मिलता । इसलिये अनुमान है कि वह किसी अन्य शाखाग्रंथमें पठित होगा और निरुक्तकारके समय वह शाखाग्रंथ उपलब्ध होगा । रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदमें ये वचन हैं—

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रूतम् । ... ३

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः । ... ४

तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एवा॥१२॥

एते अस्मिन्देवा एकवृतो भवन्ति १३ (अथर्व. १३।४।२)

“वह ही धाता, विधाता, वायु, अर्यमा, वरुण, रुद्र और महादेव है । उसीसे यह आकाश ऊपर हुआ है, यह सब महान् शक्ति उसी में है । वह एकही है । वह एक सर्वत्र व्यापता है । वह निश्चयसे एक है । सब देव उसमें एक जैसे होते हैं ।” इसमें बताया है कि एक सर्वव्यापक सर्वाधार आत्मतत्त्वका नाम भी रुद्र है ।

### सर्वव्यापक रुद्रदेव ।

एकही रुद्र सर्वत्र व्यापक है, इस आशयको निम्न मंत्र प्रकट कर रहा है—

यो अग्नौ रुद्रो यो अग्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध

आधिवेशा॥ य इमा विश्वा भुवनानि चाकल्पे

तस्मै रुद्राय नमोस्त्वग्नये ॥ (अथर्व० ७।९.२।१)

“ जो एक रुद्र देव अग्नि, जल, औषधि, वनस्पति आदि पदार्थोंमें व्याप्त है और जो सब भुवनोंको (चकल्पे) बना सकता है, उस (अग्नेय रुद्राय) एक तेजस्वी रुद्रदेवके लिये नमन है ।”

यह मंत्र बिलकुल स्पष्ट है और इससे रुद्रदेवकी सर्वव्यापकता सिद्ध होती है । जगत् की रचना करनेवाला, सब पदार्थोंमें व्यापक और सबका उपास्य जो देव है, उसीका उल्लेख यहां ‘रुद्र’ नामसे किया है । रुद्र शब्दके एकवचन होनेके कारण वह एक ही है, ऐसा सिद्ध होता है । तथा सर्वव्यापक जो होता है, वह एकही हो सकता है । इससे भी उसका एकत्व सिद्ध ही सकता है । रुद्रदेवका ही सब कुछ है, ऐसा अथर्ववेदीय रुद्र-सूक्तके निम्न मंत्रमें कहा है—

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेद-

मुप्रोर्वन्तरिक्षम् । तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत्प्राणत्

पृथिवीमनु ॥१०॥ (अथर्व. ११।२।१०)

“हे रुद्र ! इन चार दिशाओंमें तथा छुलोक, पृथ्वी और इस

बड़े अंतरिक्षमें जो कुछ है, वह सब तेरा ही है । जो कुछ (आत्मन्-वत्) आत्मायुक्त अर्थात् प्राण धारण करनेवाला है, जो इस पृथ्वी पर जीवनरूपसे रहता है, वह सब तेरा ही है ।”

इस तरह ‘रुद्र’ का सामर्थ्य और प्रभुत्व चारों ओर सब दिशा विदिशाओंमें है, ऐसा वर्णन इस मंत्रमें है । इससे सिद्ध होता है कि उस जगन्निघन्ता परमात्माकाही यह ‘रुद्र’ नाम है ।

केवल इतनेही प्रमाणोंसे ‘परमात्मा’ वानक ‘रुद्र’ शब्द है, ऐसा सिद्ध होगा । तथापि परमात्माके अनेक गुण वेदमंत्रोंद्वारा ‘रुद्र’ के साथ मिलते हैं वा नहीं, यह हम अब देखते हैं—

### जगत् का पिता रुद्र ।

‘पिता’ का अर्थ ‘रक्षक और अपने वीर्यद्वारा जन्म देनेवाला’ ऐसा होता है । ‘रुद्र’ सब भुवनोंका पिता है, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया

रुद्रमक्तौ ॥ बृहन्तमृष्वमजरं सुपुञ्जमृधग्युवेम

कविनेषितासः । (ऋ० ६।४९।१०)

“( दिवा अक्तौ ) दिनमें और रात्रीमें ( आभिः गीर्भिः )

इन वचनोंके साथ ( भुवनस्य पितरं ) सब सृष्टिके पिता ( रुद्रं रुद्रं ) बलवान् रुद्र देवकी ( वर्धय ) बधाई करो । उनके महत्त्वकी प्रशंसा करो । उस ( बृहन्तं ) महान् ( ऋष्वं ) श्रेष्ठ ज्ञानी तथा ( अ-जरं ) जीर्ण अथवा क्षीण न होनेवाले और ( सु-सु-म्रं ) अत्यंत उत्तम विचारशील, रुद्रदेवताकी, ( कविना इषितासः ) बुद्धिवानोंके साथ उन्नतिकी इच्छा करनेवाले हम सब ( ऋधक् हुवेम ) विशेष प्रकारसे उपासना करेंगे ।”

इस मंत्रमें वह ‘रुद्र’ देव ‘महान्, ज्ञानी, अजर, अमर और सुविचारी’ है, ऐसा कहा है । ये उनके गुण परमात्माके गुणोंके साथ मिलनेवालेही हैं, तथा ‘भुवनस्य पितरं रुद्रं’ ये शब्द रुद्रदेवका वास्तविक स्वरूप बताते हैं । ‘सृष्टिका पिता रुद्र है ।’ जगतका पिता जो अजर, अमर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है, वह परमात्माके सिवा दूसरा कौन हो सकता है? इस प्रकार इस मंत्रका ‘रुद्र’ देव उस अद्वितीय परमात्माका ही नाम है, ऐसा दीखता है । इस जगदीशका वर्णन निम्न मंत्रमें देखने योग्य है—

### सब सृष्टिका स्वामी रुद्र ।

स्थिरेभिरंगैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः

पिपिशे हिरण्यैः ॥ ईशानादस्य भुवनस्य भूरेर्न

वा उ योषद्गुद्रावसुर्यम् ॥ (ऋ० २।३।१९)



“( स्थिरोभिः अंगैः ) दृढ अवयवोंसे ( पुरु-रूपः ) अनेक पदार्थोंको आकार देनेवाला ( उग्रः ) महान् प्रबल और ( बभ्रुः ) तेजस्वी रुद्र ( शुक्रैभिः हिरण्यैः ) शुद्ध तेजोंके साथ ( पिपिशे ) शोभता है । ( अस्य भुवनस्य ) इस सब सृष्टिके ( भूरेः ईशानात् रुद्रात् ) महान् स्वामी रुद्रदेवसे ( असुर्यं ) उसकी महान् जीवनशक्ति ( न वा उ योषत् ) कभी पृथक् नहीं होती ।”

यह ‘ रुद्र ’ देव जगत्को निर्माण करके सब पदार्थोंको रंग, रूप और आकार देता है । वह अत्यंत तेजस्वी और सर्व शक्तिमान् है । अपनेही विविध तेजोंसे और पवित्रताओंके कारण वह शोभायमान हो रहा है । वह सब जगत्का ईश्वर है और उससे उसकी शक्ति कभी पृथक् नहीं होती । यह मंत्र ‘रुद्र’ देवताके सब शंकाओंको दूर कर सकता है । ‘ भुवनस्य ईशानात् रुद्रात् असुर्यं न योषत् ।’ जगत् के स्वामी रुद्रदेवसे उसकी दिव्य शक्ति कभी पृथक् नहीं होती । इस वाक्यसे रुद्र देवताके वास्तविक मूल स्वरूपका पता लग सकता है ।

**भुवनस्य पिता रुद्रः ॥ ( ऋ० ६।४९।१० )**

**भुवनस्य ईशानः रुद्रः ॥ ( ऋ० २।३३।९ )**

उक्त दो मंत्रोंके ये दो वाक्य एकही आशयको बतानेवाले हैं, इसका यदि पाठक विचार करेंगे, तो वेदमंत्रोंके शब्दोंकी विशेष योजनाका पता लग सकता है । यह वाक्य यदृच्छासे नहीं बने हैं, विशेष हेतुपूर्वकही यह शब्दप्रयोग हुआ है, ऐसा प्रतीत होता है । इससे अगला मंत्र यहां अब देखिए ।

### सर्वशक्तिमान् रुद्र ।

**अर्हन् विभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम् ॥ अर्हन्निदं द्यसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्र त्वदास्ति ॥ ( ऋ० २।३३।१० )**

“( अर्हन् ) योग्य होनेके कारण रुद्र सब शस्त्रालोंको धारण करता है । रुद्र योग्य होनेके कारण सब विश्वको रूप और तेज देता है । योग्य होनेके कारणही इस ( अभ्वं विद्वं ) महान् विश्व पर ( द्यसे ) दया करके उस सबका संरक्षण करता है । हे रुद्र ! ( त्वत् ) तेरेसे कोई भी अधिक ( ओजीयः ) बलवान् ( न वा अस्ति ) नहीं है ।”

इस मंत्रमें ‘त्वत् ओजीयो न वा अस्ति ।’ तेरेसे अधिक शक्तिशाली कोई भी नहीं है, अर्थात् तूही सबसे अधिक बलवान् है । इससे सर्वशक्तिमान् रुद्रदेव परमात्माही है, ऐसा दिखाई दे रहा है । अब निम्न लिखित मंत्र देखिए । इसमें रुद्रदेव

सब जनताका राजा है, ऐसा कहा है—

### गुहा-निवासी रुद्र ।

**स्तुहि श्रुतं गर्तसदं जनानां राजानं भीममुपहत्नुमुग्रम् ॥ मृडा जरित्रे रुद्र स्त्वानो अन्यमस्सत्ते नि वपन्तु सेन्यम् ॥ ( अथर्व० १८।१।४० )**

“( उग्रं भीमं ) उग्र और शक्तिमान्, ( उप-हत्तुं ) प्रलयकर्ता, ( श्रुतं ) ज्ञानी, ( गर्त-सदं ) सबके अंदर रहनेवाला, ( जनानां राजानं ) सब लोकोंका राजा रुद्र है, उसकी ( स्तुहि ) स्तुति करो । हे रुद्र ! तेरी ( स्त्वानः ) प्रशंसा होनेपर ( जरित्रे ) उपासकको तू ( मृडा ) सुख दे । ( ते सेन्यं ) तेरी शक्ति ( अस्मत् अन्यं ) हम सबको बचाकर दूसरे दुष्टका ( निवपन्तु ) नाश करे ।”

इस मंत्रमें जनानां राजानं रुद्रं ये शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं । सब लोगोंका एक राजा रुद्र है ।

गर्त-सद्	} =निहितं गुहा सत् । ( यजु० ३२।८ )	
गुहाऽऽहितः		
गुहा-चरः		} =परमं गुहा यत् । ( अथर्व० २।१।१;२ )
गुहा-शयः		

उक्त शब्दोंके साथ ‘ गर्त-सद् ’ शब्द देखने और विचार करनेसे इस शब्दके गूढ आशयका पता लग सकता है । ‘ गुहाऽऽहित ’ और ‘ गर्त-सद् ’ ये दोनों शब्द एकही अर्थ बता रहे हैं । ‘ गर्त ’ शब्दका ‘ गुहा ’ ऐसा अर्थ ऊपर दिया ही है । अस्तु । इस मंत्रसे भी ‘ रुद्र ’ का पूर्वोक्त भावही दृढ हो रहा है । तात्पर्य ‘ रुद्र ’ शब्दका ‘ सर्वव्यापक परमात्मा ’ ऐसा एक अर्थ निःसंदेह है । इस मंत्रका ऋग्वेदका पाठ यहां देखिए—

**स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम् ॥ मृळा जरित्रे रुद्र स्त्वानोऽन्यं ते अस्मान्नि वपन्तु सेनाः ॥ ( ऋ० २।३३।११ )**

इसका अर्थ स्पष्ट है ।

### अपने अंतःकरणमें रुद्रकी खोज ।

**अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया ॥**

**गृभ्णन्ति जिह्वया ससम् ॥ ( ऋ० ८।७२।३ )**

“ मुमुक्षुजन ( तं रुद्रं ) उसी रुद्रको ( जने परः अन्तः ) मनुष्यके अत्यंत बीचके अंतःकरणमें ( मनीषया ) बुद्धिद्वारा जानना ( इच्छन्ति ) चाहते हैं । ( जिह्वया ) जिह्वासे (ससं) फलको ( गृभ्णन्ति ) लेते हैं ।”

मुमुक्षु जन जिह्वासे सात्त्विक पदार्थोंको लेते हैं । 'सस' शब्दका अर्थ 'फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी, ओषधि, वनस्पति' इतनाही है । जिह्वासे जिस अन्नका ग्रहण करना उचित है, उसका इस मंत्रने यहां उपदेश किया है । फल, धान्य, अनाज, शाकभाजी, आदि पदार्थही खाने चाहिए । इस प्रकारका सात्त्विक आहार करनेवाले मुमुक्षु लोग उस रुद्र देवको अर्थात् परमात्माको मनुष्यके अतःकरणके अत्यन्त गहरे स्थानमें अपनी सात्त्विक विचारशक्तिके द्वारा हूँ हूँ कर देखनेवाँ इच्छा करते हैं ।

### अनेक रुद्रोंमें व्यापक ' एक रुद्र । '

पूर्वाक्त प्रमाणोंसे 'रुद्र' एक है और वह सर्वत्र व्यापक है, यह बात सिद्ध हो चुकी । अब अनेक रुद्रोंका वर्णन, जो वेदमें आता है, उसका विचार करना चाहिए ।

**रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे ॥** (ऋ. १०।६।४।८)

“(रुद्रेषु) अनेक रुद्रोंमें रहनेवाले (रुद्रियं रुद्रं) प्रशंसा करने योग्य एक रुद्रकी (हवामहे) हम सब पूजा करते हैं ।”

एक रुद्रदेव अनेक रुद्रोंमें रहता है, अर्थात् यह एक रुद्र सबमें व्यापक है और अनेक रुद्र व्याप्य हैं । अनेक रुद्र अणु हैं और यह एक रुद्र महान् है । इस एक रुद्रके द्वारा अनेक रुद्र प्रेरित होते हैं, अर्थात् अनेक रुद्र प्रेर्य हैं और यह एक रुद्र सबका प्रेरक है । तथा—

(१) शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलापः ॥ (ऋ. ७।३।५।६)

(२) रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति नः ॥ (ऋ. १०।६।९।३)

(३) रुद्रं रुद्रेभिरावहा बृहन्तम् ॥ (ऋ. ७।१०।४)

“(१) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्र हम सबका कल्याण करे ।

(२) अनेक रुद्रोंके साथ एक रुद्रदेव हम सबको सुख देवे । (३) अनेक रुद्रोंके साथ रहनेवाले एक महान् रुद्रकी पूजा करो ।” ये सब मंत्र उक्त भाव बता रहे हैं । अनेक छोटे रुद्रोंमें एक महान् रुद्र की प्रेरणा होती है, इस आशयका ध्वनि निम्न मंत्रमें देखने योग्य है—

**तदिद्गुद्रस्य चेतति यक्षं प्रक्षेपु धामसु ॥**

**मनो यत्रा वि तद्घुर्विचेतसः ॥** (ऋ. ८।१३।२०)

“(रुद्रस्य तत् यक्षं) रुद्र देवकी वह एक महान् प्रेरक शक्ति (प्रक्षेपु धामसु) अनेक सनातन स्थानोंमें (इत् चेतति) निश्चयसे चेतना देती है । (यत्र) जिस शक्तिमें (वि-चेतसः) विशेष ज्ञानी लोक (तत् मनः) अपना वह मन (वि-दधुः) विशेष

प्रकार धारण करते हैं ।”

इस मंत्रमें 'रुद्र' की 'यक्ष' शक्तिका वर्णन है । यह शक्ति सब को सतत चेतना दे रही है ।

### एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं ।

**रुद्रस्य ये मीळुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधु-  
विर्भरध्वै ॥ विदे हि माता महो मही वा  
सेत्पृश्निः सुभ्वे गर्भमाधात् ॥ ३ ॥** (ऋ० ६।६।३)

“(मीळुषः रुद्रस्य) एक दानशूर रुद्रदेवके (ये पुत्राः) जो अनेक रुद्र संज्ञकपुत्र हैं, (यान् च उ नु) और जिनका निश्चयसे (भरध्वै) भरण पोषण पालन करनेकी सब शक्ति वह एक अद्वितीय रुद्र (दाधुविः) धारण करता है । (महः) इस महान् रुद्रकी शक्तिको (सा मही माता विदे) वह मूल प्रकृतिरूपी बड़ी माता जानती है, अथवा प्राप्त करती है और (सु-भ्वे) जीवोंकी उत्तम अवस्था होनेके लिये (सा पृश्निः) वह विविध रंगरूपवाली माता (इत्) निश्चयसे (गर्भ माधात्) जीवोंको गर्भमें धारण करती है ।”

इस मंत्रमें अनेक रुद्र इस एक रुद्रके पुत्र हैं, ऐसा स्पष्ट कहा है । इस लिये परमपिता परमात्मा ही रुद्र है और सब जीव उसके पुत्र हैं, ऐसाही इसका अर्थ मानना उचित है ।

### अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं ।

ये अनंत रुद्र जीव हैं, ये प्राणी अर्थात् जीवन धारण करनेवाले हैं । ये मर्य, मर्त्य हैं । इनका शरीर धारण होनेके कारण जन्म होता है और मृत्युभी होती है । यद्यपि जन्ममरण शरीरका धर्म है, तथापि इन रुद्रोंकी शरीरके साथ स्थिति होनेके कारण, शरीरके साथ इनका जन्म और मरण हुआ, ऐसा कहा जाता है । अर्थात् शरीरके धर्मोंका इनके ऊपर आरोपण होता है । ये 'मर्त्य' हैं, ऐसा निम्न मंत्रमें कहा है—

**ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास उक्ष्णो रुद्रस्य मर्या  
असुरा अरेपसः ॥ पावकासः शुचयः सूर्या  
इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्षसः ॥**

(ऋ० १।६।४।२)

“(ते) वे अनंत रुद्र (ऋष्वासः) उच्च (दिवः उक्ष्णः) दिव्य बलसे युक्त (असु-राः) जीवनशक्तिके प्रकाशनेवाले, (अ-रेपसः) निष्कलंक और (मर्याः) मर्त्य हैं । वे उस (रुद्रस्य जज्ञिरे) एक रुद्रसे प्रकट होते हैं । वे (पावकासः)

अग्निके समान पवित्र ( शुचयः ) तेजस्वी और शुद्ध ( सूर्य इव सत्वानः ) सूर्यके समान सत्त्वशाली और ( द्रप्सिनः न ) वर्धा करनेवाले मेघोंके समान ( घोर-वर्षसः ) सुंदर और विशाल रूप धारण करनेवाले हैं ।”

इस मंत्रमें रुद्रसंज्ञक जीवके गुणधर्म बताये हैं। इनमें ‘मर्त्य’ शब्द आया है। प्राणी, शरीरधारी, मरणधर्मवाला, ऐसा उस शब्दका अर्थ है। जिन अनंत रुद्रोंमें एक महान् रुद्र व्यापक हो रहा है वे अनंत रुद्र ‘अनंत मर्त्य’ प्राणी हैं, यह भाव इस मंत्रसे प्रकट हो रहा है। ‘जनानां राजा रुद्रः’ ऐसा एक वचन पूर्व स्थलमें आया है। उसके साथ इस मंत्रका आशय ‘मर्त्यानां पिता रुद्रः।’ देखने योग्य है। एक ही भाव किस प्रकार भिन्न भिन्न प्रकारसे बताया गया है, यह यहां देखने योग्य है। इसी विषयका स्पष्टीकरण करनेवाले निम्न लिखित मंत्र यहां देखिए—

क ई व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा  
स्वश्वाः ॥१॥ न किर्होषां जनुंषि वेद ते अंग  
विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥ ( ऋ० ७।५६ )

“(अध) अजी! (स्वश्वाः = सु-अश्वाः) उत्तम भोग भोगनेवाले, (स-नीळाः) एक आश्रयसे रहनेवाले और (व्यक्ताः नरः) अलग अलग दीखनेवाले पुरुष (के) कौन हैं? वे (रुद्रस्य मर्याः) रुद्रके मर्त्य पुत्र हैं। (एषां जनुंषि) इनके जन्मका वृत्तांत (न किः वेद) कोईभी नहीं जानता? हे (अंग) प्रिय! (ते मिथः) वेही परस्पर एक दूसरेका (जनित्रं) जन्म (विद्रे) जानते हैं।”

इस मंत्रमें ‘रुद्रस्य मर्याः’ रुद्रके मर्त्य पुत्रोंका वर्णन फिर आया है। इनमें अलग अलग व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तित्व, पृथक्त्व, इकाई है, इस लिये इनको ‘व्यक्त’ अर्थात् ‘व्यक्ति-भाव’ से युक्त कहा है। प्रकृति और पुरुष ऐसे जो दो भेद हैं, उनमें ये ‘पुरुष’ हैं, इसलिये मंत्रमें इनको ‘नर’ कहा है। एक ईश्वरके आश्रयसे ये रहते हैं, इसलिये इन सबको ‘स-नीळाः’ (स-नीडाः) कहा है। यहां—

यत्र विश्वं भवत्येक-नीडम् ॥ (यजु० ३२।८)

यत्र विश्वं भवत्येक-रूपम् ॥ (अथर्व० २।१।१)

इन मंत्रोंके ‘एक-नीडं’ और ‘एक-रूपं’ ये शब्द देखने योग्य हैं। ‘स-नीळ, स-नीड, एक-नीड, एक-रूप’ ये सब शब्द ‘सबका एकही आश्रयस्थान है,’ ऐसा बता रहे हैं।

इस विचारसे पता लग जायगा कि (१) अनंत रुद्रोंका जन्म, (२) उनको पुत्र कहना, (३) उनकी माताका वर्णन, (४) उनके गर्भधारणका वर्णन यहां है।

रुद्रके पुत्र मरुत् हैं। मरुतोंके विषयमें श्री सायणार्थ लिखते हैं कि ‘मनुष्यरूपा वा मरुतः। पूर्वं मनुष्याः संतः पश्चात् सुकृतविशेषेण ह्यमरा आसन्।’ मरुत् पहिले मनुष्यही होते हैं, परंतु उत्तम प्रशस्त कर्म करनेके कारण जो अमर बनते हैं (ऋ. सायणभाष्य, मं. १०, सू. ७७, मं. २) इस प्रकार मरुतोंके मनुष्यरूप होनेमें शंकाही नहीं है। मनुष्योंके अतिरिक्त भी मरुतोंका अर्थ है, उसका विचार मरुतदेवताके ग्रंथमें किया गया है। अब मरुतोंके मनुष्य होनेके विषयमें वेदका प्रमाण देखिए—

अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आत्वेपमुग्रमव  
ईमहे वयम् ॥ ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः  
सिंहा न हेषकृतवः सुदानवः ॥ (ऋ. ३।२६।५)

“(ते रुद्रियाः मरुतः) वे रुद्रके पुत्र मरुत् (अग्नि-श्रियः) अग्निके समान तेजस्वी, (स्वानिनः) उत्तम शब्द बोलनेवाले, (सिंहा न हेषकृतवः) सिंहके समान गंभीर शब्द करनेवाले, (वर्ष-निर्णिजः) वृष्टिके द्वारा शुद्ध होनेवाले, (सु-दानवः) उत्तम दान करनेवाले, (विश्वकृष्टयः) सर्व-मनुष्य हैं। (वयं) हम सब (त्वेपं उग्रं अवः) तेजस्वी शौर्यमय संरक्षण उनसे (आ ईमहे) प्राप्त करते हैं।”

इस मंत्रमें ‘विश्व-कृष्टि’ शब्द अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ‘कृष्टि’-शब्दका अर्थ— (१) मनुष्यमात्र, मानवजाति है। (२) देशनिवासी राष्ट्रीय जनता। ‘विश्व-कृष्टिः’ = (विश्व+जन=सर्व+जन) सब मनुष्य, मनुष्यमात्र, मनुष्यजाति।

यहां कई शंका करेंगे कि मानवजातिके विषयका उल्लेख वेदमें कहां है? वैदिक धर्म ‘वैयक्तिक’ होनेके कारण उसमें ‘सार्व-जनिक भाव’ नहीं होगा। इस शंकाका उत्तर देनेके लिये यहां सार्वजनिक भाव बतानेवाले कुछ वैदिक शब्दोंका उल्लेख करना चाहिए। देखिए निम्न शब्द—

(१) विश्व-कृष्टिः = (सर्व-मनुष्य) = मानवजाति।

(२) विश्व-चर्षणिः = (सर्व-जन) = सब लोक, मनुष्य, मनुष्यमात्र, मानवजाति।

(३) विश्व-जनः = (सर्व-जन) = मानवजाति।

(४) विश्व-मनुष्यः = (सर्व-मनुष्य) = मनुष्यमात्र।

(५) विश्व-मानुषः = (सर्व-मनुष्य) = मनुष्यमात्र।

- ( ६ ) विश्वा-नरः = ( सर्व-नर ) = सब मनुष्य ।  
 ( ७ ) पंच-जनाः = ज्ञानी, शूर, व्यापारी, कारीगर और साधारण लोक । ये पांच प्रकारके लोक मिलकर सब जनता होती है ।

इस तरह सार्वजनिक भावोंकी विस्तारपूर्वक कल्पना वेदमेंही स्पष्ट है । वैदिक धर्म ' सार्वजनिक भावका धर्म ' ही है ।

प्रस्तुत मंत्रमें ' विश्व-कृष्टि ' शब्द ' मानव-जाति ' का भाव बता रहा है । मरुतोंका अथवा रुद्र-पुत्रोंका अर्थात् छोटे छोटे असंख्य रुद्रोंका स्वरूप ' विश्व-कृष्टि ' शब्दने बताया है । इस प्रकार अनेक रुद्र ये अनंत मानवप्राणी हैं, यह बात सिद्ध हो गई । ' मर्य ' शब्दसे साधारण मर्त्य अर्थात् मरणधर्मवाले प्राणिमात्र, ऐसार्भा भाव निकल सकता है । इसका निश्चय अब करेंगे ।

### अनेक रुद्रोंकी संख्या ।

इन अनंत रुद्रोंकी संख्याके विषयमें वाजसनेय यजुर्वेदमें निम्न लिखित मंत्र देखने योग्य है—

असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ॥  
 ( यजु. १६।५४ )

“ असंख्यात हजार ( ये रुद्राः ) जो रुद्र ( भूम्यां अधि ) पृथ्वी पर हैं । ” अर्थात् ये अनेक रुद्र अनंत हजार इस पृथ्वीपर हैं । प्राणियोंकी संख्या किसी समयमें भी पृथ्वीपर निश्चित नहीं कही जा सकती । क्योंकि प्राणियोंकी संख्या अनेक कारणोंसे बढ़ भी सकती है और घट भी सकती है । इस हेतुसे यहां निश्चित संख्या नहीं कही, परंतु ' अनंत हजार ' ऐसही कहा है । इससे वेदके शब्दोंका अद्भुत महत्त्व ज्ञात हो सकता है ।

यजुर्वेद वाजसनेय संहिता अ० १६ में रुद्रोंके कई नाम लिखे हैं । यह अध्याय काण्व संहितामें १७ वां है । और तैत्तिरीय संहितामें यही रुद्राध्याय ४।५।१।१ में है । अब इन रुद्रोंका वर्गीकरण करना है । परंतु इससे पूर्व ' रुद्र ' शब्दका भाष्यकार आचार्योंका किया हुआ अर्थ अवश्य देखना चाहिए । क्योंकि उन अर्थोंको देख करहि हम रुद्रोंके वर्ग बना सकते हैं ।

### ✓ रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।

श्री सायणाचार्यजीने चारों वेद और सब मुख्य ब्राह्मणोंपर भाष्य किया है । इनका भाष्य विशेषतया याज्ञिक पद्धतिके अनुसार है । इस लिये इनका भाष्य देखनेसे याज्ञिक-संप्रदायवालोंका मत

ज्ञान हो सकता है । अब देखिए श्री सायणाचार्यजी ' रुद्र ' के विषयमें क्या कहते हैं—

### ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्रस्य कालात्मकस्य परमेश्वरस्य । ( ऋ. ६।२८।७ )
२. रुद्राय क्रूराय भद्रये । ( ऋ. १।२७।१० )
३. रुत् दुःखं तद्धेतुभूतं पापं वा । तस्य द्रावयितारौ रुद्रौ । संग्रामे भयंकरं शब्दयन्तौ वा ॥ ( ऋ. १।१५८।११ )
४. रुद्राणां..... प्राणरूपेण वर्तमानानां मरुतां । यद्वा । रोदयितृणां प्राणानां । प्राणा हि शरीरान्निर्गताः सन्तो बंधुजनान् रोदयन्ति ॥ ( ऋ. १।१०।१।७ )
५. रुद्राणां रोदनकारिणां शूरभटानां वर्तनिर्माणौ घाटीरूपो पयोस्तौ रुद्रवर्तनी ॥ ( ऋ. १।३।३ )
६. रोदयन्ति शत्रूनि रुद्राः । ( ऋ. ३।३।२।३ )
७. रुद्रौ संग्रामे रुदन्तौ । ( ऋ. ८।२६।५ )
८. हे रुद्र ! जरादिगोमस्य प्रेक्षणेन मंहनैर्देव । ( ऋ० १।१६९।१ )
९. रुद्रियं सुखं । ( ऋ. २।११।३ )
१०. रुद्रियं रुद्रसंबन्धि भेषजं । ( ऋ. १।४३।२ )

### अथर्ववेद-भाष्य ।

१. रोदयति सर्वं अंतकाले इति रुद्रः संहर्ता देवः । ( अथर्व. १।१९।३ )
२. रौति शब्दायने तारकं ब्रह्म उपदिशतीति रुद्रः । तथा च जाबालश्रुतिः । ' अत्र हि जन्तोः प्राणे-पूक्रामस्तु रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे ॥ ( जाबा. उ. १ ) ( अथर्व. २।२७।६ )
३. तस्मै जगत्स्रष्टे सर्वं जगदनुप्रविष्टाय रुद्राय । ( अथर्व. ७।९२।१ )
४. रुत् दुःखं दुःखहेतुर्वा तस्य द्रावको देवो रुद्रः परमेश्वरः । ( अथर्व. १।१।२।३ )
५. सर्वप्राणिनो मामनिष्ट्वा त्रिनश्यन्ति इति स्वयं रौति रुद्रः । ( अथर्व. १।८।१।४० )
६. स्वसेवकानां दुःखस्य द्रावकत्वं ( रुद्रस्य ) । ( अथर्व. १।८।१।४० )
७. महाबुभुक्षु रुद्रं ॥ ( अथर्व. १।८।१।४० )
८. रुद्रस्य हिंसकस्य देवस्य ॥ ( अथर्व. ६।५९।३ )

९. रुद्रस्य उराराभिमानिदेवस्य हेतिः आयुधं ।  
( अथर्व. ४।२।१७ )
१०. रुद्रः रोदयिता शूलाभिमानी देवः ।  
( अथर्व. ६।२०।१ )
११. रोदयति उपतापेन भ्रूणि मोचयति इति रुद्रो  
उराराभिमानी देवः । ( अथर्व. ६।२०।२ )
१२. रोदयति शत्रूनि रुद्रः । ( अथर्व. ७।९२।१ )
१३. रुद्रा रोदकाः । ( अथर्व. १९।९।१० )
१४. रुद्राः रोदयितारः अंतरिक्षस्थानीया देवाः ।  
( अथर्व. १९।११।४ )
१५. रुद्रः पशूनां अभिमन्ता पीडाकरो देवः ।  
( अथर्व. ६।१४।११ )

ये ' रुद्र ' शब्दके श्री सायणाचार्यजीके किये हुए अर्थ हैं। अब यजुर्वेदके भाष्यमें श्री उवटाचार्य और श्री महीधरा-  
चार्य क्या कहते हैं, देखिए—

### श्री उवटाचार्यजीका 'रुद्र' विषयक मत ।

१. रुद्रैः स्तोतृभिः । ( यजु. भाष्य. ३।८।१६ )
२. रुद्रवर्तनी रुगणवर्तनी ॥ ( य. १९।८२ )
३. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ । ( य. २०।८१ )
४. रुद्रैः धीरैः ॥ ( य. ११।५५ )

### श्री महीधराचार्यजीका 'रुद्र' संबंधी मत ।

१. रुद्रस्य शिवस्य । ( वा. यजु. भाष्य १६।५० )
२. रुद्राय शंकराय । ( य. १६।४८ )
३. रुद्रं दुःखं द्रावयति रुद्रः ।  
रवणं रुद्रं ज्ञानं राति ददाति ।  
पापिनो नरान् दुःखभोगेन रोदयति । ( य. १६।१ )
४. रुद्रस्य क्रुदेवस्य । ( य. ११।१५ )
५. रुद्रं दुःखं द्रावयति नाशयति रुद्रः । ( य. १६।२८ )
६. रुद्रो दुःखनाशकः । ( य. १६।३९ )
७. रोदयति विरोधिनां शत्रुं इति रुद्रः । ( य. ३।५७ )
८. रुद्रौ शत्रूणां रोदयितारौ । ( य. २०।८१ )
९. रुद्रैः धीरैः बुद्धिमद्भिः । ( य. ११।५५ )
१०. रुद्रैः स्तोतृभिः । ( य. ३।८।१६ )
११. रुद्रवर्तनी रुगणवर्तनी भिषजो भस्विनी ।  
( य. १९।८२ )

१२. रुद्रस्य भक्षणे चौर्ये वा प्रवर्त्य, रोगमुत्पाद्य, जनान्  
प्रमत्तितेभ्यः पृथ्वीस्थेभ्यो भक्षायुजेभ्यो रुद्रेभ्यः ॥  
( य. १६।६६ )
१३. कुवातेनाक्षं विनाश्य चातरोगं वा उत्पाद्य जनान्  
प्रमत्तित । ( य. १६।६५ )

### श्री स्वामी दयानंद सरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत ।

#### ऋग्वेद-भाष्य ।

१. रुद्राय परमेश्वराय जीवाय वा ॥ ..... ॥ रुद्रशब्देन  
त्रयोऽर्था गृह्यन्ते । परमेश्वरो जीवो वायुश्चेति । तत्र परमे-  
श्वरः सर्वज्ञतया येन यादृशं पापकर्म कृतं तत्फलदानेन रोद-  
यिताऽस्ति । जीवः खलु यदा मरणसमये शरीरं जहाति  
पापफलं च भुंक्ते तदा स्वयं रोदिति । वायुश्च शूलादि-  
पीडा कर्मणा कर्मनिमित्तः सन् रोदयितास्ति । अत एते  
रुद्रा विज्ञेयाः । ( ऋग्वेद. १।४३।१ )

२. रुद्रः दुःखनिवारकः । ( ऋ. २।३३।७ )
३. रुद्रः दुष्टानां भयंकरः । ( ऋ. ५।४६।२ )
४. रुद्रः दुष्टदण्डकः । ( ऋ. ५।५१।१३ )
५. रुद्रः सर्वरोगदोषनिवारकः । ( ऋ. २।३३।९ )
६. रुद्रस्य रोगाणां द्रावकस्य निःसारकस्य ।  
( ऋ. ७।५६।१ )

७. रुद्रः रोगाणां प्रलयकृत् । ( ऋ. २।३३।६ )
८. रुद्रः कुपथ्यकारिणां रोदयिता । ( ऋ. २।३३।४ )
९. रुद्रस्य प्राणस्य वर्तनिः मार्गः ययोस्तौ रुद्रवर्तनी ।  
( ऋ. १।३।३ )
१०. रुद्रं शत्रुरोद्धरं । ( ऋ. १।११।४।४ )
११. रुद्रस्य शत्रूणां रोदधितुर्महावीरस्य । ( ऋ. १।८।५ )
१२. रुद्राणां प्राणानां दुष्टान् श्रेष्ठान् रोदयति ।  
( ऋ. १०।१०।१।७ )
१३. रुद्र ! रुत ! सत्योपदेशान् राति ददाति तस्संजुहौ ।  
( ऋ. १।११।४।३ )
१४. रुद्रः अधीतविद्यः । ( ऋ. १।११।४।११ )
१५. रुद्राय सभाध्यक्षाय । ( ऋ. १।११।४।६ )
१६. रुद्रः न्यायाधीशः । ( ऋ. १।११।४।२ )
१७. रुद्रियं रुद्रस्येदं कर्म । ( ऋ. १।४।३।२ )

**यजुर्वेद-भाष्य ।**

१. रुद्रः परमेश्वरः। चतुश्चत्वारिंशद्वर्षकृतब्रह्मचर्यो विद्वान्  
वा । ( यजु. ४।२० )
२. रोदयत्यन्यायकारिणो जनान् स रुद्रः । ( य. ३।५७ )
३. दुष्टानां रोदयिता विद्वान् रुद्रः । ( य. ४।२१ )
४. रुद्रः शत्रूणां रोदयिता शूरवीरः । ( य. ९।३९ )
५. रुद्रस्य शत्रुरोदकस्य स्वसेनापतेः । ( य. ११।१५ )
६. रुद्रः जीव । ( य. ८।५८ )
७. रुद्राः एकादशप्राणाः । ( य. २।५ )
८. रुद्राः प्राणरूपा वायवः । ( य. ११।५४ )
९. रुद्रा बलवन्तो वायवः । ( य. १।५।११ )
१०. रुद्राः सजीवा भजीवाः प्राणाद्यो वायवः ।  
( य. १६।५४ )
११. रुद्रा मध्यस्थाः । ( य. १२।४४ )
१२. रुद्रा रुद्रसंज्ञका विद्वांसः । ( य. ११।५८ )
१३. रुद्रः राजवैद्यः । ( य. १६।४९ )
१४. रुद्रस्य सभेशस्य । ( य. १६।५० )

इस तरह भाष्य में अर्थ हैं ।

यजु० अ० १६ में रुद्रवाचक अनेक पद आये हैं । इनकी संख्या लगभग २४० है ।

- ( १ ) विद्व-रूप, ( २ ) विद्युत्, ( ३ ) वायु, ( ४ ) वृक्ष, ( ५ ) गृत्स, ( ६ ) मंत्रिन्, ( ७ ) भिषक्, ( ८ ) सभा, ( ९ ) सभापति, ( १० ) स्थ-पति, ( ११ ) सेनानी, ( १२ ) सेना, ( १३ ) इषु-कृत्, ( १४ ) रथी, ( १५ ) वणिज्, ( १६ ) किरिक, ( १७ ) तक्षन्, ( १८ ) परि-चर, ( १९ ) स्तेन, ( २० ) प्रतरण, ( २१ ) श्वन्, ( २२ ) तल्प्य.

ये सब रुद्र ही हैं—( १ ) सर्वव्यापक ईश्वर, ( २ ) बिजुली, ( ३ ) वायु, ( ४ ) वृक्ष, ( ५ ) विद्वान्, ( ६ ) दिवाण, ( ७ ) वैद्य, ( ८ ) सभा, ( ९ ) सभापति, ( १० ) राजा, ( ११ ) सेना-पति, ( १२ ) सेना, ( १३ ) शत्रु बानेवाला, ( १४ ) वीर, ( १५ ) बनिया, ( १६ ) किसान, ( १७ ) बर्दई, ( १८ ) नौकर, ( १९ ) चोर, ( २० ) धोखेबाज, ( २१ ) कुता, ( २२ ) खटमल; इन सबको यहां रुद्रही कहा है, इस सबमें 'रुद्रत्व' है यह निश्चित है ।

'रोदयति इति रुद्रः' ( जो दूसरोंको रलाता है, वह रुद्र है ) यह रुद्र शब्दका एक अर्थ है । दूसरोंको रलानेका धर्म रुद्रमें है, यह बात इस अर्थसे सिद्ध होती है । रलानेका तात्पर्य

कष्ट अथवा दुःख देना है । देखिए—

- ( १ ) रोदयति शत्रून् इति रुद्रः महा-वीरः ।
- ( २ ) रोदयति दुष्टान् इति रुद्रः न्यायाधीशः ।
- ( ३ ) रोदयति धनिकान् इति रुद्रः चोरः ।
- ( ४ ) रोदयति निद्राक्रान्तान् इति रुद्रः तल्प्य-क्रीटः ।
- ( १ ) शत्रुओंको रलानेके कारण शूरको रुद्र कहते हैं ।
- ( २ ) दुष्टोंको रलानेके कारण न्यायाधीशको रुद्र कहते हैं । ( ३ ) धनिकोंको रलानेके कारण चोरको रुद्र कहते हैं । ( ४ ) सोने-वालोंको रलानेके कारण खटमलको रुद्र कहते हैं ।

उक्त चार विप्रहोंमें क्रमशः ' ( १ ) शत्रून्, ( २ ) दुष्टान्, ( ३ ) धनिकान्, ( ४ ) निद्राक्रान्तान् । ' इन चार पदोंका अध्याहार अर्थात् कल्पना की है । और उस कल्पनाके अनुसार 'रुद्र' शब्दके चार भिन्न भिन्न अर्थ किये हैं । जहां जैसा पूर्वापर संबंध होगा, वहां वैसा अर्थ लेना उचित है ।

उक्त चार आर्थोंमें 'रलानेका धर्म' सबमें समान है । यही यहां 'रुद्रत्व' है । 'रोदयितृत्वं रुद्रत्वं' रलानेका धर्म हि रुद्रपन है, ऐसा हम यहां कह सकते हैं । जहां जहां 'रलानेका गुण' होगा, वहां वहां रुद्रत्व होगा, यह इग विवरण-का तात्पर्य है ।

इस प्रकार अन्य स्थानोंमें भी समझना चाहिए । यह बात स्पष्ट है कि इस अर्थमें 'स्वयं दुःखका अनुभव करना रुद्रपनका लक्षण' है । दूसरोंको रलाना अथवा स्वयं रोना ये दोनों रुद्रके लक्षण हैं । इन दोनों अर्थोंको लेनेसे पूर्वाक्त रुद्रवाचक अनेक शब्दोंमेंसे कई शब्दोंका मूल आशय खुल जाता है और इस बातका निश्चय होता है, कि इनको रुद्र क्यों कहा गया है ।

'रुद्र' के इतने ही लक्षण नहीं हैं । 'रुद्रं ज्ञानं तत् ददाति इति रुद्रः' जो ज्ञानको उपदेशद्वारा देता है, वह रुद्र होता है । इस अर्थको लेनेसे 'ज्ञानी, उपदेशक, गुरु, व्याख्यानदाता' ये रुद्र हैं, ऐसा प्रतीत होगा । पूर्वाक्त शब्दोंमें 'अधिवक्ता' शब्द इसी अर्थका प्रकाश करनेवाला है । 'श्रुत, गृत्स, मंत्रिन्' ये भी शब्द इसी भावको वतानेवाले हैं । 'ज्ञानदातृत्वं रुद्रत्वं' दूसरोंको उपदेश करनेका रुद्रका धर्म है, ऐसा इस अर्थसे सिद्ध होता है ।

'रुद्रं दुःखं द्रावयति विनाशयति इति रुद्रः' । रुद्र अर्थात् दुःख, उसका जो नाश करता है, वह रुद्र कहलाता है । 'क्षत्र' शब्दका अर्थ 'क्षतात् त्रायते' जो दुःखसे बचाता है,

ऐसा होता है । यह रूद्रका एक अर्थ है ।

**रुद्र+द्र=** दुःखको दूर करनेवाला ।

**क्षत्+त्र=** दुःखसे बचानेवाला ।

ये दोनों शब्द बिलकुल समान अर्थवाले हैं। इसीलिये क्षत्रिय-वाचक शब्द रूद्रके लिये आये हैं । इस बातको पूर्वोक्त वीरवर्गमें पाठक देख सकते हैं ।

‘रुद्र रोगं राति ददाति इति रुद्रः रोगोत्पादकः॥’ जो रोगोंको उत्पन्न करता है, उसको रूद्र कहते हैं । बुरी हवा, सडा हुआ जल, दुर्गन्धयुक्त भूमि, कुपन्ध, आदि सब इस अर्थके कारण रूद्र होते हैं । ‘रुत्’ शब्दके दुःख और रोग ऐसे अर्थ कोशोंमें हैं । रोग उत्पन्न करना यह रूद्रका कार्य कई मंत्रोंमें वर्णन किया है, उनमेंसे एक मंत्र यहां देखिए—

**येऽग्नेषु विधिध्यन्ति पात्रेषु पियतो जनान् ॥**

( यजु. अ. १६।६२ )

‘ ( ये ) जो रूद्र ( अग्नेषु ) अन्नोंमें और ( पात्रेषु ) बर्तनोंमें प्रविष्ट होकर ( पिबतः जनान् ) जल पीनेवाले मनुष्योंको ( विविध्यन्ति ) अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं ।’ यह रूद्रका वर्णन विशेष प्रकारसे देखने योग्य है । इसी मंत्रके भाष्य देखिए—

**श्री सायणाचार्य—** ये रूद्रा अग्नेषु भुज्यमानेषु स्थिताः सन्तो जनान् विविध्यन्ति, विशेषेण ताडयन्ति । धातुवैषम्यं कृत्वा रोगान् उत्पादयन्ति इत्यर्थः । तथा पात्रेषु पात्रस्थक्षीरोदकादिषु स्थिताः सन्तः क्षीरादिपानं कुर्यान्तो जनान् विविध्यन्ति । अन्नोदकभोक्तारो व्याधिभिः पीडनीया इति भावः ॥ ( काण्वयजु. १७।७।१२ )

**श्री महीधराचार्य—** ( पूर्ववत् )

**श्री उवटाचार्य—** ये अग्नेषु अवस्थिताः विविध्यन्ति अतिशयेन विध्यन्ति ताडयन्ति । येषामयमधिकारः अन्नस्य भक्षयितारो व्याधिभिर्गृहीतव्या इति इ० ॥

उक्त आचार्य—मतदा तात्पर्य— ये रूद्र अन्न और पानीमें प्रविष्ट होकर उस अन्नको खानेवाले और उस पानीको पीनेवाले लोगोंमें रोग उत्पन्न करते हैं ।

रोग उत्पन्न करना रूद्रोंका कर्म है । रोगजन्तुओंका यह वर्णन है । ‘रोग-जन्तु’ अन्के द्वारा और जलके द्वारा शरीरमें प्रविष्ट होकर शरीरमें नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं, यही भाव उक्त मंत्रका है । इसीलिये रोगबीजाँका नाम रूद्र हुआ है । रोगजन्तु किस प्रकारके होते हैं और कहाँ रहते हैं,

इस बातका ज्ञान पूर्वोक्त अध्यायमें ‘जन्तुवर्ग’ के रूद्रवाचक शब्दोंके अर्थोंका विचार करनेसे स्पष्टतया हो सकता है ।

तात्पर्य इस प्रकार रूद्रोंके लक्षण हैं । यहां नमूनेके लिये थोड़ेसे दिये हैं । विशेष विचार करनेके लिये पूर्वोक्त आचार्योंके अर्थोंका मनन करना उचित है । इन अर्थोंको देखनेसे ‘रुद्रत्व’ की कल्पना हो सकती है । अर्थात् ‘रुद्र’ यह कोई एकही पदार्थ नहीं है, परंतु यह अनेक कल्पनाओंका समूहवाचक शब्द है ।

जिस प्रकार ‘प्राणी’ कहनेसे ‘मनुष्य, घोडा, गाय, चूहा’ आदि का बोध होता है अथवा ‘मनुष्य’ कहनेसे ‘ज्ञानी, शूर, व्यापारी’ आदि जनोंका बोध होता है, इसी प्रकार ‘रूद्र’ कहनेसे ‘ज्ञानी, शूर, दुष्ट, सज्जन’ आदिका बोध होता है । परंतु ये सब प्रत्यक्षमें एक नहीं हैं, इनमें भिन्नत्व है । इस भिन्नत्वका स्वरूप यहां बताया है और इस समयतक के संपूर्ण विवरणमें भी इसी भिन्नत्वका रूप स्पष्ट किया है ।

**श्री भ० गीताके विभूतियोगके साथ तुलना ।**

श्रीमद्भगवद्गीताके १० अध्यायमें ‘विभूतियोग’ कहा है । उसका थोडासा भाग देखिए—

**रूद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।**

**वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥**

**यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥२५॥**

**मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥**

**अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥३१॥**

**द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥३६॥**

**वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पांडवानां धनंजयः ॥३७॥**

**यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।**

**तत्तद्देवावगच्छ त्वं मम तेजोशसंभवम् ॥४१॥**

**अथवा बहुनेतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ॥**

**विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥३२॥**

( श्री भ० गी० अ० १० )

“ रूद्रोंमें मैं शंकर, यक्ष और राक्षसोंमें मैं कुबेर, वसुओंमें मैं पावक, चोटियोंवाले पहाडोंमें मैं मेरुपर्वत हूँ । यज्ञोंमें जपयज्ञ, स्थिर पदार्थोंमें हिमालय, मृगोंमें सिंह, पक्षियोंमें गरुड, विद्याओंमें आत्मविद्या और वक्ताओंका भाषण मैं ही हूँ । कपटियोंका द्यूत अर्थात् जूआ, तेजस्वियोंका तेज, वृष्णियोंमें वासुदेव, पांडवोंमें अर्जुन मैं हूँ । जो जो विशेष ऐश्वर्ययुक्त,

शोभायुक्त और उच्च तत्त्व होगा, वह सब भेरे ही अंशसे हुआ है, ऐसा तुम जानो । अथवा इतने विस्तारसे कहनेकी क्या आवश्यकता है ? सारांशरूपसे इतनाही कहना पर्याप्त है कि एक अंशसे सब जगत् व्याप कर में रहा हूँ । '

जगत्में जो जो ऐश्वर्ययुक्त सत्त्व होता है, वह परमेश्वरके अंशसे होता है, ऐसा यहां कहा है ।

इसी 'विभूतियोग'के समान 'रुद्रको चोर के रूपमें मानना ' है । कई टीकाकारोंने इस रुद्राध्यायपर टीका करते हुए लिखा है कि चोर और डाकूभी रुद्रके रूप हैं । देखिए—

**रुद्रो लीलया चोरादिरूपं धत्ते, यद्वा रुद्रस्य जगदात्मकत्वाच्चोरादयो रुद्रा एव ज्ञेयाः । यद्वा स्तेनादिशरीरे जीवेश्वररूपेण रुद्रो द्विधा तिष्ठति तत्र जीवरूपं स्तेनादिपदवाच्यं तदीश्वररुद्ररूपं लक्षयति यथा शाखाग्रं चन्द्रस्य लक्षकम् । किंबहुना लक्ष्यार्थविवक्षया मंत्रेषु लौकिकाः शब्दाः प्रयुक्ताः ॥**

( महीधरभाष्य य. अ. १६।२० )

“रुद्ररूपी जगदात्मा लीलासे चोरका रूप धारण करता है । अथवा रुद्र जगदात्मा होनेसे चोरादि सब रुद्रही जान लीजिए । अथवा चोरादिकोंके शरीरमें जीव और ईश्वररूपसे रुद्र दो प्रकारका होकर रहता है, वहां चोर आदि शब्द जीवरूपके दर्शक होते हुए भी ईश्वररूपके बोधक होते हैं, जिम् प्रकार शाखाके अप्रसे चंद्रमाका ज्ञान बताया जाता है । बहुत क्या कहना है ? ईश्वरका ज्ञान देनेकी इच्छासे मंत्रोंमें बहुतसे लौकिक शब्द प्रयुक्त किये हैं । ”

श्री सायणाचार्य भी अग्नि काण्व-यजु० अ० १७ के भाष्य में उक्त प्रकारही कहते हैं । उक्त विषयमें सायण और महीधर की संमति एक जैसीहि है ।

१. छलयतां घृतं अस्मि ( गीता )—कपटीयोंका घृत में हूँ ।
२. स्तेनानां पतिः अस्मि ( वेद )—चोरोंका स्वामी मैं हूँ ।
३. स्तायूनां पतिः अस्मि । ( " )—ठगोंका मुखिया मैं हूँ ।
४. तस्करणां पतिः अस्मि । ( " )—डाकुओंका सरदार मैं हूँ ।
५. मुष्णतां पतिः अस्मि । ( " )—छुटेरोंका श्रेष्ठ मैं हूँ ।

उक्त गीताके वचनमें ' रुद्राणां शंकरश्चास्मि । ' यह वाक्य है । ' अनंत रुद्रोंमें मैं एक शंकरनामक रुद्र हूँ । ' इस वाक्यमें रुद्रोंका अनंतत्व और शंकरका एतत्त्व सिद्ध है । यहां

शंकर शब्दसे परमात्मा और रुद्र शब्दसे परमात्मासे उत्पन्न पूर्वोक्त उतर रुद्र लेना उचित है । इस प्रकार करनेसे इस वाक्यकी वेदके आशयके साथ संगति लग सकती है ।

### पं० जान डॉसनसाहब का मत ।

' हिंदु-क्लामिकल डिक्शनरी'में पं० डॉसन साहब लिखते हैं कि—

' He is the howling terrible god, the god of storms, the father of the Rudras or Maruts, and is sometimes identified with the god of fire. On the one hand he is a destructive deity who brings diseases upon men and cattle, and upon the other he is a beneficent deity supposed to have a healing influence. These are the germs which afterwards developed into the god Siva.'

( पृ. २६९ )

' यह ( रुद्र ) गर्जना करनेवाला भयानक देव है, जो तूफानका देव है और जो रुद्रों अथवा मरुतोंका पिता है । कभी कभी इसका संबंध अग्निदेव के साथ जोड़ा जाता है । एक ओर यह देव सबका नाश करता है और प्राणियोंमें बीमारियाँ फैलाता है, तथा दूसरी ओर इसको सुखदायक और आरोग्य देनेवाला देव समझा जाता है । ये ही मूल अंकुर हैं कि जिनका विकास होकर आगे जाकर शिवजीका स्वरूप बना है । '

रुद्रको केवल बादलोंका देव पं० डॉसन साहब मानते हैं । परंतु यदि वे ' रुद्र और मरुत् 'के मूल अर्थोंकी थोड़ीसी भी खोज करते, तो उनको पता लगना कि ' रुद्र 'को ' जगतां पतिः ' अर्थात् ' अनंत ब्रह्मांडोंका स्वामी ' कहा है । यह मंत्रोंका विधान ये यूरोपियन पंडित देखतेही नहीं ।

### सर मोनिअर वुडलियमसाहब की संमति ।

यह साहब कहते हैं कि—

' Rudra, roarer, the god of tempests and father and ruler of Rudras and Maruts. ( In Veda he is closely connected with Indra and still more with Agni, the god of fire ..... and also with Kala or time, the all-consumer with whom he is afterwards identified; though



generally represented as a destroying deity, .. he has also the epithet Siva, 'benevolent or auspicious' and is even supposed to possess healing powers..... from his purifying the atmosphere ; ..... )

( सर मो. वुडलियम का संस्कृत-इंग्लिश कोश )

' गरजनेवाला रुद्र तूफानोंका देव है और रुद्रों और मरुतोंका पिता और राजा है । ( वेदमें रुद्र देवका इन्द्र और विशेष कर अग्निके साथ संबंध बताया है ।.....बादमें सर्वभक्षक कालके साथ भी जोड़ दिया है । यद्यपि इसको संहारक देव समझा जाता है.....तथापि यह कल्याणकारक और आरोग्यदायक भी वर्णन किया है । यह हवा को शुद्ध करता है । )'

एकहि परमेश्वर जगत्का उत्पादक, पालक, संहारक, कल्याणकारक, सुखदायक, आदि अनंत गुणोंसे युक्त है । ये लोग इन सब गुणोंको रुद्र-वर्णनमें देखते हैं, परंतु रुद्रको ईश्वर माननेके समय सिद्ध करते हैं ।

### श्री० म० आर्थर आंटोनी मॅकडोनेल- साहबकी संमति ।

'This god occupies a subordinate position in the Rig Veda being celebrated in only three entire hymns, in part of another, and in one conjointly with Soma. His hand, his arms, and his limbs are mentioned. He has beautiful lips and wears braided hair. His colour is brown; his form is dazzling, for he shines like the radiant sun, like gold..... he holds the thunderbolt in his arm, and discharges his lightning shaft from the sky; but he is usually said to be armed with a bow & arrows, which are strong and swift.'

' Rudra is very often associated with the Maruts (i. 85). He is their father, and is said to have generated them from the shining udder of the cow Prishni.'

' He is fierce and destructive like a terrible beast, and is called a bull, as well as the ruddy (arusa) boar of heaven. He is exalted, strongest of the strong, swift, unassailable,

unsurpassed in might. He is young and unaging, a lord (Ishana) and father of the world. By his rule and universal dominion he is aware of the doings of men and gods. He is bountiful (midhvams), easily invoked and auspicious (Shiva). But he is usually regarded as malevolent; for the hymns addressed to him chiefly express fear of his terrible shafts and deprecation of his wrath..... He is, however, not purely maleficent like a demon. He not only preserves from calamity, but bestows blessing. His healing powers are especially often mentioned; he has a thousand remedies, and is the greatest physician of physicians.....'

' The physical basis represented by Rudra is not clearly apparent. But it seems probable that the phenomenon underlying his nature was the storm. ....' [A Vedic Reader, pages 56-57]

' ..... यह रुद्रदेव ऋग्वेदमें निम्न कोटिका देव है । क्योंकि संपूर्ण ऋग्वेदमें इसके लिये केवल तीन सूक्तहि हैं । ..... उसके हात, बाहू और अवयवोंका वर्णन किया है । उसके होंठ सुंदर हैं, और वह जटाजूट धारण करनेवाला है । उसका बदामी रंग है और इसका आकार चमकीला है, क्योंकि तेजस्वी सूर्यके समान वह चमकता है..... मेघविद्युत् का वज्र वह हाथमें धरता है, और आकाशसे तेजस्वी बाण मारता है, परंतु बहुत करके धनुष्यबाण धारण करता है, ऐसाहि कहा गया है...'

' रुद्रका मरुतोंके साथ बहुत संबंध बताया है । वह उनका पिता है और पृश्निनामक गायके चमकीले गर्भस्थानसे मरुतोंकी उत्पत्ति की गई है, ऐसा कहा गया है ।'

' क्रूर पशुके समान भयानक और विनाशक वह रुद्र है । ओर उसको बैल कहते हैं, तथा उसको स्वर्गका लाल सुवर कहा है । वह बड़ा उरुच, बलवानोंमें बलवान्, चपल, न दबनेवाला और राक्षसे प्रबल है । वह तरुण और वृद्धावस्थासे रहित है । वह सबका राजा और जगत्का पिता है । सब मनुष्य और सब देवताओंके सब कर्मोंको वह जानता है, क्योंकि उसका राज्य

और उसका शासन सर्व जगत्में है । वह दानशूर, कल्याणमय और सुलभतासे संतुष्ट होनेवाला है । परंतु बहुधा ऐसा समझा जाता है कि वह बडा द्रोही है, क्योंकि जिन सूक्तोंसे उनकी प्रार्थना की गई है, उन सूक्तोंमें उसके क्रोधकी भीति और उसके शत्रुओंका डर व्यक्त हुआ है । ..... परंतु वह राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है । वह कष्टोंसे न केवल बचाता है, परंतु आशीर्वादभी देता है । उसकी आरोग्यवर्धनकी शक्तियोंका वर्णन आया है और उसके पास हजारों दवाइयां हैं और वह वैद्योंमें बडा वैद्य है ..... ।'

' रुद्रके द्वारा जिस पांचभौतिक घटनाका वर्णन हुआ है, वह घटना स्पष्ट रीतीसे ज्ञात नहीं होती । परंतु यह संभव है कि उसके स्वभावके नीचे जो पांचभौतिक घटना है, वह बहुधा तूफानी अवस्था होगी.....'

( वैदिकरीडर, पृ. ५६-५७ )

युरोपियन पंडितोंकी ये हि संमतियां हैं । अन्य अनेक पंडितोंने रुद्र देवताके विषयपर बहुतसा लिखा है, परंतु उसका मुख्य अंश उक्त संमतियोंमें हैं । इसलिये और अधिक संमतियां न देता हुआ मैं इनकीही समालोचना करता हूं । उक्त संमतियां देखनेसे निम्न मत प्रतीत होते हैं—

( १ ) रुद्रका दर्जा बहुत नीचे है, क्योंकि उसके लिये थोड़े सूक्त हैं ।

( २ ) उसके अवयवोंका और रंगरूपका वर्णन होनेसे वह साकार है ।

( ३ ) धनुष्यबाणका वर्णन होनेसे वह शस्त्रधारी साकार है ।

( ४ ) रुद्र महतोंका पिता है और पृश्निनामक गायसे महतोंकी उत्पत्ति हुई है ।

( ५ ) रुद्र देव क्रूर, द्रोही, भयानक है, परंतु राक्षसके समान अत्याचारी नहीं है ।

( ६ ) वह उच्च, श्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान्, चपल, न दबनेवाला, सबसे प्रबल, तेजस्वी, सर्वज्ञ, दाता, मंगलमय और संतुष्ट है । वह सब जगत्का पिता और राजा है ।

( ७ ) यह आरोग्यदाता और रोग दूर करनेवाला है ।

( ८ ) रुद्रके वर्णनके बीचमें जो नैसर्गिक घटना है, वह गुप्त है, उसका पता नहीं लगता । परंतु वह घटना बहुधा तूफानकी द्वा होगी ।

( ९ ) वह बैल और दिव्य सुवर कहा गया है ।

( १० ) रुद्र मेघस्थानकी बिजुली है ।

अब हम रुद्रसूक्तका थोडासा विचार करते हैं—

## पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र ।

पुराणोंमें आया हुआ रुद्रका वर्णन और वेदका रुद्रका वर्णन कई अंशोंमें भिन्न है । देखिए—

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकया  
तं जुषस्य स्वाहा । एष ते रुद्र भाग  
आख्युस्ते पशुः ॥ ( यजु० ३।५७ )

' हे रुद्र ! यह तेरा भाग है । अपनी बहन अंबिकाके साथ उसका सेवन करो । यह तेरा भाग है और चूहा तेरा पशु है ।'

यहां इतनाही बताना है कि वेदमें अंबिका रुद्रदेवकी बहन कही है, परंतु पुराणोंमें उसकी धर्मपत्नी कही है । तथा रुद्रका पशु चूहा इस मंत्रमें बताया है । परंतु पुराणोंमें चूहा गणपति का पशु कहा है । यह भेद देखने योग्य है । तथा—

भवारुद्रौ सयुजा संविदानाबुभावुप्रौ

चरतो वीर्याय । ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीतः ॥

( अथर्व. ११।२।१४ )

' भव और शर्व ये दोनों ( सयुजा ) साथ रहनेवाले मित्र, ( संविदानौ ) उत्तम ज्ञानवाले हैं । ( उभौ उप्रौ ) दोनों प्रतापी हैं, वे ( वीर्याय चरतः ) वे पराक्रम करनेके लिये चलते हैं । ( यतमस्यां दिशि ) जिस किसी दिशामें वे होंगे, उनको हमारा नमस्कार है ।'

इससे ' भव और शर्व ' ये परस्पर भिन्न हैं, परंतु साथ रहनेवाले और बडा पराक्रम करनेवाले हैं, ऐसा पता लगता है । पुराणमें ये दोनों शब्द एकहि रुद्रके लिये आये हैं ।

' भव ' का अर्थ ' उत्पन्नकर्ता ' है और ' शर्व ' का अर्थ ' प्रलय करनेवाला ' है । परमात्मामें ये दोनों गुण होनेसे वहां इनकी भिन्नता लुप्त होती है, ऐसा भी माना जा सकता है । इसलिये यह भिन्नत्व और एकत्व विशेष विचारसे सोचना चाहिए ।

## रुद्रका शरीर ।

शिवपुराणमें निम्न श्लोक ' रौद्री तमुः ' अर्थात् रुद्रके शरीरके विषयमें आते हैं, रुद्रका विचार करनेके समय इसका भी विचार करना उचित है—

अग्निरित्युच्यते रौद्री घोरा या तैजसी तनुः ।  
 सोमः शाक्तोऽमृतमयः शक्तेः शांतिकरी तनुः ॥३॥  
 विविधा तेजसे वृत्तिः सूर्यात्मा च जलात्मिका ।  
 तथैव रसवृत्तिश्च सोमात्मा च जलात्मिका ॥४॥  
 वैद्युतादिमयं तेजः मधुरादिमयो रसः ।  
 अग्नेरमृतनिष्पत्तिरमृताद्ग्निरधते ॥ ५ ॥

‘ अमितत्त्वको रुद्रका भयानक तैजस् शरीर कहते हैं । तथा जलमय सोमतत्त्वको शक्तिका-( रुद्रपत्नी )-शांतिकारक शरीर कहते हैं । तेजके तत्त्व अनेक प्रकारके हैं तथा जलके तत्त्वभी विविध है । विद्युत् आदि तेज हैं और मधुर आदि रस है । अग्नि से जलकी उत्पत्ति और जलसे अग्निका प्रकाश होता है ।’ इस प्रकार सब जगत् ‘तैजस् उग्र शक्तिके साथ जलात्मक शांत शक्तिके वास्तव्य’ से होता है ।

उक्त वर्णनका तात्पर्य इतनाही है कि, इस जगत्में दो शक्तियाँ हैं. ( १ ) एक तेजस शक्ति गति उत्पन्न करनेवाली है; ( २ ) दूसरी शांति करनेवाली एक शक्ति है । इन दो शक्तियोंसे यह जगत् चल रहा है । दोनों शक्तियाँ कार्य कर रही हैं । पहिली रुद्र शक्ति है और दूसरी रुद्रका धर्मपत्नी है । इसीलिये इन को जगत् के माता पिता कहते हैं ।

रुद्र	अंबिका
महादेव	पार्वती
अग्नि	जल
सूर्य	चंद्र
अग्नि	सोम

इत्यादि शब्दोंसे उक्त आशयका पता लग सकता है । आशा है कि इस विधानका भी पाठक विचार करेंगे ।

### खोजका विषय ।

‘रुद्र’ देवताका परिचय देनेके लिये बहुतसा रुद्रविषयक ज्ञान इस निबंधमें एकत्रित किया है । अभी बहुतसे बातोंका संशोधन करना है । आशा है कि पाठक इन बातोंका विचार करेंगे और रुद्रत्वका निश्चय करनेके लिये अन्य ग्रंथोंका संशोधन करके अधिक ज्ञान प्रकाशित करेंगे ।

### रुद्रदेवताका यजुर्वेदोक्त विश्वरूप ।

यह रुद्रसूक्त यजुर्वेद-संहिता में है । वाजसनेयी संहिता का १६ वां अध्याय, काण्वसंहिताका १७ वां अध्याय, मैत्रायणी संहिताका काण्ड २, प्रपाठक ९; काठक संहिताका १७, १३-१४,

कपिष्ठल कठ संहिता का २७, ३-४; तैत्तिरीयसंहिताका कां. ७।५।४-५ रुद्रदेवता के वर्णन के लिये ही प्रसिद्ध हैं । जो सूक्त हम यहां आज विचार करनेके लिये लेना चाहते हैं, वह इतनी संहिताओं में प्रमाणत्वेन विद्यमान है । इस अध्याय में रुद्रदेवताका बड़ा विस्तृत वर्णन है ।

यहां विचार करनेके लिये हम वा० यजु० अ० १६ के १७-४६ और ५४ ये ३१ मंत्र लेते हैं ।

यहां कई रुद्रों के नाम गिनाने हैं । इन मन्त्रों में नाम ही नाम गिनाने हैं । इन नामों के हम नीचे वर्ग करके बता देते हैं, जिन से पाठकों को पता लगेगा कि, वे सब रुद्र किन किन वर्गों में संमिलित होने योग्य हैं । इन में से जो मानवों में संमिलित होनेयोग्य हैं, उन के वर्ग वे हैं—

### मानवरूपों में रुद्र ।

#### ( ज्ञानी पुरुष । )

पूर्वोक्त मन्त्रों में जो ज्ञानी-वर्ग के रुद्र हैं, उनकी नामावलि यह है । ज्ञानी-वर्गके रुद्रोंको ब्राह्मणवर्ग के रुद्र कहा जा सकता है ।

१. गृत्स = ज्ञानी, कवि, एक ऋषि [ २५ ]
२. गृत्सपति = ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ, गृत्सों का अधिष्ठाता [ २५ ]
३. श्रुत = विख्यात, प्रसिद्ध, विद्वान्, श्रुति का वेत्ता [ ३५ ]
४. पुलस्ति = विद्वान्, ऋषि [ ४३ ]
५. रुद्र = [ रु ] शब्द शास्त्र का [ द्र ] पारंगत, ज्ञानी [ १८ ]
६. ङ्गुरमाण = उत्तम ज्ञानका उपदेश देनेवाला, वक्ता [ ४६ ]
७. अधिवक्ता = [ वा० य० १६।५ ] = उपदेशक, वक्ता ।
८. मंत्री = राजा का मन्त्री, दिवान, सलाहगार, सुविचारी, बुद्धिमान, चतुर, हित की मंत्रणा देनेवाला [ १९ ]
९. देवानां हृदयः = देवताओंके लिये जिसने अपना हृदय दिया है, भक्त, प्रेमी, साधु, सज्जनों की सेवा करनेवाला [ ४६ ]
१०. मिषक्, दैव्यो मिषक् = दिव्य वैद्य [ वा० य० १६।५ ], आयुर्बुध [ ६० ] आयुष्य की वृद्धि करनेवाला ।

११. भोषधीनां पतिः = औषधियां अपने पास रखनेवाला [ १९ ]
१२. सभा = सभा, परिषद्, विविध सभाओं के यभासद [ २४ ]
१३. सभापतिः = सभा का अध्यक्ष, परिषद् का प्रमुख [ २४ ]
१४. श्रवः = कान, सुननेवाला, श्रवण करनेवाला, शिष्य [ ३४ ] प्रमृशः = परामर्श लेनेवाले पंडित [ ३६ ]
१५. प्रतिश्रवः = सुननेवाला, उपदेश करनेवाला, गुरु [ ३४ ]। वादी-प्रतिवादी, प्रश्न-प्रतिप्रश्न के समान श्रव-प्रतिश्रव ये पद हैं। इनका परस्परसंबंध है। 'सोभ्यः [ ३३ ] = पुण्यकर्म करनेवाले तथा प्रतिमर्थ [ ३३ ] = गुप्त बात प्रकट करनेवाले।
१६. श्लोक्यः = प्रशंसनीय, श्लोकों के योग्य, प्रशंसनीय विद्वान् [ ३३ ]

प्राचीन परंपराके अनुसार वैद्य, राजा का मंत्री, अध्यापक आदि ब्राह्मण अथवा ज्ञानी-वर्गके लोग ही हुआ करते हैं। अर्थात् ये ब्राह्मण हैं अथवा ज्ञानी तो निःसन्देह हैं।

पुरुषसूक्त में ' ब्राह्मणों को नारायण का मुख ' कहा है। यहां उसी नारायण के अथवा रुद्रदेवता के मुख में किन का समावेश होता है, यह अधिक नाम देकर बताया है। यहां के कई नाम जैसे ' उद्गुरमाण ' आदि अन्य वर्गमें भी गिने जाना स्वाभाविक है। जो शेष बचेंगे, वे उस वर्ग में रहेंगे। इस तरह ब्राह्मणवर्ग के रुद्रोंका विचार करने के पश्चात् अब क्षत्रियवर्ग के रुद्रों का, अथवा वीरोंका विचार करते हैं। रुद्र का नाम ' वीरभद्र ' सुप्रसिद्ध है। कल्याण करनेवाला वीर ' वीरभद्र ' कहा जाता है। देखिये, वीरभद्रके वर्गमें कौनसे रुद्र गिने जाने योग्य हैं—

## क्षत्रिय-वर्ग के रुद्र ।

( वीर रुद्र । )

( रोदयति इति रुद्रः ) जो रुलाता है, वह रुद्र है। शत्रुओं को रुलाने के कारण वीर को रुद्र कहते हैं। इस तरह क्षत्रिय वीर रुद्र कहे जाते हैं।

१. रुद्रः = शत्रुओं को रुलानेवाला वीर [ १, १८ ]  
तवस् = बलवान् [ ४८ ] आगे राजाके अनेक अधिकारी, ओहदेदार, रुद्र करके गिनिये हैं।
२. क्षेत्राणां पतिः = खेतोंकी रक्षा करनेवाला [ १८ ]  
रुद्र प्र० ३

- भूतानां अधिपतिः = प्राणियों के रक्षक [ ५९ ]
३. वनानां पतिः = वनोंकी पालना करनेवाला [ १८ ]  
वन्ध्यः = वनमें उत्पन्न [ ३४ ]
४. अरण्यानां पतिः = अरण्यों का संरक्षण करनेवाला [ २० ]
५. स्थपतिः = स्थानोंका पालक [ १९ ], पथिरक्षी [ ६० ], प्रपथ्य [ ४३ ] = मार्गों की रक्षा करनेवाले।
६. कक्षाणां पतिः [ १९ ] दिशां पतिः [ १७ ]  
( कक्षा ) = गुप्त स्थान, अन्तका भग, बड़ा अरण्य, बहुत ही बड़ा वन। [ कक्षाणां पतिः, कक्षापः ] = गुप्त स्थान की रक्षा करनेवाला, अन्तिम विभाग का रक्षक, बड़े अरण्योंका रक्षक [ १९ ], कक्ष्यः = अरण्य की कक्षा में रहनेवाला [ ३४ ]
७. पत्तीनां पतिः = सेनाओं का पालक, सेनापति, पादचारी सेनाविभाग का अधिपति [ १९ ], सस्त्रनां पतिः = प्राणियोंका रक्षक [ २० ]
८. भाग्याधिनीनां पतिः = उत्तम निशाना मारनेवाले सैनिकोंका अधिपति, सेनापति [ २० ],  
[ व्याधिन् ] = शत्रु का वेध करनेवाला [ २०, २४ ]
९. विक्रान्तानां पतिः = शत्रु सैनिकोंका अधिपति [ २१ ]
१०. कुलुञ्जानां पतिः = शत्रुसेनाको पीसनेवाले, शत्रुपर चढ़ाई करके उनके सेनाविभागोंको पृथक् करके उनका नाश करनेवाले वीरोंके प्रमुख अधिपति [ २२ ]
११. गणपतिः = वीरोंके गणों के अधिपति [ २५ ]  
ककुभः = प्रमुख, मुख्य [ २० ]
१२. व्रातपतिः = वीरों के समूह के प्रमुख [ २५ ]
१३. सेना, १४ व्रातः, १५ गणः = ये सेनाविभागोंके नाम हैं; सैनिकों की संख्या के अनुसार ये नाम प्रयुक्त होते हैं [ २५, २६ ]।
१६. शूरः = वीर, शूर [ ३४ ]; क्षयद्वीरः = शत्रु का नाश करनेवाला वीर [ ४८ ]; उग्रः, भीमः = उग्र, शूर वीर, भयानक कर्म करनेवाले [ ४० ]
१७. विचिन्वत्कः = शूर वीर, बहादुर, चुन चुन कर शत्रुवीरों का वेध करनेवाला वीर [ ४६ ], विकि-रिद्रः = विशेष नाश करनेवाला [ ५२ ]
१८. रथी = रथमें बैठनेवाला वीर [ २६ ]

१९. अरथी = रथके विना युद्ध करनेमें प्रवीण वीर [२६]  
 २०. भाशुरथ = जो त्वराके साथ रथयुद्ध करता है, त्वरासे रथ चलानेवाला वीर [३४]  
 २१. उगणा = शत्रुओं को ऊपर उठाकर शत्रुपर हमला करनेवाली सेना का समूह [२४]  
 २२. आशुसेनः = अपनी सेनाको अतिशीघ्र तैयार करनेवाला वीर, अपनी सेनाको सदा सिद्ध रखनेवाला वीर [३४]  
 २३. श्रुतसेनः = जिस सेनाका यश चारों ओर फैला हो, विख्यात, यशस्वी, सदा विजयी सेनापति [३५]  
 २४. सेनानी = सेनाको कुशलता के साथ चलानेवाला सेनापति [२६]  
 २५. हुंहुभ्यः = नौवत, ढोल अथवा बाजेके साथ रहकर लड़नेवाला सैन्य [३५]  
 २६. भाक्षिमान् = तलवारसे लड़नेवाले सैनिक वीर [२१]  
 २७. इषुमान् = बाणोंका उपयोग करनेवाले, बाणोंको बर्तनेवाले वीर [२२, २९]  
 २८. सुक्रायी = तीक्ष्ण बाण अथवा भाला बर्तनेवाला वीर [२१]  
 सुक्रादस्त्राः = शस्त्र धारण करनेवाले [६१]  
 २९. निदग्नी = खड्गधारी वीर [२०, २१, ३६]  
 ३०. धनुत्रायी = धनुष्य धारण करके शत्रुपर चढाई करनेवाला वीर [२२]  
 आयुधी = शत्रुओंको साथ रखनेवाला वीर [३६]  
 ३१. शतधन्वा = सौ धनुष्योंका धारण करनेवाला वीर [२९]  
 ३२. इषुधितान् = बाणोंके तर्कसको पास रखनेवाला [२१, ३६]  
 ३३. तीक्ष्णेषुः = तीखे बाणोंका उपयोग करनेवाला [३६]  
 ३४. स्वयुधः = उत्तम आयुधोंको पास रखनेवाला [३६]  
 ३५. सुधन्वन् = उत्तम धनुष्यका उपयोग करनेवाला [३६]  
 ३६-३९. वर्मी, कवची, बिलभी, वरुथी = विविध प्रकारके कवच धारण करनेवाला वीर [३५]  
 ४०. कृस्त्रायतया धावन् = आकर्षण धनुष्य पूर्णतया खींचकर युद्धभूमिमें दौड़नेवाला वीर [२०]  
 ४१. निव्याधी [१८, २०] = शत्रुका निःशेष वेध करनेवाला वीर [२०]  
 ४२. जिघांसत् = शत्रुकी कत्ल करनेवाला वीर [२१]  
 ४३. विधवत् = शत्रुका वेध करनेवाला [२३]

४४. अपभेदी = शत्रुको नीचे गिराकर उसको छिन्नभिन्न करनेवाला वीर [३४]  
 ४५. हन्ता = शत्रुका हनन करनेवाला [४०]  
 ४६. हनीयान् = शत्रुका संहार करनेवाला [४०]  
 ४७. अभिघ्नत् = शत्रुपर प्रहार करनेवाला [४६]  
 ४८. अग्रेवधः = अग्रभागमें रहकर शत्रुका वध करनेवाला [४०]  
 ४९. दूरेवधः = दूरसे शत्रुका वध करनेवाला [४०]  
 ५०. आहनन्यः = शत्रुपर आघात करनेवाला [३५]  
 ढोलका शब्द करता हुआ शत्रुपर आक्रमण करनेवाला।  
 ५१. धृष्णुः = शत्रुका वध करनेवाला साहसी वीर [१४, ३६]  
 ५२. विशिणत्कृ = शत्रुका नाश करनेवाला [४६]  
 ५३. भानिर्हत् = आसमन्तात् भागसे जिसने शत्रुका वध किया है [४६]  
 ५४. सहमानः = शत्रुका पराभव करनेवाला [२०]  
 ५५. आतन्वानः = धनुष्यकी प्रत्यंचा चढानेवाला वीर [२२]  
 ५६. प्रतिदधानः = प्रत्यंचा चढाये धनुष्यपर बाण लगानेवाला [२२]  
 ५७. आयच्छत् = धनुष्यकी डोरी खींचनेवाला वीर [२२]  
 ५८. अस्यत् = शत्रुपर बाण फेंकनेवाला [२२]  
 ५९. विसृजत् = शत्रुपर विशेष रूपसे बाण फेंकनेवाला [२३]  
 ६०-६१. आखिदत् प्रखिदत् = शत्रुको खेद उत्पन्न करने योग्य आत्तरण करनेवाला वीर [४६]  
 ६२-६३. भाव्याधिनी [२४], भाव्याधिनीनां पतिः [२०] = शत्रुसेनापर चारों ओरसे हमला करनेवाला वीर तथा ऐसी वीरसेनाका सेनापति।  
 ६४. त्रिविधयन्त्री = विशेष रीतिसे शत्रुसेना का वेध करनेवाली प्रबल वीरसेना [२४]  
 ६५. तृहती = शत्रुका नाश करनेवाली वीरसेना [२४]  
 ६६. अवसान्यः = अन्तिम भागपर खडा रहकर संरक्षण करनेवाला वीर [३३]  
 ६७. पथीनां पतिः = मार्गस्थोंके रक्षक वीर [१७]  
 ६८. मृगयुः = मृगया, अथवा शिकार करनेवाला वीर [२७]

ये वीरवर्ग अथवा क्षत्रियवर्गके नाम हैं। रुद्रोंकेही ये नाम हैं, जैसे ब्राह्मणवर्गके रुद्र पाँछे दिये हैं, वैसे ही ये क्षत्रियवर्गके

रुद्र हैं। जिस तरह ब्राह्मण रुद्र हैं, वैसे ही क्षत्रिय भी रुद्र हैं। अब वैश्यवर्गके रुद्र देखिये। वैश्यवर्गमें खेती और पशुपालन करनेवालोंका समावेश होता है, अतः उक्त मन्त्रोंमें वैश्यरुद्रोंका वर्णन देखिये—

### वैश्यवर्गके रुद्र ।

वैश्यवर्गमें निम्नलिखित रुद्रोंका अन्तर्भाव हो सकता है—

१. वाणिजः = बनिया, व्यापारी, दूकानदारी करनेवाला [ १९ ]
२. संग्रहीता = पदार्थों का संग्रह करनेवाला [ २६ ] वारिवस्कृत् [ १९ ] धनकी उत्पत्ति करनेवाला।
- ३-४. अन्धसस्पतिः [ ४७ ], अन्नानां पतिः [ १८ ] = अन्नका पालनकर्ता, अन्नेके लिये उपयोगी होनेवाले विविध धान्यादि पदार्थोंका पालन करनेवाला, [ ४७, १८ ] ऐलबुदाः [ ६० ] = अन्नकी वृद्धि करनेवाला।
५. वृक्षाणां पतिः = वृक्षवनस्पति आदिओंकी पालना करनेवाला [ १९ ]
- ६-७. पशुपतिः [ २८ ], पशूनां पतिः [ १७ ] = पशुओंका पालनेवाला।
८. अश्वपतिः = घोड़ोंकी पालना करनेवाला [ २४ ]
- ९-१०. श्वपतिः [ २८ ], श्वनी [ २७ ], कुतोंकी पालना करनेवाला।
११. पुष्टानां पतिः = पुष्टोंके स्वामी [ १७ ]
१२. जगतां पतिः = चलनेवालोंका पालक [ १८ ]

वैश्योंका कर्तव्य खेती, वृक्षसंवर्धन और पशुपालन है। यह कर्म करनेवाले ये रुद्र इस रुद्रसूक्तमें दीखते हैं। इस तरह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्गोंके रुद्रोंका वर्णन हमने यहां तक देखा। रुद्रवर्गके रुद्रोंका वर्णन अब देखना है। शूद्रोंमें सब कारीगरोंका समावेश होता है। देखिये—

### शिल्पिवर्गके रुद्र ।

पूर्वोक्त मंत्रोंमें निम्नलिखित रुद्र शिल्पिवर्गके आ गये हैं—

१. सूतः = सारथी, रथ चलावेवाला, घोड़ोंकी शिक्षा देनेवाला, भाट और वीरोंकी कथाओंको सुनानेवाला।
- २-४. क्षत्ता [ २६ ], तक्षा [ २७ ], रथकारः [ २७ ] = बढई, तख्ताण, रथ बनानेवाला, लकड़ीका काम करनेवाला [ २६ ]
- ५-६. धनुष्कृत्, इपुकृत् = धनुष्य और बाण बनानेवाला कारीगर [ ४६ ]

७. कर्मारः = लुहार, लोहेका अथवा धातुका कार्य करनेवाला [ २७ ]

८. कुलालः = कुम्हार [ २७ ]

९. निपाद्ः = जंगलमें रहनेवाला, जंगली आदमी, सभामें [ नि साद् ] सबसे नीचे बैठने योग्य [ २७ ]

१०. पुंजि-ष्ठ = टेलियां बनाकर रहनेवाले लोग [ २७ ]

११. गिरि-चरः [ २२ ] गिरिशयः [ २९ ] गिरिशन्त [ २ ] पहाडियोंपर घूमनेवाला, पहाडी लोग।

१२. उत्तरण, प्रतरण, तार = नदीके पार करानेवाला, नदीपार करानेमें कुशल [ ४२ ]

१३. अहन्तिः सूतः = हननेसे बचानेवाला सूत [ १८ ]

ये नाम प्रायः कारीगरोंके तथा अन्यान्य व्यवहार करनेवालोंके वाचक हैं। अर्थात् शूद्रोंके वाचक हैं। शूद्रोंमें जो कारीगरी कर नहीं सकते, वे परिचर्या, सेवा श्रुत्वा करके अपनी आजीविका करते हैं, उनके नाम उपर्युक्त रुद्रमंत्रोंमें ये हैं -

१४. परि-चरः = परिचारक, नौकर, सेवक, परिचर्या करनेवाले [ २२ ]

१५. नि-चेरुः = नौकरी करनेवाला, नीचेके स्थानमें रहनेयोग्य [ २० ]

१६. जधन्मः = हान, अन्त्यज, नीच व्रतिका मनुष्य, अधःपतित मनुष्य [ ३२ ]

ये नाम शूद्रवर्गके हैं। इनमें 'परिचर' नाम परिचर्या करनेवालेका रम्य है। लुहार, बढई आदि के नाम भी सबको मालूम हैं। शूद्रोंमें दो भेद हैं, एक सच्छूद्र कहलाते हैं। जो कारीगरीके द्वारा अपनी आजीविका प्राप्त करके निर्वाह करते हैं और दूसरे असच्छूद्र हैं, जो सेवा करके आजीविका प्राप्त करते हैं। इन दोनों प्रकारके शूद्रोंका वर्णन पूर्वोक्त शब्दोंद्वारा हुआ है।

यहां तक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्गोंके अर्थात् ज्ञानी, शूर, व्यापारी और कारीगर इन चार प्रकारके व्यवसायियोंके नाम रुद्रके नामोंमें दीखते हैं। वे सब रुद्रके रूप हैं। रुद्रदेवता इन रूपोंमें इस भूमिपर विचर रहा है। रुद्रदेवता की भेट करनी हो, तो इन रूपोंमें रुद्रका दर्शन हो सकता है। रुद्र इन नाना रूपोंमें इस भूमिपर विचर रहा है। रुद्रदेवताके भक्त अपनी उपर्य देवताका दर्शन करें। वेदने रुद्रदेवताका इस तरह प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराया है। पाठक इसका स्वीकार करें।

पाठक यह जानते हैं कि, 'रुद्र' उसी एक अद्वितीय देव का नाम है, जिस को 'पुरुष, नारायण, अग्नि, इन्द्र,' आदि अनेक नाम दिये गये हैं ।

**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्**

**बाहू राजन्यः कृतः ।**

**ऊरू तदस्य यद् वैश्यः**

**पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ [ ऋ० १०।९.०।१२ ]**

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णोंके लोग ये सब परमात्माके क्रमशः सिर, बाहू, पेट या जंघा तथा पांव है । अर्थात् चारों वर्ण मिलकर परमात्मा का शरीर है । परमात्मा के शरीरके ये चार अवयव हैं । इस परमात्मा को आत्मा, ब्रह्म, पुरुष, नारायण या रुद्र आदि नामों से पुकारते हैं । रुद्र और नारायण एक ही देव है । एक ही देवताके ये दो नाम हैं । इसलिये जो वर्णन नारायणपुरुष का पुरुषसूक्त में हुआ है, वही वर्णन रुद्र का विस्तार से रुद्रसूक्त में दिखाई दिया, तो वह उचित ही है ।

यहां पाठक देखें कि, पुरुषसूक्त में जो वर्णन अतिसंक्षेप से है, वही वर्णन रुद्रसूक्त में विस्तार से है । पुरुषसूक्त में पुरुष-नारायण-देवता के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये लोग अवयव हैं, ऐसा कहा है और रुद्रसूक्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों के कई नाम गिनये हैं । अर्थात् पुरुषसूक्त का यह विस्तार से स्पष्टीकरण है । इस रुद्रसूक्तमें ये रुद्र के रूप हैं, ऐसा कहा है; और इन रुद्र को नमस्कार किया है । ये उपास्य और संसेव्य हैं, ऐसा यहां बताया है ।

मानवों को जो परमात्मा संसेव्य है, वह ज्ञानी, शूर, व्यापारी और सेवक रूप से इस भूमिपर विचरनेवाला ही परमात्मा है । यह बात इस रुद्रसूक्त के मनन से सिद्ध हो रही है । परमात्मा सब रूपों में इस भूमि पर विचर रहा है, इन में मानवों के रूप भी हैं । हमें परमात्मा की सेवा करके कृतकृत्य बनना है, तो हमें इन मानवों की-जनतारूपी जनार्दन की सेवा करना उचित है । वेदका यही धर्म है, पर आज मानवों की सेवा अपनी कृतकृत्यता के लिये करने का भाव समाज से दूर हुआ है और अन्यान्य उपासन,एं प्रचलित हुई हैं !! वैदिक धर्म से जनता कितनी दूर जा रही है, इसका विचार यहां इस विवेक से हो सकता है ।

## चार वर्णों के रुद्र ।

चार वर्णों के चार वर्णों में जो रुद्र होते हैं, उनकी गणना उपर के लेख में की है, परन्तु वहां ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य ये नाम नहीं आये हैं । इसलिये पाठकोंके मनमें सन्देह हो सकता है कि, ये नाम चार वर्णों के कैसे माने जायेंगे ? इस शंकाका निवारण यजुर्वेदकी मैत्रायणी-संहिता में किया है, वह मन्त्र-भाग अब देखिये—

**नमो ब्राह्मणेभ्यो राजन्येभ्यश्च वो नमः ।**

**नमः सूतेभ्यो विश्वेभ्यश्च वो नमः ॥**

( मैत्रायणी सं० २।९।५ )

'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सूत संज्ञक रुद्रों को मैं प्रणाम करता हूं।' वहां शूद्र नाम नहीं है, पर 'सूत' नाम है, जो शूद्र का वाचक है । अन्य तीन नाम हैं । इस से सिद्ध होता है कि, चारों वर्णों के लोग रुद्र देवताके रूप हैं । इसलिये इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है ।

पूर्वोक्त चार वर्णों के रुद्रोंमें ही संपूर्ण जनता समाप्त नहीं होती है । जिनको दुष्ट डाकू आदि कहा जाता है, उन रूपों में भी रुद्रदेवता हमारे सम्मुख उपस्थित होती है, देखिये—

## आततायी वर्ग के रुद्र ।

१. आततायी = घातपातवाला करनेवाला [ १८ ]

धनुष्य सज्य करके हमला करनेवाला घातक ।

२-५. स्तेनानां पतिः [ २० ], तस्कराणां पतिः [ २१ ],

मुष्णतां पतिः [ २१ ], स्तायूनां पतिः [ २१ ] =

चोर, डाकू, लुटेरे, ठगानेवाले ।

६-८. वञ्चत् [ २१ ], परिवञ्चत् [ २१ ] = धोखेबाज,

फरेबी, मक्कार, कपटी, छल करनेवाला ।

९. लोप्यः = नियमों का लोप करनेवाला, नियमों का उल्लंघन करनेवाला [ ४५ ] ।

१०. नक्तं चरत् = रात्री के समय दुष्ट इच्छा से भ्रमण करनेवाला [ २१ ] ।

ये नाम चोर, डाकू, लुटेरे, आततायी दुष्टोंके हैं । निःसन्देह ये दुष्ट भाववाले मानवों के वाचक हैं । परन्तु ये भी रुद्र के ही रूप हैं । जिस तरह ज्ञानदाता ब्राह्मण, सब के पालन करनेवाले क्षत्रिय, सब के पोषणकर्ता वैश्य और सबकी सहायतार्थ कर्म

करनेवाले शूद्र रुद्रके रूप हैं, उसी तरह चोरी करके लोगों को लूटनेवाले भी रुद्र के ही रूप हैं ।

पाठकों को यह मानने के लिये बड़ा कठिन कार्य है । चोर भी परमात्मा का अंश है । क्या यह सत्य नहीं हैं ? भगवद्गीता में कहा है कि—

**मम एव अंशः जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।**

[भ. गी. १५।७]

‘मेरा सनातन एक अंश जीवलोकमें जीव होता है ।’ यदि मानवों का जीव परमात्मा का अंश है, तब तो वह जैसा ज्ञानी योगियों का जीव परमात्मा का अंश है, वैसा ही दुष्ट डाकुओं का भी जीव परमात्मा का ही अंश है । जीवमात्र परमात्मा का अंश है, यह जैसा भगवद्गीता में कहा है, वैसा ही वेद में— पुरुषसूक्त में भी कहा है । पुरुष का एक अंश इस विश्व में वारंवार जन्मता है, यह बात पुरुषसूक्त में कही है । अस्तु, इस तरह चार वर्णोंके मानवों का जीव जैसा परमात्मा का अंश है, वैसा ही चोर, डाकू, लुटेरे दुष्टों का भी परमात्माका ही अंश है । तत्त्वतः सब की एकता है ।

इसी तरह आंख में सूर्य का अंश, जिह्वा में जल का अंश, नासिकामें पृथ्वी का अंश और अन्यान्य इंद्रियों में और अवयवों में अन्यान्य देवताओं के अंश आकर बसे हैं । ये जैसे सत्पुरुष के देह में बसे हैं, वैसे ही दुष्ट दुर्जनोंके देहों में भी बसे हैं । देवताओं के अंशों के निवास की दृष्टि से भी सब मानवों की, सब प्राणियों की समता है । इस रीति से ३३ देवताओं के अंश और परमात्मा का अंश शरीर में आकर रहे हैं, इस दृष्टि से सब के देह समान हैं । प्रत्येक देह में ३३ देवताओं के अंशों के साथ परमात्मा का अंश रहता है । देह सज्जन का हो या दुर्जन का, उसमें परमात्माके अंशके साथ सब देवताओं के अंश रहतेही हैं ।

अतः वेद का कथन यह है कि, जिस तरह चार वर्णों में विद्यमान जनता संसेव्य है, उसी तरह चोर, डाकू आदि भी वैसे ही संसेव्य हैं । पर सज्जनों की अपेक्षा दुर्जनों की सेवा अधिक प्रेमसे करनी चाहिये, क्योंकि इन दुष्ट मानवों की दुष्टता उन के शारीरिक और मानसिक विकृति के कारण होती है ।

सेवा उसकी करनी चाहिये, जिस के लिये सेवाकी आवश्यकता है । जैसे किसीको सर्दा लगती हो, तो उसको

कंबल देना चाहिये, प्यासेको जल, भूखेको अन्न, रोगीको दवा आदि देना सेवा है । जो तृप्त है, उसको अन्न देना सेवा नहीं है । सर्वत्र न्यूनता, हीनता, विकृतता की पूर्तिके लिये ही सेवा हुआ करता है । रोगीकी सेवा शुश्रूषा उसमें उत्पन्न विकार अथवा न्यूनता को दूर करनेके लिये की जानी चाहिये । इसी तरह चोर, डाकू, आततायी, लुटेरे, ठग, कपटी आदि जो गुनहगार हैं, वे यकृत, ग्रीहा या मस्तिष्क की विकृतिके कारण अथवा सामाजिक, आर्थिक या राजकीय दोषोंके कारण गुनाह करनेके लिये प्रवृत्त होते हैं । देखिये, यकृत बिगडनेसे मस्तिष्क बिगडता है और क्रोधी प्रकृति बनती है, जिसका परिणाम खून करनेतक होता है । दरिद्रताके कारण त्रस्त हुआ मनुष्य चोरी की ओर झुकता है । इसी तरह अन्यान्य कुप्रवृत्तियोंके कारण शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं । इसलिये जैसे ज्वरके रोगी चिकित्साद्वारा संसेव्य हैं, उसी तरह चोर, डाकू, खूनी, आततायी भी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक अथवा राजकीय चिकित्सासे सेवा करनेयोग्य हैं ।

आजकल इन चोर, डाकू आदिकोंको जेलखानेमें बंद करते हैं, कोडोंसे मारते हैं अथवा खूनियोंको फांसी देते हैं । पर वेद कहता है कि, ये भी वैसेही रुद्रके अवतार हैं, जैसे उत्तम ब्राह्मण और श्रेष्ठ क्षत्रिय । अतः ये भी सेवाके योग्य हैं । उनकी सेवा करके जिन दोषोंके कारण उनमें कुप्रवृत्तियाँ उठीं, उनको दूर करके उनकी तनदुःस्ती अथवा मनदुःस्ती करनी चाहिये। सदैक्यवादकी भूमिकाके अनुकूल और वेदके द्वारा कथित उपदेशके अनुसार चोर भी ईश्वरका रूप है और वह भी सज्जनके समान ही सेवाके योग्य है । यदि ठीक तरह इस ईश्वरके रूपकी सेवा होगी, तो जो उस ईश्वरके रूपमें अप्रसन्नता थी, वहाँ सुप्रसन्नता होगी और वेही लोग समाजमें प्रसन्नता बढायेंगे । सदैक्यवादसे अर्थात् वैदिक दृष्टिकोण धारण करनेसे इस तरह चोर और डाकू भी दिव्य भावप्रकाशनका अवसर मिलनेसे देवत्वको प्रकट कर सकते हैं । सेवा तो अप्रसन्नकी प्रसन्नता करनेके लिये ही की जाती जाती है । इस विषयमें अधिक आगे लिखा जायगा । यहां किंचित् दिग्दर्शनमात्र लिखना पर्याप्त है ।

यहांतक मानवी प्राणियों के रुद्र के रूपों का वर्णन हुआ, अब अन्य प्राणियों के रूपों में जो रुद्र का अवतरण हुआ है, उस विषय में देखिये—



## प्राणियों में रुद्र के रूप ।

१. अश्वः = घोडा [ २४ ]
२. श्वा = कुत्ता [ २८ ]
३. व्रज्यः = व्रज अर्थात् ग्वालों के बाड़ोंमें पालनेयोग्य गौ आदि पशु [ ४४ ]
४. गोप्लव्यः = गोशालामें पालनेयोग्य गौ आदि पशु [ ४४ ]
५. शीभ्यः = बैल आदि गतिमान् पशु [ ३१ ]
६. गेह्यः = घरों में पालनेयोग्य पशु, अर्थात् गाय, भैंस, बैल, कुत्ता, बिह्ली आदि पशु [ ४४ ]
७. किरिकः = किरिः = सूवर, सुकर [ ४६ ]
८. तल्प्यः = बिछोना, चारपाई, खटिया, तकिया आदि में जो कृमिकीट होते हैं, जिनको खटमल आदि नाम है, वे कृमि [ ४४ ]
९. रेप्यः = हिंसक कृमिकीट अथवा जीव [ ३९ ]
१०. गह्वरेष्टः = घन जंगलों में, पहाड़ों की गुफा में रहनेवाले सिंह, व्याघ्र आदि पशु [ ४४ ], गुहा में रहनेवाले मनुष्य ।
११. इरिण्यः = उजाड मैदान में, रेतिले स्थानमें, जो भूमि उपजाऊ नहीं है, वैसे भूमि में रहनेवाले, प्राणी अथवा कृमि [ ४३ ]
१२. सिकत्यः = रेतिले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा कृमिकीट [ ४३ ]
१३. किशिलः = पथरांवाले स्थान में रहनेवाले पशु अथवा जीव [ ४३ ]
- १४-१५ पांसव्यः, रजस्यः = धूला में रहनेवाले जीवजन्तु [ ४५ ]
- १६-१७. ऊर्व्यः [ ४५ ], उर्व्यः [ ३३ ], = उपजाऊ भूमिमें रहनेवाले जीव ।
१८. खल्यः = खलियान में जो जीव रहते हैं [ ३३ ]
१९. सुर्व्यः = [ सु-ऊर्व्यः ] उत्तम उपजाऊ भूमि में होनेवाला जीव [ ४५ ]
- २०-२१. शुष्क्यः [ ४५ ], अचर्भ्यः [ ३८ ], = शुष्क स्थानमें, वर्षा न होनेवाली भूमिमें होनेवाले जीवजन्तु ।
- २२-२३. हरित्यः [ ४५ ], वर्प्यः [ ३८ ] = हरेभरे स्थानमें रहनेवाले, वर्षाके स्थानमें होनेवाले जीवजन्तु ।

२४. अवक्ष्यः = छोटे तालाब में रहनेवाले जीव [ ३८ ]
२५. उलप्यः = घास जहां उगता है, ऐसे स्थान में होनेवाले कृमि [ ४५ ]
२६. शाप्यः = कोमल घासके ऊपर रहनेवाले कृमि [ ४२ ]
- २७-२८ पर्णः, पर्णशद्ः = पत्तोंपर रहनेवाले जीव-जन्तु [ ४६ ]
- २९-३० पथ्यः [ ३७ ], प्रपथ्यः [ ४३ ], = मार्गों पर रहनेवाले जीव, मार्गों के रक्षक ।
३१. नीप्यः = पहाड़के निम्न स्थानमें रहनेवाले प्राणी [ ३७ ] अथवा पहाड़ियों की तराईपर निवास करनेवाले मनुष्य ।
३२. आतप्यः = धूप में रहनेवाले प्राणी [ ३८ ]
३३. वात्यः = वायुरूप में रहनेवाले प्राणी [ ३९ ]
३४. वीध्न्यः = शुष्क अन्नरूप में रहनेवाले [ ३८ ]
३५. मेघ्यः = मेघ में रहनेवाले प्राणी [ ३८ ]
- ३६-३७. कात्यः [ ३७, ४४ ], कूप्यः [ ३८ ] = कुवें में रहनेवाले प्राणी, कूप के पास रहनेवाले मनुष्य ।
- ३८-४६. कुल्यः [ ३७ ], कूल्यः [ ४२ ] = जल-प्रवाहमें अथवा प्रवाहके समीप रहनेवाले प्राणी, जलप्रवाह के पास रहनेवाले मनुष्य ।
३९. सरस्यः = तालाब के समीप अथवा तालाब में रहनेवाले जीव या मानव [ ३७ ]
४०. नादेयः = नदी में अथवा नदीके समीप रहनेवाले जीव या मानव [ ३१, ३७ ]
४१. वैशन्तः = छोटे तालाबमें रहनेवाले जीव [ ३७ ], अथवा मनुष्य ।
४२. तीर्थ्यः = तीर्थस्थान में रहनेवाले [ ४२ ], ये तीर्थानि प्रचरन्ति (६१) = जो तीर्थों में विचरते हैं, यात्री ।
४३. ऊर्म्यः = लहरों में रहनेवाले [ ३१ ]
४४. प्रवाह्यः = प्रवाह में रहनेवाले [ ३१ ]
४५. पार्यः = परतीर में रहनेवाले [ ४२ ]
४६. अवार्यः = नदीके इधरके तीरपर रहनेवाले [ ४२ ]
४७. फेन्यः = जलके फेनमें रहनेवाले [ ४२ ]
४८. द्वीप्यः = द्वीपमें रहनेवाले, टापूमें रहनेवाले [ ३१ ]
४९. निधेण्यः = पानीके भंवरमें रहनेवाले [ ४४ ]
५०. क्षयणः = जहां पानी स्थिर रहता है, ऐसे स्थानमें रहनेवाले [ ४३ ]

ये सब रुद्र जलस्थानोंमें रहनेवाले प्राणियोंके रूप हैं । और देखिये-

५१. हृदयः = हृदयमें रहनेवाले ( ४४ ), हृदयको प्रिय लगनेवाले स्थानमें रहनेवाले ।

५२. वास्तुपः = घरोंका संरक्षण करनेवाले [ ३९ ] पहरेदार ।

५३. वास्तव्यः = घरोंमें रहनेवाले [ ३९ ]

' वास्तव्य तथा वास्तुप ' ये दो पद सर्वसाधारण मानव-जातिके वाचक हो सकते हैं । क्योंकि प्रायः मानव घरोंमें रहते और घरोंकी रक्षा करते हैं ।

### सर्वसाधारण रुद्र ।

१. उपवीती = यज्ञोपवीत अथवा उत्तरीय धारण करनेवाले [ १७ ]

२. उष्णीषी = पगडी अथवा साफा धारण करनेवाले [ २२ ]

३. हिरण्यवाहुः = वाहुओंपर सुवर्णभूषण धारण करनेवाले [ १७ ]

४. कपर्दी = जटा अथवा शिखा धारण करनेवाले [ २३, ४८ ]

५. व्युत्केशः = जिनके बाल कटे हैं, हजामत बनाये हुए [ २९ ], विशिखासः [ ५९ ] = शिखा न रखनेवाले, सिर मुंडन करनेवाले ।

६. सोम्यः = शान्त [ ३९ ]

७. याम्यः = नियममें रहनेवाले [ ३३ ]

८. क्षेम्यः = आराम देनेवाले [ ३३ ], घरमें रहनेवाले,

९-११. आशु, शीघ्र्य, अजिरः = शीघ्रता करनेवाले [ ३१ ]

१२-१९ महान् [ २६ ], सवृद्ध [ ३० ], पूर्वज [ ३२ ], ज्येष्ठ [ ३२ ], अग्न्य [ ३० ], प्रथम [ ३० ], बृहत् [ ३० ], वर्षीयस् [ ३० ], वृद्ध [ ३९ ] = बडा, ज्येष्ठ श्रेष्ठ, पूर्वज ।

२०-२६ अर्भक [ २६ ], ह्रस्व [ ३० ], वामन [ ३० ], मध्यम [ ३२ ], अपर-ज [ ३२ ], कनिष्ठ, [ ३२ ] अवसान्य [ ३३ ] = छोटा, कनिष्ठ, बालक, निष्ठ, [ ३२ ]

२७. बुध्न्य = तह में रहनेवाला [ ३२ ]

२८. अप्रगल्भ = अज्ञानी [ ३२ ]

२९-३० ताम्र, अरुण [ ३९ ] = विलोहित [ ७, ५२, ५८ ] भन्धु [ ६ ], सार्षपजर [ १७ ] लाल रंगवाले,

३१. आक्रन्दयन्, उच्चैर्घोषः = गर्जना करनेवाला [ १९ ]

३२. स्वपत् = सोनेवाला [ २३ ]

३३. जाग्रत् = जागनेवाला [ १६ ]

३४. शयानः = लेटनेवाला [ २३ ]

३५. आसीनः = बैठनेवाला [ २३ ]

३६. तिष्ठत् = खडा रहनेवाला [ २३ ]

३७. धावत् = दौडनेवाला [ २३ ]

यहां नानाविध प्राणियों के नाम हैं, तथापि इनमें कई पद मानवप्राणियोंके भी वाचक हो सकते हैं, जैसा देखिये- गव्हरेष्ठ [ ४४ ] यह पद सिंहव्याघ्रादि जंगली जानवरों का वाचक करके ऊपर दिया है, पर इस पदका अर्थ ' गुहा में रहनेवाला मानव ' भी हो सकता है। जो गुहामें रहता है, वह गव्हरेष्ठ है। इसी तरह ' नीप्य = [ ३७ ] पहाड की तराई पर रहनेवाला ' यह मानव भी हो सकता है, क्योंकि पहाडों की तराई पर मनुष्य भी रहते हैं। ' कूल्य ' [ ४२ ] = नदीतीरपर रहनेवाला यह जैसा मानव, वैसाही अन्य प्राणी भी होना संभव है। इसी तरह अन्ततक समझना उचित है। ये पद प्राणियोंके वाचक हैं, फिर ये प्राणी मनुष्य हों अथवा अन्य हों। ये सब रुद्रदेवता के रूप हैं ।

वास्तुपः- [ ३९ ] यह पद घरोंकी सुरक्षा के लिये जो पहरेदार होते हैं, उन का वाचक है। आगे ' उपवीती ' [ १७ ] आदि शब्द मानवों के ही वाचक हैं। व्युत्केश [ हजामत किये हुए ], विशिखासः [ शिखारहित, सन्यासी ] ये सब निःसंदेह मानवही हैं ।

इस के आगे [ ३२-३७ ] जागनेवाले, सोनेवाले, लेटनेवाले, बैठनेवाले, दौडनेवाले ये सब जाति के प्राणी हो सकते हैं, क्योंकि सभी प्राणी इन क्रियाओं को करते हैं ।

१२ ते २६ तकके शब्द भी बालक-वृद्ध, जवान-तरुण, मध्यम-कनिष्ठ आदि अवस्थाओं के वाचक हैं, अतः ये पद सब प्राणियों के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं। अतः इन अवस्थाओंमें रहनेवाले सभी प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं। बालक, तरुण, वृद्ध ये सब रुद्र हैं, अर्थात् सभी प्राणी रुद्र हैं ।

यहां प्राणियों की कोई भी अवस्था छूटी नहीं है, अर्थात् सब अवस्थाओं में विद्यमान सब प्राणी रुद्रदेवता के रूप हैं, यह यहां सिद्ध हुआ। पशुपक्षी, मानव, कृमिकीट, पतंग सभी रुद्र

के रूप हैं। इसी तरह सूक्ष्म कृमि भी रुद्र हैं, जो जलों और अन्नोद्धार मनुष्यादि प्राणियों में प्रविष्ट होकर नाना प्रकारके रोग उत्पन्न करते हैं। इनकी भयानकता प्रसिद्ध है—

### सूक्ष्म रुद्र ।

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।

( वा. १६-६२ )

जो अन्न में तथा जल में रहते हैं और अन्न खानेवालों तथा जल पीनेवालों में नाना प्रकार की पीडा उत्पन्न करते हैं, ये भी सूक्ष्म रोगकृमि रुद्र के रूप हैं।

### वृक्षरूपी रुद्र ।

१. वृक्ष ( ४० ) = वृक्ष, पेड़, वनस्पति ।

२. हरिकेश ( ४० ) = हरे रंगवाले पतेरूपी केश जिनको होते हैं, ऐसे ।

इस तरह वृक्षवनरपति भी रुद्र के रूप हैं ।

### ईश्वरवाचक रुद्र ।

अब ईश्वरको इस रुद्रसूक्तमें ' विश्वरूप ' कहा है। क्योंकि जब सभी रूप परमात्मा के हैं, तब विश्व के सब रूपों को कहां तक गिना जाय? एक बार ' विश्वरूप ' कहा, तो उसमें सब रूप आ गये, इसलिये ये नाम देखिये—

१. विश्वरूपः ( २५ ) = विश्वका रूप धारण करनेवाला,

२. विरूप ( २५ ) = विविध रूप धारण करनेवाला,

३. भव ( २८ ) = सबका उत्पादक,

४. शर्व ( २८ ) = प्रलयकर्ता,

५. भगवः, ईशानः ( ५३ ) = भगवान्, ईश्वर,

६. भवस्य हेतिः ( १८ ) = संसार के दुःखों को दूर करने का साधन ।

ईश्वर सब का कल्याण करता है, इसलिये निम्न लिखित पद उस में सार्थ होते हैं—

### कल्याणकारी रुद्र ।

३८-४०. शिव, शिवतर ( ४१ ), शिवतम ( ५१ ), = कल्याण करनेवाला ।

४१-४२ शंभु, शंकर ( ४१ ) = शांति करनेवाला ।

४३-४४ मयोभव, मयस्कर ( ४१ ) = सुख देनेवाला ।

४५. अघोर ( २ ) = जो भयानक नहीं है, जो शांत है ।

४६. सुमंगल ( ६ ) = जो मंगल है ।

४७. शंभु ( ४० ) = शांति सुख का दाता ।

४८. मीढुष्टम = सुखदाता ( ५१ ) ।

४९. त्विषीमत् ( १७ ) = तेजस्वी ।

५०. विद्युत् ( ३८ ) = बिजली के समान तेजस्वी ।

५१-५२. शिपिविष्ट, सहस्राक्षः ( २९ ) = सहस्रों किरणों से युक्त, तेजस्वी ।

यहां तक जो रुद्रदेवता का वर्णन हुआ, उससे पाठकों को पता लग सकता है कि, तमाम विश्वरूप ही परमेश्वर का रूप है, इस रूप में सब रूप आ गये। सूर्य चंद्रके रूप, जल, पृथ्वी, अग्नि, विद्युत् के रूप, सब प्राणियोंके रूप, सब जन्तुओं के रूप इसमें आ गये हैं।

स्थावर-जंगम में राज्ययन्त्रके कर्मचारी, राजा, मन्त्री, नाना प्रकारके ओहदेहार, प्रजाजन, सैनिक, योद्धा, क्षत्रिय, स्त्रियां, बालक, वृद्ध, तरुण, पशुपक्षी आदि सब आते हैं, जो परमात्मा के ही रूप हैं। यही तो सदैव्यवादद्वारा बताया जा रहा है। इसलिये परमेश्वर के रूप में राज्ययन्त्र का अन्तर्भाव होना स्वाभाविक है। सब राज्य-यन्त्र ईश्वर का स्वरूप है। इस विषय में इस यजुर्वेद के रुद्राध्यायद्वारा जो गूढ उपदेश दिया है, वह इस लेख में प्रकट करना है।

रुद्रदेवता संहार की देवता है, पर वह संहार जनता की भलाई करने के उद्देश्य में होता है। इसलिये यह रुद्रदेवता संघटना का कार्य भी करती है। इस देवताद्वारा जो संहार होता है, वह संघटना के लिये ही होता है। इस लिये रुद्रदेवता संघटना के लिये सहायक देवता है, यह बात यहां भूलनी नहीं चाहिये।

रुद्रदेवता ईश्वर का ही रूप है। ईश्वर संहारकारी है, वैसा रचनाकारी भी है। इसलिये जन्म और मृत्यु ये दोनों उसी के रूप हैं। इसलिये संहार से घबराना योग्य नहीं है। जंगल तोड़ने के बाद उस लकड़ी से घर बनते हैं, अर्थात् वृक्षों का तोड़ना घरों के बनानेका सहायक है। इसी तरह संहार आगामी रचनाके लिये आवश्यक ही है।

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।

शिवा रुतस्य भेषजी तथा नो मृड जीवसे ॥

( वा० य० १६।४९ )

अिर्घासङ्घः ॥ २१ ॥ क्षयणाय च ॥ ४३ ॥

( वा० य० १६ )

रुद्रकी दो 'तनुएँ' हैं। एक 'घोरा' तनु और दूसरी 'शिवा' तनु । रुद्र का घोर कर्म करनेवाला एक शरीर है और कल्याण-कारक कर्म करनेवाला दूसरा शरीर है। इसीलिये इस रुद्र को जैसे 'शिव' कहते हैं, वैसे ही 'कूर' भी कहते हैं। अस्तु। इस से ज्ञात हो सकता है कि, इस देवताके मिष से जैसे विघटना के, तौडने के कार्यों का विधान है, वैसे ही संघटना के, संगठन के कार्यों का भी उल्लेख है। शत्रु के साथ लड़ना और उस का नाश करना, इसका एक विघटनाका कार्य है और राष्ट्रकी घटना करना इस का दूसरा संघटनाका कार्य है। यह दूसरा कार्य अब बताना है।

वा० यजु० के अ० १६, मं० २५ में " नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः, नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः " कहा है। यह गणपति-संस्था की महत्त्वकी बात है। गणपतिके सहस्रनामों से 'गण, गणेश, गणपति, गण-मण्डल, गणमण्डलाध्यक्ष, महागणपति' आदि पद हैं। ये भी यहाँ देखने आवश्यक है। यहाँ गणपति-संस्था रुद्र की शासनसंस्था में प्रधान कार्य करनेवाली संस्था है। गण और व्रात ये दो इन के संघटना के मूल भाग हैं।

### गण और व्रात ।

'व्रात' पालन करनेवालों के संघ का नाम 'व्रात' है और जो केवल एकत्र गिनाये गये हैं, उन का नाम 'गण' है। 'गण' संख्याने 'धातु से 'गण' शब्द बनता है, अतः इस का अर्थ जितनी संख्या निश्चित की गयी है, जो गिने हैं, जिनकी गणना की गयी है, ऐसा होता है और एक व्रातसे, एक नियम से, एक उद्देश्य तथा एक ध्येय के कारण जो इकट्ठे कार्य कर रहे हैं, वे 'व्रात' हैं। तीसरा एक संघटना बतानेवाला पद इस रुद्राध्याय में है, वह है 'पुञ्जिष्ठ' अर्थात् पुञ्ज करके रहनेवाले, अनेक लोग मिलकर अपना जमाव बनाकर रहनेवाले। 'पुञ्ज' का अर्थ एकत्र मिलकर रहना है। स्रसंघटना के ये तीन भेद हैं।

वेदमें 'संभूति' शब्द ( वा. य. अ. ४०।९-११ में ) आया है। कारीगरों की संघटना ( व्यवसाय करनेवाली मंडली = 'कंपनी' ) के अर्थ में यह पद है। 'संभूति, संभ्रजन, संभ्रसमुत्थान' आदि अनेक पद मिलकर व्यवहार करने के अर्थ में भारतीय अर्थशास्त्र में प्रचलित हुए

रुद्र प्र० ४

हैं। अनेक लोगोंने मिलकर बहुत धन इकट्ठा करके बड़ा व्यापारव्यवहार करने के अर्थ में ये पद प्राचीन काल से प्रयुक्त होते हैं। स्मृतियों और अर्थशास्त्र में इस तरह की संघटना के विषय में विस्तारपूर्वक उल्लेख है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में उक्त 'संभूति, संभव' ये पद मानवों के सांघिक जीवनविषयक व्यवहार के लिये आये हैं। पर रुद्राध्याय में इस पदका प्रयोग नहीं है, इसलिये हम यहाँ इस पदका विचार नहीं करेंगे।

गण, व्रात और पुञ्ज ये तीन पद रुद्र की संघटना के लिये इस रुद्राध्याय में प्रयुक्त हुए हैं, इसलिये इनका विचार हम यहाँ करेंगे।

१. 'गण' पदसे 'गणना किये गये, गिने हुए लोग,'

२. 'व्रात' पदसे 'एक व्रात का पालन करनेवाले लोग,' और—

३. 'पुञ्ज' पदसे 'एक जातिके लोग' बोधित होते हैं।

जनगणना करनेकी बात 'गण' पदसे बोधित होती है। रुद्रकी शासनसंस्थामें जनकी गणना की जाती थी, यह इससे सूचित होता है। विना गणना किये 'गण' बनही नहीं सकते। इसलिये जहाँ गणोंका राज्य होता है, वहाँ जनगणना अवश्य होती है। महादेवके भूतगण प्रसिद्ध हैं। इन भूतगणोंमें जनगणना की जाती थी। ये ही गण रुद्रशासनमें प्रमुख घटक माने गये हैं।

एक नियमका पालन करनेवाले, एक कार्य करनेवाले, एक उद्देश्यसे संघटित हुए, एक ध्येयको माननेवाले जो लोग होंगे, उनके समूहका नाम 'व्रात' है। कर्मव्यवसायसे, व्यापार-व्यवहारसे ये व्रात नामक संघ निर्माण होते हैं। सैनिकोंके समूहों के भी ये नाम महत्सूक्तोंमें प्रसिद्ध हैं। एकही उद्देश्यसे एकही कर्ममें लगनेके कारण इनमें सांघिक बल बड़ा चढा रहता है।

पूर्वोक्त रुद्रसूक्तमें 'गण, गणपति, व्रात, व्रातपति' ऐसे पद आये हैं। अर्थात् इन संघोंका एक अध्यक्ष भी रहता है। इस अध्यक्ष का कार्य अपने संघका हित करना होता है। ( आजकल Union, Guild आदि श्रमजीवी लोगोंके संघ और उनके अध्यक्ष रहते हैं, वैसेही यहाँ ये दीखते हैं। )

इससे पूर्व कहा है, 'गण, गणमण्डल, गणमहामण्डल' ऐसे संघोंके छोटे और मोटे संघ हुआ करते हैं। इसी तरह 'गणेश, गणपति, गणमण्डलेश, गणमहामण्डलाधि-

**पति, महागणपति** ' आदि नाम गणपतिसहस्रनामोंमें संघाधिपतियोंके दिये हैं । इससे इनके कर्तव्योंका ज्ञान हो सकता है और ये संघ अपने संघमें रहनेवाले लोगोंके लिये क्या कार्य करते हैं, इसका भी ज्ञान इन नामोंके मननसे हो सकता है ।

'पुंज' के लिये 'पुंजपति' नहीं है । 'पुंजिष्ठ' पद ही है । अर्थात् इस नामके संघमें कोई अध्यक्ष नहीं होता था । ये संघके सभी सदस्य मिलकर अपना प्रबंध किया करते थे ।

पुंज के सदस्य इकट्ठे होते हैं और वे सबके सब अपना संघ का हित या प्रबंध करने के लिये जो कुछ करना होगा, वह कर लेते हैं । इनके नाम से यह सिद्ध होता है कि, ये संघशासक हैं । इन संघशासकों में कोई एक मुखिया नहीं होता । अतः ये पूरे पूरे 'समाजशासक' होते हैं । इस पुंजव्यवस्था से गण और व्रात की व्यवस्थामें कुछ भिन्नता है । पाठक इस भेद को ध्यान में अवश्य धारण करें । पुंज का जाति के साथ संबंध है और ऐसा जातीय समाजशासन इस भरतखण्ड में कई जातियों में प्राचीन काल से इस समय तक प्रचलित है ।

ये गण और व्रात संघ कार्य, व्यवहार, धंधा, उद्योग, सिद्धान्त या ध्येय के साथ संबंधित हैं । पुंज के समान जाति के या कुल के साथ संबंधित नहीं हैं । इसीलिये गण और व्रातके पूर्व दूसरे व्यवसायों का वाचक कोई पद अवश्य रखना चाहिये, तब इस व्यवस्था की कल्पना ठीक तरह ध्यानमें आ सकता है । बा० यजुर्वेदके १६ वें अध्यायमें ऐसे अनेक धंधोंके पद हैं, उनको इस के साथ जोड़ दें । देखिये, इससे ये संघ सिद्ध होते हैं—

### धंधा

भिषक् ( वैद्य )

वणिक् ( वैश्य )

क्षत्ता ( बढई )

तक्षा ( तर्खाण )

रथकार ( रथ बनानेवाला )

### संघ

भिषगगण ( वैद्यों का संघ )

वणिगगण ( व्यापारियों का संघ )

क्षत्तुगण ( बढईयों का संघ )

तक्षगण ( तर्खाणों का संघ )

रथकारगण ( गाडी बनानेवालों का संघ )

कुलाल ( कुम्हार )

कुलालगण ( कुम्हारों का संघ )

इस तरह कार्यव्यवहार करनेवाले धन्धेवालों के गण होते थे और शर्तें लगाकर, नियम बांधकर एक ध्येय से प्रेरित होकर जो संघ बनेते थे, वे 'व्रात' कहलाते थे । उतने नियमों का, उतनी शर्तोंका ही बन्धन उन व्रातनामक संघवालोंपर रहता था । व्रात संघके सदस्य अन्य व्यवहारके लिये स्वतंत्र समझे

जाते थे । 'गण' व्यवस्थामें हरएक सदस्यपर अन्य सदस्योंके हिताहितकी जिम्मेवारी पूर्णतया रहती थी, पर 'व्रात' व्यवस्थामें उतने निश्चित व्रातकी मर्यादा तक की ही यह जिम्मेवारी रहती थी । गणमें उत्तरदायित्व अधिक और व्रातमें नियमानुकूल मर्यादित रहता था । इस कारण गणमें प्रविष्ट होनेवालोंको लाभ भी अधिक होते थे और व्रातमें उसकी अपेक्षासे लाभ भी कम होते थे ।

विचार करनेसे पता चलता है कि, गणसंस्थामें संमिलित होनेवाले सदस्योंका हित करनेका पूर्णतासे उत्तरदायित्व गणके अधिष्ठातापर रहता था । इसलिये गणेश अर्थात् गणके अधिष्ठाताको तथा गणपति अर्थात् गणके पालनकर्ताको गणके प्रत्येक सदस्यके हितकी सब जिम्मेवारी उठानी पडती थी । अर्थात् गणमें प्रविष्ट सदस्य बीमार हुआ, युद्धमें जखमी हुआ, किसी अन्य आपत्तिमें फँसा, तो ऐसी सब आपत्तियोंका निवारण करनेके लिये सुप्रबन्ध करनेका कार्य गणपतिको करना पडता था । यह भाव निम्न लिखित नामोंसे ज्ञात होता है— 'गणभीतिहर, गणदुःख-प्रणाशन, गणभीत्यपहारक, गणसौख्यप्रद, गणाभीष्टकर, गणरक्षणकर्ता,' ऐसे अनेक नाम हैं, जो बताते हैं कि गणोंका सब प्रकारसे हित करनेके लिये गणोंके अध्यक्षको अनेक प्रकारका योग्य प्रबंध करना पडता था ।

'व्रात' के विषयमें जिम्मेवारी थोड़ी होती है । जिस नियम या शर्तसे वह व्रात संघटित होता था, उतनाही उत्तरदायित्व संघाधिपतिपर रहता था । अन्य बातोंके विषयमें उसको देखने की आवश्यकता नहीं होती थी ।

गण-व्यवस्थामें छोटीमोटी कई संस्थाएं थीं, जो निम्नलिखित नामोंसे ज्ञात हो सकती हैं— 'गणप, गणवर, गणेश, गणपति, गणाधीश, गणाप्रणी, गणाध्यक्ष, गणेश्वर, गणैकराट्ट, गणाधिराज, गणनायक, गणमण्डलाध्यक्ष' ये पद एक अर्थके वाचक नहीं हैं । प्रत्येक पदमें अधिकारका भेद है और तदनुसार छोटे या बड़े संघका भी वह सूचक है ।

गणमण्डलाध्यक्ष वह है, जो अनेक गणोंके संघोंका अध्यक्ष होता है । गणनायक वह है, जो गणोंको चलानेवाला है । गणप वह है कि जो गणोंका पालन करता है । ये सब पद गणशासन की प्रणाली बताते हैं । इन सबका विचार करनेसे इस शासन-सम्बन्धी सब बातोंका पता लग सकता है, पर हमें इस लेखमें गणपतिसंस्थाका पूर्ण विचार करना नहीं है, प्रत्युत रुद्रशासन-

संस्थाका विचार करना है । इसके अन्तर्गत गणपति पद होनेसे गणपतिसंस्थाका थोडासा विचार करना आवश्यक हुआ, अतः अतिसंक्षेपसे यह विचार यहां किया है ।

अपना प्रकृत विषय ठीक तरह समझमें आनेके लिये यजुर्वेद अ. १६ में आये गण और गणपति का थोडासा अधिक विचार करना आवश्यक है । विचार करनेके लिये मान लीजिये कि, ' रथकार-गण ' है, अर्थात् गाड़ियाँ बनानेवालोंका एक संघ रुद्रके अधिराज्यमें स्थापन हुआ है । इसका एक अध्यक्ष होगा, जिसका नाम ' रथकार-गणेश ' होगा । इस अध्यक्षका प्रथम कर्तव्य है अपने संघमें स्थित सदस्योंकी गणना करना, एक पुस्तकमें अपने सदस्योंके नाम, स्थान तथा उनकी आवश्यकताओंका लेख तैयार करके सुरक्षित रखना । अपने गणको अर्थात् संघसदस्यको कार्य न होगा, तो उसको कार्य देना, भोजनका प्रबंध न होगा तो करना, बीमार होनेपर दवाका प्रबंध करना, अर्थात् काम लेना और उसके बदले दाम देना अथवा सुखसाधन देना । इतने वर्णनसे पाठकोंके मनमें यह बात आयी होगी कि, यह गणव्यवस्था कैसी होनी चाहिये ।

' गण-आर्ति-हर ' यह नाम इस प्रबंधकी सुव्यवस्था का सूचक है । गणव्यवस्थामें आये सदस्योंकी हरप्रकारकी आपत्तियोंको दूर करना गणनायकका कर्तव्य होता है और वह उसको करनाही पडता है । सदस्य कर्म करनेके जिम्मेवार हैं, शेष जिम्मेवारी नायकपर रहती है ।

पाठक ऐसी कल्पना करें कि, इस रथकार-गण में १०० सदस्य होंगे, तो उन को उन के करनेयोग्य काम देना, उन से काम करवा लेना और उन को सुखसाधन समय पर देना, यह इस गणसंस्था में अध्यक्ष का मुख्य कर्तव्य है । ऐसा प्रबन्ध करने के लिये देशभर कैसी सुव्यवस्था रखना आवश्यक है, इस का विचार पाठक कर सकते हैं । यह रथकार-संघ के विषय में हुआ ।

इस के पश्चात् ऐसे अनेक गणों का ' गण-मण्डल ' होता है । जिस में एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक उपकारक गणों का परस्पर सम्मेलन होता है और अनेक ' गण-मण्डलों ' का मिलकर एक ' महागणमण्डल ' हुआ करता है । हम पूर्वोक्त रुद्राध्यायमें देखेंगे कि, गणमण्डल में रथकार-गण के साथ कौन से अन्य गण संमिलित ही सकते हैं । हमारे विचार से निम्न लिखित कारीगरों का गणमण्डल रथकार-गण के

साथ बन सकता है— ( क्षतृगण ) वडइयोंका संघ, ( तक्षगण ) तर्खाणों का संघ, ( कर्मरगण ) लुहारों का संघ, ये और ऐसे एक दूसरेके साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक कारीगरों के गणोंका मिलकर यह गणमण्डल होगा ।

इस गणमण्डल का एक अध्यक्ष होगा । उसका कर्तव्य सब गणों का हित करना होगा । इस तरह सदस्यों का गण, गणों का गणमण्डल और गणमण्डलों का महागणमण्डल होता है । ऐसा संघों का यह जाला देशभर फैला रहता है । यह है गणशासन की आयोजना ।

रुद्रसूक्त में जो नाम गिनाये हैं, उन में जो कार्यव्यवहार के वाचक नाम हैं, उन सब के ऐसे गण हैं, ऐसा समझकर इध रुद्रशासनप्रणाली का विचार करना चाहिये । तब वैदिक गणशासन का महत्त्व ध्यान में आ सकता है । यहां प्रत्येक के संघ का स्वतन्त्र विचार करके लेख को व्यर्थ बढाने की आवश्यकता नहीं है । रुद्र की शासनव्यवस्था की कल्पना ही पाठकों को देना है । ऊपर दिखे वर्णन से वह व्यवस्था पाठकों के मन में आ गयी होगी । इस तरह ब्राह्मणवर्ग में कई गण अथवा संघ, क्षत्रियों में अनेक गण अथवा संघ, इसी तरह वैश्य और शूद्रों में भी कार्यव्यवहार तथा व्यवसाय के गण बनाने से यह रुद्रशासनप्रणाली परिपूर्ण होती है ।

राष्ट्र में कोई मनुष्य गणव्यवस्था से बाहर नहीं रहने पाय, जिसके कर्म और व्यवहार की गणना नहीं हुई, ऐसा भी कोई मनुष्य नहीं रहना चाहिये । प्रत्येक मनुष्य को उसके करनेके लिये सुयोग्य कार्य मिलना चाहिये और उस कर्म के बदले उसको कर्मफलस्वरूप आवश्यक सुखसाधन प्राप्त होने चाहिये । यह इस गणव्यवस्था का मूल सूत्र है ।

प्रत्येक मनुष्य को अपना कर्म उत्तम कुशलता के साथ समाप्त करना चाहिये, कर्म के फलस्वरूप सुखसाधन देना इस शासनसंस्था की जिम्मेवारी है । कर्म करनेपर हरएक को आवश्यक सुखसमाधान मिलने ही चाहिये । आवश्यक सुखसाधनों में रहने के लिये सुयोग्य स्थान, भोजन के लिये योग्य और आवश्यक अन्न, पीने के लिये उत्तम जल, ओढने के लिये आवश्यक वस्त्र, बीमारी की निश्रुति के लिये चिकित्सा के साधन, धर्मसंस्कार के समय पर होनेकी व्यवस्था, विद्या की पढाईकी व्यवस्था और आध्यात्मिक उन्नति के लिये आवश्यक गुरुपदेश आदिका समावेश होना स्वाभाविक है । जो सदस्य उत्तम धर्मा-

नुकूल रहेगे, उनका इस व्यवस्था से कल्याण होगा । पर जो नियमभंग करेंगे, उनको कठोर दण्ड देना भी इस रुद्रशासन के प्रबंधद्वारा ही होता रहता है । उसमें क्षमा नहीं होगी ।

रुद्रसूक्त में जो नाम कार्यव्यवहार करनेवालोंके गिनाये है, उतने ही कार्यव्यवहार करनेवाले हैं, ऐसी बात नहीं है । किसी देशविशेषमें इससे न्यून वा अधिक भी कार्यव्यवहार करनेवाले लोग हो सकते हैं । वहाँ की स्थिति के अनुसार न्यून वा अधिक गणों की व्यवस्था होगी । उस रुद्राध्याय के वर्णन में इस रुद्राध्यक्षशासनव्यवस्था का पता लगने के लिये केवल सूचनामात्र उल्लेख है । उस अध्याय में ' गण, गणपति ' तथा ' व्रात, व्रातपति ' ऐसे नाम लिखकर इस गणशासन के व्यवहार की सूचना दी है । परन्तु प्रत्येक धंधेवाले के साथ ' गण ' शब्द उस अध्याय में लगाया नहीं है । वह उन धंधेवाले नामों के साथ लगाकर इस शासन की कल्पना पाठकों को करनी चाहिये, इसीलिये यह लेख लिखा है ।

उक्त अध्याय में कई पद सर्वसामान्य भाव बतानेवाले हैं, उन्हें देखिये— ( उपवीती ) यज्ञोपवीतधारी, ( उष्णीषी ) पगडीधारी, ( कपर्दी ) शिखाधारी, ( व्युसकेश ) जिस के बाल कटे हैं । ये पद सामान्य हैं । प्रत्येक वर्णके लोगों को ये पद लगाये जा सकते हैं । ' उपवीती ' पद तीन वर्णों के लिये प्रयुक्त हो सकता है, शेष तीनों पद सब मानवोंके लिये प्रयुक्त हो सकते हैं ।

इसी तरह ( स्वपत् ) सोनेवाला, ( जाग्रत् ) जागनेवाला, ( शयनः ) लेटनेवाला, ( आसीनः ) बैठनेवाला आदि पद सर्वसामान्य मानवों के लिये अथवा प्राणियों के लिये लगाये जा सकते हैं । तथा ( महान् ) बड़ा, ( ज्येष्ठ ) श्रेष्ठ, ( प्रथम ) पहिला, ( कनिष्ठ ) छोटा आदि पद भी सामान्य पद हैं, जो हरएक प्राणी के लिये प्रयुक्त हो सकते हैं । ऐसे सामान्य पद इस अध्याय में कौनसे हैं, उन का पता पाठकों को उक्त पदों का अर्थ देखने से लग सगता है । ऐसे सर्वसामान्य पद छोटने चाहिये, और शेष पदों में जो पद कामधंधेके सूचक हैं, व्यापार व्यवहार के सूचक तथा विशेष उद्यम के सूचक हैं, उनके साथ ही यह ' गण ' पद अथवा ' व्रात ' पद लग सकता है । ये ' गण, व्रात और पुंज ' पद सब व्यवसायों के साथ लगनेवाले पद हैं । उदाहरण के लिये हम कुछ ऐसे गण बना देते हैं—

ब्राह्मणवर्ण में— गुत्सगण ( कवियोंका संघ ), श्रुतगण

( भुतिशास्त्रज्ञों का संघ ), आधिवक्त्रगण ( उपदेशक संघ ), भिषगण ( वैद्यों का संघ ), इ. इ.

क्षत्रियवर्ण में— श्रेत्रपति-गण ( खेतोंके मालिकों का संघ ), रथीगण ( रथियोंका संघ ), स्त्रायुधगण ( उत्तम हथियार चलानेवालों का संघ ), दूरेवधगण ( दूर से लड़ करनेवालों का संघ ), इ. इ.

वैश्यवर्णमें— बणिग्गण ( व्यापारियोंका संघ ), संग्रहीट-गण ( बड़े बड़े संग्रह [ Store ] करनेवालोंका संघ ), पशु-पतिगण ( पशुपालकों का संघ ), इ. इ.

शूद्रवर्ण में— रथकारगण ( गाडी बनानेवालों का संघ ), इषुकुद्रगण ( बाण बनानेवालों का संघ ), कुलालगण ( कुम्हारों का संघ ), निषादगण ( निषादोंका संघ ), इ. इ.

इस तरह इस रुद्राध्याय का विचार करके जितने धंधेवाले यहां हैं और जितने कल्पना में आ सकते हैं, उतनों के संघों की अर्थात् उतने गणोंकी अथवा व्रातोंकी कल्पना पाठक कर सकते हैं । इस तरह गणोंकी स्थापना के पश्चात् अनेक परस्पर सहायक गणोंका मिलकर एक गणमण्डल बनने की भी कल्पना पाठक करें । प्रत्येक गण का एक अध्यक्ष तथा गणमण्डल का प्रमुख बनाने का भी विचार इसी तरह हो सकता है । इस संस्था के अध्यक्ष वा प्रमुख का कर्तव्य पूर्व स्थानमें बताया ही है । गणके सब सदस्यों का ठीक तरह योगक्षेम चलाना संघप्रमुखों का कर्तव्य है । कर्म कुशलता से करना संघस्थों का कर्तव्य है । इस तरह विचार करनेसे निःसन्देह पता लग सकता है कि, यह गणशासन की आयोजना अत्यंत उत्तम है और बड़ी सुखदायी भी है ।

इसमें कर्मकर्ताओं को चिंता नहीं है, प्रमुखों को ही चिंता रहनी है । कर्मकर्ताको इतनी ही चिंता रहती है कि, अपनी कारीगरी की अत्यधिक उन्नति करना । सबका योगक्षेम गणव्यवस्थाके प्रबंधद्वारा यथायोग्य होता रहता है ।

शिक्षाका प्रबंध ब्राह्मणों के द्वारा विनामूल्य होता रहता है । रक्षाका प्रबंध क्षत्रिय करते रहते हैं । इसी तरह वैश्यशूद्रों के व्यवसायों का प्रबंध होता रहता है । और सब मानवों का योगक्षेम चलता है ।

' गणनायक ' का कार्य गणके सदस्यों को कल्याण है । यहां नायक का अर्थ अधिपति नहीं है, परन्तु नेता अर्थात्

ज्ञातक है । आज्ञा ज्ञाना कर्तव्य करना चाहिये, इस विषय की ओर संसक्ति अपने सदस्यों को देकर जो अपने संघ से उत्तमोत्तम कार्य कराता रहता है, वही गणनायक होता है । गण का ईश्वर, गण का पालक, गणका अधिपति, गण का नायक ये सब विभिन्न कर्तव्य बतानेवाले पद हैं । इनके विभिन्न कर्तव्य अच्छी तरह समझनेसे ही गणशासन का उपयोगित्व ठीक तरह ध्यान में आ सकता है ।

गण का अधिष्ठाता जानता है कि, अपने संघ में कितने कर्मकर्ता हैं, किसको किस वस्तु की जरूरत है, उस की आवश्यकता की पूर्तता किस तरह करनी चाहिये, अपने संघ में कौन बीमार है, किस वैद्य से उसकी चिकित्सा करनी योग्य है, आदि का विचार गण का अधिष्ठाता करता रहता है । गणमण्डल के अन्दर अनेक संघ संमिलित रहते हैं, उनके धंधोंका परस्पर संबंध रहता है और वे धंधे एक दूसरे के साहाय्यकारी रहते हैं । इसलिये गणमण्डल की सुव्यवस्थासे सब गणों का सुख बढ़ता जाता है ।

गणमण्डलों के मुख्य महागणमण्डलाध्यक्ष के पास सभी प्रकार की व्यवस्था रहती है । सारे कारीगरोंके सब पदार्थ उसके कार्यालयमें जमा होते हैं और आवश्यकताके अनुसार ब्रह्म पदार्थों का लेनदेन करता है । अनावश्यक वस्तुओं के निर्माण पर वह प्रतिबंध रखता है, और आवश्यक वस्तुओं के निर्माण की प्रेरणा करता है । एक बार इस तरह की सुव्यवस्था की कल्पना पाठकोंके मनमें उतर गयी, तो वे ही इस सब व्यवस्था के विषय में उत्तम कल्पना अपने मन में कर सकते हैं । इस इष्टि से यह वा० यजुर्वेद का १६ वाँ अध्याय विशेष अध्ययनीय है । साथ ही साथ वा० यजुर्वेद ३०वाँ अध्याय भी मननपूर्वक अध्ययन करनेयोग्य है । १६ वाँ अध्याय रुद्रदेवताके रूप बताने के लिये है और ३० वाँ अध्याय नारायण पुरुष के रूप बताने के लिये है । पर तत्त्वदृष्टि से दोनों का आशय एक ही है ।

मह गणशासनव्यवस्था वेद की आदर्श शासनव्यवस्था है । इस से प्रजा का हित अधिक से अधिक हो सकता है । प्रजा का सुख अधिक से अधिक करने के लिये इसी मार्ग से जाना चाहिये । इस में शासकों की व्यवस्था इस तरह रहती है—

१. रुद्र = (महारुद्र, महादेव) = सर्वाधिपति ।

२. मंत्री = मन्त्री, सलाहकार ।

३. सभा, सभापति = राष्ट्रभाषा, राष्ट्रभाषि, ब्रामसभा, प्रांतसमिति, आमंत्रण ( मन्त्रीमंडल ) ।

४. गण, गणपति = गणोंकी नाना प्रकारके संघों की व्यवस्था ।

५. व्रात, व्रातपति = नाना प्रकार व्रतनिष्ठ संघों की व्यवस्था ।

६. पुञ्जिष्ठ = मानवपुञ्जों की व्यवस्था ।

यह व्यवस्था पूर्व स्थान में बतायी है । गण, महामण्डल, गणमण्डल आदि बड़े बड़े संघों में से राष्ट्रसभा के सदस्य चुने जाते हैं और इस तरह राज्य का नियंत्रण होता रहता है और वहां प्रत्यक्ष जनताके साथ रातदिन रहनेवाले और जनता की स्थिति देखनेवाले ही लोग व्राते हैं, इसलिये जन का शासन जनहित का साधक होता है ।

इस के साथ साथ निम्न लिखित कार्यकर्ता भी होते हैं—

७. क्षेत्रपति = खेतों की रक्षा करनेवाले,

८. वनपति = वनों की पालना करनेवाले,

९. स्थपति = स्थानों के पालनकर्ता,

१०. कक्षाणां पति = राष्ट्र की कक्षा चारों ओर की परिधि होती है, वही की सुरक्षा करने के लिये जो नियुक्त होते हैं, वे कक्षापति कहलाते हैं, गुप्त स्थानों के रक्षक ।

११. पत्नीनां पति = पैदल विभाग के नेता,

१२. सेना, सेनापति = सब प्रकार की सेना और उस के अधिपति,

१३. सेनानी = सेना का संचालन करनेवाले,

१४. आव्याधिनीनां पति = हमला करनेवाली सेना के नेता ।

इस तरह सेना की व्यवस्था इस रुद्रशासन में रहती है । इस रुद्राध्याय में सैनिकों के नाम बड़े विस्तारपूर्वक दिये हैं । पाठक उन सब को यहां रखकर उन का कार्य राष्ट्ररक्षा में कितना है, इस का यथायोग्य विचार करें, उन सबको यहां पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

१५. वास्तुपः = घरोंकी रक्षाके लिये नियुक्त पहरेदार,

१६. वास्तव्यः = लोग जहां रहते हैं, वहां रहनेवाला,

१७. गङ्गरेष्ठः = गिरिकंदरों की रक्षाके लिये नियुक्त,



१८. नादेयः, तीर्थ्यः = नदी तैरकर पार होनेके स्थान-पर रक्षा के लिये तथा सहाय-तार्थ नियुक्त,

१९. नक्तंचरः = रात्रीके समय घूमकर रक्षा करनेमें नियुक्त । इस तरह अनेकानेक पदोंसे पाठक योग्य बोध प्राप्त कर सकते हैं और रुद्र की शासनव्यवस्थाका पता भी इस से लगा सकते हैं ।

यहां पाठक देखें कि, रुद्राध्याय ( वा. यजु. अ. १६ ) के विशेष सूक्ष्म रीति के इस अध्ययन से एक विशेष प्रकार की गणशासन की प्रणाली का बोध यहां हमें मिला है । यह वैदिक व्यवस्था है और प्रत्येक प्रजाजनका इससे लाभ हो सकता है । इस विषय में विस्तारपूर्वक बहुत कुछ स्पष्टीकरण करना आवश्यक है, परन्तु वैयाकरणों के लिखे हमारे पास यहां स्थान नहीं है ।

### एक रुद्रके अनेक रूप हैं ।

एक ही रुद्र के ये सब मानवी रूप हैं । गण, गणपति ये दोनों रुद्र के रूप हैं । मन्त्री और राजा, सेना और सेनापति, क्षेत्र और क्षेत्रपति, वणिक् और प्राहक, शिष्य और गुरु ये सब रुद्र के रूप हैं । कोई मनुष्य, कोई प्राणी अथवा कोई वस्तु रुद्रका रूप नहीं, ऐसी वस्तु यहां नहीं है ।

यहां राजा भी ईश्वर का रूप है और प्रजा भी । दोनों मिलकर एक ईश्वरके दो रूप हैं । राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, मालक-मजदूर, धनी-सेवक, ज्ञानी-अज्ञानी ये सब ईश्वरके ही रूप हैं, अतः ये परस्पर की सेवा करनेयोग्य हैं । एक सत्ता के ये अंश हैं । अतः सब की मिलकर एक ही सत्ता माननी चाहिये । यहां किसी की भी विभिन्न सत्ता नहीं है । हम सब एक ही जीवन के अंश हैं, यह जानकर परस्पर के सहायक व्यवहार हम सबको करने चाहिये ।

जिस तरह एक शरीर में सिर, आंख, नाक, कान, मुख, जिह्वा, दांत, होठ, गाल, बाहु, अंगुलियां, हात, पैर, पांव आदि अनेक अवयव एकही जीवनके अवयव हैं और पूर्णतया परस्पर सहायता करना इनका कर्तव्य है, सब का मिलकर एक जीवन है, यह जानना, मानना और उस एक जीवन के हितके लिये अपना समर्पण करना प्रत्येक अवयव का कर्तव्य है, उसी तरह सब मानव एकही जीवनके अंश हैं, यह जानना,

मानना और उस अखंड, अटूट, अनन्य एक जीवनका अत्यधिक हित करनेके लिये अपने जीवनको लगाना, अर्थात् पूर्ण की सेवाके लिये अंशने अपना अर्पण करना आवश्यक है ।

जो लोग शंका करते हैं कि सदैक्यवादसे राष्ट्रीय शासन किस तरह होगा, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रकी उन्नति तथा राष्ट्रीय संघटना किस तरह होगी, इस शंकाका उत्तर इस लेखमें दिया गया है । वेदने जनताकी उन्नतिके लिये 'सदैक्यवाद' दिया और इस वादसे सिद्ध होनेवाला राष्ट्रीय संघटनाका आदर्श भी मानवोंके सम्मुख गणव्यवस्थाद्वारा रख दिया । सदैक्यवादसे अनन्य-भावकी सिद्धता होती है और सब प्राणियोंका मिलकर एक अखण्ड और अटूट जीवन है, इसके विषयमें निश्चय होता है । इस निश्चयके पश्चात् व्यक्ति व्यक्ति की, संघ संघकी तथा जाति जाति की सेवामें लगकर, परस्पर सेवानुभूषणसे जो सबकी उन्नति होती है, उस उन्नतिकी आयोजनाकी कल्पना इस गणसंस्थासे पाठकों के मनमें स्थिर हो सकती है । इस तरह सदैक्यवादसे राष्ट्रीय उन्नति सिद्ध होती है और इससे मानवताका भी पूर्ण विकास हो सकता है ।

इस रुद्राध्याय में सब प्राणी रुद्रके रूप हैं ऐसा कहकर संघटना का वैदिक संदेश दिया है । अन्य स्थानों में पुरुष, नारायण, आत्मा, ब्रह्म आदिके सब रूप हैं, ऐसा बता कर वही संदेश दिया है । सदैक्यवाद का तत्त्व यह है कि, सबके रूप भिन्न होने पर भी सब की सत्ता तत्त्वतः एक मानना । यहां तत्त्वतः भिन्न अनेक सत्ताएं नहीं हैं । इस सदैक्यवाद के सिद्धान्त को व्यवहार में लानेके लिये छोटे छोटे गणों में यह तत्त्व प्रथम आचरणद्वारा तथा परस्पर सेवाद्वारा सिद्ध करना चाहिये । पश्चात् गणों के, संघोंके और राष्ट्रके व्यवहार में लाना चाहिये और अन्त में मानवों के व्यवहार में लाना योग्य है । इसका मार्ग जो वेद ने बताया है, वह यह है । इसका विचार पाठक करें ।

अस्तु । रुद्रदेवताका स्वरूप और उसका कार्य इसका विचार यहांतक हुआ । पाठक रुद्रके मंत्रोंका अधिक विचार करें और वेदका आशय जाननेका यत्न करें । यहां रुद्रके संपूर्ण मंत्रोंका संग्रह इसी प्रकारके मनन के लिये इकट्ठा किया है ।

निवेदन-कर्ता

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,  
स्वाध्याय-मण्डल, औंध, (जि. सातारा)

# रुद्रदेवताकी विषयसूची ।



विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१. रुद्रदेवताका परिचय ।	३	२१. सर मोनिअर बुइलियमसाहबकी सम्मति ।	१३
२. रुद्रके विषयमें निरुक्तका मत	”	२२. श्री० म० आर्थर आंटोनी मॅक्डोनेलसाहबकी सम्मति ।	१४
३. रुद्रके विषयमें उपनिषत्कारोंकी सम्मति ।	४	२३. पौराणिक रुद्र और वैदिक रुद्र ।	१५
४. रुद्रके एकत्वके विषयमें वेदकी सम्मति ।	५	२४. रुद्रका शरीर ।	”
५. सर्वव्यापक रुद्रदेव ।	”	२५. खोजका विषय ।	१६
६. जगत् का पिता रुद्र ।	”	२६. रुद्रदेवताका यजुर्वेदोक्त विश्वरूप ।	”
७. सब सृष्टिका स्वामी रुद्र ।	”	२७. मानवरूपोंमें रुद्र ( ज्ञानी पुरुष ) ।	”
८. सर्वशक्तिमान् रुद्र ।	६	२८. क्षत्रियवर्गके रुद्र ( वीर रुद्र । )	१७
९. गुहानिवासी रुद्र ।	”	२९. वैश्यवर्गके रुद्र ।	१९
१०. अपने अंतःकरणमें रुद्र की खोज ।	”	३०. शिल्पिवर्गके रुद्र ।	”
११. अनेक रुद्रोंमें व्यापक ‘ एक रुद्र ’ ।	७	३१. चार वर्णोंके रुद्र ।	२०
१२. एक रुद्रके पुत्र अनेक रुद्र हैं ।	”	३२. आततायी वर्ग के रुद्र ।	”
१३. अनंत प्राणी अनेक रुद्र हैं ।	”	३३. प्राणियों में रुद्र के रूप ।	२२
१४. अनेक रुद्रोंकी संख्या ।	९	३४. सर्वसाधारण रुद्र ।	२३
१५. रुद्रके विषयमें श्रीसायणाचार्यजीका मत ।	”	३५. सूक्ष्म रुद्र ।	२४
१६. श्रीउषटाचार्यजी का ‘ रुद्र ’ विषयक मत ।	१०	३६. वृक्षरूपी रुद्र ।	”
१७. श्रीमहीधराचार्यजीका ‘ रुद्र ’ संबंधी मत ।	”	३७. ईश्वरवाचक रुद्र ।	”
१८. श्री स्वामी दयानंदसरस्वतीजीका रुद्रके विषयमें मत, ,	”	३८. कल्याणकारी रुद्र ।	”
१९. श्री भग० गीताके विभूतियोगके साथ तुलना ।	१२	३९. गण और त्रात ।	२५
२०. पं. जॉन डॉसनसाहबका मत ।	१३	४०. एक रुद्रके अनेक रूप हैं ।	३०

## रुद्र-देवता-मंत्रोंकी ऋषिसूची ।

रुद्रः ।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठम्	ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठम्
कण्वो घौरः	१-५	१	(वाज०यजुर्वेदमन्त्राः) ३७-१११		४
कुत्स आत्रिरसः ।	६-१६	”	ब्रह्मा ।	११२-११७	९
शुत्समदः शौनकः ।	१७-३१	२	कपिञ्जलः ।	११८	१०
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।	३२-३६	३	अथर्वा ।	११९-१४१	”

रुद्रसहचारी देवगणः ।		भग-शर्व-रुद्रः । मन्त्रातिः । २०१-२०२ १६	
(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च । कण्वो घौरः । १४२ ११	(६) रुद्रः, व्याघ्रः । अथर्वा । २०३-२०९ "	(७) रुद्रः (अग्निः) । वामदेवो गौतमः । २१० १७	" " " (मृत्युः) । संकसुको यामायनः । २११-१४ "
(२) रुद्रः, दिशः । अथर्वा । १४३-२०० "	" " " " । अथर्वा । २१५-२१७ १८	" " " " । प्रजापतिः । २१४-२२५ "	" " " " । दुहणः । २२६-२३७ १९
(३) आदित्याः, रुद्राः । " " १३			
(४) सोमारुद्रौ । " " "			
(५) भव-शर्व-रुद्राः " " १४			

### रुद्र-देवताकी सूचियाँ ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः । पृ० २०	३ गुणबोधक-पदसूची । २४-३०
ऋ० प्रथमं मण्डलम् । "	४ मृत्यु-देवता-गुणबोधक-पदानि । ३१
द्वितीयं " "	५ मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन- गुणबोधक-पदानि । "
चतुर्थं " "	६ दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि । ३२
सप्तमं " "	७ उपमा-सूची । "
२ मन्त्राणां सूची । २१-२३	



# दैवत-संहिता ।

( ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता । )

## ७ रुद्रदेवता ।

॥१॥ ( ऋ० १।४३।१-२,४-६ )

( १-५ ) कण्वो घोरः । गायत्री ।

कद् रुद्राय प्रचेतसे	मीळहुष्टमाय तव्यसे	। वोचेम शंतमं हुदे	१
यथा नो अदितिः करत्	पश्वे नृभ्यो यथा गवे	। यथा तोकार्य रुद्रियम्	२
गाथर्पतिं मेधर्पतिं	रुद्रं जलाषभेषजम्	। तच्छंयोः सुम्नमीमहे	४
यः शुक्र इव सूर्यो	हिरण्यमिव रोचते	। श्रेष्ठो देवानां वसुः	५
शं नः कर्त्स्नर्वते	सुगं मेषार्य मेघ्ये	। नृभ्यो नारिभ्यो गवे	६

॥२॥ ( ऋ० १।११४।१-११ )

( ६-१६ ) कुत्स आङ्गिरसः । जगतीः १०-११ त्रिष्टुप् ।

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने	क्षयद्वीराय प्र भरामहे मृतीः ।		
यथा शमसद् द्विपदे चतुस्पदे	विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नानातुरम्		१
मुळा नो रुद्रोत नो मर्यस्कृधि	क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते ।		
यच्छं च योश्च मनुंरायेजे पिता	तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु		२
अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया	क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीद्वः ।		
सुम्नायन्निद् विशो अस्माकमा चरा	रिष्टवीरा जुह्वाम ते हविः		३
त्वेष वयं रुद्रं यज्ञसाधं	वड्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे ।		
आरे अस्मद् दैव्यं हेळो अस्यतु	सुमतिमिद् वयमस्या वृणीमहे		४

दिवो वराहमरुपं कपर्दिनं त्वेष रूपं नमसा नि ह्वयामहे ।	
हस्ते विभ्रद् भेषजा वार्याणि शर्म वर्मं च्छदिरस्मभ्यं यंसत्	५ १०
इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।	
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मनें तोकाय तनयाय मृळ	६
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।	
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वां रुद्र रीरिषः	७
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।	
वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सद्रमित् त्वां हवामहे	८
उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे ।	
भद्रा हि ते सुमतिर्मृळ्यत्तमाथा वयमव इत् ते वृणीमहे	९
आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु ।	
मृळा च नो अर्धि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हीः	१०
अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवै रुद्रो मरुत्वान् ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	११ १६

॥३॥ ( ऋ० २।३३।२-१५ )

( १७-३१ ) गृत्समद् ( आङ्गिरसः शौनहोत्रः पञ्चात् ) भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः ।	
अभि नो वीरो अर्धति क्षमेत् प्र जायेमहि रुद्र प्रजार्भिः	१
त्वादत्तेभी रुद्र शन्तमेभिः शन्तं हिमां अशीय भेषजेभिः ।	
व्यस्मद् द्वेषो वितरं व्यंहो व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः	२
श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो ।	
परि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अर्भीती रपसो युयोधि	३
मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सङ्गृती ।	
उन्नो वीराँ अर्पय भेषजेभिर्भिषक्तं त्वा भिषजां शृणोमि	४ २०
हवीमभिर्हवते यो हविभिर्व स्तोमेभी रुद्रं दिषीय ।	
ऋदूदरः सुहवो मा नो अस्यै बभ्रुः सुशिप्रो रीरधन्मनायै	५
उन्मा ममन्द वृषभो मरुत्वान् त्वक्षीयसा वर्यसा नाधमानम् ।	
घृणीव च्छायामरुपा अशीयाऽऽ विवासेयं रुद्रस्य सुम्नम्	६ २२

कृ॑ स्य ते रुद्र मृ॒ळ्याकु—ई॒स्तो यो अस्ति॑ भेष॒जो जला॑षः ।	
अ॒प॒भ॒र्ता रप॑सो दै॒व्यस्या—भी॒ नु मा॑ वृष॒भ चक्ष॑मीथाः	७
प्र॒ ब॒भ्र॑वे वृष॒भाय॑ श्वि॒ती॒चे म॒हो म॒हीं सु॑ष्टुति॒र्मीर॑यामि ।	
न॒म॒स्या क॑ल्म॒लीकि॑नं नमो॒भि—गृ॑णी॒मासि॑ त्वेषं रु॒द्रस्य॑ नामं	८
स्थि॒रेभि॑रङ्गैः पु॒रुरूप॑ उ॒ग्रो व॒भ्रुः शु॒क्रेभिः॑ पि॒पिशे॑ हिर॒ण्यैः ।	
ई॒शा॒नादु॑स्य भ्रु॒वन॑स्य भूरे—ने॒ वा उ॑ योषद् रु॒द्राद॑सुर्य॒म्	९ २५
अ॒हे॒न् बि॑मर्षि॒ साय॑कानि धन्वा—हे॒न् नि॒ष्कं य॑जतं विश्व॒रूप॑म् ।	
अ॒हे॒न्नि॒दं द॑यसे विश्व॒मभ्रं॑ न वा ओ॒जी॒यो रु॒द्र त्वद॑स्ति	१०
स्तु॒हि श्रु॑तं ग॒र्त॑सदं यु॒वानं॑ मृ॒गं न भी॑ममु॒पह॑त्नुमु॒ग्रम्	
मृ॒ळा ज॑रि॒त्रे रु॒द्र स्त॑वानो ऽन्यं ते अ॒स्मन्नि॑ व॒पन्तु॑ सेनाः	११
कु॒मारश्चि॑त् पि॒तरं॑ वन्द॒मानं॑ प्र॒ति नाना॑म रु॒द्रोप॑यन्त॒म् ।	
भूरे॑र्दा॒तारं॑ सत्प॒तिं गृ॑णीषे स्तु॒तस्त्वं भेष॑जा रा॒स्य॒स्मे	१२
या वो॑ भेष॒जा म॑रु॒तः शु॒ची॒नि या॑ श॒त॒मा वृष॑णो॒ या म॑थो॒भु ।	
या॒नि म॑नुरवृ॒णीता॑ पि॒ता न—स्ता शं॑ च योश्च रु॒द्रस्य॑ वा॒ग्नि	१३
परि॑ णो हे॒ती रु॒द्रस्य॑ वृ॒ज्याः परि॑ त्वेष॒स्य दु॑र्म॒तिर्म॒ही गा॑त् ।	
अ॒व॒ स्थि॒रा म॒घर्व॑द्भ्यस्तनुष्व॒ मी॒ढ्व॒स्तोका॑य॒ तन॑याय मृ॒ळ	१४
ए॒वा व॑भ्रो वृष॒भ चे॑कितान् यथा॑ दे॒व न हृ॑णीषे न हंसि॑ ।	
ह॒व॒न॒श्रु॒भ्रां रु॒द्रेह॑ वी॒धि बृ॒हद् व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑	१५ ३१

॥४॥ ( ऋ० ७।४६।१-४ )

( ३२-३६ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती, ४ त्रिष्टुप् ।

इ॒मा रु॒द्राय॑ स्थि॒रध॑न्वने गि॒रः क्षि॒प्रेष॑वे दे॒वाय॑ स्व॒धान्नै॑ ।	
अ॒षा॒ळ॒हाय॑ सह॒मानाय॑ वे॒धसे॑ ति॒ग्मायु॑धाय भ॒रता॑ शृ॒णोतुं॑ नः	१
स हि॑ क्ष॒येण॑ क्ष॒म्यस्य॑ जन्म॒नः सा॒म्राज्ये॑न दि॒व्यस्य॑ चे॒तति॑ ।	
अ॒व॒स्र॑वन्तीरु॒पं नो॑ दु॒रश्व॑रा—ऽन॒मी॒वो रु॒द्र जा॑सु॒ नो भ॑व	२
या ते॑ दि॒द्युद॑वसु॒ष्टा दि॒वस्परि॑ क्ष॒मया॑ च॒रति॑ परि॒ सा वृ॑णक्तु॒ नः ।	
स॒हस्रं॑ ते स्व॒पिवा॑त भेष॒जा मा॑ न॒स्तोके॑षु॒ तन॑येषु॒ रीरि॑षः	३
मा नो॑ वधी रु॒द्र मा॑ परा॒ दा मा॑ ते॒ भूम॑ प्र॒सितौ॑ ही॒ळित॑स्य ।	
आ नो॑ भज॒ ब॒र्हिषि॑ जी॒वशं॑से॒ यूयं॑ पा॒त स्व॒स्तिभिः॑ सदा॑ नः	४ ३५

॥५॥ ( ऋ० ७।५९।१२ )

रुद्रः ( त्र्यम्बकः ) ( मृत्युविमोचनी ऋक् ) । अनुष्टुप् ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्

१२ ३६

॥६॥ ( ३७-१११ ) ( वा० य० ३।५७-६३ ) ×

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आस्तुस्ते पशुः ५७

अवं रुद्रमदीमह्यवं देवं त्र्यम्बकम् ।

यथा नो वस्यसस्करद् यथा नः श्रेयसस्करद् यथा नो व्यवसाययात् ५८

भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम् । सुखं मेषाय मेष्यै ५९

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनं । उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतः ६० ४०

एतत् ते रुद्रावसं तेन परो मूर्जवतोऽतीहि ।

अवंततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंशसन्नः शिवोऽतीहि ६१

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद् देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ६२

शिवो नामामि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मां हिंशसीः ।

निर्वर्त्त्याम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वायं सुवीर्याय ६३

॥७॥ ( वा० य० १०।२० )

रुद्र यत् ते क्विं पं नाम तस्मिन् हुतमस्यमेष्टममि स्वाहा २०

॥८॥ ( वा० य० ११।५४ )

रुद्राः संधसृज्यं पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे ।

तेषां भानुरजस इच्छुक्रो देवेषु रोचते

५४ ४५

॥९॥ ( वा० य० १६।१-६३ ) +

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो न इष्ये नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः १

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।

तथा नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिर्चाकशीहि २

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे ।

शिवां गिरिन् तां कुरु मा हिंशसीः पुरुषं जगत् ३ ४८

× वा० य० ३।६० ( पूर्वार्धः ) = ऋ० ७।५९।१२।

+ वा० य० १३।११-१६ = ऋ० १।११।७-८

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।		
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मथं सुमना असत्	४	
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।		
अर्होश्च सर्वाङ्गभयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव	५	५०
असौ यस्ताम्रो अरुण उत चभ्रुः सुमङ्गलः ।		
ये चैनं रुद्रा अभितां दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैपां हेड ईमहे	६	
असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।		
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्युः स दृष्टो मृडयाति नः	७	
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुपे ।		
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः	८	
प्रमुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरान्योर्ज्याम् ।		
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप	९	
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशलयो बाणवाँर उत ।		
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः	१०	५५
या ते हेतिर्माँट्टिम हस्ते बभूव ते धनुः ।		
तयास्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज	११	
परि ते धन्वंनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।		
अथो य इषुधिस्तत्रारे अस्मन्निधेहि तम्	१२	
अवतत्य धनुष्वथं सहस्राक्ष शतैषुषे ।		
निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव	१३	
नमस्त आयुधानां तताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तत्र धन्वने	१४	
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् ।		
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः	१५	६०
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।		
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वां हवामहे	१६	
नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः		
पद्भूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायो-		
पचीतिने पृष्टानां पतये नमः	१७	६९



नमो बभ्रुशायं व्याधिनेऽन्नां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये  
नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये  
नमः १८

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भ्रुवन्तये वारिवस्कृतायौष-  
धीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाऽक्रन्दयते  
पत्नीनां पतये नमः १९

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिने आध्या-  
धिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे  
परिचरायारण्यानां पतये नमः २०

६५

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां  
पतये नमो नमः सूक्रायिभ्यो जिघांशसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो  
नक्तश्चरद्भ्यो विक्रान्तानां पतये नमः २१

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च  
वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च  
वो नमः २२

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः  
श्यानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः २३

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम  
आध्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृहतीभ्यश्च वो नमः २४

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो  
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः २५

७०

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः  
क्षत्रभ्यः संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः २६

नमस्तक्ष्मभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो  
नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः इत्रनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः २७

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शूर्वाय च  
पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च २८

७३

नमः कपर्दिने च व्युत्केशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिश-  
याय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ३९

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे  
च नमोऽग्न्याय च प्रथमाय च ३० ७५

नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्राय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चाव-  
स्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ३१

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय  
चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्याय च ३२

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्षाय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय  
चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ३३

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय  
चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ३४

नमो विलिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च  
श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ३५ ८०

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निपङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायु-  
धिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ३६

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च  
सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च ३७

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्याय चातप्याय च नमो मेध्याय च  
विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च ३८

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय  
च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ३९

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्नेवधाय च दूरे-  
वधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ४० ८५

नमः शम्भवाय च मयोभव्याय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय  
च शिवतराय च ४१

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च  
कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ४२ ८९

नमः सिकत्याय च प्रवाहाय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय च नमः कप-  
दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च ४३

नमो ब्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेहाय च नमो हृदय्याय च  
निवेष्ट्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ४४

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाथ्यसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय  
चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्याय च ४५ ९०

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उदुरमाणाय चामिध्नते च नम आखिदुते च  
प्रखिदुते च नम इषुकुद्भयो धनुकुकुद्भयश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाथ्य  
हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ४६

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ।

आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोड्मो च नः किञ्चनार्ममत् ४७

इमा रुद्राय तवसे कपदिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ।

यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नानातुरम् ४८

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।

शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ४९

परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।

अव स्थिरा मघवद्भयस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ५० ९५

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ।

परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्ति वसान आचर पिनाकं विभ्रदागहि ५१

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः ।

यास्ते सहस्रंथ हेतयोऽन्यमस्मभिवपन्तु ताः ५२

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखी कृधि ५३

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् ।

तेषांथ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ५४

अस्मिन् महत्पर्यवेऽन्तरिक्षे भुवा अधि । तेषांथ सहस्रयोजनेऽव ५५ १००

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव्यंथ रुद्रा उपश्रिताः । तेषांथ सहस्रयोजनेऽव ५६

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः । तेषांथ सहस्रयोजनेऽव ५७

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषांथ सहस्रयोजनेऽव ५८ १०३

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	५९	
ये पृथा पथिरक्षय ऐलवृदा आयुर्धुषः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६०	१०५
ये तीर्थानि प्रचरन्ति सूकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६१	
येऽभेषु विविष्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान् । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६२	
य एतावन्तश्च भूयांश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे । तेषां सहस्रयोजनेऽव०	६३	
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये द्विवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६४	
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६५	
नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः	६६	१११

॥१०॥ (अथर्व० १।१९।३)

(१११-११७) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्टयो यो अस्माँ अभिदासति ।  
रुद्रः शरव्ययैतान् ममामित्रान् वि विष्यतु

३

॥११॥ (अथर्व० ६।५।२-३)

२ त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

ग्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षाः स्विते नो दधात ।

आ नो गोषु भजता प्रजायाँ निवात इव वः शरणे स्याम

२

इवावत्सरायं परिवत्सरायं संवत्सरायं कृणुता बृहन्नमः ।

तेषां वयं सुमतौ यद्वियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम

३

॥१२॥ (अथर्व० १३।४।४; १३।६।२५-२६) ।

४ प्राजापत्याऽनुष्टुप्, २५ एकपदाऽऽसुरी गायत्री, २६ आचर्यनुष्टुप् ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।

रश्मिभिर्नम आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः

४

११५

स एव मृत्युः सोऽमृतं सोऽम्वं१ स रक्षः २५  
 स रुद्रो वसुवर्निर्वसुदेये नमोवाके वषट्कारोऽनु संहितः २६ ११७

॥१३॥ ( अथर्व० २।२७।६ )

(११८) कापञ्जलः । अनुष्टुप् ।

रुद्र जलाषभेषज् नीलशिखण्ड कर्मकृत् ।

प्राशं प्रतिप्राशो जह्वरसान् कृण्वोषधे ६

॥१४॥ ( अथर्व० ७।८७।१ )

(११९-१४१) अथर्वा । जगती ।

यो अग्रौ रुद्रो यो अप्सवन्तर्य ओषधीर्वीरुध आचिवेश ।

य इमा विश्वा भुव्नानि चाकल्पे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये १

॥१५॥ ( अथर्व० १।५।१-२१ )

१ त्रिपदा समाविषमा गायत्री; २ त्रिपदा भुरिगार्ची त्रिष्टुप्; ३,६,९,१२,१५,१८,२१ त्रिपदा प्राजाप-

त्याऽनुष्टुप्, ४ त्रिपदा स्वराट् प्राजापत्या पङ्क्तिः; ५,८,११,१७ त्रिपदा ब्राह्मी गायत्री; ७,१०,१६

त्रिपदा ककुप्; १३,१९ भुरिग् विषमा गायत्री; १४ निचृद्ब्राह्मी गायत्री; २० विराट् ।

तस्मै प्राच्यां दिशो अन्तर्देशाद् भवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १ १२०

भव एनमिष्वासः प्राच्यां दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति

नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ २

नास्यं पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद ॥३॥ ३

तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशाच्छर्वमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ ४

शर्व एनमिष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति

नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ ५ नास्यं पशून् ० ॥३॥ ६ १२५

तस्मै प्रतीच्यां दिशो अन्तर्देशात् पशुपतिमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ ७

पशुपतिरेनामिष्वासः प्रतीच्यां दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति

नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ ८ नास्यं पशून् ० ॥३॥ ९

तस्मा उदीच्या दिशो अन्तर्देशादुग्रं देवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १०

उग्र एनं देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति

नैनं शर्वो न भवो नेशानः ॥२॥ ११ नास्यं पशून् ० ॥३॥ १२

तस्मै ध्रुवायां दिशो अन्तर्देशाद् रुद्रमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥ १३ १३२

रुद्र एनमिष्वासो ध्रुवायां दिशो अन्तर्देशार्दनुष्ठातानुं तिष्ठति		
नैर्न श्रुवो न भ्रुवो नेशानः ॥२॥ १४ नास्य पशून् ॥३॥	१५	
तस्मा ऊर्ध्वायां दिशो अन्तर्देशान्महादेवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥	१६	१३५
महादेव एनमिष्वास ऊर्ध्वायां दिशो अन्तर्देशार्दनुष्ठातानुं तिष्ठति		
नैर्न श्रुवो न भ्रुवो नेशानः ॥२॥ १७ नास्य पशून् ॥३॥	१८	
तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्य ईशानमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ॥१॥	१९	
ईशान एनमिष्वासः सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्योऽनुष्ठातानुं तिष्ठति		
नैर्न श्रुवो न भ्रुवो नेशानः ॥२॥		
नास्य पशून् न समानान् हिंनस्ति य एवं वेद ॥३॥	२१	

॥१६॥ ( अथर्व० १९।२८।३ ) आर्च्यनुष्टुप् ।

सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात् ३ १४१



रुद्र-सहचारी देवगणः ।

(१) रुद्रः मित्रावरुणौ च ।

॥१७॥ ( ऋ० १।४३।३ )

(१४२) कण्वो घोरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ३

(२) रुद्रः, दिशः ।

॥१८॥ ( अथर्व० ३।२६।१-६ )

(१४३-२००) अथर्वा । दिशः, रुद्रः; १ साम्नयो हेतयः, २ सकामा अविष्यवः, ३ वैराजः, ४ सवाताः प्रविध्यन्तः,

५ सौषधिका निलिम्पाः, ६ बृहस्पतियुता अवस्वन्तः । त्रिष्टुप्; २, ५-६ जगती;

३-४ भुरिक्; १-६ पञ्चपदा विपरीतपादलक्ष्मा ।

येषुऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा १

येषुऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिश्य विष्यवो नाम देवास्तेषां वः काम इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा २

येषुऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः ।

ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ३ १४५

येद्दे॒ऽस्यां स्थो॒दीच्यां दिशि प्र॒विध्यन्तो नाम दे॒वास्तेषां वो वा॒त इ॒र्षवः ।	
ते नो॑ मृ॒दत॒ ते नोऽधि॑ ब्रू॒त तेभ्यो॑ वो नम॒स्तेभ्यो॑ वः स्वाहा॑	४
येद्दे॒ऽस्यां स्थ ध्रु॒वायां दिशि नैलि॒म्पा नाम दे॒वास्तेषां व ओष॑धी॒रिषवः ।	
ते नो॑ मृ॒दत॒ ते नोऽधि॑ ब्रू॒त तेभ्यो॑ वो नम॒स्तेभ्यो॑ वः स्वाहा॑	५
येद्दे॒ऽस्यां स्थो॒र्ध्वायां दि॒शय॑व॒स्वन्तो नाम दे॒वास्तेषां वो बृ॒हस्प॑तिरि॒र्षवः ।	
ते नो॑ मृ॒दत॒ ते नोऽधि॑ ब्रू॒त तेभ्यो॑ वो नम॒स्तेभ्यो॑ वः स्वाहा॑	६

॥१९॥ ( अथर्व० ३।२।१-६ )

विश्वः, रुद्रः; १ अग्निः असितः, आदित्याः; २ इन्द्रः, तिरश्चिराजी, पितरः; ३ वरुणः, पृदाकूः, अश्वः; ४ सोमः, स्वजः, अशनिः; ५ विष्णुः, कल्माषग्रीवा वीरुधः; ६ बृहस्पतिः, श्वित्रं, वर्षम् ।

१-६ पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः, ( २ अत्यष्टिः, ५ भुरिक् ) ।

प्राची दिग्ग॒ग्निरधि॑पतिर॒मितो रक्षिता॑दित्या इ॒र्षवः ।	
तेभ्यो॑ नमोऽधि॑पति॒भ्यो नमो॑ रक्षितृ॒भ्यो नम॑ इ॒ष्टुभ्यो॑ नम॑ ए॒भ्यो अस्तु ।	
योद्दे॒ऽस्मान् द्वेष्टि॑ यं व॒यं द्विष्म॑स्तं वो ज॒म्भे द॒ध्मः	१
दक्षि॑णा दिग्नि॒न्द्रोऽधि॑पति॒स्तिरश्चि॑राजी रक्षिता॑ पित॒र इ॒र्षवः ।	
तेभ्यो॑ नमोऽधि॑पति॒भ्यो नमो॑ रक्षितृ॒भ्यो नम॑ इ॒ष्टुभ्यो॑ नम॑ ए॒भ्यो अस्तु ।	
योद्दे॒ऽस्मान् द्वेष्टि॑ यं व॒यं द्विष्म॑स्तं वो ज॒म्भे द॒ध्मः	२ १५०
प्रती॑ची दिग् वरु॒णोऽधि॑पतिः पृदा॑कू रक्षिता॑मि॒र्षवः ।	
तेभ्यो॑ नमोऽधि॑पति॒भ्यो नमो॑ रक्षितृ॒भ्यो नम॑ इ॒ष्टुभ्यो॑ नम॑ ए॒भ्यो अस्तु ।	
योद्दे॒ऽस्मान् द्वेष्टि॑ यं व॒यं द्विष्म॑स्तं वो ज॒म्भे द॒ध्मः	३
उदी॑ची दिक् सोमोऽधि॑पतिः स्व॒जो रक्षिता॑शनि॒रिषवः ।	
तेभ्यो॑ नमोऽधि॑पति॒भ्यो नमो॑ रक्षितृ॒भ्यो नम॑ इ॒ष्टुभ्यो॑ नम॑ ए॒भ्यो अस्तु ।	
योद्दे॒ऽस्मान् द्वेष्टि॑ यं व॒यं द्विष्म॑स्तं वो ज॒म्भे द॒ध्मः	४
ध्रुवा॑ दिग् विष्णु॒रधि॑पतिः कल्मा॑षग्री॒वो रक्षिता॑ वीरु॒ध इ॒र्षवः ।	
तेभ्यो॑ नमोऽधि॑पति॒भ्यो नमो॑ रक्षितृ॒भ्यो नम॑ इ॒ष्टुभ्यो॑ नम॑ ए॒भ्यो अस्तु ।	
योद्दे॒ऽस्मान् द्वेष्टि॑ यं व॒यं द्विष्म॑स्तं वो ज॒म्भे द॒ध्मः	५
ऊर्ध्वा॑ दिग् बृह॒स्पति॑रधि॒पतिः श्वि॒त्रो रक्षिता॑ वर्ष॒मिर्षवः ।	
तेभ्यो॑ नमोऽधि॑पति॒भ्यो नमो॑ रक्षितृ॒भ्यो नम॑ इ॒ष्टुभ्यो॑ नम॑ ए॒भ्यो अस्तु ।	
योद्दे॒ऽस्मान् द्वेष्टि॑ यं व॒यं द्विष्म॑स्तं वो ज॒म्भे द॒ध्मः	६ १५४

## (३) आदित्याः, रुद्राः ।

॥१०॥ ( अथर्व० ५।३।१० )

बृहद्विवोऽथर्वा । विराह जगती ।

ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव वाधामह एनान् ।  
आदित्या रुद्रा उपरिस्पृशौ न उग्रं चेतारमधिराजमक्रत

१० १५५

## (४) सोमारुद्रौ ।

॥११॥ ( अथर्व० ५।६।१-१४ )

१ ब्रह्म, २ कर्माणि, ३-४ रुद्रगणाः, ५-८ सोमारुद्रौ, ९ हेतिः, १०-१४ सर्वात्मा रुद्रः ।  
त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप्, ३ जगती, ४ अनुष्टुबुष्णिक्त्रिष्टुग्गर्भा पञ्चपदा जगती,  
५-७ त्रिपदा विराण्नाम गायत्री, ८ एकावसाना द्विपदाऽऽर्च्यनुष्टुप्,  
१० प्रस्तारपङ्क्तिः, ११-१३ पङ्क्तिः, १४ स्वराट्पङ्क्तिः ।

ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वैन आवः ।

स बुध्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च वि वः

१

अनाम्ना ये वः प्रथमा यानि कर्माणि चक्रिरे ।

वीरान् नो अत्र मा दभन् तद् व एतत् पुरो दधे

२

सहस्रधार एव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असुधतः ।

तस्य स्पृशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवे

३

पर्यु बु प्र धन्वा वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।

द्विषस्तदध्यर्णवेनेयसे सनिस्सो नामासि त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः

४

न्वेष्टेनारात्सीरसौ स्वाहा ।

तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः

५

१६०

अवैतेनारात्सीरधौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती०

६

अपैतेनारात्सीरसौ स्वाहा । तिग्मायुधौ तिग्महेती०

७

मुमुक्तमस्मान् दुरितादवधाज्जुषेथां यज्ञममृतमस्मासु धत्तम्

८

चक्षुषो हेते मनसो हेते ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते ।

मेन्या मेनिरस्यमेनयस्ते संन्तु येष्टुऽस्मां अभ्यघायन्ति ।

९

योष्टुऽस्मांश्चक्षुषा मनसा चिष्याकृत्या च यो अघायुरभिदासात् ।

स्वं तानमे मेन्यामेनीन् कृणु स्वाहा

१० १६५



इन्द्रस्य गृहोऽसि । तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः	
सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽस्ति तेन	११
इन्द्रस्य शर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं०	१२
इन्द्रस्य वर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं०	१३
इन्द्रस्य वरूथमासि । तं त्वा प्र पद्ये तं०	१४

## (५) भव-शर्व-रुद्राः ।x

॥२२॥ ( अथर्व० ११।२।१-३१ )

त्रिष्टुप्; १पराऽतिजागता विराड्जागती; २ अनुष्टुप्गर्भा पञ्चपदा पथ्याजगती; ३ चतुष्पदा  
स्वराङ्गुष्णिक्; ४-५, ७, १३, १५-१६, २१ अनुष्टुप्; ६ आर्षी गायत्री; ८ महाबृहती;  
९ आर्षी; १० पुरोकृति त्रिपदा विराद्; ११ पञ्चपदा विराड्जगतीगर्भा  
शकरी; १२ भुरिक्; १४, १७-१९, २३, २६-२७ विराड्गायत्री;  
२० भुरिगायत्री; २२ विषमपादलक्ष्मा त्रिपदा  
महाबृहती; २४, २९ जगती; २५ पञ्चपदा-  
ऽतिशकरी; ३० चतुष्पदा उष्णिक्;  
३१ इयवसाना विपरीतपादलक्ष्मा  
पद्यपदा ( जगती? ) ।

भवांशर्वौ मृदुतं माभि यातिं भूतपती पशुपती नमो वाम् ।	
प्रतिहितामर्यतां मा वि स्राष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः	१ १७०
शुने क्रोष्ट्रे मा शरीराणि कर्तमलिङ्कवेभ्यो गृध्रेभ्यो ये च कृष्णा अविष्यवः ।	
मक्षिकास्ते पशुपते वयांसि ते विघ्से मा विदन्त	२
क्रन्दाय ते प्राणाय यार्थं ते भव रोपयः । नमस्ते रुद्र कृष्णः सहस्राक्षायामर्त्य	३
पुरस्तात् ते नमः कृष्ण उत्तरादधरादुत् । अभीवर्गाक् दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ते नमः ४	
मुखाय ते पशुपते यानि चक्षुषि ते भव । त्वचे रूपाय संदशे प्रतीचीनाय ते नमः ५	
अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्यायि ते । दुद्ध्यो गन्धारय ते नमः	६ १७५
अस्त्रा नीलशिखण्डेन सहस्राक्षेण वाजिना । रुद्रेणाधिकघातिना तेन मा समरामहि ७	
स नो भवः परि वृणक्तु विश्वत् आप इत्राभिः परि वृणक्तु नो भवः ।	
मा नोऽभि मास्त नमो अस्त्वस्मै	८
चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते ।	
तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः	९ १७८

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेदमृगोर्विन्तरिक्षम् ।	
तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत् प्राणत् पृथिवीमनु	१०
उरुः कोशो वसुधानस्तवायं यस्मिन्निमा विश्वा भुवनान्यन्तः ।	
स नो मृड पशुपते नमस्ते परः क्रोष्टारो अभिभाः श्वानः परो यन्त्वघरुदो विक्रेड्यः	११ १८०
घनुर्विभर्षि हरितं हिरण्यथं सहस्राग्नि शतवधं शिखण्डिनम् ।	
रुद्रस्येषुश्रति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशीइतः	१२
योइभियातो निलयते त्वां रुद्र निचिकीर्षति ।	
पश्चादनुप्रयुङ्क्षे तं विद्धस्य पदनीरिव	१३
भवारुद्रो सयुजा संविदानावुभावुग्नौ चरतो वीर्यायि ।	
ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीइतः	१४
नमस्तेऽस्त्वायते नमो अस्तु परायते । नमस्ते रुद्र तिष्ठत आसीनायोत ते नमः	१५
नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा ।	
भवार्यं च शर्वायं चोभाभ्यामकरं नमः	१६ १८५
सहस्राक्षमतिपश्यं पुरस्ताद् रुद्रमस्यन्तं बहुधा विपश्चितम् ।	
मोपाराम जिह्वयेयमानम्	१७
श्यावाश्वं कृष्णमसितं मृणन्तं भीमं रथं केशिनः पादयन्तम् ।	
पूर्वं प्रतीमो नमो अस्त्वस्मै	१८
मा नोऽभि स्ना मर्त्यं देवहेति मा नः क्रुधः पशुपते नमस्ते ।	
अन्यत्रास्मद् दिव्यां शाखां वि धूनु	१९
मा नो हिंसीरधि नो ब्रूहि परिं णो वृङ्ग्धि मा क्रुधः । मा त्वया समरामहि	२०
मा नो गोषु पुरुषेषु मा गृधो नो अजाविषु ।	
अन्यत्रोग्रं वि वर्तय पियारूणां प्रजां जहि	२१ १९०
यस्य त्वमा कासिका हेतिरेकमश्वस्येव वृषणः क्रन्दु एति ।	
अभिपूर्वं निर्णयते नमो अस्त्वस्मै	२२
योइऽन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टभितोऽयज्वनः प्रमृणन् देवपीयून् ।	
तस्मै नमो दुशभिः शर्कराभिः	२३
तुभ्यमारण्याः पशवो मृगा वने हिता हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि ।	
तव यक्षं पशुपते अप्सर्वन्तस्तुभ्यं क्षरन्ति दिव्या आपो वृधे	२४ १९३

शिशुमारो अजगराः पुरीकया जषा मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि ।

न ते दूरं न परिष्ठास्ति ते भव सद्यः सर्वान् परिं

पश्यासि भूमिं पूर्वस्माद्धंस्युत्तरस्मिन्समुद्रे

२५

मा नो रुद्र तक्मना मा विषेण मा नः सं स्यां दिव्येनाग्निना ।

अन्यत्रास्मद् विद्युत् पातयेताम्

२६

१९५

भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या भव आ पंप उर्वरुन्तरिक्षम् ।

तस्मै नमो यत्तमस्यां दिशीः

२७

भव राजन् यजमानाय मृड पशूनां हि पशुपतिर्धभूयं ।

यः श्रद्धधाति सन्ति देवा इति चतुष्पदे द्विपदेऽस्य मृड

२८

मा नो महान्तमुत मा नो अर्मकं मा नो वहन्तमुत मा नो वक्ष्यतः ।

मा नो हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वं रुद्र मा रीरिषो नः

२९

रुद्रस्यैलवकारेभ्योऽसंस्तुक्तगिलेभ्यः ।

ब्रह्मं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः

३०

नमस्ते घोषिणीभ्यो नमस्ते केशिनीभ्यः ।

नमो नमस्कृताभ्यो नमः संशुञ्जतीभ्यः ।

नमस्ते देव सेनाभ्यः स्वस्ति नो अर्मयं च नः

३१

२००

॥२३॥ ( अथर्व० ६।१३।१-२ )

( २०१-२०२ ) शस्तातिः । रुद्रः; १ यमो मृत्युः, शर्वः; २ भवः, शर्वः । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋथो वभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।

देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परिं वृञ्जन्तु वीरान्

१

मनसा होमैर्हरसा धृतेन शर्वायास्त्रं उत राज्ञे भवार्यं ।

नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदुघर्विषा नयन्तु

२

( ६ ) रुद्रः, व्याघ्रः ।

॥२४॥ ( अथर्व० ४।३।१-७ )

( २०३-२०९ ) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ पश्यापङ्क्तिः, ३ गायत्री, ७ ककुम्मतीगर्भोपरिष्ठाद्बृहती ।

उदितस्यो अक्रमन् व्याघ्रः पुरुषो वृकः ।

हिरुग्धि यन्ति सिन्धवो हिरुग् देवो वनस्पतिर्हिरुग्नमन्तु शत्रवः

१ २०१

परैणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः ।	
परैण द्रुत्वती रज्जुः परैणाघायुरर्षतु	२
अक्षयौ च ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि ।	
आत् सर्वांश्च विंशतिं नखान्	३ २०५
व्याघ्रं द्रुत्वती वयं प्रथमं जम्भयामसि ।	
आदुं ह्येनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम्	४
यो अद्य स्तेन आर्यति स संपिष्टो अपायति ।	
पथामपध्वंसेनैत्विन्द्रो वज्रेण हन्तु तम्	५
मूर्णा मृगस्य दन्ता अपिशीर्णा उ पृष्टयः ।	
निम्नुक्ते गोधा भवतु नीचार्यच्छशयुर्मृगः	६
यत् संयमो न वि यमो वि यमो यन्न संयमः ।	
इन्द्रजाः सोमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भनम्	७ २०९

## (७) रुद्रः ( अग्निः ) ।

॥२५॥ ( ऋ० ४।३।१ )

( २१० ) वामदेवो गौतमः । रुद्रः । त्रिष्टुप् ।

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।  
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ता—द्विरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्

१ २१०

॥२६॥ ( ऋ० १०।१८।१-४ )

( २११-२१४ ) संकुसुको यामायनः । मृत्युः । त्रिष्टुप् ।

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्  
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्  
मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।  
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः  
इमे जीवा वि मृतैराववृत्र—न्नभूद् भद्रा देवहृतिर्नो अद्य ।  
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः  
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम् ।  
शतं जिवन्तु शरदः पुरुची—रन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन

१

२

३

४ २१४

॥२७॥ ( अथर्व० ६।१३।१-३ )

( २१५-२१७ ) अथर्वा ( स्वस्त्ययनकामः ) । मृत्युः । भ्रुण्डुप् ।

नमो देववधेभ्यो नमो राजवधेभ्यः ।

अथो ये विश्वानां वधास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते

१ २१५

नमस्ते अधिवाकार्य परावाकार्य ते नमः ।

सुमृत्यै मृत्यो ते नमो दुर्मृत्यै त इदं नमः

२

नमस्ते यातुधानेभ्यो नमस्ते भेषजेभ्यः ।

नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं नमः

३ २१७

॥२८॥ ( अथर्व० ४।३५।१-७ )

( २१८-२२५ ) प्रजापतिः । अतिमृत्युः । त्रिण्डुप्, ३ भुरिजगती ।

यमोदुनं प्रथमजा ऋतस्य प्रजापतिस्तपसा ब्रह्मणेऽपचत् ।

यो लोकानां विष्टतिर्नाभिरेषात् तेनौदुनेनार्ति तराणि मृत्युम्

१

येनातरन् भूतकृतोऽति मृत्युं यमन्वविन्दुन् तपसा श्रमेण ।

यं पपाच ब्रह्मणे ब्रह्म पूर्वं तेनौदुनेनार्ति तराणि मृत्युम्

२

यो दाधार पृथिवीं विश्वभोजसं यो अन्तरिक्षमापृणाद् रसेन

यो अस्तभ्राद् दिवमूर्ध्वो महिम्ना तेनौदुनेनार्ति तराणि मृत्युम्

३ २२०

यस्मान्मासा निर्मितस्त्रिशदराः संवत्सरो यस्माभिमितो द्वादशारः ।

अहोरात्रा यं परियन्तो नापुस्तेनौदुनेनार्ति तराणि मृत्युम्

४

यः प्राणदः प्राणदवान् बभूव यस्मै लोका घृतवन्तः क्षरन्ति ।

ज्योतिष्मतीः प्रदिशो यस्य सर्वास्तेनौदुनेनार्ति तराणि मृत्युम्

५

यस्मात् पक्कादमृतं संबभूव यो गायत्र्या अधिपतिर्बभूव ।

यस्मिन् वेदा निर्हिता विश्वरूपास्तेनौदुनेनार्ति तराणि मृत्युम्

६

अव वाधे द्विषन्तं देवपीयुं सपत्ना ये भेऽप ते भवन्तु ।

ब्रह्मोदुनं विश्वजितं पचामि शृण्वन्तु मे श्रद्धधानस्य देवाः

७

॥२९॥ ( अथर्व० ७।१०२।१ )

द्यावापृथिवी; अन्तरिक्षम्, मृत्युः । विराट् पुरस्ताद्ब्रह्मती ।

नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यामन्तरिक्षाय मृत्यवे ।

मेक्षाम्यूर्ध्वेस्तिष्ठन्मा मा हिंसिषुरीश्वराः

१ २२५

॥३०॥ ( अथर्व० ६।६३।२-३ )

(२२६-२२७) द्रुहणः । २ यमः, ३ मृत्युः। २ अतिजगतगिर्भा, ३ जगती ।

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्मयान् वि चृता बन्धपाशान् ।

यमो मघं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यन्माय नमो अस्तु मृत्यवे

२

अयस्मये द्रुपदे वैषिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।

यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम्

३

२२७

इति रुद्रदेवता समाप्ता ।

# रुद्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[ ११ ] १।११४।६ ( कुत्स आत्रिरसः । रुद्रः )  
—रुद्राय — —  
त्मने तोकाय तनयाय मृळ ।  
( ३० ) १।३३।१४ ( गृत्समदः शौनकः । रुद्रः )  
—रुद्रस्य — — ।  
मीद्वस्तोकाय तनयाय मृळ ।

[ १४ ] १।११४।९ उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं ।  
१०।१२७।८ ( विह्वय आत्रिरसः । विश्वे देवाः )  
उप ते गा इवाकरं ।— स्तोमं ।  
[ १५ ] १।११४।१० मृळा च नो अधि च ब्रूहि देव ।  
( अदितिः ० ४१९ ) १।३५।११ ( हिरण्यस्तूप आत्रिरसः । सविता )  
रक्षा च नो अधि ... ।

## ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[ १८ ] १।३३।२ ( गृत्समदः शौनकः । रुद्रः )  
व्य१स्मद् द्वेषो वितरं व्यंहो ।  
( इन्द्रः २०५१ ) ६।४४।१६ ( शंयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
व्य१स्मद् द्वेषो गुयवद् व्यंहः ।  
[ ३० ] १।३३।१४ ( गृत्समदः शौनकः । रुद्रः )  
परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः ।

६।२८।७ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गावः )  
परि वो हेती — ।  
( इन्द्रः ३१९३ ) ७।८४।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रावरुणौ )  
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्याः ।  
[ ३० ] २।३३।१४=(११) १।११४।६ तोकाय तनयाय मृळ ।

## ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[ २२७ ] ४।३।१ ( वामदेवो गौतमः । रुद्रः )  
होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

( अग्निः १०८७ ) ६।१६।४६ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः )  
होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।

## ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[ ३२ ] ७।४६।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः )  
अषाढहाय सहमानाय वेधसे ।  
( इन्द्रः १२१८ ) २।२१।२ गृत्समदो भार्गवः शौनकः । इन्द्रः )  
अषाढहाय सहमानाय वेधसे ।

[ ३५ ] ७।४६।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । रुद्रः )  
मा नो वधी रुद्र मा परा दा ।  
( इन्द्रः ८५४ ) १।१०४।८ ( कुत्स आत्रिरसः । इन्द्रः )  
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा ।



# दैवत-संहितान्तर्गत रुद्रदेवता-मन्त्राणां सूची ।

अक्षयौ च ते मुखं च ते	२०५	उग्र एनं देव इष्वासः	१३०
अङ्गेभ्यस्त उदराय	१७५	उदितस्त्रयो अक्रमन्	२०३
अध्यवोचदधिवक्ता	५०	उदाचीं दिक् सोमोऽधिपतिः	१५२
अनासा ये वः प्रथमा	१५७	उन्मा ममन्द वृषभो	२२
अपैतेनारात्सीरसौ	१६२	उप ते स्तोमान् पशुपा	१४
अयस्मये हुपदे	२२७	उरुः कोशो वसुधानः	१८०
अर्हन् बिभिर्षि सायकानि	२६	ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः	१५४
अवतत्य धनुष्ट्वं	५८	एतत् ते रुद्रवसं	४१
अव बाधे द्विषन्तं	२२३	एवा बभ्रो वृषभ	३१
अव रुद्रमदीमह्यव	३८	एष ते रुद्र भागः	३७
अवैतेनारात्सीरसौ	१६१	कद् रुद्राय प्रचेतसे	१
अवोचाम नमो अस्मा	१६	कुमारश्चित् पितरं	२८
अद्याम ते सुमतिं	८	ऋन्दाय ते प्राणाय	१७२
असंख्याता सहस्राणि	९९	क्व स्य ते रुद्र मृळयाकुः	२३
असौ यस्ताम्रो अरुण	५१	गाथपतिं मेधपतिं	३
असौ योऽवसर्पति	५२	प्रीष्मो हेमन्तः शिशिरो	११३
अस्त्रा नीलशिखण्डेन	१७६	चक्षुषो हेते मनसो	१६४
अस्मिन् महत्यर्णवे	१००	चतुर्नमो अष्टकृत्वो	१७८
आ ते पितर्मरुतां	१७	तव चतस्रः प्रदिशः	१७९
आरे ते गोघ्नमुत	१५	तस्मा उदीच्या दिशो	१२९
आ वो राजानमध्वरस्य	२१०	तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो	१३५
इदं पित्रे मरुताम्	११	तस्मै दक्षिणाया दिशो	१२३
इदावत्सराय परि०	११४	तस्मै ध्रुवाया दिशो	१३२
इन्द्रस्य गृहोऽसि	१६६	तस्मै प्रतीच्या दिशो	१२६
इन्द्रस्य वरुधमसि	१६९	तस्मै प्राच्या दिशो	१२०
इन्द्रस्य वर्मासि	१६८	तस्मै सर्वेभ्यो अन्तर्देशेभ्यः	१३८
इन्द्रस्य शर्मासि	१६७	तुभ्यमारण्याः पशवो	१९३
इमं जीवेभ्यः परिधिं	२१४	त्र्यम्बकं यजामहे	३६; ४०
इमा रुद्राय तवसे	६; ९३	त्र्यायुषं जमदग्नेः	४२
इमा रुद्राय स्थिर०	३२	त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः	१८
इमे जीवा वि मृतैः	२१३	त्वेभं वयं रुद्रं यज्ञसाधं	९
ईशान एनमिष्वासः	१३९	दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिः	१५०



दिवो वराहमरुषं	१०	नमो ब्रज्याय च	८९
द्रापे अन्धसस्पते	९२	नमोऽस्तु ते निर्ऋते	२२६
धनुर्भिर्भर्षि हरितं	१८१	नमोऽस्तु नीलग्रीवाय	५३
ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः	१५३	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि	१०९
नम आशवे चाजिराय	७६	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे	११०
नम उष्णीषिणे	६७	नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां	१११
नमः कपर्दिने च	७४	नमो हिरण्यवाहवे	६२
नमः कृप्याय च	८३	नमो ह्रस्वाय च	७५
ननः कृत्स्नायतया	६५	न्वेतेनारात्सीरसौ	१६०
नमः पर्णाय च	९१	नास्य पशून् न समानान् १२२, १२५, १२८, १३१,	
नमः पार्याय च	८७	१३४, १३७, १४०	
नमः शङ्खवे च	८५	नीलग्रीवाः शितिकण्ठा	१०१
नमः शम्भवाय च	८६	नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः	१०२
नमः शुष्क्याय च	९०	परं मृत्यो अनु परेहि	२११
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यः	७३	परि णो हेती रुद्रस्य	३०
नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः	६९	परि ते धन्वनो हेतिः	५७
नमः सायं नमः प्रातः	१८५	परि नो रुद्रस्य हेतिः	९५
नमः सिकत्याय च	८८	परेणैतु पथा वृकः	२०४
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यः	७१	पर्युषु प्र धन्वा वाजसातये	१५९
नमः सोभ्याय च	७८	पशुपतिरेनमिष्वासः	१२७
नमः स्त्रुत्याय च	८२	पुरस्तात् ते नमः कृष्णः	१७३
नमस्कृत्य द्यावापृथिवीभ्यां	२२५	प्रतीचीं दिग् वरुणोऽधिपतिः	१५१
नमस्त आयुधायानां	५९	प्र बभ्रवे वृषभाय	२४
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यः	७२	प्रमुञ्च धन्वनस्त्वम्	५४
नमस्ते अधिवाकाय	२१६	प्राचीं दिगग्निरधिपतिः	१४९
नमस्ते घोषिणीभ्यो	२००	ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं	१५६
नमस्ते यातुधानेभ्यो	२१७	भव एनमिष्वासः	१२१
नमस्ते रुद्र मन्यव	४६	भव राजन् यजमानाय	१९७
नमस्तेऽस्त्वायते नमो	१८४	भवारुद्रौ सगुजा	१८३
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यः	७०	भवाशर्वी मृडतं	१७०
नमो ज्येष्ठाय च	७७	भवो दिवो भव ईशे	१९६
नमो देववधेभ्यो	२१५	भेषजमसि भेषजं	३९
नमो शृणवे च	८१	मनसा होमैर्हरसा	२०२
नमो बभ्रुशाय	६३	महादेव एनमिष्वासः	१३६
नमो बिल्मिने च	८०	मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा	२०
नमो रोहिताय	६४	मा नस्तोके तनये	१३, ६१
नमो बभ्रते पारि०	६६	मा नो गोषु पुरुषेषु	१९०
नमो वन्याय च	७९	मा नोऽभि स्ना मत्यं	१८८
नमो वात्याय च	८४	मा नो महान्तमुत	१२, ६०, १९८
नमो विसृजद्भ्यो	६८	मा नो रुद्र तक्मना	१९५

मा नो वधी रुद्र मा	३५	येऽस्यां स्थोर्ध्वायां दिशि	१४८
मा नो हिंसीरधि	१८९	यो अमौ रुद्रो यो	११९
मीढुष्टम शिवतम	९६	यो अय स्तेन आयति	२०७
सुखाय ते पशुपते	१७४	यो दाधार पृथिवीं	२२०
सुसुकृतमस्मान् दुरिताद्	१६३	यो नः खो यो अरणः	११२
मूर्णा मृगस्य दन्ता	२०८	योऽन्तरिक्षे तिष्ठति	१९२
मृळा नो रुद्रोत नो	७	योऽभियातो निलयते	१८२
मृत्योः पदं योपयन्तो	२१२	योऽस्मांश्चक्षुषा मनसा	१६५
य एतावन्तश्च भूयांसः	१०८	रुद्र एनमिध्वासो	१३३
यः प्राणदः प्राणदवान्	२२२	रुद्र जलाषभेषज	११८
यः शुक्र इव सूर्यो	४	रुद्र यत् ते किवि	४४
यत् संयमो न वि	२०९	रुद्रस्यैलबकारेभ्यो	१९९
यथा नो अदितिः	२	रुद्राः सःसृज्य पृथिवीं	४५
यथा नो मित्रो वरुणो	१४२	विकिरिद्र विलोहित	९७
यमोदनं प्रथमजा	२१८	विज्यं धनुः कपर्दिनो	५५
यमो मृत्युरघमारो	२०१	व्याघ्रं दत्वता वयं	२०६
यस्मात् पक्वादमृतं	२२३	शं नः करत्यर्वते	५
यस्मान्मासा निर्मिताः	२२१	शर्व एनमिध्वासो	१२४
यस्य तन्मा कासिका	१९१	शिवेन वचसा त्वा	४९
या ते दिष्टुदवसृष्टा	३४	शिवो नामासि स्वधितिः	४३
या ते रुद्र शिवा तनूः	४७; ९४	शिशुमारा अजगराः	१९४
या ते हेतिर्माढुष्टम	५६	शुने क्रोधे मा शरीराणि	१७१
यामिषुं गिरिशन्त	४८	श्यावाश्वं कृष्णमसितं	१८७
या वो भेषजा मरुतः	२९	श्रेष्ठो जातस्य रुद्र	१९
ये तीर्थानि प्रचरन्ति	१०६	स एव मृत्युः सोऽमृतं	११६
ये नः सपत्ना अप ते	१५५	स नो भवः परि वृणक्तु	१७७
येनातरन् भूतकृतो	२१९	स रुद्रो वसुवनिः	११७
येऽज्ञेषु विविध्यन्ति	१०७	सहस्रधार एव ते	१५८
ये पर्णा पथिरक्षय	१०५	सहस्राक्षमतिपश्यं	१८६
ये भूतानामधिपतयो	१०४	सहस्राणि सहस्रशो	९८
ये वृक्षेषु शाष्पिञ्जरा	१०३	स हि क्षयेण क्षम्यस्य	३३
येऽस्यां स्थ दक्षिणायां दिशि	१४४	सोमं ते रुद्रवन्तं	१४१
येऽस्यां स्थ भ्रुवायां दिशि	१४७	सोऽर्यमा स वरुणः	११५
येऽस्यां स्थ प्रतीच्यां दिशि	१४५	स्तुहि ध्रुतं गर्तसदं	२७
येऽस्यां स्थ प्राच्यां दिशि	१४३	स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप	२५
येऽस्यां स्थोदीच्यां दिशि	१४६	हृवीमभिर्हवते	२१

# दैवत--संहितान्तर्गत रुद्रदेवताया गुणबोधक-पदसूची ।

[ १ ऋग्वेदसंहिता 'ऋ०'; अथर्ववेदसंहिता 'अ०'; संहितानामभिरहिताः यजुर्वेदमन्त्राः । २ जातसंज्ञाः रुद्राः बहुवचनेन निर्दिष्टाः । ]

अग्ने-वधः १६, ४०. ८५  
 अग्न्यः १६, ३०. ७५  
 अजिरः १६, ३१. ७६  
 अधः क्षमाचराः १६, ५७. १०२  
 अधिपतयः भूतानाम् १६, ५९. १०४  
 अधिवक्ता १६, ५. ५०  
 अध्वरस्य राजा [ अग्निः ] ऋ० ४, ३, १. २१०  
 अनुष्ठाता अ० १५, ५, १-२, ४-५, ७-८, १०-११,  
 १३-१४, १६-१७, १९-२०. १२०-२१, १२३-२४,  
 १२६-२७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९  
 अन्तरिक्षे (ये) येषां वातः इषवः १६, ६५. ११०  
 अन्धसस्पतिः १६, ४७. ९२  
 अन्नानां पतिः १६, १८. ६३  
 अपगल्भः १६, ३२. ७७  
 अपभर्ता रपसः दैव्यस्य ऋ० २, ३३, ७. २३  
 अपरजः १६, ३२. ७७  
 अभिघ्नन् १६, ४६. ९१  
 अभ्वं सः अ० १३, ६, २५. ११६  
 अमर्त्यः अ० ११, २, ३. १७२  
 अमृतं सः अ० १३, ६, २५. ११६  
 अरण्यानां पतिः १६, २०. ६५  
 अरथाः १६, २६. ७१  
 अरुणः १६, ६, ३९. ५१, ८४  
 अरुषः ऋ० १, ११४, ५. १०  
 अर्भकाः १६, २६. ७१  
 अर्यमा ( सः ) अ० १३, ४, ४. ११५  
 अर्हन् ऋ० २, ३३, १०. २६  
 अवत्स्यः १६, ३८. ८३  
 अवततधन्वा ३, ६१. ४१  
 अवभेदी १६, ३४. ७९  
 अवर्ष्यः १६, ३८. ८३  
 अवसान्यः १६, ३३. ७८

अवस्वन्यः १६, ३१. ७६  
 अवार्यः १६, ४२. ८७  
 अश्वाः १६, २४. ६९  
 अश्वपतयः १६, २४. ६९  
 अषाढहः ऋ० ७, ४६, १. ३२  
 असंख्याताः १६, ५४. ९९  
 आसितः अ० ११, २, १८. १८७  
 आसिमन्तः १६, २१. ६६  
 अस्यन्तः १६, २२. ६७  
 अस्यन् बहुधा अ० ११, २, १७. १८६  
 अहन्तिः १६, १८. ६३  
 आकन्दयत् १६, १९. ६४  
 आखिदत् १६, ४६. ९१  
 आततायी १६, १८. ६३  
 आतन्वानाः १६, २२. ६७  
 आतप्यः १६, ३८. ८३  
 आनिर्हताः १६, ४६. ९१  
 आयत् अ० ११, २, १५. १८४  
 आयच्छन्तः १६, २२. ६७  
 आयुधी ( धिन ) १६, ३६. ८१  
 आयुर्बुधः १६, ६०. १०५  
 आग्याधिन्त्यः १६, २४. ६९  
 आग्याधिनीनां पतिः १६, २०. ६५  
 आशुः १६, ३१. ७६  
 आशुरथः १६, ३४. ७९  
 आशुषेणः १६, ३४. ७९  
 आसीनः अ० ११, २, १५. १८४  
 आसीनाः १६, २३. ६८  
 आहनन्यः १६, ३५. ८०  
 हरिष्यः १६, ४३. ८८  
 इषुकन्तः ( तः ) १६, ४६. ९१

इषुधिमान् १६, २१, ३६. ६६, ८१  
 इषुमान् १६, २९. ७४  
 इषुमन्तः १६, २२. ६७  
 इष्वासः अ० १५, ५, १-२, ४-५, ७-८, १०-११, १३-  
 १४, १६-१७, १९-२०. १२०-२१, १२३-२४, १२६-  
 २७, १२९-३०, १३२-३३, १३५-३६, १३८-३९  
 ह्यमानः अ० ११, २, १७. १८६  
 ईशानः ऋ० २, ३३, ९. २५ । अ० १५, ५, २, ५, ८,  
 ११, १४, १७, १९-२०. १२१, १२४, १२७, १३०, १३३,  
 १३६, १३८-३९  
 ईशानः हेतीनाम् १६, ५३. ९८  
 ईशे दिवः पृथिव्याः अ० ११, २, २७. १९६  
 उगणाः १६, २४. ६९  
 उग्रः १६, ४०. ८५ । ऋ० २, ३३, २, ११. २५, २७ ।  
 अ० १५, ५, १०-११. १२९-१३०. ११, २, २१. १९०  
 उच्चैर्घोषः १६, १९. ६४  
 उत्तरणः १६, ४२. ८७  
 उद्गुरमाणः १६, ४६. ९१  
 उपवीती १६, १७. ६२  
 उपहृत्नुः ऋ० २, ३३, ११. २७  
 उर्वर्यः १६, ३३. ७८  
 उलप्यः १६, ४५. ९०  
 उष्णीषी १६, २२. ६७  
 ऊर्म्यः १६, ३१. ७६  
 ऊर्व्यः १६, ४५. ९०  
 ऋदूदरः ऋ० २, ३३, ५. २१  
 एतावन्तः १६, ६३. १०८  
 ऐलबृदाः १६, ६०. १०५  
 ओषधीनां पतिः १६, १९. ६४  
 ककुभः १६, २०. ६५  
 कक्षाणां पतिः १६, १९. ६४  
 कक्ष्यः १६, ३४. ७९  
 कनिष्ठः १६, ३२. ७७  
 कपर्दी १६, १०, २९, ४३. ५५, ७४, ८८ । ऋ० १, ११४,  
 १, ५. ६, १०  
 कपर्दिनः १६, ५९. १०४  
 कर्मकृत् अ० २, २७, ६. ११८  
 कर्मारः १६, २७. ७२  
 कल्मलीकी ऋ० २, ३३, ८. २४  
 वै० [ रुद्रः ] ४

कवची १६, ३५. ८०  
 कविः १६, ४८. ९३ । ऋ० १, ११४, ४. ९  
 काव्यः १६, ३७, ४४. ८२, ८९  
 किंशिलः १६, ४३. ८८  
 किरिकाः १६, ४६. ९१  
 कुलालाः १६, २७. ७२  
 कुलुञ्जानां पतिः १६, २२. ६७  
 कुल्यः १६, ३७. ८२  
 कूल्यः १६, ४२. ८७  
 कृत्ति वसानः १६, ५१. ९६  
 कृत्तिवासाः ३, ६१. ४१  
 कृत्स्नायतया धावन् १६, २०. ६५  
 कृष्णः ११, २, १८. १८७  
 क्षतारः १६, २६. ७१  
 क्षमाचराः अधः १६, ५७. १०२  
 क्षयणः १६, ४३. ८८  
 क्षयद्वीरः ऋ० १, ११४, १-३, १०. ६-८, १५  
 क्षिप्रेषुः ऋ० ७, ४६, १. ३२  
 क्षेत्राणां पतिः १६, १८. ६३  
 क्षेम्यः १६, ३३. ७८  
 खल्यः १६, ३३. ७८  
 गणाः १६, २५. ७०  
 गणपतयः १६, २५. ७०  
 गर्तसदः ( दू ) ऋ. २, ३३, ११. २७  
 गह्वरेष्ठः १६, ४४. ४९  
 गाथपतिः ऋ० १, ४३, ४. ३  
 गिरिचरः १६, २२. ६७  
 गिरिशः १६, ४. ४९  
 गिरिशयः १६, २९. ७४  
 गिरिशन्तः १६, २-३. ४७-४८  
 गृत्साः १६, २५. ७०  
 गृत्सपतयः १६, २५. ७०  
 गेह्यः १६, ४४. ८९  
 गोष्ठ्यः १६, ४४. ८९  
 चोक्तितानः ऋ० २, ३३, १५. ३१  
 जगतां पतिः १६, १८. ६३  
 जघन्यः १६, ३२. ७७  
 जलाशेषजः ऋ० १, ४३, ४. ३ । अ० २, २७, ६. ११८  
 जाप्रतः १६, २३. ६८

जातस्य श्रेष्ठः ऋ० २,३३,३. १९  
 जिघांसन्तः १६,२१. ६६  
 ज्येष्ठः १६,३२. ७७  
 तक्षाणः १६,२७. ७२  
 तल्प्यः १६,४४. ८९  
 तवस् १६,४८. ९३। ऋ० १,११४,१. ६  
 तव्यस् ऋ० १,४३,१. १  
 तस्कराणां पतिः १६,२१. ६६  
 ताम्रः १६,६,३९. ५१,८४  
 तारः १६,४०. ८५  
 तिग्महेती [ सोमारुद्रौ ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२  
 तिग्मायुधः ऋ० ७,४६,१. ३२  
 तिग्मायुधौ [ सोमारुद्रौ ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२  
 तिष्ठन् अ० ११,२,१५. १८४  
 तिष्ठन्तः १६,२३. ६८  
 तवस्तमः तवसाम् ऋ० २,३३,३. १९  
 तीक्ष्णेषुः १६,३६. ८१  
 तीर्थ्यः १६,४२. ८७  
 तुंहन्त्यः १६,२४. ६९  
 त्र्यम्बकः ३,५८,६०. ३८,४०। ऋ० ७,५२,१२.  
 ३६  
 त्विषीमान् १६,१७. ६२  
 त्वेषः ऋ० १,११४,४-५. ९, १०। २,३३,१४. ३०  
 दारिद्रः १६,४७. ९२  
 दाता भूरः ऋ० २,३३,१२. २८  
 दिवं उपश्रिताः १६,५६. १०१  
 दिशि ये येषां वर्ष इषवः १६,६०. १०२  
 दिशां पतिः १६,१७. ६२  
 दुन्दुभ्यः १६,३५. ८०  
 दरेवधः १६,४०. ८५  
 देवः ३,५८. ३८। ऋ० १,११४,१०. १५।  
 २,३३,१५,३१। ७,४६,१. ३२। अ० १५,५,  
 १०-११. १२२-१३०  
 देवानां श्रेष्ठः ऋ० १,४३,५. ४  
 देवानां हृदयानि १६,४६. ९१  
 द्रापिः १६,४७. ९२  
 द्विबर्हाः ऋ० १,११४,१०. १५  
 द्वीप्यः १६,३१. ७६

धनुष्कृतः १६,४६. ९१  
 धन्वायिनः\* १६,२२. ६७  
 धावत् कृत्स्नायतया १६,२०. ६५  
 धावन्तः १६,२३. ६८  
 धृष्णुः १६,३६. ८१  
 नक्षत्ररन्तः १६,२१. ६६  
 नादेयः १६,३१,३७. ७३,८२  
 निचेरुः १६,२०. ६५  
 निर्णयन् अभिपूर्वम् अ० ११,२,२२. १९१  
 निवेप्यः १६,४४. ८९  
 निव्याधी १६,२०. ६५  
 निषङ्गिणः १६,६१. १०६  
 निषङ्गी १६,२०-२१,३६. ६५-६६,८१  
 निषादाः १६,२७. ७२  
 नीप्यः १६,३७. ८२  
 नीलप्रीवः १६,७-८,२८. ५२-५३,७३  
 नीलप्रीवाः १६,५६-५८. १०१-१०३  
 नीललोहितः १६,४७. ९२  
 नीलशिखण्डः अ० २,२७,६. ११८। ६,९३,१. २०१।  
 ११,२,७. १७६  
 पतिः अन्धसः १६,४७. ९२  
 ,, अज्ञानाम् १६,१८. ६३  
 ,, अरण्यानाम् १६,२०. ६५  
 ,, आव्याधिनीनाम् १६,२०. ६५  
 ,, ओषधीनाम् १६,१९. ६४  
 ,, कक्षाणाम् १६,१९. ६४  
 ,, कुलुम्बानाम् १६,२२. ६७  
 ,, क्षेत्राणाम् १६,१८. ६३  
 ,, जगताम् १६,१८. ६३  
 ,, तस्कराणाम् १६,२१. ६६  
 ,, दिशाम् १६,१७. ६२  
 ,, पत्नीनाम् १६,१९. ६४  
 ,, पथीनाम् १६,१७. ६२  
 ,, पशूनाम् १६,१७. ६२  
 ,, पुष्टानाम् १६,१७. ६२  
 ,, सुष्णताम् १६,२१. ६६  
 ,, वनानाम् १६,१८. ६३  
 ,, विकृन्तानाम् १६,२१. ६६

पतिः वृक्षाणाम् १६, १९. ६४  
 ,, सत्वनाम् १६, २०. ६५  
 ,, स्तायुनाम् १६, २१. ६६  
 ,, स्तेनानाम् १६, २०. ६५  
 पतिवेदनः ३, ६०. ४०  
 पत्नीनां पतिः १६, १९. ६४  
 पथां पथि रक्षयः १६, ६०. १०५  
 पथीनां पतिः १६, १७. ६२  
 पथ्यः १६, ३७. ८२  
 परिचरः १६, २०. ६५  
 परिवस्रत् १६, २१. ६६  
 परावत् अ० ११, २, १५. १८४  
 पर्णः १६, ४६. ९१  
 पर्णशब्दः १६, ४६. ९१  
 पशूनां पतिः १६, १७. ६२  
 पशुपतिः १६, २८, ४०. ७३, ८५ । अ० १५, ५, ७-८.  
 १२६-१२७ । अ० ११, २, २, ५, ९, ११. १७१,  
 १७४, १७८, १८०  
 पशुपती [ भवाशर्वी ] अ० ११, २, १. १७०  
 पांसव्यः १६, ४५. ९०  
 पादयन् केशिनः रथम् अ० ११, २, १८. १८७  
 पार्यः १६, ४२. ८७  
 पिता मरुताम् ऋ० १, ११४, ६, ९. ११, १४; २, ३३,  
 १. १७  
 पिनाकावसः ३, ६१. ४१  
 पिनाकं विभ्रत् १६, ५१. ९६  
 पुञ्जिष्ठाः १६, २७. ७२  
 पुरुरूपः ऋ० २, ३३, ९. २५  
 पुलस्तिः १६, ४३. ८८  
 पुष्टानां पतिः १६, १७. ६२  
 पुष्टिबर्धनः ३, ६०. ४० । ऋ० ७, ५९, १२. ३६  
 पूर्वजः १६, ३२. ७७  
 पृथिव्यां ये, येषां अन्नं इषक् १६, ६६. १११  
 प्रखिदत् १६, ४६. ९१  
 प्रचरन्तः तीर्थानि १६, ६१. १०६  
 प्रचेताः ऋ० १, ४३, १. १  
 प्रतरणः १६, ४२. ८७  
 प्रतिदधानाः १६, २२. ६७  
 प्रतिश्रवः १६, ३४. ७९  
 प्रतिशर्यः १६, ३३. ७८

प्रतीचीनः अ० ११, २, ५. १७४  
 प्रथमः १६, ३०. ७५  
 प्रथमः भिषक् दैव्यः १६, ५. ५०  
 प्रपथ्यः १६, ४३. ८८  
 प्रमृणन् अयज्वनः देवपीयून् अ० ११, २, २३. १९२  
 प्रमृशः १६, ३६. ८१  
 प्रवाह्यः १६, ४३. ८८  
 फेन्यः १६, ४२. ८७  
 वन्रुः १६, ६. ५१ । ऋ० २, ३३, ५, ८-९, १५. २१,  
 २४, २५, ३१  
 बभ्रुवाः १६, १८. ६३  
 विभ्रत् पिनाकम् १६, ५१. ९६  
 विभ्रत् भेषजा वार्याणि ऋ० १, ११४, ६. ११  
 विल्मी १६, ३५. ८०  
 बुध्यः १६, ३२. ७७  
 बृहत् १६, ३०. ७५  
 भगवान् १६, ९, ५२-५३. ५४, ९७-९८  
 भवः १६, २८. ७३ । अ० १५, ५, १-२, ५, ८, ११,  
 १४, १७, २०. १२०-२१, १२४, १२७, १३०, १३३,  
 १३६, १३९ । अ० ११, २, ३, ५, ८-९, १६, २५, २७.  
 १७२, १७४, १७७-१७८, १८५, १९४, १९६  
 भवाशर्वी [ देवते ] अ० ११, २, १. १७०  
 भवस्य हेतिः १६, १८. ६३  
 भामितः ऋ० १, ११४, ८. १३  
 भिषक् दैव्यः प्रथमः १६, ५. ५०  
 भिषक्तमः भिषजाम् ऋ० २, ३३, ४. २०  
 भोमः १६, ४०. ८५ । ऋ० २, ३३, ११. २७  
 भुवनस्य भूरिः ऋ० २, ३३, ९. २५  
 भुवन्तिः १६, १९. ६४  
 भूतानां अधिपतयः १६, ५९. १०४  
 भूतपती [ भवाशर्वी ] अ० ११, २, १. १७०  
 भूयांसः १६, ६३. १०८  
 भूरिः भुवनस्य ऋ० २, ३३, ९. २५  
 भूरिः दाता ऋ० २, ३३, १२. २८  
 भेषजम् ३, ५९. ३९  
 भेषजा वार्याणि विभ्रत् ऋ० १, ११४, ६. ११  
 मध्यमः १६, ३२. ७७  
 मन्त्री १६, १९. ६४  
 मयस्करः १६, ४१. ८६

मयोभुवः १६, ४१. ८६  
 मरुत्वान् ऋ० १, ११४, ११. १६। ऋ० २, ३३, ६. २२  
 मरुतां पिता ऋ० १, ११४, ६. ११। ऋ० २, ३३, १. १७  
 महान्तः १६, २६. ७१  
 महादेवः सः अ० १३, ४, ४. ११५। अ० १५, ५,  
 १६-१७. १३५-१३६  
 महेन्द्रः सः अ० १३, ४, ४. ११५  
 मीद्वान् १६, ८, ५०. ५३, ९५। ऋ० १, ११४, ३. ८।  
 २, ३३, १४. ३०  
 मीद्वष्टमः १६, ११, २९, ५१. ५६, ७४, ९६। ऋ० १,  
 ४३, १. १  
 मुष्णतां पतिः १६, २१. ६६  
 मृगयवः ( युः ) १६, २७. ७२  
 मृणन् अ० ११, २, १८. १८७  
 मृत्युः सः अ० १३, ६, २५. ११६  
 मेध्यः १६, ३८. ८३  
 मेघपतिः ऋ० १, ४३, ४. ३  
 यज्ञसाधः ऋ० १, ११४, ४. ९  
 याम्यः १६, ३३. ७८  
 युवा ऋ० २, ३३, ११. २७  
 रक्षः सः अ० १३, ६, २५. ११६  
 रजस्यः १६, ४५. ९०  
 रथकाराः १६, २७. ७२  
 रथिनः १६, २६. ७१  
 राजा अ० ११, २, २८. १९७  
 राजा, अव्यरस्थ- [ अग्निः ] ऋ० ४, ३, १. २१०  
 रुद्रः ( प्रायः सर्वत्र )।  
 रुद्रः [ अग्निः ] ऋ० ४, ३, १. २१०  
 रुद्रः अग्नौ अन्तः अ० ७, ८७, १. ११९  
 ,, अप्सु अन्तः अ० ७, ८७, १. ११९। अ० ११, २, २४.  
 १९३  
 ,, ओषधीः विवेश अ० ७, ८७, १. ११९। अ० ११, २, २४.  
 १९३  
 ,, वीरुधः विवेश अ० ७, ८७, १. ११९।  
 अ० ११, २, २४. १९३  
 रूपम् ऋ० १, ११४, ५. १०  
 रेष्म्यः १६, ३९. ८४  
 रोहितः ऋ० १६, १९. ६४  
 लोप्यः १६, ४५. ९०

वङ्कुः ऋ० १, ११४, ४. ९  
 वज्रबाहुः ऋ० २, ३३, ३. १९  
 वसन्त १६, २१. ६६  
 वनानां पतिः १६, १८. ६३  
 वन्यः १६, ३४. ७९  
 वराहः ऋ० १, ११४, ५. १०  
 वरुणः सः अ० १३, ४, ४. ११५  
 वरुथी १६, ३५. ८०  
 वर्मा १६, ३५. ८०  
 वर्षीयान् १६, ३०. ७५  
 वर्ष्यः १६, ३८. ८३  
 वसानः कृत्तिम् १६, ५१. ९६  
 वसुः ऋ० १, ४३, ५. ४  
 वाणिजः १६, १९. ६४  
 वसुदेये वसुवनिः अ० १३, ६, २६. ११७  
 वषट्कारः नमोवाके अनु अ० १३, ६, २६. ११७  
 वाल्यः १६, ३९. ८४  
 वामनः १६, ३०. ७५  
 वारिवस्कृतः १६, १९. ६४  
 वास्तव्यः १६, ३९. ८४  
 वास्तुपः १६, ३९. ८४  
 विकिरिद्रः १६, ५२. ९७  
 विकृन्तानां पतिः १६, २१. ६६  
 विक्षिणत्काः १६, ४६. ९१  
 विचिन्वत्काः १६, ४६. ९१  
 विद्युत्यः १६, ३८. ८३  
 विध्यन्तः १६, २३. ६८  
 विपश्चित अ० ११, २, १७. १८६  
 विरूपाः १६, २५. ७०  
 विलोहितः १६, ७, ५२, ५८. ५२, ९७, १०३  
 विविध्यन्त्यः १६, २४. ६९  
 विशिखासः १६, ५९. १०४  
 विश्वरूपाः १६, २५. ७०  
 विमृजन्तः १६, २३. ६८  
 वीध्न्यः १६, ३८. ८३  
 वृक्षाः ( हरिकेशाः ) १६, ४०. ८५  
 वृक्षाः १६, १७. ६२  
 वृक्षाणां पतिः १६, १९. ६४  
 वृक्षेषु स्थिताः १६, ५८. १०३

वृद्धः १६,३०. ७५  
 वृषभः ऋ० २,३३,४,६-८,१५. २०,२२-२४,३१  
 वेधाः ऋ० ७,४६,१. ३२  
 वैशान्तः १६,३७. ८२  
 व्रज्यः १६,४४, ८९  
 वाताः १६,२५. ७०  
 मातपतयः १६,२५. ७०  
 व्याधी ( धिन् ) १६,१८. ६३  
 व्युप्तकेशः १६,२९. ७४  
 शङ्करः १६,४१. ८६  
 शङ्गुः १६,४०. ८५  
 शतधन्वा १६,२९. ७४  
 शतेषुधिः १६,१३. ५८  
 शम्भवः १६,४१. ८६  
 शयानाः १६,२३. ६८  
 शर्वः १६,२८. ७३। अ० १५,५,२,५,८,११,१४,१७,  
 २०. १२१,१२४,१२७,१३०,१३३,१३६,१३९  
 शष्पिञ्जरः १६,१७. ६२  
 शष्पिञ्जराः वृक्षेषु १६,५८. १०३  
 शष्प्यः १६,४२. ८७  
 शितिकण्ठः १६,२८. ७३  
 शितिकण्ठाः १६,५६,५८. १०१-१०३  
 शिपिविष्टः १६,२९. ७४  
 शिवः ३,६१. ४१। १६,४१. ८६  
 शिवतरः १६,४१. ८६  
 शिवतमः १६,५१. ९६  
 शिवः नाम ३,६३. ४३  
 शीघ्र्यः १६,३१. ७६  
 शीघ्र्यः १६,३१. ७६  
 शुष्क्यः १६,४५. ९०  
 शूरः १६,३४. ७९  
 श्यावाश्वः अ० ११,२,१८. १८७  
 श्रवः १६,३४. ७९  
 श्रिया श्रेष्ठः ऋ० २,३३,३. १९  
 श्रुतः १६,३५. ८०। ऋ० २,३३,११. २७  
 श्रुतसेनः १६,३५. ८०  
 श्रेष्ठः जातस्य ऋ० २,३३,३. १९

श्रेष्ठः देवानाम् ऋ० १,४३,५. ६  
 ,, श्रिया ऋ० २,३३,३. १९  
 श्लोक्यः १६,३३. ७८  
 श्वनयः (निः) १६,२७. ७२  
 श्वपतयः १६,२८. ७३  
 श्वानः १६,२८. ७३  
 श्वित्यञ्चू (ञ्) ऋ० २,३३,८. २४  
 संविदानौ [भवास्त्रौ] अ० ११,२,१४. १८३  
 संगृहीतारः १६,२६. ७१  
 सत्पतिः ऋ० २,३३,१२. २८  
 सत्ययजः [अग्निः] ऋ० ४,३,१. २१०  
 सत्त्वनां पतिः १६,२०. ६५  
 सभाः १६,२४. ६९  
 सभापतयः १६,२४. ६९  
 सयुजौ [भवास्त्रौ] अ० ११,२,१४. १८४  
 सरस्यः १६,३७. ८२  
 सवृध् १६,३०. ७५  
 सहमानः १६,२०. ६५। ऋ० ७,४६,१. ३२  
 सहस्त्राणि १६,५४. ९९  
 सहस्त्राक्षः १६,८,१३,२९. ५३,५८,७४।  
 अ० ११,२,३,७. १७२,१७६  
 सिकत्यः १६,४३. ८८  
 सुगन्धिः ३,६०,४०। ऋ० ७,५९,१२. ३६  
 सुधन्वा १६,३६. ८१  
 सुमालः १६,६. ५१  
 सुशिप्रः ऋ० २,३३,५. २१  
 सुशेवौ [सोमास्त्रौ] अ० ५,६,५-७. १६०-१६२  
 सुहवः ऋ० २,३३,५. २१  
 सूतः १६,१८. ६३  
 सूर्यः १६,४५. ९०  
 सूकायी (यिन्) १६,२१. ६६  
 सूकाहस्ताः १६,६१. १०६  
 सेनाः १६,२६. ७१  
 सेनानीः× १६,१७. ६२  
 सेनान्यः १६,२६. ७१  
 सोभ्यः १६,३३. ७८

✽ अस्य श्वानः- असंसूक्तगिलाः, ऐलबकाराः, महास्याः। (अ० ११,२,३०. १२९)

✽ अस्य सेनाः- कोशिन्यः, षोषिण्यः, नमस्कृताः, संभुजनयः। (अ० १०,२,३१. २००)



सोमः १६, ३९. ८४। अ० १९, १८, ३. १४१  
 स्तुतः ऋ० २, ३३, १२. २८  
 स्तुत्यः १६, ३७. ८२  
 स्तायूनां पतिः १६, २१. ६६  
 स्तेनानां पतिः १६, २०. ६५  
 स्थपतिः १६, १९. ६४  
 स्थिरधन्वा ऋ० ७, ४६, १. ३२  
 स्वधावन् (वा) ऋ० ७, ४६, १. ३२  
 स्वपन्तः १६, २३. ६८  
 स्वपिवातः ऋ० ७, ४६, ३. ३४  
 स्वायुधः १६, ३६. ८१  
 हनीयान् १६, ४०. ८५  
 हन्ता १६, ४०. ८५  
 हरिकेशः १६, १७. ६२  
 हरिकेशाः (वृक्षाः) १६, ४०. ८५

हारिल्यः १६, ४५. ९०  
 हवनश्रुत् ऋ० २, ३३, १५. ३१  
 हिरण्यबाहुः १६, १७. ६२  
 हिरण्यरूपः [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०  
 हीळितः ऋ० ७, ४६, ४. ३५  
 हस्तः यस्य जलाषः } ऋ० २, ३३, ७. २३  
 भेषजः, मृळयाकुः }  
 हस्ते विभ्रत् भेषजा वार्याणि ऋ० १, ११४, ५. १०  
 हृदयानि देवानाम् १६, ४६. ९१  
 हृदय्यः १६, ४४. ८९  
 हेतिः भवस्य १६, १८. ६३  
 हेतिः यस्य तकमा कासिका अ० ११, २, २२. १९१  
 हेतीनाम् ईशानः १६, ५३. ९८  
 होता [अग्निः] ऋ० ४, ३, १. २१०  
 ह्रस्वः १६, ३०. ७५

## मृत्युदेवता-गुणबोधक-पदानि

अधिवाकः	अ० ६, १३, २. २१६	२१४ । अ० ६, १३, १-३. २१५-२१७; ४,
चक्षुष्मान्	ऋ० १०, १८, १. २११	३५, १-७. २१८-२२५; ६, ६३, २-३.
तिग्मतेजाः	अ० ६, ६३, २. २२६	२२६-२२७
सुर्मतिः	अ० ६, १३, २. २१६	यमः अ० ६, ६३, २-३. २२६, २२७
देववधाः	अ० ६, १३, १. २१५	यातुधानाः अ० ६, १३, ३. २१७
निर्ऋतिः	अ० ६, ६३, २. २२६	राजवधाः अ० ६, १३, १. २१५
परावाक	अ० ६, १३, २. २१६	विदयानां वधाः अ० ६, १३, १. २१५
ब्राह्मणाः	अ० ६, १३, ३. २१७	शृण्वन् ऋ० १०, १८, १. २११
भेषजानि	अ० ६, १३, ३. २१७	सुमतिः अ० ६, १३, २. २१६
मृत्युः	ऋ० १०, १८, १-२, ४. २११-२१२,	

## मृत्युनिवारक-ब्रह्मौदन-गुणबोधक-पदानि ।

ओदनः ब्रह्मणे	अ० ४, ३५, १-७. २१८-२२४	प्राणदवान्	४, ३५, ५. २२२
अधिपतिः गायत्र्याः	६. २२३	ब्रह्मौदनः	७. २२४
पक्रः	६. २२३	विश्रुतिः लोकानाम्	१. २१८
प्राणदः	५. २२२	विश्वजित्	७. २२४



## दिग्भेदेन रुद्ररूपाणि ।

अथर्व० ३. २६. १-६ ( १४३-१४८ )			अथर्व० ३.२७.१-६ ( १४९-१५४ )			अथर्व० १५.५.१-२१ ( १२०-१४० )
दिङ्नाम ।	देवाः ।	इषवः ।	अधिपतिः ।	रक्षिता ।	इषवः ।	अन्तर्देशात् अनुष्ठाता इष्वासः ।
प्राची	हेतयः	अग्निः	अग्निः	असितः	आदित्याः	भवः
दक्षिणा	अविष्यवः	कामः	इन्द्रः	तिरश्चिराजिः	पितरः	शर्वः
प्रतीची	वैराजाः	आपः	वरुणः	पृदाक्नुः	अन्नम्	पशुपतिः
उदीची	प्रविध्यन्तः	वातः	सोमः	स्वजः	अशनिः	उग्रः
ध्रुवा	निलिम्पाः	ओषधीः	विष्णुः	कल्माषग्रीवः	वीरुधः	रुद्रः
ऊर्ध्वा	अवस्वन्तः	वृहस्पतिः	वृहस्पतिः	श्वित्रः	वर्षम्	महादेवः
सर्वे अन्तर्देशाः।	.....	.....	.....	.....	.....	ईशानः

## दैवत-संहितान्तर्गत-

## रुद्रदेवताया उपमा-सूची ।

आप इव अग्निः	अ० ११,२,८. १७७	परि वृणक्तु नो भवः ।
वृषणः अश्वस्य क्रन्दः इव	अ० ११,२,२२. १९१	यस्य तक्मा कासिका हेतिः ।
घृणी इव च्छायाम्	ऋ० २,३३,६. २२	अरपाः रुद्रस्य सुम्रं अशीय ।
पशुपाः इव	ऋ० १,११४,९. १४	ते स्तोमान् उपाकरम् ।
मृगं न	ऋ० २,३३,११. २७	भीमम् ।
सूर्यः इव	ऋ० १,४३,५. ४	यः शुक्रः ।
हिरण्यं इव	ऋ० १,४३,५. ४	यः रोचते ।



# दैवत-संहिता

( ८ )

उषा-देवता

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,

स्वाध्याय-मण्डळ, औंध ( जि. सातारा )



संवत् २०००, शक १८६५; सन् १९४४

## संपादक

भट्टाचार्य पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

महामहाभ्यापक, गांतालंकार, अभ्यक्ष स्वाध्याय मण्डल औंध, (जि० सातारा)

## सहसंपादक

पं० दयानंद गणेश धारेश्वर, बी. ए.

‘ वैदिक धर्म ’ सहसंपादक, औंध

## सूचीलेखक

श्री० पं० अनंत दिनकर रास्ते, वाई, (जि० सातारा)

---

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A.,

भारत-मुद्रणालय, औंध (जि० सातारा)

---

# उषाका परिचय

(१)

उषादेवता के सूक्तोंमें साधारणतया प्राञ्जलिक दृश्यका अत्यन्त मनोरम एवं काव्यमय वर्णन किया हुआ है ऐसा प्रथमतः मनमें विचार उठ खडा होता है, और यह धारणा है भी ठीक, क्योंकि उषादेवता के लगभग २०० मंत्रोंमें करीब ८० मंत्र भाग स्पष्ट तथा प्रातःकालीन स्फूर्तिप्रद तथा प्रकाशमय दृश्य का बखान करते हुए पाये जाते हैं। इस उषावेलाके सजीव एवं आन्दोलनमय वर्णन के अतिरिक्त पचास से अधिक बार इन मंत्रोंमें आर्थिक और सांपत्तिक समृद्धि एवं वैभव के देने और पानेका उल्लेख पाया जाता है। इसलिये ऐसा निस्सन्देह कहा जा सकता है कि, इन मंत्रोंमें भौतिक संपन्नता और उषाकालीन प्राकृतिक सुरम्यता का ही अत्यधिक चित्रण एवं निर्देश किया है।

अँधेरे का हट जाना और उजलेका आविर्भाव मंत्रोंमें इस भाँति चित्रित किया है।

१. उयोतिः कृणोति सूनरी । (ऋ. १।४८।८)
२. उयोतिः विश्वस्मै भुवनाय कृणवती ... उषा तमः वि आवः । (ऋ. १।९२।४)
३. अप प्रागात् तम आ उयोतिरेनि । (ऋ. १।११३।१६)
४. ... वि आवः उयोतिषा तमः । उषः अनु स्वधां अत्र । (ऋ. ४।५२।६)
५. अप ... बाधमाना तमांसि उषा दिवो दुहित्वा उयोतिषागात् । (ऋ. ५।८०.५)
६. पुनः उयोतिः युवतिः पूर्वथा अकः । (ऋ. ५।८०।६)
७. ... चित्रं भास्वि उषसः ... वि ता बाधन्ते तम ऊर्ध्वाया । (ऋ. ६।६५।२)
८. ... अकः उयोतिः बाधमाना तमांसि । (ऋ. ७।७७।१)
९. उषा याति उयोतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि कुरिता अप देवी । (ऋ. ७।७८।२)
१०. उषा स्या नश्यमायुर्दधाना गृध्वी तमो उयोतिषोषा अत्रोधि । (ऋ. ७।८०।२)
११. अपो महि व्यपति चक्षसे तमो उयोतिष्कृणोति सूनरी । (ऋ. ७।८१।१)

१२. अपो मही वृणुने चक्षुषा तमो उयोतिष्कृणोति सूनरी । (साम. ३०३ पूर्व. आ.)

१३. मं ते गातराम आ वनेषन्ति उयोतिः यच्छन्ति... । (ऋ. ७।७९।२)

१४. ...त्याः प्रप्यदश्रन् पुरस्तात् उयोतिर्यच्छन्तीकृणोति विश्वातीः । ... अयाचीनं तमो अगादसुष्टम् । (ऋ. ७।७८।३)

१५. ... उषा उयोतिः यच्छन्त्यग्ने अह्वाम् । (ऋ. ५।८०।१०)

१६. इदं श्रेष्ठं उयोतिषां उयोतिरागात् । (ऋ. १।११३।१९)

१७. इदं ... स्वत् पुरुषतमं पुरस्ताज्ज्योतिरामसो .. अस्यात् । (ऋ. ४।५१।१)

१८. अशुः ... चित्रा उषसः पुरस्तात् ... वि ... तमलो द्वारोच्छन्तीः । (ऋ. ४।५१।२)

१. 'यह भली भाँति ले चलनेवाली उषा नकाशका मृजन करती है; २. समूचे संसार के लिए उजाला निर्माण करती हुई उषा अँधेरा हटा चुकी है; ३. अँधेरा थिलकुल दूर हट गया और अब उजाला चला आ रहा है; ४. हे उषे! तू उजालेसे अँधेरा हटा चुकी है और अब स्वर्काय धारक शक्तिके अनुकूल रक्षाकर; ५. तुलोक की मानों कन्यासी यह उषा अंधकार के पुत्र को दूर भगाती हुई उजालेके साथ आ चुकी है; ६. इस युवती उषाने फिर पहले जैसीही उजाला बनाया है; ७. उषाएँ अजूके दंगमे जगमगाती हैं और वे रात्रिके अँधेरेको विशेषरूपसे हटाती हैं; ८. अंधकार हटाती हुई उषा उजाला कर चुकी है; ९. योतमान उषा सारे अँधेरे एवं बुराइयोंको उजालेसे दूर भगाती हुई चली आती है; १०. यही वह उषा जागृत हुई है जो उजालेमें अँधेरा छिपकर नवीन जीवनका धारण करलेती है; ११. गुन्दर दंगसे ले चलनेवाली उषा देखना संभव हो इसलिये बडा भारी अँधेरा दूर करती है; १२. हे उषे! तेरी किरणें अँधेरेको ठीक तरह हटाती हैं और उजला दे डालती हैं; १३. वे जगमगानेवाली उषाएँ प्रकाश देती हुई सामने दीख पड़ीं और अ-सेवनीय अँधेरा नीचा मंड कर चला गया. १४. दिन के आरम्भ में ही

उषा उजाला देती है, १५. यह सभी प्रकाशोंमें उच्च कोटिका प्रकाश आपहुँचा है १६. अंधेरेमेंसे यह विशालतम प्रकाश सामने उठखडा हुआ है; १७. सामने ये जगमगाती हुई उषाएँ विशेषरूपसे अंधःकारको हटाती हुई खडी हो चुकी हैं । ”

इसभाँति अंधियारीके दूर हो जानेपर और सभी जगह प्रकाश का पूर्ण संचार हो चुकनेपर प्राणिमात्रमें जागृति तथा हलचल शुरु होती है जिसका वर्णन निम्न मंत्रोंमें किया दीक्ष पडता है—

१ सूनरी उषा आयाति, पद्म इयते, पक्षिणः उपातयति ।  
( ऋ. १।४८।५ )

२. उषे वयश्चित् वसतेरपसन् नरश्च...व्युद्यौ ।  
( ऋ. १।१२४।१२; ६।६४।६ )

३. वयो नक्थि पस्तिवास आसते व्युद्यौ ( ऋ. १।४८।६ )

४. वयश्चित्ते पतात्रिणो द्विपञ्चतुष्पदञ्जुनि ।

उषः प्रारन्तूर्नु दिवः अन्तेभ्यपरि ( ऋ. १।४९।३ )

“ १. सुन्दर रूपवाली या अच्छे ढंगसे ले चलनेवाली उषा चली जाती है तब जो कोई पैरोंसे युक्त होता है, वह चलने-लगता है और पंछी उडने लगते हैं; २. हे उषे ! तेरे उठ-आनेपर मानव तथा पंछी भी अपने निवासस्थानसे उठ बाहर निकल आये; ३. हे उषे ! तेरे उदय होनेपर उडनेवाले पंछी कभी नहीं बैठ जाते हैं याने तुरन्त उडना शुरु करते हैं; ४. हे ( अर्जुनि उषः ) श्वेतवर्णवाली उषे ! ( ते ऋतू अनु ) तेरी हलचल होनेके उपरान्तही ( द्विपत् चतुष्पत् ) मानव, चौपाये ( पतात्रिणः वयः चित् ) और डैनोंवाले पंछी भी ( दिवः अन्तेभ्यः परि ) आकाशके एक छोरसे ले दूसरे छोरतक चारों ओरसे ( प्रारान् ) जाने आने लगे । ” तथा और भी देखिए—

१. अचेति विद्यो दुहिता... विश्वं पश्यन्मयुषसं विभातीम् ।  
( ऋ. ७।७८।४ )

२. उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।  
( ७।७७।१ )

३. आधिष्णुवतीं भुवनानि विश्वा । ( ऋ. ७।८०।१ )

४. आविरकर्भुवनं विश्वमुषाः । ( ऋ. ७।७६।१ )

५. विश्वानि देवी भुवनानि चक्षुः... उर्विया वि भाति ।

विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती... ॥ ( ऋ. १।९२।९ )

६. विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगत्... । ( १।४८।८ )

७. विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं रवे वि यनुष्णसि सूनरी ।  
( ऋ. १।४८।१० )

८. दधं पश्यन्नयः उर्विया वि चक्षे उषा भजीगर्भुवनानि विश्वा ।  
( ऋ. १।११३।५ )

९. ससतो बोधयन्ती शश्वत्समागात्... । ( ऋ. १।१२४।४ )

१०. यूयं हि देवीः... परिप्रयाथ भुवनानि सधः ।

प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाञ्चतुष्पाच्चरधाय जीवन् ॥  
( ऋ. ४।५१।५ )

१. शुलोककी कन्या इस उषाका पता लगा, अब सभी विशेष-रूपसे जगमगाती हुई उषाको देख लेते हैं; २. यह उषा समूचे प्राणीमात्रको संचारके लिए प्रेरित करती हुई युवती महिलाके तुल्य समीप आकर जगमगाती है; ३. सारे विश्वको प्रकट करती है; ४. समूचे संसारको स्पष्ट कर चुकी है; ५. समूचे जीव-लोकको संचारार्थ जगाती हुई द्योतमान उषा अखिल जगत् को देखकर अंत्यन्त अधिक रूपसे सुहाती है; ६. सारा संसार इसे देखनेके लिए नम्र हुआ है; ७. हे सुन्दरी उषे ! जो तू ऊपर उठ आती है तो सचमुच सबकी प्राणशक्ति तथा जीवनशक्ति तुझपर निर्भर है; ८. जो तनिकसा देख रहे हों वे विस्तृत रूपमें देख सकें इसलिए उषाने सारे संसारको जगाया है; ९. सोने-वालोंको जगाती हुई उषा हमेशा आती है; १०. तुम द्योतमान उषाओ ! तुरन्तही तुम अखिल विश्वमें संचार करती हो और मानव एवं चौपाये जीवोंको जो कि सोये पडे हैं, संचार करनेके लिए जगाती हो ।

उपर्युक्त अवतरणोंसे स्पष्ट हुआ कि उषाके आगमनमात्रसे सारे संसारमें जागृति एवं संचरणशीलताका सूत्रपात होता है । निद्राधीन प्राणीमात्रको जागृत करना उषाकाही कार्य है । तेजस्विता, सूर्यकिरणों एवं विविध वर्षोंका चेतोहारी दर्शन उषःकालमें हमें होता है। इस संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं—

१. उष आभाहि भानुना चण्ड्रेण दुहितर्दिवः ।  
( ऋ. १।४८।९ )

२. उषो यदथ भानुना वि द्वारावृणवो दिवः ।  
( ऋ. १।४८।१५ )

३. भरमे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्विभाहि । ( ऋ. ७।७७।४ )

४. पते रवे भानवो वर्धातायाश्चिन्ना उषसो अमृतवास भागुः ।  
( ऋ. ७।५५।३ )

“ १. हे शुलोककन्ये उषे ! तू आल्हाददायक किरणसे जगमगाती रह; २. हे उषे ! आज तू किरणकी सहायतासे मानों शुलोकके दरवाजोंको खोल चुकी है; ३. हमारे लिए उच्च कोटिके किरणोंसे युक्त हो जगमगाने लगे; ४. देखनेयोग्य उषाके येही वे अनूठे एवं अमृतत्वके गुणोंसे पूर्ण किरण आ पहुँचे हैं । ”

१. द्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्रमा भासि रोचनम् ।

( ऋ. १।४९।४ )

२. सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दशाना । ( ऋ. १।९२।१२ )

३. आ घां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षं उरु प्रियं ।

उषः शुक्रेण शोचिषा ( ऋ. ४।५२।७ )

१. हे. उषे ! तू ऊपर उठती हुई अपने किरणोंसे सारे जगत् को कन्तिमान बनादेती है; २. सूर्यकिरणोंसे दर्शनीय उषाका पता लगा; ३. हे उषे ! तू दीप्त तेजसे तथा किरणोंसे विशाल अन्तरिक्ष एवं शुलोकको व्याप्त करलेती है ।

उषाके आगमनके फलस्वरूप जनताको पथज्ञान भली भौंति हो जाता है, जिसके बारेमें निम्न निर्देश पाये जाते हैं-

१. एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती

याति भग्ने । ( ऋ. ५।८०।२ )

२. कृणोति विश्वा सुपथा सुगानि...। ( ऋ. ६।६४।२ )

३. वि उषा भावः पथ्या जनानाम्...। ( ऋ. ७।७९।११ )

४. एषा...पथो रदन्ती सुविताय देवी...वि भाति ।

( ऋ. ५।८०।३ )

५. ...दिवो दुहितरो विभागीगांतुं कृणवन्नुषसो जनाय ।

( ऋ. ४।५१।१ )

६. भास्वती...अचेति चित्रा वि दुरो न भावः ।

( ऋ. १।११३।४ )

१. यह दर्शनीय उषा जनताको जगाती हुई और मार्गोंको आसानीसे यात्रा करने योग्य बनाती हुई आगे बढ़ती है; २. सारे अच्छे मार्गोंको सुगमतापूर्वक जाने योग्य बनाती है; ३. जनताकी सडकोंको उषाने विशेष ढंगसे व्यक्त किया है; ४. यह द्योतमान उषा भलाईके लिए मार्गोंको खोदती हुई विशेषरूपसे कान्ति युक्त दिख ई देती है; ५. जगमगानेवाली शुलोक कन्या उषाओंने जनताके लिए गमनके लिए सडक बनाई है; ६. जगमगाती हुई अनोखी उषा ज्ञान हुई और उसने हमारे लिए द्वार खोलदिये हैं ।

शुभ्र वस्त्र पहनी हुई नारीके समान उषा दीख पडती है ऐसा उल्लेख वेदमंत्रोंमें पाया जाता है—

१. एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि द्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः

( ऋ. १।११३।७ )

२. एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि उयोतिर्वसाना...।

( ऋ. १।१२४।३ )

३. ...रुगद्वासो विभ्रती शुक्रमश्वैत् । ( ऋ. ७।७७।२ )

४. ...इयं अश्वैत् युवतिः पुरस्तात्...। ( ऋ. १।१२४।११ )

५. रुगद्वासा रुशती श्वेत्यागात् । ( १।१३।२ )

१. यह शुलोककी कन्या श्वेतवस्त्र पहनी हुई युवतीकी तरह ऊपर उठती हुई ससको दीखपडी; २. ज्योतिसे मानों ढकी हुई इस आकाशकन्याका दर्शन हुआ; ३. श्वेत एवं चमकीला वस्त्र धारण करती हुई उषा विकसित तथा शुभ्र हुई; ४. यह युवती नारीके समान आभावाली उषा सामने श्वेतवर्णवाली हुई; ५. जगमगानेवाली एवं चमकीले सूर्यबिम्बको साथ ले शुभ्र उषा आपहुँची है ।

प्रातःकालके समय पूर्वदिशाका दृश्य कितना मनोरम एवं हृदयंगम होता है सो नीचे दिये हुए मंत्रोंमें बताया है-

१. यस्या रुशन्तो अर्षयः प्रति भद्रा अदक्षत...सा ..उषा।।

( ऋ. १।४८।१३ )

२. ...स्या उषसः केतुं अकृत पूर्वे अर्षे...भातुं अजने ।

( ऋ. १।९२।११ )

३. चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना ( ऋ. १।११३।१५ )

४. पूर्वे अर्षे रजसः... अकृत प्रकेतुम् ( ऋ. १।१२४।५ )

“ १. जिसकी जगमगानेवाली कन्याणकारक ज्वालाएँ सामने दीख पडीं वह उषा है; २. वे उषाएँ पूर्व गोलार्धमें मानों झंडा खडा करचुकीं और रश्मिजालको सुशोभित करती हैं; ३. जागृत होती हुई उषा मानों अनोखा झंडा-ज्ञापक चिन्ह कर लेती है; ४. विश्वके पूर्व विभागमें झंडा ऊँचा किया गया है। ”

पूर्व दिशामें रक्तिमाका दृश्य कैसे होता है सो बताया है ।

१. एषा गोभिः अरुणेभिः युजाना...। ( ऋ. ५।८०।३ )

२. ...इयं...युवतिः...युह्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।

( ऋ० १।१२४।११ )

३. उदपसन् अरुगा भानवो...स्वायुजो अरुषीःगा अयुक्षत ।

... उषासो...रुशन्तं भातुं अरुषीः भाशिभयुः ।

( ऋ. १।९२।२ )



४. युक्त्वा हि... अश्वान् अथ अरुणां उषः  
( ऋ. १।९२।१५ )
५. निष्कृण्वाना भायुधानीव घृष्णवः, प्रति गावो अरुषीः  
यमित्ति ... ( ऋ. १।९२।१९ )
६. प्रति धार्चिः सप्तत् अस्या अदर्शि, विनिष्ठने बाधते कृष्णं  
अभवम् । विप्रं दिवो दुहित्वा भाजुं अभ्रेत् । ( ऋ. १।९२।५ )
७. गूढन्तीरभ्रमसितं हशद्भिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः  
... दिवो दुहितरो विभातीः... । ( ऋ. ४।५१।९ )
८. सुतर- यामानं... अरुणस्युं विभातीं, देवीं उषसं ..  
( ऋ. ५।८०।१ )
९. उते शोचिर्भातवो धामपसन्... उषो देवि रोचमाना  
महोभिः ( ऋ. ६।६४।२ )
१०. उषा स्या... दुहिता दिवोजाः... या भानुना सतता  
राम्यामु अज्ञाधि तिरस्त्रमश्रिद्वत्सु । ( ऋ. ६।६५।१ )
११. प्रति पुनानां अरुणामो अश्वानः विप्रा अदभ्रानुपसं  
यहन्तः । ( ऋ. ७।७५।६ )
१२. ऊर्ध्वा अस्या अज्ञयो वि श्रयन्ते । ( ऋ. ७।७८।१ )
१३. प्र रोचना रुरुचे षण्वसंदक् । ( ऋ. ३।६१।५ )
१४. उषा अदर्शि रश्मिभिः व्यक्ता । ( ऋ. ७।७७।३ )
१५. दिवो अर्कैः अशोधि । ( ऋ. ३।६१।६ )

“ १ यह उषा लालरंगवाले किरणोंसे युक्त होती हुई दीख-  
पडती है; २. यह नवयौवन संपन्न नारीके तुल्य गौडकरूपवाली  
उषा रक्तिमामय किरणोंके समूहको जोडदेती है; ३. रक्तवर्ण-  
वाले किरण ऊपर उठ आये और लालमामय एवं स्वयंही  
जुटजानेवाले रश्मिसमूह को जोड दिया तथा रक्तिम आभावाली  
उषाएँ दीप्तिमान सूर्य किरणके सहारे खड़ी है; ४. हे उषे !  
आज तू रक्तिम कान्तिवाले तथा व्यास होनेवाले किरणोंको जोड  
दे; ५. ये लाल किरण चारों ओर चले जाते हैं तो ऐसा जान  
पडता है कि, मानों साहसी वीर अपने हथियार खींच निकालते  
हैं; ६. इस उषाकी वैदी प्रमान ज्वालासी कान्ति दिखार्दी दी  
और यह विशेष रूपसे खेड रहकर काले फट्टे तथा प्रचंड  
अंधकारको विनष्ट करडालती है पश्चात् यह झुलोककन्या उषा  
पिचित्ररूपवाले या अञ्जुत सूर्यके सहारे रहती है; ७. ये झुलोक  
की कन्यारूप उषाएँ सुज्ञाभिंत होती हुई तथा पवित्र एवं विशुद्ध  
हो चमकती हुई और दीप्त बनकर तेजस्वी रूपोंसे बडे भारी कृष्ण  
वर्णको मानों छिपाती हैं; ८. द्योतमान उषाको जं कि रक्तिम आभा-

वली होकर भासमान होती है, तथा जिसका मार्ग जगमगरहा  
है; ९. हे द्योतमान उषे ! तेरी आभा तथा रश्मियाँ आकाशमें  
ऊपर उठ चुकी हैं और तू तेजस्वितासे बडी सुहावनी प्रतीत  
होती है; १०. यही वह झुलोकमें उत्पन्न कन्या है जो तेजस्वी  
किरण की बंदौलतही रात्रियोंमें अंधेरा एवं तारागण की टिम-  
टिमाहट की अपेक्षा कहीं अधिक प्रतीत होती है; ११. अनूठे,  
लाल रंगवाले, व्यापकशक्तिसे युक्त किरण द्योतमान उषाको  
उठाकर लेचलते हुएसे दीख पडे; १२. इस उषाके विभूषण  
ऊपरवाली दिशमें टिके हुए दिखाई देते हैं; १३. देखनेमें  
रमणीय प्रतीत होनेवाली उषा आभामय हो यथेष्ट सुहाने  
लगी; १४. किरणोंके कारण स्पष्ट होकर उषा दृष्टिगोचर हुई;  
१५. झुलोकमें अर्चनीय किरणोंसे वह जागृत हुई ।”

उषाके बारेमें मंत्र क्या कहते हैं सो देख लीजिए-

१. उषो देवि अमर्या वि भादि । ( ३।६१।२ )
२. उषः... ऊर्ध्वा निष्ठसि अमृतस्य केतुः । ( ऋ. ३।६१।३ )
१. हे द्योतमान उषे ! तू अमरणीयली होकर विशेषतया  
जगमगाती रह; २. तू अमरपन की पताकामी है और ऊँची  
जगह ठहरती है ।” इसीलिए यद उषा जो कि—

१. भास्यती ... दिवः... दुहिता । ( ऋ. १।९२।७ )
२. शुक्रा कृष्णात् अजनिष्ट श्वितीची । ( ऋ. १।१२।१९ )
३. उषा याति स्वप्तरस्य पत्नी... आ भन्तात् दिवः  
पश्ये आ पृथिव्याः । ( ऋ. ३।६१।४ )

अर्थात् ‘१. जगमगाती हुई झुलोककन्या तथा २. कृष्णवर्ण  
अंधकारमेसे तेजस्विनी और शुभ्रवर्णवालीके रूपमें उत्पन्न हुई एवं  
३. दिन की मानों पत्नीसी बनकर यात्रा करती है, अतः झुलोक  
एवं भूलोकके एक कोनेसे लेकर दूसरे कोनेतक फैलचुकी है’ और  
शुच्छन्ती जीवमुद्गीरयन्ती उषा मृतं कंचन बोधयन्ती ।  
( ऋ. १।११।३।८ )

“उषा ऊपर उठते समय जीवमात्रको ऊपर उठनेके लिए  
प्रेरित करती हुई किसी भी निश्चेष्ट पडे हुए को जगाती हुई”  
दीख पडती है जब उदित होती है तो लोग कटने लगते कि—  
अतारिष्म तमसः पारं अस्य । ( ऋ. १।९२।६ )

‘हम इस अंधकारको पार कर गये हैं’ क्योंकि अब तो  
उषा उच्छन्ती... समयने विभाती सुप्रतीका ( ऋ. १।९२।६ )  
‘ऊपर उठानेवाली उषा सुन्दर स्वरूपवाली होकर और  
प्रकाशमान बनकर हँस रही है ।’ यह उषा

व्यूर्ध्वती दिवो अन्तां अन्नोधि, अप स्वसारं सनुतयुंयोति ।  
( ११२।११ )

आकाशकी चरम सीमाके खोलती हुई उठगयी है और अपनी मानों बहनसी रात्रिको हमेशाही दूर हटाती है ।

धि अञ्जिभिः दिव आतातु अद्यौत् अप कृष्णां निर्णिजं  
देवी आवः । ( १११३।१४ )

‘द्योतमान उषा ऊपरकी दिशाओंमें किरणजालसे चमकने लगी और रात्रिके कालेकल्लट स्वरूपको दूर कर चुकी है ।

पूर्वा विश्वस्मान्नुवनादबोधि. उच्चो व्यख्ययुवतिः पुनर्भूः ..।  
( ११२३।२ )

‘सारे संसारके पहलेही यह जागृत हुई और नवयौवनसंपन्न तथा बारबार उत्पन्न होनेवाली यह उषा उच्च पदपर चढकर खूब सुहने लगी ।’

पुनर्पुनः जायमाना पुराणी समानं वर्णं अभिशुम्भमाना ।  
( ऋ. ११२।१० )

‘यह उषा पुरानी है पर बारबार उत्पन्न होती हुई वर्णको समान रूपसे साफसुथग एवं परिमार्जित करती हुई दिखाई देती है ।’

पुराणी देवी युवतिः पुरन्धिः अनु व्रतं चरसि विश्ववारे ।  
( ऋ. ३।६१।१ )

‘हे दासियुक्त तथा सबके स्वीकरणीय उषे ! तू पुरानी है लेकिन नवयौवनयुक्त और बहुतोंका धारण करनेवाली महिला जैसी है तथा व्रत-नियम-के अनुकूल संचार करती है ।’

१. संस्मयमाना युवतिः पुरस्तात्...। ( ११२३।१० )

२. सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा... ( ११२३।११ )

१. यह उषा जनताके सम्मुख सुहास्य वदनी युवतीकी नाई दिखाई देती है; २. यह उषा मानों माताने विभूषित की हुई सुस्वरूप युवती नारीके तुल्य है ।

१. एषा...आविष्कृष्वाना तन्वं पुरस्तात् । ( ऋ. ५।८०।४ )

२. एषा...ऊर्ध्वेव स्नाती दशये नो अस्थात् । ( ऋ. ५।८०।५ )

३. आविर्धक्षांसि कृणुषे विभाती । ( ऋ. ११२३।१० )

४. आविस्तन्व्यं कृणुषे दशो कम् । ( ऋ. ११२३।११ )

१. यह उषा सामने शरीरको व्यक्त करती हुई और  
२. ऊँची जगह मानों जलमग्न हुईसी हमारे दर्शनार्थ खडी है;  
‘हे उषे ! तू सुहाती हुई जनताके दर्शनार्थ अपना सुन्दर शरीर भलीभाँति स्पष्ट अनावृत करती है ।’

ऊपरके वचनोंसे स्पष्ट हुआ होगा कि विश्वके पुरातनतम साहित्य-अर्थात् वेदमें प्राभातिक धेलाका कितना काव्यमय, रभिकतापूर्ण एवं सौन्दर्यप्रादी वर्णन किया हुआ उपलब्ध होता है । ऐसा निरसन्देह कहा जा सकता है कि, उषादेवताके सूक्त वारतवमें वेदकालीन प्रतिभाशाली कवियोंकी रसिकता तथा सौन्दर्य लोलुपताका भलीभाँति परिचय करानेका क्षमता रखने-वाले काव्य हैं ।

उषा सूक्तोंको ध्यानपूर्वक पढलेनेसे जहाँ एक ओर वैदिक कवियोंकी सौन्दर्यसक्ति तथा सहृदयताका ज्वलन्त उदाहरण दीख पडता है, वहाँ इस बातका भी स्मरण हुए बिना नहीं रहा जाता कि, वैदिक सूक्तोंके सृजन करनेकी क्षमतासे युक्त वे प्राचीन कवि आर्थिक सुसमृद्धि एवं भौतिक वैभवको प्राप्त करनेकी आवश्यकताके बारेमें पर्याप्त रूपसे सतर्क और सचेष्ट रहा करते थे । बात भी बिलकुल ठीक जंचती है, क्योंकि साधारणतया ऐसा दिखाई देता है कि, जिस समाजमें पर्याप्त मात्रामें वैभव-संपन्नता विद्यमान है, वहीपर रसिकता सहृदयता एवं प्रतिभा-संपन्न सुरुचिताका प्रादुर्भाव हुआ करता है । वैदिक सूक्त पढ लेनेसे साफ जाहिर होता कि वैदिक समाज व्यवस्थामें सांपतिक सुविधा एवं भौतिक ऐश्वर्यको अक्षुण्ण बनाये रखनेकी और तत्कालीन जनताका ध्यान किया तीव्रतासे आकृष्ट हो चुका था । अस्तु, अब हमें उन मंत्र भागोंकी ओर दृष्टिपात करना चाहिए जहाँ आर्थिक प्रगति करलेनेके स्पष्ट निर्देश पाये जाते हैं ।

१. दिवः दुहितर् ! स्येभिः वाजेभिः आगहि, रथिं अस्मे  
नि धारय । ( ऋ. १।३०।२२ )

२. सा न आवह...रथिं दिवो दुहितर्...। ( ऋ. ६।६४।४ )

३. उच्छा दिवो दुहितः प्रसवत्...सुवीरं रथिं गृणते रिरीहि...।  
( ऋ. ६।६५।६ )

४. महे नो अद्य सुविताय बोधि उपो...चित्रं रथिं यनासं  
धेहि अस्मे...। ( ऋ. ७।७५।२ )

५. एषा नेत्री राधसः...उषा...दीर्घश्रुतं रथिं अस्मे  
दधाना...। ( ऋ. ७।७६।७ )

६. वामेन सह, वृद्धा सुम्नेन राया सह नः वि उच्छ ।  
( ऋ. १।४८।१ )

७. सा अस्मासु धा गोमदधाववुकथं उषो वाजं सुवीर्यम् ।  
( ऋ. १।४८।१२ )

८. बृहता विश्वपेशसा राया, इळाभिः वाजैः शुक्लेन नः  
सं मिमिक्ष्व ( ऋ. १।४८।१६ )
९. उषो अघेह...रेवदस्मे वयुच्छ । ( ऋ. १।९२।१४ )
१०. उषस्तच्चित्रमाभरास्मभ्यं ...येन तोकं तजयं च  
धामहे । ( ऋ. १।९२।१३ )
- ११.... अस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् ( ऋ. १।११३।१७ )
१२. ताः प्रस्नवन्नयसीर्नूनमस्मे रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः।  
( ऋ. १।१२४।९ )
१३. तेभ्यो शुभ्रं बृहद्यश उषो मघोन्यावह ।  
( ऋ. ५।८९।७ )
१४. रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मसु  
देवीः ।
१५. स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम।  
( ऋ. ४।५१।१० )
१६. महे नो अघ बोधय उषो राये दिविरमती ।  
( ऋ. ५।७९।१ )
१७. ...नो गोमतीरिषः आ वहा दुहितर्दिवः...।  
( ऋ. ५।७९।८ )
१८. तच्चित्रं राध आभरोषो ... यस्ते दिवो दुहितर्मतंभोजनं  
तत्रास्व भुनजामहे । ( ऋ. ७।८१।५ )

“१. हे छुलोककन्ये ! उन अन्नो या बलोंके साथ इधर आजा और हममें धन रख दे; २. तू हमतक धन पहुँचा दे; ३. पहले जैसेही तू उदित होता रह और स्तोताको अच्छी वीरतासे युक्त धन देडाल; ४. हे उषे ! हमारी बर्डी भारी भलाई हो इसलिए तू आज जाग तथा हमारे बाँच अनूठे वैभव और यशकी स्थापना कर, ५. यह उषा बहुत दूरतक विख्यात धन हमारे मध्य रखती हुई धनको पहुँचानेवाली है, ६. हमारेलिए तू सुन्दरताके साथ बडे भारी धन एवं वैभवको साथ ले उदित होजा; ७. गायों और घोडोंसे युक्त, अच्छी वीरता से परिपूर्ण एवं सराहनीय अन्नसामग्री या बल हममें धरेदे; ८. बडे प्रचंड, विश्वभरमें सुन्दर धन, अन्न सामग्रियों, बलों तथा वैभवसे तू हमें भली भँति संयुक्त कर; ९. उषे ! आज तू हमारे लिए धनसंपन्न हो उदित हो; १० वह अनूठा धन हमें दे डाल ताकि हम पुत्र पौत्रोंका धारण करसकें; ११. हमें संतानयुक्त दीर्घजीवन दे डाल, १२. वे उषाएँ हमारेलिए पहले जैसे अबभी अच्छे दिनवालीं एवं धनसंपन्न हो उदित हों,

१३. हे ऐश्वर्य संपन्न उषे ! उन्हें बडा भारी यश और धन पहुँचादे; १४. वे द्योतमान छुलोक कन्याएँ हमारे मध्य संतानयुक्त धन का प्रदान करें; १५. हे उषाओ ! आपके दिये हुए सुखसे हम जागृत होकर अच्छी वीरताके अधिपति बनें; १६. हे द्योतमान उषे ! आज हमें बडा भारी धन मिले इसीलिए जागृत कर १७. हे छुलोककन्ये ! हमारे समीप गोधन युक्त अन्नसामग्रियों पहुँचादे; १८. वह अनूठा धन देदे और जो तेरे निकट मानवोंके उपभोग योग्य वस्तु हो उसे प्रदान कर ताकि हम उपभोग लें ”

उषाके संबंधमें वैदिक कवि कहते हैं—

१. चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् । ( ऋ. ७।७५।५ )
२. अघं अग्रमित् भजते वसूनाम् । ( ऋ. १।१२३।४ )
३. विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अघेह सुभगे वयुच्छ।  
( ऋ. ९।११३।७ )
४. ... उतोषो वस्व ईशिषे । ( ऋ. ४।९२।३ )
५. धनानां सनये उषा एति । ( ऋ. १।१२४।७ )
६. एषा .. अस्त्रधन्ती रयिं अप्रायु चक्रे ( ऋ. ५।८०।३ )
- ७...ता भद्रा उषसः पुरा आसुः...यास्वीजानः...स्तुवन्  
शंसन् द्रविणं सघ आप । ( ऋ० ४।५१।७ )
८. अभूदुषा...मघोन्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।  
( ऋ. ७।७९।३ )

१. “यह उषा अनोखे धनसे संपन्न है और संपत्तियोंपर प्रभुत्व रखती है; २. धनोंमें जो परले दर्जेका हो उसेही ले लेती है; ३. हे सुंदर ऐश्वर्यवाली उषे ! तू समूचे भूमंडलस्थ धनपर प्रभुत्व रखती हुई आज उदित हो; ४. तेरे आर्षान धन है; ५. धनोंका दान करनेके लिए उषा आती है; ६. यह उषा क्षीण न होती हुई धनको स्थिर कर चुकी है; ७. पहले वे सुन्दर हितकारक उषाएँ थीं जिनमें यज्ञ करनेवाला सराहना एवं भाषण करता हुआ तुरन्त धन पा सका; ८. उषा ऐश्वर्यसंपन्न हुई और भलाईके लिए अन्नोका उत्पादन करचुकी ।”

अच्छे कार्य करनेवाले तथा दानशूर पुरुषकोही धन देनेके बारेमें निम्न मंत्रोंमें निर्देश मिलते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि वैदिक कवि संपत्तिके विकेन्द्रीकरणके अनुकूल थे और ऐसी समाज व्यवस्था चाहते थे जहाँ आर्थिक विषमता न हो तथा अधिकांश जनता निर्धन और कुछ इनेगिने व्यक्ति अत्यधिक संपन्न एवं धनशाली हों ऐसी दशा न होने पाय ।

१. ...वहसि भूरि वामं उषो देवि दाशुषे मर्त्याय ।  
( ऋ. १।१२४।१२ )
२. या वहसि पुरु स्पर्ह...रत्नं न दाशुषे मयः ।  
( ऋ. ७।८।१३ )
३. वि दिवो देवी दुहिता दधाति...सुकृते वसूनि ।  
( ऋ. ७।७९।३ )
४. याति शुभ्रा...दधाति रत्नं विधते जनाय ।  
( ऋ. ७।७५।६ )
५. श्रवो वाजं हृषं ऊर्जं वहन्तीः नि दाशुषे उषसो  
मर्त्याय...भवो घात विधते रत्नं भय । ( ऋ. ६।६५।३ )
६. एषा...दुहिता दिवो...व्युपर्वती दाशुषे वार्याणि ।  
( ऋ. ५।८०।६ )
७. या गोमतीरुषसः...व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय...  
ता अश्वदा अश्नवत् सोमसुत्वा । ( ऋ. १।११३।१८ )

१. " हे उषे ! देवि ! तू दानशूर मानवके लिए प्रचंड सुन्दर धन पहुँचाती है; २. तू दान देचुकनेपर उसे यथेष्ट, स्पृहणीय रत्नतुल्य सुख पहुँचाती है; ३. दानशूर णुलोककन्या सुन्दर कार्य करनेवालेके लिए धनसमूह रखती है; ४. श्वेत-वर्णवाली उषा कार्यकर्ता लोगोंके लिए रत्न धरदेती हुई चली आती है; ५. दानी मानवके लिए उषाएँ अन्न, यश तथा बल पहुँचाती हैं, आज कार्यकर्ताके लिए रक्षा एवं रत्न रख दो; ६. यह णुलोककन्या दानीके लिए स्वीकरणीय वस्तुओंको खोल देती है; ७. दानी पुरुषके लिए जो उषाएँ गोधनयुक्त हो उदित होती हैं उन अन्न देनेवाली उषाओंको सोम निचोड़नेवाला पाता है ।"

वैदिक कवि उषासे क्या अपेक्षा रखते हैं सो देखलीजिए—

१. उष भा भाहि भानुना...भावहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभागम् ।  
( ऋ. १।४८।१९ )
२. अथा नो विश्वा सौभागन्यावह ( ऋ. १।९२।१५ )
३. सा नो रथि विश्ववारं सुपेशसं उषा ददातु सुग्म्यम् ।  
( ऋ. १।४८।१३ )
४. ...प्र नो यच्छतादृष्टुं पृथु छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः।  
( ऋ. १।४८।१५ )
५. उषस्तमइयां यशसं सुवीरं...रथि... ( ऋ. १।९२।८ )
६. ... भद्रं भद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।  
उषो नो भय सुहवा व्युच्छ अस्मासु रायो मघवस्तु  
च स्युः । ( ऋ. १।१२३।१३ )

७. युष्माकं देवीरवता सनेम सहस्रिणं च शतिनं च वाजम् ।  
( ऋ. १।१२४।१३ )
८. एतावद् वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।  
( ऋ. ५।७९।१० )
९. नूनो गोदद्वीरवद्धेहि रत्नं उषो अश्वान्त् पुरुभोजो अस्मे ।  
( ऋ. ७।७५।८ )
१०. .... उरुगायमधि धेहि श्रवो नः ( ऋ. ६।६५।६ )
११. .... उषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।  
हृषं च नो दधती... गोमदश्वान्द्रथवच्च राधः  
( ऋ. ७।७७।५ )
१२. ताश्वदुषो राधो अस्मभ्यं राक्ष यावत् स्तोतृभ्यो  
भरद्गो गृणाना । ( ऋ. ७।७९।४ )
१३. उषो अर्वाचा वृहता रथेन उयोतिष्मता वामं अस्मभ्यं  
वक्षि । ( ऋ. ७।७८।१९ )

१. "हे उषे ! रश्मिसे तू जगमगाती रह और हमारे लिए बहुतसा अच्छा भाग्य पहुँचाती रह; २. अच्छा, अब तो हमें सभी सौभाग्य प्राप्त करा; ३. वह उषा हमें सुस्वरूप, सबके स्वीकरणीय एवं सुखदायक धनवैभवं देवे; ४. हे द्योतमान ! हमें विस्तीर्ण, शृकरहित ( जिसमें भेडिया नहीं घुस सकता हो ) घर तथा गोधनयुक्त अन्नसामग्रियाँ यथेष्ट दे दे; ५. हे उषे ! मैं अच्छी वीरतासे युक्त एवं यशसे पूर्ण धनसंपदाको प्राप्त कर दूँ; ६. हममें अच्छे अच्छे कार्योंको धरदेती चल और हे उषे ! तू आज हमारे लिए सुखपूर्वक बुलाने योग्य है अतः उदित हो तथा हममें और धनिकोंमें संपत्तियाँ रहें ऐसा प्रबंध कर; ७. हे द्योतमान उषाओ ! तुम्हारी रक्षाके फलस्वरूप हम तैकड़ों और हजारोंकी संख्यामें अन्न प्राप्त करें; ८. हे उषे ! इतना तो जरूरही लेकिन और भी फिर, तू हमें दे दे; ९. अब हमें गोधन, वाजिधन एवं वीरोंसे युक्त और बहुतोंको भोगसाधन मिलसके ऐसा रत्न दे डाल; १०. बहुतसे लोह जियके बोरोंमें गायन करते हों ऐसा यश हममें धर दे; ११. हे देवतारूपी उषे ! हमारा जीवन बढ़ाती हुई और गौओं; घोड़ों तथा रथादि वाहनोंसे युक्त धन एवं अन्न हमें देती हुई.; १२. हे उषे ! स्तोताओंको जितना धन तूने दिया उतना तू हमें दे दे; १३. हे उषे ! प्रकाशयुक्त और बड़े रथको, जो कि हमारी ओरही आ रहा है साथ लेकर तू सुन्दर धन हमें देती रह ।"

उषासे ऐसी प्रार्थना इसलिए की जाती है कि—

स्पर्हा वसूनि तमसा अपगूळहा भाविष्कृण्वन्ति उषसो  
त्रिधातीः । ( ऋ. १।१२३।६ )

‘ चम मती हुई उषाएं अंधेरेने गुमरूपसे ढकी हुई स्पृहणीय  
धनोंको खेलदेती हैं । ’ और भी एक बात है कि,  
प्रार्थ्या जगद्गु नो राधो अख्यत् । ( ऋ. १।११३।४ )

‘ जगतको अच्छी तरह दृष्टिगोचर कराके उषाने हमारे  
धनोंको विशेषरीतिसे खोलदिया, चमकादिया । ’ यह उषा  
हमारे लिए ‘ ( आवहन्ती पोष्या वार्याणि ) ऋ. १।११३।१५ ’  
पोषणाय तथा स्वीकरणीय वस्तुओंको पहुंचाती रहती है ।  
और ‘ अस्मभ्यं गोमतः वाजान् सूभिभ्यः अमृतं वसुष्वनं  
श्रवः चोदयित्री । ( ऋ. ७।८।१।६ ) ’ अर्थात् , हमें गौओंसे  
युक्त अन्न और विद्वानोंको अमरपन , धनाढ्यता एवं यश  
देनेकी प्रेरणा करनेवाली है ।

केवल पर्याप्त मात्रामें प्रकाश, अन्न, बल, धन देनेसेही देवता  
का कार्य पूर्ण नहीं होता, किन्तु द्वेषा, विरोधियों तथा शत्रु-  
ओंको हटानाभी अत्यन्त आवश्यक है । देखिए, वैदिक कवि-  
योंने इस संबंधमें क्या कहा है—

... उषा स्त्रियः अप उच्छत् । ( ऋ. ७।८।१।६ )

अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्त्रियः ।

( ऋ. १।४।८।८ )

अर्थात् ‘ छुलोककन्या एवं ऐश्वर्यसंपन्न उषा द्वेषकरनेवालों  
को और शत्रुओंको हटानेके लिए उदित हो जाए । ’

अन्तिवामा दूरे अभिन्नमुच्छोर्वी गव्यूतिमभयं कृधी नः ।

यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ।

( ऋ० ७।७।७।४ )

‘ हे ( मघोनि ) ऐश्वर्यसंपन्न उषे ! तू ( अन्ति-वामा ) अपने  
समीप हमें देनेके लिए धन रखनेवाली है, अब ( अमित्रं दूरे  
उच्छ ) शत्रुको दूर हटादे और ( नः ) हमारे लिए ( उर्वी गव्यूति )  
विशाल मार्ग तथा ( अभयं कृधि ) निर्भयतामय वातावरणका  
रुजन कर; पश्चात् ( द्वेषः यावय ) द्वेषको हटादे और ( वसूनि  
आ भरा ) हमें धन ला दे एवं ( गृणते राधः चोदय ) स्तोताके  
लिए धन प्रेरित कर । ’

त्रि उषा भावो... भाविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।

अप दुहस्तम भावरजुष्टे... ॥ ( ऋ. ७।७।५।१ )

‘ उषा प्रकट हुई है, वह महिमाको साफ तौरसे व्यक्त करती  
हुई आ चुकी है और द्वेष करनेवालेको एवं असेवनीय अंधेरेको  
दूर भगाया है । ’

उषःवेलामें अनूठेपनके रहनेपरभी अनोखी समानरूपता पाई  
जाती है जिसका उल्लेख यूं है—

सदशीरण सदशीरिदु शो... । ( ऋ. १।१२३।८ )

गुभं यच्छुभ्रा उषसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदशीरजुषाः ।  
( ऋ. ४।५।१।६ )

‘ आज थे उषाएँ समानरूपवाली हैं तो कलभी उसी तरह  
रूपवाली दिखाई देती हैं; ये शुभ्रवर्णवाली एवं जीर्ण न होनेवाली  
उषाएँ भलीभाँति हितके लिए संचार करती हैं और समान  
स्वरूपवाली होनेसे पृथक् पृथक् नहीं जानी जाती हैं । ’

विख्यात ऋषि उषाकी सराहना करते थे ऐसा निम्न मंत्रोंसे  
सूचित होता है—

१. प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषशुंधः सुभगे

तुष्टुवांसः ।

( ऋ. ७।७।६।६ )

२. उषा... उषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ( ऋ. ७।७।६।७ )

३. प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिविंप्रासः प्रथमा

अशुध्रन् ।

( ऋ. ७।८०।१ )

४. ऋषिष्टुना... मघोभ्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना ।

( ऋ. ७।७।५।५ )

५. देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते ।

( ऋ. ५।८०।१ )

६. यावयद् द्वेषसं त्वा... प्रति स्तोमैरभुत्समहि ।

( ऋ. ४।५।२।४ )

७. आभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्ययः ।

( ऋ. ५।७।९।४ )

८. उषो... स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि । ( ऋ. ३।६।१।१ )

९. व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।

तां त्वामुपर्वसूयवो गीर्भिः कृषवा अहूषत ॥ ( ऋ. १।४।९।४ )

१. ‘ हे सुन्दर ऐश्वर्यवाली उषे ! सुबह जाग उठनेवाले एवं  
स्तुति करनेवाले वसिष्ठ परिवारके लोग स्तुतिमय काव्योंसे तेरी  
प्रशंसा करते हैं; २. उदित होनेवाली उषाकी स्तुति वसिष्ठ  
वंशके ऋषियोंसे की जाती है; ३. प्रथम श्रेणीके तथा ज्ञानी  
वसिष्ठ कुलके ऋषि उषाके आगमनके मौकेपर स्तोत्रपाठ कर  
चुके; ४. यह ऐश्वर्यसंपन्न एवं ऋषियोंद्वारा प्रशंसित उषा उदित  
होती है जबकि हव्योंको डोनेवाले यजमान उसकी स्तुति करने  
लगते हैं; ५. स्वर्गतुल्य तेज पहुँचानेवाली तथा दैदीप्यमान  
उषाकी स्तुति विद्वान लोग मननीय काव्योंसे करते हैं; ६. तू

उदित होनेपर द्वेषभाव हटाती है इसलिए हम स्तोत्रोंसे तुझको मानों जगाते हैं; ७. हे विशेष तेजवाली उषे ! हवनीय वस्तुओंको इष्टस्थानतक पहुँचानेवाले जो यजमान हैं वे स्तोत्रोंसे तेरी स्तुति करते हैं; ८. हे ऐश्वर्यसंपन्न उषे ! स्तोताके स्तुतिमय काव्यका श्लोकार कर, ९ हे उषे ! उदित होती हुई तू समूचे जगत्को सुन्दर करती है, ऐसे तुझको धन चाहनेवाले कण्व वंशके ऋषि भाषणोंसे बुलाते हैं ।'

उषा सुन्दर रथपर चढकर आती है और बलिष्ठ घोड़े उसे खींचते हैं ऐसा वर्णन पाया जाता है जैसे,

१. उषो देवि...चन्द्ररथा ..ईरयन्ती ।

२. आत्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो थे ॥ ( ऋ. ३।६।१२ )

१. 'हे द्योतमान उषे ! तू सुन्दर, अलहाद दायक रथवाली है और दूसरोंको प्रेरणा देनेवाली है इसलिए; २. जो विशाल बलयुक्त तथा भलीभाँति नियमित घोड़े हैं वे सुवर्ण कान्तिवाली तुझको इधर ले आँ ।'

सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उपस्त्वम् । ( ऋ. १।४९।२ )

'हे उषे ! जिस सुन्दररूपवाले एवं सुखदायक रथपर तू चढचुकी थी ।'

सा नो रथेन बृहता.... श्रुधि चित्रामघे हवम् ।

( ऋ. १।४८।१० )

'हे अनोखे ऐश्वर्यसे युक्त उषे ! बड़े भारी रथपर चढकर आती हुई तू हमारी पुकार सुनले ।'

एषा अयुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।

शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यास्थाभि मानुषान् ॥

( ऋ. १।४८।७ )

'यह उषा सूर्योदयके पहलेही सुदूर स्थानमें रथोंको घोड़े जोत चुकी है, ताकि शीघ्र यात्रावा प्रारंभ हो; यह सुन्दर ऐश्वर्यवाली उषा मानवोंके समीप मानों सैकड़ों रथोंसे चली जाती है ।

... अघोदुषाः शोशुचता रथेन । ( ऋ. १।१२३।७ )

'उषा जगमगते हुए रथके कारण चमकनेलगी ।

बृहद्रथा बृहती.... उषा अयोतिर्यच्छति.... ।

( ऋ. ५।८०।१२ )

'महान उषा बड़े भारी रथसे आती हुई उजला देडालती है ।

... अरुणासो अश्वाश्चित्रा अदश्रमनुषसं वहन्तः ।

याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन.... ( ऋ. ७।७५।६ )

'रक्तिम आभाववाले अन्ठे घोड़े उषाको ले आते हुए देखपड़े और वह तेजरवी उषा समीहप धारण करनेवाले रथपरसे चली जाती है ।'

.... दिवो दुहिता.... आस्थान् रथं स्वधया युज्यमानं आ यं अश्वासः सुयुजो वहन्ति । ( ऋ. ७।७८।४ )

'शुलोककन्या उषा, स्वकीय धारणशक्तिसे तैयार होनेवाले रथपर, जिसे भली भाँति जोते हुए घोड़े लेचलते हैं, चढगई ।

अश्विनी जैसे अथरूपसे लोक सेवा करनेवालोंमें मित्रता पूर्ण बर्ताव रखना और और गौओंकी माता बनना उषाकी विशेषता है, देखिए—

हिरण्यवर्णा सुदशीकसंडग् गवां माता नैद्यह्ममरोचि ।

( ऋ. ७।७७।२ )

'सुवर्णकी कान्तिवाली अतः जिसका दर्शन बडाही रमणीय है ऐसी यह गौओंकी माता उषा जो कि दिनोंकी नेत्री है जगमगाने लगी ।'

... अरुणी माता गवां... सखा अभूदाश्विनोरुषाः ।

उत सखा भसि अश्विनोरुन माता गवामसि.... ।

( ऋ. ४।५२।२-३ )

'लालिमामय आभाववाली उषा गौओंकी माता एवं अश्विनी की मित्रा है ।'

लोगोंके दिलमें उषाके प्रति कैसी आदरमय भावना रहा करती थी सो निम्न मंत्रोंसे स्पष्ट होगा—

उच्छन्ती या कृगोपि मंहना महि प्रख्ये देवि स्वर्दते ।

तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मानुर्न सूनवः ॥

( ऋ. ७।८१।४ )

'हे (महि देवि) महनीय देवतारूपी उषे ! (या उच्छन्ती) जो तू उदित होती हुई (मंहना) अपने तेजसे ( रवः ) स्वर्गको ( दृशे ) दर्शनके योग्य तथा ( प्रख्ये कृणोषि ) विशेष स्पष्टताके अनुकूल बनाती है उस (तरयाः ते) तुझको जो कि (रत्नभाजः) रत्न साथ रखनेवाली है हम (ईमहे) चाहते हैं, या प्रार्थना करते हैं कि (वयं) हम तेरी निगाहमें ( मानु सूनवः न ) माताके लिए उमके पुत्र जैसे प्यारे होते हैं, वैसेही ( स्याम ) प्रिय हों ।'

उषो भद्रेभिरागहि दिवश्चिद्रोचनादधि । ( ऋ. १।४९।१ )

हे उषे ! तू ( रोचनात् दिवः चित् ) चमहीले शुलोकसे

भी ( भद्रेभिः अधि आगहि) कल्याणप्रद किरणों से युक्त हो हमें प्राप्त होजा ।

तद्गो दिवो दुहितरो विभातीरुष भुष उषसः ...

वयं स्याम यशसो जनेषु ... ( ऋ० ४।५।१।१ )

‘ हे चमकती हुई, शुलोककी कन्यासी उषाओ ! मैं तुमसे वही कहना चाहता हूँ कि हम जनता में यशस्वी हों । ’

यां र्वा दिवो दुहितर्धन्ययुषः सुजाते मतिभिर्बलिष्ठाः ।

सा अस्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्त्रिभिः सदा नः ।

( ऋ० ७।७।६ )

‘ हे ( सुजाते ) सुन्दर ढंगसे उत्पन्न ! शुलोककन्ये उषे ! ( यां त्वा ) जिस तुझको वसिष्ठवंशोत्पन्न लोग ( मतिभिः बर्धयन्ति ) बुद्धि से निष्पादित काव्योंद्वारा वृद्धिगत करते हैं ऐसी ( सा ) वह तू ( अस्मासु ) हममें ( बृहन्तं ऋष्वं रयिं धा ) बड़े देदीप्यमान धन रख दे और तुम हमें सदैव कल्याणकारक बातोंसे सुरक्षित रखो । ’

उषा में इन्द्रशक्ति एवं अंगिरसोंकी शक्ति बढ़नेका उल्लेख मिलता है जैसे—

भभूदुषा इन्द्रतमा मघोनी ... दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि । ( ७।७।३ )

...समानेन योजनेना परावतः । ... इषं बृहन्तीः सुकृते सुदानये ... ॥ ( ऋ० १।९।२।३ )

( २ )

## उषा सूक्तोंमें अतीन्द्रिय ज्ञान

योगी श्री अरविंदजी महाराज अपने वेद रहस्य में उषा के स्वरूपका वर्णन अत्यंत हृदयंगम करते हैं, उसे अब यहाँ देखिये—

“ गोमद् वीरवद् धेहि रत्नम् उषो भश्चावत् ” उस समय कर्मकाण्डपरक व्याख्याकार को इस प्रार्थना में केवल उस सुखमय धन-दौलत की ही याचना देखिती है, जो गौओं, वीर मनुष्यों ( या पुत्रों ) और घोड़ों से युक्त हो । दूसरी तरफ यदि ये शब्द प्रतीकरूप हों, तो इसका अभिप्राय होगा— “ हमारे अन्दर आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करो, जो ज्योति से, विजय-शील शक्ति से और प्राण-बलसे भरपूर हो । ” इसलिये यह आवश्यक है कि एक वार सभी स्थलों के लिये वेद मंत्रों में

‘ यह ऐश्वर्यसंपन्न उषा इन्द्रशक्तिकी खूब श्रद्धि कर चुकी है और अंगिरसोंकी सामर्थ्य यथेष्ट बढ़ाकर सुकर्मकर्ताको धन दे डालती है; ये उषाएं सुदूर देशसे भी सदृश आयोजनाके अनुकूल अच्छे दानी एवं सुन्दर कार्यकर्ता को अन्न पहुंचाती हैं । ’

इस तरह उषा के सूक्तोंमें हमें एक सुरम्य प्राकृतिक दृश्य का और शाश्वतिक मानवी आकांक्षाका संमिश्र वर्णन देखने मिलता है । इन सूक्तोंमें इस बातका परिचय मिलता है कि मानवी मन प्राचीन कालमें मनोहर प्राकृतिक घटना से किस भाँति प्रभावित हुआ करता था और साथही यह भी ज्ञात होता है कि उरसाहवर्धक एवं नयनमनोरम प्राकृतिक दृश्य से प्रभावित होने और उस में रस लेनेकी दशामें भी अनिवार्य सामाजिक आवश्यकताओंकी पूर्तिका भी ख्याल रखना पड़ता है । वैदिक सुकवियोंके विशाल एवं व्यापक दृष्टिकोणका इससे बढकर और क्या अधिक परिचायक हो सकता है कि प्रतिदिन दृश्यमान एक नैसर्गिक दृश्य का सौन्दर्यप्राही वर्णन करते हुए भी शाश्वतिक मानवी आवश्यकताओं का बारंबार उल्लेख करना वे नहीं भूलते ।

लेखक

दयानन्द गणेश धारेश्वर

स्वाभ्याय-मण्डल, औध, ( जि० सातारा )

गौओं को फिर से प्राप्त किया है। उषा का विचार और अङ्गिरसों का कथानक ये मानो वैदिक सम्प्रदायके हृदयस्थानीय हैं और इन्हें करीबकरीब वेद के अर्थों के रहस्य की कुञ्जी समझा जा सकता है। इसलिये ये ही दोनों हैं, जिन की हमें अवश्य परीक्षा कर लेनी चाहिये, जिस से आगे अपने अनुसंधान के लिये हमें एक दृढ आधार मिल सके।

अब उषासंबन्धी वेद के सूक्तों को बिल्कुल ऊपर ऊपर से जांचने पर भी इतना बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि, उषा की गौएँ या सूर्यकी गौएँ 'उषोति' वा प्रतीक हैं, इसके सिवाय और कुछ नहीं हो सकतीं। सायण खुद इन मन्त्रों का भाष्य करते हुए विवश होकर कहीं इस शब्द का अर्थ 'गाय' करता है और कहीं 'किरणों,' हमेशा की अपनी आदत के अनुसार परस्पर संगति बैठाने की भी कुछ पवाह नहीं रखता, कहीं वह यह भी कह जाता है कि, 'गौ' का अर्थ सत्यवाची 'ऋत' शब्द की तरह पानी होता है। असल में देखा जाय तो यह स्पष्ट है कि इस शब्दसे दो अर्थ लिये जाने अभिप्रेत हैं, ( १ ) 'प्रकाश' इस का असली अर्थ है और ( २ ) 'गाय' उस का स्थूल रूपक-रूप और शाब्दिक अलंकारमय अर्थ है।

ऐसे स्थलों में गौओं का अर्थ 'किरणों' इस में कोई मतभेद नहीं हो सकता, जैसे कि इंद्र के विषय में मधुच्छन्दस् ऋषिके सूक्त ( १.७ ) का तीसरा मन्त्र है— 'इंद्रने दीर्घ दर्शन के लिये सूर्य को ष्टुलोक में चढाया उसने उसे उसकी किरणों ( गौओं ) के द्वारा सारे पहाड पर पहुंचा दिया— वि गोभिः अद्रिम् पेरयत्॥' परन्तु इस के साथ ही सूर्य की किरणें 'सूर्य' देवता की गौएँ हैं, हीलियस (Helios) की वे गौएँ हैं, जिन्हें ओडिसी (Odyssey) में ओडिसस (Odysseus) के साथियोंने वध किया है, जिन्हें हर्मिज (Hermes) के लिये कहे गये होमर के गीतों में हर्मिजने अपने भाई अपोलो (Apollo) के पास से चुराया है। ये वे गौएँ हैं, जिन्हें 'बल' नामक शत्रूने या पणियोंने छिपा लिया था। जब

मधुच्छन्दस् इंद्रको कहता है— 'तूने बलकी उरा गुफाको खोल दिया, जिस में गौएँ बंद पडी थीं'— तब उस का यही अभिप्राय होता कि, बल गौओं को कैद करनेवाला है, प्रकाश को रोकनेवाला है और वह रोका हुआ प्रकाश ही है, जिसे इंद्र यज्ञ करनेवालों के लिये फिर से ला देता है। खोई हुई या चुराई हुई गौओं को फिर से पालने का वर्णन वेद के मन्त्रों में लगातार आया है और इस का अभिप्राय पर्याप्त स्पष्ट हो जायगा, जब कि हम पणियों और अङ्गिरसोंके कथानककी परीक्षा करना शुरू करेंगे।

एक बार यदि यह अभिप्राय, यह अर्थ सिद्ध हो जाता है, स्थापित हो जाना है, तो 'गौओं' के लिये की गई वैदिक प्रार्थनाओं की जो भौतिक व्याख्या की जाती है, वह एकदम हिल जाता है। क्योंकि खोई हुई गौएँ, जिन्हें फिर से पा लेने के लिये ऋषि इंद्र का आह्वान करते हैं, वे यदि त्रविड लोगों-द्वारा चुराई गई भौतिक गौएँ नहीं हैं, किंतु सूर्य की उषोति की चमकती हुई गौएँ हैं, तो हमारा यह विचार बनाना न्याय-संगत ठहरता है कि, जहाँ केवल गौओं के लिये ही प्रार्थना है और साथ में कोई विरोधी निर्देश नहीं है, वहाँ भी यह अलंकार लगता है, वहाँ भी गौ भौतिक गाय नहीं है। उदाहरण के लिये ऋ० १,४,१,२ × में इंद्र के विषय में कहा गया है कि, वह पूर्ण रूपों को बनानेवाला है और वह गौओं के दोहने में ऐसा चतुर है कि, उस का सोम-रस से चढनेवाला मद सचमुच गौओंको देनेवाला है, 'गोदा इव रेवतो मदः'।

निरर्थकता और असंगतताकी हद हो जायगी, यदि इस कथनका यह अर्थ समझा जाय कि, इंद्र कोई बड़ा समृद्धि-शाली देवता है और जब वह पिये हुए होता है, उस समय गौओं के दान करने में बड़ा उदार हो जाता है। यह स्पष्ट है कि जैसे पहली ऋचा में गौओं का दोहना एक अलंकार है, वैसे ही दूसरी में गौओं का देना भी अलंकार ही है। और यदि हम वेद के दूसरे सन्दर्भों से यह जान लें कि 'गौ'

❖ इस का अनुवाद हम यह भी कर सकते हैं कि, "उसने अपने वज्र (अद्रि) को उस से निकलती हुई चमकों के साथ चारों ओर भेजा" पर यह अर्थ उतना अच्छा और संगत नहीं लगता। पर यदि हम इसे ही मानें, तो भी 'गोभिः' का अर्थ 'किरणों' ही होता है, गाय पशु नहीं।

× सुरुपकृत्युमृतये सुदुधामिव गोदुहे । जुहूमसि यविश्वि ।

उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब । गोदा इद्रेवतो मदः ॥ ( ऋ० १।४।१-२ )



प्रकाश का प्रतीक है तो यहां भी हमें अवश्य यही समझना चाहिये कि, इंद्र जब सोम-जनित आनन्द में भरा होता है, तब वह निश्चित ही हमें ज्योतिरूप गौएं देता है।

उषा के सूक्तों में भी, गौएं ज्योति का प्रतीक हैं, यह भाव वैसा ही स्पष्ट है। उषा को सब जगह 'गोमती' कहा गया है, जिस का स्पष्ट ही अवश्य यही अभिप्राय होना चाहिये कि, वह ज्योतिर्मय या किरणोंवाली है, क्योंकि यह तो बिल्कुल मूर्खतापूर्ण होगा कि, उषा के साथ एक नियत विशेषण के तौरपर 'गौओं से पूर्ण' यह विशेषण उस के शाब्दिक अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाय। पर गौओं का प्रतीक वहां पर विशेषण में है, क्योंकि उषा केवल 'गोमती' ही नहीं है, वह 'गोमती अश्वत्थी' है, वह हमेशा अपने साथ अपनी गौएं और अपने घोड़े रखती है।

'वह सारे संसारके लिये ज्योति को रचकर देती है और अन्धकार को, जो गौओं का बाडा है, खोल देती है, १.९२.४+' यहां हम देखते हैं कि, बिना किसी भूलचूक की सम्भावना के गौएं ज्योति का प्रतीक ही हैं। हम इस पर भी ध्यान दे सकते हैं कि, इस सूक्त (१.९२) में अश्विनों को कहा गया है कि, वे अपने रथ को उस पथपर हांक कर नीचे ले जायें, जो ज्योतिर्मय और सुनहरा है-× 'गोमद् हिरण्यवद्' इस के अतिरिक्त उषा के संबंध में कहा गया है कि, उस के रथ को अरुण गौएं खींचती हैं और कहीं यह भी कहा है कि, अरुण घोड़े खींचते हैं।

'वह अरुण गौओंके समूह को अपने रथ में जोतती है। युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम्। ऋ.१.१२४.११' यहां 'अरुण किरणों के समूह को' यह दूसरा अर्थ भी स्थूल अलंकार के पीछे स्पष्ट ही रखा हुआ है। उषा का वर्णन इत रूप में

हुआ है कि, वह गौओं या किरणों की माता है, 'गवां जनित्री अकृत प्रकेतुम् ऋ.१.१२४.५' गौओं (किरणों) की माता ने दर्शन (Vision) को रचा है।' और दूमेर स्थानपर उस के कार्य के विषय में कहा है, 'अथ दर्शन या बोध उदित हो गया है। जहां पहले कुछ नहीं (असत्) था'।\* इस से पुनः यह स्पष्ट है कि, 'गौएं' प्रकाश की ही चमकती हुई किरणें हैं। उस की इस रूप में भी स्तुति की गई है कि, वह चमकती हुई गौओं का नेतृत्व करनेवाली है (नेत्री गवाम् ७.७६.६) और एक दूसरी ऋचा इस पर पूरा ही प्रकाश डाल देती है, जिस में ये दोनों ही विचार इकट्ठे आ गये हैं, 'गौओं की माता दिनों की नेत्री'(गवां माता नेत्री अङ्गाम्। ऋ. ७.७७.२) अन्तमें मानो इस अलंकार पर से आवरण को कतरई हटा देने के लिये ही, वेद स्वयं हमें कहता है कि, गौएँ प्रकाश की किरणों के लिये एक अलंकार है, "उसकी सुखमय किरणें दिखाई दीं, जैसे छोड़ी हुई गौएँ"-प्रति भद्रा अदक्षत गवां सर्गा न रश्मयः। ऋ. ४.५२.५ हमारे सामने इससे भी अधिक निर्णयात्मक एक दूसरी ऋचा (ऋ. ७.७९.२) है- 'तेरी गौएँ (किरणें) अन्धकार को हटा देती हैं और ज्योति को फैलाती हैं: सं ते गावस्तम आश्वत्थयन्ति उज्योति-र्यच्छन्ति०।

लेकिन उषा इन प्रकाशमय गौओंद्वारा केवल खींची ही नहीं जाती, वह इन गौओं को यज्ञ करनेवालों के लिये उपहाररूप में देती है। वह इन्द्र की ही मांति, जब सोम के आनन्द में होती है, तो ज्योति को देती है वसिष्ठके एक सूक्त (७.७५) में उसका वर्णन इस रूपमें है कि, वह देवों के कार्य में हिस्सा लेती है और उससे वे दृढ स्थान जहां गौएं बन्द पडी हैं, टूट कर खुल जाते हैं और गौएं मनुष्यों को प्राप्त हो जाती हैं। "वह \* सच्चे देवोंके साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ

+ ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृष्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः ॥ ( ऋ० १.९२.४ )

× अश्विना वर्तिरस्माद् गोमद् दक्षा हिरण्यवत् । अर्वाप्रथं समनसा नि यच्छतम् । ( ऋ० १.९२.१६ )

ॐ वि नूनमुच्छाद् असति प्रकेतुः । ( ऋ० १.१२४.१६ )

● निस्संदेह इसमें मतभेद हो सकता कि वेद में गौ का अर्थ प्रकाश है, उदाहरण के लिये जब यह कहा जाता है कि, 'गवा,' 'गौ' से, प्रकाश से, वृत्र को मारा गया, तो यहां गाय पशुका तो कोई प्रश्न ही नहीं है, प्रश्न यह है कि, यहां द्वयर्थक प्रयोग है और गौ यहां प्रतीकरूप है।

\* सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।

रुजद् दृढहानि दददुस्त्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त ॥ ( ऋ० ७।७५।७ )

नू नो गोमद् वीरवद् धेदि रनमुषो अश्वान् पुरुभोजो अस्मे ॥ ( ऋ० ७।७५।८ )

महान् है, वह दृढ स्थानों को तोड़ कर खोलती है और प्रकाश मय गौओंको छोड़ देती हैं, गौएं उषाके प्रति रँभाती हैं” रुजद् इळहानि वृद् उञ्जियाणाम्, प्रति गाव उषसं वावशन्त । (ऋ. ७.७५.७) और ठीक अगली ही ऋचामें उससे प्रार्थना की गई है कि, वह यज्ञकर्ता के लिये आनन्द की उस अवस्था को स्थिर करे या धारण करावे, जो प्रकाश से ( गौओं से ), अश्वों से ( प्राण-शक्ति से ) और बहुत से सुख-भोगों से परिपूर्ण हो— “ गोमद् ररनम् अश्वावत् पुरुभोजः ।” इसलिये जिन गौओं को उषा देती है, वे गौएं ज्योतिकी ही चमकती हुई सेनायें हैं, जिन्हें देवता और अङ्गिरस ऋषि वल और पणियोंके दृढ स्थानों से उद्धार करके लाये हैं । साथ ही गौओं ( और अश्वों ) की सम्पत्ति जिस के लिये ऋषि लगातार प्रार्थना करते हैं उसी ज्योति की सम्पत्तिके अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती; क्योंकि यह कल्पना असंभवसी है कि, जिन गौओं को देने के लिये इस सूक्त की सातवीं ऋचा में उषा को कहा गया है, वे उन गौओं से भिन्न हों जो ८ वीं में मांगी गई हैं, कि पहले मन्त्र में ‘ गौ ’ शब्द का अर्थ है ‘ प्रकाश ’ और अगले में ‘ गाय, ’ और यह कि ऋषि मुखसे निकालते ही उसी क्षण यह भूल गया कि किस अर्थ में वह शब्द का प्रयोग कर रहा था ।

वहीं कहीं ऐसा है कि प्रार्थना ज्योतिर्मय आनन्द या ज्योतिर्मय समृद्धिके लिये नहीं है, बल्कि प्रकाशमय प्रेरणा या बल के लिये है, ‘ हे षु की पुत्री उषः । तू हमारे अन्दर सूर्य की रश्मियों के साथ प्रकाशमय प्रेरणाको ला ’- ‘ गोमती-रिषि भावहा दुहितर्दिवः, साकं सूर्यस्य रश्मिभिः । ५.७९.८ सायणने ‘ गोमतीः इषः ’ का अर्थ किया है ‘ चमकता हुआ अन्न ’ × । परन्तु यह स्पष्ट ही एक निरर्थक सी बात लगती है कि उषा से कहा जाय कि, वह सूर्य किरणों के साथ किरणों से युक्त अन्न को लाये । यदि ‘ इष् ’ का अर्थ अन्न है, तो हमें इस प्रयोग का अभिप्राय लेना होगा ।

इन नमूने के उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि, प्रकाश की गौओं का यह अलंकार कैसा व्यापक है और कैसे अनिवार्य रूप से यह वेदके लिये एक अन्ध्यात्मपरक अर्थ की ओर निर्देश कर रहा है । एक सन्देह भी बीच में आ उपस्थित होता है । हमने माना कि, यह एक अनिवार्य परिणाम है कि ‘ गौ ’ प्रकाश

के लिये प्रयुक्त हुआ है, पर इससे हम क्यों न समझें कि, इसका सीधासाधा मतलब दिन के प्रकाश से है, जैसा कि, वेद की भाषा से निकलता प्रतीत होता है ? वहाँ किसी प्रतीक की कल्पना क्यों करें, जहाँ केवल एक अलंकार ही है ? हम उस दूसरे अलंकार की कठिनार्थी को निमंत्रण क्यों दें, जिस में ‘ गौ ’ का अर्थ तो हो ‘ उषा का प्रकाश ’ और उषाके प्रकाश को ‘ आन्तरिक ज्योति ’ का प्रतीक समझा जाय ? यह क्यों न मान लें कि ऋषि आत्मिक ज्योति के लिये नहीं, बल्कि दिन के प्रकाश के लिये प्रार्थना कर रहे थे ?

ऐसा माननेपर अनेक प्रकार के आक्षेप आते हैं और उन में कुछ तो बहुत प्रबल हैं । यदि हम यह मानें कि, वैदिक सूक्तों की रचना भारत में हुई थी और यह उषा भारत की उषा है और यह रात्रि वही यहाँ की दस या बारह घण्टे की छोटीसी रात है, तो हमें यह स्वीकार कर के चलना होगा कि, वैदिक ऋषि जंगली थे, अन्धकार के भय से बड़े भयभीत रहते थे और समझते थे कि, इस में भूत-प्रेत रहते हैं, वे दिन-रात की परम्परा के प्राकृतिक नियम से जिसका अब तक बहुत से सूक्तों में बड़ा सुन्दर चित्र खिंचा मिलता है- भी अनभिज्ञ थे और उनका ऐसा विश्वास था कि, आकाश में जो सूर्य निकलता था और उषा अपनी बहिन रात्रि के आलङ्घन से छूटकर प्रकट होती थी, वह सब केवल उन की प्रार्थनाओं के कारण से ही होता था । पर फिर भी वे देवोंके कार्यमें अटल नियमों का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि, उषा हमेशा शाश्वत सत्य व दिव्य नियम के मार्ग का अनुसरण करती है ! हमें यह कल्पना करनी होगी कि, ऋषि जब उल्लास में भरकर पुकार उठता है ‘ हम अन्धकार को पार करके दूसरे किनारे पहुँच गये हैं ! ’ तो यह केवल दैनिक सूर्योदय पर होनेवाला सामान्य जागना ही है ।

जिस की ऋषि ऐसी उत्कण्ठा से स्तुति कर रहा है । हमें यह कल्पना करनी होगी कि, वैदिक लोग उषा निकलने पर यज्ञ के लिये बैठ जाते थे और प्रकाश के लिये प्रार्थना करते थे, जबकि वह पहले से ही निकल चुका होता था । और यदि हम इन सब असंभव कल्पनाओं को मान भी लें, तो आगे हमें यह एक स्पष्ट कथन मिलता है

कि, नौ या दस महीने बैठ चुकने के उपरान्त ही यह हो सका कि अज़िरस ऋषियों को खोया हुआ प्रकाश और खोया हुआ सूर्य फिर से मिल पाया। और जो पितरों के द्वारा ' ज्योति ' के खोजे जाने का कथन लगातार मिलता है, उस का हम क्या अर्थ लगायेंगे।

“ हमारे पितरों ने छिपी हुई ज्योति को ढूँढकर पा लिया, उनके विचारों में जो सत्य था, उस के द्वारा उन्होंने उषा को जन्म दिया— गूळहं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्, सत्य-मन्त्रा अजनयन् उषासम् । ( ऋ. ७।७६।४ ) यदि हम किसी भी साहित्य के किसी कविता संग्रह में इस प्रकार का कोई पद्य पावें, तो तुरन्त हम उसे एक मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक रूप दे देंगे, तो फिर वेद के साथ हम दूसरा ही बर्ताव करें, इस में कोई युक्तियुक्त कारण नहीं दीखता।

फिर भी यदि हमें वेद के सूक्तों की प्रकृतिवादी व्याख्या ही करनी है और कोई नहीं, तो भी यह बिल्कुल साफ है कि, वैदिक उषा और रात्रि कम से कम भारत की रात्रि और उषा तो नहीं हो सकती। यह केवल उत्तरीय ध्रुव के प्रदेशों में ही हो सकता है कि इन प्रकृति की घटनाओं के संबंध में ऋषियों की जो मनोवृत्ति है और अंगिरसों के विषय में जो बातें कही गई हैं, वे कुछ समझ में आनेलायक बन सकें। प्राचीन वैदिक आर्य उत्तरीय ध्रुव से आये, इस कल्पना (वाद) को क्षणभर के लिये मान लेनेपर भी यद्यपि यह बहुत अधिक सम्भव हो सकता है कि, उत्तरीय ध्रुव की स्मृतियाँ वेद के बाह्य अर्थ में आ गई हों, फिर भी इस कल्पना से प्रकृति से खींचे हुए इन प्राचीन अलंकारों के पीछे जो एक आन्तरिक अर्थ है, उस का निराकरण नहीं हो सकता, नहीं इस के मान लेने से यह सिद्ध हो जाता है कि, उषासंबंधी ऋचाओं की इस की अपेक्षा और अधिक सुसंबद्ध और सीधी किसी दूसरी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है।

उदाहरण के लिये हमारे सामने अश्विनों को कहा गया प्रस्कण्व काण्वका सूक्त [ १४६ ] है, जिस में उस ज्योतिर्मय अन्तःप्रेरणा का संकेत है, जो हमें अन्धकार में से पार कर के परले किनारे पर पहुंचा देती है। उस सूक्त का उषा और रात्रिके वैदिक विचार के साथ घनिष्ठ संबंध है। इस में वेद में नियतरूप से आनेवाले बहुत से अलंकारों का संकेत मिलता है; जैसे ऋत के मार्ग का, नदियों को पार करने का, सूर्य के उदय होने का, उषा और अश्विनों में परस्पर संबंध का, सोम-रस के रहस्यमय प्रभाव का और उसके सामुद्रिक रस का।

‘ देखो, आकाशमें उषा खिल रही है, जिस से अधिक उच्च और कोई वस्तु नहीं है, जो आनन्द से भरी हुई है। हे अश्विनो! तुम्हारी मैं महान् स्तुति करता हूँ। + ( १ ) तुम जिन की सिंधु माता है, जो कार्य को पूर्ण करनेवाले हो, जो मन में से होते हुए उस पार पहुंचकर ऐश्वर्यों ( रथि ) को पा लेते हो, जो दिव्य हो और उस ऐश्वर्य ( वसु ) को विचार के द्वारा पाते हो। ( २ ) हे समुद्र-यात्रा के देवो जो शब्द को मनोमय करनेवाले हो! यह तुम्हारे विचारों को भंग करनेवाला है- तुम प्रचण्ड रूपसे सोम का पान करो ( ५ ) हे अश्विनो! हमें वह ज्योति-धमती अन्तःप्रेरणा दो, जो हमें तमस् से निकाल कर पार पहुंचा दे। ( ६ ) हमारे लिये तुम अपनी नावपर बैठकर चलो, जिस से हम मन के विचारों से परे परले पार पहुंच सकें। हे अश्विनो! तुम अपने रथ को जोतो ( ७ ) अपने उस रथ को जो छुलोक में इसकी नदियों को पार करने के लिये एक बड़े पतवारवाले जहाज का काम देता है। विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियाँ जोती गई हैं। ( ८ ) जलों के स्थान पर छुलोक में आनन्दरूपी सोम-शक्तियाँ ही वह ऐश्वर्य [ वसु ] है। पर अपने उस आवरण को तुम कहाँ रख दोगे, जो तुमने अपने आपको छिपने के लिये बनाया है? [ ९ ] नहीं,

+ एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् । [ ऋ० १।४६।१ ]

या दक्ष्वा सिन्धुमातरा मनोतरा रथीणाम् । धिया देवा वसुविदा	॥ २ ॥
आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा । पातं सोमस्य धृष्णुया	॥ ५ ॥
या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः । तामस्मे रासाथामिषम्	॥ ६ ॥
आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे । युजाथामश्विना रथम्	॥ ७ ॥
अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः । धिया युयुञ्ज इन्दवः	॥ ८ ॥
दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे । स्वं वत्रिं कुह धितसथः	॥ ९ ॥

सोम का आनन्द लेने के लिये प्रकाश उत्पन्न हो गया है,— सूर्य ने जो कि, अन्धकारमय था, अपनी जिह्वा को हिरण्य की ओर लपलपाया है [ १० ] ऋत का मार्ग प्रकट हो गया है, जिस से हम उस पार पहुंचेंगे; यु के बीच का सारा खुला मार्ग दिखलाई पड़ गया है । [ ११ ] खोजनेवाला अपने जीवन में अश्विनों के ज्यों ज्यों सोम के आनन्दमें तृप्ति-लाभ करते हैं, त्यों त्यों उनके निरन्तर एक के बाद दूसरे आविर्भाव की ओर प्रगति किये जा रहा है ! [ १२ ] उस सूर्य में जिस में ज्योति ही ज्योति है, तुम निवास करते हुए [या चमकते हुए] सोम-पानके द्वारा, वाणीके द्वारा हमारी मानवीयता में सुख का सर्जन करनेवाले के तौरपर आओ । [ १३ ] तुम्हारी कीर्ति और विजयके अनुरूप उषा हमारे पास आती है, जब तुम हमारे सब लोकों में व्याप्त हो जाते हो और रात्रि में से सत्यों को विजय कर लाते हो । [ १४ ] दोनों मिलकर हे अश्विनो! सोम-पान करो, दोनों मिलकर हमारे अन्दर शक्ति को प्राप्त कराओ उन विस्तारों के द्वारा जिन की पूर्णता सदा अविच्छिन्न रहती है । [ १५ ]×

यह इस सूक्त का सीधा और स्वाभाविक अर्थ है और हमें इस का भाव समझने में कठिनाई नहीं होगी, यदि हम वेद के मूलभूत विचारों और अलङ्कारों को स्मरण रखेंगे । ' रात्रि ' स्पष्ट ही आन्तरिक अन्धकार के लिये आलंकारिक रूप से कहा गया है; उषा के आगमन के द्वारा, रात्रि में से ' सत्यों ' को जीतकर हस्तगत किया जाता है । यही उस सूर्यका, सत्यके सूर्य का, उदय होना है, जो अन्धकार के बीच में खो गया था—वही खोये हुए सूर्य का हमारा परिचित अलंकार जिस में उसे देवों और ऋषियोंने फिर से पाया है । और अब यह अपनी अग्नि की जिह्वा को स्वर्णिल ज्योति के प्रति— ' हिरण्य ' के प्रति लपलपाता है ।

सुवर्ण उच्चतर ज्योति का स्थूल प्रतीक है, यह सत्य का सोना है और यही वह निधि है, न कि कोई सोनेका सिक्का,

जिस के लिये वैदिक ऋषि देवों में प्रार्थना करते हैं । आन्तरिक अन्धकार में से निकाल कर ज्योति में लाने के इस महान् परिवर्तन को अग्नी करते हैं, जो मन की और प्राण-शक्तियों की प्रसन्नतायुक्त ऊर्ध्वगति के देवता हैं, और इसे वे इस प्रकार करते हैं कि, आनन्द का अमृतरस मन और शरीर में उण्डला जाता है और वहां वे इस का पान करते हैं । वे व्यंजक शब्द को मनोमय रूप देते हैं, वे हमें विशुद्ध मन के उस स्वर्ग में ले जाते हैं, जो इस अन्धकार से परे है और वहां वे विचार के द्वारा आनन्द की शक्तियों को काम में लाते हैं ।

पर वे यु के जलों को भी पार कर के उससे भी ऊपर चले जाते हैं, क्योंकि सोम की शक्ति उन्हें सब मानसिक रचनाओं को तोड़ डालने में सहायता देती है और वे इस अवरण का भी उतार फेंकते हैं । वे मन से परे चले जाते हैं और सबस्य अन्तिम चीज जो वे प्राप्त करते हैं वह ' नदियों का पार करना ' कही गई है, जो कि विशुद्ध मनके शुलोकमें से गुजरने का यात्रा है, वह यात्रा है, जिस से सत्य के मार्ग पर चलकर किनारे पर पहुंचा जाता है और जब तक अन्त में हम उच्चतम पद, परमा परावत्पर नहीं पहुंच जाते, तब तक हम इस महान् मानवीय यात्रा से विश्राम नहीं लेते ।

हम देखेंगे कि, न केवल इस सूक्त में बल्कि सद्य जगह उषा सत्य को लानेवाली के रूप में आती है, रव्यं यह सत्य की ज्योति से जगमगानेवाली है । वह दिव्य उषा है और यह भौतिक उषा ( प्रभात होना ) उस की केवल छायामात्र है और प्राकृतिक जगत् में उस का प्रतीक है ।

उषा सत्य के पथ की दृढ अनुगामिनी है और चूंकि हम बात का उसे ज्ञान या बोध रहता है, इसलिये वह असीमता को, वृहत् को, जिसकी कि वह ज्योति है, सीमित नहीं करती । यही इस मन्त्र का असली अभिप्राय है, यह बात ५ गण्डक की एक ऋचा ( ऋ. ५।८०।१ ) से निर्विवाद स्पष्ट रूपसे सिद्ध

× अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः । व्यरुयजिह्वयासितः	॥ १० ॥
अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया । अदर्शि वि क्षुतिर्दिवः	॥ ११ ॥
तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति । मदे सोमस्य पिप्रतोः	॥ १२ ॥
वावसाना विवस्वति सोमस्य पतिया गिरा । मनुष्वच्छंभू आ गतम्	॥ १३ ॥
युबोरुषा अनु श्रियं परिउमनोरुपाचरत् । ऋता वनथो अक्तुभिः	॥ १४ ॥
उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम् । अविद्रियाभिरुतिभिः	॥ १५ ॥

हो जाती है और इसमें भूलचूक की कोई संभावना नहीं रह जाती। इसमें उषा के लिये कहा है- **सुतव्यामानं बृहतीम् ऋतेन ऋतान्वरीं, स्वरावहन्तीम्।** " वह प्रकाशमय गति-वाली है, ऋतसे महान् है, ऋत में सर्वोच्च ( या ऋत से युक्त ) है, अपने साथ स्वःको लाती है। " यहाँ हम बृहत् का विचार, सत्य का विचार, स्वर्लोक के सूर प्रकाश का विचार पाते हैं, और निश्चय ही वे सब विचार इस प्रकार घनिष्ठता और दृढता से एकमात्र भौतिक उषा के साथ सम्बन्ध नहीं रह सकते। इसके साथ हम ७।७।१ के वर्णन की भी तुलना कर सकते हैं- **शुषा आवो दिविजा ऋतेन, आविष्कृण्वाना महिमानमागान्।** " यौं प्रकट हुई उषा सत्यके द्वारा वस्तुओं को खोल देती है, वह महिमा को व्यक्त करती हुई आती है। " यहाँ पुनः हम देखते हैं कि, उषा सत्य की शक्ति के द्वारा सब वस्तुओं को प्रकट करती है और इसका परिणाम यह बताया गया है कि, एक प्रकार की महत्ता का आविर्भाव हो जाता है।

अन्तमें इसी विचार को हम आगे भी वर्णित किया गया पाते हैं, बालिक यहाँ सत्यके लिए ' ऋत ' के बजाय सीधा ' सत्य ' शब्द ही है, जोकि ' ऋतम् ' की तरह दूसरा अर्थ किये जा सकने की सम्भावनामें डालनेवाला भी नहीं है- **सत्या सत्येभिर्महती महज्जिर्देवी देवेभिः। ( ऋ० ७।७।७ )** ' उषा अपनी सत्ता में सच्चे देवों के साथ सच्ची है, महान् देवों के साथ महान् है। ' वामदेव ने अपने एक सूक्त ४.५१ में उषा के इस ' सत्य ' पर बहुत बल दिया है; क्योंकि वहाँ वह उषाओं के बारे में केवल इतना ही नहीं कहता कि, ' तुम सत्य के द्वारा जोते हुए अश्वों के साथ जल्दी से लोकों को चारों ओर से घेर लेती हो, ×' **ऋतयुग्भिः अश्वैः ( तुलना करो ऋ. २।६।१२ + )** परन्तु वह उनके लिए कहता है- **भद्रा ऋतजातसत्याः ( ऋ. ४।५।१७ )** ' वे सुखमय हैं और सत्यसे उत्पन्न हुई सच्ची हैं। ' और एक दूसरी ऋचा में वह उनका वर्णन इस रूप में करता है कि, वे देवी हैं जो कि ऋतके स्थानमें प्रबुद्ध होती हैं। \*'

' भद्रा ' और ' ऋत ' का यह निकट सम्बन्ध आमिकों कहे गये मधुच्छन्दस् के सूक्त में इसी प्रकार का जो विचारों का परस्पर सम्बन्ध है, उस का हमें स्मरण करा देता है। वेद की अपनी आध्यात्मिक व्याख्या में हम प्रत्येक मौख पर इस प्राचीन विचार को पाते हैं कि ' सत्य ' आनन्द को प्राप्त करने का मार्ग है। तो उषाको, सत्य की उद्योति से जगमगती उषा को, भी अवश्य सुख और कल्याण को लानेवाला होना चाहिए। उषा आनन्द को लानेवाली है, यह विचार वेदमें हम लगातर पाते हैं और वशिष्ठने ( ऋ. ७।८।१३ ) में इसे बिल्कुल स्पष्ट रूप में कह दिया है- **या वहसि पुरुस्पाई ररनं न दाशुषे मयः।** " तू जो देनेवाले को कल्याण-सुख प्राप्त कराती है, जो कि अनेक रूप है और स्पृहणीय आनन्द रूप है "

वेद का एक सामान्य शब्द ' सन्तता ' है जिसका अर्थ सायण ने ' मधुर और सत्य वाणी ' किया है, परन्तु प्रतीत होता है कि, इसका प्रायः और भी अधिक व्यापक अभिप्राय ' सुखमय सत्य ' है। उषा का कहीं कहीं यह कहा गया है कि, वह ' ऋतावरी ' है, सत्य से परिपूर्ण है और कहीं उसे ' सन्ततावती ' कहा गया है। वह आती है सच्चे और सुखमय शब्दों को उच्चरित करती हुई " **सन्तता ईरषन्ती** "। जैसे उस का वह वर्णन किया गया है कि, वह जगमगती हुई गौओं की नेत्री है और दिनों की नेत्री है, वैसे ही उसे सुखमय सत्त्वों की प्रकाशवती नेत्री कहा गया है। **भाश्वती नेत्री सन्ततानाम्। ( ऋ० १।९२।७ )** और वैदिक ऋषियों के मनमें उद्योति, किरणों या गौओं के विचार और सत्य के विचार में जो परस्पर गहरा सम्बन्ध है, वह एक दूसरी ऋचा ( ऋ० १।९२।१४ ) में और भी अधिक स्पष्ट तथा असन्दिग्ध रूप से पाया जाता है- **गोमति अन्नावति विभावरि... .. सन्ततावति।** " हे उषा, जो तू अपनी जगमगती हुई गौओंके साथ है, अपने अश्वोंके साथ है अत्यधिक प्रकाशमान है और सुखमय सत्त्वोंसे परिपूर्ण है। " इसी जैसा पर तो भी इससे अधिक स्पष्ट वाक्यांश ( ऋ. १।४८।२ ) में है, जो इन विशेषणों के इस प्रकार रखे जानेके अभिप्राय को सूचित

× यूयं हि देवाः ऋतयुग्भिः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः। ( ऋ. ४।५।१५ )

+ वि तद् ययुरणयुग्भिः श्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्रयाः। ( ऋ. १।९।१२ )

\* ऋतस्य देवीः सदसो बुधानाः। ( ऋ. ४।५।१-८ )

कर देता है— गोमतीरश्वावतीर्विचक्षुर्विदः । “ उषाएं जो अपनी ज्योतियों ( गौओं ) के साथ हैं, अपनी त्वरितगतियों ( अश्वों ) के साथ हैं और जो सब वस्तुओं को ठीक प्रकार से जानती हैं । ”

वैदिक उषा के आध्यात्मिक स्वरूपका निर्देश करनेवाले जो उदाहरण ऋग्वेद में पाये जाते हैं, वे किसी भी प्रकार वहीं तक परिमित नहीं हैं । उषा को निरन्तर इस रूप में प्रदर्शित किया गया है कि, वह दर्शन, बोध, ठीक दिशामें गति को जाग्रत करती है । गोतम रङ्गण कहता है, “ वह देवी सब भुवनोंको सामने होकर देखती है, वह दर्शनरूपी आँख अपनी पूर्ण विस्तीर्णता में चमकती हैं, ठीक दिशा में चलने के लिए सम्पूर्ण जीवन को जगाती हुई वह सब विचारशील लोगों के लिए बाणी को प्रकट करती है । ” × विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः । ( ऋ० १।१२।९ )

वहाँ हम उषा को इस रूप में पाते हैं कि, वह जीवन और मनको बंधन मुक्त करके अधिकसे अधिक पूर्ण विस्तार में पहुँचा देती है और यदि हम इस उपर्युक्त निर्देश को वहीं तक सीमित रखें कि, यह केवल भौतिक उषा के उदय होने पर पार्थिव जीवन के पुनः जाग उठने का ही वर्णन है, तो हम ऋषि के चुने हुए शब्दों और वाक्यांशों में जो बल है, उस सारे की उपेक्षा ही कर रहे होंगे और यदि यह हो कि, उषा से लाये जानेवाले दर्शन के लिए यहाँ जो शब्द प्रयुक्त किया गया है, ‘चक्षुः’ उसे केवल भौतिक दर्शनशक्ति को ही सूचित कर सकनेयोग्य माना जाय, तो दूसरे सन्दर्भोंमें हम इसके स्थान पर ‘केतु’ शब्द पाते हैं, जिसका अर्थ है बोध, मानसिक चेतना में होनेवाला बोधयुक्त दर्शन, ज्ञान की एक शक्ति । उषा है ‘प्रचेताः’ इस बोधयुक्त ज्ञान से पूर्ण । उषाने जो कि ज्योतियों की माता है, मन के इस बोधयुक्त ज्ञान को रचा है, गवां जनित्री अकृत प्र केतुम् ( ऋ. १.१२४.५ ) । वह स्वयं ही दर्शनरूप है— “अब बोधमय दर्शनकी उषा खिल उठी है, जहाँ कि पहले कुछ नहीं (असत्) था, ” वि नूनमुच्छादसति प्र केतुः ( ऋ. १.१२४-११ ) । वह अपनी बोधयुक्त शक्ति के द्वारा सुखमय सत्यवाली है, चिकिषस्व

सुनुतावरि । ( ऋ. ४.५२.४ )

यह बोध, यह दर्शन, हमें बताया गया है, अमरत्व का है— अमृतस्य केतुः ( ऋ. ३.९१.३ ) । दूसरे शब्दोंमें यह उस सत्य और सुख की ज्योति है, जिनसे उच्चतर या अमर चेतन का निर्माण होता है । रात्रि वेद में हमारी उस अन्धकारमय चेतना का प्रतीक है जिस के ज्ञान में अज्ञान भरा पडा है और जिसके संकल्प तथा क्रिया में स्खलन पर स्खलन होते रहते हैं और इसलिए जिसमें सब प्रकार की बुराई, पाप तथा यष्ट रहते हैं । प्रकाश है ज्योतिर्मयी उच्चतर चेतना का आगमन जो कि सत्य और सुख को प्राप्त कराता है । हम निरन्तर ‘दुरितम्’ और ‘सुवितम्’ इन दो शब्दों का विरोध पाते हैं । ‘दुरितम्’ का शाब्दिक अर्थ है स्खलन, गलत रास्ते पर पर जाना और औपचरिक रूप से यह सब प्रकार की गलती और बुराई, सब पाप, भूल और विपत्तियों का सूचक है । ‘सुवितम्’ का शाब्दिक अर्थ है, ठीक और भले रास्ते पर जाना और यह सब प्रकारकी अच्छाई तथा सुख को प्रकट करता है और विशेषकर इस का अर्थ वह सुख-समृद्धि है, जो कि सही मार्ग पर चलनेसे मिलती है । सो वसिष्ठ इस देवी उषाके विषयमें ( ऋ. ७.७८.२ ) में इस प्रकार कहता है— “ दिव्य उषा अपनी ज्योति से सब अन्धकारों और बुराइयों को हटाती हुई आ रही है : ” ( विश्वा तमांसि दुरिता ) और बहुतसे मन्त्रोंमें इस देवीका वर्णन इस रूपमें किया गया है कि, यह मनुष्योंको जगा रही है, प्रेरित कर रही है, ठीक मार्ग की ओर, सुख की ओर ( सुरिताय ) ।

इसलिये वह केवल सुखमय सत्यों की ही नहीं, किन्तु हमारी आध्यात्मिक समृद्धि और उल्लास की भी नेत्री है, उम आनन्दको लावेवाली है, जिस तक मनुष्य सत्य के द्वारा पहुँचता है या जो सत्यके द्वारा मनुष्य के पास लाया जाता है, ( एवा नेत्री राधसः सुनुतानाम् । ( ऋ. ७.७६.७ ) यह समृद्धि त्रिप के लिए ऋषि प्रार्थना करते हैं, भौतिक दौलतों के अलावा से वर्णन की गई है, यह ‘गोमद् अश्ववद् वीरवद्’ है, या यह ‘गोमद् अश्ववद् रथवच्च राधः’ है । गौ ( गाय ), अश्व ( घोडा ), प्रजा या अमृत्य ( सन्तान ), वृ या वीर ( मनुष्य या शूवीर ), हिरण्य ( सोना ), रथ ( सवारीवाच रथ ), श्रवः

× विश्वं न देवी भुवनाभिचक्षया प्रतीची चक्षुर्विद्या वि भाति ।

विश्वं जिवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः ॥ ( ऋ० १।१२।९ )

\* उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताय देवी । ( ऋ० ७।७८।२ )

( भोजन या कीर्ति )- याज्ञिक साम्प्रदायियों की व्याख्या के अनुसार ये ही उस सम्पत्ति के अंग हैं, जिस की वैदिक ऋषि कामना करते थे। यह लगेगा कि, इससे अधिक ठोस दुनियाबी पार्थिव और भौतिक दौलत कोई और नहीं हो सकती थी, निस्सन्देह ये ही वे ऐश्वर्य हैं, जिन के लिए कोई बेहद भूखी, पार्थिव वस्तुओं की लोभी, कामुक, जंगली लोगोंकी जाति अपने आदि देवोंसे याचना करती। परन्तु हम देख चुके हैं कि 'हिरण्य' यदमें भौतिक सोने की अपेक्षा दूसरे ही अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। हम देख आए हैं कि 'गौरं' निरन्तर उषा के साथ सम्बद्ध होकर बार बार आती हैं, कि यह प्रकाश के उदय होने का आलङ्कारिक वर्णन होता है और हम यह भी देख चुके हैं कि, इस प्रकाश का सम्बन्ध मानसिक दर्शन के साथ है और उस सत्य के साथ है जो कि सुख लता है। और अश्व, घोड़ा, आध्यात्मिक भावों के निर्देशक इन मूर्त अलंकारों में सर्वत्र गौ के प्रतीकान्मक अलंकार के साथ जुड़ा हुआ आता है; उषा 'गोमती अश्ववती' है। वसिष्ठ ऋषिनी एक ऋचा ( ऋ० ७।७।३ ) है, जिसमें वैदिक मंत्र का प्रतीकात्मक आभिप्राय बड़ी स्पष्टता और बड़े बल के साथ प्रकट होता है-

देवानां श्रेष्ठः सुभगा बृहती, श्वेतां नयती  
सुहृदीकमश्वम् । उषा अर्द्धिं रश्मिभिर्व्यक्ता,  
चित्रमघा त्रिभन्तु प्रभूता ॥

'देवों की दर्शनरूपी आँख को लाती हुई, पूर्ण दृष्टिवाले सफेद धोड़ेवा नेतृत्व करती हुई सुखमय उषा रश्मियोंद्वारा व्यक्त होकर दिखाई दे रही है, यह अपने चित्रविचित्र ऐश्वर्योंसे परिपूर्ण है, अपने जन्मको सब वस्तुओंमें अभिव्यक्त कर रही है।' यह पर्याप्त स्पष्ट है कि 'सफेद धोड़ा' पूर्णतया प्रतीकरूप ही है X (सफेद धोड़ा यह मुहावरा अग्निदेवता के लिए प्रयुक्त किया गया है, जो कि अग्नि + 'द्रष्टा का संकल्प' है कविकृतु है, दिव्य संकल्पकी अपने कार्यों को करने

की पूर्ण दृष्टि-शक्ति है। ( ऋ० ५।१।४ ) और ये 'चित्र-विचित्र ऐश्वर्य' भी आलंकारिक ही हैं, जिन्हें कि वह अपने साथ लाती है, निश्चय ही सबका अभिप्राय भौतिक धन-दौलत से नहीं है।

उषाका वर्णन किया गया है कि यह 'गोमती अश्ववती वीरवती' है और क्योंकि उसके साथ लगाये गये 'गोमती' और 'अश्ववती' ये दो विशेषण प्रतीकरूप हैं और इन का अर्थ यह नहीं है कि, यह 'भौतिक गौओं और भौतिक घोड़ोंवाली' है, बल्कि यह अर्थ है कि यह ज्ञान की ज्योति से जगमगानेवाली और शक्ति की तीव्रतासे युक्त है, तो 'वीरवती' का अर्थ भी यह नहीं हो सकता कि यह 'मनुष्योंवाली है या शूर वीरों, नौकरचाकरों या पुत्रों से युक्त' है, बल्कि इस की अपेक्षा इस का अर्थ यह होगा कि, यह विनयशील शक्तियों से संयुक्त है अथवा यह शब्द बिल्कुल इसी अर्थ में नहीं, तो कमसे कम किसी ऐसे ही और प्रतीकरूप अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। यह बात ( ऋ० १.११३.१८ ) में बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। 'या गोमतीरुषसः सर्ववीरा ... ता अश्वदा अश्ववत् सोम सुखा।' इस का यह अर्थ है कि, 'ये उषाएं जिन में कि भौतिक गायें हैं और सब मनुष्य या सब नौकर-चाकर हैं, सोम अर्पित कर के मनुष्य उन का भौतिक घोड़ों को देनेवाली के रूप में उपभोग करता है।' उषा देवी यहाँ आन्तरिक उषा है, जो कि मनुष्य के लिए उस की बृहत्तम सत्ता की विविध पूर्णताओं को, शक्ति को, चेतना को और प्रसन्नता को लाती है, यह अपनी ज्योतियों से जगमग है, सब संभव शक्तियों और बलों से युक्त है, यह मनुष्य को जीवन-शक्तिका पूर्ण बल प्रदान करती है, जिस से कि यह उस ब्रह्मतर सत्ता के असीम अनन्द का स्वाद ले सके।

अब हम अधिक देर तक 'गोमद् अश्ववद् वीरवद् राधः' को भौतिक अर्थों में नहीं ले सकते; वेदकी भाषा ही हमें इस से बिल्कुल भिन्न तथ्य का निर्देश कर रही है। इस कारण

X धोड़ा प्रतीकरूप ही है, यह पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है दीर्घतमस्के सूक्तों में जो कि यज्ञ के घोड़े के सम्बन्ध में हैं, अश्वदधिकारवत् विषयक भिन्न भिन्न ऋषियों के सूक्तों में और फिर बृहदारण्यक उपनिषद् के आरम्भ में जहाँ यह जटिल आलङ्कारिक वर्णन है, जिसका आरम्भ "उषा घोड़े का सिर है." (उषा या अश्वस्य मेध्यस्य शिरः, ) इस वाक्य से देता है।

+ अग्निमन्धा देवयतां गनांसि चक्षुष्वस्य सूर्ये सं चरन्ति ।

यदीं सुषाने उषसा विल्ये धेतौ वाजी जायते अग्ने अहम् ॥ ( ऋ० ५।१।४ )

देवोंद्वारा दी गई इस सम्पत्ति के अन्य अंगों को भी हमें इसी की तरह अवश्यमेव आध्यात्मिक अर्थों में ही लेना चाहिए; सन्तान, सुवर्ण, रथ ये प्रतीकरूप ही हैं, 'श्रवः' कीर्ति या भोजन नहीं है, बल्कि इसमें आध्यात्मिक अर्थ अन्तर्निहित है और इस का अभिप्राय है, वह उच्चतर दिव्य ज्ञान जो कि इंद्रियों या बुद्धि का विषय नहीं है, बल्कि जो सत्य की दिव्य श्रुति है और सत्य के दिव्य दर्शन से प्राप्त होता है, 'रथि वीर्धुत्तमम्' रथि भवस्युम्' सत्ता की यह सम्पन्न अवस्था है, यह आध्यात्मिक समृद्धि से युक्त वैभव है, जो कि दिव्य ज्ञान की ओर प्रवृत्त होता है ( भवस्यु ) और जिसमें उस दिव्य शब्द के कम्पनों को सुननेके लिये सुदीर्घ, दूर तक फैली श्रवणशक्ति है, जो दिव्य शब्द हमारे पास असीम के

प्रदेशों ( दिशः ) से आता है । इस प्रकार उषाका यह उज्ज्वल अलंकार हमें वेदसम्बन्धी उन सब भौतिक, कर्म-काण्डिक, अज्ञानमूलक भ्रांतियों से मुक्त कर देता है, जिनमें कि यदि हम फंसे रहते तो वे हमें असंगति और अस्पष्टता की रात्रि में ठोकड़ों पर ठोकड़ें खिलाती हुई एक से दूसरे अन्धकूपमें ही गिराती रहतीं, वह हमारे लिए बन्द द्वारों को खोल देती है और वैदिक ज्ञान के हृदय के अन्दर हमारा प्रवेश करा देती है ।

उषा सूक्तों का यह आध्यात्मिक रहस्य श्री योगी अरविन्द जी की खोजसे प्राप्त हुआ है जिसे पाठकोंको मननपूर्वक अपनाना योग्य है ।

( ३ )

## उषादेवताका वर्णन

उषा देवताका वर्णन कई विभिन्न रीतियोंसे भी देखने योग्य है । उषा के सूक्तों में काव्य का आलंकारिक वर्णन तो बड़ा ही मनोरंजक और हृदयंगम है हि परंतु इसकी अन्यभी कुछ विशेषताएं हैं जो देखने योग्य हैं ।

### सूर्योदयके पूर्व उषाएँ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः )

तानीवहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।  
यतः परि जार इव आचरन्ती उषः वदक्षे न पुनर्यतीव ॥  
( १४९ ) ऋ. ७।७।३ )

' ( सूर्यस्य प्राचीनं या उदिता ) सूर्यके पूर्व जो उदय हुए थे, ( तानि अहानि बहुलानि इत् आसन् ) ऐसे वे उषःकाल निःसन्देह बहुत ही थे ।'

इस मंत्र में ' सूर्योदयके पूर्व अनेक उषःकाल अथवा ( अहानि ) अनेक दिन व्यतीत हुए' ऐसा वर्णन किया है। क्या कभी हमें इसका अनुभव है ? नहीं, हमें अपने देशमें तो एक उषःकाल आनेके बादही उसी दिन प्रत्यक्ष सूर्य उगता हुआ दिखाई देता है । सूर्य उदयके पूर्व बहुत दिन व्यतीत हुए और बहुत दिन व्यतीत होनेतक सूर्य का उदय नहीं हुआ,

ऐसा इस देशमें कभी नहीं होता है । ये बहुत दिन उषःकालके ही हैं, जैसी उषा काल वर्णनके प्रकाशसे युक्त होती है, वैसेही ये दिन हैं । सूर्यप्रकाशवाले ये दिन नहीं हैं । क्यों कि इस सूक्तकी देवता उषा है और इस मंत्रमें भी ' उषः ' संबोधन करके ही वर्णन है, देखिये इसी मंत्रका उत्तरभाग—

' हे उषा देवी ! तू जारके समान आचरण करनेवाली दीखती है, संन्यसिनी यती स्त्रीके समान तू दीखती नहीं । ऐसा उषाको संबोधन करके कहा है । यार की प्रतीक्षा करती हुई जैसी कोई स्त्री रहती है, वह अपने प्रियकी प्रतीक्षा करती रहती है, वह पति न आया तो भी आतुरताके साथ वह स्त्री प्रतीक्षा करतीही रहती है, परंतु अपने प्रियपर क्रोध करके संन्यासिनी बन कर उसको नहीं छोडती, तद्वत् यह उषा है ।

यहां सूर्य उदय होनेतक अनेक दिन उषःकाल ही उषः-काल रहनेका स्पष्ट वर्णन है । हमारे देशमें घण्टाभर तक उषः-काल रहता है, पश्चात् सूर्य उदय होता है । अतः यह वर्णन यहां के उषःकालपर घटता ही नहीं । यहां तो सूर्योदयके पूर्व बहुत उषःकाल आते नहीं, प्रातिदिन उषा सूर्य की प्रतीक्षा करती रहती है, पर सूर्य देव उसके पास नहीं आते, ऐसा



यहां नहीं होता, अतः उषा अपने गियकी प्रतीक्षा बहुत दिन करती रही, पर सूर्य देव नहीं आये तथापि वह उषा यती ( संन्यासिनी ) बनी नहीं, अपने प्रिय पर पूर्ववत् प्रेमही करती रही, यह वर्णन यहांके उषःकालका नहीं हो सकता ।

जिस देशमें सूर्योदयके पूर्व अनेक दिन उषःकाल रहता होगा, वहीं पर ऐसी कल्पना षधि कर सकता है । और वहीं यह कल्पना प्रत्यक्ष सृष्टीमें दीख सकती है । जहां घण्टाभर ही उषःकाल रहता होगा, वहां सूर्योदय के पूर्व बहुत दिन उषः काल रक्षा, ऐसा वर्णन नहीं हो सकता ।

यहां ' बहुलानि अहानि ' पद है, अनेक दिन व्यतीत होनेके पश्चात् वहां सूर्यदेवका दर्शन होता है । यहां दिनका अर्थ पृथ्वीका अपने इर्दगिर्द भ्रमणका काल है । आकाशमें जो तारका मण्डल दीखता है वह भ्रमण करतासा दीखता है । उसके २४ घण्टीके परिभ्रमणसे दिनकी कल्पना होती है ! ऐसे बहुत दिन व्यतीत होने तक यह उषा सूर्यकी प्रतीक्षा करती रहती है, और पश्चात् सूर्य देव आते हैं और उषा सूर्यदेवके साथ संलग्न होती है ।

यहां ' बहुलानि अहानि ' पद है । इस वर्णनसे कितने दिन लेने योग्य हैं, इसका भी यहां विचार करना चाहिये । यदि १० दिन व्यतीत हो जायें, तो एक महिना व्यतीत हुआ ऐसा कहेंगे, इसलिये जिस कारण यहां ' अहानि ' अर्थात् ' दिन ' ही व्यतीत हुए ऐसा कहा है, उस कारण हम कह सकते हैं कि, तीस दिनोंसे कम ही ये उषःकाल होंगे । यदि आठ दस दिनतक ही यह उषःकाल रहता होगा, तो उसके लिये ' बहुत दिन ' ऐसा प्रयोग कोई नहीं करेगा, क्योंकि सात संख्यतक संख्या ' बहुत दिन ' कहने योग्य नहीं होती । इसलिये ३० दिन भी नहीं और दस दिन तक भी नहीं, अर्थात् बीससे कुछ अधिक दिन ऐसा यह उषाका अवधि ' बहुलानि अहानि ' पदोंसे लेना योग्य है ।

संस्कृत व्याकरणके अनुसार ' बहुलानि अहानि ' ( बहुत दिन ) का अर्थ कमसे कम तीन दिन और अधिकसे अधिक जितने भी होंगे उतने दिन बोधित होंगे । अतः व्याकरण हमारी इनमीहि यहां सहायता करता है और कहता है कि इन पदोंसे कमसे कम तीन दिनोंका अवधि निर्धारित हो सकता है, ज्यादा कितने दिन ले सकते है यह व्याकरण नहीं कह सकता। पर केवल तीन ही दिनोंके लिये ' बहुतही दिन ' ऐसा कोई

भी नहीं कहता । इसलिये यह अवधि निश्चयसे तीन दिनोंसे अधिक है इसमें संदेह नहीं, अनेक उषाओंका वर्णन वेदमंत्रोंमें भी है, अतः उषाका बहुवचनमें प्रयोग अनेक वेदमंत्रोंमें दिखाई देता है—

स्वाहा वसूनि तमसाऽपगूळः।

आविष्कृष्वन्त्युषसो विभातीः॥ (६४; ऋ. १।१२३।६)

' स्पृहणीय पदार्थ जो गूढ अन्धकारसे ढंके थे, उन सबको ये अनेक ( विभातीः उषसः आविष्कृष्वन्ति ) प्रकाशनेवाली उषायें प्रकट कर रही हैं ।' अर्थात् ये अनेक उषायें अकर सूर्य आनेके पूर्वही विश्वान्तर्गत न न पदार्थोंको हमारे सामने प्रकट करती हैं । इसी सूक्तका अगला मंत्र इस मंत्रका आशय अधिक स्पष्ट कर रहा है—

परा च यन्ति पुनरा च यन्ति

भद्रा नाम वहमाना उषासः । (७०; ऋ. १।१२३।१२)

' ये ( उषासः ) उषायें ( भद्रा नाम वहमानाः ) कल्याणकारक यशका धारण करती हुई ( परा यन्ति ) जाती हैं और ( पुनः च आयन्ति ) फिर वापस आती हैं ।' उषःकाल चला गयासा दीखता है और उसी समय फिर नया शुरू होने लगता है । यह वर्णन बड़ा महत्त्व रखनेवाला वर्णन है । हमारे देशमें एक बार उषःकाल गया तो दिन आता है, दिनके बाद सायंकाल और उसके बाद रात्री व्यतीत होती है, इसतरह २४ घण्टे व्यतीत होते हैं, तत्पश्चात् दूसरी उषा आती है । अतः यह वर्णन यहांका नहीं है जिस भूभाग पर एकवार उषा गयी तो उसी समय पुनः दूसरी उषःकाल आनेकी संभावना हो, वहीं यह वर्णन प्रत्यक्ष दीख सकता है, और वहीं सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना भी संभव हो सकता है । ऐसी कई उषायें लगातार आती हैं और पश्चात् सूर्य देव उगते हैं, वहीं कवि कह सकता है कि, ' एक उषा गयी और फिरसे दूसरी उषा पुनः आगयी ।' इसी तरह और भी वर्णन देखिये—

कश्चिद्दासां कतमा पुराणी ? ( ९६; ऋ. ४।५१।६ )

' इन सब उषाओंमें कौनसी भला उषा पुरानी है !' यह प्रश्न तब हो सकता है कि, जब अनेक उषःकाल सांभस थ आते हों । हमारे भारतवर्षमें तो एकही उषःकाल रहता है इस लिये इसमें पुराना और नया ऐसा भेद नहीं हो सकता, परंतु न्यून प्रकाशवाला और अधिक प्रकाशवाला ऐसे अनेक क्रमपूर्वक

उषःकाल जहां होंगे, वहीं एक उषःकाल पुराना और दूसरा नया यह भाषा संभवनीय हो सकती है। इसीतरह और भी—

ता वा ता भद्रा उषसः पुरासुः । (८०, ऋ. ४।५।१।७)

‘ वे नि.संदेह वे कल्याणकारक उषःकाल ( पुरा आसुः ) पहिले हो चुके थे ।’ यहां अनेक संख्यामें कुछ उषःकाल पहिले हो चुके ऐसा कहा है। अनेक संख्यामें उषःकालोंका होना यह जहां संभवनीय होगा, वहीं यह वर्णन हो सकता है। ये सब मंत्र किसी देशमें प्रत्यक्ष दीखनेवाले दृश्यका वर्णन कर रहे हैं। उषा दृश्यमान है, हमारे देशमें प्रतिदिन आती है, परंतु यहां अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व नहीं आतीं और नहीं इनमें एक प्राचीन और दूसरी अर्वाचीन कही जा सकती है। और जो वर्णन इन उषा सूक्तोंमें है, वहां अनेक उषाएं सूर्योदयके पूर्व होती हैं, और ये उषाएं एकके पीछे दूसरी ऐसी क्रमपूर्वक आती हैं, देखिये—

### क्रमसे उषाओंका आना

आसां पूर्वासां अहसु स्वसृणां

अपरा पूर्वा अभ्येति पश्चात् ।

ताः प्रसववक्ष्यस्यसीः नूनं अस्मे

रेवदुच्छन्तु सुदिना उषासः ॥ (८०, ऋ. १।१२।४।९)

‘(आसां पूर्वासां स्वसृणां अहसु) इन पहिले बहिनरूपी अनेक उषाओंके दिनोंमें (पूर्वा पश्चात् अपरा अभ्येति) पहिली उषाके पश्चात् ही दूसरी उषा उसके पीछेसेही लगातार आती रहती है। (ताः) वे (नव्यसीः उषासः) नयीं उषाएं (प्रसवत्) पुराणी उषाओंके समानही निश्चय पूर्वक (अस्मे) हमें (रेवत् सुदिना उच्छन्तु) ऐश्वर्य युक्त उत्तम दिन दें।’

इस मन्त्रमें ‘पूर्वा पश्चात् अपरा अभि येति’ यह वाक्य बड़े महत्त्वका है इसका आशय ऐसा है कि— ‘पूर्व उषाके पश्चात् ही, उस उषाके पीछेसेही दूसरी उषा सब प्रकारसे आती है। एक उषा समाप्त हुई तो दूसरी उषा शुरू होती है। यह दृश्य इस देशका नहीं है।

यहां ‘उषा’ पद अनेक वचनमें है, इससे अनेक उषाओं का होना सिद्ध है, अनेक उषाएं होनेके कारण ही उनको इस मन्त्रने (स्वसृः) बहिनें कहा है। एक पिताकी अनेक पुत्रियाँ आपसमें बहिनें होती हैं। सूर्य आनेवाला है, उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अनेक उषाएं आपसमें बहिनें कही जा सकती

हैं। बहिन कहनेसे भी एक सूर्य देवके कारण उत्पन्न होनेवाली सूर्यकी अनेक पुत्रियां, ये उषाएं हैं, अतः वे आपसमें बहिनें हैं यह सिद्ध है। इससे सूर्योदयके पूर्व अनेक उषाओंका होना सिद्ध हुआ है।

उषाओंका क्रमसे और एकके पीछे दूसरीका आना सिद्ध कर रहा है कि ऐसा दृश्य कितनी दूसरे देशमें होगा, इन भारत वर्षमें तो ऐसा दृश्य कदापि नहीं होता।

### पहिले दिनको जाननेवाली उषा

जानशब्दः प्रथमस्य नाम

शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची ॥ (६७, ऋ. १।१२।३।९)

‘यह उषा (प्रथमस्य अहः जानती) पहिले दिनका नाम जानती है, और (शुक्रा श्वितीची) यह प्रकाश देनेवाली तेजस्विनी उषा (कृष्णात् अजनिष्ट) कृष्ण वर्ण अन्धकारसे उत्पन्न हुई।’

हमारे देशमें पहिले दिनकी उषा ऐसा कोई भेद नहीं है, क्योंकि सभी उषाएं एकसी होती हैं, पर जहां जिस प्रदेशमें बड़े अन्धकारके पश्चात् पहिलाही उषःकाल शुरू होता है और वह उषःकाल अनेक दिनोंतक लगातार रहता है वहीं यह संभव हो सकता है कि यह उषा प्रथम दिनकी है और यह दूसरे दिनकी है, पर वे आपसमें बहिनें हैं और एकके पीछे एक आती रहती हैं। इस मन्त्र में प्रथम दिनकी उषा (प्रथमस्य अहः उषा) कहीं है, यह वर्णन विशेष महत्त्व का है। इसी तरह के वर्णन के ये मन्त्र हैं—

१. शश्वतीनां विभातीनां प्रथमा उषा इति ॥

(५३, ऋ. १।१२।१।५)

२. शश्वतीनां आयतीनां प्रथमा उषा इति ॥

(७३, ऋ. १।१२।४।२)

३. परायतीनां अभ्येति पाथः

आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् । (४६, ऋ. १।११।१।८)

४. उषा अगन् प्रथमा पूर्व हूती । (९०, ऋ. १।११।१।८)

५. उषः स्मृतं प्रथमा जरस्व । (९३, ऋ. १।१२।३।२)

६. उषः सुजाते प्रथमा जरस्व । (१५२, ऋ. ७।७।६।६)

(१) शाश्वत चमकनेवाली उषाओंमें यह पहली उषा प्रकाशित हुई है। (२) शाश्वत आनेवाली उषाओंमें पहिली उषा उदित हुई है (३) जानेवाली उषाओंके मार्गका अनुसरण करनेवाली और आनेवाली उषाओंमें पहिली वह उषा

है ( ४ ) यह पहिली उषा आगई है । ( ५-६ ) हे उत्तम निर्माण हुई उषा ! तू पहिली उषा है ।

( १,३ ) दुत्स आंगिरसः, ( २,४-५ ) कक्षीवान् दैर्घतमसः, ( ६ ) वसिष्ठ के देखे ये मंत्र हैं । इन में यह पहिली उषा है ऐसा कहा है ।

यहां पहिली उषा करके उसमें कोई विशेषता नहीं होती । पर जहां बड़े प्रदीर्घ अन्धेरेके पश्चात् वर्षमें प्रथमही उषाके प्रकाशका दर्शन होता होगा, वहांका आनन्द इन मंत्रोंमें वर्णित हुआ दीखता है ।

### तीस बहिनें

त्रिंशत्सत्रसार उपयन्ति निष्कृतं । ( तै. सं. ४।३।२।६ )

‘ तीस बहिनें नियत स्थानपर चलती हैं । ’ बहिनें उषायें हैं यह जो ऋग्वेदमें कहा था, वे तीस बहिनें हैं ऐसा इस मंत्रने कहा है । तीस ही उषाएं क्यों हैं ? क्योंकि छः मास की रात्री के पश्चात् तीस उषाएं आकर ही सूर्यका उदय होता है ।

### भयानक रात्री

न यस्याः पारं ददशे न योयुवद्विभ्रमस्यां नि विशते यद्वेजति । अरिष्टासक्त उर्वि तमस्वति रात्रि पार-मशीमहि भद्रे पारमशीमहि ॥ ( अथर्व. १९।४७।२ )

( न यस्याः पारं ददशे ) जिस रात्रीका पार अर्थात् समाप्ति का समय हम देखते नहीं, इतनी यह विशाल रात्री है ।

( न योयुवत् ) जिस रात्री में भिन्नता भी नहीं दीखती, एक जैसी अखण्ड यह रात्री रहती है ( विश्वं अस्यां निविशते ) सब कुछ इस रात्री में प्रविष्ट होता है ( यत् एजति ) जो कुछ हिलता है वह सब भी इस रात्रीमें ही रहता है । ( अ-रिष्टासः ) हम विनष्ट न होते हुए, हे ( उर्वि तमस्वति रात्रि ) बड़ी अन्धेरी रात्री ! तेरे पार ( अशीमहि ) हम होंगे । हे कल्याण रात्री ! तेरे पार हम होंगे ।

यह विशेष दीर्घकालीन रात्रीका ही वर्णन दीखता है । यह हमारी १२ घण्टोंकी रात्री नहीं है, यह छः मासकी रात्री है जो संवत्सर जैसी है इसका वर्णन देखिये—

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वां रात्र्युपास्महे ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ॥ ३ ॥

( अ. ३।१०।३ )

( यां संवत्सरस्य प्रतिमां रात्रीं त्वां ) संवत्सरकी प्रतिमा-

रूपी रात्रीकी ( उपास्महे ) हम उपासना करते हैं । ( सा नः ) वह रात्री हमारी ( आयुष्मतीं प्रजां ) दीर्घायुवाली प्रजाको ( रायः पोषेण संसृज ) धन और पुष्टीके साथ पूर्ण करो ।

संवत्सरस्य प्रतिमा रात्री= ये पद निःसंदेह वर्षकी दार्धरात्रीको अर्थात् अर्धसंवत्सर तक चलनेवाली रात्रीको बता रहे हैं । नहीं तो ‘ संवत्सरकी प्रतिमा रात्री’का कोई विशेष तात्पर्य ही नहीं है ।

ऐसे बड़े अन्धकारके पार होनेको ही अन्धेरेसे पार होना कहते हैं—

### अन्धकारका पार होना

बड़े अन्धकारका पार होना भी इन उषा सूक्तोंमें दीखता है—

अतारिष्म तमसस्वारं अस्य

उषा उच्छन्ती वयुना कृणोति । ( २९; ऋ. १।१२।६ )

‘ ( अस्य तमसः पारं अतारिष्म ) इस अन्धकारको हमने पार किया, अब यह ( उषा उच्छन्ती ) उषा अपना प्रकाश करती हुई अपने उद्देश प्रकट करती है । ’

इस मंत्रमें ( अस्य तमसः पारं अतारिष्म ) इस अन्धकारके पार हम हो चुके, यह वाक्य प्रगाढ और दीर्घकालके अन्धेरे का सूचना दे रहा है । प्रतिरात्रीके अन्धकारके विषयमें ऐसा कोई नहीं कहेगा, क्योंकि हमें पता है कि छः सात बजे यह अन्धेरा दूर होनेका निश्चय है । यदि अन्धेरा ऐसा हो कि जो कई महीने रहनेवाला हो, तो उस अन्धकारका समाप्तिपर ऐसा वाक्य बोला जाना सर्वथा संभव है कि ‘ इस दुस्तर अन्धकारसे अब हम पार हो चुके हैं । ’ इतने मंत्रोंका आशय मनन पूर्वक देखनेसे हमें ऐसा प्रतीत होता है कि बड़े अन्धकारके व्यतीत होनेपर कई उषायें लगातार आतीं, उनमें पहिली और अन्तिम ऐसी भी उषाएं रहती हैं, ऐसे अनेक उषाःकाल व्यतीत होनेपर दिनका प्रारंभ होता है, जहां ऐसा होता हो वहाँका यह वर्णन है ।

हमें विदित है कि अपनीही पृथ्वीपर ऐसे प्रदेश हैं कि जहां करीब पांच महीनोंकी प्रचण्ड रात्री रहती है, इस निबिड गाढ अंधेरी प्रचण्ड रात्रीके पश्चात् करीब तीस दिनका उषाःकाल और प्रभात होता है, पश्चात् करीब पांच महीनेका दिन होता है और पश्चात् वैसा ही एक मासका सायंकाल होता है । दिन और रात्रीका प्रमाण न्यूनाधिक भी कई

प्रदेशोंमें रहता है। नार्वे स्वीडन के प्रदेशोंमें इस तरहके प्रचण्ड दिन रात आज भी होते हैं। महाभारतकारने ध्रुव पर्वतका वर्णन दिया है वहां छः महिनोका दिन और वैसी ही प्रचण्ड रात्री होनेका वर्णन है। अगस्त ऋषि वहां गये थे ऐमा भी महाभारतमें लिखा है देखो—

एनं श्वहरहमेरुं सूर्याचन्द्रमसौ ध्रुवम् ।

प्रदक्षिणमुपायुः कुराः कुरुनन्दन ॥

ज्योतीषि चाप्यशेषेण सर्वाण्यनघ सर्वतः ।

परियन्ति महाराज गिरिराजं प्रदक्षिणम् ॥

( म. भा. वन. १६३।३७-३८ )

स्वतेजसा तस्य नगोत्तमस्य महौषधीनां च तथा प्रभावात् ।

विद्विक्तभात्रो न बभूव कश्चिद्दहोनिशानां पुरुष प्रवीर ॥

बभूव रात्रिर्दिसश्च तेषां संवत्सरेणैव समान रूपः ।

( म. भा. वन. १६४।११,१२ )

द्वे रात्र्यहनी वर्षं प्रविभागस्तयोः पुनः ।

अहस्ताप्रोदगयनं रात्रिः स्याद्दक्षिणायनम् ( मनु. १।६७ )

एकं वा एतद्देवानां अहः यस्संवत्सरः । ( तै. ब्रा. ३।१।२२।१ )

‘ मेरुपर्वत है, उसकी प्रदक्षिणा सूर्य, चन्द्र, तथा सब नक्षत्र करते हैं। उस मेरुपर्वत पर दिन और रात्रीका ऐसा भेद नहीं ( जैगा यहां हमारे देशमें प्रतिदिन दिखाई देता है। ) वहां दिन आर रात्री वर्ष जैसी होती है ( अर्थात् वहां छः मासोंकी रात्री और छः मासोंका दिन होता है, इसमें उपःकाल और सायं-कालके संधिसमय अन्तर्भूत हुए हैं। ) यह महाभारतका वर्णन है।

मनुस्मृतिमें कहा है कि उत्तरायण दिवस है और दक्षिणायन रात्री है। ( अर्थात् छः मासोंका उत्तरायण दिन है और छः मासोंका दक्षिणायण रात्री है। )

इरा तरह मेरुपर्वतका वर्णन हमारे ग्रंथोंमें है। मेरुपर्वतही उत्तरीय ध्रुव है। आज भी वहां छः मासोंकी प्रचण्ड घन अन्ध-कारमयी रात्री है और छः मासोंका प्रचण्ड दिन है। उत्तरीय ध्रुवके नीचे दक्षिण दिशामें नार्वे और स्वीदन देश हैं, इसलिये वहां यह प्रमाण थोडा न्यूनाधिक रहता है। उत्तरीय ध्रुवमें सूर्य चन्द्र तथा नक्षत्र चक्कीके समान घूमते हुए नजर आते हैं, हमारे देशमें जैसे सिरपेर आकर अस्त होनेका दृश्य है वैसा वहां नहीं है, वहां किसी देवताको प्रदक्षिणा करनेके समान ये

सब सूर्य चन्द्र और नक्षत्र घूमते हैं और मेरुकी प्रदक्षिणा करते दीखते हैं।

संक्षेपसे यहां ५ महिनोकी निबिड गाड अन्धकारवाली प्रचण्ड रात्री होती है, इसके बाद पहिली उषा चमकती है, इस कारण वह ( प्रथम उषा ) पहिली उषा कही जाती है, इसके नंतर कर्गब सतःईस उषाएं क्रमपूर्वक एकके पीछे दूसरी ऐसी आती हैं, अतः ये परस्पर बहिने होती हैं, पश्चात् सूर्य देव प्रकाशते हैं। ये करीब ५ महिने प्रकाशते ही रहते हैं, तथापि कभी ये मध्यन्हके समय जैसे आकाशमध्यमें नहीं चढते। नौ बजने जितने ऊपर चढते हैं यह अधिक से अधिक ऊंचाई होती है। जिस किसी ऊंचाई पर हो दिनभर उसी ऊंचाईपर रहते हुए ये ध्रुवपर्वत की प्रदक्षिणा करते हैं, पश्चात् सायं समय भी करीब उपःकाल जितनही होता है और पश्चात् रात्री होती है। इस तरह छः मास सूर्य दर्शन नहीं और छः मास गाड अन्धकार नहीं ऐसी वर्षकी अवधि काटी जाती है। नक्षत्रोंके एक परिभ्रमणसे एक दिन समझा जाता है, तथा वहां विद्युत्प्रकाश इस छः मासकी रात्रोंमें कुछ रोशनी करता रहता है। यह वहां की परिस्थिति ध्यानमें धारण करके पूर्वोक्त मंत्रोंके निम्नलिखित वाक्य पुनः देखिये—

१. अस्य तमसः पारं अतारिणम् । ( २९; ऋ. १।१२।१६ ) = अब हम इस गाड निबिड और प्रचंड अन्धकारके पार हो चुके।
२. कृष्णात् शुक्रा प्रथमस्य अह्नः ( उषा ) अजनिष्ट । ( ६७; ऋ. १।१२।३।३ ) = गाड अन्धेरी रात्रीके पश्चात् प्रथम दिनकी यह पहिली उषा अब प्रकाशित हुई है।
३. विभातीनां प्रथमा उषा स्यात् । ( ७३; ऋ. १।१२।४।२ ) = प्रकाशित होनेवालीयोंमें यह पहिली उषा प्रकाशित हुई।
४. आसां स्वसृणां पूर्वा पश्चात् अपरा अभ्येति । ( ८०; ऋ. १।१२।४।९ ) = ये बहिनें जैसी अनेक उषाएं एकके पीछे दूसरी क्रमसे आती हैं।
५. भद्रा उषसः पुरा आसुः । ( ८०; ऋ. ४।५।१।७ ) = कल्याण कारक अनेक उषाएं ( सूर्य उदयके ) पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं।
६. उषसः परा यन्ति, पुनः आयन्ति । ( ७०; ऋ. १।१२।१।२ ) = इन उषाओंमेंसे कई जाती हैं और नयी आती हैं।

७. उषसः विभातीः ( ६४; ऋ. १।१२३।६ ) = अनेक उषायें ( क्रमशः आकर ) प्रकाशती हैं ।

८. सूर्यस्य प्राचीनं उदिता अहानि बहुलानि भासन् ।  
( १४९; ऋ० ७।७६।३ ) = सूर्य उदयके पूर्व उदय को प्राप्त होनेवाली उषाएं अनेक हैं ।

इस तरह किसी ऐसे प्रदेशमें मंत्रों के ये पद अत्यंत सार्थक दीखते हैं । पाठक इसका विचार करें ।

इतना होनेपर भी उषःकाल जाप्रतिका सूचक है । यह जाप्रति आध्यात्मिक मानना उचित है । क्यों कि आत्मिक जाप्रति में सब अन्य जाप्रतियां समाविष्ट होती हैं । यह भाव

इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं और उससे आध्यात्मिक उन्नति के मार्गका बोध भी प्राप्त कर सकते हैं । यह आध्यात्मिक उन्नति वेदकी मुख्य उन्नति है इसकी सिद्धि करनेकी आवश्यकता बिलकुल नहीं है । क्योंकि यह बात सबको स्वीकृत ही है ।

इस तरह उषाके हृदयंगम सूक्तोंका विचार पाठक कर सकते हैं ।

निवेदक

१ पौष विक्रमाय  
संवत् २०००

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.

अध्यक्ष स्वाध्याय मण्डल

औंध ( जि० सातारा )





# दैवत-संहिता ।

( ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता । )

## ८ उषादेवता ।

॥१॥ ( ऋ० १।३०।२०-२२ )

( १-३ ) शुनःशेष आजीगर्तिः । गायत्री ।

कस्त उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये । कं नक्षसे विभावरि	२०	
वयं हि ते अमन्मह्याऽऽन्तादा पराकात् । अश्वे न चित्रे अरुषि	२१	
त्वं त्येभिरा गहि वाजेभिर्दुहितर्दिवः । अस्मे रयिं नि धारय	२२	३

॥२॥ ( ऋ० १।४८।१-१६ )

( ४-२३ ) प्रस्कण्वः काण्वः । प्रगाथः = ( विषमा बृहती+समा सतोबृहती । )

सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः ।		
सह द्युम्नेन बृहता विभावरि राया देवि दास्वती	१	
अश्ववितीर्गोमतीर्विश्वसुविद्रो भूरिं च्यवन्त वस्तवे ।		
उदीरय प्रति मा सनृता उपश्रोदु राधो मघोनाम्	२	५
उवासोषा उच्छाञ्च नु देवी जीरा रथानाम् ।		
ये अस्या आचरणेषु दधिरे समुद्रे न श्रेवस्थवः	३	
उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः ।		
अत्राह तत् कर्ष एषां कर्षतमो नाम गृणाति नृणाम्	४	
आ षा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती ।		
जरयन्ती वृर्जनं पद्मदीयत उत्पातयति पक्षिणः	५	८

दै० [ उषा ] १

धि या सृजति समनं व्युत्थिनः पदं न वेत्योदती । वयो नर्किष्टे पमिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति	६	
एषार्युक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि । शतं रथेभिः सुभगोषा द्रुयं वि यात्यभि मानुषान्	७	१०
विश्वमस्या नानाम चक्षसे जग—ज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी । अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप सिधः	८	
उष आ माहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः । आवहन्ती भूर्यसभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु	९	
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसिं सूनरि । सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम्	१०	
उषो वाजं हि वंस्व यश्चित्रो मानुषे जनै । तेना वह सुकृतो अध्वराँ उप ये त्वां गृणन्ति वह्यः	११	
विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतये ऽन्तरिक्षादुषस्त्वम् । सास्मासु धा गोमदश्चावदुक्थ्यु—मुषो वाजै सुवीर्यम्	१२	१५
यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदक्षत । सा नो रथि विश्ववारं सुपेशस—मुषा ददातु सुगम्यम्	१३	
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्वं ऊतये जुहुरेऽवसे महि । सा नः स्तोमौ अभि गृणीहि राधसो—षः शुक्रेण शोचिषा	१४	
उषो यदद्य भानुना वि द्वारावृणवो दिवः । प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः प्र देवि गोमतीरिषः	१५	
सं नो राया बृहता विश्वपेशसा मिमिक्ष्वा समिळाभिरा । सं द्युम्नेन विश्वतुरौषो महि सं वाजैर्वाजिनीवति	१६	

॥३॥ ( ऋ० १।४९।१-४ ) अनुष्टुप् ।

उषो भद्रेभिरा गहि दिवश्चिद् रोचनादधि । वहन्त्वरुणप्सव उप त्वा सोमिनो गृहम्	१	
सुपेशसं सुखं रथं यमध्यस्था उपस्त्वम् । तेना सुश्रवसं जनं प्रावाद्य दुहितर्दिवः	२	११

वयश्चित् ते पतत्रिणो द्विपञ्चतुस्पदर्जुनि ।	
उषः प्रारंभतूरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि	३
व्युच्छन्ती हि रश्मिभिर्विश्वमाभासि रोचनम् ।	
तां त्वाष्टुषर्वसूयवो गीर्भिः कर्णा अहूषत	४ २३
॥४॥ ( ऋ० १।९२।१-१५ )	
( २४-३८ ) गोतमो राहृगणः । १-४ जगती, ५-१२ त्रिष्टुप्; १३-१५ उष्णिक् ।	
एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते ।	
निष्कृष्णाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः	१
उदपत्नमरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत ।	
अक्रुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्युः	२ २५
अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः ।	
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते	३
अधि पेशांसि वपते नूतूरिवापोर्णुते वक्ष उस्नेव बर्जहम् ।	
ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः	४
प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि वि तिष्ठते चार्धते कृष्णमभ्वम् ।	
स्वहं न पेशो विदथेष्वञ्जश्चित्रं दिवो दुहिता भानुमश्रेत्	५
अतारिष्म तमसस्परमस्योषा उच्छन्ती वयुनां कृणोति ।	
श्रिये छन्दो न संयते विभाती सुप्रतीका सौमनसायाजीगः	६
भास्वती नेत्री सूनृतानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः ।	
प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्राँ उप मासि वाजान्	७ ३०
उपस्तमश्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम् ।	
सुदंससा भवसा या विभासि वाजप्रसृता सुभगे वृहन्तम्	८
विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति ।	
विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः	९
पुनःपुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना ।	
श्रमीवं कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः	१०
व्युर्ण्वती दिवो अन्तां अन्नोध्यप स्वसारं सनुतर्धुयोति ।	
प्रमिनती मनुष्या युगानि योषा जारस्य चक्षसा वि भाति	११ ३४



पशून् चित्रा सुभगां प्रथाना	सिन्धुर्न क्षोदं उर्विया व्यश्नैत् ।	
अमिनती दैव्यानि व्रतानि	सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना	१२
उपस्तच्चित्रमा भरा	सम्भ्यं वाजिनीवति । येन लोकं च तनयं च धामहे	१३
उषो अघेह गौम	त्यश्वावति विभावरि । रेवदस्मे व्युच्छन्नृतावति	१४
युक्षत्रा हि वाजिनीव	त्यश्वा अद्यारुणा उषः । अथा नो विश्वा सौभगाण्या वह	१५ ३८

॥५॥ ( ऋ० १।१२३।१-२० )

( ३९-५८ ) कुत्स आङ्गिरसः । १ ( उत्तरार्धस्य ) राशिश्च । त्रिष्टुप् ।

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागा	चित्रः प्रकृतो अजनिष्ट विभ्वा ।	
यथा प्रसृता सवितुः सवायं	एवा रात्र्युषसे योनिमारैक्	१
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागा	दारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः ।	
समानर्धन्धू अमृते अनूची	घात्रा वर्णा चरत आमिनाने	२ ४०
समानो अध्वा स्वसौरनन्त	स्तमन्यान्यां चरतो देवशिष्टे ।	
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके	नक्तोषासा समनसा विरूपे	३
भास्वती नेत्री सूनृताना	मचेति चित्रा वि दुरो न आवः ।	
प्राप्या जगद्व्यु नो रायो अरुय	दुषा अजीगर्भुवनानि विश्वा	४
जिह्मशयेष्टु चरितवे मघो	न्याभोगय इष्टये राय उ त्वम् ।	
दुभ्रं पश्यन्नय उर्विया विचक्ष	उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा	५
क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया	इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै ।	
विसदृशा जीविताभिप्रचक्ष	उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा	६
एषा दिवो दृहिता प्रत्यदर्शि	व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः ।	
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व	उषो अघेह सुभगे व्युच्छ	७ ४५
परायतीनामन्वेति पार्थ	आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम् ।	
व्युच्छन्ती जीवमुदीरय	न्त्युपा मृतं कं चन बोधयन्ती	८
उषो यदुमि समिधे चकथ	वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य ।	
यन्मानुपान् युक्ष्यमाणौ अजीग	स्तद् देवेषु चकृषे भद्रमम्रः	९
क्रियात्या यत् समया भवति	या व्युष्टुर्याश्च नूनं व्युच्छान् ।	
अनु पूर्वाः कृपते वाचशाना	प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति	१०
इयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्	व्युच्छन्तीमुपसं मर्त्यासः ।	
अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभू	दो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान्	११ ४९

यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुभ्रावरीं सूनृतां ईरयन्ती । सुमङ्गलीर्विभ्रती देववीति—मिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ	१२	५०
शश्वत् पुरोषा व्युवास देव्य—थो अद्येदं व्यावो मघोनी । अथो व्युच्छादुत्तरां अनु घ्न—नजरामृतां चरति स्वधार्भिः	१३	
व्युञ्जिभिर्दिव आतास्वद्यौ—दप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः । प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वै—रोषा याति सुयुजा रथेन	१४	
आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना । ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्युश्चैत्	१५	
उदीर्ध्व जीवो असुर्न आगा—दप प्रागात् तम आ ज्योतिरेति । आरैक् पन्थां यातवे सूर्याया—गन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः	१६	
स्युर्मना वाच उदियति वह्निः स्तवानो रेभ उपसो विभातीः । अद्या तदुच्छ गृणते मघो—न्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत्	१७	५५
या गोमतीरुपसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति द्रागुपे मर्त्याय । वायोरिव सूनृतानामुदके ता अश्वदा अश्ववत् सोमसुत्वा	१८	
माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्वृहती वि माहि । प्रशस्तिक्वद् ब्रह्मणे नो व्युच्छा नो जने जनय विश्ववारे	१९	
यच्चित्रमप्र उपसो वहन्ती—जानाय शशमानाय भद्रम् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	२०	५८

॥६॥ ( ऋ० १।१२३।१-१३ )

( ५९-८३ ) कक्षीवान् दैर्घतमस ओंशिजः । त्रिष्टुप् ।

पृथु रथो दक्षिणाया अयोज्यै—न देवासो अमृतासो अस्थुः । कृष्णादुदस्थादुर्याह विहाया—श्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षर्याय	१	
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादवोधि जयन्ती वाजं बृहती सनुत्री । उच्चा व्यरुयद् युवतिः पुनर्भू—रोषा अगन् प्रथमा पूर्वहृता	२	
यदघ्र भागं विभजासि नृभ्य उपो देवि मर्त्यत्रा सुजाते । देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय	३	
गृहगृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना । सिषांसन्ती द्योतना शश्वदागा—दग्रमग्रमिद् भजते वसूनाम्	४	६९

भगस्य स्वसा वरुणस्य जामि—रुषः घ्नते प्रथमा जरस्व ।	
पश्चा स दद्या यो अघस्य धाता जयेम तं दक्षिणया रथेन	५
उदीरतां सुनृता उत पुरेन्धी—रुदमयः शुशुचानासो अस्थुः ।	
स्पर्हा वसनि तमुसापगूळहा—विष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः	६
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति विषुरूपे अहनी सं चरेते ।	
परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाक—रद्यौदुषाः शोशुचता रथेन	७ ६५
सदशीरद्य सदशीरिदु श्वो दीर्घं संचन्ते वरुणस्य धाम ।	
अनवद्यास्त्रिशतं योजना—न्येकैः कृत्तुं परि यन्ति सद्यः	८
जानत्यहः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची ।	
ऋतस्य योषा न मिनाति धामा—हरहर्निष्कृतमाचरन्ती	९
कन्येव तन्वाद्दे शाशदानाँ एषि देवि देवमियक्षमाणम् ।	
संस्मर्यमाना युवतिः पुरस्ता—द्राविवक्षांसि कृणुषे विभाती	१०
सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा—विस्तन्वं कृणुषे दृशे कम् ।	
भद्रा त्वमृषो वितरं व्युच्छ न तत् ते अन्या उषसो नशन्त	११
अश्वावतीर्गोमतीविश्ववारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।	
परां च यन्ति पुनरा च यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः	१२ ७०
ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रंभद्रं कर्तुमस्मासुं धेहि ।	
उषो नो अद्य सुहवा व्युच्छा—स्मासु रायो मववत्सु च स्युः	१३

॥७॥ ( ऋ० १।१२४।१-१३ )

उषा उच्छन्ती समिधाने अग्रा उद्यन्त्सूर्य उर्विया ज्योतिरश्नेत् ।	
देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासावीद् द्विपत् प्र चतुष्पादित्यै	१
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।	
ईयुषीणामुपमा शश्वतीना—मायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत्	२
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।	
ऋतस्य पन्थामन्वेति माधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति	३
उषो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षो नोधा इवाविरकृत प्रियाणि ।	
असन्न संसतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात् पुनरेयुषीणाम्	४ ७५

पूर्वे अर्धे रजसां अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम् ।	
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओभा पृणन्तीं पित्रोरुपस्थां	५
एषेदेषा पुरुतमां दृशे कं नाजामिं न परिं वृणक्ति जामिम् ।	
अरेपसां तन्वाइं शाशदानां नार्धादीषते न महो विभाती	६
अभ्रातेव पुंस एति प्रतीचीं गतारुगिव सनये धनानाम् ।	
जायेव पत्यं उशती सुवासां उषा हस्तेव नि रिणीते अप्सः	७
स्वसा स्वस्ते ज्यायस्यै योनिमारैर्गपैत्यस्याः प्रतिचक्ष्यैव ।	
व्युच्छन्तीं रश्मिभिः सूर्यस्याञ्ज्यङ्क्ते समनगा इव ब्राः	८
आसां पूर्वासामहसु स्वसृणां मपरा पूर्वाभ्येति पश्चात् ।	
ताः प्रत्नवन्न्यसीर्ननमसै रेवदुच्छन्तु सुदिना उपासः	९ ८०
प्र बोधयोषः पृणतो मघो न्यबुध्यमानाः पृणयः ससन्तु ।	
रेवदुच्छ मघवद्भ्यो मघोनि रेवत् स्तोत्रे स्रुते जारयन्ती	१०
अवेगमंश्चैद् युवतिः पुरस्ताद् युङ्क्ते गवामरुणानामनीकम् ।	
वि नूनमुच्छादसति प्र केतुर्गृहं गृहमुप तिष्ठाते अग्निः	११
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपमन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।	
अमा सते वहसि भूरिं वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय	१२
अस्तोद्वं स्तोम्या ब्रह्मणा मे ऽवीवृधध्वस्रुशतीरुपासः ।	
युष्माकं देवीरवसा सनेम सहस्रिणं च शितिनें च वाजम्	१३ ८९

॥८०॥ ( ऋ० ३।६।१-७ )

( ८५-९१ ) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि ।	
पुराणी देवि युवतिः पुरंधि रनुं व्रतं चरसि विश्ववारे	१
उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा स्रुता इरयन्ती ।	
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो ये	२
उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्वा तिम्रस्यमृतस्य केतुः ।	
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व	३
अव स्यूमेव चिन्वती मघो न्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।	
स्वर्जनन्ती सुमगां सुदंसा आन्ताद् द्विषः पप्रथ आ पृथिष्याः	४ ८८

अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम् ।  
 ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत् प्र रोचना रुच्ये रण्वसंहक्  
 ऋतावरी दिवो अर्केरबो—ध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ।  
 आयतीमघ उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः  
 ऋतस्य बुध उषसामिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश ।  
 मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा

५

६

७

९१

॥९॥ (ऋ० ४।५।१२-११)

(९२-१०९) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

इदमु त्यत् पुरुतमं पुरस्ता—ज्ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात् ।  
 नूनं दिवो दुहितरो विभाती—र्गातुं कृणवन्नृषसो जनाय  
 अस्थुरु चित्रा उषसः पुरस्ता—न्मिता इव स्वरवोऽध्वरेषु ।  
 व्युं व्रजस्य तमसो द्वारो—च्छन्तीरव्रच्छुचयः पावकाः  
 उच्छन्तीरघ चितयन्त भोजान् राधोदेशांयोषसो मघोनीः ।  
 अचित्रे अन्तः पणयः सस—न्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये  
 कुवित स देवीः सनयो नवो वा यामो वभूयादुषसो वो अघ ।  
 येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रेवती रेवदुष  
 यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः ।  
 प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाञ्चतुष्पाञ्चरथाय जीवम्  
 कं स्विदासां कतमा पुराणी यया विधाना विदुधुर्ऋभूणाम् ।  
 शुभं यच्छुभ्रा उपसश्वरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः  
 ता घा ता भद्रा उषसः पुरासु—रभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः ।  
 यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवच्छंसन् द्रविणं सद्य आप  
 ता आ चरन्ति समना पुरस्तात् समानतः समना पप्रथानाः ।  
 ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते  
 ता इश्वेक्षुव समना समानी—रमीतवर्णा उषसश्वरन्ति ।  
 गूहन्तीरभवमसितं रुशन्निः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः  
 रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः ।  
 स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम

१

२

३

४

९५

५

६

७

८

९

१०

१०१

तद् वो दिवो दुहितरो विभाती—रुपं ब्रुव उपसो यज्ञकंतुः ।  
वयं स्याम यज्ञसो जनेषु तद् द्यौश्च धृत्तां पृथिवी च देवी ११

॥१०॥ ( ऋ० ४।५२।१-७ ) गायत्री ।

प्रति ष्या सूनरी जनीं व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अंदिशि दुहिता १  
अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सर्वाभूदश्विनोरुषाः २  
उत सर्वास्यश्विनोरुत माता गवामसि । उतोषो वस्व ईशिषे ३ १०९  
यावयद् द्वेषसं त्वा चिकित्वित् सूनृतावरि । प्रति स्तोमैरभ्रुत्स्महि ४  
प्रति भद्रा अदक्षत गवां सर्गा न रश्मयः । ओषा अप्रा उरु जयः ५  
आपप्रुषी विभावरि व्यावज्योतिषा तमः । उषो अनु स्वधामव ६  
आ द्यां तनोषि रश्मिभि रान्तरिक्षमुरु प्रियम् । उषः शुक्रेण शोचिषा ७

॥११॥ ( ऋ० ५।७९।१-१० )

( ११०-१२५ ) सत्यश्रवा आत्रेयः । पङ्क्तिः ।

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।  
यथा चिन्नो अवोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते १ ११०  
या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।  
सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते २  
सा नो अद्याभ्रदसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः ।  
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ३  
अभि ये त्वा विभावरि स्तोमैर्गृणन्ति वह्यः ।  
मघैर्मघोनि सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयः सुजाते अश्वसूनृते ४  
यच्चिद्धि ते गणा इमे हृदयन्ति मघत्तये ।  
परि चिद् वष्टयो दधुर्ददतो राधो अह्यं सुजाते अश्वसूनृते ५  
एषु धा वीरवद् यज्ञ उषो मघोनि सूरिषु ।  
ये नो राधांस्यह्या मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते ६ ११५  
तेभ्यो द्युम्नं बृहद् यज्ञ उषो मघोन्या वह ।  
ये नो राधांस्यह्या गव्या भर्जन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते ७  
उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः ।  
साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचन्निरश्मिभिः सुजाते अश्वसूनृते ८ ११७  
१० [ उषा ] १

व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः ।  
 नेत् त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरौ अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते ९  
 एतावद् वेदेषस्त्वं भूर्यो वा दातुमर्हसि ।  
 या स्तोत्रभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते १०

॥१२॥ ( ऋ० ५।८०।१-६ ) त्रिष्टुप् ।

द्युतर्घामानं बृहतीमृतेन ऋतावरीमरुणसुं विभातीम् ।  
 देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रांसो मतिभिर्जरन्ते १ १२०  
 एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती यात्यग्रे ।  
 बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्वाम् २  
 एषा गोभिररुणेभिर्युजाना ऽस्त्रेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे ।  
 पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति ३  
 एषा व्येनी भवति द्विबर्ही आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् ।  
 ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ४  
 एषा शुभ्रा न तन्वो विदानो ध्रुवं स्नाती दृश्ये नो अस्थात् ।  
 अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात् ५  
 एषा प्रतीची दुहिता दिवो नृन् योषेव भद्रा नि रिणीति अप्सः ।  
 व्युण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः ६ १२५

॥१३॥ ( ऋ० ६।६४।१-६ )

( १२६-१३७ ) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

उदु श्रिय उषसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्तः ।  
 कृणोति विश्वा सुपथा सुगा न्यभूद वस्वी दक्षिणा मघोनी १  
 भद्रा ददृक्ष उर्विया वि भास्युत् ते शोचिर्भानवो घामपसन् ।  
 आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोषो देवि रोचमाना महोभिः २  
 वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगांमुर्विया प्रथानाम् ।  
 अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून् बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा ३  
 सुगोत ते सुपथा पर्वते ष्ववाते अपस्तरसि स्वभानो ।  
 सा न आ वह पृथुयामनृष्वे रयि दिवो दुहितरिष्यध्वै ४ १२९

सा बृह योक्षभिरवातो—षो वरं वहसि जोषमनु ।  
 त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्वहूतौ मंहना दर्शता भूः ५ १३०  
 उत् ते वर्यश्चिद् वसतेरपमन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।  
 अमा सते वहसि भूरिं वाम—मुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ६

॥१४॥ ( ऋ० ६।६५।१-६ )

एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितीरुच्छन्ती मानुषीरजीगः ।  
 या भानुना रुशता राम्या—स्वज्ञायि तिरस्तमसश्चिदुकून् १  
 वि तद् ययुररुणयुग्भिरश्चै—श्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः ।  
 अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्ती—विं ता बाधन्ते तम ऊर्म्यायाः २  
 श्रवो वाजभिमूर्जं वहन्ती—निं दाशुषं उषसो मर्त्याय ।  
 मघोनीवीरवत् पत्यमाना अघो धात विधते रत्नमद्य ३  
 इदा हि वो विधते रत्नमस्ती—दा वीरायं दाशुषं उषासः ।  
 इदा विप्राय जरते यदुकथा नि ष्म मावते वहथा पुरा चित् ४ १३५  
 इदा हि तं उषो अद्रिसानो गोत्रा गवामङ्गिरसो गृणान्ति ।  
 व्युक्तेण विभिदुर्ब्रह्मणा च सत्या नृणामभवद् देवहूतिः ५  
 उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद् विधते मघोनि ।  
 सुवीरं रयिं गृणते रिरीह्यु—रुगायमधि धेहि श्रवो नः ६

॥१५॥ ( ऋ० ७।४१।७ )

( १३८-१७८ ) मैत्रावरुणिवसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

अश्वावतीगोमतीर्न उपासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।  
 घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

( ॥१६॥ ( ऋ० ७।७५।१-८ )

व्युषा आवो दिविजा ऋतेना—ऽऽविष्कृण्वाना महिमानमागात् ।  
 अप द्रुहस्तम आवरजुष्ट—मङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः १  
 महे नो अद्य सुवितार्य वो—ध्युषो महे सौभगाय प्र यन्धि ।  
 चित्रं रयिं यज्ञसं धेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम् २  
 एते त्ये भानवो दर्शताया—श्चित्रा उषसो अमृतास आगुः ।  
 जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्या—पृणन्तो अन्तरिक्षा व्यंस्थुः ३ १४१



एषा स्या युजाना पराकात् पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति ।  
 अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी ४  
 वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम् ।  
 ऋषिष्टुता जरयन्ती मघो न्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना ५  
 प्रति द्युतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदश्रन्नुषसं वहन्तः ।  
 याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधते जनाय ६  
 सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।  
 रुजद् दृळ्हानि दददुस्त्रियाणां प्रति गावं उषसं वावशन्त ७ १४५  
 नू नो गोमद् वीरवद् धेहि रत्नमुषो अश्ववत् पुरुभोजो अस्मे ।  
 मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कूर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८

॥१७॥ ( ऋ० ७।७६।१-७ )

उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत् ।  
 क्रत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुःराविरकर्भुवनं विश्वमुषाः १  
 प्र मे पन्था देवयानां अदश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः ।  
 अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात् प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः २  
 तानीदहानि बहुलान्यासन् या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य ।  
 यतः परि जार इवाचरन्त्युषो ददृक्षे न पुनर्यतीव ३  
 त इद् देवानां सधमाद आसन्नृतावानः क्वथयः पूर्व्यासं ।  
 गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्त्सत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम् ४ १५०  
 समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते ।  
 ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः ५  
 प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्वुधः सुभगे तुष्ट्वांसः ।  
 गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व ६  
 एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः ।  
 दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥१८॥ ( ऋ० ७।७७।१-६ )

उपो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै ।  
 अभूदुभिः समिधे मानुषाणामकृज्योतिर्बाधमाना तमांसि १ १५४

<sup>पृथुत्वश्च</sup> विश्वं प्रतीची सप्रथा उदस्थाद् <sup>दीप्तम्</sup> रुशद् वासो विभ्रती शुक्रमश्वीत् ।  
 हिरण्यवर्णा सुदशीकसदृग् गवां माता नेत्र्यह्वामरोचि २ १५५  
 देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदशीकमश्वम् ।  
 उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता ३  
 अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वीं गव्युत्तिमभयं कृधी नः ।  
 यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि ४  
 अस्मे श्रेष्ठैर्भिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः ।  
 तेषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्चावद् रथवच्च राधः  
 मां त्वां दिवो दुहितवर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः ।  
 प्रास्मासु धा रयिमध्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

<sup>पृथुत्वश्च</sup>

॥१९॥ ( ऋ० ७।७८।१-५ )

प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्नध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते ।  
 उषो अर्वाचां बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि १ १६०  
 प्रति पीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गुणन्तः ।  
 उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरिताप देवी  
 एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन् पुरस्ताज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभाती ३  
 अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निं मपाचीनं तमो अगादजुष्टम्  
 अचेति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम् ।  
 आस्थाद् रथं स्वधया युज्यमानमा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति ४  
 प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्ताऽस्माकांसो मघवानो वयं च ।  
 तिल्विलायध्वेषुपसो विभातीर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

इत्त १४२-२१

॥२०॥ ( ऋ० ७।७९।१-५ )

व्युषा आवः पथ्याइ जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्वाधयन्ती ।  
 सुसदृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद् वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः १ १६५  
 व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्नु विशो न युक्ता उषसो यतन्ते ।  
 सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू २  
 अभृदुषा इन्द्रतमा मघो न्यजीजनत् सुविताय श्रवांसि ।  
 वि दिवो देवी दुहिता दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि ३ १६७

तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत् स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना ।  
 यां त्वा जजुषुषभस्या रवेण वि दृळ्हस्य दुरो अद्रेरौणोः  
 देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मर्त्यक् सूनृता इरयन्ती ।  
 व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥२१॥ ( ऋ० ७।८०।१-३ )

प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीभिर्विप्रांसः प्रथमा अबुधन् ।  
 विवर्तयन्तीं रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा  
 एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढी तमो ज्योतिषोषा अबोधि ।  
 अग्र एति युवतिरह्याणा प्राचिकितत् सूर्यं यज्ञमग्निम्  
 अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।  
 घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

॥२२॥ ( ऋ० ७।८१।१-६ ) प्रगाथः = ( विषमा बृहती+समा सतोबृहती ) ।

प्रत्यु अदश्यायत्यु१—च्छन्तीं दुहिता दिवः ।  
 अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरीं  
 उदुस्त्रियाः सृजते सूर्यः सचौ उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।  
 तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेनं गमेमहि  
 प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्समहि ।  
 या वहसि पुरु स्पार्ह वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयं ।  
 उच्छन्ती या कृणोषि मंहना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे ।  
 तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः  
 तच्चित्रं राध आ भरोपो यद् दीर्घश्रुत्तमम् ।  
 यत् ते दिवो दुहितर्मतेभोजनं तद् रास्व भुनजामहे  
 श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजो अस्मभ्यं गोमतः ।  
 चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्यु१—षा उच्छदप स्त्रिधः

॥२३॥ ( ऋ० ८।१०१।१३ )

( १७९ ) जमदग्निर्भागवः । उषाः सूर्यप्रभा वा । बृहती ।

इयं या नीच्यकिणीं रूपा रोहिण्या कृता ।  
 चित्रेव प्रत्यदश्यायत्यु१—न्तर्दशसु बाहुषु

जनीयवा तज्जिज्ञा ॥२४॥ (ऋ० १०।१७२।१-४)  
 (१८०-१८३) संवर्त आङ्गिरसः। द्विपदा विराद् ।  
 आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनि यद्वाभिः १ १८०  
 आ याहि वस्व्या धिया मंहिष्ठो जार्यन्मखः सुदानुभिः २  
 पितुभृतो न तन्तुमित् सुदानवः प्रति दध्मो यजामसि ३  
 उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनि सुजातता ४  
 ॥२५॥ (१८४) ( वा० य० १२।४६ )

संज्ञानमसि कामधरणं मयि ते कामधरणं भूयात् ।  
 अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि चितं स्थ परिचितं ऊर्ध्वचितं श्रयध्वम् ४६ १८४  
 ॥२६॥ ( साम० ३०३, ७५१ ) +  
 (१८५-१८६) वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । बृहती ।

प्रत्यु अदर्श्यायत्यूर्च्छन्ती दुहिता दिवः ।  
 अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी २०३  
 ॥२७॥ ( अथर्व० १९।१२।१ )  
 वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनि सुजातता ।  
 अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः १ १८५

उषा-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योषसः । (दुःष्वप्प्रमम्)

॥२८॥ ( ऋ० ८।४७।१४-१८ )  
 (१८७-१९१) त्रित आप्त्यः । महापङ्क्तिः ।

यच्च गोषु दुःष्वप्यं यच्चास्मे दुहितर्दिवः ।  
 त्रिताय तद् विभावर्याप्त्याय परा वहा नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १४  
 निष्कं वा धो कृणवते स्रजं वा दुहितर्दिवः ।  
 त्रिते दुःष्वप्यं सर्वं माप्त्ये परि दद्यस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १५  
 तदभाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे ।  
 त्रिताय च द्विताय चोषो दुःष्वप्यं वहा नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १६ १८९

यथा कलां यथा शफं यथ ऋणं संनयामसि ।

एवा दुःष्वप्न्यं सर्वं माप्तये संनयामस्य नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १७ १९०

अजैष्माघासनाम् चाभूमानागसो वयम् ।

उषो यस्माद् दुःष्वप्न्यादभैष्माप तदुच्छत्वनेहसो व ऊतयः

सुऊतयो व ऊतयः

१८

## (२) उषासानक्ता ।\*

॥२९॥ (१९२-१९४) (वा० य० २०।४१)

उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पर्यस्वती सुदुधे शूरामिन्द्रम् ।

तन्तुं ततं पेशसा संवर्यन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे

४१

॥३०॥ (वा० य० २८।१४,३७)

देवी उषासानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्यह्वेताम् ।

दैवीर्विशः प्रायांसिष्टां सुप्रीति सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज

१४

देवी उषासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम् ।

अनुष्टुभा छन्दसेन्द्रियं बलमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज

३७ १९४



\* वै० (अभिः) [आप्रसिक्तानि] १९१२; १९२४; १९३६; १९४७; १९५८; १९६९; १९७९; १९८६; १९९७; २००८; २०१९; २०३१; २०४२; २०८९; २१११; २१२३;

# उषादेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[ २ ] १।३०।२१ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । उषाः )  
अश्वे न चित्रे अरुषि ।

( १०४ ) ४।५२।१ ( वामदेवो गौतमः । उषाः )  
अश्वेव चित्रारुषी ।

[ ३ ] १।३०।२२ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । उषाः )  
अस्मे रथि नि धारय ।

( इन्द्रः २४८८ ) १०।२४।१ ( विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा,  
वसुकृद्वा वासुकः । इन्द्रः )  
.....धारय वि वो मदे ।

[ ४ ] १।४८।१ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषा )  
व्युच्छा दुहितर्दिवः ।

( ११२ ) ५।७९।३ = ( ११८ ) ५।७९।९ ( सलश्रवा  
आत्रेयः । उषाः )

[ ५ ] १।४८।२ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )  
चोद राषो मघोनाम् ।

( आयुर्वेद० १०७९ ) ७।९६।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
सरस्वती )

[ ११ ] १।४८।८ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )  
चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।

अप...दुहिता दिव उषा उच्छदप स्निधः ।

( १७३ ) ७।८१।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )  
.....दुहिता दिवः ।

अपो...चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।

( १७८ ) ७।८१।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )  
उषा उच्छदप स्निधः ।

[ १६ ] १।४८।१३ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )  
प्रति भद्रा अक्षत ।

( १०७ ) ४।५२।५ ( वामदेवो गौतमः । उषाः )

[ १७ ] १।४८।१४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )

ये चिद्धि स्वाश्रयः पूर्वं ऊतये जुहुरेऽवसे महि ।

सानः स्तोमोऽभि गृणीहि राधसोषः शुक्लेण  
शोचिषा ॥

( अश्विनौ ४२६ ) ८।८।६ ( सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहुरेऽवसे नरा ।

आ यातमश्विना गतमुपेमां सुहृतिं मम ।

दे० [ उषा ] ३

( १०९ ) ४।५२।७ ( वामदेवो गौतमः । उषाः )

उपः शुक्लेण शोचिषा ।

( अश्विनौ ४१३ ) ८।५।३० ( ब्रह्मातिथि काण्वः । अश्विनौ )  
उपेमां सुहृतिं मम ।

( अश्विनौ ५३०-५३२ ) ८।३।५।२२-२४ ( श्यावाश्व  
आत्रेयः । अश्विनौ )

आ यातमश्विना गतम् ।

[ १८ ] १।४८।१५ प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )

प्र नो यच्छतादवृकं पृथु च्छर्दिः ।

( अश्विनौ ४४४ ) ८।९।१ ( शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ )  
प्रारमै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिः ।

[ २० ] १।४९।१ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )

दिवश्चिद् रोचनादधि ।

( मरुतः २७५ ) ५।५६।१ ( श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः )  
( अश्विनौ ४२७ ) ८।८।७ ( सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ )

[ २३ ] १।४९।४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )

विश्वमाभासि रोचनम् ।

१।५०।४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । सूर्यः )

विश्वमा भासि — ।

( इन्द्रः १४०३ ) ३।४४।४ ( गाथिनो विश्वामित्रः । इन्द्रः )

विश्वमा भासि रोचनम् ।

[ २६ ] १।९२।३ ( गोतमो राहूगणः । उषाः )

इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे ।

( अश्विनौ ४६ ) १।४७।८ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )  
इषं पृथ्वन्ता सुकृते सुदानवे ।

[ २७ ] १।९।२४ ( गोतमो राहूगणः । उषाः )

ज्योतिर्विश्वरमै भुवनाय कृण्वती ।

( अग्निः ७४६ ) ४।१४।२ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )

— — कृण्वन् ।

[ २९ ] १।९।१६ ( गोतमो राहूगणः । उषाः )

अतारिषम तमसस्वारमस्य ।

( अश्विनौ २०७ ) १।१८।३।६ = ( अश्विनौ २१३ ) १।१८।४।६

- ( अगस्त्यो मैत्रावरुणः । अश्विनौ )  
अतारिष्य तमसस्वारमस्य प्रति वां स्तोमो ।  
( अश्विनो ३७३ ) ७।७३।१ ( मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अश्विनौ )  
अतारिष्य तमसस्वारमस्य प्रति स्तोमं ।  
[ ३० ] १।९२।७ ( गौतमो राहूगणः । उषाः )  
भास्वती नेत्री सूनुतानाम् ।  
( ४२ ) १।११३।४ ( कुत्स आङ्गिरसः । उषाः )  
[ ३४ ] १।९२।११ ( गौतमो राहूगणः । उषाः )  
प्रमिनती मनुष्या युगानि ।  
[ ३५ ] १।९२।१२ ( गौतमो राहूगणः । उषाः )  
अमिनती देव्यानि व्रतानि ।  
( ७३ ) १।१२४।२ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
अमिनती देव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या  
युगानि ।  
[ ३६ ] १।९२।१३ ( गौतमो राहूगणः । उषाः )  
उपस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।  
येन तोकं च तनयं च धामहे ।  
४।५।५।९ ( वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः )  
उपो मघोन्या वह ।  
भस्मभ्यं वाजिनीवति ।  
( सोमः ६६१ ) ९।७४।५ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः ।  
पवमानः सोमः )  
येन तोकं च तनयं च धामहे ।  
[ ४२ ] १।११३।४=(३०) १।९२।७  
[ ४२-४४ ] १।११३।४-६ ( कुत्स आङ्गिरसः । उषाः )  
उषा भजीगमुंवनानि विश्वा ।  
[ ४५ ] १।११३।७ ( कुत्स आङ्गिरसः । उषा )  
पुषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि..... शुक्रवासाः ।  
उपो भघेह सुभगे व्युच्छ ।  
( ७४ ) १।१२४।३ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
—प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना ।  
( ७१ ) १।१२३।१३ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
उषो नो अथ सुहवा व्युच्छ ।  
[ ५२ ] १।११३।१४ ( कुत्स आङ्गिरसः । उषाः )  
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरद्वैरोषा याति सुयुजा रथेन ।  
( अग्निः ७४७ ) ४।१४।३ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )  
प्रबोधयन्ती सुविताय देव्युषा ईयते सुयुजा रथेन ।  
[ ५३ ] १।११३।१५ ( कुत्स आङ्गिरसः । उषाः )  
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्नैत् ।  
( ७३ ) १।१२४।२ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )

- ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा व्यश्नैत् ।  
[ ५४ ] १।११३।१६ ( कुत्स आङ्गिरसः । उषाः )  
आगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ।  
( सोमः ११४५ ) ८।४८।११ ( प्रगाथो घौरः काण्वः । सोमः )  
अगन्म — — ।  
[ ६३ ] १।१२३।५ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
उषः सूनुते प्रथमा जरस्व ।  
( १५२ ) ७।७६।६ ( मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । उषाः )  
उषः सुजाते प्रथमा जरस्व ।  
[ ७० ] १।१२३।१२ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।  
( अग्निः ७९३ ) ५।४।४ ( वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः )  
यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।  
[ ७१ ] १।१२३।१३=( ४५ ) १।११३।७  
[ ७३ ] १।१२४।२=( ३५ ) १।९२।१२  
[ „ ] १।१२४।२=( ३४ ) १।९२।११  
[ „ ] १।१२४।२=( ५३ ) १।११३।१५  
[ ७४ ] १।१२४।३=( ४५ ) १।११३।७  
[ „ ] १।१२४।३ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
..... पुरस्तात् ।  
ऋतस्य पन्ध्रामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।  
( १२३ ) ५।८०।४ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )  
१०।६६।१३ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
ऋतस्य पन्ध्रामन्वेमि साधुया ।  
[ ७६ ] १।१२४।५ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
व्यु प्रथते वितरं वरीय ।  
( अग्निः २००६ ) १०।११०।४ ( जमदग्निर्भार्गवः, रामो  
वा जामदग्न्यः । आप्रीसूक्तं [ बर्हिः ] )  
[ ७८ ] १।१२४।७ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
जायेव पत्य उशती सुवासाः ।  
( अग्निः ६६७ ) ४।३।२ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )  
= १०।७१।४ ( बृहस्पतिराङ्गिरसः । ज्ञानम् )  
( अग्निः १६६३ ) १०।९१।१३ ( अरुणो वैतहव्यः । अग्निः )  
[ „ ] १।१२४।७ उषा हस्त्रेव नि रिणीते अत्तः ।  
( १२५ ) ५।८०।६ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )  
योषेव भद्रा नि— ।  
[ ८१ ] १।१२४।१० ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिशः । उषाः )  
पृणतो मघोन्यधुष्यमानाः पणयः ससन्तु ।  
रेवदुच्छ मघवस्यो मघोनि ।  
( ९४ ) ४।५।३ ( वामदेवो गौतमः । उषाः )

उच्छन्तीरय चितयन्त — — मघोनीः ।  
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानाः ।  
[ ८३ ] १।१२४।१२ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः )

= (१३१) ६।६४।६ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । उषाः )  
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपसन् नरश्च ये पितृभाजो व्युष्टौ ।  
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुपे मर्त्याय ॥

### ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[ ९१ ] ३।६१।७ ( गाथिनो विश्वामित्रः । उषाः )  
वृषा मही रोदसी आ विवेश ।

( अग्निः १६४५ ) १।०।८०।२ ( अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा, सन्तिर्वाजंभरो वा । अग्निः )  
अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।

### ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[ ९४ ] ४।५१।३ ( वामदेवो गौतमः । उषाः )  
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्तु ।  
( ८१ ) १।१२४।१० ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः )  
अबुध्यमानाः पणयः ससन्तु ।  
[ १०१ ] ४।५१।१० ( वामदेवो गौतमः । उषाः )  
सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।  
( इन्द्रः २११० ) ६।४७।१२ ( गर्गो भारद्वाजः । इन्द्रः )  
( ,, २७७६ ) १।०।१३।१६ ( सुकीर्तिः काक्षीवतः । इन्द्रः )  
( सोमः ७९९ ) ९।८९।७ ( उशना क.व्यः । पवमानः सोमः )

( सोमः ८३२ ) ९।९५।५ ( प्रस्कन्वः काण्वः । पवमानः सोमः )  
[ १०४ ] ४।५२।२ ( वामदेवो गौतमः । उषाः )  
अश्वेव चित्रारुषी ।  
( २ ) १।३।०।२१ ( शुनःशेष आजीर्गतिः । उषाः )  
अश्वे न चित्रे अरुषि ।  
[ १०७ ] ४।५२।५ ( वामदेवो गौतमः । उषाः )  
प्रति भद्रा अरुषत ।  
( १६ ) १।४८।१३ ( प्रस्कन्वः काण्वः । उषाः )  
[ १०९ ] ४।५२।७ = ( १७ ) १।४८।१४  
उषः शुक्रेण शोचिषा ।

### ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[ ११०-१२ ] ५।७१।१-३ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )  
सत्यश्रवसि वाचये सुजाते अश्वसूनुते ।  
( ११०-११९ ) ५।७९।१-१० सुजाते अश्वसूनुते  
[ १११ ] ५।७९।२ = ( ११२ ) ५।७९।३  
सा ( यो ) व्युच्छ ( व्यौच्छः ) सहीयसि ।  
[ ११२ ] ५।७९।३ = ( ११८ ) ५।७९।९ व्युच्छा दुहितर्दिवः ।  
( ४ ) १।४८।१ प्रस्कन्वः काण्वः । उषाः )  
( १२ ) १।४८।९ चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।  
( २१ ) १।४९।२ ( प्रस्कन्वः काण्वः । उषाः )  
प्रावाय दुहितर्दिवः ।  
( १११ ) ५।७९।२ व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।  
( ११७ ) ५।७९।८ आ वहा दुहितर्दिवः ।  
[ ११५ ] ५।७९।६ पेषु धाः वीरब्द यशः ।  
( इन्द्रः १६५६ ) ४।३२।१२ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )

[ ११५-१६ ] ५।७९।६-७ ये नो राधांस्यहृथा ( ७ अरुषा )  
[ ११६ ] ५।७९।७ उषो मघोन्वा वह ।  
४।५५।९ ( वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः )  
[ ११७ ] ५।७९।८ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )  
उत नो गोमतीरिपः ।  
( अश्विनो ३९२ ) ८।५।९ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनो )  
( सोमः ४४१ ) ९।६२।२४ ( जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः )  
[ ११८ ] ५।७९।८ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।  
( अश्विनो ४५ ) १।४७।७ ( प्रस्कन्वः काण्वः । अश्विनो )  
( अदितिः ० २११ ) १।३३।७।२ ( परच्छेपो देवोदाभिः । मित्रावरुणो )  
( ७० ) १।१२३।१२ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः )  
यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।



- ( अदितिः ० ३७० ) ८।१०१।२  
( जमदग्निर्भागवः । मैत्रावरुणौ )  
[ १२३ ] ५।८०।४ ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु ।  
( ७४ ) १।१२४।३ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः )  
१०।६६।१३ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।  
[ १२३ ] ५।८०।४ प्रजानतीव न दिशो मिनाति ।  
( ७४ ) १।१२४।३ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः )

- [ १२५ ] ५।८०।६ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )  
योषेव भद्रा नि रिणीते भप्सः ।  
( ७८ ) १।१२४।७ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः )  
उषा ह्रस्वेव नि रिणीते भप्सः ।  
[ ” ] ५।८०।६ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )  
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि ।  
६।५०।८ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः [ सविता ] )  
व्यूर्ण्वते दाशुषे वार्याणि ।

### ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [ १३१ ] ६।६४।६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः )  
=( ८३ ) १।१२४।१२ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । उषाः )  
उत् ते वयश्चिद् वसतेरपसन् नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।  
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥

- [ १३४ ] ६।६५।३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उषाः )  
नि दाशुष उषसो मर्त्याय ।  
=( ८३ ) १।१२४।१२=( १३१ ) ६।६४।६  
उषो देवि दाशुषे मर्त्याय ।

### ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [ १३८ ] ७।४१।७=( १७२ ) ७।८०।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
उषाः )  
अथाघतीगोमतीर्न उपासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।  
घृतं मुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।  
[ ,, ] x ७।४१।७ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।  
=( १४६ ) ७।७५।८=( १५३ ) ७।७६।७  
=( १५९ ) ७।७७।६=( १६४ ) ७।७८।५  
=( १६९ ) ७।७९।५=( १७२ ) ७।८०।३  
[ १४४ ] ७।७५।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )  
दधानि रत्नं विधत्ते जनाय ।  
( अश्विनौ २५४ ) ४।४४।४ ( पुरुर्माऋहाजमीऋहा मोहोत्रा ।  
अश्विनौ )  
दधथो रत्नं विधत्ते जनाय ।  
[ १४५ ] ७।७५।७ देवी देवेभिर्यजता यज्ञत्रैः ।  
४।५६।२ ( वामदेवो गौतमः । यावापृथिवी ।  
देवी देवेभिर्यजते यज्ञैः ।  
[ १५१ ] ७।७६।५ ते देवानां न मिनन्ति व्रतानि ।  
( आयुर्वेद० ८७३ ) ७।४७।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आपः )  
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि ।  
[ १५२ ] ७।७६।६=( ६३ ) १।१२३।५  
उपः सुजाते ( ५ सूत्रे ) प्रथमा जरस्व ।

- [ १५७ ] ७।७७।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )  
भन्ति — दूरे अमित्रं — उर्वी गभ्यूतिमभयं कृधी नः ।  
( सोमः ६८५ ) ९।७८।५ ( कविर्भागवः । पवमानः सोमः )  
शत्रुमन्तिके दूरके .... उर्वी गभ्यूतिमभयं च नस्कृधि ।  
[ १६२ ] ७।७८।३ एता उ त्याः प्रत्यदशन् ।  
( आयुर्वेद० ७७८ ) १।१९१।५ ( अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।  
अ तृणसूर्याः [ विषधोपनिषद् ] )  
एत उ ले प्रत्यदशन् ।  
[ ,, ] ७।७८।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )  
अजीजनस्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।  
[ १७१ ] ७।८०।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )  
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना ।  
प्राचिकितस्सूर्यं यज्ञमग्निम् ।  
३।५३।१६ ( गाथिनो विश्वामित्रः । वाक् [ ससर्परी ] )  
सा पश्या नव्यमायुर्दधाना ।  
[ १७२ ] ७।८०।३=( १३८ ) ७।४१।७  
[ १७३ ] ७।८१।१ प्रत्यु भदइर्यायति ।  
( १७९ ) ८।१०१।१३ ( जमदग्निर्भागवः । उषाः सूर्यप्रभा वा )  
चित्रेव प्रत्यदइर्यायति ।  
[ १७३ ] ७।८१।१ = ( ११ ) १।४८।८  
उयोतिष्कृणोति सूनरी ।

[ १७३ ] ७।८।१।१ = ( ११ ) १।४।८।८  
उच्छन्ती ( ८ मघोनी ) दुहिता दिवः ।

[ १७८ ] ७।८।१।६ = ( ११ ) १।४।८।८  
उषा उच्छदप स्त्रियः ।

[ १७८ ] ७।८।१।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )

भवः सूरिभ्यो भृशृतं वसुत्वन्म ।

( इन्द्रः ३३२ ) ८।१३।१२ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )

## ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[ १७९ ] ८।१०।१।१३ ( जमदग्निर्भार्गवः । उषाः सूर्यप्रभा वा )

चित्रेव प्रत्यदृश्यायति ।

( १७३ ) ७।८।१।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । उषाः )

प्रत्यु अदृश्यायति ।



# दैवत-संहितान्तर्गत- उषादेवता-मन्त्राणां सूची।



<p>अचेति दिवो दुहिता १६३  अच्छा वो देवीमुषसं ८९  अजैष्माद्यासनाम १९१  अतारिष्म तमसः २९  अधि पेशांसि वपते २७  अन्तिवामा दूरे अमित्र० १५७  अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति ६५  अभि थे त्वा विभावरि ११३  अभूदुषा इन्द्रतमा १६७  अभ्रातेव पुंस एति ७८  अमिनती दैव्यानि व्रतानि ७३  अर्चन्ति नारीरपसो २६  अव स्यूमेव चिन्वती ८८  अवेयमश्वैद् युवतिः ८२  अश्ववतीर्गोमतीः ५; ७०; १३८; १७२  अश्वेव चित्रारुषी १०४  अस्तोद्ध्वं स्तोम्या ब्रह्मणा ८४  अस्थुर्द चित्रा उषसः ९३  अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिः १५८  आ घा योषेव मून्युषा ८  आ द्यां तनोषि रश्मिभिः १०९  आपम्रुषी विभावरि १०८  आ याहि वनसा सह १८०  आ याहि बस्व्या धिया १८१  आवहन्ती पोष्या वार्याणि ५३  आसां पूर्वसामहसु ८०  इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिः ३९  इदमु त्यत् पुस्तमं ९२  इदा हि त उषो अद्रिसानो १३६  इदा हि वो विधते १३५  इयं या नीच्यर्किणी १७९  इयुष्टे ये पूर्वतराम् ४९</p>	<p>उच्छन्ती या कृणोषि १७६  उच्छन्तीरय चितयन्त ९४  उच्छा दिवो दुहितः १३७  उत नो गोमतीरिष ११७  उत सखास्यदिवनोः १०५  उत् ते वयश्चिद् वसतेः ८३; १३१  उदपपन्नरुणा भानवो वृथा २५  उदीरतां सूनुता उत् ६४  उदीर्ध्वं जीवो असुर्न ५४  उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं १४७  उदु श्रिय उषसो रोचमाना १२६  उदुस्त्रियाः सृजते सूर्यः १७४  उपो अदर्शि शुन्ध्युवो ७५  उपो रुरुचे युवतिर्न योषा १५४  उवासोषा उच्छाच्च नु ६  उष आ भाहि भानुना १२  उषः प्रतीची भुवनानि ८७  उषस्तच्चित्रमा भर ३६  उषस्तमस्यां यशसं ३१  उषा अप स्वसुस्तमः १८३; १८६  उषा उच्छन्ती समिधाने ७२  उषासानकता बृहती १९२  उषो अयेह गोमती ३७  उषो देव्यमर्त्या वि ८६  उषो भद्रेभिरा गहि २०  उषो यदग्निं समिधे चकर्थ ४७  उषो यदद्य भानुना १८  उषो ये ते प्र यामेषु युजते ७  उषो वाजं हि वंस्व १४  उषो वाजेन वाजिनि ८५  ऋतम्य बुध्न उषसामिषण्यन् ९१  ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना ७१  ऋतावरी दिवो अर्कैः ९०</p>
---	---

एता उ त्या उषसः केतुं	२४
एता उ त्याः प्रत्यदश्रन्	१६१
एतावद् वेदुषस्त्वं	११९
एते त्ये भानवो दर्शताया०	१४१
एवेदेषा पुरुतमा दशे कं	७७
एषा गोभिररुणेभिर्यजाना	१२२
एषा जनं दर्शता बोधयन्ती	१२१
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि	४५; ७४
एषा नेत्री राधसः सूनुतानां	१५३
एषा प्रतीची दुहिता दिवो	१२५
एषायुक्त्व परावतः	१०
एषा व्येनी भवति द्विबर्हाः	१२३
एषा शुभ्रा न तन्वो विदानो	१२४
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना	१७१
एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः	१३२
एषा स्या युजाना पराकात्	१४२
एषु धा वीरवद् यशः	११५
कन्येव तन्वा शाशदानां	६८
कस्त उषः रुधप्रिये	१
क्रियात्या यत् समया भवाति	४८
कुवित् स देवीः सनयो नवो वा	९५
कः स्विदासां कतमा पुराणी	९७
क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया	४४
गृहं गृहमहना यात्यच्छ	६२
जानत्यहः प्रथमस्य नाम	६७
जिह्वास्ये चरितवे मघोनि	४३
त इद् देवानां सधमाद्	१५०
तच्चित्रं राध आ भर	१७७
तदज्ञाय तदपसे	१८९
तद् वो दिवो दुहितरो विभातीः	१०२
ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्	९९
ता इन्वेव समना समानीः	१००
ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुः	९८
तानीदहानि बहुलान्यासन्	१४९
तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व	१६८
तेभ्यो शुभ्रं बृहद् यशः	११६
त्वं त्येभिरा गहि	३
देवंदेवं राधसे चोदयन्ती	१६९
देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती	१५६

देवी उषासानक्ता	१९३; १९४
द्युतयामानं बृहतीं	१२०
निष्कं वा घा कृणवते	१८८
नू नो गोमद् वीरवद् धेहि	१४६
परायतीनामन्वेति पाथ	४६
पशून् चित्रा सुभगा प्रधाना	३५
पितृभृतो न तन्तुमित्	१८२
पुनःपुनर्जायमाना पुराणी	३३
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि	६०
पूर्वं अर्धं रजसो अपत्यस्य	७६
पृथू रथो दक्षिणाया अयो०	५९
प्रति केतवः प्रथमा अदश्रन्	१६०
प्रति त्वा दुहितर्दिवः	१७५
प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्त	१६४
प्रति त्वा स्तौमैरीळते वसिष्ठा	१५२
प्रति द्युतानामरुषासो	१४४
प्रति भद्रा अदक्षत	१०७
प्रति षीमामिर्जरते समिद्धः	१६१
प्रति ष्या सूनरी जनी	१०३
प्रति स्तोमेभिरुषसं	१७०
प्रत्यर्ची रशदस्या अदर्शि	२८
प्रत्यु अदर्श्यायत्यु ( त्यू ) च्छन्ती	१७३; १८५
प्र बोधयोषः पृणतो मघोनि	८१
प्र मे पन्था देवयाना अदश्रन्	१४८
भृगस्य स्वसा वरुणस्य जाभिः	६३
भद्रा ददक्ष उर्विया वि भासि	१२७
भास्वती नेत्री सूनुतानां	३०; ४२
महे नो अद्य बोधय	११०
महे नो अद्य सुविताय	१४०
माता देवानामदितेरर्नाकं	५७
यच्च गोषु दुःश्वप्यं	१८७
यच्चित्रमप्य उषसो वहन्ति	५८
यच्चिद्धि ते गणा इमे	११४
यथा कलां यथा शफं	१९०
यद्य भागं विभजासि	६१
यस्या रुशन्तो अर्चयः	१६
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा	५६
यां त्वा दिवो दुहितर्बर्धयन्ति	१५९
यावयद् द्वेषसं त्वा	१०६

यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः	५०	व्युच्छा दुहितर्दिवो	११८
या सुनीथे शौचद्रथे	१११	व्युषा आवः पथ्या जनानां	१६५
युक्त्वा हि वाजिनीवती	३८	व्युषा आवो दिविजा ऋतेन	१३९
यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः	९६	व्यूर्ण्वती दिवो अन्तां अबोधि	३४
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्वं ऊतये	१७	शश्वत् पुरोषा व्युवास देवी	५१
रयिं दिवो दुहितरो विभातीः	१०१	श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं	१७८
रुशद्रत्सा रुशती श्वेत्यागा०	४०	श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीः	१३४
चयं हि ते अमन्महि	२	संज्ञानमसि कामधरणं	१८४
वयश्चित् ते पतत्रिणो	२२	सत्या सत्येभिर्महती महद्भिः	१४५
वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो	१२८	सदशीरथ सदशीरिदु श्वो	६६
वप्रजिनीवती सूर्यस्य योषा	१४३	सं नो राया बृहता विश्वपेशसा	१९
वि तद् ययुररुणयुग्भिरश्वैः	१३३	समान ऊर्वे अधि संगतासः	१५१
वि या सृजति समनं व्यर्थिनः	९	समानो अध्वा स्वखोरनन्त०	४१
विश्वमस्या न.नाम चक्षसे	११	सह वामेन न उषो	४
विश्वं प्रतीची सप्रथाः	१५५	सा नो अद्याभरद् वसुः	११२
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे	१३	सा वह योक्षभिरवातो०	१३०
विश्वानि देवी भुवनाभिचक्षया	३२	सुगोत ते सुपथा पर्वतेषु	१२९
विश्वान् देवाँ आ वह सोमपीतये	१५	सुपेशसं सुखं रथं	२१
व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वयत्तून्	१६६	सुसंकाशा मातृमृष्टेव	६९
व्यञ्जिभिर्दिव आतास्वयौ०	५२	स्यूमना वाच उदियति वहिः	५५
व्युच्छन्ती हि रश्मिभिः	२३	स्वसा स्वस्त्रे ज्वायस्यै	७९



## दैवत-संहितान्तर्गत-

# उषादेवता-मन्त्राणां उपमा-सूची ।

अजिरः न वोल्हा ६,६४,३; १२८ तमः बाधते ।  
 अस्सत् न १,१२४,४; ७५ ससतः बोधयन्ती ।  
 अपसः न १,९२,३; २६ नारीः विष्टिभिः आ परावतः अर्चन्ति ।  
 अपां न ऊर्मयः ६,६४,१; १२६ उषसः श्रियः उत् अस्थुः ।  
 अभ्राता इव प्रतीची १,१२४,७; ७८ उषा एति ।  
 अश्वा इव ४,५२,२; १०४ चित्रा अरुषी उषा ।  
 अस्ता इव ६,६४,३; १२८ शूरा शत्रून् अपेजते ।  
 उस्त्रा इव बर्जहम् १,९२,४; २७ उषा वक्षः अपोर्णुते ।  
 (यथा) ऋणम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्न्यं आप्त्ये संनयामसि ।  
 कन्या इव १,१२३,१०; ६८ तन्वा शाशदाना ।  
 (यथा) कलाम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्न्यं आप्त्ये संनयामसि ।  
 गर्तारुक् इव १,१२४,७; ७८ धनानां सनये गर्त एति ।  
 गवां सर्गाः न ४,५२,८; ९९ ऋतस्य सदसः बुधानाः जरन्ते ।  
 गवां सर्गाः न ४,५२,५; १०७ उरु ज्ञयः आ अप्राः ।  
 गावः न व्रजम् १,९२,४; २७ विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः ।  
 चक्रं इव ३,६१,३; ८७ समानं अर्थं चरणीयमाना ।  
 चन्द्रा इव ३,६१,७; ९१ माया पुरुत्रा भानुं वि दधे ।  
 (यथा) चित् ५,७९,१; ११० नः अबोधयः ।  
 चित्रा इव ८,१०१,१३; १७८ आयती प्रत्यदर्शि ।  
 जाया इव पत्ये उशती सुवासाः १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः ।  
 जारः इव ७,७६,३; १४९ परि आ चरन्ती ।  
 तन्तुं ततं इव वा० य० २०,४१; १९२ पेशसा संवयन्ती ।  
 (आयुधानि इव) धृष्णवः १,९२,१; २४ निष्कृण्वानः गावः प्रति ।  
 नृतूः इव १,९२,४; २७ पेशांसि अधि वपते ।  
 नोधाः इव १,१२४,४; ७५ प्रियाणि आविः अकृत ।  
 पशून् न १,९२,१२; ३५ प्रथाना उर्विया व्यश्नैत् ।  
 पितृभृतः न १०,१७२,३; १८२ तन्तुं इत् प्रति दध्मः ।  
 पूर्वथा १,९२,२; २५ वयुनानि अकृन् ।  
 ' ५,८०,६; १२५ युवतिः पुनः ज्योतिः अकः ।  
 प्रजानती इव १,१२४,३; ७४ ऋतस्य पन्थां साधु एति ।  
 ' ५,८०,४; १२३ दिशः न मिनाति ।

प्रत्नवत् ६,६५,६; १३७ नः उच्छ ।  
 भद्रा योषा इव ५,८०,६; १२५ नृन् अप्सः नि रिणीते ।  
 भरद्वाजवत् ६,६५,६; १३७ नः धनं रिरीहि ।  
 मातुः न सूनवः ७,८१,४; १७६ वयं ते स्याम ।  
 यती इव ७,७६,३; १४९ पुनः न दृक्षे ।  
 युवतिः [इव] १,१२३,१०; ६८ संस्मयमाना वक्षांसि आविः ।  
 युवतिः अहयाणा ७,८०,२; १७१ सूर्यं आचिकितत् ।  
 युवतिः न योषा ७,७७,१; १५४ उप रुरुचे ।  
 योषा इव सूनरी १,४८,५; ८ प्रमुञ्जती घा आ याति ।  
 योषा इव १,१२३,११; ६९ सुसंकाशा तन्वं दृशे आविः कृणुषे ।  
 रत्नं न ७,८१,३; १७५ दशुषे पुरु स्थाई वहसि ।  
 (वृषभस्य) रवेण ७,७९,४; १६८ त्वा प्रकाशेन जन्तुः ।  
 (यथा) रात्रां सवितुः प्रसूता १,११३,१; ३९ उषसे सवायं ।  
 वायोः इव १,११३,१८; ५६ सूनुतानां उदकं ।  
 विशः न युक्ताः ७,७९,२; १६६ उषासः अन्नतन् यतन्ते ।  
 (समनगा इव) वाः १,१२४,८; ७९ एषा अञ्जि अङ्क्ते ।  
 (यथा) शफम् ८,४७,१७; १९० दुःष्वप्न्यं आप्त्ये संनयामसि ।  
 शुन्धुवः न वक्षः १,१२४,४; ७५ एषा उपो अदर्शि ।  
 शुभ्रा न ५,८०,५; १२४ तन्वः विदाना नः दृशये अस्थात् ।  
 (समुद्रे न) श्रवस्यवः १,४८,३; ६ अस्याः आचरणेषु रथाः ।  
 श्रिये छन्दः न १,९२,६; २९ विभाती उषाः स्मयते ।  
 श्वघ्नी इव कृत्तुः १,९२,१०; ३३ मर्तस्य आयुः जरयन्ती ।  
 सविता इव बाहू ७,७९,२; १६६ उषसः ज्योतिः यच्छन्ति ।  
 सिन्धुः न क्षोदः १,९२,१२; ३५ उषाः उर्विया व्यश्नैत् ।  
 (उद्यन्) सूर्यः [इव] १,१२४,१; ७२ उर्विया ज्योतिः अश्रेत् ।  
 (रिपुं) स्तेनं यथा ५,७९,९; ११८ त्वां अर्चिषा नेत् तपाति ।  
 स्यूमा इव ३,६१,४; ८८ ( तमः ) अव चिन्वती उषा याति ।  
 (अश्वरेषु मिताः) स्वरवः इव ४,५१,२; ९३ चित्राः उषसः ।  
 (विदधेषु) स्वरं न १,९२,५; २८ पेशः उषा अनन्ति ।  
 स्मार्ता ऊर्वा इव ५,८०,५; १२४ उषाः नः दृशये अस्थात् ।  
 हस्ता इव १,१२४,७; ७८ उषाः अप्सः नि रिणीते ।



दैवत-संहितान्तर्गत-

उषादेवताया गुणबोधक-पदानि ।

अत्रिरस्तमा ७,७९,३; १६७  
 अजरा १,११३,१३; ५१  
 अजुर्थाः ४,५१,६; ९७  
 अदितेः अनीकम् १,११३,१९; ५७  
 अद्रिसानुः ६,६५,५; १३६  
 अवा समानः स्वलोः १,११३,३; ४१  
 अनवद्याः १,११३,८; ६६  
 अनीकम् अदितेः १,११३,१९; ५७  
 अनुयच्छमाना ऋतस्य रदिमम् १,११३,१३; ७१  
 अनुर्वा [ रात्र्युषसौ ] १,११३,२; ४०  
 अन्तिवामा ७,७७,४; १५७  
 अभिपश्यन्ती जनानां वयुना ७,७५,४; १४२  
 अभिष्टिद्युन्नाः ४,५१,७; ९८  
 अमर्त्या ३,६९,२; ८६  
 अमिनती दैव्यानि व्रतानि १,९२,१२; ३५ । १२४,२;  
 ७२  
 अमीतवर्णा ४,५१,९; १००  
 अमृतस्य केतुः ३,३९,३; ८७  
 अमृता १,११३,१३; ५१  
 अमृते [ रात्र्युषसौ ] १,११३,२; ४०  
 अरुणसुः ५,८०,१; १२०  
 अरुषी १,३०,२१; २ । ९२,१-२; २४-२५ । ४,५२,  
 २; १०४  
 अर्किणी ८,१०१,१३; १७९  
 अर्या १,११३,१; ५९  
 अवाता ६,६४,५; १३०  
 अश्वदाः १,११३,१८; ५६  
 अश्वं नयन्ती सुदशीकं श्वेतम् ७,७७,३; १५६  
 अश्वसूनुता ५,७९,१-१०; ११०-११९  
 अश्व १,३०,२१; २  
 अश्ववती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । १२३,  
 १२; ७० । ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२  
 असितं अश्वं गूहन्तीः ४,५१,९; १००  
 अश्विनोः सखा ४,५२,२-३; १०४-१०५  
 अश्वेधन्ती ५,८०,३; १२२

अहना १,११३,४; ६२  
 अहः प्रथमस्य नाम जानती १,११३,९; ६७  
 अह्नां नेत्री ७,७७,२; १५५  
 आपमुषी ४,५२,६; १०८  
 आभरद्वसुः ५,७९,३; ११२  
 आमिनाना विजः १,९२,१०; ३३  
 आमिनाने वर्णम् [ नक्तोषासा ] १,११३,२; ४०  
 आयती ३,६१,६; ९० । ७,८१,१; १७३ ।  
 साम० ३०३; १८५  
 आयती अन्तः दशसु बाहुषु ८,१०१,१३; १७९  
 आयतीनां प्रथमा १,११४,२; ७३  
 आयुः जरयन्ती १,९२,१०; ३३  
 आयुः प्रतिरन्ती ७,७७,५; १५८  
 आवहन्ती परेष्या वार्याणि १,११३,१५; ५३  
 आवहन्ती स्वर ५,८०,१; १२०  
 आविष्कृण्वती विश्वा भुवनानि ७,८०,१; १७०  
 आविष्कृण्वाना तन्वम् ५,८०,४; १२३  
 आविष्कृण्वाना महिमानम् ७,७५,१; १३९  
 इन्द्रतमा ७,७९,३; १६७  
 इषं दधती ७,७७,५; १५८  
 इषं वहन्ती १,९२,३; २६  
 ईयुषीणां शश्वतीनां उपमा १,११३,१५; ५३  
 ईरयन्ती सूनृता १,११३,१९; ५० । ३,६०,२; ८६ ।  
 ७,७९,५; १६९  
 ईशाना वस्वः विश्वस्य पार्थिवस्य १,११३,७; ४५  
 ईशिषे वस्वः ४,५२,३; १०५  
 ईशे वसूनां रायः ७,७५,५; १४३  
 उच्छन्ती १,९२,६; २९ । १२४,१; ७२ । ४,५१,३;  
 ९४ । ६,६५,१; १३२ । ७,७६,७; १५३ । ८१,१,  
 ४; १७३,१७६ । साम० ३०३; १८९  
 उच्छन्ती व्रजस्व तमराः द्वारा ४,५१,२; ९३  
 उदीरयन्ती जीवम् १,११३,८; ४६  
 उपमा ईयुषीणां शश्वतीनाम् १,११३,१५; ५३ । १२४,  
 २; ७३  
 उर्विया १,९२,१२; ३५ । ६,६४,२,३; १२७; १२८

उषाः ] प्रायः सर्वत्र ।  
उषसः ]

ऋतजातसत्या ४,५१,७; ९८  
ऋतपाः १,११३,१२; ५०  
ऋतस्य सदसः ४,५१,८; ९९  
ऋतावरी ३,६९,६; ९० । ४,५२,२; १०४ । ५,८०,  
१; १२०  
ऋतेजाः १,११३,१२; ५०  
ऋषिष्टुता ७,७५,५; १४३  
ऋष्वा ६,६४,४; १२९  
एयुषीणां शश्वत्तमा १,१२४,४; ७५  
ओदती १,४८,६; ९  
कधप्रिया १,३०,२०; १  
कृण्वती ज्योतिः भुवनाय १,९२,४; २७  
कृण्वती पथः सुगान् ५,८०,२; १२१  
कृत्युः १,९२,१०; ३३  
केतुः १,१२४,११; ८२  
केतुः अमृतस्य ३,६१,३; ८७  
केतुः यज्ञस्य १,११३,१९; ५७  
गवां जनित्री १,१२४,५; ७६  
गवां नेत्री ७,७६,६; १५२  
गवां माता ४,५६,२-३; १०४-१०५ । ७,७७,१;  
१५५  
गावः १,९२,१; २४  
गृह्णन्ती अर्ध्वं असितम् ४,५१,९; १००  
गृणाना ७,७९,४; १६८  
गृणाना वह्निभिः ७,७५,५; १४३  
गोभिः अरुणेभिः युजाना ५,८०,३; १२२  
गोमती-तीः १,४८,२; ५ । ९२,१४; ३७ । ११३,  
१८; ५६ । १२३,१२; ७० । ७,४१,७; १३८ ।  
८०,३; १७२  
घृतं दुहाना ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२  
घ्नन्नरथा ३,६१,२; ८६ । ६,६५,२; १३३  
चरणीयमानां समानं अर्थम् ३,६१,३; ८७  
चरायै विश्वं जीवं प्रसुवन्ती ७,७७,१; १५४  
चिकित्स्वित् ४,५२,४; १०६  
चिकित्सन्ती मानुषाणां क्षयाय १,१२३,१; ५९  
चित्रा १,३०,२१; २ । ९२,१२; ३५ । ११३,४;  
४२ । ४,५१,२; ९३

चित्रामघा १,४८,१०; १३ । ७,७५,५; १४३ ।  
७७,३; १५६  
चेकिताना १,११३,१५; ५३  
चोदयन्ती देवंदेवं राधसे ७,७९,५; १६९  
चोदयित्री मघोनः ७,८१,६; १७८  
जननी स्वर ३,६१,४; ८८  
जनानां पथ्या ७,७९,१; १६५  
जनानां वयुना अभिपश्यन्ती ७,७५,४; १४२  
जनियो गवाम् १,१२४,५; ७६  
जनी ४,५२,१; १०३  
जयन्ती वाजम् १,१२३,२; ६०  
जरयन्ती मर्तस्य आयुः १,९२,१०; ३३  
जरयन्ती वृजनम् १,४८,५; ८  
जानती प्रथमस्य अह्नः १,१२३,९; ६७  
जामिः वरुणस्य १,१२३,५; ६३  
जायमाना पुनःपुनः १,९२,१०; ३३  
जारयन्ती १,१२४,१०; ८१  
जारस्य योषा १,९२,११; ३४  
जीरा रथानाम् १,४८,३; ६  
जीवं उदीरयन्ती १,११३,८; ४६  
ज्योतिः कृण्वती भुवनस्य १,९२,४; २७  
ज्योतिः यच्छन्ती ७,७८,३; १६२  
ज्योतिः वसाना १,१२४,३; ७४  
ज्योतिषा [ निवारयन्ती ] गृह्वी तमः ७,८०,२; १७१  
ज्योतिषां श्रेष्ठं ज्योतिः १,११३,१; ३९  
तन्वं आविष्कृष्णाना ५,८०,४; १२३  
तन्वः विदाना ५,८०,५; १२४  
तमः गृह्वी ज्योतिषा ( निवारयन्ती ) ७,८०,२; १७१  
तर्मांसि अप बाधमाना ५,८०,५; १२४ । ७,७८,२;  
१६१  
तर्मांसि बाधमाना ७,७७,१; १५४  
दक्षिणा १,१२३,१,५; ५९,६३ । ६,६४,१; १२६  
दधती इषं राधः ( च ) ७,७८,५; १५८  
दधाना नव्यं आयुः ७,८०,२; १७१  
दधाना नाम अधि १,१२३,४; ६२  
दधाना रयि दीर्घश्रुतम् ७,७६,७; १५३  
दर्शता ५,८०,२; १२१ । ६,६४,५; १३० । ७,७५,  
३; १४१



दाशुषे वार्याणि व्यूर्णती ५,८०,६; १२५  
 दास्वती १,४८,१; ४  
 दिवः अन्तान् व्यूर्णती १,९५,११; ३४  
 दिविजाः ७,७५,१; १३९  
 दिवोजाः ६,६५,१; १३२  
 दिवित्मती ५,७९,१; ११०  
 दिवो दुहिता-तरः १,३०,२२; ३। ४८,१.८-९; ४,  
 ११-१२। ४९,२; २१। ९२,५,७; २८,३०। ११३,  
 ७; ४५। १२४,३; ७४। ४,५१,१.१०; ९२,  
 १०१। ४,५२,१; १०३। ५, ७९, २-३, ८-९;  
 ११०-१११, ११७-११८। ८०,५-६; १२४-१२५।  
 ६,६४,४-५; १२९-१३०। ६५,६; १३७। ७,७५,  
 ४; १४२। ७७, ६; १५९। ७८, ४; १६३।  
 ७९,३; १६७। ८१,१.३.५; १७३,१७५,१७७। ८,  
 ४७,१४-१५; १८७-१८८। साम० ३०३; १८५  
 दुरिता विश्वा अप बाधमाना ७,७८,२; १६१  
 दुहानाः घृतम् ७,४१,७; १३८। ८०,३; १७२  
 दुहिता ६,६५,१; १३२  
 दुहिता दिवः ' दिवो दुहिता ' द्रष्टव्यम् ।  
 द्वाणा सूर्यस्य रश्मिभिः १,११३,१२; ३५  
 देवंदेवं राधसे चोदयन्ती ७,७९,५; १६९  
 देववीर्ति विश्रती १,११३,१२; ५०  
 देवशिष्टे [ रात्र्युषसौ ] १,११३,३; ४१  
 देवानां चक्षुः वहन्ती ७,७७,३; १५६  
 देवानां माता १,११३,१९; ५७  
 देवी-वीः १,४८,१,३,१५; ४,६,१८। ९२,९-१०;  
 ३२-३३। ११३,१३-१४; ५१-५२। १२३,३,१०;  
 ६१,६८। १२४,१२-१३; ८३-८४। ३,६१,१-२.५;  
 ८५-८६,८९। ४,५१,४-५ ८.१०; ९५-९६,९९,१०१।  
 ५,८०,१,३; १२०,१२२। ६,६४,२,५-६; १२७,  
 १३०-१३१। ७,७५,२,७; १४०,१४५। ७७,५;  
 १५८। ७८,२; १६१। ७९,३; १६७। ८१,४;  
 १७६। वा०य० २८,१४,३७; १९३-१९४।  
 द्युतदामा ( मन् ) ५,८०,१; १२०  
 द्युताना ७,७५,६; १४४  
 द्योतना १,१२३,४; ६२  
 द्विबर्हाः ५,८०,४; १२३  
 नक्तोषासा [ देवते ] १,११३,३; ४१  
 नयन्ती यज्ञस्य अग्रम् ६,६५,२; १३३  
 नयन्ती सुदशीकं श्वेतं अश्वम् ७,७७,३; १५६

नव्यं आयुः दधाना ७,८०,२; १७१  
 नव्यसी-सीः ३,६१,३; ८७। १,१२४,९; ८०  
 नाम अधि दधाना १,१२३,४; ६२  
 नारीः १,९२,३; २६  
 निष्कृतं अहरहः आचरन्ती १,१२३,९; ६७  
 नीची ८,१०१,१३; १७९  
 नेत्री अहाम् ७,७७,२; १५५  
 नेत्री गवाम् ७,७६,६ १५२  
 नेत्री सूत्रतानाम् १,९२,७; ३०। ११३,४; ४२।  
 ७,७६,७; १५३  
 पत्यमानाः ६,६५,३; १३४  
 पत्नी भुवनस्य ७,७५,४; १४२  
 पत्नी स्वसरस्य ३,६१,४; ८८  
 पथः रदन्ती सुविताय ५,८०,३; १२२  
 पथः सुगान् कृण्वती ५,८०,२; १२१  
 पथ्या जनानाम् ७,७९,१; १६५  
 पप्रथानाः समानतः समना ४,५१,८; ९९  
 पयस्वती वा० य० २०,४१; १९२  
 पराकात् युजाना ७,७५,४; १४२  
 पावकाः ४,५१,२; ९३  
 पुनःपुनः जायमाना १,९२,१०; ३३  
 पुनर्भूः १,१२३,२; ६०  
 पुरन्धिः ३,६१,१; ८५  
 पुराणी १,९२,१०; ३३। ३,६१,१; ८५। ४,५१,६  
 ९७  
 पुरुतमा १,१२४,६; ७७  
 पुरुष्टुता ५,८०,३ १२२  
 पूर्वहूतौ प्रथमा १,१२३,२; ६०  
 पृणन्ती उभा १,१२४,५; ७६  
 पृथुयामा ( मन् ) ६,६४,४; १२९  
 प्रचेताः ३,६१,१, ८५  
 प्रजानती द्व १,१२४,३; ७४। ५,८०,४; १२३  
 प्रतिबुध्यमानाः स्योनात् वः ४,५१,१०; १०१  
 प्रतिरन्ती आयुः ७,७७,५; १५८  
 प्रतीची १,९२,९; ३२। ५,८०,६; १२५। ७,७६,२;  
 १४८  
 प्रतीची पुंसः १,१२४,७; ७८  
 प्रतीची विश्वम् ७,७७,२; १५५  
 प्रतीची विश्वा भुवनानि ३,६१,३; ८७

प्रथमा १,१२३,५; ६३ । ७,७६,६; १५२  
 प्रथमा आयतीनाम् १,१२४,२; ७३  
 प्रथमा आयतीनां शश्वतीनाम् १,११३,८; ४६  
 प्रथमा पूर्वहृतौ १,१२३,२; ६०  
 प्रथमा विभातीनाम् १,११३,१५; ५३  
 प्रथमा विश्वस्मात् भुवनात् १,१२३,२; ६०  
 प्रथाना १,९२,१२; ३५ । ६,६४,३; १२८  
 प्रदीध्याना अन्याभिः १,११३,१०; ४८  
 प्रपीताः विश्वतः ७,४१,७; १३८ । ८०,३; १७२  
 प्रबोधयन्ती अरुणैः अश्वैः १,११३,१४; ५२  
 प्रबोधयन्ती ससन्तम् ४,५१,५; ९६  
 प्रभुञ्जती १,४८,५; ८  
 प्रभूता विश्वं अतु ७,७७,३; १५६  
 प्रभिनती मनुष्या युगानि १,९२,११; ३४ । १२४,२; ७२  
 प्रशस्तिकृत् १,११३,१९; ५७  
 प्रसुवन्ती विश्वं जीवं चरायै ७,७७,१; १५४  
 बाधमाना तमांसि द्वेषः अप ५,८०,५; १२४  
 बाधमाना तमांसि विश्वा दुरिता अप ७,७८,२; १६१  
 बाधमाना तमांसि ७,७७,१; १५४  
 विभ्रती देववीतिम् १,११३,१२; ५०  
 विभ्रती रुशत् शुक्रं वासः ७,७७,२; १५५  
 बृहती १,११३,१९; ५७ । ५,८०,२; १२१ । वा०य०  
 २०,४१; १९३  
 बृहती ऋतेन ५,८०,१; १२०  
 बृहद्रथा ५,८०,२; १२१  
 बोधयन्ती जनम् ५,८०,२; १२१  
 बोधयन्ती पञ्चमानुषीः क्षितीः ७,७७,१; १६५  
 बोधयन्ती विश्वं जीवम् १,९२,९; ३२  
 बोधयन्ती ससतः १,१२४,४; ७५  
 भगस्य स्वसा १,१२३,५; ६३  
 भद्रा १,१२३,११; ६९ । ६,६४,२; १२७  
 भद्राः ४,५१,७; ९८ । ७,४१,७; १३८ । ८०,३;  
 १७२  
 भद्रा नाम वहमानाः १,१२३,१२; ७०  
 भास्वती १,९२,७; ३०  
 भुवनस्य पत्नी ७,७५,४; १४२  
 भुवनानि विश्वा आविष्कृष्वती ७,८०,१; १७०  
 भुवनानि विश्वा प्रतीची ३,६१,३; ८७  
 मंहना ७,८१,४; १७६  
 मंहना पूर्वहृतौ ६,६४,५; १३०

मघोनः चोदयित्री ७,८१,६; १७८  
 मघोनी १,४८,८; ११ । ११३,५.१३.१७; ४३,५१,  
 ५५ । १२४,१०; ८१ । ३,६१,४; ८८ । ४,५१,३  
 ९४ । ५,७९,४.६-७; ११३,११५-११६ । ६,६४,१;  
 १२६ । ६५, ३. ६; १३४, १३७ । ७, ७५, ५;  
 १४५ । ७७,४; १५७ । ७८,४; १६३ । ७९,३;  
 १६९  
 मधुधा ३,६९,५; ८९  
 मर्त्यत्रा १,१२३,३; ६१  
 महती ७,७५,७; १४५  
 माहिमानं आविष्कृष्वाना ऋतेन ७,७५,१; १३९  
 मही ३,६९,७; ९१ । ७,८१,४; १७६  
 मातरः १,९२,१; २४  
 माता गवाम् ४,५२,२-३; १०४-१०५ । ७,७७,२;  
 १५५  
 माता देवानाम् १,११३,१९; ५७  
 मातृमृष्टा १,१२३,११; ६९  
 माया मित्रस्य वरुणस्य ३,६१,७; ९१  
 मृतं बोधयन्ती १,११३,८; ४६  
 यच्छन्तीः ज्योतिः ७,७८,३; १६२  
 यजता ७,७५,७; १४५  
 यज्ञस्य केतुः १,११३,१९; ५७  
 यतमानाः सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२३,१२; ७०  
 यावयद् द्वेषाः १,११३,१२; ५० । ४,५२,४; १०६  
 युगानि मनुष्या प्रभिनती १,९२,११; ३४ । १२४,२;  
 ७२  
 युजाना अरुणेभिः गोभिः ५,८०,३; १२२  
 युजाना पराकात् ७,७५,४; १४२  
 युवतिः १,११३,७; ४५ । १२३,२.१०; ६०,६८ ।  
 १२४,११; ८२ । ३,६१,१; ८५ । ५,८०,६; १२५  
 युवतिः अहयाणा ७,८०,२; १७१  
 योषा १,१२३,९; ६७  
 योषा जारस्य १,९२,११; ३४  
 योषा सूर्यस्य ७,७५,५; १४३  
 रजसी समना विवर्तयन्ती ७,८०,१; १७०  
 रण्वसंहक् ३,६१,५; ८९  
 रत्नभाक् ७,८१,४; १७६  
 रथानां जीरा १,४८,३; ६  
 रदन्ती पथः सुविताय ५,८०,३; १२२

रथि दीर्घश्रुतं दधाना ७,७६,७; १५३  
 रश्मि ऋतस्य अनुयच्छमाना १,१२३,१३; ७१  
 रश्मिभिः व्यक्ता ७,७७,३; १५६  
 रश्मिभिः सूर्यस्य दृशाना १,९२,१२; ३५  
 रश्मिभिः सूर्यस्य यतमानाः १,१२३,१२; ७०  
 रुचानाः ४,५१,९; १००  
 रुशती १,११३,२; ४०  
 रुशद्वत्सा १,११३,२; ४०  
 रुशन्तः ६,६४,१.३; १२६,१२८  
 रूपा ८,१०१,१३; १७९  
 रेवती ४,५१,४; ९५  
 रोचना ३,६१,५; ८९  
 रोचमानाः ६,६४,१; १२६  
 रोहिण्या ८,१०१,१३; १७९  
 रघनन्वती ७,८१,३; १७५  
 वरुणस्य जामिः १,१२३,५; ६३  
 वर्ण आमिनाने [ नक्तोषासा ] १,११३,२; ४०  
 वसाना ज्योतिः १,१२४,३; ७४  
 वसूनां रायः ईशे ७,७५,५; १४३  
 वस्वः ईशिषे ४,५२,३; १०५  
 वस्वी ६,६४,१; १२६  
 वहन्तीः इषम् १,९२,३; २६  
 वहन्तीः दाशुषे श्रवः वाजं इषं ऊर्जम् ६,६५,३; १३४  
 वहन्ती देवानां चक्षुः ७,७७,३; १५६  
 वह्निभिः गृणाना ७,७५,५; ११३  
 वाजं जयन्ती १,१२३,२; ६०  
 वाजपत्नी ७,७६,६; १५२  
 वाजप्रसूता १,९२,८; ३१  
 वाजिनी वाजेन ३,६१,१; ८५  
 वाजिनीवती १,४८,६.१६; ९,१९। १२३,१३.१५;  
 ३६,३८। ७,७५,५; १४३  
 वार्याणि पोष्या आवहन्ती १,११३,१५; ५३  
 वार्याणि व्यूर्ध्वती ५,८०,६; १२५  
 वावशाना पूर्वाः १,११३,१०; ४८  
 विजः आमिनाना १,९६,१०; ३३  
 विदाना तन्वः ५,८०,५; १२४  
 विभाती १,९२,६; २९। १२३,१०; ६८। १२४,६;  
 ७७। ३,६१,५-६; ८९-९०। ४,५१,१.१०-११; ९२,  
 १०१-१०२। ५,८०,१; १२०। ७,७८,४; १६३

विभातीः १,११३,१७; ५५। १२३, ६; ६४।  
 ७,७८,३.५; १६२,१६४  
 विभातीनां प्रथमा १,११३,१५; ५३  
 विभावरी १,३०,२०; १। ४८,१.१०; ४,१३। ९२,  
 १४; ३७। ४,५२,६; १०८। ५,७९,४.१०; ११३,  
 ११९। ८,४७,१४; १८७  
 विरूपे [ नक्तोषासा ] १,११३,३; ४१  
 विवर्तयन्ती रजसी समन्ते ७,८०,१; १७०  
 विवासयन्ती १,११३,११; ४९  
 विश्वं अनु प्रभूता ७,७७,३; १५६  
 विश्वं जीवं चरायै प्रसुवन्ती ७,७७,१; १५४  
 विश्वं प्रतीची ७,७७,२; १५५  
 विश्वतः प्रपीताः ७,४१,७; १३८। ८०,३; १७२  
 विश्वमिन्वा ५,८०,२; १२१  
 विश्ववारा १,११३,१९; ५७। ३,६१,१; ८५। ५,  
 ८०,३; १२२। ७,७७,५; १५८  
 विश्ववाराः १,१२३,१२; ७०  
 विश्वसुविदः १,४८,२; ५  
 विश्वस्य वस्वः पार्थिवस्य ईशाना १,११३,७; ४५  
 विहायाः १,१२३,१; ५९  
 वीरवतीः ७,४१,७; १३८। ८०,३; १७२  
 वृजनं जरयन्ती १,४८,५; ८  
 व्रतानि दैव्यानि अभिनती १,९२,१२; ३५। १२३,२;  
 ७३  
 व्यक्ता रश्मिभिः ७,७७,३; १५६  
 व्युच्छन्ती [ तमांसि ] १,४८,२; १२। ४९,४; २३।  
 ११३,७-८; ४५-४६। ५,७९,१०; ११९। ७,७९,  
 ५; १६९  
 व्युच्छन्ती सूर्यस्य रश्मिभिः १,१२४,८; ७९  
 व्युच्छन्ती स्वसुः परि ४,५२,१; १०३  
 व्यूर्ध्वती दाशुषे वार्याणि ५,८०,६; १२५  
 व्यूर्ध्वती दिवो अन्तान् १,९२,११; ३४  
 व्येनी ५,८०,४; १२३  
 शश्वत्तमा एयुषीणाम् १,१२४,४; ७५  
 शाशदाना १,१२३,१०; ६८  
 शाशदाना अरेपसा तन्वा १,१२४,६; ७७  
 शुक्रा १,१२३,९; ६७  
 शुक्राः रुशङ्गिः तन्मिः ४,५१,९; १००  
 शुक्रं वासः विभ्रती ७,७७,२; १५५

शुक्रवासाः १,११३,७; ४५  
 शुचयः ४,५१,२,९; ९३,१००  
 शुभाः ४,५१,६; ९७। ७,७५,६; १४४  
 शुम्भमाना १,९२,१०; ३३  
 शुम्भमाना महोभिः ६,६४,२; १२७  
 श्रेष्ठतमा १,११३,१२; ५०  
 श्वितीची १,१२३,९; ६७  
 श्वेत्या १,११३,२; ४०  
 स्वंस्मयमाना १,१२३,१०; ६८  
 सखा अश्विनोः ४,५२,२-३; १०४-१०६  
 सत्या ७,७५,७; १४५  
 सदसः ऋतस्य ४,५१,८; ९९  
 सदशीः ४,५१,६; ९७  
 सदशीः अद्य १,१२३,८; ६६  
 सदशीः श्वः १,१२३,८; ६६  
 सनुत्री १,१२३,२; ६०  
 सप्रथाः ७,७७,२; १५५  
 समनसा [ नक्तोषासा ] १,११३,३; ४१  
 समना ४,५१,८-९; ९९-१००  
 समना पप्रथानाः ४,५१,८; ९९  
 समानबन्धू [ नक्तोषासा ] १,११३,२; ४४  
 समानीः ४,५१,९; १००  
 सर्ववीराः १,११३,१८; ५६  
 ससतः बोधयन्ती १,१२४,४; ७५  
 ससन्तं प्रबोधयन्तीः ४,५१,५; ९६  
 सिषासन्ती १,१२३,४; ६२  
 सुजाता १,१२३,३; ६१ । ५,७९,१-१०; ११०-  
 ११९ । ७,७६,६; १५२ । ७,७,६; १५९  
 सुदंसा ३,६१,४; ८८  
 सुदिनाः १,१२४,९; ८०  
 सुदुधे [ उषासानक्ता ] वा० य० २०,४१; १२२  
 सुदशीकंसदक् ७,७२,२; १५५  
 सुधिते [ उषासानक्ता ] वा० य० २८,१४; १९३

सुप्रतीका १,९२,६; २९  
 सुप्रीते [ उषासानक्ता ] वा० य० २८,१४; १९३  
 सुभगा १,४८,७; १० । ११३,७; ४५ । ९२,८-१२,  
 ३१,३५ । ३,६१,४; ८८ । ६,६४,३; १२८ ।  
 ७,७६,६; १५२ । ७,७,३; १५६  
 सुमङ्गली १,११३,१२; ५०  
 सुमेके १,११३,३; ४१  
 सुम्नावरी १,११३,१२; ५०  
 सुरक्मे [ उषासानक्ता ] वा० य० २०,४१; १२२  
 सुबिताय पथः रदन्ती ५,८०,३; १२२  
 सुसंकाशा १,१२३,११; ६९  
 सूनी १,४८,५-८-१०; ८,११,१३ । ४,५२,१; १०३ ।  
 ७,८१,१; १७३ । साम० ३०३; १८५  
 सूनुता १,१२३,५; ६३ । १२४,१०; ८१  
 सूनुतावती १,९२,१४; ३७ । ७,८१,६; १७८  
 सूनुतावरी ४,५२,४; १०६  
 सूनुताः ईरयन्ती १,११३,१२; ५० । ३,६१,२; ८६ ।  
 ७,७९,५; १६२  
 सूनुतां नेत्री १,९२,७; ३० । ११३,४; ४२ । ७,७६,७;  
 १५३  
 सूर्यस्य योषा ७,७५,५; १४३  
 सौभाग्यं आवहन्ती १,४८,९; १२  
 स्तोम्याः १,१२४,१३; ८४  
 स्योनात् वः प्रतिबुध्यमानाः ४,५१,१०; १०१  
 स्वभानुः ६,६४,४; १२२  
 स्वर आवहन्ती ५,८०,१; १२०  
 स्वर जनन्ती ३,६१,४; ८८  
 स्वसरस्य पत्नी ३,६१,४; ८८  
 स्वसा भगस्य १,१२३,५; ६३  
 स्वसारौ [ नक्तोषासा ] १,११३,३; ४१  
 स्वसुः परि व्युच्छन्ती ४,५२,१; १०३  
 हिरण्यवर्णा ३,६१,२; ८६ । ७,७७,२; १५५

## अग्निदेवतामन्त्रान्तर्गत--

### आग्नीसूक्तेषु ' उपासानक्ता ' -देवताया गुणबोधक-पद-संग्रहः ।

इन्द्रस्य धेनू	२०८९
उक्षिते	१९४७
उपाके	१९५८; १९२४
„	२०७९
सभे	२१००
उशती	१९९७
उषे	२०४२
ऋतस्य मातरा	१९२४; १९६९
चरन्ती मित्रावरुणा अन्तरा	२१११
ततं तन्तुं संवयन्ती	१९४७
दधाने शुक्रपिशम्	२००८
दर्शते	१९८६
„	२१००
दिवः दुहितरा	१९९७
दिव्ये	१९७९
दिव्ये ( योषणे )	२००८
दिव्ये योषिते	२०६६
दुहितरः दिवः	१९९७
देवी	१९९७
धेनू इन्द्रस्य	२०८९
नृः पतिभ्यः योनिं कृण्वाने	२१३५
पयस्वती	१९४७
पुरुहूते	१९७९
बर्हिषदा	१९७९
वृहती	१९८६
„	२००८
„	२१००
„	२१३५
भन्दमाने	१९२४
मघोनी	१९७९
मही	१९७९
„	१९८६
„	२०८९

मातरा	२०८९
मातरा ऋतस्य	१९२४
यजते	२००८
„	२०७९
यङ्ही	१९२४
„	२०३१
योषणे	२००८
„	१९७९
योषणे दिव्ये	२०६६
रण्विते	१९४७
वयोवृधा	१९६९
वय्या इव	१९४७
शुक्रपिशं दधाने	२००८
विरूपे	१९५८
संवयन्ती ततं तन्तुम्	१९४७
संविदाने	२१११
संस्मयमाने	२१३५
संजानाने	२०३१
समीची	१९४७
सवातरौ	२०८९
सनता	१९४७
सुदुषे	१९४७
सुपेशसा	१९१२; २०४२
„	१९२४; २१३५
„	१९३६; २१००
„	२०१९; २०५४
„	२०३१; २०४२
सुप्रतीके	१९६९
सुरुषमे	१९३६; २००८
सुशिल्पे	१९८६; २००८
	१९९७; २१००
सुष्वयन्ती	२८०८; २०७९
सुहिरष्ये	२१११





# दैवत-संहिता

( ९ )

आदितिः, आदित्याश्च

संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,  
स्वाध्याय-मण्डल, भौध ( जि० सातारा )

संवत् २००१, शक १८६६, सन १९४४

---

मुद्रक और प्रकाशक  
वसंत श्री. सातवळेकर, B. A.  
भारत मुद्रणालय, और ( जि. सातारा )

---

# आदित्यों के कार्य और उनकी लोकसेवा

[ लेखक - श्री० दयानन्द गणेश धारेश्वर, बी. ए. ]

जिस प्रकार अश्विनौ सदैव जनताके हितके लिए कार्य करनेमें लगे रहते हैं वैसे ही आदित्य अर्थात् अदिति के पुत्र भी जनसेवाको बड़े ही स्पृहणीय ढंग से प्रचलित रखते हैं। अदिति याने अदीनता, अखंडता एवं पूर्णता के इन पुत्रोंने वीरतापूर्वक और साहस से कार्य करके एवं जनताकी रक्षा करके लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करलिया है अतः भक्त तथा उपासक इन आदित्योंसे क्या कहते हैं सो वेदके शब्दोंमें देखना ठीक होगा।

जनताके सम्मुख अपनी रक्षाकी समस्या सदैव उठखड़ी होती है। अतः अपना संरक्षण भलीभाँति हो ऐसी तीव्र लाजसा हमेशा जनमनमें जागृत रहती है और देवतारूपी सभी सुयोग्य एवं कार्यक्षम व्यक्तियों से इसी संबंधमें बारंबार निवेदन किया जाता है। जसे—

स्यान् नु क्षत्रियान् अव आदित्यान् याचिषामहे ।  
( ऋ. ८।६७।१ )

‘ उन विषयात आदित्यों के सम्मुख, जो कि क्षत्रिय हैं, हम संरक्षणकी माँग पेश करते हैं । ’

महि षो महतामवो ... अवांस्यावृणीमहे ।  
( ऋ. ८।६७।४ )

आप जैसे महान लोगोंके संरक्षण बहुत बड़े होते हैं इसलिए हम आपकी संरक्षण आयोजनाओं को स्वीकृत करते हैं । ’

‘ महि षो महतामवो ... दाशुषे । यं आदित्या अभि द्रुहो रक्षथा न ई अघं नशत् ... ।  
( ऋ. ८।४७।१ )

‘ आप जैसे बड़े वीरोंका दानी पुरुषके लिए दिया हुआ संरक्षण बड़ा है क्योंकि जिसे आदित्य द्वेषाओं से बचाते हैं उसे पाप या बुराई घेर नहीं सकती है । ’

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि आदित्यानामुतावसि ।  
( ऋ. ८।४७।५ )

आदित्य. प्र. १

‘ हम लोग प्रभु इन्द्रके सुखकी या आदित्योंके संरक्षण की छत्रछाया में रहें । ’

... अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।  
( ऋ. ८।४७।१ )

‘ आप आदित्योंकी रक्षाएं निर्दोष, निष्पाप एवं सुन्दर हैं । ’  
आदित्या विश्वे ... तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्ति-  
भिः सदा नः ।  
( ऋ. ७।५१।३ )

‘ आप सारे आदित्य प्रसंसित होनेपर हमेशा कल्याणकारक बातों से हमारी रक्षा कीजिए । ’

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा  
शन्तमेन ।  
( ऋ. ७।५१।२ )

‘ हम लोग आदित्योंकी नई रक्षासे एवं अत्यन्त शक्तिदायक सुखसे जुडजायें । ’

आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां ... अस्माकं सन्तु  
भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोमं अवसे नो अद्य ।  
( ऋ. ७।५१।२ )

‘ अदिति और आदित्य हर्षित हों और हमारे भुवन के संरक्षक बनें तथा आज हमारी रक्षा करनेमें उत्साह मिल जाय इसलिए सोमरसका पान करें । ’

युष्मे देवा अपि ऽमसि युध्यन्त इव वर्मसु ।  
यूयं महो न पनसो यूयमर्भातुरुष्यथ । ( ऋ. ८।४७।८ )

‘ हे दानी या श्रेष्ठमान आदित्यो ! तुम्हारे सहारे हम ऐसे रहते हैं मानों कवचधारी लोग लड़ते हों, याने वे जैसे निर्भय हुआ करते वैसेही हम हैं और आप हमें बड़े एवं छोटे पापसे बचाते हैं । ’

शश्वत् हि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिवेयं  
पुरा नूनं बुभुजमहे ॥ ( ऋ. ८।६७।१६ )

‘ हे अच्छे दानी ! अदितिके पुत्रो ! हमेशाही हम लोग आपकी रक्षाओं से पहले तथा अब भी सुखोंका उपभोग करते रहते हैं । ’



ते न आसन्नो वृकाणामादित्यासो मुमोचत ।  
स्तेनं यद्धं इवादिते । ( ऋ. ८।६७।१४ )

‘ हे अदिति एवं वे ऐसे विख्यात आदित्यो । हमें भेड़िये जैसे क्रूर तथा लालची लोगोंके मुँहसे ऐसे छुड़ाओ जैसे बाँधकर रखे हुए चोरको छुड़ाया जाता है । ’

ये मूर्धानः क्षितीनां अदब्धासः स्वयशसा ।  
व्रता रक्षन्ते अद्रुहः ॥ ( ऋ. ८।६७।१३ )

‘ जो आदित्य द्वेष न करते हुए अपनी अर्जित यश-श्रिता के कारण न दबाये हुए होकर मानवों के अग्रभाग में रहते हैं और व्रतोंकी रक्षा करते हैं । ’

धारयन्त आदित्यासो जगत् स्था देवा विश्वस्य  
भुवनस्य गोपाः.....रक्षमाणा असुर्यम्..... ।  
( ऋ. २।२७।४ )

‘ ये देवतारूपी आदित्य अखिल भुवनके संरक्षक होते हुए जंगम तथा स्थावर का धारण करते हैं और प्राणशक्ति को बचाते हैं । ’

विद्यां आदित्या अघसो वो अस्य...यत्...भय  
आ चित् मयोभु । ( ऋ. २।२७।५ )

‘ हे अदितिके पुत्रो ! मैं चाहता हूँ कि आपकी इस रक्षासे परिचित हो जाऊँ जो रक्षा भय के अवसरपर भी सुखदायक बनी रहती है । ’

इन ऊपर दिये हुए मंत्रों और मन्त्रभागोंसे स्पष्ट दिखाई देता है कि जनताकी रक्षा करनेमें अदिति केपुत्र बड़े सिद्ध हस्त थे, अतः लोग भी आदित्यों की संरक्षण आयोजना से लाभ उठानेमें अत्यन्त उत्सुक रहा करते थे । वेद में ऐसे निर्देश मिलते हैं कि लोगों का नेतृत्व भी आदित्य सफलतापूर्वक कर लिया करते थे और जो लोग मार्ग भूले भटके होते हैं तथा जो अन्धकार में रहते हैं उनके पथ-प्रदर्शन तथा प्रकाशदान का कार्य आदित्य सफलतापूर्वक पूर्ण करते हैं, जैसे—

आदित्या.. युष्मानीतो अभयं ज्योतिरदयाम् ।  
( ऋ. २।२७।११ )

‘ हे आदित्यो ! तुम्हारे नेतृत्वमें मैं निर्भयता से पूर्ण प्रकाश को प्राप्त कर लूँ । ’

...पुत्रासो अदितेः... मर्त्याय ज्योतिर्यच्छम्भ्य-  
जन्तम् । ( ऋ. १०।१८।३ )

‘ आदित्य मानव को लगातार उजेला या प्रकाशपुत्र देते हैं । ’

मृळयद्भो वयं चक्रुमा कच्चिद्वागः । उर अश्यां  
अभयं ज्योतिः... मा नो दीर्घा अभि नशन्  
तमिन्नाः ( ऋ. २।२७।१४ )

‘ यद्यपि हम से आप का कुछ अपराध हुआ हो तो भी हमें सुख दो; मैं विशाल एवं निर्भयतामय प्रकाश को प्राप्त हो जाऊँ और सुदीर्घ अन्धियारी हमें न घेर ले । ’

नकिष्टं न्नन्त्यन्तितो न दूरात् य आदित्यानां  
भवति प्रणीतौ । ( ऋ. २।२७।१३ )

‘ जो कोई आदित्योंके श्रेष्ठ नेतृत्वके तत्त्वावधानमें रहता है उसे न कोई दूरसे या समीपसे होकर मार सकते हैं । ’

...आदित्याः.. युष्माकं.. प्रणीतौ परि श्वश्रेव  
दुरितानि वृज्याम् । ( २।७७।५ )

‘ हे आदित्यो ! तुम्हारे श्रेष्ठ नेतृत्व में मैं बुराइयों को इस तरह टाल दूँ जैसे कोई ग ढोंको टाल देता हो अर्थात् जहाँ नेता की धुरा आदित्य उठा लेते हैं वहाँ बुराइयों का भय रहता ही नहीं । ’

सभी बुराइयों को हटाने की क्षमता आदित्यों में विद्यमान है ऐसा निम्न मन्त्रभागों से ज्ञात होता है ।

यत् आदिः यत् अपीच्यं... अस्ति दुष्कृतं...  
तत् विश्वं... आरे अस्मत् दधातन...  
( ऋ. ८।४७।१३ )

‘ जो कोई बुरा कृत्य चाहे प्रकटरूपसे या गुप्तरूपसे विद्यमान हो उस सारी बुराई को हम से दूर रखो । ’

अपामीवामपस्त्रिधं अप सेधत दुर्मति । आदि-  
त्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ ( ऋ. ८।१८।१० )

‘ हे आदित्यो ! रोग, शत्रु तथा दुष्ट बुद्धि को दूर हटा दो और हमें पाप से पृथक् रखो । ’

अपो पु ण इयं शक्रादित्या अप दुर्मतिः ।  
अस्मदेस्वजन्नुषी ॥ ( ऋ. ८।६७।१५ )

‘ हे आदित्यो ! यह हिंसक हथियार तथा यह दुष्ट विचारधारा हमें पीडा न देती हुई, भलीभाँति हम से दूर हो जाए । ’

मा नो हेतिः... आदित्यः कृत्रिमा शक्रः पुरा  
नु जरसो वधीत् । ( ऋ. ८।६७।२० )

‘ हे आदित्यो ! वृद्धावस्था के पहले यह शस्त्र तथा बनाया हुआ हथियार हमें न मारवाले ऐसा प्रबंध करो । ’

ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नाषा.. अति विश्वानि तुरिता पिपर्तन । ( ऋ. ८।१८।१७ )

‘ वे ऐसे विख्यात तुम कष्टायणकारक सुखसे और आप की नौका से हमें सभी बुराइयों के पार ले चलो- । ’

युयोत शरुमस्मत्.. आदित्यास उतामति । ऋधग् द्वेषः कृणुत विश्वेदसः । ( ऋ. ८।१८।११ )

‘ हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हमसे हिंसक शस्त्र, कुमति एवं शत्रुभोंका पृथक् करदो । ’

वैदिक सूक्तोंके दर्शन कर्ता सुकवि आदित्यों से कैसी प्रार्थना करते हैं सो निम्न मंत्रोंमें देखने योग्य है-

तत् सु नः शर्म यच्छत आदित्या यन्मुमोचति । पनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः ॥ ( ८।१८।१२ )

‘ हे अच्छे दानद्वार आदित्यो ! हमें भलीभाँति वह सुख दे डालो जो पापीको भी पाप से छुड़ा सकता है । ’

यद् वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छदिः । तेना नो अधि वोचत । ( ऋ. ८।१७।६ )

“ कार्य करके थके हुए और उपयुक्त वस्तुका उत्पादन करनेवाले के लिए आप के पास जो वरणीय धन तथा घर है उसे साथ लेकर हमसे बातलाप करो । ” इस प्रार्थनासे स्पष्ट हुआ कि परिश्रमी तथा भावश्यक मानी हुई वस्तुओं के उत्पादक को ये आदित्य स्वीकार करने योग्य धन देते एवं निवास करनेके लिए योग्य गृहका प्रबंध भी कर डालते ।

जीवान् नो अभि धेतन आदित्यासः पुरा हथात् । कश्च स्थ हवनश्रुतः । ( ऋ. ८।१७।५ )

“ हमारी पुकार सुननेवाले हे आदित्यो ! भला तुम किधर हो ? जबतक हम जीवित हैं, और मृत्युके पहले ही हमारों निकट चले आओ । ” इस मंत्र में वैदिक ऋषि आदित्यों के संपर्क में आनेके लिए कितने उत्सुक हैं सो स्पष्ट दिखाई देता है ।

ये चिद्धि मृत्युबंधव आदित्या मनघः स्मसि ।

प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन । ( ऋ. ८।१८।२२ )

“ हे आदित्यो ! हममें जो कोई मृत्यु के अत्यन्त निकट चले गये हों तो भी जीवनके लिए इसारी आयु बढ़ाइयो । ”

दीर्घ जीवन की कुंजी आदित्योंके समीप थी ऐसा जान पड़ता है और वे मृत्यु लोकोको मृत्युपाशसे छुड़ानेकी चेष्टा करते थे । जनसेवाके गुरुतर कार्यमें आयुर्वृद्धिका बहुत ऊँचा स्थान है अतः आदित्य इसविषय में पूर्ण सतर्क रहा करते ।

तुचे तुनाय तत् सु नो द्राधीय आयुर्जीवसे ।

आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ॥ ( ऋ. ८।१८।१८ )

‘ हे आदित्यो ! तुम भलीभाँति महनीय तेजसे युक्त हो इसलिए हमारी सन्तानके लिए जीवनार्थ उस दीर्घ आयुष्यका प्रबंध करो । ’

शतं नो रास्व शरदो विचक्षेऽद्यामायूंषि सुधितानि पूर्वा । ( ऋ. २।२७।१० )

“ हमें विशेष दर्शनके लिए सौ वर्ष प्रदान करो ( उतना दीर्घ जीवन मिले ) और हम भलीभाँति रखी हुई पूर्व-कालीन आयुर्मर्यादाको प्राप्त कर लें । ”

वेदकालीन ऋषि आदित्यों से कष्टनिवारण के लिए प्रार्थना करते थे और अदितिके पुत्र जनताके सुखको बढ़ाने का प्रयत्न करते थे ऐसा निम्न मंत्रों से व्यक्त होता है—

इदं ह नूनमेषां सुमनं भिक्षेत मर्त्यः ।

आदित्यानां...

( ऋ. ८।१८।११ )

“ अब इन आदित्यों के सामने मानव इन सुखकी माँग पेश करे ।

तत् सु नः ... शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।

( ऋ. ८।१८।१२ )

“ हमें वही विस्तृत सुख जिसकी चाह हम करते हैं आदित्य हमें दे दें । ”

विद्वा देवा अघानामादित्यासो अपाकृतिम् ।

पक्षा वयो यथोपरि व्यस्मे शर्म यच्छत...

( ऋ. ८।१७।२ )

“ हे दानी आदित्यो ! तुम पापों को हटाना जानते हो और जैसे पंछी ऊपर से डैनों को फैलाने हैं ताकि पक्षिशावकोंको सुख मिले, उसी तरह तुम हमें विशेष ढंग से सुखका प्रदान करो । ”

व्यस्मे अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन

विश्वानि विश्ववेदसो वरूथया मनागहे ...।

( ऋ. ८।१७।३ )

“ हे सर्वज्ञ आदित्यो ! हम सारे स्वीकरणीय वस्तुओं

को पाना चाहते हैं अतः विशेष रूपसे हमें वह सुख देदो जिस तरह पंछी अपने शिशुओं पर सुखके लिए पर फैलाते हैं ।”

यद् देवा शर्मं शरणं यद् भद्रं यदनातुरम् ।

त्रिधातु यद् वरुथ्यं तद्स्मासु धि यन्तन ...

( ऋ. ८।४७।१० )

“ हे देवो आद्रियो ! जो कल्याणकारक, रोगरहित एवं सुखप्रद निवासस्थान है और जो तीन प्रकार के धातुओं से युक्त स्वीकरणीय धन है उसे हम लोगोंमें दे डालो ।”

इन आद्रियों की निरीक्षण शक्ति बड़ी सूक्ष्म है और इनके मार्गमें कोई रुकावट खड़ी नहीं होती है इसीलिए बड़ी सफलता से ये जनसेवा कर सकते हैं और लोगोंकी सुखवृद्धि करना इनके लिए बड़ी सुगम एवं साधारणसी बात है ।

त आद्रियास उरधो गभीरा अद्रग्धासो...

अन्तः पश्यन्ति घृजिनोत साधु, सर्वे राजभ्यः परमा चिदन्ति । ( ऋ. २।२७।३ )

“ वे अद्रितिके पुत्र विशाल, गंभीर तथा न दबे हुए हैं और भली एवं बुरी बातोंकी थाह पूरीतरह पालते हैं, समूची घटनाओं की तहतक देखते हैं क्योंकि इन विराजमान आद्रियों के लिए सभी दूरस्थित वस्तुएँ मानों समीपवर्ति ही हैं ।” इसलिए आद्रियों को सभी जानकारि अनायासही मिलजाती है जैसे,

... देवा हृत्सु जानीथ मर्यम् ।

उप द्वयुं चाद्वयुं च ... ( ऋ. ८।१८।१५ )

“ हे देवतारूपी आद्रियो ! तुम अपने दिलमें कपटी एवं भ-कपटी मानवको समीप से याने अच्छी तरह जानते हो ।”

आद्रिया अव हि, ख्यताधि कूलादिवः ...

( ऋ. ८।४७।११ )

“ हे आद्रियो ! जैसे कोई तटपर खड़े रहकर नीचे पानीकी ओर देखते हैं वैसेही तुम ऊँचे पदपर आरूढ हो नीचे हम मानवोंको देखलो ।”

... ते धामान्यमृता मर्त्यानामद्रग्धा अभि चक्षते । ( ऋ. ८।१०१।६ )

“ वे न दबे हुए एवं अमर आद्रिय मानवोंके स्थानोंको

देखते हैं ।”

सुगः पन्था अनृक्षरः आद्रियासः ... नात्राव-खादो अस्ति वः । ( ऋ. १।४१।४ )

“ हे आद्रियो ! तुम्हारा मार्ग सुगम एवं कंठकरहित है, यहाँपर तुम्हारे लिए कोई नीचे गिराने योग्य गर्त आदि नहीं है ।”

सुगो हि धो...पन्था अनृक्षरो... साधुः अस्ति । तेनाद्रिया अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परि-हन्तु शर्म ॥ ( ऋ. २।२७।६ )

हे आद्रियो ! आपका मार्ग बड़ा सुगम, निष्कलंक और भला है, उस मार्ग परसे आकर आप हम से भाषण कीजिए और हमें ऐसा सुख दो कि जिसे विनष्ट करना शत्रुके लिए दूभर एवं बड़ा कठिन हो ।”

आद्रिया...सुतीर्थमर्षवतो यथानु नेषथा सुगं... ।

( ऋ. ८।४७।११ )

“ हे आद्रियो ! जैसे घोड़ोंको बिना कठिनाई के सुगमतापूर्वक जाने योग्य स्थानमें ले चलते हैं वैसेही हमें आसानीसे ले चलो ।”

या धो माया अभिद्रुहे यजत्राः ५, शा आद्रिया रिपवे विचृत्ताः । अश्वीव ताँ अति येषं रथेन-रिष्टा उरावा शर्मन् स्याम । ( ऋ. २।२७।१६ )

‘ हे ( यजत्राः ) पूजनीय आद्रियो ! ( वः ) आपकी ( याः मायाः ) जो शक्तियाँ तथा ( पाशाः ) जाल ( अभि-द्रुहे रिपवे विचृत्ताः ) हमसे द्वेष करनेवाले एवं शत्रुको पकड़नेके लिए फैलाये गये हैं ( तान् ) उन्हें मैं ( रथेन ) रथसे यात्रा करता हुआ ( अश्वी इव अति येषं ) जैसे एक घुड़सवार लाँघकर चला जाता है वैसेही पार निकल जाऊँ और हम लोग ( अ-रिष्टाः ) अहँसित-होकर, बिना किसी क्षतिके ( उरौ शर्मन् स्याम ) विशाल सुखमें निवास करते रहें ।” इससे स्पष्ट है कि धीर आद्रिय अपनी अद्भुत युक्तियों तथा जालों से शत्रुको पकड़ लेते थे । परन्तु जो दानी एवं सरल मार्गपरसे चलनेवाले होते उनकी हर-तरह की मदद करना आद्रियों का कार्य था, जैसे-

यो राजभ्य क्रतुनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्ट-यश्च निरयाः । स रेवान् याति प्रथमो रथेन वसु-दावा विदधे प्रदास्तः । ( ऋ. २।२७।११ )

‘ ( यः ) जो मानव ( ऋतनिभ्यः राजभ्यः ) ऋतके नेता एवं विराजमान आदित्यों को ( ददाश ) दे-चुका हो और ( नित्याः पुष्टयः च यं वर्धयन्ति ) शाश्वत टिकनेवाली पुष्टियाँ जिसे वृद्धिगत करते हैं ( सः ) वह ( विदधेषु प्रशस्तः ) सभामण्डपों में प्रशंसित होकर ( प्रथमः रेवान् ) प्रथमश्रेणी का धनाढ्य बनकर ( वसुदावा रथेन याति ) धन का दानी होता हुआ रथ पर से संचार करता है । ’

...हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः अस्वप्रजो...  
अदब्धाः उरुशंसा ऋजवे मर्याय । ( ऋ. २।२५।९ )

‘ सुवर्णमय भाभावाले, विशुद्ध तथा जलधाराओं से पवित्र होते हुए आदित्य ( अस्वप्रजः ) स्वप्रशीलता से दूर रहकर और कठिनाइयों से न दबकर ( ऋजवे मर्याय ) सरल बर्ताव रखनेवाले मानव के लिए ( उरुशंसाः ) अत्यधिक मात्रा में उपदेश देनेवाले या भाषण करनेवाले हैं । ’  
अर्थात् जिस मानवमें सरलता तथा निष्कपटता पाई जाती है उसके समीप आकर आदित्य सहायता करने के लिए या पथप्रदर्शनार्थ बहुत सारी बातें कहनेवाले होते हैं ।

शुचिरपः स्यवसा अदब्ध उपक्षेति वृद्धवयाः  
सुधीरः । . य आदित्यानां भवति प्रणीतौ ॥

( ऋ. २।२७।१३ )

‘ जो अपने आपको आदित्यों के नेतृत्व के नीचे रखता है वह अच्छा वीर होकर ( वृद्ध वयाः ) भक्तभाण्डारों की वृद्धि करता हुआ ( अदब्धाः ) विपत्तियोंसे न दबकर ( स्यवसाः ) अच्छे तृणों से, युक्त ( शुचिः अपः उपक्षेति ) निर्मल जलों-जलाशयोंके निकट निवास करता है । ’ इससे स्पष्ट हुआ कि आदित्य जनताके नेता बनकर उन्हें वीर बनाने का प्रयत्न करते तथा अश्यों की वृद्धि कैसे करनी चाहिए सो बतलाकर अच्छे तृण, शुद्ध जल आदि बातों से युक्त स्थानोंके निकट घर बनाकर रहने का प्रबंध करते ।

अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धा  
सग्नि पायवः सुगोवृधः ॥ ( ऋ. ८।१८।२ )

इन आदित्यों का मार्ग ( अन्-अर्वाणः ) हिंसारहित है और इनके संरक्षण सुगमतापूर्वक बढ़नेवाले तथा शत्रुओं से न दबाये हुए हैं । आदित्यों की योग्यता का अच्छा परिचय इसमें मिलता है । आदित्यों के कार्य करने के मार्ग इस ढंगके हुआ करते कि यथा संभव हिंसा न हो

और स्वयं ही अपनी आन्तरिक शक्ति से संरक्षण की आयोजनाएँ फलती फूलती रहें ।

अब अदितिके संबन्धमें क्या कहा है सो देखना चाहिए, क्योंकि इन आदित्यों को- अदिति के पुत्रों को उसी से प्रेरणा मिलती है ।

अदितिर्न उरुष्यत्वदितिः शर्म यच्छतु ।  
माता मित्रस्य रेवते ऽर्यम्णो वरुणस्य च ॥ ...

( ऋ. ८।४७।९ )

‘ धनाढ्य मित्र, अर्थमा एवं वरुणकी माता जो अदिति है वह हमारी रक्षा करे और सुख दे दे । ’

पिपर्तु नो अदितिः राजपुत्रा अति द्वेषांस्य-  
र्यमा सुगोभिः । वृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप  
स्याम पुरुधीराः अरिष्ठाः । ( ऋ. २।२७।७ )

‘ जिसके पुत्र विराजमान हैं ऐसी वह अदिति हमारा पालन करे, अर्थमा हमें सुगमतापूर्वक या सुखकर मार्गों से शत्रुओंके परे पहुँचावे; मित्र एवं वरुण का दिया हुआ सुख सचमुच दे । प्रचंड ह अतः हम अनेक वीरोंसे युक्त होकर बिना क्षति उठाये उसके समीप रहें । ’

महीं... मातरं सुव्रतानां ऋतस्य पत्नीमवसे  
हुवेम । तुविक्षत्रामजरन्तीमुरुधीं सुशर्माण-  
मदिति सुप्रणीतिम् । ( वाजसनेयी यजु. २।१।५  
अथर्व. ७।६।२ )

‘ हम अदिति को अपनी रक्षा का प्रबंध करनेके लिए बुलायें, जो महनीय, अच्छे व्रतधारी आदित्यों की माता, ऋत की पत्नी, अत्यधिक क्षत्रियोचित वीरता से युक्त, जीर्ण न होनेवाली, विशालता से पूर्ण, सुन्दर सुख देनेवाली एवं भलीभाँति आगे ले चलनेवाली, है । ’

अदितिर्नो दिवा... अदितिर्नक्तं... अदितिः  
पातु अंहसः सदावृधा ( ऋ. ८।१८।६ )

‘ हमेशा बढ़नेवाली अदिति हमें दिन और रात पाप से बचाए ’

उत स्या नो दिवा... अदितिरुत्या गमत् ।  
सा... मयस्करक्ष्ण मिथः ॥ ( ऋ. ८।१८।७ )

‘ और वह अदिति दिन के समय संरक्षण की आयो-  
जनाके साथ हमारे निकट चली जाए और वह शत्रुओंको

दूर हटाकर सुखमय वायुमण्डल का सृजन करे । '

आदित्यों की असाधारण योग्यता का परिचय होने के कारण वैदिक कवि इस प्रकार उनकी सराहना करते हैं—

इमा गिरः आदित्येभ्यो... सनात् राजभ्यो  
जुह्वा जुहोमि । शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नः  
तुषिजातो वरुणो... ( ऋ. २।२७।१ )

' मैं सनातनकाल से विराजमान आदित्योंके लिए इन भाषणों का मानों हविभागसा अपनी ओरसे अर्पण करता हूँ, हमारी इन वक्तृताओंको ये आदित्यमंडलके सदस्य जैसे मित्र, वरुण, अर्यमा एवं भग सुन लें । '

इमं स्तोमं सऋतवो मे अद्य ...जुषन्त ।

आदित्यासः शुचयो धारप्ता अवृजिना अनवद्या  
अरिष्टाः । ( ऋ. २।२७।२ )

' आज मेरे इन स्तुतिमय भाषणका स्वीकार, कार्य-शील आदित्य, जोकि विशुद्ध, पवित्र, पापरहित, निर्दोष और स्वस्थ हैं, कर लें । '

ऐसा प्रतीत होता है कि अदिति के पुत्र, आदित्य ऐसा नाम अबतक बतलाये हुए गुणों से युक्त कुछ चुने हुए देवोंको दिया जाता था जिनका सर्वोपरि कार्य केवलमात्र लोकरक्षा तथा लोकसेवा करना ही था। इस आदित्यमण्डलके सदस्य वेही हो सकते जो संपूर्णतया निर्दोष एवं पूर्णतया विकसित हों, जिनमें किसी भी प्रकार की त्रुटि न पाई जाती हो, क्योंकि त्रुटि होनेसे वे अदिति अखण्डता, अशूनता के पुत्र कहलाने के अधिकारी नहीं हो सकते। यद्यपि एक स्थान में कहा है कि—

अशीतिभिस्तिसृभिः सामगोभिरादित्येभिः... ।

( अथर्व. २।१२।४ )

जिससे ज्ञात होता है कि आदित्यों की संख्या ८०×३= २४० थी और इन्हें सामगान त्रिदित था, तथापि इस आदित्यमण्डलमें प्रमुखतया मित्र, वरुण, अर्यमा, भग एवं सविता का स्थान था। क्योंकि अपने वैशिष्ट्यपूर्ण कार्यों से शायद इनकी ही अमित छाप वैदिक कवियों के अन्त-स्तलपर पड़ी हुई हो। आदित्यों के निश्चित कार्य को संभवतः मित्र, वरुण एवं अर्यमा ही अधिककभाव से संपूर्ण करने की क्षमता से युक्त हों अतः इन तीनों का उल्लेख आदित्यों के सूक्तोंमें बार बार पाया जाता है। जैसे

कि निम्न मंत्रों से स्पष्ट होगा—

मित्रो नो अत्यंहति वरुणः पर्वदर्यमा ।

आदित्यासो यथा विदुः ॥ ( ऋ. ८।६७।२ )

' आदित्य जैसे जानते हैं वैसे ही कार्य करके हमें मित्र, वरुण तथा अर्यमा दुर्गति या पापके पार ले चलें । '

महि वो महतामव वरुण मित्रार्यमन्... ।

( ऋ. ८।६७।४ )

' हे वरुण ! मित्र ! अर्यमन् ! आप जैसे बड़े आदित्यों का संरक्षण बड़ा है । '

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यमणः ।

दुराधर्षं वरुणस्य ॥ ' ( ऋ. १०।१८५।२ )

' तीनों अर्थात् मित्र, वरुण तथा अर्यमा का संरक्षण महान्, दिग्घ तथा शत्रुओंके अपराभवनीय हो जाए । '

अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यं ।

त्रिवरुथं मरुतो यन्त नच्छर्दिः ॥ ( ऋ. ८।१८।२१ )

' हे वीर मरुतो ! हे मित्र, वरुण तथा अर्यमन् ! हमें निष्पाप, नेताओं से युक्त, प्रशंसनीय और तीन प्रकार के स्वीकरणीय धन से पूर्ण घर दे ढाके । '

... मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये । ( ऋ. ८।१८।२० )

' हम कल्याण के लिए मित्र तथा वरुणको चाहते हैं । '

महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे ।

( ऋ. ८।४७।१ )

' हे वरुण और मित्र ! दानीके लिए जो तुम बड़े आदित्य रक्षा का प्रबंध कर डालते हो वह बड़ा है । '

धयं ते वो वरुण मित्रार्यमन्ऋत्यामेदतस्य रथयः ।

( ऋ. ८।१९।३५ )

' हे वरुण, मित्र तथा अर्यमन् ! हम अवश्य ही आप के ऋतको ले चलनेवाले हों । '

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

शर्म यच्छन्तु सप्रयो यदीमहे । ' ( ऋ. ८।१८।३ )

' वह विस्तारशील सुख जिसे हम चाहते हैं मित्र, वरुण, अर्यमा, सविता और भग हमें भली प्रकार से दे डालें । '

यद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवाति

सविता भगः ( ऋ. ७।६६।४ )

' आज जब कि सूर्य का उदय होनेपर ( अनागाः )

मिथ्याप मित्र, अर्यमा, भग एवं सविता ( सुवाति ) कार्य निष्पन्न कर दिखाता है ।'

...सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् । अर्यमणं  
रिशादसम् ॥ ( ऋ. ७।६।७ )

' सूर्योदय के पश्चात् मित्र, वरुण एवं हिंसकोंके वध-कर्ता अर्यमा की सराहना करता हूँ ।'

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरभिः सह ।  
इषं स्वश्च धीमहि । ( ऋ. ७।६।९ )

' हे द्योतमान वरुण तथा हे मित्र ! हम विद्वानोंके साथ तेरेही बनकर रहें तथा अन्न एवं तेजको पानेके उपाय सोचें ।

अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान  
आशत । ( ऋ. ७।६।११ )

तीनों विराजमान वरुण, मित्र एवं अर्यमा को ऐसा क्षत्रियोचित बल मिला कि जो दूसरोंको पाना असंभव प्रतीत हुआ ।'

ऊपर दिये हुए मन्त्रोंसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आदित्यों के संगठित दल में मित्र, वरुण और अर्यमा का स्थान बड़ा ही ऊँचा था । हो सकता है कि आदित्यदल के कार्यकारी मंडल के सत्ताधारी सदस्य उक्त नाम धारण करते हों । वेद में इन तीनों आदित्य दल के प्रमुख सदस्यों के बारेमें कहा है कि-

इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो  
हि सन्ति । इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः  
पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥ ( ऋ. ७।६।५ )

' ये मित्र, अर्यमा एवं वरुण अदिति के ( अदब्धाः शग्मासः ) न दबे हुए शक्तिशाली पुत्र हैं और ये ऋत के ( दुरोणे ववृधुः ) घरमें पले हुए हैं तथा ( भूरेः अनृतस्य चेतारः ) बड़े भारी असत्यको पहचाननेवाले हैं ।' अर्थात् ये कभी मिथ्या बातों में फँस नहीं सकते और इनकी शिक्षादीक्षा ऋतके घरमें हुई है । इस प्रकार शिक्षित होकर ये आदित्यदलके संगठनकार्य में ऊँचे पदपर विराजमान होते हैं । इन के कार्य का स्वरूप बताया है कि ये-

....तिरश्चिद्वहः सुपथा नयन्ति । ( ऋ. ७।६।६ )

' अच्छे मार्ग से लोगोंको पाप के परे ले चलते हैं ।'

... अचेतसं चिद्विचतयन्ति दक्षैः ।

... चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति ॥ ( ऋ. ७।६।७ )

' अच्छे उपायों से अज्ञानी को भी ज्ञानसम्पन्न बनाते हैं और चिकित्सक बुद्धिवाले होकर अनजान को ठीक मार्ग पर ले चलते हैं ।'

अब विचार करना चाहिए कि आदित्यों के लिये कौन से विशेषण प्रयुक्त हुए हैं जिन से ज्ञात होगा कि आदित्य दल में प्रवेश पाने के लिए योग्यता का मानदंड कितना ऊँचा रखा था ।

१. सक्रतवः = कार्योंसे युक्त, कभी खाली हाथ या निठले न बैठे हुए ।

२. शुचयः, धारपूताः = विद्युद् एवं जलधाराओंमें नहा धोकर साफसुथरे रहनेवाले ।

३. ज-वृजिनाः, अनवद्याः = पापरहित, अनिन्द्य ।

४. अरिष्टाः, अदब्धासः - अहिंसित, न दबे हुए ।

५. उरवः, गभीराः = बृहदाकार, गंभीर सुखा-कृतिवाले ।

६. अश्वमजः, अनिमिषाः = निद्रासुख का उपभोग न लेनेवाले और पलक न मारनेवाले । यह दूसरा विशेषण अथक परिश्रम करने की सूचना देता है ।

७. दीर्घाधियः = विशाल बुद्धिवाले या महान् कार्य-क्रम रखनेवाले ।

८. ऋणानि चयमानाः = ऋणोंको बटोरनेवाले ताकि उऋण हो सकें ।

९. ऋजवे मर्त्याय उरुशंसाः = सरल, निष्कपट आचरणवाले मानव को खूब उपदेश की बातें कहनेवाले ।

१०. राजभ्यः ( आदित्येभ्यः ) राजानः = विराजमान आदित्यों के लिए; लोक सेवकों को जिनता के मध्य विराजमान होने की चेष्टा करनी चाहिए ।

११. सु-दानवः = अच्छे दानशूर । कृपणतासे कोसों दूर रहनेवाले ।

१२. यजत्राः = पूजनीय ।

१३. रजिष्ठाः = लोकोंके मध्य खूब संचार करनेवाले ।

१४. ये अंहः अतिपिप्रति = जो पाप के परे ले जाते हैं, जनता को निष्पाप करनेका प्रयत्न करते हैं ।

१५. ये अदृग्धस्य व्रतस्य ईशते = जो न दृष्ट हुए व्रतके अधिपति हैं ।

१६. ऋतावृधः, घोरासो अनृतद्विषः = ऋत की वृद्धि करनेवाले और असत्य के भीषण विरोधी ।

१७. ऋतजाताः ऋतस्थ दुरोणे ववृधुः = ऋत से या ऋतके लिए उत्पन्न, ऋत के धर में पले हुए ।

१८. विश्व-वेदसः = सब कुछ जाननेहार ।

१९. सु-महसः = बड़े अच्छे राजस्वी ।

२०. प्र-चेतसः = प्रकृष्ट ज्ञानवाले ।

२१. सुमूळीकाः = बहुत अच्छे ढंगसे सुख देनेवाले ।

२२. हवनश्रुतः = जनता की पुकार सुननेवाले ।

२३. अ-द्रुहः = द्वेष न करनेवाले ।

२४. क्षितीनां मूर्धानः = मानकोंके प्रमुख ।

२५. अद्भुत-पनसः = जिन्होंने पहले पापकृत्य किया ही न हो ।

इन ऊपर दिये हुए विशेषणों से आदित्यदलके सदस्यों की योग्यतापर बहुत अच्छा प्रकाश पड़ता है । जो निरलस कार्यकर्ता, सत्यप्रेमी, उत्कृष्ट ज्ञानी, सेवातरपर, निष्पाप, साफ सुधरे, दानशूर, विशालचेता और लोकरक्षक बननेके इच्छुक होते वेही आदित्यदल में प्रवेश पासकते थे और अदिति अर्थात् अदीनता, स्वतंत्रता, पूर्णता के पुत्र कहलानेके अधिकारी बन सकते थे ।

इस आदित्यदल में मित्र का स्थान बहुत ही ऊँचा है, इसलिए वेदमें मित्र के बारे में क्या कहा है सो देखना चाहिए—

... मित्राय हव्यं घृतघञ्जुहोत । ( ऋ. ३/५९/१ )

‘ मित्रके लिए घृतयुक्त हवनीय वस्तुका अर्पण करो । ’

तस्मा एतत् पन्यतमाय जुष्टमग्नी मित्राय हवि राजुहोत ( ऋ. ३/५९/५ )

‘ उस अत्यन्त प्रशंसनीय मित्र के लिए यह सेवनीय हविर्भाग अग्नि में डाल दो । ’ इसभाँति मित्र का सुस्वा-

गत करनेके पश्चात् कवि कहते हैं—

अनमीवास इळया मदृशतो... वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम । ( ऋ. ३/५९/३ )

‘ हम नीरोगी और अन्न मिलनेके कारण हर्षित होते हुए मित्र की प्रसन्न बुद्धि की छत्रछायामें रहें । ’

अयं मित्रो नमस्यः... राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट... तस्य धयं सुमतौ... भद्रे सौमनसे स्याम ।

( ऋ. ३/५९/४ )

‘ यह मित्र विराजमान, अच्छे क्षत्रियोचित बल से युक्त एवं नमन करनेयोग्य हो प्रकट हुआ है अतः हम उस की कल्याणकारक प्रसन्नताके तत्वावधान में रहें । अर्थात् कभी ऐसा न होनेपाय कि मित्र को क्रोधित होना पड़े ।

महँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जानो गृणते सुशेषः । ( ऋ. ३/५९/५ )

‘ यह मित्र बड़ा भारी आदित्य है जो जनता को प्रेरित करता हुआ प्रशंसा करनेवाले को सुन्दर ढंग से सुख देता है और जिसके समीप नमनपूर्वक बैठना चाहिए । ’

मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो... ।

( ऋ. ३/५९/१ )

‘ मित्र लोगों को उपदेश की बातें कहता हुआ कार्य-प्रवृत्त करता है । ’

मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे... । ( ऋ. ३/५९/१ )

‘ मित्र टकटकी लगाकर कृषिकर्म में लगे लोगों को देखता है ’ ताकि कहीं काम में भूल न होनेपाय ।

...मित्रो दाधार पृथिवीमुत धाम् । ( ऋ. ३/५९/१ )

...स देवान् विश्वान् बिभर्ति । ( ऋ. ३/५९/८ )

‘ मित्र शुलोक एवं भूलोक की धारणा करता है और सभी देवों का भरणपोषण करता है । ’ अर्थात् समूचे विश्व में सुव्यवस्था हो ऐसी कोशिश करता है ।

न हस्यते न जीयते त्वोतो, नैनं

अंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात् । ( ऋ. ३/५९/२ )

‘ हे मित्र ! तू जिसकी रक्षा कर चुका है वह न मारा जाता है और नाहि जीता जाता है, इसे न समीप से न दूर से ही पाप व्याप्त कर पाता है । ’

अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः ।

अभि श्रवाभिः पृथिवीम् ॥ ( ऋ. ३/५९/७ )

‘ जो मित्र विशाल होकर अपने महनीय तेज से  
 युलोक को तथा अश्वोंसे भूमण्डलको व्याप्त कर चुका है।’

मित्रो... जनाय... इष... अकः । ( ऋ. ३।५९।९ )

‘ मित्रने जनताके लिए अन्न बनाया है ।’

इस प्रकार मित्र की योग्यता बड़ी है, परन्तु वह स्वयं  
 अकेलाही प्रकट न होकर बहुधा वरुण के साथ मिलकर  
 कार्य करता है। अतः वेद में दोनोंका संयुक्त उल्लेख पाया  
 जाता है। जैसे -

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ...

...मित्रावरुणौ ऋतावृधौ ऋतस्पृशा...

कवी... मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया ...

( ऋ. १।२।७-९ )

‘ कुछ बलवाले मित्र और शत्रुविध्वंसक वरुण को  
 बुलाता हूँ; मित्र एवं वरुण ऋत के संपर्क में रह उस की  
 वृद्धि करनेवाले हैं; मित्र और वरुण विद्वान्, विशालता में  
 उत्पन्न और विस्तृत स्थल में निवास करनेवाले हैं ।’

मित्रं घयं हवामहे वरुणं सोमपीतये ...

... यौ... ऋतस्य ज्योतिषस्पती ता मित्रा-

वरुणा हुवे। वरुणः प्रविता भुवन् मित्रो  
 विश्वाभिरुतिभिः । करतां नो सुराधसः ।

( ऋ. १।२३।७-६ )

‘ हम मित्र और वरुण को सोम पीनेके लिए बुलाते  
 हैं; जो ऋत एवं प्रकाशके अधिपति हैं, उन मित्र एवं वरुण  
 को मैं बुलाता हूँ; वरुण उत्कृष्ट संरक्षक बने तथा सभी  
 संरक्षणसाधनों से युक्त होकर मित्र भी रक्षणकर्ता हो  
 और दोनों मिलकर हमें अच्छे धनिक बना दें ।’

मित्र और वरुण के स्वागत का वर्णन वैदिक कवियोंने  
 इस तरह किया है-

आ नो गन्तं रिशादस्ता वरुण मित्र... उपेभं  
 चारुमध्वरम् । ( ऋ. ५।७।१।१ )

‘ हे शत्रुविध्वंसक मित्र एवं वरुण ! इस सुन्दर, हिंसा-  
 रहित कार्य के समीप आने के लिए हमारे पास आओ ।’

उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः...  
 सोमस्य पीतये । ( ऋ. ५।७।१।३ )

‘ हे मित्र और वरुण ! हमारे निचोड़े हुए सोमके निकट  
 आओ, ताकि दानीके सोमका पी जाना संभव हो ।’

आ यातं मित्रावरुणा जुषाणानाहुतिं नरा ।

पातं सोममृतावृथा । ( ऋ. १।६६।१९ )

‘ हे नेता एवं ऋत की वृद्धि करनेवाले मित्र और  
 वरुण ! हमारे दान का स्वीकार करते हुए तुम दोनों  
 आओ तथा सोम पी जाओ ।’

...आयातं...गोश्रीता मरस्तरा इमे सोमासो...

आ राजाना द्विविस्पृशाऽश्मन्ना गन्तमुप नः  
 इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्राः... ।

( ऋ. १।१३।७।१ )

‘ हे विराजमान एवं युलोक के छूनेवाले मित्र एवं  
 वरुण ! आओ, हमारी ओर आओ; क्योंकि आपके लिए  
 ये तेजस्वी सोम दुग्धमिश्रित बनाकर रखे हैं ।’

अश्मन्ना गन्तमुप नोऽर्वाञ्चा सोमपीतये ।

अयं वां मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ  
 पीतये सुतः । ( ऋ. १।१३।७।३ )

‘ हे मित्र तथा वरुण ! सोम पीनेके लिए हमारी ओर  
 आओ; क्योंकि यह सोम तुम्हारे पीने के लिए मनुष्यों से  
 निचोड़ा गया है ।’

इससे स्पष्ट है कि आदित्यों का स्वागत तथा सरकार  
 करने के लिए दुग्धमिश्रित सोम का रस दिया जाता था।  
 अब देखना चाहिए कि वैदिक कवि मित्र एवं वरुण से  
 किस तरह की प्रार्थना करते हैं, या उनके सम्मुख कौनसी  
 माँग पेश करते हैं-

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्घिषात्रिणो  
 नुदतं प्रतीचः । मा ह्यातारं मा प्रतिष्ठां विद्वन्त  
 मिथो विघ्नाना उप यन्तु मृत्युम् ॥

( अथर्व. ३।३२।३ )

‘ हे मित्र और वरुण ! हमारे लिए दूधर निर्भयता रहे  
 और अपने तेज से तुम स्वार्थी लोगों को पराङ्मुख बना-  
 कर दूर कर दो। ध्यानमें रहे कि वे किसी भी बतानेवाले  
 ज्ञानी को और मानसम्मान को न पा सकें, अपितु आपसमें  
 ही एक दूसरे की राह में रोड़े अटकाते हुए मौत के मुँह  
 में समाविष्ट हो जायँ ।’

... मित्रावरुणा ... प्रजावत् क्षत्रं मधुनेह  
 पिश्वतम् । बाधेर्या दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं  
 चिदेनः प्र ममुक्तमस्मत् ॥ ( अथर्व. ६।९।७।२ )



‘हे मित्र एवं वरुण ! सन्तानयुक्त क्षत्रियोचित वीरताको तुम मधु से पुष्ट करो, बुराई को दूर से ही हटा दो और जो कुछ पाप किया हो, उसे हम से अलग कर दो ।’

यो अद्य सेन्यो .. उदीरते । युवं तं मित्रा-  
वरुणौ अस्मद्यावयतं परि ॥ ( अथर्व. १।२०।२ )  
‘ आज जो कोई हथियारा सेना साथ ले ऊपर उठ जाता  
हो, हे मित्र और वरुण ! उसे तुम हम से दूर भगा दो ।’

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ माषताम् ।  
( अथर्व. ५।२४।५ )

‘ वे दोनों मित्र और वरुण जो स्वामी हैं, वर्षा से  
मेरी रक्षा करें ।’

... मित्रावरुणा धारयत्क्षिती ... युत्रो ...  
सख्यैरभिव्याम रक्षसः । ( ऋ. १०।१३।२ )

‘ हे मानवोंके धारणकर्ता मित्र एवं वरुण ! तुम्हारी  
मित्रता मिलनेपर हम राक्षसों को पराभूत करेंगे ।’

एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं ... अविष्टं  
धियो जिगृतं पुरन्धीः । ...

( ऋ. ७।६५।५ ; ७।६४।५ )

‘ हे मित्र एवं वरुण ! तुम्हारे लिए यह स्तोत्र तैयार  
किया है; तुम हमारे कर्मों को सुरक्षित रखो और बहूतोंके  
धारणक्षम बातों को जागृत करो ।’

इयं... पुरोहितिर्युवभ्यां यक्षेष्ु मित्रावरुणा-  
वकारि । विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो... ।

( ऋ. ७।६०।१२ ; ७।६१।७ )

‘ यज्ञोंमें, हे मित्र और वरुण ! तुम्हारे लिए यह  
पुरस्किया कर डाली है; अतः सभी बीहड़ स्थानों को पार  
करके हमारी पुष्टि करो ।’

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं ... ( ऋ. ७।५०।१ )  
... हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः ।

( ऋ. ७।६१।६ )

‘ हे मित्र तथा वरुण ! यहाँ मेरी रक्षा करो; बाधा से  
विर जानेपर तुम्हें मैं पुकारता हूँ ।’

प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूति-  
मुक्षतं घृतेन । आ नो जने भवयतं युवाना  
भृतं मे मित्रावरुणा हवेमा ॥ ( ऋ. ७।६२।५ )

‘ हे मित्र एवं वरुण ! अपने बाहुओं को खूब फैलाओ

ताकि हम जीवित रहें और घृतसे हमारे मार्ग को सींच दो,  
युवकतुल्य तुम जनता में हमें विख्यात करो, मेरी इन  
पुकारोंको तुम सुन लेना ।’

राजाना... ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया  
यातमर्वाक् । इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टि  
अव दिव इन्वतं जीरवान् ॥ ( ऋ. ७।६४।२ )

‘ हे विराजमान मित्र एवं वरुण ! तुम ऋत के संरक्षक,  
क्षत्रिय, शीघ्रदानी और समुद्रपर प्रभुत्व रखनेवाले हो,  
इसलिए हमारे अभिमुख भाओ और शुलोक से हमें वृष्टि  
एवं अन्न प्रेरित करो ।’

सम्राजावस्य भुवनस्य राजयो मित्रावरुणा  
विदधे स्वर्हशा । वृष्टिं वां राधो अमृतत्व-  
मीमहे ... ( ऋ. ५।६३।२ )

‘ हे मलीभूति विराजमान तुम इस भुवनपर प्रभुत्व  
रखनेवाले मित्र और वरुण ! यज्ञमें स्वकीय शक्ति से सब  
कुछ देखनेवाले हो; तुम से हम अपरपन और धन तथा  
वृष्टि चाहते हैं ।’

यत् बंदिष्ठं... सुदान... अच्छिद्रं शर्म भुव-  
नस्य गोपा । तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषा-  
सन्तो जिगीवांसः स्याम ॥ ( ऋ. ५।६२।९ )

‘ हे अच्छे दानधूर एवं विश्वके पालनकर्ता मित्र और  
वरुण ! जो कुछ भी छिद्ररहित ( युटिरहित, अखंड ) और  
अत्यधिक सुख है, उससे हमारी रक्षा करो; ताकि हम धन  
का वितरण करते हुए जिगीषु बनें ।’

... मित्रवरुणा... दिवः सम्राजा पयसा न  
उक्षतम् । ( ऋ. ५।६३।५ )

‘ हे शुलोक के सम्राटतुल्य मित्र और वरुण ! हमें दूध  
एवं जलसे सींच दो अर्थात् हमारे यहाँ दुग्ध एवं जल की  
न्यूनता न हो ।’

सम्राजा या... मित्रभोभा वरुणश्च देवा देवेषु  
प्रशस्ता । ता नः शकं पार्थिवस्य महो रायो  
दिव्यस्य । महि वां क्षत्रं देवेषु ॥

( ऋ. ५।६८।२-३ )

‘ जो ये सम्राटतुल्य, दानी, देवतागणमें प्रशंसित मित्र  
एवं वरुण हैं, वे हमें भूमंडल एवं शुलोकस्थ महनीय धन  
दे डालें, क्योंकि देवताओंमें तुम्हारा क्षत्रियोचित बल

महान् हे ।'

नू मित्रो वरुणो अर्यमा नरुमने तोकाय  
जरिवो दधन्तु । सुगा नो विश्वा सुपथानि  
सन्तु ... ॥ ( ऋ. ७।६२।६ )

' सब अर्यमाके साथ मित्र और वरुण हमें तथा बाल-  
बच्चों को धन दे डाले और हमारे लिए सभी मार्ग सुन्दर  
एवं सुगम हों ।'

मा हेल्ले भूम वरुणस्य ... मा मित्रस्य नृणाम् ।  
( ऋ. ७।६२।४ )

' हम लोग वरुण के तथा मानवोंके अत्यन्त प्यारे मित्र  
के भी द्वेष में न रहें ' अर्थात् ऐसा कभी न होने पाय कि  
वे हमारा द्वेष करने लगें । इस से स्पष्ट है कि मित्रावरुणों  
का कितना भारी प्रभाव जनतापर पडा था ।

मित्रस्तस्यो वरुणो देवो... प्र साधिष्ठेभिः पथि-  
भिर्नयन्तु । ( ऋ. ७।६४।३ )

' तो हमें मित्र एवं देवतारूपी वरुण अत्यन्त सुगम  
मार्ग से अधिकाधिक ले चलें ।'

मित्रहतस्यो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तन-  
याय गोपाः । मा घो भुजेमान्यजातमेनो मा  
तत् कर्म ... यच्छयध्वे ॥ ( ऋ. ७।५२।२ )

' संरक्षक मित्र एवं वरुण उस सुख को हमारी सन्तान  
के लिए दे दें; हम भाप के ही हैं, इसलिए दूसरों से उपज  
पाप का भार हमें न उठाना पड़े और नाहि हम वह कार्य  
करें कि जिसे तुम नष्ट करना चाहो ।'

यत् गोपा अवदत् अदितिः शर्म भद्रं मित्रो  
यच्छरित वरुणः । तस्मिन्ना तोकं तनयं  
दधाना मा कर्म देवहेळनं... ॥ ( ऋ. ७।६०।८ )

' संरक्षक अदितिने जो कहा था कि मित्र एवं वरुण  
कल्याणकारक सुख देते हैं, उसीमें हम अपनी सन्तान  
रखते हुए ऐसा कर्म न करें कि जिससे देवोंका क्रोध  
प्रतीत हो ।'

ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम् ।

मित्र साधयतं धियः । ( ऋ. ७।६६।३ )

' हे विरुपात गृहरक्षक तथा शरीरसंरक्षक मित्र और  
वरुण ! हम स्तोताओं के कर्मों को या बुद्धियोंको सफलता  
दो ।'

ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नांवा वुरिता  
तरेम । ( ऋ. ७।६५।३ )

' हे मित्रावरुणो ! तुम्हारे ऋतके मार्गसे हम बुराहयों  
को इस भाँति लाँचकर भागे बढें, जैसे नौकाके सहारे लोग  
जलोंको तैर जाते हैं ।'

वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे ... ॥

( ऋ. ५।६५।५ )

' हम अत्यन्त विस्तृत एवं चौड़े मित्रके संरक्षणमें रहे '  
इन ऊपर दिये हुए मंत्रभागों से मित्र और वरुणके  
कार्योंका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है । जनताकी सेवा वे  
कितनी लगनसे करते थे, सो सूर्यप्रकाशवत् सुस्पष्ट होता  
है । वेदमें अन्यत्र इनके बारेमें जो उल्लेख पाये जाते हैं  
उनसे भी इसी बात की पुष्टि होती है । जैसे-

यां मे धियं ... देवा अद्वात वरुण मित्र यूयं ।  
तां पीपयत पयसेव धेनुं कुषित् गिरो अधि रथे  
वहाथ ॥ ( ऋ. १०।६४।१२ )

' हे श्रोतमान मित्र एवं वरुण ! तुमने जो बुद्धि मुझे  
प्रदान की है, उसे तुम ऐसी पुष्ट करो जैसे कोई गायको  
अत्यन्त दुग्धवती बनाए अर्थात् बुद्धि यथेष्ट सफल हो ।  
क्योंकि तुम अपने रथोंमें बहुतसी वक्तृताओं को ले चलते  
हो ।' इससे स्पष्ट होता है कि रथारोही होकर जहाँ जहाँ  
वे पहुँचते, उधर लोग इनके लिए भाषण किया करते थे ।  
निस्सन्देह इन भाषणोंमें मित्रावरुणकी योग्यताका यथोचित  
घर्णन रहता अतः वैदिक कवि उनसे प्रार्थना करते हैं कि  
वे दोनों तथा अन्य देवभी उन्हें भलीभाँति लाभ पहुँचायें ।  
मित्र और वरुण तथा अन्य आदित्य ऋषिसेवामें अनवरत  
रूपसे लगे हैं, इसलिए वैदिक कवि कहते हैं-

आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
सीदन्तु मनुषो यथा ॥ ( ऋ. १।२६।४ )

आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो  
अश्वरम् । ( ऋ. १।४४।१३ )

' शत्रुहंसक तीन प्रमुख आदित्य मित्र, वरुण और  
अर्यमा हमारे बिछाए हुए दर्भासनपर अन्य मानवोंके तुल्य  
बैठें । प्रातःकाल ही अहंसक कार्यमें उपास्थित रहनेके लिए  
जानेवाले मित्र एवं अर्यमा कुशासनपर बैठ जायें ।'

वैदिक कवि अस्मिसे कहते हैं कि-

त्वमादित्या आवह तान् ह्युदमसि । अग्ने...

( ऋ. १।९४।३ )

“ हे अग्ने ! तू अदितिके पुत्रोंको इधर ले आ, क्योंकि हम उन्हें बहुत चाहते हैं । ” आदित्योंकी योग्यताके बारेमें कहा है कि—

ते हि पुत्रासो अदितेर्विदुर्भेषांसि योतवे

अंहोधिदुरुचक्रयोऽनेहसः ॥ ( ऋ. ८।१८।५ )

“ वे तो अदितिके पुत्र निष्पाप और विशाल मात्रा में कार्य करनेवाले हैं और जानते हैं किस ढंगसे हमें पापसे दूर रखा जाय तथा द्वेषार्थों को हमसे पृथक् किया जाय । ”

सम्राजो ये सुधृधो यज्ञमाययुः ... दधिरे दिवि क्षयम् । ( ऋ. १०।६३।५ )

“ जो सम्राटतुल्य भली भाँति बढनेवाले आदित्य हैं वे यज्ञमें भासुके हैं तथा धुलोकमें निवासस्थान बना चुके हैं । ” आदित्यों से जनताको कैसे लाभ पहुँचता था इस विषय में कहा है कि—

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते...

यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि

दुरिता स्वस्तये ॥ ( ऋ. १०।६३।१३ )

“ जिस मानव को आदित्य अच्छी नीतियों से सारी बुराइयों के पार सुख के लिए ले चलते हैं, वह अखंडरूप से अहिंसित होता हुआ वृद्धिगत होता है और संतानों द्वारा विशेष रूप से जन्म लेता है । ”

इस कारण वैदिक कवि इन से प्रार्थना करते हैं कि—

त आदित्या अभयं शर्म यच्छत । सुगा नः कर्तं सुपथा स्वस्तये ॥ ( ऋ. १०।६३।७ )

“ ऐसे वे विख्यात आदित्यो ! तुम भयरहित सुख प्रदान करो और भलाई के लिए हमारे लिए सुन्दर मार्ग सुखपूर्वक गमन करने योग्य कर दो । ”

त आदित्या आगता सर्वतातये... ( ऋ. १०।३५।११ )

“ ऐसे वे तुम आदित्यो ! सबके विस्तार या वृद्धिके लिए आओ । ”

तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्विरादित्याः

सुभरं नृपाय्यम् । ( ऋ. १०।३५।१२ )

“ हे देवतारूपी आदित्यो ! तो हमें ऐसा घर दो कि जिसे नेताओं का संरक्षण प्राप्त हो, जो भलीभाँति भरण

करता हो तथा अत्यन्त प्रशंसनीय हो । ”

...द्वस्तये आदित्यासो भवन्तु नः । ( ऋ. ५।५१।१२ )

“ हमारे कल्याण के लिए आदित्य प्रयत्नशील रहें । ”

ऐसे विख्यात आदित्यों के दलमें प्रमुखतया विराजमान मित्र, वरुण एवं अर्यमा के संबंधमें निम्न मंत्र देखने योग्य हैं—

प्रातये वरुणं मित्रं... कृष्वावसे नो अद्य ।

( ऋ. ६।२१।९ )

“ आज विशेष ढंग से संरक्षण हो इसलिए मित्र एवं वरुण को तैयार कर ले । ”

ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

वृधासश्च प्रचेतसः ॥ ( ऋ. ८।८३।२ )

“ वे वर्धनशील तथा प्रकृष्ट ज्ञानवाले मित्रावरुण एवं अर्यमा हमेशा हमारे साथ रहनेवाले हों । ”

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् ।

अर्यमा देवैः सजोषाः ॥ ( ऋ. १।९०।१ )

शं नो मित्रः, शं वरुणः, शं नो भवत्वर्यमा...

( ऋ. १।९०।९ )

“ सरल एवं निष्कपट नीतिसे प्रेरित होकर जाननेवाला मित्र, वरुण तथा देवताओं से युक्त अर्यमा हमें ले चलें । ”

“ तीनों आदित्य हमारे लिए हितकारक बनें । ”

आ नो...गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः

सजोषाः । ( ऋ. १।१८।१२ )

“ हमारे निकट तीनों देवतारूपी मित्रावरुण तथा अर्यमा मिल कर आजायें । ”

धामं नो अस्त्वर्यमन् धामं वरुण शंस्यम् ।

धामं हि आवृणीमहे ॥ ( ऋ. ८।८३।४ )

हे वरुण एवं अर्यमन् ! हमें प्रशंसनीय एवं सुन्दर धन मिल जाय, क्योंकि हम तो सुन्दर चीजको ही सर्वथा स्वीकार कर लेते हैं । ”

ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त नस्तिये विश्वानि दुरिता

नयन्ति । सुभ्रत्रासो वरुणो... । ( ऋ. ६।५१।१० )

“ वे उत्तम क्षत्रियोचित बलसे पूर्ण मित्र एवं वरुण उच्च कोटि के तेजवाले हैं और निष्कय से हमें सारी बुराइयोंके पार ले चलते हैं । ”

त आगमन्तु त इह भवन्तु सुक्ष्मालो वरुणो  
मित्रो... । ( ऋ. ६।४९।१ )

‘ वे अच्छे क्षत्रिय मित्रावरुण इधर आ जायँ और हमारे कथन को सुनलें । ’

इसभाँति, मित्र और वरुण जिन्हें आदित्य दल में सर्वोपरि स्थान मिल गया है अपनी तीव्र लगन एवं अद्भ्युत श्लाहसे जनसेवा को इतने अच्छे ढंग से निभाते हैं कि वैदिक कवि प्रसन्नचेता होकर उनकी खूब सराहना करते

हैं, देखिए—

इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिधं न कृण्वे  
असुरा नवीयः ॥ ( ऋ. ७।३६।२ )

‘ हे बल तथा प्राण शक्ति देनेवाले मित्र और वरुण ! तुम दोनोंके लिए मैं इस नयी सुन्दर वक्तृता को बना देता हूँ, मानों जैसे कि कोई भक्त बनाता हो अर्थात् सोच विचार के उपरान्त परिश्रमपूर्वक तैयार कर देता हूँ । ’

## सविता देवताका परिचय

सविता के संबन्ध में ब्राह्मणग्रन्थों में निम्न निर्देश मिलते हैं जैसे—

सविता वै देवानां प्रसविता । ( ऋत. १।१।२।१७ )  
( जै. उ. ३।१।८।३ )

सविता वै प्रसविता । ( कौ. ६।१४ )

‘ सविता सचमुच देवोंको उत्पन्न करनेवाला है, उत्पादक है । ’

सविता वै प्रसवानामीशे । ( कौ. १।३०; ७।१६ )

सविता प्रसवानामीशे । ( कौ. ५।२ )

‘ सविता विशेष उत्पादनोंका प्रभु है । ’ इस से स्पष्ट हुआ कि उत्पादन या सृजनक्रिया से सविताका घनिष्ठ संबंध है। यही बात निम्न निर्देश में दिखाई देती है—

पताभिर्वै ( रात्रिभिः ) सविता सर्वस्य प्रसवमगच्छत् । ( ताण्ड्य. २४।१५।२ )

‘ इन्हीं से युक्त हो सविता सबके उत्पादन के निकट चला गया । ’

सविता प्राजनयत् । ( तै. ब्रा. १।६।२।२ )

प्रजापतिः सविता भूत्वा प्रजा असृजत ।

( तै. ब्रा. १।६।४।१ )

‘ सविताने प्रकृततया उत्पन्न किया, प्रजापतिने सविता बनकर प्रजाओं का सृजन किया । ’

अब देखना चाहिए कि वेदग्रन्थोंमें उत्पादक सविताके संबंधमें कौनसे निर्देश पाये जाते हैं—

दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः ... विचक्षणः

प्रथयन्नापृणन्नुर्वजीजनत् सविता सुम्नमुक्थ्यम् ।  
( ऋ. ४।५३।२ )

‘ विश्वकी प्रजाओंका पालनकर्ता, शुक्रोकका धारण करनेवाला और विशेष ढंगसे द्रष्टा सविता फैलानेका तथा भरनेका कार्य करता हुआ प्रशंसनीय एवं विशाल सुखका सृजन कर चुका । ’

... प्रासाधीन्द्रं द्विपदे चतुष्पदे । ( ऋ. ५।८।१।२ )

‘ मानवों तथा चौपायोंके लिए सविताने हितका निर्माण प्रकृत रूपसे किया । ’

उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इत् ... ( ऋ. ५।८।१।५ )

‘ हे सवितर ! तू अकेला ही उत्पादन कार्यपर प्रभुत्व रखता है । ’

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः ।

तं भागं चिामीमहे ॥ ( ऋ. ५।८।२।३ )

‘ वह सेयनीय या ऐश्वर्यवान् सविता तो दानी पुरुषके लिए रत्नोंका सृजन करता है और हम उस अनूठे भागको पाना चाहते हैं । ’

... देवः सविता दमूना ... आ दाशुषे सुवाति भूरि धामम् । ( ऋ. ६।७।१।४ )

‘ दान देनेकी इच्छा मनमें रखता हुआ द्योतमान सविता दानी पुरुषको देनेके लिए सुन्दर धन को प्रचुर-मात्रा में बना देता है । ’

सविता प्रसवानामधिपतिः स्व माधत् ... ।

( अथर्व. ५।२४।१ )

‘ प्रकृष्ट उत्पादनोका स्वामी जो सविता है वह मेरी रक्षा करे ।’

वाममद्य सवितर्षाममुश्वो दिवेदिशे वाममस्मभ्यं  
सावीः । ( ऋ. ६।७।१६ )

“ हे सवितर् ! आज हमारे लिए सुन्दर धनका सृजन कर, कल के दिन भी और प्रतिदिन धनका निर्माण कर ।”

अथा नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभगम् ।  
( ५।८।१४ )

“ हे देवतारूपी सवितर् ! आज तू हमारे लिए सन्तान-पुत्र अच्छे ऐश्वर्यका सृजन कर ।”

देवेभ्यो हि प्रथमं यद्वियेभ्योऽमृतत्वं सुवसि  
भागमुत्तमम् । ( ४।५।४।२ )

“ हे सवितर् ! पहले तो तू पूजनीय देवोंके लिए उत्कृष्ट तथा भजनीय धनका और अमरपनका निर्माण करता है ।”

य इमा विश्वा जानान्याधावयति श्लोकेन । प्र च  
सुवाति सविता ॥ ( ऋ. ५।८।२।९ )

“ जो सविता इन सभी वस्तुओं को प्रकर्ष से उत्पन्न करता है और उत्पादित होनेपर श्लोक द्वारा चारों ओर सुनाता है ।

उदु तिष्ठ सवितः श्रुभ्यास्य ... व्युर्षी पृथ्वी...  
सृजानः आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः ॥

( ऋ. ७।३।८।२ )

‘ हे सवितर् ! तू उठ खड़ा रह, इस प्रार्थना को सुन के और तू विशाल पृथ्वी को बनाता है तथा मानवों के लिए मनुष्योपभोग्य धन-संपदा को प्रेरित करता है ।’

इन उपयुक्त मन्त्रों से भी स्पष्ट होता है कि उत्पादन एवं प्रेरण सविता के प्रमुख कार्यों में गिने जाते थे । दोनों कार्य निस्सन्देह महत्त्वपूर्ण हैं और वैदिक कवि सविता से निम्न प्रकार प्रार्थना करते हैं—

ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृता  
अन्तरिक्षे । तोमिर्नो अद्य पथिभिः सुगोमी  
रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥ ( ऋ. १।३।५।१।१ )

‘ हे ( देव सवितर् ) शीतमान ! उत्पादक तथा प्रेरक सवितर् ! अन्तरिक्ष में ( ते ये पूर्व्यासः ) तेरे जो पूर्व-काक से विद्यमान ( अरेणवः सु कृताः ) बिना धूलि के

अर्थात् निर्मल एवं भली भाँति बनाये हुए ( पन्थाः ) मार्ग हैं ( तेभिः ) उनपर से, ( सुगोभिः पथिभिः ) जो कि सुगमतापूर्वक यात्रा करनेयोग्य हैं, आकर ( अद्य नः रक्ष ) आज हमारी रक्षा कर ( अधि ब्रूहि च ) और हमसे वार्ता-लाप कर, कुछ उपदेश की बातें हम से कह दे ।’

अस्मभ्यं तद्विषो अदूभ्यः पृथिव्यास्त्वया  
दत्तं काम्यं राधः आ गात । शं यत् स्तोतृभ्य  
आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे ॥

( ऋ. २।३।८।११ )

‘ हे ( सवितर् ) उत्पादक तथा प्रेरक देव ! ( स्वया दत्तं ) तूने दिया हुआ ( तत् काम्यं राधः ) वह कमनीय धन ( दिवः अदूभ्यः पृथिव्याः ) शूलोक से, जलोंसे तथा भूमंडलपर से ( अस्मभ्यं आ गात् ) हमारे लिए आज्ञाय, ( यत् ) जो धन, ( स्तोतृभ्यः ) स्तोताओं के लिए तथा ( उरुशंसाय जरित्रे ) विस्तारपूर्वक कहनेवाले प्रशंसक के लिए ( शं आपये भवति ) शान्तिदायक तथा आस्रवत् बन जाता है ।’

बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातु-  
रुभयस्य यो वशी । स नो देवः सविता शर्म  
यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरुथमंहसः ॥

( ऋ. ४।५।३।६ )

‘ ( देवः सविता ) दानी सविता ( यः वशी ) जो सब को वश में रखनेवाला, ( जगतः स्थातुः ) जंगम एवं स्थावर ( उभयस्य जगतः निवेशनः ) द्विविध संसार को ठीक बिठानेवाला, ( प्रसवीता ) प्रकर्ष से प्रेरित या उत्पन्न करनेवाला और ( बृहत्सुम्नः ) प्रचंड सुख या धन साथ रखनेवाला है ( सः नः ) वह हमें ( शर्म यच्छतु ) सुख दे डाले और ( अस्मे ) हमारे लिए ( अंहसः क्षयाय ) पाप का विनाश हो इसलिए ( त्रिवरुथं ) तीन विभाग-वाले घर का दान करे ।’ इससे विदित होता है कि सविता का कार्यक्षेत्र समूचे विश्व में फैला हुआ है ।

आगन् देव ऋतुभिर्धर्तु क्षयं, दधातु नः  
सविता सुप्रजामिषम् । स नः क्षपाभिरह-  
भिश्च जिन्वतु, प्रजावत्तं रयिमरमे समिष्वतु  
( ऋ. ४।५।३।७ )

‘ देवतारूपी सविता ( ऋतुभिः आगन् ) विभिन्न

मौसम में आजाए और ( क्षयं वर्धतु ) हमारे निवास-स्थल को बढ़ाए तथा ( सुप्रजां इषं ) अच्छी सन्तान तथा अन्न ( नः दधातु ) हमें देदे; वह सविता ( क्षपाभिः अहभिः च ) रातदिन ( नः जिन्वतु ) हमें संतुष्ट रखे और ( अस्मे ) हमारी ओर ( प्रजावन्तं रथिं सं इन्वतु ) सन्तानयुक्त धन भलीभाँति प्रेरित करे । '

अभूद्देवः सविता वन्द्यो नु नः... वि यो रश्ना भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अज्ञ द्रविणं यथा दधत् ॥ ( ऋ. ४।५४।१ )

' हमारे लिए द्योतमान सविता वन्दनीय हुआ है, इसमें सम्देह नहीं; जो मानवों को रमणीय धन बाँटकर देता है वह जैसे इधर हमारे लिए उच्च कोटि का द्रव्य रखे ऐसा प्रबंध करे । '

गाव इन प्रामं युयुधिरिवाश्वान्, वाश्रेव वरसं सुमना दुहाना । पतिरिव जायामभि नो न्येतु, धर्ता दिवः सविता विश्ववारः । ( ऋ. १०।१४९।४ )

" जैसे गौएँ सायंकाल अपने प्राम की ओर सहर्ष लौट आती हैं, योद्धा जिस तरह उत्सुकतापूर्वक घोड़ों के पास जा पहुँचता है, अच्छी मनवाली गौ दुहते समय रँभाती हुई अपने बछड़े के निकट जिस प्रकार शीघ्र जाती है और पतिदेव अपनी पत्नी के निकट जैसे तीव्रतया जाता है वैसे ही यह सविता, जो कि एलोक का धारणकर्ता और सब लोगों के लिए वरणीय है, हमारे समीप अव्यय अधिक मात्रा में आ जाए । "

देवस्य वयं सवितुः सवीमनि, श्रेष्ठे स्याम वसु-नश्च दावने । यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निषेशने प्रसवे चासि भूमनः । ( ऋ. ६।७।१२ )

( वयं ) हम लोग देवतारूपी सविता के उच्चकोटि के ( सवीमनि ) उत्पादन-कार्य की तथा ( वसुनः दावने ) धनवितरण-कार्य की छत्रछाया में रहें, हे सवितर ! जो तू अखिल मानव तथा चौपायों के यथेष्ट सृजन एवं प्रस्थापन-कार्य में लगा हुआ है । " इस मन्त्र में सविता के विशाल कार्यक्षेत्र की झलक मिलती है । वह केवल श्रेष्ठ ढंग के उत्पादन-कार्य में ही लगा हो सो बात नहीं अपितु धनके विभाजन में भी उसका ध्यान बराबर लगा रहता है, क्योंकि यदि उत्कृष्ट उत्पादन की ओर ही ध्यान दिया जाय और

उचित वितरण का कुछ भी खयाल न रखा जाय तो बड़ी बिकट समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं जैसे कि वर्तमान आर्थिक संगठन से स्पष्ट होता है । समूचे विश्व के उत्पादन तथा ठीक जगह बिठाने के कार्य को सविता सुचारुरूप से निभाता है ।

अदग्धेभिः सवितः पायुभिर्द्रुं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् । हिरण्यजिह्वः सुविताय नद्यसे रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥ ( ऋ. ६।७।१३ )

" हे सवितर ! तू आज ( नः गयं ) हमारे धन तथा गृहको ( शिवेभिः अदग्धेभिः पायुभिः ) हितकारक तथा न दबाये गये संरक्षणसाधनों से ( परि पाहि ) चतुर्विक् सुरक्षित रख और तू ( हिरण्यजिह्वः ) हितरमणीय वाणी से कहनेवाला है इसलिए हम तेरे सामने यह माँग पेश करते हैं कि हमें ( नद्यसे सुविताय ) नई भलाई के लिए बचा दे एवं हमपर ( अघ-शंसः ) बुरी बातें कहनेवाला कोई भी ( माकिः ईशत ) कभी न शासन प्रस्थापित करे ।

अपि घृतः सविता देधो अस्तु, यमा खित् विश्वे वसवो गृणन्ति । स नः स्तोमान् नमस्य श्वनो पाद्विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरिन् ॥ ( ऋ. ७।३।८।३ )

" सभी वसुतक जिसकी प्रशंसा करते हैं वह दानशील सविता भी प्रशंसित होवे, वह नमन करने योग्य है और हमारे स्तोत्रोंको सुनकर हमें अन्न दे डाले तथा सारी संरक्षण आयोजनाओं को साथ लेकर विद्वन्मण्डली की रक्षा कर ले । "

इससे स्पष्ट है कि उत्पादन, प्रेरण के अतिरिक्त संरक्षण कार्य करनेकी क्षमताभी पर्यासरूपसे सवितामें विद्यमान थी ।

### सूर्य और सविता

साधारणतया सूर्यको सविता कह जाता है, अतः प्रश्न उठ खड़ा होता है कि क्या सूर्य और सविता अभिन्न हैं ? ब्राह्मण-ग्रंथों के कुछ वचन इस अभिन्नता को मानते हैं ऐसा प्रतीत होता जैसे—

आदिरथ पृथ सविता । गोपथ. १।३३; जै. उ.

४।२७।११

असावादित्यो देवः सविता । शतपथ. ६।३।१।१८।

असौ वै सविता योऽसौ ( सूर्यः ) तपति ।

कौ. ७।६; गोपथ. १।२०

एष वै सविता य एष (सूर्यः) तपति ।

शतपथ. ३।२।३।१८; ४।४।१।३; ५।३।१।७

इन वचनों से स्पष्ट होता है कि सविता वास्तवमें सूर्य ही है, क्योंकि विश्वभरमें प्रेरणा और उत्पादन-क्रिया का सजीव प्रतीक सूर्य है, यह निस्सन्देह है। वेदमें भी कुछ ऐसे मंत्र पाये जाते हैं जिनसे सूर्य एवं सविताकी अभिन्नताकी सूचना मिलती है, जैसे—

अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्याः... हिरण्याक्षः  
सविता देव आगात्, दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ।  
( ऋ. १।३।५।८ )

“ हिरण्यमणीय दृष्टिसे युक्त सविता द्योतमान होता हुआ, दानी पुरुष के लिए स्वीकरणीय रत्नों को धारण करता हुआ, पृथ्वीके आठों दिग्दिग्भागों को प्रकाशित कर गया और आपहुँचा है ।”

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिः, उभे शावा-  
पृथिवी अन्तरीयते, अपामीवां वाधते...अभि  
कृष्णेन रजसा घामृणोति ॥ ( ऋ. १।३।५।९ )

“ विशेषरीतिसे द्रष्टा और हाथ में सुवर्ण धारण करता हुआ भूलोक एवं शुलोक दोनों के बीच चला आता है, रोगों को दूर भगाता है और आकर्षक तेजसे शुलोक को व्याप्त करता है ।”

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो...हिरण्ययेन सवि-  
ता रथेना आ देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥  
( ऋ. १।३।५।२ )

‘ आकर्षक तेज से युक्त हो आनेवाला द्योतमान सविता सुवर्ण के बने अर्थात् तेजस्वी जगमगाते हुए रथपर से विश्व को निहारता हुआ चला आता है ।’

वि नाकमख्यत् सविता वरेण्योऽनु प्रयाण-  
मुषसो वि राजति । ( ऋ. ५।८।१।२ )

‘ श्रेष्ठ सविताने आकाश को विशेष ढंग से प्रकाशित कर दिया है और वह उषाके प्रयाण के पश्चान् विराजमान हो उठता है ।’

नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्ते, आपप्रिवान्  
रोदसी अन्तरिक्षम् । ( ऋ. १०।१३।१।२ )

‘ शुलोक, भूलोक तथा अन्तरिक्ष पूर्ण करता हुआ यह मानवोंका निरीक्षण करनेवाला आकाश के मध्य बैठे रहता है ।’

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योति-  
रुदर्या अजन्मम् । ( ऋ. १०।१३।१।१ )

‘ सूर्य की रश्मिवाला तथा हरण करने की क्षमता से युक्त सविता सदैव प्रकाशपुंज को ऊपर उठाता है ।’

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता  
घामदंहत् । ( ऋ. १०।१४।१।१ )

‘ सविताने भूमि को यंत्रोंद्वारा स्थिर किया है और निरालंब से दिखाई देनेवाले स्थान में शुलोक को स्थायी बनाया है ।’

आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा... प्र बाहू  
अस्त्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसव-  
क्षत्तुभिर्जगत् ॥ ( ऋ. ४।५।३।३ )

‘ शुलोकस्थ तथा भूमंडलस्थ लोकोंको अपने तेज से व्याप्त कर चुका और जगत् को दिन और रात के समय प्रेरित तथा अपने स्थान पर बिठाकर उत्पादन कार्यके लिए सविताने अपने बाहुओं को खूब भागे बढ़ाया है ।’ सूर्य का सविगृह्य अत्यन्त स्पष्ट है ।

संरक्षण-कार्य करने के लिए सविता को निमंत्रण भेजने के निर्देश देखने योग्य हैं ।

... ह्वयामि देवं सवितारमृतये । ( ऋ. १।३।५।१ )  
हिरण्यपाणिमृतये सवितारमुपह्वये । ( ऋ. १।२।२।५ )

विभक्तारं हवामहे वसोश्चिप्रस्य राधसः ।  
सवितारं नृचक्षसम् ॥ ( ऋ. १।२।२।७ )

‘ संरक्षण हो इसलिए मैं देवतारूपी सविता को, जो हाथमें सुवर्ण धारण करता है, बुलाता हूँ; मानवों के द्रष्टा और अनूठे धन का विभजन करनेवाले सविता को हम बुलाते हैं ।’ इस प्रकार भक्तोंके दिये हुए निमंत्रण को पाकर सविता रथपर चढ़कर यात्रा करने लगता है, जैसे—

हिरण्येन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि  
पश्यन्... बृहन्तं आस्थाद्रथं सविता चित्र-  
भानुः । ( ऋ. १।३।५।२,४ )

‘ देव सविता भुवनों को देखता हुआ सुनहले रथपरसे चला आता है; विचित्र किरणोंवाला याने तेजस्वी सविता बड़े भारी रथपर चढ़ गया ।’

इसभाँति, आदित्यों के महनीय कार्यका वर्णन वेदमें किया है। पाठक भी आदित्यों के मंत्र एवं सूक्त पढ़ें और मनन करें, ऐसी विनम्रित है।



# दैवत-संहिता ।

[ ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता । ]

## १ अदितिः, आदित्याश्च ।

(१) अदितिः ।

॥१॥ ( ऋ० १।८९।१० )

(१)× गोतमो राहूगणः । त्रिपुप् ।

अदितिर्घौरदितिरन्तरिक्षं—मदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।

विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् १०

॥२॥ ( ऋ० ८।१८।४-७ )

(२-५) हरिम्बिष्टिः काण्वः । उष्णिक् ।

देवेभिर्देव्यदिते ऽरिष्टभर्मन्ना गृहि । स्मत् सूरिभिः पुरुप्रिये सुशर्मभिः ४

ते हि पुत्रासो अदिते—विदुर्देषांसि योतवे ।

अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽनेहसः ५

अदितिर्नो दिवा पशु—मदितिर्नक्तमद्र्याः । अदितिः पात्वंहसः सदावृधा ६

उत स्या नो दिवा मति—रदितिर्रुत्या गमत् । सा शंताति मयस्करदप स्त्रिधः ७ ५

॥३॥ ( ऋ० ८।६७।१०-१२ )

(६-८) मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरुणिर्मान्यः बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । गायत्री ।

उत त्वामदिते म—ह्यहं देव्युपं ब्रुवे । सुमुळीकामभिष्टये १०

पथिं द्वीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः । मार्किस्तोकस्य नो रिपत् ११

अनेहो न उरुव्रज उरूचि वि प्रसर्तवे । कृधि तोकार्य जीवसे १२

॥४॥ (९-१५)(वा० य० ११।५६-५७,५९)

सिनीबाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा । सा तुभ्यमदिते मह्योखां दधातु हस्तयोः ६६ ९

×वा० य० २५,२३ । अथर्व० ७।६।१।

६० [अदितिः०] १



उखां कृणोतु शक्त्या बाहुभ्यामदितिर्धिया ।  
 माता पुत्रं यथोपस्थे साग्निं बिभर्तु गर्भं आ । मुखस्य शिरोऽसि ५७ १०  
 अदित्यै रास्नास्यदितिष्टे विलं गृभ्णातु ।  
 कृत्वाय सा महीमुखां मृन्मयीं योनिमग्रये ।  
 पुत्रेभ्यः प्रार्थच्छददितिः श्रपयानिति ५९

॥५॥ ( वा० य० २१।५-७ ) ×

महीम् षु मातरं × सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हुवेम ।  
 तुविभ्रत्रामजरन्तीमुरुची × सुशर्माणमदिति × सुप्रणीतिम् ५  
 सुत्रामाणं पृथिवीं धामनेहस × सुशर्माणमदिति × सुप्रणीतिम् ।  
 दैवीं नाव × स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ६  
 सुनावमा रुहेयमस्रवन्तीमनागसम् । शतारित्रा × स्वस्तये ७

॥६॥ ( वा० य० २९।४ ) :

स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।  
 देवोर्भिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु ४ १५

॥७॥ ( अथर्व० ७।६।४ ) +

( १६-१७ ) अथर्वा । विराड् जगती ।

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदिति नाम वचसा करामहे ।  
 यस्या उपस्थं उर्वेऽन्तरिक्षं सा नः शर्म त्रिवरुथं नि यच्छातु ४

॥८॥ ( अथर्व० ७।७।१ ) आर्वी जगती ।

दितेः पुत्राणामदितेरकारिषमव देवानां बृहतामनर्मणाम् ।  
 तेषां हि धाम गभिषक् समुद्रियं नैनान् नमसा परो अस्ति कश्चन १ १७

अदिति-सहचारी देवगणः ।

( १ ) सोमः, अदितिः ।

॥९॥ ( अथर्व० ६।७।१-२ ) [ दै० सोमः १२५१-५२ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ ]

## (२) आदित्याः ।

॥१०॥ (ऋ० १।४१।४-६)

(१८-२०) कण्वो घौरः । गायत्री ।

सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते । नात्रावखादो अस्ति वः ४  
 यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा । प्र वः स धीतये नशत् ५  
 स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमृत त्मना । अच्छा गच्छत्यस्तृतः ६ २०

॥११॥ (ऋ० २।२७।१-१७)

(२१-३७) कूर्मो गात्सर्मदो, गृत्समदो वा । त्रिष्टुप् ।

इमा गिर आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद् राजभ्यो जुह्वा जुहोमि ।  
 शृणोतु मित्रो अर्यमा भर्गो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः १  
 इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।  
 आदित्यासः शुच्यो धारपूता अष्टजिना अनवद्या अरिष्टाः २  
 त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः ।  
 अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्व राजभ्यः परमा चिदन्ति ३  
 धारयन्त आदित्यासो जगत् स्या देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।  
 दीर्घाधियो रक्षमाणा असुर्यमृतावानश्वयमाना ऋणानि ४  
 विद्यामादित्या अवसो वो अस्य यदर्यमन् भय आ चिन्मयोभु ।  
 युष्माकं मित्रावरुणा प्रणीतौ परि श्वश्रैव दुरितानि वृज्याम् ५ २५  
 सुगो हि वो अर्यमन् मित्र पन्था अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति ।  
 तेनादित्या अर्धि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म ६  
 पिपर्तु नो अदिती राजपुत्रा ऽति द्वेषास्वर्यमा सुगोभिः ।  
 बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप स्याम पुरुवीरा अरिष्टाः ७  
 तिस्रो भूमीर्धारयन् त्रीरुत द्यून् त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम् ।  
 ऋतेनादित्या मर्हि वो महित्वं तदर्यमन् वरुण मित्र चारु ८  
 त्री रोचना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुच्यो धारपूताः ।  
 अस्वमजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय ९  
 त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्ताः ।  
 शतं नो रास्व शरदो विचक्षे ऽश्यामार्युषि सुधितानि पूर्वा १० ३०

न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा । पाक्या चिद् वसवो धीर्या चिद् युष्मानीतो अभयं ज्योतिरइयाम्	११
यो राजभ्य ऋतुनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः । स रेवान् याति प्रथमो रथेन वसुदावां विदथेषु प्रशस्तः	१२
शुचिरपः सूयवसा अदब्ध उप क्षेति वृद्धवयाः सुवीरः । नकिष्टं मन्त्यन्तितो न दूराद् य आदित्यानां भवति प्रणीतौ	१३
अदिते मित्र वरुणोत मृळ यद् वो वयं चक्रुमा कञ्चिदागः । उर्वइयामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभि नशन् तमिस्राः	१४
उभे अस्मै पीपयतः समीची दिवो वृष्टिं सुभगो नाम पुष्यन् । उभा क्षयावाजयन् याति पृत्सु—भावधौ भवतः साधू अस्मै	१५ ३५
या वो माया अभिद्रुहे यजत्राः पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः । अश्वीव ताँ अतिं येपं रथेना—रिषा उरावा शर्मन्त्स्याम	१६
माहं मघोनों वरुण प्रियस्य भरिदान् आ विदं शूनमापेः । मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	१७

॥१२॥ ( ऋ० ७।५१।१-३ )

(३८-५३) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

आदित्यानामवमा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शतमेन । अनागास्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोपमाणाः	१
आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः । अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोममवसे नो अद्य	२
आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्वे ऋभवश्च विश्वे । इन्द्रो अग्निरश्विनां तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	३ ४०

॥१३॥ (ऋ० ७।५२।१-३)

आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा । सनेम मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः	१
मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः । मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे .	२ ४१

तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सधितुरियाणाः ।

पिता च तन्नो महान् यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त ३

॥१४॥ ( ऋ० ७।६६।४-१३ )

गायत्री, १०-१३ प्रगाथः = ( समा बृहती+विषमा सतोबृहती )

यदद्य सूर उदिते ऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवार्ति सविता भगः ४

सुप्रवावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः । ये नो अंहोऽतिपिप्रति ५ ४५

उत स्वराजो अदिति रदब्धस्य व्रतस्य ये । महो राजान ईशते ६

प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम् । अर्यमणं रिशादसम् ७

राया हिरण्यया मति रियमवृकाय शवसे । इयं विप्रा मेधसांतये ८

ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह । इपं स्वश्च धीमहि ९

बृहवः सूरचक्षसो ऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।

त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वाति परिभूतिभिः १० ५०

वि ये दधुः शरदुं मासमादहर्गज्ञमक्तुं चादृचम् ।

अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत ११

तद् वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते ।

यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः १२

ऋतावान् ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः ।

तेषां वः सुभे सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः १३

॥१५॥ ( ऋ० ८।१८।१-३, १०-२२ )

(५४-६९) इरिम्बिष्टिः काण्वः । उष्णिक् ।

इदं ह नूनमेषां सुभ्रं भिक्षेत मर्त्यः । आदित्यानामपूर्व्यं सर्वाभानि १

अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम् । अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः २ ५५

तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ३

अपामीवामप स्निधमप सेधत दुर्मतिम् । आदित्यासो युयोतना नो अंहसः १०

युयोता शरुमस्मदाँ आदित्यास उतामतिम् । ऋधग् द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः ११

तत् सु नः शर्म यच्छता ऽऽदित्या यन्मुमौचति । एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः १२

यो नः कश्चिद् रिरिश्चति रक्षस्त्वेन मर्त्यः । स्वैः प एवै रिरिषीष्ट युर्जनः १३

समित् तमधमश्रवद् दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् । यो अस्मन्ना दुर्हणावाँ उपं द्रयुः १४ ६१

पाकत्रा स्थन देवा हृत्सु जानीथ मर्त्यम् । उप द्वयुं चाद्वयुं च वसवः	१५	
आ शर्म पर्वताना—मोतापां वृणीमहे । द्यावाक्षामारे असद् रपस्कृतम्	१६	
ते नो भद्रेण शर्मणा युष्मार्कं नावा वसवः। अति विश्वानि दुरिता विपर्तन	१७	
तुचे तनाय तत् सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे । आदित्यासः सुमहसः कृणोतन	१८	६५
यज्ञो हीळो वो अन्तर आदित्या अस्ति मृळत ।		
युष्मे इद् वो अपि षमसि सजात्ये	१९	
बृहद् वरूथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना । मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये	२०	
अनेहो मित्रार्यमन् नृवद् वरुण शंस्यम् । त्रिवरूथं मरुतो यन्त नदछर्दिः	२१	
ये चिद्धि मृत्युबन्धव आदित्या मनवः सासि ।		
प्र स्र न आयुर्जीवसे तिरेतन	२२	

॥१६॥ ( ऋ० ८।१९।३४-३५ )

(७०-७१) सोभरिः काण्वः । ३४ उष्णिक्, ३५ सतोबृहती ।

यमादित्यासो अद्रुहः पारं नयथ मर्त्यम् । मघोनां विश्वेषां सुदानवः	३४	७०
यूयं राजानः कं चिच्चर्षणीसहः क्षयन्तं मानुषाँ अनु ।		
वयं ते वो वरुण मित्रार्यम—न्त्स्थामेदृतस्य रथ्यः	३५	

॥१७॥ ( ऋ० ८।४।७।१-१३ )

(७२-८४) त्रित आपयः । महापङ्क्तिः ।

महिं वो महतामवो वरुण मित्रं दाशुषे ।		
यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथा नेमघं नश—दनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः	१	
विदा देवा अघाना—मादित्यासो अपाकृतिम् ।		
पक्षा वयो यथोपरि व्युष्मे शर्म यच्छता—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः	२	
व्युष्मे अधि शर्म तत् पक्षा वयो न यन्तन ।		
विश्वानि विश्ववेदसो वरूथ्या मनामहे ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः	३	
यस्मा अरासत् क्षयं जीवातुं च प्रचेतसः ।		
मनोविश्वस्य घेद्रिम आदित्या राय ईशते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः	४	
परि णो वृणजन्नघा दुर्गाणि रथ्यो यथा ।		
स्यामेदिन्द्रस्य शर्म—प्यादित्यानामृतावस्य—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः	५	७६

परिहृतेदुना जनो युष्मादत्तस्य वायति ।  
 देवा अदभ्रमाश वो यमादित्या अहेतना—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ६  
 न तं तिग्मं च न त्यजो न द्रासदुभि तं गुरु ।  
 यस्मा उ शर्म सप्रथ आदित्यासो अराध्व—मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ७  
 युष्मे देवा अपि षसि युध्यन्त इव वर्मसु ।  
 यूयं महो न एनसो यूयमभीदुरुष्यता—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ८  
 अदितिर्न उरुष्यत्व—दितिः शर्म यच्छतु ।  
 माता मित्रस्य रेवतो ऽर्यम्णो वरुणस्य चा—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ९ ८०  
 यद् देवाः शर्म शरणं यद् भद्रं यदनातुरम् ।  
 त्रिधातु यद् वरुध्यं तदुसासु वि यन्तना—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १०  
 आदित्या अव हि ख्यता—धि कूलादिव स्पशः ।  
 सुतीर्थमर्वतो यथा—नु नो नेषथा सुग—मनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ११  
 नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत ।  
 गवै च भद्रं धेनवै वीराय च श्रवस्यते ऽनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १२  
 यदाविर्यदपीच्यं देवासो अस्ति दुष्कृतम् ।  
 त्रिवे तद् विश्वमाप्त्य आरे अस्मद् दधातना—नेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः १३

॥१८॥ ( ऋ० ८।६७।१-९, १३-२१ )

(८५-१०२) मत्स्यः साम्मदः, मैत्रावरुणिर्मन्यः, बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः। गायत्री ।

त्यान् नु क्षत्रियाँ अव आदित्यान् याचिषामहे	। सुमूळीकाँ अभिष्टये	१	८५
मित्रो नो अत्यंहति वरुणः पर्षदर्यमा	। आदित्यासो यथा विदुः	२	
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं वरुथमस्ति दाशुषे	। आदित्यानामरंकृते	३	
महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन्	। अवांस्या वृणीमहे	४	
जीवान् नो अभि चेतना—ऽऽदित्यासः पुरा हथात्	। कद्रं स्थ हवनश्रुतः	५	
यद् वः श्रान्ताय सुन्वते वरुथमस्ति यच्छदिः	। तेना नो अर्धि वोचत	६	९०
अस्ति देवा अंहोरुर्व—स्ति रत्नमनागसः	। आदित्या अद्भुतैनसः	७	
मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि	। इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी	८	
मा नो मृचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः	। देवा अभि प्र मृक्षत	९	
ये मूर्धोनः क्षितीना—मदब्धासः स्वयंशसः	। व्रता रक्षन्ते अद्भुहः	१३	९४

ते न आस्रो वृक्षाणां—मादित्यासो मुमोचत	। स्तेनं बद्धमिवादिते	१४	९५
अपो षु णं इयं शरु—रादित्या अपं दुर्मतिः	। अस्मदेत्वर्जघ्नीषी	१५	
शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वियम्	। पुरा नूनं बुभुज्महे	१६	
शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः	। देवाः कृणुथ जीवसे	१७	
तत् सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुभोचति	। बन्धाद् बद्धमिवादिते	१८	
नास्माकमस्ति तत् तर आदित्यासो अतिष्कदे	। यूयमस्मभ्यं मृळत	१९	
मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः	। पुरा नु जरसो वधीत्	२०	
वि षु द्वेषो व्यंहति—मादित्यासो वि संहितम्	। विष्वग् वि वृहता रपः	२१	१०२

॥१९॥ ( ऋ० ८।१०१।६ )

( १०३ ) जमदग्निर्भागवः । सतोवृहती ।

ते हिन्विरे अरुणं जेन्यं वस्वे—कं पुत्रं तिसृणाम् । ते धामान्यमृता मर्त्याना—मदब्धा अभि चक्षते ६

॥२०॥ ( ऋ० १०।१८५।१-३ )

( १०४-१०६ ) सत्यधृतिर्वारुणिः । आदित्यः ( स्वस्त्ययनम् ) । गायत्री ।

महि त्रीणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः	। दुराधर्षं वरुणस्य	१	
नहि तेषाममा चन नाध्वंसु वारणेषु	। ईशे रिपुरघशंसः	२	१०५
यस्मै पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय	। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्	३	

॥२१॥ (१०७-१२०) ( वा० य० ८।१-५ )

उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्णं उरुगायैष ते सोमस्तं रक्षस्व मा त्वा दभन् १

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्रं सश्वसि दाशुषे ।

उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्यं पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा २

कदा चन प्रयुच्छस्युभे निपासि जन्मनी ।

तुरीयादित्यं सर्वानं त इन्द्रियमातंस्थावमृतं दिव्यादित्येभ्यस्त्वा ३

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुन्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः ।

आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्वृत्त्याद्दहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासंदादित्येभ्यस्त्वा ४ ११०

विवस्वन्नादित्येष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व ५

॥२२॥ (वा० य० १३।३,५)

ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ३ ११२

द्रुप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।  
समानं योनिमनु सञ्चरन्तं द्रुप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः

५

॥२३॥ (वा० य० १७।५९-६०)

विमानं एष दिवो मध्यं आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।  
स विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्  
उक्षा संमुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश ।  
मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ

५९

६० ११५

॥२४॥ (वा० य० २३।५; ३१।१७)×

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परिं तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि  
अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तताग्रै ।  
तस्य त्वष्टा विदधद् रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रै

५

१७

॥२५॥ (वा० य० ३३।८१-८३)

इमा उं त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।  
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत  
यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः ।  
तिरश्चिदुर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः  
अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।  
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये

८१

८२

८३ १२०

॥२६॥ (अथर्व० २।३१।१-६) [ दै० (आयुर्वेद०) १२५ सूक्तं द्रष्टव्यम् । ]

॥२७॥ (अथर्व० १६।३।१-६)

(१२१-१६३) ब्रह्मा । १ आसुरी गायत्री; २-३ आर्च्यनुष्टुप्; ४ प्राजापत्या त्रिष्टुप्;  
५ साम्न्युष्णिक्; ६ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप् ।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम् १  
रुजश्च मा वेनश्च मा हासिष्ठां मूर्धा च मा विधर्मा च मा हासिष्ठाम् २  
उर्वश्च मा चमसश्च मा हासिष्ठां धर्ता च मा धरुणश्च मा हासिष्ठाम् ३  
विमोकश्च मारद्रपविश्च मा हासिष्ठामार्द्रदानुश्च मा मातरिश्वा च मा हासिष्ठाम् ४ १२४

× वा० य० २३।५ = दै० [ इन्द्रः ] २४; अथर्व० २०, २६, ४, ४७, १०, ६९, ९; सा० १४६८  
दै० [अदितिः] २



बृहस्पतिर्म आत्मा नमणा नाम हृद्यः ५ १२५  
असंतापं मे हृदयमुर्वी गव्यूतिः समुद्रो अस्मि विधर्मणा ६

॥२८॥ ( अथर्व० १६।४।१-७ )

१,३ साम्न्यनुष्टुप्; २ साम्न्युष्णिक्; ४ त्रिपदाऽनुष्टुप्; ५ आसुरी गायत्री; ६ आचर्युष्णिक्; ७ त्रिपदा  
विराड्गर्भाऽनुष्टुप् ।

नाभिरहं रयीणां नाभिः समानानां भूयासम् १  
स्वासदसि सूषा अमृतो मर्त्येष्वाम् २  
मा मां प्राणो हासीन्मो अपानोऽवहाय परां गात् ३  
सूर्यो माह्वः पात्वग्निः पृथिव्या वायुरन्तरिक्षाद् यमो मनुष्येभ्यः सरस्वती पार्थिवेभ्यः ४ १३०  
प्राणापानौ मा मां हासिष्टं मा जने प्र मैषि ५  
स्वस्त्युद्योषसो दोषसश्च सर्वे आपः सर्वगणो अशीय ६  
शकरी स्य पशवो मोषं स्थेषुमित्रावरुणौ मे प्राणापानावग्निर्मे दक्षं दधातु ७

॥२९॥ ( अथर्व० १७।१।१-३० )

१ जगती; १-८ त्र्यवसाना; १-३ अतिजगती; ६-७, १९ अत्यष्टिः; ८, ११, १६ अतिधृतिः;  
९ पञ्चपदा शकरी; १०-१३, १६, १८-१९, २४ त्र्यवसाना; १० अष्टपदा धृतिः;  
१२ कृतिः; १३ प्रकृतिः; १४-१५ पञ्चपदा शकरी; १७ पञ्चपदा विराडतिशकरी;  
१८ भुरिगष्टिः; २४ विराडत्यष्टिः; १-५ षट्पदा; ११-१३, १६, १८-१९, २४  
सप्तपदा; २० ककुप्; २१ चतुष्पदा उपरिष्ठाद्बृहती; २२ याजुषी  
अनुष्टुप्; २३ निचृद्बृहती (२२-२३ द्विपदा); २५-२६ अनुष्टुप्;  
२७, ३० जगती; २८-२९ त्रिष्टुप् ।

विषासहिं सहमानं सासहानं सहीयांसम् ।

सहमानं सहोजितं स्वर्जितं गोजितं संधनाजितम् ।

ईड्यं नाम ह्व इन्द्रमायुष्मान् भूयासम् १

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियो देवानां भूयासम् २ १३५

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः प्रजानां भूयासम् ३

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः पशूनां भूयासम् ४

विषासहिं० । सहमानं० । ईड्यं नाम ह्व इन्द्रं प्रियः समानानां भूयासम् ५

उद्विद्युर्दिहि सूर्यं वर्चसा माभ्युर्दिहि ।

द्विपंश्च मह्यं रध्व्यंतु मा चाहं द्विषते रंधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।

त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायीं मा घेहि परमे व्योमिन् ६ १३९

उद्विष्टुर्दिहि सूर्ये वर्चसा माभ्युर्दिहि ।

यांश्च पश्यामि यांश्च न तेषु मा सुमतिं कृधि तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ७ १४०

मा त्वा दभन्त्सलिले अप्सर्वन्तर्ये पाशिन उपतिष्ठन्त्यत्र ।

द्वित्वाशस्ति दिवमारुक्ष एतां स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ८

त्वं न इन्द्र महते सौमगायादब्धेभिः परि पाह्यक्तुभिस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ९

त्वं न इन्द्रोतिभिः शिवाभिः शंतमो भव ।

आरोहैस्त्रिदिवं दिवो गृणानः सोमपीतये प्रियधामा स्वस्तये तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १०

त्वमिन्द्रासि विश्वजित् सर्ववित् पुरुहूतस्त्वमिन्द्र ।

त्वमिन्द्रेमं सुहवं स्तोममेरयस्व स नो मृड सुमतौ ते स्याम तवेद् विष्णो० । त्वं नः० ११

अदब्धो दिवि पृथिव्यामुतासि न त आपुर्महिमानमन्तरिक्षे ।

अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः स त्वं न इन्द्र दिवि पंछर्मयच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १२ १४५

या त इन्द्र तनूरप्सु या पृथिव्यां यान्तरथौ या त इन्द्र पर्वमाने स्वर्विदि ।

ययेन्द्र तन्वाडुन्तरिक्षं व्यापिथ तथा न इन्द्र तन्वाडु शर्मयच्छ तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १३

त्वामिन्द्र ब्रह्मणा वर्धयन्तः सत्रं नि षेदुर्कषयो नाधमानास्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १४

त्वं तृतं त्वं पर्येष्युत्सं सहस्रधारं विदथं स्वर्विदुं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १५

त्वं रक्षसे प्रदिशश्चतस्रस्त्वं शोचिषा नभसी वि भासि ।

त्वमिमा विश्वा भुवनानु तिष्ठस ऋतस्य पन्थामन्वेषि विद्वांस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १६

पञ्चभिः पराङ् तपस्येक्यार्वारुशस्तिमेषि सुदिने बाधमानस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १७ १५०

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः ।

तुभ्यं यज्ञो वि तायते तुभ्यं जुहति जुह्वतस्तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १८

असति सत् प्रतिष्ठितं सति भूतं प्रतिष्ठितम् ।

भूतं ह भव्य आहितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितं तवेद् विष्णो० । त्वं नः० १९

सुक्रोऽसि भ्राजोऽसि । स यथा त्वं भ्राजता भ्राजोऽस्येवाहं भ्राजता भ्राज्यासम् २०

रुचिरसि रोचोऽसि । स यथा त्वं रुच्या रोचोऽस्येवाहं पशुभिश्च ब्राह्मणवर्चसेन

च रुचिषीय

२१

उद्यते नम उदायते नम उर्दिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः २२ १५५

अस्तंयते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः । विराजे नमः स्वराजे नमः०	२३
उदगादयमादित्यो विश्वेन तर्पसा सह ।	
सपन्नान् मह्यं रन्धयन् मा चाहं द्विषते रंधं तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ।	
त्वं नः पृणीहि पशुभिर्विश्वरूपैः सुधायां मा धेहि परमे व्योमिन्	२४
आदित्ये नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । अहर्मात्यपीपरो रात्रिं सत्रार्तिं पारय	२५
सूर्ये नावमारुक्षः शतारित्रां स्वस्तये । रात्रिं मात्यपीपरोऽहः सत्रार्तिं पारय	२६
प्रजापतेरावृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।	
जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेयम्	२७ १६०
परीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाहं कश्यपस्य ज्योतिषा वर्चसा च ।	
मा मा प्रापन्निषवो दैव्या या मा मानुषीरवसृष्टा वधाय	२८
ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।	
मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः	२९
अग्निर्मा गोप्ता परि पातु विश्वत उद्यन्त्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान् ।	
व्युच्छन्तीरुषसः पर्वता ध्रुवाः सहस्रं प्राणा मय्या यतन्ताम्	३०

॥३०॥ ( अथर्व० १९।१८।४ )

(१६४) अथर्वा । आर्च्यनुष्टुप् ।

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्यां दिशोऽभिदासात् ४

(१६५) ॥३१॥ (अथर्व० २०।१३।५।६)

आदित्या ह जरितरङ्गिरोभ्यो दक्षिणामनयन् ।

तां ह जरितः प्रत्यायंस्ताम् ह जरितः प्रत्यायन् ६ १६५

आदित्य-सहचारी देवगणः ।

(१) आदित्योषसः ।

॥३२॥ [ वै० (उषा) १८७-१९१ मन्त्राः द्रष्टव्याः । ]

## (२) अग्निमित्रवरुणादित्यविश्वेदेवाः ।

(१६६) ॥३३॥ ( वा० य० ४।११ )

व्रतं कृणुताभिर्ब्रह्माभिर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः ।

दैवी धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसः सुतीर्था नो असद्रशे ।  
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षकृतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ११ १६६

## (३) आदित्या वसवोऽङ्गिरसः पितरः ।

॥३४॥ ( अथर्व० २।१२।४ )

(१६७) भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

अशीतिभिस्तिष्ठभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।

इष्टापूर्तमवतु नः पितृणामासुं ददे हरसा दैव्येन ४

## (४) भगादित्याः ।

॥३५॥ (अथर्व० ३।१६।२-३,५) (१६८-१७०), अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

प्रातर्जितं भगमुग्रं हवामहे वयं पुत्रमदितेयो विधर्ता ।

आध्रश्चिद् यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद् यं भगं भक्षीत्याहं २

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।

भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ३

भग एव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम ।

तं त्वां भग सर्व इजोहवीमि स नो भग पुरएता भवेह ५ १७०

## (५) बृहस्पतिः, आदित्यः ।

॥३६॥ ( अथर्व० ४।१।१-७ ) +

( १७१-१७७ ) वेनः । त्रिष्टुप्, २,५ पुरोऽनुष्टुप् ।

ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः १

इयं पित्र्या राष्ट्रयेत्वग्रं प्रथमार्यं जनुषे भुवनेष्ठाः ।

तस्मा एतं सुरुचं ह्यारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमार्यं धास्यवे २

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति ।

ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मर्घ्यास्त्रीचैरुचैः स्वधा अभि प्र तस्यौ ३ १७३

स हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्या मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत् ।

महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सन्न पार्थिवं च रजः ४

स बुध्न्यादाष्टं जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सप्राट् ।

अहर्षच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्ठार्थं द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः ५ १७५

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्यस्य धाम् ।

एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन्न ६

योऽथर्वाणं पितरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात् ।

त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान् ७

### (६) दिवादित्यौ ।

॥३७॥ (अथर्व० ४।३२।५-६)

(१७८-१७९) अङ्गिराः । ५ त्रिपदा महाबृहती, ६ संस्तारपङ्क्तिः ।

दिव्याऽदित्याय समनमन्तस आर्धोत् ।

यथा दिव्याऽदित्यार्यं समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु ५

द्यौरधेनुस्तस्यां आदित्यो वत्सः । सा मे आदित्येन वत्सेनेषमूर्जे कामं दुहाम् ।

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा ६

### (७) आदित्यादयः ।

॥३८॥ ( अथर्व० ५।२१।१०-१२ )

(१८०-१८२) ब्रह्मा । अनुष्टुप्, ११ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

आदित्यं चक्षुरा दत्स्व मरीचयोऽनुं धावत । पत्सङ्गिनीरा संजन्तु विगते बाहुवीर्ये १० १८०

यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीतु शत्रून् ।

सोमो राजा वरुणो राजा महादेव उत मृत्युरिन्द्रः ११

एता देवसेनाः सूर्यकेतवः सचेतसः । अमित्रान् नो जयन्तु स्वाहा १२

### (८) आदित्या रुद्रा वसवश्चः ।

॥३९॥ (१८३) ( अथर्व० २०।६३।५।९ )

आदित्या रुद्रा वसवस्त्वेनु त इदं राधः प्रति गृम्णीद्यङ्गिरः ।

इदं राधो विष्टु प्रष्टु इदं राधो बृहत्पृथु ९ १८३

## (३) मित्रः, मित्रावरुणौ च ।

॥४०॥ ( ऋ० १।१५१।१ )

(१८४) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

मि॒त्रं न यं शि॒म्या गोषु॑ ग॒व्यवः॑ स्वा॒घ्यो वि॒दथे॑ अ॒प्सु जी॒जनन् ।  
अ॒रेजे॑तां रोद॒सी पा॒जसा॑ गि॒रा प्रति॑ प्रि॒यं य॒जतं॑ जु॒नुषाम॑वः ।

१

॥४१॥ ( ऋ० ३।५९।१-९ ) ×

(१८५-१९३) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप्, ६-९ गायत्री ।

मि॒त्रो जना॑न् या॒तय॑ति ब्रु॒वाणो॑ मि॒त्रो दा॑धार पृथि॒वीमु॒त द्याम् ।

मि॒त्रः कृ॒ष्टीर॑र्निमि॒षाभि॑ च॒ष्टे मि॒त्राय॑ ह॒व्यं घृ॒तव॑जु॒होत॑

१ १८५

प्र स मि॒त्र म॑तो॑ अस्तु प्र॒यस्वान् य॑स्त आ॒दित्य॑ शि॒क्षति॑ व्र॒तेन॑ ।

न ह॑न्यते न जी॒यते॑ त्वो॒तो नैन॑म॒हो अ॒भ्रोत्य॑न्ति॒तो न दू॑रात्

२

अ॒नमी॑वास इ॒ळ्या म॑द॒न्तो मि॒तज्ञ॑वो वरि॑म॒न्ना पृथि॑व्याः ।

आ॒दित्य॑स्य॒ व्रत॑मु॒पक्षि॑यन्तो॒ वयं॑ मि॒त्रस्य॑ सु॒मतौ॑ स्या॒म

३

अ॒यं मि॒त्रो न॑म॒स्यः सु॒शेवो॑ राजा सु॒क्षत्रो॑ अ॒जनि॑ष्ट वे॒धाः ।

तस्य॑ व॒यं सु॑मतौ॒ यज्ञि॑यस्या—ऽपि॒ भ॒द्रे सौ॑म॒नसे॑ स्या॒म

४

म॒हो आ॑दित्यो नम॒सोप॑सद्यो॒ यात॑य॒जनो॑ गृण॒ते सु॒शेवः॑ ।

तस्मा॑ ए॒तत् प॑न्य॒तमाय॑ जुष्ट—म॒ग्नौ मि॒त्राय॑ ह॒विरा॑ जु॒होत॑

५

मि॒त्रस्य॑ च॒र्षणी॑धृ॒तो ऽवो॑ दे॒वस्य॑ सा॒नसि॑ । द्यु॒मं चि॒त्रश्र॑वस्तमम्

६ १९०

अ॒भि यो म॑हि॒ना दि॒वं मि॒त्रो ब॒भूव॑ स॒प्रथाः॑ । अ॒भि श्र॑वो॒भिः पृथि॑वीम्

७

मि॒त्राय॑ प॒ञ्च ये॑मिरे॒ जना॑ अ॒भिष्टि॑श॒वसे॑ । स दे॒वान् विश्वा॑न् बि॒भर्ति॑

८

मि॒त्रो दे॒वेवा॑युषु॒ जना॑य वृ॒क्तर्षि॑षे । इष॑ इष्ट॒व्रता॑ अ॒कः

९

॥४२॥ (१९४) ( वा० य० ११।५३ )

मि॒त्रः स॒सृज्य॑ पृथि॒वीं भूमिं॑ च॒ ज्योति॑षा स॒ह ।

सु॒जातं॑ जा॒तवै॑दसम॒यक्ष्माय॑ त्वा स॒सृजामि॑ प्र॒जाभ्यः॑

५३

॥४३॥ ( अथर्व० १९।१९।१ )

(१९५) अथर्वा । भुरिगृहती ।

मि॒त्रः पृथि॑व्योद॒क्राम॑त् तां पु॒रं प्र॑ ण॒यामि॑ वः ।

ता॒मा वि॑शत॒ तां प्र॑ वि॒शत॒ सा वः॑ शर्म॒ च॒ वर्म॑ च॒ यच्छ॑तु

१ १९५

॥४४॥ ( ऋ० १।२।७-९ )

( १९६-१९८ ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशार्दसम् । धियं घृताचीं साधन्ता ७  
 ऋतेन मित्रावरुणा—वृतावृधावृतस्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे ८  
 कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ९

॥४५॥ ( ऋ० १।२३।४-६ )

( १९९-२०१ ) मेघातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये । जज्ञाना पूतदक्षसा ४  
 ऋतेन यावृतावृधा—वृतस्य ज्योतिषस्पती । ता मित्रावरुणा हुवे ५ २००  
 वरुणः प्राविता भुवन् मित्रो विश्वाभिरुतिभिः । करतां नः सुरार्धसः ६

॥४६॥ ( ऋ० १।४३।३ )

( २०२ ) कण्वो घौरः । गायत्री ।

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति । यथा विश्वे सजोषसः ३

॥४७॥ ( ऋ० १।१३।१-७ )

( २०३-२१३ ) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां बृहन्नमो हव्यं मतिं भरता मृळ्यद्भ्यां स्वादिष्ठं मृळ्यद्भ्याम् ।  
 ता सम्राजा घृतासुती यज्ञेयज्ञ उपस्तुता ।

अथैनोः क्षत्रं न कुतश्चनाधृषे देवत्वं नू चिदाधृषे १

अदर्शि गातुरुवे वरीयसी पन्थां ऋतस्य समयंस्त रश्मिभि—श्चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः ।

द्युक्षं मित्रस्य सार्दन—मर्यम्णो वरुणस्य च ।

अथा दधाते बृहदुक्थं वयं उपस्तुत्यं बृहद् वयः २

ज्योतिष्मतीमदिति धारयत्क्षितिं स्वर्वतीमा संचेते दिवेदिवे जागृवांसा दिवेदिवे ।

ज्योतिष्मत् क्षत्रमाशाते आदित्या दानुनस्पती ।

मित्रस्तयोर्वरुणो यातयज्ञनो ऽर्यमा यातयज्ञनः ३

अयं मित्राय वरुणाय शंतमः सोमो भूत्ववपानेष्वभगो देवो देवेष्वभगः ।

तं देवासो जुषेरत् विश्वे अद्य सजोषसः ।

तथा राजाना करथो यदीमह ऋतावान्ना यदीमहे ४ २०६

यो मित्राय वरुणाय विध्वज्जनो ऽनर्वाणं तं परि पातो अंहसो दाश्वासं मर्तमंहसः ।  
तमर्यमाभि रक्ष—त्यजूयन्तमनु व्रतम् ।

उक्थैर्य एनोः परिभूषति व्रतं स्तोमैराभूषति व्रतम् ५

नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्रार्य वोचं वरुणाय मीळहुषे सुमृळीकार्य मीळहुषे ।  
इन्द्रमभिमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ६

ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मंसीमहि स्वयंशसो मरुद्भिः ।

अभिर्मित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च ७

॥४८॥ ( ऋ० १।१३७।१-३ ) अतिशक्ती ।

सुषुमा यातमद्रिभिर्गोश्रीता मत्सुरा इमे सोमासो मत्सुरा इमे ।

आ राजाना दिविस्पृशा ऽस्मत्रा गन्तमुप नः ।

इमे वा मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्रा गवाशिरः १ २१०

इम आ यातमिन्द्रवः सोमासो दध्याशिरः सुतासो दध्याशिरः ।

उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्ऋताय पीतये २

तां वा धेनुं न वासरी मंशुं दुहन्त्याद्रिभिः सोमं दुहन्त्याद्रिभिः ।

अस्मत्रा गन्तमुप नो ऽर्वाञ्चा सोमपीतये ।

अयं वा मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ पीतये सुतः ३

॥४९॥ ( ऋ० १।१३९।२ ) अत्यष्टिः ।

यद्द त्यन्मित्रावरुणावृतादध्यादुदाथे अनृतं स्वेन मन्युना दक्षस्य स्वेन मन्युना ।

युवोरिन्थाधि सन्न स्वर्षश्याम हिरण्यम् ।

धीभिश्चन मनसा स्वेभिरक्षभिः सोमस्य स्वेभिरक्षभिः २

॥५०॥ ( ऋ० १।१५१।२-९ )

( २१४-२३२ ) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

यद्द त्यद् वा पुरुमीळहस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाभुवः ।

अध ऋतुं विदतं गातुमर्चेत उत श्रुतं वृषणा पस्त्यावतः २

आ वा भूषन् क्षितयो जन्म रोदस्योः प्रवाच्यं वृषणा दक्षसे महे ।

यदीमृताय भरथो यदर्वते प्र होत्रया शिम्या वीथो अध्वरम् ३ २१५

६० [अदितिः] ३



प्र सा क्षितिरसुर या महि प्रिय ऋतावानावृतमा घोषथो बृहत् ।	
युवं दिवो बृहतो दक्षमाभ्रुवं गां न धुर्युप युञ्जाथे अपः	४
मही अत्र महिना वारमृण्वथो ऽरेणवस्तुज आ सद्यन् धेनवः ।	
स्वरान्ति ता उपरताति सूर्यमा निम्रुच उषसस्तक्ववीरिव	५
आ वामृताय केशिनीरनूषत मित्र यत्र वरुण गातुमर्चथः ।	
अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियो युवं विप्रस्य मन्मनामिरज्यथः	६
यो वां यज्ञैः शशमानो ह दाशति कविर्होता यजति मन्मसाधनः ।	
उपाह तं गच्छथो वीथो अध्वरमच्छा गिरः सुमति गन्तमस्मयू	७
युवां यज्ञैः प्रथमा गोभिरञ्जत ऋतावाना मनसो न प्रयुक्तिषु ।	
भरन्ति वां मन्मना संयता गिरो ऽदृष्यता मनसा रेवदाशथे	८ २२०
रेवद् वयो दधाथे रेवदाशथे नरा मायाभिरितरुति माहिनम् ।	
न वां द्यावोऽहभिर्नोत सिन्धवो न देवत्वं पणयो नानशुर्मघम्	९

॥५१॥ ( ऋ० १।१५२।१-७ ) त्रिष्टुप् ।

युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः ।	
अवातिरतमनृतानि विश्व ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे	१
एतच्चन त्वो वि चिकेतदेषां सत्यो मन्त्रः कविशस्त ऋषावान् ।	
त्रिराश्रि हन्ति चतुरश्रिरुग्रो देवनिदो ह प्रथमा अजूर्यन्	२
अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद् वां मित्रावरुणा चिकेत ।	
गर्भो भारं भरत्या चिदस्य ऋतं पिपत्यनृतं नि तारीत्	३
प्रयन्तमित् परिं जारं कनीनां पश्यामसि नोपनिपद्यमानम् ।	
अनेवपृग्णा विरता वसानं प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम	४ २२५
अनश्वा जातो अनभीशुरवा कनिक्रदत् पतयदूर्ध्वसानुः ।	
अचित्तं ब्रह्म जुजुषुर्युवानः प्र मित्रे धाम वरुणे गृणन्तः	५
आ धेनवो मामतेयमवन्ती ब्रह्मप्रियं पीपयन्त्सस्मिन्मूधन् ।	
पित्वो भिक्षेत वयुनानि विद्रा नासाविवासमार्दितिमुरुष्येत्	६
आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टि नमसा देवाववसा ववृत्याम् ।	
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु सद्या अस्माकं वृष्टिर्विव्या सुपारा	७ २२८

॥५२॥ ( ऋ० १।१५३।१-४ )

यजामहे वां महः सजोषां हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः । घृतैर्वृतस्नु अध यद् वामस्ये अघ्वर्यवो न धीतिभिर्भरन्ति	१	
प्रस्तुतिर्वा धाम न प्रयुक्तिर्यामि मित्रावरुणा सुवृक्तिः । अनक्ति यद् वां विदथेषु होता सुभ्रं वां सूरिवृषणाविर्यक्षन्	२	२३०
पीपाय धेनुरदितिर्ऋताय जनाय मित्रावरुणा हविर्दे । हिनोति यद् वां विदथे सपर्यन्त्स रातहव्यो मानुषो न होता	३	
उत वां विक्षु मद्यास्त्रन्धो गाव आपश्च पीपयन्त देवीः । उतो नो अस्य पृथ्यः पतिर्दन् वीतं पातं पर्यस उस्त्रियाथाः	४	

॥५३॥ ( ऋ० २।४१।४-६ ) ×

( २३३-२३५ ) गृत्समद् ( आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् ) भार्गवः शौनकः । गायत्री । अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोमं ऋतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम्	४	
राजानावनभिद्गुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आसाते	५	
ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती । सचेते अनवह्वरम्	६	२३५

॥५४॥ ( ऋ० ३।६२।१३-१८ ) +

( २३६-२३८ ) गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा । गायत्री ।

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । मध्वा रजांसि सुक्रतू	१६	
उरुशंसा नमोवृधा म्हा दक्षस्य राजथः । द्राघिष्ठाभिः शुचित्रता	१७	
गृणाना जमदग्निना भोनावृतस्य सीदतम् । पातं सोममृतावृधा	१८	

॥५५॥ ( ऋ० ५।६२।१-९ )

( २३९-२४७ ) श्रुतविदात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वान् । दशं श्रुता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम्	१	
तत् सु वां मित्रावरुणा महित्वमीर्मा तस्थुषीरहभिर्दुदुहे । विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य धेना अनु वामेकः पविरा ववर्त	२	
अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः । वर्धयतमोक्षीः पिन्वतं गा अब वृष्टिं सृजतं जीरदान्	३	२४१

× ऋ० २, ४१, ४ = वा० य० ७, ९;

+ ऋ० ३, ६२, १३ = वा० य० २१८; सा० २२०, ६६३

आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरंश्मय उप यन्त्वर्वाक् ।	
घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वा—मूप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति	४
अनु श्रुताममति वर्धदुर्वी बहिर्वि व यजुषा रक्षमाणा ।	
नमस्वन्ता धृतदक्षाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेकास्वन्तः	५
अक्रविहस्ता सुकृते परस्पा यं त्रासाथे वरुणेकास्वन्तः ।	
राजाना क्षत्रमहृणीयमाना सहस्रस्थूणं विभृथः सह द्वौ	६
हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्यश्वाजनीव ।	
भद्रे क्षेत्रे निर्मिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य	७ २४५
हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टा—वयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य ।	
आ रोहथो वरुण मित्र गर्त—मत्तश्चक्षाथे अदितिं दितिं च	८
यद् बहिष्ठं नातिविधे सुदान् अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा ।	
तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिपासन्तो जिगीवांसः स्याम	९

॥५६॥ ( ऋ० ५।६३।१-७ )

( २४८-२६१ ) अर्चनाना आत्रेयः । जगती ।

ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि ।	
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत् पिन्वते दिवः	१
सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दशा ।	
वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः	२
सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी ।	
चित्रेभिर्भ्रैरुप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया	३ २५०
माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम् ।	
तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते	४
रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गत्रिष्टिषु ।	
रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पर्यसा न उक्षतम्	५
वाचं सु मित्रावरुणाविरावती पर्जन्यश्चित्रा वदति त्विषीमतीम् ।	
अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम्	६
धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया ।	
ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम्	७ २५४

॥५७॥ ( ऋ० ५।६४।१-७ ) अनुष्टुप्, ७ पङ्क्तिः ।

वरुणं वो रिशादस—मृचा मित्रं हवामहे । परिं व्रजेवं बाह्वो—जैगन्वांसा स्वर्णरम् १ २५५  
 ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते । शेवं हि जार्यं वां विश्वासु क्षासु जोगुवे २  
 यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा । अस्य प्रियस्य शर्मण्य—हिंसानस्य सश्विरे ३  
 युवाभ्यां मित्रावरुणो—पमं धेयामृचा । यद्दु क्षये मघोनां स्तोतृणां च स्पुर्धसे ४  
 आ नो मित्र सुदीतिभि—र्वरुणश्च सधस्थ आ । स्वे क्षये मघोनां सखीनां च बृधसे ५  
 युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च विभुथः । उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये ६ २६०  
 उच्छन्त्यां मे यज्ञता देवक्षत्रे रुशद्रवि ।  
 सुतं सोमं न हस्तिभि—रा पङ्क्तिर्धोवतं नरा विभ्रतावर्चनानसम् ७

॥५८॥ ( ऋ० ५।६५।१-६ )

( २६२-२७३ ) रातहव्य आत्रेयः । अनुष्टुप्, ६ पङ्क्तिः ।

यश्चिकेत स सुक्रतु—देवत्रा स ब्रवीतु नः । वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः १  
 ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ता सत्पती ऋतावृध ऋतावाना जनैजने २  
 ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा । स्वश्वासः सु चेतुना वाजां अभि प्र दावने ३  
 मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते । मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः ४ २६५  
 वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे । अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः ५  
 युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः ।  
 मा मघोनः परि ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम् ६

॥५९॥ ( ऋ० ५।६६।१-६ ) अनुष्टुप् ।

आ चिकितान सुक्रतू देवो मर्त रिशादसा । वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे १  
 ता हि क्षत्रमविहुतं सम्यगसुर्यमाशाते । अध व्रतेव मानुषं स्वर्णं धायि दर्शतम् २  
 ता वामेषे रथाना—मुर्वी गव्युतिमेषाम् । रातहव्यस्य सुष्टुतिं दुष्टकू स्तोमैर्मनामहे ३ २७०  
 अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिरद्भुता । नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा ४  
 तद्वतं पृथिवि बृह—च्छ्रवण ऋषीणाम् । ज्ञयसानावरं पृथ्व—ति क्षरन्ति यामभिः ५  
 आ यद् वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः । व्यचिष्टे बहुपात्रये यतमहि स्वराज्ये ६

॥६०॥ ( ऋ० ५।६७।१-५ )

( २७४-२८३ ) यज्ञत आत्रेयः । अनुष्टुप् ।

बळित्था देव निष्कृत—मादित्या यज्ञतं बृहत् । वरुण मित्रार्यमन् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशथे १  
 आ यद् योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः । धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुसं रिशादसा २ २७५

विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मित्रो अर्यमा । व्रता पदेवं सश्विरे पान्ति मर्त्ये रिषः ३  
 ते हि सत्या ऋतस्पृशं ऋतावानो जनैजने । सुनीथासः सुदानवो—ऽहोश्चिदुरुचक्रयः ४  
 को नु वां मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम् । तत् सु वामेषते मति—रत्रिभ्य एषते मतिः ५

॥६१॥ ( ऋ० ५।६८।१-५ ) गायत्री ।

प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा । महिक्षत्रावृतं बृहत्	१	
सम्राज्ञा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च । देवा देवेषु प्रशस्ता	२	२८०
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महिं वां क्षत्रं देवेषु	३	
ऋतमृतेन सपन्ते—षिरं दक्षमाशाते । अद्गुहा देवौ वर्षते	४	
वृष्टिद्यावा रीत्यापे—षस्पती दानुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते	५	

॥६२॥ ( ऋ० ५।६९।१-४ )

( २८४-२९१ ) उरुचक्रिरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

त्री रौचना वरुण त्रीरुत द्यून् त्रीणि मित्र धारयथो रजांसि ।		
वावृधानावमतिं क्षत्रियस्या—ऽनु व्रतं रक्षमाणावजुर्यम्	१	
इरावतीवरुण धेनवो वां मधुमद् वां सिन्धवो मित्र दुहे ।		
त्रयस्तस्थुर्बृषभासस्तिसृणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः	२	२८५
प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य ।		
राये मित्रावरुणा सर्वताते—ळं तोकाय तनयाय शं योः	३	
या धर्तारा रजसो रोचनस्यो—तादित्या दिव्या पार्थिवस्य ।		
न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि	४	

॥६३॥ ( ऋ० ५।७०।१-४ ) गायत्री ।

पूरुणा चिद्ध्यस्त्य—वो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमतिम्	१	
ता वां सम्यगद्गुह्याणे—षमश्याम धार्यसे । वयं ते रुद्रा स्याम	२	
पातं नो रुद्रा पायुभि—रुत त्रायेथां सुत्रात्रा । तुर्याम दस्यून् तनूभिः	३	२९०
मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भृजेमा तनूभिः । मा शेषसा मा तनसा	४	

॥६४॥ ( ऋ० ५।७१।१-३ )

( २९२-२९७ ) बाहुवृक्त आत्रेयः । गायत्री ।

आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्रं बर्हणा । उपेमं चारुमध्वरम्	१	
विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्रं राजथः । ईशाना विप्यतं धियः	२	२९३

उप नः सुतमा गतं वरुण मित्रं दाशुषः । अस्य सोमस्य पीतये ३

॥६५॥ (ऋ० ५।७२।१-३) उष्णिक् ।

आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत् । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये १ २९५

व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयजना । नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये २

मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये । नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये ३

॥६६॥ (ऋ० ६।६७।१-११)

(२९८-३०८) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

विशेषां वः सतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर्मित्रावरुणा वावृधध्वै ।

सं या रश्मेव यमतुर्यमिष्टा द्रा जना असमा बाहुभिः स्वैः १

इयं मद् वां प्र स्तृणीते मनीषोप प्रिया नमसा बर्हिरच्छ ।

यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छुर्दिर्यद् वां वरुध्यं सुदान २

आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्युप प्रिया नमसा ह्यमाना ।

सं यावमःस्थो अपसेव जनाञ्छुधीयतश्चिद् यतथो महित्वा ३ ३००

अश्वा न या वाजिनां पूतबन्धू ऋता यद् गर्भमदितिर्भरंध्वै ।

प्र या महि महान्ता जायमाना घोरा मर्ताथ रिपवे नि दीधः ४

विश्वे यद् वां महना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अदधुः सजोषाः ।

परि यद् भूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः ५

ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु द्यून् दृहेथे सानुष्टुपमार्दिव द्योः ।

दृळ्हो नक्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमातान् द्यां धासिनायोः ६

ता विप्रं धैथे जठरं पृणध्या आ यत् सद्य सभृतयः पृणन्ति ।

न मृष्यन्ते युवतयोऽवाता वि यत् पयो विश्वजिन्वा भरन्ते ७

ता जिह्वया सदमेदं सुमेधा आ यद् वां सत्यो अरतिर्ऋते भूत ।

तद् वां महित्वं घृताभावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः ८ ३०५

प्र यद् वां मित्रावरुणा स्पर्धन् प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति ।

न ये देवास ओहसा न मर्ता अयज्ञसाचो अप्यो न पुत्राः ९

वि यद् वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः ।

आद् वां ब्रवाम सत्यान्युक्था नर्किदेवेभिर्यतथो महित्वा १०

अवोरित्था वां छुर्दिषो अभिष्टौ युवोर्मित्रावरुणावस्कृधोयु ।

अनु यद् गावः स्फुरानृजिप्यं धृष्णुं यद् रणे वृषणं युनर्जन् ११ ३०८

॥६७॥ ( ऋ० ७।५०।१ )

( ३०९-३४७ ) मैत्रावरुणिवर्षसिद्धः । जगती ।

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद् विश्वयन्मा न आ गन् ।  
अजकावं दुर्दशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदत् त्सरुः १

॥६८॥ ( ऋ० ७।६०।२-१२ ) जिष्टुप् ।

एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदेति सूर्यो अभि ज्मन् ।  
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् २ ३१०  
अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद् या ई वहन्ति सूर्यं घृताचीः ।  
धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ३  
उद् वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।  
यस्मा आदित्या अध्वनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ४  
इमे चेतारो अनृतस्य भूरं मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति ।  
इम ऋतस्य वावृधुदुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ५  
इमे मित्रो वरुणो दूळभासो ऽचेतसं चिञ्चितयन्ति दक्षैः ।  
अपि ऋतुं सुचेतसं वतन्तस्तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति ६  
इमे दिवो अनिमिषा पृथिव्याश्चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति ।  
प्रत्राजे चिन्नद्यो गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्वन् ७ ३१५  
यद् गोपावददितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः सुदासे ।  
तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं तुरासः ८  
अव वेदिं होत्राभिर्यजेत रिपः काश्चिद् वरुणधृतः सः ।  
परि द्वेषोभिर्यमा वृणक्तुं सुदासे वृषणा उ लोकम् ९  
सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेष्येषा मपीच्येन सहसा सहन्ते ।  
युष्मद् भिया वृषणो रेजमाना दक्षस्य चिन्महिना मृळता नः १०  
यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते वाजस्य सातौ परमस्य रायः ।  
सीक्षन्त मनुं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ११  
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।  
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः १२ ३२०

॥६९॥ (ऋ० ७।६१।१-७)

उद् वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्ततन्वान् ।	
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्थुं मर्त्येष्वचिकेत	१
प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियति ।	
यस्य ब्रह्माणि सुकृतू अवाथ आ यत् क्रत्वा न शरदः पूणैथे	२
प्रोरोमित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋष्वाद् बृहतः सुदानू ।	
स्पशो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वृ—धग्यतो अर्निमिषं रक्षमाणा	३
शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्रधे महित्वा ।	
अयन् मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते	४
अमूरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासुं चित्रं ददृशे न यक्षम् ।	
द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निष्यान्यचिते अभूवन्	५ ३२५
सम् वां यज्ञं मह्यं नमोभि—हुवे वां मित्रावरुणा सवार्धः ।	
प्र वां मन्मान्यचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्निमानि	६
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।	
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	७

॥७०॥ (ऋ० ७।६१।४-६)×

द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे ।	
मा हेळे भूम वरुणस्य वायो—र्मा मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम्	४
प्र बाहवां सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यृतिमुक्षतं घृतेन ।	
आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा	५
नू मित्रो वरुणो अर्यमा न—स्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।	
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	*६ ३३०

॥७१॥ (ऋ० ७।६४।१-५)

दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन् ।	
ह्वयं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त	१ ३३१

× ऋ० ७,६२,५ = वा० य० २१,९ । \* ऋ० ७।६३।६

६० [अदितिः] ४



आ राजाना मह ऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक् ।  
 इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टि—मव दिव इन्वतं जीरदान् २  
 मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्र सार्धिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु ।  
 ब्रवद् यथा न आदरिः सुदास इषा मदेम सह देवगोपाः ३  
 यो वां गतं मनसा तक्षदेत—मूर्ध्वा धीतिं कृणवद् धारयञ्च ।  
 उक्षेथां मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्पयेथाम् ४  
 एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।  
 अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ३३५

॥७२॥ ( ऋ० ७।६५।१-५ )

प्रति वां स्र उदिते सूक्ते—मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।  
 ययोरसुर्यमक्षितं ज्येष्ठं विश्वस्य यामन्नाचिता जिगृह्णु १  
 ता हि देवानामसुरा तावर्या ता नः क्षितीः करतमूर्जयन्तीः ।  
 अश्याम मित्रावरुणा वयं वां द्यावा च यत्र पीपयन्नहा च २  
 ता भूरिपाशावनृतस्य सेतुं दुरत्येतुं रिपवे मर्त्याय ।  
 ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वां—मपो न नावा दुरिता तरेम ३  
 आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिळाभिः ।  
 प्रति वामत्र वरमा जनाय पृणीतमुद्रो दिव्यस्य चारोः ४  
 एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।  
 अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५ ३४०

॥७३॥ ( ऋ० ७।६६।१-३, १७-१९ ) गायत्री ।

प्र मित्रयोर्वरुणयोः स्तोमो न एतु शूष्यः । नमस्वान् तुविजातयोः १  
 या धारयन्त देवाः सुदक्षा दक्षपितरा । असुर्याय प्रमहसा २  
 ता नः स्तिपा तनूपा वरुण जरितृणाम् । मित्रं साधयतं धियः ३  
 काव्यैभिरदाभ्या ऽऽ यातं वरुण द्युमत् । मित्रश्च सोमपीतये १७  
 दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा । पिबतं सोममातुजी १८ ३४५  
 आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा । पातं सोममृतावृधा १९

॥७४॥ ( ऋ० ८।२५।१-२, १३-२४ )

( ३४७-३६७ ) विश्वमना वैश्वः । उष्णिक्, २३ उष्णिग्गर्भा ।

ता वां विश्वस्य गोपा देवा देवेषु यज्ञिया । ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा १ ३४७

मित्रा तना न रथ्याइ	वरुणो यश्च सुक्रतुः ।	सनात् सुजाता तनया धृतव्रता	२
त्रा माता विश्ववेदसा	ऽसुरीय प्रमहसा ।	मही जजानादितिर्ऋतावरी	३
महान्ता मित्रावरुणा	सम्राजा देवावसुरा ।	ऋतावानावृतमा घोषतो बृहत्	४ ३५०
नपाता श्वसो महः	सूनू दक्षस्य सुक्रतू ।	सुप्रदानू इषो वास्त्वधि क्षितः	५
सं या दानूनि येमथु	दिव्याः पार्थिवीरिषः ।	नभस्वतीरा वां चरन्तु वृष्टयः	६
अधि या बृहतो दिवोइ	ऽभियूथेव पश्यतः ।	ऋतावाना सम्राजा नमसे हिता	७
ऋतावाना नि पेंदतुः	साम्राज्याय सुक्रतू ।	धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतः	८
अक्ष्णश्चिद् गातुवित्तरा	ऽनुल्बणेन चक्षसा ।	नि चिन्मिषन्ता निचिरा नि चिक्यतुः	९ ३५५
तद् वार्य वृणीमहे	वरिष्ठं गोपयत्यम् ।	मित्रो यत् पान्ति वरुणो यदर्यमा	१३
उत नः सिन्धुरपां	तन्मरुतस्तदाश्विनां ।	इन्द्रो विष्णुर्मीङ्कांसः सजोषसः	१४
ते हि ष्मा वनुषो नरो	ऽभिमातिं कयस्य चित् ।	तिग्मं न क्षोर्दः प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः	१५
अयमेक इत्था पुरू	रु चष्टे वि विश्वपतिः ।	तस्य व्रतान्यनु वश्वरामसि	१६
अनु पूर्वाण्योक्या	साम्राज्यस्य सश्विम ।	मित्रस्य व्रता वरुणस्य दीर्घश्रुत्	१७ ३६०
परि यो रश्मिनां दिवो	ऽन्तान् ममे पृथिव्याः ।	उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा	१८
उदु ष्य शरणे दिवो	ज्योतिरयंस्त सूर्यः ।	अग्निर्न शुक्रः समिधान आहुतः	१९
वषो दीर्घप्रसन्ननी	शे वाजस्य गोमंतः ।	ईशे हि पित्वोऽविषस्य दावने	२०
तत् सूर्य रोदसी उभे	दोषा वस्तोरुप ब्रुवे ।	भोजेऽवस्मां अभ्युचरा सदा	२१
ऋज्जुक्षण्यायने	रजतं हरयाणे ।	रथं युक्तमसनाम सुपामणि	२२ ३६५
ता मे अश्यानां	हरीणां नितोशनां ।	उतो नु कृत्व्यानां नृवाहसा	२३
स्मदंभीशू कशावन्ता	विप्रा नविष्टया मती ।	महो वाजिनावर्वन्ता सचासनम्	२४

॥७५॥ ( ऋ० ८।१०।११-४ ) +

(३६८-३७१) जमदग्निभार्गवः १-२ प्रगाथः=(बृहती+सतोवृहती), ३ गायत्री, ४ सतोवृहती ।

ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये ।

यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टय आचक्रे हव्यदातये १

वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा नरा राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।

ता बाहुता न दुंसना रथर्यतः साकं सूर्यस्य रश्मिभिः २

प्र यो वां मित्रावरुणा ऽजिरो दूतो अद्रवत् । अयःशीर्षा मदैरघुः ३ ३७०

न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतवे न संवादाय रमते ।  
तस्मान्नो अद्य समृतेरुह्यतं बाहुभ्यां न उरुह्यतम् ४

॥७६॥ ( ऋ० १०।१३२।२-७ )

(३७२-३७७) शकपूतो नामेधः । विराड्-रूपा; २,६ प्रस्तारपङ्क्तिः, ७ महासतोवृद्धती ।

ता वां मित्रावरुणा धारयत्क्षिती सुषुम्नेषितृत्वता यजामसि ।  
युवोः क्राणाय सख्यै रभि व्याम रक्षसः २  
अधा चिन्नु यद्विधिषामहे वा मभि प्रियं रेक्णः पत्यमानाः ।  
दुद्रां वा यत् पुष्यति रेक्णः सम्वारन् नर्करस्य मघानि ३  
असावन्यो असुर स्यत द्यौ स्त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ।  
मूर्धा रथस्य चाकन् नैतावतैनसान्तकध्रुक ४  
अस्मिन्त्स्वेइतच्छकपूत एनो हिते मित्रे निर्गतान् हन्ति वीरान् ।  
अवोर्वा मद्वात् तनूष्ववः प्रियासु यज्ञियास्वर्वा ५ ३७५  
युवोर्हि मातादितिर्विचेतसा द्यौर्न भूमिः पर्यसा पुपूतनि ।  
अव प्रिया दिदिष्टन् सूरौ निनिक्त रश्मिभिः ६  
युवं ह्यभ्रराजावसीदतं तिष्ठद् रथं न धूर्षदं वनर्षदम् ।  
ता नः कणूकयन्तीर्नृमेधस्तत्रे अंहसः सुमेधस्तत्रे अंहसः ७

॥७७॥ (३७८-३८२) ( वा० य० ७।१० ) \*

राया वयं संसवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।  
तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम् १०

॥७८॥ ( वा० य० १०।१६, २१ )

हिरण्यरूपा उपसो विरोक उभार्विन्द्रा उदिथः सूर्यश्च ।  
आरोहतं वरुण मित्रं गत्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोऽसि वरुणोऽसि १६  
मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि २१ ३८०

॥७९॥ ( वा० य० २९।६ )

अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदुने ।  
उपासा वां सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योनाविह सादयामि ६ ३८१

॥८०॥ ( वा० य० ३३।७२ )

काव्ययोराजानेषु ऋत्वा दक्षस्य दुरोणे । रिशादसा सधस्थ आ

७२

॥८१॥ ( अथर्व० २।२८।२ )<sup>क्ष</sup>

(३८३) शम्भुः । त्रिष्टुप् ।

मित्र एनं वरुणो वा रिशादा जुरामृत्युं कृणुतां संविदानौ ।  
तदुभिर्होता वयुनानि विद्वान् विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति

२

॥८२॥ ( अथर्व० ३।२५।१-६ )

(३८४-३८९) भृगुः । अनुष्टुप् ।

उत्तुदस्त्वोत्तुदतु मा धृथाः शर्यने स्वे ।

इषुः कामस्य या भीमा तया विध्यामि त्वा हृदि

१

आधीपणां कामशल्यामिषुं संकल्पकुलमलाम् ।

तां सुसैनतां कृत्वा कामो विध्यतु त्वा हृदि

२

३८५

या प्लीहानं शौषयति कामस्येषुः सुसैनता ।

प्राचीनपक्षा व्योषिषा तया विध्यामि त्वा हृदि

३

शुचा विद्धा व्योषिया शुष्कास्याभि सर्प मा ।

मृदुनिर्मन्युः केवली प्रियवादिन्यनुव्रता

४

आजामि त्वाज्न्या परिं मातुरथो पितुः । यथा मम क्रतावसो मम चित्तमुपायसि ५

व्यस्यै मित्रावरुणौ हृदश्चित्तान्यस्यतम् । अथैनामक्रतुं कृत्वा ममैव कृणुतं वशे ६

॥८३॥ ( अथर्व० ४।२९।१-७ ) [ आयुर्वेदप्रकरणे सूक्तं (२६४) द्रष्टव्यम् । ]

॥८४॥ ( अथर्व० १।२०।२ )

(३९०-३९४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

यो अद्य सेन्यो वधोऽघायूनामुदीरते । युवं तं मित्रावरुणावसद्यावयतं परि

२

३९०

॥८५॥ ( अथर्व० ५।२४।५ ) चतुष्पदातिऽशकरी ।

मित्रावरुणौ वृष्ट्याधिपती तौ मावताम् ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकू-

स्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

५

३९१

॥८६॥ (अथर्व० ६।३२।३) त्रिष्टुप् ।+

अभयं मित्रावरुणाविहास्तु नोऽर्चिषात्त्रिणो नुदतं प्रतीचः ।

मा ज्ञातारं मा प्रतिष्ठां विदन्त मिथो विद्वाना उप यन्तु मृत्युम्

३

॥८७॥ (अथर्व० ६।८९।३) अनुष्टुप् ।

मह्यं त्वा मित्रावरुणौ मह्यं देवी सरस्वती ।

मह्यं त्वा मध्यं भूम्या उभावन्तौ समस्यताम्

३

॥८८॥ ( अथर्व० ६।९७।२ ) जगती ।

स्वधास्तु मित्रावरुणा विपश्चिता प्रजावत् भ्रमं मधुनेह पिन्वतम् ।

बाधेथां दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र घृमुक्तमसत्

२

॥८९॥ ( अथर्व० ९।१०।२३ )

(३९५) ब्रह्मा । त्रिष्टुप् ।

अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्वो मित्रावरुणा चिकेत ।

गर्भो भारं भरत्या चिदस्या ऋतं पिपत्यनृतं नि पाति

२३

३९५

॥९०॥ (अथर्व० १०।५।११)

(३९६) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

मित्रावरुणयोर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो असासु धत्त ।

प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकार्यं सादये

११

॥९१॥ (३९७-३९९) (सा० ९८६-९८७)\*

ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च । वयं वां मित्रा स्याम

२

पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । साह्याम दस्युं तनूभिः

३

॥९२॥ ( सा० १६४७ ) ×

त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः । त्वां शुर्धो मदत्यनु मारुतम्

३

३९९



मित्र-मित्रावरुण-सहचारी-देवगणः ।

(१) मित्रावरुणौ नभस्यश्च ।

॥९३॥ ( ऋ० २।३६।६ )

गृत्समदे (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।  
 जुषेथां युङ्गं बोधतं हवस्य मे सत्तो होतां निविदः पूर्व्या अनु ।  
 अच्छा राजाना नर्म एत्यावृते प्रशास्त्रादा पिवतं सोम्यं मधु

६ ४००

(२) मित्रावरुणादित्याः ।

॥९४॥ ( ऋ० ८।१०।१।५ )

जमदग्निभार्गवः । बृहती ।

प्र मित्राय प्रार्यम्णे संचध्यमृतावसो ।  
 वरुध्यं वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत

५

(३) उखामित्रौ ।

॥९५॥ ( वा० य० ११।६४ )

उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम् ।  
 मित्रैतां त उखां परिददाम्यभित्या एषा मा भेदि

६४ ४०२



## (४) सविता ।

॥९६॥ ऋ० १।२२।५-८)+

(४०३-४०६) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

हिरण्यपाणिमुत्थे	सवितारमुप ह्वये । स चेत्ता देवता पदम्	५	
अपां नपातमवसे	सवितारमुप स्तुहि । तस्य व्रतान्युश्मसि	६	
विभक्तारं हवामहे	वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम्	७	४०५
सखाय आनिषीदत	सविता स्तोम्यो नुनः । दाता राधांसि शुम्भति	८	

॥९७॥ ( ऋ० १।२४।३-५ )

(४०७-४०९) आर्जागतिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । (५ भगो वा) । गायत्री ।

अभि त्वा देव सवित	रीशानं वार्याणाम् । सदावन् भागमीमहे	३	
यश्चिद्धि त इत्था भगः	शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे	४	
भगभक्तस्य ते वय	मुदशेम तवावसा । मुर्धानं राय आरभे	५	

॥९८॥ ( ऋ० १।३५।२-११ )×

(४१०-४१९) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्. ९ जगती ।

आ कृष्णेन रजसा	वर्तमानो निवेश्यन्नमृतं मर्त्यं च ।		
हिरण्ययेन सविता	रथेना ऽऽ देवो याति भुवनानि पश्यन्	२	४१०
याति देवः प्रवता	यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम् ।		
आ देवो याति सविता	परावतो ऽप विश्वा दुरिता बाधमानः	३	
अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं	हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम् ।		
आस्थाद् रथं सविता	चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः	४	
वि जनाच्छयावाः	शितिपादो अख्यन् रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः ।		
शश्वद् विशः सवितुदैव्यस्यो	पस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः	५	
तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा	उपस्थां एका यमस्य भुवने विराषाद् ।		
आणि न रथ्यममृताधि	तस्थु रिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत्	६	
वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद्	गभीरवेपा असुरः सुनीथः ।		
क्वेद्दानीं सूर्यः कश्चिकेत	कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान	७	
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः	पृथिव्या स्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून् ।		
हिरण्याक्षः सविता देव	आगाद् दधद्रता दाशुषे वार्याणि	८	४१६

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि—रुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।  
 अपामीवां बाधते वेति सूर्ये—मभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ९  
 हिरण्यहस्तो असुरः सुनीधः सुमृळीकः स्वर्वा यात्वर्वाङ् ।  
 अपसेधन् रक्षसो यातुधाना—नस्थाद् देवः प्रतिदोषं गृणानः १०  
 ये ते पन्थाः सवितः पूर्यासो ऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे ।  
 तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षां च नो अधि च ब्रूहि देव ११

॥९९॥ ( ऋ० २।३।१-११ )

( ४२०-४३० ) गृत्समद ( आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

उदु प्य देवः सविता सवार्यं शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात् ।  
 नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्न—मथाभजद् वीतिहोत्रं स्वस्तौ १ ४२०  
 विश्वस्य हि श्रुष्टये देव ऊर्ध्वः प्र ब्राह्वा पृथुपाणिः सिसर्ति ।  
 आपश्चिदस्य व्रत आ निर्मृग्रा अयं चिद् वातो रमते परिज्मन् २  
 आशुभिश्चिद्यान् वि मुचाति नून—मरीरमदत्तमानं चिदेतोः ।  
 अहर्षुणां चिन्नययाँ अविष्या—मनु व्रतं सवितुर्मोक्यागात् ३  
 पुनः समव्यद् विततं वयन्ती मध्या कर्तोर्न्यधाच्छक्म धीरः ।  
 उत् सहायास्थाद् व्यृत्तूरदधर—रमतिः सविता देव आगात् ४  
 नानौकांसि दुषो विश्वमायु—र्वि तिष्ठते प्रभवः शोको अग्रेः ।  
 ज्येष्ठं माता सूनवे भागमाधा—दन्वस्य केतमिषितं सवित्रा ५  
 समारवति विष्ठितो जिगीषु—र्विश्वेषां कामश्चरताममाभूत् ।  
 शशाँ अपो विकृतं हित्वयागा—दनु व्रतं सवितुर्देव्यस्य ६ ४२५  
 त्वया हितमप्यमप्सु भागं धन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः ।  
 वनानि विभ्यो नकिरस्य तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति ७  
 याद्राध्यं वरुणो योनिमप्य—मनिशितं निमिषि जर्भुराणः ।  
 विश्वो मार्ताण्डो व्रजमा पशुर्गात् स्थशो जन्मानि सविता व्याकः ८  
 न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः ।  
 नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभिः ९  
 भगं धियं वाजयन्तः पुरंधि नराशंसो ग्रास्पतिर्नो अव्याः ।  
 आये वामस्य संगथे रयीणां प्रिया देवस्य सवितुः स्याम १० ४२९

६० [अदितिः०] ५



अस्मभ्यं तद् दिवो अद्भ्यः पृथिव्या—स्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात् ।  
शं यत् स्तोतृभ्यं आपये भवा—त्युरुशंसाय सवितर्जरे

११ ४३०

॥१००॥ (ऋ० ३।६२।१०-१२) x

(४३१-४३३) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्  
देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरंध्या । भर्गस्य रातिमीमहे  
देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः । नमस्यन्ति धियेपिताः

१०

११

१२

॥१०१॥ (ऋ० ४।५३।१-७)

(४३४-४४६) वामदेवो गौतमः । जगती ।

तद् देवस्य सवितुर्वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः ।  
छर्दिरेनं दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो महा उदयान् देवो अक्तुभिः  
दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः ।  
विचक्षणः प्रथयन्नापृणन्नुर्व—जीजनत् सविता सुम्नमुक्थ्यम्  
आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मेणे ।  
प्र बाहू अस्त्राक् सविता सवीमनि निवेशयन् प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्  
अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशद् व्रतानि देवः सविताभि रक्षते ।  
प्रासाग् बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यो धृतव्रतो महो अजमस्य राजति  
त्रिरन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभूस्त्रीणि रोचना ।  
तिस्रो दिवः पृथिवीस्तिस्त्र इन्वति त्रिभिर्व्रतैराभि नो रक्षति त्मना  
बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी ।  
स नो देवः सविता शर्म यच्छ—त्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः  
आगन् देव ऋतुभिर्वधतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजामिषम् ।  
स नः क्षपाभिरहंभिश्च जिन्वतु प्रजावन्तं रथिमस्मे समिन्वतु

१

२ ४३५

३

४

५

६

७ ४४०

॥१०२॥ (ऋ० ४।५४।१-६) जगती, ६ त्रिष्टुप् ।

अभूद् देवः सविता वन्द्यो नु न इदानीमहं उपवाच्यो नृभिः ।  
वि यो रन्ना भर्जति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत्  
देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्यो ऽमृतत्वं सुवासिं भागमुत्तमम् ।  
आदिद् दामानं सवितर्व्यूर्णुषे ऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः

१

२ ४४१

अर्चिन्ती यच्चकृमा दैव्ये जने दीनैर्दक्षैः प्रभूती पूरुषत्वता ।  
 देवेषु च सवितुर्मानुषेषु च त्वं नो अत्र सुवतादनागसः ३  
 न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य तद् यथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति ।  
 यत् पृथिव्या वरिमन्त्रा स्वङ्कुरिर्वर्मन् दिवः सुवति सत्यमस्य तत् ४  
 इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः पर्वतभ्यः क्षया एभ्यः सुवसि पस्त्यावतः ।  
 यथायथा पतयन्तो वियेमिर एवैव तस्थुः सवितः सवार्यं ते ५ ४४५  
 ये ते त्रिरहन्त्सवितः सवासो दिवेदिवे सौभंगमासुवन्ति ।  
 इन्द्रो द्यावापृथिवी सिन्धुरङ्घ्रि—रादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ६

॥१०३॥ ( ऋ० ५।८।१।१-५ ) ×

(४४७-४६०) श्यावाश्व आत्रेयः । जगती ।

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।  
 वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः १  
 विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे ।  
 वि नाकमख्यत् सविता वरेण्यो ऽनु प्रयाणमुषसो वि राजति २  
 यस्य प्रयाणमन्वन्य इद् ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा ।  
 यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना ३  
 उत यासि सवितस्त्रीणि रोचनो—त सूर्यस्य राश्मिभिः समुच्यसि ।  
 उत रात्रींभुभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः ४ ४५०  
 उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इदुत पूषा भवसि देव यामभिः ।  
 उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि श्यावाश्वस्ते सवितुः स्तोममानशे ५

॥१०४॥ ( ऋ० ५।८।१।१-९ ) + । गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

तत् सवितुर्वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम् । श्रेष्ठं सर्वघातमं तुरं भगस्य धीमहि १  
 अस्य हि स्वयंशस्तरं सवितुः कञ्चन प्रियम् । न मिनन्ति स्वराज्यम् २  
 स हि रत्नानि दाशुषे सुवति सविता भगः । तं भागं चित्रमीमहे ३  
 अद्या नो देव सवितः प्रजावत् सावीः सौभंगम् । परा दुःस्वप्न्यं सुव ४ ४५५  
 विश्वानि देव सवित—दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ५  
 अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे । विश्वा वामानि धीमहि ६ ४५७

× ऋ० ५।८।१।१-३ = वा० य० ५, १४; ११४, ६; ३७, २; १२, ३ । अथर्व० ७, ७३, ६ (उत्तरार्धः) ।

+ ऋ० ५।८।१।४-५ = वा० य० ३०, ३; सा० १४१ ।

आ विश्वदेवं सत्पतिं	सूक्तैरद्या वृणीमहे	। सत्यसवं सवितारम्	७
य इमे उभे अहनी	पुर एत्यप्रयुच्छन्	। स्वाधीदेवः सविता	८
य इमा विश्वा जाता	न्याश्रावयति श्लोकैः	। प्र च सुवार्ति सविता	९ ४६०

॥१०५॥ (ऋ० ६।७।१-६)

(४६१-४६६) बाह्वस्पत्यो भरद्वाजः । जगती, ४-६ त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता	हिरण्यया बाहू	अयंस्तु सर्वनाय सुकृतुः ।	
घृतेन पाणी अभि	प्रुष्णते मुखो	युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि	१
देवस्य वयं सवितुः	सर्वीमनि श्रेष्ठे	स्याम वसुनश्च दावने ।	
यो विश्वस्य द्विपदो	यश्चतुष्पदो निवेशने	प्रसवे चासि भूमनः	२
अदब्धेभिः सवितः	पायुभिर्द्वं शिवेभिरद्य	परि पाहि नो गर्यम् ।	
हिरण्यजिह्वः सुविताय	नव्यसे रक्षा मार्किनो	अघशंस ईशत	३
उदु ष्य देवः सविता	दमूना हिरण्यपाणिः	प्रतिदोषमस्थात् ।	
अयोहनुर्यजतो	मन्द्रजिह्व आ दाशुषे	सुवति भूरि वामम्	४
उदू अया उपवक्त्रे	बाहू हिरण्यया सविता	सुप्रतीका ।	
दिवो रोहांस्यरुहत्	पृथिव्या अरीरमत पतयत्	कच्चिदभ्वम्	५ ४६५
वाममद्य सवितवाममु	श्चो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं	सावीः ।	
वामस्य हि क्षयस्य देव	भूरैरया धिया वामभाजः	स्याम	६

॥१०६॥ (ऋ० ७।३।१-६)

(४६७-४७६) मैत्रावरुणिर्यासिष्ठः । ६ उत्तरार्धस्य भगो वा । त्रिष्टुप् ।

उदु ष्य देवः सविता	ययाम हिरण्ययीममतिं	यामाशिश्नेत् ।	
नूनं भगो हव्यो	मानुपेभिर्वि यो रत्ना	पुरुवसुर्दधाति	१
उदु तिष्ठ सवितः	श्रुध्यस्य हिरण्यपाणे	प्रभृतावृतस्य ।	
व्युर्धी पृथ्वीममतिं	सृजान आ नृभ्यो	मर्तभोजनं सुवानः	२
अपि घृतः सविता	देवो अस्तु यमा चिद्	विश्वे वसवो गृणन्ति ।	
स नः स्तोमान् नमस्य	श्वनो धाद् विश्वेभिः	पातु पायुभिर्नि सूरीन्	३
अभि यं देव्यदितिर्गणतिं	सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा ।		
अभि सम्राजो वरुणो	गृणन्त्यभि मित्रासो	अर्यमा सजोषाः	४
अभि ये मिथो वनुषः	सपन्ते रातिं दिवो	रातिषाचः पृथिव्याः ।	
अहिर्बुध्न्य उत नः	शृणोतु वरुण्येकधेनुभिर्नि	पातु	५ ४७१

अनु तन्नो जास्पतिर्मसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।  
भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध याति रत्नम्

६

॥१०७॥ ( ऋ० ७।४५।१-४ )

आ देवो यातु सविता सुरत्नो ऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः ।  
हस्ते दधानो नयीं पुरूणि निवेशयश्च प्रसुवञ्च भूमं  
उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्यया दिवो अन्ता अनष्टाम् ।  
नूनं सो अस्य महिमा पनिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम्  
स घा नो देवः सविता सहावा ऽऽ साविषद् वसुपतिर्वसूनि ।  
विश्रयमाणो अमर्तिगुरुर्ची मर्तभोजनमध रासते नः  
इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगमस्तिमीळते सुपाणिम् ।  
चित्रं वयो बृहदुस्मे दधातु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१

२

३

४७५

४

॥१०८॥ ( ऋ० १०।१३९।१-३ )

(४७७-४७९) देवगन्धर्वो विश्वावसुः । त्रिष्टुप् ।

सूर्यैरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयां अजस्रम् ।  
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्रा—न्त्संपश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः  
नृचक्षा एष दिवो मध्यं आस्त आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।  
स विश्वाचीरभि चष्टे घृताची—रन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्  
रायो बुध्नः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः ।  
देव इव सविता मत्यधर्मे—न्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम्

१

२

३

॥१०९॥ ( ऋ० १०।१४९।१-५ )

(४८०-४८४) अर्चन् ह्यैरण्यस्तूपः । त्रिष्टुप् ।

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा—दस्कम्भने सविता घामदंहत् ।  
अश्वमिवाधुक्षद्भुनिमन्तरिक्ष—मतूतं बद्धं सविता समुद्रम्  
यत्रा समुद्रः स्कम्भितो व्यौन—दपां नपात् सविता तस्य वेद ।  
अतो भूरतं आ उत्थितं रजो ऽतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम्  
पश्चेदमन्यदभवद् यजत्र—ममर्त्यस्य भुवनस्य भूना ।  
सुपर्णो अङ्ग सवितुर्गुरुत्मान् पूर्वी जातः स उ अस्यानु धर्म

१

४८०

२

३

४८२

गावँ इव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वान् वाश्रेवं वत्सं सुमना दुहाना ।  
 पतिरिव जायामभि नो न्येतु धर्ता दिवः सविता विश्ववारः ४  
 हिरण्यस्तूपः सवितुर्यथा त्वा ऽऽङ्गिरसो जुह्वे वाजे अस्मिन् ।  
 एवा त्वार्चन्नवसे चन्दमानः सोमस्येवांशुं प्रति जागराहम् ५

॥११०॥ (४८५-५१६) (वा० य० १।१०,३१)+

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूषणो हस्ताभ्याम् १० ४८५  
 सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।  
 सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाभ्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ३१

॥१११॥ (वा० य० ४।४,२५)\*

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण  
 सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छक्रेयम् ४  
 अभि त्वं देव सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसंव रत्नधामभि प्रियं मतिं क्विम् ।  
 ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अर्दिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः २५

॥११२॥ (वा० य० ५।३९)

देवं सवितरेष ते सोमस्त रक्षस्व मा त्वा दभन् ।  
 एतत् त्वं देव सोम देवो देवाँर उपांगा इदमहं मनुष्यान्त्सह रायस्पोषेण स्वाहा ३९

॥११३॥ (वा० य० ८।७)

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि ।  
 जिन्वं यज्ञं जिन्वं यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे ७

॥११४॥ (वा० य० ९।१,११।७; ३०,१)\*

देवं सवितुः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय ।  
 दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतै नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा १ ४९१

+ वा० य० १।२१,२४; २।११, ५।२२, ६६; ६।१, ९, ३०; ९।३०, ३८; १०।६; ११।९, २८; १८।३७, २०।३; २२।१,  
 ३७।१; ३८।१। अथर्व० १९।५१।२

\* अथर्व० ७।१४।१-२ । सा० ४६४ ।

x वा० य० ९, ५; १८, ३०=३० [अदितिः ०] १६ ।

॥११५॥ ( वा० य० १०,५;२८ )×

सवित्रे स्वाहा ॥५॥

सवितासिं सत्यप्रसवः

२८

॥११६॥ ( वा० य० ११,१-३,८,११,६३ )

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः ।

अग्नेज्योतिर्निचार्यं पृथिव्या अध्याभरत्

१

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे । स्वर्ग्याय शक्त्या

२

४९५

युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्यतो धिया दिवम् ।

बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान्

३

इमं नो देव सवितर्यङ्गं प्रणय देवान्यस्य सखिविदं सत्राजितं धनजितं स्वर्जितम् ।

ऋचा स्तोमं समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहदायत्रवर्त्तनि स्वाहा

८

हस्तं आधाय सविता बिभ्रदग्निं हिरण्ययीम् ।

अग्नेज्योतिर्निचार्यं पृथिव्या अध्याभरत्

११

देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपाणिः स्वङ्गुरिः सुबाहुरुत शक्त्या ।

अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिश आपृण

६३

॥११७॥ ( वा० य० १७,७४ )

तां सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम् ।

यामस्य कण्ठो अदुहत् प्रपीनां सहस्रधारां पर्यसा महीं गाम्

७४

५००

॥११८॥ ( वा० य० १९,४३ )

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः

४३

॥११९॥ ( वा० य० २०,७० )\*

य इन्द्रं इन्द्रियं दधुः सविता वरुणो भगः । स सुत्रामां हविष्पतिर्यजमानाय सश्वत७०

॥१२०॥ ( वा० य० २१,२१ )

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।

ककुप् छन्दं इहेन्द्रियं वशा वेहद्रयो दधुः

२१

॥१२१॥ ( वा० य० २२,११-१४ )

देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे । सुमतिं सत्यराधसम्

११

सुष्टुतिं सुमतीवृधो रतिं सवितुरीमहे । प्र देवार्य मतीविदै

१२

५०५

राति५ सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये । आसवं देववीतये १३  
 देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदैव्यम् । धिया भगं मनामहे १४

॥१२२॥ (वा० य० ३०१४)

विभक्तारं५ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः । सवितारं नृचक्षसम् ४

॥१२३॥ ( वा० य० ३५१२-३,५ )

सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्याँल्लोकर्मिच्छतु । तस्मै युज्यन्तामुस्त्रियाः २  
 सविता पुनातु ३ ५१०

सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ आ वपतु । तस्मै पृथिवि शं भव ५

॥१२४॥ (वा० य० ३७११-१२,१४-१५)

देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु । ११

सुषदा पश्चाद् देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाः १२

गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम् ।

सं देवो देवेन सवित्रा गत स५ सूर्येण रोचते १४

समग्निरग्निनां गत सं दैवेन सवित्रा स५ सूर्येणारोचिष्ट ।

स्वाहा समग्निस्तर्पसा गत सं दैव्येन सवित्रा स५ सूर्येणारुरुचत १५ ५१५

॥१२५॥ (३८।८)

सवित्रे त्वं ऋभुमते विभुमते वाजवते स्वाहा ८

॥१२६॥ (अथर्व० १।१८।३)\*

(५१७) द्रविणोदाः । विराडास्तारपक्षिस्त्रिष्टुप् ।

यत् तं आत्मनि तन्वाँ घोरमस्ति यद् वा केशेषु प्रतिचक्षणे वा ।

सर्वं तद् वाचापं हन्मो वयं देवस्त्वा सविता स्रदयतु ३

॥१२७॥ (अथर्व० ५।२४।१)

(५१८-५२४ ) अथर्वा । चतुष्पदाऽतिशकरी ।

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायांमस्यां प्रतिष्ठायांमस्यां चित्यांमस्यामाकू-  
 त्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा १ ५१८

॥१२८॥ (अथर्व० ६।१।१-३)

उष्णिक्, १ त्रिपदा पिपीलिकमध्या सास्त्री जगती, २-३ पिपीलिकमध्या पुर उष्णिक् ।  
दोषो गाय बृहद् गाय द्युमद् धेहि । आथर्वेण स्तुहि देवं सवितारम् १  
तम् ष्टुहि यो अन्तः सिन्धौ सूनुः । सत्यस्य युवानमद्रोघवाचं सुशेवम् २ ५२०  
स घा नो देवः सविता साविषदुमृतानि भूरि । उभे सुष्टुती सुगातवे ३

॥१२९॥ (अथर्व० ७।१।३-४)\*

३ त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

सावीर्हि देव प्रथमार्य पित्रे वर्माणमस्मै वरिमाणमस्मै ।  
अथास्मभ्यं सवितुर्वार्याणि दिवोदिव आ सुवा भूरि पश्वः ३  
दमूना देवः सविता वरेण्यो दधद् रत्नं दक्षं पितृभ्य आयुषि ।  
पिबात् सोमं ममर्ददेनमिष्टे परिज्मा चित् क्रमते अस्य धर्माणि ४

॥१३०॥ (अथर्व० १९।१६।१) अनुष्टुप् ।

असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् ।  
सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १

॥१३१॥ (अथर्व० ५।२।५।१२)

(५२५-५२६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्थी गवीन्योः ।  
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूर्तवे १२ ५२५

॥१३२॥ (अथर्व० ५।२।६।२) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन् यज्ञे महिषः स्वाहा २

॥१३३॥ (अथर्व० ७।१।६।१)

(५२७) भृगुः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते सवितुर्वर्धयैनं ज्योतयैनं महते सौभगाय ।  
संश्रितं चित् संतरं सं शिशाधि विश्व एनमनु मदन्तु देवाः १

॥१३४॥ (अथर्व० १०।५।१४)

(५२८) सिन्धुद्वीपः । पथ्यापङ्क्तिः ।

देवस्य सवितुर्भाग स्थ । अपां शुक्रमापो देवीर्वचो अस्मासु धत्त ।  
प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकार्य सादये १४ ५२८

\* अथर्व० ७।१।३।१-२ । =दे० [अदितिः] ४८८।

दे० [अदितिः] ५



सवितृ-सहस्रारी देवगणः ।

### (१) सवित्राद्याः ।

॥१३५॥ (५२९-५३०) (वा० य० १०।३०)

सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्टा रूपैः पूष्णा  
पशुभिरिन्द्रैणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाभिना  
तेजसा सोमैः राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसृतः प्रसर्पामि

३०

### (२) सवित्रादयः ।

॥१३६॥ ( वा० य० ३९।६ )

सविता प्रथमेऽह्नमिद्वितीये वायुस्तृतीये आदित्यश्चतुर्थे  
चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे ।  
मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे

६ ५३०

### (३) इन्द्रः, भगः, सविता ।

॥१३७॥ (अथर्व० १।२६।२)

(५३१) ब्रह्मा । त्रिपदा एकावसाना सास्त्री त्रिष्टुप् ।

सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः

२

### (४) सविता, आदित्याः, रुद्राः, वसवः ।

॥१३८॥ ( अथर्व० ६।६८।१ )

(५३२) अथर्वा । पुरो विराडतिशाकरगर्भा चतुष्पदा जगती ।

आयमगन्तसविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदुकेनेहि ।

आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसः सोमस्य राज्ञो वपत् प्रचेतसः

१

### (५) बृहस्पतिः सविता मित्रोऽर्यमा भगोऽश्विनौ ।

॥१३९॥ ( अथर्व० ६।१०३।१ )

(५३३) उच्छोचनः । अनुष्टुप् ।

सदानं वो बृहस्पतिः सदानं सविता कर्त् ।

सदानं मित्रो अर्यमा सदानं भगो अश्विना

१ ५३३

## (५) सूर्यः ।

॥१४०॥ (ऋ० १।५०।१-१३)\*

(५३४-४६) प्रस्कण्वः काण्वः । गायत्री, १०-१३ अनुष्टुप् ।

उद्दु त्वं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम्	१	
अप त्वेतायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । सूराय विश्वचक्षसे	२	५३५
अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनां अनु । आर्जन्तो अग्रयो यथा	३	
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमा भासि रोचनम्	४	
प्रत्यर्क देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदैषि मानुषान् । प्रत्यङ् विश्वं स्वर्दृशे	५	
येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनां अनु । त्वं वरुण पश्यसि	६	
वि घामेषि रजस्पृध्व—हा मिमानो अक्तुभिः । पश्यञ्जन्मानि सूर्य	७	५४०
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य । शोचिष्केशं विचक्षण	८	
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरौ रथस्य नप्त्यः । तामिरीति स्वयुक्तिभिः	९	
उद वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्य—मगन्म ज्योतिरुत्तमम् १०		
उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवंम् । हद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ११		
शुक्रेषु मे हरिमाणं रोपणाकांसु दध्मसि । अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि १२		५४५
उदगाद्यमादित्यो विश्वेन सहसा सह । द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम् १३		

॥१४१॥ (ऋ० १।१२।५।१-६)+

(५४७-५२) कुत्स आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्रेः ।		
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च	१	
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात् ।		
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्	२	
भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः ।		
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यान्ति सद्यः	३	५४९

\* ऋ० १।५०।१-१०, १२-१३ = वा० य० ७, ४१; ८, ४०-४१; २०, २१; २७, १०; ३३, ३१-३२, ३६; ३५, १४; ३८, २४  
सा० ३१, ६३३-६४० । अथर्व० १, २२, ४; १३, २, १६-२४; १७, १, २४; २०, ४७, १३-२१ । ऋ० १।५०।११-१३=  
दे० [आयुर्वेद०] ५४५-४७ ।

+ ऋ० १।१२।५।१-२, ४-६ = वा० य० ७, ४२; १३, ४६; ३३, ३७-३८, ४२ । अथर्व० १३, २, ३५; २०, १०७, १४-१५;  
१२३, १-२ । सा० ६२९ ।

तत् सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार ।  
 यदेदयुक्त हरितः सधस्था—दाद् रात्री वासस्तनुते सिमस्मै  
 तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणते द्योरुपस्थे ।  
 अनन्तमन्यद् रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्वरितः सं भरन्ति  
 अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरहंसः पिपृता निरवद्यात् ।  
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः

४ ५५०

५

६

॥१४२॥ (ऋ० १।१६४।४६-४७)×

(५५३-५४) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु—रथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।  
 एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः  
 कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति ।  
 त आवष्टन्त्सदनादृतस्या—दिद् घृतेन पृथिवी व्युद्यते

४६

४७

॥१४३॥ (ऋ० ४।४०।५)+

(५५५) वामदेवो गौतमः । जगती ।

हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षस—द्वोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ।  
 नृषद् वरसदृतसद् व्योमस—दुब्जा गोजा क्रतजा अद्रिजा ऋतम्

५ ५५५

॥१४४॥ (ऋ० ५।४०।५)

(५५६) अत्रिभोमः । अनुष्टुप् ।

यत् त्वा सूर्य स्वर्भानु—स्तमसाविध्यदासुरः । अक्षेत्रविद् यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः ५

॥१४५॥ (ऋ० ७।६०।१)

(५५७-५६७) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यदुच्च सूर्यं ब्रवोऽनागा उद्यन् मित्राय वरुणाय सत्यम् ।  
 वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन् गृणन्तः

१

॥१४६॥ (ऋ० ७।६२।१-३)

उत् सूर्यो बृहदुर्चीव्यश्रेत् पुरु विश्वा जनिम मानुषाणाम् ।  
 समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत्  
 स सूर्यं प्रति पुरो न उद् गा एभिः स्तोभेभिरेतशेभिरेवैः ।  
 प्र नो मित्राय वरुणाय वोचो—ऽनागसो अर्यम्णे अग्रये च

२ ५५९

वि नः सहस्रं शुरुधो रदन्त्वतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।  
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कमा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः ३ ५६०

॥१४७॥ ( ऋ० ७।६३।१-४ )

उद्रेति सुभगो विश्वचक्षाः सार्धारणः सूर्यो मानुषाणाम् ।  
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देवश्चमेव यः समर्विव्यक् तमांसि १  
उद्रेति प्रसवीता जनानां महान् केतुरर्णवः सूर्यस्य ।  
समानं चक्रं पर्याविष्टसन् यदेतशो वहति धूर्षु युक्तः २  
विभ्राजमान उषसामुपस्थाद् रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।  
एष मे देवः सविता चच्छन्दु यः समानं न प्रमिनाति धामं ३  
दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरेअर्थस्तरणिभ्राजमानः ।  
नूनं जनाः सूर्येण प्रस्रता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि ४

॥१४८॥ ( ऋ० ७।६६।१४-१६ )+

प्रगाथः=(समा बृहती+विषमा सतोबृहती) १६ पुर उष्णिक् ।

उदु त्यद् दर्शतं वपुर्दिव एति प्रतिहुरे ।  
यदीमाशुर्वहति देव एतशो विश्वस्मै चक्षसे अरम् १४ ५६५  
शीर्ष्णःशीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः ।  
सप्त स्वसारःसविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे १५  
तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् १६

॥१४९॥ ( ऋ० ८।१०१।११-१२ )×

(५६८-६९) जमदग्निर्भागवः । प्रगाथः=(विषमा बृहती+समा सतोबृहती )

वणमहाँ असि सूर्यं बळादित्य महाँ असि ।  
महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ असि ११  
बट् सूर्यं श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि ।  
महा देवानामसूर्यः पुरोहितो विश्वु ज्योतिरदाभ्यम् १२ ५६९

+ ऋ० ७।६६।१६=वा० य० ३६, २४ ।

× वा० य० ३३, ३९-४० । अथर्व० १३, २, २९; २०, ५८, ३-४ । सा० २७६, १७८८-८९ ।

॥१५०॥ (ऋ० १०।३।१-१२)॥

(५७०-८१) सौर्योऽभितपाः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

नमो मित्रस्य वरुणस्य चर्क्षसे महो देवाय तदृतं संपर्यत ।	
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत	१ ५७०
सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च ।	
विश्वमन्यान्नि विशते यदेजति विश्वाहाऽऽपो विश्वाहोदेति सूर्यः	२
न ते अदेवः प्रादिवो नि वासते यदेतशेभिः पतरै रथर्यसि ।	
प्राचीनमन्यदनु वर्तते रज उदन्येन ज्योतिषा यासि सूर्य	३
येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियधि भानुना ।	
तेनास्मद् विश्वामनिरामनाहुति मपामीवामप दुष्वप्यं सुव	४
विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रत महैक्यन्नुच्चरसि स्वधा अनु ।	
यदद्य त्वा सूर्योपब्रवामहे तं नो देवा अनु मसीरत क्रतुम्	५
तं नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्रः शृण्वन्तु मरुतो हवं वचः ।	
मा शूने भूम सूर्यस्य संदाशि भद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि	६ ५७५
विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचर्क्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः ।	
उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवेदिवे ज्योग् जीवाः प्रति पश्येम सूर्य	७
महि ज्योतिर्विभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषेचक्षुषे मर्यः ।	
आरोहन्तं बृहतः पाजंसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य	८
यस्य ते विश्वा भ्रवन्तानि केतुना प्र चरते नि च विशन्ते अस्तुभिः ।	
अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्याऽऽह्वाहा नो वस्यसावस्यसोदिहि	९
शं नो भव चर्क्षसा शं नो अह्वा शं भानुना शं हिमा शं घृणेन ।	
यथा शमध्वञ्छमसद् दुरोणे तत् सूर्यं द्रविणं घेहि चित्रम्	१०
अस्माकं देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुस्पदे ।	
अदत् पिबदूर्जर्यमानमाशितं तदस्मे शं योररपो दधातन	११
यद् वो देवाश्चक्रम जिह्या गुरु मनसो वा प्रयुती देवहेळनम् ।	
अरावा यो नो अभि दुच्छुनायते तस्मिन् तदेनो वसवो नि धेतन	१२ ५८१

॥१५३॥ (ऋ० १०।१५८।१-५)

(५८१-८६) चक्षुः सौर्यः । गायत्री, १ स्वराट् ।

सूर्यो नो दिवस्पातु	वातो अन्तरिक्षात् । अग्निः पार्थिवेभ्यः	१
जोषा सवितर्यस्य ते हरः	शतं सवाँ अर्हेति । पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः	२
चक्षुर्नो देवः सविता	चक्षुर्न उत पर्वतः । चक्षुर्धाता दधातु नः	३
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे	चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः । सं चेदं वि च पश्येम	४ ५८५
सुसंद्दशं त्वा वयं	प्रति पश्येम सूर्य । वि पश्येम नृचक्षसः	५

॥१५२॥ (ऋ० १०।१७०।१-४)\*

(५८७-९०) विश्राट् सौर्यः । जगती, ४ आस्तारपक्तिः ।

विश्राट् बृहत् पिबतु सोम्यं	मध्वायुर्दधंघृज्जपतावविहुतम् ।	
वार्तजूतो यो अभिरक्षति	त्मना प्रजाः पुषोष पुरुधा वि राजति	१
विश्राट् बृहत् सुमृतं वाजसातमं	धर्मन् दिवो धरुणै सत्यमर्षितम् ।	
अमित्रहा वृत्रहा दंस्युहंतमं	ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा	२
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं	विश्वजिद् धनजिदुच्यते बृहत् ।	
विश्वभ्राट् भ्राजो महि सूर्यो दृश	उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम्	३
विभ्राज्ज्योतिषा स्वर्गच्छो	रोचनं दिवः ।	
येनेमा विश्वा भुवनान्याभृता	विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता	४ ५९०

॥१५३॥ (५९१-६०९) (वा० य० १।११)

भूताय त्वा नारातये	स्वरभिविख्येषं दृशं हन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वैमि ।	
पृथिव्यास्त्वा नामौ	सादयाम्यदित्या उपस्थेऽग्रे हव्यं रक्ष	११

॥१५४॥ (वा० य० २।२६)×

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वचोदा असि	वचो मे देहि । सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते	२६
--------------------------------------	--------------------------------------	----

॥१५५॥ (वा० य० ३।५,९-१०)

भूर्ध्रुवः स्वुर्धौरिव भुम्ना	पृथिवीव वरिम्णा ।	
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि	पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यादाधे	५ ५९३

\* ऋ० १०, १७०, १-३=वा० य० ३३, ३०; सा० ६२८, १४५३-१४५५

× वा० य० २।२६ (उत्तरार्धः) =अथर्व १०, ५, ३७(२); वा० य० २।२७

सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा

९

सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा

१० ५२५

॥१५६॥ (वा० य० ५।३३)

अध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मेऽस्मिन् पथि देवयाने भूयात्

३३

॥१५७॥ (वा० य० ८।४०)ः

अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँर अनु । भ्राजन्तो अग्रयो यथा ।

उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजायैषते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजाय ।

सूर्ये भ्राजिष्ठु भ्राजिष्ठुस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोऽहं मनुष्येषु भूयासम्

४०

॥१५८॥ (वा० य० १५।५८)×

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्टे ज्योतिष्मतीम् ।

विश्वस्मै प्राणार्यापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ ।

सूर्यस्तेऽधिपतिस्तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् भ्रुवा सीद

५८

॥१५९॥ (वा० य० २०।१६,२२)+

यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाँसि चक्रुमा वयम् ।

सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वँ हंसः

१६

उद्वयं तमसस्परि स्वुः पश्यन्त उत्तरम् ।

देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्

२१ ६००

॥१६०॥ (वा० य० ३३।३३-३५,४१)⊠

दैव्यावध्वर्य आ गतुँ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वा यज्ञँ समञ्जाथे

३३

आ न इडाँभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।

अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा

३४

यदुद्य कच्चं वृत्रहृद्भुदगाँ अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे

३५

श्रायन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।

वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम

४१ ६०४

\* वा० य० ८।४१ । × वा० य० १९।४३=दै० [अदितिः०] ५०१ मन्त्रः दृष्टव्यः ।

+ वा० य० २०।१६=अथर्ववेदे (६।११५।१-२) पाठभेद रूपेण, तथा च वा० य० २०।२१; २७,२०; ३५,१४; ३८,२४

=ऋ० १।५०।१०; अथर्व० ७।५३।७ पाठभेदेन च दृश्यते ।

⊠ वा० य० ३३।३५,४१=दै० [ इन्द्रः ] २४३३, २३७८ ।

॥१६१॥ (वा० य० ३६:९, २४) ×

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वयमा ।

शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुहक्रमः

९ ६०५

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः

शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूर्यश्च शरदः शतात्

२४

॥१६२॥ (वा० य० ३७।१६-१८)

धृता दिवो वि भाति तपसस्पृथिव्यां धृता देवो देवानाममर्त्यस्तपोजाः ।

वाचमस्मे नि यच्छ देवायुवम्

१६

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पृथिभिश्चरन्तम् ।

स सध्रीचीः स विष्वचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः

१७

विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते सर्वस्य वचसस्पते ।

देवश्रुचं देव घर्म देवो देवान् पाह्यत्र प्रावीरनु वां देववीतये ।

मधु माध्वीभ्यां मधु माध्वीभ्याम्

१८

॥१६३॥ (अथर्व० १।३।५)

(६१०-६२२) अथर्वा । पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्या शरस्य पितरं सूर्यं शतवृष्यम् ।

तेना ते तन्वेडुं शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति

५ ६१०

॥१६४॥ (अथर्व० २।२।१-५)

[एकावसानम्] १-४ निचृद्धिषमा गायत्री, ५ भुरिग्विषमा ।

सूर्यं यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योडुऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

१

सूर्यं यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योडुऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

२

सूर्यं यत् तेऽचिस्तेन तं प्रत्यर्चं योडुऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

३

सूर्यं यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योडुऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

४

सूर्यं यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योडुऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः

५

६१५



॥१६५॥ (अथर्व० ५।२४।९) चतुष्पदऽतिशकरी ।

सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चिन्त्यामस्यामा-  
कृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्वां स्वाहा ९

॥१६६॥ (अथर्व० ७।१३।१-२) अनुष्टुप् ।

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजांस्यादुदे एवा स्त्रीणां च पुंसां च द्विषतां वर्च आ ददे १  
यावन्तो मा सपत्नानामायन्तं प्रतिपश्यथ ।

उद्यन्तसूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आ ददे २

॥१६७॥ (अथर्व० १९।१७।५) अतिजगती ।

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्यां दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिच्छ्रये तां पुरं प्रैमि ।  
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ५

॥१६८॥ (अथर्व० १९।१८।५) सम्राडाचर्यनुष्टुप् ।

सूर्य ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवं प्रतीच्यां दिशोऽभिदासात् ५ ६२०

॥१६९॥ (अथर्व० १९।१९।३) भुरिगृहती ।

सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।

तामा विंशत् तां प्र विंशत् सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ३

॥१७०॥ (अथर्व० १९।२३।२४) दैवी पङ्क्तिः ।

सूर्याभ्यां स्वाहा २४

॥१७१॥ (अथर्व० २।३६।५)

(६२३) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

भगस्य नावमा रोह पूर्णामनुपदस्वतीम् । तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः ५

॥१७२॥ (अथर्व० ४।४०।७)

(६२४) शुक्रः । त्रिष्टुप् ।

य उपरिष्टाञ्जुहति जातवेद ऊर्ध्वायां दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।

सूर्यमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यर्गेनान् प्रतिसरेण हन्मि ७

॥१७३॥ (अथर्व० ६।५२।१)

(६२५) भागलिः । अनुष्टुप् ।

उत्सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्ध्वन् ।

आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा १ ६२५

॥१७४॥ (अथर्व० १६।९।३-४)

(६२६-२७) यमः । ३ साक्षी पङ्क्तिः, ४ परोष्णिक् ।

अगन्म स्वः<sup>३</sup>ः स्व<sup>३</sup>रिगन्म सं सूर्यस्य<sup>३</sup> ज्योतिषागन्म ३

वस्यो<sup>३</sup>भूयाय<sup>३</sup> वसुमान् यज्ञो<sup>३</sup> वसु वंशिषीय<sup>३</sup> वसुमान् भूयासं<sup>३</sup> वसु मरिं धेहि ४

॥१७५॥ ( साम० ४५८ )

(६२८) गौराङ्गिरसः । अतिजगती (अष्टिर्वा) ।

अयं<sup>३ ३ ३ ३ ३ ३</sup> सहस्रमानवो<sup>३ ३ ३ ३ ३ ३</sup> दशः<sup>३ ३ ३ ३ ३ ३</sup> कवीनां<sup>३ ३ ३ ३ ३ ३</sup> मतिज्योतिर्विधर्म ।

ब्रध्नः<sup>३ ३ ३ ३ ३ ३</sup> समीचीरुषसः<sup>३ ३ ३ ३ ३ ३</sup> समैरयदरेपसः । सचेतसः<sup>३ ३ ३ ३ ३ ३</sup> स्वसरे मन्युमन्तश्चिता गोः २

॥१७६॥ (साम० १७९०-९२) × सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

सूर्य-सहचारी देवगणः ।

(१) सूर्यः पर्जन्यामयो वा, सरस्वान् सूर्यो वा ।

॥१७७॥ ( ऋ० १।१६४।५१-५२ )

(६२९-३०) दीर्घतमा औचथ्यः । ५१ अनुष्टुप्, ५२ त्रिष्टुप् ।

समानमेतदुदुक—मुच्चैत्यव चाहभिः ।

भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्रयः ५१

दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्त—मपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम् ।

अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पर्यन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि ५२ ६३०

(२) सूर्यमित्रावरुणाः ।

॥१७८॥ ( ऋ० ७।६३।५ )

(६३१) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

यत्रा चक्रुर्मृता गातुमस्मै श्येनो न दीयन्नन्वेति पार्थः ।

प्रति वां सूर उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ५

(३) सूर्याविवाहः ।

॥१७९॥ ( ऋ० १०।८५।६-१६ )

(६३२-५८) सावित्री सूर्या ऋषिका । अनुष्टुप्, १४ त्रिष्टुप् ।

रभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योर्चनी ।

सूर्याया भद्रमिदु वासो गार्थयैति परिष्कृतम् ६ ६३२

चित्तिरा उपवर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम् ।	
द्यौर्भूमिः कोश आसीद् यदयात् सूर्या पतिम्	७
स्तोमा आसन् प्रतिघयः कुरीरं छन्द ओपशः ।	
सूर्याया अश्विना वरा ऽग्निरासीत् पुरोगवः	८
सोमो वधुयुरभव दुश्विनास्तामुभा वरा ।	
सूर्या यत् पत्ये शंसन्ती मनसा सविताददात्	९
मनो अस्या अन आसीद् द्यौरासीदुत च्छदिः ।	६३५
शुक्रावनद्वाहावास्तां यदयात् सूर्या गृहम्	१०
ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावो ते सामनावितः ।	
श्रोत्रं ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः	११
शुचीं ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः ।	
अनो मनस्सयं सूर्या ऽऽ रोहत् प्रयती पतिम्	१२
सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत् ।	
अघासु हन्यन्ते गावो ऽर्जुन्योः पर्युद्यते	१३
यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः ।	
विश्वे देवा अनु तद् वामजानन् पुत्रः पितराववृणीत पूषा	१४
यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप । कैकं चक्रं वामासीत् कदेष्टाय तस्थधुः १५	६४०
द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माणं ऋतुथा विदुः ।	
अथैकं चक्रं यद् गुहा तदद्वातय इद् विदुः	१६

## (४) सूर्या-सावित्री ।

॥१८०॥ (ऋ० १०।८५।३२-४७)

अनुष्टुप्, ३४ उरोबृहती, ३६-३७, ४४ त्रिष्टुप्, ४३ जगती ।

मा विदन् परिपन्थिनो य आसीदन्ति दंपती ।	
सुगेभिर्दुर्गमतीता मप द्रान्त्वरातयः	३२
सुमङ्गलीरियं वधू रिमां समेत पश्यत ।	
सौभाग्यमस्यै दुत्वाया ऽथास्तं वि परेतन	३३
तृष्टमेतत् कर्दुकमेत दपाष्ठवद् विषवन्नैतदत्तवे ।	
सूर्या यो ब्रह्मा विद्यात् स इद् वार्धुयमर्हति	३४

आशसनं विशसनं—मथो अधिविकर्तनम् ।	
सूर्यायाः पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुन्धति	३५
गृष्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।	
भगो अर्यमा सविता पुरंधि—महीं त्वादुर्गाहिपत्याय देवाः	३६
तां पूषञ्छिवतमाभेरयस्व यस्यां बीजे मनुष्याश्च वपन्ति ।	
या न ऊरू उशती विश्रयाति यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपम्	३७
तुभ्यमग्ने पर्यवह—न्त्सूर्यां वहतुना सह ।	
पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजयां सह	३८
पुनः पत्नीमग्निरंदा—दायुषा सह वर्चसा ।	
दीर्घायुरस्या यः पति—र्जीवाति शरदः शतम्	३९ ६५०
सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविदु उत्तरः ।	
तृतीयो अग्निष्टे पति—स्तुरीयस्ते मनुष्यजाः	४०
सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो दददुग्रये ।	
रयि च पुत्रांश्चादा—दुग्निर्मह्यमथो इमाम्	४१
इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्रुतम् ।	
कीळन्तौ पुत्रैर्नमृभि—मोदमानौ स्वे गृहे	४२
आ नः प्रजां जनयतु प्रजापति—राजरसाय समनक्त्वर्थमा ।	
अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे	४३
अधौरभुरपतिभ्योधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।	
वीरस्रदेवकाभा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे	४४ ६५५
इमां त्वमिन्द्र मीद्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।	
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि ।	४५
सम्राज्ञी शशुरे भव सम्राज्ञीं श्चश्वां भव ।	
ननान्दरि सम्राज्ञीं भव सम्राज्ञी अधि देवेषु	४६
समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।	
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्टी दधातु नौ	४७ ६५८

## (५) सूर्य-वैश्वानरोऽग्निः ।

॥१८१॥ (ऋ० १०।८।१-१९)

(६५९-७७) आङ्गिरसो मूर्धन्वान्, वामदेव्यो वा । त्रिष्टुप् ।

हविष्पान्तमजरं स्वर्विदिं दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ ।	
तस्य भर्मेणे भुवनाय देवा धर्मेणे कं स्वधया पप्रथन्त	१
गीर्णं भुवनं तमसापंगूळह—माविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।	
तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो ऽरण्यन्नोषधीः सरुये अस्य	२ ६६०
देवेभिर्निवषितो यज्ञियेभि—रग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम् ।	
यो भानुना पृथिवीं घामुतेमा—माततान रोदसी अन्तरिक्षम्	३
यो होताऽऽसीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः ।	
स पतन्नीत्वरं स्था जगद्य—च्छ्वात्रमग्निरकृणोञ्जातवेदाः	४
यजातवेदो भुवनस्य मूर्ध—न्नतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन ।	
तं त्वाहेम मतिभिर्गीभिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः	५
मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्नि—स्ततः स्रयो जायते प्रातरुद्यन् ।	
मायाम् तु यज्ञियानामेता—मपो यत् तूर्णिश्वरति प्रजानन्	६
दृशेन्यो यो महिना समिद्धो ऽरोचत दिवियोनिर्विभावा ।	
तस्मिन्नग्नौ सक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुह्वुस्तनूपाः	७ ६६५
सूक्तवाकं प्रथममादिदग्नि—मादिद्धविरजनयन्त देवाः ।	
स एषां यज्ञो अभवत् तनूपा—स्तं द्यौर्विदु तं पृथिवी तमापः	८
यं देवासोऽर्जनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुह्वुर्भुवनानि विश्वा ।	
सो अर्चिषा पृथिवीं घामुतेमा—मृजूयमानो अतपन्महित्वा	९
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्नि—मर्जाजनञ्छक्तिभी रोदसिप्राम् ।	
तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः	१०
यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् ।	
यदा चरिष्णु मिथुनावभूता—मादित् प्रापश्यन् भुवनानि विश्वा	११
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्वामकृण्वन् ।	
आ यस्ततानोषसो विभाती—रपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन्	१२ ६७०

वैश्वानरं कवयो यज्ञियांसो ऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्थम् । नक्षत्रं प्रत्नमग्निनच्चरिण्यु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्	१३
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छां वदामः । यो महिम्ना परिवभ्रुवोर्वा उतावस्तादुत देवः परस्तात्	१४
द्वे सुती अंशृणवं पितृणा मंहं देवानामुत मर्त्यानाम् । ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समैति यदन्तरा पितरं मातरं च	१५
द्वे समीची विभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् । स प्रत्यङ् विश्वा भुवनानि तस्था वप्रयुच्छन् तरणिभ्राजमानः	१६
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद । आ शैकुरित् संधमादुं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्	१७ ६७५
कत्यग्रयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्युं स्विदापः । नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पुच्छामि वः कवयो विद्वाने कम्	१८
यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपण्योऽं वसते मातरिश्चः । तावद् दधात्युषं यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्	१९

## (६) सूर्यो, हरिमा हृद्रोगश्च ।

॥१८२॥ [द्वै० ( आयुर्वेद० ) ४८९-९२ मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

## (७) सूर्यः प्रजापतिः ।

॥१८३॥ [द्वै० ( आयुर्वेद० ) १३३२-३३ मन्त्रौ द्रष्टव्यौ ।]

## (८) सूर्याचन्द्रमसौ ।

॥१८४॥ (अथर्व० ६।८३।१)+

(६७८) भगः । अनुष्टुप् ।

अपचितः प्र पतत सुपर्णो वसतेरिव ।

सूर्यः कृणोतुं भेषजं चन्द्रमा वोऽपोच्छतु

१

॥१८५॥ (अथर्व० ७।८१।१-६)ः

(६७९-८४) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप्, ४ आस्तारपाङ्क्तिः, ५ स्वराडास्तारपाङ्क्तिः ।

पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशु क्रीडन्तौ परि यातोऽर्णवम् ।

विश्वान्यो भुवना विचष्टं ऋतूरन्यो विदधजायसे नवः

१ ६७९

नर्वोनवो भवसि जायमानोऽह्नां केतुरुषसामिष्यग्रम् ।	
भागं देवेभ्यो वि दधास्यायन् प्र चन्द्रमस्तिरसे दीर्घमायुः	२ ६८०
सोमस्यांशो युधां पतेऽनूनो नाम वा असि ।	
अनूनं दर्श मा कृधि प्रजयां च धनेन च	३
दुर्शोऽसि दर्शतोऽसि समग्रोऽसि समन्तः ।	
समग्रः समन्तो भूयासं गोभिरश्वैः प्रजयां पशुभिर्गृहैर्धनेन	४
शोऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तस्य त्वं प्राणेनाप्यायस्व ।	
आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजयां पशुभिर्गृहैर्धनेन	५
यं देवा अंशुमाप्याययन्ति यमक्षितमक्षिता भक्षयन्ति ।	
तेनास्मानिन्द्रो वरुणो बृहस्पतिराप्याययन्तु भुवनस्य गोपाः	६

## (९) सूर्यः आपश्च ।

॥१८६॥ (अथर्व० ७।१०७।१)

(६८५) भृगुः । अनुष्टुप् ।

अव दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः ।	
आपः समुद्रिया धारास्तास्ते शलयमसिप्तसन्	१ ६८५

## (१०) सूर्यः गौः ।

॥१८७॥ (अथर्व० २०।४८।१-६)

(६८६-११) खिलम्, ४-६ सर्पराक्षी । गायत्री ।

अभि त्वा वर्चसा गिरः सिञ्चन्तीराचरण्यवः । अभि वत्सं न धेनवः	१
ता अर्षन्ति शुभ्रियः पृश्नन्तीर्वर्चसा प्रियः । जातं जात्रीर्यथा हृदा	२
वज्रापवसाध्यः कीर्तिर्म्रियमाणमावहन् । मह्यमायुर्धृतं पर्यः	३
आयं गौः पृश्निरक्रीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः	४
अन्तश्चरति रोचना अस्य प्राणादपानतः । व्यख्यन्महिषः स्वः	५
त्रिंशद्धामा वि राजति वाक् पतङ्गो अशिथियत् । प्रति वस्तोरहर्द्युभिः	६ ६९१

## (६) त्वष्टा, धाता, पूषा, भगः, अर्यमा ।

[ १ ] त्वष्टा ।\*

॥१८८॥ ( क्र० १०।१८।६ )

(६९२) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति ष्ट ।

इह त्वष्टां सुजनिमा सजोषां दीर्घमायुः करति जीवसे वः

६

॥१८९॥ [६९३-९७] ( वा० य० २।२४ )×

सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सꣳ शिवेन ।

त्वष्टां सुदत्रो विदधातु रायोऽनुमर्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्

२४

॥१९०॥ (वा० य० ६।७)

उपावीरस्युप देवान् दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।

देवं त्वष्टर्वसुं रम हव्या ते स्वदन्ताम्

७

॥१९१॥ (वा० य० ८।१७)+

धाता रातिः सवितेदं जुपन्तां प्रजापतिर्निधिपा देवोऽअग्निः ।

त्वष्टा विष्णुः प्रजया सꣳरराणा यजमानाय द्रविणं दधातु स्वाहा

१७

६९५

॥१९२॥ (वा० य० २०।४४)

त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय वृष्णेऽपाकोऽर्चिष्टुर्यशसे पुरूणि ।

वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्

४४

॥१९३॥ (वा० य० २९।९)

त्वष्टा वीरं देवकामं जजानु त्वष्टुरवीं जायत आशुरश्वः ।

त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजानु बहोः कर्तारमिह यक्षि होतः

९

॥१९४॥ (अथर्व० ३।३।५)

(६९८-९९) ब्रह्मा । विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं युनक्तीतीदं विश्वं भुवनं वि याति ।

व्यꣳहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुपा

५

६९८

\*द्वै० [ अग्निः (आग्नी सूक्तानि ) ] १९१५, १९२७, १९३९, १९५०, १९६१, १९७१, १९८९, २०००, २०११, २०२२, २०३४, २०४५, २०५७, २०६९, २०८१, २०९२, २१०३, २११४, २१२६, २१३८ ।

× वा० य० ८।१४, १६; अथर्व० ६।५३।३ (पाठभेदेन) । +अथर्व० ७।१७।४ ।

द्वै० अदितिः ०।८



(अथर्व० ५।२६।८) द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।

त्वष्टा युनक्तु बहुधा नु रूपा अस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा

८

॥१९५॥ (अथर्व० ६।५३।३)

(७००) बृहच्छुक्रः । त्रिष्टुप् ।

सं वर्चसा पर्यसा सं तनूभिरगन्महि मर्नसा सं शिवेन ।

त्वष्टा नो अत्र वरीयः कृणोत्वन्तु नो मार्षु तन्वोरे यद् विरिष्टम्

३ ७००

॥१९६॥ (अथर्व० ६।७८।३)

(७०१-२) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

त्वष्टा जायामजनयत् त्वष्टास्यै त्वां पतिम् ।

त्वष्टा सहस्रमायूषि दीर्घमायुः कृणोतु वाम्

३

॥१९७॥ (अथर्व० ६।८१।३)

यं परिहस्तमर्चिभरदितिः पुत्रकाम्या ।

त्वष्टा तमस्या आ बध्नाद् यथा पुत्रं जनादिति

३

त्वष्टृ-सहचारी देवगणः ।

(१) त्वष्टा शुक्रश्च ।

॥१९८॥ (ऋ० २।३६।३)

(७०३) गृत्समद् (आङ्गिरसः शौनहेत्रः पश्चाद् भार्गवः शौनकः । जगती ।

अमेवं नः सुहवा आ हि गन्तं नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।

अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टदेवेभिर्जनिभिः सुमर्द्रणः

३

(२) त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः ।

॥१९९॥ (अथर्व० ६।४।१)

(७०४) अथर्वा । पथ्याबृहती ।

त्वष्टा मे दैव्यं वर्चः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।

पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टं त्रायमाणं सहः

१

[२] धाता ।

॥२००॥ (ऋ० १०।१८।५)

(७०५) संकुसुको यामायनः । त्रिष्टुप् ।

यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ ऋतवं ऋतुभिर्यन्ति साधु ।

यथा न पूर्वमपरो जहात्ये—वा धातरायूषि कल्पयैषाम्

५ ७०५

॥२०१॥ (अथर्व० १३।४।३)

(७०६) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम् ।

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः

३

॥२०२॥ (अथर्व० १८।३।२६)

(७०७-१०) । अथर्वा । जगती ।

धाता मा निर्ऋत्या दक्षिणाया दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी धामिषोपरि ।

लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ

२६

धातु-सहचारी-देवगणः ।

(१) धाता, सविता, इन्द्रः, त्वष्टा, अदितिः ।

॥२०३॥ (अथर्व० ३।८।२)

धाता रतिः संवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।

हुवे देवीमर्दितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्टा यथासानि

२

(२) धाताविधातारौ, ऋतवः ।

॥२०४॥ (अथर्व० ३।१०।१०)

ऋतुभ्यश्चार्तवेभ्यो माद्भ्यः संवत्सरेभ्यः ।

घात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे

१०

(३) धाता, विधाता, सविता, आदित्याः, रुद्राः, अश्विनौ ।

॥२०५॥ (अथर्व० ५।३।९)

धाता विधाता भुवनस्य यस्पतिर्देवः सविताभिमातिषाहः ।

आदित्या रुद्रा अश्विनोभा देवाः पान्तु यजमानं निर्ऋथात्

९ ७१०

(४) धाता, सविता ।

॥२०६॥ (अथर्व० ७।१७।१-३)

(७११-१३) भृगुः । १-२ गायत्री, ३ त्रिष्टुप् ।

धाता दधातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः । स नः पूर्णेन यच्छतु

१

धाता दधातु दाशुषे प्राचीं जीवातुमक्षिताम् ।

वचं देवस्य धीमहि सुमति विश्वराधसः

२ ७१२

धाता विश्वा वार्या दधातु प्रजाकामाय द्वाशुषे दुरोणे ।

तस्मै देवा अमृतं सं व्ययन्तु विश्वे देवा अदितिः सजोषाः

३

### (५) सविता, धाता, पूषा, त्वष्टा ।

॥२०७॥ (अथर्व० ११।६।३)

(७१४) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

ब्रूमो देवं सवितारं धातारमुत पूषणम् । त्वष्टारमग्रियं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ३

[३] पूषा ।

॥२०८॥ (ऋ० १।२३।१३-१५)

(७१५-१७) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

आ पूषञ्चित्रवर्हिषमाघृणे धरुणं दिवः । आजा नष्टं यथा पशुम्	१३	७१५
पूषा राजानमाघृणि रपंगूळहं गुहा हितम् । अविन्दच्चित्रवर्हिषम्	१४	
उतो स मह्यमिन्दुभिः षड् युक्ता अनुसेषिधत् । गोभिर्यवं न चर्कषत्	१५	

॥२०९॥ (ऋ० १।४२।१-१०)

(७१८-२७) कण्वो घौरः । गायत्री ।

सं पूषन्नध्वनस्तिर्यंहो विमुचो नपात् । सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः	१	
यो नः पूषन्नधो वृको दुःशैर्व आदिदेशति । अप स्म तं पथो जहि	२	
अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम् । दूरमर्थं सुतेरंज	३	७२०
त्वं तस्य द्रयाविनो ऽघशंसस्य कस्य चित् । पदाभि तिष्ठ तर्पुषिम्	४	
आ तत् ते दस्र मन्तुमः पूषन्नधो वृणीमहे । येन पितृनचोदयः	५	
अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम । धनानि सुषणा कृधि	६	
अति नः सश्वतो नय सुगा नः सुपथा कृणु । पूषन्निह क्रतुं विदः	७	
अभि सुयवसं नय न नवज्वारो अध्वने । पूषन्निह क्रतुं विदः	८	७२५
शग्धि पूधि प्र यंसि च शिशीहि प्रास्युदरम् । पूषन्निह क्रतुं विदः	९	
न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि । वसूनि दस्ममीमहे	१०	

॥२१०॥ (ऋ० १।१३८।१-४)

(७२८-३१) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

प्रप्र पूषणस्तु विजातस्य शस्यते महित्वमस्य तवसो न तन्दते स्तोत्रमस्य न तन्दते ।

अर्चामि सुम्रयन्नह मन्त्यूति मयोभुवम् ।

विश्वस्य यो मन आयुयुवे मखो देव आयुयुवे मखः

१ ७२८

प्र हि त्वा पूषन्नजिरं न यामनि स्तोमैभिः कृण्व ऋणवो यथा मृध  
उष्ट्रो न पीपरो मृधः ।

हुवे यत् त्वा मयोभुवै देवं सख्याय मर्त्यैः ।

अस्माकमाङ्गवान् द्युम्निनस्कृधि वाजेषु द्युम्निनस्कृधि २  
यस्य ते पूषन्त्सख्ये विपन्यवः क्रत्वा चित् सन्तोऽवसा बुभुजिरे  
इति क्रत्वा बुभुजिरे ।

तामनु त्वा नवीयसीं नियुतं राय ईमहे ।

अहैळमान उरुशंस सरीं भव वाजैवाजे सरीं भव ३ ७३०

अस्या ऊ षु ण उप सातये भुवो ऽहैळमानो ररिवाँ अजाश्च श्रवस्यतामजाश्च ।

ओ षु त्वा ववृतीमहि स्तोमैभिर्दस्म साधुभिः ।

नहि त्वा पूषन्नतिमन्य आघृणे न ते सख्यमपह्वे ४

॥२११॥ (ऋ० ३।६२।७-९)

(७३२-३४) गायिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी । अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते ७

तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम् । वधूयुरिव योषणाम् ८

यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पूषाविता भुवत् ९

॥२१२॥ (ऋ० ६।४८।१६-१९)

(७३५-३८) शंयुर्बाह्विस्पत्यः (तृणपाणिः) १६ ककुप्, १७ सतोबृहती, १८ पुर उष्णिक्, १९ बृहती ।

आ मा पूषन्नुप द्रव शंसिषं नु ते अपिकर्ण आघृणे । अघा अर्यो अरातयः १६ ७३५

मा काकम्बीरमुद् बृहो वनस्पति मशस्तीर्वि हि नीनशः ।

मोत सरो अह एवा चन ग्रीवा आदधते वेः १७

हतैरिव तेऽवृकर्मस्तु सख्यम् । अच्छिद्रस्य दधन्वतः सुपूर्णस्य दधन्वतः १८

परो हि मर्त्यैरसिं समो देवैरुत श्रिया ।

अभि ख्यः पूषन् पृतनासु नस्त्वमवा नूनं यथा पुरा १९

॥२१३॥ (ऋ० ६।५३।१-१०)

(७३९-७७४) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री, ८ अनुष्टुप् ।

वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये । धिये पूषन्नयुजमहि १

अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयतदक्षिणम् । वामं गृहपतिं नय २ ७४०

अदि॒त्सन्तं चिदा॒घृणे	पू॒षन् दाना॑य चोदय ।	प॒णेश्चिद् वि ब्र॑दा मनः	३
वि प॒थो वाज॑सातये	चिनु॒हि वि मृ॒धो॑जहि ।	साध॑न्तामुग्र नो धियः	४
परि॑ तृन्धि प॒णीना॑—मार॒या हृद॑या कवे		अथे॑म॒सभ्यं॑ रन्धय	५
वि पू॒षन्मार॑या तुद	प॒णेरि॑च्छ हृदि प्रियम् ।	अथे॑म॒सभ्यं॑ रन्धय	६
आ रि॒ख कि॒किरा॑ कृणु	प॒णीनां॑ हृद॒या कवे॑ ।	अथे॑म॒सभ्यं॑ रन्धय	७ ७४५
यां पू॒षन् ब्रह्म॑चोर्दनी—मारां॑ विभ॒र्ष्याघृ॑णे ।			
तया॑ समस्य हृद॒य—मा रि॒ख कि॒किरा॑ कृणु			८
या ते॒ अष्टा॑ गोओ॒पशा॑ ऽऽघृ॒णे प॒शुसा॑धनी ।	तस्या॑स्ते सु॒म्नमी॑महे		९
उ॒त नो॑ गो॒षणि॑ धियं—मश्च॑सां वा॒जसा॑मुत ।	नू॒वत् कृ॑णुहि वी॒तये॑		१०

॥२१४॥ (ऋ० ६।५४।१-१०)+ गायत्री ।

सं पू॒षन् वि॒दुषा॑ नय	यो अ॒ञ्जसा॑नुशासति ।	य ए॒वेदमि॑ति ब्र॒वत्	१
समु॑ पू॒ष्णा ग॑मेमहि	यो गृ॒हो अ॑भिशासति ।	इ॒म ए॒वेति॑ च ब्र॒वत्	२ ७५०
प॒ष्णश्च॑क्रं न रि॒ष्यति॑	न को॒शोऽव॑ पद्यते ।	नो अ॑स्य व्यथते प॒विः	३
यो अ॑स्मै ह॒विषा॑विध—न्न तं पू॒षाऽपि॑ मृष्यते ।	प्र॒थमो॑ वि॒न्दते॑ वसुं		४
पू॒षा गा॑ अन्वेतु नः	पू॒षा र॑क्षत्वर्वतः ।	पू॒षा वा॑जं स॒नोतु॑ नः	५
पू॒षन्न॑नु प्र गा इ॒हि	यज॑मानस्य सु॒न्वतः॑ ।	अ॒स्माकं॑ स्तु॒वता॑मुत	६
मा॒किर्ने॑श॒न्मार्की॑ रिष—न्मार्की॑ सं शारि॑ के॒वटे॑ ।	अथारि॑ष्टा॒भिरा॑ ग॒हि		७ ७५५
शृ॒ण्वन्तं॑ पू॒षणं॑ व॒य—मि॒र्यम॑न॒ष्टवे॑दसम् ।	ई॒शानं॑ रा॒य ई॑महे		८
पू॒षन् तव॑ व्र॒ते व॒यं न॑ रि॒ष्येम॑ कदा च॒न ।	स्तो॒तार॑स्त इ॒ह स्म॑सि		९
परि॑ पू॒षा प॒रस्ता॑—द्ध॒स्तं द॑धातु दक्षिणम् ।	पु॒न॑र्नो न॒ष्टमा॑जतु		१०

॥२१५॥ (ऋ० ६।५५।१-६)

ए॒हि वां वि॑मुचो नपा—दाघृ॒णे सं स॑चावहै ।	र॒थी॒क्रित॑स्य नो भव	१
र॒थी॒तमं॑ क॒पदि॑नु—मी॒शानं॑ राधसो महः ।	रा॒यः स॑खायमीमहे	२ ७६०
रा॒यो धारा॑स्याघृ॒णे वसो॑ रा॒शिर॑जाश्च ।	धी॒वतो॑धीवतः सखा	३
पू॒षणं॑ न्व॒वृजा॑श्च—मु॒प॑ स्तोषाम वा॒जिन॑म् ।	स्व॒सुर्यो॑ जा॒र उ॒च्यते॑	४
मा॒तुदि॑धिषुम॒ब्रवं॑ स्वसु॒र्जारः॑ शृ॒णोतु॑ नः ।	भ्रा॒तेन्द्र॑स्य सखा मम	५
आजा॑सः पू॒षणं॑ रथे निशृ॒म्भास्ते॑ ज॒न॒श्रिय॑म् ।	दे॒वं व॑हन्तु वि॒भ्रतः॑	६ ७६४

॥२१६॥ (ऋ० ६।५६।१-६) गायत्री, ६ अनुष्टुप् ।

य ए॒नमा॒दिदे॑शति	कर॒म्भादि॑तिं पू॒षण॑म् । न ते॒न दे॒व आ॒दिशे॑	१	७६५
उ॒त घा॒ स र॒थीत॑मः	स॒ख्या स॒त्पति॑र्युजा । इन्द्रो॑ वृ॒त्राणि॑ जिघ्रते	२	
उ॒तादः॑ प॒रुषे॑ ग॒वि	सूर॑श्चक्रं हि॒रण्य॑यम् । न्यै॒रयद् र॒थीत॑मः	३	
यदु॒घ त्वा॑ पुरु॒ष्टुत्	ब्र॒वाम॑ दस्र॒ मन्तु॑मः । तत् सु॒ नो म॑न्म साधय	४	
इ॒मं च॑ नो ग॒वेष॑णं	सा॒तये॑ सीषधो ग॒णम् । आ॒रात् पू॒षन्न॑सि श्रुतः	५	
आ ते॑ स्व॒स्तिमी॑ मह	आ॒रेअ॑घामुपा॒वसु॑म् । अ॒घा च॑ स॒र्वता॑तये॒ श्वश्च॑ स॒र्वता॑तये॒ ६	७७०	

॥२१७॥ (ऋ० ६।५८।१-४) × त्रिष्टुप्, २ जगती ।

शु॒क्रं ते॑ अ॒न्यद् य॑ज॒तं ते॑ अ॒न्यद् वि॒षु॒रूपे॑ अ॒ह॒नी द्यौरि॑वासि ।		
वि॒श्वा हि॑ मा॒या अ॒वसि॑ स्वधा॒वो भ॒द्रा ते॑ पू॒षन्नि॒ह रा॒तिर॑स्तु	१	
अ॒जाश्चः॑ प॒शुपा॑ वा॒जप॑स्त्यो धियं॒जिन्वो॑ भु॒वने॑ वि॒श्चे अ॑र्पितः ।		
अष्टा॑ पू॒षा शि॑थिरामु॒द्वरी॑वृजत् स॒ंच॒क्षाणो॑ भु॒वना॑ दे॒व ई॑यते	२	
यास्ते॑ पू॒षन्ना॒वो अ॒न्तः स॑मु॒द्रे हि॒रण्य॑यी॒न्तरि॑क्षे च॒रन्ति॑ ।		
ताभि॑र्या॒सि दू॒त्यां सूर्य॑स्य॒ कामे॑न कृत॒ श्रव॑ इ॒च्छमा॑नः	३	
पू॒षा सु॒वन्धु॑र्दिव आ पृथि॒व्या इ॒ळस्प॑तिर्मि॒घवा॑ दु॒स्सर्व॑र्चाः ।		
यं दे॒वासो॑ अ॒र्ददुः॑ सूर्या॒यै कामे॑न कृतं त॒वसं॑ स्व॒ञ्चम्	४	

॥२१८॥ (ऋ० १०।१७।३-६) +

(७७५-७८) देवश्रवा यामायनः । त्रिष्टुप् ।

पू॒षा त्वे॒तश्च॑र्या॒वय॑तु प्र वि॒द्रा—न॑नष्टपशु॒र्भुवन॑स्य गो॒पाः ।		
स त्वै॒तेभ्यः॑ परि॑ ददत् पितृ॒भ्यो ऽग्नि॑दे॒वेभ्यः॑ सु॒विदा॑त्रिये॒भ्यः	३	७७५
आयु॑र्वि॒श्वायुः॑ परि॑ पा॒सति॑ त्वा पू॒षा त्वा॑ पातु प्र॒पथे॑ पुरस्तात् ।		
यत्रा॑सते सु॒कृतो॑ यत्र ते य॒यु—स्तत्र॑ त्वा दे॒वः स॑वि॒ता द॑धातु	४	
पू॒षेमा॑ आ॒शा अनु॑ वेद॒ सर्वाः॑ सो अ॒स्माँ अ॑भयतमेन नेषत् ।		
स्व॒स्तिदा॑ आघृ॒णिः सर्व॑वी॒रो ऽप्र॑यु॒च्छन् पुर॑ ए॒तु प्र॒जान॑न्	५	
प्र॒पथे॑ प॒थाम॑जनिष्ट पू॒षा प्र॒पथे॑ दि॒वः प्र॒पथे॑ पृथि॒व्याः ।		
उ॒भे अ॒भि प्रि॒यत॑मे स॒धस्थे॑ आ च॒ परा॑ च च॒रति॑ प्र॒जान॑न्	६	७७८

× ऋ० ६, ५८, १=सा० ७५ ।

+ ऋ० १०, १७, ५-६; ३-४=अथर्व० ७, ९, १-२; १८, २, ५४-५५ ।

॥२१९॥ ( ऋ० १०।२६।१-९ )

(७७९-८७) विमद् पेन्द्रः प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकुद्रा । अनुष्टुप्; १,४ उष्णिक् ।

प्र ह्यच्छां मनीषाः स्पार्हा यन्ति नियुतः । प्र दुस्ता नियुद्रथः पूषा अविष्टु माहिः १  
 यस्य त्यन्महित्वं वाताप्यमयं जनः । विप्र आ वैसद्वीतिभिश्चिकेत सुष्टुतीनाम् २ ७८०  
 स वेद सुष्टुतीनामिन्दुर्न पूषा वृषा । अभि प्सुरः प्रुषायति व्रजं न आ प्रुषायति ३  
 मंसीमहि त्वा वयमस्माकं देव पूषन् । मतीनां च साधनं विप्राणां चाध्वम् ४  
 प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो रथानाम् । ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावत्सखः ५  
 आधीषमाणायाः पतिः शुचायाश्च शुचस्य च ।  
 वासोवायोऽवीनामा वासांसि मर्मजत् ६  
 इनो वाजानां पतिरिनः पुष्टीनां सखा । प्र इमश्रु हर्यतो दूधोद् वि वृथा यो अदाभ्यः ७ ७८५  
 आ ते रथस्य पूषन्नजा धुरं ववृत्युः । विश्वस्यार्थिनः सखा सनोजा अनपच्युतः ८  
 अस्माकमूर्जा रथं पूषा अविष्टु माहिः । सुवद् वाजानां वृध इमं नः शृणवद्ववम् ९

॥२२०॥ [७८८] (वा० य० ३४।४२)×

पथस्पथः परिपति वचस्या कामेन कृतो अभ्यानडर्कम् ।

स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियं सीषधाति प्र पूषा ४२

॥२२१॥ [द्वै० (आयुर्वेद० १७६५-६७) मन्त्राः द्रष्टव्याः ।]

पूषा-सहचारी देवगणः ।

(१) मरुतः, पूषा, बृहस्पतिः, अग्निः ।

॥२२२॥ (अथर्व० ७।३।१)

(७८९) ब्रह्मा । पथ्यापङ्क्तिः ।

सं मां सिञ्चन्तु मरुतः सं पूषा सं बृहस्पतिः ।

सं मायमग्निः सिञ्चतु प्रजयां च धनेन च दीर्घमायुः कृणोतु मे १

(२) अग्निः, सोमः, पूषा ।

॥२२३॥ (अथर्व० १६।१।२)

(७९०) यमः । आर्च्युष्णिक् ।

तदुगिराह तदु सोम आह पूषा मां धात् सुकृतस्य लोके

२ ७९०

## [४] भगः ।

॥२२४॥ (ऋ० १।२४।५)

(७९१) आजीगर्तिः शुनःशेषः, स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । गायत्री ।

भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ५

॥२२५॥ (ऋ० ७।३८।६ उत्तरार्धः)

(७९२-९७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमुग्रो अध याति रत्नम् ६

॥२२६॥ (ऋ० ७।४१।२-६)×

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।

आध्रश्चिद् यं मन्यमानस्तुरश्चिद् राजा चिद् यं भगं भूक्षीत्याह २

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।

भग प्र णो जनय गोभिरश्चैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ३

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्वाम् ।

उतोदिता मघवन्तसूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ४ ७९५

भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।

तं त्वा भग सर्व इजोहवीति स नो भग पुरएता भवेह ५

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदार्य ।

अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वंहन्तु ६

॥२२७॥ (अथर्व० २।३०।५)

(७९८) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

एयमगन् पतिकामा जनिकामोऽहमार्गमम् ।

अश्वः कर्निकदुद् यथा भगेनाहं सहागमम् ५

॥२२८॥ (अथर्व० २।३६।७)

(७९९) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

इदं हिरण्यं गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भगः । एते पतिभ्यस्त्वामदुः प्रतिक्रामाय वेत्तवे ७

॥२२९॥ (अथर्व० ५।२६।९)

(८००) ब्रह्मा । [एकावसाना] त्रिपदा पिपीलिकमध्या पुरउष्णिक् ।

भगो युनक्त्वाशिषो न्वस्मा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा ९ ८००

× वा० य० ३४, ३५-३९; अथर्व ३, १६, २-६



॥२३०॥ (अथर्व० ६।१२९।१-३)

(८०१-३) अथर्वाङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भगेन मा शांशुपेन साकमिन्द्रेण मेदिना । कृणोमि भगिनं माप द्रान्त्वरातयः १  
येन वृक्षाँ अभ्यर्भवो भगेन वर्चसा सह । तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः २  
यो अन्धो यः पुनःसरो भगो वृक्षेष्वार्हितः । तेन मा भगिनं कृण्वप द्रान्त्वरातयः ३

॥२३१॥ (अथर्व० १४।१।५०-५१,५३,६०)

(८०४-७) सूर्या सावित्री । ५०,५३ त्रिष्टुप्, ५१ अनुष्टुप्, ६० पराऽनुष्टुप् ।

गृह्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः ।

भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गाहंपत्याय देवाः

५०

भगस्ते हस्तमग्रहीत् सविता हस्तमग्रहीत् ।

पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तव

५१

८०५

त्वष्टा वासो व्यदिधाच्छुभे कं बृहस्पतेः प्रशिपा कवीनाम् ।

तेनेमां नारीं सविता भगश्च सूर्यामित्र परि धत्तां प्रजयां

५३

भगस्ततश्च चतुरः पादान् भगस्ततश्च चत्वार्युष्पलानि ।

त्वष्टा पिपेश मध्यतोऽनु वर्धन्तसा नो अस्तु सुमङ्गली

६०

भग-सहचारी-देवगणः ।

(१) अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः ।

॥२३२॥ (अथर्व० ६।४।२)

(८०८) अथर्वा । प्रस्तारपङ्क्तिः ।

अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।

अप तस्य द्वेषो गमेदाभिहुतो यावयच्छत्रुमन्तितम्

२

(२) धाता, अर्यमा, भगः, अश्विनौ ।

॥२३३॥ (अथर्व० १४।२।१३)

(८०९) सूर्या सावित्री । त्रिष्टुप् ।

शिवा नारीयमस्तमागन्निमं धाता लोकमस्यै दिदेश ।

तामर्यमा भगो अश्विनोभा प्रजापतिः प्रजयां वर्धयन्तु

१३

८०९

## [ ५ ] अर्यमा ।

॥२३४॥ ( अथर्व० ६।६०।१-३ )

( ८१०-१२ ) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

अर्यमा यात्यर्यमा पुरस्ताद् विषितस्तुपः । अस्या इच्छन्नग्नौ पतिमुत जायामजानये १ ८१०

अश्रमदियमर्यमन्न्यासां समनं यती । अङ्गो न्वर्यिमन्नस्या अन्याः समनमार्यति २

धाता दाषार पृथिवीं धाता द्यामुत सूर्यम् ।

धाताऽस्या अग्नौ पतिं दधातु प्रतिकाम्यम् ३

॥२३५॥ ( अथर्व० ११।६।४ )

( ८१३ ) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो अश्विना ब्रह्मणस्पतिम् ।

अर्यमा नाम यो देवस्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः ४

॥२३६॥ ( अथर्व० १३।४।४ )

( ८१४-१६ ) ब्रह्मा । प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः ।

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ४

अर्यमन्-सहचारी-देवगणः ।

## ( १ ) अर्यमा, पूषा, बृहस्पतिः, इन्द्रः ।

॥२३७॥ ( अथर्व० ३।१४।२ ) अनुष्टुप् ।

सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।

समिन्द्रो यो धनंजयो मरिचि पुष्यत यदसु २ ८१५

## ( २ ) मित्रः, वरुणः, त्वष्टा, अर्यमा, महादेवः ।

॥२३८॥ ( अथर्व० २।७।७ ) त्रिपदा पिपालिकमध्या निचृद्रायत्री ।

मित्रश्च वरुणश्चासौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणीं महादेवो वाहू ७

## ( ३ ) अर्यमा, भगः, बृहस्पतिः, देवीः ।

॥२३९॥ ( अथर्व० ३।२०।३ )

( ८१७ ) वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

प्र णो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः ।

प्र देवीः प्रोत सूनृता रयि देवी दधातु मे ३ ८१७



## (७) विष्णुः ।

॥२४०॥ ( ऋ० १।२२।१६-२१)+

(८१८-२३) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

अतो देवा अचन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः	१६
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूहमस्य पांसुरे	१७
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन्	१८ ८२०
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा	१९
तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । द्विवीच चक्षुराततम्	२०
तद् विप्रासो विपन्ववो जागृवांसः सर्मिन्धते । विष्णोर्यत् परमं पदम्	२१

॥२४१॥ ( ऋ० १।१५४।१-६) :

(८२४-३७) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।	
यो अस्कंभायुदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः	१
प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।	
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे—ष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा	२ ८२५
प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे ।	
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थ—मेको विममे त्रिभिरित् पदेभिः	३
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदा—न्यक्षीयमाणा स्वधया मदान्ति ।	
य उ त्रिधातुं पृथिवीमुत द्या—मेको दाधार भुवनानि विश्वा	४
तदस्य प्रियमभि पार्थो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदान्ति ।	
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः	५
ता वां वास्तून्युश्मसि गर्मध्ये यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।	
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि	६

॥२४२॥ ( ऋ० १।१५५।४-६ ) जगती ।

तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसी—नस्यं त्रातुरंवृकस्य मीळ्हुषः ।

यः पार्थिवानि त्रिभिरिद् विगामभि—रुरु कर्मिष्टोरुगायाय जीवसे ४ ८३०

+ ऋ० १।२२।१७-२१ = वा० य० ५, ६५; ३४, ४३-४४; ६, ४-५; १३, ३३; अथर्व० ७, २६, ४-७; सा० २२२, १६६९-७४ ।

\* ऋ० १।१५४।१-६ = वा० य० ५, १८.२०; ६, ३; अथर्व० ७ २६।१-२, ३ (प्रथमचरणः) ।

द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशौ ऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति ।  
 तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतथन्तः पतत्रिणः ५  
 चतुर्भिः साकं नवति च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीरवीविपत् ।  
 बृहच्छरीरो विमिमान् ऋक्भिर्गुवाकुमारः प्रत्येत्याहवम् ६

॥२४३॥ (ऋ० १।१५६।१-५)

भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः ।  
 अधा ते विष्णो विदुषा चिदध्व्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता १  
 यः पूर्वार्यं वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति ।  
 यो जातमस्य महतो महि ब्रवत् सेदु श्रवोभिर्युज्यं चिदुभ्यसत् २  
 तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन ।  
 आस्यं जानन्तो नाम चिद् विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ३ ८३५  
 तमस्य राजा वरुणस्तमश्चिना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः ।  
 दाधार दक्षमुत्तममहर्विदं व्रजं च विष्णुः सखिवाँ अपोर्णते ४  
 आ यो विवायं सचथाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृतरः ।  
 वेधा अजिन्वत् त्रिषधस्थ आर्यं मृतस्य भागे यजमानमार्भजत् ५

॥२४४॥ (ऋ० ७।९१।१-३,७)+

(८३८-४७) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परो माध्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्रुवन्ति ।  
 उभे ते विन्न रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से १  
 न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिन्नः परमन्तमाप ।  
 उदस्तन्ना नार्कमृष्वं बृहन्तं दाधर्थं प्राचीं ककुभं पृथिव्याः २  
 इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या ।  
 व्यस्तन्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थं पृथिवीमभितो मयूखैः ३  
 वषट् ते विष्णवांस आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम् ।  
 वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ ८४१

॥२४५॥ (ऋ० ७।१००।१-६)

नू मर्तो दयते सनिष्यन् यो विष्णव उरुगायाय दाशत् ।  
 प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नर्यमाविवासात् १  
 त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्त्या मप्रयुतामेवयावो मतिं दाः ।  
 पचो यथा नः सुवितस्य भूरे रश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः २  
 त्रिदेवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा ।  
 प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम ३  
 वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् ।  
 ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार ४ ८४५  
 प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट नामा ऽर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान् ।  
 तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके ५  
 किमित् ते विष्णो परिचक्ष्ये भूत् प्र यद् ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि ।  
 मा वपो असदप गूह एतद् यदन्यरूपः समिथे बभूथ ६

॥२४६॥ (८४८-६०) (वा० य० १।२७,३०)

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि जागतेन  
 त्वा छन्दसा परिगृह्णामि ।

सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पर्यस्वती च २७  
 अदित्यै रास्नासि विष्णोर्विष्णोऽस्यूर्जे त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि ।  
 अग्नेर्जिह्वासि सुहृद्वेभ्यो धाम्ने धाम्ने मे भव यजुषे यजुषे ३०

॥२४७॥ (वा० य० २।६,८,२५)

ध्रुवा असदन्नतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां  
 यज्ञन्यम् ६ ८५०  
 अङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णो  
 स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वर आस्थात् ८  
 दिवि विष्णुर्व्यक्रंस्त जागतेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च  
 वयं द्विष्मोऽन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रंस्त त्रैष्टुभेन छन्दसा ततो निर्भक्तो  
 योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रंस्त गायत्रेण  
 छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः २५ ८५२

॥२४८॥ ( वा० य० ५।१, १९, २१, २३-२५, ३८ ) ×

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वातिथेरातिथ्यमसि विष्णवे  
त्वा इयेनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाऽग्रये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा १  
दिवो वा विष्ण उत वा पृथिन्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।

उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद् विष्णवे त्वा १९  
विष्णो रराटमसि विष्णोः शप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि ।

वैष्णवमसि विष्णवे त्वा २१ ८५५

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्टयो यममात्यो  
निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखा-  
नेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सद्धुर्यमसद्धुर्निचखानेदमहं तं  
वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि २३  
स्वराडसि सपत्नहा संत्रराडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा २४

रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि  
वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणो वां  
वलगहना उपदधाभि वैष्णवी रक्षोहणो वां वलगहनो पर्युहामि वैष्णवी  
वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ २५

उरु विष्णो विक्रमस्वो क्षयाय नम्कृधि ।

घृतं घृतयोने पिव प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा ३८

॥२४९॥ ( वा० य० ८।१ )

उपयामर्गहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्ण उरुगायैष ते सोमस्त × रक्षस्व मा त्वा दभन् १ ८९०

॥२५०॥ ( अथर्व० ७।२६।१-३, ८ )

विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।

यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः १

प्र तद् विष्णुं स्तवते वीर्याणि मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।

परावत आ जगम्यात् परस्याः २ ८६२

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवन्नानि विश्वा ।

उरु विष्णो वि क्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि ।

घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर

३

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्या महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।

हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसर्वैराप्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात्

८

॥२५१॥ (अथर्व० १०।५।२५-३५)

(८६५-७५) कौशिकः । ऽयवसाना पट्पदा यथाक्षरं शक्यतिशकरी ।

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्नितेजाः ।

पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भजामो योरेऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।

स मा जीवीत् तं प्राणो जहात

२५ ८६५

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽन्तरिक्षसंशितो वायुतेजाः ।

अन्तरिक्षमनु वि क्रमेऽहमन्तरिक्षात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो०

२६

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यतेजाः ।

दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात

२७

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा दिक्संशितो मनस्तेजाः ।

दिशोऽनु वि क्रमेऽहं दिग्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो०

२८

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाऽऽशासंशितो वाततेजाः ।

आशा अनु वि क्रमेऽहमाशाभ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो०

२९

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा ऋक्संशितः सामतेजाः ।

ऋचोऽनु वि क्रमेऽहमृग्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात

३० ८७०

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा यज्ञसंशितो ब्रह्मतेजाः ।

यज्ञमनु वि क्रमेऽहं यज्ञात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात

३१

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहौषधीसंशितः सोमतेजाः ।

ओषधीरनु वि क्रमेऽहमोषधीभ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो०

३२

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहाप्सुसंशितो वरुणतेजाः ।

अपोऽनु वि क्रमेऽहमद्भ्यस्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात

३३

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा कृषिसंशितोऽन्नतेजाः ।

कृषिमनु वि क्रमेऽहं कृष्यास्तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात

३४ ८७४

विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा प्राणसंशितः पुरुषतेजाः ।

प्राणमनु वि क्रमेऽहं प्राणात् तं निर्भजामो० । स मा जीवीत् तं प्राणो जहात् ३५ ८७५  
विष्णु-सहचारी-देवगणः ।

### (१) विष्णु-त्वष्ट-प्रजापति-धातारः ।

॥२५२॥ (ऋ० १०।१८४।१)+

(८७६) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु ।

आ सिञ्चतु प्रजापति-र्धाता गर्भं दधातु ते १

### (२) विष्णुर्वरुणश्च ।

॥२५३॥ (८७७) (वा० य० ८।५९)×

ययोरोजसा स्कभिता रजाऽसि वीर्येभिर्वीरतमा शर्विष्ठा ।

या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णुं अगन्वरुणा पूर्वहूतौ ५९

॥२५४॥ (अथर्व० ७।२५।२)

(८७८) मेधातिथिः । त्रिष्टुप् ।

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते प्र चानति वि च चष्टे शचीभिः ।

पुरा देवस्य धर्मणा सहोभिर्विष्णुमगन्वरुणं पूर्वहूतिः २

### (८) विवस्वान् ।

॥२५५॥ (८७९) (वा० य० २२।३०)

विवस्वते स्वाहा ३०

॥२५६॥ (अथर्व० ६।११६।१-३)\*

(८८०-८२) जाटिकायनः । जगती, २ त्रिष्टुप् ।

यद् ग्रामं चक्रुर्निखनन्तो अग्रे कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया ।

वैवस्वते राजनि तज्जुहोम्यथ यज्ञियं मधुमदस्तु नोऽन्नम् १ ८८०

वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं मधुभागो मधुना सं सृजाति ।

मातुर्यदेन इषितं न आगन् यद् वा पितापर्राद्धो जिहीडे २

यदीदं मातुर्यादिं वा पितुर्नः परि भ्रातुः पुत्राच्चेतस एन आगन् ।

यावन्तो अस्मान् पितरः सचन्ते तेषां सर्वेषां शिवो अस्तु मन्युः ३ ८८२



+ अथर्व० ५।२५।५; × अथर्व० ७।२५।१; \* दै० [आयुर्वेद०] २०५६

दै० [अदितिः०] १०



## (९) संवत्सरः कालः ।

॥२५७॥ ( ऋ० १।१६४।४८ )

(८८३) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

द्वादश प्रथयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।  
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवो ऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः ४८

॥२५८॥ [८८४-८६] ( वा० य० २१।२८ )

संवत्सराय स्वाहा २८

॥२५९॥ ( वा० य० २७।४५ )

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि ।  
उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते  
कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्तां संवत्सरस्ते कल्पताम् ।

प्रेत्या एत्यै सं चाञ्च प्र च सारय ।

सुपर्णचिदासि तथा देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ४५ ८८५

॥२६०॥ ( वा० य० ३०।१५ )

संवत्सराय पर्यायिणी परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सराया-  
तिष्कद्वरी वत्सराय विजर्जरां संवत्सराय पलिकनीम् १५

॥२६१॥ ( अथर्व० ३।१०।८ )

(८८६-८९) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

आयमगन्तसंवत्सरः पतिरेकाष्टके तव ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ८

॥२६२॥ ( अथर्व० ४।१५।१३ ) x

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।

वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः १३

॥२६३॥ ( अथर्व० ११।७।१८ )

समृद्धिरोज आकूतिः क्षत्रं राष्ट्रं षडुर्व्यः ।

संवत्सरोऽभ्युच्छिष्ट इडां प्रैषा ग्रहां हविः १८

॥२६४॥ ( अथर्व० १५।३।१ ) पिपीलिकमध्या गायत्री ।

स संवत्सरमूर्ध्वोऽतिष्ठत् तं देवा अंब्रुवन् व्रात्य किं नु तिष्ठसीति १ ८९०

॥२६५॥ (अथर्व० ११।५।२०)

(८९१) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

ओषधयो भूतभव्यमहोरात्रे वनस्पतिः ।  
संवत्सरः सहर्तुभिस्ते जाता ब्रह्मचारिणः

२०

॥२६६॥ (अथर्व० १९।५।११-१०)

(८९२-९०६) भृगुः । अनुष्टुप्; १-४ त्रिष्टुप्; ५ निचृत् पुरस्ताद्बृहती ।

कालो अश्वो वहति सप्तारश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।

तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा

१

सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभौरमृतं न्वक्षः ।

स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः

२

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः ।

स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमिन्

३

स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्येत् ।

पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वै नान्यत् परमास्ति तेजः

४

८९५

कालोऽमूं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरुत् ।

काले ह भूतं भव्यं चेपितं ह वि तिष्ठते

५

कालो भूतिमसृजत् काले तपति सूर्यः ।

काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति

६

काले मर्नः काले प्राणः काले नाम समाहितम् ।

कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः

७

काले तर्पः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम् ।

कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पिताऽऽसीत् प्रजापतेः

८

तेनेपितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम् ।

कालो ह ब्रह्म भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम्

९

कालः प्रजा असृजत् कालो अग्रं प्रजापतिम् ।

स्वयंभूः कश्यपः कालात् तर्पः कालादजायत

१०

९०१

॥२६७॥ (अथर्व० १९।५४।१-५)

अनुष्टुप्, २ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; ५ त्र्यवसाना षट्पदा विराडितिः ।

कालादापः समभवन् कालाद् ब्रह्म तपो दिशः ।	
कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः	१
कालेन वारतः पवते कालेन पृथिवी मही । द्यौर्मही काल आहिता	२
कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत् पुरा ।	
कालाद्वचः समभवन् यजुः कालादजायत	३
कालो यज्ञं समैरयद् देवेभ्यो भागमक्षितम् ।	
काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः	४ ९०५
कालेऽयमङ्गिरा देवोऽथर्वा चार्धि तिष्ठतः ।	
इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्यांश्च लोकान् विधृतीश्च पुण्याः ।	
सर्वील्लोकानभिजित्य ब्रह्मणा कालः स ईयते परमो नु देवः	५

### (१०) ऋतवः ।

॥२६८॥ (ऋ० १।१५।१-१२)+

(९०७-१८) मेधातिथिः काण्वः । [ऋतुदेवताः= १ इन्द्रः, २ मरुतः, ३ त्वष्टा, ४ अग्निः, ५ इन्द्रः, ६ मित्रावरुणौ, ७-१० द्रविणोदाः, ११ अश्विनौ, १२ अग्निः] । गायत्री ।

इन्द्र सोमं पिबं ऋतुना ऽऽ त्वां विशन्त्वन्देवः । मत्सरासस्तदौकसः	१
मरुतः पिबन्त ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन । यूयं हि ष्ठा सुदानवः	२
अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिबं ऋतुना । त्वं हि रन्तधा अंसि	३
अग्ने देवां इहा वह सादया योनिषु त्रिषु । परिं भूष पिबं ऋतुना	४ ९१०
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिवा सोममूर्तूरुं । तवेद्वि सख्यमस्तृतम्	५
युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळभम् । ऋतुना यज्ञमाशथे	६
द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे । यज्ञेषु देवमीळते	७
द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्विरे । देवेषु ता वनामहे	८
द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत । नेष्टाद्वतुभिरिष्यत	९
यत् त्वां तुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे । अर्धं स्मा नो द्वादिर्भव	१० ९१६

अश्विना पिबंतं मधु दीर्घग्री शुचित्रता । ऋतुना यज्ञवाहसा ११  
गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरंसि । देवान् देवयते यज १२

॥२६९॥ (ऋ० २।३६।१-६)।

(९१९-३०) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । [ऋतुदेवताः-१ इन्द्रो मधुश्च, २ मरुतो माधवश्च, ३ त्वष्टा शुक्रश्च, ४ अग्निः शुचिश्च, ५ इन्द्रो नभश्च, ६ मित्रावरुणौ नभस्यश्च । जगती ।

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ गा अपो ऽधुक्षन्त्सीमविभिरद्रिभिर्नरः ।  
पिबेन्द्र स्वाहा प्रहृतं वर्षदकृतं होत्रादा सोमं प्रथमो य ईशिषे १  
यज्ञैः संमिश्राः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्—र्यामच्छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत ।  
आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः २ ९२०  
अमेव नः सुहवा आ हि गन्तं नि बर्हिषि सदतना रणिष्ठन ।  
अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसु—स्त्वष्टदेवेभिर्जनिभिः सुमद्रणः ३  
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चो—शन् होतनिषदा योनिषु त्रिषु ।  
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिवाशीध्रात् तव भागस्यं तृष्णुहि ४  
एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः ।  
तुभ्यं सुतो मधवन् तुभ्यमाभृत—स्त्वमस्य ब्राह्मणादा तुपत् पिब ५  
जुषेथाँ यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूर्या अनु ।  
अच्छा राजाना नम एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु ६

॥२७०॥ (अथर्व० २।३७।१-६)×

[ऋतुदेवताः-१-४ द्रविणोदा ऋतवश्च, ५ अश्विनौ, ६ अग्निः ऋतुश्च ]

मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसो ऽध्वर्यवः स पूर्णा वष्ट्यासिचम् ।  
तस्मा एतं भरत तद्रशो द्वादि—होत्रात् सोमं द्रविणोदुः पिबं ऋतुभिः १ ९२५  
यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो द्वादियो नाम पत्यते ।  
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात् सोमं द्रविणोदुः पिबं ऋतुभिः २  
मेघन्तु ते वह्नयो येभिरियसे ऽरिषण्यन् वीळ्यस्वा वनस्पते ।  
आयूषा धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्ट्रात् सोमं द्रविणोदुः पिबं ऋतुभिः ३  
अपाद्दोत्रादुत पोत्रादमत्तो—त नेष्ट्रादंजुषत प्रयो हितम् ।  
तुरीयं पात्रममृक्तममर्त्यं द्रविणोदाः पिबतु द्राविणोदुसः ४ ९२८

अर्वाश्वमेघ यरथं नृवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम् ।  
 पूङ्क्त हवींषि मधुना हि कं गतमथा सोमं पिबतं वाजिनीवस्र ५  
 जोष्यमे समिधं जोष्याहुतिं जोषि ब्रह्म जन्यं जोषि सुष्टुतिम् ।  
 विश्वेभिर्विश्वाँ ऋतुना वसो मह उशन् देवाँ उशतः पायया हविः ६ ९३०

॥२७१॥ [९३१-४८] (वा० य० ७।३०)

उपयामगृहीतोऽसि मधवे त्वोपयामगृहीतोऽसि माधवाय त्वोपयामगृहीतोऽसि  
 शुक्राय त्वोपयामगृहीतोऽसि शुचये त्वोपयामगृहीतोऽसि नभसे त्वोपयाम-  
 गृहीतोऽसि नभस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसिषे त्वोपयामगृहीतोऽस्यूर्जे त्वोप-  
 यामगृहीतोऽसि सहसे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसि  
 तपसे त्वोपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोऽस्यहसस्पतये त्वा ३०

॥२७२॥ (वा० य० १३।२५)

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तःश्रेष्ठोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी  
 कल्पन्तामाप ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।  
 ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।  
 वासन्तिकावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तथा  
 देवतयाङ्गिरस्वद् भ्रुवे सीदतम् २५

॥२७३॥ ( वा० य० १४।६, १५-१६, २७, २९)

शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू अग्नेरन्तः० ।०। ग्रैष्मावृतू अभिकल्पमाना० ६  
 नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू अग्नेरन्तः० ।०। वार्षिकावृतू अभिकल्पमाना० १५  
 इषश्चोर्जश्च शारदावृतू अग्नेरन्तः० ।०। शारदावृतू अभिकल्पमाना० १६ ९३५  
 सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू अग्नेरन्तः० ।०। हैमन्तिकावृतू अभिकल्पमाना० २७  
 एकादशभिस्त्वत ऋतवोऽसृज्यन्तार्त्वा अधिपतय आसन् २९

॥२७४॥ (वा० य० १५।५७)

तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू अग्नेरन्तः० ।०। शैशिरावृतू अभिकल्पमाना० ५७

॥२७५॥ ( वा० य० १७।३ )

ऋतव स्थ ऋतावृधे ऋतुष्ठा स्थ ऋतावृधेः ।  
 घृतश्रुतो मधुश्रुतो विराजो नाम कामदुघा अक्षीयमाणाः ३ ९३९

॥२७६॥ (वा० य० २१।२३-२८)

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः ।	
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः	२३ ९४०
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः ।	
बृहता यशसा बलं हविरिन्द्रे वयो दधुः	२४
वर्षाभिर्ऋतुनादित्या स्तोमं सप्तदशे स्तुताः ।	
वैरूपेण विश्वौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः	२५
शारदेन ऋतुना देवा एकविंश ऋभवं स्तुताः ।	
वैराजेन श्रिया श्रियं हविरिन्द्रे वयो दधुः	२६
हेमन्तेन ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुतं स्तुताः ।	
बलेन शकवरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः	२७
शैशिरिणं ऋतुना देवास्त्रयस्त्रिंशुः स्तुताः ।	
सत्येन रेवतीः क्षत्रं हविरिन्द्रे वयो दधुः	२८ ९४५

॥२७७॥ (वा० य० २२।२८)

ऋतुभ्यः स्वाहाऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा	२८
----------------------------------	----

॥२७८॥ (वा० य० २३।४०)

ऋतवस्त ऋतुथा पर्वं शमितारो वि शासतु ।	
संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा	४०

॥२७९॥ (वा० य० २६।१४)

ऋतवस्ते यज्ञं वि तन्वन्तु मासां रक्षन्तु ते हविः ।	
संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परि पातु नः	१४

॥२८०॥ (अथर्व० ३।१०।९)

(९४९-६४) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

ऋतून् यज ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।	
समाः संवत्सरान् मासान् भूतस्य पतये यजे	९

॥२८१॥ (अथर्व० ५।२८।१३) पुरजष्णिक् ।

ऋतुभिर्घातवैरायुषे वर्चसे त्वा ।	
संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृणमसि	१३ ९५०

॥२८२॥ (अथर्व० ११।३।१७) आसुर्यनुष्टुप् ।

ऋतवः प॒क्तारं आ॒र्तवाः स॒र्मिन्धते १७

॥२८३॥ (अथर्व० १५।३।४) द्विपदाऽऽचर्युष्णिक् ।

तस्या॑ ग्री॒ष्मश्च॑ व॒सन्तश्च॑ द्वौ पा॒दावास्तां॑ श॒रच्च॑ व॒र्षाश्च॑ द्वौ ४

॥२८४॥ (अथर्व० १५।४।२-३,५-६,८-९,११-१२,१४-१५,१७-१८)

वा॒सन्तौ मा॒सौ गो॒प्तारा॒वकुर्वन्॑ बृ॒हच्च॑ रथं॒तरं चानु॑ष्ठा॒तारौ २

वा॒सन्तावे॒नं मा॒सौ प्रा॒च्या दि॒शो गो॑पायतो बृ॒हच्च॑ रथं॒तरं चानु॑ तिष्ठतो

य ए॒वं वेद॑ ३

ग्री॒ष्मौ मा॒सौ गो॒प्तारा॒वकुर्वन्॑ य॒ज्ञाय॒ज्ञियं॑ च वामदे॒व्यं चानु॑ष्ठा॒तारौ ५ ९५५

ग्री॒ष्मावे॒नं मा॒सौ दक्षि॑णाया दि॒शो गो॑पायतो य॒ज्ञाय॒ज्ञियं॑ च वामदे॒व्यं

चानु॑ तिष्ठतो य ए॒वं वेद॑ ६

वा॒र्षिकौ मा॒सौ गो॒प्तारा॒वकुर्वन्॑ वै॒रूपं॑ च॒ वैरा॒जं चानु॑ष्ठा॒तारौ ८

वा॒र्षिका॒वेनं॑ मा॒सौ प्र॒तीच्या॑ दि॒शो गो॑पायतो वै॒रूपं॑ च॒ वैरा॒जं चानु॑ तिष्ठतो

य ए॒वं वेद॑ ९

शा॒रदौ मा॒सौ गो॒प्तारा॒वकुर्वन्॑ छ॒यैतं॑ च॒ नौध॒सं चानु॑ष्ठा॒तारौ ११

शा॒रदा॒वेनं॑ मा॒सावु॒दीक्षा॑ दि॒शो गो॑पायतः इ॒यैतं॑ च॒ नौध॒सं चानु॑ तिष्ठतो

य ए॒वं वेद॑ १२ ९६०

है॒मनौ मा॒सौ गो॒प्तारा॒वकुर्वन्॑ भूमिं॑ चा॒ग्निं चानु॑ष्ठा॒तारौ १४

है॒मना॒वेनं॑ मा॒सौ ध्रु॒वाया॑ दि॒शो गो॑पायतो भूमिंश्चा॒ग्निश्चानु॑ तिष्ठतो य ए॒वं वेद॑ १५

शै॒शिरौ मा॒सौ गो॒प्तारा॒वकुर्वन्॑ दि॒वं चा॒दित्यं॑ चानु॑ष्ठा॒तारौ १७

शै॒शिरा॒वेनं॑ मा॒साव॒ध्वाया॑ दि॒शो गो॑पायतो द्यौश्चा॒दित्यश्चानु॑ तिष्ठतो य ए॒वं वेद॑ १८

॥२८५॥ (अथर्व० १०।६।१८)

(९६५) बृहस्पतिः । अनुष्टुप् ।

ऋत॒वस्त॒मव॒धत्ता॒र्तवास्त॒मव॒धत् । सं॒वत्स॒रस्तं॑ ब॒द्ध्वा स॒र्वं भू॒तं वि॑ रक्षति १८

॥२८६॥ (अथर्व० ११।४।४)

(९६६) भार्गवो वैदर्भिः । अनुष्टुप् ।

यत् प्रा॒ण ऋ॒तावा॒गतेऽभि॑क्रन्दत्यो॒र्षधीः॑ ।

स॒र्वं त॒दा प्र॑ मो॒दते॒ यत् किं॑ च॒ भूम्या॒मभि॑

॥२८७॥ (अथर्व० ११।६।१७,२२)

(१६७-६८) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

ऋतून् ब्रूम ऋतुपतीनार्तवानुत हायनान् ।  
 समाः संवत्सरान् मासांस्ते नो मृञ्चन्त्वंहंसः १७  
 या देवीः पञ्च प्रदिशो ये देवा द्वादशर्तवः ।  
 संवत्सरस्य ये दंष्ट्रास्ते नः सन्तु सदा शिवाः । २२

॥२८८॥ (अथर्व० ११।१।३६)

(१६९) अथर्वा । विपरीत पादलक्ष्मा पङ्क्तिः ।

ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः ।  
 ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे पृथिवि नो दुहाताम् ३६  
 ॥२८९॥ (अथर्व० १६।८।२१)  
 (१७०) यमः । आसुरी पङ्क्तिः ।

स आर्तवानां पाशान्मा मौचि २१ १७०

॥२९०॥ (अथर्व० १७।१।२९)

(१७१) ब्रह्मा । त्रिष्टुप् ।

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैर्भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम् ।  
 मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युरन्तर्दधेऽहं संलिलेन वाचः २९

## (११) चन्द्रमाः ।×

॥२९१॥ (ऋ० १०।८।५।१९)॥

(१७२) सावित्री सूर्या ऋषिका । त्रिष्टुप् ।

नवोनवो भवति जायमानो ऽह्नां केतुरुषसाभित्यग्रम् ।  
 भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन् प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः १९  
 ॥२९२॥ (ऋ० १०।९०।१३)+  
 (१७३) नारायणः । अनुष्टुप् ।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

मुखादिन्द्रश्चाभिश्च प्राणाद् वायुरजायत १३

॥२९३॥ [१७४-७९] (वा० य० १।२८)

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरश्निन्नुदादार्य पृथिवीं जीवदानुम् ।  
 यामैर्यश्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तामु धीरासो अनुदिश्य यजन्ते २८ १७४

× दै० [आयुर्वेद०] ६-७, ३९, ६८, ७१, ८८, ९१, ११६, १२३, १५४, २३२, २४५, २६८, २७४, ३१२ सूक्तानि द्रष्टव्यानि ।

॥ अथर्व० ७, ८१, २; १४, १, २४; + अथर्व० १९, ६, ७ ।

दै० [अदितिः०] ११



॥२९४॥

चन्द्राय स्वाहा (वा० य० २१।२८)॥ चन्द्रमसे किलासम् । (वा० य० ३०।२१) २८ ९७५

॥२९५॥ (वा० य० २३।४,१०)

एष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा ।

यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा संवभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा ४  
सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।

अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत् १०

॥२९६॥ (वा० य० ३१।१२)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखाद्भिरजायत १२

॥२९७॥ (वा० य० ३३।९०)

चन्द्रमा अप्सवुन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

रथि पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कर्निकदत् ९०

॥२९८॥ (अथर्व० १।३।४)

(९८०-९०) अथर्वी । पथ्यापङ्क्तिः ।

विद्वा शरस्य पितरं चन्द्रं शतवृष्यम् ।

तेना ते तन्वेरे शं करं पृथिव्यां ते निपेचनं बृहिष्टे अस्तु बालिति ४ ९८०

॥२९९॥ (अथर्व० २।२१।१-५)

(एकावसानम्) १-४ निचृद्विपमा गायत्री, ५ भुरिग्विपमा ।

चन्द्र यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः १

चन्द्र यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २

चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ३

चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ४

चन्द्र यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ५

॥३००॥ (अथर्व० ५।२४।१०) चतुष्पदातिशकरी ।

चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावतु ।

अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां

चिन्त्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा १० ९८६

॥३०१॥ (अथर्व० ६।७।१-२) अनुष्टुप् ।

तेन भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः ।

ज्यायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसेनाभि वर्धताम् १

अभि वर्धतां पर्यसाभि राष्ट्रेण वर्धताम् । रय्या महस्र्वर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ २

॥३०२॥ (अथर्व० १८।४।८९) पञ्चपदा पथ्यापङ्क्तिः । X

चन्द्रमा अप्व१न्तरा सुपर्णो धावते द्विवि ।

न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ८९

॥३०३॥ (अथर्व० १९।१९।४) अनुष्टुप् ।

चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि षः ।

तामा विशत तां प्र विशत सा वुः शर्म च वर्म च यच्छत ४ ९९०

॥३०४॥ (अथर्व० ११।६।७)

(९९१) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादिहोरात्रे अथो उषाः ।

सोमो मा देवो मुञ्चतु यमाहुश्चन्द्रमा इति ७

॥३०५॥ (अथर्व० १९।२७।२, ५)

(९९२-९३) भृग्वङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः ।

माद्भयस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु २

घृतेन त्वा समुक्षाम्यन्न आज्येन वर्धयन् ।

अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दभन् ५

॥३०६॥ (अथर्व० १९।४३।४)

(९९४) ब्रह्मा । इयवसाना शङ्कुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तर्पसा सह । चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे ४

चन्द्रमा-सहचारी-देवगणः ।

(१) सूर्यः चन्द्रश्च ।

॥३०७॥ (अथर्व० २।१५।३)

(९९५-९६) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च न विभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा विभेः ३ ९९५



॥३१३॥ ( ऋ० १०।१०।९ )

(१००९) वैवस्वतो यमः ऋषिः । त्रिष्टुप् ।

रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत् सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।  
 दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य विभृयादजामि ९

॥३१४॥ ( ऋ० १०।१२७।१-८ )

(१००३-१०१०) कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी । गायत्री ।

रात्री व्यंख्यदायती पुरुत्रा देव्युक्षभिः । विश्वा अधि श्रियोऽधित १  
 ओर्षेप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्रतः । ज्योतिषा बाधते तमः २  
 निरु स्वसारमस्कृतो पसं देव्यायती । अपेदु हासते तमः ३ १००५  
 सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्षमहि । वृक्षे न वसति वयः ४  
 नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः । नि श्येनासश्चिदुर्थिनः ५  
 यावया वृक्यं वृकं यवयं स्तेनमूर्ध्ने । अथा नः सुतरा भव ६  
 उप मा पेपिशत् तमः कृष्णं व्यक्तमास्थित । उप ऋणेव यातय ७  
 उप ते गा ह्वाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ८ १०१०

॥३१५॥ [१०११-१६] (वा० य० ३।१८)

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय १८

॥३१६॥ ( वा० य० २३।१२ )\*

घौरासीत् पूर्वचित्तिरश्च आसीद् बृहद्रयः ।  
 अघिरासीत् पिलिप्पिला रात्रिरासीत् पिशङ्गिला १२

॥३१७॥ (वा० य० २४।२५ )

अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचापूरहोरत्रयोः सन्धिभ्यो  
 जतूर्मासेभ्यो दात्यौहान्तसंवत्सराय महतः सुपर्णान् २५

॥३१८॥ ( वा० य० ३०।२१ )

रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् २१

॥३१९॥ (वा० य० ३४।३२)\*

आ रात्रि पार्थिव रजः पितुरंग्रायि धामभिः ।  
 दिवः सदाऽसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः ३२ १०१५

	॥३२०॥ (वा० य० ३७।२१ [उत्तरार्धः])+	
रात्रिः केतुना जुषता ५ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा		२१
	॥३२१॥ (अथर्व० १।१६।१) (१०१७) चातनः । अनुष्टुप् ।	
येमावास्यां३ रात्रिमुदस्थुर्ब्राजमत्त्रिणः ।		
अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमर्षिं ब्रवत		१
	॥३२२॥ ( अथर्व० २।१५।२ ) (१०१८-१९) ब्रह्मा । त्रिपाद् गायत्री ।	
यथाहश्च रात्री च न बिभीतो न रिष्यतः । एवा मे प्राण मा बिभेः		२
	॥३२३॥ (अथर्व० १३।४।३०) प्राजापन्याऽनुष्टुप् ।	
स वै रात्र्या अजायत तस्माद् रात्रिरजायत		३०
	॥३२४॥ ( अथर्व० ५।५।१ ) (१०२०-२९) अथर्वा । अनुष्टुप् ।	
रात्री माता नभः पितार्यमा ते पितामहः ।		
सिलाची नाम वा असि सा देवानामसि स्वसा		१ १०२०
	॥३२५॥ अथर्व० १५।२।५, १३, २१, २९) द्विपदाऽऽर्ची गायत्री ।	
श्रद्धा पुंश्चली मित्रो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीपं रात्री केशा हरितौ प्रवर्तौ		
कल्मलिर्माणिः		५
उषाः पुंश्चली मन्त्रो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीपं रात्री केशा हरितौ०		१३
इरा पुंश्चली हसो माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीपं रात्री केशा हरितौ०		२१
विद्युत् पुंश्चली स्तनयित्नुर्माग्धो विज्ञानं वासोऽहरुष्णीपं रात्री केशा हरितौ०		२९
	॥३२६॥ (अथर्व० १५।१३।१, ३, ५, ७, ९) १ साम्न्युष्णिक्, ३, ५, ७ आसुरी गायत्री, ९ द्विपदानिचूद्रायत्री ।	
तद् यस्यैवं विद्वान् ब्रात्यु एकां रात्रिमर्तिथिर्गृहे वसति		१ १०२५
तद् यस्यैवं विद्वान् ब्रात्यो द्वितीयां रात्रिमर्तिथिर्गृहे वसति		३
तद् यस्यैवं विद्वान् ब्रात्यस्तृतीयां रात्रिमर्तिथिर्गृहे वसति		५
तद् यस्यैवं विद्वान् ब्रात्यश्चतुर्थीं रात्रिमर्तिथिर्गृहे वसति		७
तद् यस्यैवं विद्वान् ब्रात्योऽपरिमिता रात्रीरर्तिथिर्गृहे वसति		९ १०२९

॥३२७॥ (अथर्व० ६।१२८।२)

(१३०) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

भद्राहं नो मध्यंदिने भद्राहं सायमस्तु नः ।

भद्राहं नो अह्नां प्राता रात्री भद्राहमस्तु नः

२ १०३०

॥३२८॥ (अथर्व० १९।४७।२-९) :

(१०३१-५१) गोपथः । अनुष्टुप्; २ पञ्चपदाऽनुष्टुभर्मा पराऽतिजगती;

६ पुरस्ताद्बृहती; ७ त्र्यवसाना षट्पदा जगती ।

न यस्याः पारं ददृशे न योयुवद् विश्वमस्यां नि विशते यदेजति ।

अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रिं पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि २

ये ते रात्रि नृचक्षसो द्रष्टारो नवतिर्नव । अशीतिः सन्त्यष्टा उतो ते सप्त सप्ततिः ३

षष्टिश्च षट् च रेवति पञ्चाशत् पञ्च सुम्नयि । चत्वारश्चत्वारिंशच्च त्रयस्त्रिंशच्च वाजिनि ४

द्वौ च ते विशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः । तोभिर्नो अद्य पायुभिर्नु पाहि दुहितर्दिवः ५

रक्षा मार्किर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत ।

मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत ६ १०३५

माश्वानां भद्रे तस्करो मा नृणां यातुधान्यः ।

परमेभिः पृथिभि स्तेनो धावतु तस्करः । परेण दुत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्पतु ७

अध रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहि कृणु । हनु वृकस्य जम्भयास्तेन तं द्रुपदे जहि ८

त्वयि रात्रि वसामसि स्वपिष्यामसि जागृहि ।

गोभ्यो नः शर्म यच्छाश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः ९

॥३२९॥ (अथर्व० १९।४८।१-६)

अनुष्टुप्; १ त्रिपदाऽऽर्षी गायत्री; २ त्रिपदा विराडनुष्टुप्; ३ बृहतीगर्भाऽनुष्टुप्;

५ पथ्यापङ्क्तिः ।

अथो यानि च यस्मा ह यानि चान्तः परीणहि । तानि ते परि दद्वसि १

रात्रि मातरूपसे नः परि देहि । उषा नो अह्ने परि दद्रात्वहस्तुभ्यं विभावरि २ १०४०

यत् किं चेदं पतयति यत् किं चेदं सरीसृपम् ।

यत् किं च पर्वतायासत्वं तस्मात् त्वं रात्रि पाहि नः ३

सा पश्चात् पाहि सा पुरः सोत्तरादधरादुत ।

गोपार्य नो विभावरि स्तोतारस्त इह स्मसि ४ १०४२

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति ।  
 पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति ते नः पशुपुं जाग्रति ५  
 वेदु वै रात्रि ते नाम घृताची नाम वा असि ।  
 तां त्वां भरद्वाजो वेदु सा नो वित्तेऽधि जाग्रति ६

॥३३०॥ (अथर्व० १९।५०।१-७) अनुष्टुप् ।

अधं रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु । अक्षौ वृकंस्र निर्जेह्यास्तेन तं द्रुपदे जहि १ १०४५  
 ये ते रात्र्यनुड्वाहस्तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाशवः । तेभिर्नो अद्य पारयाति दुर्गाणि विश्वहा २  
 रात्रिरात्रिमरिष्यन्तस्तेरेम तन्वा वयम् । गम्भीरमप्लेवा इव न तरेयुररातयः ३  
 यथा शाम्याकः प्रपतन्नपवान् नानुविद्यते । एवा रात्रि प्र पातय यो अस्माँ अभ्यघायति ४  
 अप स्तेनं वासो गोअजमुत तस्करम् । अथो यो अर्वतः शिरोऽभिधाय निनीपति ५  
 यदुद्या रात्रि सुभगे विभजन्त्ययो वसु । यदेतदस्मान् भोजय यथेदुन्यानुपायसि ६ १०५०  
 उषसे नः परि देहि सर्वान् रात्र्यनागसः । उषा नो अहे आ भजादहस्तुभ्यं विभावरि ७

॥३३१॥ (अथर्व० १९।४९।१-२०)

(१०५०-६०) गोपथः, भरद्वाजश्च । अनुष्टुप्; १-५, ८ त्रिष्टुप्, ६ आस्तारपङ्क्तिः; ७ पथ्यापङ्क्तिः;  
 १० त्र्यवसाना पट्पदा जगती ।

इषिरा योषां युवतिर्दमूना रात्री देवस्य सवितुर्भगस्य ।  
 अश्वक्षभा सुहवा संभृतश्रीरा पप्रौ द्यावापृथिवी महित्वा १  
 अति विश्वान्यरुहद् गम्भीरो वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः ।  
 उशती रात्र्यनु सा भद्राभि तिष्ठते मित्र इव स्वधार्भिः २  
 वर्ये वन्दे सुभगे सुजात आजगन् रात्रिं सुमना इह स्याम् ।  
 अस्माँस्त्रायस्व नर्याणि जाता अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या ३  
 सिंहस्य रात्र्युशती पीषस्य व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ दंदे ।  
 अश्वस्य ब्रध्नं पुरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि कृणुषे विभाती ४ १०५५  
 शिवां रात्रिमनुसूर्यं च द्विमस्य माता सुहवा नो अस्तु ।  
 अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु ५  
 स्तोमस्य नो विभावरि रात्रि राजैव जोषसे ।  
 आसाम सर्ववीरा भवाम सर्ववेदसो व्युच्छन्तीरनूपसः ६ १०५७

शम्यां ह नामं दधिषे मम दिप्सन्ति ये धना ।	
रात्रीहि तानसुतपा य स्तेनो न विद्यते यत् पुनर्न विद्यते	७
भद्रासिं रात्रि चमसो न विष्टो विष्टं गोरूप युवतिर्बिम्बि ।	
चक्षुष्मती मे उशती वर्षेषि प्रति त्वं दिव्या न क्षाममुक्थाः	८
यो अद्य स्तेन आर्यत्यघायुर्मर्त्यो रिपुः ।	
रात्री तस्य प्रतीत्य प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत्	९ १०६०
प्र पादौ न यथार्यति प्र हस्तौ न यथाशेषत् ।	
यो मलिम्लरुपायति स सर्पिष्टो अपायति ।	
अपायति स्वपायति शुष्के स्थाणावपायति	१०
॥३३२॥ [१०६२-६७] (वा० य० ६।२१)	
अहोरात्रे गच्छ स्वाहा	२१
॥३३३॥ (वा० य० १४।३०)	
नवदुशभिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ताम्	३०
॥३३४॥ (वा० य० १८।२३)	
अहोरात्रे ऊर्वष्टीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्	२३
३३५॥ (वा० य० २२।२८)	
अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	२८ १०६५
॥३३६॥ (वा० य० २३।४१)	
अर्धमासाः परूँषि ते मासा आ च्छयन्तु शम्यन्तः ।	
अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टं सृदयन्तु ते	४१
॥३३७॥ (वा० य० ३१।२२)	
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।	
इष्णाभिषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण	२
॥३३८॥ (अथर्व० ६।१२८।३)	
(१०६८) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।	
अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः सूर्याचन्द्रमसाभ्याम् ।	
भद्राहमस्मर्यं राजन्छकधूम त्वं कृधि	३ १०६८



॥३३९॥ (अथर्व० १५।२।२२)

(१०६९-७३) अथर्वा । आसुरी गायत्री ।

अहश्च रात्रीं च परिष्कन्दौ मनो विपथम् २२

॥३४०॥ (अथर्व० १५।६।१७-१८) १७ आर्ची पङ्क्तिः, १८ विराड् जगती ।

तमृतवश्चातिवाश्च लोकाश्च लौक्याश्च मासांश्चार्धमासाश्चाहोरात्रे चानुव्यचलन् १७ १०७०

ऋतूनां च वै स आतिवानो च लोकानां च लौक्यानां च मासानां चार्धमासानां  
चाहोरात्रयोश्च प्रियं धाम भवति य एवं वेद १८

॥३४१॥ (अथर्व० १५।१८।४-५) आर्च्यनुष्टुप् ।

अहोरात्रे नासिके दितिश्चादितिश्च शीर्षकपाले संवत्सरः शिरः ४

अह्ना प्रत्यङ् व्रात्यो रात्र्या प्राङ् नमो व्रात्याय ५

॥३४२॥ (अथर्व० १६।८।२३)+

(१०७४) यमः । आसुरी जगती ।

सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा मोचि २४

रात्रि-सहचारी-देवगणः ।

रात्रिः, धेनुः ।

॥३४३॥ (अथर्व० ३।१०।२-४)

(१०७५-७७) २-३ अनुष्टुप्, ४ त्रिष्टुप् ।

यां देवाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमुपायतीम् ।

संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली २ १०७५

संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वा रात्र्युपास्महे ।

सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज ३

इयमेव सा या प्रथमा व्यीच्छदास्वितरासु चरति प्रविष्टा ।

महान्तो अस्यां महिमानो अन्तर्धूर्जिगाय नवगज्जनित्री ४ १०७७

॥३४४॥ (अथर्व० १०।२।६)

(१०७८) नारायणः । यामः । जगती ।

कः सप्त खानि त्रि तंतर्द शीर्षणि कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम्  
येषां पुरुत्रा विजयस्य महानि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम्

६

(१३) पूर्णिमा ।

॥३४५॥ (अथर्व० ७।८०।१-२,४)

(१०७९-८२) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ अनुष्टुप् ।

पूर्णा पश्चादुत पूर्णा पुरस्तादुन्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय ।  
तस्यां देवैः संवसन्तो महित्वा नाकस्य पृष्ठे समिषा मदेम  
वृषभं वाजिनं वयं पौर्णमासं यजामहे ।

१

स नो ददात्वर्क्षितां रयिमनुपदस्वतीम्

२ १०८०

पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीदह्नां रात्रीणामतिशर्वेषु ।

ये त्वां यज्ञैर्यज्ञिये अर्धयन्त्यमी ते नाके सुकृतः प्रविष्टाः

४

॥३४६॥ (अथर्व० १५।३६।१) साम्युष्णिक् ।

तस्य व्रात्यस्य । योऽस्य प्रथमोऽपानः सा पौर्णमासी

१

(१४) राका ।

॥३४७॥ (ऋ० २।३२।४-५)॥

(१०८३-८४) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । जगती ।

राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतुं नः सुभगा बोधतु त्मना ।

सीव्यत्वर्षः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्

४

यास्तै राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वस्त्रनि ।

ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा

५

(१५) अमावास्या ।

॥३४८॥ (अथर्व० ७।७९।१-४)

(१०८५-९१) अथर्वा । त्रिष्टुप्, १ जगती ।

यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा ।

तेना नो यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्

१

अहमेवास्म्यमावास्याश्चे मामा वसन्ति सुकृतो मयीमे ।

मयि देवा उभयै साध्याश्चेन्द्रज्येष्ठाः समगच्छन्तु सर्वे

२ १०८६

आगन् रात्रीं संगमनी वसूनामूर्जं पुष्टं वस्वाविशयन्ती ।  
 अमावास्या] ये हविषा विधेमोर्जं दुहाना पर्यसा न आगन् ३  
 अमावास्ये न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान ।  
 यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ४

॥३४९॥ (अथर्व० १५।२।१४) सास्त्री पञ्क्तिः ।

अमावास्या] च पौर्णमासी च परिष्कन्दौ मनो विपथम् १४

॥३५०॥ (अथर्व० १५।१६।३) साम्न्युष्णिक् ।

तस्य त्रात्यस्य । योऽस्य तृतीयोऽपानः सामावास्या] ३ १०९०

॥३५१॥ (अथर्व० १५।१७।९) द्विपदा सास्त्री त्रिष्टुप् ।

तस्य त्रात्यस्य । यदादित्यमभिसंविशन्त्यमावास्या] चैव तत् पौर्णमासीं च ९

### (१६) सिनीवाली ।

॥३५२॥ (ऋ० २।३२।६-७)+

(१०९२-९३) गृत्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

सिनीवाल्लि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा ।

जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिडिढ नः ६

या सुवाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुस्रवरी ।

तस्यै विश्वत्स्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन ७

॥३५३॥ (अथर्व० ७।४६।३)

(१०९४) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

या विश्वत्तीन्द्रमसि प्रतीचीं सहस्रस्तुकाभियन्तीं देवी ।

विष्णोः पत्नि तुभ्यं राता हवीषि पतिं देवि राधसे चोदयस्व ३

॥३५४॥ [१०९५] (वा० य० ११।५५) ×

संस्पृष्टां वसुंभी रुद्रैर्धरैः कर्मण्यां मृदम् ।

हस्ताभ्यां मृद्धीं कृत्वा सिनीवाली कृणोतु ताम् ५५

॥३५५॥ (अथर्व० ९।४।१४)

(१०९६) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गुदा आसन्तिसनीवालयाः सूर्यायास्त्वचमब्रुवन् ।

उत्थातुरब्रुवन् पद ऋषभं यदकल्पयन् १४ १०९६

सिनीवाली-सहचारी-देवगणः ।

(१) गुंगू-सिनीवाली-राका-सरस्वतीन्द्राणीवरुणानीः ।

॥३५६॥ ( ऋ० २।३।३ )

(१०९७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।  
या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती । इन्द्राणीमह ऊतये वरुणानीं स्वस्तये ३

(२) बृहस्पतिः, सिनीवाली, अनुमतिः ।

॥३५७॥ (अथर्व० २।२६।२)

(१०९८) सचिता । त्रिष्टुप् ।

इमं गोष्ठं पशवः सं स्रवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन् ।

सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ २

(३) सिनीवाली-सरस्वत्यश्विनः ।

॥३५८॥ (अथर्व० ५।२५।३)

(१०९९) ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।

गर्भं धेहि सिनीवाल्लि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनोभा धत्तां पुष्करस्रजा ३

(४) प्रजापतिः, अनुमतिः, सिनीवाली ।

॥३५९॥ (अथर्व० ६।११।३)

(११००) प्रजापतिः । अनुष्टुप् ।

प्रजापतिरनुमतिः सिनीवाल्युचीकल्पत् । स्रैषूयमन्यत्र दधत् पुमांसमु दधादिह ३ ११००

(५) विष्णुः, सरस्वती, सिनीवाली, भगः ।

॥३६०॥ (अथर्व० १४।२।१५,२१)

(११०१-११०२) सूर्या सावित्री । १५ भुरिक्, २१ अनुष्टुप् ।

प्रति तिष्ठ विराडसि विष्णुरिवेह सरस्वति ।

सिनीवाल्लि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् १५

शर्म वमैतदा हंरास्यै नार्या उपस्तरै । सिनीवाल्लि प्र जायतां भगस्य सुमतावसत् २१

(६) सरस्वती, सिनीवाली ।

॥३६१॥ (अथर्व० १९।३।१।०)

(११०३) सचिता । अनुष्टुप् ।

आ मे धनं सरस्वती पर्यस्फाति च धान्यम् । सिनीवाल्युपां वहादुयं चौदुम्बरो मणिः १० ११०३

## (१७) कुहूः ।

॥३६२॥ (अथर्व० ७।४७।१-२)

(११०४-११०५) अथर्वा । १ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

कुहूं देवीं सुकृतं विब्रनापसमस्मिन् यज्ञे सुहवां जोहवीमि ।

सा नो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद् ददातु धीरं शतदायमुक्थ्यम् १

कुहूर्देवानाममृतस्य पत्नी हव्यां नो अस्य हविषो जुषेत ।

शृणोतु यज्ञमुशती नो अद्य रायस्पोषं चिकितुषीं दधातु २ ११०५

## (१८) नक्षत्राणि ।

॥३६३॥ [११०६-१३] (वा० य० १४।१९)

नक्षत्राणि छन्दः

१९

॥३६४॥ (वा० य० १८।१८,४०)

नक्षत्राणि च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्

१८

तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम । ताभ्यः स्वाहा

४०

॥३६५॥ (वा० य० २२।२८)×

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा

२८

॥३६६॥ (वा० य० २३।४३)

द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते ।

सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया

४३ १११०

॥३६७॥ (वा० य० २५।९) ✓

नक्षत्राणि रूपेण

९

॥३६८॥ (वा० य० ३०।१०,२१)

प्रज्ञानाय नक्षत्रदुर्गम् ॥१०॥ नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्

२१

॥३६९॥ (अथर्व० २।२।४)

(१११४) मातृनामा । त्रिपाद्विराणनाम गायत्री ।

अत्रिये दिद्युन्नक्षत्रिये या विश्वावंसुं गन्धर्वं सचंघ्रे ।

ताभ्यो वो देवीर्नम इत् कृणोमि

४

॥३७०॥ (अथर्व० ३।७।७)

(१११५) भृग्वक्त्रिराः । अनुष्टुप् ।

अपवासे नक्षत्राणामपवास उषसांमुत । अप सत् सर्वं दुर्भूतमपं क्षेत्रियमुच्छतु

७ १११५

॥३७१॥ (अथर्व० ६।१२८।१,४)

(१११६-१७) अङ्गिराः । अनुष्टुप् ।

शकधूमं नक्षत्राणि यद् राजानमकुर्वत । भद्राहमस्मै प्रायच्छन्निदं राष्ट्रमसादिति १  
यो नो भद्राहमकरः सायं नक्तमथो दिवा । तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदा नमः ४

॥३७२॥ (अथर्व० ९।७।१५)

(१११८-१९) ब्रह्मा । साम्नी वृहती ।

विश्वव्यं चाश्वमौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम् १५

॥३७३॥ अथर्व० १३।६।२८) प्राजापत्याऽनुष्टुप् ।

तस्यामू सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह २८

॥३७४॥ (अथर्व० १०।२।२२-२३)

(११२०-२१) नारायणः । अनुष्टुप् ।

केन देवाँ अनु क्षियति केन दैवजनीर्विशः । केनेदमन्यन्नक्षत्रं केन सत् क्षत्रमुच्यते २२ ११२०  
ब्रह्म देवाँ अनु क्षियति ब्रह्म दैवजनीर्विशः ।

ब्रह्मेदमन्यन्नक्षत्रं ब्रह्म सत् क्षत्रमुच्यते २४

॥३७५॥ (अथर्व० ११।६।१०)

(११२२) शन्तातिः । अनुष्टुप् ।

दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि भूमिं यक्षाणि पर्वतान् ।

समुद्रा नद्यो विशन्तास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः १०

॥३७६॥ (अथर्व० १५।१७।४)

(११२३) अथर्वा । साम्न्युष्णिक् ।

तस्य ब्रात्यस्य । योऽस्य चतुर्थो व्यानस्तानि नक्षत्राणि ४

॥३७७॥ (अथर्व० १९।७।१-५)

(११२४-३४) गार्ग्यः । त्रिष्टुप्, ४ भुरिक् ।

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि ।

तुर्मिशं सुमतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम् १

सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ।

पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे २

पुष्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु ।

राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम् ३ ११२६

अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जा देव्युत्तरा आ वहन्तु ।  
 अभिजिन्मै रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम् ४  
 आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्रुया प्रोष्ठपदा सुशर्म ।  
 आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयि भरण्या आ वहन्तु ५

॥३७८॥ (अथर्व० १९।८।१-५,७) त्रिष्टुप्, १ विराड् जगती ।

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु ।  
 प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु १  
 अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे ।  
 योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु २ ११३०  
 स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु ।  
 सुहवमग्रे स्वस्त्यग्मर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् ३  
 अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षवम् । सर्वैर्मे रिक्तकुम्भान् परा तान् सवितः सुव ४  
 अपपापं परिक्षवं पुण्यं भक्षीमहि क्षवम् । शिवा ते पापनासिकां पुण्यगश्चाभि मेहताम् ५  
 स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु ७

नक्षत्राणि-सहचारी-देवगणः ।

(१) द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः ।

॥३७९॥ ( अथर्व० ६।१०।३ )

(११३५) शन्तातिः । साम्नी बृहती ।

दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायाधिपतये स्वाहा २ ११३५

(२) सूर्यः, चन्द्रः, नक्षत्राणि ।

॥३८०॥ (अथर्व० १५।६।५-६)

(११३६-३७) अथर्वा । ५ साम्नी त्रिष्टुप्, ६ निचृद्बृहती ।

तमृतं च सत्यं च सूर्यश्च चन्द्रश्च नक्षत्राणि चानुव्यचलन् ५  
 ऋतस्य च वै स सत्यस्य च सूर्यस्य च चन्द्रस्य च नक्षत्राणां च  
 प्रियं धाम भवति य एवं वेद ६ ११३७



# अदितेः, आदित्यानां च गुणबोधक-पदानि ।

## (१) अदितिः ।

अजरन्ती वा. य. २१,५; १२  
अदितिः (सर्वत्र)  
अनागाः वा. य. २१,७; १४  
अनेहाः वा. य. २१,६; १३  
अन्तरिक्षम् १,८९,१०; १  
अरिष्टभमेन् ८,१८,४; २  
अस्रजन्ती वा. य. २१,६-७; १३-१४  
उपस्थे यस्याः उरु अन्तरिक्षम् अ. ७,६,४; १६  
उरुव्रजः ८,६७,१२; ८  
उरुची वा. य. २१,५; १२  
ऋतस्य पत्नी वा. य. २१,५; १२  
ऋतावरी ८,२५,३; ३४९  
कृष्णाना स्योनम् वा. य. २९,४; १५  
जनाः पञ्च १,८९,१०; १  
जनित्वम् ”  
जातम् ”  
जुषाणा आ वा. य. २९,४; १५  
तुविक्षत्रा वा. य. २१,५; १२  
देवी ८,१८,४; २। ६७,१०; ६  
देवी नोः वा. य. २१,६; १३  
द्यौः १,८९,१०; १। वा. य. २१,६; १३  
नोः देवी वा. य. २१,६; १३  
पञ्चजनाः १,८९,१०; १  
पत्नी ऋतस्य वा. य. २१,५; १२

पिता १,८९,१०; १  
पुत्रः ”  
पुरुप्रिया ८,१८,४; २  
पृथिवी वा. य. २१,६; १३  
मतिः ८,१८,७; ५  
मही वा. य. ११,५६; ९। २१,५; १२। अ. ७,६,४; १६। ऋ. ८,२५,३; ३४९  
माता १,८९,१०; १। अ. ७,६,४; १६। ऋ. ८,२५,३; ३४९  
माता मित्रस्य अर्यम्णाः वरुणस्य न ८,४७,९; ८०  
माता सुव्रतानाम् वा. य. २१,५; १२  
राजपुत्रा २,२७,७; २७  
विश्वे देवाः १,८९,१०; १  
(विश्वाम्भवं आदित्याः) १,८९,१०; १  
शतारित्रा वा. य. २१,७; १४  
सजोषाः वा. य. २९,४; १५  
सुत्रामा वा. य. २१,६; १३  
सुनौः वा. य. २१,७; १४  
सु-प्रणीतिः वा. य. २१,५-६; १२-१३  
सुमृळीका ८,६७,१०; ६  
सुव्रतानां माता वा. य. २१,५; १२  
सुशर्मा वा. य. २१,५-६; १२-१३  
स्योनं कृष्णाना वा. य. २९,४; १५  
स्वरित्रा वा. य. २१,६; १३

## (२) आदित्याः ।

अग्निजिह्वाः ७,६६,१०; ५०  
अदब्धासः-ब्धाः २,२७,९; २९। ८,६७,१२; ९४।  
८,१०१,६; १०३  
अदितेः पुत्रासः ८,१८,५; ३। १०,१८५,३; १०६  
द्वै०[अदितिः०] १३

अङ्गतेनसः ८,६७,७; ९१  
अद्बुहः ८,१९,३४; ७०। ६७,१२; ९४  
अनवद्याः २,२७,२; २२  
अनिमिषाः २,२७,९; २९



अनृतद्विषः ७, ६६, १३; ५३  
 अनेहसः ८, १८, ५; ३  
 अमृताः ८, १०१, ६; १०३  
 अरिष्टः २, २७, २; २२  
 अश्वजिनाः २, २७, २; २२  
 अस्वप्रजः २, २७, ९; २९  
 आदित्याः-त्यासः वा बहुशः सर्वत्र ।  
 आशवः × ८, ४७, ६; ७७  
 उरधः २, २७, ३; २३  
 उरुचक्रयः ८, १८, ५; ३  
 उरुशंसः २, २७, ९; २९  
 ऊतयः अनेहसः ( येषाम् ) ८, ४७, १-१३; ७२ ८४  
 ऊतयः सुऊतयः ( येषाम् ) ८, ४७, १-१३; ७२ ८४  
 ऋणानि चयमानाः २, २७, ४; २४  
 ऋतजाताः ७, ६६, १३; ५३  
 ऋतनिभ्यः २, २७, १२; ३२  
 ऋत(ता)वानः २, २७, ४; २४ । ७, ६६, १३; ५३  
 ऋत(ता) वृधः ७, ६६, १०, १३; ५०, ५३  
 ऋतस्य रथ्यः ७, ६६, १२; ५२  
 क्षत्रिणाः ८, ६७, १; ८५  
 क्षितीनां मूर्धानः ८, ६७, १३; ९४  
 गम्भीराः २, २७, ३; २३  
 गोपाः विश्वस्य भुवनस्य ७, ५१, २; ३९ । २, २७, ४; २४  
 चयमानाः ऋणानि २, २७, ४; २४  
 चर्षणांसहः ८, १९, ३५; ७१  
 जगत् स्थाः धारयन्तः २, २७, ४; २४  
 तुष्टुवानाः ७, ५१, ३; ४०  
 तिस्रः भूमीः धारयन् २, २७, ८; २८  
 त्रीणि व्रतानि एषाम् २, २७, ८; २८  
 त्री रोचना दिव्या धारयन्त २, २७, ९; २९  
 त्रान् शून् धारयन् २, २७, ८; २८  
 त्रीणि विदधानि ये येमुः ७, ६६, १०; ५०  
 दक्षकृतवः ( देवाः विशेष्यम् ) वा. य. ४, ११; १६६  
 द्विसन्तः २, २७, ३; २३  
 दीर्घ(र्षा)धियः २, २७, ४; २४

देवाः ( बहुषु स्थलेषु वर्तते । )  
 देवत्राः वसवः ७, ५२, १; ४१  
 धारपूताः २, २७, २, ९; २२, २९  
 धारयन् तिस्रः भूमीः त्रीन् शून् २, २७, ८; २८  
 धारयन्त त्री रोचना दिव्या २, २७, ९; २९  
 धारयन्तः जगत् स्थाः ( च ) २, २७, ४; २४  
 नित्याः २, २७, ११; ३१  
 पन्थाः एषां अदब्धाः, अनर्वाणः, पायवः, सुगृधः ८, १८,  
 २; ५५  
 पाकत्राः ८, १८, १५; ६२  
 पुत्रासः अदितेः ८, १८, ५; २  
 पुष्टयः २, २७, ११; ३१  
 प्रचेतसः ८, ४७, ४; ७५ । ६७, १७; ९८  
 बहवः ७, ६६, १०; ५०  
 भुवनस्य गोपाः २, २७, ४; २४ । ७, ५१, २; ३९  
 भूर्माः तिस्रः धारयन् २, २७, ८; २८  
 भूर्यक्षाः २, २७, ३; २३  
 मनोजाताः ( देवाः विशेष्यम् ) वा. य. ४, ११; १६६  
 मनोयुजः ( देवाः विशेष्यम् ) वा. य. ४, ११; १६६  
 महान्तः ८, ४७, १; ७२  
 मूर्धानः क्षितीनाम् ८, ६७, १३; ९४  
 यजत्राः २, २७, १६; ३६  
 रक्षमाणाः २, २७, ४; २४  
 रथ्यः ऋतस्य ७, ६६, १२; ५२  
 राजानः २, २७, १, ३, ११; २१, २३, ३१ । ७, ६६, ११; ५१ ।  
 ८, १९, ३५; ७१  
 राजानः व्रतस्य ७, ६६, ६; ४६  
 रिशादसः ( अर्यमा ) ७, ६६, ७; ४७  
 रोचना त्रीणि धारयन्त २, २७, ९; २९  
 वरूथं, तेषां चित्रं, उक्थ्यम् ८, ६७, ३; ८७  
 वसवः ७, ५२, १; ४१ । ८, १८, १५, १७; ६२, ६४  
 विदधानि त्रीणि ये येमुः ७, ६६, १०; ५०  
 विश्ववेदसः ८, १८, ११; ५८ । ४७, ३; ७४  
 व्रतानि त्रीणि विदधे एषाम् २, २७, ८; २८  
 शुचयः २, २७, २, ९; २२, २९

सुदानवः ७, ६६, ५; ४५ । ८, ५८, १२; ५९ । १९, ३४;  
 ७० । ६७, १६; ९७  
 सुमहसः ८, १८, १८; ६५  
 सुमृत्कीकाः ८, ६७, १; ८५  
 सुशर्माणः ८, १८, ४; २  
 सूरचक्षसः ७, ६६, १०; ५०  
 सूरयः ८, १८, ४; २  
 स्थाः जगत् धारयन्तः २, २७, ४; २४  
 स्वथशासः ८, ६७, १३; ९४  
 स्वराजः ७, ६६, ६; ४६  
 हवनश्रुतः ८, ६७, ५; ८९  
 हिरण्ययाः २, २७, ९; २९

आदित्यः ।

अधे समवर्तत विश्वकर्मणः रसात् वा. य. ३१, १७; ११७  
 अदब्धः अ. १७, १, १२; १४५  
 अदब्धेन ब्रह्मणा वाश्रधानः अ. १७, १, १२; १४५  
 अद्भ्यः सम्भृतः वा. य. ३१, १७; ११७  
 अनर्भाशुः १, १५२, ५; २२६  
 अनधुः " " "  
 अरुणः वा. य. १७, ६०; ११५  
 अरुषः वा. य. २३, ५; ११६  
 अर्वा १, १५२, ५; २२६  
 अरमा वा. य. १७, ६०; ११५  
 अस्तं इतः अ. १७, १, २३; १५६  
 " एण्यन् " "  
 " यन् " "  
 आदित्यः अ. १७, १, २४-२५; १५७-१५८ । अ. ४, ३९,  
 ५-६; १७८-१७९ । अ. ५, २१, १०; १८०  
 आरोहन् त्रिविधम् अ. १७, १, १०; १४३  
 इन्द्रः + अ. १७, १, १-५, ९-१४, १८; १३४-३८, १४२-  
 ४७, १५१  
 ईज्यः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 उक्षा समुद्रः वा. य. १७, ६०; ११५  
 उद् आयन् अ. १७, १, २२; १५५

उद् इतः अ. १७, १, २२; १५५  
 " यन् " "  
 उपनिषद्यमानः न १, १५२, ४; २२५  
 ऊर्ध्वसानुः १, १५२, ५; २२६  
 ऋषिभिः सहस्कृतः वा. य. ३३, ८३; १२०  
 कनिकदत् १, १५२, ५; २२६  
 कनीनां जारः १, १५२, ४; २२५  
 गर्भः ( मित्राचक्षणयोः ) १, १५२, ३; २२४  
 गृणानः दिवः अ. १७, १, १०; १४३  
 गोजितः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 चरन् वा. य. २३, ५; ११६  
 जातः १, १५२, ५; २२६  
 जारः कनीनाम् १, १५२, ४; २२५  
 तनूः ते, अप्सु, पृथिव्यां, अन्तः अग्नी,  
 पवमाने स्वर्विदि अ. १७, १, १३; १४६  
 तन्वा अन्तरिक्षं व्यापिथ " "  
 त्रिविधं आरोहन् अ. १७, १, १०; १४३  
 दिवः गृणानः " "  
 दिवः मध्ये निहितः वा. य. १७, ६०; ११५  
 द्रप्सः वा. य. १३, ५; ११६  
 यौः धेनुः तस्याः वत्सः अ. ४, ३९, ६; १७९  
 नभसी विभासि शोचिषा अ. १७, १, १६; १४५  
 निहितः दिवः मध्ये वा. य. १७, ६०; ११५  
 पुष्करुः वा. य. ३३, ८१; ११८  
 पुरुहूतः अ. १७, १, ११; १४४  
 पृथिव्यै संभृतः वा. य. ३१, १७; ११७  
 पृथ्विः वा. य. १७, ६०; ११५  
 प्रजापतिः अ. १७, १, १८; १५१  
 प्रयन् १, १५२, ४; २२५  
 प्रियं धाम मित्रस्य वरुणस्य १, १५२, ४; २२५  
 प्रियधामा अ. १७, १, १०; १४३  
 बाधमानः सुदिने अ. १७, १, १७; १५०  
 ब्रह्मः वा. य. २३, ५; ११६  
 ब्रह्म वा. य. १३, ३; ११२

+ अत्र अथर्व० १७, १, १-५, ९-१४, १८; १३४-३८, १४२-४७, १५१ मन्त्रान्तर्गतानि विद्यमानानि पदानि इन्द्ररूपेण वर्तमानस्य आदित्यस्य ।

ब्रह्मणा वावृधानः अदब्धेन अ. १७,१,१२; १४५  
 भ्राजः अ १७,१,२०; १५३  
 महेन्द्रः अ. १७,१,१८; १५१  
 रसात् सम्मृतः वा. य. ३१,१७, ११७  
 रुचि. अ. १७,१,२२; १५४  
 रोचः " " "  
 रोचन्ते रोचना दिवि वा. य. २३,५; ११६  
 वसानः अनवपृष्णा वितता १,१५२,४; २२५  
 वावृधानः ब्रह्मणा अदब्धेन १७,१,१२; १४५  
 विद्वान् अ. १७,१,१६; १४९  
 विभासि नभसी शोचिषा अ. १७,१,१६; १४९  
 विमानः वा. य. १७,५९; ११४  
 विराट् अ. १७,१,२२-२३; १५५-१५६  
 विवस्वान् वा. य. ८,५; १११  
 विश्वजित् अ. १७,१,११; १४४  
 विषासहिः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८

विष्णुः + अ. १७,१,६-१९; १३९-१५२  
 शुक्रः अ. १७,१,२०; १५३  
 शोचिषा नभसी विभासि अ. १७,१,१६; १४९  
 सन्धनाजितः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८  
 समुद्रः वा. य. १७,६०; ११५  
 समुद्र इव पप्रथे वा. य. ३३,८३; १२०  
 सम्राट् अ. १७,१,२२-२३; १५५-१५६  
 सर्ववित् अ. १७,१,११; १४४  
 सहमानः अ. १७,१,१-५; १३४-१३८  
 सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३,८३; १२०  
 सहीयान् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८  
 सहोजितः " " "  
 सासहानः " " "  
 सुपर्णः वा. य. १७,६०; ११५  
 स्वराट् अ. १७,१,२२-२३; १५५-१५६  
 स्वर्जित् अ. १७,१,१-५; १३४-१३८

### अदितेः, आदित्यानां च उपमासूची ।

सुतीर्थं अर्चतः यथा ८,४७,११; ८२ तथा नः सुगमं अनु नेषथ ।  
 अथी इव २,२७,१६; ३६ तान् रथेन अति येषम् ।  
 यथा दिवि आदित्याय अ.४,३९,५; १७८ एवा मह्यं सं नमः ।  
 कूलात् इव स्पशः अधि ८,४७,११, ८२ अव हि ख्यत ।  
 म ता पुत्रं यथा उपस्थे वा. य. ११,५७; १० उखा अमि ।  
 बन्धात् बद्ध इव ८,६७,१८; ९९ यत् बन्धात् नः मुमोचति ।  
 स्तेनं बद्ध इव ८,६७,१४; ९५ वृकाणा आस्नान् नः मुमोचत ।  
 यथा त्वं भ्राजता भ्राजः अ.१७ १,२०; १५३ एवाहं... भ्राज्याम

युध्यन्त इव वर्मम् ८,४७,८; ७९ युष्मे देवाः अपि स्मसि ।  
 यथा रथ्यः ८,४७,५; ७६ तथा नः दुर्गाणि अघा परि वृणजन् ।  
 यथा त्वं रुच्या रोचः अ.१७,१,२१; १५४ एवाहं पशुभिः रुचिषीया  
 वयो यथा पक्षा उपरि ८,४७,२; ७३ अस्मे शर्म विमोचत ।  
 वयः न पक्षाः ८,४७,३; ७४ तत् शर्म अस्मे अधि वि यन्तन ।  
 श्वश्रा इव २,२७,५; २५ युष्माकं प्रणीतौ दुरितानि परि वृज्याम् ।  
 समुद्र इव वा. य. ३३,८३; १२० पप्रथे ।

### आदित्य-मन्त्रान्तर्गता अन्यदेवताः ।

अंशः २,२७,१; २१  
 आभिः ७,५१,३; ४० । अ. १६,४,४,७; १३०,१३३ ।  
 १७,१,३०; १६३ । वा. य. ४,११; १६६  
 अदितिः २,२७,७,१४; १७,३४ । ७,५१,२; ३९ ।  
 ६६,६; ४६ । ८,६७,१४; ९५  
 अर्यमा २,२७,१-२,५-८; २१-२२,२५-२८ । ७,५१, २;  
 ३९ । ६६,४,७,११-१२; ४४,४७,५१-५२ । ८,१८,  
 ३,२१; ५६,६८ । १९,३५; ७१ । ४७,९; ८० । ६७,  
 २,४; ८६,८८ । १०,१८५,१; १०४

अग्निना ७,५१,३; ४० । ८,१८, १०; ६०  
 आपः अथ. १६ ४,६; १३२  
 आदित्यः वा. य. ८,३,५; १०९, १११ । १३, ३, ५; ११२-११३ ।  
 १७,५२-६०; ११४-११५ । २३, ५; ११६ । ३१, १७;  
 ११७ । ३३, ८२, ८३; ११८, १२० । अथ. १७, १, १७, १५०  
 इन्द्रः २,२७,१४; ३४ । ७,५१,३; ४० । ८,१२,२०;  
 ६७ । ४७,५; ७६ । ६७,८; ९२ । वा. य. ८,२; १०८ ।  
 ३३, ८२; ११२ । अथ. १७, १, १-३० । १३४-१६३  
 उषसः अथ. १६, ४, ६; १३२ । १७, १, ३०; १६३

+ अस्यां सूच्यां अथर्वं १७,१,६-१९, १३९-५२ मन्त्रान्तर्गतानि पदानि विष्णोःमकस्य आदित्यस्य सन्ति ।

ऋभवः ७,५१,३; ४०  
 दक्षः २,२७,१; २१ । (वरुणविशेषणं वा ।)  
 यावापृथिवी २,२७,१५; ३५ । ७,५२,१; ४१ । ८,१८,  
 १६; ६३  
 धीः देवी वा. य. ४,११; १६६  
 पर्वताः अथ. १७,१,३०; १६३  
 पिता ७,५३,३; ४३ । [ वरुणः प्रजापतिर्वा ]  
 पितरः अथ. २,१२,४; १६७  
 बृहस्पतिः अथ. १६,३,५; १२५  
 भगः २,२७,१; २१ । ७,६६,४; ४४  
 मरुतः ७,५१,३; ४० । ८,१८,२१; ६८  
 मातरिश्वा अथ. १६,३,४; १२४  
 मित्रः २,२७,१-२,६-८, १४; २१-२२, २६-२८, ३४ ।  
 ७,५१,१; ३९ । ५२,२; ४२ । ६६,४,७,९,११-१२;  
 ४४,४७,४९,५१-५२ । ८,१८,३, २०, २९, ५६, ६७-६८ ।  
 १९, ३५; ७१ । ४७,१,९; ७२, ८० । ६७,२,४; ८६,  
 ८८ । १०,१८१,१; १०४  
 मित्रावरुणौ २,२७,५; २५ । ७,५२,१; ४१ । अथ. १६,  
 ४,७; १३३

यमः अथ. १६,४,४; १३०  
 रुद्राः अथ. २०,१३५,९; १८३  
 वरुणः २,२७,१ २, ६-८, १०, १४, १७; २१-२२, २६-  
 २८, ३०, ३४, ३७ । ७,५१, २; ३९ । ५२, २; ४२ ।  
 ७, ६६, ४, ९, ११-१२; ४७, ४९, ५१-५२ । ८, १८, ३,  
 २०-२१; ५६, ६७-६८ । १९, ३५; ७१ । ४७, १, ९;  
 ७२, ८० । ६७, २, ४; ८६, ८८ । १०, १८५, १; १४४ ।  
 अथ. १९, १८, ४; १६४  
 वसवः ७,५२, १; ४१ । ८, १८, १५, १७; ६२, ६४ ।  
 [ देवतान्तरं विशेषणं वा ]  
 वायुः अथ. १६, ४, ४; १३०  
 विश्वे देवाः ७, ५१, २; ४० । ५२, ३; ४३  
 विष्णुः वा. य. ८, १; १०७ । अथ. १७, १, ७-१९, २४;  
 १४०-१५२, १५७  
 सरस्वती अथ. १६, ४, ४; १३०  
 सविता ७, ६६, ४; ४४ । ८, १८, ३; ५६  
 सूर्यः अथ. १६, ४, ४; १३० । १७, १, ६-८, ३०;  
 १३९-१४१, १६३

### (३) मित्रः ।

अनागाः ७, ६६, ४; ४४  
 अभिष्टिज्ञाताः ३, ५९, ८; १९२  
 आदित्यः ३, ५९, २, ५; १८६, १८९  
 उपसयः नमसा ३, ५९, ५; १८९  
 ऋतावान् ७, ६२, ३; ५६०  
 गृणते सुशेवः ३, ५९, ५; १८९  
 चर्षणीधृत् ३, ५९, ६; १९०  
 चन्द्रः ७, ६२, ३; ५६०  
 देवः ३, ५९, ६; १९०  
 नमसा उपसयः ३, ५९, ५; १८९  
 नमस्यः ३, ५९, ४; १८८  
 पन्यतमः ३, ५९, ५; १८९  
 प्रियः १, १५१, १; १८४  
 भ्रुवाणः ३, ५९, १; १८५  
 महान् ३, ५९, ५; १८९  
 याज्ञियः १, १५१, १; १८४ । ३, ५९, ४; १८८

यातयज्जनः ३, ५९, ५; १८९  
 राजा ३, ५९, ४; १८८  
 विश्वपतिः ८, २५, १६; ३५९  
 वेधा ३, ५९, ४; १८८  
 सप्रथाः ३, ५९, ७; १९१  
 सुक्षत्रः ३, ५९, ४; १८८  
 सुशेवः ३, ५९, ४-५; १८८-८९

### मित्रावरुणौ ।

अकविहस्ता ५, ६२, ६; २४४  
 अक्ष्णश्चित् गातुवित्तरा ८, २५, ९; ३५५  
 अदब्धा ७, ६०, ५; ३१३  
 अदाभ्या ७, ६६, १७; ३४४  
 अदितिः युवोः माता १०, १३२, ६; ३७६  
 अदितेः पुत्रा ७, ६०, ५; ३१३  
 अद्भुतकृत् ५, ७०, २; २८९ ।  
 अद्भुता ५, ६६, ४; २७१

अद्भुहा ५, ६८, ४; २८२ । ७, ६६, १८; ३४५  
 अद्भुहाणा ५, ७०, २; २८९ । सा. ९८६, ३९७  
 अनभिद्भुहा २, ४१, ५; २३४  
 अदृतस्य सेतू ७, ६५, ३; ३३८  
 अपसं दधाते १, २, ९; १९८  
 अपराजौ १०, १३२, ७; ३७७  
 अमूले ७, ६१, ५; ३२५  
 अर्चनानसं विभ्रतौ ५, ६४, ७; २६१  
 अर्या ७, ६५, २; ३३७  
 अर्वाश्वा १, १३७, ३; २१२  
 अर्वाः ( अवतोः ) ६, ६७, ११; ३०८  
 असमा ६, ६७, १; २९८  
 असुरा १, १५१, ४; २१६ । ८, २५, ४; ३५०  
 असुरा देवानाम् ७, ६५, २; ३३७  
 अस्तुतः वां कः ? ५, ६७, ५; २७८  
 अस्मत्रा १, १३७, १, ३; २१०, २१२  
 अस्मयू १, १५१, ७; २१९  
 अहणीयमाना ५, ६२, ६; २४४  
 आतुजी ७, ६६, १८; ३४५  
 आदित्या १, १३६, ३; २०५ । २, ४१, ६; २३५ । ५, ६७, १;  
 २७४ । ६९, ४; २८७ । ७, ६०, ४; ३१२  
 आशाथे ऋतुं बृहन्तम् १, २, ८; १९७  
 इन्द्रा वा. य. १०, १६; ३७९  
 इषस्पती ५, ६८, ५; २८३  
 ईयचक्षमा ५, ६६, ६; २७३  
 ईशाना ५, ७१, २; २९३  
 उग्रा-ग्रः ५, ६३, ३; २५० । १, १५२, २; २२३  
 उपस्तुता यज्ञेयज्ञे १, १३६, १; २०३.  
 उरुक्षया १, २, ९; १९८  
 उरुचक्रयः ५, ६७, ४; २७७  
 उरुचक्षसा ८, १०१, २; ३६९  
 उरुशांसा ३, ६२, १७; २३७  
 ऋता ६, ६७, ४; ३०१  
 ऋतस्य गोपा ५, ६३, १; २४८ । ७, ६४, २; ३३२  
 ऋतस्य ज्योतिषस्पती १, २३, ५; २००  
 ऋतपेशम् ( वरुणः ) ५, ६६, १; २६८

ऋत(ता)वाना १, १३६, ४; २०६ । १५१, ४, ८; २१६, २२० ।  
 ५, ६५, २; २६३ । ६७, ४; २७७ । ८, २५, १, ४, ७-८;  
 ३४७, ३५०, ३५३-५४  
 ऋत(ता)वृधा १, २, ८; १९७ । २३, ५; २०० । २, ४१, ४,  
 २३३ । ३, ६२, १८; २३८ । ५, ६५, २; २६३ । ७, ६६, १९,  
 ३४६  
 ऋतस्पृशः ५, ६७, ४; २७७  
 ऋतस्पृशा १, २, ८; १९७  
 कवी १, २, ९; १९८  
 काव्या ५, ६६, ४; २७१  
 ऋतुं बृहन्तं आशाथे १, २, ८; १९७  
 क्षत्रिया ७, ६४, २; ३३२ । ८, २५, ८; ३५४  
 क्षयन्ता दिवि पृथिव्यां रजसः ७, ६४, १; ३३१  
 गातुवितरा अक्ष्णश्चित् ८, २५, ९; ३५५  
 गृणाना जमदग्निना ३, ६२, १८; २३८  
 गोपा ऋतस्य ५, ६३, १; २४८ । ७, ६४, २; ३३२  
 गोपा विश्वस्य ८, २५, १; ३४७  
 घृतयोनी ५, ६८, २; २८०  
 घृतस्त्रू १, १५३, १; २२९  
 घृताचीं धियं साधन्ता १, २, ७; १९६  
 घृताक्षौ ६, ६७, ८; ३०५  
 घृतासुती १, १३६, १; २०३ । २, ४१, ५; २३५  
 घोरा ६, ६७, ४; ३०१  
 चर्षणीनां धर्तारः ५, ६७, २; २७५  
 चिकित्वांताः ७, ६०, ७; ३१५  
 चिकेतति नः १, ४३, ३; २०२  
 चेतारः अदृतस्य भूरेः ७, ६०, ५; ३१३  
 जगन्वांसा परि बहोः ५, ६४, १; २५५  
 जज्ञ ना १, २३, ४; १९९  
 जनेजने ऋतवाना ५, ६५, २; २६३  
 जागृवांमः दिवेदिवे १, १३६, ३; २०५  
 जायमाना ६, ६७, ४; ३०१  
 जीरदानू ५, ६२, ३; २४१ । ७, ६४, २; ३३२  
 जुषाणा ७, ६६, १९; ३४६  
 ज्येष्ठतमा विश्वेषां सताम् ६, ६७, १; २९८  
 ज्योतिषस्पती ऋतस्य १, २३, ५; २००  
 अयसानौ ५, ६६, ५; २७२

तनया ८, २५, २; ३४८  
तना ८, २५, २; ३४८  
तनूपा ७, ६६, ३; ३४३  
तुरासः ७, ६०, ८; ३६६  
तुविजाता १, २, ९; १२८ । ७, ६६, १; ३४१  
दक्षं दधाते १, २, ९; १२८  
दक्षपितरा ७, ६६, २; ३४२  
दक्षस्य सूनू ८, २५, ५; ३५१  
दधाते दक्षं अपसम् १, २, ९; १२८  
दर्शतः ५, ६५, १; २६२  
दानुनस्पती १, १३६, ३; २०५ । २, ४१, ६; २३५  
दिवस्पती ५, ६३, ३; २५०  
दिवस्पृशा १, १३७, १; २२०  
दिव्या ५, ६९, ४; २८७  
दीर्घश्रुत् ( वरुणः ) ८, २५, १७; २६०  
दीर्घश्रुत्तमा ५, ६५, २; २६३ । ८, १०१, २; ३६९  
दुरत्येत् ७, ६५, ३; ३३८  
दूळभासः ७, ६०, ६; ३१४  
देवः ७, ६४, ३; ३३३  
देवा-वौ १, १५२, ७; २२८ । ५, ६६, १; २६८ । ६७, १;  
२७४ । ६८, २, ४; २८०, २८२ । ७, ६०, १२; ३२० ।  
६१, १, ७; ३२१, ३२७ । ६६, २; ३४२ । ८, २५, १, ४;  
३४७, ३५०  
द्युमत् ७, ६६, १७; ३४४  
द्वा ६, ६७, १; २९८  
धर्तारो चर्षणीनाम् ५, ६७, २; २७५  
धारयत्क्षिती १०, १३२, २; ३७२  
धरयथः त्री रोचना त्रीन् धून् त्रीणि रजांसि ५, ६९, १; २८४  
धर्तारो रजसः रोचनस्य पार्थिवस्य ५, ६९, ४; २८७  
धृतदक्षा ५, ६२, ५; २४३  
धृतव्रता ८, २५, २, ८; ३४८, ३५४ । १, १५, ६; ९१२  
ध्रुवक्षेमा ५, ७२, २; २९६  
नपाता महः शवसः ८, २५, ५; ३५१  
नमसा हूयमाना ६, ६७, ३; ३००  
नमसे हिता ८, २५, ७; ३५३  
नमस्वन्ता ५, ६२, ५; २४३

नमोवृधा ३, ६२, १७; २३७  
नरा १, १५१, ९; २२१ । ५, ६४, ७; २६१ । ८, १०१, २;  
३६९  
निचिरा १, १३६, १; २०३; ८, २५, ९; ३५५  
निमिषन्ता ८, २५, ९; ३५५  
पती दिवः पृथिव्याः ५, ६३, ३; २५०  
परस्पा सुकृते ५, ६२, ६; २४४  
पीवसा १, १५२, १; २२२  
पूतदक्षा १, २, ७; १२६ । ७, ६५, १; ३३६  
पूतदक्षसा १, २३, ४; १९९ । ५, ६६, ४; २७१ । ८, २५, १;  
३४७  
पूतबन्धू ६, ६७, ४; ३०१  
पूर्वा ५, ६५, ३; २६४  
पृथिव्याः पती ५, ६३, ३; २५०  
प्रचेतसा ५, ७१, २; २९३  
प्रथमा १, १५१, ८; २२०  
प्रमहसा ७, ६६, २, ३४२ । ८, २५, ३; ३४९  
प्रयाः ( वरुणः ) ५, ६६, १; २६८  
प्रशास्ता देवेषु ५, ६८, २; २८०  
प्रशास्तारौ वा. य. १६, २१; ३८०  
प्राविता १, २३, ६; २०१  
प्रियतमः [ मित्रः ] ७, ६२, ४; ३२८  
प्रिया ६, ६७, २-३; २९९-३००  
वर्हणा ५, ७१, १; २९२  
विभ्रतौ अर्चनानसम् ५, ६४, ७; २६१  
भूरिपादौ ७, ६५, ३; ३३८  
महान्ता ६, ६७, ४; ३०१ । ८, २५, ४; ३५०  
मघवानः ८, ६०, ११; ३१९  
महिक्षत्रौ ५, ६८, १; २७२  
महित्वा ६, ६७, ३; ३००  
महे [ वरुणाय ] ५, ६६, १; २६८  
माता युवोः अदितिः १०, १३२, ६; ३७६  
मित्रराजाना ५, ६२, ३; २४१  
मित्रावरुणा मित्रः वरुणः च वा ( प्रायशः सर्वत्र )  
मीढवान्-द्वांसः १, १३६, ६; २०८ । ८, २५, १४; ३५७  
मृळ्यन्तौ स्वादिष्टम् १, १३६, १; २०३  
यज्ञिया ८, २५, १; ३४७

यमिष्ठा ६, ६७, १ २२८  
यातयज्जनः-ना १, १३६, ३; २०५ । ५, ७२, २; २९६  
युवाना ७, ६२, ५; ३२९  
रक्षमाणा ७, ६१, ३; ३२३  
रक्षमाणा उर्वाम् ५, ६२, ५; २४३  
रक्षमाणा व्रतं अजुर्यम् ५, ६९, १; २८४  
रथ्या ८, २५, २; ३४८  
राजा ( अर्यमा ) ७, ६४, १; ३३१  
राजानः ८, १०१, ५; ४०१  
राजाना १, १३६, ४; २०६ । १, १३७, १; २१० । २, ४१, ६; २३५ । ५, ६२, ६; २४४ । ६५, ३; २६३ । ७, ६४, २, ४; ३३२, ३३४ । ८, १०२, २; ३६९ । २, ३६, ६; ४००, ९२४  
रिशादसा १, २, ७; १९६ । ५, ६४, १; ५५ । ६६, १; २६८ । ५, ६७, २; २७५ । ७१, १; २९२ । वा. य. ३३, ७२; ३८२  
रिशादा अथ. २, २८, २; ३८३  
रीति आमा ( रीत्याया ) ५, ६८, ५; २८३  
रुद्रा× ५, ७०, २-३; २८९-२९०  
वरुणा ५ ६२, ३; २४१ । ७, ६१, १; ३२१ प्रतियोग्ये-  
क्षया द्विवचनम् ।  
वार्षिष्ठक्षत्रा ८, १०१, २; ३६९  
वाजिना ६, ६७, ४; ३०१  
वा( व ) वृधाना अमार्ति क्षत्रियस्य ५, ६९, १; २८४  
विचर्षणी ५, ६३, ३; २५०  
विचेतसा १०, १३२, ६; ३७६  
विपश्चिता ५, ६३, ७; २५४ । अथ. ६, ९७, २; ३९४  
विश्वा ७, ६१, ५; ३२५  
विश्वस्य गोपा ८, २५, १; ३४७  
विश्वजिन्वा ६, ६७, ७; ३०४  
विश्ववेदसः-सा ५, ६७, ३; २७६ । ८, २५, ३; ३४९  
वृषणा १, १५१, २-३; २१४-२१५ । ७, ६०, ९-१०; ३१७-  
३१८ । ७, ६१, ५; ३२५  
वृषभा ५, ६३, ३; २५०  
वृष्टियावा ५, ६८, ५; २८३  
वृष्ट्याधिपता ५, २४, ५; ३९१  
शग्मासः ७, ६०, ५; ३१३

शुचित्रता ३, ६२, १७; २३७  
श्रेष्ठवर्चसा ५, ६५, २; २६३  
संविदानौ अथ. २, २८, २; ३८३  
सजोषाः-षसः ७, ६०, ४; ३१२ । ८, २५, १४; ३५७  
सत्पती ५, ६५, २; २६३  
सत्याः ५, ६७, ४; २७७  
सत्यधर्माणा ५, ६३, १; २४८  
सम्राजा १, १३६, १; २०३ । २, ४१, ६; २३५ । ५, ६३, २-३, ५; २४९-५०, २५२ । ६८, २; २८७ । ८, २५, ४, ७; ३५०, ३५३  
सर्वताता ५, ६९, ३; २८६  
महसः महः नपाता ८, २५, ५; ३५१  
साधन्ता घृताचीं धियम् १, २, ७; १९६  
सान्नाज्यः ( वरुणः ) ८, २५, ७; ३५३  
सिन्धुपती ७, ६४, २; ३३२  
सुकतुः ( वरुणः ) ८, २५, २; ३४८  
सुकतु ३, ६२, १६; २३६ । ६६, १; २६८ । ७, ६१, २; ३२२ । ८, २५, ५, ८; ३५१, ३५४  
सुक्षत्रः ( वरुणः ) ७, ६४, १; ३३१  
सुचेतुना ५, ६४, २; २५६ । ६५, ३; २६४  
सुजातः-ता ७, ६४, १; ३३१ । ८, २५, २; ३४८  
सुदक्षा ७, ६६, २; ३४२  
सुदानू-नवः ५, ६२, ९; २४७ । ६, ६७, २; २९९ । ७, ६१, ३; ३२३ । ५, ६७, ४; २७७  
सुनीथासः ५, ६७, ४; २७७  
सुमृळीकः १, १३६, ६; २०८  
सुषुम्ना १०, १३२, २; ३७२  
सूनु दक्षस्य ८, २५, ५; ३५१  
सुप्रदानू ८, २५, ५; ३५१  
सेतू अनृतस्य ७, ६५, ३; ३३८  
स्तिपा ७, ६६, ३; ३४३  
स्वर्णरः ५, ६४, १; २५५  
स्वर्दशा ५, ६३, १; २४९  
हिता नमसे ८, २५, ७; ३५३  
हिरण्यरूपा वा. य. १०, १६, ३; ३७९  
ह्यमाना नमसा ६, ६७, ३; ३००

अर्यमादेवताया गुणबोधकपदानि । [ मित्रावरुण-सहकारित्वेन ]

अदितिः पुत्रः ७, ६०, ५; ३१३  
 अनृतस्य चेता ( तृ ) " "  
 अरिः ७, ६४, ३; ३३३  
 अर्यः x " "  
 ऋतस्पृश्-क् ५, ६७, ४; २७७  
 ऋतावान् " "  
 चेता अनृतस्य ७, ६०, ५; ३१३  
 जनेजने सुनीथः ५, ६७, ४; २७७  
 बृलभाः ७, ६०, ६; ३१४

शुक्षः १, १३६, ६; २०८  
 यातयज्जनः १, १३६, ३; २०५  
 रिशादाः ७, ६६, ७; ४७  
 विश्ववेदाः ५, ६७, ३; २७६  
 शग्मः ७, ६०, ५; ३१३  
 सजोषाः ७, ६०, ४; ३१२  
 सत्यः ५, ६७, ४; २७७  
 सुजातः ७, ६४, १; ३३१  
 सुदानुः ५, ६७, ४; २७७  
 सुनीथः जनेजने " "

निपातभागवरुणदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आयाययन् अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 अक्षितः " "  
 अक्षितं भक्षयन् " "  
 आदित्यवान् अ. १९, ८, ४; १६४  
 आप्याययन् अंशुम् अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 ऋतावान् ७, ६२, ३; ५६०  
 गोपाः भुवनस्य अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 चन्द्रः ७, ६२, ३; ५६०

तुविजातः २, २७, १; २१  
 दक्षः " "  
 पिता ७, ५२, ३; ४३  
 भक्षयन् अक्षितम् अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 भुवनस्य गोपाः " "  
 महान् ७, ५२, ३; ४३ । ८, ६७, ४; ८८  
 यजत्रः ७, ५२, ३; ४३  
 राजा अ. ५, २१, ११; १८१  
 रेवान् ८, ४७, ९; ८०

मित्रस्य, मित्रावरुणयोश्च उपमासूची ।

अग्निः न शुक्रः ८, २५, १९; ३६२ सूर्यः समिधानः आहुतः ।  
 अत्रिवत् ५, ७२, १; २९५ वयं गीर्भिः आ जुहुमः ।  
 अपः न नावा ७, ६५, ३; ३३८ ऋतस्य पथा दुरिता तरेम ।  
 अपसा इव जनान् ६, ६७, ३; ३०० श्रुधीयतः जनान् सं यतथः ।  
 अश्वान् न ६, ६७, ४; ३०१ वाजिना पूतः बन्धू ऋता ।  
 अश्वजनी इव ५, ६२, ७; २४५ स्थूणा अयः वि भ्राजते ।  
 उपमात् इव ६, ६७, ६; ३०३ दंढेथे योः सानुम् ।  
 गां न धुरि १, १५१, ४; २१६ आमुषं अपः उप युजाथे ।  
 तक्वीः इव १, १५१, ५; २१७ सूर्यं निम्कचः उषसः स्वरन्ति ।  
 तिग्मं न क्षोदः ८, २५, १५; ३५८ प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः ।  
 योः न १०, १३२, ६; ३७६ भूमिः पयसा पुपूतनि ।

धेनुं न वासरीम् १, १३७, ३; २१२ (अध्वर्यवः) अंशुं दुहन्ति ।  
 पदा इव ५, ६७, ३; २७६ व्रता सश्विरे ।  
 बर्हिः इव यजुषा ५, ६२, ५; २४३ उर्वी रक्षमाणा वर्धत् ।  
 बाहुता न ८, १०१, २; ३६९ दंसना ता रथर्यतः ।  
 मनसः न प्रयुक्तिम् १, १५१, ८; २२० युवां प्रथमा यज्ञेः अजते ।  
 मित्रं न १, १५१, १; १८४ (मित्रः) अग्निं शिम्या आसु जीजनन् ।  
 मित्रासः न १, १५१, २; २१४ ऋत्विजः प्र दधिरे ।  
 यूथा इव ७, ६०, ३; ३११ जनिमानि सं चष्टे ।  
 यूथा इव ८, २५, ७; ३५३ बृहतः अग्निं पश्यतः ।  
 रश्मा इव ६, ६७, १; २९८ यमिष्ठा जनान् सं यमतुः ।  
 बाह्वोः व्रजा इव पारि जगन्वासा ५, ६४, १; २५५ वः ऋचा हवामहे ।

x 'अरिः अर्यः च' इति द्वे पदे वर्जयित्वा एतानि सर्वाणि पदानि मित्रावरुणाभ्यां सहिताया अर्यमादेवताया गुणबोधकानि सन्ति ।  
 दै० [अदितिः०] १४



मनुष्यं व्रता इव ५, ६६, २; २६९ दर्शतं धायि ।  
शरः न ५, ६३, ५; २५२ मरुतः रथं युजते ।  
शुक्रः सोमः न ७, ६४, ५; ३३५ एष स्तोमः अयामि ।

शुक्रः सोमः न ७, ६५, ५; ३४० एष स्तोमः अयामि ।  
स्वरं न ५, ६६, २; २६९ दर्शतं धायि ।  
मानुषः होता न १, १५३, ३; २३१ सः रातहव्यः विदथे वा ।

### मित्रावरुणदेवतामन्त्रेषु निपातदेवताः ।

अग्निः १, १३६, ६-७; २०८-२०९  
अदितिः ५, ६९, ३; २८६ । ७, ६०, ८, ३१६ । ८, २५, ३;  
३४९ । ७, ६२, ४; ३२८ ×  
अपां सिन्धुः ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८  
अर्थमा १, १३६, २-३, ५-६; २०४-५, २०७-८ । ५, ६७, १,  
३-४; २७४, २७६-२७७ । ७, ६०, ४-६; ३१२-३१४ ।  
६२, ६; ३३० । ६४, १, ३; ३३१, ३३३  
अश्विना ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८  
अदित्यः १, १५२, ३-५; २२४-२२६  
इन्द्रः १, १३६, ६; २०८ । ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८  
द्यौः १, १३६, ६; २०८  
द्यावाभूमौ ७, ६२, ४; ३२८

पर्जन्यः ५, ६३, ४, ६; २५१, २५३  
पृथिवी ५, ६६, ५; २७२  
भगः १, १३६, २, ६; २०४, २०८  
मरुतः १, १३६, ७; २०९ । ५, ६३, ५-६; २५१-२५२ ।  
८, २५, १४ १५; ३५७-३५८  
रोदसी १, १३६, ६; २०८  
व.युः ७, ६२, ४; ३२९ । ६४, ५; ३३५ । ६५, ५; ३४०  
विश्वे देवाः १, १३६, ४, ७; २०६, २०९ । ६, ६७, ५; ३०२  
विष्णुः ८, २५, १४-१५; ३५७-३५८  
सूर्यः ७, ६०, २; ३१०  
सोमः १, १३६, ६; २०८

### (४) सविता ।

अदाभ्यः ४, ५३, ४; ४३७  
अद्रोघवक् अ. ६, १, २; ५२०  
अधिपतिः प्रसवानाम् अ. ५, २४, १; ५१८  
अन्तरिक्षप्राः ७, ४५, १; ४७३  
अपसेधन् रक्षमः यातुधानान् १, ३५, १०; ४१८  
अपां नपान् १, २२, ६; ४०४  
अप्रयुच्छन् अहनी एति ५, ८२, ८; ४५९  
अमतिं उर्वीं पृथ्वीं सृजानः ७, ३८, २; ४६८  
अमतिं उर्ध्वीं विश्रयमाणः ७, ४५, ३; ४७५  
अयोहनुः ६, ७१, ४; ४६४  
अरमतिः २, ३८, ४; ४२३  
अर्वाङ् १, ३५, १०; ४१८  
अवन् सदा १, २४, ३; ४०७  
अश्वैः बहमानः ७, ४५, १; ४७३  
असुरः १, ३५, १०; ४१८ । ४, ५३, १; ४३४  
आवर्तमानः कृष्णेन रजसा १, ३५, २; ४१०

असवः वा. य. २२, १३; ५०६  
इयानः ७, ३८, ६; ४७२  
ईशानः वार्याणाम् १, २४, ३; ४०७  
उपवाच्यः ४, ५४, १; ४४१  
ऊर्ध्वः विश्वस्य श्रुष्टये २, ३८, २; ४२१  
ऋभुमान् वा. य. ३८, ८; ५१६  
ओण्योः ( वर्तमानः ) वा. य. ४, २५; ४८८  
कल्पः वा. य. ४, २५; ४८८  
कविः ४, ५३, २; ४३५ । ५, ८१, २; ४४८ । वा. य. ४,  
२५; ४८८  
कविकतुः वा. य. ४, २५; ४८८  
केतपुः वा. य. ९, १; ४९१  
गन्धर्वः वा. य. ९, १; ४९१  
गर्भः देवानाम् वा. य. ३७, १४; ५१४  
गृणानः प्रतिदोषम् १, ३५, १०; ४१८  
मास्पतिः २, ३८, १०; ४२९

× अत्र 'अदिते' इति पदम् । तत्सायनेः 'द्यावाभूम्यो,' प्रत्येकं संबोधनं गृह्यते ।

चित्रमानुः १,३५,४; ४१२  
 चित्रराधाः अ. १,२६,२; ५३१  
 चेतन् वा. य. २२,११, ५०४  
 चेता पदम् १,२२,५; ४०३  
 जगत् निवेशयन् प्रसुवन् अकतुभिः ४,५३,३; ४३६  
 जगताः वशी ४,५३,६; ४३९  
 जनः दैव्यः ४,५४,३; ४४३  
 जास्पतिः ७,३८,६; ४७२  
 तदपाः २,३८,१; ४२०  
 (तेजः) आपृणन् ४,५३,२; ४३५  
 (तेजः) प्रथयन् ४,५३,२; ४३५  
 दधत् रत्नं दक्षं आयुषि पितृभ्यः अ. ७,१४,४; ५२३  
 दधत् रत्ना दाशुषे वार्याणि १,३५,८; ४१६  
 दधानः कृष्णा रजांसि तविषीम् १,३५,४; ४१२  
 दधानः हस्ते नर्यां पुरुणि ७,४५,१; ४७३  
 दमूनाः अ. ७,१४,४; ५२३  
 दाता राधांसि १,२२,८; ४०६  
 दिवः धर्ता ४,५३,२; ४३५ । १०,१४९,४; ४८३  
 दिवः रातिः ७,३८,५; ४७१  
 दिव्यः वा. य. ९,१; ४९१  
 देवः [ बहुषु स्थलेषु ]  
 देवानां गर्भः वा. य. ३७,१४; ५१४  
 देवता १,२२,५; ४०३  
 दैव्यः १,३५,५; ४१३ । २,३८,६; ४२५ । ४,५४,४;  
 ४४४  
 दैव्यः जनः ४,५४,३; ४४३  
 द्रापि पिशात्रं प्रति मुञ्चते ४,५३,२; ४३५  
 धर्ता दिवः ४,५३,२; ४३५ । १०,१४९,४; ४८३  
 धर्ता भुवनस्य ४,५३,२; ४३५  
 धियः १,३८,१०; ४२९  
 धृतव्रतः ४,५३,४; ४३७  
 नमस्यः ७,३८,३; ४६८  
 नराशांसः १,३८,१०; ४२९  
 निवेशनः ४,५३,६; ४३९  
 निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च १,३५,२; ४१०  
 निवेशयन् जगत् अकतुभिः ४,५३,३; ४३६  
 निवेशयन् भूम ७,४५,१; ४७३

नृचक्षा १,२२,७; ४०५ । १०,१३९,२; ४७८ ।  
 वा. य. ३०,४; ५०८  
 पतिः प्रजानाम् वा. य. ३७,१४; ५१४  
 पदं चेता १,२२,५; ४०३  
 परिज्मा अ. ७,१४,४; ५२३  
 परिभूः त्रिः अन्तरिक्षं महिबना ४,५३,५; ४३८  
 पिता मतीनाम् वा. य. ३७,१४; ५१४  
 पुरन्धिः २,३८,१०; ४२९  
 पुर(रू)वसुः ७,३८,१; ४६७  
 पूर्णगभस्तिः ७,४५,४; ४७६  
 पूषा ५,८१,५; ४५१  
 पृणन् आ (तेजः) ४,५३,२; ४३५  
 पृथिव्याः रातिः ७,३८,५; ४७१  
 पृथुपाणिः २,३८,२; ४२१  
 प्रचेताः ४,५३,१; ४३४  
 प्रजानां पतिः वा. य. ३७,१४; ५१४  
 प्रजापतिः ४,५३,२; ४३५  
 प्रतिदोषं गृणानः १,३५,१०; ४१८  
 प्रथयन् (तेजः) ४,५३,२; ४३५  
 प्रसवानां अधिपतिः अ. ५,२४,१; ५१८  
 प्रसवि(वी)ता ४,५३,६; ४३९ । वा. य. १०,३०; ५२९  
 प्रसुवन् जगत् अकतुभिः ४,५३,३; ४३६  
 प्रसुवन् भूम ७,४५,१; ४७३  
 प्रियः वा. य. ४,२५; ४८८  
 बाधमान. अप विक्षा दुरिता १,३५,३; ४११  
 बहू शिथिरा ७,४५,२; ४७४  
 बुध्नः रायः १०,१३९,३; ४७९  
 बृहन् ५,८१,१; ४४७  
 बृहस्पतिः अ. ७,१६,१; ५२०  
 बृहत्सुप्तः ४,५३,६; ४३९  
 भगः २,३८,१०; ४२९ । ३,६२,११; ४३२ । ५,८२,१,३;  
 ४५२,४५४ । ७,३८,१,६; ४६७,४७२ । वा. य. ८,७;  
 ४९०  
 भगवक्तः १,२४,५; ४०९  
 भुवनस्य धर्ता ४,५३,२; ४३५  
 भूम निवेशयन् प्रसुवन् च ७,४५,१; ४७३  
 मखः ६,७१,१; ४६१

मतिः वा. य. ४, २५; ४८८  
 मति(ती)विद् वा. य. २२, १२; ५०५  
 मतीनां पिता वा. य. ३७, १४; ५१४  
 मन्द्रजिह्वः ६, ७१, ४; ४६४  
 मित्रः ५, ८१, ४; ४५०  
 यजतः १, ३५, ३-४; ४११-४१२ । ६, ७१, ४; ४६४  
 यातुधानान् अपसेधन् १, ३५, १०; ४१८  
 युवा ६, ७१, १; ४६१ । अ. ६, १, २; ५२०  
 रक्षसः अपसेधन् १, ३५, १०; ४१८  
 रजसः विधर्मणि (स्थितः) ६, ७१, १; ४६१  
 रत्नधाः वा. य. ४, २५; ४८८  
 रातिः वा. य. २२, १३; ५०६  
 रातिः दिवः पृथिव्याः ७, ३८, ५; ४७१  
 राधांसि दत्ता १, २२, ८; ४०६  
 राधसः विभक्ता १, २२, ७; ४०५ । वा. य. ३०, ४; ५०८  
 रायः बुधः १०, १३९, ३; ४७९  
 वन्यः ४, ५४, १; ४४१  
 चरेण्यः ५, ८१, २; ४४८ । अ. ७, १४, ४; ५२३  
 वशी जगतः स्थातुः उभयस्य ४, ५३, ६; ४३९  
 वसूनां संगमनः १०, १३९, ३; ४७९  
 वसुपतिः ७, ४५, ३; ४७५  
 वहमानः अश्वैः ७, ४५, १; ४७३  
 वाजवान् वा. य. ३८, ८; ५१६  
 वायोणां ईशानः १, २४, ३; ४०७  
 विचक्षणः ४, ५३, २; ४३५  
 विचर्षणिः १, ३५, ९; ११०  
 विपश्चित् ५, ८१, १; ४४७  
 विप्रः ५, ८१, १; ४४७  
 विभक्ता वसोः चित्रस्य राधसः १, २२, ७; ४०५ । वा. य. ३०, ४; ५०८  
 विभुमान् वा. य. ३८, ८; ५१६  
 विश्रयमाणः उरुर्ची अमतिम् ७, ४५, ३; ४७५  
 विश्वदेवः ५, ८२, ७; ४५८  
 विश्ववारः १०, १४९, ४; ४८३  
 शचीपतिः अ. १९, १६, १; ५२४  
 संगमनः वसूनाम् १०, १३९, ३; ४७९  
 सप्तपतिः ५, ८२, ७; ४५८ । वा. य. २२, १३; ५०६

सत्यधर्मा १०, १३९, ३; ४७९  
 सत्यप्रसवः वा. य. १०, २८; ४९३  
 सत्यसवः ५, ८२, ७; ४५८ । वा. य. ४, २५; ४८८  
 सत्यस्य सूनुः अ. ६, १, २; ५२०  
 सदा(अ)वन् १, २४, ३; ४०७  
 सविता [ प्रायशः सर्वत्र । ]  
 सह(हा)वा ७, ४५, ३; ४७५  
 सिन्धौ अन्तः अ. ६, १, २; ५२०  
 सुकतुः ६, ७१, १; ४६१ । वा. य. ४, २५; ४८८  
 सुजिह्वः ७, ४५, ४; ४७६  
 सुत्रामा वा. य. २०, ७०; ५०२  
 सुदक्षः ६, ७१, १; ४६१  
 सुनीयः १, ३५, १०; ४१८  
 सुपाणिः ७, ४५, ४; ४७६ । वा. य. ११, ६३; ४९९  
 सुबाहुः वा. य. ११, ६३; ४९९  
 सुमति(ती)वृष् वा. य. २२, १२; ४०५  
 सुमृत्कीकः १, ३५, १०; ४१८  
 सुरत्नः ७, ४५, १; ४७३  
 सुवानः आ मर्तभोजनं नृभ्यः ७, ३८, २; ४६८  
 सुशेवः अ. ६, १, २; ५२०  
 सूर्यरश्मिः १०, १३९, १; ४७७  
 सृजानः उर्वी पृथ्वीं अमतिम् ७, ३८, २; ४६८  
 स्तोम्यः १, २२, ८; ४०६  
 स्थातुः वशी ४, ५३, ६; ४३९  
 स्वहृगुरिः वा. य. ११, ६३; ४९९  
 स्वः वा. य. ४, २५; ४८८  
 स्ववान् १, ३५, १०; ४१८  
 स्वाधीः ५, ८२, ८; ४५९  
 हरिकेशः १०, १३९, १; ४७७  
 हविष्पतिः वा. य. २०, ७०; ५०२  
 हव्यः ७, ३८, १; ४६७  
 हिरण्य-अक्षः १, ३५, ८; ४१६  
 हिरण्य-जिह्वः ६, ७१, ३; ४६३ ।  
 हिरण्य-पाणिः १, २२, ५; ४०३ । ३५, ९; ४१७ । ६, ७१,  
 ४; ४६४ । ७, ३८, २; ४६८ । वा. य. ४, २५; ४८८  
 हिरण्य-हस्तः १, ३५, १०; ४१८

**सवितुः अश्वः ।**

सितिपादः १, ३५, ५; ४१३  
 श्रुत्रौ ( हरी ) १, ३५, ३; ४११  
 श्यावाः १, ३५, ५; ४१३  
 हरी १, ३५, ३; ४११

**सवितुः बाहू ।**

दिवः अन्तान् अनष्टाम् ७, ४५, २; ४७४  
 बृहन्ता ७, ४५, २; ४७४  
 शिथिरा ७, ४५, २; ४७४  
 सुप्रतीका ६, ७१, ५; ४६५  
 हिरण्यया ६, ७१, १, ५; ४६१, ४६५ । ७, ४५, २; ४७४ ।  
 पृथु-पाणिः २, ३८, २; ४२१  
 सु-पाणिः ७, ४५, ४; ४७६  
 हिरण्यः-पाणिः १, २२, ५; ४०३  
 सु-बाहुः वा. य. ११, ६३; ४९९

हिरण्य-हस्तः १, ३५, १०; ४१८

**सवितुः रथः ।**

अभीवृत् १, ३५, ४; ४१२  
 कृशनेः विश्वरूपः ,,  
 बृहन् ,,  
 हिरण्ययः १०, ३५, २; ४१०  
 हिरण्यशाम्यः १, ३५, ४; ४१२  
 हिरण्यप्रउगः १, ३५, ५; ४१३

**सवितुः रश्मिः ।**

असुरः १, ३५, ७; ४१५  
 गर्भरवेपाः ,,  
 सुनीथः ,,  
 सुपर्णः ,,  
 सूर्य-रश्मिः १०, १३९, १; ४७७  
 पूर्ण-गभस्तिः ७, ४५, ४; ४७६

**सवितादेवताया उपमासूची ।**

अश्वं इव १०, १४९, १; ४८० धुनिं अधुक्षत् अन्तरिक्षम् ।  
 यथा आङ्गिरसः हिरण्यस्तूपः १०, १४९, ५; ४८४ एवा त्वा अवसे ।  
 आणि न रथ्यम् १, ३५, ६; ४१४ अमृत अधि तस्थुः तिस्रः यावः ।  
 इन्द्रः न १०, १३९, ३; ४७९ सत्यधर्मा समरे तस्थौ ।  
 उपवक्ता इव बाहू ६, ७१, ५; ४६५ उद् अयान् सविता ।  
 गवः इव ग्रामम् १०, १४९, ४; ४८३ सविता नः एतु ।

देवः इव १०, १३९, ३; ४७९ सविता सत्यधर्मा ।  
 पतिः इव जायाम् १०, १४९, ४; ४८३ सविता नः एतु ।  
 यूयुधिः इव अश्वान् १०, १४९, ४; ४८३ सविता नः एतु ।  
 वाश्रा इव वत्सं सुमना १०, १४९, ४; ४८३ धर्ता दिवः नः ज्येतु ।  
 सोमस्य इव अंशुम् १०, १४९, ५; ४८४ प्रति जागराहम् ।

**(५) सूर्यः ।**

अंशः सोमस्य अ. ७, ८१, ३; ६८१  
 अंशुः अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 अक्षितः अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 अग्नेः चक्षुः १, ११५, १; ५४७  
 अतिथिः ४, ४०, ५; ५५५  
 आदितिः ७, ६०, १; ५५७  
 अदृष्टहा अ. ६, ५२, १; ६२५  
 अद्रिजाः ४, ४०, ५; ५५५  
 अधिपतिः इष्टकायाः ते वा. य. १५, ५८; ५२८  
 अधिपतिः चक्षुषाम् अ. ५, २४, ९; ६१६  
 अध्वपतिः वा. य. ५, ३३; ५९६  
 अनिपयमानः वा. य. ३७, १७; ६०८

अनीकं चित्रं देवानाम् १, १५५, १; ५४७  
 अनुमयमानः रेभैः ७, ६३, ३; ५६३  
 अनूनः अ. ७, ८१, ३; ६८१  
 अन्तारिक्षसत् ४, ४०, ५; ५५५  
 अपां गर्भः १, १६४, ५२; ६३०  
 अप्रयुच्छन् १०, ८८, १६; ६७४  
 अञ्जाः ४, ४०, ५; ५५५  
 अमर्त्यः [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७  
 अमित्रहा [ज्योतिः] १०, १७०, २; ५८८  
 अर्णवः ७, ६३, २; ५६२  
 अर्णवं परि यातः [चन्द्रमाश्च] अ. ७, ८१, १; ६७९  
 अर्यमा ७, ६०, १; ५५७



तर्पयन् ऋष्टिभिः १, १६४, ५२; ६३०  
 तस्थुषः जगतः आत्मा १, ११५, १; ५४७  
 तस्थुषः जगतः पतिः ७, ६६, १५; ५६६  
 बधत् आयुः यज्ञपतौ १०, १७०, १; ५८७  
 दर्शः अ. ७, ८१, ४; ६८२  
 दर्शतः अ. ७, ८१, ४; ६८२  
 दर्शतं वपुः त्यत् ७, ६६, १४; ५६५  
 दर्शतः ओषधीनाम् १, १६४, ५२; ६३०  
 दर्शतः गर्भं ओषधीनाम् १, १६४, ५२; ६३०  
 दस्युहन्तमम् [ज्योतिः] १०, १७०, २; ५८८  
 दिवः धरुणः १०, १७०, २; ५८८  
 दिवः धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७  
 दिवस्पुत्रः १०, ३७, १; ५७०  
 दिवा रोचमानः ७, ६०, १; ५५८  
 दिव्यः १, १६४, ५२; ६३०  
 दुरोगसत् ४, ४०, ५; ५५५  
 दूरे अर्थः ७, ६३, ४; ५६४  
 दूरे दृश् १०, ३७, १; ५७०  
 दृशः साम. ४५८; ६२८  
 देवः १, ५०, १, ८; ५३४, ५४१। ७, ६३, १, ३; ५६१, ५६३।  
 ८, १०१, ११-१२, ५६८-६९। १०, ३७, १; ५७०  
 देवः [घर्मः] वा. य. ३०, १६, १८; ६०७, ६०९  
 देवजातः १०, ३७, १; ५७०  
 देवः देवत्रा १, ५०, १०; ५४३  
 देवयजनी [पृथिवी] वा. य. ३, ५; ५९३  
 देवभ्रुत् [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९  
 देवहितम् ७, ६६, १६; ५६७। वा. य. ३६, २४; ६०६  
 देवानां चित्रं अनीकम् १, ११५, १; ५४७  
 देवानां धर्ता [घर्मः] वा. य. ३७, १६; ६०७  
 देवानां पुरोहितः ८, १०१, १२; ५६९  
 देवेभ्यः भागं विदधत् अ. ७, ८१, २; ६८०  
 यौः (दिवे-चतुर्थी) १, १३६, ६; २०८  
 द्यावापृथिवीवान् अ. १९, १८, ५; ६२०  
 द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् १, ५०, १३; ५४६  
 धनजित् [ज्योतिः] १०, १७०, ३; ५८९  
 धरुणः दिवः १०, १७०, २; ५८८

धर्ता तपसः [घर्मः] ३७, १६; ६०७  
 धर्ता दिवः [घर्मः] ३७, १६; ६०७  
 धर्ता देवानाम् [घर्मः] ३७, १६; ६०७  
 धर्मन् १०, १७०, २; ५८८  
 नवःनवः जायमानः अ. ७, ८१, २; ६८०  
 निजूर्वन् रक्षांसि अ. ६, ५२, १; ६२५  
 नृचक्षाः ७, ६०, २; ३१०  
 नृषत् (सद्) ४, ४०, ५; ५५५  
 पतंगः अ. २०, ४८, ६; ६९१  
 पतिः जगतः तस्थुषः च ७, ६६, १५; ५६६  
 " युधाम् अ. ७, ८१, ३; ६८१  
 " भुवां विश्वासाम् [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९  
 " मनसः विश्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९  
 " वचसः विश्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९  
 पतिः वचसः सर्वस्य [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९  
 परि यातः अर्णवम् [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७, ८१, १; ६७९  
 पश्यन् जन्मानि १, ५०, ७; ५४०  
 पाजसः बृहत्ः पारे आरोहन् १०, ३७, ८; ५७७  
 पावकः १, ५०, ६; ५३९  
 पिता शरस्य अ. १, ३, ५; ६१०  
 पुरोहितः देवानाम् ८, १०१, १२; ५६९  
 पूर्वापरं चरतः मायया [सूर्याचन्द्रमसौ] अ. ७, ८१, १; ६७९  
 पृथिः अ. २०, ४८, ४; ६८९  
 प्रजानन् १०, ८८, ६; ६६४  
 प्रसवि(वी)ता जनानाम् ७, ६३, २; ५६२  
 प्रेषितः १०, ३७, ५; ५७४  
 विश्रत् महि ज्योतिः १०, ३७, ८; ५७७  
 बृहत् [ज्योतिः] १०, १७०, २-३; ५८८-५८९  
 बृहन् १, १६४, ५२; ६३०। १, १३६, ६; २०८  
 ब्रध्नः साम. ४५८; ६२८  
 भगः अ. २, ३६, ५; ६२३  
 भास्वन् १०, ३७, ८; ५७७  
 भुवना विश्वा विचष्टे अ. ७, ८१, १; ६७९  
 भुवां विश्वासां पतिः [घर्मः] वा. य. ३७, १८; ६०९  
 भ्राजः १०, १७०, ३; ५८९। वा. य. ८, ४०, ५९७  
 भ्राजमानः ७, ६३, ४; ५६४। १०, ८८, १६; ६७४  
 भ्राजिष्ठः वा. य. ८, ४०; ५९७

भ्राजिष्ठः देवेषु वा. य. ८,४०; ५९७  
 मतिः कर्त्वीनाम् साम. ४५८; ६२८  
 मनसस्पतिः विश्वस्य वा. य. ३७,१८; ६०९  
 मयः चक्षुषेचक्षुषे १०,३७,८; ५७७  
 महः १०,३७,१; ५७०  
 महान् ७,६३,२; ५६२ । ८,१०१,११-१२; ५६८-६९  
 महान् महा ८,१०१,१२; ५६९  
 महान् श्रवसा ८,१०१,१२; ५६९  
 महि १०,१७०,३; ५८९  
 महिषः अ. २०,४८,५; ६९०  
 महा महान् ८,१०१,१२; ५६९  
 मानुषाणां साधारणः ७,६३,१; ५६१  
 मित्रस्य वरुणस्य चक्षाः १०,३७,१; ५७०  
 मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः चक्षुः १,११५,१; ५४७  
 मित्रस्य वरुणस्य चक्षुः ७,६३,१; ५६१  
 मित्रमहः १,५०,११; ५४४ । १०,३७,७; ५७६  
 मिथुनौ [ अग्निसूर्यौ ] १०,८८,११; ६६९  
 मिमानः अहः अकतुभिः १,५०,७; ५४०  
 युधां पतिः अ. ७,८१,३; ६८१  
 रक्षांसि निजूर्वेन् अ. ६,५२,१; ६२५  
 रन्धयन् द्विषन्तं मह्यम् १,५०,१३; ५४६  
 रुक्मः ७,६३,४; ५६४  
 रैमैः अनुमद्यमानः ७,६३,३; ५६३  
 रोचनः १०,८८,५; ६६३  
 रोचमानः दिवा ७,६२,१; ५५८  
 वचस्य विश्वस्य पतिः वा. य. ३७,१८; ६०९  
 वचस्य सर्वस्य पतिः वा. य. ३७,१८; ६०९  
 वपुः दर्शतं त्यत् ७,६६,१४; ५६५  
 वरसत् ४,४०,५; ५५५  
 वरुणः १,५०,६; ५३९  
 वरुणस्य चक्षाः १०,३७,१; ५७०  
 वरुणस्य चक्षुः १,११५,१; ५४७ । ७,६३,१; ५६१  
 वर्चः वा. य. ३,९; ५९४  
 वर्चोदाः [ रश्मिः ] वा. य. २,२६; ५९२  
 वसानः सध्रीचीः विषूचीः वा. य. ३७,१७; ६०८  
 वसुः ४,४०,५; ५५५

वाजसातमम् [ ज्योतिः ] १०,१७०,२; ५८८  
 वातजृतः १०,१७०,१; ५८७  
 वायसः [ सरस्वान् ] १,१६४,५२; ६३०  
 विचक्षणः १,५०,८; ५४१ । १०,३७,८; ५७७  
 विचष्टे विश्वा भुवना अ. ७,८१,१; ६७९  
 विभ्राट् १०,१७०,१-२; ५८७-५८८  
 विभ्राजन् ज्योतिषा १०,१७०,४; ५९०  
 विभ्राजमानः ७,६३,३; ५६३  
 विश्वकर्मन् [ ज्योतिः ] १०,१७०,४; ५९०  
 विश्वचक्षाः १,५०,२; ५३५ । ७,६३,१; ५६१  
 विश्वजित् ( ज्योतिः ) १०,१७०,३; ५८९  
 विश्वदर्शतः १,५०,४; ५३७  
 विश्वदृष्टः अ. ६,५२,१; ६२५  
 विश्वदेव्यावत् ज्योतिः १०,१७०,४; ५९०  
 विश्वभ्राट् १०,१७०,३; ५८९  
 विश्वस्य गोपाः ७,६०,२; ३१०  
 विश्वानरः वा. य. ३३,३४; ६०२  
 विश्वा भुवनानि आ भिभ्रत् १०,१७०,४; ५९०  
 विषूचीः सध्रीचीः वसानः वा. य. ३७,१७; ६०८  
 वृत्रहा १०,१७०,२; ५८८ । वा. य. २३,३५; ६०३  
 वृष्टिभिः तर्पयन् १,१६४,५२; ६३०  
 वेदिषत् ४,४०,५; ५५५  
 व्योमसत् ४,४०,५; ५५५  
 शतवृष्यः अ. १,३,५; ६१०  
 शं अहा घृणेन चक्षसा भानुना हिमा १०,३७,१०; ५७९  
 शरस्य पिता अ. १,३,५; ६१०  
 शिशू क्रीडन्तौ ( सूर्याचन्द्रमसौ ) अ. ७,८१,१; ६७९  
 शुक्रम् ७,६६,१६; ५६७ । वा. य. ३३,२४; ६०६  
 श्वाचिषद् ४,४०,५; ५५५  
 शोचिष्केशः १,५०,८; ५४१  
 श्रवसा महान् ८,१०१,१२; ५६९  
 श्रेष्ठः ( रश्मिः ) वा. य. २,२६; ५९२  
 श्रेष्ठम् ( ज्योतिः ) १०,१७०,३; ५८९  
 सजूः देवेन सवित्रा वा. य. ३,१०; ५९५  
 सजूः उषसा इन्द्रवत्या वा. य. ३,१०; ५९५  
 सत्यम् ( ज्योतिः ) १०,१७०,२; ५८८  
 सध्रीचीः वसानः ( घर्मः ) वा. य. ३७,१७; ६०८

सपत्नहा ( ज्योतिः ) १०, १७०, २; ५८८  
समः ७, ६२, १; ५५८  
समन्तः सममः अ. ७, ८१, ४; ६८२  
सरस्वान् १, १६४, ५२; ६३०  
सविता ७, ६३, ३; ५६३; १०, १५८, २-३; ५८३-८४ ।  
वा. य. ३, १०; ५९५ । ऋ. १०, ८५, ९, १३; ६३५, ६३९  
सहस्रमानवः साम. ४५८, ६२८  
साधारणः मानुषाणाम् ७, ६३, १; ५६१  
सुकृतः कर्तृभिः ७, ६२, १; ५५८  
सुपर्णः १, १६४, ५२; ६३०  
सुभगः ७, ६३, १; ५६१  
सुभृतम् [ ज्योतिः ] १०, १७०, २; ५८८  
सुसंहशः १०, १५८, ५; ५८६  
सूरः १, ५०, २, ९; ५३५, ५४२ । ७, ६३, ५; ६३१  
सूर्यः ( प्रायः सर्वत्र ) ७, ६०, २; ३१०  
सोमस्य अंशः अ. ७, ८१, ३; ६८१  
स्वः वा. य. १, ११; ५२१ । अ. १६, ९, ३; ६२६ ॥  
अ. २०, ४८, ४; ६८९  
स्वयम्भूः वा. य. २, २६; ५९२  
हंसः ४, ४०, ५; ५५५  
हरिकेशः १०, ३७, ९; ५७८  
होता ४, ४०, ५; ५५५

सूर्यस्य रहस्यः ।

अपः वसानाः १, १६४, ४७; ५५४  
ऋतस्य सद्दनात् आवृषन् ( ये ) १, १६४, ४७; ५५४  
केतवः १, ५०, ३; ५३६  
केतवः ये देवं वहन्ति १, ५०, १; ५३४  
कृष्णं नियानं हरयः १, १६४, ४७; ५५४  
देवाः उदिताः १, ११५, ६; ५५२  
द्यावः ( ऋभिः-नृतीया ) अ. २०, ४८, ६; ६९१  
भ्राजन्तः यथा अमयः १, ५०, ३; ५३६  
रहस्यः सप्त १, ५०, ३; ५३६ । वा. य. ८, ३; ५९७ ।  
अ. ७, १०७, १; ६८५  
सुपर्णाः १, १६४, ४७; ५५४  
हरितः १, ११५, ५; ५५१  
हे० अदितिः ०१ १५

सूर्यस्य द्विषन्नाशनी शक्तिः ।

अर्चिः अ. २, २१, ३; ६१३ ।  
तपः ,, १; ६११  
तेजः ,, ५; ६१५  
शोचिः ,, ४; ६१४  
हरः ,, २; ६१२

सूर्यस्य अभ्यानां गुणबोधकपदानि ।

अनुमायासः १, ११५, ३; ५४२  
अश्वाः १, ११५, ३; ५४९  
आशुः ७, ६६, १४; ५६५  
एतग्वाः १, ११५, ३; ५४९  
एतगाः ७, ६३, २; ५६२ । ७, ६६, १४; ५६५  
एतशाः १०, ३७, ३; ५७२  
केतवः १, ५०, १; ५३४  
चित्राः १, ११५, ३; ५४९  
देवः ७, ६६, १४; ५६५  
धूर्षु युक्तः ७, ६६, १४; ५६५  
नप्यः रथस्य १, ५०, ९; ५४२

चन्द्रमसः सहचारित्वे सूर्यस्य गुणबोधकपदानि ।

अधिपतिः अ. ६, १०, ३; ११३५  
अह्नां केतुः १०, ८५, १९; ९७२  
उषसां अग्रं एति ,, ,,  
चक्षोः ( अस्य पुरुषस्य ) भजायत ऋ. १०, ९०, १३; ९७३ ।  
वा. य. २१, २२; ९७८  
चरते एकाकी वा. य. २३, १०; ९७७  
नमस्यन्तः १, ११५, ३; ५४९  
पतराः १०, ३७, ३; ५७२  
भद्राः १, ११५, ३; ५४९  
युक्तः धूर्षु ७, ६६, १४; ५६५  
रथस्य नप्यः १, ५०, ९; ५४२  
शुन्ध्युवः १, ५०, ९; ५४२  
सप्त १, ५०, ८-९; ५४१-४२  
स्वयुक्तयः १, ५०, ९; ५४२ । ७, ६६, १५; ५६६  
स्वसारः ७, ६६, १५; ५६६  
हरितः १, ११५, ३-४; ५४९-५० । ७, ६६, १५; ५६६



## सूर्यसहचारी-वैश्वानराग्नेः गुणबोधकपदानि ।

(क्र० १०.८८,१-१९; ६५९-७७)

अजरः ३; ६६१  
 अजुर्यः १३; ६७१  
 अध्यक्षः यक्षस्य १३; ६७१  
 अर्चिषा यन् १२; ६७०  
 आजुहवुः यस्मिन् विश्वा भुवनानि ९; ६६७  
 ऋजूयमानः अर्चिषा पृथिवीं यां च ९; ६६७  
 कः १; ६५९  
 कविः १४; ६७२  
 जातवेदाः ४-५; ६६२-६३  
 तनूपाः ८; ६६६  
 तविष् ( षम्-द्वितीया ) १३; ६७२  
 दिवियोनिः ७; ६६५  
 दिविस्पृक् १; ६५९  
 दादिवन् १४; ६७२  
 दशोन्यः महिना ७; ६६५

देवजुष्टः ४; ६६२  
 पचति यः विश्वरूपा ओषधीः १०; ६६८  
 प्रथमः होता ४; ६६२  
 बृहन् ३, १३; ६६१, ६७१  
 भुवनस्य मूर्धनि अतिष्ठः ५; ६६३  
 मूर्धा भुवा भवति नक्तम् ६; ६६४  
 यज्ञः ८; ६६६  
 यज्ञियः ५; ६६३  
 रोदसिमाः ५, १०; ६६३, ६६८  
 विभावा ७; ६६५  
 वेदयं पृथिवी यौः आपः ८; ६६६  
 समिद्धः ७; ६६५  
 सूक्वाक् ८; ६६६  
 स्वर्वित् १; ६५९  
 होता प्रथमः ४; ६६२

## सूर्यदेवताया उपमासूची ।

यथा अक्षेत्रविद् मुग्धः ५, ४०, ५, ५५६ भुवनानि अदीधयुः ।  
 यथा अग्नयः भ्राजन्तः १, ५०, ३; ५३६ वा. य. ८, ४०, ५९७  
 केतवः रश्मयः वि अदश्रम् ।  
 चर्म इव ७, ६३, १; ५६१ देवः तर्मासि समविद्यक् ।  
 जातं जात्रीः यथा हृदा अ. २०, ४८, २; ६८७ ता अर्षन्ति शुभ्रयः ।  
 त्ये तायवः यथा १, ५०, २; ५३५ नक्षत्राः अकतुभिः अप यन्ति ।  
 यौः इव भूम्ना वा. य. ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।  
 पृथिवी इव वरिष्णा वा. य. ३, ५; ५९३ अहं भूयासम् ।  
 भागं न वा. य. ३, ३, ४१, ६०४ जाते अनिमाने वसूनि प्रति ।

मर्यः न योषाम् १, ११५, २, ५४८ सूर्यः उषसं पश्चात् अभ्येति ।  
 यथा युवानः मत्सथः वा. य. ३, ३, ३४, ६०२ तथा नः विश्वं मनीषा ।  
 आभि वत्सं न धेनवः अ. २०, ४८, १; ६८६ त्वा अभि गिरः ।  
 श्येनः न दीयन् ७, ६३, ५; ६३१ पाथः अनु एति ।  
 श्रायन्तः इव सूर्यम् वा. य. ३, ३, ४१; ६०४ वयं विश्वा इन्द्रस्य ।  
 यथा सूर्यः ... नक्षत्राणां अ. ७, १३, १; ६१७ एवा स्त्रीणां वर्चः ।  
 उद्यन् सूर्यः इव अ. ७, १३, २; ६१८ द्विषतां वर्चः आ वदे ।  
 सुपर्णः वसतेः इव अ. ६, ८३, १; ६७८ अपचितः प्र पतत ।

## सूर्यदेवतामन्त्रेषु निपातदेवतानां गुणबोधकपदानि ।

अग्निः १, १६४, ४६; ५५३ । ७, ६२, २-३; ५५९-५६०  
 [चन्द्रः ऋतावान् । ( ५६० )]  
 अग्निः ( पार्थिवः ) १०, १५८, १; ५८२  
 अदितिः १, ११५, ६; ५५२  
 अर्यमा ७, ६२, २; ५५९  
 आपः १०, ३७, ६; ५७५

इन्द्रः १, १६४, ४६; ५५३ । १०, ३७, ८; ५७५ । अ. ७,  
 ८१, ६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं मक्षयन्,  
 अंशुं आप्याययन् ।  
 चन्द्राः ७, ६२, ३; ५६० (अयं शब्दः मित्रावरुणाग्नीनां विशेष-  
 षणं वा ।)  
 देवाः १, ११५, ६; ५५२ । १०, ३७, ५, १३-१२, ५७४, ५८०-८१

शोः १, ११५, ६; ५५२  
 यावापृथिवी १०, ३७, ६; ५७५  
 धाता १०, १५८, ३; ५८४  
 पर्वतः १०, १५८, ३; ५८४  
 पृथिवी १, ११५, ६; ५५२  
 बृहस्पतिः अ. ७, ८१, ६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः  
 अक्षितं भक्षयन्, अंशुं आप्याययन् ।  
 मरुतः १०, ३७, ६; ५७५  
 मातरिश्वा १, १६४, ४६; ५५३

मित्रः १, ११५, ६; ५५२ । १६४, ४६; ५५३ । ७, ६०, १;  
 ६२, २-३; ५५७, ५५९-५६० ऋतावान् चन्द्रः ५६०  
 यमः १, १६४, १६; ५५३  
 वरुणः १, ११५, ६; ५५२ । १६४, ४६; ५५३ । ७, ६०, १;  
 ५५७ । ६२, २, ३; ५५९-६० । ऋतावान् चन्द्रः ५६० ।  
 अ. ७, ८१, ६; ६८४ । भुवनस्य गोपाः अक्षितः अक्षितं  
 भक्षयन्, अंशुं आप्याययन् ।  
 वातः ( अन्तरिक्षदेवता ) १०, १५८, १; ५८२  
 सिन्धुः १, ११५, ६; ५५२

### (६) [१] त्वष्टा ।

अमियः अ. ११, ६, ३; ७१४  
 अचिष्टुः वा. य. २०, ४४, ६९६  
 अन्धसः जुजुषाणः २, ३६, ३; ७०३, ९२१  
 अपाकः वा. य. २०, ४४, ६९६  
 इन्द्राय शुष्मं दधत् वा. य. २०, ४४, ६९६  
 कर्ता बहोः वा. य. २९, ९; ६९७  
 माषः १, १५, ३; ९०९  
 अजान बीरं यः वा. य. २९, ९; ६९७  
 अजान विश्वं भुवनं यः वा. य. २९, ९; ६९७  
 जायत आशुतरवः अर्वा यस्मात् वा. य. २९, ९; ६९७  
 जुजुषाणः अन्धसः २, ३६, ३; ७०३, ९२१  
 त्वष्टा [ बहुशः सर्वत्र । ]  
 दुहिते बहवुं युनक्ति अ. ३, ३१, ५; ६९८  
 देवः वा. य. ६, ७; ६९४

नेष्टा १, १५, ३, ९; ९०९, ९१५  
 प्रजया संरराणः वा. य. ८, १७; ६९५  
 बहोः कर्ता वा. य. २९, ९; ६९७  
 भूरिरेताः वा. य. २०, ४४, ६९६  
 यजन् वा. य. २०, ४४, ६९६  
 रत्नधाः १, १५, ३; ९०९  
 वृषा वा. य. २०, ४४, ६९६  
 संरराणः प्रजया वा. य. ८, १७; ६९५  
 सुजनिमा १०, १८, ६; ६९२  
 सुदत्रः वा. य. २, २४, ६९३  
 सुमद्रणः २, ३६, ३; ७०३, ९२१  
 सुयुजः अ. ५, २६, ८; ६९९  
 सुहवः २, ३६, ३; ७०३, ९२१

### [२] धाता ।

अमियः अ. ११, ६, ३; ७१४  
 देवः  
 धातादेवताया उपमासूची ।  
 यथा अपरः पूर्वं न १०, १८, ५; ७०५ एवा एषां आयूषि ।

यथा अहानि पूर्वं अनु १०, १८, ५; ७०५ एवा एषां आयूषि ।  
 यथा ऋतवः ऋतुभिः स. धु यन्ति ' ' ' '  
 यां इव १८, ३, २६; ७०७ बाहुच्युता पृथिवी उपरि ।

### [३] पूषा ।

अजाश्वः १, १३८, ४; ७३१ । ६, ५८, २; ७७२  
 अदाभ्यः १७, २६, ७; ७८५  
 अनपच्युतः १०, २६, ८; ७८६  
 अनष्टपशुः १०, १७, ३; ७७५

अनष्टवेदाः ६, ५४, ८; ७५६  
 अन्त्युतिः १, १३८, १; ७२८  
 अप्रयुच्छन् १०, १७, ५; ७७७  
 अवीनां तासोवायः १०, २६, ६; ७८४

अश्वहयः रथानाम् १०, २६, ५, ७८३  
 अहेळमानः १, १३८, ३, ४, ७३०-३१  
 आशुणिः १, २३, १३-१४; ७१५-१६ । १३८, ४; ७३१ ।  
 ३, ६२, ७; ७३२ । ६, ४८, १६; ७३५ । ५३, ३, ८-९;  
 ७४१, ७४६-४७ । ५५, १, ३; ७५९, ७६१ । १०, १७, ५;  
 ७७७  
 आधवः विप्राणाम् १०, २६, ४; ७८२  
 आधीषमाणायाः पतिः १०, २६, ६, ७८४  
 इच्छमानः श्रवः ६, ५८, ३; ७७३  
 इनः १०, २६, ७; ७८५  
 इनः पुष्टीनाम् १०, २६, ७; ७८५  
 इन्दुर्ने वृषा १०, २६, ३; ७८०  
 इन्द्रस्य भ्राता ६, ५५, ५; ७६३  
 इर्यः ६, ५४, ८; ७५६  
 इळस्पतिः ६, ५८, ४; ७७४  
 ईशानः ६, ५४, ८; ७५६  
 ईशानः राधसः महः ६, ५५, २; ७६०  
 उग्रः ६, ५३, ४; ७४२  
 उदशंसः १, १३८, ३; ७३०  
 ऋतस्य रथी ६, ५५, १; ७५९  
 ऋषिः १०, २६, ५; ७८३  
 कपर्दी ६, ५५, २; ७६०  
 कविः ६, ५३, ७; ७४५  
 कामेन कृतः ६, ५८, ४; ७७४ । वा. य. ३४, ४२; ७८८  
 कृतः कामेन ६, ५८, ४; ७७४ । वा. य. ३४, ४२; ७८८  
 गोपाः भुवनस्य १०, १७, ३; ७७५  
 जनश्रीः ६, ५५, ६; ७६४  
 जारः स्वसुः ६, ५५, ४-५; ७६२-६३  
 तवस् ६, ५८, ४; ७७४  
 तुविजातः १, १३८, १; ७२८  
 दस्मः १, ४२, १०; ७२७  
 दस्मवर्चाः ६, ५८, ४; ७७४  
 दस्रः १, ४२, ५; ७२२ । ६, ५६, ४; ७६८  
 दिवः सुबन्धुः ६, ५८, ४; ७७४  
 दिधिषुः मातुः ६, ५५, ५; ७६३  
 देवः १, ४२, १; ७२८ । १३८, २; ७२९ । ६, ५५, ६; ७६४ ।  
 ५८, २; ७७७ । १०, २६, ४; ७८२

देवासः यं सूर्यायै भद्रुः ६, ५८, ४; ७७४  
 देवैः समः प्रिया ६, ४८, १९; ७३८  
 धारा रायः ६, ५५, ३; ७६१  
 धियं जिन्वः ६, ५८, २; ७७२  
 धीवतोधीवतः सखा ६, ५५, ३; ७६१  
 नपात् विमुचः १, ४२, १; ७२८ । ६, ५५, १; ७५९  
 नियुद्धः १०, २६, १; ७७९  
 नावः यस्य हिरण्ययोः अन्तः समुद्रे चरन्ति अन्तरिक्षे चरन्ति  
 ६, ५८, ३; ७७३  
 नौभिः यः सूर्यस्य दूत्यां याति ६, ५८, ३; ७७३  
 पतिः शुचस्य १०, २६, ६; ७८४  
 पतिः शुचायाः १०, २६, ६; ७८४  
 पतिः आधीषमाणायाः १०, २६, ६; ७८४  
 पथस्पतिः ६, ५३, १; ७३९  
 परः मर्त्यैः ६, ४८, १९; ७३८  
 पशुपाः ६, ५८, २; ७७२  
 पुरुषुतः ६, ५६, ४; ७६८  
 पुष्टीनां इनः १०, २६, ७; ७८५  
 पूषा [ प्रायः सर्वत्र ]  
 पृथिव्याः सुबन्धुः ६, ५८, ४; ७७४  
 प्रजानन् १०, १७, ५-६; ७७७-७८  
 प्रत्यर्धिः यज्ञियानाम् १०, २६, ५; ७८३  
 भुवना संचक्षाणः ६, ५८, २; ७७२  
 भुवना संपश्यति ३, ६२, ९; ७३४  
 भुवनस्य गोपाः १०, १७, ३; ७७५  
 भुवने विश्वे अर्पितः ६, ५८, २; ७७२  
 भ्राता इन्द्रस्य ६, ५५, ५; ७६३  
 मखः १, १३८, १; ७२८  
 मघवा ६, ५८, ४; ७७४  
 मतीनां साधनः १०, २६, ४; ७८२  
 मनुर्हितः १०, २६, ५; ७८३  
 मन्तुमत् (मः-संबो०) १, ४२, ५; ७२२ । ६, ५६, ४; ७६८  
 मयोभूः १, १३८, १-२; ७२८-२९  
 मर्त्यैः परः ६, ४८, १९; ७३८  
 महः राधसः ईशानः ६, ५५, २; ७६०  
 मातुः दिधिषुः ६, ५५, ५; ७६३  
 यज्ञानां प्रत्यर्धिः १०, २६, ५; ७८३

यावयत्सखः विप्रस्य १०, २६, ५; ७८३  
 रथानां अश्वहयः १०, २६, ५; ७८३  
 रथी ऋतस्य ६, ५५, १; ७५९  
 रथीतमः ६, ५५, २; ७६० । ५६, २-३; ७६६-६७  
 ररिवाच १, १३८, ४; ७३१  
 राधसः महः ईशानः ६, ५५, २; ७६०  
 रायः धारा ६, ५५, ३; ७६१  
 राशिः वसोः ६, ५५, ३; ७६१  
 वचस्या कृतः वा. य. ३४, ४२; ७८८  
 वसोः राशिः ६, ५५, ३; ७६१  
 वाजपस्त्यः ६, ५८, २; ७७२  
 वाजानां पतिः १०, २६, ७; ७८५  
 वाजी ६, ५५, ४; ७६२  
 वासोवायः अवीनाम् १०, २६, ६; ७८४  
 विद्वान् १०, १७, ३; ७७५  
 विपः १०, २६, २; ७८०  
 विप्राणां आधवः १०, २६, ४; ७८२  
 विसुचः नपात् १, ४२, १; ७१० । ६, ५५, १; ७५९  
 विश्वा अभि विपश्यति ३, ६२, २; ७३४  
 विश्वस्य अर्थिनः सखा १०, २६, ८; ७८६

विश्वे भुवने अर्षितः ६, ५८, २; ७७२  
 विश्वसौभगः १, ४२, ६; ७२३  
 वृषा १०, २६, ३; ७८०  
 शृण्वन् ६, ५४, ८; ७५६  
 श्रुचस्य पतिः १०, २६, ६; ७८४  
 श्रुचायाः पतिः १०, २६, ६; ७८४  
 श्रवः इच्छमानः ६, ५८, ३; ७७३  
 श्रुतः आरात् ६, ५६, ५; ७६९  
 सखा ६, ५५, २, ५; ७६०, ७६३ । १०, २६, ७; ७८५  
 सखा विश्वस्य अर्थिनः १०, २६, ८; ७८६  
 समः देवैः श्रिया ६, ४८, १; ७३०  
 सर्ववीरः १०, १७, ५; ७७७  
 साधनः मतीनम् १०, २६, ४; ७८२  
 सुबन्धुः दिवः श्रुथिव्याः च ६, ५८, ४; ७७४  
 सूरः ७, ५६, ३; ७६७  
 स्वन्नः ६, ५८, ४; ७७४  
 स्वधानान् ६, ५८, १; ७७१  
 स्वयुः जारः ६, ५५, ४-५; ७६२-६३  
 स्वस्तिकाः १०, १७, ५; ७७७  
 शिरण्यवाञ्छीमतमः १, ४२, ६; ७२३

पूषादेवताया उपमासूची ।

अजिरं न १, १३८, २; ७२९ त्वा यामनि स्तोमैः प्र कृष्वे ।  
 इन्दुः न १०, २६, ५; ७८१ सः सुष्ठुतीनां वेद ।  
 उष्ट्रः न १, १३८, २; ७२९ त्वं मृधः पीपरः ।  
 (यथा) वेः ग्रीवाः ६, ४८, १७; ७३६ एवा सूरः मा अहः ।  
 हतेः इव अच्छिद्रस्य ६, ४८, १८; ७३७ दधन्वतः ते सख्यं—।  
 द्यौः इव ६, ५८, १; ७७१ त्वं असि ।

यथा नष्टं पशुम् १, २३, १३; ७१५ हे पूषन्... धरणं दिवः ।  
 यथा पुरा ६, ४८, १२; ७३८ तथा नः त्वं नूनं अव ।  
 यथा मृधः ऋणवः १, १३८, २; ७२९ त्वा स्तोमैः प्र कृष्वे ।  
 गोभिः यवं न चर्कषत् १, २३, १५; ७१७ स मखां इन्दुभिः ।  
 वधूयुः योषणां इव ३, ६२, ८; ७३३ वाजयन्तीं धियं अव ।  
 रथं न वाजसानये ६, ५३, १; ७३९ वयं त्वा धिये अयुज्महि ।

[ ४ ] भगः ।

अदितेः पुत्रः ७, ४१, २; ७९३ । अ. ३, १६, २; १६८  
 अन्धः अ. ६, १२९, ३; ८०३  
 आहितः वृक्षेषु " "  
 उग्रः ७, ४१, २; ७९३ । अ. ३, १६, २; १६८  
 जितः " " " "  
 देवः× अ. ३, १६, ५; १७०

पुत्रः अदितेः ३, १६, ५; १७०  
 पुनःसरः अ. ६, १२९, ३; ८०३  
 पुर एता ७, ४१, ५; ७९६ । अ. ३, १६, ५; १७०  
 प्रणेता ७, ४१, ३; ७९४ । अ. ३, १६, ३; १६९  
 प्रविद्वान् अ. ५, २६, २; ८००  
 भगः [ प्रायः सर्वत्र । ]

× अत्र 'देवाः' इति ऋग्वेदपाठः । अथर्व. ३, १६, २-३, ५; १६८-७० = ऋग्वेद. ७, ४१, २-३, ५; ७९३-९४, ७९६  
 समाना एव ।

भगवान् ७,४१,५; ७९६। अ. ३,१६,५; १७०  
 मधवा ७,४१,४; ७९५  
 वसुविद् ७,४१,६; ७९७  
 विधर्ता ७,४१,२; ७९३। अ. ३,१६,२; १६८

वृक्षेषु आहितः अ. ६,१२९,३; ८०३  
 शांशापः अ. ६,१२९,१; ८०१  
 सत्यराधः ७,४१,३; ७९४। अ. ३,१६,३; १६९  
 सुयुजः अ. ५,२६,९; ८००

### भगवैवतायां उपमासूची ।

अश्वः कनिकरद् अ. २,३०,५; ७९८ भगेन अहं सहागमम् ।  
 दधिकान्वा इव शुच्ये पदाय ७,४१,६; ७९७ उवसः आत्रराय ।

रथं इव अश्वः वाजिनः ७,४१,६; ७९७ उवसः अर्वाचीनं भगं ।  
 सविता भगः सूर्या इव अ. १४,१,५३; ८०६ प्रजया परि धताम् ।

### (७) विष्णुः ।

अकुमारः १,१५५,६; ८३२  
 अदब्धः अ. १७,१,१२; १४५  
 अदान्यः १,२२,१८; ८२०  
 अदब्धेन ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५  
 अन्यरूपः सामिधे ७,१००,६; ८४७  
 अपोर्णते ब्रजम् (यः) १,१५६,४; ८३६  
 अप्रतीता [ वरुणश्च ] वा. य. ८,५९; ८७७  
 अवृकः १,१५५,४; ८३०  
 आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७,१,१०; १४३  
 इनः १,१५५,४; ८३०  
 इन्द्रस्य युज्यः सखा १,२२,१९; ८२१  
 उत्तरं सधस्थं अस्कभायत् १,१५४,१; ८२४। अ. ७,२६,  
 १; ८६१  
 उरुकमः १,१५४,५; ८२८  
 उदगायः १,१५४,१,३,६; ८२४, ८२६, ८२९। ७,१००,१;  
 ८४२। वा. य. ८,१; १०७, ८६०  
 ऋक्कभिः विमिमानः १,१५५,६; ८३२  
 ऋत्तस्य गर्भः १,१५६,३; ८३५  
 एवयाः १,१५६,१; ८३३  
 एवयावन् (घा) ७,१००,२; ८४३  
 कुचरः १,१५४,२; ८२५। अ. ७,२६,२; ८६२  
 गर्भः ऋत्तस्य १,१५६,३; ८३५  
 गिरिक्षित् १,१५४,३; ८२६  
 गिरिष्ठाः १,१५४,२; ८२५। अ. ७,२६,२; ८६२  
 गोपाः १,२२,१८; ८२०  
 घृतासुतिः १,१५६,१; ८३३  
 तन्वा मात्रया परः वृधनः ७,९९,१; ८३८

तवसः ७,१००,५; ८४६  
 तवीयान् तवसः ७,१००,३; ८४४  
 त्राता १,१५५,४; ८३०  
 त्रिदिवं आरोहन् अ. १७,१,१०; १४३  
 त्रिधातु दाधार १,१५४,४; ८२७  
 त्रिस (ष) धस्थः १,१५६,५; ८३७  
 दक्षं उत्तमं अहर्षिदं दाधार १,१५६,४; ८३६  
 देवः ७,९९,१-२; ८३८-३९  
 दैव्यः १,१५६,५; ८३७  
 धर्माणि धारयन् १,२२,१८; ८२०  
 नवीयाः १,१५६,२; ८३४  
 ना ८,२५,१५; ३५८  
 नाकं ऋष्वं उदस्तभ्राः ७,९९,२; ८३९  
 पार्थिवानि रजांसि विममे १,१५४,१; ८२४  
 पूर्वहृतौ [ वरुणश्च ] वा. य. ८,५९; ८७७  
 पूर्व्यः १,१५६,२-३; ८३४-८३५  
 पृथिव्याः प्राचीं ककुभं दाधर्थ ७,९९,२; ८३९  
 बृहच्छरीरः १,१५५,६; ८३२  
 ब्रह्मणा वावृधानः अ. १७,१,१२; १४५  
 भीमः मृगः न १,१५४,२; ८२५  
 भूर्गिः ८,२५,१५; ३५८  
 मीढ्वान् १,१५५,४; ८३०। ८,२५,१४; ३५७  
 युवा १,१५५,६; ८३२  
 वर्नयन् ८,२५,१५; ३५८  
 वावृधानः ब्रह्मणा अ. १७,१,१२; १४५  
 विचक्रमणः त्रेधा १,१५४,१; ८२४। अ. ७,२६,१; ८६४  
 विभूतशुभ्रः १,१५६,१; ८३३

विमिमानः ऋकभिः १, १५५, ६; ८३२  
 विष्णुः\* [ प्रायः सर्वत्र । ] अ. १७, १, ६-१९, १३९-५२  
 वीरतमा वीर्येभिः [ वरुणश्च ] वा. य. ८, ५९; ८७७  
 वृधानः तन्वा मात्रया परः ७, ९९, १; ८३८  
 वृषा १, १५४, ३, ६; ८२६, ८२९  
 वेधाः १, १५६, २, ५; ८३४, ८३७  
 व्रजं अपोर्णुते १, १५६, ४; ८३६  
 शविष्ठा [ वरुणश्च ] वा. य. ८, ५९; ८७०  
 शिपिविष्टः ७, ९९, ७; ८४१ । १००, ५-६; ८४६-८४७  
 शेष्यः १, १५६, १; ८३३  
 सखा युज्यः इन्द्रस्य १, २२, १९, ८२२

सखिवान् १, १५६, ४; ८३६  
 सजोषाः ८, २५, १४; ३५७  
 सप्रथाः १, १५६, १; ८३३  
 समिधे अन्यरूपः ७, १००, ६; ८४७  
 सहोभिः पत्येते [ वरुणश्च ] ८, ५९; ८७७  
 सुकृत्तरः १, १५६, ५; ८३७  
 सुजनिमा ७, १००, ४, ८४५  
 सुमज्जानिः १, १५६, २; ८३४  
 स्थविरः ७, १००, ३; ८४४  
 स्वर्दंश् १, १५५, ५; ८३१

### विष्णुदेवताया उपमासूची ।

चक्रं न १, १५५, ६; ८३२ विष्णु वृत्तं व्यतीम्... अर्वाविपत् । मित्रः न १, १५६, १; ८३३ शेष्यः सुप्रथाः भव ।  
 दिविः इव चक्षुः १, २२, २०; ८२२ सूरयः विष्णो तत्पदं । मृगः न १, १५४, २; ८२५ भीमः कुचरः गिरिष्ठा प्र स्तवते ।

### विष्णोः चिक्रमणम् ।

१, २२, १६; ८१८	विष्णुः चिक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ।	त्रिभिरित्पदेभिः ।
,, १७; ८१९	इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् ।	१, १५५, ४; ८३० यः पार्थिवानि त्रिभिरिद्विगामभिरुक्रामिष्ट ।
,, १८; ८२०	त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः ।	७, १००, ३; ८४४ त्रिदैवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा ।
१, १५४, १; ८२४	विचक्रमाणल्लेधोरुगायः ।	,, ४; ८४५ वि चक्रमे पृथिवीमेष एताम् ।
अ. ७, २६, १; ८६१	"	१, १५५, ५; ८३१ द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दंशोऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति । तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः ॥
१, १५४, २; ८२५	यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधि क्षियन्ति	
अ. ७, २६, ३; ८६३	भुवनानि विश्वा ।	
१, १५४, ३; ८२६	य इदं दीर्घं प्रथतं सधस्थमेको विममे	

### विष्णोः पदम् ।

१, २२, १७; ८१९	...विष्णुः... त्रेधा नि दधे पदम् ।	१, १५४, ४; ८२७ यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।
,, २०; ८२२	समूळहमस्य पांसुरे ॥	,, ५; ८२८ विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ।
,, २१; ८२३	तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।	,, ६; ८२९ अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ।
	तद्विप्रासो ... समिन्धते । विष्णोर्घत् परमं पदम् ॥	

### ( ८ ) विवस्वान् ।

राजा अ. ६, ११६, १; ८८०

वैवस्वतः अ. ६, ११६, १-२; ८८०-८८१

\*अत्र अथर्व १७, १, ६-१९, १३९-१५२ मंत्रेषु वर्तमानानि पदानि विष्णुस्वरूपेण वर्तमानस्य आदित्यस्य सन्ति ।

## (९) संवत्सरः कालः ।

संवत्सरपञ्चकम् ।	
संवत्सरः	वा. य. २७,४५; ८८५
परिवत्सरः	" "
इदावत्सरः	वा. य. ३०,१५; ८८६
इद्वत्सरः	" "
वत्सरः	" "
संवत्सरावयवाः ।	
उषसः	वा. य. २७,४५; ८८५
अहोरात्राः	" "
अर्धमासाः	" "
मासाः	" "
ऋतवः	" "
संवत्सरः	" "

## संवत्सरकालयो गुणबोधकपदानि ।

## संवत्सरः ।

पतिः एकाष्टकायाः	अ. ३,१०,८; ८८७
सुपर्णचित्	वा. य. २७,४५; ८८५
कालः ।	
ईश्वरः सर्वस्य	अ. १९,५३,८; ८९९
देवः परमो नु	अ. १९,५४,५; ९०६
देवः प्रथमो नु	अ. १९,५३,२; ८८३
पिता प्रजापतेः	अ. १९,५३,९; ९००
ब्रह्म	अ. १०,५३,९; ९००

## (१०) ऋतवः ।

द्वादशदेवाः, संवत्सरस्य दंष्ट्राः । अ. ११,६,२२, ९६८

## ऋतूनां नामानि ।

वसन्तः	वा. य. २१,२३, ९४० । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९	
ग्रीष्मः	वा. य. २१,२४; ९४१ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९	
वर्षाः, वर्षाणि	वा. य. २१,२५; ९४२ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९	
शरदः, शारदः	वा. य. २१,२६; ९४३ । अ. १५,३,४; ९५२ ।
अ. १२,१,३६; ९६९	
हेमन्तः	वा. य. २१,२७; ९४४ । अ. १२,१,३६; ९६९ ।
शैशिरः	वा. य. २१,२८; ९४५ । अ. १२,१,३६; ९६९ ।

## ऋत्ववयवानां मासानां नामानि ।

मधुः, माधवः	वा. य. ७,३०, ९३१ । १३,२५; ९३२
शुक्रः, शुचिः	वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,६; ९३३
नभः, नभस्यः	वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,१५; ९३४
इषः, ऊर्जः	वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,२६; ९३५
सहः, सहस्यः	वा. य. ७,३०; ९३१ । १४,२७; ९३६
तपः, तपस्यः	वा. य. ७,३०; ९३१ । १५,५७; ९३८
अंहसस्पतिः	वा. य. ७,३०; ९३१

'हविरिन्द्रे वयो दधुः' इति । वा. य. २१,२३-२८, ९४०-४५			
मन्त्रेषु इन्द्रे हविरायाधाने वसन्तादीनामितरैः सह सहकारित्वम् ।			
ऋतुनाम । देवाः । स्तोमनाम । पृष्ठ(साम)नाम । मंत्रांकः			
वसन्तः	वसवः	त्रिवृत	रथन्तरम् २१,२३; ९४०
ग्रीष्मः	रुद्राः	पञ्चदशः	बृहत् " २४, ९४१
वर्षाः	आदित्याः	सप्तदशः	वैरूपम् " २५, ९४२
शारदः	ऋभवः	एकविंशः	वैराजम् " २६; ९४३
हेमन्तः	मरुतः	त्रिणवः	शाकरम् " २७; ९४४
शैशिरः	अमृताः	त्रयस्त्रिंशः	रैवतम् " २८; ९४५

## व्रात्यस्य (ब्रह्मचारिणः) मासानां गोप्रावयः ।

[ अथर्वं १५-४ सूक्तं । ९५३-६४ ]

दिकूनाम । गोसारी । अनुहातारौ । मंत्रांकः ।
प्राची वासन्तौ मासौ बृहत् रथन्तरं च । २-३; ९५३-५४
दक्षिणा प्रैष्मौ " यज्ञायज्ञियं वामदेव्यं च । ५-६; ९५५-५६
प्रतीची ऋषिकौ " वैरूपं वैराजं च । ८-९; ९५७-५८
उदीची शारदौ " ज्यैतं नौघसं च । ११-१२; ९५९-६०
ध्रुवा हेमनौ " भूमिः अग्निः च । १४-१५; ९६१-६२
ऊर्वा शैशिरौ " द्यौः आदित्यः च । १७-१८; ९६३-६४

(५०) ऋतवः । ( ऋग्वेद-संहिता )

सूक्तमंत्र- क्रमांकः	मंत्रोक्त- ऋतुवाचक पदम्	सोमपान- पात्रम्	मन्त्रोक्त- देवतापदम् (१, १५, २, ३६-३७)	मंत्रोक्त- ऋतुवाचक पदम्	कात्यायन- सर्वानुक्रमण्युक्ता देवताः	सोमपान- पात्रम्	सूक्तमंत्र- क्रमांकः ।
१, १५,			उभयत्र				२, ३६,
१, १०७	ऋतुना	...	इन्द्रः	...	मधुः	होत्रम्	१, ११९
२, १०८	"	पोत्रम्	मरुतः	...	माघवः	पोत्रम्	२, १२०
३, २०९	"	...	त्वष्टा	...	शुकः	...	३, १२१
४, ११०	"	...	अग्निः	...	शुचिः	आग्नीध्रम्	४, १२२
५, १११	ऋतून् अनु	ब्राह्मणम्	इन्द्रः	...	नभः	ब्राह्मणम्	५, १२३
६, ११२	ऋतुना	...	मित्रावरुणौ	...	नभस्यः	प्रशास्त्रम्	६, १२४
[सायनभाष्यानुसारेण]							२, ३७,
७, ११३	...	...	द्रविणोदाः	ऋतुभिः	इषः	होत्रम्	१, १२५
८, ११४	...	...	"	"	ऊर्जः	पोत्रम्	२, १२६
९, ११५	ऋतुभिः	नेष्ट्रम्	"	"	सहः	नेष्ट्रम्	३, १२७
१०, ११६	"	तुरीयम्	"	...	...	होत्रपोत्रनेष्ट्रतुरीयाणि	४, १२८
११, ११७	ऋतुना	...	अश्विनौ	...	...	...	५, १२९
१२, ११८	"	...	अग्निः	ऋतुना	तपस्यः	...	६, १३०

१, ३६ सूक्ते मंत्रेषु ऋतुवाचकपदस्य अभावः । कात्यायन सर्वानुक्रमण्यां देवतानामानि, मासानां नामानि, न तु ऋतूणाम् ।

(११) चन्द्रमाः ।

अधिपतिः नक्षत्राणाम् अ. ५, २४, १०; ९८६  
 अप्सु अन्तः वा. य. ३३, ९०; ९७९ । अ. १८, ४, ८९;  
 ९८९  
 अर्हा केतुः ऋ. १०, ८५, १९; ९७९  
 आबन् देवेभ्यः भागं वि दधाति ,, ,,  
 एति कनिकदत् वा. य. ३३, ९०; ९७९  
 केतुः अर्हाम् ,,  
 चन्द्रः वा. य. २२, २८; ९७५  
 चन्द्रमाः ( सर्वत्र )  
 जातः मनसा ऋ. १०, ९०, १३; ९७३ । वा. य. ३१, २२;  
 ९७८  
 जायते पुनः वा. य. २३, १०; ९७७  
 जायमानः नभः नभः ऋ. १०, ८५, १९; ९७९  
 देवः अ. ११, ६, ७; ९९१  
 दे०[अदितिः०] १६

नक्षत्रैः उदक्रामत् अ. १९, १९, ४; ९२०  
 नक्षत्राणां अधिपतिः अ. ५, २४, १०; ९८६  
 नक्षत्राणां ईशे अ. ६, ८६, २; १०००  
 पिशाङ्गं रयिं बहुलं पुरुस्पृहं एति वा. य. ३३, ९०; ९७९  
 वत्सः दिशां धेनूनाम् अ. ४, ३९, ८; ९९९  
 वृत्रहा अ. १९, २७, २; ९९२  
 शतशृण्व्यः अ. १, ३, ४; ९८०  
 शरस्य पिता ,, ,,  
 सुपर्णः दिवि आ धावते वा. य. ३३, ९०; ९७९ । अ. १८,  
 ४, ८९; ९८९  
 सोमः यं आहुः चन्द्रमाः अ. ११, ६, ७; ९९१  
 हरिः वा. य. ३३, ९०; ९७९  
 आयुर्वेदप्रकरणे ।  
 अन्तरिक्षेण पतति अ. ६, ८०, १; १५८८



अवचा कशत् विश्वा भूता	अ.	६,८०,१; १५८८
जन्म अप्सु	अ.	६,८०,३; १५९०
दिव्यः श्वा	अ.	६,८०,१,३; १५८८, १५९०
महिमा अनाः पृथिव्याम्	६,८०,३; १५९०	
,, अन्तः समुद्रे	,, ,,	
श्वा दिव्यः	अ	६,८०,१,३; १५८८, १५९०
सथस्थं दिवि	अ	६,८०,३; १५९०

## सम्भ्ररमयः ।

विष्णुतः ऋ. १,१०५,१; ९८९

हिरण्यनेमयः " " "

## सम्भ्ररस्य द्विषणाशानी शक्तिः ।

अर्चिः अ. २,२२,३; ९८३

तपः " १; ९८१

तेजः " ५; ९८५

होचिः " ४; ९८४

हरः " २; ९८२

## (१२) रात्रिः ।

अन्तः महान्तः महिमान् अस्याम् अ. ३,१०,४; १०७७

अमर्त्या १०,१२७,२; १००४

अमावारया रात्रिः अ. १,१६,१; १०१७

अध्वक्षगा अ. १९,४९,१; १०५२

आयती १०,१२७,१,३, १००३, १००५

इषिरा अ. १९,४९,१; १०५२

उपायती [ धेनुः वा ] अ. ३,१०,२; १०७५

उर्वी अ. १९,४७,२; १०३१

उशती अ. १९,४५,२, ८; १०५३, १०५९

केशाः [ रात्री भवति ] अ. १५, २, ५, १३, २१, २९,

१०२१-१०२४

एताश्च नाम वे अमि अ. १९,४८,६; १०४४

चक्षुर्मती अ. १९,४९,८, १०५९

चित्रावसुः वा य. ३,१८, १०३१

जनित्री अ. ३,१०,४; १०७७

ज्योतिषा तमः बाधते १०,१२७,२; १००४

ज्योतिषा सुज्योतिः वा. य. ३७,२१; १०१६

तमः अप हामते १०,१२७,३; १००५

तमः ज्योतिषा बाधते १०,१२७,२; १००४

तमस्वती अ. १९,४७,२; १०३१

त्वेषं ते तमः आ वर्तते वा. य. ३४,३२; १०१५

दमूनाः अ. १९,४९,१; १०५२

दिवः दुहिता १०,१२७,८; १०१०। अ. १९,४७,५; १०३४

दुहिता दिवः " "

देवी १०,१२७,१-३; १००३-५

धेनुः [ धेनुः वा ] अ. ३,१०,२; १०७५

नवगत् वधूः [ धेनुः वा ] अ. ३,१०,४; १०७७

पत्नी संवत्सरस्य [ " ] अ. ३,१०,२; १०७५

पिशङ्गिला वा. य. २३,१२; १०१२

पुरुत्रा १०,१२७,१; १००३

प्रतिमा संवत्सरस्य ३,१०,३; १०७६

प्रथमा या व्यौच्छत् [ धेनुर्वा ] अ. ३,१०,४; १०७७

प्रविष्टा आसु इतरासु " " "

वृहती वा. य. ३४,३२; १०१५

भद्रा अ. १९,४७,२,७; १०३१, १०३६। ४९,२; १०५३

भद्राहं अस्तु रात्री अ. ६,१२८,२; १०३०

माता अ. १९,४८,२; १०४०

माता वनस्पतेः सिलाचीनाम्न्याः अ. ५,५,१; १०९०

माता हिमस्य अ. १९,४९,५; १०५६

युवतिः अ. १९,४९,१,८; १०५२, १०५९

योषा अ. १९,४९,१; १०५२

रात्रिः [ प्रायशः सर्वत्र ]

रात्रिः तस्मात् [ ब्रह्मणः ] अजायत अ. १३,४,३०; १०१९

रात्र्याः सः [ ब्रह्मा ] अजायत "

रेवती अ. १९,४७,४; १०३३

वर्या अ. १९,४९,३; १०५४

वाजिनी अ. १९,४७,४; १०३३

विमाती अ. १९,४९,४; १०५५

विभावरी अ. १९,४८,२,४; १०४०, १०४२। ५०,७,

१०५१। ४९,६; १०५७

विश्वा श्रियः अधि अधित १०,१२७,१; १००३

संवत्सरस्य पत्नी अ. ३,१०,२; १०७५

संवत्सरस्य प्रतिमा अ. ३, १०, ३; १०७६  
सम्भृतश्रीः अ. १९, ४९, १; १०५२  
सुभगा अ. १९, ४९, ३, ५; १०५४, १०५६ । अ. १९, ५०, ६;  
१०५०

सुमङ्गली अ. ३, १०, २; १०७५  
सुप्रियि [ संबो० ] अ. १९, ४९, ४; १०३३  
सुहवा अ. १९, ४९, १, ५; १०५२, १०५६  
हिमस्य माता अ. १९, ४९, ५; १०५६

### रात्रिवेवताया उपमासूची ।

यथा इत् अन्यान् उपायसि अ. १९, ५०, ६; १०५० अस्मान्  
भोजय ।  
ऋणा इव १०, १२७, ७; १००९ कृष्णं तमः यातय ।  
अप्लवाः गम्भीरं इव अ. १९, ५०, ३; १०४७ अरातयः रात्रिं न ।  
गाः इव १०, १२७, ८; १०१० हे उषः ते उप आकरम् ।  
चमसः न अ. १९, ४९, ८; १०५९ विष्टः ।  
दिव्याः न ,, ,, क्षामं उक्थाः ।

मित्रः इव अ. १९, ४९, २; १०५३ स्वधाभिः अभि तिष्ठते ।  
राजा इव अ. १९, ४९, ६; १०५७ जेषमे अस्य सोमस्य ।  
वृक्षे न वसति वयः १०, १२७, ४; १००६ वयं ते अविदमहि ।  
(यथा) शाम्नाकः प्रपतन्नपवान् १९, ५०, ४; १०४८ एवा रात्रि  
प्र पातय ।  
स्तोमं न ऋ. १०, १२७, ८; १०१० हे रात्रि... अभिगुणे ।

### (१३) पूर्णिमा ।

पूर्णा पश्चात् अ. ७, ८०, १; १०७९  
पूर्णा पुरस्तत् " "  
पूर्णा मध्यतः " "  
पौर्णमासी अ. ७, ८०, १; १०७९ । अ. १५, २, १४; १०८९

प्रथमः अपानः व्रात्यस्य अ. १५, १६, १; १०८२  
प्रथमा यज्ञिया अक्षां रात्रीणां अतिशर्चरेषु अ. ७, ८०, ४;  
१०८१  
यज्ञिया अ. ७, ८०, ४; १०८१

### (१४) राका ।

रराणा सहस्रपोषम् २, ३२, ५; १०८४  
राका २, ३२, ४-५; १०८३-८४  
सुभगा २, ३२, ४-५; १०८३-८४

सुमनाः २, ३२, ५; १०८४  
सुस्तु(ष्टु)ती २, ३२, ४; १०८३  
सुहवा २, ३२, ४; १०८३

### (१५) अमावास्या ।

अमावास्या अ. ७, ७९, १-४; १०८५-८८ । अ. १५, २, १४;  
१०८९ । १६, ३; १०९० । १७, ९; १०९१  
ऊर्जं दुहाना अ. ७, ७९, ३; १०८७  
ऊर्जं पुष्टं वसु आवेशयन्ती अ. ७, ७९, ३; १०८७

विश्ववारा अ. ७, ७९, १; १०८५  
व्रात्यस्य तृतीयः अपानः अ. १५, १६, ३; १०९०  
संगमनी वसुनाम् अ. ७, ७९, ३; १०८७  
सुभगा अ. ७, ७९, १; १०८५

### (१६) सिनीवाली ।

अभियन्ती अ. ७, ४६, ३; १०९४  
इन्द्रं प्रतीची " "  
देवानां स्वसा अ. २, ३२, ६; १०९२

देवी अ. ७, ४६, ३; १०९४  
पृथुष्टुका अ. २, ३२, ६; १०९२  
बहुसूरी अ. २, ३२, ७; १०९३

विदपत्नी अ. २, ३२, ७; १०९३ । ७, ४६, ३; १०९४  
 विष्णोः पत्नी अ. ७, ४६, ३; १०९४  
 सदस्रस्तुका " "  
 सिनीवाली [प्रायशः सर्वत्र]  
 सु+अं (=स्वं) गुरिः अ. २, ३२, ७; १०९३  
 सुकपर्दी वा. य. ११, ५६; ९

सुकुरीरा वा. य. ११, ५६; ९  
 सुबाहुः अ. २, ३२, ७; १०९३  
 सुसू(षू)मा अ. २, ३२, ७; १०९३  
 स्वसा देवानाम् अ. २, ३२, ६; १०९२  
 स्वौपशा वा. य. ११, ५६; ९

## (१७) कुहूः ।

उषती अ. ७, ४७, २; ११०५  
 कुहूः अ. ७, ४७, १-२; ११०४-५  
 चिकितुषी अ. ७, ४७, २; ११०५  
 देवानां अमृतस्य पत्नी ,, ,,

देवी अ. ७, ४७, १; ११०४  
 विष्मनापस अ. ७, ४७, १; ११०४  
 सुकृत " "  
 सुदवा " "  
 हव्या ,, २; ११०५

## (१८) नक्षत्राणि ।

अष्टाविंशानि अ. १९, ८, २; ११३०  
 चित्राणि अ. १९, ७, १; ११२४  
 जवानि भुवने अ. १९, ७, १; ११२४  
 रोचनानि " "  
 व्रात्यस्य चतुर्थो व्यानः अ. १५, १७, ४; ११२३  
 शरमानि अ. १९, ८, २; ११३०  
 शिवानि " "  
 नक्षत्राणि अस्य ब्रह्मणः रूपम् अ. ९, ७, १५; १११८  
 इदं ब्रह्म अन्यत् नक्षत्रम् अ. १०, २, २३; ११२१  
 सरौष्ठपाणि अ. १९, ७, १; ११२४

## नक्षत्राणां राजा ।

नक्षत्रराजा अ. ६, १२८, ४; १११७  
 षाकधूमः अ. ६, १२८, ४; १११७

## क्रमशः नक्षत्राणां नामानि ।

१ कृत्तिका अ. १९, ७, २; ११२५  
 २ रोहिणी " "  
 ३ मृगशिरः " "  
 ४ आर्द्रा " "  
 ५ पुनर्वसू " "  
 ६ पुष्यः " "

७ आश्लेषा अ. १९, ७, २; ११२५  
 ८ मघा " "  
 ९ पूर्वा अ. १९, ७, २; ११२६  
 १० फल्गुन्यौ " "  
 ११ हस्तः " "  
 १२ चित्रा " "  
 १३ स्वाति " "  
 १४ विशाखे " "  
 १५ अनुराधा " "  
 १६ ज्येष्ठा " "  
 १७ मूलम् " "  
 १८ पूर्वा अषाढा अ. १९, ७, ४; ११२७  
 १९ उत्तरा " " "  
 २० अभिजित् " "  
 २१ श्रवणः " "  
 २२ शतभिषग् अ. १९, ७, ५; ११२८  
 २३ द्वया " "  
 २४ प्रोष्ठपदा " "  
 २५ रेवती " "  
 २६ अश्वयुजौ " "  
 २७ भरप्यः " "

निपातभाक्-अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

उशान् विश्वान् देवान् २, ३७, ६; ९३०  
 ऋतावान् ७, ६२, ३; ५६०  
 गोप्ता अ. १७, १, ३०; १६३  
 चन्द्रः ७, ६२, ३; ५६०  
 तुरीयः अ. १, १६, १; १०१७  
 शुक्षः १, १३६, ६; २०८  
 ना ८, २५, १५; ३५८  
 पृथिव्याः वशी अ. ६, ८६, २; १०००  
 प्रज्ञा वा. य. ४, ११; १६६  
 भूर्णिः ८, २५, १५; ३५८  
 भेषजं हिमस्य वा. य. २३, १०; ९९७  
 मीढ्वान् ८, २५, १४; ३५७  
 यज्ञः वा. य. ४, ११; १६६

यज्ञनीः १, १५, १२; ९१८  
 यातुहा अ. १, १६, १; १०१७  
 वनीयान् ८, २५, १५; ३५८  
 वशी पृथिव्याः अ. ६, ८६, २; १०००  
 वसुः २, ३७, ६; ९३०  
 विप्रः २, ३६, ४; ९२२  
 विश्वान् देवान् उशान् २, ३७, ६; ९३०  
 सजोषाः ८, २५, १४; ३५७  
 होता २, ३६, ४; ९२२

द्रविणोदा अग्निः ।

अरिषण्यन् २, ३७, ३; ९२७  
 धृष्णुः " " "  
 वनस्पतिः " " "

निपातभाक्-इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 अक्षितः " " "  
 अक्षितं भक्षयन् " " "  
 अदन्धः अ. १७, १, १२; १४५  
 आप्याययन् अंशुम् अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 आरोहन् त्रिदिवम् अ. १७, १, १०; १४३  
 ईज्यः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 ईशिषे सर्वस्य जगतः २, ३६, १; ९१९  
 ऋषिभिः सहस्कृतः वा. य. ३३, ८३; १२०  
 गृणानः दिवः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 गोजितः " " "  
 गोपाः भुवनस्य अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 प्राता मरुताम् वा. य. १८, २०; ६७  
 त्रिदिवम् आरोहन् अ. १७, १, १०; १४३  
 दिवः गृणानः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 देवः वा. य. ८, २; १०८  
 शुक्षः १, १३६, ६; २०८  
 ना ८, २५, १५; ३५८  
 पुरुकृतः अ. १७, १, ११; १४४  
 प्रथमः २, ३६, १; ९१९  
 प्रयौः २, ३६, ५; ९२३

प्रियधामा अ. १७, १, १०; १४३  
 ब्रह्मणा वातृधानः अ. १७, १, १२; १४५  
 भक्षयन् अक्षितम् अ. ७, ८१, ६; ६८४  
 भुवनस्य गोपाः " " "  
 भूर्णिः ८, २५, १५; ३५८  
 मीढ्वान् ८, २५, १४; ३५७  
 वनीयान् ८, २५, १५; ३५८  
 वशी ८, ६७, ८; ९२  
 वातृधनः ब्रह्मणा अ. १७, १, १२; १४५  
 विश्वजित् अ. १७, १, ११; १४४  
 विवासहिः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 श्रुतः ८, ६७, ८; ९२  
 सजोषाः ८, २५, १४; ३५७  
 सन्धनाजितः अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 सर्वविद् " " "  
 सहमानः " " "  
 सहस्कृतः ऋषिभिः वा. य. ३३, ८३; १२०  
 सहीयान् अ. १७, १, १-५; १३४-१३८  
 सहोजितः " " "  
 सासहानः " " "  
 स्वजितः " " "

## निपातभाक्-सोमदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अन्धः २, ३७, ३; ९२७	प्रहुतः २, ३६, १; ९१९
अमर्त्यः २, ३७, ४; ९२८	बाह्वोः सहः ओजः हितः ( इन्द्रस्य ) २, ३६, ५; ९२३
अमृतः " "	मत्सरासः ( इन्द्रवः ) १, १५, १; ९०७
आमृतः इन्द्राय २, ३६, ५; ९२३	मधु २, ३६, ४; ९२२
तद्योक्तसः इन्द्रवः १, १५, १; ९०७	राजा अ. ५, २१, ११; १८१
सुरीयं पात्रं ( पात्रस्थम् ) २, ३७, ४; ९२८	वषट्कृतः २, ३६, १; ९१९
नृम्णवर्धनः २, ३६, ५; ९२३	सुतः २, ३६, ५; ९२३
प्रयः २, ३७, ४; ९२८	हितः २, ३७, ४; ९२८
प्रस्थितम् २, ३६, ४; ९२२	

## निपातभाक्-मरुदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अजिषु प्रियाः २, ३६, २; ९२०	भूर्णयः ८, २५, १५; ३५८
उग्राः अ. ५, २१, ११; १८१	मीढ्वांसः ८, २५, १४; ३५७
ऋषिभिः शुभ्रासः २, ३६, २; ९२०	यज्ञैः संमिष्ठाः २, ३६, २; ९२०
दिवः नरः २, ३६, २; ९२०	यामन् पृषतीभिः " "
नरः ८, २५, १५; ३५८	वनुषः ( वनीयांसः ) ८, २५, १५; ३५८
नरः दिवः २, ३६, २; ९२०	शुभ्रासः ऋषिभिः २, ३६, २; ९२०
पृश्निमातरः अ. ५, २१, ११; १८१	सजोषसः ८, २५, १४; ३५७
पृषतीभिः यामन् २, ३६, २; ९२०	संमिष्ठाः यज्ञैः २, ३६, २; ९२०
प्रियाः अजिषु " "	सुदानवः १, १५, २; ९०८
भरतस्य सूनवः " "	सूनवः भरतस्य २, ३६, २; ९२०

## निपातभाक्-अश्विनौदेवताया गुणबोधकपदानि ।

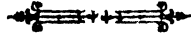
दीव्यमी १, १५, ११; ९१७	यज्ञवाहसा १, १५, ११; ९१७
नरौ ८, २५, १५; ३५८	वनीयांसौ ८, २५, १५; ३५८
पुंकरलजा अ. ५, २५, ३; १०९९	वाजिनीवसू २, ३७, ५; ९२९
भूर्णा " "	शुचिमतता १, १५, ११; ९१७
मीढ्वांसौ " १४; ३५७	सजोषसौ ८, २५, १४; ३५७

## निपातभाक्-बृहस्पतिदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अंशुं आप्याययन् अ. ७, ८१, ६; ६८४	ऋतस्थाः पृथिव्याः अ. ४, १, ४; १७४
अक्षितः " "	कविः अ. ४, १, ७; १७७
अक्षितं भक्षयन् " "	गोपाः भुवनस्य अ. ७, ८१, ६; ६८४
अथर्वा अ. ४, १, ७; १७७	जगिता विश्वेभाम् अ. ४, १, ७; १७७
आप्याययन् अंशुम् अ. ७, ८१, ६; ६८४	दिवः ऋतस्थाः अ. ४, १, ४; १७४
ऋतस्थाः दिवः अ. ४, १, ४; १७४	देवः पूर्यः अ. ४, १, ६; १७६

देवता अ. ४, १, ६, १७६  
 देवबन्धुः ,, ७, १७७  
 पिता ,, ,,  
 पूर्यः देवः ,, ६, १७६  
 पृथिव्याः ऋतस्थाः अ. ४, १, ४, १७४  
 प्रजानन् अ. २, २६, २, १०३८

भक्षयन् अक्षितम् अ. ७, ८१, ६, ६८४  
 भुवनस्य गोपाः अ. ७, ८१, ६, ६८४  
 महान् अ. ४, १, ४, १७४  
 विश्वेषां जनिता अ. ४, १, ७, १७७  
 सम्राट् अ. ४, १, ५, १७५  
 स्वधावान् अ. ४, १, ७, १७७



## अदितेः, आदित्यानां च पुनरुक्त-मन्त्रभागाः।

### ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२०] १।११।६ ( कण्वो घौरः । आदित्याः )  
 विश्वं लोकमुत् एमना ।

( अग्निः १४५६ ) ८।८४।३ ( उशाना काश्यः । अग्निः )  
 रक्षा लोकमुत् एमना ।

### ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम्।

[२२] २।२७।२ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः )  
 मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।

( आयुर्वेदः १९५९ ) १०।१०।६ ( यमी वैवस्वती ऋषिका ।  
 यमः )

( ३३१ ) ७।६४।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )  
 मित्रो अर्यमा ... वरुणो जुषन्त ।

... .. वरुणस्य धाम ।

[२४] २।२७।४ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः )  
 देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

[२९] २।२७।९ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः )  
 त्री रोचना दिव्या धारयन्त ।

( इन्द्रः १६६७ ) ५।२९।१ ( गौरिवातिः शाक्यः । इन्द्रः )

( विश्वे देवाः ११९ ) १।१६४।२१ ( दीर्घतमा औचथ्यः ।  
 विश्वे देवाः )

[३७] २।२७।१७ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः )  
 = २।२८।११ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः )

= ( विश्वे देवाः १५७ ) २।२९।७ ( कूर्मो गार्त्समदो,  
 गृत्समदो वा । विश्वे देवाः )

[२७] २।२७।७ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्याः )  
 बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्म ।

माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाह आ विदं शूनमापेः ।  
 मा रायो राजम्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदधे सुवीराः ॥

### ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४२] ७।५२।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )  
 मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत् कर्म वसवो यस्वयध्वे ।  
 ( विश्वे देवाः ३९९ ) ६।५१।७ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । आदित्याः )

मा व एनो अन्यकृतं भुजेम ... ।  
 [४३] ७।५२।३ तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त ।  
 ( विश्वे देवाः ४९५ ) ७।४२।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः )

- प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त ।  
 [४३] ७।५२।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )  
 रत्नं देवस्य सवितुरियानाः ।  
 (४७२) ७।३८।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता )  
 ..... सवितुरियानः ।  
 [४४] ७।६६।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )  
 यदद्य सूर उदिते ।  
 ( ५२ ) ७।६६।२२ सूक्तैः सूर उदिते ।  
 (विश्वे देवाः ५३०) ८।२७।२९ (मनुर्वैवस्वतः। विश्वे देवाः)  
 यदद्य सूर उद्यति ।  
 विश्ववेदसो ..... मध्यन्दिने ।  
 ( विश्वे देवाः ५३२ ) ८।२७।२२ यदद्य सूर उदिते...  
 मध्यन्दिने । विश्ववेदसो ... ।

- [४४] ७।६६।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः)  
 सुवाति सविता भगः ।  
 (४५४) ५।८२।३ ( श्यावाश्व आत्रेयः । सविता )  
 [४६] ७।६६।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )  
 उत स्वराजो अदितिः ।  
 ( इन्द्रः ३०१ ) ८।१२।१४ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः )  
 उत स्वराजे अदितिः ।  
 [४७] ७।६६।७ प्रति वां सूर उदिते ।  
 (६३१) ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रवरुणाः)  
 [५०] ७।६६।१० अग्निजिह्वा क्रतावृधः ।  
 ( अग्निः ९९ ) १।४४।१४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)  
 [५२] ७।६६।१२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )  
 यूयमृतस्य रथ्यः ।  
 (विश्वे देवाः ५६१) ८।८३।३ (कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः)

### ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

- [५४] ८।१८।१ ( इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )  
 एषां सुक्लं भिक्षेत मर्त्यः ।  
 (मरुतः ६०) ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)  
 [५६] ८।१८।३ ( इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )  
 तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
 ( विश्वे देवाः २३८ ) ४।५५।१० ( वामदेवो गौतमः ।  
 विश्वे देवाः )  
 [ ,, ] ८।१८।३ भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
 ( अग्निः ३१ ) १।२६।४ (शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः)  
 रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
 [ ,, ] ८।१८।३ ( इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )  
 वरुणो मित्रो अर्यमा । शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ।  
 (विश्वे देवाः ७९८) १०।१२६।७ ( कुलमलबर्हिषः शैलषिः  
 अंहोमृगवा वामदेव्यः । विश्वे देवाः )  
 वरुणो ... । शर्म ... सप्रथ आदित्यासो यदीमहे ।  
 [ ३ ] ८।१८।५ ( इरिम्बिठिः काण्वः । अदितिः )  
 अंहोश्चिदुरुचक्रयः ।  
 ( २७७ ) ५।६७।४ ( यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
 [५७] ८।१८।२० ( इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )  
 अप सेधत दुर्मत्सिम् ।

- ( आयुर्वेदः २३०८ ) १०।१७।२ ( ऊर्ध्वप्रावा सर्प  
 आर्षुदितिः । प्रावाणः )  
 [५९] ८।१८।२२ ( इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )  
 तत् सु नः.....आदित्या यन्मुमोचति ।  
 (९९) ८।६७।१८ ( मरुतः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मान्यः  
 बहवो वा मरुत्या जालनदाः । आदित्याः )  
 तत् सु नो...आदित्या ... ।  
 [६१] ८।१८।२४ दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।  
 (अश्विनौ २२४) २।४१।८ (गृत्समदः शौनकः । अश्विनौ)  
 दुःशंसो मर्त्यो रिपुम् ।  
 [६३] ८।१८।२६ ( इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )  
 आ शर्म पर्वतानां अपां वृणीमहे ।  
 ८।३१।१० ( मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः )  
 आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे नदीनाम् ।  
 [६८] ८।१८।२१ नृवद वरुण शंस्यम् ।  
 ( विश्वे देवाः ५६२ ) ८।८३।४ ( कुसीदी काण्वः ।  
 विश्वे देवाः )  
 वामं वरुण शंस्यम् ।  
 [६९] ८।१८।२२ प्र सू न आयुर्जावसे तिरेतन ।  
 १०।५९।५ ( बन्धुः भ्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः । असुनीतिः)  
 जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः ।

- [७१] ८।१९।३५ ( सोमरिः काण्वः । आदित्याः )  
स्यामेदतस्य रथ्यः ।  
( ५२ ) ७।६६।१२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )  
यूयमुतस्य रथ्यः ।
- [७२] ८।४७।१ ( त्रित आप्यः । अदित्याः )  
महि वो महतामवो ।  
( ८८ ) ८।६७।४ ( मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मान्यः  
बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः )
- [ ,, ] ८।४७।१ वरुण मित्र दाशुषे ।  
( २९४ ) ५।७।३ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
वरुण मित्र दाशुषः ।
- [७२-८४] ८।४७।१-१३ ( त्रित आप्यः । आदित्यः )  
अनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ।  
( उषा १८७-९१ ) ८।४७।१४-१८ ( त्रित आप्यः ।  
आदित्योषसः )
- [७६] ८।४७।५ स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि ।  
( इन्द्रः ९ ) १।४।६ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः )
- [८०] ८।४७।९ अदितिः शर्म यच्छतु ।  
६।७।१२ ( पायुर्भारद्वाजः । इषवः )
- [ ,, ] ८।४७।९ ( त्रित आप्यः । आदित्याः )

- माता मित्रस्य रेवतो अर्यम्णो वरुणस्य ।  
( विश्वे देवाः ५९६ ) १०।३६।३ ( लुसो धानाकः । विश्वे देवाः )  
माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।
- [८०] ८।४७।९ अर्यम्णो वरुणस्य च ।  
( २०४ ) १।१३६।२ ( परुच्छेपो दैवोदासि । मित्रावरुणौ )
- [८५] ८।६७।१ ( मत्स्यः साम्मदः मैत्रावरुणिर्मान्यः बहवो वा  
मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः )  
सुमृलीकौ अभिष्टयं ।  
( ६ ) ८।६७।१० सुमृलीकामभिष्टये ।
- [८८] ८।६७।४ महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन् ।  
( ७९ ) ८।४७।१ ( त्रित आप्यः । आदित्याः )  
... वरुण मित्र दाशुषे ।
- [ ,, ] ८।६७।४ वरुण मित्रार्यमन् ।  
( २७४ ) ५।६७।१ ( यजत आत्रेयः । मित्र वरुणौ )
- [ ,, ] ८।६७।४ अवांस्या वृणीमहे ।  
८।२६।२१ ( विश्वमना वैयश्वः, व्यश्वो वाङ्गिरसः । वायुः )
- [९०] ८।६७।६ तेना नो अधि वोचत ।  
( मरुतः १०७ ) ८।२०।२६ ( सोमरिः कण्वः । मरुतः )
- [९२] ८।६७।१८ आदित्या यन्मुमोचति ।  
( ५२ ) ८।१८।१२ ( इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )

## ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [१८५] ३।५९।१ ( गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः )  
मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणः ।  
( विश्वे देवाः ४६५ ) ७।३६।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
विश्वे देवाः )  
जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः ।
- [ " ] ३।५९।१ मित्रो दाधार पृथिवीमुत धाम् ।  
( विश्वे देवाः ४०० ) ६।५।१८ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
नमो दाधार ... .. ।
- [ " ] ३।५९।१ मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत ।  
( आयुर्वेदः ८७३ ) ७।४७।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आपः )  
सिन्धुभ्यो हव्यं ... .. ।
- [१८७] ३।५९।३ अनमीवास इळया मदन्तः ।  
( विश्वे देवाः १८९ ) ३।५४।२० ( प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,  
प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः )  
३० [ अदितिः ] १७

- ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः ।
- [१८८] ३।५९।४ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे  
सौमनसे स्याम ।  
( अग्निः ४६७ ) ३।१।२१ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )
- [१९३] ३।५९।९ ( विश्वामित्रो गाथिनः । मित्र )  
जनाय वृक्तबर्हिषे ।  
( अग्निः ९०५ ) ५।२३।३ ( शुभ्रो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः )  
जनासो वृक्तबर्हिषः ।  
( इन्द्रः १७४ ) ५।३।५६ ( प्रभुवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः )  
जनासो वृक्तबर्हिषः ।  
( अश्विनौ ४०० ) ८।५।१७ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
जनासो वृक्तबर्हिषः ।  
( इन्द्रः २७९ ) ८।६।३७ ( वत्सः काण्वः । इन्द्रः )  
जनासो वृक्तबर्हिषः ।



## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[ १९६ ] १।१।७ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ )

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम् ।

( ३३६ ) ७।६।५।१ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । मित्रावरुणौ )

मित्रं हुवे वरुणं पूतदक्षम् ।

( २५५ ) ५।६।५।१ ( अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ )

वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे ।

[ १९७ ] १।२।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ )

ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधौ ।

( २२२ ) १।२।५।१ ( दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ )

ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।

[ २०१ ] १।२३।६ ( मेधातिथिः काण्वः । मित्रावरुणौ )

धरतां नः सुराधसः ।

( इन्द्रः ६४६५ ) ३।५३।१३ ( विश्वामित्रो गायिनः । इन्द्रः )

करदिन्नः सुराधसः ।

[ २०३ ] १।१३६।१ ( परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )

ता राम्राजा मृतासुती ।

( २३५ ) २।४।१।६ ( गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ )

[ २०४ ] १।१३६।२ ( परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )

मित्रस्य ... अर्यग्णो वरुणस्य च ।

( ८० ) ८।४७।९ ( त्रित आप्त्यः । आदित्याः )

मित्रस्य ... अर्यग्णो वरुणस्य च ।

[ २०५ ] १।१३६।३ ( परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )

सचेते...। ... आदित्या दानुनस्पती ।

( २३५ ) २।४।१।६ ( गृत्समदः शौनकः । मित्रावरुणौ )

आदित्या दानुनस्पती । सचेते... ।

[ २०६ ] १।१३६।४ अयं मित्राय वरुणाय शंतमः ।

( सोमः ९७६ ) ९।१०४।३ ( पर्वतनारदो काण्वो,

काश्यपौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ वा । पवमानः सोमः )

यथा मित्राय ... ... ।

[ २१० ] १।१३७।१ अस्मन्ना गन्तमुप नः ।

( २१२ ) १।१३७।३ ( परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )

[ ,, ] १।१३७।१ ( परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )

सोमः शुक्रा गवाशिरः ।

( सोमः ५०५ ) ९।६।१।८ ( कश्यपो मारीचः । पवमानः

सोमः )

[ २११ ] १।१३७।२ सोमासो दध्याशिरः ।

( इन्द्रः १८ ) १।५।५ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः )

[ ,, ] १।१३७।२ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।

( अश्विनौ ४५ ) ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

[ ,, ] १।१३७।२ ( परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )

चारुर्कृताय पीतये ।

( सोमः १४४ ) ९।१७।८ ( असितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः )

[ २१२ ] १।१३७।३ अंशुं दुहन्यद्विभिः सोमं दुहन्यद्विभिः ।

( सोमः ५२२ ) ९।६।५।१५ ( ऋगुर्वारुणिर्जमदभिर्भोग्वो

वा । पवमानः सोमः )

तीमं दुहन्यद्विभिः ।

[ २१६ ] १।१५।१।४ ( दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ )

ऋतावानावृताम घोषथो बृहत् ।

( ३५० ) ८।२५।४ ( विधमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ )

... ... घोषतो बृहत् ।

[ २२२ ] १।१५।१।१ ऋतेन मित्रावरुणा सचेथे ।

( १९७ ) १।२।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ )

ऋतेन मित्रावरुणौ ।

[ २२५ ] १।१५।१।४ प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।

( ३२४ ) ७।६।१।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )

शंसा मित्रस्य ... ... ।

( आयुर्वेदः १९५९ ) १०।१०।६ ( यमो वैवस्वत ऋषिः ।

यमी )

बृहन्मित्रस्य ... ... ।

( इन्द्रः २६६९ ) १०।८९।८ ( रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्रः )

प्र ये मित्रस्य ... ... ।

( २७ ) २।२७।७ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । आदित्यः )

बृहन्मित्रस्य वरुणस्य ... ।

( अग्निः १७६१ ) ४।५।४ ( वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः )

... वरुणस्य धाम ... मित्रस्य ।

[ २२६ ] १।१५।१।५ ( दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ )

अनशो जातो अनभीष्टुरर्वा ।

४।३६।१ ( वामदेवो गौतमः । ऋभवः )

- ... ... अनभीष्टुरर्वा ।

[२२८] १।१५२।७ आ वां मित्रावरुणा हृष्यजुष्टिं ।  
 (३३९) ७।६५।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )  
 आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।  
 (२३६) ३।६२।१६ ( गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।  
 मित्रावरुणौ )  
 [२२९] १।१५३।१ ( दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ )

हृष्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।  
 ( इन्द्रः ३१५९ ) ४।४२।९ ( त्रसदरयुः पौरुत्स्यः ।  
 इन्द्रावरुणौ )  
 हृष्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।  
 ( इन्द्रः ३१९२ ) ७।८४।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
 इन्द्रावरुणौ )  
 हृष्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।

### ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[२३३] २।४१।४ ( गुत्समद [ अङ्गिरसः शौनदोत्रः पश्चाद् ]  
 भार्गवः शौनकः )  
 अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृषा ।  
 ( अश्विनौ ३९ ) १।४७।१ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )  
 अयं वां मधुमत्तमः सुतः... ।

[२३५] २।४१।६ ता सभ्राजा घृतासुती ।  
 ( २०३ ) १।१३६।१ ( परच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ )  
 [ ,, ] २।४१।६ आदित्या दानुनस्पती । सचेते ।  
 ( २०५ ) १।१३६।३ ( परच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ )  
 सचेते... । आदित्या दानुनस्पती ।

### ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२३६] ३।६२।१६ ( विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा ।  
 मित्रावरुणौ )  
 आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।  
 (३३९) ७।६५।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )  
 आ नो मित्रावरुणा ... घृतैर्गव्यूतिमुक्षतमिच्छामिः ।  
 ( अश्विनौ ३८९ ) ८।५।६ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
 घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।  
 [२३८] ३।६२।१८ ( विश्वामित्रो गाथिनः, जमदग्निर्वा । मित्रावरुणौ )  
 गृणाना जमदग्निना ।  
 ( आयुर्वेदः १०८० ) ७।९६।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
 सरस्वती )  
 गृणाना जमदग्निवत् ।

( अश्विनौ ५७९ ) ८।१०।१८ ( जमदग्निर्भार्गवः ।  
 अश्विनौ )  
 गृणाना जमदग्निना ।  
 ( सोमः ४४१ ) २।६२।२४ ( जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः  
 सोमः )  
 गृणानो जमदग्निना ।  
 ( सोमः ५३२ ) २।६५।२५ ( भृगुवर्षणिर्जमदग्निर्भार्गवो  
 वा । पवमानः सोमः )  
 गृणानो जमदग्निना ।  
 [२३८] ३।६२।१८ ( गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।  
 मित्रावरुणौ )  
 पातं सोममृतावृषा ।  
 ( अश्विनौ ४१ ) १।४७।१ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

### ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२५५] ५।६४।१ ( अर्षनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
 वरुणं वो रिशादसम् ।  
 ( १९६ ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ )  
 वरुणं च रिशादसम् ।

[२५६] ५।६४।२ विश्वास्तु क्षासु जोगुवे ।  
 ( अग्निः २८१ ) १।१२७।१० ( परच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः )  
 [२६३] ५।६५।२ ( रातहृष्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
 राजाना दीर्घश्रुत्तमा । ऋतावृष ऋतावाना जनेजने ।

- (३६९) ८।१०१।२ ( जमदग्निर्भागवः । मित्रावरुणौ )  
राजाना ... ..।
- ( २७७ ) ५।६७।४ ( यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने ।
- [२६६] ५।६५।५ स्याम सप्रथस्तमे ।  
( अग्निः २६८ ) १।९४।१३ ( कुत्स आग्निः । अग्निः )  
स्याम...सप्रथस्तमे ।
- [ " ] ५।६५।५ अनेहसस्त्वोतयः ।  
( ७२ ८४ ) ८।४७।१-१३ अनेहसो व उतयः ।  
( उषा १८७-९१ ) ८।४७।१४-१८ ( त्रित आप्त्यः ।  
आदित्यः )
- [२७०] ५।६६।३ ( रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
ता वामेषे रथानाम् ।  
( इन्द्रः ३०४३ ) ५।८६।४ ( अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी )
- [२७१] ५।६६।४ नि केतुना जनानाम् ।  
( आयुर्वेदः ७७७ ) १।१९२।४ ( अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।  
अप्तृणसूर्याः )  
नि केतवो जनानाम् ।
- [२७४] ५।६७।१ ( यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
वरुण मित्रार्थमन् ।  
( ८८ ) ८।६७।४ ( मत्स्यः साम्मदः मान्यो मैत्रावरुणिः  
बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः । आदित्याः )  
( विश्वे देवाः ७९३ ) १०।१२६।२ ( कुल्मलबर्हिषः  
शैलूषिः अंहोमुग्वा वामदेव्यः । विश्वे देवाः )
- [२७५] ५।६७।२ ( यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
आ यद्योनिं हिरण्ययं.....सदधः ।  
( सोमः ४२७ ) ९।६४।२० ( कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )  
आ यद्योनिं हिरण्ययं...सोदति ।
- [ " ] ५।६७।२ धर्तारा चर्षणीनाम् ।  
( इन्द्रः ३१३५ ) १।१७।२ ( मेघ तिथिः काण्वः ।  
इन्द्रावरुणौ )
- [२७६] ५।६७।३ वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
( अग्निः ३१ ) १।२६।४ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः )  
१।४१।१ ( कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्थमणः )
- [ " ] ५।६७।३ पान्ति मर्यं रिषः ।  
१।४१।२ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । वरुणमित्रार्थमणः )
- [२७७] ५।६७।४ ऋतावानो जनेजने ।  
( २६३ ) ५।६५।२ ( रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
ऋतावाना... ।
- [ " ] ५।६७।४ ( यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
ते हि.....। अंहोभिवुरुचक्रयः ।  
( ३ ) ८।१८।५ ( हरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः )  
ते हि...। अंहोभिवुरुचक्रयः ।
- [२८६] ५।६९।३ ( उहचकिरात्रेयः । मित्रावरुणौ )  
प्रातर...मध्यदिन उदिता सूर्यस्य ।  
( अश्विनौ २८९ ) ५।७६।३ ( अत्रिभौमः । अश्विनौ )
- [२९२] ५।७१।१ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
आ नो गन्तं रिशादसा ।...इमम् ।  
( अश्विनौ ४३७ ) ८।८।१७ ( सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
...रिशादसेमम् ।
- [२९३] ५।७१।२ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
ईशाना पिप्यतं धियः ।  
( इन्द्रः ३०८० ) ७।९४।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्राग्नी )  
( सोमः १५३ ) ९।१९।२ ( असितः कश्यपो देवलो वा ।  
पवमानः सोमः )
- [२९४] ५।७१।३ उप नः सुतमा गतम् ।  
( इन्द्रः ८१ ) १।१६।४ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
उप...गहि ।
- [ " ] ५।७१।३ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
वरुण मित्र दाशुषे ।  
( ७२ ) ८।४७।१ ( त्रित आप्त्यः । आदित्याः )  
वरुण मित्र दाशुषे ।
- [ " ] ५।७१।३ अस्य सोमस्य पीतये ।  
( अश्विनौ ५ ) १।२२।१ ( मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ )
- [२९५-९७] ५।७१।१-३ नि बर्हिषि सदतं ( ३ सदतां )  
सोमपीतये ।
- [२९७] ५।७१।३ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
जुषेतां यज्ञमिष्टये ।  
( अश्विनौ २९९ ) ५।७८।३ ( सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ )  
जुषेथां यज्ञमिष्टये ।  
( इन्द्रः ३०९४ ) ८।३८।४ ( द्यावाश्च आत्रेयः । इन्द्राग्नी )  
जुषेथां यज्ञमिष्टये ।

## ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३०७] ६।६७।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । मित्रावरुणौ)  
वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते ।

(अश्विनौ ३७१) ७।७२।४ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अश्विनौ)  
प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।

## ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३०९] ७।५०।१ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

मा मां पथेन रपसा विद्वत् स्सहः ।

(अग्निः १२११) ७।५०।२ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । अग्निः)

( विश्वे देवाः ५०८ ) ७।५०।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।  
विश्वे देवाः)

[३१०] ७।६०।२ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)

विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।

( विश्वे देवः ३८४ ) ६।५०।७ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः ।  
विश्वे देवाः)

विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।

[ ,, ] ७।६०।२ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।

(अग्निः ६४३) ४।१।१७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[३११] ७।६०।३ अयुक्त सप्त हरितः सधस्थान् ।

( ५५० ) १।११।४ ( कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः )

[ ,, ] ७।६०।३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ।

(अग्निः ६६४) ४।१।१८ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)  
आ यूथेव...जनिमान्त्युम ।

[३१२] ७।६०।४ उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुः ।

(अश्विनौ २३८) ४।४।५।२ (वामदेवो गौतमः । अश्विनौ)  
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते ।

[ " ] ७।६०।४ आ सूर्यो भरुहच्युक्कर्मणः ।

( विश्वे देवाः ३१८ ) ५।४।५।१० ( सदापृण आत्रेयाः ।  
विश्वे देवाः )

[ " ] ७।६०।४ मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।

( विश्वे देवाः १४१ ) १।१८।६।२ ( अगस्त्यो मैत्रा-  
वरुणिः । विश्वे देवाः )

[३१३] ७।६०।५ शग्मासः पुत्रा अदितेरदृग्धा ।

२।१८।३ ( कूर्मो गार्तमदो, गृत्समदो वा । वरुणः )  
यूयं नः पुत्रा... ।

[ ३१४ ] ७।६०।६ अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तः ।

( अग्निः ११३३ ) ७।३।१० = ७।४।१० ( मैत्रावरुणि-  
र्वसिष्ठः । अग्निः )

अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।

[ ३१५ ] ७।६०।११ वाजस्य सातौ परमस्य रायः ।

( अग्निः ७३६ ) ४।१।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)  
अभिर्वाजस्य परमस्य रायः ।

[ " ] ७।६०।११ उरु क्षयाय चक्रिरे ।

( अग्निः ७५ ) १।२६।८ ( कण्वो घौरः । अग्निः )

[३२०] ७।६०।१२ = ( ३२७ ) ७।६।७ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।  
मित्रावरुणौ)

इयं देव पुरोहितियुवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।

विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[३२१] ७।६०।१२ अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।

( इन्द्रः ३००८ ) १।१०।८।१ ( कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी )  
वामभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।

[३२४] ७।६१।४ शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम ।

( २२५ ) १।१५।१।४ ( दीर्घतमा औचध्यः । मित्रावरुणौ)  
प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ।

[३२६] ७।६१।६ समु वां यज्ञं महयं नमोभिः ।

( विश्वे देवः ४९७ ) ७।४।२।३ (मैत्रावरुणर्वसिष्ठः ।  
विश्वे देवाः )

समु वो यज्ञं महयं ... ।

[३२७] ७।६१।७ = (३२०) ७।६०।१२

[३२८] ७।६१।४ चावाभूमी अदितेः त्रासीयां नः ।

( विश्वे देवाः २२९ ) ४।५।५।१ ( वामदेवो गौतमः ।  
विश्वे देवाः )

[३२९] ७।६१।५ श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ।

( विश्वे देवाः ८७ ) १।१२।२।६ ( कक्षीवान् दीर्घतमस  
औशिजः । विश्वे देवाः )

- [३३०] ७।६२।६=७।६३।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ)  
नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्मने तोकाय वरिवो दधन्तु ।  
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
- [३३१] ७।६४।१ मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त ।  
( २२ ) २।२७।२ ( कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा ।  
आदित्यः )
- [३३५] ७।६४।५ = (३४०) ७।६५।५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
मित्रावरुणौ )  
पृष स्तोमो वरुणो मित्रं तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि ।  
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
- [ " ] ७।६४।५ = ( ३४० ) ७।६५।५  
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः ।  
( इन्द्रः ३३२४ ) ४।५०।११ ( वामदेवो गौतमः ।  
इन्द्रावृहस्पती )
- [३३६] ७।६५।१ प्रति वां सूर उदिते सूक्तैः ।  
( ६३१ ) ७।६३।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यमित्रावरुणाः)  
प्रति वां... विधेम ।
- [ " ] ७।६५।१ मित्रं द्रुवे वरुणं पूतदक्षम् ।  
( १९६ ) १।२।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मित्रावरुणौ)

... पूतदक्षं वरुणम् ।

- [३३८] ७।६५।३ अपो न नावा दुरिता तरेम ।  
( इन्द्रः ३१६८ ) ६।६८।८ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।  
इन्द्रावरुणौ )
- [३३९] ७।६५।४ आ नो मित्रावरुणा... घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।  
( २३६ ) ३।६२।१६ ( गाथिनो विश्वामित्रः, जमदग्निर्वा ।  
मित्रावरुणौ )
- [ " ] ७।६५।४ प्रति वामत्र वरमा जनाय ।  
( अश्विनौ ३५९ ) ७।७०।५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः  
अश्विनौ )  
प्रति प्र यातं वरमा जनाय ।
- [३४०] ७।६५।५ = (३३५) ७।६४।५
- [ " ] ७।६५।५ = (३३५) ७।६४।५
- [३४२] ७।६६।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )  
असुयौयं प्रमहसा ।  
( ३४९ ) ८।२५।३ ( विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ )
- [३४६] ७।६६।१९ ( विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ )  
पातं सोममृतावृधा ।  
( अश्विनौ ४१ ) १।४७।३ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

## ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

- [३४७] ८।२५।१ ( विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ )  
ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।  
( अग्निः १२९९ ) ८।२३।३० ( विश्वमना वैयश्वः । अग्निः )  
ऋतावाना सन्नाजा पूतदक्षसा ।
- [३४९] ८।२५।३ = ( ३४२ ) ७।६६।२
- [३५०] ८।२५।४ = ( २१६ ) १।१५।१४ ( दीर्घतमा औचथ्यः ।  
मित्रावरुणौ )
- [३५३] ८।२५।७ अग्नि यूथेव परयतः ।  
( अग्निः ६६४ ) ४।२।१८ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )  
आ यूथेव ... पश्वो ।
- [३५४] ८।२५।८ साम्राज्याय सुकृत ।

- १।२५।१० ( शुनःशेष आजीर्गार्तः । वरुणः )  
साम्राज्याय सुकृतुः ।
- [३६१] ८।२५।१८ उभे आ पशौ रोदसी महित्वा ।  
( विश्वे देवाः १८४ ) ३।५४।१५ ( प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,  
प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वे देवाः )
- [३६७] ८।२५।२४ विद्या नविष्टया मती ।  
( इन्द्रः ९२६ ) १।८२।२ ( गोतमो राहूगणः । इन्द्रः )
- [३६९] ८।१०।१२ ( जमदग्निर्भागीवः । मित्रावरुणौ )  
राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।  
( २६३ ) ५।६५।२ ( रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ )
- [ ,, ] ८।१०।१२ साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।  
( अश्विनौ ४५ ) १।४७।७ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )

## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [४०६] १।२२।८ ( मेधातिथिः काण्वः । सविता ) । ( सोमः ९७४ ) ९।१०।१ ( पर्वतनारदो काण्वौ,

- [४०७] १।२४।३ (आजीगतिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । सविता )  
ईशानं वार्याणाम् ।  
( इन्द्रः १५ ) १।५।२ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः )  
[४१०] १।३।५।२ ( हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता )  
हिरण्ययेन सविता रथेन ।  
(अश्विनौ २५५) ४।४४।५ ( पुरुमीळहाजमीळहौ सौहोत्रौ । अश्विनौ )  
हिरण्ययेन सुवृता रथेन ।  
( अश्विनौ ४१८ ) ८।५।३५ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
हिरण्ययेन रथेन ।  
[४१६] १।३।५।८ हिरण्याक्षः सविता देव आगात् ।

- ( ४२३ ) १।३।८।४ ( गृत्समद [ आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् ] भार्गवः शौनकः । सविता )  
अरमतिः सविता— ।  
[४१६] १।३।५।८ दधद् रत्ना दाशुषे वार्याणि ।  
(अश्विनौ ३९) १।४७।१ ( परस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ )  
धत्तं रत्नानि दाशुषे ।  
[४१७] १।३।५।९ उभे घावापृथिवी अन्तरीयते ।  
१।२६०।१ ( दीर्घतमा औचथ्यः । घावापृथिवी )  
घावापृथिवी... । धिषणे अन्तरीयते ।  
[४१८] १।३।५।१० ( हिरण्यतूप आङ्गिरसः । सविता )  
सुमृलीकः स्वर्वी यात्वर्वाङ् ।  
( अश्विनौ ११७ ) १।११।८।१ ( कक्षीवान् औशिजो दीर्घतमसः । अश्विनौ )

### ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [४२०] २।३।८।१ ( गृत्समद [ आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् ] भार्गवः शौनकः । सविता )  
उदु ष्य देवः सविता सवाय ।  
(४६१) ६।७।१।१ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता )  
...सविता हिरण्यया ।  
(४६४) ६।७।१।४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता )  
...सविता दमूना हिरण्यपाणिः ।

- (४६७) ७।३।८।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता )  
...सविता ययाम हिरण्ययीम् ।  
[४२३] २।३।८।४=(४१६) १।३।५।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । सविता )  
[४३०] २।३।८।११ ( गृत्समदः शौनकः । सविता )  
शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवाति ।  
(अग्निः ११५४) ७।८।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः )

### ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

- [४४३] ४।५।४।३ ( वामदेवो गौतमः । सविता )  
अचित्ती यत् चक्रुमा दैष्ये जने ।  
७।८।१।५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । वरुणः )  
यत् ... .. दैष्ये जने... ।

- चरामसि ... .. अचित्ती ॥  
[४४६] ४।५।४।६ आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ।  
( विश्वे देवाः ६५ ) १।१०७।२ ( कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः )

### ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [४५३] ५।८।२।२ अस्य हि स्वयज्ञस्तरम् ।  
(अग्निः ८७७) ५।१७।२ ( पूरुत्रेयः । अग्निः )  
[ ' ] ५।८।२।२ ( श्यावाश्व आत्रेयः । सविता )  
न मिनन्ति स्वराज्यम् ।

- (इन्द्रः २४४०) ८।९३।११ ( सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
[४५४] ५।८।२।३ ( श्यावाश्व आत्रेयः । सविता )  
सुवाति सविता भगः ।  
(४४) ७।६६।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )

[४५७] ५।८१।६ ( श्यावाश्व आश्रयः । सविता )  
विश्वामानि धीमहि ।

(अश्विनो ४८९) ८।११।१८ (सोभरिः काण्वः। अश्विनो)  
(अग्निः १२६१) ८।१०३।५ (सोभरिः काण्वः। अग्निः)

### ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[४६१] ६।७१।१ उदु व्य देवः सविता हिरण्यया ।  
(४२०) २।३८।१ ... देवः सविता सवाय ।

[४६४] ६।७१।४ उदु व्य देवः सविता दमूना ।

[४६३] ६।७१।३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सविता )  
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ।

(४२०) २।३८।१ ( गृत्समद [ आन्निरसः शौनहोत्रः  
पश्वाद् ] भार्गवः शौनकः । सविता )

६।७५।१० (पायुर्भारद्वाजः । ब्राह्मण-पितृ-सोम-यावा-  
पृथिवी-पूषाणः)

... ... सविता सवाय ।

### ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[४६७] ७।३८।१ = (४२०) २।३८।१

(४३) ७।५२।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्यः )

[ , , ] ७।३८।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता )

... ... रियानाः ।

हिरण्ययीममतिं यामशिश्नेत् ।

[४७३] ७।४५।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता )

(इन्द्रः १३५२) ३।३८।८ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापति-  
वाँच्यो वा विश्वामित्रो गायिनो वा । इन्द्रः)

हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।

(अग्निः १९५) १।७१।१ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

[४७९] ७।३८।३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सविता, [ उत्तरार्ध-  
भगो वा ] )

[४७५] ७।४५।३ मर्तभोजनमध रासते नः ।

(रुद्रः ११) १।११४।६ ( कुत्स आन्निरसः । रुद्रः )

रत्नं देवस्य सवितुरित्यानः ।

रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनम् ।

### ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[४७८] १०।१३९।२ ( देवगन्धर्वो विश्वासुः । सविता )

[४७९] १०।१३९।३ देव इव सविता सत्यधर्मा ।

आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम् ।

१०।३४।८ (कवष ऐलषः, अक्षो मौजवान् वा। अक्षनिन्दा)

(अग्निः २१२) १।७३।८ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

[४८१] १०।१४९।२ ( अर्चन् हिरण्यस्तूपः । सविता )

[४७९] १०।१३९।३ रावो बुध्नः संगमनो वसूनाम् ।

अतो यावापृथिवी अप्रथेताम् ।

( अग्निः १८८४ ) १।९६।६ ( कुत्स आन्निरसः ।

१०।८१।१ ( विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा )

द्रविणोदा अग्निः )

आदिद् यावापृथिवी अप्रथेताम् ।

### ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[५४७] १।११५।१ ( कुत्स आन्निरसः । सूर्यः )

( आयुर्वेदः ९९० ) ७।१०१।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः

आप्रा यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

( अग्निः ७४६ ) ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )

( वृष्टिकामः ) कुमार आश्वेयो वा । पर्जन्यः )

आप्रा यावापृथिवी अन्तरिक्षं ।

तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

[५४९] १।११५।३ (कुत्स आङ्गिरसः । सूर्यः)  
परि छावापृथिवी यन्ति सद्यः ।  
( अश्विनौ २३३ ) ३।५८।८ ( विश्वामित्रो गाथिनः ।  
अश्विनौ )  
परि छावापृथिवी याति सद्यः ।  
[५५०] १।११५।४ यदेदयुक्त हरितः सधस्थात् ।

( ३११ ) ७।६०।३ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )  
अयुक्त सध हरितः— ।  
[५५६] ५।४०।५ ( अत्रिभौमः । सूर्यः )  
यत् त्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।  
५।४०।९ ( अत्रिभौमः । अत्रिः )  
यं वै सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।

### ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[५५८] ७।६१।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः )  
कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।  
( इन्द्रः १८७१ ) ६।१९।१ (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्रः)  
पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।  
[५६०] ७।६२।३ ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।  
( विश्वे देवाः ४८७ ) ७।३९।७=७।४०।७ (मैत्रावरुणि-  
र्वसिष्ठः । विश्वे देवाः)  
[५६४] ७।६३।४ दूरेअर्थस्तरणिभ्राजमानः ।  
( ६७४ ) १०।८८।१६ (मूर्धन्वानाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा ।  
सूर्य-वैश्वानरौ )  
अप्रयुच्छन् तरणिभ्राजमानः ।  
[६३१] ७।६३।५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्य ( पूर्वार्धः )-  
मित्रावरुणौ [ उत्तरार्धः ] )

प्रति वां सूर उदिते ... नमोभिर्मित्रावरुणा ।  
( ३३६ ) ७।६५।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणौ )  
—उदिते सूक्तैर्मित्रं ... .. वरुणम् ।  
( ४७ ) ७।६६।७ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )  
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषि वरुणम् ।  
[६३१] ७।६३।५ विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हृष्यैः ।  
(अग्निः ९४८) ६।१।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । अग्निः)  
विधेम नमोभिरमे समिधोत हृष्यैः ।  
[५६७] ७।६६।१६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । सूर्यः )  
जीवेम शरदः शतम् ।  
( ६५० ) १०।८५।३९ ( सूर्यासावित्री ऋषिका ।  
सूर्या- सावित्री )  
जीवाति शरदः शतम् ।

### ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[५६८] ८।१०१।११ ( जमदग्निर्भागवः । सूर्यः )  
महस्ते सतो महिमा पनस्यते ।

(अ.युर्वेदः १०४४) १०।७५।९ (सिन्धुक्षेत्रप्रैयमेधः। नवः)  
महान् ह्यस्य महिमा पनस्यते ।

### ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[५७३] १०।३७।४ ( सौर्योऽभितपाः । सूर्यः )  
येन सूर्य उयोतिषा बाधसे तमः ।  
(१००४) १०।१९७।२ ( कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा  
भारद्वाजी । रात्रिः )  
उयोतिषा बाधते तमः ।  
[५७६] १०।३७।७ जीवाः प्रति पश्येम सूर्य ।  
(५८६) १०।१५८।५ ( चक्षुः सौर्यः । सूर्यः )  
द्वै०[अदितिः०] १८

प्रति पश्येम सूर्य ।  
[५७९] १०।३७।१० तत् सूर्यं द्रविणं धेहि चित्रम् ।  
२।२३।१५ (गृत्समदः शौनकः । बृहस्पतिः)  
तदस्मासु द्रविणं धेहि— ।  
[५८०] १०।३७।११ यद् वो देवाश्चक्रेम जिह्वया ।  
(आयुर्वेदः १९९०) १०।१५।४ (शङ्खो यामायनः । पितरः)  
इमा वो हृष्या चक्रेमा जुषध्वम् ।



[ ५८६ ] १०१५८५ ( चक्षुः सौर्यः । सूर्यः )

सुसंहशं त्वा वयं प्रति ।

( इन्द्रः ९२७ ) १८२१३ ( गीतमो राहूगणः । इन्द्रः )

सुसंहशं त्वा वयं मघवन् ।

[ " ] १०१५८५ प्रति पश्येम सूर्य ।

( ५७६ ) १०३७१७ ( सौर्योऽभितपाः । सूर्यः )

[ ५९० ] १०१७०४ ( विश्राष्ट सौर्यः । सूर्यः )

विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वरगच्छो रोचनं दिवः ।

( इन्द्रः २३६६ ) ८१९८३ ( नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )

[ ६५० ] १०८५३९ = ( ५६७ ) ७६६१६

[ ६५३ ] १०८५४२ विश्वमायुर्व्यंश्रुतम् ।

( अग्निः २४६७ ) ११९३३ ( गीतमो राहूगणः ।  
अग्नीषोमौ )

विश्वमायुर्व्यंश्रवत् ।

[ ६५४-५५ ] १०८५४३-४४ शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ।

( सोमः १२२३ ) ६१७४१ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।  
सोमारुद्रौ )

शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे ।

[ ६६० ] १०८८१२ ( आङ्गिरसो मूर्धन्वान्, वामदेव्यो वा ।  
सूर्यनैश्वानरे ऽग्निः )

आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।

( अग्निः ६७६ ) ४१३११ ( वामदेवो गीतमः । अग्निः )

[ ६७४ ] १०८८१६ = ( ५६४ ) ७६३४

## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[ ९०९ ] ११५३ ( मेधातिथिः कावः । [ ऋतवः ] त्वष्टा )

स्वं हि रत्नधा असि ।

( अग्निः ११९७ ) ७१६६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः )

[ ६९२ ] १०१८६ ( संकुसुको यामागनः । त्वष्टा )

दीर्घमायुः करति जीवसे वः ।

( आयुर्वेदः १९७७ ) १०१४१४ ( यमो वैश्रवतः । यमः )

दीर्घमायुः प्र जीवसे ।

[ ७२७ ] ११२३१५ ( मेधातिथिः वाण्वः । पूषा )

गोभिर्यवं न चक्रेषत् ।

( इन्द्रः १०८६ ) ११७६१ ( अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।  
इन्द्रः )

यवं न चक्रेषद् वृषा ।

## ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[ ७३३ ] ३६२८ ( विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा )

वधूयुरिव योषणाम् ।

( इन्द्रः १४४८ ) ३५२३ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

[ ७३४ ] ३६२९ ( विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा )

यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति ।

( अग्निः १७१४ ) १०१८७४ ( वत्स आग्नेयः । अग्निः )

## ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[ ७३५ ] ६१८१६ ( शंयुर्बार्हस्पत्यः । पूषा )

अघा अर्यो अरातयः ।

( इन्द्रः ३०५३ ) ६१५९८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )

अघा अर्यो अरातयः ।

[ ७४३ ] ६१५३५ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । पूषा )

पणीनामारया हृदया कवे ।

( ७४५ ) ६१५३७ पणीनां हृदया कवे ।

[ ७४३-४५ ] ६१५३५-७ अथेमस्मभ्यं रन्धय ।

[ ७४५-४६ ] ६१५३७-८ आ रिख किकिरा कृणु ।

[ ७४८ ] ६१५३१० ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा )

गोषणि... अश्वसां वाजसामुत । नृवत्... ।

( सोमः २० ) ९१२१० ( मेधातिथिः काण्वः । पवमानः  
सोमः )

गोषा... वृषा... अश्वसा वाजसा उत ।

[ ७५४ ] ६१५४६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा )

यजमानस्य सुन्वतः ।

<p>( इन्द्रः ३०७० ) ६।६०।१५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )</p> <p>[७५६] ६।५४।८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा ) ईशानं राय ईमहे । ८।२६।२२ ( विश्वमना वैश्वः, व्यश्वो वाजिरसः । वायुः ) ईशानं राय ईमहे । ( इन्द्रः १८२२ ) ८।४६।६ ( वशोऽश्व्यः । इन्द्रः ) ( इन्द्रः ५२५ ) ८।५३ [याळ०५] । १ ( मेष्यः काण्वः । इन्द्रः )</p>	<p>[७६६] ६।५६।२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा ) इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते । ( इन्द्रः ४०१ ) ८।१७।८ ( इरिग्विष्टिः काण्वः । इन्द्रः )</p> <p>[७८७] १०।२६।९ ( विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वागुणो वसुकृडा । पूषा ) इमं नः दृणवद्धवम् । ( अग्निः १३३१ ) ८।४३।२२ ( विरुआ आजिरसः । अग्निः )</p>
---	--

### ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

<p>[७९६] ७।४१।५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः ) वयं भगवन्तः स्याम ।</p>	<p>( विश्वे देवाः १३८ ) १।१६४।४० ( दीर्घतमा औचभ्यः । विश्वे देवाः )</p>
--	---

### ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

<p>[८२०] १।२२।१८ ( मेघातिथिः काण्वः । विष्णुः ) त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुः । ( इन्द्रः ३१४ ) ८।१२।२७ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः ) यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे ।</p> <p>[८२३] १।२२।२१ ( मेघातिथिः काण्वः । विष्णुः ) तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । ( अग्निः ५१७ ) ३।१०।९ ( विश्व मित्रो माथिनः । अग्निः ) तं त्वा विप्रा विपन्यवो — ।</p> <p>[८२५] १।१५४।२ ( दीर्घतमा औचभ्यः । विष्णुः ) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । ( इन्द्रः २८४० ) १०।१८।०।२ ( जय ऐन्द्रः । इन्द्रः )</p>	<p>[८२८] १।१५४।५ ( दीर्घतमा औचभ्यः । विष्णुः ) नरो यत्र देवयवो मन्दन्ति । ( इन्द्रः २२७८ ) ७।९७।१ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । इन्द्रः )</p> <p>[८३०] १।१५५।४ ( दीर्घतमा औचभ्यः । विष्णुः ) उरु क्रमिष्टोऽहगाथाय जीवमे । ( इन्द्रः ५८६ ) ८।६३।९ ( पगथः पाणः । इन्द्रः ) उरु क्रमिष्ट जीवसे ।</p> <p>[८४१] ७।९९।७ = ७।१००।७ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विष्णुः ) यपृत् ते पिण्ण ताम् आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिषिविष्ट हृष्यम् । यभैन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे थूयं पात स्वस्मिभिः सदा न ॥</p>
---	--

### ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

<p>[९२३] २।३६।५ ( गृत्समदः शौनकः । ऋतवः ) इन्द्रो नभश्च तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतः—।...पिब । ( इन्द्रः २७६१ ) १०।११६।७ ( अग्नि युतः स्थौरोऽग्नि यूपो वा स्थौरः । इन्द्रः ) तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पको ... पिब... ।</p> <p>[९२४] २।३६।६ ( गृत्समदः शौनकः । ऋतवः ) मित्रा- वरुणौ नभस्यश्च ) जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे । ( अश्विनौ ५१२ ) ८।३५।४ ( श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ )</p>	<p>[९२५] २।३७।१ ( गृत्समद [आजिरसः शौनको नः पश्वाद्] भार्गवः शौनकः । द्रविणोदा ऋतवः ) अभ्वर्थयः स पूर्णा वष्टयासिचम् । ( अग्निः १२०२ ) ७।१६।११ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः ) द्रविणोदा पूर्णा विवष्टयासिचम् ।</p> <p>[ " ] २।३७।१ तस्मा एतं भरत तद्भृशो । ( इन्द्रः ११५१ ) २।१४।२ ( गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः ) तस्मा एतं भरत तद्भृशाय ।</p>
--	--

## ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[१००३] १०।१२७।१ ( कुशिकः सौभरः, रात्रिर्वा भारद्वाजी ।

रात्रिः )

विश्वा अधि श्रियोऽधित ।

( आग्निः ४०१ ) १।८।५ ( गृत्समदः शौनकः । आग्निः )

विश्वा अधि श्रियो दधे ।

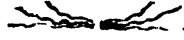
[१००४] १०।१२७।२ ज्योतिषा बाभते तमः ।

( ५७३ ) १०।३७।४ ज्योतिषा बाभसे तमः ।

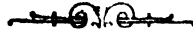
[१०१०] १०।१२७।८ उप ते गा इवाकरम् ।

( रुद्रः १४ ) १।११४।९ ( कुत्स आत्रिरसः । रुद्रः )

उप ते स्तोमान् ... इवाकरम् ।



## अदितेः, आदित्यानां च वर्णानुक्रम-सूची ।



अंशो भगो वरणो	८०८	अदित्यै रास्नासि विष्णोः	८४९	अनेहो मित्रार्यमन्	६८
अक्रविहस्ता सुकृते	२४४	अदित्यै रास्नास्यदितिः	११	अन्तरा मित्रावरुणा	३८१
अक्ष्णश्चिद् गातुवित्तरा	३५५	अदित्सन्तं चिदावृणे	७४१	अन्तश्चरति रोचना	६९०
अगन्म स्वः स्वरगन्म	६२६	अदृश्रमस्य केतवो	५३६, ५९७	अञ्जं पूर्वा रासतां मे	११२७
अग्निर्मा गोप्ता परि	१६३	अद्वयः सम्भृतः पृथिव्यै	११७	अपचितः प्र पतत	६७८
अग्ने देवाँ इहा वह	९१०	अद्या देवा उदिता	५५२	अप त्यं परिपन्थिनं	७२०
अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा	८५३	अद्यो नो देव सवितः	४५५	अप त्ये तायवो यथा	५३५
अधोरचक्षुरपतिघ्न्येधि	६५५	अध रात्रि तृष्टधूमं	१०३७, १०४५	अपपापं परिक्षवं	११३३
अध्रिणा विष्णो मा त्वा	८५१	अधा चिन्नु यद्विधिषमहे	३७३	अपवासे नक्षत्राणाम्	१११५
अचित्ती यच्चक्रमा	४४३	अधा नो विश्वसौभग	७२३	अपश्यं गोपम्	६०८
अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो	७७२	अधारयतं पृथिवीमुत	२४१	अप स्तेनं वासो	१०४९
अति नः सश्वतो नय	७२४	अधा हि काव्या युवं	२७१	अपादेति प्रथमा	२२४, ३९५
अति विश्वान्यरुहद्	१०५३	अधि या बृहतो दिवो	३५३	अपाद्गोत्रादुत पोत्राद्	९२८
अतो देवा अवन्तु नो	८१८	अध्वनामध्वपते प्र मा	५९६	अपां नपातमवसे	४०४
अथो यानि च यस्मा ह	१०३९	अनमीवास इळ्या	१८७	अपामीवामप स्निधम्	५७
अदब्धेभिः सवितः	४६३	अनर्वाणो ह्येषां पन्था	५५	अपि घृतः सविता देवो	४६९
अदब्धो दिवि पृथिव्यां	१४५	अनश्वो जातो अनर्भाशुः	२२६	अपो घु ण इयं शदः	९६
अदर्शिं गातुहरवे	२०४	अनागसो अदितये	४५७	अभयं मित्रावरुणौ	३९२
अदाभ्यो भुवनानि	४३७	अनु तन्नो जास्पतिः	४७२	अभि त्यं देव सवितारम्	४८८
अदितिर्द्यौरदितिः	१	अनु पूर्वाण्योक्त्या	३६०	अभि त्वा देव सवितः	४०७
अदितिर्न उरुष्यतु	८०	अर्यं श्रुताममर्ति	२४३	अभि त्वा वर्चसा गिरः	६८६
अदितिर्नो दिवा पशुं	४	अनुहवं परिहवं	११३२	अभि नो नर्यं वसु	७४०
अदिते मित्र वरणोत	३४	अनेहो न उरुवजः	८	अभि यज्ञं गृणीहि नो	९०९

अभि यं देव्यदितिः	४७०	अस्माकं देवा उभयाय	५८०	आ नो गन्तं रिशादसा	२९२
अभि ये मिथो वनुषः	४७१	अस्माकमूर्जा रथं	७८७	आ नो मित्र सुदीतिभिः	२५९
अभि यो महिना दिवं	१९१	अस्मिन्स्वेतच्छक्रपूत	३७५	आ नो मित्रावरुणा घृतैः	२३६
अभि वर्धतां पयसाभि	९८८	अस्य हि स्वयशस्तरं	४५३	आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टि	३३९
अभि सूयवसं नय	७२५	अस्या ऊ षु ण उप	७३१	आ पूषश्चित्रबर्हिषम्	७१५
अभीवृतं कृशनेः	४१२	अहमेवास्म्यमावास्या	१०८६	आप्रा रजासि दिच्यानि	४३६
अभ्रिये दिष्टुक्षत्रिये	१११४	अदृथ रात्री च	१०६९	आ मा पूषन्नुप द्रव	७३५
अभूद् देवः सविता	४४१	अहोरात्राभ्यां नक्षत्रेभ्यः	१०६८	आ मां मित्रावरुणेह	३०९
अमावास्या च पौर्णमासी	१०८९	अहोरात्रे इदं ब्रूमः	९९७	आ मित्रे वरुणे वयं	२९५
अमावास्ये न त्वदेतानि	१०८८	अहोरात्रे ऊर्ध्वशीवे	१०६४	आ मे धनं सरस्वती	११०३
अमूरा विश्वा वृषणौ	३२५	अहोरात्रे गच्छ स्वाहा	१०६२	आ मे महच्छतभिषग्	११२८
अमेव नः सुहवा	७०३, ९२१	अहोरात्रे नासिके	१०७२	अयं गौः पृश्निरकमीद्	६८९
अयं वां मित्रावरुणा	२३३	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१०६५	आ यद् योनिं हिरण्यथं	२७५
अयं सहस्रभानवो	६२८	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१०७३	आ यद् वामीयचक्षसा	२७३
अयं सहस्रमृषिभिः	१२०	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१०१३	आयमगन्तसंवत्सरः	८८७
अयमा यात्यर्यमा	८१०	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	४१०	आयमगन्तसविता ह्युरेण	५३२
अयमेक इत्था पुर	३५९	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	४४०	आ यातं मित्रावरुणा	३००, ३४६
अयं मित्राय वरुणाय	२०६	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१०८७	आयुर्विधायुः परि	७७६
अयं मित्रो नमस्यः	१८८	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	२६८	आ यो विवाय सचथाय	८३७
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः	५४२	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	३८८	आ राजाना मह ऋतस्य	३३२
अयुक्त सप्त हरितः	३११	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	७६४	आ रात्रि पार्थिवः रजः	१०१५
अर्धमासाः पशुषि ते	१०६६	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	७२२	आ रिख किकिरा कृणु	७४५
अर्वाञ्चमद्य यथं	९२९	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	७८६	आ रोदतायुर्जरसं	६९२
अव दिवस्तारयन्ति	६८५	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	७७०	आ वक्षि देवां इह	९२२
अव वेदिं होत्राभिः	३१७	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१८०	आ वामश्वासः सुयुजो	२४२
अवोरित्था वां छर्दिषो	३०८	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१५८	आ वामृताय केक्षिनीः	२१८
अशीतिभिस्तिष्ठभिः	१६७	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	८२	आ वां भूषन् क्षितयो	२१५
अश्रमद्वियमर्यमन्	८११	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	३८	आ वां मित्रावरुणा	२२८
अश्ना न या वाजिना	३०१	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	४०	आ विश्वदेवं सत्पतिं	४५८
अश्विना पिबतं मधु	९१७	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	४१	आ शर्म पर्वतानाम्	६३
अष्टाविंशानि शिवानि	११३०	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	३९	आशसनं विशसनम्	६४६
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः	४१६	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१६५	आशुभिश्चिद्यान् वि मुचाति	४२२
असति सत् प्रतिष्ठितं	१५२	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१८३	इदं विष्णुर्वि चक्रमे	८१९
असतापं मे हृदयम्	१२६	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	४७३	इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां	५८९
असपत्नं पुरस्तात्	५२४	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	३८५	इदं ह नूनमेषां	५४
असावन्यो असुर	३७४	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	७८४	इदं हिरण्यं गुल्गुलु	७९९
अस्तंयते नभो	१५६	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	२२७	इनो वाजानां पतिः	७८५
अस्ति देवा अंहोः	९१	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	६०२	इन्द्र सोमं पिब ऋतुना	९०७
अस्मभ्यं तद्विवो अङ्गयः	४३०	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	६५४	इन्द्रज्येष्ठन् बृहङ्गयः	४४५

इन्द्रं मित्रं वरुणम्	५५३	उत्तुदस्त्वोत्तुदतु	३८४	ऊती देवानां वयम्	२०९
इम आ यातमिन्द्रवः	२११	उत्थाय बृहती भव	४०२	ऋक्सामाभ्यामभिहितौ	६३७
इमं स्तोमं सक्तवो	२२	उत्सूर्यो दिव एति	६२५	ऋजमुक्षणयायने	३६५
इमं गोष्ठं पशवः	१०९८	उत् सूर्यो बृहदर्चोषि	५५८	ऋतमृतेन सपन्ता	२८२
इमं च नो गवेषणं	७६९	उदगादयमादित्यो	१५७, ५४६	ऋतवः पक्तार आर्तवाः	९५१
इमं नो देव सवितः	४९७	उदसा बाहू शिथिरा	४७४	ऋतवस्त ऋतुथा पर्व	९४७
इमा उ त्वा पुरुवसो	११८	उदित्युदिहि० । द्विपंश्र	१३९	ऋतवस्तमवप्रतार्तवाः	९६५
इमा गिर आदित्येभ्यो	२१	उदित्युदिहि० । यांश्च	१४०	ऋतवस्ते यज्ञं वि	९४८
इमा गिरः सवितारं	४७६	उदु तिष्ठ रावितः	४६८	ऋतव स्थ ऋतावृधः	९३९
इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः	६५६	उदु त्वं जातवेदसं	५३४	ऋतस्य च वै स सत्यस्य	११३७
इमे चेतारो अनृतस्य	३१३	उदु त्यद् दर्शतं	५६५	ऋतस्य गोपावधि	२४८
इमे दिवो अनिमिषा	३१५	उदु ष्य देवः सविता दमूना	४६४	ऋतावान ऋतजाता	५३
इमे मित्रो वरणो	३१४	उदु ष्य देवः सविता ययम	४६७	ऋतावाना नि षेदतुः	३५४
इयं ते पूषन्नाघणे	७३२	उदु ष्य देवः सविता सवाय	४२०	ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे	९५०
इयं देव पुरोहितिः	३२०, ३२७	उदु ष्य देवः सविता त्रिरुण्यया	४६१	ऋतुभ्यष्ट्वार्तवैभ्यो	७०९
इयमेव सा या प्रथमा	१०७७	उदु ष्य शरणे दिवो	३६२	ऋतुभ्यः स्वाहा	९४६
इयं पित्र्या राष्ट्र्येवध्रे	१७२	उदू अयौ उपवक्तेव	४६५	ऋतूनां च वै स आर्तवानां	१०७१
इयं मद्रां प्र स्तृणीते	२९९	उद्यते नम उदायते	१५५	ऋतून् भ्रूग ऋतुपतीन्	९६७
इरा पुंश्चली हसो	१०२३	उद्यन्नय मित्रमह	५४४	ऋतून् यज ऋतुपतीन्	९४९
इरावती धेनुमती	८४०	उद्वयं तमसरपरि ज्योतिः	५४३	ऋतेन ऋतमपिहितं	२३९
इरावतीर्वेदण धेनवो	२८५	उद्वयं तमसरपरि स्वः	६००	ऋतेन युप्त ऋतुभिश्च	१६२, ९७१
इषश्चोर्जश्च शारदावृत्	९३५	उद् वां चक्षुर्वेदण	३२१	ऋतेन मित्रावरणौ	१९७
इषिरा योषा युवतिः	१०५२	उद् वां पृक्षामो मधुमन्तो	३१२	ऋतेन यावृतावृषौ	२००
इहैव स्तं मा वि यौष्टं	६५३	उद्वेति प्रसवीना	५६२	ऋधागित्था स मर्त्यः	३६८
उक्षा समुद्रो अरुणः	११५	उद्वेति सुभगो विध्वचक्षाः	५६१	एकादशभिरस्तुवत	९३७
उखां कृणोतु शकत्या	१०	उप ते गा इय करं	१०१०	एतच्चन त्वो वि चिकेतद्	२२३
उच्छन्त्यां मे यजता	२६१	उप नः सुतमा गतं	२९४	एता देवसेनाः सूर्य	१८२
उत घा स रधीतमः	७६६	उप मा पेपिशत् तमः	१००९	एयमगन् पतिकामा	७९८
उत त्वामदिते मही	६	उपयामगृहीतोऽसि	१०७, ८६०	एष ते योनिदचन्द्रमाः	९७६
उत नः सिन्धुरपां	३५७	उपयामगृहीतोऽसि मधवे	९३१	एष स्तोभो वरण	३३५, ३४०
उत नो गोषणिं धियम्	७४८	उपयामगृहीतोऽसि सावित्रो	४९०	एष स्य ते तन्वो	९२३
उत यास्मि सवितः	४५०	उपावीरस्युप देवान्	६९४	एष स्य मित्रावरुणा	३१०
उत वां विश्व मथासु	२३२	उभाभ्यां देव सवितः	५०१	एहि वां विमुचो नपाद्	७५९
उत स्या नो दिवा मतिः	५	उभे अस्मै पीपयतः	३५	ओर्वप्रा अमर्त्या	१००४
उत स्वराजो आदितिः	४६	उरु विष्णो विक्रमस्वो	८५९	ओषधयो भूतभव्यम्	८९१
उतादः पक्षे गवि	७६७	उरुशंसा नमोवृधा	२३७	कः सप्त खानि वि ततर्दे	१०७८
उतेदानीं भगवन्तः	७९५	उर्वश्च मा चमसश्च	१२३	कल्यग्रयः कति सूर्यासः	६७६
उतेशिप्रे प्रसवस्य	४५१	उषसे नः परि देहि	१०५१	कदा चन प्रयुच्छसि	१०९
उतो स मन्मिन्दुभिः	७१७	उषाः पुंश्चली मन्त्रो	१०२२	कदा चन स्तरीरसि	१०८

कवी नो मित्रावरुणा	१९८	चन्द्रमा अप्खन्तरा	९७९, ९८९	तद् विष्णोः परमं पदं	८२९
कालः प्रजा असृजत	९०१	चन्द्रमा नक्षत्राणाम्	९८६	तद् वो अद्य मनामहे	५२
कालादायः समभवन्	९०२	चन्द्रमा नक्षत्रैः	९९०	तं नो यावापृथिवी	५७५
काले तपः काले ज्येष्ठं	८९९	चन्द्रमा मनसो जातः	९७३, ९७८	तन्मित्रस्य वरुणस्य	५५१
कालेन वातः पवते	९०३	चन्द्र यत् ते तपरतेन	९८१	तपश्च तपस्यश्च	९३८
काले मनः काले प्राणः	८९८	चन्द्र यत् ते तेजस्तेन	९८५	तमस्य राजा वरुणः	८३६
कालेऽयमङ्गिरा देवो	९०६	चन्द्र यत् तेऽर्चिस्तेन	९८३	तमु ष्टुहि यो अन्तः	५२०
कालो अश्वो वक्षति	८९२	चन्द्र यत् ते शोचिस्तेन	९८४	तमु स्तोतारः पूर्व्यं	८३५
कालो भूतिमसृजत	८९७	चन्द्र यत् ते हररतेन	९८२	तष्टतं च सत्यं च	११३६
कालोऽमूं दिवमजनयत्	८९६	चन्द्राय स्वाहा चन्द्रमसे	९७५	तमृतवश्चार्तवाथ	१०७०
कालो यज्ञं समैरयद्	९०५	चित्तिरा उपबर्हणं	६३३	तरणिर्विश्वदर्शतो	५३७
कालो ह भूतं भव्यं च	९०४	चित्पतिर्मा पुनातु	४८७	तस्य नक्षत्राण्यासरसो	११०८
काव्यथोराजानेषु	३८२	चित्रं देवानाम्	५४७	तरय ब्राह्मणस्य । यदादित्यम्	१०९१
काव्येभिरदाभ्या	३४४	चित्राणि साकं दिवि	११२४	तस्य ब्राह्मणस्य । योऽस्य चतुर्थो	११२३
किमित् ते विष्णो परि	८४७	चित्रावसो खस्ति ते	१०११	तस्य ब्राह्मणस्य । योऽस्य तृतीयो	१०९०
कुहूं देवां सुकृतं विद्वान्	११०४	जीवान् नो अभि धेतन	८९	तरय ब्राह्मणस्य । योऽस्य प्रथमो	१०८२
कुहूदेवानामधृतस्य	११०५	जुषेथां यज्ञं बोधतं	४००, ९२४	तस्या ग्रीष्मश्च वसन्तश्च	९५२
कृष्णं नियानं हरयः	५५४	जोषा सवितर्यस्य ते	५८३	तस्याम् सर्वा नक्षत्रा	१११२
केन देवां अनु क्षियति	११२०	जोष्यमे समिधं जोषि	९३०	तां वां धेनुं न वासरीं	२१२
को नु वां मित्रास्तुनो	२७८	ज्योतिष्मतीमदिति	२०५	तां सवितुर्वरेण्यस्य	५००
गन्धर्वाप्सरसो ब्रूमो	८१३	त आदिस्वास उरवो	२३	ता अर्षन्ति शुश्रियः	६८७
गर्भं धेहि सिनीवालि	१०९९	तच्चक्षुर्देवहितं पुरं	६०६	ता जिह्वाया सदमेदं	३०५
गर्भो देवनां पिता	५१४	तच्चक्षुर्देवहितं शुकं	५६७	तां जुषस्व गिरं मम	७३३
गायत्रेण त्वा छन्दसा	८४८	तत्तदित्यस्य पौर्यं	८३०	ता नः शक्तं पार्थिवस्य	२८१
गार्हपत्येन सन्त्य	९१८	तत् सवितुर्वरेण्यं	४३१	ता नः स्तिपा तनूपा	३४३
गाव इव ग्रामं यूयुधिः	४८३	तत् सवितुर्वृणीमहे	४५२	ता बाहवा सुचेतुना	२५६
गीर्णं भुवनं तमसा	६६०	तत् सु नः शर्म यच्छत	५२	ता भूरिपाशावनृतस्य	३३८
गुदा आसन्त्सिनीवाल्याः	१०९६	तत् सु नः सविता भवो	५६	ता माता विश्ववेदसा	३४९
गृणाना जमदग्निना	२३८	तत् सु नो नव्यं सन्यसे	९९	ता मे अश्व्यानां	३६६
गृष्णाभि ते सौभगत्वाय	६४७	तत् सु वां मित्रावरुणा	२४०	तां पूषञ्छिवतमा०	६४८
गृह्णामि ते सौभगत्वाय	८०४	तत् सूर्यस्य देवत्वं	५५०	ता व मिथानोऽवसे	२६४
ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि	९६९	तत् सूर्यं रोदसी उभे	३६४	ता वामेषे रथानाम्	२७०
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा	९४१	तदभिराह तदु सोम	७९०	ता वां मित्रावरुणा	३७२
ग्रीष्मावेनं मासौ दक्षिणाया	९५६	तदस्य प्रियमभि	८२८	ता वां वास्तुयुग्मसि	८२९
ग्रीष्मो मासौ गोप्तारौ	९५५	तदहत् पृथिवि वृहत्	२७२	ता वां विश्वस्य गोपा	३४७
घृतेन त्वा समुक्षामि	९९३	तद् देवस्य सवितुः	४३४	ता वां सम्यगद्गृह्णाणा	२८९, ३९७
चक्षुर्नो देवः सविता	५८४	तद् यस्यैवं विद्वान्	१०२५-२९	ता विप्रं धैथे जठरं	३०४
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे	५८५	तद् वार्यं वृणीमहे	३५६	ता सम्राजा घृतासुती	२३५
चतुर्भिः साकं नवतिं च	८३२	तद् विप्रासो विपन्यवो	८२३	ता हि क्षत्रं धारयेथे	३०३

ता हि क्षत्रमविहृतं	२६९	त्वष्टा दुहित्रे बहृतं	६९८	दैव्यावध्वर्यू आ गतः	६०१
ता हि देवानामसुरा	३३७	त्वष्टा मे दैव्यं वचः	७०४	दोषो गाय नृहृद्	५१९
ता हि श्रेष्ठवर्चसा	२६३	त्वष्टा युनक्तु बहुधा	६९९	यावाभूमौ अदिते	३२८
तिस्रो यावः सवितुः	४१४	त्वष्टा वासो व्यदधात्	८०६	यौरासीत् पूर्वचितिः	१०१२
तिस्रो भूर्माधोरयन्	२८	त्वष्टा वीरं देवकामं	६९७	यौधेनुस्तस्या आदित्यो	१७९
तुवे तनाय तत् सु	६५	त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो	३९९	यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं	१११०
तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ	९१९	त्वामिन्द्र ब्रह्मगा वर्धयन्तः	१४७	द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु	११३
तुभ्यमग्रे पर्यवहन्	६४९	दूमना देवः सविता	५२३	द्रविणोदा ददातु नो	९१४
तुरण्यवोऽन्निरसो	४३	दर्शोऽसि दर्शतोऽसि	६८२	द्रविणोदा द्रविणसो	९१३
तृष्टमेतत् कटुकम्	६४५	दिक्षु चन्द्राय समनमन्	९९८	द्रविणोदाः पिपीषति	९१५
ते न आस्नो वृकाणाम्	९५	दितेः पुत्राणामदितेः	१७	द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं	८८३
तेन भूतेन हविषा	९८७	दिवं ब्रूमो नक्षत्राणि	११२२	द्वे इवस्य क्रमणे	८३१
तेनेषितं तेन जातं	९००	दिवि क्षयन्ता रजसः	३३१	द्वं ते चक्रे सूर्ये	६४२
ते नो भद्रेण शर्मणा	६४	दिवि विष्णुर्व्यक्रःस्त	८५२	द्वे समीची विभृतः	६७४
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं	८७	दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	११३५	द्वे स्मृती अश्रणवं	६७३
ते स्याम देव वरुण	४९	दिवो धर्ता भुवनस्य	४३५	द्वौ च ते विशतिश्च ते	१०३४
ते हिन्विरे अरुणं	१०३	दिवो धामभिवरुण	३४५	धर्ता दिवो वि भाति	६०७
ते हि पुत्रासो अदितेः	३	दिवो रुक्म ऊरुचक्षा	५६४	धर्मणा मित्रावरुणा	२५४
ते हि ष्मा वनुषो नरो	३५८	दिवो वा विष्ण उत वा	८५४	धाता दधातु दाशुषे	७१२
ते हि सत्या ऋतस्पृशः	२७७	दिवो विष्ण उत वा	८६४	धाता दधातु नो रथिम्	७११
त्यान् नु क्षत्रियौ अव	८५	दिव्यं सुपर्ण वायसं	६३०	धाता दाधार पृथिवीं	८१२
त्रिंशद्दामा वि राजति	६९१	दिव्यादित्याय समनमन्	१७८	धाता मा निर्ऋत्या	७०७
त्रिरन्तरिक्षं सविता	४३८	दिशो धेनवस्तासां	९९९	धाता रातिः सवितेदं	६९५, ७०८
त्रिदिवः पृथिवीमेषः	८४४	दृतेरिव तेऽश्रुकम्	७३७	धाता विधाता भुवनस्य	७१०
त्राणि पदा वि चक्रमे	८२०	दृशेन्यो यो महिना	६६५	धाता विश्वा वार्या दधातु	७१३
त्री रोचना दिव्या	२९	देव सवितः प्रभुव	४९१	धारयन्त आदित्यासो	२४
त्री रोचना वरुण	२८४	देव सवितरेष ते	४८९	ध्रुवा असदन्नृतस्य	८५०
त्वं रक्षसे प्रदिशः	१४९	देवं नरः सवितारं	४३३	नक्षत्राणि च मे यज्ञेन	११०७
त्वं विश्वेषां वरुणासि	३०	देवस्त्वा सविता मध्वा	५१२	नक्षत्राणि छन्दः	११०६
त्वं विष्णो सुमतिं	८४३	देवस्त्वा सवितोद्वपतु	४९९	नक्षत्राणि रूपेण	११११
त्वं तस्य द्वयाविनो	७२१	देवस्य चेततो महीं	५०४	नक्षत्रेभ्यः किर्मिरम्	१११३
त्वं तृतं त्वं पर्येषु	१४८	देवस्य त्वा सवितुः	४८५	नक्षत्रेभ्यः स्वाहा	११०९
त्वं न इन्द्र महते	१४२	देवस्य वयं सवितुः	४६२	न तं तिग्मं चन ल्यजो	७८
त्वं न इन्द्रोतिभिः	१४३	देवस्य सवितुर्भाग स्थ	५२८	न ते अदेवः प्रदिषो	५७९
त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रः	१५१	देवस्य सवितुर्मतिं	५०७	न ते विष्णो जायमानो	८३९
त्वमिन्द्रासि विश्वजित्	१४४	देवस्य सवितुर्वयं	४३२	न दक्षिणा वि चिकिते	३१
त्वया हितमप्यम्	४२६	देवेभिर्दैव्यदिते	२	नपाता शवसो महः	३५१
त्वयि रात्रि वसामसि	१०३८	देवेभिर्निषिथो	६६१	न पूषणं मेधामसि	७२७
त्वष्टा जायामजनयत्	७०१	देवेभ्यो हि प्रथमं	४४२	न प्रमिये सवितुः	४४४
त्वष्टा दधच्छुम्भमिन्द्राय	६९६				

नभश्च नभस्यश्च	९३४	पुनः पत्नीमभिरदाद्	६५०	प्र विष्णवे शष्पमेतु	८९६
नमो दिवे बृहते	२०८	पुनः समव्यद् विततं	४२३	प्र वो मित्राय गायत	२७९
नमो मित्रस्य वरुणस्य	५७०	पुरा क्रूरस्य विसृपो	९७४	प्र स मित्र मर्तो अस्तु	१८६
न यः संपृच्छे न पुनः	३७१	पुरूरुणा चिद्धस्यवो	२८८	प्र सा क्षितिरसुर	२१६
न यस्याः पारं ददृशे	१०३१	पूर्णः कुम्भोऽधि कालः	८९४	प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां	२०३
न यस्येन्द्रो वरुणो	४२८	पूर्णा पश्चादुत पूर्णा	१०७९	प्रस्तुतिर्वा धाम न प्रयुक्तिः	२३०
नवदशभिरस्तुवत	१०६३	पूर्वापरं चरतो मायया	६७९	प्र हि त्वा पूषन्नजिरं	७२९
नवोनवो भवति जायमानो	९७२	पूषणं न्वजाश्वम्	७६२	प्र ह्यच्छा मनीषाः	७७९
नवोनवो भवसि जायमानो	६८०	पूषन् तव व्रते वयं	७५७	प्राणापानौ मा हासिष्टं	१३१
नहि तेषाममा चन	१०५	पूषन्ननु प्र गा इहि	७५४	प्रातर्जितं भगमुग्रं हवामहे	१६८
नानौकांसि दुर्यो विश्वम्	४२४	पूषा गा अन्वेतु नः	७५३	प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम	७९३
नाभिरहं रथीणां	१२७	पूषा त्वेतश्चावयतु	७७५	प्रातर्देवीमदिति	२८६
नास्माकमस्ति तत् तर	१००	पूषा राजानमावृणिः	७१६	प्रोरोर्मित्रावरुणा	३२३
नि ग्रामासो अविक्षत	१००७	पूषा सुबन्धुर्दिव आ	७७४	बट् सूर्य श्रवसा	५६९
निरु स्वसारमस्कृतो	१००५	पूषेमा आशा अनु वेद	७७७	बळित्था देव निष्कृतम्	२७४
नूनं तदस्य काव्यो	१७६	पूष्णश्वकं न रिष्यति	७५१	बष्महो असि सूर्य	५६८
नू मर्तो दयते सनिष्यन्	८४२	पौर्णमासी प्रथमा	१०८१	बहवः सूरचक्षसो	५०
नू मित्रो वरुणो अर्यमा	३३०	प्रजापतिरनुमतिः	११००	बृहःसुप्तः प्रसवीता	४३९
नृचक्षा एष दिवो	४७८	प्रजापतेरावृत्तो ब्रह्मणा	१६०	बृहद् वरुथं मरुतां	६७
नेह भद्रं रक्षस्विने	८३	प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्	१११२	बृहस्पतिर्म आत्मा	१२५
पञ्चभिः पराङ् तपसि	१५०	प्र णो यच्छत्वर्थमा	८१७	बृहस्पते सवितः	५२७
पथस्पथः परिपतिं	७८८	प्रति तिष्ठ विराडसि	११०१	ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं	११२, १७१
परमेष्ठा त्वा सादयतु	५९८	प्रति वां सूर उदिते	४७, ३३६	ब्रह्म देवां अनु क्षियति	११२१
परि णो वृणजन्नघा	७६	प्र तत् ते अद्य शिपिविष्ट	८४६	ब्राह्मणादिन्द्र राधसः	९११
परि तृन्धि पर्णांना०	७४३	प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्याणि	८६२	ब्रूमो देवं सवितारं	७१४
परि पूषा परस्तात्	७५८	प्र तद् विष्णुः स्तवते वीर्येण	८२५	भृग एव भगवाँ अस्तु	१७०, ७९६
परि यो रश्मिना दिवो	३६१	प्रत्यह् देवानां विशः	५३८	भृगं धियं वाजयन्तः	४२९
परिहृतेदना जनो	७७	प्रत्यर्धिर्यज्ञानाम्	७८३	भृग प्रणेतर्भृग सत्यराधो	१६९, ७९४
परीवृत्तो ब्रह्मणा वर्मणा	१६१	प्रपथे पशामजनिष्ट	७७८	भृगभक्तस्य ते वयम्	४०९, ७९१
परो मात्रया तन्वा	८३८	प्र पादौ न यथायति	१०६१	भृगमुग्रोऽवसे जोह्वीति	७२२
परो हि मर्यैरसि	७३८	प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य	७२८	भृगस्ततक्ष चतुरः	८०७
पर्षिं दीने गभीर औ	७	प्र बाहवा सिस्तं	३२९	भृगस्ते हस्तमग्रहीत्	८०५
पश्चेदमन्यदभवद्	४८२	प्र मित्रयोर्वरुणयोः	३४१	भृगस्य नावमा रोह	६२३
पशुक्रा स्थन देवा	६२	प्र मित्राय प्रार्यम्णे	४०१	भगेन मा शांशपेन	८०१
पातं नो मित्रा पायुभिः	३९८	प्र यद् वां मित्रावरुणा	३०६	भृगो युनक्त्वाशिषो	८००
पातं नो रुद्रा पायुभिः	२९०	प्रयन्तमित् परि जारं	२२५	भद्रा अश्वा हरितः	५४९
विपुर्तु नो आदितिः	२७	प्र यो जज्ञे विद्वानस्य	१७३	भद्रासि रात्रि चमसो	१०५९
प्रीपाय धेनुरदितिः	२३१	प्र वो वां मित्रावरुणा	३७०	भद्राहं नो मर्ध्यदिने	१०३०
पुष्यं पूर्वा फल्गुन्यौ	११२६	प्र वां स मित्रावरुणौ	३२२	भषा मित्रो न शेष्यो	८९३



भूताय त्वा नारातये	५९१	मित्रस्य चर्षणीधृतो	१९०	यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च	९९५
भूर्भुवः स्वर्गैरिव भूमना	५९३	मित्रा तना न रथ्या	३४८	यथा सूर्यो नक्षत्राणां	६१७
मंधीमहि त्वा वयम्	७८२	मित्राय पञ्च येमिरे	१९२	यथाहश्च रात्री च	१०१८
मधुश्च माधवश्च	९३२	मित्रावरुणयोर्भाग स्थ	३९६	यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति	७०५
मनो अस्या अन आसीद्	६३६	मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशालोः	३८०	यदद्य कञ्च वृत्रहन्	६०३
मन्दस्व होत्रादनु	९२५	मित्रावरुणौ वृष्टयाधिपती	३९१	यदद्य त्वा पुरुष्टुत	७६८
मरुतः पिबत ऋतुना	९०८	मित्रो अंहोश्चिदादुरु	२६५	यदद्य सूर उदिते	४४
महौ आदित्यो नमसा	१८९	मित्रो जनान् यातयति	१८५	यदद्य सूर्यं ब्रवोऽनागा	५५७
महान्ता मित्रावरुणा	३५०	मित्रो देवेष्वायुषु	१९३	यदद्या रात्रि सुभगे	१०५०
महि ज्योतिर्बिभ्रतं	५७७	मित्रो नो अल्यंहतिं	८६	यदयातं शुभस्पती	६४१
महि त्रीणामवोऽस्तु	१०४	सुखन्तु मा क्षपथ्याद्	९९१	यदक्षिणा पृच्छमानौ	६४०
महि वो महतामवो	७२, ८८	मूर्धा भुवो भवति नक्तम्	६६४	यदाविर्यदपीच्यं	८४
मही अत्र महिना	२१७	मूर्धाहं रयीणां मूर्धा	१२१	यदि जाप्रद्यदि स्वप्न	५९९
महीमू षु मातरः	१२	भेद्यन्तु ते वह्नयो येभिः	९२७	यदीदं मातुर्यादि वा	८८२
मह्यं त्वा मित्रावरुणौ	३९३	य इन्द्र इन्द्रियं दधुः	५०२	यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो	६६९
मा कस्याञ्जुतकत्	२९१	य इमा विश्वा जातानि	४६०	यद् गोपावददितिः शर्म	३१६
मा काकम्बीरमुद् वृहो	७३६	य इमे उभे अहनी	४५९	यद् देवाः शर्म शरणं	८१
माक्रिर्नेशनमाकीं	७५५	य उपरिष्ठाज्जुहति	६२४	यद् त्वद् वां पुरमीळहस्य	२१४
मातुर्दिधिषुमब्रवं	७६३	य एनमादिदेशति	७६५	यद् त्यन्मित्रावरुणा वृताद्	२१३
मा त्वा क्रव्यादभि	९९६	यं यज्ञं नयथा नरः	१९	यद् बंहिष्ठं नातिविधे	२४७
मा त्वा दभन्तलिले	१४१	यः पूर्व्याय वेचसे	८३४	यद् यामं चक्रुर्निखनन्तो	८८०
मा नः सेतुः सिषेदयं	९२	यजामहे वां महः	२२९	यद् वः श्रान्ताय सुन्वते	९०
मा नो मृचा रिपूर्णां	९३	यजातवेदो भुवनस्य	६६३	यद् वो देवाश्चक्रम	५८१
मा नो हेतिर्विवस्वतः	१०१	यज्ञैः संमिश्राः पृषतीभिः	९२०	यं देवा अंशुमाप्याययन्ति	६८४
मा मां प्राणो हासोन्मो	१२९	यज्ञो देवानां प्रत्येति	११०	यं देवासोऽजनयन्त	६६७
माया वां मित्रावरुणा	२५१	यज्ञो हीळो वो अन्तरः	६६	यन्नूनमद्यां गतिं	२५७
मा विदन् परिपन्थिनो	६४३	यत् किं चेदं पतयति	१०४१	यमादित्यासो अद्गुहः	७०
माश्वानां भद्रे तस्करो	१०३६	यत् त आत्मनि तन्वां	५१७	यसु पूर्वमहुवे तमिदं	९२६
माहं मघोनो वरुण	३७	यत् ते देवा अकृण्वन्	१०८५	यं परिहस्तमभिभः	७०२
मित्र एनं वरुणो वा	३८३	यत् प्राण ऋतावागते	९६६	ययोरोजसा स्कुमिता	८७७
मित्रं वयं हवामहे	१९९	यत्र ब्रह्मविदो यान्ति	९९४	यक्षिकेत स सुकतुः	२६२
मित्रं हुवे पूतदक्षं	१९६	यत्रा चक्रुरमृता	६३१	यक्षिद्धि त इत्या भगः	४०८
मित्रं न यं शिम्या गोषु	१८४	यत्रा वदेते अवरः	६७५	यस्मा अरासत क्षयं	७५
मित्रः पृथिव्योदकामत्	१९५	यत्रा समुद्रः स्कुभितो	४८१	यस्मै पुत्रासो आदितेः	१०६
मित्रः सःसृज्य पृथिवीं	१९४	यत् त्वा तुरीयमृतुभिः	९१६	यस्य ते पूषन्सख्ये	७३०
मित्रश्च नो वरुणश्च	२९७	यत् त्वा सूर्य स्वर्मातुः	५५६	यस्य ते विश्वा भुवननि	५७८
मित्रश्च वरुणश्चासौ	८१६	यथा नो मित्रो वरुणो	२०२	यस्य त्यन्महित्वं	७८०
मित्रस्तन्नो वरुणो देवो	३३३	यथा प्रसृता सविदुः	१००१	यस्य त्री पूर्णा मधुना	८२७
मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त	४२	यथा शाभ्याकः प्रपतन्	१०४८	यस्य प्रयाणमन्वन्य	४४९

यस्यायं विश्व आयो	११९	यूयं राजानः कं	७१	रात्रि मातरुषसे नः	१०४०
यस्येदं प्रदिशि यद्	८७८	यूयमुग्रा मरुतः	१८१	रात्रीभिरस्मा अहभिः	१००९
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु	८६३	ये चिद्धि मृत्युबन्धवः	६९	रात्री माता नभः पिता	१०२०
या गुह्ययो सिनीवाली	१०९७	ये ते त्रिरहन्त्सवितः	४४६	रात्री व्यख्यदायती	१००३
या त इन्द्र तनूरप्सु	१४६	ये ते पन्थाः सवितः	४१९	रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्	१०१४
याति देवः प्रवता याति	४११	ये ते रात्रि नृचक्षसो	१०३२	राया वयं ससवांसो	३७८
या ते अप्सा गोओपशा	७४७	ये ते रात्र्यनङ्गाहः	१०४६	राया हिरण्यया मतिः	४८
या देवीः पञ्च प्रदिशो	९६८	येन वृक्षां अभ्यभवो	८००	रायो धारास्याघृणे	७६१
याद्वाध्यं वरुणो योनिम्	४२७	येन सूर्य ज्योतिषा	५७३	रायो बुध्नः संगमनो	४७९
या धर्तारा रजसो	२८७	येना पावक चक्षसा	५३९	रचिरसि रोचोऽसि	१५४
या धारयन्त देवाः	३४२	येऽमावास्यां रात्रिमुदस्थुः	१०१७	रुजश्च मा वेनश्च मा	१२२
यानि नक्षत्राणि दिवि	११२९	ये मूर्धनः क्षितीनाम्	९४	रेवद् वयो दधाथे	२२१
यां देवाः प्रतिनन्दन्ति	१०७५	ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति	१०४३	रैभ्यासीदनुदेयी	६३२
या प्लोहानं शोषयति	३८६	यो अद्य सेन्यो वधो	३९०	वचो दीर्घप्रसन्ननि	३६३
यां पूषन् ब्रह्मचोदनीं	७४६	यो अद्य स्तेन आयति	१०६०	वज्रापवसाध्यः कीर्तिः	६८८
यावन्तो मा सपत्नानाम्	६१८	यो अन्धो यः पुनःसरो	८०३	वयमु त्वा पथस्पते	७३९
यावन्मात्रमुषसो न	६७७	यो अस्मै हविषाविधत्	७५२	वयं मित्रस्यावसि	२६६
यावया वृक्यं वृकं	१००८	योऽथर्वाणं पितरं	१७७	वरुणः प्राविता भुवन्	२०१
या विस्पतीन्द्रमसि	१०९४	यो नः कश्चिद् रिरिक्षति	६०	वरुणं वो रिशादसम्	२५५
या वो माया अभिद्रुहे	३६	यो नः पूषणघो वृको	७१९	वरुणं तं आदित्यवन्तम्	१६४
या सुबाहुः स्वर्गुरिः	१०९३	यो नो भद्राहमकरः	१११७	वयं वन्दे सुभगे	१०५४
यास्ते पूषणावो अन्तः	७७३	यो ब्रह्मणे सुमतिम्	३१९	वर्षाभिर्ऋतुनादित्या	९४२
यास्ते राके सुमतयः	१०८४	यो मित्राय वरुणाय	२०७	वर्षिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा	३६९
युक्तेन मनसा वयं	४२५	यो राजभ्य ऋतनिभ्यो	३२	वषट् ते विष्णवास आ	८४१
युक्त्वाय सविता देवान्	४९६	यो वां गर्तं मनसा	३३४	वसन्तेन ऋतुना देवा	९४०
युजते मन उत युजते	४४७	यो वां यज्ञैः शशमानो	२१९	वस्योभूयाय वसुमान्	६२७
युजन्ति ब्रह्मरुषं	११६	यो विश्वाभि विपश्यति	७३४	वाचं सु मित्रावरुणौ	२५३
युजानः प्रथमं मनः	४९४	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं	६८३	वाजस्य नु प्रसवे	१६
युनक्तु देवः सविता	५२६	यो होताऽऽसीत् प्रथमो	६६२	वाममथ सवितर्धामसु	४६६
युयोता शरुमस्मदाँ	५८	रक्षा माकिर्नो अघशंस	१०३५	वार्षिकवेनं मासौ	९५८
युवं वक्षाणि पीवसा	२२२	रक्षोहणं बलगहनं	८५६	वार्षिकौ मासौ गोप्तारौ	९५७
युवं क्षमराजावसीदतं	३७७	रक्षोहणो वो बलगहनः	८५८	वासन्तावेनं मासौ	९५४
युवं वक्षं धृतव्रत	९१२	रथं युजते मरुतः	२५२	वासन्तौ मासौ गोप्तारौ	९५३
युवं नो येषु वरुण	२६०	रथीतमं कपर्दिनम्	७६०	वि चक्रमे पृथिवीमेष	८४५
युवं मित्रेनं जनं	२६७	राकामहं सुहवां	१०८३	विजनाच्छपावाः शितिपादो	४१३
युवां यज्ञैः प्रथमा गोभिः	२२०	राजानावनभिद्रुहा	२३४	विदा देवा अघानाम्	७३
युवाभ्यां मित्रावरुणा	२५८	रातिं सत्यतिं महे	५०६	विद्या शरस्य पितरं	६१०, ९८०
युवोर्हि मातादितिः	३७६	रात्रिरात्रिमरिष्यन्तः	१०४७	विद्यामादित्या अवसो	२५
युष्मे देवा अपि प्पसि	७९	रात्रिः केतुना जुषतां	१०१६	विद्यामेवि रजस्पृथ्वहा	५४०

विद्युत् पुंश्वली स्तनायित्तुः	१०२४	विष्णोः क्रमोऽसि० अप्सु	८७३	शुचिरपः सूयवसा	३३
वि नः सहस्रं शुरुधो	५६०	विष्णोः क्रमोऽसि० यज्ञ	८७१	शुचीं ते चके यात्या	६३८
वि पयो वाजसातये	७४२	विष्णोः क्रमोऽसि० षोषधी	८७२	शृण्वन्तं पूषणं वयम्	७५६
वि पूषभारया तुद	७४४	विष्णो रराटमसि विष्णोः	८५५	शैशिरावेनं मासौ	९६४
विभक्तारं हवामहे	४०५, ५०८	विष्णोर्नु कं प्रा वोचं वीर्याणि	८६१	शैशिरेण ऋतुना देवाः	९४५
विभ्राजज्ज्योतिषा स्वः	५९०	विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं	८२४	शैशिरौ मासौ गोसारी	९६३
विभ्राजमान उषसाम्	५६३	वि सुपर्णो अन्तरिक्षाणि	४१५	श्रद्धा पुंश्वली मित्रो	१०२१
विभ्राड् बृहत् पिबतु	५८७	वृषभं वाजिनं वयं	१०८०	श्रायन्त इव सूर्य	६०४
विभ्राड् बृहत् सुभृतं	५८८	वृष्टिद्यावा रीत्यापा	१८३	श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्यौ	१०६७
विमान एष दिवो मध्य	११४	वेद वै रात्रि ते नाम	१०४४	षष्टिश्च षट् च रेवति	१०३३
विमोकश्च मार्द्रपाविश्च	१२४	वैवस्वतः कृणवद् भागधेयं	८८१	स भार्तावानां पाशान्मा	९७०
वि यद् वाचं कीस्तासो	३०७	वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो	६७१	स एव सं भुवनानि	८९५
वि ये दधुः शरदं	५१	वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं	६७२	सं या दानूनि येमधुः	३५२
विषस्वते स्वाहा	८७९	व्यस्मे अधि शर्म तत्	७४	सं वर्चसा पयसा	६९३, ७००
विषस्वन्नादित्येष ते	१११	व्यस्यै मित्रावरुणौ	३८९	सं वः सृजत्वर्थमा	८१५
विश्वव्यचाश्चमौषधयो	१११८	व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्मणाभिः	१६६	संवत्सरं शशयाना	८८८
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय	६७०	व्रतेन स्थो भ्रुवक्षेमा	२९६	संवत्सरस्य प्रतिमां	१०७६
विश्वस्य हि प्रचेतसा	२९३	ज्ञांसा मित्रस्य वरुणस्य	३२४	संवत्सराय पर्यायिणीं	८८६
विश्वस्य हि प्रेषितो	५७४	शकधूमं नक्षत्राणि यद्	१११६	संवत्सराय स्वाहा	८८४
विश्वस्य हि श्रुष्टये	४२१	शक्वरो स्थ पशवो मोष	१३३	संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसि	८८५
विधानि देव सवितः	४५६	शग्धि पूर्धिं प्र यंसि च	७२६	सः स्रष्टां वसुभी रुद्रैः	१०९५
विश्वा रूपाणि प्रति	४४८	शं नो भव चक्षसा	५७९	सखाय आ नि षीदत	४०६
विश्वासां भुवां पते	६०९	शं नो मित्रः शं वरुणः	६०५	सखासावस्मभ्यमस्तु	५३१
विश्वाहा त्वा सुमनसः	५७६	शमिता नो वनस्पतिः	५०३	स घा नो देवः सविता	४७५, ५२१
विश्वे यद् वां मंहना	३०२	शम्या ह नाम दधिषे	१०५८	सजूदेवेन सवित्रा सजूः	५९५
विश्वेषां वः सतां	२९८	शर्म वमैतदा हरस्यै	११०२	स धाता स विधर्ता	७०६
विश्वे हि विश्ववेदसो	२७६	शश्वद्धि वः सुदानवः	९७	संदानं वो बृहस्पतिः	५३३
विषासहिं सहमानं	१३४-१३८	शश्वन्तं हि प्रचेतसः	९८	सप्त चक्रान् वहति	८९३
वि षु द्वेषो व्यंहतिम्	१०२	शारदावेनं मासौ	९६०	सप्त त्वा हरितो रथे	५४१
विष्णुयोनिं कल्पयतु	८७६	शारदेन ऋतुना देवा	९४३	स बुध्न्यादाष्ट्रं जनुवो	१७५
विष्णोः कर्माणि पश्यत	८२१	शारदौ मासौ गोसारी	९५९	समभिरमिना गत	५२५
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा आशा	८६९	शिवां रात्रिमनुसूर्यं च	१०५६	समञ्जन्तु विश्वे देवाः	६५८
विष्णोः क्रमोऽसि० ऋक्	८७०	शिवा नारीयमस्तमागन्	८०९	समध्वरायोषसो नमन्त	७७७
विष्णोः क्रमोऽसि० कृषि	८७४	शीर्ष्णःशीर्ष्णो जगतः	५६६	समानमेतदुदकम्	६२२
विष्णोः क्रमोऽसि० दिक्	८६८	शुकेषु ते हरिमाणं	५४५	समावर्तति विष्ठितो	४२५
विष्णोः क्रमोऽसि० यौ	८६७	शुकं ते अन्यद् यजतं	७७१	समित् तमघमश्रवद्	६१
विष्णोः क्रमोऽसि० अन्तरिक्षात्	८६६	शुकश्च शुचिश्च प्रैष्मावृत्	९३३	समुद्र ईशे स्रवतामभिः	१०००
विष्णोः क्रमोऽसि० पृथिवी	८६५	शुक्रोऽसि भ्राजोऽसि	१५३	समु यूष्णा गमेमहि	७५०
विष्णोः क्रमोऽसि० प्राण	८७५	शुचा विद्धा व्योषया	३८७	समु वां यज्ञं महयं	३२६

समृद्धिरोज आकृतिः	८८९	सिंहस्य राश्र्यशक्ती	१०५५	सूर्यो माहः पात्वग्निः	१३०
सं पूषन्नध्वनास्तिर	७१८	सिनीवालि पृथुष्टुके	१०९२	सोमः प्रथमो विविदे	६५१
सं पूषन् विदुषा नय	७४९	सिनीवाली सुकपर्दा	९	सोमस्त्वा पात्वोषधीभिः	९९२
सं मा सिञ्चन्तु मरुतः	७८९	सुगः पन्था अनृक्षरः	१८	सोमस्यांशो युधां पते	६८१
सम्राजा उग्रा वृषभा	२५०	सुगो हि वो अर्थमन्	२६	सोमो ददद् गन्धर्वाय	६५२
सम्राजा या घृतयोनी	२८०	सुत्रामाणं पृथिवीं	१३	सोमो बधूयुरभवद्	६३५
सम्राजावस्य भुवनस्य	२४९	सुनावमा रुहेयम्	१४	सोऽर्थमा स वरुणः	८१४
सम्राज्ञी श्वशुरे भव	६५७	सुप्रावीरस्तु स क्षयः	४५	सोऽहोरात्रयोः पाशान्मा	१०७४
स रत्नं मर्त्यो वसु	२०	सुमङ्गलीरियं बधूः	६४४	स्तीर्णं बर्हिः सुप्ररीमा	१५
सवितः श्रेष्ठेन रूपेण	५२५	सुषदा पश्चाद् देवस्य	५१३	स्तोमस्य नो विभावरि	१०५७
सविता ते शरीराणि	५११	सुषुमा यातमद्रिभिः	२१०	स्तोमा आसन् प्रतिधयः	६३४
सविता ते शरीरेभ्यः	५०९	सुप्रुतिः सुमतीवृधो	५०५	स्तोमेन हि दिवि देवासो	६६८
सविता पुनातु	५१०	सुसंहशं त्वा वयं	५८६	स्मदभीशू कशावन्ता	३६७
सविता प्रसवानाम्	५१८	सुहवमग्ने कृत्तिका	११२५	स्वधास्तु भित्रावरुणा	३९४
सविता यन्त्रैः पृथिवीम्	४८०	सूक्तवाकं प्रथममादिद्	६६६	स्वयंभूरसि श्रेष्ठो	५९२
सवितासि सत्यप्रसवः	४९३	सूर्य एकाकी चरति	९७७	स्वराडसि सपत्नहा	८५७
सवितुस्त्वा प्रसव उत्पुनामि	४८६	सूर्ये नावमारुक्षः	१५९	स्वस्तितं मे सुप्रातः	११३१
सवित्रा प्रथमेऽहन्	५३०	सूर्ये ते यावापृथिवी	६२०	स्वस्तित नो अस्त्वभयं नो	११३४
सवित्रा प्रसवित्रा	५२९	सूर्ये यत् ते तपस्तेन	६११	स्वस्त्यद्योषसो दोषसश्च	१३२
सवित्रे त्व ऋभुमते	५१६	सूर्ये यत् ते तेजस्तेन	६१५	स्वासदसि सूषा अमृतो	१२८
सवित्रे स्वाहा	४९२	सूर्ये यत् तेऽर्चिस्तेन	६१३	हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षस०	५५५
स वेद सुप्रुतीनाम्	७८१	सूर्ये यत् ते शोचिस्तेन	६१४	हविष्पान्तमजरं	६५९
स वै रात्र्या अजायत	१०१९	सूर्ये यत् ते हरस्तेन	६१२	हस्त आधाय सविता	४९८
स संवत्सरमूर्ध्वो	८९०	सूर्ये रश्मिर्हरिकेशः	४७७	हिरण्यनिर्णिगयो अस्य	२४५
स स्रवाश्चिद्धि समृतिस्त्वेषी	३१८	सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः	६१६	हिरण्यपाणिमृतये	४०३
सहश्च सहस्यश्च	९३६	सूर्याभ्यां स्वाहा	६२२	हिरण्यपाणिः सविता	४१७
स हि दिवः स पृथिव्या	१७४	सूर्याया बहतुः प्रागात्	६३९	हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टौ	२४६
स हि रत्नानि दाशुषे	४५४	सूर्यो ज्योतिज्योतिः सूर्यः	५९४	हिरण्यरूपा उषसो	३७९
सा नो अद्य यस्या वयं	१००६	सूर्यो दिवोदकामत्	६२१	हिरण्यस्तूपः सवितः	४८४
सा पश्चात् पाहि सा पुरः	१०४२	सूर्यो देवीमुषसं	५४८	हिरण्यहस्तो असुरः	४१८
सा मा सत्योक्तिः परि	५७१	सूर्यो नो दिवस्पातु	५८२	हेमन्तेन ऋतुना देवाः	९४४
सावीर्हि देव प्रथमाय	५२२	सूर्यो मा यावापृथिवीभ्यां	६१९	हैमनावेनं मासौ	९६२
				हैमनौ मासौ गोप्तारौ	९६१

इति अदितिः, आदित्याश्च समाप्ताः ।





# दैवत-संहिता

( १० )

विश्वे देवाः

संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,  
स्वाध्याय-मण्डल, औंध ( जि० सातारा )

संवत् २००१, शक १८६६, सन १९४४

---

मुद्रक और प्रकाशक  
वसंत श्री. सातवळेकर, B. A.  
भारत मुद्रणालय, औंध ( जि. सातारा )

---

# विश्वेदेवा देवताका परिचय

यह एक देवता नहीं है

‘ विश्वेदेवाः ’ नामकी कोई एक देवता नहीं है। इसके पर्याय पद ‘ विश्वे देवाः, सर्वे देवाः, नानादेवताः, बहुदैवत्यं ’ इस तरह अनेक हैं। इन पदोंसेही ‘सब देवों’ का बोध होता है। जहां मंत्रमें या सूक्तमें एकसे अधिक देवता होते हैं, और प्रत्येक देवताका पृथक् निर्देश करनेकी संभावना नहीं होती, वहांके अनेक देवताओंका मिलकर निर्देशक नाम ‘ विश्वेदेवाः ’ है। ‘अनेक देवता’ ऐसा भी इसको हम कह सकते हैं। अतः जिन मंत्रोंमें या सूक्तों में अनेक देवता होते हैं, उनका देवता ‘ विश्वेदेवाः ’ समझा जाता है, उदाहरणके लिये देखिए—

इन्द्रवायू बृहस्पति मित्राग्निं पूषणं भगम् ।

आदित्यान् मारुतं गणम् ॥ (ऋ. १।१४।३)

इस एक मन्त्रमें नौ देवताएँ हैं, इसलिये नौ देवताओंका निर्देश करनेके स्थानपर ‘ विश्वेदेवाः ’ देवता कहा है। इससे बोध होता है कि, इस मन्त्रमें अनेक देवताएँ हैं।

सब देवताओंकी इकट्ठी प्रार्थना करनेके समयमें भी ‘ विश्वेदेवा ’ देवता मानी जाती है। वहां सब देव ऐसा अर्थ समझा जाता है, जैसा— (ऋ. २।४१।१३)

विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् ।

यहां सब देवोंकी इकट्ठी प्रार्थना है। यहां किसी एक देवताका निर्देश नहीं है। जहां गणदेवोंकी प्रार्थना होती है, वहां उन सब गण देवोंको सामूहिकरूपसे ‘ विश्वेदेवा ’ कहा जाता है। वसु, रुद्र, आदित्य, मरुत् ये सब गण देव हैं। ये संघ करके रहते हैं।

अथर्ववेदमें ‘ नाना दैवत्यं, मन्त्रोक्ताः देवताः, बहु दैवत्यं, नाना देवताः ’ ऐसे अनेक नाम देवताओंमें आते हैं, उन सबका अर्थ ‘अनेक देवता’ इतनाही है। अर्थात् अनेक देवताओंका बोधक यह पद है। यह कोई एक देवता नहीं। इस सूक्तमें जो अनेक देवता होंगे, वेही दूसरे सूक्तमें होंगे ऐसी भी बात नहीं। परन्तु सर्वत्र अनेक देवता मन्त्रमें वा सूक्तमें होंगे, यही साम्य यहाँ है।

विश्वेदेवाके विषयमें ब्राह्मण ग्रंथोंका

निर्वचन

विश्वेदेवा देवताके संबन्धमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें अनेक प्रकारके विवेचन मिलते हैं, उन्हें अब देखिये—

एते वै सर्वे देवा यद्विश्वेदेवाः ।

(कौ. ब्रा. ४।१४;५।२)

एते वै विश्वेदेवा यत्सर्वेदेवाः ।

(गो. ब्रा. उ. १।२०)

रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ३।१।२।६;१२)

तस्य (सूर्यस्य) ये रश्मयस्ते विश्वेदेवाः ।

(श. ब्रा. ४।३।१।२६)

एते वै विश्वेदेवा रश्मयः। (श. ब्रा. २।३।१।७)

एते वै रश्मयो विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. १।२।४।४।६)

(प्राणा वै) विश्वेदेवाः । (वा. य. ३।८।१५)

(श. ब्रा. १।४।२।३।७)

ऋतवो विश्वेदेवाः । (वा. य. १।२।६।१)

(श. ब्रा. ७।१।१।४।३)

इन्द्राग्नी वै विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. २।४।४।१।३;

३।१।२।१।४)

अथ यदेनं (अग्निं) एकं सन्तं बहुधा विह-

रन्ति तद्स्य वैश्वदेवं रूपम् । (ऐ. ब्रा. ३।४)

श्रोत्रं विश्वेदेवाः । (श. ब्रा. ३।२।२।१।३)

ता (दिशः) उ विश्वेदेवाः ।

(जै. उ. ब्रा. २।२।४; २।१।१।५)

स (प्रजापतिः) विश्वान्देवानसृजत तान्

विष्णुपादधात् । (श. वा. ६।१।२।९)

दिशो हैतद्यजुरेतद्वै विश्वेदेवाः वैश्वानराः ।

(श. ब्रा. ६।५।२।६)

तस्य (प्रजापतेः) विश्वे देवाः पुत्राः ।

(श. ब्रा. ६।३।१।१।७)

वैश्वदेवो हि वैश्यः

(तै. ब्रा. २।७।२।२)



विडु विश्वेदेवाः । ( श. ब्रा. १०।४।१९ )

विशो विश्वेदेवाः ( श. ब्रा. २।४।३६; ३।९।१।६;  
५।५।१।१० )

वैश्वदेव्यो वै प्रजाः । ( तै. ब्रा. १।६।२।५;  
१।७।१।०२ )

पशवो वै वैश्वदेवम् । ( कौ. ब्रा. १।६।३ )

वैश्वदेवो वा अश्वः । ( श. ब्रा. १३।२।५।४;  
तै. ब्रा. ३।९।२।४; ३।९।१।११ )

वैश्वदेवी वै गौः । ( गो. ब्रा. उ. ३।१९ )

वैश्वदेवं अन्नम् । ( तै. ब्रा. १।६।१।१० )

विश्वेषां वा पतहेवानां रूपं यत्करम्भाः ।  
( तै. ब्रा. ३।८।१।४ )

सर्वमिदं विश्वेदेवाः । ( श. ब्रा. ३।९।१।४;  
४।४।१।९; १८ )

सर्वं वै विश्वेदेवाः । ( श. ब्रा. १।७।४।२२;  
३।९।१।१३; ४।२।२।३; ५।५।२।१० )

विश्वेदेवा एव सर्वम् । ( गो. ब्रा. पू. ५।२५ )

अनन्ता विश्वेदेवाः । ( श. ब्रा. १।४।६।१।११ )

विश्वे वै देवा देवानां यशास्वितमाः ।  
( श. ब्रा. १।३।१।२।८; तै. ब्रा. ३।८।७।२ )

बृहस्पतिर्विश्वैर्वैरुदक्रामत् । ( ऐ. ब्रा. १।२४ )

वैश्वदेवं तृतीयसवनम् । ( ऐ. ब्रा. ६।१५;  
श. ब्रा. १।७।३।१६; ४।४।१।११; जै. उ. १।३।७।४ )

अथैनं उदीच्यां दिशि विश्वेदेवा ... अभ्यर्षिचन्  
वैराज्याय । ( ऐ. ब्रा. ८।१४ )

विश्वे त्वा देवा उत्तरतोऽभिषिञ्चन्त्वानुष्टुभेन  
छन्दसा । ( तै. ब्रा. २।७।१।५ )

विश्वेदेवा देवताके संबंधमें ब्राह्मण ग्रंथोंमें इस तरहके वचन मिलते हैं। यहाँ प्रथम ही 'सर्वे देवाः' सब देव विश्वेदेव हैं, ऐसा कहा है, अर्थात् जितने भी देव हैं वे सब विश्वेदेव हैं। कोई देव इनमेंसे छूटा नहीं है। आगे सूर्यके किरण विश्वेदेव हैं ऐसा कहा है। किरण अथवा प्रकाशके किरण जितने भी हैं वे सबके सब विश्वेदेव हैं। आगे प्राण और ऋतुको विश्वेदेवा कहा है। क्योंकि प्राण भी अनेक हैं और ऋतु भी बहुत हैं। इन्द्र और अग्नि विश्वेदेव हैं। अग्नि एक होते हुए भी उसको अनेक नामोंसे पुकारते हैं,

इसलिये वे सब रूप विश्वेदेव हैं। श्रोत्र विश्वेदेव हैं, क्यों- कि सब दिशाएँ ही श्रोत्र हैं और दिशा अनेक होनेके कारण उसे विश्वेदेव कहा है, वह ठीक ही है। प्रजापतिने सब देव उत्पन्न किये, वे विश्वेदेव हैं। प्रजापतिके जो पुत्र देव हैं, वे विश्वेदेव हैं। वैश्य तथा प्रजाजन भी विश्वेदेव हैं। सब पशु भी विश्वेदेव हैं। गौ और घोडा भी विश्वेदेव हैं। विश्वेदेव अनन्त है और यह सब जो भी इस विश्वमें है, वह सब विश्वेदेव ही है।

इस तरह सभी विश्व अर्थात् विश्वके अन्तर्गत पदार्थ मात्र हैं वे सब विश्वेदेव हैं। इसमें कोई वस्तु छूटी नहीं है। यही बात 'विश्वेदेवाः' पदसे भी समझमें आ सकती है। इस विश्वमें जो भी पदार्थ हैं, वे सब 'देव' हैं अतः वे 'विश्वेदेव' कहलाते हैं, यह ठीक ही है। अब तैत्तिस देवोंके विषयमें यहाँ प्रसंगानुसार कुछ कहना चाहिये—

### तैत्तिस देवताएँ

तैत्तिस देवताओंका उल्लेख निम्नलिखित मंत्रोंमें है—

( मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः । पुर उणिक् । )

इति स्तुताऽो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।  
मनोर्देवा यशियासः ॥ ( ऋ. ८।३।०२ )

ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन् ।

विदन्नह द्वितासनन् ॥ ( ऋ. ८।२।८।१ )

( गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः । त्रिष्टुप् )

ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ।  
पत्नीवतः त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह माद-  
यस्व ॥ ( ऋ. ३।६।९ )

( प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः । अनुष्टुप् )

श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विषेतसः ।

तान्रोहिदश्च गिर्वणक्षयस्त्रिंशतं भावह । ( ऋ. १।४।५।२ )

( भृग्वंगिराः । त्रिष्टुप् । अनुष्टुप् )

त्रयस्त्रिंशद्देवतास्त्राणि च धीर्याणि प्रियायमाना  
जुगुपुरप्स्वन्तः । अस्मिन्नग्ने अग्नि यद्विरण्यं तेनायं  
कृणवद्वीर्याणि ॥ ( अथर्व. १९।२७।१० )

( गोपथः । रात्रिः । अनुष्टुप् )

द्वौ च ते त्रिंशतिश्च ते राडयेकादशाधमाः ।

तेभिर्नो अद्य पायुभिः नु पाहि दुहितर्विवः ॥

( अथर्व. १९।४७।५ )

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशतः सुराधसः ।

बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे । देवा देवैरनन्दु  
मा ॥ ( वा. य. २०।११ )

इन सात मंत्रोंमें ३३ देवताओंका स्पष्ट उल्लेख है। 'त्रयः त्रिंशत् देवाः । त्रिंशति त्रयः परः देवासः । त्रिंशतं त्रीन् च देवान् । गिर्वणः त्रयः त्रिंशतं । त्रयस्त्रिंशत् देवताः । देवाः त्रयस्त्रिंशतः । त्र्यौ+त्रिंशतिः च+एकादश ।' ये सब उल्लेख ३३ देवोंकी गणना कर रहे हैं। 'तीन और तीस,' अथवा 'तीस और तीन' इस तरह गणना ऊपरके मंत्रोंमें दीखती है। एक मंत्रमें २+२०+११=३३ ऐसी गणना है। तीन और तीसमें भी एक देव मुख्य और दस देव उसके साथवाले ऐसी गणना है। वही बात २+२०+११=३३ में है। तीन देव मुख्य और दस उसके तीन देवगण मिलकर तैंतीस देव होते हैं।

तैंतीस देवोंमें 'तीनवार एकादश' 'त्रया एकादश' अर्थात् ११×३=३३ ऐसी देवोंकी गणना ऊपर दिये एक मंत्रमें की है। इससे ये तीन तरहके देवगण, ग्यारहकी संख्यामें प्रत्येक गण होनेसे, तैंतीस बने हैं। इससे खोज करनेवालेको पृथ्वी, अन्तरिक्ष और चुलोकमें ग्यारह ग्यारह देवगणोंका निवास है, ऐसा पता लगता है। इसके सूचक निम्नलिखित मन्त्र हैं—

### तीन गुणा ग्यारह देव

( हिरण्यस्तुप आंगिरसः । अश्विनौ । जगती )

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेय-  
मश्विना । प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषः  
भवर्त सचाभुवा ॥ ( ऋ. १।३।११; वा. य. ३।४।७ )

( परुच्छेपो देवोदासिः । विश्वेदेवाः । त्रिन्दुप् )

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश  
स्थ । अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञिमं  
जुषध्वम् । ( ऋ. १।१३।११ )

( शृग्वंगिराः । त्रिवृत् । अनुष्टुप् )

ये देवा दिव्येकादश स्थ० ये देवा अन्तरिक्ष एका-  
दश स्थ० । ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो  
हविरिवं जुषध्वम् ॥ ( अथर्व. १९।२७।११-१३ )

( श्यावाश्व आश्रयः । अश्विनौ । त्रिन्दुप् )

विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहान्निर्महन्निर्भृगुभिः सचा-

भुवा । सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पियत्तमश्विना ।

( ऋ. ८।३।५३ )

( नाभाकः काण्वः । अग्निः । महापंक्तिः )

अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्याश्चेति विदथा कविः ।

स त्रैरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः  
परिष्कृतः । नभन्तामन्यके समे ॥ ( ऋ. ८।३।९।९ )

( मेध्यः काण्वः । अश्विनौ । त्रिन्दुप् )

युवां देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददशे  
पुग्स्तात् । अस्माकं यज्ञं सवने जुषाणा पातं सोम-  
मश्विना दीद्यमी ॥ ( ऋ. ८।५।१२ )

( कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः । त्रिन्दुप् )

तव त्वे सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एका-  
दशासः । दश स्वधाभिरधि मानो अध्ये मृजन्ति  
त्वा नद्यः सप्त यद्भीः ॥ ( ऋ. ९।१२।४ )

इन सात मंत्रोंमें तैंतीस देवोंकी गणना की है। 'त्रिभिः एकादशैः देवैः । त्रीन् एकादशान् । त्रयः एकादशासः ।' तीन गुणे ग्यारह देव हैं यह बात इन मंत्रोंसे सिद्ध होती है।

ये तैंतीस देव 'दिवि एकादश, अन्तरिक्षे एकादश, पृथिव्यामेकादश' इस तरह आकाशमें, अन्तरिक्षमें और भूमिपर ग्यारह ग्यारह हैं, ऐसा विवरण उक्त मंत्रोंमें ही किया है। इससे तैंतीस देव कहां कैसे रहते हैं, इसका पता लगता है। इन ग्यारह देवोंमें भी एक मुख्य और दस गौण अर्थात् उस एकके साथ या अधीन कार्य करते हैं। पृथ्वीपर अग्नि, अन्तरिक्षमें वायु और चुलोकमें सूर्य ये तीन देव संभवतः मुख्य होंगे और इनमेंसे प्रत्येकके अधीन दस दस देव रहते होंगे। पर ऐसा भी दीखता है कि, अग्नि आदि देव इन तैंतीस देवोंको अपने रथपर बिठ-  
लाकर लाते हैं, इस विषयमें मन्त्रभाग देखिए—

अग्ने ! पत्नीवतः त्रिंशतं त्रींश्च देवान् आवह ॥

( ऋ. ३।६।९ )

अग्ने ! गिर्वणः त्रयस्त्रिंशतं आवह ॥

( ऋ. १।४।५।२ )

अग्निः तीन् एकादशान् यक्षत् ॥

( ऋ. ८।३।९।९ )

हे अग्ने ! तैंतीस देवोंको और उनकी पत्नियोंको साथ ले आओ । इसीतरह अश्विदेव भी तैंतीस देवोंको लाते हैं—

हे अश्विना ! अग्निभिः एकादशैर्देवैः आयातां ॥

( ऋ. १।३४।११ )

हे अश्विदेवो ! तैंतीस देवोंके साथ यहां आओ । यहां ये अग्नि और अश्विदेव तैंतीस देवोंको अपने साथ लाते और यज्ञमें हविर्भाग लेते हैं । अश्वि अपने रथपर तैंतीस देवोंको रखकर लाते हैं, इसी तरह अग्नि भी अपने रथपर रखकर उन सब देवोंको लाते हैं । इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र भाग देखने योग्य है—

ऐभिः अग्ने सरथं याहि अर्वाङ् नाना-रथं वा ॥

( ऋ. ३।६।९ )

हे अग्ने । इन तैंतीस देवोंको अपने रथपर बिठला कर अथवा नाना रथोंपर बिठलाकर यहां ले आओ । यह मन्त्र निःसंदेह विचार करने योग्य है । तैंतीस देवोंकी खोजमें यह सहायक होनेवाला है । तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव हैं, ऐसा भी निम्नलिखित मन्त्र में कहा है—

( गाथिनो विद्वामित्रः । अग्निः त्रिंशुप् )

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा  
नव चासपर्यन् । औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदि-  
द्धोतारं न्यसाद्यन्त ॥ ( ऋ. ३।९।९ )

तीन हजार तीनसौ तीस और नौ देव अग्निकी पूजा करते हैं । यहाँ  $३३३० + ९ = ३३३९$  देव हैं ऐसा कहा है ।

१ ब्रह्म = महा सूर्य

३ अग्नि-वायु-सूर्य

३३ उक्त तीन देवोंके साथ दस मिलकर तैंतीस देव

३३३ विश्वेदेवाः

३३३९ ,, ,,

बादके ३३३ और ३३३९ ये देव भी उन ३३ देवोंके साथ कार्य करनेवाले उपदेव हैं । इस तरह देवोंकी संख्याकी वृद्धि होकर तैंतीस कोटी अथवा तैंतीस करोड देवताएं मानी गयी हैं । कहते हैं कि मानव-शरीरमें तैंतीस करोड अणु जीवमात्राएँ हैं । अणुजीवमात्रा ( Cells ) यही जीवनका अतिसूक्ष्म पिण्ड है । ये अणुपिण्ड करोडोंकी संख्यामें शरीरमें रहते हैं, प्रत्येक अणुपिण्डमें विश्वके सब

लोकलोकान्तरके अंश रहते हैं और वे ( स्पेक्ट्रम् ) वर्ण विभाजक यन्त्रसे देखे और पहचाने भी जाते हैं । इससे जो विश्वमें है वह पिण्डमें है और जो पिण्डमें है वह विश्वमें है, इस वैदिक सिद्धान्तकी पुष्टी होती है । इसलिए विश्वान्तर्गत तैंतीस देवताएं शरीरमें कहां हैं, इसकी खोज करना अनिवार्य है । विश्वान्तर्गत तैंतीस देवताएं शरीरमें हैं, इसमें संदेह नहीं है, परन्तु सबकी सब कहां रहती हैं, इसका पता वैदिक वाक्यायसे नहीं लगता है । कुछ थोड़े देवोंके विषयमें ऐतरेयोपनिषदमें कहा है—

अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,

वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,

आदित्यश्चक्षुर्भूत्वा आक्षिणी प्राविशत्,

दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन्,

ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा त्वचं

प्राविशन्,

चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,

मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत्,

आपः रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन्,

( ऐ. उ. २।१ )

कौनसा देव मानव शरीरमें अथवा प्राणि शरीरमें आकर कहां रहा है, इसका वर्णन यहां किया है, इस वर्णनसे निम्न लिखित तालिका बनती है—

विश्वान्तर्गत	शरीरान्तर्गत	शरीरमें
देवता	देवतांश	स्थान
अग्नि	वाक्	मुख
वायु	प्राण	नासिका
आदित्य	चक्षुः	नेत्र
दिश	श्रोत्र	कर्ण
ओषधि	केश	त्वचा
चन्द्रमा	मन	हृदय
मृत्यु	अपान	नाभि
आप्	रेत	शिस्न

इस तरह यह तालिका बनी है । वेदके मंत्रोंमें भी यह विषय है—

संसिचो नाम ते देवा ये संभारान् समभरन् ।

सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाधिशन ॥ १९ ॥

गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ १८ ॥  
 रेतः कृत्वाऽऽज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥ २९ ॥  
 या आपो याश्च देवता या विराट् ब्रह्मणा सह ।  
 शरीरं ब्रह्म प्राविशत् शरीरेऽधि प्रजापतिः ॥ ३० ॥  
 सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य धि भेजिरे ।  
 अथास्येतरमात्मानं देवाः प्रायच्छन्नमये ॥ ३१ ॥  
 तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।  
 सर्वा ह्यस्मिन्देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥ ३२ ॥

( अथर्व. ११।८ )

जो देव शरीर बनानेका संभार इकट्ठा करते हैं, वे संसिच नामक देव मर्त्य देहकी सब सामग्री यथा स्थान इकट्ठी करके मानव देहमें घुस गये हैं। इस मर्त्य गृहको बना कर सब देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं। रेतका घी बनाकर ये देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं। आप्, विराट्, अन्य देवता ब्रह्मके साथ शरीरमें प्रविष्ट हुए हैं। शरीर पर प्रजापति अधिष्ठाता हुआ है। सूर्य चक्षु हुआ, वायु प्राण हुआ, और ये मनुष्य के शरीरमें विभक्त भावसे रहे हैं। इससे भिन्न अन्य अवयव अन्य देव बने हैं। इसलिये ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म कहते हैं। सब देवताएं, गौर्वे गोशालामें रहनेके समान, इस शरीरमें रहती हैं।

यहां स्पष्ट कहा है कि, गौर्वे गोशालामें रहनेके समान सब देवताएं इस शरीरमें रहती हैं, 'सर्वाः देवताः' का अर्थ ये तैत्तीस देवता ही हैं। देखिये—

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे सर्वे समाहिताः ॥ १३ ॥  
 यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अंगे गात्रा विभेजिरे ॥ १७ ॥  
 'इसके शरीरमें तैत्तीस देव शरीरके सब अवयवोंमें समाहित हुए हैं। इसके शरीरके सब गात्रोंमें ये तैत्तीस देव विभक्त होकर रहे हैं।' इस तरह शरीरमें तैत्तीस देव अवयव बनकर रहे ऐसा वर्णन है। इस वर्णनमें तैत्तीस देवता शरीरके गात्रोंमें रहनेका वर्णन स्पष्ट है। मन्त्रमें इस विषय का जो अधिक वर्णन मिलता है वह ऐसा है—

यस्मिन् भूमिरन्तरिक्षं द्यौर्यस्मिन् अध्याहिता ।  
 यत्राग्निश्चन्द्रमाः सूर्यो धातस्तिष्ठन्त्यार्पिताः ॥ १२ ॥  
 यत्र अमृतं च मृत्युश्च पुरुषेऽधि समाहिते ।  
 समुद्रो यस्य नाख्यः पुरुषेऽधि समाहिताः ॥ १५ ॥  
 यत्रादित्याश्च रुद्राश्च वसवश्च समाहिताः ॥ २२ ॥

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोद्गम् ।  
 दिषं यश्चक्रे मूर्धानम् ० ॥ ३२ ॥  
 यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः ।  
 अग्निं यश्चक्र आस्यम् ० ॥ ३३ ॥  
 यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन् ॥  
 दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीः ० ॥ ३४ ॥ ( अथर्व १०।७ )

'जिसमें भूमि-अन्तरिक्ष-द्यु ये तीन लोक हैं। जिसमें अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, वायु ये देव रहते हैं, जहां अमृत और मृत्यु हैं। नदियां नाडीरूपसे जहां रहती हैं। जहां वसु, रुद्र और आदित्य रहे हैं, द्युलोक सिर है, अन्तरिक्ष पेट है और भूमि जिसके पांव हुए हैं। सूर्य चक्षु, चन्द्रमा मन और अग्नि मुख बना है। वायु प्राण और अपान, चक्षु अंगिरस और दिशायें ज्ञान साधन कर्ण यहां बने हैं।'

यह वर्णन परमात्माके विश्वशरीरका और जीवशरीरका समानतया वर्णन है। परमात्माका शरीर विश्व है और जीव का शरीर यह पिण्ड शरीर है, पर दोनों जगह ये तैत्तीस देव हैं। परमात्म शरीरमें पूर्ण रूपसे और जीवशरीरमें अंश रूपसे ये देवताएं रहती हैं। इनका मन्त्रोक्त वर्णन और देखिये—

दश साकं अजायन्त देवा देवेभ्यः पुरा ॥ ३ ॥  
 प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रं अक्षितिश्च क्षितिश्च या ।  
 व्यानोदानौ वाक्मनस्ते वा आकूर्तिं आयहन् ॥४ ॥  
 इन्द्रादिन्द्रः सोमात्सोमो अग्नेरग्निरजायत ।  
 त्वष्टा इ जज्ञे त्वष्टुर्धातुर्धाताऽजायत ॥ ९ ॥  
 ये त आसन् दश जाता देवा देवेभ्यः पुरा ।  
 पुत्रेभ्यो लोकं दत्त्वा कस्मिंस्ते लोक आसते ॥ १० ॥  
 ( अथर्व. ११।८ )

दस देवोंसे दस देव-पुत्र उत्पन्न हुए। प्राण, अपान, चक्षु, श्रोत्र, अक्षिति, क्षिति, ध्यान, उदान, वाणी, मन ऐसे वे दस देवपुत्र दस देवोंसे उत्पन्न हुए हैं। इन्द्रसे इन्द्र, सोमसे सोम, अग्निसे अग्नि, त्वष्टासे त्वष्टा, और धातासे धाता ये पुत्र हुए हैं। ये दस देवपुत्र बड़े देवोंसे उत्पन्न हुए हैं। इन पुत्रोंको स्थान देकर वे देव अपने स्थानमें गये।

पितृस्थानीय देवोंने पुत्ररूपी देवोंको शरीररूपी क्षेत्र निर्माण करके दिया और वे अपने स्थानमें गये। यही इः सभी मंत्रोंका अतिस्पष्ट कथन है। तैत्तीस देव शरीरमें आकर

रहे हैं, ऐसा मंत्रमें कहा भी है, परन्तु गणना करनेके समय आठ देवोंके ही नाम दिये हैं। उपनिषद् में भी ६७ देवोंके नाम हैं और अन्य वेद मंत्रोंमें भी ८१० देवोंके नाम गिनाये हैं। अन्य देवोंके नाम और स्थान नहीं लिखे, इसलिये अन्य देवोंके अंश शरीरमें नहीं आये, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि तैंतीस देवोंका निवास शरीरमें हुआ है ऐसा स्पष्ट कथन पूर्वोक्त मंत्रोंमें है, इतना ही नहीं, परन्तु त्रिलोकी अंश रूपसे शरीरमें रहती है ऐसा भी ऊपरके मंत्रोंमें कहा है। जब पूर्ण रूपसे त्रिलोकीका अंश शरीरमें आया है, तब तो उस त्रिलोकीके सभी देव शरीरमें आगये हैं, इसमें संदेह नहीं रह सकता। परन्तु सब तैंतीस देवोंके नाम और स्थान शरीरमें कहाँ और कैसे हैं, यह वैदिक वाक्यमें किसी स्थानमें लिखा नहीं मिलता। इसकी खोज होना अत्यंत आवश्यक है। अब ऊपरके मंत्रोंके आधारसे शरीरमें जो देवोंके स्थान निश्चित हुए वे ये हैं, उनकी तालिका इस तरह बनती है—

विश्वमें देवता	शरीरमें देवता
ब्रह्मलोक	सिर
सूर्य, अंगिरस	नेत्र
आदित्य	नेत्र
अग्नि	मुख
दिशा	कान
अन्तरिक्षलोक	उद्ग पेट,
चन्द्रमा	मन
रद्र, वायु	प्राण अपान
विशुत्	जाठर अग्नि
नदियां	नाडियां
वृक्ष	केश
वसु, अग्नि	उष्णता
पृथ्वी	पांव

इस तरह यह तालिका तैंतीस देवताएं विश्वमें और उनके पुत्र रूप देव शरीर में कैसे कहाँ हैं, इस संबन्धका ज्ञान देनेके लिये विशुद्ध रूपसे तैयार करनी चाहिये। बड़े प्रयत्नसे यह साध्य हो सकती है, क्योंकि वैदिक साहित्यमें इसका संपूर्ण वर्णन कहीं भी नहीं है। थोड़े देवताओंका

वर्णन वेदमन्त्रों और उपनिषदोंमें है, वैदिक समयमें गुरु अपने शिष्यको यह देवविद्या पढ़ाता होगा, इस लिये उस समय थोड़ेसे संकेत मात्र उल्लेख जो इस समय वेदमन्त्रों और उपनिषदोंमें आये हैं, उतने पर्याप्त होते होंगे। परन्तु अब यह गुप्तविद्या बतानेवाला कोई गुरु नहीं रहा है, इसलिये विशेष खोज पूर्वक यह ज्ञान तालिका बद्ध करके रखना चाहिये।

### शरीरमें देवताओंका स्थान

मनुष्यके पृष्ठवंशमें हड्डियोंकी माला है। इनमें दो हड्डियोंके टुकड़ोंकी जो संधि है, वहाँ मज्जाकी ग्रंथी है। सिरसे लेकर गुदातक ये मज्जा केन्द्र ३३ हैं। इनमें गुदाके पासके ६७ अलग अलग नहीं हैं, परन्तु अन्य मज्जाग्रंथियाँ पृथक् पृथक् हैं और मानसिक ध्यान द्वारा प्रत्येक ग्रंथीको उत्तेजित किया जा सकता है।

योग साधनमें इनमेंसे आठ चक्र योगानुष्ठानके लिये लिये हैं। योगी लोग ध्यानसे देवताकी उपासना इन चक्रोंमें करते हैं और ग्रंथियोंको उत्तेजित करते हैं। ये ग्रंथियाँ उत्तेजित होनेसे उनमेंसे विशेष रस निकलता है, यह रस शरीरमें शोषित होनेसे दीर्घ जीवन, आरोग्य, बल, वीर्य, ज्ञानवर्धन आदि लाभ होते हैं। इसी तरह अन्य मज्जा केन्द्रोंमें जो देवतांश रहते हैं, उनके ज्ञानसे और ध्यानसे मनुष्यका लाभ होना संभव है। पाचन शक्तिका प्रदीप्त होना, रुधिराभिसरण ठीक होना, विचार और स्मरणकी शक्तिका विकास, ब्रह्मचर्यका साधन, ऊर्ध्वरेता बनना, जीवन दीर्घ होना, मृत्युको दूर रखना, नीरोग रहना आदि अनेक लाभ इससे होनेकी संभावना है।

पृष्ठवंशके इन केन्द्रोंके विशेष मालिना करनेसे भी लाभ होते हैं। इस विद्याका नाम 'किरोपॉटिक चिकित्सा' है। पर यह विद्या तब साध्य होगी जब प्रत्येक मज्जा केन्द्रकी शक्तिका अर्थात् देवताका यथावत् ज्ञान होगा। इसलिये इन ३३ देवताओंके ३३ केन्द्रोंका शरीरमें स्थान, कार्य और देवतासंबन्ध जानना अत्यंत आवश्यक है।

इस ज्ञानसे व्यक्तिका हित है और वैदिक मंत्रोंसे जो अध्यात्मका अनुभव लेना है, वह इसी अनुष्ठानसे हो सकता है। अर्थात् अध्यात्म ज्ञान केवल गप्पें मारनेसे नहीं हो सकता, परन्तु विश्वध्यापक परम पिता परमात्माके अंशसे

जो यह जीव अमृतपुत्र हुआ है, उसमें पितृतुल्य सब शक्तियाँ हैं, उनको जानना, देखना और उनका उपयोग करके अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। यही अनुष्ठान है। योगी लोग यह करते ही हैं। वही अन्योंको पूर्णरूपसे करना चाहिये। अध्यात्मज्ञानका प्रत्यक्ष फल यही है।

शरीरमें सिरका भाग शुलोक है, छाती और पेट अन्तरिक्ष लोक है, और गुदा मूत्राशयसे नीचेका सब भाग भूलोक है। इन तीन लोकोंमेंसे प्रत्येकमें एक एक देवता मुख्य है और उसके साथ दस देवतायें सहायक हैं। इनका स्थान पृष्ठवंशके मज्जाकेन्द्र हैं। इन केन्द्रोंके अधीन शरीरके सब व्यापार हैं। इसलिये प्रत्येक देवता, उसका अंश शरीरमें कहाँ कहाँ रहता है, कहाँ कहाँ उसका क्या कार्य चल रहा है। उसको स्वाधीन कैसा करना चाहिये, उत्तेजित कैसा करना चाहिये, उत्तेजनासे और स्वाधीनतासे कौनसे लाभ होते हैं, इत्यादि सब ज्ञान इस देवविद्यासे जाना जाता है। योगमें जो गुप्त विद्या है वह यही विद्या है। यह विद्या गुप्त रखते रखते अब लुप्त ही हुई, उसकी खोज करना आजके खोजकर्ताओंका कार्य है।

तैत्तिरीय देवताओंका ज्ञान और स्थान अपने शरीरमें जानना चाहिये। यही अध्यात्मविद्या है और यही योगसाधनका भाग है। योगी लोग आज भी आठ मज्जाकेन्द्रों और वहाँके आठ देवताओंको जानते और उनका अनुष्ठान ध्यानद्वारा करके लाभ उठाते हैं। पर इसको वे अतिगुप्त रखते हैं। हमें उसकी शास्त्रीयतासे पूर्णरूपसे खोज करनी चाहिये।

तैत्तिरीय देवताओंका ज्ञान वैद्योंको भी होना चाहिये। पर वह बाहरके विश्वव्यापी देवताओंका ज्ञान है। इस ज्ञानसे ही उनकी चिकित्सा होती है। आजकल मृत्तिकाचिकित्सा, जलचिकित्सा, अग्निचिकित्सा, सूर्यकिरण-चिकित्सा, विद्युच्चिकित्सा, औषधिचिकित्सा आदि अनेक चिकित्साएँ प्रचलित हैं। ये सब चिकित्साएँ देवताओंके यथार्थ ज्ञानसे और उपयोगसे होती हैं।

इससे ज्ञात हुआ कि योगी अपने अन्दर ३३ देवताओंका अनुभव करता है और उनको उत्तेजित करके अन्दरही अन्दरसे विशिष्ट ग्रंथिरसोंको प्राप्त करके नीरोग बनकर दीर्घायु होता है। इसी तरह वैद्य इनही देवताओंके गुणधर्म जानकर उनसे नाना प्रकारकी चिकित्साएँ करके अपने रोगि-

योंके रोग दूर करके उनको अपमृत्युसे बचाकर दीर्घायु बनाता है।

याजक लोग अग्नि सिद्ध करके उसमें विशिष्ट औषधियोंके हवन द्वारा इनही तैत्तिरीय देवताकी प्रसन्नता प्राप्त करके भूमि-जल-वायुकी शुद्धिके द्वारा नीरोगताका साधन करके जनताका हित करते हैं। इस तरह ये सब इन तैत्तिरीय देवोंके साथ अपना संबन्ध जोड़ रहे हैं और लाभ भी उठा रहे हैं। तैत्तिरीय देवोंकी यही वेदविद्या है। आज यह पूर्ण रूपसे हमारे हस्तगत नहीं है, पर इस ढंगसे प्रयत्न करनेपर यह कभी न कभी हस्तगत हो सकती है।

इसलिए ये तैत्तिरीय देव विश्वमें कौनसे और कहाँ हैं, वे मानवशरीरमें या प्राणीके शरीरमें कहाँ हैं और यज्ञमें उनका संबन्ध क्या है इसका पता लगाना चाहिये।

### विश्वेदेव कितने हैं ?

अब हम इस बातका विचार करते हैं कि विश्वेदेवा देवताके अन्दर जो मन्त्र समाविष्ट हुए हैं उनमें कितने देवोंका अन्तर्भाव हुआ है और जिन यजुर्वेदके अध्यायोंमें नाना देवताओंके उद्देश्यसे हविर्भाग देनेका वर्णन है, उनमें कितनी देवताएँ लिखी हैं। इनका प्रथम प्रकरणशः विचार करेंगे। प्रथम निघण्टुके पञ्चम अध्यायमें पृथ्वी स्थानीय देवताएँ ५२, अन्तरिक्ष स्थानीय देवताएँ ६८ और बुस्थानीय देवताएँ ३१ इसतरह १५१ देवतायें लिखी हैं, उनके स्थानानुकूल भाव ये हैं—

### पृथ्वी स्थानीय ५२ देवतायें

( निघण्टु ५।१ )

- १ अग्निः जो हवनके लिये तथा पकानेके लिये जलाया जाता है।
- २ जातवेदाः जिससे वेद प्रकट हुए वह यज्ञाग्नि।
- ३ वैश्वानरः सब मानवोंको यज्ञमार्गपर चलानेवाला अग्नि।

( निघण्टु ५।२ )

- ४ द्रविणोदाः धन देनेवाला यज्ञाग्नि,
- ५ इध्मः समिधाओंसे प्रदीप्त होनेवाला

६ तनू-न-पात् शरीरको न गिरानेवाला, ( तनू-नपात् )  
सूर्यरूपी शरीरका पुत्र विद्युत्, उसका पुत्र अग्नि,  
सूर्यका पोता, गौका पोता घी, (गौ-बूध-घी), घी

७ नराशंसः मनुष्योंद्वारा प्रशंसित यज्ञाग्नि ।

८ इळः ( इडः ) स्तुत्य अग्नि,  
९ बर्हिः दूर्भ, आसन,  
१० द्वारः द्वार, यज्ञशालाके द्वार,  
११ उषासानक्ता उषःकाल और रात्रीका समय,  
१२ दैव्याहोतारा अग्नि और वायु, दिव्य होता,  
१३ तिस्रो देवीः भारती इळा सरस्वती ये तीन  
देवियों,

१४ त्वष्टा बढई, विश्वरचनाका कार्य करनेवाला,

१५ वनस्पतिः वनस्पति, यूप, समिधा, लकडी,  
१६ स्वाहाकृतयः स्वाहाकारपूर्वक आहुति देना'  
( निघण्टु ५।३ )

१७ अश्वः घोडा  
१८ शकुनिः पक्षी, कर्पिजल  
१९ मण्डूकाः मेंढक, जलजन्तु,  
२० अक्षाः पासे ( खेलनेके ),

२१ ग्रावाणः सोम कूटनेके पत्थर,

२२ नराशंसः वीरोंकी, नरोंकी जिसमें प्रशंसा की  
जाती है वह यज्ञ

२३ रथः रथ, गाडी, वाहन

२४ दुन्दुभिः ढोल, चर्मवाद्य  
२५ इषुधिः तर्कस, बाणोंकी थैली,  
२६ हस्तघ्नः दस्ताना  
२७ अभीशवः लगाम,  
२८ धनुः धनुष्य  
२९ ज्या धनुष्य की डोरी  
३० इषुः बाण  
३१ अश्वजनी चाबूक  
३२ उत्खलं उत्खली  
३३ वृषभः बैल, (गायका भी उपलक्षण)  
३४ द्रुघणः काष्ठकी गदा, जन

३५ पितुः जन

३६ नद्यः नदियों

३७ आपः जल

३८ ओषधयः औषधियों

३९ रात्रिः रात्री

४० अरण्यानी वनश्री, अरण्य

४१ श्रद्धा श्रद्धा

४२ पृथिवी भूमि

४३ अप्वा भय, रोग, दुःख

४४ अग्रायी अग्निकी ज्वाला

४५ उत्खलमुसले उत्खली और मुसली

४६ हविर्धानो हवि और उसका पात्र, छाज

४७ घावापृथिवी धु और पृथिवी

४८ विपाद्-शुतुद्री इस नामकी दो नदियों,

४९ आर्त्नी धनुष्यकी दोनों कोटियां, दो नोकें,

५० शुनासीरौ हल और हलसे खींची जाने-  
वाली नाली, रेखा

५१ देवी जोष्ट्री सुख देनेवाली देवता

५२ देवी ऊर्जाहुती बल देनेवाली आहुति देवता,

अन्तरिक्षस्थानीय ६८ देवताएं

( निघण्टु ५।४ )

१ वायुः वायु

२ वरुणः वरुण, जलदेव

३ रुद्रः गर्जना करनेवाला विद्युदेव

४ इन्द्रः विद्युदेव

५ पर्जन्यः मेघ, वृष्टी

६ बृहस्पतिः बडा पालक मेघ

७ ब्रह्मणस्पतिः ,, ,, ,,

८ क्षेत्रस्य पतिः खेतका पालक, ,,

९ वास्तोष्पतिः घरका पालक, ,,

१० वाचस्पतिः वाणीका रक्षक, ,,

११ अपां न पात् जलोंको न गिरानेवाला

१२ यमः वायु,

१३ मित्रः वायु, प्राणवायु, मेघ

१४ कः सुखदायी, वायु, मेघ, जल

१५ सरस्वान् बहनेवाला वायु, मेघ

१६ विश्वकर्मा सब कर्म करने करानेवाला, वायु,

१७ तार्क्ष्यः पक्षीके समान संचार करनेवाला वायु,

१८ मन्युः क्रोध, उत्साह बढानेवाला वायु, उत्साह,

१९ दधिक्रा वायु, मेघ

२० सविता प्रेरक वायु

२१ त्वष्टा सुखानेवाला, वायु,

२२ घातः वायु, गन्ध लानेवाला वायु,

२३ अग्निः विद्युत्का भूमि

२४ वेनः प्रकाश, किरण समूह,

२५ असुनीतिः प्राणवायु,

२६ ऋतः जल, जलभरा मेघ,

२७ इन्दुः चन्द्रमा, सोम, पर्वतपर उगनेवाला सोम,

२८ प्रजापतिः पर्जन्य, वायु,

२९ अहिः मेघ, जो बढता रहता है वह मेघ,

३० अहिर्बुध्न्यः मेघ, सूक्ष्म भांपवाला मेघ.

३१ सुपर्णः किरण जिसपर पडे ऐसा मेघ

३२ पुरुरवा गर्जनेवाला मेघ

( निघण्टु ५।५ )

३३ इ्येनः पक्षी

३४ सोमः सोमवह्नी

३५ चन्द्रमाः चन्द्र

३६ मृत्युः मारनेवाला, काल,

३७ विश्वानरः विश्वका नेता, वायु

३८ धाता धारक वायु

३९ विधाता ,, ,,

४० मरुतः मरनेतक प्राणरूपसे कार्य करनेवाला वायु,

४१ रुद्राः प्राणवायु

४२ ऋभवः कारीगर, वायु

४३ अङ्गिरसः अंगोंमें कार्य करनेवाला रस, संचालक ज्ञान वायु

४४ पितरः पितर,

४५ अथर्वाणः स्थिरता रखनेवाला प्राण पितर

४६ भृगवः भृगु, प्राण

४७ आप्त्याः प्राप्त्य, प्राण

४८ अदितिः उषा

४९ सरमा मेघगर्जना, वाणी

५० सरस्वती स्रोत, झरना

५१ वाक् वाणी, मेघगर्जना

५२ अनुमती चतुर्दशी युक्त पूर्णिमा, एक कला जिसमें कम है ऐसी पूर्णिमा

५३ राका पूर्णिमा, पूर्णचन्द्रमा युक्त

५४ सिनीवाली चतुर्दशी युक्त अमावास्या, इस दिन थोडासा चन्द्रमा दीखता है।

५५ कुहू जिस अमावास्यामें चन्द्रमा नहीं दीखता।

५६ यमी रात्री

५७ उर्वशी विद्युत, रात्री,

५८ पृथिवी विस्तृत रात्री

५९ इन्द्राणी विद्युत्प्रभा

६० गौरी बिजलीकी श्वेत रोशनी

६१ गौः जल देनेवाली मेघपंक्ति

६२ धेनुः ,, ,, ,,

६३ अघ्न्या ,, ,, ,,

६४ पथ्या अन्तरिक्ष, अवकाश, मार्ग देनेवाला अवकाश,

६५ स्वस्ति रहनेका उत्तम स्थान, कल्याण,

६६ उषाः उषः काल

६७ इळा जल वृष्टी, अन्न उत्पन्न करनेवाली वृष्टी

६८ रोदसी गर्जना करनेवाली विद्युत्

द्युस्थानीय ३१ देवताँ

( निघण्टु ५।६ )

१ अश्विनौ आधीरात्रीके पश्चात् आकाशमें उद्भव होनेवाले दो नक्षत्र

२ उषाः उषःकाल

३ सूर्य सूर्य, प्रभा

४ वृषाकपायी बलवान् जलशोषक सूर्य



५ सरण्यू खट्वपत्नी, विद्युत्प्रभा

६ त्वष्टा त्वष्टा, विद्युत्, सूक्ष्म करनेवाला,

७ सविता उदयके पूर्वका सूर्य जिसका सूक्ष्म अंश

क्षितिजपर दीख रहा है,

८ भग अर्धोदित सूर्य,

९ सूर्य पूर्णोदित सूर्य,

१० पूषा किरणोंसे पुष्ट हुआ एक प्रकारका सूर्य,

११ विष्णु सूर्य (पूर्ण प्रकाशित)

१२ विश्वानरः तीसरे प्रहरका सूर्य,

१३ वरुणः चतुर्थ प्रहरका सूर्य,

१४ केशी क्षितिजपर पहुंचा हुआ किरणोंवाला सूर्य,

१५ केशिनः अस्त होनेवाला किरणमात्रावशिष्ट सूर्य,

१६ वृषाकपिः अस्त हुआ सूर्य

१७ यमः अस्तंगत सूर्य,

१८ अजएकपात् जिसका एक ही किरण दीखता हो ऐसा सूर्य

१९ पृथिवी बड़ा व्यापक शुलोक

२० समुद्र नीला आकाश, जो समुद्र जैसा दीखता है,

२१ दध्यङ् मेषाच्छादित आकाश जिससे किंचित् वृद्धी होती हो,

२२ अथर्वा शान्त आकाश, अचल सूर्य

२३ मनुः सूर्य (जिसकी ग्रहमाला एकरेपामें आगयी हो) जो मन्वंतर करता है

२४ आद्रित्याः सूर्य किरण

२५ सप्त ऋषयः सूर्यके सात किरण, सात नक्षत्र (सप्तर्षि)

२६ देवाः नक्षत्र, ग्रह, किरण,

२७ विश्वदेवाः सब देव, किरण

२८ साध्याः सूर्यरश्मी, किरण

२९ वसवः " "

३० वाजिनः " "

३१ देवपत्न्यः देवोंकी दीसिबाँ, शक्तियाँ

इस तरह पृथ्वी स्थानमें ५२+अन्तरिक्ष स्थानमें ६८+ और युस्थानमें ३१ मिलकर १५१ देवताएं निघण्टुमें गिनी हैं। इनमें कुछ पुनरुक्त हैं, परन्तु उनका अर्थ स्थानभेदसे पृथक् करके बोध लेना उचित है।

### द्वादश आदित्य

इस स्थानपर निघण्टु ५।६ में दिये युस्थानीय देवता-ओंके नाम ३१ दिये हैं। इनमें बारह आदित्योंके नाम हैं।

त्वष्टा, सविता, भग, सूर्य, पूषा, विष्णु, विश्वानर, वरुण, केशी (केशिनः), वृषाकपि, यम, अज-एकपात्।

ये द्वादश आदित्योंके नाम हैं। 'केशी' और 'केशिनः' ये दो नाम किरणोंकी न्यूनता और अधिकतासे हैं, इसलिये ये एककेही मानना योग्य है।

द्वादश आदित्य ये सूर्य उदयसे सूर्य अस्त होने तकके सूर्यके हैं, तथा सूर्यास्तके पश्चात् भी जो प्रकाश रहता है उसका इनमें अन्तर्भाव हुआ है, ऐसा इनके अर्थोंसे प्रतीत होता है।

शतपथ ब्राह्मणमें कहा है कि, द्वादश आदित्य वर्षके १२ महिने हैं। शतपथका यह अर्थ लेनेसे ये पद प्रतिदिनके सूर्यके मानना असंभव होता है। अतः यदि इन पदोंके ये अर्थ रखते हुए इनके साथ १२ महिनोंकी संगति लगानी है, तब तो हमें उत्तरीय ध्रुवके पासही जाकर वहां इन द्वादश आदित्योंका साक्षात्कार करना होगा। क्योंकि वहाँ एक एक महिनेतक एक एक आदित्यकी स्थिति रहती है।

अर्थात् उषा एक महिना रहती है यह पाठक 'उषा देवता' की भूमिकामें देख सकते हैं, उसके पश्चात् सूर्यके कुछ किरण दीखनेकी दशा करीब एक मास तक रह सकती है। इसी तरह बारहों आदित्य प्रत्येक एक एक मास रहकर एक वर्षकी पूर्ति करते हैं। यह स्थिति भूमंडलपर किसी भी अन्य स्थानमें नहीं है। अतः यदि बारह आदित्य बारह महिनोंके दर्शक हैं, तब तो यह स्थिति उत्तरीय ध्रुवके समीपकी ही है। हमारे यहां ये बारह आदित्य एकही दिनमें अपना साक्षात् दर्शन देते हैं। हमारे एक दिनकी आदित्यकी बारह प्रकारकी अवस्थाएं उत्तरीय ध्रुवके पास ३६५ दिनोंमें दीखती हैं और प्रत्येक स्थितिके लिये करीब एक मास लगता है।

यहां सूर्य उदयसे पुनः सूर्य उदयतक ये १२ आदित्य आते हैं। पर यहां इन आदित्योंका १२ महिनोंके साथ कोई संबंध नहीं है। 'यम' नाम उस आदित्यका है जिसमें आदित्यकी अस्तके बादकी स्थिति है। 'यम' पदका अर्थ 'युगल' है। अर्थात् यह स्थिति दो मास रहनी चाहिये क्योंकि 'यम' का अर्थ ही 'दो' है।

उत्तरीय ध्रुवके पास ही पूरे दो महिनोंकी बड़ी गहरी रात्री होती है जहां बिलकुल सूर्य दर्शन नहीं होता। वस्तुतः वहां छः मास सूर्य दर्शन नहीं होता, परन्तु उन छः महिनोंमें ये दो महिने ऐसे होते हैं कि जिसको गहरी निशा कह सकते हैं, शेष ४ महिनोंमें कुछ न कुछ प्रकाश रहता है अर्थात् यह प्रकाश सूर्यबिंब न दीखते हुए ही आता है।

'यम' पदकी सार्थकता वर्षके उन दो महिनोंके साथ है कि जिनमें सूर्य और प्रकाश बिलकुल नहीं होता। उपाके सूक्तोंमें बड़ी अंधेरी रात्रीका जो वर्णन दीखता है वह भी यहीं सार्थ होना संभव है।

इस विचारसे यह सिद्ध होता है कि जो शतपथने बारह आदित्योंके साथ बारह महिनोंका संबंध जोड़ दिया है वह उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें प्रतिवर्ष दीखनेवाली स्थिति है। समझ लीजिये कि सूर्य उदय हो रहा है, एक अंश, सूर्यका चौथा भाग क्षितिजपर आगया है तो वह चौथा भाग वैसा का वैसा ही क्षितिजपर एक मास तक दीखता रहेगा। इसका अर्थ बिलकुल उतना ही नहीं अपितु एक मासके बाद एक दो अंश ऊपर चढेगा। यह प्रतिदिन इतना थोडा ऊपर चढेगा कि प्रतिदिन उसके चढनेका पता तक नहीं लगेगा। यहां हमारे देशमें एक घण्टेका उषःकाल रहता है। एक घण्टेमें यहां उषःकाल समाप्त होता है और सूर्य ऊपर आने लगता है। उत्तरीय ध्रुवके पास यह उषःकाल एक मास तक रहता है। एक मास उषःकाल होनेके बाद सूर्यका उदय होता है। आगेकी सूर्यकी अवस्थायें भी इसी तरह एक एक मासमें बढ़ती जाती हैं।

इसीलिये सूर्यकी एक अवस्था एक मास रहनेके कारण एक एक आदित्यका नाम एक एक मासको दिया गया और बारह आदित्योंके बारह महिने माने गये।

यहां एक बात ध्यानमें रखनी चाहिये, वह यह कि जैसा हमारे देशमें मध्याह्नमें सूर्य आकाशके मध्यमें बिलकुल

सिरपर आता है वैसा उत्तरीय ध्रुवके प्रदेशमें कभी नहीं आता। अधिकसे अधिक सूर्यका ऊपर चढाना वहां उतना ही होता है जितना हमारे इस प्रदेशमें सवेरके नौ-दस बजे तक होता है। बस, यही सूर्यकी ऊपर चढनेकी परिसीमा है। यहां तक सूर्य चढ गया तो उसको 'त्रिण्यु' नाम मिलता है। यह विद्यु एक मास तक रहता है। उसके पश्चात् वह नीचे उतरने लगता है। और एक एक मास तक उसको अन्यान्य नाम प्राप्त होते हैं।

इस तरह बारह महिनेके बारह सूर्य 'ठीक एक मास तक एक एक वही सूर्यकी स्थिति' रहनेसे उत्तरीय ध्रुवप्रदेशमें ही दीखते हैं। किसी अन्य स्थानमें सूर्य एक मास तक एक ही स्थितीमें रहता ही नहीं।

कई पुराणोंमें प्रतिमास सूर्यका न्यूनधिक उद्यता मान मानकर बारह महिनोंके बारह सूर्य माने हैं। पर रात्रीमें सूर्य बिलकुल ही नहीं रहता, इस बातको वे भूल गये दीखते हैं। उत्तरीय ध्रुवमें रात्री और दिनका कोई भेद ही नहीं है, वहां तो पूरे एक मास तक एक प्रकारका सूर्य अपने इर्दगिर्द प्रदक्षिणा करता हुआ देखनेवालेको दीखता है। दूसरे मासमें उससे न्यून, वा अधिक प्रकाशवाला, इस तरह बारह महिने दीखता रहता है। 'यम' संज्ञक युगल महिने पूर्ण अंधेरेके हैं इसीलिये वे युगल कहलाते और वह सूर्य की ही एक स्थिति मानी गयी है।

दो महिने रात्रीके, उदयपूर्वकी उषाका एक मास और अस्तपूर्वके सायंसमयका एक मास, ऐसे चार महिने सूर्यदर्शन बिलकुल नहीं होता, शेष ८ महिने न्यून वा अधिक सूर्य दर्शन होता है इनमें भी २ मास कम शेष ६ मास सूर्य दर्शन होता है। इसीलिये अदितिके ८ पुत्र कहे हैं। जिन आठ महिनोंमें न्यूनधिक सूर्य दर्शन वा सूर्य प्रकाश होता है, वे ८ आदित्य हैं। बाकी 'मार्तण्ड' अर्थात् (मृत-अण्ड) जिनमें सूर्य रूप अण्डा भरा पडा रहना है अर्थात् दीखता नहीं।

यह सब ठीक ही उत्तरीय ध्रुवकी प्रत्यक्ष स्थिति है। पाठक इसका अधिक विचार करें।

वाजसनेयी संहिताके ३० वे तथा काण्वसंहिताके ३४ वे अध्यायमें नरमेघके १८४ अर्षण १७३ देवताओंके उद्देश्यसे हैं- (अंत्र ५) १ ब्रह्म, २ क्षत्र, ३ मक्ष, ४ तपस्, ५ तमन्,

६ नारक, ७ पाप्मा, ८ आक्रया, ९ काम, १० अतिक्रुष्ट, ११ नृत्त, १२ गीत, १३ धर्म, १४ नरिष्टा, १५ नर्म, १६ हस, १७ आनन्द, १८ प्रमद, १९ मेधा, २० धैर्य, २१ तपस् २२ माया, २३ रूप, २४ शुभ, २५ शरण्या, २६ हेति, २७ कर्म, २८ विष्ट, २९ मृत्यु, ३० अन्तक, ३१ नदी, ३२ ऋक्षीका, ३३ पुरुषव्याघ्र, ३४ गंधर्व-अप्सरस्, ३५ प्रयुज्, ३६ सर्प-देव-जन, ३७ अय, ३८ ईर्यता, ३९ पित्राच, ४० यातुधान, ४१ संधि, ४२ गेह, ४३ आर्ती, ४४ निर्रक्ति, ४५ आराधि, ४६ निर्रकृति, ४७ संज्ञान, ४८ प्रकामोद्य, ४९ वर्ण, ५० बल, ५१ उरसाद, ५२ प्रमुद्, ५३ द्वार, ५४ स्वप्न, ५५ अधर्म, ५६ पवित्र, ५७ प्रज्ञान, ५८ आशिक्षा, ५९ उपशिक्षा, ६० मर्यादा, ६१ अर्म, ६२ जव ६३ पुष्टि, ६४ वीर्य, ६५ तेजस्, ६६ इरा, ६७ कीलाल, ६८ भद्र, ६९ श्रेयस् ७० आध्यक्ष, ७१ भा, ७२ प्रभा, ७३ ब्रह्मस्य विष्टपं, ७४ वर्षिष्ठ नाकं, ७५ देवलोक, ७६ मनुष्यलोक, ७७ सर्वलोक, ७८ अवक्रतिवध, ७९ मेध, ८० प्रकाम, ८१ ऋत्वि, ८२ वैरहस्य, ८३ विविकि, ८४ औपद्रष्टय, ८५ बल, ८६ भूमन्, ८७ प्रिय, ८८ अरिष्टि, ८९ स्वर्ग, ९० वर्षिष्ठ नाक, ९१ मन्यु, ९२ क्रोध, ९३ योग, ९४ शोक, ९५ क्षेम, ९६ उत्कूल-निकूल, ९७ वपु, ९८ शील, ९९ निर्रक्ति, १०० यम, १०१ यम, १०२ अथर्वा, १०३ संवत्सर, १०४ परिवत्सर, १०५ इदावत्सर, १०६ इद्वत्सर, १०७ वत्सर, १०८ संवत्सर, १०९ ऋभु, ११० साध्य, १११ सरस्, ११२ उपस्थावरा, ११३ वैशान्ता, ११४ नड्वला, ११५ पार, ११६ अवार, ११७ तीर्थ, ११८ विषम, ११९ स्वन, १२० गुहा, १२१ सानु, १२२ पर्वत, १२३ बीभत्सा, १२४ वर्ण, १२५ तुला, १२६ पश्चादोष, १२७ विश्व भूत, १२८ भूति, १२९ अभूति, १३० आर्ति, १३१ वृद्धि, १३२ संशार, १३३ अक्षराज, १३४ कृत, १३५ त्रेता, १३६ द्वापर, १३७ आस्कंद, १३८ मृत्यु, १३९ अन्तक, १४० क्षुध, १४१ दुष्कृत, १४२ पाप्मा, १४३ प्रतिश्रुत्क, १४४ घोष, १४५ अन्त, १४६ अनंत, १४७ शब्द, १४८ महस्, १४९ क्रोश, १५० अवस्वर, १५१ वन, १५२ अन्यतोऽरण्य, १५३ नर्म, १५४ हास्य, १५५ बाद्स्, १५६ महस्, १५७ महस्, १५८

महस्, १५९-१६१ नृत्त, १६२ आक्रन्द, १६३ अमि, १६४ पृथिवी, १६५ वायु, १६६ अन्तरिक्ष, १६७ गुलोक, १६८ सूर्य, १६९ नक्षत्र, १७० चन्द्रमाः, १७१ अहः, १७२ रात्री, १७३ प्रजापति ।

यद्यपि ये १७३ देवताएं यहां हैं, तथापि इनमें कई पुनरुक्त हैं, अतः उनको पृथक् करनेसे १६० के करीब ये देवतायें होती हैं। इनमें अन्तिम कुछ थोड़ी अन्य अन्तरिक्ष आदि स्थानकी हैं, शेष सब पृथ्वीपरकी ही हैं। कुछ काल वाचक हैं, कुछ गुणवाचक हैं, कुछ स्थानवाचक हैं।

वा० यजुर्वेदमें अनेक अध्यायोंमें अनेक देवताओंका उल्लेख है, उनमें अध्याय १८;२२;२४;२५;२९ और ३९ में अनेक देवताएं हैं, पर इनमें बहुतसी देवताएं पूर्वस्थानमें दी हैं। इन सब देवताओंका यहां पुनः पुनः निर्देश करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

निष्पटुमें कही देवताएं अनेक हैं, उनमें पृथ्वी, अन्तरिक्ष और गुस्थानमें जो ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, वे स्थूल अक्षरोंमें मुद्रित की हैं। तथापि उनमें मतभेदके लिये बड़ा स्थान है, अतः यहां तक यह ३३ देवताओंका प्रश्न अनिर्णितसा ही आजतक रहा है ऐसा हम यहां कह सकते हैं।

जो तो ८ वसु ११ रुद्र व १२ आदित्य मिलकर ३१ और इन्द्र और प्रजापति मिलकर ३३ देव शतपथानुसार मानते हैं, वे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और गुलोकमें ११ बता नहीं सकते। उन के मत से अन्तरिक्ष में ११ प्राण माने जायेंगे तो और बारहवां इन्द्र वहां आकर बैठता है और गुलोक में उन के मत से १२ आदित्य मानते पड़ते हैं और वसु तो केवल आठ ही पृथ्वी पर रह जाते हैं, पर वे भी पृथ्वीपर नहीं हैं, जो वे ८ गिनते हैं। इस तरह इस गिनतीमें तीन स्थानोंमें ग्यारहकी व्यवस्था नहीं होती। अतः जो मन्त्र तीन स्थानोंमें ग्यारह ग्यारह देवताएं हैं, ऐसा कहते हैं, उनकी गिनती कुछ और ही होगी और शतपथ की कुछ और ही है।

हमारे मतसे पृथ्वीपर ११, अन्तरिक्षमें ११ और गु-स्थानमें ११ यह जो गणना वेद मन्त्रोंमें दीखती है वह

गणना अभी तक किसी भी वैदिक ग्रंथमें स्पष्टतया नहीं बतायी है। उसकी खोज करनी चाहिये। हमने इस विषयमें बहुतही खोज की, पर अभी तक उसकी व्यवस्था ठीक तरह समझमें नहीं आयी। अर्थात् यह खोज अधूरीहि रही है। जो सुविज्ञ पाठक वेदकी खोज करते हैं, वे इन ३३ देवताओंके ग्यारह ग्यारह विभागोंकी खोज करें और उनको तीनों विभागोंमें यथास्थान निश्चित करके बतावें। इसी तरह इन तैंतीस देवताओंमें ये सब तीन चार सौ देवताएं किस तरह अन्तर्भूत होती हैं अर्थात् किस एक मुख्य देवताके साथ कितनी देवताएं माननी चाहिये, इसका भी निश्चय होना-चाहिये।

यहां एक कठिनता भी है। पूर्वोक्त निघण्टुकी देवताओंमें पृथ्वी देवता पृथ्वी-अन्तरिक्ष-द्यु इन तीनों स्थानोंमें लिखी है। अर्थात् पृथ्वीस्थानको छोड़कर अन्य दोनों स्थानोंमें इसका अर्थ ' विस्तृत स्थान ' इतनाही है। इस तरह पुनरुक्त देवता नामोंका निश्चय होना संभव है। वा० यजु० अ. ३० में भी कई देवता नाम पुनरुक्त हैं। संभवतः उन का भी ऐसाही निर्णय होगा।

### यजुर्वेदके कुछ देवता

अब हम यहां यजुर्वेदके कुछ देवताओंके नाम देते हैं— ( अ. १।२० ) आपिः ( प्रास करनेवाला ), स्वापिः ( उत्तम रीतिसे प्रास करनेवाला ), अपिजः ( पुनः पुनः उत्पन्न होनेवाला ), क्रतुः ( यज्ञ ), वसुः ( निवास हेतु ), अहर्पतिः ( दिनका स्वामी ), मुग्धः ( मोह उत्पन्न करनेवाला ), मुग्धः वैनांशिनः ( मुग्ध होकर नाशको प्रास होनेवाला ), विनांशिन आन्त्याय ( अन्त्य स्थानमें रहनेवाला विनाशकर्ता ), अन्त्यः भौवनः ( अन्तिम भुवनमें रहनेवाला ), भुवनस्पतिः ( भुवनोंका पति ), अधिपतिः ( मुख्य स्वामी )। ये १२ देवताएं वा. य. अ. ९ में हैं।

( अ. २२ ) बाईसवें अध्यायमें निम्नलिखित देवताएं हैं— ( इसमें अग्न्यादि प्रसिद्ध देवताओंको छोड़ा है इतना

पाठक स्मरण रखें )— अषां मोद, हिंकार, हिंकृत, क्रन्दत्, अवक्रन्द, प्रोथत्, प्रप्रोथ, गन्ध, प्रात, निविष्ट, उपविष्ट, सन्दिन्त, वलगत्, आसीन, शयान, स्वपत्, जाग्रत्, कृजत्, प्रबुद्ध, विजृम्भमाण, विचृत, संज्ञान, उपस्थित, आयन, प्रायण। ( अ. २२।७ )

यहां आसीन ( बैठनेवाला ) शयान ( सोनेवाला ) इत्यादि पद प्राणियोंकी अवस्थाओंके वाचक हैं, और ये यहाँ देवता वाचक पद हैं यह ध्यानमें रखना योग्य है।

इसी तरह अगली कण्डिकामें निम्नलिखित देवताओंके नाम हैं— यत्, धावन्, उद्राव, उद्रुत्, शूकार, शूकृत, विषण्ण, उथित, जव, बल, विवर्तमान, विवृत्त, विधून्वान, विधूत, शुश्रूषमाण, शृण्वत्, ईक्षमाण, ईक्षित, वीक्षित, निमेष, ( अस्ति सः ) खानेवाला, ( पिबति सः ) पीनेवाला, ( मूत्रं करोति सः ) मूत्र करनेवाला, ( कुर्वत् ) करनेवाला, कृत। ( २२।८ )

ये नाम प्राणियोंकी अवस्थाओंके हैं। ये इस अध्यायमें घोड़ेकी अवस्थाएं करके वर्णन किया है। परन्तु सब प्राणियोंके लिये ये पद लग सकते हैं। ये सब पृथ्वीस्थानीय देवता हैं।

इस तरहकी अन्य देवतायें पाठक इस विभागमें देख सकते हैं।

निघण्टुमें गिनाये देवताओंका उपयोग मंत्रोंमें देखकर भी उनका निर्णय हो सकता है। वह कार्य जिस समय इन मंत्रोंका अर्थ हम करेंगे, उस समय होना संभव है। इस छोटीसी भूमिकामें वह नहीं हो सकता।

निवेदन कर्ता

श्रीधर जि. सातारा  
१।८।१९४४

{ श्रीपाद दामोदर सातवळेकर  
अध्यक्ष स्वाध्यायमण्डल



## देवतासम्बन्धी विचार

[ लेखक- पं० ऋभुदेव शर्मा 'साहित्याऽऽयुर्वेदभूषण' 'शास्त्राचार्य,' भूतपूर्व आचार्य येडशी- श्रीश्यामार्थगुरुकुल, औंध ]

देव भित्तने हैं ? वे जड़ हैं या चेतन ? कहाँ रहते और क्या करते हैं ? इत्यादि प्रश्न वेद-स्थाप्यायी के समझ उप-स्थित होने और समाधान न होनेपर उस विचारकको व्यग्र करते हैं ।

वेद के देवता-सम्बन्धी निर्णय के लिये ही निरुक्त के दैवत-काण्ड की सृष्टि हुई है और निरुक्त-निर्माण के अन्य प्रयोजनों के साथ देवता-विनिर्णय भी एक प्रयोजन कहा गया है । यथा—

(१) 'अथाऽपि याज्ञे दैवतेन यहवः प्रदेशा भवन्ति । तदेतेनोपेक्षितव्यम् ॥' (निर० १।६।१७)

और याज्ञ कर्म में देवता सम्बन्धी बहुत से भाग होते हैं वे इस निरुक्तशास्त्र से ही जानने योग्य हैं ।

यज्ञ-प्रकरण में अनेक देव प्रस्तुत होते हैं उनका सम्पू-र्ण ज्ञान निरुक्त-शास्त्र से ही होता है ।

'ते चेद्ग्र्युलिङ्गश्चा अत्र स्म इति ।' निर० १।६।१७

यदि देवता-ज्ञान के अभिमानी यह कहें कि लिङ्गसे देवता का बोध होता है और हम उन लिङ्गों ( चिह्नों, संकेतों ) को जानते हैं, कि निरुक्त की क्या आवश्यकता? तो वे सुनें—

इन्द्रं न त्वा शयसा देवता वायुं पृणन्तीति वायु-लिङ्गं चेन्द्रलिङ्गं चाग्नेये मन्त्रे ॥ निर० १।६।१७

'इन्द्रं न त्वा' इस अग्निदेवताक मंत्र में वायु और इन्द्र का भी लिङ्ग पाया जाता है ।

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्वेति तथाऽग्निर्मा-न्यवे मन्त्रे ॥ निर० (१।६।१७)

'अग्निरिव मन्यो' इस मनु-देवताक मंत्र में अग्नि का लिङ्ग पाया जाता है । अतः केवल लिङ्ग-ज्ञान दैवत-ज्ञान का परम साधन नहीं, निरुक्त-ज्ञान की भी आवश्यकता है ।

(२) नैघण्टुकमिदं देवता-नाम, प्राधान्येनेदमिति ॥

(निर० १।६।२०)

निघण्टु में देवता-नाम दो प्रकार के हैं, नैघण्टुक और प्राधान्य ।

तद्यदन्यदैवते मन्त्रे निपतति, नैघण्टुकं तत् ॥

(निर० १।६।२०)

जो नाम अन्यदेवताक मन्त्र में आ पड़ता है वह नैघण्टुक कहलाता है ।

तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां, तद् दैवतमित्याचक्षते । तदुपरिष्ठाद् व्याख्यास्यामो नैघण्टुकानि नैगमानीह । (निर० १।६।२०)

और जो नाम प्राधान्य-स्तुतिवाले देवताओं के हैं उनका नाम दैवत है । उनको हम आगे कहेंगे । यहाँ नैघण्टुक और नैगम नाम कहते हैं, उनकी व्याख्या करते हैं ।

उपर्युक्त समग्र वाक्यों से यह प्रतीत होता है कि निघ-ण्टुशास्त्र में जितने नाम पढ़े गये हैं वे मुख्यतः देवता-नाम हैं । तथा निघण्टु और निरुक्त हमें देवता निर्णय सम्बन्ध में कुछ न कुछ धता सकते हैं ।

देवता-ज्ञान गुरुह है । इस विषय में निरुक्तकार यास्क कहते हैं—

शाकपूणिः संकल्पयाञ्चक्रे, सर्वा देवता जाना-मीति । तस्मै देवतोभयलिङ्गा प्रादुर्षभूव । तां न जज्ञे । तां पप्रच्छ, विविदिषाणि त्वेति ॥

(निर० २।२।८)

शाकपूणि आचार्य के मन में अहंकार उत्पन्न हुआ और उन्होंने विचारा कि मैं सब देवताएँ जानता हूँ । उनको आगे एक उभय-लिङ्ग देवता आ खड़ी हुई । उसको वे नहीं जान सके । उन्होंने उसे पूछा 'मैं तुझे जानना चाहता हूँ ।'

हमें वेद की देवताओं का विचार करना है क्योंकि वे ही संसार में कार्य कर रही हैं परन्तु वे शाकपूणि-जैसे नैरुक्ता-चार्य के लिये भी दुर्ज्ञेय हैं ।

वास्क महर्षि ने देवता-सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, उस का सार यह है- ( निरुक्त । देवत-शाण्ड )

अथातो देवतम् । तद् यानि नामानि प्राधान्यस्तु-  
तीनां देवतानां तद् देवतमित्याचक्षते ॥

अब यहाँ से आगे देवत प्रकरण चलेगा । जो नाम प्राधान्य स्तुतिवाली देवताओं के हैं उन्हीं का एक नाम देवत है । ऐसा आचार्य लोग कहते हैं । मंत्रों की देवताएँ प्रधान और अग्रधान दो प्रकार की हैं । और ये प्रधान और अग्रधानरूपसे एक मंत्र में भी स्तुत होती हैं ।

सैषा देवतोपपरीक्षा । यत्काम ऋषिर्यस्यां देवता-  
यामार्थप्रत्यभिच्छन् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते, तद्देवतः स  
मन्त्रो भवति ।

वह यह देवता-सम्बन्धी विचार किया जाता है । जिस देवता की कामना से प्रेरित होकर ऋषि ( स्तोता ) जिस देवता में अपनी अर्थ-सिद्धि चाहता हुआ स्तुति का प्रयोग करता है उस देवतावाला वह मन्त्र होता है ।

तार्पर्यं यह कि, स्तोता जिस देवता की स्तुति करता है, स्तुतिवाले मंत्र ( वाक्य ) की वही देवता होती है । मंत्रों के विषय देवता कहलाते हैं अतः देवता-भेद से-

तास्त्रिविधा ऋचः । परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृताः,  
आध्यात्मिक्यश्च ।

वे तीन प्रकार की ऋक् हैं । परोक्षकृता, प्रत्यक्षकृता और आध्यात्मिकी ।

तत्र परोक्षकृताः सर्वाभिर्नामविभक्तिभिर्युज्यन्ते  
प्रथमपुरुषैश्चाख्यातस्य ॥१॥ 'इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे  
पृथिव्याः' ( ऋ० १०।८।१।१० ), 'इन्द्रमिद् गाथिनो वृहत्'  
( ऋ० १।१।१ ) ।

परोक्ष रूप से की हुई स्तुतियों, जिन में आराध्य देव सम्मुख नहीं होता, नाम की समग्र विभक्तियों से युक्त और प्रथम पुरुष की क्रिया में होती हैं । जैसे 'इन्द्र ही दिव और इन्द्र ही पृथिवी का शासक है,' 'हे गायको! इन्द्र को ही वृहत् साम गाओ' इत्यादि ।

अथ प्रत्यक्षकृता मध्यमपुरुषयोगास्त्वमिति चैतेन सर्वनाम्ना । 'एवमिन्द्र ! यलाद्भि' ( ऋ० १०।१५।३।२ ), 'यि न इन्द्र ! सृष्टो जहि' ( ऋ० १०।१५।२।४ )

प्रत्यक्षकृता स्तुतियों मध्यमपुरुष में होती हैं और एवं, यूयम् आदि सर्वनाम से युक्त । जैसे- 'हे इन्द्र! तू बल से उत्पन्न हुआ है,' 'हे इन्द्र! तू हमारे शत्रुओं को मार दे' इत्यादि

अथापि प्रत्यक्षकृताः स्तोतारो भवन्ति, परोक्ष-  
कृतानि स्तोतव्यानि ॥ 'मा चिदन्वद् वि शंसत' ।

( ऋ० ८।१।१ )

परन्तु कहीं कहीं प्रत्यक्षरूप में स्तोता स्तुत होते हैं और स्तोतव्य परोक्ष में आ जाते हैं । जैसे 'हे सखा लोगो! इन्द्र से भिन्न की प्रशंसा मत करो ।'

तार्पर्यं यह कि कहीं आप सर्वत्र प्रत्यक्षकृता ऋक् को देवता ही न समझें, वे स्तोताओं के लिये भी प्रयुक्त होती हैं ।

आध्यात्मिक्यश्च उत्तमपुरुषयोगाः । अहमिति चैतेन सर्वनाम्ना । यथेतदिन्द्रो वैकुण्ठी, कबसूक्तं, वागाम्भृणीयमिति ।

आध्यात्मिकी स्तुतियों उत्तमपुरुष में और अहं ( मैं ) इस सर्वनाम से युक्त । इन के उदाहरण-इन्द्र वैकुण्ठ, लव और वागाम्भृणीय रूक्त हैं ।

निरुक्तकार ने मन्त्रों का वर्गीकरण कर के वेद-वर्णित देवताओं का ज्ञान सरल बना दिया है ।

अपि ह्यदेवता देवतावत्स्तूयन्ते, यथाश्वप्रभृती-  
न्योपधिपर्यन्तानि ॥ ४ ॥

और अदेवताएं भी देवता-सदृश स्तुति प्राप्त करती हैं । जैसे-घोड़े से लेकर ओपधि-पर्यन्त पदार्थ ।

अतः देवताविषयक विचार करने में, स्तुति के कारण, इन्हें देवता नहीं मान लेना चाहिये ।

माहाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयते ।

कहीं कहीं ऐश्वर्याधिक्य के कारण एक ही देवता बहुत नाम और कार्य से स्तुति प्राप्त करती है । अर्थात् एक होने पर भी अनेक नाम और अनेक कार्य उस के बताये जाते हैं वास्तव में उस का आत्मा ( शरीर ) अनेक नहीं

होता। ऐसे स्थलों पर नाम और कार्य भिन्न होने से उन्हें अनेक देवता नहीं मान लेना चाहिये।

एकस्याऽऽत्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति। कहीं-कहीं एक शरीरवाली देवता के अनेक देव प्रत्यङ्ग बन कर आते हैं। अर्थात् भिन्न होने पर भी शरीर के अङ्ग-समान वर्णित होते हैं।

ऐसे स्थलों पर एकत्ववाद से देवों के अनेकत्व में बाधा नहीं पड़ती।

तिस्त्र एव देवता इति नैरुक्ताः। अग्निः पृथिवीस्थानो, वायुर्वेन्द्रो वा अन्तरिक्षस्थानः सूर्यो ह्युस्थानः ॥

तीन ही देवताएँ हैं ऐसा निरुक्त-मतानुयायी मानते हैं। अग्नि पृथिवीस्थान में, वायु वा इन्द्र अन्तरिक्ष स्थान में, सूर्य ह्यु-स्थान में।

तासां महाभाग्याद् एकैकस्या अपि बहूनि नाम-धेयानि भवन्ति। अपि वा कर्म-पृथक्त्वात्। यथा-होताऽध्वर्युर्ब्रह्मोद्गाता- इत्यपि एकस्य सतः।

उन तीनों के ऐश्वर्य के कारण, एक एक देवता के बहुत नाम होते हैं। अथवा कर्मवैभिन्न्य से अनेक नाम पड़ते हैं जैसे एक होने पर भी कार्यभेद से वही मनुष्य कभी होता, कभी अध्वर्यु और कभी ब्रह्मा या उद्गाता भी कहलाता है।

अथाकारचिन्तनं देवतानाम्।

अथ देवताओं के आकार का विचार करेंगे, वे मनुष्य-सदृश हैं अथवा मनुष्य से भिन्न आकारवाली ?

पुरुष-विधाः स्युरित्येकम्। चेतनावद् हि स्तुतयो भवन्ति, तथाऽभिधानानि।

मनुष्य-सदृश शरीर और ज्ञानवाली हैं ऐसा एक मत है। क्योंकि उन की स्तुतियाँ चेतन प्राणियों के समान हैं और नाम भी।

अर्थात् चेतनके जैसे गुण-कर्म होते हैं वैसे इन देवताओं के भी हैं अतः ये भी मनुष्य-सदृश देहवाली हैं।

अपुरुष-विधाः स्युरित्यपरम्। अपि तु यद् दृश्यते। अपुरुषविधं तत्। तद्यथा-अग्निर्वायुरादित्यः पृथिवी चन्द्रमा इति।

‘पुरुष-भिन्न आकारवाली हैं’ ऐसा दूसरा मत है। क्योंकि यह जो कुछ दीखता है वह पुरुष ( मनुष्य ) से

भिन्न आकृतिवाला है। जैसे अग्नि, वायु, आदित्य ( सूर्य ) पृथिवी और चन्द्रमा।

अपि वा उभय-विधाः स्युः। अपि वा पुरुष-त्रिधानामेव सतां कर्मात्मान एते स्युः। यथा यज्ञो यजमानस्य।

अथवा दोनों प्रकार की हैं। अथवा पुरुष-सदृश मानें तो दूसरी अचेतन देवताओं को चेतन देवताओं का कर्म मान लेंगे। जैसे यज्ञ भी देवता और यजमान भी देवता हों तो यज्ञ यजमान का कर्म माना जाता है। इस प्रकार मानने में कोई दोष उपस्थित नहीं होगा।

तिस्त्र एव देवता इत्युक्तं पुरस्तात्। तासां भक्तिसाह-चर्यं व्याख्यास्यामः।

तीन ही देवता हैं ऐसा पहले कह चुके हैं। उन के भक्ति और साहचर्य कहेंगे।

अथैतान्यग्निभक्तीनि। अयं लोकः, प्रातःसवनं, वसन्तो, गायत्री, त्रिवृत्-स्तोमो, रथन्तरं साम। ये च देवगणाः समाग्नाताः प्रथमे स्थाने। अग्नायी-पृथिवी-इळा इति त्रियः। अथाऽस्य कर्म, वहनं च हविषां, आवा-हनं च देवतानां, यश्च किञ्चिद् दार्ष्टिं विषयिकं अग्नि-कर्मैव तत्। अथास्य संस्तविका देवा इन्द्रः, सोमो, वरुणः, पर्जन्यः, ऋतवः।

अथ अग्नि के भक्तिनाम कहते हैं। पृथिवी ही इसका लोक, प्रातःसवन ही सवन, वसन्त ही ऋतु, गायत्री ही छन्द, त्रिवृत् ही स्तोम, रथन्तर ही इसका साम है। पृथिवी स्थान में पठित देवगण ही इस के साथी हैं। अग्नायी, पृथिवी और इळा ये ही त्रियाँ। हविःका वहन, देवताओं का आवाहन और जो कुछ दृष्टि में आता है वह सब अग्नि का कर्म। और इन्द्र, सोम, वरुण, पर्जन्य और ऋतु ये इस के साथ स्तोतव्य ( स्तुति-भागी ) देव हैं।

अथैतानीन्द्रभक्तीनि। अन्तरिक्षलोको, माध्य-न्दिनं सवनं, प्रीषमस्त्रिष्टुप्, पञ्चदश स्तोमो, बृहत् साम। ये च देवगणाः समाग्नाता मध्यमे स्थाने। याश्च त्रियः। अथास्य कर्म, रसाऽनुपदानं, वृत्रवधः, या च का च बलकृतिरिन्द्रकर्मैव तत्। अथाऽस्य संस्तविका देवाः। अग्निः, सोमो, वरुणः, पूषा, बृहस्पतिर्ब्रह्मणस्पतिः-पर्वतः, कुत्सो-विष्णुर्वायुः।

ये इन्द्रभक्ति नाम हैं जो इन्द्र के साथ पढे जाते हैं । अन्तरिक्ष ही लोक, माध्यन्दिन ही सवन, मीष्म ऋतु, त्रिष्टुप् छन्दः, पञ्चदश स्तोम, बृहत् ही साम । मध्यम स्थान में पठित देवगण ही साथी । मध्यम स्थान में पठित स्त्रियाँ ही इस की स्त्रियाँ । रस का देना, वृत्र का वध और जो कुछ ब्रह्म का काम है वह इन्द्र का कर्म । और अग्नि, सोम, वरुण, पूषा, बृहस्पति, ब्रह्मणस्पति, पर्वत, कुस, विष्णु और वायु ये देव इन्द्र के साथ स्तुति प्राप्त करनेवाले हैं ।

अथैतान्यादित्यभक्तीनि । अतौ लोकः, तृतीयसवनं, वर्षा, जगती, सप्तदशः स्तोमो, वैरूपं साम । ये च देव-गणाः समाप्नताता उत्तमे स्थाने । याश्च स्त्रियः । अथाऽस्य कर्म, रसाऽऽदानं, रश्मिभिश्च रसधारणं, यच्च किञ्चित् प्रवह्निं-आदित्यकर्मैव तत् । चन्द्रमसा, वायुना, संवत्सरेण- इति संस्तवः ।

ये आदित्यसम्बन्धी नाम हैं । द्यौ लोक, तृतीय-सवन ही सवन, वर्षा ऋतु, जगती छन्दः, सप्तदश स्तोम, वैरूप साम । धु-स्थानी देवगण साथी और वहाँ पढी गई स्त्रियाँ स्त्रियाँ हैं । रसका आकर्षण करना, किरणोंसे रसका धारण तथा जो कुछ गुप्त (अक्षयित) कर्म है वह इसका कर्म है । चन्द्रमा वायु और संवत्सर के साथ इसका स्तवन होता है । एतेष्वेव स्थानव्यूहेषु ऋतुछन्दःस्तोम-पृष्ठस्य भक्ति-शेषमनुकल्पयति ।

इन तीन स्थानों में ही ऋतु, छन्दः, स्तोम और पृष्ठ ( साम ) की शेष कल्पनाएँ कर लेनी चाहियें ।

यास्क महर्षिने तीन स्थानोंके तीन व्यूह बनार्ये हैं और ये समग्र देवता, छन्द, ऋतु आदि को उन्हीं में बाँट देना चाहते हैं । यह क्रम उन का अपना नहीं, वेद से लिया हुआ है । प्रमाण के लिए दो एक मन्त्र उद्धृत करता हूँ ।

(१) वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्-  
रुद्रास्त्वा कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा ... आदित्यास्त्वा  
कृण्वन्तु जागतेन छन्दसा ... ॥ यजु० ११।५८ ॥

इस मन्त्रमें वसु रुद्र और आदित्योंके साथ गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती का सम्बन्ध स्पष्ट है । ये देवगण क्रम से पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ-लोक के हैं, अतः इन लोकों के साथ भी इन छन्दों का सम्बन्ध है ।

३ विश्वे प्र.

अग्नेर्भागोऽसि, दीक्षाया आधिपत्यं, ब्रह्म स्पृतं, त्रिवृत् स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि, विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं पञ्चदशः स्तोमो, नृचक्षसां भागोऽसि, धातुराधिपत्यं, जनित्रं स्पृतं, सप्तदशः स्तोमो०००॥ यजु० १४।२४

यहाँ अग्नि, इन्द्र और नृचक्षस् ( आदित्यों ) के साथ त्रिवृत्, पञ्चदश और सप्तदश स्तोमों का सम्बन्ध स्पष्ट है । प्रथम मंत्र में वसु का अर्थ अग्नि, रुद्र का अर्थ इन्द्र और आदित्य का अर्थ सूर्य लें तो दोनों मंत्र निरुक्त के तीन व्यूहों को बहुत कुछ प्रमाणित कर देते हैं । इसी प्रकार ऋतु और पृष्ठसम्बन्धी मंत्र भी बहुत हैं जो प्रयोजन न होने से यहाँ नहीं लिखे जाते ।

अत्र में देवत-काण्ड की भूमिका का उपसंहार करते हुए ऋषि लिखते हैं--

इतीमा देवता अनुकान्ताः ॥ (निरु० ७।३।१३)

इस प्रकार ये देवताएँ कह दी गईं ।

निरुक्तकार ने सम्पूर्ण देवताओं की व्याख्या अपने ढंग से की है । उन्हीं ने सारे देवों को तीन स्थानों में बाँट दिया है यथा-

अग्निः पृथिवीस्थानः । तं प्रथमं व्याख्यास्यामः ।  
(नि० ७।४)

अग्नि पृथिवी-स्थानी देव है, उसकी प्रथम व्याख्या करेंगे । परन्तु वेद में अग्नि शब्द केवल पृथिवीस्थ अग्नि का ही वाचक नहीं, अतः उन्हें कहना पडा ।

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति । अप्येते उत्तरे ज्योतिषी भग्नी उच्येते । निरु० ७।४

कोई ऐसा न मान ले कि यह पृथिवीस्थ अग्नि ही अग्नि है मध्यम और उत्तमस्थान वाले देव भी अग्नि कहलाते हैं ।

अन्त में कहा-

यस्तु सूक्तं भजते, यस्मै हविर्निरुप्यतेऽयमेव सोऽग्निः । निपातमेवैते उत्तरे ज्योतिषी भग्नेन नामधेयेन भजते ॥

(निरु० ७।४)

जो अग्नि सूक्त का सेवन करता, जिसके निमित्त हवि दिया जाता है वह वही पृथिवीस्थ अग्नि है । अन्तरिक्ष और द्यौलोकस्थ ज्योतिषी गौणरूप से अग्नि नाम धारण करती हैं ।



अग्नि का दूसरा नाम जातवेदाः है। उस के विषय में भी ऐसा ही कहते हैं—

स न मन्येताऽयमेवाऽग्निरिति । अप्येते उत्तरे उद्योतिवी जातवेदसी उच्येते ।...यस्तु सूक्तं भजते यस्मै हविर्निरूप्यते ऽयमेव सौऽग्निर्जातवेदाः । निपातमेवैते उत्तरे उद्योतिवी एतेन नामधेयेन भजेते ॥ (निरु० ७।५)

अर्थात् अन्तरिक्षस्थ और ध्रुलोकस्थ देव भी जातवेदाः हैं, परन्तु मुख्यतया जातवेदाः यह अग्नि ही है।

वैश्वानर, द्रविणोदा आदि नामों पर भी यास्क ऋषि का ऐसा ही मत है। यास्क के मत से जातवेदाः वैश्वानर आदि नामवाले भिन्न देव नहीं हैं, पृथिवी पर इस अग्नि के ही ये नाम हैं, इन को भिन्न-भिन्न देव नहीं मानना चाहिये। अग्नि और पृथिवी से सम्बद्ध नामों की व्याख्या करके मध्यम स्थान की ओर चलते हैं—

अथ मध्यस्थाना देवताः । तासां वायुः प्रथमगामी भवति । (निरु० १०।१)

अब मध्यस्थानी देवों की व्याख्या करते हैं। उन में वायु प्रथम है।

इस प्रकार के देखने से पता चलता है कि इन्द्र मित्र वरुणं रुद्रादि नाम वायु के ही हैं। मरुत्, रुद्र, ऋशु, पितर आदि गणनाम वायु-समूह के प्रतीत होते हैं। अद्रिति, सरमा, सरस्वती, इन्द्राणी आदि स्त्रियों के नाम मध्यस्थान में होनेवाली वाणी है। उषा आदि प्रत्यक्ष स्त्रीवाचक नामों को छोड़ कर शेष नाम उस वाणी (गर्जना) के ही हैं।

मध्यस्थान के पश्चात् महर्षि युस्थान की ओर बढ़ते हैं—

अथातो युस्थाना देवताः । तासामश्विनौ प्रथमाऽऽगामिनौ भवतः ॥ (निरु० १२।१)

अब हम यु-स्थानी देवताओं का वर्णन करेंगे। उनमें अश्विनौ प्रथम श्रेणी में आनेवाले हैं।

ये अश्विनौ कौन हैं? यह प्रश्न जगत् के सम्मुख आज भी जटिल है। यास्क के मत में मध्यम और उत्तम दोनों स्थानों के देव मिलकर जिन में उत्तम स्थान के देव आदित्य की प्रधानता रहती है, अश्विनौ कहलाते हैं।

तयोः काल ऊर्ध्वमर्षरात्रात् प्रकाशीभावस्यानुविष्टम्भम् अनुत्तमो भागो हि मध्यमः । ज्योतिर्भाग आदित्यः ।

(निरु० १२।१)

उन का समय आधी रात के पश्चात् प्रकाश के प्रवेश होनेपर आरम्भ होता है। उसका अन्धकारयुक्त भाग मध्यम देव और प्रकाशमय भाग आदित्य है।

वायु और आदित्य अश्विनौ हैं। वास्तव में आधी रात के पश्चात् सूर्य प्राची दिक् में अपनी आभा दर्शाने लगता है। सूर्य उस अवस्था में अश्विनौ नाम से प्रसिद्ध होता है।

सविता, भग, सूर्य, विष्णु आदि नाम उस आदित्य (सूर्य) के ही हैं। ये नाम काल और कार्य के भेद से पड़े हैं। उषाः, सूर्या, वृषाकपायी, सरण्यू नाम आदित्य के प्रकाश (आभा) के हैं।

इन पदार्थों के ये नाम कैसे पड़े हैं और वेद के किन मंत्रों के आधार पर ऐसा अर्थ करना पड़ा है, यह विस्तृत व्याख्या निरुक्त में ही देखिये।

युस्थान के देवगण—

अथातो युस्थाना देवगणाः । तेषामादित्याः प्रथमा-गामिनो भवन्ति ।

अब हम यु-स्थानी देवगण का वर्णन करेंगे उनमें आदित्य-गण प्रथम आते हैं।

आदित्य, सप्त-ऋषि, विश्वे देव, साध्य, वसु आदि देव-गण सूर्य की किरणों के नाम हैं।

चाहे देवों की गणना तीन में हो या अधिक में, नैरुक्त लोग तीन से अधिक देव मानने को उद्यत नहीं। वसु और आदित्य सूर्य-रश्मियों या अग्नि-अश्विनियों में समाविष्ट हो जाते हैं और रुद्र-गण वायु-दल में। इस प्रकार वसु, रुद्र और आदित्यों की कोई भिन्न सत्ता नहीं रहती। कई लोग विश्वे देव को सर्वे देव मानकर उनकी आदित्य-गण के सदृश कोई संख्या नहीं मानते। परन्तु यु-स्थानी देवगण में विश्वे देव और साध्यों की गणना होने से वे आदित्यादि गण से भिन्न गण हैं। वेद की शैली से भी यही प्रतीत होता है—

वसवस्त्वा भूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, रुद्रास्त्वा भूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, आदित्यास्त्वा भूपयन्तु जागतेन छन्दसाऽङ्गिरस्वद्, विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा भूपयन्तु वाजुभेन छन्दसाऽङ्गिरस्वदिन्द्रस्त्वा भूपयन्तु, वरुणस्त्वा भूपयन्तु, विष्णुस्त्वा भूपयन्तु ॥ (वजु० १।१।६०)

ये विश्वे देव वसु, रुद्र और आदित्य से भिन्न हैं तथा वैश्वानर-के पुत्र हैं। क्योंकि उन्हें अनेकत्र वैश्वानर कहा

गया है। ये सूर्य के रहिम हों तो भी वसु रुद्र और आदित्य से पृथक् ही माने जायेंगे।

### ३३ की संख्या

विश्वे देव तैत्तीस हैं-

- (१) नहि वो अस्यर्भको देवासो न कुमारकः ।  
विश्वे सतोमहान्त इत् ॥१॥
- (२) इति स्तुतासो असथा रिशादसो,  
ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।  
मनोर्देवा यज्ञियासः ॥२॥
- (३) ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ।  
अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥३॥  
( ऋ० ८।३० )
- (४) ये त्रिंशति त्रयस्पुरो देवासो बर्हिरासदन् ।  
विद्वद् द्वितासनन् ॥२॥ ( ऋ० ८।२८ )
- (५) ये देवासो विश्वेकादश स्थ,  
पृथिव्यामध्येकादश स्थ,  
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ,  
ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥ ( ऋ० १।१३९।११,  
यजु० ७।१९ )

इन मंत्रों की देवता विश्वे देव हैं। ये तैत्तीस हैं और विश्व अन्तरिक्ष और पृथिवी पर ग्यारह-ग्यारह की संख्या में रहती हैं। अब सिद्ध हो गया कि ये विश्वे देव सम्पूर्ण देव नहीं हैं किन्तु वसु आदि से पृथक् ३३ की संख्या में रहते हैं।

विश्वे देव की संख्या ३३३९ है-

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यानि त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।  
औक्षन् घृतेरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिधोतारं न्यसाद्यन्त ।  
( ऋ० ३।९।९; १०।५२।९; यजु० ३३।७ )

ऋ० ३।९।९ में इस मंत्र की देवता अग्नि है, अन्यत्र विश्वे देव देवता हैं। विचारणीय प्रश्न है कि ये विश्वे देव ३३ हैं या ३३३९ हैं अथवा विश्वेदेव ३३ हैं और सर्वे देव ३३३९ अथवा विश्वे देव का सर्वत्र सर्वे देव ही अर्थ है और वे ३३ या ३३३९ दोनों में हो सकते हैं। विश्वे देव ३३ हैं और वे ही ३३३९ भी, तो परस्पर विरोध आयेगा। यदि सम्पूर्ण देव ३३ की संख्या में हैं और वे ३३३९ की संख्या में भी, तो विरोध है। हाँ, यदि हम विश्वे देव ३३ और सम्पूर्ण देव ३३३९ मानें तो कुछ संगति लग सकती है। निरुक्तकार ने विश्वे देवाः का अर्थ 'सर्वे देवाः' किया है, परन्तु उन के मत में 'देवाः' यह भी गण है। यह सूर्य रहिम का नाम है तब 'सर्वे देवाः' विश्वे देवाः का पर्याय नाम होगा अर्थ तो आदित्य-रहिम ही लेना पड़ेगा। वे शाकपूणि आचार्य का मत उद्धृत करते हैं-

“यत्तु किंचिद् बहुदैवतं तद् वैश्वदेवानां स्थाने युज्यते। यदेव विश्वलिङ्गमिति शाकपूणि।” (निरुक्त१२।४)  
अर्थात् बहुत देवतावाला मंत्र विश्वे देव के स्थान में पढा जाता है जब अन्य विश्वे देवयुक्त गायत्र मंत्र न मिले।

यद्यपि यास्क इस के विरोधी हैं तथापि यह सम्भव है कि सर्वे-देवताक मंत्र विश्वे-देवताक बनाये गये हों। तब ३३३९ संख्याक मंत्र सर्वे-देवताक हैं ऐसा मानना पड़ेगा।

पुराणों में विश्वे देव अन्य देवों से पृथक् हैं। ब्राह्मणमें भी, 'रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वे देवाः' (श० ३।९।२।६ इत्यादि स्थलों में विश्वे देव पृथक् हैं और वे सूर्य के रहिम (किरण) हैं।

यह देवता-विषय बहुत गहन तथा और अधिक मननीय है क्योंकि यह अनुसन्धान अन्तिम नहीं है।



# ‘विश्वे देवाः’ के मंत्रोंके संबंधमें विचार

( ले० श्री० पं० दयानन्द गणेश धारेश्वर बी. ए. स्वाध्यायमंडल, भोंध )

वेदोंमें उपलब्ध देवताओंके वर्णनपरक विभिन्न सूक्त पढ़लेने से स्पष्टतया प्रतीत होता है कि वे सभी देव असाधारण क्षमता से युक्त होते हैं तथा वे अत्यन्त सफलतापूर्वक जनताकी लगातार सेवा करते हुए लोगोंकी अटल, अडिग एवं अविचल भक्ति और उपासना प्राप्त करने में बड़ी स्पृहणीय और विराट सफलता प्राप्त कर लेते हैं। वेद मन्त्रों में अतीव लोकप्रिय नेता, कार्यकर्ता, स्वयंसेवक या प्रभुका बडाही प्रभावोत्पादक एवं सजीव चित्रण देखने मिलता है। जनता एवं उपासकों, भक्तों और अनुयायियों की रक्षा करने का गुरुतर कार्य भार सुचारुरूपसे प्रचलित रखकर समूची बुराइयों और सारे दुश्मनों, विरोधियों एवं स्वार्थी शत्रुओंको पराभूत कर विनष्ट करने या मार भगाने से वैदिक सुकवि और द्रष्टा ऋषि देवों के निकटतम संपर्क में रहने के लिए बड़े समुत्सुक दीख पड़ते हैं और उन्हें आदर पूर्वक समीप बुलाकर सोम आदि वस्तुओं के प्रदानसे भलीभाँति सुस्वागत कर उनके पर क्रमों तथा गुणों का सुन्दर ढंगसे वर्णन करते हुए उनकी सराहना करते हैं। वेदमन्त्रों के द्रष्टा किसभाँति देवताओं को समीप आनेके लिए निमन्त्रण देते हैं या देवों का आवाहन करते हैं यह निम्न मन्त्रों में देखने योग्य है।

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत ।

( ऋ० १।३।८ )

‘ हे संरक्षणकर्ता तथा मानवों के धारण करनेहारे सभी देवो ! इधर आओ । ’

विश्वे देवासो...सुतमा गन्त तूर्णयः ।

( ऋ० १।३।८ )

‘ हे समूचे देवो ! हमने जो सोमरस निचोड़ रखा है उस के निकट शीघ्रता पूर्वक चले आओ । ’ क्योंकि हम

‘ सभी देवोंको इधर उपस्थित रहनेके लिये बुलाते हैं । ’ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति...अवसे इमहे वयम् । ( ऋ० १।८९।५ )

‘ इस प्रभुत्व प्रस्थापित करनेवाले एवं स्थावर जंगमके अधिपति तुल्य इन्द्र को हम अपने संरक्षणार्थ बुलाते हैं । ’ ...विश्वे नो देवा अवसा गमक्षिह ।

( ऋ० १।८९।७ )

‘ सारे देव हमारे समीप संरक्षणकी आशोजना लेकर पहुँच जायें । ’

श्रितः...देवान् हवत ऊतये । ( ऋ० १।१०५।१७ )

‘ श्रित ऋषि अपने संरक्षणार्थ देवोंको बुलाता है । ’

त आवित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्र-  
तूर्येषु शंभुवः ॥ ( ऋ० १।१०६।२ )

वे विख्यात अदितिके पुत्रो ! सबके द्वारा विस्तारित कार्य के लिए आपहुँचो और हे द्योतमान एवं देवतारूपी ! हमारे शत्रुवधोंके कार्योंमें हितकारक बनो । ’

इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं...ऋषिरव्हवूतये ।

( ऋ० १।१०६।६ )

‘ कुत्स ऋषिने वृत्रके वध करनेहारे इन्द्रको अपने संरक्षण के लिए बुलाया । ’

उप नो देवा अवसा गमन्त्वङ्गिरसां सामभिः  
स्तूयमानाः । ( १।१०७।२ )

‘ अंगिरसों के सामों से प्रशंसित होते हुए देव हमारे पास संरक्षण योजना से युक्त हो पधारें । ’

धृतम्रता आवित्या...आरे मत् कर्त...आगः ।

श्रुण्वतो वो...देवा भद्रस्य विद्धाँ अवसे हुवे वः ॥

( ऋ० २।२९।१ )

हे प्रतभागी आवित्यो ! अपराध, दोष को मुझसे दूर कर दो और मैं तुम्हारी की हुई अच्छी बात को जानता हुआ

कार्य को अच्छीतरह निभाने के लिए इधर बुलाता हूँ ।

विश्वे देवास आगत शृणुता म इमं हवम् ।

एवं बर्हिर्नि षीदत ॥ ( २।४१।१३, ६।५२।७ )

‘ सारे देवो ! इधर आओ, मेरी इस पुकार को सुनलो, और इस कुशासन पर बैठ जाहए । ’

...देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ।

( ऋ. २।४१।१५ )

‘ सभी देव जिनकी देन पुष्टी वारक होती है मेरी इस पुकार को सुनलें । ’

सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैरिन्द्रा भ्वशी अवसे  
हुवधै ॥ ( ऋ. ५।४५।४ )

‘ हे इन्द्र एवं अग्नि ! तुम्हें मैं देवों से स्वीकृत तथा भलीभाँति कहे वचनोंसे संरक्षण के लिए बुलाता हूँ । ’

इन उपर्युक्त मन्त्रोंसे वैदिक ऋषियोंके अन्तस्त्रलमें देवों के साङ्गिध्यकी कालसा किस भाँति जागृत थी सो अत्यन्त स्पष्ट होगा । तथा और भी देखिए—

सुगा वो देवाः सद्ना अकर्म य आजग्मेद् ५

सवनं जुषाणाः । भरमाणा वहमाना हवी ५ प्यस्मे  
धत्त वसवो वसूनि ॥ ( वा. यजु. ८।१८ )

‘ हे देवतागण ! आपके लिए हम सुखदायक धर बना चुके हैं जो तुम इस सवन का सेवन या स्वीकार करते हुए इधर आनेलगे; सब को बसानेवाले देवो ! हविर्भागोंको भरपूर देते हुए एवं उन्हें इष्टस्थान में पहुँचाते हुए हमारे लिए धन भाण्डारों को यहाँपर धर दो । ’

आ नो विश्वे सजोषसो देवासो गन्तनोप नः ।

वसवो रुद्रा अवसे न आगमञ्जूष्वन्तु मरुतो  
हवम् ॥ ( ऋ. ८।५४ ) [ वाल. ६ ] ३

‘ सभी देव मिलजुलकर हमारेलिए समीप आ जायें; वसु एवं रुद्र हमारे संरक्षण के लिए आवें तथा मरुत वीर भी हमारी पुकार सुन लें । ’

वयमिद् वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना ।

देवा वृधाय इमहे ॥ ( ऋ. ८।८३।६ )

हे अच्छे दान दूर देवो ! हम तो घर में रहते हुए या मार्ग पर से आवागमन करते हुए तुम्हें ही वृद्धि का कार्य करनेके लिए बुलाते हैं । ’

इस प्रकार देवों को बुलाकर वैदिक मन्त्रोंके दर्शन करनेहारे प्रतिभा शाली कवि उनसे कैसी प्रार्थना करते हैं तथा अपनी आकांक्षाओं को किस तरह उनके सम्मुख पेश करते हैं यह निम्न मंत्रों में देखने योग्य है—

दिविस्पृशं यक्ष्मस्माकमश्विना जीराध्वंर  
कृणुतं सुम्नमिष्टये । ( ऋ. १०।३६।६ )

‘ हे अश्विनौ ! तुम दोनों हमारे यज्ञको सुलोकको छूनेवाला याने अति उच्च कोटिका तथा शीघ्र द्विसारहित होनेवाला बना दो और हमारा इच्छित सिद्ध हो जाय इस हेतु सुख का निर्माण कर डालो । ’

उपह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमृध्वं सख्याय  
शंभुवम् । रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि... ।

( ऋ. १०।३६।७ )

‘ मैं पवित्रतामय वायुमंडल का सृजन करनेहारे एवं सेजस्वी वीर मरुतोंके दलको अपने निकट बुलाता हूँ ताकि मित्रता के लिए वह सुखदायक प्रतीत होये और हम उत्कृष्ट कीर्ति पाने के लिए धनसंपदाको बढ़ानेके ढंग सोचते हैं । ’

यद् वो देवा ईमहे तद् व्दातन ।

जैत्रं क्रतुं रथिमद् वीरवद्यशस्तद् देवानामवो  
अद्या वृणीमहे । ( ऋ. १०।३६।१० )

‘ हे देवो ! हम तुम से जो मांगते हैं उसे देनालो; वीरतायुक्त, धनसंपन्न यश एवं जयिष्णु कार्यक्रम हमें मिल जाय अतः आज हम देवों के उस संरक्षण के ढंग को अपने लिए चुनलेते हैं । ’

ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते  
वरुणस्य देवाः । ते सौभगं वीरवद् गोमदमो  
व्धातन द्रविणं चित्रमस्मे ॥ ( ऋ. १०।३६।१३ )

‘ जो सारे देव सत्य के प्रेरणकर्ता सविता एवं मित्र तथा वरुण के निर्विष्ट, व्रत के अनुकूल कार्य करते हैं वे हमें वीरता पूर्ण, गोधन संकुल अच्छे ऐश्वर्यवाले कार्य और अनूठा धन देनाले ।

यूर्यं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।

कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा ॥ ( ऋ. ६।५१।१५ )

‘ हे देवो ! तुम तो सचमुच चतुर्विध द्योतमान एवं अच्छे दान दूर हो तथा तुममें इन्द्र प्रमुख है; मार्गपरसे

यात्रा करते समय मिलजुलकर रक्षा करनेवाले तुम देव हमारे लिए सुख का प्रबन्ध करडालो ।'

आत्मरक्षा का भाव मानवमें किस तीव्रतासे उमड पडता है यह निम्न मंत्रमें दीख पडता है—

अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः  
पिन्वमानाः । अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽवन्तु  
मा पितरो देवहृतौ ॥ ( ऋ. ६।५२।४ )

' प्रतिदिन उत्पन्न होते हुए उपः काल मुझ को बचाएँ  
प्रतिपल जल से पूर्ण होती हुई नदियाँ मेरी रक्षा करें,  
अटक रूपसे खडे पहाड मेरा संरक्षण करें तथा देवोंको  
बुलाने में पितर अपने संरक्षणकी छत्रछायामें मुझे रख दें ।'

द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागतो मही प्रायेतां  
सुविताय मातरा । उपा उच्छन्त्यप वाधतामघं  
स्वस्त्याग्निं समिधानमीमहे ॥ ( ऋ० १०।३५ )

' आज हमें दोष रहित, महान एवं मातृतुल्य द्यावापृ-  
थिवी सुरक्षित रखें ताकि हमारी भलाई हो जाए; उदित  
होती हुई उपा पापको दूर करदे और हम चाहते हैं कि  
भलीभाँति धधकनेवाला अग्नि हितकारक बने ।'

नू देवासो वरिधः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे  
सजोपाः । समस्मे इयं वसवो ददीरन् यूयं पात  
स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ( ऋ. ७।४८।४ )

' हे देवो ! हमारे लिए तुम धनसंपदा का निर्माण करो,  
और तुम सभी मिलकर हमारी रक्षा करनेके लिए कटिबद्ध  
रहो; हे वसुधो ! हमें तुम अन्न सामग्री भली भाँति देते  
रहो और कल्याणकारक साधनोंसे हमेशा हमारे संरक्षण  
का गुरुतर कार्य भार संपन्न करो ।

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यक्षियाः ...

मा घो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेषु इत्  
षो अन्तमा मदेम ॥ ( ऋ. ६।५२।४ )

' मेरे कथनको सभी यज्ञमें बैठने योग्य देव सुनलें;  
मैं कभी निन्दनीय वचन तुम्हारेलिए न कहूँ और तुम्हारे  
किये सुख कारक प्रवर्षों में हम तुम्हारे अत्यन्त निकटवर्ती  
होकर आनन्दित बनूँ ।'

स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नी सूक्तेन महा  
नमसा विवासे । अस्मिन् नो अद्य विद्वे  
यजत्रा विद्वे देवा हविषि मादयध्वम् ॥

( ऋ. ६।५२।१७ )

' दर्भमय आसन के बिछानेपर और अग्नि के भली-  
भाँति प्रदीप्त होनेपर बडे सूक्तसे एवं नमन से मैं उपासन  
करता हूँ; आज हमारे इस यज्ञ में उपस्थित होकर सारे  
तुम पूजनीय देव हमारे दिये हुए इस हविके परिणाम  
स्वरूप हर्षित बने ।'

इदं देवा शृणुत ये यक्षिया स्थ ... पाशे स बद्धो  
दुरिते नि युज्यताम् यो अस्माकं मन इदं  
हिनस्ति ॥ ( अथर्व. २।१२।२ )

' हे देवो ! जो तुम यजनीय हो तो इस मेरे बचन को  
सुन लो; जो कोई हमारे इस मन को हिसित करे अर्थात्  
कष्ट दे वह फंदे में बँधा जाकर बुराई में गिरजाय ।'

देवों का निम्नलिखित वर्णन देखने योग्य है—

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः ।

विश्वे सन्तो महान्त इत् ॥ ( ऋ. ८।३०।१ )

' हे देवो ! तुम में कोई न छोटा बिशु है न बालक  
अपितु सारे ही निश्चय पूर्वक बडे हैं ।'

यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् तदेपां नकिरा  
मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ॥ ( ऋ. ९।२८।४ )

' जैसे देव इच्छा करते हैं वैसे ही निश्चय पूर्वक बन  
जाता है । उनके इस सामर्थ्य को न कोई विनष्ट करपाता  
है, कृपण मानव भी इन के सामने झुक जाते हैं ।'

सदा देवा अरेपसः । सामवेद. ४४२.

' देव हमेशा निर्दोष रहते हैं ।'

इसी कारण इन देवों की मनःपूर्वक प्रशंसा की जाती  
है । देवों के संरक्षण का परिणाम निम्न मंत्र में बताया है—

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः ।

अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं प्रायग्ते स

जोषसः ॥

( ऋ. ८।२७।१७ )

' जिसकी रक्षाका भार हाथमें दान लेकर मित्र,  
वरुण एवं अर्यमा मिलकर उठाते हैं वह बिना युद्ध ठाने  
धन पाता है और सुगम साधनों से मार्ग का अन्व पाकेता

है अर्थात् मार्गपर यातायात करने में उसे तनिक भी कठिनाई नहीं प्रतीत होती है।' इसी कारण उनकी सराहना की जाती है।

अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवासो अस्त्या-  
प्यम्। प्रण पूर्वस्मै सुविताय वोचत मधू सुस्राय  
नव्यसे ॥ (ऋ. ८।२७।१०)

'हे शत्रुविध्वंसक देवो! तुममें सचमुच बंधुता एवं सजातीयताके भाव विद्यमान हैं इसलिए अब हमसे शीघ्र भली भाँति कह दो कि पूर्वकाळीन भलाई एवं नये ढंगके सुख को पाने के लिए हम क्या करें।'

वि नो देवासो अद्रुहोऽछिद्रं शर्म यच्छत।

न यद् दुराद्वसवो नू चिदान्तितो वरूथमादधर्षति॥

(ऋ. ८।२७।९)

'द्रोह न करनेहारें एवं सबको बसानेवाले हे देवो! हमें वह छिद्ररहित पाने श्रुतिरहित स्वीकरणीय सुख दे डालो जिसे न कोई दूरसे या समीपसेही आक्रान्त करनेका साहस करसके।'

देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवमभिष्टये। देवंदेवं हुवेम  
वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया॥ (ऋ. ८।२७।१२)

'अपनी रक्षा के लिए तुममें से प्रत्येक देवको हम बुलाते हैं, अपनी इच्छा पूर्ण हो इसलिए हरएक देवको निमंत्रित करते हैं और द्योतमान बुद्धिशक्तिसे निष्पादित स्तोत्रों से प्रशंसा करते हुए अन्नर्क्षा प्राप्ति हो इस हेतुसे प्रति देवको हम समीप आनेके लिए विनति करते रहें।'

देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं  
सरातयः। ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु  
घरिषो विदः ॥ (ऋ. ८।२७।१४)

'सारे देव तो अपने साथ देन लेकर और एक विचार बाँके होकर तथा एकत्रित रूपसे मनुको दान देते हैं और हमारी इच्छा है कि वे आज हमारे लिए और हमारी सम्मान के लिए भी धन के दाता बनें।'

'विश्वे देवा' सूक्तोंके स्मरणीय वाक्य

वैदिक कवि विभिन्न देवोंकी स्तुति करते हुए उनसे क्या अपेक्षा रखते हैं तथा उनके सम्मुख किसतरह अपनी आवश्यकताओंका विवरण करते हुए अपनी महत्त्वपूर्ण एवं शाश्वतिक माँग प्रस्तुत करते हैं इस विषयपर निम्न

मंत्रांशों से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है और साथ ही वैदिक सूक्तों एवं मंत्रों के दर्शनकर्ताओं के जीवन विषयक दृष्टि कोणको भी अत्यधिक प्रस्फुट करने में बड़ी भारी सहायता मिल सकती है।

शत्रुओं तथा बुराहयोंको सुदूर भगाकर सुख एवं भलाई की अक्षुण्ण प्राप्ति मानवमात्रका प्रमुख उद्देश्य है और वैदिक सूक्तों में इसकी एक प्रबलतम झोंकी हमें देखने मिलती है। बुद्धमनों तथा बुराहयों के मटियामेट होनेपर आर्थिक सुस्थितिका सुप्रबंध समाधानकारक ढंगसे करके सुदीर्घ-जीवनका सुदीर्घ काल तक दृष्ट मित्रों एवं पुत्र पौत्रों समेत उपभोग लेना भी मानवका दूसरा एक अतिप्रबल अद्भ्य उद्देश्य है और इसकी भी शलक वेदमंत्रोंमें यथेष्ट उपलब्ध होती हैं। अस्तु, वेदके ही शब्दोंमें वैदिक ऋषियों की अद्भ्य लालसा से परिचित होनेके लिए निम्न वचनों की ओर ध्यान देना चाहिए।

ते अस्मभ्यं शर्म यंसन्नमृता मर्त्येभ्यः।

बाधमाना अप द्विषः ॥ (ऋ. १।९०।१३)

'(ते अमृताः) वे अमरपनका उपभोग लेनेवाले देव (मर्त्येभ्यः अस्मभ्यं) मरणशील हम मानवोंको, (द्विषः अप बाधमानाः) द्वेष करनेवालोंको दूर मार भगाते हुए (शर्म यंसन्) सुख का प्रदान करें।'

... ऊतये ... हवामहे। रथं न दुर्गात्... विश्व-  
स्मान्नो अहसो निष्पिपतन ॥ (ऋ. १।१०।६।१)

'हम संरक्षणार्थ देवों तथा दिव्य दल बल को बुलाते हैं और जिस प्रकार बीहड़ स्थानमें से या दुर्गम जगह से रथको खींच बाहर निकालते हैं उसी तरह, हे देवो! हमें समूचे पाप या कष्ट में से पूर्णतया बाहर निकाल हमारा बेडा पार कर दो।'

... यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत... अद्या च नो  
मृळयत अपरं च ॥ (ऋ. २।२९।२)

'तुम द्वेषोंको गुप्तस्थानमें भेजकर हमसे दूर करो और आज तथा बाद में भी हमें सुख देते रहो।'

यूयं नो स्वस्ति दधात। (ऋ. २।२९।३)

... देवा यूयमिदापयः स्थ ते मृळत नाधमानाय  
मह्यम् ... मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म।

(ऋ. २।२९।४)

‘तुम हमारे कल्याण का प्रबंध करो; हे देवो ! तुमही सचमुच हमारे भास हो और ऐसे वे तुम याचना करनेवाले सुख को सुख दे दो, क्योंकि तुम्हारे जैसे भासों के मौजूद होनेपर हमें थकावट न होने पाय ।’

आरे पाशा आरे अधानि देवा । ( ऋ. २।२९।५ )

‘हे देवो ! फंदे और पाप हमसे दूर रहें ।’ अर्थात् कभी जालों तथा पापों के चँगुलमें हम न फँसजायें ।

यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम् । ( ऋ. ३।५४।२० )

‘वीर मरुत हमें कल्याणकारक सुखका प्रदान करें ।’

‘‘अवन्तु नः । भरुतो मृळयन्तु नः ।

( ऋ. १।२३।१२ )

‘वीर मरुत हमारी रक्षा करें और हमें सुख दें ।’

देवा नो...सदमिन् वृधे असन्...रक्षितारो दिवे दिवे । ( ऋ. १।८९।१ )

‘प्रतिदिन रक्षाका कार्य सुचारुरूप से चलाते हुए देव हमेशा हमारे संवर्धनार्थ चेष्टाशील रहें ।’

मनवः सूरचक्षसो विद्वे नो देवा अवसा गमन्निह

( ऋ. १।८९।७ )

‘मननशील तथा विद्वानों के दृष्टिकोण को साथ रख-नेवाले सभी देव हमारे लिए संरक्षण की आयोजना बना-कर हृषर पधारें ।’

देवानां सख्यमुप सेदिम्या वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे । ( ऋ. १।८९।२ )

‘हम देवों की मित्रताको प्राप्त करें और हमारा जीवन अक्षुण्ण रूप से प्रचलित रहे इस लिए देव हमारी आयुष्य रेखा को बढा दें ।’

...विश्वो द्वेषांसि सनुतर्युयोत... ( ऋ. १०।१००।९ )

‘सभी द्वेषभावों को हमसे दूर करो ।’

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतन... ( ऋ. १०।६३।१२ )

‘हे देवो ! द्वेषभाव को हमसे हटादो ।’

गोभिः प्याम यशसो जनेष्वा ।

सदा देवास इळया सचेमहि ( ऋ. १०।६४।११ )

‘हम गोधनसे युक्त होकर जनतामें यशस्वी बन जायँ और हे देवो ! हमेशा हम अन्न से युक्त रहें ।’

‘‘उरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये। ( ऋ. १०।६३।१२ )

हमारे हित के लिए विशाल सुख दे ढालो ।’

ते..अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये । ( ऋ. १०।६३।७ )

ऐसे वे देवो ! तुम भयरहित सुख का प्रदान करो और भलाई हो जाय इस लिए हमारे लिए सुगम एवं सुन्दर मार्ग बना-दो अर्थात् हमें बीहड सडकोंपर न चलना पड़े ।

मा प्र गाम पथो वयं .:

मान्तः स्थुर्नो अरातयः । ( ऋ. १०।५७।१ )

‘हम मार्ग छोडकर दूर भटकते न चलें और हमारे शत्रुओं को अन्दर स्थान न मिले । अर्थात् हम मार्गभ्रष्ट न हों तथा शत्रु हमारे भीतर जगह न पासकें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए ।

विश्वे नो देवा अवसागमन्तु ।

विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे । ( ऋ. १०।३५।१३ )

सभी देव संरक्षण की आयोजना साथ लेकर हमारे निकट पहुँच जायँ और समूचा द्रव्य एवं बल हमारे लिए रहे मा दुर्विद्वान्ना निर्ऋतिर्न ईशत.. । ( ऋ. १०।३६।२ )

‘बुरे ज्ञानवाली पीडा हमपर शासन न करें ।’ ज्ञान का दुरुपयोग करनेवाली बुरी मनोवृत्तिका शासन या प्रभुत्व प्रस्थापित न होने पाय ।

अवन्तु नो अमृतासस्तुरासः । ( ऋ. ५।४२।५ )

‘अमर पनको प्राप्त हुए देव स्वरापूर्वक कार्य करनेवाले बनकर हमारी रक्षा करें ।

देवो देवः सुहयो भूतु महां । मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् । ( ऋ. ५।४२।१६ )

‘मेरे लिए हर एक देव सुगमतापूर्वक बुलानेयोग्य बन जाय और हमें भूमाता दुर्बुद्धि में न रखें ।

सदा सुगः पितुर्मा अस्तु पन्था । ( ऋ. ३।५४।२१ )

‘मार्ग हमेशा सुख पूर्वक तथा अन्न युक्त रहें ।’ यह आभिलाषा तो यान्त्रियों एवं विदेशों में जानेवाले लोगोंके अन्तस्तकमें ही जागृत हुआ करती है और वैदिक कवि यात्रा करने के अभ्यस्त थे ऐसा स्पष्ट होता है ।

अरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः । ( अथर्व ५।३।५ )

वयं सुषखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम । ( ऋ. १०।३१।१ )

‘हम लोग अच्छे वीर एवं अक्षीण और निर्दोष शरीर-वाले बनें, सभी बुराईयोंको लॉचते चकें ।’



# दैवत-संहिता ।

[ ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता । ]

## १० विश्वे देवाः ।

॥१॥ ( ऋ० १।३।७-९ )

(१-३) मधुच्छन्दा वैश्यामित्रः । गायत्री ।

ओमांसश्रवणीधृतो	विश्वे देवास आ गत	। दाश्वांसो दाशुपः सुतम्	७
विश्वे देवासो अप्तुरः	सुतमा गन्त तूर्णयः	। उस्ता इव स्वसंराणि	८
विश्वे देवासो अस्त्रिध	एहिमायासो अद्रुहः	। मेधे जुपन्त वह्नयः	९ ३

॥२॥ ( ऋ० १।१४।१-१२ )

(४-१८) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

ऐभिरग्ने दुवो गिरो	विश्वेभिः सोमपीतये	। देवेभिर्याहि यक्षि च	१
आ त्वा कर्णा अहूपत	गृणन्ति विप्र ते धियः	। देवेभिरग्न आ गहि	२ ५
इन्द्रवायू बृहस्पतिं	मित्राग्निं पूषणं भर्गम्	। आदिन्यान् मारुतं गणधू	३
प्र वो भ्रियन्त इन्द्रवो	मत्सरा मादयिष्णवः	। द्रप्सा मध्वश्चमूपदः	४
ईळते त्वामवस्यवः	कर्णासो वृक्तबर्हिषः	। हविष्मन्तो अरंक्रतः	५
घृतपृष्ठा मनोयुजो	ये त्वा वहन्ति वह्नयः	। आ देवान्तसोमपीतये	६
तान् यजत्रां ऋतावृधो	ऽग्ने पत्नीवतस्कृधि	। मध्वः सुजिह्व पायय	७ १०
ये यजत्रा य ईड्या	स्ते ते पिवन्तु जिह्वया	। मधोरग्ने वपट्कृति	८
आकीं सूर्यस्य रोचनाद्	विश्वान् देवां उपवुधः	। विप्रो होतेह वक्षति	९
विश्वेभिः सोम्यं मध्वग््न	इन्द्रेण वायुना	। पिबा मित्रस्य धामभिः	१०
त्वं होता मनुर्हितो	ऽग्ने यज्ञेषु सीदसि	। सेमं नो अध्वरं यज	११
युक्त्वा ह्यरुषी रथे	हरितो देव रोहितः	। तामिर्देवां इहा वह	१२ १५

\* ऋ० १,३,७=वा० य० ७,३३ ।

+ ऋ० १,१४,३ = वा० य० ३३,४५ ।

६० [विश्वे देवाः] १



॥३॥ (ऋ० १।२३।१०-१२)

विश्वान् देवान् हवामहे मरुतः सोमपीतये । उग्रा हि पृश्निमातरः १०  
 जयतामिव तन्यतु—मरुतामेति धृष्णुया । यच्छुभं याथना नरः ११  
 हस्काराद् विद्युतस्पर्शतो जाता अवन्तु नः । मरुतो मृळयन्तु नः १२

॥४॥ (ऋ० १।८९।१-१०)×

(१९-३७) गोतमो राहूगणः । १-५,७ जगती; ६ विराट्-स्थाना; ८-१० त्रिष्टुप् ।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।  
 देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नपुत्रो रक्षितारो दिवेदिवे १  
 देवानो भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानो रातिरभि नो नि वर्तताम् ।  
 देवानो सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे २ २०  
 तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदिति दक्षमस्त्रिधम् ।  
 अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ३  
 तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः ।  
 तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ४  
 तमीशानं जगतस्तस्युपस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।  
 पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ५  
 स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।  
 स्वस्ति नः प्रताक्ष्यो अरिष्टनेभिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ६  
 पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयात्रानो विदथेषु जगमयः ।  
 अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ७ २५  
 भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।  
 स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ८  
 शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसे तनूनाम् ।  
 पुत्राभ्यो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ९  
 अदिनिद्यौरदिनिगन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।  
 विश्वं देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जानित्वम् +१० २८

॥५॥ (वा० १।२०।१-९)\* गायत्री; ९ अनुष्टुप् ।

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान् । अर्यमा देवैः सजोषाः	१	
ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूरा महौभिः । व्रता रक्षन्ते विश्वाहा	२	३०
ते अस्मभ्यं शर्मं यंसन्नमृता मर्त्येभ्यः । बाधमाना अप द्विषः	३	
वि नः पथः सुविताय चियन्त्विन्द्रो मरुतः । पूषा भगो वन्द्यांसः	४	
उत नो धियो गोअंग्राः पूषन् विष्णवेवयाः । कर्ता नः स्वस्तिमर्तः	५	
मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः	६	
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिवं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता	७	३५
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमा अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गात्रो भवन्तु नः	८	
शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वयमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुक्रुमः ९		

॥६॥ (ऋ० १।२०।१-१९)

(३८-५६) श्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । पश्वितः; ८ यवमध्या महावृहती; १९ त्रिष्टुप् ।

चन्द्रमा अप्सवन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।		
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी	+१	
अर्थमिद् वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम् ।		
तुञ्जाते वृष्ण्यं पर्यः परिदाय रसं दुहे वित्तं मे अस्य रोदसी	२	
मो वु देवा अदः स्वर्गं रवं पादि दिवस्परि ।		
मा सोम्यस्यं शंभुवः शनै भूम कदा चन वित्तं मे अस्य रोदसी	३	४०
यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद् दूतो वि वोचति ।		
क्व ऋतं पूर्य गतं कस्तद् विभर्ति नूतनो वित्तं मे अस्य रोदसी	४	
अमी ये देवाः स्यनं विष्वा रोचने दिवः ।		
कद् व ऋतं कदनृतं क्व प्रत्ना व आहुति वित्तं मे अस्य रोदसी	५	
कद् व ऋतस्यं धर्णासि कद् वरुणस्य चक्षुषम् ।		
कदर्यम्णो महस्पथाऽति क्रामेम दूढयो वित्तं मे अस्य रोदसी	६	
अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कार्त्तं चित् ।		
तं मा व्यन्त्याधयोऽ वृको न तृष्णजं मृगं वित्तं मे अस्य रोदसी	७	
सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पशवः ।		
मूषो न शिश्रा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारो ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रोदसी ८	४५	

अमी ये सप्त रश्मयुः—स्तत्रा मे नाभिरातता ।		
त्रितस्तद् वेदाप्त्यः स जामित्वाय रेभति वित्तं मे अस्य रोदसी	९	
अमी ये पञ्चोक्षणो मध्ये तस्थुर्महो दिवः ।		
देवत्रा तु प्रवाच्यं सध्रीचीना नि वावृतु—वित्तं मे अस्य रोदसी	१०	
सुपर्णा एत आसते मध्ये आरोधने दिवः ।		
ते संधान्ति पथो वृकं तरन्तं यद्दतीरपो वित्तं मे अस्य रोदसी	११	
नव्यं तदुक्थ्यं हितं देवासः सुप्रवाचनम् ।		
ऋतमर्षान्ति सिन्धुवः सत्यं तातान् सूर्यो वित्तं मे अस्य रोदसी	१२	
अग्ने तव त्यदुक्थ्यं देवेष्वस्त्याप्यम् ।		
स नः सत्तो मनुष्वदा देवान् यक्षि विदुष्टरो वित्तं मे अस्य रोदसी	१३	५०
सत्तो होता मनुष्वदा देवाँ अच्छा विदुष्टरः ।		
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरो वित्तं मे अस्य रोदसी	१४	
ब्रह्मा कृणोति वरुणो गातुविदुं तमीमहे ।		
व्यूर्णोति हृदा मति नव्यो जायतामृतं वित्तं मे अस्य रोदसी	१५	
असौ यः पन्थां आदित्यो दिवि प्रवाच्यं कृतः ।		
न स देवा अतिक्रमे तं मर्तासो न पश्यथ वित्तं मे अस्य रोदसी	१६	
त्रितः रूपेऽवहितो देवान् हवत ऊतये ।		
तच्छुश्राव बृहस्पतिः कृण्वन्नहरणादुरु वित्तं मे अस्य रोदसी	१७	
अरुणो मा सकृद् वृकः पथा यन्तं दुदर्श हि ।		
उज्जिहीते निचाय्या तष्टैव पृष्ट्यामयी वित्तं मे अस्य रोदसी	१८	५५
एनाङ्गपेण वयमिन्द्रवन्तो ऽभि प्याम वृजने सर्ववीराः ।		
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१९	

॥७॥ (ऋ० १।१०६।१-७)

(५७-६६) कुत्स आङ्गिरसः । जगती; ७ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्षो अदितिं हवामहे ।		
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहमो निष्पिपर्तन	१	
त आदित्या आ गता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शंभुवः । रथं न दुर्गाद् ० २		
अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा । रथं न दुर्गाद् ० ३		५९

नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे । रथं न दुर्गाद् ० ४ ६०  
 बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत् ते मनुहितं तदीमहे । रथं न दुर्गाद् ० ५  
 इन्द्रं कुत्सो बृत्रहणं शचीपतिं काटे निवाळ्ह ऋषिरह्वदूतये । रथं न दुर्गाद् ० ६  
 देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्राता त्रायतामप्रयुच्छन् ।  
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ७

॥८॥ (ऋ० १।१०७।१-३) त्रिष्टुप् ।

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्न—मादित्यासो भवता मृळयन्तः ।  
 आ वोऽर्वाचीं सुमतिर्भवत्या—दुंहोश्चिद्या वरित्रोवित्तरासत् १  
 उप नो देवा अवसा गमु—न्त्वङ्गिरसां सामभिः स्तूयमानाः ।  
 इन्द्रं इन्द्रियैर्मरुतो मरुङ्गि—रादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् २ ६५  
 तन्न इन्द्रस्तद् वरुणस्तदग्नि—स्तदर्यमा तत् संविता चनो धात् ।  
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मादितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ३

॥९॥ (ऋ० १।१२१।१-१५)

(६७-९६) कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः । (इन्द्रो वा) । त्रिष्टुप् ।

कदित्था नूः पात्रं देवयतां श्रवद् गिरो अङ्गिरसां तुरण्यन् ।  
 प्र यदानङ्घ्रिश आ हर्म्यस्यो—रु क्रंसते अध्वरे यजत्रः १  
 स्तम्भीद् द्यां स धरुणं प्रपाय—दृभुर्वाजाय द्रविणं नरो गोः ।  
 अनु स्वजां महिपश्चक्षत त्रां मेनामश्चम्य परि मातरं गोः २  
 नक्षद्वर्मरुणीः पूर्य राट् तुरो विशामङ्गिरसामनु घ्नन् ।  
 तक्षद् वज्रं नियुतं तस्तम्भद् द्यां चतुष्पदे नर्याय द्विपादै ३  
 अस्य मदे स्वर्थं दा क्रताया—पीवृतमुस्त्रियाणामनीकम् ।  
 यद्ध प्रसर्गं त्रिककुम्भित—दप द्रुहो मानुपस्य दुरो वः ४ ७०  
 तुभ्यं पयो यत् पितरावनीतां राधः सुरेतस्तुरणै भुरण्यू ।  
 शुचि यत् ते रेक्ण आयजन्त सचर्दुघायाः पर्य उस्त्रियायाः ५  
 अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः ।  
 इन्दुर्येभिराष्ट स्वेदुहव्यैः सुत्रेण सिञ्चञ्जरणाभि धाम ६  
 स्विध्मा यद् वनधितिरपस्यात् सूरौ अध्वरे परि रोधना गोः ।  
 यद्ध प्रभासि कृत्व्याँ अनु घ्न—ननर्विशे पश्चिषे तुराय ७ ७३

अष्टा महो दिव आदो हरीं इह द्युम्नासाहमभि योधान उत्सम् ।	
हरिं यत् ते मन्दिनं दुक्षन् वृधे गोरभसमद्रिभिर्वाताप्यम्	८
त्वमायसं प्रति वर्तयो गो—दिवो अश्मानमुपनीतमृभ्वा ।	
कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्व—ञ्छुष्णमनन्तैः परियासि वधैः	९ ७५
पुरा यत् सूरस्तमसो अपीति—स्तमद्रिवः फलिंगं हेतिमस्य ।	
शुष्णस्य चित् परिहितं यदोजो दिवस्परि सुग्रथितं तदादः	१०
अनु त्वा मही पार्जसी अचक्रे द्यावाक्षामा मदतामिन्द्र कर्मन् ।	
त्वं वृत्रमाशयानं सिरासु महो वज्रेण सिष्णपो वराहुम्	११
त्वामिन्द्र नयो याँ अत्रो नृन् तिष्ठा वातस्थ सुयुजो वहिष्ठान् ।	
यं ते काश्य उशना मन्दिनं दाद् वृत्रहणं पार्थ ततक्ष वज्रम्	१२
त्वं सरो हरितो रामयो नृन् भरच्चक्रमेतशो नायमिन्द्र ।	
प्रास्यं पारं नवति नाव्याना—मपि कर्तमवर्तयोऽयं ज्युन्	१३
त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः पाहि वज्रिवो दुरितादभीके ।	
प्र नो वाजान् रथयोऽङ्ग अश्वबुध्या—निषे यन्धि श्रवसे सुनृतायै	१४ ८०
मा सा ते अस्सत् सुमतिर्वि दसद् वाजप्रमहः समिषो वरन्त ।	
आ नो भज मघवन् गोष्वर्यो मंहिष्ठास्ते सधुमादः स्याम	१५

॥१०॥ (ऋ० १।१२२।१-१५) त्रिष्टुप्; ५-६ विराड् रूपा ।

प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो यज्ञं रुद्राय मीळहुषे भरध्वम् ।	
दिवो अस्तोऽप्यसुरस्य वीरै—रिषुध्येव मरुतो रोदस्योः	१
पत्नीव पूर्वहूति वावृधध्या उषासानक्ता पुरुधा विदाने ।	
स्त्रीर्नात्कं व्युतं वसाना सूर्यस्य श्रिया सुदृशी हिरण्यैः	२
ममत्तु नः परिज्मा वसर्हा ममत्तु वातो अपां वृषण्वान् ।	
शिशीतामिन्द्रापर्वता युवं न—स्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः	३
उत त्या मे यशसा श्वतनायै व्यन्ता पान्गौशिजो हुवधै ।	
प्र वो नपातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः	४
आ वो रुवण्युमौशिजो हुवधै घोषेव शंसमर्जुनस्य नशे ।	
प्र वः पूष्णे दावन् आँ अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः	५ ८६

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमो—त श्रुतं सदेने विश्वतः सीम् ।	
श्रोतुं नः भ्रोतुरातिः सुश्रोतुः सुक्षेत्रा सिन्धुराद्भिः	६
स्तुषे सा वा वरुण मित्र राति—र्गवा अता पृक्षयामिषु पञ्जे ।	
श्रुतरथे प्रियरथे दधानाः सद्यः पुष्टिं निरुन्धानासौ अगमन्	७
अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः सचा सनेम नहुषः सुवीराः ।	
जनो यः पञ्जेभ्यो वाजिनीवा—नश्चावतो रथिनो मह्यं सूरिः	८
जनो यो मित्रावरुणावभिधु—गपो न वा सुनोत्यक्षण्याधुक् ।	
स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्त आप यदी होत्राभिर्ऋतावा	९ १०
स ब्राधतो नहुषो दंसुजतः शर्धस्तरो नरां गूर्तश्रवाः ।	
विसृष्टरातिर्याति बाळहसृत्वा विश्वांसु पृत्सु सवमिच्छूरः	१०
अधु गमन्ता नहुषो हवै सूरैः श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः ।	
नभोजुवो यन्निरवस्य राधः प्रशस्तये महिना रथवते	११
एतं शर्धं धाम यस्य सूरै—रित्यवोचन दशतयस्य नशे ।	
द्युम्नानि येषु वसुताती रांरन् विश्वे मन्वन्तु प्रभुथेषु वाजम्	१२
मन्दांमहे दशतयस्य धासे—द्विर्यत् पञ्च विभ्रतो यन्त्यन्ना ।	
किमिष्टाश्च इष्टरश्मिरेत ईशानासस्तरुं ऋञ्जते नृन्	१३
हिरण्यकर्ण मणिग्रीवमर्ण—स्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ।	
अर्यो गिरः सद्य आ जग्मुषीरो—स्नाश्चांरुन्तभयेष्वसे	१४ १५
त्त्वारो मा मशर्शारस्य शिश्च—स्त्रयो राज्ञ आयवसस्य जिष्णोः ।	
रथो वा मित्रावरुणा दीर्घाप्साः स्यूमगभस्तिः सूरौ नाद्यौत्	१५

॥१२॥ ( ऋ० १।१३९।१,११ )

(९७-९८) परुच्छेपो देवोदासिः । १ अत्यष्टिः, ११ त्रिष्टुप् :\*

अस्तु श्रीषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु तच्छर्धो दिव्यं वृणीमह  
इन्द्रवायू वृणीमहे ।

यद्धं क्राणा विवस्वति नामा संदायि नव्यसी ।

अधु प्र स्र न उप यन्तु धीतयो देवाँ अच्छा न धीतर्यः १

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यः मध्येकादश स्थ ।

अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ११ १८

॥१२॥ (क्र० १।१६४।१-४१)

(१९-१३९) दीर्घतमा औचध्यः । त्रिष्टुप्; १२, १५, २३, २९, ३६, ४१ जगती ।

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्वः ।	
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्वतिं सप्तपुत्रम्	१
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा ।	
त्रिनाभिं चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनार्धिं तस्थुः	२ १००
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्यश्वः ।	
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते यत्र गवां निहिता सप्त नाम	३
को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था विभर्ति ।	
भूम्या असुरसृगात्मा कं स्वित् को विद्वांसमुप गात् प्रष्टुमेतत्	४
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन् देवानामिना निहिता पदानि ।	
वत्से वृष्कयेऽधि सप्त तन्तून् तत्रिरे क्वय ओतवा उ	५
अचिकित्वाश्चिकितुपश्चिदत्र कवीन् पृच्छामि विज्ञाने न विद्वान् ।	
वि अस्तस्तम्भ षळिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि स्विकेकम्	६
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदास्य वामस्य निहितं पदं वेः ।	
शीर्ष्णः क्षीरं दुहते गावो अस्य वृधि वगाना उदकं पदापुः	७ १०५
माता पितरमृत आ बभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे ।	
सा श्रीभत्सुर्गर्भरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः	८
मुक्ता माताऽऽसीद् धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद् गर्भो वृजनीष्वन्तः ।	
अमीमेद् वत्सो अनु गामपश्यद् विश्वरूप्यं त्रिषु योजनेषु	९
तिस्रो मातृस्त्रीन् पितृन् विभ्रदेकं ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमवं ग्लापयन्ति ।	
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्यं पृष्ठे विश्वविदुं वाचमविश्वमिन्वाम्	१०
द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वति चक्रं परि द्यामृतस्य ।	
आ पुत्रा अग्रे मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विश्वतिश्च तस्थुः	११
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम् ।	
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे पळर आहुरर्पितम्	१२
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा ।	
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः	१३ १११

सनेमि चक्रमजरं वि वाधृत उत्तानायां दशं युक्ता वहन्ति ।	
सूर्यस्य चक्षु रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा	१४
साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं षळिद् यमा ऋषयो देवजा इति ।	
तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रेंजन्ते विकृतानि रूपशः	१५
स्त्रियः सतीस्तां उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान्न वि चैतदुन्धः ।	
कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात् स पितुष्पितासत्	१६
अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं विभ्रती गौरुदस्थात् ।	
सा कद्रीची कं स्विदर्थं परागात् क्व स्वित् सूते नहि यूथे अन्तः	१७ ११५
अवः परेण पितरं यो अस्या—नुवेदं पर एनावरेण ।	
कवीयमानः क इह प्र वोचद् देवं मनः कुतो अधि प्रजातम्	१८
ये अर्वाञ्चस्तां उ पराच आहु—र्ये पराञ्चस्तां उ अर्वाच आहुः ।	
इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति	१९
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ।	
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यौ अभि चाकशीति	२०
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भाग—मनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति ।	
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश	२१
यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे ।	
तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्वये तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद	२२ १२०
यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं त्रैष्टुभाद् वा त्रैष्टुभं निरतक्षत ।	
यद् वा जगज्जगत्याहितं पदं य इत् तद् विदुस्ते अमृतत्वमानशुः	२३
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्क—मर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम् ।	
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदा ऽक्षरेण मिमते सप्त वाणीः	२४
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद् रथंतरे सूर्यं पर्यपश्यत् ।	
गायत्रस्य समिधास्तिन्न आहु—स्ततो मृहा प्र रिरिचे महित्वा	२५
उप ह्ये सुदुर्षा धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।	
श्रेष्ठं सबं सविता साविषन्नो ऽभीद्वो घर्मस्तदु षु प्र वोचम्	२६
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात् ।	
दुहामधिभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय	२७ १२५



गौरमीमेदनु वृत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्ङकृणोन्मातवा उ ।	
सृकाणं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः	२८ १२६
अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता ।	
सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद् भवन्ती प्रति वत्रिमौहत	२९
अनच्छये तुरगात् जीवमेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम् ।	
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिर्मर्त्यो मर्त्येना सयोनिः	३०
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।	
स सघ्रीचीः स विष्टुचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः	३१
य ई चकार न सो अस्य वेदु य ई दुदर्श हिरुगिन्नु तस्मात् ।	
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्वहुप्रजा निर्कृतिमा विवेश	३२ १३०
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम् ।	
उत्तानयोश्चम्वोइर्योनिरन्तरत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात्	३३
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः ।	
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम	३४
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।	
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम	३५
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि ।	
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः	३६
न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनेद्रो मनसा चरामि ।	
यदा मार्गं प्रथमजा क्रतस्यादिद् वाचो अश्रुधे भागमस्याः	३७ १३५
अपाङ् प्राडेति स्वधया गृभीतो ऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः ।	
ता शश्वन्ता विपूचीना वियन्ता न्यन्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्	३८
क्रुचो अक्षरं परमं व्योमन् यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ।	
यस्तन्न वेदु किमुचा करिष्यति य इत् तद् विदुस्त इमे समासते	३९
सूयवसाद् भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम ।	
अद्धि तृणमध्न्ये विश्वदानीं पिबं शुद्धमुदकमाचरन्ती	४०
गौरीर्ममाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।	
अष्टापदी नवपदी बभूवुषीं सहस्राक्षरा परमे व्योमन्	४१ १३९

॥१३॥ (ऋ० १।१८।१-११)

(१४०-१५०) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

आ न इळाभिर्विदथै सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु ।	
अपि यथा युवानो मत्संथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा	१ १४०
आ नो विश्व आस्क्रा गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।	
भ्रुवन् यथा नो विश्वे वृधासः करन्सुषाहा विश्वुरं न शर्वः	२
प्रेष्ठे वो अतिथिं गृणीषे ऽग्निं शस्तिभिस्तुर्वणिः सजोषाः ।	
असद् यथा नो वरुणः सुक्रीतिं—रिषश्च पर्षदरिगूर्तः सूरिः	३
उप व एषे नमसा जिगीषो—पासानक्ता सुदुर्ध्व धेनुः ।	
समाने अहेन् विभिमानो अर्कं विषुरूपे पर्यसि सस्मिन्नधन्	४
उत नोऽहिर्बुध्न्योऽ मयस्कः शिशुं न पिप्युषीव वेति सिन्धुः ।	
येन नपातमपां जुनाम मनोजुवो वृषणो यं वहन्ति	५
उत न ई त्वष्टा गन्त्वच्छा स्मत् सूरिभिरभिपित्वे सजोषाः ।	
आ वृत्रहेन्द्रश्चर्षणिप्रा—स्तुविष्टमो नरां न इह गम्याः	६ १४५
उत न ई मतयोऽश्वयोगाः शिशुं न गावस्तरुणं रिहन्ति ।	
तर्मां गिरो जनयो न पत्नीः सुरभिष्टमं नरां नमन्त	७
उत न ई मरुतो वृद्धसेनाः स्रद् रोदसी समनसः सदन्तु ।	
पर्षदश्वासोऽवनयो न रथा रिशादसो मित्रयुजो न देवाः	८
प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे प्र युञ्जते प्रयुजस्ते सुवृक्ति ।	
अध यदेषां मुदिने न शरु—विश्वमेरिणं प्रपायन्त सेनाः	९
प्रो अश्विनावर्से कृणुष्वं प्र पूषणं स्वतवमो हि सन्ति ।	
अद्रेषो विष्णुर्वात ऋभुक्षा अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान्	१०
इयं सा वो असे दीधितिर्यजत्रा अपिप्राणी च सदेनी च भूयाः ।	
नि या देवेषु यतते वसूयु—विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	११

॥१४॥ (ऋ० २।२९।१-७)

(१५१-५७) कूर्मो गात्समदो, गृत्समदो वा । त्रिष्टुप् ।

धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत् कर्त रहस्रिवागः ।	
शृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्रा अवसे हुवे वः	१ १५१

यूयं देवाः प्रमतिर्युयमोजो यूयं द्वेषांसि सनुतर्धुयोत । अभिक्षत्तारो अभि च क्षमध्वमद्या च नो मृळयतापरं च किमु नु वः कृणवापरेण किं सनेन वसव् आप्येन ।	२	१५२
यूयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात ह्ये देवा यूयमिदापर्यः स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम् ।	३	
मा वो रथो मध्यमवाळते भून्मा युष्मावत्स्वापिपुं श्रमिष्म प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास ।	४	
आरे पाशा आरे अघानि देवा मा मार्धि पुत्रे विमिव ग्रभीष्ट अर्वाश्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् ।	५	१५५
त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदान् आ विदुं शूनमापेः ।	६	
मा रायो राजन्सुयमादव स्थां बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	७	

॥१५॥ (ऋ० २।३।१-७)

(१५८-६७) गृत्समद (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः शौनकः) जगती, ७ त्रिष्टुप् ।

अस्माकं मित्रावरुणावतं रथमादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा । प्र यद् वयो न पमन्वसन्नस्परिं श्रवस्यवो हृषीवन्तो वनर्षदः	१	
अधं स्मा न उदवता सजोषसो रथं देवासो अभि विक्षु वाजयुम् । यदाशवः पद्याभिस्तित्रतो रजः पृथिव्याः सानौ जङ्घनन्त पाणिभिः	२	
उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिर्दिवः शंथेन मारुतेन सुक्रतुः । अनु नु स्थात्यवृकाभिरूतिभी रथं महे सनये वाजसातये	३	१६०
उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिस्त्वष्टा ग्राभिः सजोषां जूजुवद् रथम् । इळा भगो बृहद्विवोत रोदसी पूषा पुरंधिरश्विनावधा पती	४	
उत त्ये देवी सुभगे भिथूदशोषासानक्ता जगतामपीजुवा । स्तुषे यद् वां पृथिवि नव्यसा वचः स्थातुश्च वयस्त्रिवया उपस्तिरे	५	
उत वः शंसमृशिजामिव इमस्यर्हिर्बुध्न्योरेऽज एकपादुत । त्रित ऋभुक्षाः सविता चनो दधे ऽपां नपादाशुहेमा धिया शमि	६	
एता वो वश्म्युद्यता यजत्रा अतक्षन्नायवो नव्यसे सम् । श्रवस्यवो वाजं चकानाः समिर्न रथ्यो अहं धीतिमश्याः	७	१६४

॥१६॥ (ऋ० २।४।१३-१५) गायत्री ।

विश्वे देवास आ गत	शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत	१३	१६५
तीत्रो वो मधुमाँ अयं	शुनहोत्रेषु मत्सरः । एतं पिबत काम्यम्	१४	
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा	देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम्	१५	

॥१७॥ (ऋ० ३।२०।१,५)

(१६८-६९) गायत्री कौशिकः । त्रिष्टुप् ।

अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां	व्युष्टिषु हवते वर्हिरुमथैः ।		
सुज्योतिषो नः शृण्वन्तु देवाः	सजोपसो अध्वरं वावशानाः	१	
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं	बृहस्पतिं सवितारं च देवम् ।		
अश्विना मित्रावरुणा भगं च	वसन् रुद्राँ आदित्याँ इह हुवे	५	

॥१८॥ (ऋ० ३।५।१-२२)

(१७०-२२१) प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा । त्रिष्टुप् ।

इमं महे विदुध्याय शूषं	शश्वत् कृत्व ईड्याय प्र जभ्रुः ।		
शृणोतु नो दम्येभिरनीकैः	शृणोत्वग्निर्दिव्यैरजसः	१	१७०
महिं महे दिवे अर्चा पृथिव्यै	कामो म इच्छश्चरति प्रजानन् ।		
ययोर्हं स्तोमै विदथेषु देवाः	संपर्यवो मादयन्ते सचायोः	२	
युवोर्कृतं रोदसी सत्यमस्तु	महे पु णः सुविताय प्र भूतम् ।		
इदं दिवे नमो अग्रे पृथिव्यै	संपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्	३	
उतो हि वाँ पूष्या आविविद्र	ऋतावरी रोदसी सत्यवाचः ।		
नरंश्चिद् वाँ समिथे शूरसातौ	ववन्दिरे पृथिवि वेविदानाः	४	
को अद्धा वैद् क इह प्र वोचद्	देवाँ अच्छा पथ्याइ का समैति ।		
ददृश्र एषामवमा सदांसि	परेषु या गुह्येषु व्रतेषु	५	
कविर्नुचक्षा अभि षीमचष्ट	ऋतस्य योना विघृते मदन्ती ।		
नानां चक्राते सदनं यथा वेः	समानेन ऋतुना संविदाने	६	१७५
समान्या वियुते दूरेअन्ते	ध्रुवे पदे तस्थतुर्जागरूकैः ।		
उत स्वसारा युवती भवन्ती	आर्दु ब्रुवाते मिथुनानि नाम	७	
विश्वेदेते जनिमा सं विविक्तो	महो देवान् बिभ्रती न व्यथेते ।		
एजद् ध्रुवं पत्यते विश्वमेकं	चरत् पतत्रि विषुणं वि जातम्	८	१७७

सनां पुराणमध्येम्यारा—न्महः पितुर्जनितुर्जामि तन्नः ।	
देवासो यत्र पनितार एवै—रुरौ पृथि व्युते तस्थुरन्तः	९ १७८
इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवी—म्यदूदराः शृणवन्नाग्निजिह्वाः ।	
मित्रः सम्राजो वरुणो युवान आदित्यासः कवयः पप्रथानाः	१०
हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्व—स्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानः ।	
देवेषु च सवितः श्लोकमश्रे—रादस्मभ्यमा सुव सर्वतातिम्	११ १८०
सुकृत सुपाणिः स्ववाँ ऋतावा देवस्त्वष्टावसे तानि नो धात् ।	
पुष्पवन्त ऋभवो मादयध्व—मूर्ध्वग्रावाणो अध्वरमतष्ट	१२
विद्युद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो दिवो मर्यां ऋतजाता अयासः ।	
सरस्वती शृणवन् यज्ञियासो धाता रयिं सहवीरं तुरासः	१३
विष्णुं स्तोमासः पुरुदस्ममर्का भर्गस्येव कारिणो यामनि ग्मन् ।	
उरुक्रमः ककुहो यस्य पूर्वा—र्न मर्धन्ति युवतयो जनित्रीः	१४
इन्द्रो विश्वैर्वीरैर्दुः पत्यमान उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।	
पुरंदुरो वृत्रहा धृष्णुषेणः संगृभ्यां न आ भरा भूरिं पश्वः	१५
नासत्या मे पितरां बन्धुपृच्छां सजात्यमश्विनोश्चारु नाम ।	
युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणां दात्रं रक्षथे अकवैरदब्धा	१६ १८५
महत् तद् वः कवयश्चारु नाम यद् देवा भवथ विश्व इन्द्रे ।	
सखं ऋभुभिः पुरुहूत प्रियेभि—रिमां धियं सातये तक्षता नः	१७
अर्यमा णो अदितिर्यज्ञियासो ऽदब्धानि वरुणस्य व्रतानि ।	
युयोत नो अनपत्यानि गन्तोः प्रजावान् नः पशुमाँ अस्तु गातुः	१८
देवानां दूतः पुरुध प्रसूतो ऽनांगान् वोचतु सर्वताता ।	
शृणोतु नः पृथिवी द्यौरुतापः सूर्यो नक्षत्रैर्ध्वन्तरिक्षम्	१९
शृण्वन्तु नो वृषेणः पर्वतासो ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः ।	
आदित्यैर्नो अदितिः शृणोतु यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम्	२०
सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पन्था मध्वा देवा ओषधीः सं पिपृक्त ।	
भगो मे अग्रे सख्ये न मृध्या उद् रायो अश्यां सदनं पुरुक्षोः	२१
स्वदस्व हुव्या समिषो दिदी—ह्यस्मद्यृक् सं मिमीहि श्रवांसि ।	
विश्वो अग्रे पृत्सु ताञ्जेपि शत्रू—नहा विश्वा सुमना दीदिही नः	२२ १९१

॥१९॥ (ऋ० ३।५५।१-२२)

उषसः पूर्वा अध यद् व्युषु—महद् वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः ।	
व्रता देवानामुप नु प्रभूषन् महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१
मो घृ णो अत्र जुहुरन्त देवा मा पूर्वे अग्ने पितरः पदुजाः ।	
पुराण्योः सन्ननोः केतुरन्त—महद् देवानामसुरत्वमेकम्	२
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शम्यच्छा दीद्ये पूर्व्याणि ।	
समिद्धे अग्रावृतमिद् वदेम महद् देवानामसुरत्वमेकम्	३
समानो राजा विभ्रतः पुरुत्रा शयै शयासु प्रयुतो वनानु ।	
अन्या वत्सं भरति क्षेति माता महद् देवानामसुरत्वमेकम्	४ १९५
आक्षित् पूर्वास्वपरा अनूरुत् सद्यो जातासु तरुणीष्वन्तः ।	
अन्तर्बतीः सुवते अप्रवीता महद् देवानामसुरत्वमेकम्	५
शयुः परस्तादथ नु द्विमाता ऽबन्धनश्चरति वत्स एकः ।	
मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद् देवानामसुरत्वमेकम्	६
द्विमाता होता विदथेषु सम्रा—लन्वग्रं चरति क्षेति बुधः ।	
प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद् देवानामसुरत्वमेकम्	७
शरस्येव युर्ध्वतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत् ।	
अन्तर्मतिश्चरति निष्विधं गो—महद् देवानामसुरत्वमेकम्	८
नि वैवेति पलितो दूत आ—स्वन्तर्महांश्चरति रोचनेन ।	
वपूषि विभ्रदाभि नो वि चष्टे महद् देवानामसुरत्वमेकम्	९ २००
विष्णुर्गोपाः परमं पाति पार्थः प्रिया धामान्यमृता दधानः ।	
अग्निष्टा विश्वा भुवनानि वेद महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१०
नानां चक्राते यम्याडु वपूषि तयोरन्यद् रोचते कृष्णमन्यत् ।	
श्यावीं च यदरुषी च स्वसारी महद् देवानामसुरत्वमेकम्	११
माता च यत्र दुहिता च धेनू संबर्दुधे धापयते समीची ।	
ऋतस्य ते सदसीळे अन्त—महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१२
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः ।	
ऋतस्य सा पयसापिन्वतेळा महद् देवानामसुरत्वमेकम्	१३ २०४

पद्या वस्ते पुरु <u>रूपा</u> वपू <u>ष्यध्वा</u> तस्थौ <u>त्र्यवि</u> रेरिहाणा ।	
<u>ऋतस्य</u> स <u>ब</u> वि चरामि <u>विद्वान्</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	१४ २०५
<u>पदे</u> इ <u>व</u> नि <u>हिते</u> दु <u>स्मे</u> अ <u>न्त</u> <u>स्तयोरन्यद्</u> गु <u>ह्यमा</u> वि <u>रन्यत्</u> ।	
<u>सध्रीची</u> ना <u>पथ्या</u> इ सा वि <u>षूची</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	१५
आ <u>धेनवो</u> धु <u>नयन्ता</u> म <u>शिशी</u> ः स <u>बर्दु</u> घाः श <u>शया</u> अ <u>प्रदु</u> ग्धाः ।	
न <u>व्या</u> न <u>व्या</u> यु <u>वतयो</u> भ <u>वन्ती</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	१६
य <u>दुन्यासु</u> वृ <u>षभो</u> रो <u>रवी</u> ति सो अ <u>न्यस्मिन्</u> यू <u>थे</u> नि द <u>धाति</u> रे <u>तः</u> ।	
स हि <u>क्षपा</u> वान् <u>त्स</u> भ <u>गः</u> स राजा <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	१७
<u>वरि</u> स्य नु स्व <u>श्व्यं</u> जना <u>सः</u> प्र नु वो <u>चाम</u> वि <u>दुर</u> स्य दे <u>वाः</u> ।	
<u>षो</u> ळहा यु <u>क्ताः</u> प <u>ञ्चप</u> ञ्चा व <u>हन्ति</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	१८
दे <u>वस्त्वष्टा</u> स <u>विता</u> वि <u>श्वरूपः</u> पु <u>पोष</u> प्र <u>जाः</u> पु <u>रुधा</u> ज <u>जान</u> ।	
इ <u>मा</u> च वि <u>श्वा</u> भु <u>वनान्यस्य</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	१९ २१०
<u>मही</u> स <u>मैरञ्च</u> म्वा <u>समी</u> ची उ <u>भे</u> ते अ <u>स्य</u> व <u>सुना</u> न्य <u>ष्टे</u> ।	
शु <u>ण्वे</u> वी <u>रो</u> वि <u>न्दमानो</u> व <u>सूनि</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	२०
इ <u>मां</u> च नः पृ <u>थिवीं</u> वि <u>श्वधा</u> या उ <u>प</u> क्षे <u>ति</u> हि <u>तमि</u> त्रो न राजा ।	
पु <u>रः</u> स <u>दः</u> श <u>र्मसदो</u> न वी <u>रा</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	२१
नि <u>ष्विध्व</u> री <u>स्त</u> ओ <u>षधी</u> रु <u>तापो</u> र <u>यिं</u> त इ <u>न्द्र</u> पृ <u>थिवी</u> वि <u>भर्ति</u> ।	
स <u>खा</u> य <u>स्ते</u> वा <u>मभा</u> जः स्या <u>म</u> <u>महद्</u> देवाना <u>मसुरत्वमेकम्</u>	२२

॥२०॥ (क्र० ३।५६।१-८)

न ता मि <u>नन्ति</u> मा <u>यिनो</u> न धी <u>रा</u> व्र <u>ता</u> दे <u>वानां</u> प्र <u>थमा</u> भु <u>वाणि</u> ।	
न रो <u>दसी</u> अ <u>द्रुहा</u> वे <u>द्याभि</u> र्न प <u>र्वता</u> नि <u>नमे</u> त <u>स्थिवांसः</u>	१
ष <u>ड्</u> भा <u>रां</u> ए <u>को</u> अ <u>चरन्</u> वि <u>भ</u> <u>त्यृतं</u> व <u>र्षिष्ठ</u> मु <u>प</u> गा <u>व</u> आ <u>गुः</u> ।	
ति <u>स्रो</u> म <u>हीरु</u> प <u>रास्तस्थुर</u> त्या गु <u>हा</u> द्वे नि <u>हिते</u> द <u>श्ये</u> का	२ २१५
त्रि <u>पाज</u> स्यो वृ <u>षभो</u> वि <u>श्वरूप</u> उ <u>त</u> त्र्यु <u>धा</u> पु <u>रुध</u> प्र <u>जावा</u> न् ।	
त्र्य <u>नीकः</u> प <u>त्यते</u> मा <u>हिना</u> वा <u>न्त्स</u> रे <u>तो</u> धा वृ <u>षभः</u> श <u>श्वती</u> ना <u>म्</u>	३
अ <u>भीक</u> आ <u>सां</u> प <u>दुवीर</u> वो <u>ध्यादित्यानां</u> म <u>ह्ने</u> चारु <u>नाम</u> ।	
आ <u>पश्चिद</u> स्मा अ <u>रमन्त</u> दे <u>वीः</u> पृ <u>थग्</u> व्र <u>जन्तीः</u> परि <u>षीम</u> वृ <u>ज्जन्</u>	४ २१७

त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीना—मुत त्रिमाता विदथेषु सम्राट् ।	
ऋतावरीर्योषणास्तिस्त्रो अप्या—स्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः	५
त्रिरा दिवः सवितवर्याणि दिवेदिव आ सुव त्रिनो अहः ।	
त्रिघातु राय आ सुवा वस्त्रनि भगं त्रातर्धिषणे सातये धाः	६
त्रिरा दिवः सविता सौषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।	
आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सवार्य	७ २२०
त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः ।	
ऋतावान इषिरा दूळभासु—स्त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः	८

॥२१॥ (ऋ० ३।८।८)

(२२२-२८) गाथिना विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।	
सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम्	८

॥२२॥ (ऋ० ३।५७।१-६)

प्र मे विविक्काँ अविदन्मनीषां धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम् ।	
सद्यश्चिद् या दुदुहे भूरिं धासे—रिन्द्रस्तदग्निः पनितारो अस्याः	१
इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न प्रीताः शशयं दुदुहे ।	
विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुम्रमश्याम्	२
या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमसिन् ।	
अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति विभ्रतं वपूषि	३ २२५
अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राणो युजानो अध्वरे मनीषा ।	
इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यजत्राः	४
या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेषूच्यत उरूची ।	
तयेह विश्वाँ अवसे यजत्रा—ना सादय पायया चा मधूनि	५
या ते अग्ने पर्वतस्येव धारा—सश्चन्ती पीपयद् देव चित्रा ।	
तामस्मभ्यं प्रमतिं जातवेदो वसो रास्व सुमतिं विश्वजन्याम्	६

॥२३॥ (ऋ० ४।५५।१-१०)

(२२९-३८) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ८-१० गायत्री ।

को वस्त्राता वसवः को वरूता द्यावाभूमौ अदिते त्रासीथां नः	
सहीयसो वरुण मित्र मर्तात् को वोऽध्वरे वरिवो धाति देवाः	१ २२९

६० [विश्वे देवाः] ३



प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चान् वि यदुच्छान् वियोतारो अमूराः । विधातारो वि ते दधुरजसा ऋतधीतयो रुरुचन्त दुसाः	२	२३०
प्र पस्त्याइमदिति सिन्धुमर्केः स्वस्तिमीळे सख्याय देविम् । उभे यथा नो अहनी निपात उषासानक्ता करतामदब्धे	३	
व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्था—मिषस्पतिः सुवितं गातुमग्निः । इन्द्राविष्णू नृवदु षु स्तवाना शर्म नो यन्तमवद् वरुथम्	४	
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि देवस्य त्रातुरत्रि भगस्य । पात् पतिर्जन्यादंहसो नो मित्रो मित्रियादुत न उरुष्येत्	५	
नू रोदसी अहिना बुध्न्येन स्तुवीत देवी अप्येभिरिष्टैः । समुद्रं न संचरणे सनिष्यवो घर्मस्वरसो नद्योइ अर्प व्रन्	६	
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पात् देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन् । नहि मित्रस्य वरुणस्य धासि—महीमासि प्रमियं सान्वयेः	७	२३५
अग्निरीशे वसुव्यस्या—ऽग्निर्महः सौभगस्य । तान्यस्मभ्यं रासते उपो मघोऽन्या वह्न सूनुते वार्या पुरु । अस्मभ्यं वाजिनीवति	८	
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा । इन्द्रो नो राधसा गमत्	९	
	१०	

॥२४॥ (ऋ० ५।२६।९)

(२३९) वसूयत्र आत्रेयः । गायत्री ।

एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः । देवामः सर्वया विशा	९
---	---

॥२५॥ (ऋ० ५।४१।१-२०)

(२४०-९३) भौमोऽग्निः । त्रिष्टुप्. १६-१७ अतिजगती, २० एकपदा विराद् ।

को नु वा मित्रावरुणावृतायन् दिवो वा महः पार्थिवस्य वा दे । ऋतस्य वा सदमि त्रासीथां नो यज्ञायते वा पशुषो न वाजान्	१	२४०
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायु—रिन्द्रं ऋभुक्षा मरुतो जुपन्त । नमोभिर्वा ये दधने सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय मीळहुषे सजोषाः	२	
आ वां येषांश्विना हुवध्वै वातस्य पत्नम् रथ्यस्य पुष्टौ । उत वा दिवो असुराय मन्म ग्रान्धांसीव यज्यवे भरध्वम्	३	
प्र सक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः । पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजि न जग्मुराश्वतमाः	४	२४३

प्र वो रयि युक्ताश्वं भरध्वं राय एषेऽवसे दधीत धीः ।	
सुशेव एवैरौशिजस्य होता ये व एवां मरुतस्तुराणाम्	५
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनितारंमर्कैः ।	
इषुध्यवं ऋतसापः पुरंधीर्वस्वीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः	६ २४५
उप व एषे वन्द्येभिः शूषैः प्र यही दिवश्चितयांद्भिरकैः	
उषासानक्तां विदुषीव विश्वमा हा वहतो मर्त्याय यज्ञम्	७
अभि वो अर्चे पोष्यावतो नृन् वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणः ।	
धन्यां सजोषां धिषणा नमोभिर्वनस्पतीरोषधी राय एपे	८
तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः ।	
पनित आप्त्यो यंजतः सदा नो वर्धन्नः शंसं नयो अभिष्टौ	९
वृष्णो अस्तोपि भूम्यस्य गर्भं त्रितो नपातमपां सुवृक्ति ।	
गृणीते अगिरेतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वनां	१०
कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम् कद् राये चिकितुपे भगाय ।	
आप ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वनां गिरयो वृक्षकेशाः	११ २५०
शृणोतुं न ऊर्जां पतिर्गिरः स नभस्तरियाँ इषिरः परिज्मा ।	
शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्राः परि सुचो ववृहाणस्याद्रेः	१२
विदा चिन्नु महान्तो ये व एत्रा ब्रवाम दस्मा वार्यं दधानाः ।	
वयश्चन सुभवु आवं यन्ति क्षुभा मर्तमनुयतं वधस्त्रैः	१३
आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्माऽपश्चाच्छा सुमंखाय वोचम् ।	
वर्धन्तां द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिपाता अर्णाः	१४
पदेपदे मे जरिमा नि धायि वरूत्री वा शक्रा या पायुभिश्च ।	
सिषक्तु माता मही रसा नः स्मत् सूरिभिर्ऋजुहस्तं ऋजुवनिः	१५
कथा दाशेम् नमसा सुदानुं नेवया मरुतो अच्छोक्तौ प्रश्रवसो मरुतो अच्छोक्तौ ।	
मा नोऽर्हिर्बुध्न्यो रिषे धा दुस्माकं भूदुपमातिवनिः	१६ २५५
इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै देवासो वनते मर्त्यो व आ देवाभो वनते मर्त्यो वः ।	
अत्रा शिवां तन्वो धासिमस्या जरां चिन्मे निर्ऋतिर्जग्रसीत	१७
तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्ती मिषमश्याम वसवः शसा गोः ।	
सा नः सुदानुर्मृळयन्ती देवी प्रति द्रवन्ती सुविताय गम्याः	१८ २५७

अभि न इळा यूथस्य माता स्मन्नदीभिर्बुधशी वा गृणातु ।  
 उर्वशी वा बृहद्विवा गृणाना ऽभ्यूर्णाना प्रभुथस्यायोः  
 सिषक्तु न ऊर्ज्व्यस्य पुष्टेः

१९ २५८  
 २०

॥२६॥ (ऋ० ५।४२।१-१०, १२-१८) त्रिष्टुप्, १७ एकपदा विराट् ।

प्र शंतमा वरुणं दीधितिं गी—मित्रं भगमदितिं नूनमंश्याः ।  
 पृषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्व—तूर्तपन्था असुरो मयोभुः १ २६०  
 प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात् सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम् ।  
 ब्रह्मं प्रियं देवहितं यदस्त्य—हं मित्रे वरुणे यन्मयोभु २  
 उदीरय कवितमं कवीना—मुनत्तैनमभि मध्वा घृतेन ।  
 स नो वसूनि प्रयता हितानि चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ३  
 समिन्द्र णो मनसा नेपि गाभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति ।  
 सं ब्रह्मणा देवहितं यदास्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञियानाम् ४  
 देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम् ।  
 ऋभुक्षा वाज उत वा पुरंधि—रवन्तु नो अमृतासस्तुरासः ५  
 मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णो—रर्ज्यतः प्र ब्रवामा कृतानि ।  
 न ते पूर्वं मघवन् नापरामो न वीर्यं नूतनः कश्चनाप ६ २६५  
 उषं स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानाम् ।  
 यः शंसते स्तुवते शंभविष्ठः पुरुवसुरागमज्जोहुवानम् ७  
 तवोतिभिः सचमाना अरिष्टा बृहस्पते मघवानः सुवीराः ।  
 ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वत्सदाः सुभगास्तेषु रायः ८  
 विसर्माणं कृणुहि वित्तमेपां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः ।  
 अपत्रतान् प्रसवे वावृधानान् ब्रह्माद्विपः सूर्याद् यावयस्व ९  
 य ओहते रक्षसो देववीता—वचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात ।  
 यो वः शमीं शशमानस्य निन्दात् तुच्छयान् कामान् करते सिष्विदानः १०  
 दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभवतष्टाः ।  
 सरस्वती बृहद्विवात राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः १२  
 प्र स्र महे सुशरणाय मेधां गिरं भरे नव्यसीं जायमानाम् ।  
 य आहना दुहितुर्वक्षणां सु रूपा मिनानो अकृणोद्विदं नः १३ २७१

प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तं—मिळस्पतिं जरितर्नूनमश्याः ।	
यो अन्दिमाँ उदनिमाँ इयतिं प्र विद्युता रोदसी उक्षमाणः	१४
एषः स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सून्युव्यूरुदश्याः ।	
कामो राये हवते मा स्वस्त्यु—पं स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः	१५
प्रैषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं वनस्पतीरोषधी राये अश्याः ।	
देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्	१६
उरौ देवा अनिबाधे स्याम	१७ २७५
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवाँ सुप्रणीती गमेम ।	
आ नो रयिँ बहत्तमोत वीरा—ना विश्वान्यमृता सौभंगानि	१८
॥२७॥ (क्र० ५।४३।१-१७) त्रिष्टुप्, १६ एकपदा विराट् ।	
आ धेनवः पर्यसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीरुपं नो यन्तु मध्वा ।	
महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवोँ जरिता जौहवीति	१
आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे ।	
पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम्	२
अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवेँ भरत चारुं शुक्रम् ।	
होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वोँ ररिमा ते मदाय	३
दश क्षिपोँ युञ्जते बाहू अद्रिँ सोमस्य या शमिताराँ सुहस्ताँ ।	
मध्वो रसं सुगभस्तिर्गिरिष्ठां चनिश्चदद् दुदुहे शुक्रमंशुः	४ २८०
अस्तावि ते जुजुषाणाय सोमः क्रत्वे दक्षाय बृहते मदाय ।	
हरी रथे सुधुरा योगे अर्वा—गिन्द्रं प्रिया कृणुहि ह्यमानः	५
आ नो महीमरमतिं सजोषा प्रां देवीं नमसा रातहव्याम् ।	
मधोर्मदाय बृहतीमृतज्ञा—माग्ने वह पृथिभिर्देवयानैः	६
अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्राँ वपावन्तं नाग्निना तपन्तः ।	
पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ट आ घर्मोँ अग्निमृतयन्नसादि	७
अच्छाँ मही बृहती शतमा गी—दूतो न गन्त्वश्विनाँ हुवध्यै ।	
मयोभुवाँ सरथा यातमर्वा—ग्गन्तं निधिं धुरमाणिर्न नाभिम्	८
प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्या—ऽहं पूष्ण उत वायोरदिक्षि ।	
या राधसा चोदिताराँ मतीनाँ या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन्	९ २८५

आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वाना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः ।	
यज्ञं गिरो जरितुः सुष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्वं ऊती	१० २८६
आ नो दिवो बृहत्तः पर्वतादा सरस्वती यजता गन्तु यज्ञम् ।	
हवै देवी जुजुषाणा घृताचीं शग्मां नो वाचमुशती शृणोतु	११
आ वेधसं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं सदर्ने सादयध्वम् ।	
सादद्योनिं दम आ दीद्विवांसं हिरण्यवर्णमरुषं सपेम	१२
आ धर्णासिर्वृहाद्विषो रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोर्माभिर्हुवानः ।	
ग्रा वसान ओषधीरमृधस्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः	१३
मातुष्पदे परमे शुक्र आयो विपन्यवो रास्विरासो अगमन् ।	
सुशेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे	१४ २९०
बृहद् वयो बृहते तुभ्यमग्रे धियाजुरो मिथुनासः सचन्त ।	
देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्	१५
उरौ देवा अनिवाधे स्याम	१६
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।	
आ नो रथिं बहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि	१७

॥२८॥ ( ऋ० ५।४४।१-१५ )

(२९४-३०८) काश्यपोऽवत्सारः (१० क्षत्र-मनस-एवाचद-यजत-सध्रि-अवत्साराः, ११ विश्ववार-यजत-मायी-अवत्साराः, १२ अवत्सारेण सह सदापृण-यजत-वाहुवृक्त-श्रुतचित्-तर्याः, १३ सुतंभरश्च ) । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।

तं प्रत्नथां पूर्वथां विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदम् ।	
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिरा ऽऽशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे	१
श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्व विरोचमानः क्रुभांमचोदते ।	
सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभिर्कृत आस नाम ते	२ २९
अत्यं हविः संचते सच्च धातु चा ऽरिष्टगातुः स होता सहोभरिः ।	
प्रसर्त्तीणो अतु बर्हिर्वृषा शिशुर्मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः	३
प्र व एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्यं ऋतावृधः ।	
सुयन्तुभिः सर्वशासैरभीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मृषायति	४
संजर्धुराणस्तर्हभिः सुतेगृभं वयाकिनं चित्तर्गर्भासु सुस्वरुः ।	
धामवाकेष्वजगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीरभिजीवो अध्वरे	५ १

यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते सं छायायां दधिरे सिध्रयाप्स्वा ।	
महीमस्मभ्यमुरुषामुरु ज्रयो बृहत् सुवीरमनपच्युतं सहः	६
वेत्यग्रुर्जनिवान् वा अति स्पृधः समर्थता मनसा सूर्यः कविः ।	
घ्नंसं रक्षन्तं परिं विश्वतो गयं—मस्माकं शर्म वनवत् स्वावसुः	७ ३००
उयायांसमस्य यतुनस्य केतुनं क्रपिस्वरं चरति यासु नाम ते ।	
यादृशिमन् धायि तमपस्ययां विदद् य उं स्वयं वहते सो अरं करत्	८
समुद्रमांसामव तस्ये अग्रिमा न रिष्यति सर्वनं यस्मिन्नायता ।	
अत्रा न हादिं क्रवणस्य रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतवन्धनी	९
स हि क्षत्रस्य मनसस्य चिन्तिभिरेवावदस्य यजतस्य सध्रैः ।	
अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शविष्ठं वाजं विदुषां चिदध्यम्	१०
श्येन आंसामदितिः कक्षयोडे मदी विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः ।	
समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते	११
सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् बाहुवृक्तः श्रुतवित् तयो वः सचा ।	
उभा स वरा प्रत्येति भाति च यदीं गुणं भजते सुप्रयावभिः	१२ ३०५
सुतंभरो यजमानस्य सत्पतिर्विश्वांसामूधः स धियामुदञ्चनः ।	
भरद् धेनू रसवाच्छिश्रिये पयो ऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन्	१३
यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।	
यो जागार तमयं सोमं आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः	१४
अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते ऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति ।	
अग्निर्जागार तमयं सोमं आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः	१५

॥२९॥ (ऋ० ५।४५।१-११)

(३०९-१९) सदापृण आत्रेयः । त्रिष्टुप् ।

विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थैरायत्या उषसो अर्चिनो गुः ।	
अपावृत व्रजिनीरुत् स्वर्गाद् वि दुरो मानुषीदेव आवः	१
वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादो—वाद् गवां माता जानती गात् ।	
धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणैव सुमिता दंहत द्यौः	२
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय ।	
वि पर्वतो जिहीति साधत द्यौ—राविवांसन्तो दसयन्त भूमं	३ ३११

सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैरिन्द्रा न्वृषी अवसे हुवध्वै ।	
उक्थेभिर्हिष्मा क्वयः सुयज्ञा आविवांसन्तो मरुतो यजन्ति	४ ३१९
एतो न्वृष्य सुध्वोऽं भवाम प्र दुच्छुर्ना मिनवामा वरीयः ।	
अरे द्वेषांसि सनुतर्दधामाऽयाम प्राञ्चो यजमानमच्छे	५
एता धियं कृणवामा सखायो ऽप या मातां ऋणुत व्रजं गोः ।	
यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग्बहुरापा पुरीषम्	६
अर्नूनेदत्र हस्तयतो अद्रिः रार्चन् येन दश मासो नवग्वाः ।	
ऋतं यती सरमा गा अविन्दुद् विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार	७ ३१५
विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः सं यद् गोभिरङ्गिरसो नवन्त ।	
उत्स आसां परमे सधस्थं ऋतस्य पथा सरमा विदुद् गाः	८
आ स्रयो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे ।	
रघुः श्येनः पतयदन्धो अच्छा युवा क्विर्दीदयद् गोषु गच्छन्	९
आ स्रयो अरुहच्छुक्रमणो ऽयुक्त यद्दरितो वीतपृष्ठाः ।	
उद्रा न नावमनयन्त धीरा आशृण्वतीरापो अर्वागतिष्ठन्	१०
धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षा ययातरन् दश मासो नवग्वाः ।	
अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः	११

॥३०॥ (ऋ० ५।४६।१-८)

(३२०-२७) प्रतिक्षत्र आत्रेयः । (७-८ देवपत्न्यः) । जगती; २, ८ त्रिष्टुप् ।

हयो न विद्राँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम् ।	
नास्या वशिम विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान् पथः पुरएत ऋजु नैषति	१ ३२०
अग्र इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।	
उभा नासत्या रुद्रो अध ग्राः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त	२
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिति स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः ।	
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये	३
उत नो विष्णुरुत वातो अस्त्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत् ।	
उत ऋभवं उत राथे नो अश्विनो त त्वष्टोत विभ्वानु मंसते	४
उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद् दिविक्षयं यजतं बहिरासदे ।	
बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद् वरुथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा	५ ३२४

उत त्वे नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन् ।  
 भर्गो विभक्ता शवसावसा गम—दुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम् ६ ३२५  
 देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये ।  
 याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत ७  
 उत मा व्यन्तु देवपत्नी—रिन्द्राण्यग्नाय्यश्विनी राट् ।  
 आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम् ८

॥३१॥ (ऋ० ५।४७।१-७)

(३२८-३४) प्रतिरथ आत्रेयः । त्रिष्टुप् ।

प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा मही माता दुहितुर्बोधयन्ती ।  
 आविवासन्ती युवतिर्मनीषा पितृभ्य आ सदर्ने जोहुवाना १  
 अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम् ।  
 अनन्तास उरवो विश्वतः सीं परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः २  
 उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश ।  
 मध्ये दिवो निर्हितः पृश्निरदमा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ३ ३३०  
 चत्वार ई विभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते ।  
 त्रिधातवः परमा अस्य गात्रो दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान् ४  
 इदं वपुर्निवचनं जनास—श्चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः ।  
 द्वे यदीं विभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्याइ सवन्धू ५  
 वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरौ वयन्ति ।  
 उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ ६  
 तदस्तु मित्रावरुणा तदग्रे शं योरसभ्यमिदमस्तु शस्तम्  
 अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सार्दनाय ७

॥३२॥ (ऋ० ५।४८।१-५)

(३३५-३९) प्रतिभानुरात्रेयः । जगती ।

कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयंशसे महे वयम् ।  
 आमेन्यस्य रजसो यदुभ्र आ अपो वृणाना वितनोति मायिनी १  
 ता अन्नत वयुने वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः ।  
 अपो अपाचीरपरा अपेजते प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः २ ३३६

६० [विश्वे देवाः] ४



आ ग्रावभिरहन्वैभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्ति मायिनि । शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्षसः ।	३	३३७
सचां यदि पितुमन्तामिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे	४	
स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नारिम् । न तस्य विन्न पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम्	५	

॥३३॥ (ऋ० ५।४९।१-५)

(३४०-४४) प्रतिप्रभ आत्रेयः, (५ तृणपाणिः) । त्रिष्टुप् ।

देवं वो अद्य सवितारमेषे भगं च रत्नं विभजन्तमायोः । आ वां नरा पुरुभुजा ववृत्यां दिवेदिवे चिदश्विना सखीयन् प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्रान्त्सुकैर्देवं सवितारं दुवस्य । उपं बुधीत नमसा विजानञ्ज्येष्टं च रत्नं विभजन्तमायोः अदुत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर्वस्त उन्नः । इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रो अग्निरहानि भद्रा जनयन्त दुस्माः तन्नो अनर्वा सविता वरुथं तत् सिन्धव इषयन्तो अनु गमन् । उप यद् वोचं अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुर्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः । अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम	१	३४०
	२	
	३	
	४	
	५	

॥३४॥ (ऋ० ५।५०।१-५)

(३४५-६०) स्वस्त्यात्रेयः । अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

विश्वो देवस्य नेतुर्मतो वुरीत सख्यम् । विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे १ ते ते देव नेतये चेमां अनुशसे । ते राया ते ह्याइपृचे सचेमहि सचथ्यैः २ अतो न आ नृनर्तिथी नतः पत्नीर्दशस्यत । आरे विश्वं पथंष्टां द्विषो युंयोतु यूयुविः ३ यत्र वह्निरभिहितो दुद्रवद् द्रोण्यः पशुः । नृमणा वीरपस्त्यो ऽर्णा धीरेव सनिता ४ एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रयिः । शं राये शं स्वस्तय इषुस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे ५	३४५	
	२	
	३	
	४	
	५	३४९

॥३५॥ (ऋ० ५।५।१-३, ८-१५)

१-३ गायत्री; ८-१० उष्णिक्; ११-१३ जगती त्रिष्टुप्; १४-१५ अनुष्टुप् ।

अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरुमैभिरा गहि । देवेभिर्हव्यदातये	१	३५०
ऋतधीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम् । अग्नेः पिबत जिह्वया	२	
विप्रेभिर्विप्र सन्त्य प्रातर्यावाभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये	३	
सजूर्विश्वेभिर्देवेभि रश्विभ्यामुषसा सजूः । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण	८	
सजूर्मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण	९	
सजूरादित्यैर्वसुभिः सजूरिन्द्रेण वायुना । आ याह्यग्ने अत्रिवत् सुते रण	१०	३५५
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।		
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना	११	
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।		
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तये आदित्यासो भवन्तु नः	१२	
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।		
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः	१३	
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।		
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि	१४	
स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाधिव । पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि	१५	३६०

॥३६॥ (ऋ० ६।२।९, ११)

(३६१-६२) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य ।		
प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरंधिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च	९	
नू म आ वाचमुप याहि विद्वान् विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः ।		
ये अग्निजिह्वा ऋतसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरपं दसाय	११	

॥३७॥ (ऋ० ६।४।१-५)

(३६३-४२५) ऋजिश्वा भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १५ शकरी ।

स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिर्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्रयन्ता ।		
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः	१	
विशोविश ईर्ष्यमध्वरे ष्वदत्तक्रतुमरतिं युवत्योः ।		
दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य केतुमरुषं यजध्वै	२	३६४

अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तुभिरन्या पिपिशे सरो अन्या ।	
मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्मं श्रुतं नक्षत ऋच्यमाने	३ ३६५
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रथि विश्ववारं रथप्राम् ।	
द्युतघामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो	४
स मे वपुच्छदयदुश्चिनोर्यो रथो विरुक्मान् मनसा युजानः ।	
येन नरा नासत्येषयधै वर्तिर्यथस्तनयाय त्मने च	५
पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि ।	
सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीभिर्जगतः स्थातर्जगदा कृणुध्वम्	६
पावीरवी कन्या चित्रायः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात् ।	
ग्राभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुरार्धं गृणते शर्म यंसत्	७
पथस्पथः परिपति वचस्या कामेन कृतो अभ्यानल्लर्कम् ।	
स नो रासच्छुरुषश्चन्द्राग्रा धियं धियं सीषधाति प्र पूषा	८ ३७०
प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं सुगभस्तिमृभ्वम् ।	
होता यक्षद् यजतं पस्त्याना मग्निस्त्वष्टारं सुहवं विभावा	९
भुवनस्य पितरं गीभिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ ।	
बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम् मृधग्घुवेम कविनेषितासः	१०
आ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम् ।	
अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत्	११
प्र वीराय प्र तवसे तुरायाऽजा यूथेवं पशुरक्षिरस्तम् ।	
स पिस्पृशति तन्विं श्रुतस्य स्तुभिर्न नाकं वचनस्य विर्षः	१२
यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद् विष्णुर्मनवे बाधिताय ।	
तस्य ते शर्मन्नुपदुद्यमाने राया मदेम तन्वाइ तनां च	१३ ३७५
तन्नोऽर्हिर्बुधयो अङ्गिरकं स्तत् पर्वतस्तत् सविता चनो धात् ।	
तदोषधीभिरभि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये	१४
नू नो रथि रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं मह ऋतस्य गोपाम् ।	
क्षयं दाताजरं येन जनान्त्स्पृधा अदेवीरभि च क्रमाम	
विशु आदेवीरभ्यश्रवाम	१५ ३७७

॥३८॥ (अ० ६।५०।१-१५) त्रिष्टुप् ।

हुवे वो देवीमर्दिति नमोभिर्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम् । अभिक्षदामर्थमणं सुशेवं त्रातृन् देवान्तसंवितारं भगं च	१
सुज्योतिषः सूर्यं दक्षपितृन्नागास्त्वे सुमहो वीहि देवान् । द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः	२
उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद् रोदसी शरणं सुपुम्ने । महस्करथो वरिवो यथा नो ऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः	३ ३८०
आ नो रुद्रस्यं सुनवो नमन्तामद्या हूतासो वसवोऽधृष्टाः । यदीमर्भे महति वा हितासो बाधे मरुतो अह्वाम देवान्	४
मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्धयज्वा । श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रविक्ते	५
अभि त्यं वीरं गिर्वेणसमर्चेन्द्रं ब्रह्मणा जरितर्नवेन । श्रवदिद्धवमुप च स्तवानो रासद् वाजाँ उप महो गृणानः	६
ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धातं तोकाय तर्नयाय शं योः । युयं हि ष्ठा भिषजो मातृत्मा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः	७
आ नो देवः संविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात् । यो दत्रवाँ उपसो न प्रतीकं व्यूर्णुते द्राशुषे वार्याणि	८ ३८५
उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या देवाँ अस्मिन्नध्वरे ववृत्त्याः । स्यामहं ते सदुमिद् रातौ तव स्यामग्नेऽवसा सुवीरः	९
उत त्या मे हवमा जगम्यातं नासत्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा । अत्रिं न महस्तमसोऽमुमुक्तं तूर्वतं नरा दुरितादुभीके	१०
ते नो रायो द्युमतो वाजवतो दातारो भूत नृवतः पुरुक्षोः । दशस्यन्तो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्या मळता च देवाः	११
ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषा मीळहुष्मन्तो विष्णुर्मृळन्तु वायुः । ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः	१२
उत स्य देवः सांवता भगो नो ऽपां नपादवतु दानु पप्रिः । त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी समुद्रैः	१३ ३९०

उत् नोऽर्हिर्बुध्न्यः शृणो—त्वज एकपात् पृथिवी समुद्रः ।	
विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवंतु	१४ ३९१
एवा नपातो मम तस्य धीभि—र्भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।	
मा हुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासो भूता यजत्राः	१५

॥३९॥ (ऋ० ६।५१।१-१६) त्रिष्टुप्, १३-१५ उष्णिक्, १६ अनुष्टुप् ।

उदु त्यञ्चक्षुर्महि मित्रयोरोँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम् ।	
ऋतस्य शुचिं दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत्	१
वेदु यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानां जन्म सनुतरा च विप्रः ।	
ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्य—न्नाभि चष्टे सूरौ अर्य एवान्	२
स्तुष उँ वो मह ऋतस्य गोपा—नर्दिति मित्रं वरुणं सुजातान् ।	
अर्यमणं भगमदब्धधीती—नच्छा वोचे सध्न्यः पावकान्	३ ३९५
रिशदसः सत्पर्तीरदब्धान् महो राज्ञः सुवसनस्य दातृन् ।	
यूनः सुक्षत्रान् क्षयतो दिवो नृ—नादित्यान् याम्यर्दिति दुवोयु	४
द्यौःष्वितः पृथिवि मातरध्रु—गत्रे भ्रातर्वसवो मळता नः ।	
विश्व आदित्या अदिते सजोषा अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त	५
मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा अघायते रीरधता यजत्राः ।	
युयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनां गूयं दक्षस्य वचसो बभूव	६
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत् कर्म वसवो यच्चयध्वे ।	
विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वै रीरिषीष्ट	७
नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।	
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे	८ ४००
ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षा—नृतस्य पस्त्यसदो अदब्धान् ।	
ताँ आ नमोभिरुचक्षसो नृन् विश्वान्व आ नमे महो यजत्राः	९
ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उँ न—स्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति ।	
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्नि—ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः	१०
ते न इन्द्रः पृथिवी क्षामं वर्धन् पूषा भगो अर्दितिः पञ्च जनाः ।	
सुशर्माणः स्ववसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः	११ ४०३

नू सन्नानं दिव्यं नंशि देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता ।	
आसानेभिर्यजमानो मियेधै—देवानां जन्म वसुयुर्वन्द	१२
अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् । दविष्टमस्य सत्पते कृधी सुगम्	१३ ४०५
ग्रावाणः सोम नो हि कं सखित्वनायं वावशुः । जही न्यत्रिणं पणिं वृको हि षः	१४
यूयं हि ष्टा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा	१५
अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम् । येन विश्वाः परि द्विषो वृणाक्ति विन्दते वसु	१६

॥४०॥ (ऋ० ६।५२।१-१७) त्रिष्टुप्, ७-१२ गायत्री, १४ जगती ।

न तद् दिवा न पृथिव्यानुं मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिराभिः ।	
उब्जन्तु तं सुभ्वः पर्वतासो नि हीयतामतियाजस्य यष्टा	१
अतिं वा यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यः क्रियमाणं निनिंत्सात् ।	
तपूषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषमभि तं शोचतु द्यौः	२ ४१०
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां किमङ्ग त्वाहुरभिश्स्तिपां नः ।	
किमङ्ग नः पश्यसि निद्यमानान् ब्रह्मद्विषे तपूषि हेतिमस्य	३
अवन्तु मामुषसो जायमाना अवन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः ।	
अवन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासो ऽवन्तु मा पितरो देवहूतौ	४
विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।	
तथा करद् वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्टः	५
इन्द्रो नेर्दिष्टमवसागमिष्टः सरस्वती सिन्धुभिः पिन्वमाना ।	
पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभुरग्निः सुशंसः सुहवः पितेव	६
विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत	७ ४१५
यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उष गच्छथ	८
उष नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । समुच्छीका भवन्तु नः	९
विश्वे देवा ऋतावृधं ऋतुभिर्हवनश्रुतः । जुषन्तां युज्यं पर्यः	१०
स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्रेण—स्त्वष्टमान् मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः	११
इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज । चिकित्वान् दैव्यं जनम्	१२
विश्वे देवाः शृणुतेमं हवै मे ये अन्तरिक्षे य उप दधि ष्ट ।	
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम्	१३ ४२१

विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियां उभे रोदसी अपां नपाञ्च मन्म ।	
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद् वो अन्तमा मदेम	१४ ४२२
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्थे ।	
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षप उस्त्रा वरिधस्यन्तु देवाः	१५
अग्नीपर्जन्याववतं धियं मे ऽस्मिन् हवे सुहवा सुष्टुतिं नः ।	
इळामन्यो जनयद् गर्भमन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तमस्मे	१६
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे ।	
अस्मिन् नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम्	१७ ४२५

॥४१॥ ( ऋ० ७।३४।१-१५, १८-२५ )

(४२६-५१०) मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः । द्विपदा विराट्, २२-२५ त्रिष्टुप् ।

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत् सुतष्टो रथो न वाजी	१
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः	२
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वी-वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः	३
आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वा-निन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः	४
अभि प्र स्थाताहैव यज्ञं यतैव पत्मन् तमनां हिनोत	५ ४३०
त्मनां समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम्	६
उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्ति बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम	७
ह्वयामि देवां अयातुरग्रे साधन्नृतेन धियं दधामि	८
अभि वो देवीं धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम्	९
आ चष्ट आसां पार्थो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः	१० ४३५
राजा राष्ट्रानां पेशो नदीना-मनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु	११
अविष्टो अस्मान् विश्वासु विक्ष्व-द्युं कृणोत शंसं निनित्सोः	१२
व्येतु दिद्युद् द्विषामशैवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम्	१३
अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः प्रेष्ठो अस्मा अधायि स्तोमः	१४
सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु	१५ ४४०
उत न एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः	१८
तपन्ति शत्रुं स्वर्णं भूमा महासेनासो अमोभिरेषाम्	१९
आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान्	२० ४४३

प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्यादुस्मे अरमतिर्वसयुः	२१
ता नो रासन् रातिषाचो वसू—न्या रोदसी वरुणानी शृणोतु ।	
वरुत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः	२२ ४४५
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आप—स्तद् रातिषाच ओषधीरुत द्यौः ।	
वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः	२३
अनु तदुर्वी रोदसी जिहाता—मनु द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा ।	
अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्वै	२४
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।	
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	२५

॥४२॥ (ऋ० ७।३५।१-१५) त्रिष्टुप् ।

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।	
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ	१
शं नो भगः शम् नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शम् सन्तु रायः ।	
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु	२ ४५०
शं नो धाता शम् धर्ता नो अस्तु शं न उरुची भवतु स्वधाभिः ।	
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु	३
शं नो अग्निज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।	
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः	४
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृश्ये नो अस्तु ।	
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजस्रस्पतिरस्तु जिष्णुः	५
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।	
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलापः शं नस्त्वष्टा प्राभिरिह शृणोतु	६
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो प्रावाणः शम् सन्तु यज्ञाः ।	
शं नः स्वरुणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्बस्तु वेदिः	७ ४५५
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदैतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।	
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शम् सन्त्वापः	८
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।	
शं नो विष्णुः शम् पूषा नो अस्तु शं नो भवित्त्रं शम्बस्तु वायुः	९ ४५७



शं नो देवः संविता त्रायमाणः	शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।	
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः	शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः	१० ४५८
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु	शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।	
शमभिषाचः शमु रातिषाचः	शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः	११
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु	शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।	
शं न क्रभवः सुकृतः सुहस्ताः	शं नो भवन्तु पितरो हवेषु	१२ ४६०
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु	शं नोऽर्हिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।	
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु	शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा	१३
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्ते	दं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।	
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो	गोजाता उत ये यज्ञियासः	१४
ये देवानां यज्ञियां यज्ञियानां	मनोर्यजत्रा अमृता क्रतज्ञाः ।	
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य	यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	*१५

॥४३॥ (ऋ० ७।३६।१-९)

प्र ब्रह्मैतु सदानादृतस्य	वि राशिभिः ससृजे सूर्यो गाः ।	
वि सानुना पृथिवी संस्र उर्वी	पृथु प्रतीकमध्यधे अग्निः	१
इमां वा मित्रावरुणा सुवृक्ति	मिषं न कृण्वे असुरा नवीयः ।	
इनो वामन्यः पदवीरदब्धो	जनं च मित्रो यतति बुवाणः	२ ४६५
आ वातस्य भ्रजतो रन्त इत्या	अपीपयन्त धेनवो न सदाः ।	
महो दिवः सदाने जायमानो	ऽचिक्रदद् वृषभः सस्मिन्नूधन्	३
गिरा य एता युनजद्धरीं त	इन्द्रं प्रिया सुरथा शूर धायू ।	
प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिना	त्या सुकृतमर्यमणं ववृत्याम्	४
यजन्ते अस्य सरुयं वयश्च	नमस्विनः स्व क्रतस्य धामन् ।	
वि पृक्षो वात्रधे नृभिः स्तवान	इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम्	५
आ यत् साकं यशसो वावशानाः	सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता ।	
याः सुष्वयन्त सुदुघाः सुधारा	अभि स्वेन पर्यसा पीप्यानाः	६
उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना	धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु ।	
मा नः परिं ख्यदक्षरा चर	न्त्यवीवृधन् युज्यं ते रयिं नः	७ ४७०

प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पूषणं विदुधयं न वीरम् ।  
 भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिषाचं पुरंधिम ८  
 अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः ।  
 उत प्रजायै गृणते वयो धुर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९

॥४४॥ (ऋ० ७।३७।१-८)

आ वो बार्हिष्ठो बहतु स्तवध्वै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृक्तः ।  
 अभि त्रिपृष्ठैः सर्वनेषु सोमैर्मदे सुशिप्रा महर्भिः पृणध्वम् १  
 यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ स्वर्दशं ऋभुक्षणो अमृक्तम् ।  
 सं यज्ञेषु स्वधावन्तः पिवध्वं वि नो राधांसि मतिभिर्दयध्वम् २  
 उवोचिथ हि मघवन् दुष्णं महो अर्भस्म वसुनो विभागे ।  
 उभा ते पूर्णा वसुना गभस्ती न सूनृता नि यमते वसुव्यां ३ ४७५  
 त्वमिन्द्र स्वयंशा ऋभुक्षा वाजो न साधुरस्तमेष्युक्ता ।  
 वयं नु ते दाश्वासः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तो हरियो वसिष्ठाः ४  
 सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद् याभिर्विवेषो हर्यश्च धीभिः ।  
 ववन्मा नु ते युज्याभिरूती कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ५  
 वासयंसीव वेधसस्त्रं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः ।  
 अस्तं तात्या धिया रयिं सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी ६  
 अभि यं देवी निर्रतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः ।  
 उप त्रिवन्धुर्जरदाष्टिमेत्यस्ववेशं यं कृण्वन्त मतीः ७  
 आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ ।  
 सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ८ ४८०

॥४५॥ (ऋ० ७।३९।१-७)

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वसवो अश्रेत् प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति ।  
 भेजाते अर्त्री रथ्यैव पन्थां मृतं होता न इषितो यजाति १  
 प्र वावृजे सुप्रथा बर्हिरेषां मा विश्पतीव वीरिंट इयाते ।  
 विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् २  
 जमया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः ।  
 अर्वाक् पथ उरुजयः कृणुध्वं श्रोतां दूतस्यं जग्मुषो नो अस्य ३ ४८३

ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः ।

ताँ अध्वर उंशतो यक्ष्यन्ने श्रुष्टी भगं नासत्या पुरंधिम्	४	४८४
आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्या मित्रं बह वरुणमिन्द्रमग्निम् ।		
आर्यमणमदिति विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम्	५	
रे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां नक्षत् कामं मर्त्यानामसिन्वन् ।		
धाता रयिमविदुस्यं सदासां संक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः	६	
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।		
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	७	

॥४६॥ (ऋ० ७।४०।१-६)+

ओ श्रुष्टिर्विदुध्याङ्गु समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम् ।		
यद्य देवः सविता सुवाति स्यामास्य रत्तिनो विभागे	१	
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु ।		
दिदैष्टु देव्यदिति रेकणो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च	२	
सेदुगो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्चा अवाथ ।		
उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति	३	४९०
अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः ।		
सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्वन्नरिष्ठान्	४	
अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरिषस्य प्रभुथे हविभिः		
विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वतिरश्विनाविरावत्	५	
मात्रं पूषन्नाघृण इरस्यो वरुत्री यद् रातिषाचश्च रासन् ।		
मयोभ्रुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिजमा वातो ददातु	६	

॥४७॥ (ऋ० ७।४१।१) जगती । ×

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।		
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम	१	

॥४८॥ (ऋ० ७।४२।१-६) त्रिष्टुप् ।

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु ।		
प्र धेनव उदप्रुतो नवन्त युज्यातामद्रीं अध्वरस्य पेशः	१	४९५

सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च ।	
ये वा सन्नरुषा वीरवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः	२
सष्टु वो यज्ञं महयन् नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके ।	
यजस्व सु पूर्वणीक देवा—ना यज्ञियांमरमति ववृत्याः	३
यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत् ।	
सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमियत्यै	४
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रै यशसं कृधी नः ।	
आ नक्ता बर्हिः संदतामुषासो—शन्ता मित्रावरुणा यजेह	५
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वस्न्यस्य स्तौत् ।	
इषं रयिं पप्रथद् वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	६ ५००

॥४९॥ (ऋ० ७।४३।१-५)

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्वै ।	
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वाग्नियन्ति वनिनो न शाखाः	१
प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सग्नि—रुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः ।	
स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधू—ध्वा शोचीषि देवयून्यस्थुः	२
आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानो देवासो बर्हिषः सदन्तु ।	
आ विश्वाचीं विदुध्यामनक्त्व—ग्ने मा नो देवताता मृधस्कः	३
ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः ।	
ज्येष्ठो वो अद्य मह आ वसूना—मा गन्तन समनसो यति छ	४
एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः ।	
राया युजा सधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५ ५०५

॥५०॥ (ऋ० ७।४४।१) जगती ।

दाधिक्रां वः प्रथममश्विनोषस—मग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे ।	
इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं—मादित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः	१

॥५१॥ (ऋ० ७।४८।४) त्रिष्टुप् ।

नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः ।	
समस्ते इषं वसवो ददीरन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	४ ५०७

॥५२॥ (ऋ० ७।५०।३) जगती ।

यच्छल्लमलौ भवन्ति यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परि जायते विषम् ।

विश्वे देवा निरितस्तत् सुवन्तु मा मां पद्येन रपसा विदुत् त्सरुः

३ ५०८

॥५३॥ (ऋ० ८।२५।१०-११)

(५०९-५११) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

उत नो देव्यदिति—रुष्यतां नासत्या । उरुष्यन्तु मरुतो वृद्धशंसः १०

ते नो नावमुरुष्यत दिवा नक्तं सुदानवः । अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ११ ५१०

अघ्नते विष्णवे वय—मरिष्यन्तः सुदानवे । श्रुधि स्वयावन्तिसन्धो पूर्वचित्तये १२

॥५४॥ (ऋ० ८।२७।१-२२)

(५१२-५२) मनुर्वेवस्वतः । प्रगाथः=(विषमा बृहती+समा सतोबृहती) ।

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिर्ध्वरे ।

ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पतिं देवाँ अत्रो वरेण्यम् १

आ पशुं गांसि पृथिवीं वनस्पतीं—नुषासा नक्तमोषधीः ।

विश्वे च नो वसवो विश्ववेदसो धीनां भूत प्रावितारः २

प्र सू न एत्वध्वरोऽत्रे ऽग्ना देवेषु पूर्यः ।

आदित्येषु प्र वरुणे धृतव्रते मरुत्सु विश्वभानुषु ३

विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो भुवन् वृधे रिशादंसः ।

अरिष्टेभिः पायुभिर्विश्ववेदसो यन्तां नोऽवृकं छर्दिः ४ ५१५

आ नो अद्य समनसो गन्ता विश्वे सजोषसः ।

ऋचा गिरा मरुतो देव्यदिते सदाने पस्त्ये महि ५

अभि प्रिया मरुतो या वो अश्या हव्या मित्र प्रयाथनं ।

आ बर्हिर्न्द्रो वरुणस्तुरा नरं आदित्यासः सदन्तु नः ६

वयं वो वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आनुषक् ।

सुतसोमासो वरुण हवामहे मनुष्वदिद्वाग्रयः ७

आ प्र यात मरुतो विष्णो अश्विना पूषन् माकीनया धिया ।

इन्द्र आ यातु प्रथमः सनिष्युभि—वृषा यो वृत्रहा गृणे ८

वि नो देवासो अद्रुहो ऽच्छिद्रं शर्म यच्छत ।

उ नर उग्र उग्र नो उ नितानिनो वरुणमादधर्षति ९ ५२०

अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवासो अस्त्याप्यम् ।	
प्र णः पूर्वस्मै सुविताय वोचत मक्षू सुम्राय नव्यसे	१०
इदा हि व उपस्तुति—मिदा वामस्य भक्तये ।	
उप वो विश्ववेदसो नमस्यु—राँ असृक्ष्यन्यामिव	११
उद्गु प्य वः सविता सुप्रणीतयो ऽस्थादूर्ध्वो वरैण्यः ।	
नि द्विपादश्चतुष्पादो अर्थिनो ऽविश्रन् पतयिष्णवः	१२
देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवमभिष्टये ।	
देवंदेवं हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया	१३
देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः ।	
ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः	१४ ५२५
प्र वः शंसाम्यद्रुहः संस्थ उपस्तुतीनाम् ।	
न तं धूर्तिर्वरुण मित्र मर्त्यं यो वो धामभ्योऽविधत्	१५
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ।	
प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्पर्य—रिष्टः सर्व एधते	१६
ऋते स विन्दते युधः सुगोभिर्यात्यध्वनः ।	
अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं त्रायन्ते सजोषसः	१७
अज्रं चिदस्मै कृणुथा न्यञ्चनं दुर्गे चिदा सुसरणम् ।	
एषा चिदस्मादुशनिः परो नु सास्त्रेधन्ती वि नश्यतु	१८
यद्य सूर्य उद्यति प्रियक्षत्रा ऋतं दुध ।	
यन्निम्नुचिं प्रबुधिं विश्ववेदसो यद् वा मध्यंदिने दिवः	१९ ५३०
यद् वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते छर्दियेम वि दाशुषे ।	
वयं तद् वो वसवो विश्ववेदस उप स्थेयाम मध्य आ	२०
यद्य सूर उदिते यन्मध्यंदिन आतुचि ।	
वामं धत्थ मनवे विश्ववेदसो जुह्वानाय प्रचेतसे	२१
वयं तद् वः सम्राज आ वृणीमहे पुत्रो न बहुपाय्यम् ।	
अश्याम तदादित्या जुह्वतो हवि—र्येन वस्योऽनशामहे	२२

॥५५॥ (ऋ० ८।२८।१-५) गायत्री, ४ पुरउष्णिक् ।

ये त्रिंशति त्रयस्पुरो देवासो बर्हिंसासदन् । विदन्नहं द्वितासनन् १ ५३४

वरुणो मित्रो अर्यमा	स्मद्रातिषाचो अग्रयः । पत्नीवन्तो वर्षट्कृताः	२	५३५
ते नो गोपा अपाच्या	स्त उदुक्त इत्था न्यक् । पुरस्तात् सर्वया विशा	३	
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्	तदेषां नकिरा मिन्त् । अरावा चन मर्त्यः	४	
सप्तानां सप्त ऋष्टयः	सप्त द्युम्नान्येषाम् । सप्तो अधि श्रियो धिरे	५	

॥५६॥ (ऋ० ८।२९।१-१०)

( कश्यपो वा मारीचः ) । द्विपदा विराद् ।

बभ्रुरेको विषुणः सुनरो	युवाङ्ग्यङ्क्ते हिरण्ययम् ।	१	
योनिमेक आ संसाद् द्योतनो	ऽन्तर्देवेषु मेधिरः	२	५४०
वाशीमेको विभर्ति हस्त	आयसीमन्तर्देवेषु निधुविः ।	३	
वज्रमेको विभर्ति हस्त	आहितं तेन वृत्राणि जिघ्रते	४	
तिग्ममेको विभर्ति हस्त	आयुधं शुचिरुग्रो जलाषभेषजः ।	५	
पथ एकः पीपाय तस्करो यथा	एष वेद निर्धीनाम्	३।	६
त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे	यत्र देवासो मदन्ति ।	७	५४५
विभिर्द्वा चरत एकया सह	प्र प्रवासेव वसतः	४।	८
सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि	सम्राजा सर्पिरासुती ।	९	
अर्चन्त एके महि सामं मन्वत	तेन सूर्यमरोचयन्	५।	१०

॥५७॥ (ऋ० ८।३०।१-४)

१ गायत्री, २ पुरउष्णिक्, ३ बृहती, ४ अनुष्टुप् ।

नहि वो अस्तर्यर्भको	देवासो न कुमारकः । विश्वे सतोर्महान्त इत्	१	
इति स्तुतासो असथा रिशादसो	ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च । मनोर्देवा यज्ञियासः	२	५५०
ते नस्त्राध्वं तेऽवत	त उं नो अधि वोचत ।		
मा नः पथः पित्र्यान्मानवादिधि	दूरं नैष्ट परावतः	३	
ये देवास इह स्थन् विश्वे वैश्वानरा उत ।			
असभ्यं शर्म सप्रथो	गवेऽश्वाय यच्छत	४	

॥५८॥ (ऋ० ८।५४ [बाल० ६] ३-४)

(५५३-५४) मातरिश्वा काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती+समा सतोबृहती)

आ नो विश्वे सजोषंसो	देवासो गन्तनोर्ष नः ।		
वसवो रुद्रा अर्वसे न आ गम	च्छृण्वन्तु मरुतो हवम्	३	५५३

पूषा विष्णुर्हवन् मे सरस्वत्यर्वन्तु सप्त सिन्धवः ।

आपो वातः पर्वतासो वनस्पतिः शृणोतु पृथिवी हवम्

४

॥५९॥ (ऋ० ८।५८ [वाल्ग० १०] । १-३)

(५५५-५७) मेध्यः काण्वः । (१ ऋत्विजो वा) । त्रिष्टुप् ।

यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञमिमं वहन्ति ।

यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत् का स्वित् तत्र यजमानस्य संवित्

१

५५५

एकं एवाग्निर्वहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः ।

एकैवोषाः सर्वमिदं वि भात्येकं वा इदं वि बभूवु सर्वम्

२

ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं सुखं रथं सुषदं भूरिवारम् ।

चित्रामर्घ्या यस्य योगेऽधिजज्ञे तं वां हुवे अतिं रिक्तं पिबध्वै

३

॥६०॥ (ऋ० ८।६९।११[पूर्वार्धः] )

(५५८) प्रियमेध आङ्गिरसः । पांक्तिः ।

अपादिन्द्रो अपाद्गिर्विश्वे देवा अमत्सत ।

११

॥६१॥ (ऋ० ८।८३।१-२)

(५५९-६७) कुसीदी काण्वः । गायत्री ।

देवानामिदवो महत् तदा वृणीमहे वयम् । वृष्णामस्मभ्यंमृतये

१

ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्युमा । वृधासंश्च प्रचेतसः

२

५६०

अतिं नो विष्पिता पुरु नौभिरपो न पर्वथ । यूयमृतस्य रथ्यः

३

वामं नो अस्त्वर्थमन् वामं वरुण शंस्यम् । वामं ह्यावृणीमहे

४

वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः । नेमादित्या अघस्य यत्

५

वयमिद् वः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना । देवा वृधाय हूमहे

६

अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम् । इता मरुतो अश्विना

७

५६५

प्र भ्रातृत्वं सुदानवो ऽधं द्विता समान्या । मातुर्गर्भे भरामहे

८

युयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः । अधा चिद् व उत ब्रुवे

९

॥६२॥ (ऋ० १०।३१।१-११)

(५६८-७९) कवष पेल्लषः । त्रिष्टुप् ।

आ नो देवानामुष वेतु शंसो विश्वेभिस्तुरैरवंसे यजत्रः ।

तेभिर्वयं सुषलायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम

१

५६८

६० [विश्वे देवाः] ६



परिं चिन्मर्तो द्राविणं ममन्या—हतस्य पथा नमसा विवासेत् ।	
उत स्वेन कर्तुना सं वदेत् श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात्	२ ५६९
अधायि धीतिरससृग्रमंशा—स्तीर्थे न दस्समुप यन्त्यूमाः ।	
अभ्यानश्म सुवितस्य शूपं नवेदसो अमृतानामभूम	३
नित्यश्चाकन्यात् स्वपतिर्दमूना यस्मा उ देवः संविता जजान ।	
भगो वा गोभिर्यमेमनज्यात् सो अस्मै चारुश्छदयदुत स्यात्	४
इयं सा भूया उपसामिव क्षा यद्द क्षुमन्तः शवसा समार्यन् ।	
अस्य स्तुतिं जरितुर्भिक्षमाणा आ नः शग्मास उप यन्तु वाजाः	५
अस्येदेपा सुमतिः पप्रथाना ऽभवत् पूर्व्या भूमना गौः ।	
अस्य सनीळा असुरस्य योनौ समान आ भरणे विभ्रमाणाः	६
किं स्विद्रनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।	
संतस्थाने अजरं इतर्जती अहानि पूर्वीरुपसो जरन्त	७
नैतावदेना परो अन्यदे—स्त्युक्षा स द्यावापृथिवी विभर्ति ।	
त्वचं पवित्रं कृणुत स्वधावान् यदीं सूर्यं न हरितो वहन्ति	८ ५७५
स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं मिहं न वातो वि ह वाति भूम ।	
मित्रो यत्र वरुणो अज्यमानो ऽग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम्	९
स्तरिर्यत् सूतं सद्यो अज्यमाना व्यथिरव्यथीः कृणुत स्वगोपा ।	
पुत्रो यत् पूर्वः पित्रोर्जनिष्ट शम्यं गौर्जगार यद्द पृच्छान्	१०
उत कण्वं नृपदः पुत्रमाहु—रुत इयावो धनमादत्त वाजी ।	
प्र कृष्णाय रुशदपिन्वतोर्ध—कृतमत्र नकिरस्मा अपीपेत्	११

॥६३॥ (ऋ० १०।३३।१)

प्र मां युयुजे प्रयुजो जनानां वहामि स्म पूषणमन्तरेण ।	
विश्वे देवासो अध मारमरक्षन् दुःशासृगगादिति घोषं आसीत्	१

॥६४॥ (ऋ० १०।३५।१-१४)

(५८०-६०७) लुशो धानाकः । जगती, १३-१४ त्रिष्टुप् ।

अवुंभ्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्रयो ज्योतिर्भरन्त उषसो व्युष्टिषु ।	
मही द्यावापृथिवी चैततामपो ऽद्या देवानामव आ वृणीमहे	१ ५८०

दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे	मातृन्त्सिन्धून् पर्वताञ्छर्यणावतः ।	
अनागास्त्वं सूर्यमुषासमीमहे	भद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः	२
द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो	मही त्रायेतां सुवितार्य मातरां ।	
उषा उच्छन्त्यप वाधतामघं	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	३
इयं न उस्ना प्रथमा सुदेव्यं	रेवत् सानिभ्यो रेवती व्युच्छतु ।	
आरे मन्थुं दुर्विदत्रस्य धीमहि	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	४
प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभि	ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।	
भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	५
अनमीवा उषस आ चरन्तु न	उद्गयो जिहतां ज्योतिषा बृहत् ।	
आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथं	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	६ ५८५
श्रेष्ठं नो अद्य संवितर्वरेण्यं	भागमा सुव स हि रत्नधा असिं ।	
रायो जनित्रीं धिषणामुप ब्रुवे	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	७
पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं	देवानां यन्मनुष्याश्च अमन्महि ।	
विश्वा हदुस्नाः स्पळदेति सूर्यः	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	८
अद्वेषो अद्य बर्हिपः स्तरीमणि	ग्राव्णां योगे मन्मनः साध ईमहे ।	
आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	९
आ नो बर्हिः संधमादे बृहद्विवि	देवा ईके मादयां सप्त होतृन् ।	
इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	१०
त आदित्या आ गता सर्वतातये	बृधे नो यज्ञमवता सजोपसः ।	
बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	११ ५९०
तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं	छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् ।	
पश्चं तोकाय तनयाय जीवसे	स्वस्त्यशुभ्रिं समिधानमीमहे	१२
विश्वे अद्य मरुतो विश्वं ऊती	विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः ।	
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु	विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे	१३
यं देवासोऽवथ वाजसातौ	यं त्रायध्वे यं पिपृथात्थंहः ।	
यो वो गोपथे न भयस्य वेदु	ते स्याम देववीतये तुरासः	१४ ५९३

॥६५॥ (ऋ० १०।३६।१-१४)

उषासानक्ता बृहती सुपेशसा	द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।		
इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वता अप	आदित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः	१	५९४
द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतस	ऋतावरी रक्षतामंहसो रिषः ।		
मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	२	
विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो	माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः ।		
स्वर्वज्ज्योतिरवृकं नशीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	३	
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु	दुष्वभ्यं निर्ऋतिं विश्वमत्रिणम् ।		
आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	४	
एन्द्रो बर्हिः सीदतु पित्रतामिळा	बृहस्पतिः सामभिर्ऋको अर्चतु ।		
सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	५	
द्विविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना	जीराध्वरं कृणुतं सुम्नामिष्टये ।		
प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	६	
उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं	पावकमृष्वं सख्यायं शंभुवम् ।		
रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	७	६००
अपां पेहं जीवधन्यं भरामहे	देवाव्यं सुहवमध्वरश्रियम् ।		
सुरश्मि सोममिन्द्रियं यमीमहि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	८	
सनेम तत् सुसनिता सनित्वभि	र्वयं जीवा जीवपुत्रा अनागसः ।		
ब्रह्मद्विषो विश्वगेनो भरेरत	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	९	
ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन	यद् वो देवा ईमहे तद् ददातन ।		
जैत्रं क्रतुं रयिमद् वीरवद्यश	स्तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	१०	
महदुद्य महतामा वृणीमहे	ऽवो देवानां बृहतामनर्वणाम् ।		
यथा वसु वीरजातं नशामहे	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	११	
महो अग्नेः समिधानस्य शर्म	ण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।		
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सर्वामनि	तद् देवानामवो अद्या वृणीमहे	१२	
ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे	मित्रस्य त्रते वरुणस्य देवाः ।		
ते सौभगं वीरवद गोमदमो	दधातन द्रविणं चित्रमस्मे	१३	६०६

सुविता पश्चात्तात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताधरात्तात् ।  
सविता नः सुवतु सर्वताति सविता नो रासता दीर्घमायुः

१४

॥६६॥ ( ऋ० १०।५२।१-६ )

(६०८-१३) सौचीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह होता वृतो मनवै यन्निषद्य ।

प्र मे ब्रूत भागधेयं यथा वो येन पथा हव्यमा वो वहानि

१

अहं होता न्यसीदुं यजीयान् विश्वे देवा मरुतो मा जुनन्ति ।

अहरहरश्चिनाध्वर्यवं वां ब्रह्मा समिद् भवति साहुतिर्वाम्

२

अयं यो होता किरु स यमस्य कमप्यूहे यत् समञ्जन्ति देवाः ।

अहरहर्जायते मासिमास्यथा देवा दधिरे हव्यवाहम्

३

६१०

मां देवा दधिरे हव्यवाहमपम्लुक्तं बहु कृच्छ्रा चरन्तम् ।

अग्निर्विद्वान् यज्ञं नः कल्पयाति पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम्

४

आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुधीरं यथा वो देवा वरिवः कराणि ।

आ बाह्वोर्वज्रमिन्द्रस्य धेयामथेमा विश्वाः पृतेना जयाति

५

श्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।

औक्षन् घृतैरस्त्वणन् बर्हिर्रस्मा आदिद्वोत्तरं न्यसादयन्त

६

॥६७॥ ( ऋ० १०।५६।१-७ )

(६१४-२०) बृहदुक्थो वामदेव्यः । त्रिष्टुप्, ४-६ जगती ।

इदं त एकं पर ऊं त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।

संवेशने तन्वष्टश्चारुरोधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे

१

तनूष्टे वाजिन् तन्वंष्टु नयन्ती वाममस्मभ्यं धातु शर्म तुभ्यम् ।

अहुतो महो धरुणाय देवान् दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयाः

२

६१५

वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः सुवितः स्तोमं सुवितो दिवै गाः ।

सुवितो धर्मं प्रथमानुं सत्या सुवितो देवान्तसुवितोऽनु पत्म

३

महिम्न एषां पितरश्चनेशिरे देवा देवेष्वदधुरपि क्रतुम् ।

समविष्यचुरुत यान्यत्विषु रैषां तनूषु नि विविशुः पुनः

४

सहोभिर्विश्वं परिं चक्रमू रजः पूर्वा धामान्यमिता मिमानाः ।

तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे प्रासारयन्त पुरुध प्रजा अनुं

५

६१८

द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदु—मास्थापयन्त तृतीयेन कर्मणा ।  
 स्वां प्रजां पितरः पित्र्यं सह आवरेष्वदधुस्तन्तुभाततम्  
 नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।  
 स्वां प्रजां बृहदुक्थो महित्वा ऽऽ वरेष्वदधादा परेषु

॥६८॥ (ऋ० १०।५।१-६)

(६११-२६) वन्धुः श्रुतवन्धुर्गोपायनाः । गायत्री ।

मा प्र गाम पथो वयं	मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः	। मान्तः स्थुर्नो अरातयः	१
यो यज्ञस्य प्रसाधन	स्तन्तुर्देवेष्वारतः	। तमाहुतं नशीमहि	२
मनो न्वा हुवामहे	नाराशंसेन सोमैन	। पितृणां च मन्मभिः	३
आ त एतु मनः पुनः	ऋत्वे दक्षाय जीवसे	। ज्याक् च सूर्यं दृशे	४
पुनर्नः पितरो मनो	ददातु दैव्यो जनः	। जीवं व्रातं सचेमहि	५ ६२५
वयं सोम व्रते तव	मनस्तनूषु विभ्रतः	। प्रजावन्तः सचेमहि	६

॥६९॥ (ऋ० १०।६।१-२७)

(६२७-६०) नाभानेदिष्टो मानवः । त्रिष्टुप् ।

इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा	ब्रह्म ऋत्वा शच्यामन्तराजौ ।	
ऋणा यदस्य पितरां मंहनेष्टाः	पर्षत् पक्थे अहन्ना सप्त होतृन्	१
स इद् दानाय दभ्याय वन्व	ञ्जयवानः सदैरमिमीत वेदिम् ।	
तूर्वायाणो गूर्तवचस्तमः	क्षोदो न रेत इतऊति सिञ्चत्	२
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं	विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।	
आ यः शर्याभिस्तुविनुम्णो	अस्या—ऽश्रीणीतादिशं गभस्तौ	३
कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद्	दिवो नपाताश्विना हुवे वाम् ।	
वीतं मे यज्ञमा गतं मे अभं	ववन्वांसा नेषमस्मृतध्रू	४ ६३०
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्मिष्ण	दनुष्ठितं नु नयो अपौहत् ।	
पुनस्तदा बृहति यत् कनाया	दुहितुरा अनुभृतमनुर्वा	५
मध्या यत् कर्त्वमभवद्भीके	कामं कृष्वाने पितरि युवत्याम् ।	
मनानग्रेतो जहतुर्वियन्ता	सानौ निषिक्तं सुकृतस्य योनौ	६
पिता यत् स्वां दहितरमधिष्कन्	क्षमया रेतः संजग्मानो नि षिञ्चत् ।	
स्वाध्योऽजनयन् ब्रह्म देवा	वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन्	७ ६३३

स ई वृषा न फेनभस्यद्राजौ स्मदा परैदप दुभ्रचैताः ।	
सरत् पदा न दक्षिणा परावृड् न ता नु मे पृशन्व्यो जगृभ्रे	८
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्दि—रग्निं न नग्र उप सीदुर्धः ।	
सनितेध्मं सनितोत वाजं स धर्ता जज्ञे सहसा यवीयुत्	९ ६३५
मक्षू कनायाः सख्यं नवगवा ऋतं वदन्त ऋतयुक्तिमग्मन् ।	
द्विबर्हसो य उप गोपमागु—रदक्षिणासो अच्युता दुदुक्षन्	१०
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो राधो न रेतं ऋतमित् तुरण्यन् ।	
शुचि यत् ते रेक्ण आर्यजन्त सबर्दुघायाः पर्य उस्त्रियायाः	११
पश्वा यत् पश्वा वियुता बुधन्ते—ति ब्रवीति वक्तरी रराणः ।	
वसोर्वसुत्वा कारवोऽनेहा विश्वं विवेष्टि द्रविणमुप क्षु	१२
तदिन्वस्य परिषद्धानो अग्मन् पुरू सदेन्तो नार्षदं विभित्सन् ।	
वि शुष्णस्य संग्रथितमनर्वा विदत् पुरुप्रजातस्य गुहा यत्	१३
भर्गो ह नामोत यस्य देवाः स्वर्णं ये त्रिषधस्थे निषेदुः ।	
अग्निर्ह नामोत जातवेदाः श्रुधी नो होतर्ऋतस्य होताभ्रुकू	१४ ६४०
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता नासत्याविन्द्र गूर्तयं यजध्वै ।	
मनुष्वद् वृक्तवर्हिषे रराणा मन्दू हितपर्यसा विक्षु यज्यू	१५
अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः ।	
स कक्षीर्वन्तं रेजयत् सो अग्निं नेमिं न चक्रमर्वतो रघुद्रु	१६
स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा सवर्धु धेनुमस्वं दुहध्वै ।	
सं यन्मित्रावरुणा वृञ्ज उक्थै—ज्येष्ठैभिर्यमणं वरुथैः	१७
तद्वन्धुः सूरिदिवि ते धियंधा नाभान्नेदिष्टो रपति प्र वेनन् ।	
सा नो नाभिः परमास्य वा घ्रा—ऽहं तत् पश्चा कतिथश्चिदास	१८
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थ—मिमे मे देवा अयमस्मि सर्वैः ।	
द्विजा अहं प्रथमजा ऋतस्ये—दं धेनुरदुहजायमाना	१९ ६४५
अघासु मन्द्रो अरतिर्विभावा ऽव स्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट् ।	
ऊर्ध्वा यच्छ्रेणिर्न शिशुर्दन् मक्षू स्थिरं शेवृधं स्रत माता	२०
अघा गाव उपमार्ति कनाया अनुं श्रान्तस्य कस्य चित् परेयुः ।	
श्रुधि त्वं सुद्रविणो नस्त्वं या—ळाश्चन्नस्य वावृधे सूनृताभिः	२१ ६४७

अध त्वभिन्द्र विद्धयस्मान् महो राये नृपते वज्रबाहुः ।	
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरि ननेहसस्ते हरिवो अभिष्टौ	२२ ६४८
अध यद् राजाना गर्विष्टौ सरत् सरण्युः कारवे जरण्युः ।	
विप्रः प्रेष्ठः स ह्येषां बभूव परा च वक्षदुत पर्षदेनान्	२३
अधा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ वृथा रेभन्त ईमहे तद् नु ।	
सरण्युरस्य सूनुरश्चो विप्रश्चासि श्रवसश्च सातौ	२४ ६५०
युवोर्यदि सख्यायास्मे शर्षीय स्तोमं जुजुषे नमस्वान् ।	
विश्वत्र यस्मिन्ना गिरः समीचीः पूर्वीव गातुर्दाशत् सूनृतायै	२५
स गृणानो अद्भिर्देवानिति सुबन्धुर्ममसा सुकतैः ।	
वर्धेदुक्थैर्वचोभिरा हि नूनं व्यध्वैति पर्यस उस्त्रियायाः	२६
त ऊ षु णो महो यजत्रा भूत देवास ऊतये सजोषाः ।	
ये वाजाँ अनयता वियन्तो ये स्था निचेतारो अमूराः	२७

॥७०॥ (ऋ० १०।६२।१-७)

(१-६ अङ्गिरसो वा) । ५ अनुष्टुप्; प्रगाथः = ( ६ बृहती, ७ सतोबृहती) ।

ये यज्ञेन दक्षिण्या समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमानुश ।	
तेभ्यो भद्रमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	१
य उदाजन् पितरो गोमयं वस्वृतेनाभिन्दन् परिवत्सरे वलम् ।	
दीर्घायुत्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	२ ६५५
य ऋतेन सूर्यमारोहयन् दिव्यप्रथयन् पृथिवी मातरं वि ।	
सुप्रजास्त्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	३
अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन ।	
सुब्रह्मण्यमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः	४
विरूपास इदृषयस्त इद् गम्भीरवैपसः ।	
ते अङ्गिरसः सुनवस्ते अग्नेः परि जज्ञिरे	५
ये अग्नेः परि जज्ञिरे विरूपासो दिवस्परि ।	
नवग्वो नु दशग्वो अङ्गिरस्तमः सचा देवेषु मंहते	६
इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो ब्रजं गोमन्तमश्विनम् ।	
सहस्रं मे ददतो अष्टकूप्यैः श्रवो देवेष्वक्रत	७ ६६०

॥७१॥ (ऋ० १०।६३।१-१४, १७)

(६६१-९१) गयः प्लातः । जगती, १७ त्रिष्टुप् ।

परावतो ये दिधिषन्त आप्यं मनुप्रीतासो जनिमा विवस्वतः ।	
ययातेर्ये नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसते ते अधि ब्रुवन्तु नः	१
विश्वा हि वो नमस्यानि वन्द्या नामानि देवा उत यज्ञियानि वः ।	
ये स्थ जाता अदितेरञ्चस्परि ये पृथिव्यास्ते म इह श्रुता हवम्	२
येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पर्यः पीयूषं द्यौरदितिरद्विर्वाहाः ।	
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्सस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये	३
नुचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः ।	
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये	४
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययु रपरिहृता दधिरे दिवि क्षयम् ।	
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदिति स्वस्तये	५ ६६१
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति घ्नं ।	
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद् यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये	६
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।	
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये	७
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।	
ते नः कुतादकुतादेनसस्पर्षद्या देवासः पिपृता स्वस्तये	८
भरोष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जर्नम् ।	
अग्नि मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये	९
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदिति सुप्रणीतिम् ।	
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये	१० ६७०
विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहृतः ।	
सत्यया वो देवहृत्या हुवेम शृण्वतो देवा अर्वसे स्वस्तये	११
अपामीधामप विश्वामनाहुतिमपाराति दुर्विदत्रामघायतः ।	
आरे देवा द्वेषो अस्मद् युयोतनो रुणः शर्म यच्छता स्वस्तये	१२
अरिष्टः स मतो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।	
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये	१३ ६७३



यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।

प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसि मरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये

१४ ६७४

एवा प्लतेः सुनुरंवीवृधद् वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।

ईशानासो नरो अमर्त्येनाऽस्तावि जनों दिव्यो गर्येन

×१७

॥७२॥ (ऋ० १०।६४।१-१६) जगती; १२, १६ त्रिष्टुप् ।

कथा देवानां कतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनामहे ।

को मृळाति कतमो नो मयस्करत् कतम ऊती अभ्या ववर्तति

१

ऋतूयन्ति ऋतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः ।

न मर्दिता विद्यते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत

२

नरा वा शंसं पूषणमगोह्यमग्निं देवेद्धमभ्यर्चसे गिरा ।

सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वातमुषसमक्तुमश्विनां

३

कथा कविस्तुवीरवान् कया गिरा बृहस्पतिर्वावृधते सुवृक्तिभिः ।

अज एकपात् सुहवेभिर्ऋकभि रहिः शृणोतु बुभ्योऽु हवीमनि

४

दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि ।

अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु

५

६८०

ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः ।

सहस्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धने समिथेषु जग्निरे

६

प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं स्तोमैः कृणुष्वं सख्याय पूषणम् ।

ते हि देवस्य सवितुः सर्वामनि ऋतुं सचन्ते सचितः सचेतसः

७

त्रिः सप्त सस्त्रा नद्यो महीरपो वनस्पतीन् पर्वतां अग्निमतये ।

कृशानुमस्तृन् तिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे

८

सरस्वती सरयुः सिन्धुरूमिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः ।

देवीरापो मातरः सुदायित्न्वो घृतवत् पयो मधुमन्नो अर्चत

९

उत माता बृहद् दिवा शृणोतु नः स्त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।

ऋभुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः

१०

रण्वः संदृष्टौ पितुमां इव क्षयो भद्रा रुद्राणां मरुतामुपस्तुतिः ।

गोभिः प्याम यशमो जनेष्व्रा सदा देवास इळया सचेमहि

११

६८६

यां मे धियं मरुत इन्द्र देवा अददात वरुण मित्र यूयम् ।	
तां पीपयत पर्यसेव धेनुं कुविद् गिरो अधि रथे वहाथ	१२
कुविदुङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः सजान्त्यस्य मरुतो बुबोधथ ।	
नाभा यत्र प्रथमं संनसामहे तत्र जामित्वमदितिर्दधातु नः	१३
ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही देवी देवाञ्जन्मना यज्ञिये इतः ।	
उभे विभृत उभयं भरीमभिः पुरू रेतांसि पितृभिश्च सिञ्चतः	१४
वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं बृहस्पतिररमतिः पनीयसी ।	
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदवीवशन्त मतिभिर्मनीषिणः	१५ ६९०
एवा कविस्तुवीरवा ऋतज्ञा द्रविणस्युर्द्रविणसश्चकानः ।	
उक्थेभिरत्र मतिभिश्च विप्रो ऽपीपयद् गयो दिव्यानि जन्म	१६

॥७३॥ (ऋ० १०।६।१-१५)

(६९२-७२०) वसुकर्णो वासुकः । जगती, १५ त्रिष्टुप ।

अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजोषसः ।	
आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत् सोमो रुद्रो अदितिर्ब्रह्मणस्पतिः	१
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती मिथो हिन्वाना तन्वाइ समोकसा ।	
अन्तरिक्षं मह्या पप्रुरोजसा सोमो घृतश्रीर्महिमानमरियन्	२
तेषां हि मद्वा महतामनर्वणां स्तोमां इयम्यृतज्ञा ऋतावृधाम् ।	
ये अप्सवमर्णवं चित्रराधसस्ते नो रासन्तां महये सुमित्र्याः	३
स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना द्यावाभूमीं पृथिवीं स्कम्भुरोजसा ।	
पृक्षा इव महयन्तः सुरातथो देवाः स्तयन्ते मनुषाय सूरयः	४ ६९५
मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे या सम्राजा मनसा न प्रयुच्छतः ।	
ययोर्धाम धर्मणा रोचते बृहद् ययोरुभे रोदसी नाधसी वृतौ	५
या गौर्धेतिर्नि पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः ।	
सा प्रभुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्विषां विवस्वते	६
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधं ऋतस्य योनिं विमुशन्त आसते ।	
द्यां स्कभित्व्योप आ चक्रुरोजसा यज्ञं जनिन्वी तन्वीइ नि मामृजुः	७
परिक्षितां पितरां पूर्वजावरी ऋतस्य योना क्षयतः समोकसा ।	
द्यावापृथिवी वरुणाय सव्रते घृतवत् पयो महिषाय पिन्वतः	८ ६९९

पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषिणेन्द्रवायु वरुणो मित्रो अर्यमा । देवाँ आदित्याँ अदितिं हवामहे ये पार्थिवासो दिव्यासो अप्सु ये त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते दैव्या होतारा उषसं स्वस्तये ।	९	७००
बृहस्पतिं वृत्रखादं सुमेधसंमिन्द्रियं सोमं धनसा उ ईमहे ब्रह्म गामर्षं जनयन्त ओषधीर्वनस्पतीन् पृथिवीं पर्वताँ अपः ।	१०	
सूर्यं दिवि रोहयन्तः सुदानव आधीं व्रता विसृजन्तो अधि क्षमि भुज्यमंहसः पिपृथो निरंश्विना श्यावं पुत्रं वधिमत्या अजिन्वतम् ।	११	
कमद्युवं विमदायोहथुर्वुवं विष्णाप्वं विश्वकायावं सृजथः पावीरवी तन्यतुरेकपादजो दिवो धर्ता सिन्धुरापः समुद्रियः ।	१२	
विश्वे देवासः शृणवन् वचांसि मे सरस्वती सह धीभिः पुरंध्या विश्वे देवाः सह धीभिः पुरंध्या मनोर्यजत्रा अमृतां ऋतज्ञाः ।	१३	
रातिषाचो अभिषाचः स्वविदुः स्वर्गिरो ब्रह्म सूक्तं जुषेरत देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः ।	१४	७०५
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	*१५	

॥७४॥ (ऋ० १०, ६६, १-१४)

देवान् हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये ज्योतिष्कृतो अध्वरस्य प्रचेतसः । ये वावृधुः प्रतरं विश्ववेदस इन्द्रज्येष्ठासो अमृतां ऋतावृधः इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा ये सूर्यस्य ज्योतिषो भागमानशुः ।	१	
मरुद्रेणे वृजने मन्मं धीमहि माघोने यज्ञं जनयन्त सूरयः इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गयंमादित्यैर्नो अदितिः शर्म यच्छतु ।	२	
रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति न स्त्वष्टा नो गार्भिः सुवितायं जिन्वतु अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं महदिन्द्राविष्णूं मरुतः स्वर्बृहत् ।	३	
देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे वसून् रुद्रान्तसवितारं सुदंससम् सरस्वान् धीभिर्वरुणो धृतव्रतः पूषा विष्णुर्महिमा वायुराश्विना ।	४	७१०
ब्रह्मकृतो अमृता विश्ववेदसः शर्म नो यंसन् त्रिवरूथमंहसः वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञिया वृषणो देवा वृषणो हविष्कृतः ।	५	
वृषणा द्यावापृथिवी ऋतावरी वृषा पर्जन्यो वृषणो वृषस्तुभः	६	७१२

अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये	पुरुप्रशस्ता वृषणा उपं ब्रुवे ।	
यावीजिरे वृषणो देवयज्यया	ता नः शर्म त्रिवरूथं वि यंसतः	७
धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो	बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्चियः ।	
अग्निहोतार ऋतसापो अद्रुहो	ऽपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये	८
द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रता	ऽऽप ओषधीर्विनानि यज्ञिया ।	
अन्तरिक्षं स्वरा पंगुरुतये	वशं देवासस्तन्वीडु नि मामृजुः	९ ७१५
धर्तारो दिव ऋभवः सुहस्ता	वातापर्जन्या महिषस्य तन्यतोः ।	
आप ओषधीः प्र तिरन्तु नो गिरो	भगो रातिर्वाजिनो यन्तु मे हवम्	१०
समुद्रः सिन्धु रजो अन्तरिक्ष	मज एकपात् तनयित्तरणवः ।	
अर्हिर्बुध्न्यः शृणवद् वचांसि मे	विश्वं देवास उत मूरयो मम	११
स्याम वो मनवो देववीतये	प्राश्चं नो यज्ञं प्र णयत साधुया ।	
आदित्या रुद्रा वसवः सुदानव	इमा ब्रह्म शस्यमानानि जिन्वत	१२
दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित	ऋतस्य पन्थामन्वोमि साधुया ।	
क्षेत्रस्य पतिं प्रतिवेशमीमहे	विश्वान् देवाँ अमृताँ अप्रयुच्छतः	१३
वसिष्ठासः पितृवद् वाचमक्रत	देवाँ ईळाना ऋषिवत् स्वस्तये ।	
प्रीता इव ज्ञातयः काममेन्या	ऽस्मे देवासोऽव धूनुता वसु	१४ ७२०

॥७५॥ (ऋ० १०।९२।१-१५)

(७२१-३५) शार्यातो मानवः । जगती ।

यज्ञस्य वो रथ्यं विइपतिं विशां	होतारमक्तोरतिथिं विभावंसुम् ।	
शोचञ्छुष्कांसु हरिणीषु जर्भुरद्	वृषां केतुर्यजतो द्यामशायत	१
इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत	धर्माणमग्निं विदथस्य साधनम् ।	
अक्तुं न यहुमुषसः पुरोहितं	तनूनपातमरुषस्य निसते	२
बळस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे	वया अस्य प्रहुता आसुरत्त्वे ।	
यदा घोरासो अमृतत्वमाशता	दिजनस्य दैव्यस्य चर्किरन्	३
ऋतस्य हि प्रसितिद्यौरुरु व्यचो	नमो मह्यरमतिः पनीयसी ।	
इन्द्रो मित्रो वरुणः सं चिकित्रिरे	ऽथो भगः सविता पूतदक्षसः	४
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धव	स्तिरो महीमरमतिं दधन्विरे ।	
येभिः परिज्मा परियञ्जुरु जयो	वि रोहवज्जठरे विश्वमुक्षते	५ ७२५

क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो दिवः इयेनासो असुरस्य नीळयः । तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमेन्द्रो देवेभिरर्वशेभिरर्वशः	६	७२६
इन्द्रे भुजं शशमानासं आशत सरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये । प्र ये न्वस्यार्हणां ततश्चिरे युजं वज्रं नृपदनेषु कारवः	७	
सूरश्चिदा हरितो अस्य रीरमदिन्द्रादा कश्चिद् भयते तवीयसः । भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्चसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नबाधितः	८	
स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्से क्षयद्वीराय नमसा दिदिष्टन । येभिः शिवः स्ववा एवयावभिर्दिवः सिषक्ति स्वयंशा निकामभिः	९	
ते हि प्रजाया अभरन्त वि श्रवो बृहस्पतिर्वृषभः सोमजामयः । यज्ञैरथर्वा प्रथमो वि धारयद् देवा दक्षैर्मृगवः सं चिकित्रिरे	१०	७३०
ते हि धावापृथिवी भूरिरेतसा नराशंसश्चतुरङ्गो यमोऽदितिः । देवस्त्वष्टा द्रविणोदा ऋभुक्षणः प्र रोदसी मरुतो विष्णुरहिरे	११	
उत स्य न उशिजासुर्विया क्विरहिः शृणोतु बुधयोऽङ्गे हवीमनि । सूर्यामासां विचरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुषी अस्य बोधतम्	१२	
प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्यो ऽपां नपादवत वायुरिष्ट्ये । आत्मानं वस्यो अभि वार्तमर्चत तदश्विना सुहवा यामनि श्रुतम्	१३	
विशामासामभयानामधिक्षितं गीभिरु स्वयंशसं गृणीमसि । ग्नाभिर्विश्वाभिरदितिमनर्वणमक्तोर्युवानं नृमणा अधा पतिम्	१४	
रेभदत्रं जनुषा पूर्वो अङ्गिरा ग्रावाण ऊर्ध्वा अभि चक्षुरध्वरम् । येभिर्विहाया अभवद् विचक्षणः पार्थः सुमेकं स्वधितिर्वनन्वति	१५	७३५

॥७६॥ (ऋ० १०।९३।१-१५)

(७३६-५०) तान्वः पार्थयः । प्रस्तारपङ्क्तिः ; २-३, १३ अनुष्टुप् ; ९ अक्षरैः पङ्क्तिः ;

११ न्यङ्कुसारिणी, १५ पुरस्ताद्बृहती ।

महिं धावापृथिवी भूतमूर्वा नारीं यद्ही न रोदसी सदै नः । तेभिर्नः पातं सद्यस एभिर्नः पातं शूषणि	१	
यज्ञैर्यज्ञे स मर्त्यो देवान्तसंपर्यति । यः सुमैर्दीर्घश्रुत्तम आविवासात्येनान्	२	
विश्वेषामिरज्यवो देवानां वामहः । विश्वे हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः	३	
ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्रा अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा । कद् रुद्रो नृणां स्तुतो मरुतः पूषणो भगः	४	७३९

उत नो नक्तमपां वृषण्वसु सूर्यामासा सदानाय सधन्या ।	
सचा यत् साद्येषा—महिर्बुधेषु बुधयः	५ ७४०
उत नो देवावश्विना शुभस्पती धामभिर्मित्रावरुणा उरुग्यताम् ।	
महः स राय एषते ऽति धन्वेव दुरिता	६
उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः ।	
ऋभुर्वाजं ऋभुक्षणः परिज्मा विश्ववेदसः	७
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मद आ ते हरीं जूजुवानस्यं वाजिना ।	
दुष्टरं यस्य सामं चिद् ऋधग् यज्ञो न मानुषः	८
कृधी नो अहयो देव सवितः स च स्तुषे मघोनाम् ।	
सहो न इन्द्रो वह्निभिर्न्येषां चर्षणीनां चक्रं रश्मिं न योयुवे	९
ऐषु धावापृथिवी धातं मह—दुस्मे वीरेषु विश्वचर्षणि श्रवः ।	
पृक्षं वाजस्य सातये पृक्षं रायोत तुर्वणे	१० ७४५
एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टं कूचित् सन्तं सहसावन्नभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये ।	
मेदतां वेदतां वसो	११
एतं मे स्तोमं तना न स्र्यं द्युतघामानं वावृधन्त नृणाम् ।	
संवनेनं नाशयं तष्टेवानपच्युतम्	१२
वावर्त येषां राया युक्तैषां हिरण्यया ।	
नेमधिता न पौस्या वृथेव विष्टान्ता	१३
प्र तद् दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवन्सु ।	
ये युक्त्वाय पञ्च शता—स्मयु पथा विश्राव्येषाम्	१४
अधीन्वत्रं समतिं च सप्त च । सद्यो दिदिष्ट तान्वः सद्यो दिदिष्ट पार्थ्व्यः	
सद्यो दिदिष्ट मायवः	१५ ७५०

॥७७॥ (ऋ० १०।१००।१-१२)

(७५१-६२) दुवस्युर्वान्दनः । जगती, १२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्र ह्यहं मघवन् त्वावदिद् भुज इह स्तुतः सुतपा बोधि नो वृधे ।	
देवेभिर्नः सविता प्रावतु श्रुत—मा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	१
भराय सु भरत भागमृत्वियं प्र वायवे शुचिपे क्रन्ददिष्टये ।	
गौरस्य यः पर्यसः पीतिमानश आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	२ ७५२

आ नो देवः सविता साविषद् वयं ऋजूयते यजमानाय सुन्वते ।	
यथा देवान् प्रतिभूषेम पाकवदा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	३ ७५३
इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा राजा सोमः सुवितस्याध्वेतु नः ।	
यथायथा मित्रार्धितानि संदधुरा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	४
इन्द्र उक्थेन शर्वसा परुर्दधे बृहस्पते प्रतरीतास्यायुषः ।	
यज्ञो मनुः प्रमतिर्नः पिता हि कृमा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	५ ७५५
इन्द्रस्य तु सुकृतं दैव्यं सहो ऽग्निर्गृहे जरिता मेधिरः कविः ।	
यज्ञश्च भूद् विदथे चारुरन्तम आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	६
न वो गुहा चकम भूरि दुष्कृतं नाविष्यै वसवो देवहेळनम् ।	
माकिर्नो देवा अनृतस्य वर्षस आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	७
अपामीवां सविता साविषक्यग् वरीय इदप सेधन्त्वद्रयः ।	
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	८
ऊर्ध्वो ग्रावा वसवोऽस्तु सोतरि विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।	
स नो देवः सविता पायुरीडथ आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	९
ऊर्जे गात्रो यर्वसे पीवो अत्तन ऋतस्य याः सदर्ने कोशे अङ्घ्वे ।	
तनूरेव तन्वो अस्तु भेषजमा सर्वतातिमदिति वृणीमहे	१० ७६०
ऋतुप्रावा जरिता शर्शतामव इन्द्र इद् भद्रा प्रमतिः सुतावंताम् ।	
पूर्णमूर्धद्विष्यं यस्य सिकतय आ सर्वतातिमदिति वृणीमहे	११
चित्रस्ते भानुः ऋतुप्रा अभिष्टिः सन्ति स्पृधो जरणिप्रा अधृष्टाः ।	
रजिष्ठया रज्या पश्च आ गोस्तूर्पति पर्यग्रं दुवस्युः	१२

॥७८॥ (ऋ० १०।१०।१।१-१२)

(७६३-७४) बुधः सौम्यः । (ऋत्विजो वा) । त्रिष्टुप्; ४,६ गायत्री; ५ बृहती; ९-१२ जगती ।

उङ्कुष्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बृहवः सनीळाः ।

दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽर्वसे नि ह्वये वः १ .

मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम् ।

इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राश्नं यज्ञं प्र णयता सखायः २

युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम् ।

गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नदीय इत् सृण्यः पक्कमेयात् ३ ७६५

सीरा युञ्जन्ति क्वयों युगा वि तन्वते पृथक् । धीरा देवेषु सुम्रया	४
निराहावान् कृणोतन् सं वरत्रा दधातन ।	
सिञ्चामहा अवतमुद्रिणं वयं सुषेकमनुपाक्षितम्	५
इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम् । उद्रिणं सिञ्चे अक्षितम्	६
प्रीणीताश्चान् हितं जयाथ स्वास्तिवाहं रथमित् कृणुध्वम् ।	
द्रोणाहावमवतमश्मचक्र—मंसत्रकोशं सिञ्चता नृपाणम्	७
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मं सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।	
पुरं कृणुध्वमार्यसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दंहता तम्	८ ७७०
आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये देवा देवीं यजतां यज्ञियामिह ।	
सा नो दुहीयद् यवसेव गृत्वी सहस्रधारा पर्यसा मही गौः	९
आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोणस्थे वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः ।	
परि ष्वजध्वं दश कक्ष्याभि—रुभे धुरी प्रति वह्निं युनक्त	१०
उभे धुरी वह्निरापिदमानो ऽन्तर्योनेव चरति द्विजानिः ।	
वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमखनन्त उत्सम्	११
कपृन्नरः कपथमुद् दधातन चोदयत खुदत वार्जसायये ।	
निष्टिग्न्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाधं इह सोमपीतये	१२

॥७९॥ (ऋ० १०।१०९।१-७)

(७७५-८१) जुह्वर्ब्रह्मजाया, ब्राह्मः ऊर्ध्वनाभा वा । त्रिष्टुप्, ६-७ अनुष्टुप् ।

तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषे ऽकूपारः सलिलो मातरिधा ।	
वील्लहारास्तप उग्रो मयोभू—रापो देवीः प्रथमजा ऋतेन	१ ७७५
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्राग्ब्रह्मदहणीयमानः ।	
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आभी—दग्निर्होता हस्तगृह्या निनाय	२
हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ब्रह्मजायेयामिति चेदवोचन् ।	
न दूतार्यं प्रह्ये तस्थ एपा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य	३
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः ।	
भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धा दधाति परमे व्योमन्	४
ब्रह्मचारी चरति वेविषद् विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम् ।	
तेन जायामन्वाविन्दुद् बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वन् न देवाः	५ ७७९

६० [ विश्वे देवाः ] ८



पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या उत । राजानः सत्यं कृण्वाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ६ ७८०  
पुनर्दार्यं ब्रह्मजायां कृत्वी देवैर्निकिल्बिषम् । ऊर्जा पृथिव्या भक्त्वायो—रुगायमुपासते ७

॥८०॥ (ऋ० १०।११४।१-१० )

(७८२-९१) सध्रिवैरूपो, घर्मो वा तापसः । त्रिष्टुप्, ४ जगती ।

घर्मा समन्ता त्रिष्टुतं व्यापतु—स्तयोर्युष्टिं मातरिश्वा जगाम ।  
दिवस्पयो दिधिषाणा अवेषन् विदुर्देवाः सहसामानमर्कम् १  
तिस्रो देष्टाय निर्र्कतीरुपासते दीर्घश्रुतो वि हि जानन्ति वह्यः ।  
तासां नि चिक्युः कवयो निदानं परेषु या गुह्येषु त्रतेषु २  
चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतप्रतीका वयुनानि वस्ते ।  
तस्यां सुपर्णा वर्षणा नि षेदतु—र्यत्र देवा दधिरे भागधेयम् ३  
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे ।  
तं पाकेन मनसापश्यमन्तित—स्तं माता रेळिह स उ रेळिह मातरम् ४ ७८५  
सुपर्ण विप्राः कवयो वचोभि—रेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।  
छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्तसोमस्य मिमते द्वादश ५  
षट्त्रिंशंश्च चतुरः कल्पयन्त—श्छन्दांसि च दधत आद्रादुशम् ।  
यज्ञं विमार्य कवयो मनीष ऋक्सामाभ्यां प्र रथं वर्तयन्ति ६  
चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य तं धीरा वाचा प्र णयन्ति सप्त ।  
आमानं तीर्थं क इह प्र वोच—धेनं पथा प्रपिबन्ते सुतस्य ७  
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था यात्रद् द्यावापृथिवी तावदित् तत् ।  
सहस्रधा महिमानः सहस्रं यात्रद् ब्रह्म विष्टितं तावती वाक् ८  
कश्छन्दसां योगमा वेदु धीरः को धिष्ण्यां प्रति वाचं पपाद ।  
कमृत्विजामष्टमं शूरमाहु—र्हरी इन्द्रस्य नि चिकाय कः खित् ९ ७९०  
भूम्या अन्तं पर्येकं चरन्ति रथस्य धूपु युक्तासौ अस्थुः ।  
श्रमस्य दायं वि भजन्त्येभ्यो यदा यमो भवति हर्म्ये हितः १०

॥८१॥ (ऋ० १०।१२६।१-८)

(७९२-९९) शैलूपिः कुल्मलवर्हिपो, वामदेव्योऽहोमुग्वा । उपरिष्ठाद्बृहती, ८ त्रिष्टुप् ।

न तमहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।  
सजोषसो यमर्था मा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः १ ७९१

तद्धि वयं वृणीमहे वरुण मित्रार्यमन् ।	
येना निरंहसो यूयं पाथ नेथा च मर्त्यमति द्विषः	२
ते नूनं नोऽयमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
नर्यिष्ठा उ नो नेषणि पर्षिष्ठा उ नः पर्षण्यति द्विषः	३
यूयं विश्वं परि पाथ वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीतयोऽति द्विषः	४ ७९५
आदित्यासो अति स्त्रिधो वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
उग्रं मरुद्धी रुद्रं हुवेमेन्द्रमग्निं स्वस्तयेऽति द्विषः	५
नेतार ऊ षु णस्तिरो वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
अति विश्वानि दुरिता राजानश्चर्षणीनामति द्विषः	६
शुनमस्मभ्यमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।	
शर्म यच्छन्तु सप्रथं आदित्यासो यदीमहे अति द्विषः	७
यथा ह त्यद् वसवो गौर्यि चित् पदि पिनाममुञ्चता यजत्राः ।	
एवो ष्वसन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यन्ते प्रतरं न आयुः	८

॥८२॥ (क्र० १०।१२८।१-९.)

(८००-८०८) विहव्य आङ्गिरसः । त्रिष्टुप्, ९ जगती ।

ममाग्ने वचीं विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम । *	
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम	१ ८००
मम देवा विहवे सन्तु सर्वे इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।	
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वार्तः पवतां कामे अस्मिन्	२
मर्यि देवा द्रविणमा यजन्तां मर्याशीरस्तु मर्यि देवहृतिः ।	
दैव्या होतारो वनुषन्तु पूर्वे ऽरिष्ठाः स्याम तन्वा सुवीराः	३
मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या ऽऽकृतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।	
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अधि वोचता नः	४
देवीः षष्ठवीरुह नः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयध्वम् ।	
मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रंधाम द्विषते सोम राजन्	५
अग्ने मन्थुं प्रातिनुदन् परेषा मर्दब्धो गोपाः परि पाहि नस्त्वम् ।	
प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते इमेषां चित्तं प्रबुधां वि नेशत्	६ ८०५

धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पति—देवं ज्ञातारमभिमातिषाहम् ।

इमं यज्ञमश्विनोभा बृहस्पति—देवाः पान्नु यजमानं न्यर्थात्

७ ८०६

उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंस—दुस्मिन् हये पुरुहूतः पुरुक्षुः

स नः प्रजायै हर्यश्च मृळ्ये—न्द्र मा नो रीरिपो मा परा दाः

८

ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्व—न्द्राग्निभ्यामव वाधामहे तान् ।

वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेतारमधिराजमक्रन्

९

॥८३॥ (ऋ० १०।१३७।१-७)

(८०९-१५) [सप्तर्षयः]- १ भरद्वाजः, २ कश्यपः, ३ गोतमः, ४ अत्रिः, ५ विश्वामित्रः, ६ जमदग्निः,  
७ वसिष्ठः । अनुष्टुप् ।

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः । उतागश्चक्रुषं देवा देवा जिवियथा पुनः १

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः । दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद् रपः २ ८१०

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः । त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईर्यसे ३

आ त्वागमं शन्तातिभि—रथो अरिष्टतातिभिः । दक्षं ते भद्रमाभाषं परा यक्ष्मं सुवामि ते ४

त्रायन्तामिह देवा—स्त्रायतां मरुतां गणः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ५

आप इद् वा उं भेषजी—रापो अमीवचातनीः । आपः सर्वस्य भेषजी—स्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ६

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।

अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि

७ ८१५

॥८४॥ (ऋ० १०।१४१।१-६)

( ८१६-२१ ) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव ।

प्र नो यच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम् १

प्र नो यच्छत्वर्थमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः । प्र देवाः प्रात सुनृता रायो देवी ददातु नः २

सोमं राजानमवसे ऽग्निं गीर्भिर्हवामहे । आदित्यान् विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ३

इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे । यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असत् ४

अर्यमणं बृहस्पति—मिन्द्रं दानाय चोदय । वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ५ ८२०

त्वं नो अग्ने अग्निभि—र्ब्रह्मं यज्ञं च वर्धय । त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ६

॥८५॥ (ऋ० १०।१५।५)

(८२१) क्षिरिम्बिठो भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

परीमे गार्मनेषत पर्यग्निमहृषत । देवेष्वक्रत् अयः क इमाँ आ दधर्षति ५ ८२१

॥८६॥ (ऋ० १०।१५७।१-५)X

(८२३-२७) भुवन आप्तयः, साधनो वा भौवनः । द्विपदा त्रिष्टुप् ।

इमा नु कुं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः	१	
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चाऽऽदित्यैरिन्द्रः सह चीकलपाति	१।	२
आदित्यैरिन्द्रः सर्गणो मरुद्धि रस्माकं भूत्वविता तनूनाम्		३ ८२५
हृत्वार्य देवा असुरान् यदार्यन् देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः	२।	४
प्रत्यञ्जमर्कमनयच्छचीभि रादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्	३।	५

॥८७॥ (ऋ० १०।१६५।१-५)

(८२८-३२) नैऋतः कपोतः । त्रिष्टुप् ।

देवाः कपोत इषितो यद्विच्छन् दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम ।		
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे		१
शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वा नागा देवाः शकुनो गृहेषु ।		
अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी नो वृणक्तु		२
हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मानाष्ट्यां पदं कृणुते अग्निधाने ।		
शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसीद्विह देवाः कपोतः		३ ८२०
यदुल्लको वदति मोघमेतद् यत् कपोतः पदमग्नौ कृणोति ।		
यस्य दूतः प्रहित एष एतत् तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे		४
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोद मिषं मदन्तः परि गां नयध्वम् ।		
संयोपर्यन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्जं प्र पतात् पतिष्ठः		५

॥८८॥ (ऋ० १०।१६७।३)

(८३३) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मेणि ऋहस्पतेरनुमत्या उ शर्मेणि ।		
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातविधातः कलशां अभक्षयम्		३

॥८९॥ (ऋ० १०।१८१।१-३)

(८३४-३६) १ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो भारद्वाजः, ३ घर्मः सौर्यः । त्रिष्टुप् ।

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामाऽऽनुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् ।		
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः		१ ८३४

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद् यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ।

धातुर्घृतानात् सवितुश्च विष्णोर्भरद्वाजो बृहदा चक्रे अग्नेः

२ ८३५

तेऽविन्दन् मनसा दीर्घाना यजुः ष्कन्नं प्रथमं देवयानम् ।

धातुर्घृतानात् सवितुश्च विष्णोरा सूर्यादभरन् धर्ममेते

३

॥९०॥ (ऋ० १०।१८४।१-२)

(८३७-३८) त्वष्टा गर्भकर्ता, विष्णुर्वा प्राजापत्यः । अनुष्टुप् ।

विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिशतु । आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु तेऽ

गर्भं धेहि सिनीवाल्लि गर्भं धेहि सरस्वति । गर्भं ते अश्विनौ देवा वा धत्तां पुष्करस्रजा२

॥९१॥ [८३३-७६] ( वा० य० २।१२-१३, १८ )

एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव १२

मनो जुतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञं समिमं दधातु ।

विश्वे देवास इह मादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ

१३ ८४०

सस्रवभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः ।

इमां वाचमभि विश्वे गूणन्त आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादध्वम्

१८

॥९२॥ (वा० य० ४।११)

दैवीं धियं मनामहे समृद्धीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहसं सुतीर्था नो असद्वशे ।

ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षकृतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा ११

॥९३॥ (वा० य० ५।३०, ३५)

इन्द्रस्य स्यूरसिन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि

३०

ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवानां समित्

३५

॥९४॥ (वा० य० ६।१९, २४)

घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।

दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा

१९ ८४५

विश्वेषां देवानां भागधेयीं स्थ

२४

॥९५॥ (वा० य० ७।२१)×

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः

२१ ८४७

॥९६॥ (वा० य० ८।१५, १९, ४७, ५७-५८)

समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः स० सूरिभिर्मघवन्त्स० स्वस्त्या ।  
 सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवानां० सुमतौ यज्ञियानां० स्वाहा १५  
 याँ२ आवह उशतो देव देवाँस्तान् प्रेरयु स्वे अग्ने सधस्थे ।  
 जक्षिवा०सः पपिवा०सश्च विश्वेऽसुं घर्म० स्वरातिष्ठतानु स्वाहा १९  
 विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं गृह्णामि ४७ ८५०  
 विश्वे देवा अ०शुषु न्युप्तः ५७। विश्वे देवाश्चमसेषून्नीतः ५८

॥९७॥ (वा० य० ९।३३)

विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयस्तामुज्जैपम् ३३

॥९८॥ (वा० य० ११।५८, ६०, ६५)

विश्वे त्वा देवा वैश्वनराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ५८  
 विश्वे त्वा देवा वैश्वनरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ६० ८५५  
 विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा आच्छृन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ६५

॥९९॥ (वा० य० १२।७०)

घृतेन सीता मधुना समज्यतां विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः ।  
 ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वमानास्मान्त्सीति पर्यसाभ्याववृत्स्व ७०

॥१००॥ (वा० य० १४।७, २०, २६)

सजूर्ऋतुभिः सजूर्विधाभिः सजूर्विश्वैर्देवैः सजूर्देवैर्वियोनाधैरग्रये त्वा वैश्वानराया-  
 श्विनाध्वर्यु सादयतामिह त्वा ७  
 अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा  
 देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता  
 वरुणो देवता २०

ऋभूणां भागोऽसि विश्वेषां देवानामधिपत्यं भूत० स्पृतं त्रयस्त्रि०शः स्तोमः २६

॥१०१॥ (वा० य० १५।२४, ५४)

अधिपत्न्यासि बृहती दिग्विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हीतीनां प्रतिघर्ता  
 त्रिणवत्रयस्त्रि०शौ त्वा स्तोमौ पृथिव्या० श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे  
 अव्यथायै स्तभ्रीता० शाक्वररैवते सामनी प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयस्त्वा  
 प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिष्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमधिपतिश्च  
 ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु १४ ८६१

उदुबुध्यस्वाम्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापुते सश्रुजेथामयं च ।  
अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत

\*५४ ८६२

॥१०२॥ (वा० य० १७।७३)

आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्तादग्ने स्वं योनिमासीदि साधुया ।  
अस्मिन्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत

७३

॥१०३॥ (वा० य० १८।७६)+

धामच्छदुभिरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः । सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे

७६

॥१०४॥ (वा० य० २०।११)

त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिंशः सुरार्धसः ।  
बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे । देवा देवैरवन्तु मा

११ ८६५

॥१०५॥ (वा० य० २१।१७)

उषे यद्वा सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्याः । त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पष्ठ्वाद् गौरियो दधुः १७

॥१०६॥ (वा० य० २२।५,२८)

विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि  
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा

५

×२८

॥१०७॥ (वा० य० २४।२७,४०)

विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान् २७। खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां पृषतः ४० ८७०

॥१०८॥ (वा० य० २५।५-६)\*

पार्श्वं विश्वेषां देवानाम्युत्तरम् ५। विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा ६

॥१०९॥ (वा० य० २७।५२)

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदु इन्द्राय हव्यम् । विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २२

॥११०॥ (वा० य० २९।६०)

विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालः ६० ८७४

\* वा० य० १८, ६१ । ।

+ वा० य० १८, ३१; ३३, ४४, ५२-५३, ७७, ९१, ९४; ३४, ५३=द्वै० [विश्वे देवाः] ४८२, ५९४, ४२१, ४२७, ५२६-२७, ३९१ ।

× वा० य० ३९, १३ । \* वा० य० २५।१४-२३, ४३=द्वै० [विश्वे देवाः] १९-२८, ८२७ ।

॥१११॥ (वा० य० ३६।१७)+

धौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव

शान्तिः सा मा शान्तिरेधि

१७ ८७५

॥११२॥ (वा० य० ३९।६)

विश्वे देवा द्वादशे

६

॥११३॥ (अथर्व० १।९।१-२)⊗

(८७७-१०४३) अथर्वा । १ वसत्रः, इन्द्रः, पूषा, वरुणः, मित्रः, अग्निः, आदित्याः, विश्वे देवाः;  
२ देवाः, सूर्यः, अग्निः हिरण्यं । त्रिष्टुप् ।

अस्मिन् वसु वसवो धारयन्त्विन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः ।

इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु

१

अस्य देवाः प्रादिशि ज्योतिरस्तु सूर्यो अग्निरुत वा हिरण्यम् ।

सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं-नाकमधि रोहयेमम्

२

॥११४॥ (अथर्व० १।१५।१-४)

सिन्धवः, (वाताः, पतत्रिणः) । अनुष्टुप्, २ भुरिकपथ्या पङ्क्तिः ।

सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः ।

इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि

१

इहैव हवमा यात म इह संस्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः ।

इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः

२

८८०

ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदुमक्षिताः । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ३

ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदकस्य च । तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ४

॥११५॥ (अथर्व० १।२७।१-४)

(स्वस्त्ययनकामः) । चन्द्रमाः, इन्द्राणी च । अनुष्टुप्, १ पथ्यापङ्क्तिः ।

अमूः पारे पृदाक्स्त्रिषप्ता निर्जरायवः ।

तासां जरार्थुभिर्वयमक्षयाद्देवपि व्ययामस्यघायोः परिपन्थिनः

१

विषूच्येतु कन्तती पिनाकमिव विभ्रती ।

विष्वक् पुनर्भुवा मनोऽसमृद्धा अघायवः

२

८८४

+अथर्व १।९।१, १४;=३० [विश्वे देवाः] १०६९, १०८२ ।

⊗ अथर्व १।९, ३-४=३० [अग्निः] २१४२-४३ ।

३० [विश्वे देवाः] ९



न बहवः समशकन् नार्भका अभि दाधृषुः । वेणोरद्रा इवाभितोऽसमृद्धा अघायवः ३ ८८५  
प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं बहतं पृणतो गृहान् । इन्द्राण्येति प्रथमाजीतामुषिता पुरः ४

॥११६॥ (अथर्व० २।३४।१-५)

१ पशुपतिः, २ देवाः, ३ अग्निः विश्वकर्मा, ४ वायुः प्रजापतिः, ५ आशीः । त्रिष्टुप् ।  
य ईशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत यो द्विपदाम् ।

निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानं सचन्ताम् १

प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो गातुं धत्त यजमानाय देवाः ।

उपाकृतं शशमानं यदस्थात् प्रियं देवानामप्येतु पार्थः २

ये बृध्यमानमनु दीर्घाना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।

अग्निष्ठानग्रे प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः ३

ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपा विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।

वायुष्ठानग्रे प्र मुमोक्तु देवः प्रजापतिः प्रजया संरराणः ४ ८९०

प्रजानन्तः प्रति गृहन्तु पूर्वं प्राणमङ्गेभ्यः पर्याचरन्तम् ।

दिवं गच्छ प्रति तिष्ठा शरीरैः स्वर्गं याहि पृथिभिर्देवयानैः ५

॥११७॥ (अथर्व० ३।३।२-३, ५-६)+

२ इन्द्रः, ३ वरुणः सोमः इन्द्रः, ५ इन्द्राग्नी, विश्वे देवाः, ६ इन्द्रः । त्रिष्टुप्, ३ चतुष्पदा  
भुरिक्पङ्क्तिः, ५-६ अनुष्टुप् ।

दूरं चित् सन्तमरुपासु इन्द्रमा च्यावयन्तु सख्याय विप्रम् ।

यद् गायत्रीं बृहतीमर्कमसै सौत्रामण्या दधृषन्त देवाः २

अञ्चस्त्वा राजा वरुणो ह्ययतु सोमस्त्वा ह्ययतु पर्वतेभ्यः ।

इन्द्रस्त्वा ह्ययतु विड्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः ३

ह्वयन्तु त्वा प्रतिजनाः प्रति मित्रा अवृषत । इन्द्राग्नी विश्वे देवास्ते विशि क्षेममदीधरन् ५

यस्ते हवं विवदत् सजातो यश्च निष्ठयः । अपाञ्चमिन्द्र तं कृत्वाथेममिहाव गमय ६

॥६१८॥ (अथर्व० ३।४।१-२, ४-७)\*

इन्द्रः, २ पञ्च प्रदिशः, ४ अश्विनौ, मित्रावरुणौ, विश्वे देवाः, मरुतः, ५ द्यावापृथिवी ।  
त्रिष्टुप्, १ जगती, ४-५ भुरिक् ।

आ त्वां गन् राष्ट्रं सह वर्चसोर्दिहि प्राङ् विशां पतिरेकराट् त्वं वि राज ।

सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तूपसद्यो नमस्यो भवेह १ ८९६

त्वां विशो वृणतां राज्यायि त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः ।	
वर्षेन् राष्ट्रस्य ककुदिं श्रयस्व ततो न उग्रो वि भञ्जा वसूनि	२
अश्विना त्वाग्ने मित्रावरुणोभा विश्वे देवा मरुतस्त्वा ह्वयन्तु ।	
अथा मनो वसुदेयाय कृणुष्व ततो न उग्रो वि भञ्जा वसूनि	४
आ प्र द्रव परमस्याः परावतः शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ।	
तदयं राजा वरुणस्तथाह स त्वायमह्वत् स उपेदमेहि	५
इन्द्रेन्द्र मनुष्याइः परेहि सं ह्यज्ञास्था वरुणैः संविदानः ।	
स त्वायमह्वत् स्वे सधस्थे स देवान् यक्षत् स उ कल्पयाद् विशः	६ ९००
पथ्या रेवतीर्बृहधा विरूपाः सर्वाः संगत्य वरीयस्ते अक्रन् ।	
तास्त्या सर्वाः संविदाना ह्वयन्तु दशमीमुग्रः सुमना वशेह	७

॥११९॥ (अथर्व० ३।८।१-६)

१ मित्रः, पृथिवी, वरुणः, वायुः, अग्निः; २ धाता, साविता, इन्द्रः, त्वष्टा, अदितिः; ३ सोमः, साविता, आदित्यः, अग्निः; ४ विश्वे देवाः, ५-६ सांमनस्यम् । त्रिष्टुप्; २,६ जगती;

४ चतुष्पदा विराड् वृहतीगर्भा, ५ अनुष्टुप् ।

आ यांतु मित्र क्रतुभिः कल्पमानः संवेशयन् पृथिवीमुस्त्रियाभिः ।	
अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्वृहद् राष्ट्रं संवेशयं दधातु	१
धाता रातिः संवितेदं जुषन्तामिन्द्रस्त्वष्टा प्रति हर्यन्तु मे वचः ।	
हुवे देवीमर्दितिं शूरपुत्रां सजातानां मध्यमेष्टा यथासानि	×२
हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्याँ अहमुत्तरत्वे ।	
अयमग्निर्दीदायद् दीर्घमेव संजातैरिन्द्रोऽप्रतिब्रुवद्भिः	३
इहेदसाथ न परो गमाथेयो गोपाः पुष्टपतिर्व आजत् ।	
अस्मै कामायोप कामिनीविश्वे वो देवा उपसंयन्तु	४ ९०५
सं वो मनांसि सं व्रता समाकृतीर्नमामसि । अमी ये विव्रता स्थन् तान् वः संनमयामसि	५
अहं गृष्णामि मनसा मनांसि मम चित्तमनु चित्तेभिरेत ।	
मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि मम यातमनुवर्तमान एत	६

॥१२०॥ (अथर्व० ३।१०।१,५-७,११-१३) :

अष्टका, १ धेनुः, ५ एकाष्टका, ६ जातवेदाः, पशवः, ७ रात्रिः, यज्ञाः, ११ देवाः, १२ इन्द्रः, देवाः, १३ प्रजापतिः । अनुष्टुप्; ५-६, १२ त्रिष्टुप्; ७ इयवसाना षट्पदा विराड्गर्भातिजगती ।

प्रथमा ह व्युत्वास सा धेनुरभवद् यमे । सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् १ ९०८

×अथर्व० ३,८,२ = दै० [अदितिः०] ७०८। \*अथर्व० ३,१०,२-४,८-१० = दै० [अदितिः०] ७०९,८८७,९४९,१०७५-७७।

वानस्पत्या ग्रावाणो घोषमक्रत हविकृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।	
एकाष्टके सुप्रजमः सुवीरा वयं स्याम पतयो रयीणाम्	५ ९०९
इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय ।	
ये ग्राम्याः पशो विश्वरूपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिरस्तु	६
आ मां पुष्टे च पोषे च रात्रिं देवानां सुमतौ स्याम ।	
पूर्णा देवे परां पत सुपूर्णा पुनरा पत । सर्वान् यजान्तसंभृज्जतीषमूर्जं न आ भर	७
इडया जुह्वतो वयं देवान् घृतवता यजे । गृहानलुभ्यतो वयं सं विश्वेमोप गोमतः	११
एकाष्टका तपसा तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम् ।	
तेन देवा व्यसिहन्त शत्रून् हन्ता दस्यूनामभवच्छचीपतिः	१२
इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितारिं प्रजापतेः । कामानस्माकं पूरय प्रति गृह्णाहि नो हविः	१३

॥१२१॥ (अथर्व० ३।१५।१-८ )

(पण्यकामः) । विश्वे देवाः, इन्द्राग्नी । त्रिष्टुप्, १ भुरिक, ४ इयवसाना षट्पदा  
बृहतीगर्भा विराडत्याष्टिः, ५ विराड्जगती, ७ अनुष्टुप्, ८ निष्पृत् ।

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न एतुं पुरता नो अस्तु ।	
नुदन्नरांति परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम्	१ ९१५
य पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।	
ते मां जुषन्तां पर्यसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि	२
इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।	
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम्	३
इमामग्ने शरणं मीमृषो नो यमध्वानमगाम दूरम् ।	
शुनं नो अस्तु प्रपणो विक्रयश्च प्रतिपणः फलिनं मा कृणोतु ।	
इदं हव्यं संविदानौ जुषेथां शुनं नो अस्तु चरितमुत्थितं च	४
येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।	
तन्मे भूयो भवतु मा कनीयोऽग्रे सातग्नो देवान् हविषा नि षेध	५
येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः ।	
तस्मिन् म इन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः	६ ९२०
उप त्वा नमसा वयं होतवैश्वानर स्तुमः । स नः प्रजास्वात्मसु गोषु प्राणेषु जागृहि	
विश्वाहां ते सदा मिद् भरमाश्वायेव तिष्ठते जातवेदः ।	
रायस्पोषेण समिषा मर्दन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम	८ ९२२

॥१२१॥ (अथर्व० ५।८।१-९)×

नानादेवत्यं, १-२ अग्निः, ३ विश्वे देवाः, ४-९ इन्द्रः । अनुष्टुप्, २ त्र्यवसाना षट्पदा  
जगती, ३-४ भुरिकपथ्यापाङ्क्तिः, ६ आस्तारपङ्क्तिः, ७ द्व्युष्णिग्गर्भा पथ्यापङ्क्तिः,  
९ त्र्यवसाना षट्पदा द्व्युष्णिग्गर्भा जगती ।

वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य आजयं वह । अग्ने ताँ इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम्	१
इन्द्रा याहि मे हवमिदं करिष्यामि तच्छृणु ।	
इम एन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे । तेभिः शक्रेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन्	२
यदुसावमुतो देवा अदेवः संश्रिकीर्षति ।	
मा तस्याग्निर्हव्यं वाक्षीद्ववं देवा अस्य मोषं गुर्ममैव हवमेतन	३ ९२५
अति धावतातिसरा इन्द्रस्य वचसा हत ।	
अविं वृक इव मधीत स वो जीवन्मा मौचि प्राणमस्यापि नह्यत	४
यममी पुरोदधिरे ब्रह्माणमर्पभूतये । इन्द्र स ते अधस्पदं तं प्रत्यस्यामि मृत्यवे	५
यदि प्रेषुर्देवपुरा ब्रह्म वर्माणि चक्रिरे ।	
तनूपानं परिपाणं कृण्वाना यदुपोचिरे सर्वं तदरसं कृधि	६
यानसावतिसरांश्चकारं कृणवच्च यान् ।	
त्वं तानिन्द्र वृत्रहन् प्रतीचः पुनरा कृधि यथामुं तृणहां जनेम्	७
यथेन्द्र उद्वाचनं लब्ध्वा चक्रे अधस्पदम् । कृण्वेत्तमधरांस्तथामूलंश्चतीभ्यः समाभ्यः	८ ९३०
अत्रैनानिन्द्र वृत्रहन्मुगो मर्मेणि विष्य । अत्रैवैनानभि तिष्ठेन्द्र मेघं हं तव ।	
अनु त्वेन्द्रा रभामहे स्याम सुमतौ तव	९

॥१२३॥ (अथर्व० ६।३।१-३)

१ इन्द्रापूषणौ, अदितिः, मरुतः, अपां नपात्, सिन्धवः, विष्णुः, द्यौः; २ द्यावापृथिवी,  
ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः; ३ अश्विनौ, उषासानक्ता, अपां नपात्,  
त्वष्टा । जगती, १ पथ्याबृहती ।

पातं न इन्द्रापूषणादितिः पान्तु मरुतः ।	
अपां नपात् सिन्धवः सप्त पातन पातु नो विष्णुरुत द्यौः	१
पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः ।	
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः	२
पातां नो देवाश्विनां शुभस्पती उषासानक्ता न उरुष्यताम् ।	
अपां नपादभिहुती गर्यस्य चिद् देवं त्वष्टर्वर्धय सर्वतातये	३ ९३४

॥१२४॥ (अथर्व० ६।४।१-३)+

१ त्वष्टा, पर्जन्यः, ब्रह्मणस्पतिः, अदितिः; २ अंशः, भगः, वरुणः, मित्रः, अर्यमा, अदितिः, मरुतः; ३ अश्विनौ, द्यौष्पिता । पथ्याबृहती, २ संस्तारपङ्क्तिः, ३ त्रिपदा विराङ्गायत्री ।

त्वष्टा मे दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः । पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टं त्रायमाणं सहः १ ९३५  
अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमादितिः पान्तु मरुतः ।

अप तस्य द्वेषो गमेदभिहुतो यावयच्छत्रुमन्तितम् २  
धिये समश्चिना प्रावतं न उरुष्या ण उरुज्मन्नप्रयुच्छन् । द्यौश्पितर्यावय दुच्छुना या ३

॥१२५॥ (अथर्व० ६।५।३)

अग्निः, सोमः, ब्रह्मणस्पतिः । अनुष्टुप् ।

यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम् । तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं च ब्रह्मणस्पतिः ३

॥१२६॥ (अथर्व० ६।४०।१-३)

१ द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तऋषयः; २ सविता, इन्द्रः; ३ इन्द्रः ।  
१-२ जगती, ३ अनुष्टुप् ।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नोऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु ।  
अभयं नोऽस्तूर्वोन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाऽभयं नो अस्तु १  
अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्र ऊर्जे सुभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु ।  
अश्विन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्व्यत्र राज्ञामभि यातु मन्युः २ ९४०  
अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात् । इन्द्रानमित्रं नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि ३

॥१२७॥ (अथर्व० ६।६२।१-३)

रुद्रः, वैश्वानरः, वातः, द्यावापृथिवी । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरो रश्मिर्भिर्नः पुनातु वातः प्राणेनेपिरो नमोभिः ।  
द्यावापृथिवी पर्यसा पर्यस्वती ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम् १  
वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः ।  
तया गुणन्तः सधमादिषु वयं स्याम पतयो रथीणाम् २  
वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।  
इहेडया सधमादं मदन्तो ज्योक् पश्येम सूर्यमच्चरन्तम् ३

॥१२८॥ (अथर्व० ६।६४।१-३)

सांमनस्यम्, १ विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, ( २ त्रिष्टुप् ) ।

सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते १ ९४५

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम् ।

समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् २

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः । समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ३

॥१२९॥ (अथर्व० ६।६८।१-३)

१ सविता, आदित्याः, रुद्राः, वसवः; २ अदितिः, आपः, प्रजापतिः; ३ सविता, सोमः, धरुणः ।

१ पुरोविराडतिशाकरगर्भा चतुष्पदा जगती; २ अनुष्टुप्; ३ अतिजगतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

आयमगन्त्सविता क्षुरेणोष्णेन वाय उदकेनेहि ।

आदित्या रुद्रा वसव उन्दन्तु सचेतसुः सोमस्य राज्ञो वपत् प्रचेतसः १

अदितिः इमश्रु वपत्वाप उन्दन्तु वर्चसा । चिकित्सतु प्रजापतिर्दीर्घायुत्वाय चक्षसे २

येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान् ।

तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्वानयमस्तु प्रजावान् ३ ९५०

॥१३०॥ (अथर्व० ६।७३।१-३)

सामनस्यम्, वरुणसोमाग्निवृहस्पतिवसवः, ३ वास्तोष्पतिः । १, ३ भुक्; २ त्रिष्टुप् ।

एह यातु वरुणः सोमो अग्निवृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु ।

अस्य श्रियमुपसंयात सर्वे उग्रस्य चेतुः संमनसः सजाताः १

यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तराकूतिर्या वो मनसि प्रविष्टा ।

तान्त्सीवयामि हविषा घृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु २

इहैव स्त माप याताध्यस्त् पूषा परस्तादपथं वः कृणोतु ।

वास्तोष्पतिरनु वो जोहवीतु मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु ३

॥१३१॥ (अथर्व० ६।७४।१-३)

सामनस्यम्, नाना देवताः, त्रिणामा । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप् ।

सं वः पृच्यन्तां तन्वः सं मनांसि समु व्रता । सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगुः सं वो अजीगमत १

संज्ञपनं वो मनसोऽथो संज्ञपनं हुदः । अथो भगस्य यच्छ्रान्तं तेन संज्ञपयामि वः २ ९५५

यथादित्या वसुभिः संबभूवुर्मरुद्भिरुग्रा अहणीयमानाः ।

एवा त्रिणामन्नहणीयमान इमान् जनान्तसंमनसस्कृधीह ३

॥१३२॥ (अथर्व० ६।९७।१, ३)

देवाः । १ त्रिष्टुप्; ३ भुक् ।

अभिभूर्यज्ञो अभिभूरगिरभिभूः सोमो अभिभूरिन्द्रः ।

अभ्यः विश्वाः पृतना यथासान्येवा विधेमाभिहोत्रा इदं हविः १ ९५७

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रंभध्वम् ।  
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा

×३ ९५८

॥१३३॥ (अथर्व० ६।९९।१-३)

इन्द्रः, सोमः सविता च । अनुष्टुप्, ३ अरिग्बृहती (सौम्या सावित्री) ।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वांहूरणाद्भुवे । ह्याम्युग्रं चेतारं पुरुणामानमेकजम् १  
यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन् न उदीरते । इन्द्रस्य तत्र बाहू समन्तं परि दद्यः २ ९६०  
परि दद्य इन्द्रस्य बाहू समन्तं त्रातुस्त्रार्थतां नः । देवं सवितः सोमं राजन्त्सुमनसं मा कृणु स्वस्तये ३

॥१३४॥ (अथर्व० ७।७०।१-५)

श्येनः, देवाः । १ त्रिष्टुप्, २ अतिजगतीगर्भा जगती, ३-५ अनुष्टुप्  
( ३ पुरःककुम्भती ) ।

यत् किं चासौ मनसा यच्च वाचा यज्ञैर्जुहोति हविषा यजुषा ।  
तन्मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना पुरा सत्यादाहुतिं हन्त्वस्य १  
यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते अस्य मन्त्वन्तेन सत्यम् ।  
इन्द्रैषिता देवा आज्यमस्य मश्रन्तु मा तत् सं पादि यदसौ जुहोति २  
अजिराधिराजौ श्येनौ संपातिनाविव । आज्यं पृतन्यतो हतां यो नः कश्चाभ्यघायति ३  
अपाञ्चौ त उभौ बाहू अपि नह्याम्यास्यम् । अग्नेर्देवस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ४ ९६५  
अपि नह्यामि ते बाहू अपि नह्याम्यास्यम् । अग्नेर्घोरस्य मन्युना तेन तेऽवधिषं हविः ५

॥१३५॥ (अथर्व० ७।९८।१)

इन्द्रः, विश्वे देवाः । विराट् ।

सं बर्हिर्क्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः ।  
सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा १

॥१३६॥ (अथर्व० १९।१५।५-६)+

मन्त्रोक्ताः । ५ जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।  
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ५  
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।  
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ६ ९६९

॥१३७॥ (अथर्व० १९।१६।१-२)

मन्त्रोक्ताः । १ अनुष्टुप्; २ इयवसाना सप्तपदा बृहतीगर्भानिशकरी ।

असपत्नं पुरस्तात् पश्चाञ्चो अभयं कृतम् । सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १ ९७०  
दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्रयः ।

इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनवभितः शर्म यच्छताम् ।

तिरश्चीनद्वया रक्षतु जातवेदा भूतकृता मे सर्वतः सन्तु वर्म २

॥१३८॥ (अथर्व० १९।१७।१-२०)

मन्त्रोक्ताः । १-४ जगती; ५,७,१० अतिजगती; ६ भुरिक्; ९ पञ्चपदाऽतिशकरी ।

अग्निमी पातु वसुभिः पुरस्तात् तस्मिन् क्रमे तस्मिन्नूये तां पुरं प्रैमि ।

स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा १

वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० २

सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ३

वरुणो मादित्यैरेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ४ ९७५

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु० । स मा रक्षतु० ५

आपो औषधीमतीरेतस्या दिशः पातु तासु क्रमे तासु श्रये तां पुरं प्रैमि ।

ता मा रक्षन्तु ता मा गोपायन्तु ताभ्यं आत्मानं परि ददे स्वाहा ६

विश्वकर्मा मा सप्तक्रुषिभिरुदीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ७

इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० ८

प्रजापतिर्मा प्रजननवान्त्सह प्रतिष्ठाया ध्रुवाया दिशः पातु० । स मा रक्षतु० ९ ९८०

बृहस्पतिर्मा विश्वेदेवैरुर्ध्वाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे० । स मा रक्षतु० १०

॥१३९॥ (अथर्व० १९।१८।१-१०)

मन्त्रोक्ताः । १,८ साम्ना त्रिष्टुप्; २-६ आर्च्यनुष्टुप्; (५ सम्राडाच्यनुष्टुप्);

७,९-१० (द्विपदा) प्राजापत्या त्रिष्टुप् ।

अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवः प्राच्या दिशोऽभिदासात् १

वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवं एतस्या दिशोऽभिदासात् २

सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासात् ३

वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवं एतस्या दिशोऽभिदासात् ४

सूर्यं ते द्यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवंः प्रतीच्या दिशोऽभिदासात् ५

अपस्त औषधीमतीर्कृच्छन्तु । ये माघायवं एतस्या दिशोऽभिदासात् ६ ९८७

६० [विश्वे देवाः] १०



विश्वकर्माणं ते सप्तक्रुषिवन्तमृच्छन्तु । ये माघायव उदीच्या दिशोऽभिदासात्	७	९८८
इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु । ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासात्	८	
प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु । ये माघायवो ध्रुवाया दिशोऽभिदासात्	९	
बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु । ये माघायव ऊर्ध्वाया दिशोऽभिदासात्	१०	

॥१४०॥ (अथर्व० १९।१९।१-११)

चन्द्रमाः, मन्त्रोक्ताश्च । पङ्क्तिः १, ३, ९ भुरिग्वृहतीः १० स्वरान्; २, ४-८, ११ अनुष्टुभर्भा ।

मित्रः पृथिव्योदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः ।		
तामा विशत् तां प्र विशत् सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु	१	
वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	२	
सूर्यो दिवोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	३	
चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	४	९९५
सोम ओषधीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	५	
यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	६	
समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	७	
ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	८	
इन्द्रो वीर्यैरेणोदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	९	१०००
देवा अपृतेनोदक्रामस्तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	१०	
प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः । तामा विशत्०	११	

॥१४१॥ (अथर्व० १९।२०।१ ४)

चतुर्देवत्वम् । १ त्रिष्टुपः २ जगती; ३ पुरस्ताद्वृहती; ४ अनुष्टुभर्भा ।

अप न्यधुः पोरुपेयं वधं यमिन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः ।		
सोमो राजा वरुणो अश्विना यमः पूषाऽस्मान् परि पातु मृत्योः	१	
यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः ।		
प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु	२	
यत् ते तनूष्वनहन्त देवा द्युराजयो देहिनः । इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदुस्मान् पातु विश्वतः	३	
वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः । वर्म मे विश्वे देवाः क्रन् मा मा प्रापत् प्रतीचिका	४	१००६

॥१४२॥ (अथर्व० १९।२३।१-२९)

मन्त्रोक्ताः चन्द्रमाश्च । १ आसुरी गायत्रीः २-७; २०, २३, २७ देवी त्रिष्टुप्: ८, १०-१२, १४-१६ प्राजापत्या गायत्री, १७, १९, २४-२५, २९ देवी पंक्तिः; ९, १३, १८, २२, २६, २८ देवी जगतीः (१-२९ एकावसानाः)।

आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा १।	पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा २।	प्लुचेभ्यः स्वाहा ३	
सप्तर्चेभ्यः स्वाहा ४।	अष्टर्चेभ्यः स्वाहा ५।	नवर्चेभ्यः स्वाहा	६
दशर्चेभ्यः स्वाहा ७।	एकादशर्चेभ्यः स्वाहा		८
द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा ९।	त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा १०।	चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा	११
पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा १२।	षोडशर्चेभ्यः स्वाहा १३।	सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा	१४
अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा १५।	एकोनविंशतिः स्वाहा १६।	विंशतिः स्वाहा	१७
महत्काण्डाय स्वाहा १८।	तृचेभ्यः स्वाहा १९।	एकर्चेभ्यः स्वाहा	२०
क्षुद्रेभ्यः स्वाहा २१।	एकानृचेभ्यः स्वाहा २२।	रोहितेभ्यः स्वाहा	२३
सूर्याभ्यां स्वाहा २४।	त्रात्याभ्यां स्वाहा २५।	प्राजापत्याभ्यां स्वाहा	२६
विषासह्यै स्वाहा २७।	मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा २८।	ब्रह्मणे स्वाहा	२९ १०३५

॥१४३॥ (अथर्व० १९।२४।१-८)

ब्रह्मणस्पतिः, बहुदेवत्यम् । अनुष्टुप्: ४-६, ८ त्रिष्टुप्, ७ त्रिषदाऽऽर्षी गायत्री ।

येन देवं सवितारं परि देवा अधारयन् । तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राप्रार्थं धत्तन १  
परीममिन्द्रमायुषे महे क्षत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयां ज्योक् क्षत्रेऽधि जागरत् २  
परीमं सोममायुषे महे श्रोत्राय धत्तन । यथैनं जरसे नयां ज्योक् श्रोत्रेऽधि जागरत् ३  
परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।

बृहस्पतिः प्रायच्छद् वाम एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ४  
जरां सु गच्छ परि धत्स्व वासो भवा गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।

शतं च जीवं शरदः पुरुची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ५ १०४०

परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्वापीनामभिशस्तिपा उ ।

शतं च जीवं शरदः पुरुचीर्वसनि चारुर्वि भजामि जीवन् ६

योगयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ७

हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो जरामृत्युः प्रजया सं विशस्व ।

तदुगिराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ८ १०४३

॥१४४॥ (अथर्व० ५।३।३-६)×

(१०४४-४७) बृहद्विवोऽथर्वा । ३-४ देवाः; ५ द्रविणोदाः; ६ देवीः । त्रिष्टुप् ।

मम देवा विह्वे संन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।	
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामायास्मै	३ १०४४
मह्यं यजन्तां मम यानीष्टाकृतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।	
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवा अभि रक्षन्तु मेह	४
मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशरिस्तु मयि देवहूतिः ।	
देवा होतारः सनिषन्न एतदरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः	५
दैवीः षड्वीरुरु नः कृणोत विश्वे देवास इह मादयध्वम् ।	
मा नो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या	६

॥१४५॥ (अथर्व० १।१६।१-४)

(१०४८-५१) चातनः । अग्निः, इन्द्रः, वरुणः, (२-४ दधन्यं सीसम् । अनुष्टुप्, ४ ककुम्मती अनुष्टुप् ।

येमात्रास्यांते रात्रिमुदस्थुर्त्राजमत्त्रिणः । अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्मभ्यमधि ब्रवत् १	
सीसायाध्याह वरुणः सीसायाग्निरुपावति । सीसे म इन्द्रः प्रायच्छत् तदुङ्ग यातुचातनम् २	
इदं विष्कन्धं सहत इदं बाधते अत्त्रिणः । अनेन विश्वा ससहे या जातानि पिशाच्याः ३ १०५०	
यदि नो गां हंसि यद्यश्चं यदि पूरुषम् । तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ४	

॥१४६॥ (अथर्व० १।१९।१-५)

१०५२-९०) ब्रह्मा । ईश्वरः, (१ इन्द्रः, २ देवीः मनुष्येषवः, ३ रुद्रः, ४ देवाः) । अनुष्टुप्, २ पुरस्ताद्बृहती, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

मा नो विदन् विव्याधिनो मो अभिव्याधिनो विदन् ।	
आराच्छरव्या अस्मद् विषूचीरिन्द्र पातय	१
विष्वञ्चो अस्मच्छरवः पतन्तु ये अस्ता ये चास्याः ।	
दैवीर्मनुष्येषवो ममामित्रान् वि विध्यत	२
यो नः स्वो यो अरणः सजात उत निष्टयो यो अस्मां अभिदासति ।	
रुद्रः शरव्यैतान् ममामित्रान् वि विध्यत	+३
यः सपत्नो योऽसपत्नो यश्च द्विषन्छपाति नः ।	
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम्	४ १०५५

×अथर्व० ५,३ ७,३-१०=दै० [सोमः] ११८७; दै० [अदितिः०] ७१०; दै० [रुद्रः] १५५ ।

+अथर्व० १,१९,३ = दै० [रुद्रः] ११२ ।

॥१४७॥ (अथर्व० १।२६।१-२)ः

१ देवाः; २ इन्द्रः, भगः, सविता गायत्रीः २ त्रिपदा एकावसाना सास्त्री त्रिष्टुप्,  
४ एकावसाना पादनिचृत् ।

आरेडुसावस्मदस्तु हेतिर्देवासो असत् । आरे अइमा यमस्यथ १  
सखासावस्मभ्यमस्तु रातिः सखेन्द्रो भगः सविता चित्रराधाः २

॥१४८॥ (अथर्व० ३।२३।१-६)

चन्द्रमाः, योनिः, द्यावापृथिवी । अनुष्टुप्, ५ उपरिष्ठाद् मुग्गिबृहती, ६ स्कंधोऽग्नीवी बृहती ।

येन वेहद् बभूव्विथ नाश्यामसि तत् त्वत् । इदं तदुन्यत्र त्वदप दूरे नि दध्मसि १  
आ ते योनिं गर्भं एतु पुमान् बाणं इवेषुधिम् ।

आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः २

पुमांसं पुत्रं जनय तं पुमाननु जायताम् ।

भवासि पुत्राणां माता जातानां जनयाश्च यान् ३ १०६०

यानि भद्राणि बीजान्यृषभा जनयन्ति च । तैस्त्वं पुत्रं विन्दस्व सा प्रसूधेनुका भव ४  
कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनिं गर्भं एतु ते ।

विन्दस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शमसच्छमु तस्मै त्वं भव ५

यासां द्यौः पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरुधां बभूव ।

तास्त्वा पुत्रविद्याय देवीः प्रावन्त्वोपधयः ६

॥१४९॥ (अथर्व० ६।५५।१) जगती ।

ये पन्थानो बहवो देवयानां अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।

तेषामज्यानि यतमो वहति तस्मै मा देवाः परि धत्तेह सर्वं १

॥१५०॥ (अथर्व० ६।११४।१-३) अनुष्टुप् ।

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् । आदित्यास्तस्मान्नो यूयमतस्यतेन मुञ्चत १ १०६५

ऋतस्यतेनादित्या यजत्रा मुञ्चतेह नः । यज्ञं यद् यज्ञवाहसः शिक्षन्तो नोपशेकिम २

भेदस्वता यजमानाः सुचाज्यानि जुह्वतः । अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शेकिम ३

॥१५१॥ (अथर्व० ७।२४।१ )

इन्द्रः, अग्निः, विश्वे देवाः, मरुता, सविता, प्रजापतिः, अनुमतिः । त्रिष्टुप् ।

यन्न इन्द्रो अखनद् यदग्निर्विश्वे देवा मरुतो यत् स्वर्काः ।

तदुस्मभ्यं सविता सत्यधर्मा प्रजापतिरनुमतिर्नि यच्छात् १ १०६८

॥१५२॥ (अथर्व०.१९।२।१-१४)

(शान्तातिः?) । शान्तिः, बहुदैवत्यम् । अनुष्टुपः, १ विराडुरोवृहती; ५ पञ्चपदा पथ्यापांक्तिः;

९ पञ्चपदा ककुम्भती; १२ त्र्यवसाना सप्तपदाष्टिः; १४ चतुष्पदा संकृतिः ।

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वेणान्तरिक्षम् ।

शान्ता उदुन्वतीरार्षः शान्ता नः सन्त्वोषधीः

१ १०६९

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम् ।

शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः

२

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता । ययैव संसृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः ३

इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम् । येनैव संसृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ४

इमानि यानि पञ्चैन्द्रियाणि मनःषष्ठानि मे वृदि ब्रह्मणा संशितानि ।

यैरेव संसृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः

५

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः ।

शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्थमा

६

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वाञ्छमन्तकः ।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो द्विविचरा ग्रहाः

७ १०७५

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत् । शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्थतीः

८

नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः ।

शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसगाः शमु नो भवन्तु

९

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा । शं नो मृत्युधूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतैजसः १०

शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्नयः । शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः ११

ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयोऽग्नयः ।

तैर्मै कृतं स्वस्त्ययनामिन्द्रो मे शर्म यच्छतु ब्रह्मा मे शर्म यच्छतु ।

विश्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यच्छन्तु

१२ १०८०

यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः ।

सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु

१३

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिद्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।

ताभिः शान्तिभिः सर्वशान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह क्रूरं

यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः

१४ १०८९

॥१५३॥ (अथर्व० १९।४३।१-८)

ब्रह्म, बहुदेवत्वम् । अथर्वसांना शंकुमती पथ्यापङ्क्तिः ।

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तर्पसा सह ।

अग्निर्मा तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे । अग्नये स्वाहा १

यत्र ब्रह्मविदो० वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्राणान् दधातु मे । वायवे स्वाहा २

यत्र ब्रह्मविदो० सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे । सूर्याय स्वाहा ३ १०८५

यत्र ब्रह्मविदो० चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे । चन्द्राय स्वाहा ४

यत्र ब्रह्मविदो० सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे । सोमाय स्वाहा ५

यत्र ब्रह्मविदो० इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो दधातु मे । इन्द्राय स्वाहा ६

यत्र ब्रह्मविदो० आपो मा तत्र नयन्त्वमृतं मोषं तिष्ठतु । अद्भ्यः स्वाहा ७

यत्र ब्रह्मविदो० ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे । ब्रह्मणे स्वाहा ८ १०९०

॥१५४॥ (अथर्व० २।१२।१-८)

(१०९१-९८) भरद्वाजः । १ द्यावापृथिवी, अन्तरिक्षम्; २ देवाः, ३ इन्द्रः, आदित्या-  
वसवोऽङ्गिरसः पितरः; ५ सोम्यासः पितरः; ६ मरुतः, ७ यमसादनम्,  
ब्रह्म, ८ अग्निः । त्रिष्टुप्, २ जगती, ७-८ अनुष्टुप् ।

द्यावापृथिवी उर्वरान्तरिक्षं क्षेत्रस्य पत्न्युरुगायोऽद्भुतः ।

उतान्तरिक्षमरु वातगोपं त इह तप्यन्तां मयि तप्यमाने १

इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो मह्यमुक्थानि शंसति ।

पाशे स वदो दुरिते नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति २

इदमिन्द्र शृणुहि सोमप यत् त्वा हृदा शोचता जोहवीमि ।

वृश्चामि तं कुलिशेनेव वृक्षं यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति ३

अशीतिभिस्तिष्ठभिः सामगेभिरादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ।

इष्टापूर्तमवतु नः पितृणामामुं ददे हरसा दैव्येन ×४

द्यावापृथिवी अनु मा दीधीथां विश्वे देवासो अनु मा रभध्वम् ।

अङ्गिरसः पितरः सोम्यासः पापमार्ष्ट्वपक्रामस्य कर्ता ५

अतीव यो मरुतो मन्यन्ते नो ब्रह्म वा यो निन्दिषत् क्रियमाणम् ।

तपूषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषं द्यौरभिसंतपाति ६ १०९६

सप्त प्राणानष्टौ मन्यस्तांस्ते वृश्चामि ब्रह्मणा । अया यमस्य सादनमग्निदूतो अरकृतः ७ १०९७  
आ दधामि ते पदं समिद्धे जातवेदसि । अग्निः शरीरं वेवेष्टुसुं वागपि गच्छतु ८

॥१५५॥ (अथर्व० २।२८।३-५)

(१०९९-११०१) शम्भुः । द्यावापृथिव्यादयो देवाः । त्रिष्टुप्, ५ भुरिक् ।

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उत वा ये जनित्राः ।

मेमं प्राणो हांसीन्मो अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः ३

द्यौष्ट्वां पिता पृथिवी माता जरामृत्युं कृणुतां संविदाने ।

यथा जीवा अदितेरुपस्थे प्राणापानाभ्यां गुपितः शतं हिमाः ४ ११००

इममग्र आयुषे वर्चसे नय प्रियं रेतो वरुण मित्रराजन् ।

मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत् ५

॥१५६॥ (अथर्व० २।३६।४,६,८)+

(११०२-४) पतिवेदनः । ४ इन्द्रः, ६ धनपतिः, ८ औषधिः । ४ त्रिष्टुप्, ६ अनुष्टुप्, ८ निचृत्पुरजष्णिक् ।

यथाखरो मघवंश्चारुषे प्रियो मुगाणां सुषदा बभूव ।

एवा भगस्य जुष्टेयमस्तु नारी संप्रिया पत्याविराधयन्ती ४

आ क्रन्दय धनपते वरमामनसं कृणु । सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः ६

आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः प्रतिकाम्यः । त्वमस्यै धेहोषधे ८

॥१५७॥ (अथर्व० ३।१९।१-८)

(११०५-२०) वसिष्ठः । विश्वे देवाः, चन्द्रमाः, इन्द्रः । अनुष्टुप्, १ पथ्याबृहती, ३ भुरिग्बृहती,

५ त्रिष्टुप्, ६ त्र्यवसाना पदपदा त्रिष्टुप्ककुम्भतीगर्भातिजगती,

७ विराडास्तारपङ्क्तिः, ८ पथ्यापङ्क्तिः ।

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम् ।

संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः १ ११०५

समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम् ।

वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् २

नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरि मघवानं पृतन्यान् ।

क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम् ३

तीक्ष्णीयांसः परशोरभेस्तीक्ष्णतरा उत ।

इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः ४ ११०८

+अथर्व० २,३६,१;३=६० [अग्निः] २३३९-४० । अथर्व० २,३६,२ = ६० [सोमः] १२४३ । अथर्व० २,३६,५;७

= ६० [अदितिः] ६२३,७२९ ।

एषामहमायुधा सं स्याम्येषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि ।	
एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्ण्वेदेषां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः	५
उद्धर्षन्तां मघवन् वाजिनान्युद् वीराणां जयतामेतु घोषः ।	
पृथग् घोषा उलुलयः केतुमन्त उदीरताम् । देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया	६ १११०
प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः ।	
तीक्ष्णेष्वोऽबलधन्वनो हतोऽग्रायुधा अचलानुग्रवाहवः	७
अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।	
जयामित्रान् प्र पद्यस्व जह्येषां वरंवरं मामीषां मोचि कश्चन	८

॥१५८॥ (अथर्व० ३।२२।१-६)

वर्चः, बृहस्पतिः, विश्वे देवाः । अनुष्टुप्, १ विराट् त्रिष्टुप्, पञ्चपदा परानुष्टुप् विराडतिजगती,  
४ इयवसाना पदपदा जगती ।

हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो अदित्या यत् तन्वः संवभूव ।	
तत् सर्वे समदुर्महमेतद् विश्वे देवा अदितिः सजोषाः	१
मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च चेततु । देवासो विश्वधायसस्ते माञ्जन्तु वर्चसा	२
येन हस्ती वर्चसा संवभूव येन राजा मनुष्येष्विप्स्वन्तः ।	
येन देवा देवतामग्र आयन् तेन मामद्य वर्चसाभे वर्चस्विने कृणु	३ १११५
यत् ते वर्चो जातवेदो बृहद् भवत्याहुतेः ।	
यावत् सूर्यस्य वर्च आसुरस्य च हस्तिनेः ।	
तावन्मे अश्विना वर्च आ धत्तां पुष्करस्रजा	४
यावच्चतस्रः प्रदिशश्चक्षुर्यावत् समश्रुते ।	
तावत् समैत्विन्द्रियं मयि तद्धस्तिवर्चसम्	५
हस्ती मृगाणां सुषदांमतिष्ठावान् बभूव हि ।	
तस्य भगौन वर्चसाभि पिञ्चामि मामहम्	६

॥१५९॥ (अथर्व० ११।११।५-६)+

बहुदेवत्यम् । त्रिष्टुप् ।

ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।	
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५ १११९

+ अथर्व० १९, ११, १-४ = दै० [विश्वे० देवाः] ४।५९-६२ ।

दै० [विश्वे देवाः] ११



तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ।  
अशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सार्दनाय

६ ११२०

॥१६०॥ (अथर्व० १९।२२।१-२१)

(११२१-४१) अङ्गिराः । मन्त्रोक्ताः । १ साम्युष्णिक्, ३, १९ प्राजापत्या गायत्री; ४, ७, ११, १७ देवी  
जगती; ५, १२-१३ देवी त्रिष्टुप्; २, ६, १४-१६, २० देवी पञ्चक्तिः; ८-१० आसुरी जगती;  
१८ आसुर्यनुष्टुप्; २१ चतुष्पदा त्रिष्टुप् (१-२० एकावसानाः) ।

आङ्गिरसानामाद्यैः पञ्चानुवाकैः स्वाहा १	पृष्ठाय स्वाहा	२
सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा ३	नीलनखेभ्यः स्वाहा	४
हरितेभ्यः स्वाहा ५	क्षुद्रेभ्यः स्वाहा	६
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा ७	प्रथमेभ्यः स्वाहा	८
द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ९	तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	१०
उपोत्तमेभ्यः स्वाहा ११	उत्तमेभ्यः स्वाहा	१२
उत्तरेभ्यः स्वाहा १३	ऋषिभ्यः स्वाहा	१४
शिखिभ्यः स्वाहा १५	गणेभ्यः स्वाहा	१६
महागणेभ्यः स्वाहा १७	सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा	१८
पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा १९	ब्रह्मणे स्वाहा	२०
ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्ने ज्येष्ठं दिवमा तंतान ।		
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत्तं जज्ञे तेनाहति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः		

+२१ ११४१

॥१६१॥ (अथर्व० ४।८।१-७)

(११४२-४९) अथर्वाङ्गिराः । चन्द्रमाः, आपः, राज्याभिषेकः; १ राजा, २ देवाः, ३ विश्वरूपः,  
४-५ आपः । अनुष्टुप्; १, ७ भुरिक् त्रिष्टुप्, ३ त्रिष्टुप्, ५ विराट् प्रस्तारपञ्चक्तिः ।

भूतो भूतेषु पय आ दधाति स भूतानामधिपतिर्बभूव ।	
तस्य मृत्युश्चरति राजसूर्यं स राजा राज्यमनु मन्यतामिदम्	१
अभि प्रेहि मार्ष वेन उग्रश्चेत्ता संपलहा ।	
आ तिष्ठ मित्रवर्धन तुभ्यं देवा आधिं ब्रवन्	२
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषंस्त्रियं वसानश्चरति स्वरोचिः ।	
महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ	३ ११४४

व्याघ्रो अधि वैयाग्ने वि क्रमस्व दिशो महीः ।

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्त्वापो दिव्याः पर्यस्वतीः

४ ११४५

या आपो दिव्याः पर्यसा मदन्त्यन्तरिक्ष उत वा पृथिव्याम् ।

तासां त्वा सर्वासामपामभि विश्वाभि वर्चसा

५

अभि त्वा वर्चसासिचन्नापो दिव्याः पर्यस्वतीः ।

यथासौ मित्रवर्धनस्तथा त्वा सविता करत्

६

एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः सिंहं हिंन्वन्ति महते सौभगाय ।

समुद्रं न सुभ्रुवंस्तस्थिवासं मर्मृज्यन्ते द्वीपिनमप्स्वश्रुन्तः

७

॥१६२॥ (अथर्व० ७।११८।१)

चन्द्रमाः, वरुणः, देवः । त्रिष्टुप् ।

मर्माणि ते वर्मेणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।

उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु

१

॥१६३॥ (अथर्व० ६।१२३।१-५)

(११५० ५४) भृगुः । त्रिष्टुप्, ३ द्विपदा साम्न्यनुष्टुप्, ४ एकावसाना

द्विपदा प्राजापत्या भुरिगनुष्टुप् ।

एतं संघस्थाः परि वो ददामि यं शैवधिमावहांजातवेदाः ।

अन्वागन्ता यजमानः स्वस्ति तं स्म जानीत परमे व्योमिन्

१ ११५०

जानीत स्मैनं परमे व्योमिन् देवाः संघस्था विद लोकमत्र ।

अन्वागन्ता यजमानः स्वस्तीष्टिपुर्तं स्म कृणुताविरस्मै

२

देवाः पितरः पितरो देवाः । यो अस्मि सो अस्मि

३

स पंचामि स ददामि स यजे स दुत्तान्मा यूषम्

४

नाके राजन् प्रति तिष्ठ तत्रैतत् प्रति तिष्ठतु । विद्धि पुर्तस्य नो राजन्तस देव सुमना भव

॥१६४॥ (अथर्व० १९।२७।१-१५)

(११५५-६९) भृगुङ्गिराः । त्रिवृत्, चन्द्रमाश्च । अनुष्टुप्; ३,९ त्रिष्टुप्; १० जगती(?); ११ आर्च्य-

णिकः; १२ आर्च्यनुष्टुप्; १३ सास्त्री त्रिष्टुप् (११-१३ एकावसानाः)

गोभिष्ट्वा पात्वृषभो वृषां त्वा पातु वाजिभिः । वायुष्ट्वा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वा पात्विन्द्रियैः १

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यैः । माञ्चस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा घातः प्राणेन रक्षतु २

तिस्रो दिवस्तिस्त्रः पृथिवीस्त्रीण्यन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान् ।

त्रिवृतं स्तोमं त्रिवृत आप आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्धिः

३ ११५७

त्रीन्नाकांस्त्रीन्त्समुद्रांस्त्रीन् ब्रध्नांस्त्रीन् वैष्टपान् । त्रीन् मातरिश्चन्स्त्रीन्त्सूर्यान् गोमृन् कल्पयामि ते ४ ११५८  
 घृतेन त्वा सप्तुक्षाम्यग्न आज्येन वर्धयन् । अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दभन् ५  
 मा वः प्राणं मा वीऽपानं मा हरो मायिनो दभन् । आजन्तो विश्ववेदसो देवा दैव्येन धावत ६  
 प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः प्राणेन संहितः । प्राणेन विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन् ७  
 आयुषाऽऽयुःकृतां जीवायुंभान् जीव मा मृथाः । प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम् ८  
 देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रोऽन्वविन्दत् पथिभिर्देवयानैः ।  
 आपो हिरण्यं जुगुप्सुस्त्रिवृद्धिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृतां त्रिवृद्धिः ९  
 त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुप्स्वर्षन्तः ।  
 अस्मिश्चन्द्रे अधिः यद्विरण्यं तेनायं कृणवद् वीर्याणि १०  
 ये देवा द्विष्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ११ ११६५  
 ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १२  
 ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् १३  
 असपत्नं पुरस्तात् पश्चान्नो अभयं कृतम् । सविता मा दक्षिणत उत्तरान्मा शचीपतिः १४  
 दिवो मादित्या रक्षन्तु भूर्म्या रक्षन्त्वग्रयः ।  
 इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्ताद्दक्षिणावभितः शर्म यच्छताम् ।  
 तिरश्चीनध्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म १५

॥१६५॥ (अथर्व० ६।१०।१-३)

(११७०-७८) शन्तातिः । १ पृथिवी, श्रोत्रं, वनस्पतिः, अग्निः; २ प्राणः, अन्तरिक्षं, वयः, वायुः; ३ द्यौः, चक्षुः, नक्षत्राणि, सूर्यः । द्वैपदम्, १ सास्त्री त्रिष्टुप्. २ प्राजापत्या बृहती, ३ सास्त्री बृहती ।

पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्योऽग्रयेऽधिपतये स्वाहा १ ११७०  
 प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो वायवेऽधिपतये स्वाहा २  
 दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः सूर्यायाधिपतये स्वाहा ३

॥१६६॥ (अथर्व० ६।१९।१-३)

चन्द्रमा., १ देवजनाः, मनवः, विश्वा भूतानि, पवमानः. २ पवमानः; ३ सविता ।  
गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया । पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमानः पुनातु मा १  
 पवमानः पुनातु मा ऋत्वे दक्षाय जीवसे । अथो अरिष्टतातये २  
 उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । अस्मान् पुनीहि चक्षुमे ३ ११७५

॥१६७॥ (अथर्व० ६।१३।१-३)

रुद्रः, १ यमो मृत्युः शर्वः, २ भवः शर्वः, ३ विश्वे देवाः मरुतः अग्नीषोमौ वरुणः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् ।

यमो मृत्युरंघमारो निर्ऋथो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलाशिखण्डः ।

देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृञ्जन्तु वीरान् १

मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्र उत राज्ञे भवार्य ।

नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदुघविषा नयन्तु २

त्रार्यध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।

अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम ३

॥१६८॥ (अथर्व० ६।५३।१-२)+

(११७९-८०) बृहच्छुक्रः । १ द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता, भगः; २ वैश्वानरः,

१ जगती, २ त्रिष्टुप् ।

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रा बृहन् दक्षिणया पिपर्तु ।

अनु स्वधा चिकित्तां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च १

पुनः प्राणः पुनरात्मा न ऐतु पुनश्चक्षुः पुनरसुर्न ऐतु ।

वैश्वानरो नो अदब्धस्तनूपा अन्तस्तिष्ठाति दुरितानि विश्वा २ ११८०

॥१६९॥ (अथर्व० ६।६३।१-३)\*

(११८१-८३) बृहन्नः । १ निर्ऋतिः, २ यमः, ३ मृत्युः । जगती, २ अतिजगतीगर्भा ।

यत् ते देवी निर्ऋतिराबन्ध दामं ग्रीवास्वविमोक्तयं यत् ।

तत् ते वि प्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्भि प्रसृतः १

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोऽयस्प्रयान् वि चृता बन्धपाशान् ।

यमो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे २

अयस्मर्ये द्रुपदे वैधिष इहाभिहितो मृत्युभिर्ये सहस्रम् ।

यमेन त्वं पितृभिः संविदान उत्तमं नाकमधि रोहयेमम् ३

॥१७०॥ (अथर्व० ६।१०३।१-३)

(११८४-८६) उच्छोचनः । इन्द्राग्नीः १ बृहस्पतिः सविता मित्रो अर्यमा भगो अश्विनोः २-३ इन्द्रोऽग्निः;

अनुष्टुप् ।

संदानं वो बृहस्पतिः संदानं सविता करत् । संदानं मित्रो अर्यमा संदानं भगो अश्विनां १

सं परमान्तसमवमानथो सं द्यामि मध्यमान् । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् २

अग्नी ये युधमायान्ति केतून् कृत्वानीकशः । इन्द्रस्तान् पर्यहार्दाम्ना तानग्ने सं द्या त्वम् ३ ११८६

॥१७१॥ (अथर्व० ६।१२०।१-३)

(११८७-८९) कौशिकः । अन्तरिक्षं, पृथिवी, द्यौः, अग्निः । १ जगती, २ पङ्क्तिः, ३ त्रिष्टुप् ।

यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम ।

अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम्

१ ११८७

भूमिर्मातादिति नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः ।

द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा मावं पत्सि लोकात्

२

यत्रां सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः ।

अश्लोणा अश्लेरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्

३

॥१७२॥ (अथर्व० १४।२।५३-५८)

(११९०-१५) सूर्या स्त्वावित्री । अनुष्टुप् ।

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । वचो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि

५३ ११९०

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । तेजो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि

५४

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । भगो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि

५५

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । यशो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि

५६

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । पयो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि

५७

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वे देवा अधारयन् । रसो गोषु प्रविष्टो यस्तेनेमां सं सृजामसि

५८ ११९५

॥१७३॥ [११९६-९८] (अथर्व० २०।१२।५)

ये च देवा अयजन्ताथो ये च पराद्दिः । सूर्यो दिवमिष गत्वायं मघवा नो वि रंशते

५

॥१७४॥ (अथर्व० २०।१३।५।४,१०)

वी मे देवा अक्रंसताध्वर्यो क्षिप्रं प्रचरं । सुसत्यमिद् गवामस्यसि प्रसुदसि

४

देवा ददत्वासुरं तद् वी अस्तु सुचैतनम् । युष्मां अस्तु दिवैदिवे प्रत्येवं गृभायत

१०

देवाः ।

॥१७५॥ (ऋ० १।२७।१३)

(११९९) आजीगर्तिः शनःशेषः स कृमिभ्यो वैश्वामिभ्यो देवरातः । त्रिष्टुप् ।

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युधेभ्यो नम आशिनेभ्यः ।

पजाम देवान् यदि शकनवाम् मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः

१३ ११९९

॥१७६॥ (ऋ० १।४।१० [उत्तरार्धः])

(१२००) प्रस्कण्वः काण्वः । (सुदानवः देवाः) । अनुष्टुप् ।

अयं सोमः सुदानवस्तं पात त्तिरोअह्वयम्

१० १२००

॥१७७॥ (ऋ० १।९।८ [त्रयः पादाः])

(१२०१) कुत्स आङ्गिरसः । जगती ।

पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूर्ह्यः ।

तदा जानीतोत पुष्यता वचः

८

॥१७८॥ (ऋ० १।१६।५०)

(१२०२) दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः

५०

॥१७९॥ (ऋ० ७।१०।११)

(१२०३) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

परः सो अस्तु तन्वाङ्कु तनां च तिस्रः पृथिवीरथो अस्तु विश्वाः ।

प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तम्

११

॥१८०॥ (ऋ० ८।६३।१२)

(१२०४) प्रगाथः काण्वः । त्रिष्टुप् ।

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोपाः ।

यः शंसते स्तुवते धारिं पञ्च इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः

१२

॥१८१॥ (ऋ० ८।८०।१०)

(१२०५) एकद्युर्नोधसः । त्रिष्टुप् ।

अवीबृधद् वो अमृता अमन्दी देकद्युर्देवा उत याश्च देवीः ।

तस्मा उ राधः कृणुत प्रशस्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्

१० १२०५

॥१८२॥ (ऋ० १०।५।१२,४,६,८)

(१२०६-११) सौचीकोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।

को मा ददर्श कतमः स देवो यो मे तन्वो बहुधा पर्यपश्यत् ।

क्वाह मित्रावरुणा क्षियन्त्यग्नेर्विश्वाः समिधो देवयानीः

२

होत्राबृहं वरुण विश्वदायं नेदेव मा युनजन्नत्र देवाः ।

तस्य मे तन्वो बहुधा निर्विष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः

४ १२०७

अग्नेः पूर्वे आतरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीवुः ।  
 तस्माद्भिया वरुण दुरमायं गौरो न क्षेमोरविजे ज्यायाः ६ १२०८  
 प्रयाजान् मे अनुयाजोश्च केवला नूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम् ।  
 घृतं चापां पुरुषं चौषधीना मृशेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः ८

॥१८३॥ (ऋ० १०।५३।४-५)

तदद्य वाचः प्रथमं मंसीय येनासुरां अभि देवा असांम ।  
 ऊर्जाद उत यज्ञियासः पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम् ४ १२१०  
 पञ्च जना मम होत्रं जुपन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।  
 पृथिवी नः पार्थिवात् पात्वंहंसो ऽन्तरिक्षं दिव्यात् पात्वस्मान् ५

॥१८४॥ (ऋ० १०।७२।१-९)

(१२१२-२०) बृहस्पतिर्लोक्यः, बृहस्पतिराङ्गिरसो वा, अदितिर्दाक्षायणी वा । अनुष्टुप् ।

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपुन्यया । उक्थेष्टु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरे युगे १  
 ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारं इवाधमत् । देवानां पूर्व्ये युगे ऽसंतः सदजायत २  
 देवानां युगे प्रथमे ऽसंतः सदजायत । तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदुस्परि ३  
 भूर्जेज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त । अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि ४ १२१५  
 अदितिर्हर्जनिष्ट दक्ष या दुहिते तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ५  
 यद्देवा अदः संलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत । अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत ६  
 यद्देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत । अत्रा समुद्र आ गूळह मा सूर्यमजभर्तन ७  
 अष्टौ पुत्रासो अदिते ये जातास्तन्वोस्परि । देवा उप प्रैत् सप्तभिः परां मार्ताण्डमास्यत् ८  
 सप्तभिः पुत्रैरदिति रूपा प्रैत् पूर्व्य युगम् । प्रजायै मृत्यवे त्वत् पुनर्मार्ताण्डमाभरत् ९ १२२०

॥१८५॥ (ऋ० १०।८५।१७ )

(१२२१) सूर्या सावित्री ऋषिका । अनुष्टुप् ।

सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च । ये भूतस्य प्रचेतस इदं तेभ्योऽकरं नमः १७

॥१८६॥ (ऋ० १०।९८।१-१२)

(१२२२-३३) देवापिराष्टिषेणः (वृष्टिकामः) । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा ।  
 आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वा न्तस पर्जन्यं शतं नवे वृषाय

आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान् त्वद्देवापे अभि मामंगच्छत् ।	
प्रतीचीनः प्रति मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वाचमासन् २	२
अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन् बृहस्पते अनमीवामिषिराम् ।	
यया वृष्टिं शंतनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश ३	३
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्त्विन्द्रं देह्यधिरथं सहस्रम् ।	
नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान् देवापे हविषा सपर्य ४ १२२५	४ १२२५
आष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवार्पिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।	
स उत्तरस्मादधरं समुद्रमपो दिव्या असृजद्वर्ष्या अभि ५	५
अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।	
ता अद्रवन्नाष्टिषेणेन सृष्टा देवार्पिना प्रेषिता मृक्षिणीषु ६	६
यद्देवापिः शंतनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेत् ।	
देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् ७	७
यं त्वा देवार्पिः शुशुचानो अग्न आष्टिषेणो मनुष्यः समीधे ।	
विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ८	८
त्वां पूर्वं ऋषयो गीर्भिरायन् त्वामध्वरेषु पुरुहूत विश्वे ।	
सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदश्वोप याहि ९ १२३०	९ १२३०
एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।	
तेभिर्वर्धस्व तन्वंः शूर पूर्वीर्दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरिहि १०	१०
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्राय भागम् ।	
विद्वान् पथ ऋतुशो देवयानानप्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ११	११
अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा ऽपामीवामप रक्षांसि सेध ।	
अस्मात् समुद्राद् बृहतो दिवो नो ऽपां भूमानमुप नः सृजेह १२	१२
॥१८७॥ [१२३४-६३] (वा० य० १।८)	
देवानामसि वह्नितम् सस्मितम् पधितम् जुष्टतमं देवहूतमम् ८	८
॥१८८॥ (वा० य० २।७,२१)	
नमो देवेभ्यः ७	७
देवां गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित । मनसस्पत इमं देव यज्ञं स्वाहा वार्ते धाः २१ १२३६	२१ १२३६



॥१८९॥ (वा० य० ६।११)

स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा

११ १२३७

॥१९०॥ (वा० य० ७।३, १२, १७, २२, २६)

देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः

+३।

देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु

१२

देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्तु

१७

देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि २२। देवानामुत्क्रमणमसि

२६

॥१९१॥ (वा० य० ८।१८, २७, ४३, ६०)

सुगा वो देवाः सदेना अकर्म य आजग्मेदः सर्वनं जुषाणाः ।

भरमाणा वहमाना हवीःष्यसे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा

\*१८

देवानां समिदसि

२७

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति ।

एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृते ब्रूतात्

४३ १२४५

देवान् दिवमगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यान्तरिक्षमगन् यज्ञस्ततो

मा द्रविणमष्टु पितृन् पृथिवीमगन् यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु यं कं च

लोकमगन् यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत्

६०

॥१९२॥ (वा० य० ९।३५-३६)

विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात् सद्भ्यः स्वाहा

३५

ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात् सदस्तेभ्यः स्वाहा

३६

॥१९३॥ (वा० य० १५।५०)

तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ।

नाकं गृह्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीयं पृष्ठे अर्धं रोचने दिवः

५०

॥१९४॥ (वा० य० १७।५६)

दैव्याय धत्रे जोष्ट्रे देवश्रीः श्रीमनाः शतर्पयाः ।

परिगृह्य देवा यज्ञमायन् देवा देवेभ्यो अध्वर्यन्तो अस्थुः

५६

॥१९५॥ (वा० य० १८।६०)

एतं जानाथ परमे व्योमन् देवाः सधस्था विद रूपमस्य ।

यदागच्छात् पथिभिर्देवानैरिष्टापुत्तै कृणवाथाविरस्मै

६० १२५१

॥१९६॥ (वा० य० १९।१२)

देवा यज्ञमंतन्वत भेषजं भिषजाश्विना । वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधंतः १२

॥१९७॥ (वा० य० २०।१४)

यद् देवा देवहेडनं देवासश्चक्रुमा वयम् ।

अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहंसः

१४

॥१९८॥ (वा० य० २१।५३)

देवा देवानां भिषजा होताराविन्द्रमश्विना ।

वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मतिं होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने

वसुधेयस्य व्यन्तु यजं

५३

॥१९९॥ (वा० य० २६।१९)

अनु वीरैरनु पुण्यास्म गोभिरन्वश्चैरनु सर्वेण पुष्टैः ।

अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु

१९ १२५५

॥२००॥ (वा० य० २८।११)

देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु

११

॥२०१॥ (वा० य० २९।२०)

देवा इदस्य हविरद्यमायन् यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत्

२०

॥२०२॥ (वा० य० ३१।१४-१५,२१)

यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमंतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्विः १४

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।

देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबधन् पुरुषं पशुम्

१५

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात् तस्य देवा असन् वशं

२१ १२६०

॥२०३॥ (वा० य० ३३।७,४८,८९)

श्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।

औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त

७

अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो ।

उभा नासत्या रुद्रो अध गाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त

४८

प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनता ।

अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः

८९ १२६३

## लिङ्गोक्ताः ।

॥२०४॥ (ऋ० १।१३६।६-७)

(१२६४-६५) परुच्छेपो दैवोदासिः । ६ अत्यष्टिः, ७ त्रिष्टुप् ।

इन्द्रमग्निमुपं स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि

६ १२६४

ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मंसीमहि स्वयंशसो मरुद्भिः ।

अग्निमित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च

७

॥२०५॥ (ऋ० १।३२।८)

(१२६६) गृन्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । अनुष्टुप् ।

या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती ।

इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये

८

॥२०६॥ (ऋ० १०।१४।७-९)

(१२६७-६९) वैवस्वतो यमः । (पितरो चा) । त्रिष्टुप् ।

प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्वेभिर्—र्यत्रां नः पूर्वे पितरः परेषुः ।

उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्

७

सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेने—ष्टापूतेन परमे व्योमन् ।

हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चाः

८

अपेत वीत वि च सर्पतातो ऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन् ।

अहोभिराङ्गिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै

९

॥२०७॥ [१२७०-१३९३] (वा० य० १।१२, १४)

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

देवीरापो अग्नेगुवो अग्नेपुवोऽग्रं इममद्य यज्ञं नयताग्ने यज्ञपतिं सुधातुं यज्ञपतिं

देवयुवम्

१२ १२७०

शर्मास्यवधूतं रक्षोऽवधूता अरातयोऽदित्यास्त्वगांसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु ।

अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु

१४

॥२०८॥ (वा० य० २।१, ५, १५, २०, २२, ३२)

कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्रये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

बर्हिरसि सुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

१ १२७२

समिदासि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदुभिर्शस्त्यै ।  
 सवितुर्बाहू स्थ ऊर्णप्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं देवेभ्य आ त्वा वसवो रुद्रा  
 आदित्याः सदन्तु

५

अग्नीषोर्मयोरुज्जितिमनूजेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि ।  
 अग्नीषोमौ तमपनुदतां योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेना-  
 पोहामि ।

इन्द्राद्योरुज्जितिमनूजेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि । इन्द्राग्नी तमपनुदतां० १५  
 अग्नेऽदब्धायोऽशीतम पाहि मां दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै पाहि  
 दुरन्न्या अविषं नः पितुं कृणु ।

सुषदा योनौ स्वाहा वाङ्मयै संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभग्निन्यै स्वाहा २० १२७५  
 सं बर्हिरेङ्क्तां हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सं मरुद्भिः ।

समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा २२

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय  
 नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे  
 नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो  
 देष्मैतर्द्धः पितरो वास आधत्त

३२

॥२०९॥ (वा० य० ३।५, ९-१०)

भूर्भुवः स्वर्घौरिव भूमा पृथिवीव वरिष्णा ।

तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निर्मन्नादमन्नाद्यादाधे ५

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।

अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।

ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ९

सजूदेवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या । जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ॥

सजूदेवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या । जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा १०

॥२१०॥ (वा० य० ४।७, २६)

आकृत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहा

सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा ।

आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी उरो अन्तरिक्ष ।

बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा

७ १२८१

शुक्रं त्वां शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेणामृतमृतेन ।  
सग्मे ते गोरस्मे ते चन्द्राणि तपसस्तनूरांसि प्रजापतेर्वर्णः परमेण पशुना क्रीयसे  
सहस्रपोषं पुषेयम्

२६ १२८२

॥२११॥ (वा० य० ५।२, ७, ९)

अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ उर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवा असि ।  
गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा  
छन्दसा मन्थामि

२

अशुरशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।

आ तुभ्यमिन्द्रः प्यार्यतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।

आप्याययासान्त्सखीन्त्सन्या मेधया स्वास्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।

एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम्

७

तप्सार्यनी मेऽसि वित्तार्यनी मेऽस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथितात् ।

विदेदुग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर आयुना नाम्नेहि योऽस्यां पृथिव्यामसि

यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदुग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर आयुना

नाग्नेहि यो द्वितीयस्यां पृथिव्यामसि यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा

दधे विदेदुग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर आयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां

पृथिव्यामसि यत् तेऽनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे ।

अनु त्वा देववीतये

९ १२८५

॥२१२॥ (वा० य० ६।७, ९, १५-१६, १८, २०-२१, २३, २६)

उपावीरस्युप देवान् देवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान् ।

देवं त्वष्टुर्वसुं रम हव्या ते स्वदन्ताम्

७

देवस्य त्वा सवितुः प्रसन्नेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनाज्मि ।

अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योऽनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूध्यः ।

अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि

९

मनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्त आप्यायतांश्च

श्रोत्रं त आप्यायताम् ।

यत् ते क्रूरं यदास्थितं तत् त आप्यायतां निष्टयायतां तत् ते शुध्यतु शमहोभ्यः ।

ओषधे त्रायस्व स्वधिते मेनश्च हिंसीः

१५ १२८८

रक्षसां भागोऽसि निरस्तथ रक्ष इदमहथ रक्षोऽभितिष्ठामीदमह रक्षोऽवबाध  
इदमहथ रक्षोऽधमं तमो नयामि ।

घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा  
स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्

१६

सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम् ।

रेडस्यग्निष्ठां श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन् वारस्य त्वा भ्राज्यै पूष्णो रक्षा  
ऊष्मणो व्यथिषत् प्रयुतं द्वेषः

१८ १२९०

ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः ।

देवं त्वष्टर्भूरिं ते सथ संमेतु सलक्ष्मा यद्विषुरूपं भवति ।

देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु

२०

समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवथ संवितारं गच्छ स्वाहा

मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दाथसि गच्छ स्वाहा

द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं

नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दिं यच्छ दिवं

ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा

२१

हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँर आर्विवासति ।

हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्माँर अस्तु सूर्यः

२३

सोमं राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।

शृणोत्वग्निः समिधा हव मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः ।

श्रोतां ग्रावाणो विदुषो न यज्ञथ शृणोतु देवः संविता हव मे स्वाहा

२६

॥२१३॥ (वा० य० ७।२-३, १५, १८, २०, २२, २३, २७-२८, ४५-४७)+

मधुमतीर्न इषस्कृधि यत् ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै ते सोम

सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वृन्तरिक्षमन्वोमि

२

स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्स्वाष्टु स्वाहा

त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवाथशो यस्मै त्वेडे तत्

सत्यमुपरिप्रता भङ्गेन हतोऽसौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा

३ १२९६

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्मा इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।

तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत् स्वाहायाडग्नीत् १५ १२९७

सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम् ।

सञ्जगमानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्को मन्थिनोऽधिष्ठानमसि १८

उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽसि स्वाग्रयणः ।

पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु विष्णुं त्वं पाह्यभि सर्वनानि पाहि २०

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा बृहद्व्रते वयस्वत उक्थाव्यं गृह्णामि ।

यत् त इन्द्र बृहद्व्रयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वैष ते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा देवेभ्यस्त्वा

देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि

२२ १३००

मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे

गृह्णामीन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं

यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामीन्द्रा-

विष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्याऽऽयुषे गृह्णामि

२३

प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानार्य मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानार्य मे

वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतुदक्षाभ्यां मे वर्चोदा

वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुभ्यां मे वर्चोदसौ

वर्चसे पवेथाम्

२७

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वाऽऽयुषे मे वर्चोदा

वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्

२८

रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभ्रजतु ।

ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः

४५

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयं सुधातुदक्षिणम् ।

असद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत

४६

अग्रये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीयाऽऽयुदात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्र-

हीत्रे रुद्राय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय प्राणो दात्र एधि

वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे बृहस्पतये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोऽमृतत्वमशीय

त्वग्दात्र एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे यमाय त्वा मह्यं वरुणो ददातु

सोऽमृतत्वमशीय हयो दात्र एधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे

४७ १३०६

॥२१४॥ (वा० य० ८१९, ५४-५९)

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम त इन्द्रोरिन्द्रियावतः पत्नीवतो  
ग्रहो२ ऋध्यासम् ।

अहं परस्तादुहमवस्ताद्यदन्तरिक्षं तद् मे पिताभूत् ।

अहं५ सूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत् ९

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धो अच्छेतः ।

सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायौ पूषा सौमक्रयण्याम् ५४

इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयाद्योपोत्थितोऽसुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो विष्णुः शिपिविष्ट

उरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः ५५

प्रोक्षमाणः सोम आगतो वरुण आसन्ध्यामासन्नोऽभिराग्नीध्र इन्द्रो हविर्धानेऽथ-  
र्वोपावहियमाणः ५६ १३१०

विश्वे देवा अंशुषु न्युमो विष्णुराप्रीतपा आप्यायमानो यमः सूर्यमानो

विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी

सक्तुश्रीः ५७

विश्वे देवाश्चमसेषूक्रीतोऽसुहोमायोद्यतो रुद्रो हूयमानो वातोऽभ्यावृत्तो नृचक्षाः

प्रतिख्यातो भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराशंसाः ५८

सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवहियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोर्जसा

स्कभिता रजांसि वीर्येभिर्वीरितमा शविष्ठा । या पत्यैते अप्रतीता सहोभि-

विष्णू अगन् वरुणा पूर्वहूतौ +५९

॥२१५॥ (वा० य० ९१९-१२, २४, ३१-३६)

जवो यस्तं वाजिभिर्हितो गुहा यः श्येने परीत्तो अचरञ्च वार्ते ।

तेन नो वाजिन् बलवान् बलेन वाजजिञ्च भव समने च पारयिष्णुः ।

वाजिनो वाजजितो वाजंश्च सरिष्यन्तो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत १९

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकं रुहेयम् ।

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यसवस इन्द्रस्योत्तमं नाकं रुहेयम् ।

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकमरुहम् ।

देवस्याहं सवितुः सवे सत्यप्रसवस इन्द्रस्योत्तमं नाकमरुहम् १० १३१५



- बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये वाचं वदत बृहस्पतिं वाजं जापयत ।  
 इन्द्र वाजं जयेन्द्राय वाचं वदतेन्द्रं वाजं जापयत ११ १३१६
- एषा वः सा सत्या संवार्गभूद्यया बृहस्पतिं वाजमजीजपताजीजपत बृहस्पतिं वाजं  
 वनेस्पतयो विमुच्यध्वम् ।
- एषा वः सा सत्या संवार्गभूद्ययेन्द्रं वाजमजीजपताजीजपतेन्द्रं वाजं० १२  
 वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवनानि सत्राद् ।  
 अदित्सन्तं दापयति प्रजानन्त्स नो रयिं सर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा २४  
 अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत् तमुजेषमश्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदौ मनुष्यानुदजयतां  
 तानुज्जेषं विष्णुस्यक्षरेण त्रींल्लोकानुदजयत् तानुज्जेषं सोमश्चतुरक्षरेण  
 चतुष्पदः पशुनुदजयत् तानुज्जेषम् ३१
- पूषा पश्चाक्षरेण पञ्च दिश उदजयत् ता उज्जेषं सविता षडक्षरेण षडतूनुद-  
 जयत् तानुजेषं मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशुनुदजयंस्तानुजेषं  
 बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत् तामुजेषम् ३२ १३२०
- मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतं स्तोममुदजयत् तमुजेषं वरुणो दशाक्षरेण विराजमुद-  
 जयत् तामुजेषमिन्द्र एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत् तामुजेषं विश्वं देवा  
 द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयंस्तामुजेषम् ३३
- वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशं स्तोममुदजयंस्तमुजेषं रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण  
 चतुर्दशं स्तोममुदजयंस्तमुजेषमादित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदशं  
 स्तोममुदजयंस्तमुज्जेषमदितिः षोडशाक्षरेण षोडशं स्तोममुदजयत्  
 तमुज्जेषं प्रजापतिः सप्तदशाक्षरेण सप्तदशं स्तोममुदजयत् तमुज्जेषम् ३४
- एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाऽग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा  
 यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चा-  
 त्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुत्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरासद्भ्यः  
 स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसद्भ्यो दुर्वस्वद्भ्यः स्वाहा ३५
- ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणासदस्तेभ्यः  
 स्वाहा ये देवा विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा मित्रा-  
 वरुणनेत्रा वा मरुत्नेत्रा वोत्तरासदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवाः सोमनेत्रा  
 उपरिसदो दुर्वस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ३६ १३२४

॥२१६॥ (वा० य० १०।१,९,२१,२३,२८,३१)

सोमस्य त्विषिरसि तवैव मे त्विषिर्भूयात् ।

अग्रये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा

बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहाऽऽशाय स्वाहा

भगाय स्वाहाऽर्यम्णे स्वाहा

५ १३२५

आविर्मर्या आवित्तो अग्निर्गृहपतिरावित्त इन्द्रो वृद्धश्रवा आवित्तौ मित्रावरुणौ

धृतव्रतावित्तः पूषा विश्ववेदा आवित्ते द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवावा-

वित्तादितिरुरुशर्मा

९

इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि ।

अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वाऽरिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापामं मनसा

समिन्द्रियेण

२१

अग्रये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा मरुतामोजसे स्वाहेन्द्रस्ये-

न्द्रियाय स्वाहा ।

पृथिवि मातर्मा मां हिःसीमो अहं त्वाम्

२३

अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः कल्पन्तां ब्रह्मस्त्वं ब्रह्माऽसि सविताऽसि सत्यप्रसवो

वरुणोऽसि सत्यौजा इन्द्रोऽसि विशौजा रुद्रोऽसि सुशेवः ।

बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेन्द्रस्य वज्रोऽसि तेन मे रध्य

२८

अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व ।

वायुः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्कसोमो अतिस्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा

३१ १३३०

॥२१७॥ (वा० य० ११।१८,६६)

वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि पृथिव्यसि धारया मरिचं

प्रजां च रायस्पोषं गौपत्यं च सुवीर्यं च सजातान् यजमानाय रुद्रास्त्वा

कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवास्यन्तरिक्षमसि धारया मरिचं प्रजां च

रायस्पोषं गौपत्यं च सुवीर्यं च सजातान् यजमानायादित्यास्त्वा कृण्वन्तु

जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि द्यौरसि धारया मरिचं प्रजां च रायस्पोषं

गौपत्यं च सुवीर्यं च सजातान् यजमानाय विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः

कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद् ध्रुवासि दिशोऽसि धारया मरिचं प्रजां च

रायस्पोषं गौपत्यं च सुवीर्यं च सजातान् यजमानाय

५८ १३३१

आकृतिमग्निं प्रयुजथ स्वाहा मनो मेधामग्निं प्रयुजथ स्वाहा चित्तं विज्ञातमग्निं  
प्रयुजथ स्वाहा वाचो विधृतिमग्निं प्रयुजथ स्वाहा प्रजापतये मनवे  
स्वाहाऽग्नये वैश्वानराय स्वाहा

६६ १३३२

॥२१८॥ (वा० य० १२।४५,५४,७४)

अपेत वीत वि च सर्पतातो येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः ।

अदाद्यमोऽवसानं पृथिव्या अक्रन्मिमं पितरो लोकमस्मै

४५

लोकं पृण छिद्रं पृणार्थो सीद ध्रुवा त्वम् ।

इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरसिन् योनावसीषदन्

५४

सजूरब्दो अयवोभिः सजूरुषा अरुणीभिः ।

सजोषसावश्विना दशसोभिः सजूः सूर एतेशेन सजूर्वैश्वानर इड्या घृतेन स्वाहा ७४

१३३५

॥२१९॥ (वा० य० १३।२,३८)

अपां पृष्टमसि योनिरग्नेः समुद्रमभितः पिन्वमानम् ।

वर्धमानो महौ२ आ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व

२

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पयमानाः ।

घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्ये अग्नेः

३८

॥२२०॥ (वा० य० १४।९-१०,१७-१९,२३-२६)

मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः क्षत्रं वयो मयश्छन्दं छन्दो विष्टमभो वयोऽधि-

पतिश्छन्दो विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दो वस्तो वयो विबलं छन्दो

वृष्णिर्वयो विशालं छन्दः पुरुषो वयस्तन्द्रं छन्दो व्याघ्रो वयोऽनाधृष्टं

छन्दः सिंथो वयश्छदिश्छन्दः पष्टवाड् वयो बृहती छन्द उक्षा वयः

ककुप् छन्द ऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः

९

अनड्वान् वयः पङ्क्तिश्छन्दो धेनुर्वयो जगती छन्दस्त्रयविर्वयस्त्रिष्टुप् छन्दो

दित्यवाड् वयो विराट् छन्दः पञ्चाविर्वयो गायत्री छन्दस्त्रिवत्सो वय उष्णिक्

छन्दस्तुर्थवाड् वयोऽनुष्टुप् छन्दो लोकं ता इन्द्रम्

१०

आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि ध्यानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे

पाहि वाचं मे पिन्व मनो मे जिन्वाऽऽत्मानं मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ

१७

मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दो अस्त्रीवयश्छन्दः पङ्क्तिश्छन्द उष्णिक्

छन्दो बृहती छन्दोऽनुष्टुप् छन्दो विराट् छन्दो गायत्री छन्दस्त्रिष्टुप्

छन्दो जगती छन्दः

१८ १३४१

पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणि छन्दो वाक्  
 छन्दो मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दोऽजाश्छन्दोऽश्वश्छन्दः १९  
 आशुस्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योमा सप्तदशो धरुण एकविंशः प्रतूर्तिरष्टादश-  
 स्तपो नवदशोऽभीवर्त्तः सविंशो वर्चो द्वाविंशः सम्भरणस्त्रयोविंशो  
 योनिश्चतुर्विंशो गर्भोः पञ्चविंश ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकत्रिंशः प्रतिष्ठा  
 त्रयस्त्रिंशो ब्रह्मस्य विष्टपं चतुस्त्रिंशो नाकः षट्त्रिंशो धिर्वर्त्तोऽष्टाच-  
 त्वारिंशो धर्त्रं चतुष्टोमः २३

अग्नेर्भागोऽसि दीक्षायामाधिपत्यं ब्रह्म स्पृतं त्रिवृत्स्तोम इन्द्रस्य भागोऽसि  
 विष्णोराधिपत्यं क्षत्रं स्पृतं पञ्चदश स्तोमो नृचक्षसां भागोऽसि धातुराधि-  
 पत्यं जनित्रं स्पृतं सप्तदश स्तोमो मित्रस्य भागोऽसि वरुणस्याधिपत्यं  
 दिवो वृष्टिर्वातं स्पृत एकविंश स्तोमः २४

वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं चतुष्पात् स्पृतं चतुर्विंश स्तोम आदित्यानां  
 भागोऽसि मरुतामाधिपत्यं गर्भो स्पृताः पञ्चविंश स्तोमोऽदित्यै भागोऽसि  
 पूष्ण आधिपत्यमोजं स्पृतं त्रिणव स्तोमो देवस्य सवितुर्भागोऽसि  
 बृहस्पतेराधिपत्यं समीचीर्दिशं स्पृताश्चतुष्टोम स्तोमः २५ १३४५

यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं प्रजा स्पृताश्चतुश्चत्वारिंश स्तोमं क्रभूणां  
 भागोऽसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूतं स्पृतं त्रयस्त्रिंश स्तोमः २६

॥२२१॥ (वा० य० १५३-१९)

षोडशी स्तोम ओजो द्रविणं चतुश्चत्वारिंश स्तोमो वर्चो द्रविणम् ।

अग्नेः पुरीषमस्यप्तो नाम तां त्वा विश्वे अभिगृणन्तु देवाः ।

स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदुस्मे द्रविणायजस्व ३

एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः शम्भूश्छन्दः परिभूश्छन्द आच्छच्छन्दो मनश्छन्दो  
 व्यश्छन्दः सिन्धुश्छन्दः समुद्रश्छन्दः सरिरं छन्दः ककुच्छन्दस्त्रिककुच्छन्दः  
 काव्यं छन्दो अङ्कूपं छन्दोऽक्षरपङ्क्तिश्छन्दः पदपङ्क्तिश्छन्दो विष्टारप-  
 ङ्क्तिश्छन्दः क्षुरोभ्रजश्छन्दः ४

आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः संयच्छन्दो वियच्छन्दो बृहच्छन्दो रथन्तरश्छन्दो  
 निकायश्छन्दो विवधश्छन्दो गिरश्छन्दो भ्रजश्छन्दः सस्त्पुच्छन्दोऽनुष्टु-  
 प्छन्द एवश्छन्दो वरिवश्छन्दो वयश्छन्दो वयस्कृच्छन्दो विष्पर्धाश्छन्दो  
 विशालं छन्दश्छदिश्छन्दो दूरोहणं छन्दस्तन्द्रं छन्दो अङ्काङ्गं छन्दः ५ १३४९

रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व प्रेतिना धर्मणा धर्मं जिन्वान्वित्या दिवा दिवं  
जिन्व सन्धिनान्तरिक्षेणान्तरिक्षं जिन्व प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीं जिन्व  
विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व प्रवयाह्वाहर्जिन्वानुया रात्र्या रात्रीं जिन्वोशिजा  
वसुभ्यो वस्राञ्जिन्व प्रकृतेनादित्येभ्य आदित्याञ्जिन्व

६ १३५०

तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं जिन्व सस्रुपेण श्रुताय श्रुतं जिन्वैडेनौषधी-  
भिरौषधीर्जिन्वोत्तमेन तनूभिस्तनूजिन्व वयोधसाधीतेनाधीतं जिन्वामिजिता  
तेजसा तेजो जिन्व

७

प्रतिपदसि प्रतिपदं त्वानुपदस्यनुपदं त्वा सम्पदसि सम्पदं त्वा तेजोऽसि  
तेजसे त्वा

८

त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वा विवृदसि विवृते त्वा सवृदसि सवृते  
त्वाक्रमोऽस्याक्रमाय त्वा संक्रमोऽसि संक्रमाय त्वोत्क्रमोऽस्युत्क्रमाय  
त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यै त्वाधिपतिनोर्जोर्जि जिन्व

९

राश्यसि प्राची दिग् वसवस्ते देवा अधिपतयोऽग्निर्हेतीनां प्रतिधर्ता त्रिवृत्  
त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयत्वाज्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु रथन्तरऽ  
साम प्रतिष्ठित्या अन्तरिक्ष ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया  
वरिष्णा प्रथन्तु विधर्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य  
पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु

१०

विराडसि दक्षिणा दिग् रुद्रास्ते देवा अधिपतय इन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्ता  
पञ्चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयतु प्र उगमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु  
बृहत्साम प्रतिष्ठित्या०

११ १३५५

सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते देवा अधिपतयो वरुणो हेतीनां प्रतिधर्ता  
सप्तदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु  
वैरूपऽसाम प्रतिष्ठित्या०

१२

स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवा अधिपतयः सोमो हेतीनां प्रतिधर्तैकवि-  
शस्त्वा स्तोमः पृथिव्याऽश्रयतु निष्कैवल्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु  
वैराजऽसाम प्रतिष्ठित्या०

१३ १३५७

अधिपत्न्यसि बृहती दिग् विश्वे ते देवा अधिपतयो बृहस्पतिर्हतीनां प्रतिधृता  
त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ त्वा स्तोमौ पृथिव्याः श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे  
अव्यथायै स्तम्नीताः शाकवरैर्वृते सामनी प्रतिष्ठित्या० १४

अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ ।  
पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसौ दुङ्क्षणवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वधः  
प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं दिष्मो यश्च  
नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः १५

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्यौ ।  
मेनका च सहजुन्या चाप्सरसौ यातुधाना हेती रक्षाःसि प्रहेतिस्तेभ्यो० १६ १३६०

अयं पश्चाद्विश्वव्यं चास्तस्य रथप्रोतश्चासमरथश्च सेनानीग्रामण्यौ ।  
प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसौ व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिस्तेभ्यो० १७

अयमुत्तरात् संयद्वसुस्तस्य ताक्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्यौ ।  
विश्वाची च घृताची चाप्सरसावापो हेतिर्वातः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु० १८

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्यौ ।  
उर्वशी च पूर्वचित्तिश्चाप्सरसाववस्फूर्जन् हेतिर्विद्युत् प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु० १९

॥२२२॥ ( वा० य० १७।४८, ५२ ) +

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।

तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ४८  
यस्य कुर्मो गृहे हविस्तममे वर्धया त्वम् । तस्मै देवा अधिभुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः ५२ १३६५

॥२२३॥ ( वा० य० १८।३७ )

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।  
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ३७

॥२२४॥ ( वा० य० २०।३, १३, १७-१८ )

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।  
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्याया-  
न्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि ३ १३६७

लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ् म आनतिरागतिः ।	
मा५सं म उपनतिर्वस्वस्थि मज्जा म आनतिः	१३
यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां यदिन्द्रिये ।	
यच्छूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयं यदेकस्याधि धर्माणि तस्यावयजनमसि	१७
यदापो अघ्न्या इति वरुणेति शर्षामहे ततो वरुण नो मुञ्च ।	
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।	
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयक्षयव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि	१८ १३७०

॥२२५॥ (वा० य० २१।४१-४३, ६०-६१)×

होता यक्षदुश्चिनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषतां५ हविर्होतयर्ज ।	
होता यक्षत् सरस्वतीं मेघस्य वपाया मेदसो जुषतां५ हविर्होतयर्ज ।	
होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य वपाया मेदसो जुषतां५ हविर्होतयर्ज	४१
होता यक्षदुश्चिनौ सरस्वतीमिन्द्रं५ सुत्रामाणमिमे सोमाः सुरामाणश्छागैर्न मेघैर्ऋषभैः सुताः शष्पैर्न तोकर्मभिर्लाजैर्महस्वन्तो मदा मासरेण परिष्कृताः शुक्राः पर्यस्वन्तोऽमृताः प्रस्थिता वो मधुश्चुतस्तानश्चिना सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्तां५ सोम्यं मधु पिबन्तु मदन्तु व्यन्तु होतयर्ज	४२
होता यक्षदुश्चिनौ छागस्य हविष आत्तामद्य मध्यतो मेद उद्धृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घस्तां नूनं वासे अज्राणां यवसप्रथमानां५ सुमत्क्षराणां५ शतरुद्रियाणामग्निवात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोणितः शितामत उत्सादतोऽङ्गादङ्गादवत्तानां करत एवाश्चिना जुषतां५ हविर्होतयर्ज	४३
सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदुश्चिभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेषेणेन्द्राय ऋषभेणाक्षंस्तान् मेदस्तः प्रति पचतागृभीषतावीवृधन्त पुरोडाशैरपुरश्चिना सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान्	६०
त्वामद्य ऋष आर्षेय ऋषीणां नपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्य आ सङ्गतेभ्य एष मे देवेषु वसु वार्यायक्षयत इति ता या देवा देव दानान्यदुस्तान्यस्मा आ च शास्वा च गुरस्वेषितश्च होतरसि भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः सक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि	६१ १३७५

॥२२६॥ (वा० य० २३।८, १३, १८-२०, २६-२७, ६३)

वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाऽऽदित्यास्त्वाञ्जन्तु  
जागतेन छन्दसा ।

भूर्भुवःस्वर्लाजीश्छाचीश्न्यव्ये गव्य एतदन्नमत्त देवा एतदन्नमद्वि प्रजापते ८  
वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितप्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्ध्या ।

एष स्य राधयो वृषा पद्भिश्चतुभिरेदगन् ब्रह्मा कृष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्नये १३  
प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।

अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् १८

गणानां त्वा गुणपतिः हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिः हवामहे निधीनां  
त्वा निधिपतिः हवामहे वसो मम ।

आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् १९

ता उभौ चतुरः पदः संप्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथां वृषा वाजी रेतोधा  
रेतो दधातु २० १३८०

ऊर्ध्वमेनामुच्छ्रापय गिरौ भारः हरंभिव । अथास्यै मध्यमेघताः शीते वार्ते पुनर्भिव २६

ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताद्गिरौ भारः हरंभिव । अथास्य मध्यमेजतु शीते वार्ते पुनर्भिव २७

सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्महत्पर्णवे ।

दुधे ह गर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः ६३

॥२२७॥ (वा० य० २६।१-२)

अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सं नमतामदो वायुश्चाऽन्तरिक्षं च सन्नते ते

मे सं नमतामद आदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सं नमतामद आपश्च वरुणश्च  
सन्नते ते मे सं नमतामदः ।

सप्त सःसदो अष्टमी भूतसाधनी सकामो २ अध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेऽमुना १

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।

ब्रह्मराजन्याभ्याः शुद्राय चार्थीय च स्वाय चारणाय च ।

प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु २ १३८५

दे० [विश्वे देवाः] १४



॥२२८॥ (वा०य० २८।२३,४३)

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशं बध्नन्निन्द्राय  
छागम् ।

सुपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय छागेन ।

अद्यत्तं भेदुस्तः प्रति पचताग्रभीदवीवृधत् पुरोडाशेन । त्वामद्य ऋषे २३ १३८६

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत् ।

द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद् वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज ४३

॥२२९॥ (वा० य० २९।४७)

ब्राह्मणामः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।

पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा मार्किनो अघशंस ईशत ४७

॥२३०॥ (वा० य० ३१।१५)×

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः ।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा १५

॥२३१॥ (वा० य० ३५।३,१२)\*

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा ।

वि मुच्यन्तामुस्त्रियाः ३ १३९०

अपाघमप किल्विपमप कृत्यामपो रपः । अपामार्गं त्वमस्सदपं दुःष्वण्यं सुव ११

॥२३२॥ (वा० य० ३६।१)

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये सामं प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये ।

वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ १

॥२३३॥ (वा० य० ३८।४,१५)

अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्व ।

स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् ४

स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा प्रावभ्यः स्वाहा प्रतियेभ्यः ।

स्वाहा पितृभ्य ऊर्ध्वर्चर्हिभ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां

स्वाहा विश्वभ्यो देवेभ्यः १५ १३९४

×वा० य० ३३,५७-५८=दे० [अदितिः०] १३६; सा० ८४७; दे० [अश्विनौ] ३ । वा० य० ३४,४६=दे० [विश्वे देवः] ८०८ ।

वा० य० ३५ ४=दे० [आयुर्वेद०] ३०५ ।

॥२३४॥ (सा० २९९)

(१३९५-९७) वामदेवो गौतमः । बहुः । बृहती ।

१ २ ३ १ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २  
त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।

२ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २  
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिनुं पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः

२९९ १३९५

॥२३५॥ (सा० ५९१) एकपाज्जमती ।

३ १ २ २ ३ २ ३ २ ३ २  
इमं वृषणं कृणुतेकमिन्माम्

५९१

॥२३६॥ (सा० ६११) महापङ्क्तिः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ ३ २ ३ २  
यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रवृहस्पती ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।

३ २ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २  
यशसाऽऽस्याः संसदाऽहं प्रवदिता स्याम्

६११

॥२३७॥ (सा० ३६८)

(१३९८) त्रित आप्तयः । अनुष्टुप् ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २  
अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २  
कद्र ऋतं कदमृतं का प्रतना व आहुतिः

३६८

॥२३८॥ (सा० ४४२)

(१३९९) त्रसदस्युः । द्विपदा विराट् ।

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः

४४२

॥२३९॥ (सा० ४५३)

(१४००) कवच ऐतूपः । द्विपदा विराट् ।

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २  
वि स्तुतयो यथा पथा इन्द्र त्वघन्तु रातयः

४५३ १४००

॥२४०॥ (सा० ४५५)

(१४०१) आत्रेयः । द्विपदा विराट् ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र

४५५

॥२४१॥ (सा० १५०३-४) ×

(१४०२-३) अग्निस्तापसः । अनुष्टुप् ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २  
अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २  
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः

१५०३ १४०२

प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य वाजिनः ।

तनये तोक्रे अस्मदा सम्यङ्वाजैः परीवृतः

१५०४ १४०३

॥१४२॥ (सा० १८७२)

(१४०४) पायुर्भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ठयो जिघांसति ।

देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम्

१८७२

## नानादेवताः ।

॥१४३॥ (वा० य० १।१०)

आपये स्वाहा स्वापये स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहा  
ऽहर्षतये स्वाहा ऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनश्शिनाय स्वाहा  
विनश्शिनं आन्त्यायनाय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहा  
ऽधिपतये स्वाहा ॥२०॥

१४०५-१६

॥१४४॥ (वा० य० १०।५)

अग्रये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा  
बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहा ऽशाय स्वाहा  
भगाय स्वाहा ऽर्यम्णे स्वाहा ॥५॥

१४१७-२८

॥१४५॥ (वा० य० ११।६०, ६५)

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्व-  
दादित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन  
छन्दसाङ्गिरस्व-दिन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु ॥६०॥

१४२९-३५

वसवस्त्वाऽऽच्छृन्दतु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद् रुद्रास्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्व-  
दादित्यास्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा  
आच्छृन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥६५॥

१४३६-३९

॥२४६॥ (घा० य० १४।२८-३१)

एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त प्रजापतिरधिपतिरासीत् तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत् ब्रह्मणस्पति-  
रधिपतिरासीत् पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत् सप्तभिरस्तुवत सप्त  
ऋषयोऽसृज्यन्त धाताऽधिपतिरासीत् ॥२८॥ १४४०-४३

नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्तादिंतिरधिपत्न्यासी—देकादशभिरस्तुवत ऋतवोऽसृज्यन्तार्त्वा अधि-  
पतय आसँ—स्त्रयोदशभिरस्तुवत मासा असृज्यन्त संवत्सरोऽधिपतिरासीत् पञ्चदशभिरस्तुवत  
क्षत्रमसृज्यतेन्द्रोऽधिपतिरासीत् सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पशवोऽसृज्यन्त बृहस्पतिरधिपति-  
रासीत् ॥२९॥ १४४४-४८

नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येतामहोरात्रे अधिपत्नी आस्ता—मेकविंशत्यास्तुवतैकशफाः पशवो  
ऽसृज्यन्त वरुणोऽधिपतिरासीत् त्रयोविंशत्यास्तुवत क्षुद्राः पशवोऽसृज्यन्त पूषाऽधिपतिरासीत्  
पञ्चविंशत्यास्तुवतारण्याः पशवोऽसृज्यन्त वायुरधिपतिरासीत् सप्तविंशत्यास्तुवत द्यावापृथिवी  
व्यैतां वसवो रुद्रा आदित्या अनुव्यायँस्त एवाधिपतय आसन् ॥३०॥ १४४९-५३

नवविंशत्यास्तुवत वनस्पतयोऽसृज्यन्त सोमोऽधिपतिरासी—देकत्रिंशतास्तुवत प्रजा असृज्यन्त  
यवाश्चार्यवाश्चाधिपतय आसँ—स्त्रयस्त्रिंशतास्तुवत भूतान्यंशाम्यन् प्रजापतिः परमेष्ठ्यधिपतिरा-  
सीत् ॥३१॥ १४५४-५६

॥२४७॥ (घा० य० १८।१६-१८,२२)

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे  
पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१६॥

मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे  
मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१७॥

पृथिवी च म इन्द्रश्च मे ऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे  
नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१८॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मे ऽअर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे  
ऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽहुलंयः शकवरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२२॥

॥२४८॥ (वा० य० २२।५-८, २०, २२-३४)

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि  
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि ।

यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्यमीति वरुणः ॥५॥

१४८६-९१

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा ऽपां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा  
विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा

॥६॥ १४९२-१५०१

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा

प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निर्विष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा

सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा ऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा

जाग्रते स्वाहा कूर्जते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा

संस्थानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहा ऽऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥७॥ १५०२-२५

यते स्वाहा धावते स्वाहोद्वावाय स्वाहोद्हुताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा

निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्तमानाय स्वाहा

विषृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा

शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निभेषाय स्वाहा

यदात्ति तस्मै स्वाहा यत् पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा

कृताय स्वाहा ॥८॥

१५२६-५०

काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहाऽऽधिमाधीताय स्वाहा मनः

प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञातायाऽदित्यै स्वाहा ऽदित्यै महौ स्वाहा ऽदित्यै

सुमडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा

पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा

त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयषाय स्वाहा

विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा ॥२०॥

१५५१-७१

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्युः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो

जायतां दोग्ध्रीं धेनुर्वोढानङ्गानाशुः सप्तः पुरन्धिर्योषां जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य

यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां

योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥२२॥

१५७२

प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा  
वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥२३॥ १५७३-७९

प्राच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा  
प्रतीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहो—दीच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहो—  
ध्वार्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा  
॥२४॥ १५८०-९१

अद्भ्यः स्वाहा वाभ्यः स्वाहो—दुकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्तीभ्यः स्वाहा  
खन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा स्रवाभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहा  
ऽर्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा ॥२५॥ १५९२-६६०३

वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहा ऽभ्राय स्वाहा मेषाय स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा  
स्तनयते स्वाहा ऽवस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहा ऽववर्षते स्वाहो—ग्रं वर्षते स्वाहा  
शीघ्रं वर्षते स्वाहो—दृहते स्वाहो—दृहीताय स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा शिकायते स्वाहा  
पुष्वाभ्यः स्वाहा ऋदुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा ॥२६॥ १६०४-२१

अग्रये स्वाहा सोमाय स्वाहे—न्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा  
दिवे स्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा ऽऽशाभ्यः स्वाहो—र्व्यै दिशे स्वाहा ऽर्वाच्यै दिशे स्वाहा  
॥२७॥ १६२२-३१

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा ऽहोरात्रेभ्यः स्वाहा ऽर्धमासेभ्यः स्वाहा  
मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहा ऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा  
द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा  
वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहा ऽऽदित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा  
विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा  
गुप्तेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहो—षधीभ्यः स्वाहा ॥२८॥ १६३१-५४

पृथिव्यै स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा  
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा ऽद्भ्यः स्वाहो—षधीभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा  
रिष्वेभ्यः स्वाहा चराचरेभ्यः स्वाहा सरीसृपेभ्यः स्वाहा ॥२९॥ १६५५-६६

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा  
गणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा  
संस्पर्षाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा  
दिवा पतयते स्वाहा ॥३०॥

१६६७-८०

मध्वे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा  
नभस्याय स्वाहे षाय स्वाहो र्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा  
तर्पसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऽहसस्पतये स्वाहा ॥३१॥

१६८१-९३

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा ऽपिजाय स्वाहा ऋतवे स्वाहा स्वः स्वाहा  
मुधने स्वाहा व्यश्रुधिने स्वाहा ऽन्त्याय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा  
भुवनस्य पतये स्वाहा ऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥३२॥

१६९४-१७०५

आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ऽपानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा  
व्यानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा दानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा  
चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां स्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा  
मनो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ऽऽत्मा यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां स्वाहा  
ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा स्वर्ग्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां स्वाहा  
यज्ञो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा ॥३३॥

१७०६-२१

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्यां स्वाहा शताय स्वाहे कशताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा  
स्वर्गाय स्वाहा ॥३४॥

१७२२-२७

॥२४९॥ (वा० य० २४।१-४०)

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयो रराटे पुरस्तात्  
सारस्वती मेघ्युधस्ताद्वन्वो राश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्णः श्यामो नाभ्यां  
सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसंकथौ सक्थ्यो वीयव्यः श्वेतः पुच्छ  
इन्द्राय स्वपस्याय वेह द्वैष्णवो वामनः ॥१॥

१७२८-३७

रोहितो धूम्ररोहितः कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुररुणबभ्रुः शुक्रबभ्रुस्ते वारुणाः  
शितिरन्ध्रोऽन्यतः शितिरन्ध्रः समन्तशितिरन्ध्रस्ते सावित्राः शितिवाहुरन्यतः शितिवाहुः  
समन्तशितिवाहुस्ते बार्हस्पत्याः पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्यः ॥२॥ १७३८-४२  
शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्वेतः श्वेताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये  
कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥३॥ १७४३-४७

पृश्निस्तिरश्नीनपृश्नरूर्ध्वपृश्निस्ते मारुताः फल्गूलोहितोर्णा पलक्षी ताः सारस्वत्यः  
प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णोऽध्यालोहकर्णस्ते त्वाष्ट्राः कृष्णग्रीवः शितिकर्षोऽञ्जिसक्थस्त ऐन्द्राग्राः  
कृष्णाञ्जिरल्पाञ्जिर्महाञ्जिस्त उषम्याः ॥४॥ १७४८-५२

शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्त्र्यव्यो वाचे ऽविज्ञाता अदित्यै सरूपा धात्रे  
वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः ॥५॥ १७५३-५७

कृष्णग्रीवा आग्नेयाः शितिभ्रवो वसूनाः रोहिता रुद्राणां  
श्वेता अवरोकिर्ण आदित्यानां नभोरूपाः पार्जन्याः ॥६॥ १७५८-६२

उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रावैष्णवा उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऐन्द्राबार्हस्पत्याः  
शुकरूपा वाजिनाः कल्मषा आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥७॥ १७६३-६७

एता ऐन्द्राग्रा द्विरूपा अग्नीषोमीया वामना अनङ्गाह आग्नावैष्णवा वशा मैत्रावरुण्यो  
ऽन्यत एन्यो मैत्र्यः ॥८॥ १७६८-७२

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्याः श्वेता वायव्याः अविज्ञाता अदित्यै  
सरूपा धात्रे वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः ॥९॥ १७७३-७८

कृष्णा भौमा धूम्रा आन्तरिक्षा बृहन्तो दिव्याः शबला वैद्युताः सिध्मास्तारकाः ॥१०॥  
१७७९-८३

धूम्रान् वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान् वर्षाभ्यो ऽरुणाञ्छरदे  
पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय ॥११॥ १७८४-८९

त्र्यव्यो गायत्र्यै पश्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्यै त्रिवत्सा अनुष्टुभे  
तुर्यवाह उष्णिहे ॥१२॥ १७९०-९४

पृष्ठवाहो विराज उक्षाणो बृहत्या ऋषभाः ककुभे ऽनङ्गाहः पङ्क्त्यै  
धेनवोऽतिञ्छन्दसे ॥१३॥ १७८५-८९

कृष्णग्रीवा आग्नेया बभ्रवः सौम्या उपध्वस्ताः सावित्रा वत्सतयः सारस्वत्यः  
श्यामाः पौष्णाः पृश्नवो मारुता बहुरूपा वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीयाः ॥१४॥  
१८००-१८०७



उक्ताः सञ्चरा एता ऐन्द्राग्नाः कृष्णा वारुणाः पृथ्व्यो मारुताः कायास्तूपराः ॥१५॥  
१८०८-१८१९

अग्रयेऽनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्यान् मरुद्भ्यो  
गृहमेधिभ्यो बार्किहान् मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः ससृष्टान् मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो  
ऽनुसृष्टान् ॥१६॥ १८१२-१७

उक्ताः सञ्चरा एता ऐन्द्राग्नाः प्राशुक्ता महिन्द्रा  
बहुरूपा वैश्वकर्मणाः ॥१७॥ १८१८-२१

धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितृणां सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां  
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामभिष्वात्तानां  
कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥१८॥ १८२२-२५

उक्ताः सञ्चरा एताः शुनासीरीयाः श्वेता वायव्याः  
श्वेताः सौर्याः ॥१९॥ १८२६-२९

वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्  
वर्षाभ्यस्तिचिरीञ्छरदे वत्तिका हेमन्ताय कर्करा-  
ञ्छिशिराय विर्करान् ॥२०॥ १८३०-३५

समुद्राय शिशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूकानद्भ्यो मत्स्यान् मित्राय कुलीपयान्  
वरुणाय नाक्रान् ॥२१॥ १८३६-४०

सोमाय हंसानालभते वायवे बलाका इन्द्राभिभ्यां कुश्वान् मित्राय मद्रून्  
वरुणाय चक्रवाकान् ॥२२॥ १८४१-४५

अग्रये कुटरानालभते वनस्पतिभ्य उल्का नग्रीषोमाभ्यां चाषा नश्विभ्यो मयूरान्  
मित्रावरुणाभ्यां कपोतान् ॥२३॥ १८४६-५०

सोमाय लवानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान् गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः कुलीका देवजामिभ्यो  
ऽग्रये गृहपतये पारुष्णान् ॥२४॥ १८५१-५५

अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचापू र्होराग्रयोः सन्धिभ्यो जत् मार्सिभ्यो दास्योहा-  
न्त्सैवत्सुराय महतः सुपर्णान् ॥२५॥ १८५६-६१

- भूम्या आखुनालभते ऽन्तरिक्षाय पाङ्कत्रान् दिवे कशान् विग्भ्यो नकुलान्  
वभ्रुकानवान्तरदिशाम्यः ॥२६॥ १८६२-६६
- वसुभ्य ऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरूनादित्येभ्यो न्यङ्कून् विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषता—  
—न्त्साष्येभ्यः कुलुङ्गान् ॥२७॥ १८६७-७१
- ईशानाय परस्वत आलभते मित्राय गौरान् वरुणाय महिषान्  
बृहस्पतये गव्याँ—स्त्वष्ट उष्टान् ॥२८॥ १८७२-७६
- प्रजापतये पुरुषान् हस्तिन् आलभते वाचे प्लुषीँ—श्चक्षुषे मशका—  
—च्छेत्राय भृङ्गाः ॥२९॥ १८७७ ८०
- प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेधो  
यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहि—दृषभाय गवयी  
क्षिप्रश्येनाय वत्तिका नीलङ्गोः कृमिः समुद्राय शिशुमारो  
हिमवते हस्ती ॥३०॥ १८८१-९०
- मयुः प्राजापत्य उलो हलिष्णो वृषदुः शस्ते धात्रे दिशां कङ्कां  
धुङ्क्षाऽऽमेयी कलविङ्को लोहिताहिः पुंकरसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुश्चः ॥३१॥  
१८९१-९८
- सोमाय कुलुङ्ग आरण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायो—रिन्द्रस्य गौरमृगः  
पिद्रो न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥३२॥ १८९९-१९०४
- सौरी बलाका शार्गः सृजयः श्वाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्  
श्वाविद् भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे  
सरस्वते शुक्रः पुरुषवाक् ॥३३॥ १९०५-१९१०
- सुपर्णः पार्जन्य आतिर्वाहसो दर्विद्रा ते वायवे बृहस्पतये वाचस्पतये पैङ्गराजो  
ऽलज आन्तरिक्षः प्लवो मद्रुर्मत्स्यस्ते नदीपतये  
द्यावापृथिवीयः कूर्मः ॥३४॥ १९११-१९१६
- पुरुषमुगध्न्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां  
कृकवाकुः सावित्रो हृत्सो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य  
श्रियै शर्यकः ॥३५॥ १९१७-२२

एण्यहो मण्डूको मूर्षिका तित्तिरिस्ते सर्पाणां लोपाश आश्विनः कृष्णो रात्र्या  
ऋक्षो जतूः सुषिलीका त इतरजनानां जहका वैष्णवी ॥३६॥ १९२३-२८

अन्यवापोऽर्धमासाना—मृशयो मयूरः सुपर्णस्ते गन्धर्वाणां—मपामुद्रो मासां कश्यपो  
रोहित कुण्डुणाचीं गोलत्तिका तेऽप्सरसां मृत्यवेऽसितः ॥३७॥ १९२९-३४

वर्षाहूर्त्तुना—माखुः कशो मान्थालस्ते पितृणां बलायाजगरो वधनां कपिञ्जलः  
कपोत उल्लूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेषः ॥३८॥ १९३५-४०

श्वित्र आदित्याना—मुष्टो घृणीवान् वार्धीनसस्ते मत्या अरण्याय सुमरो रुरु रौद्रः  
क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः ॥३९॥ १९४१-४६

खङ्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसा—मिन्द्राय सूकरः  
सिंहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥४०॥  
१९४७-५२

॥२५०॥ (वा० य० २५।१-९)

शादं दुद्धि—रवकां दन्तमूलै—मृदुं बर्से—स्तेगान् दष्ट्राभ्यां < सरस्वत्या अग्रजिह्वं  
जिह्वायां उत्साद—मवक्रन्देन तालु वाज < हनुभ्या—मप आस्येन वृषणमाण्डाभ्यां—  
—मादित्यां इमश्रुभिः पन्थानं भ्रुभ्यां द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्यां <  
शुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माण्य—वार्या इक्ष्वोः ऽत्रार्याणि पक्ष्माणि  
पार्या इक्ष्वः ॥१॥ १९५३-७२

वातं प्राणेना—ऽपानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तर—  
—मनुकाशेन बाह्वी निवेश्यं मूर्धा स्तनयित्तुं निर्वाधेना—ऽशनिं मस्तिष्केण  
विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यां < श्रोत्र < श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदुनीमधरकण्ठेना—  
ऽपः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभि—रतिदि < शीर्ष्णां निर्ऋतिं निर्जेर्जल्येन शीर्ष्णां  
संक्रोशैः प्राणान् रेष्माणं < स्तुपेन ॥२॥ १९७३-९०

मशकान् केशै—रिन्द्र < स्वर्षसा वह्नेन बृहस्पति < शकुनिसादेन कूर्माञ्छफै—  
—राक्रमण < स्थुराभ्यां—मृक्षलाभिः कपिञ्जला—ञ्जवं जह्वाभ्या—मध्वानं बाहुभ्यां  
जाम्बालिनारण्य—मभिमतिरुग्भ्यां पूषणं दोर्भ्यां—मश्विनाव < साभ्यां < रुद्र < रोराभ्याम् ॥३॥  
१९९१-२००३

अग्नेः पक्षति—वायोनिपक्षति—रिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्य—दित्यै पञ्चमी—  
—न्द्राण्यै षष्ठी मरुतां सप्तमी बृहस्पतेरष्टम्य—र्यम्णो नवमी धातुर्दशमी—  
—न्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी ॥४॥

२००४-२०१६

इन्द्राग्न्योः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षति—मित्रस्य तृतीया  
ऽपां चतुर्थी निर्ऋत्यै पञ्चम्यु—ग्रीषोमयोः षष्ठी सर्पाणां सप्तमी  
विष्णोरष्टमी पूष्णो नवमी त्वष्टुर्दशमी—न्द्रस्यैकादशी  
वरुणस्य द्वादशी यम्यै त्रयोदशी द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं  
विश्वेषां देवानामुत्तरम् ॥५॥

२०१७-३१

मरुतां स्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीया  
ऽऽदित्यानां तृतीया वायोः पुच्छ—मग्रीषोमयोर्भासदौ  
ऋञ्चौ श्रोणिभ्या—मिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां  
मित्रावरुणावल्गाभ्या—माम्नाक्रमणं स्थुराभ्यां बलं कुष्टाभ्याम् ॥६॥

२०३२-४२

पूषणं वनिष्ठुना ऽन्धाहीन्स्थूलगुदया सर्पान् गुदाभि—विहृतं आन्त्रै—रपो वस्तिना  
वृषणमाण्डाभ्यां वाजिनं शेपेन प्रजां रेतसा चाषान् पित्तेन प्रदुरान् पायुनां  
कूश्माञ्छकपिण्डैः ॥७॥

२०४३-५३

इन्द्रस्य क्रोडो ऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवो ऽदित्यै भस—  
—जीमूतान् हृदयौपशेना—ऽन्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां  
दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभि—रुपलान् प्लीहा  
वल्मीकान् क्लोमभि—ग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्ती—हृदान् कुक्षिभ्यां  
समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना ॥८॥

२०५४-७०

विधृतिं नाभ्यां घृतं रसेना—ऽपो यूष्णा मरीचिर्विप्रुड्भि—नीहारमूष्मणां  
शीनं वसया प्रुष्वा अश्रुभि—र्हादुनीर्दुषीकाभि—रस्ना रक्षांसि चित्राण्यङ्गै—  
—नक्षत्राणि रूपेण पृथिवीं त्वचा जुम्बकाय स्वाहा ॥९॥

२०७१-८३

॥२५६॥ (वा० य० २९।५८-६०)

आग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेषी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः इयामः शित्तिपृष्ठो बार्हस्पत्यः  
शिल्पो वैश्वदेव ऐन्द्रोऽरुणो मारुतः कल्माष ऐन्द्राग्नः संहितो  
ऽधोराग्नः सावित्रो वारुणः कृष्ण एकशितिपात् पेट्वः ॥५८॥

२०८४-९४

अग्नेऽनीकवते रोहिताञ्जिरनुद्धा—नधोरांमौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनांभी  
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ मारुतः कल्मष आग्नेयः कृष्णोऽजः सारस्वती मेधी  
वारुणः पेतवः ॥५९॥

२०९५-२१०२

अग्नें गायत्राय त्रिष्टुते राथन्तरायाष्टाकपाल इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय  
बाहैतायैकादशकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालो  
मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यामेकविंश्याभ्यां वैराजाभ्यां पयस्या बृहस्पतये पाङ्क्त्याय  
त्रिणवार्यं शाकवराय चरुः सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय रैवताय द्वादशकपालः  
प्राजापत्यश्चरु—रदित्यै विष्णुपत्न्यै चरु—रम्ये वैश्वानराय द्वादशकपालो ऽनुमत्या  
अष्टाकपालः ॥६०॥

२१०३-२११२

॥२५२॥ (वा० य० ३०।५-२२)

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं  
नारकाय वीरहर्षं पाप्मने क्लीब—माक्रयाया अयोगं कामाय पुँश्चल—  
—मतिक्रुष्टाय मागधम् ॥५॥

२११३-२२

नृत्ताय सूतं गीताय शैलुषं धर्माय सभाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रैभः  
हसाय कारि—मानन्दाय स्त्रीषुखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधायै रथकारं  
धैर्याय तक्षाणम् ॥६॥

२१२३-३२

तपसे कौलालं मायायै कर्मारः रूपाय माणिकारः शुभे वपः शरव्याया इषुकारः  
हेत्यै धनुष्कारं कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्जं मृत्यवे मृगयु—  
—मन्तकाय श्वनिनम् ॥७॥

२१३३-४२

नदीभ्यः पौञ्जिष्ठ—मृक्षीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं  
गन्धर्वाप्सरुभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्य उन्मत्तः सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदु—  
मयेभ्यः कितव—मीर्यताया अकितवं पिशाचेभ्यो विदलकारीं  
यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥८॥

२१४३-५२

सन्धये जारं गेहायोपपति—मात्यै परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविद्वान—मराभ्या एदिधिषुःपतिं  
निष्कृत्यै पेशस्कारीः संज्ञानाय सरकारीं प्रकामोद्यायोपसदुं  
सर्णीयानुरुधं बलायोपदाम् ॥९॥

२१५३-६२

उत्सादेभ्यः कुब्जं प्रमुदे वामनं द्वाभ्यः क्षामः स्वप्नायान्ध—मधर्माय बधिरं  
पवित्राय भिषजं प्रज्ञानाय नक्षत्रदुर्श—माशिक्षायै प्रश्निने—मृपशिक्षाया अभिप्रश्निने  
मर्यादायै प्रभविवाकम् ॥१०॥

२१६३-७२

अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्चपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपाल—  
—मिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं मद्राय गृहपः श्रेयसे वित्तध—  
—माध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥११॥

२१७३-८२

भायै दार्वीहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रह्मस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं  
देवलोक्याय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारः सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तार—  
—मर्वक्रत्यै वृधायोपमन्थितारं मेधाय वासःपल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम् ॥१२॥

२१८३-९२

ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तार—मौपद्रष्ट्यायानुक्षत्तारं  
बलायानुचरं भूमे परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिन—मरिष्या अश्वसादः  
स्वर्गाय लोकाय भागदुधं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥१३॥

२१९३-२२०२

मन्यवेऽयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तारः शोकायाभिसर्तारं क्षेमाय विमोक्तार—  
—मृत्कूलनिकुलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृतः शीलायाञ्जनीकारीं निर्ऋत्यै कोशकारीं  
यमायाक्षम् ॥१४॥

२२०३-१२

युमाय यमस्य—मथर्वभ्योऽवतोकाः संवत्सराय पर्यायिणीं परिवत्सरायाविजाता—  
—मिदावत्सरायातीत्वरी—मिद्वत्सरायातिष्कर्वरीं वत्सराय विजर्जराः संवत्सराय पलिकनी—  
—मृभूम्योऽजिनसन्धः साध्येभ्यश्चर्मक्षम् ॥१५॥

२२१३-२२२२

सरोभ्यो धैवर—मृपस्यावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो वैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं  
पारार्य मार्गर—मवारार्य केवर्तं तीर्थेभ्य आन्दं विषमेभ्यो मैनालः स्वनेभ्यः पर्णकं  
गुहाभ्यः किरातः सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम् ॥१६॥

२२२३-३४

वीभ्रत्सायै पौल्कसं वर्णीय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पश्चादोषाय ग्लाविनं  
विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूतै जागरण—मभूतै स्वपन—मात्तै जनवादिनं  
व्यूढ्या अपगल्मः संक्षाराय प्रच्छिदम् ॥१७॥

२२३५-४४

अक्षराजाय कितवं कृतायाऽऽदिनवदुर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनं—  
 —मास्कृन्दाय सभास्थानुं मृत्यवे गोव्यञ्ज—मन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां  
 विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरंकाचार्य पाप्मने सैलगम् ॥१८॥ २२४५-५४  
 प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भूष—मन्ताय बहुवादिनं—मन्ताय मूकः शब्दायाडम्बराघातं  
 महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्म—मवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनप—  
 —मन्यतोरण्याय दावपम् ॥१९॥ २२५५-६४

नर्माय पुँश्चलूः हसाय कारिं यादसे शाबल्यां प्रापण्यं गणकमभिक्रोशकं तान् महसे  
 वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान् नृत्तायाः—ऽऽनृन्दाय तलवम् ॥२०॥ २२६५-७०

अग्रये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डाल—मन्तरिक्षाय वःशनर्तिनं  
 दिवे खलतिः सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्यः किमिरं चन्द्रमसे किलास—महे शुक्रं पिङ्गाक्षः  
 रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् ॥२१॥ २२७१-८०

अथैतानुष्टौ विरूपाना लभतेऽतिदीर्घं चार्तिहस्वं चार्तिस्थूलं चार्तिकुशं चार्तिशुक्रं  
 चार्तिकृष्णं चार्तिकुल्वं चार्तिलोमशं च । अशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ।  
 मागधः पुँश्चली कितवः क्लीबोऽशूद्रा अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः ॥२२॥ २२८१-८२

॥२५३॥ (वा० य० ३९।१-२, ११-१३)

स्वाहा प्राणेभ्यः सार्धिपतिकेभ्यः । पृथिव्यै स्वाहा अग्रये स्वाहा अन्तरिक्षाय स्वाहा  
 वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा ॥१॥ २२८३-८९

द्विग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहा अद्भ्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा ।  
 नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा ॥२॥ २२९०-९६

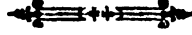
आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहो—घ्रासाय स्वाहा ।  
 शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥१॥ २२९७-२३०५

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा ।  
 निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ॥१२॥ २३०६-१३

यमाय स्वाहा अन्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा  
 विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा धावापृथिवीभ्याः स्वाहा ॥१३॥ २३१४-२०

# विश्वे देवाः-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।



- [१] १।३।७ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः )  
विश्वे देवास आ गत ।  
( १६५ ) १।४।१।३ ( गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः )  
( ४१५ ) ६।५।१।७ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )
- [४] १।१४।१ ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
विश्वेभिः सोमपीतये ।  
( इन्द्रः ४१२ ) ८।२।१४ ( सोभरिः कण्वः । इन्द्रः )
- [६] १।१४।३ ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
इन्द्रवायू बृहस्पतिं । आदित्यान् मरुतं गणम् ।  
( ८१९ ) १०।१४।४ ( अमिस्तापसः । विश्वे देवाः )  
इन्द्र यू बृहस्पतिं ।  
( अमिः १ ३।१६।२४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।  
अमिः )  
आदित्यान् मरुतं गणम् ।
- [८] १।१४।५ ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
वृक्तबर्हिषः ।  
हविष्मन्तो अरंकृतः ।  
( अश्विनौ ४०० ) ८।५।१७ ( अह्नातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो — ।
- [९] १।१४।६ ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
वहन्ति प्रयांसि वीतये ।  
आ देवान्सोमपीतये ।  
( अमिः १०८५ ) ६।१६।४४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।  
अमिः )  
वहाभि प्रयांसि वीतये ।  
आ देवान्सोमपीतये ।
- [१४] १।१४।११ ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
त्वं होता मनुर्हितो ।  
सेमं नो अध्वरं यज ।  
वै०विश्वे देवाः १६

- ( अमिः १०५० ) ६।१६।९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।  
अमिः )  
त्वं ... .. ।  
( अमिः २८ ) १।२६।१ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । अमिः )  
सेमं ... .. ।
- [१५] १।१४।१२ ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
युक्त्वा ऋषी रथे हरितो देव रोहितः ।  
( मरुतः २८० ) ५।५।६ ( श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः )  
युक्त्वा ऋषी रथे युक्त्वा रथेषु रोहितः ।
- [१६] १।२३।१० ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
मरुतः सोमपीतये ।  
( मरुतः ३९७ ) ८।९।३ = ( मरुतः ४०३ ) ८।९।९  
( विन्दुः पूतदक्षो वा आङ्गिरसः । मरुतः )
- [२५] १।८९।७ ( गोतमो राहूगणः । विश्वे देवाः )  
विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ।  
( ५९२ ) १०।३।१।३ ( लुसो घानाकः । विश्वे देवाः )  
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।
- [३८-५५] १।१०।१-१८ वित्तं मे अस्य रोदसी ।  
[४२] १।१०।५।५ ( प्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः )  
प्रिष्वा रोचने दिवः ।  
( इन्द्रः २३०६ ) ८।६।३ ( प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )
- [४५] १।१०।५।८ ( प्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः )  
सं मा तपन्त्यमितः सपत्नीरिव पशवः ।  
मृषो न शिभा व्यदन्ति माभ्यः नो रं ते शतक्रतो ॥  
( इन्द्रः २५३९ ) १०।३।२ ( कवष ऐल्लषः । इन्द्रः )  
सं मा ... .. ।  
( इन्द्रः २५४० ) १०।३।३ ( कवष ऐल्लषः । इन्द्रः )  
मृषो न ... .. ।



[५०] १।१०५।१३ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वे देवाः)

देवेष्वस्त्याप्यम् ।

(अश्विनौ ४६७) ८।१०।३ (प्रगाथो घौरः काण्वः । अश्विनौ)

देवेष्वध्याप्यम् ।

[५१] १।१०५।१४ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा ।

विश्वे देवाः )

देवाँ ... .. ।

अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः ।

(अग्निः १९२८) १।१४२।११ (दीर्घतमा औचथ्यः ।

[ आग्नीसूक्तं ] = वनस्पतिः )

अवसृजन्नुप स्मना देवान् यक्षि वनस्पते ।

अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः ।

(अग्निः १९४०) १।१८८।१० (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।

[ आग्नीसूक्तं ] = वनस्पतिः )

उप स्मन्या वनस्पते । अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् ।

[५३] १।१०५।१६ (त्रित आप्त्यः, कुत्स आङ्गिरसो वा ।

विश्वे देवाः )

दिवि प्रवाच्यं कृतः ।

(इन्द्रः १२२६) २।२१।४ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः )

दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।

[५७-६२] १।१०६।१-६ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

रथं न दुर्गाद्रसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपतेन ।

[५८] १।१०६।२ ( कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः )

त आदित्या आ गता सर्वतातये ।

(५९०) १०।३५।११ (लुशो धानाकः । विश्वे देवाः)

[६३] १।१०६।७ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः)

देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवञ्जाता त्रायतामप्रयुञ्छन् ।

(२३५) ४।५५।७ (वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः )

[६५] १।१०७।२ उप नो देवा अबसा गमन्तु ।

(५९२) १०।३५।१३ विश्वे नो देवा अबसा गमन्तु ।

[ ' ] १।१०७।२ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः )

आदित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ।

(अदितिः ०४४६) ४।५४।६ (वामदेवो गौतमः । सविता)

(७०९) १०।६६।३ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )

... .. शर्म यच्छतु ।

[६६] १।१०७।३ (कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः )

तन्न ... .. तदर्यमा तत् सविता चनो भात् ।

(३७६) ६।४९।१४ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)

तन्नो ... .. तत् पर्वतस्तत् सविता चनो भात् ।

[७१] १।१२१।५ (कक्षीवान् दीर्घतमस औशिजः । विश्वे देवाः

इन्द्रो वा )

राधः सुरेतस्तुरणे ।

शुचि यत्ते रेकण आयजन्त सवर्तुघायाः पय उस्त्रियायाः ।

(६३७) १०।६१।११ (नाभानेदिष्ठो मानवः । विश्वे देवाः)

राधो न रेत ऋतमित् तुरण्यन् ।

शुचि यत्ते रेकण आयजन्त ... ।

[७९] १।१२१।२३ (कक्षीवान् दीर्घतमस औशिजः । विश्वे देवाः

इन्द्रो वा )

भरश्चक्रमेतशो नायमिन्द्र ।

(इन्द्रः १७०२) ५।३१।११ (अवस्युरात्रेयः । इन्द्रः )

भरश्चक्रमेतशः सं रिणाति ।

[८४, ९५] १।१२२।३, १४ तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ।

[८७] १।१२२।६ (कक्षीवान् दीर्घतमस औशिजः ।

विश्वे देवाः )

भुतं मे मित्रावरुणा हवेमा ।

(अदितिः ० ३२९) ७।६२।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।

मित्रावरुणौ )

[९२] १।१२२।११ श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः ।

(७३९) १०।९३।४ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वे देवाः )

ते वा राजानो ... ।

[९७] १।१२९।१ धितयो देवाँ अश्छा न भीतयः ।

(इन्द्रः १०३२) १।१३२।५ (परुच्छेपो देवोवासिः । इन्द्रः )

[१०१] १।१६४।३ (दीर्घतमा औचथ्यः । विश्वे देवाः)

सह स्वसारो अभि सं नवन्ते ।

१०।७।३ (बृहस्पतिराङ्गिरसः । ज्ञानम् )

तां सह रेभा अभि सं नवन्ते ।

[११९] १।१६४।२१ इतो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः ।

(अदितिः ० २४) २।१७।४ (कूर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो

वा । अदित्यः )

देवा विश्वस्य ... ।

[१२८, १३६] १।१६४।३०, ३८ अमर्त्यो मर्त्येवा सयोनिः ।

- [१२९] १।१६४।३१ ( दीर्घतमा औचध्यः । विश्वे देवाः )  
 = १०।१७७।३ ( पतङ्गः प्राजापत्यः । मायामेदः )  
 अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।  
 स सप्तरीषीः स विषूषीर्वसान भा वरीवर्ति भुवनेऽन्तः ॥
- [१३८] १।१६४।४० अथो वयं भगवन्तः स्याम ।  
 (अदितिः० ७९६)७।४१।५ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । भगः)  
 तेन वयं ... .. ।
- [१४१] १।१८६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)  
 मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ।

- (अदितिः० ३१२) ७।६०।४ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
 मित्रावरुणौ)
- [१४२] १।१८६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)  
 प्रेष्टं वो अतिथिं गृणोषेऽग्निं ।  
 (अग्निः १४५४) ८।८४।१ (उशाना काव्यः । अग्निः)  
 ... .. अतिथिं स्तुषे । अग्निं ... ।
- [१४३] १।१८६।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)  
 उषासानक्ता सुदुधेव धेनुः ।  
 (अग्निः १२७९) ७।२।६ (मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
 [आप्रीसूक्तं] = उषासानक्ता)

### ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [१५२] २।२९।२ (कर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा । विश्वे देवाः)  
 यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।  
 (७५९) १०।१००।९ (दुवस्युर्वानन्दनः । विश्वे देवाः)  
 विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।
- [१५७] २।२९।७ = (अदितिः० ३७) २।२७।१७ (कर्मो  
 गार्त्समदो गृत्समदो वा । आदित्यः )  
 माहं मषोनो वरुण म्रियस्य भूरिदात्र आ विदं शूनमापेः ।  
 मा रायो राजन्सुवमादव स्यां बृहद्वेदेम विदये सुवीराः ॥
- [१५८] २।३१।१ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)  
 आदित्यै रुद्रैर्वसुभिः सन्धामुवा ।  
 (अश्विनौ ५०९) ८।३५।१ (श्यावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ)
- [१६५] २।४१।१३ (गृत्समदः [आत्रिंसः शौनकोत्रः पश्चाद्]  
 भार्गवः शौनकः । विश्वे देवाः)  
 विश्वे देवास आ गत ।

- ( १ ) १।३।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वे देवाः)  
 (४१५) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)
- [१६५] २।४१।१३ (गृत्समदः शौनकः । विश्वे देवाः)  
 (४५२) ६।५२।७ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)  
 विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् ।  
 पृवं बर्हिर्नि षीदत ॥  
 (अश्विनौ ५४९) ८।७३।१० (गोपवन आत्रेयः सप्तव-  
 ध्रिर्वा । अश्विनौ )  
 शृणुतं म इमं हवम् ।
- [१६७] २।४१।१५ इन्द्रज्येष्ठा मरुत्तणा देवासः पूवरातयः ।  
 विश्वे मम श्रुता हवम् ॥  
 (इन्द्रः ३२४८ ) १।२३।८ ( मेधातिथिः काण्वः ।  
 मरुत्वानिन्द्रः )

### ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [१६९] ३।२०।५ (गाथी कौशिकः । विश्वे देवाः)  
 दधिक्लाममिमुषसं च देवीं ...।... हुवे ॥  
 (७६३) १०।१०१।१ (बुधः सौम्यः । विश्वे देवा  
 ऋत्विग् वा )  
 दधिक्लाममिमुषसं च देवीं...हुये ।
- [१७०] ३।५४।१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
 विश्वे देवाः )  
 क्षुणोतु नो दम्येभिरनीकैः ।

- (अग्निः ४६१) ३।१।१५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)  
 रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।
- [१७२] ३।५४।३ सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।  
 (अग्निः ११६) १।५८।७ (नोधा गौतमः । अग्निः)
- [१७४] ३।५४।५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
 विश्वे देवाः )  
 को अक्षा वेद क इह प्र वोचद् ।  
 परेषु वा गुक्षेषु मतेषु ॥

- १०।११९।६ ( प्रजापतिः परमेष्ठी । भाववृत्तम् )  
को अत्रा ... .. ।  
( ७८३ ) १०।११४।२ ( सध्रिवैरूपो धर्मो वा तापसः ।  
विश्वे देवाः )  
परेषु वा — ।  
[ १८० ] ३।५४।११ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो  
वा । विश्वे देवाः )  
त्रिरा दिवो विद्ये पत्यमानः ।  
( ११८ ) ३।५६।५ त्रिरा दिवो विद्ये पत्यमानाः ।  
[ १८४ ] ३।५४।१५ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वे देवाः )  
उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।  
( इन्द्रः १४७१ ) ४।१६।५ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
( अदितिः ० ३६१ ) ८।१५।१८ ( विश्वमना वैश्वः ।  
मित्रावरुणौ )  
[ १८७ ] ३।५४।१८ अदृग्धानि वरुणस्य व्रतानि ।  
१।२४।१० ( शुनःशेष आजीगर्तिः कृत्रिमो देवरातो  
वैश्वामित्रो वा । वरुणः )  
[ १८९ ] ३।५४।२० ध्रुवक्षेमास इळ्या मदन्तः ।  
( अदितिः ० १८७ ) ३।५९।३ ( गाथिनो विश्वामित्रः ।  
मित्रः )  
अनमीवास इळ्या ... ।  
[ १९१ ] ३।५४।२२ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वे देवाः )  
समिषो दिहीह्यस्मभ्यः सं मिमीहि अर्वांसि ।  
( अग्निः ७९१ ) ५।४।२ ( वसुधुत आत्रेयः । अग्निः )  
( इन्द्रः १८७३ ) ६।१९।३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
अस्मभ्यः सं मिमीहि अर्वांसि ।  
[ १९२-२१३ ] ३।५५।१-२२ महदेवानामसुरस्वमेकम् ।  
( इन्द्रः २६१७ ) १०।५५।४ ( बृहदुक्थो वामदेव्यः । इन्द्रः )  
महन्महत्या असुरस्वमेकम् ।  
[ २०० ] ३।५५।९ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वे देवाः )

- अन्तर्महोश्वरति रोचनेन ।  
( अग्निः १५०७ ) १०।४।२ ( त्रित आप्यः । अग्निः )  
अन्तर्महोश्वरसि रोचनेन ।  
[ २०४ ] ३।५५।१३ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वे देवाः )  
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः ।  
( इन्द्रः २५०४ ) १०।२७।१४ ( ऐन्द्रो वसुकः । इन्द्रः )  
[ २१० ] ३।५५।१९ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वे देवाः )  
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ।  
( आयुर्वेदः १९५८ ) १०।१०।५ ( यमी वैवस्वती ऋषिका ।  
यमः )  
[ २१२ ] ३।५५।२१ इमां च न पृ विश्वधाया उप  
ति हितमित्रो ।  
न राजा । पुरःसदः शर्मसदो । तेषां ... ।  
( अग्निः २०७ ) १।७३।३ ( पराशरः शाक्यः । अग्निः )  
देवो न यः पृथिवीं... राजा । पुरःसदः... वीरा... ।  
[ २१६ ] ३।५६।३ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वे देवाः )  
स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम् ।  
( आयुर्वेदः ९९० ) ७।१०।१।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः  
( वृष्टिकामः ), कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः )  
[ २१८ ] ३।५६।५ = ( १८० ) ३।५४।११ त्रिरा दिवो विद्ये  
पत्यमानाः ( ११ पत्यमानः ) ।  
[ २२० ] ३।५६।७ राजाना मित्रावरुणा सुपाणी ।  
( अग्निः १९३ ) १।७।१९ ( पराशरः शाक्यः । अग्निः )  
[ २२२ ] ३।८।८ ( गाथिनो विश्वामित्रः । विश्वे देवाः )  
आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा ।  
( ४६२ ) ७।३।१।१४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः )  
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त ( इदं ब्रह्म ) ।  
( ७१८ ) १०।६६।१२ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
— रुद्रा वसवः सुदानवः ( इमा ब्रह्म ) ।

### ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

- [ २२९ ] ४।५५।१ ( वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः )  
आवाभूमी अदिवे त्रासीथां नः ।

- ( अदितिः ० ३२८ ) ७।६।१४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
मित्रावरुणौ )

- [२३१] ४।५।५।३ ( वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः )  
उभे यथा नो अहनी निपाते ।  
( आयुर्वेदः २२८५ ) १०।७६।१ ( जरत्कर्णः सर्प ऐरा-  
वतः । प्रावाणः )  
— अहनी सचाभुवा ।
- [२३४] ४।५।५।६ समुद्रं न संचरणे सनिष्यिवः ।  
( इन्द्रः ८०६ ) १।५६।२ ( सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः )
- [२३५] ४।५।५।७ = ( ६३ ) १।१०६।७
- [ ,, ] ४।५।५।७ नहि मित्रस्य वरुणस्य भ्रासिम् ।  
( आयुर्वेदः ९०१ ) १०।३०।१ ( कवष ऐल्लषः । आपः,  
अपां नपात् वा )  
महीं मित्रस्य ... ।

- [२३७] ४।५।५।९ ( वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः )  
उषो मघोन्या वह ।  
( उषाः ११६ ) ५।७९।७ ( सत्यध्रवा आत्रेयः । उषाः )
- [ " ] ४।५।५।९ अस्मभ्यं वाजिनीवति ।  
( उषा ३६ ) १।९२।१३ ( गौतमो राहुगणः । उषा )
- [२३८] ४।५।५।१० ( वामदेवो गौतमः । विश्वे देवाः )  
तत् सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
( अदितिः ० ५६ ) ८।१८।३ ( इरिम्बिठिः काण्वः ।  
आदित्याः )  
( अग्निः ३१ ) १।२६।४ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः )  
वरुणो मित्रो अर्यमा ।

## ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [२३९] ( वसूयव आत्रेयः । विश्वे देवाः )  
देवासः सर्वया विशा ।  
( मरुतः ४० ) १।३९।५ ( कण्वो घौरः । मरुतः )
- [२४१] ५।४।१।२ ( भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः )  
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुपन्त ।  
१।१६२।१ ( दीर्घतमा औचध्यः । अश्वः )  
मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन्त ।
- [२४५] ५।४।१।६ ( अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः )  
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं ... अर्केः ।  
... पुरंधीः ॥  
( ६८२ ) १०।६४।७ ( गयः क्लतः । विश्वे देवाः )  
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं स्तोमैः कृणुध्वम् ।
- [२४७] ५।४।१।८ ( अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः )  
वनस्पतीरोषधी राय एषे ।  
( २७४ ) ५।४।१।६ वनस्पतीरोषधी राये अश्याः ।
- [२४९] ५।४।१।१० गृणीते अग्निरेतरी न शूचैः ।  
( अग्निः १००९ ) ६।१२।४ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।  
अग्निः )  
सास्माकेभिरेतरी न शूचैरग्निः ।
- [२५५] ५।४।१।१६ ( अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः )  
मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धाद् ।  
७।३४।१७ ( बसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अहिर्बुध्न्यः )

- [२६२] ५।४।१।३ चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ।  
( ४८८ ) ७।४०।१ ( मैत्रावरुणिवसिष्ठः । विश्वे देवाः )  
यद्य देवः सविता सुवाति ।
- [२७४] ५।४।१।१६ = ( २४७ ) ५।४।१।८ ( भौमोऽग्निः ।  
विश्वे देवाः )
- [ " ] ५।४।१।१६ ( अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः )  
देवोदेवः सुहवो भूत महां मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् ।  
( २९१ ) ५।४।३।१५ ( भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः )
- [२७५] ५।४।१।१७ = ( २९२ ) ५।४।३।१६ ( भौमोऽग्निः ।  
विश्वे देवाः )  
उरौ देवा अनिवाधे स्याम ।
- [२७६] ५।४।१।१८ ( अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः )  
= ( २९३ ) ५।४।३।१७ ( भौमोऽग्निः । विश्वे देवः )  
= ( अश्विनौ २९१ ) ५।७६।५ ( अग्निर्भौमः । अश्विनौ )  
= ( " २९६ ) ५।७७।५ ( अग्निर्भौमः । अश्विनौ )  
समाशिनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।  
आ नो रथिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥
- [२८६] ५।४।३।१० ( अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः )  
विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ।  
( ५९२ ) १०।३५।१३ ( लुप्तो धानाकः । विश्वे देवाः )  
विश्वे अय मरुतो विश्व ऊती ।

- [२८७] ५।४३।११ ( अत्रिभौमः । विश्वे देवाः )  
 आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा ।  
 (अश्विनौ २९०) ५।७६।४ ( अत्रिभौमः । अश्विनौ )  
 [२९१] ५।४३।१५ = (२७४) ५।४२।१६  
 [२९२] ५।४३।१६ = (२७५) ५।४२।१७  
 [२९३] ५।४३।१७ = (२७६) ५।४२।१८ =  
 (अश्विनौ २९१) ५।७६।५ = (अश्विनौ २९६) ५।७७।५  
 [३०७] ५।४४।१४ यो जागार तमृचः कामयन्ते यो  
 जागार तमु सामानि यन्ति । यो जागार तमयं सोम  
 आह ॥ (३०८) अग्निर्जागार तमृचः ...  
 अग्निर्जागार... । अग्निर्जागार तमयं ... ॥  
 [३०७-८] ५।४४।१४-१५ (काश्यपोऽवत्सारः । विश्वे देवाः)  
 तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ।  
 [३१२] ५।४५।४ ( सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः )  
 इन्द्रा न्वमी अवसे हुवथ्यै ।  
 (इन्द्रः ३०४८) ६।५९।३ (मरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रामी)  
 ... .. अवसेह वज्रिणा ।  
 [३१८] ५।४५।१० ( सदापृण आत्रेयः । विश्वे देवाः )  
 आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः ।  
 (अदितिः ३१२) ७।६०।४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः ।  
 मित्रावरुणौ )  
 [३२२] ५।४६।३ ( प्रतिक्षत्र आत्रेयः । विश्वे देवाः )

### ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [३६३] ६।४९।१ ( ऋजिथा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
 त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रालो वरुणो मित्रो अग्निः ।  
 (आयुर्वेदः १९९१) १०।१५।५ (शङ्खो यामायनः । पितरः)  
 त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु ।  
 (४०२) ६।५१।१० (ऋजिथा भारद्वाजः । विश्वे देवाः)  
 सुक्षत्रालो वरुणो मित्रो अग्निः ।  
 [३६६] ६।४९।४ प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा ।  
 (आयुर्वेदः १०२६) ३।३३।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । नभः)  
 प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषा ।  
 [३६७] ६।४९।५ येन नरा नास्त्येषयथ्यै वर्तियथस्तनयाय-  
 रमने च ।  
 (अश्विनौ २०४) १।१८३।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।  
 अश्विनौ )

- स्वः पृथिवीं घां ... .. अपः ।  
 हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं ।  
 (५०६) ७।४४।१ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । दधिका-  
 श्व्युषोऽग्निभगेन्द्रविष्णुपूषब्रह्मणस्पत्यादित्यद्यावापृथिव्याप्स्वः )  
 भगमृतये हुवे । इन्द्रं विष्णुं पूषणं  
 ब्रह्मणस्पतिं ... द्यावापृथिवी अपः स्वः ।  
 [३२७] ५।४६।८ ( प्रतिक्षत्र आत्रेयः । देवपत्न्यः )  
 आ रोदसी वरुणानी शृणोतु ।  
 (४४५) ७।३४।२२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । विश्वे देवाः )  
 [३५०] ५।५१।१ ( स्वत्यात्रेयः । विश्वे देवाः )  
 देवेभिर्हृद्यदातये ।  
 (अग्निः ९२३) ५।२६।४ (वसूयव आत्रेयः । अग्निः)  
 [३५१] ५।५१।२ सत्यधर्माणो अध्वरम् ।  
 (अग्निः १६) १।१२।७ ( मेघातिथिः काण्वः । अग्निः )  
 सत्यधर्माणमध्वरे ।  
 [३५२] ५।५१।३ ( स्वस्त्यात्रेयः । विश्वे देवाः )  
 प्रातर्यावभिरा गहि । देवेभिः सोमपीतये ।  
 (इन्द्रः ३०९७) ८।३८।७ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रामी)  
 प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिः..... सोमपीतये ।  
 [३५३] ५।५१।८ अग्निभ्यामुषसा सजः ।  
 (अग्निः ९२) १।४४।१४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः )  
 [३५३-५५] ५।५१।८-१० आ याद्यामे अत्रिबत् सुते रण ।

- [३७२] ६।४९।१० बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नम् ।  
 (इन्द्रः १२८८) ३।३२।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)  
 बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।  
 [३७४] ६।४९।१२ प्र वीराय प्र तवसे नुराय ।  
 (इन्द्रः २०११) ६।३१।१ (सुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)  
 महे वीराय ... .. ।  
 [३७५] ६।४९।१३ यो रजांसि भिममे पार्थिवाणि ।  
 १।१६०।४ ( दीर्घतमा औत्थयः । यावापृथिवी )  
 बि यो ममे रजसी सुकृत् ।  
 [३७६] ६।४९।१४ तत् पर्वतस्तत् सविता ऋणो धात् ।  
 (६६) १।१०७।३ तदर्चमा तत् सविता ... ।  
 [३८१] ६।५०।४ अथा हुतासो वसवोऽष्टदाः ।  
 (३९२) ६।५०।१५ मा हुतासो वसवोऽष्टदाः ।

- [१८४] ६।५०।७ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।  
(अदितिः० ३१०) ७।६०।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।  
मित्रावरुणौ )  
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः ।  
(६६८) १०।६३।८ ( गयः प्लतः । विश्वे देवः )  
... .. जगतश्च मन्तवः ।
- [१८५] ६।५०।८ आ नो देवः सविता त्रायमाणः ।  
(४५८) ७।३५।१० ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः )  
शं नो देवः ... .. ।
- [ " ] ६।५०।९ ध्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि ।  
(उषा १२५) ५।८०।६ ( सत्यश्रवा आत्रेयः । उषाः )  
ध्यूर्ण्वती दाशुषे ... .. ।
- [१८६] ६।५०।९ उत त्वं सूनो सहस्रो नो अद्य ।  
(अग्निः ११७) १।५८।८ ( नोधा गौतमः । अग्निः )  
अच्छिद्रा सूनो ... .. ।
- [३९०] ६।५०।१३ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
भगो ... । त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः ।  
(६८५) १०।६४।१० ( गयः प्लतः । विश्वे देवाः )  
त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः । ... भगो ।
- [३९१] ६।५०।१५ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
एवा ... .. भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।  
(इन्द्रः २१८५) ७।२३।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )  
एवा ... वसिष्ठसो अभ्यर्चन्त्यकैः ।
- [३९४] ६।५१।२ ऋजु मतेषु वृजिना च पश्यन् ।  
(अग्निः ६४३) ४।११।७ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )
- [३९७] ६।५१।५ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
विश्व आदित्या अदिते सजोषाः ।  
(६७५) १०।६३।१७ = १०।६४।१७ ( गयः प्लतः ।  
विश्वे देवाः )  
... .. अदिते मनीषी ।
- [ " ] ६।५१।५ अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ।  
(मरुतः २७३) ५।५५।२ ( श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः )  
... वि यन्तन् ।
- [३९९] ६।५१।७ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
मा व एनो अभ्यर्कृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।  
(अदितिः ४२) ७।५१।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्याः )  
मा वो भुजेमाम्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।

- [४००] ६।५१।८ नमो दाधार पृथिवीमुत धाम् ।  
(अदितिः० १८५) ३।५९।१ ( विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः )  
मित्रो दाधार ... ।
- [४०२] ६।५१।१० = (३६३) ६।४९।१ सुक्षत्रासो वरुणो  
मित्रो अग्निः ।
- [४०७] ६।५१।१५ यूयं हि ष्टा सुदानवः ।  
(अदितिः० ९०८) १।१५।२ ( मेधातिथिः काण्वः ।  
[ ऋतवः ] = मरुतः )  
(५६७) ८।८३।९ ( कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः )
- [ " ] ६।५१।१५ ( ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वे देवाः )  
इन्द्रश्चेष्टा अभिघवः ।  
(५६७) ८।८३।९ ( कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः )
- [४०८] ६।५१।१६ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
स्वस्तिगामनेहसम् ।  
(इन्द्रः २३१८) ८।६२।१६ ( प्रियमेध आत्रिरसः । इन्द्रः )
- [४११] ६।५२।३ ब्रह्मद्विषे तपुषि हेतिमस्य ।  
(इन्द्रः १२५४) ३।३०।१७ ( विश्वामित्रो गाथिनः इन्द्रः )
- [४१३] ५।५२।५ पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
(इन्द्रः १५९१) ४।२५।४ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
पश्यान् सूर्यं ... ।
- [४१५] ६।५२।७ = (१६५) २।४१।१३
- [४२०] ६।५२।१२ इमं नो अग्ने अध्वरम् ।  
(अग्निः ७९७) ५।४।८ ( वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः )  
अस्माकमग्ने अध्वरम् ।
- [४२०] ६।५२।१२ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
चिकित्वात् दैव्यं जनम् ।  
(अग्निः १३५१) ८।४४।९ ( विरूप आत्रिरसः । अग्निः )
- [४२१] ६।५२।१३ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )  
आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ।  
(इन्द्रः ३१७१) ६।६८।११ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।  
इन्द्रावरुणौ )  
... .. मादयेधाम् ।  
(अयुर्वेदः १०८४) १०।१७।८ ( देवश्रवा यामायनः । सरस्वती )  
... .. मादयध्वम् ।
- [४२४] ६।५२।१६ अनीपर्जन्याववतं धियं मे ।  
(सोमः १२२१) २।४०।५ ( गृत्समदः शौनकः । सोमापूषणौ )  
सोमापूषणाववतं धियं मे ।
- [४२५] ६।५२।१७ स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ ।  
(अग्निः ६८५) ४।६।४ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )

## ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [४४५] ७।३४।२२ = (३२७) ५।४६।८  
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु ।  
[४४८] ७।३४।२५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः ) =  
( मरुतः ३६९ ) ७।५६।२५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मरुतः )  
तन्न हन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।  
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥  
( ७१५ ) १०।६६।९ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
आप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।  
[४५८] ७।३५।१० = ( ३८५ ) ६।५०।८  
देवः सविता त्रायमाणः ।  
[४६२] ७।३५।१४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः )  
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त ।  
( आयुर्वेदः २२६६ ) ३।८।८ ( गाथिनो विश्वामित्रः ।  
यूपाः, विश्वे देवा वा )  
... रुद्रा वसवः सुनीथा ।  
( ७१८ ) १०।६६।१२ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
—वसवः सुदानवः ।  
दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ।  
( १२११ ) १०।५३।५ ( अग्निः सौचीकः । देवाः )  
गोजाता ... .. ।  
पार्थिवात् पार्थिवात् ... .. दिव्यात् ... ।  
[४६३] ७।३५।१५ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः )  
देवानां ... मनोर्यजत्रा अमृता क्रतज्ञाः ।  
ते नो रासन्तामुरुगायमघ ।  
( ७०५ ) १०।६५।१४ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
देवाः ... मनोर्यजत्रा अमृता क्रतज्ञाः ।  
( ७०६ ) १०।६५।१५ = १०।६६।१५  
( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
देवान् ... । ते नो रासन्तामुरुगायमघ ।  
[४६५] ७।३६।२ जनं च मित्रो यतति मुवाणः ।

- ( अदितिः ० १८५ ) ३।५९।१ ( गाथिनो विश्वामित्रः । मित्रः  
मित्रो जनान् यातयति मुवाणः ।  
[४७७] ७।३७।५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः )  
कदा न इन्द्र राय आ दशास्थेः ।  
( इन्द्रः ९९० ) ८।९७।१५ ( रेभः कार्यपः । इन्द्रः )  
[४८४] ७।३९।४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः )  
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ।  
( मरुतः ४१४ ) १०।७७।८ ( स्यूमराश्मिर्भार्गवः । मरुतः  
[४८७] ७।३९।७ = ७ ४०।७ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः )  
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।  
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।  
( अदितिः ५६० ) ७।६२।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सूर्यः  
ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः ।  
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं ॥  
[४८८] ७।४०।१ यदद्य देवः सविता सुवाति ।  
( २६२ ) ५।४२।३ चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ॥  
[४९१] ७।४०।४ सुहवा देव्यदितिरनर्वा ।  
( सोमः १२२२ ) २।४०।६ ( गृत्समदः शौनकः । अदितिः  
अवतु देव्य ... ।  
[४९२] ७।४०।५ विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः ।  
( मरुतः २०९ ) २।३४।११ विष्णोरेषस्य प्रभृथो हवामहे  
[४९५] ७।४२।१ प्र ब्रह्मणो अङ्गिरसो नक्षन्त ।  
( अदितिः ० ४३ ) ७।५२।३ तुरप्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त  
[४९७] ७।४२।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः )  
समु वो यज्ञं महयन् नमोभिः ।  
( अदितिः ० ३२६ ) ७।६१।६ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मित्रावरुणं  
समु वां यज्ञं महयं ... ।  
[४९९] ७।४२।५ इमं नो अग्ने अश्वरं जुषस्व ।  
( अग्निः ७९७ ) ५।४।८ ( वसुध्रुत आत्रेयः । अग्निः  
अस्माकमग्ने अश्वरं जुषस्व ।

## ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[५१०] ८।२५।११ ( विश्वमना वैश्वः । विश्वे देवाः )  
अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ।

( अग्निः ४०२ ) २।८।६ ( गृत्समदः शौनकः । अग्निः  
अरिष्यन्तः सचेमह्यभि प्याम ।

- [५१४] ८।२७।३ ( मनुर्वैवस्वतः । विश्वे देवाः )  
मरुसु विश्वभानुषु ।  
( अग्निः २४५० ) ४।१।३ ( वामदेवो गोतमः । अग्नि-  
र्वरुणश्च )
- [५१५] ८।२७।४ यन्ता नोऽवृकं छर्दिः ।  
( उषाः १८ ) १।४८।१५ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषाः )  
प्र नो यच्छतादवृकं पृथु छर्दिः ।
- [५१६] ८।२७।१० देवासो अस्याप्यम् ।  
( ५० ) १।१०५।१३ देवेष्वस्याप्यम् ।
- [५१७] ८।२७।१३ देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवं...। देवंदेवं हुवेम ।  
( इन्द्रः ३०६ ) ८।१२।१९ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः )  
देवंदेवं वोऽवसे इन्द्रम् ।
- [ ,, ] ८।२७।१३ देवंदेवं हुवेम वाजसातये ।  
( इन्द्रः १७४१ ) ५।३५।६ ( प्रभूवसुराग्निरसः । इन्द्रः )  
पूर्यं हवन्ते वाजसातये ।
- [५१८] ८।२७।१६ प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो  
वराय दासति ।  
( मरुतः ३८४ ) ७।५२।२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । मरुतः )
- [ ,, ] ८।२७।१६ प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्पति ।  
६।७०।३ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । यात्रापृथिवी )
- [ ,, ] ८।२७।१६ अरिष्टः सर्वं पृथते ।  
१।४१।२ ( कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः )
- [५१९] ८।२७।१७ अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो ।  
( अग्निः २४६ ) १।७२।३ ( गोतमो राहूगणः । अग्निः )  
अर्यमा ... .. परिज्मा ।
- [५२०] ८।२७।१९ यदद्य सूर्य उयति ।  
( अदितिः ० ४४ ) ७।६६।४ यदद्य सूर उदिते ।
- [५२१] ८।२७।२१ यदद्य सूर उदिते ।  
( अदितिः ० ४४ ) ७।६६।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्याः )
- [५२२] ८।२८।१ वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
( अग्निः ३१ ) १।२६।४ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः )
- [५२३] ८।२८।५ सप्तो अग्निं श्रियो धिरे ।  
( अग्निः ४०१ ) २।८।५ ( गृत्समदः शौनकः । अग्निः )  
विश्वा अग्निं श्रियो वृधे ।
- [५२४] ८।२९।२ अन्तर्वैवेषु मेधिरः ।

- ( ५१ ) १।१०५।१४ देवो देवेषु मेधिरः ।
- [५२५] ८।२९।९ सप्तारा सपरिवासुती ।  
( अदितिः ० २०३ ) १।१३६।१ ( परुच्छेपो दैवोदासिः ।  
मित्रावरुणौ )  
— घृतासुती ।
- [५२६] ८।३०।१ अर्भको देवासो न कुमारकः ।  
( इन्द्रः २३१७ ) ८।६९।१५ ( प्रियमेध आग्निरसः ।  
इन्द्रः )  
अर्भको न कुमारकः ।
- [५२७] ८।३०।३ त उ नो अग्निं वोचत ।  
( मरुतः १०७ ) ८।२०।२६ ( सोमरिः काण्वः । मरुतः )  
तेन नो अग्निं वोचत ।
- [५२८] ८।६९।११ ( प्रियमेध आग्निरसः । ( अर्धर्च ) विश्वे देवाः,  
( उत्तरार्धः ) वरुणः )  
विश्वे देवा अमस्सत । वस्सं संशिश्वरीरिव ।  
( सोमः ११५ ) ९।१४।३ ( असितः काश्यपो देवलो वा ।  
पवमानः सोमः )  
विश्वे ... .. ।  
( सोमः ४०१ ) ९।६१।१४ ( अमहीयुराग्निरसः । पवमानः  
सोमः )  
वस्सं ... .. ।
- [५२९] ८।८३।२ ( कुसीदी काण्वः । विश्वे देवाः )  
वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
( अग्निः ३१ ) १।२६।४ ( शुनःशेष आजीगर्तिः । अग्निः )
- [५३०] ८।८३।३ यूयमृतस्य रथ्यः ।  
( अदितिः ० ५२ ) ७।६६।१२ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । आदित्यः )
- [५३१] ८।८३।४ वामं नो अस्त्वर्थमन् वामं वरुण शंस्यम् ।  
( अदितिः ० ६८ ) ८।१८।२१ ( इरिम्बिठिः काण्वः ।  
आदित्याः )  
अनेदो मित्रार्थमन् वृवद् वरुण शंस्यम् ।
- [५३२] ८।८३।९ यूयं हि ष्टा सुदानवः ।  
( अदितिः ० ९०८ ) १।१५।२ ( मेधातिथिः काण्वः ।  
[ ऋतवः ] मरुतः )  
( ४०७ ) ६।५१।१५ ( ऋजिष्वा भारद्वाजः । विश्वे देवाः )



## ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [५६६] १०।३।१।२ ( कवष ऐल्लषः । विश्वे देवाः )  
ऋतस्य पथा नमसा विवासेत् ।  
( अग्निः २८४ ) १।१२८।२ ( परुच्छेपो देवोदासिः ।  
अग्निः )  
... नमसा हविष्मता ।
- [५७४] १०।३।१।७ ( कवष ऐल्लषः । विश्वे देवाः )  
किं स्विद्धनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।  
१०।८।१।४ ( विश्वकर्मा भौवनः । विश्वकर्मा )
- [५७५] १०।३।१।८ नैतावदेना परो अन्यदस्ति ।  
( इन्द्रः २५११ ) १०।३७।२१ ( ऐन्द्रो वसुकः । इन्द्रः )  
श्रव इदेना परो — ।
- [५८१] १०।३।५।२ ( लुशो धानाकः । विश्वे देवाः )  
दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे ।  
... भद्रं सोमः ... ।  
२।२६।२ ( गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः )  
... भद्रं मनः ... । ब्रह्मणस्पतरव आ वृणीमहे ।
- [५८२-९१] १०।३।५।३-१२ स्वस्त्याग्निं समिधानमीमहे ।
- [५८५] १०।३।५।६ आयुक्षातामश्विना तूतुजि रथम् ।  
( अश्विनौ १६३ ) १।१५७।१ ( दीर्घतमा औचथ्यः ।  
अश्विनौ )  
... यातवे रथम् ।
- [५८९] १०।३।५।१० इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगम् ।  
( ६६९ ) १०।६३।९ ( गयः प्लातः । विश्वे देवाः )  
आग्निं मित्रं ... ।
- [५९०] १०।३।५।११ त आदित्या आ गता सर्वतातये ।  
( ५८ ) १।१०६।२ ( कुत्स आङ्गिरसः । विश्वे देवाः )
- [५९१] १०।३।५।१२ पथे तोकाय तनयाय जीवसे ।  
३।५३।१८ ( गाथिनो विश्वामित्रः । रथाङ्गानि )  
वलं तोकाय ... ।
- [५९२] १०।३।५।१३ विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती ।  
( २८६ ) ५।४३।१० ( भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः )  
विश्वे गन्त मरुतो ... ।
- [ " ] १०।३।५।१३ विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु ।  
( २५ ) १।८९।५ ( गोतमो राहुगणः । विश्वे देवाः )

- ... अवसा गमन्तिह ।
- [५९३] १०।३।५।१४ ( लुशो धानाकः । विश्वे देवाः )  
यं देवातोऽवथ वाजस्तातो यं ।  
( ६७४ ) १०।६३।१४ ( गयः प्लातः । विश्वे देवाः )
- [५९४] १०।३।६।१ द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्थमा ।  
( अग्निः ७१ ) १।३६।४ ( कण्वो घोरः । अग्निः )  
देवासस्त्वा वरुणो .. ।
- [ " ] १०।३।६।१=(५०६) ७।४४।१  
इन्द्रं... आदित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वः ।
- [५९५-६०५] १०।३।६।२-१२ तदेवानामवो अद्या वृणीमहे ।  
अहं होता न्यसीदं यजीयान् ।
- [६०९] १०।५।२।२ ( सौर्वाङ्गोऽग्निः । विश्वे देवाः )  
( अग्निः ७६० ) ५।१।६ ( बुधगविष्टिरावात्रेयौ । अग्निः )
- [६१०-११] १०।५।२।३-४ अथा ( ४मां ) देवा वधिरे  
हव्यवाहम् ।  
( अग्निः ११६९ ) ७।१।४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । अग्निः )
- [६१२] १०।५।२।५ अथेमा विश्वाः पृतना जयाति ।  
( इन्द्रः २३५१ ) ८।१६।७ ( तिरश्चीराङ्गिरसः, घुताने  
वा मास्तः । इन्द्रः )  
... जयाति ।
- [६१३] १०।५।२।६ ( सौर्वाङ्गोऽग्निः । विश्वे देवाः )  
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।  
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरेस्मा आदिद्धोतारं न्यसाद्यन्त ॥  
( अग्निः ५०८ ) ३।९।९ ( गाथिनो विश्वामित्रः । अग्निः )
- [६१८] १०।५।६।५ ( बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वे देवाः )  
तनुषु विश्वा भुवना नि येमिरे ।  
( इन्द्रः १६१ ) ८।३।६ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
इन्द्रे ह विश्वा— ।
- [६२०] १०।५।६।७ स्वस्तिभिरिति दुर्गाणि विश्वा ।  
( अग्निः ३६२ ) १।१८९।२ ( अगस्त्यो मैत्रावरुणिः  
अग्निः )
- [६२३] १०।५।७।३ पितृणां च मम्मभिः ।  
- ८।४।१।२ ( नाभाकः काण्वः । वरुणः )

- [६२४] १०।५७।४ उयोक् च सूर्यं एते ।  
 ( आयुर्वेदः ८६८ ) १।२३।२१ ( भेषातिथिः काण्वः ।  
 आपः )  
 ( आयुर्वेदः ८८५ ) १०।९।७ ( त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः, सिन्धुद्वीप  
 आम्बरीषो वा । आपः )  
 [६३७-३८] १०।६।१०-११ ( नाभानेदिष्ठो मानवः । विश्वे देवाः )  
 मधू कनायाः सख्यं नवगवाः ( ११ नवीयः ) ।  
 [६३८] १०।६।११ शुचि यत् ते रेकण आयजन्त सबहुं-  
 चायाः पय उन्नियायाः ।  
 ( ७१ ) १।१२।१५ ( कक्षीवान् दैर्घतमस औशिनः ।  
 विश्वे देवा इन्द्रो वा )  
 [६४८] १०।६।२२ रक्षा च नो मधोनः पाहि सूरीन् ।  
 ( इन्द्रः ७९६ ) १।५४।११ ( सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
 [६६०] १०।६।७ ब्रजं गोमन्तमश्विनम् ।  
 ( सोमः ११६४ ) १०।२।५ ( ऐन्द्रो विमदः, प्राजा-  
 पत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा । सोमः )  
 [ " ] १०।६।७ अथो देवेष्वक्रत ।  
 ( इन्द्रः ६१२ ) ८।६।१२ ( प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः )  
 [६६४] १०।६।४ ( गयः स्रातः । विश्वे देवाः )  
 देवासो अमृतत्वमानशुः ।  
 ( अग्निः १६२३ ) १०।५।१० ( देवाः । अग्निः )  
 येन देवासो — ।  
 [६६८] १०।६।८ विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।  
 ( ३८४ ) ६।५०।७ विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ।  
 [६६९] १०।६।९ = ( ५८९ ) १०।३।१०  
 अग्नि ( १० इन्द्रं ) मित्रं वरुणं सातये भगं ।  
 [६७३] १०।६।१३ अरिष्टः स मतो विश्व एषते ।  
 १।४।१२ ( कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः )  
 अरिष्टः सर्व एषते ।  
 [ " ] १०।६।१३ प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।  
 ६।७०।३ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । याषाष्ठीयः )  
 [६७४] १०।६।१४ = ( ५९३ ) १०।३।१४ यं देवासोऽवथ  
 वाजसातौ यं ।  
 [६७५] १०।६।१७ = १०।६।१७ ( गयः स्रातः । विश्वे  
 देवाः )  
 एवा स्रतेः स्रुववीषुधो विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।

- ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन ।  
 [६७५] १०।६।१७ विश्व आदित्या अदिते मनीषी ।  
 ( ३९७ ) ६।५।५ विश्व आदित्या अदिते सजोषाः ।  
 [६७९] १०।६।४ ( गयः स्रातः । विश्वे देवाः )  
 कविः ... । अदिः शृणोतु बुध्न्यो हवीमनि ।  
 ( ७३२ ) १०।२।१२ ( शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः )  
 कविरहिः ... ।  
 [६८२] १०।६।७ प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधि ।  
 ( २४५ ) ५।४।६ ( भौमोऽग्निः । विश्वे देवाः )  
 ... रथयुजं ऋणुध्वं । .. पुरंधीः ।  
 [६८५] १०।६।१० त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः ।  
 ( ३९० ) ६।५०।१३ त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषाः ।  
 [६८६] १०।६।११ रणवः संदष्टो पितुर्मौ हव क्षयः ।  
 ( अग्निः ३३२ ) १।१४।७ ( दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः )  
 [६९०] १०।६।१५ ( गयः स्रातः । विश्वे देवाः )  
 प्रावा यत्र मधुपुदुच्यते बृहद् ।  
 ( ७५८ ) १०।१०।८ ( दुवरयुर्वान्दनः । विश्वे देवाः )  
 [६९२] १०।६।१ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
 अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।  
 ( अग्निः ७१ ) १।३।४ ( कण्वो घौरः । अग्निः )  
 देवागस्ता वरुणो ... ।  
 [ " ] १०।६।१ आदित्या विष्णुर्महतः स्वर्बृहत् ।  
 ( ७१० ) १०।६।४ इन्द्राविष्णु मरुतः ... ।  
 [६९८] १०।६।७ दिवक्षणे अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।  
 ( अग्निः ९९ ) १।४।१४ ( प्रस्कण्वः वाण्वः । अग्निः )  
 सुदानवोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।  
 [७००] १०।६।९ ( वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः )  
 देवाँ आदित्याँ अदिभिं हवामहे ।  
 ( ७१० ) १०।६।४ देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे ।  
 [७०५] १०।६।१४ = ( ४६३ ) ७।३।१५  
 मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।  
 [७०६] १०।६।१५ = १०।६।१५ ( वसुकर्णो वासुकः ।  
 विश्वे देवाः )  
 देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्धे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः ।  
 ते नो रासन्तामुरुगायमथ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥  
 [ " ] १०।६।१५ = ( ४६३ ) ७।३।१५  
 ते नो रासन्ता० ... सदा नः ।

- [७०९] १०६६।३ = (६५) १।१०७।२  
आदित्यैर्नो अदितिः स्मर्त यच्छतु (२ वंसत) ।
- [७१०] १०६६।४ = (६९२) १०६५।१ (वसुकर्णो वासुकः।  
विदे देवाः )
- [ " ] १०६६।४ = (७००) १०६५।९
- [७१५] १०६६।९ आप ओषधीर्वनानि यज्ञिया ।  
(४४८) ७।३४।२५ आप ओषधीर्वनानो जुषन्त ।  
(मरुतः ३६९) ७।५६।२५ (मैत्रावरुणैर्वसिष्ठः । मरुतः)
- [७१८] १०६६।१२ आदित्या रुद्रा वसवः सुदानवः ।  
(२२२) ३।८।८ आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा ।
- [७१९] १०६६।१३ दैव्या होतारु प्रथमा पुरोहित ।  
(अग्निः १९४८) २।३।७ ( गृत्समदः शौनकः । [आग्नी-  
सक्तं] देव्यो होतारौ प्रचेतसौ )  
... प्रथमा विदुष्टरः ।
- [ " ] १०६६।१३ ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया ।  
(उषा ७४) १।१२४।३ (कक्षीवान् दैर्घतमस औशिजः।  
उषाः )
- [७२६] १०९२।६ ( शार्यातो मानवः । विश्वे देवाः )  
तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्चमा ।  
(अग्निः ७१) १।३६।४ ( कण्वो घौरः । अग्निः )  
देवासस्त्वा वरुणो ... ।
- [७२७] १०९२।७ सूरुो ह्यकीे वृषणश्च पौत्स्ये ।  
(इन्द्रः ३१५१) ४।४१।६ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रा-  
वरुणौ )
- [७३१] १०९२।१२ = (६७९) १०६४।४
- [७३६] १०९३।१ ( तान्वः पार्थ्यः । विश्वे देवाः )  
महि द्यावापृथिवी भूतसुर्वी ।  
(इन्द्रः ३१६४) ६।६८।४ ( बाह्रस्पत्यो भरद्वाजः ।  
इन्द्रावरुणौ )  
महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतसुर्वी ।
- [७३९] १०९३।४ ते वा राजानो अमृतस्य मन्द्राः ।  
(९२) १।१२२।११ श्रोता राजानो अमृतस्य ... ।
- [ " ] १०९३।४ अर्चमा मित्रो वरुणः परिउमा ।  
(अग्निः २४६) १।७९।३ (गोतमो रादृगणः । अग्निः)
- [७४१] १०९३।६ महः स राव पृषते ।  
(अग्निः ३५३) १।१४९।१ (दीर्घतमा औचध्यः। अग्निः)

- [७४६] १०९३।१२ सदा पादाभिष्टये ।  
(इन्द्रः १००८) १।१२९।९ (पश्च्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः।  
सदा पादाभिष्टिभिः ।
- [७५०-६१] १०९३।१-११ (दुवस्युर्वान्दनः । विश्वे देवाः।)  
आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ।
- [७५८] १०९३।८ = (६९०) १०६४।१५  
आवा यत्र मधुपुदुष्यते बृहद् ।
- [७५९] १०९३।९ विश्वा द्वेषांसि सनुतयुंमोत ।  
(१५२) २।२९।२ यूयं द्वेषांसि ... ।
- [७६३] १०९३।११ (बुधः सौम्यः । विश्वे देवाः, ऋत्विजो वा।)  
दधिक्राममिमुपसं च देवीम् ।  
(१६९) ३।२०।५ ( गायी कौशिकः । विश्वे देवाः )
- [७७१] १०९३।१२ सा नो पुहीयश्चवसेव गत्वी सहस्रधारा  
पवसा मही गौः ।  
(इन्द्रः ३१५०) ४।४१।५ (वामदेवो गौतमः। इन्द्रावरुणौ।)
- [७८३] १०९३।२ = (१७४) ३।५४।५  
परेषु या गुणेषु व्रतेषु ।
- [७९२] १०९३।१ ( शौल्विः कुलमलबर्हिषो, वामदेव्योः-  
होमुग्वा । विश्वे देवाः )  
न तमंहो न दुरितं ।  
२।२३।५ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
- [७९३] १०९३।२ वरुणमित्रार्चमन् ।  
(अदितिः ० २७४) ५।६७।१ (यजत आत्रेयः। मित्रावरुणौ)
- [७९४-९८] १०९३।३-७ वरुणो मित्रो अर्चमा ।  
(अग्निः ३१) १।२६।४ (शुनःशेष आजीर्गतिः । अग्निः)  
(अदितिः ० ५६) ८।१८।३ (हरिम्बिठिः काण्वः। आदित्यः)
- [७९८] १०९३।७ स्मर्त यच्छतु सप्रथ आदित्यासो वदीमहे।  
(अदितिः ० ५६) ८।१८।३ (हरिम्बिठिः काण्वः। आदित्यः)  
... .. यदीमहे ।
- [७९९] १०९३।८ यथा ह स्वद्रस्यो गौर्यं चित्पदि  
चितामसुञ्जता यजत्राः ।  
यजो ज्वस्मसुञ्जता व्यंहः प्र तर्षभे प्रतरं न आयुः ॥  
(अग्निः ७३९) ४।१२।६ (वामदेवो गौतमः। अग्निः)
- [८०७] १०९३।८ इन्द्र मा नो रीदिके आ परा दाः ।  
(इन्द्रः ८५४) १।१०४।८ (कुत्स आत्रिसः । इन्द्रः।  
आ नो वधीरिन्द्र मा परा दाः ।

- [८१८] १०।१४१।३ ( अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः )  
अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।  
( अग्निः १२१९ ) ८।११।६ ( वत्सः काण्वः । अग्निः )
- [८१९] १०।१४१।४ इन्द्रवायू वृहस्पतिं सुहवेह ।  
( ६ ) १।१४।३ ( मेघातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः )  
... .. मित्राग्निं ।
- [८२१] १०।१४१।६ ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।  
( इन्द्रः ६१ ) १।१०।४ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः )  
ब्रह्म ... यज्ञं च वर्धय ।
- [८२७] १०।१५७।५ ( भुवन आप्त्यः, साधनो वा भौमः ।  
विश्वे देवाः )  
आदित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।  
( मरुतः १९१ ) १।१६८।९ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ।  
मरुतः )
- [८२८] १०।१६५।१ ( नैर्ऋतः कपोतः । विश्वे देवाः )  
शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।  
( सोमः १२२३ ) ६।७४।१ ( बार्हस्पत्यो भरद्वाजः ।  
सोमास्त्रौ )  
शं नो भूतं द्विपदे— ।
- [८३४-३६] १०।१८१।१-३ ( १ प्रथो वासिष्ठः, २ सप्रथो  
भारद्वाजः, ३ चर्यः सौर्यः । विश्वे देवाः )  
धातुर्धृतानात् सवितुश्च विष्णोः ।

- [१२०१] १।१६४।५० ( दीर्घतमा औचध्यः । साध्याः ) =  
१०।९०।१६ ( नारायणः । पुरुषः )  
यज्ञेन यज्ञमबजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।  
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
- [१२११] १०।५३।५ ( सौचीकोऽग्निः । देवाः )  
गोजाता उत ये यज्ञियासः ।  
( ४६२ ) ७।३५।१४ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । विश्वे देवाः )
- [ " ] १०।५३।५ ( सौचीकोऽग्निः । देवाः )  
पृथिवी नः पार्थिवात् पार्ष्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात् पार्ष्वस्मान् ।  
( इन्द्रः ३३०० ) ७।१०४।२३ ( मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।  
पृथिव्यन्तरिक्षे [ उत्तरार्धः ] )
- [१२१३-१४] १०।७२।२-३ असतः सदजायत ।
- [१२२१] १०।८५।१७ ( सूर्यासावित्री ऋषिका । देवाः )  
मित्राय वरुणाय च ।  
( सोमः ९३९ ) ९।१००।५ ( रेभसून् काश्यपौ ।  
पवमानः सोमः )
- [१२६४] १।१३६।६ ( परच्छेपो दैवोदासिः । लिङ्गोक्ताः )  
मित्राय वोचं वरुणाय मीहुषे सुमृळीकाय मीहुषे ।  
( इन्द्रः १००२ ) १।१२९।३ ( परच्छेपो दैवोदासिः ।  
इन्द्रः )  
मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृळीकाय सप्रथः ।

**दैवतसंहितायां**  
**विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः**  
**( १ ) ऋग्वेदमन्त्राणाम् ।**

अंशः  
अकतुः  
अक्षरम्  
अग्निः  
अग्नि-जिह्वा  
अग्नि-दीप्तयः  
अग्नी-पर्जन्यौ  
अग्निवायुआदित्यपदाधानवेत्तारः  
अग्निवायुसूर्याः  
अग्नी-वैश्वी  
अग्न्यादित्ययोः अनुवेत्ता व्यतिहारेण वा  
उपासकः  
अग्निराः- रसः  
अज्ञ एकपात  
अतिथिः  
अत्रयः  
अथर्वा  
अदितिः  
अग्निः  
अग्नी ( पत्नी-यजमानौ )  
अध्वरः  
अनात्मज्ञः ( तत्परिवेचनम् )  
अनुमतिः  
अन्तरिक्षम्  
अपां नपात्  
अप्याः  
अभिधाचः  
अर्णवः  
अर्थमा  
अर्धन्तः  
अश्वः-क्षाः

अश्विना  
असुरः  
अ ( स्तु )-स्तारः  
अहः  
अहिर्बुध्न्यः  
अहोरात्रे  
आत्मज्ञान- अज्ञाने  
आत्रेयः प्रतिक्षत्रः  
आदित्यः  
आदित्य सत्यं दुर्ज्ञेयम्  
आदित्याः  
आपः  
इन्द्रवः  
इन्द्रः  
इन्द्राग्नी  
इन्द्रापर्वती  
इन्द्रापूषणौ  
इन्द्रामरुतो  
इन्द्रावरुणौ  
इन्द्रवायू  
इन्द्राविष्णु  
इन्द्रा-सोमौ  
इन्द्राणी  
इळा  
इळा. ( भूमिस्थ.ना देवताः )  
उक्षणः पशु  
उर्वशी  
उल्लका  
उषाः  
उषासानके  
ऋतवः  
ऋत्विजः

ऋभवः  
ऋभुक्षाः- क्षणः  
ऋषयः ( पशु )  
ऋषयः ( सप्त )  
ओषधयः- धीः  
ककुदः  
कण्वः  
कपोतः  
कृशानुः  
क्षत्रस्य पतिः  
गयः  
गायत्रम् ( साम )  
गिरयः  
गुह्यः  
गौः  
गोजाताः  
गोयात्रा ( तान्त्रादिकक्षा )  
गोरूपेण आदित्यरश्मिसमूहः गोरूपिणी  
आहुतिः वा  
गो- सवितारौ ( भेषवायू वा )  
माः ( देवपत्न्यः, पत्नीः )  
प्राबाणः  
धर्मः  
धर्मा  
धृक्  
चन्द्रमाः  
जगत ( साम )  
जनाः पशु  
ज ( नि )-नयः  
जिह्वा  
जीवात्म-परमात्मानौ

तरुवविद्  
 तनयिस्तुः  
 तन्यतुः  
 ताक्षर्यः  
 तिष्यः  
 त्वष्टा  
 वृक्षः  
 वृषिकाः  
 दिव्याः  
 दिवाः ( मेघाः वा )  
 दीधितिः  
 देवः  
 देवगणः-संघः वा  
 देवाः  
 देवानां देवाः  
 देवो देवः  
 देवपत्नीः [ पत्नीः, माः ]  
 देवी  
 देवीः तिस्र  
 देवीः षट्  
 देहात्मानौ ( देहात्मजीवात्मानौ-सायनाः )  
 द्यौः  
 द्यावापृथिवी [ रोदसी ]  
 द्युपृथिवी-अन्तरिक्षम् [ तिस्रः निर्ऋतीः ]  
 धृता  
 धर्मः  
 धाता  
 धिषणा  
 धीः  
 धियः  
 धेनुः  
 धेनवः  
 नक्कम्  
 नक्षत्राणि  
 नद्यः  
 नमः  
 नरः  
 नरासंघः  
 नाभानेविष्टः

निर्ऋतिः  
 निशाः  
 नौः ( देवी )  
 षतयः, सत्यस्य  
 पत्नीः [ माः, देवपत्नीः ]  
 पन्थाः  
 परमात्मा ( आदित्यः वा )  
 परमेश्वरस्य अविषयत्वम्  
 पर्जन्यवाता  
 पर्वतः-तासः  
 पशुः  
 पार्थिवाः  
 पितरः  
 पुरन्धिः  
 पूषा  
 पृथिवी  
 पृथ्विः  
 प्रजापतिः  
 प्रदिशः  
 प्रमतिः ( अग्नेः )  
 प्रवाचनम् ( देवानाम् )  
 प्रश्नाः  
 प्रश्नप्रतिबचनानि  
 षर्हिः  
 वृहत्  
 वृहदुक्थः  
 वृहस्पतिः  
 ब्रह्म  
 ब्रह्मा  
 ब्रह्मजाया  
 ब्रह्मणस्पतिः  
 भगः  
 भवित्रम्  
 भूतानि  
 भूमिः  
 सृगवः  
 मृदः  
 मनः ( मन आवर्तनम् )  
 मनीषा  
 मनीषिणः

मनुष्याः  
 मन्म  
 मरुतः  
 मही  
 माता  
 मित्रः  
 मित्रावरुणा  
 मेघः  
 यजमानब्रह्माणौ  
 यजुः  
 यज्ञः  
 यमः  
 रथः  
 रथन्तरं साम  
 रश्मयः ( सूर्यस्य, आदित्यस्य वा )  
 राक्ष  
 राजानः  
 रातिषाचः  
 रायः  
 रुद्रः-द्राः  
 रुद्रियः  
 रोदसी ( एकवचनम् ) ( रुद्रस्य पत्नी )  
 रोदसी ( द्विवचनम् ) ( द्यावापृथिवी )  
 स्रसः  
 वनस्पतिः  
 वना  
 वनिनः  
 वरणः  
 वसवः  
 वाक्  
 वाजः-जाः  
 वाजी [ वृहदुक्थपुत्रः ]  
 वाजिनः [ अग्नि-वायु-सूर्याः ]  
 वातः  
 वातापर्जन्या  
 वायुः  
 वास्तोष्पतिः  
 विष्णुत्  
 विद्वान् पथः  
 विधाता

विट् ( श् ) सर्वा	सत्यस्य पतयः ( पतयः सत्यस्य )	सूर्यः
विश्वे देवाः	समुद्रः	सूर्यामासा
विष्णुः	सरमा	सोमः
वृकः ( अरुणः )	सरयुः	सोमजामयः
वृषस्तुभः	सरस्वती ( नदी )	सोमसूर्यचक्रभ्रमणानि
वृष्टिः	सरस्वती ( वाक् )	स्तोता
वेदिः	सविता	स्तोमः ( देवस्तुतिः )
व्रजिनीः	साम	स्वः
व्रतानि	सिनीवाली	स्वधावान् ( प्रश्नोत्तराणि )
शंसः	सिन्धुः-न्धवः	स्वरूपां मितयः
शामी ( गोत्वेन निरूपिता )	सुकृतानि, सुकृताम् ( सुकृतां सुकृतानि )	स्वस्तिः
शम्भुः	सुतम्भरः ( ऋषिः )	ह्रविष्कृतः
शारीरम्	सुपर्णः	हस्तौ
शर्यणावन्तः	सुमतिः, आदित्यानाम्	होता
स्वन्तसरः	सुहवानि देवानाम्	होतारा वैभ्या
संसारः	सृता	

## विश्वे-देवाऽन्तर्गतानां देवतानां गुणबोधकपदानि ।

अंसः ५, ४२, ५; २६४

अक्तुः १०, ६४, ३, ६७८ । १०, १४, ९; १२६९

अक्षरम् १, १६४, २४; १२२ । ३, ५५, १; १९२

अर्कम् १२२

गायत्रम् "

त्रैष्टुभम् "

महत् १९२

वाकम् १२२

अग्निः १, १४, १-१२; ४-१५ । १०५, ४, १३-१४, ४१, ५०-

५१ । १०६, १; ५७ । १०७, ३; ६६ । १२२, ३, ५;

८४, ८६ । १३२, १; ९७ । १६४, १, ११; ९९, १०९ ।

१८६, ३; १४२ । ३, २०, १, ५; १६८-६९ । ५४, १,

३, १९, २१-२२; १७०, १७२, १८८, १९०-९१ । ५५,

२-१०; १९३-२०१ । ८, ८; २२२ । ५७, १, ४-६, २२३,

२२६-२८ । ४, ५५, ४, ७-८; २३२, २३५-३६ । ५, ४१, १,

४, १०; २४३, २४९ । ४३, ३; २६२ । ५, ४३, ६, १०,

१३-१५, २८२, २८६, २८९-९१ । ४४, ३-५, ८, १४-१५;

२२६-२८, ३०१, ३०७-८ । ४५, ४; ३१२ । ४६, २, ४;

३२१, ३२३ । ४७, ७; ३३४ । ४८, १, ४-५; ३३५, ३३८-

३९ । ४९, ३; ३४१ । ५०, ४; ३४८ । ५१, १-३, ८-१०,

१३-१४; ३५०, ३५३-५५, ३५८-५९ । ६, २१, ९; ३६१ ।

६, ४९, १-२, ९; ३६३-६४, ३७१ । ५०, १, ९; ३७८, ३८६ ।

५१, ५, १०, १३; ३९५, ४०२, ४०५ । ५२, ५-६, १२, १७;

४१३-१४, ४२०, ४२५ । ७, ३४, ८, १४, २५, ४३३, ४३९,

४४८ । ३५, ४; ४५२ । ३६, १; ४६४ । ३९, १, ४-७,

४८१, ४८४-८०४ ४०, ३; ४९० । ४१, १; ४९४ । ४२, २-६,

४९६-५०० । ४३, २-३, ५; ५०२-३, ५०५ । ४४, १; ५०६ ।

८, २७, १-३; ५१२-१४ । २८, २-३; ५३५-३६ । २९, २;

५४० । ८, ५८, २; ५५६ । ६९, ११; ५५८ । १०,

३१, १०; ५७७ । ३५, १, ३-१३; ५८०, ५८२-९२ ।

३६, ६, १२; ५९९, ६०५ । ५२, ३४, ६; ६१०-११,

६१३ । ५६, १; ६१४ । ५७, २; ६२२ । ६१, ९, १४,

१७, २०-२१; ६३५, ६४०, ६४३, ६४६-४७ । ६३, ९;

६६९ । ६४, ३-४, ८; ६७८-७९, ६८३ । ६५, १; ६९५

६६, ४, १३; ७१०, ७१९ । १०, ९२, १-४, ११, १४;

७२१-२४, ७३१, ७३४ । १००, ६; ७५६ । १०१, १; ७६३

१०९, १-३; ७७५-७६ । ११४, ४; ७८५ । १२६, ५, ८;

७९६, ७९९ । १२८, १-२, ६; ८००-१, ८०५ । १४१, १;

३, ६; ८१६, ८१८, ८२१ । १६५, २; ८२९ । १६६, ३;

८३५ । १०, ९८, ८-१२; १२२९-१२३३ । १, १६६, ६-७,

१२६४-६५

अग्निदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अक्तोः अतिथिः	७२१	अरिष्टगातुः	२९६	कृच्छ्रा चरन्	६११
अंगीणः	६७८	अरुषः	३६४	केतुः	१९३
अजरः	२९६	अवमः	४१	केतुः अध्वरस्य	२२२
अजरूपाः	७२२	अश्वाः अग्नेः-		केतुः यजतः	७२१
अजस्रः	१७०	अरुषाः	४९६	केतुः यज्ञस्य	३६४
अतिथिः	४९८	रोहितः	"	क्रिविः	२९७
अतिथिः अक्तोः	७२१	वीरवाहाः	"	गोः निषिषधं अन्तः चरन्	१९९
अतिथिः प्रेष्ठः	१४१	हरितः	"	गोपाः	२०१, ५३६, ८०५
अदब्धः	८०५	असिन्वन्	४८६	माः वसानः	२८९
अहतकतुः	३६४	आक्षित् पूर्वाशु	१९६	धृतपृष्ठः	९९
अघासु मन्द्रः	६४६	आततः तन्तुः देवेषु	६२२	धृतेन आहुतः	५९९
अधिक्षित्, अभयानां विशाम्	७३४	आश्वत्तमाः	२४३	चतुरर्नाकः	३३९
अध्वक्षः	८००	आहुतः	६२२	चरन् अन्वमम्	१९८
अध्वक्	६४०	आहुतः धृतेन	५९९	चरन् बहुकृच्छ्रा	६११
अध्वरस्य केतुः	२२२	इधं सनिता	६३५	चारुः	७५६
अर्नाकैः (युक्तः) दिव्यैः दम्येभिः	१७०	इन्द्रवान्	५८०	चारु वसानः	३३९
अनूरुत्, अपरा	१९६	इन्द्रस्य सुकृतम्	७५६	चिकित्वान् दैन्यं जनम्	४२०
अन्तः चरन्, गोः निषिषधम्	१९९	इषस्पतिः	२३२	जरिता	७५६
अन्तः चरन्, महान् रोचनेन	२००	ईज्यः	१७०, ३६४	जर्भुरत् हरिणीषु	७२१
अन्तमः	१९९, ७५६	ईशे महः सौभगस्य	२३६	जातः शम्यां पित्रोः	५७७
अन्तर्मतिः	१९९	ईशे वसव्यस्य	"	जातवेदाः	२२८, २८६, ६४०
अन्वमं चरन्	१९८	उग्रः	७७५	जीवः	२९८
अप-म्लुक्तः	६११	उदक्तः	५३६	ज्योतिरनीकः	४९२
अपरा अनूरुत्	१९६	उपब्दिः	६३५	तनूनपात्	७२२
अपाच्याः	५३६	उषसः पुरोहितः	७२२	तन्तुः देवेषु आततः	६२२
अपां नपात्	८५	ऋजुगाथः	२९८	तपः	७७५
अबन्धनः	१९७	ऋतं महत्	७१०	तुर्वणिः शस्तिभिः	१४२
अभीषवः अग्नेः-	२९७	ऋतधीतिः	४०२	तृतीयः भ्राता ( आदित्यस्य )	९९
ऋतावृधः	"	ऋतस्य होता	६४०	त्रितः	२४३
यम्यः	"	ऋतावान्	४८७	त्रिधातुश्रंगः	२८९
सर्वशासाः	"	एकः	१९७	त्रिवृत्	६११
सुयन्तवः	"	एकः एव	५५६	दधानः प्रिया अमृता धामानि	२०१
सुयुजः	"	ओमभिः विश्वेभिः हुवानः	२८९	दस्मः	३४२
असृष्टः	२८९	ओषधीः वसानः	"	दिवः शिशुः	३६४
अरतिः	६४६	कण्वहोता	२४३	दिवः सजोषाः	२४३
अरतिः युवत्योः	३६४	कविः	६७९, ७५६	दिव्यः	"
अरिं यतन्	३३९	कवीनां कवितमः	२६२	दूतः	४१, २००
				दूतः देवानाम्	१८८



देवः	१५, ५१	प्रेष्ठः	४३९	वपुंषि विभ्रत् नः अभिविचष्टे	२००
देवानां दूतः	१८८	प्रेष्ठः अतिथिः	१४१	वयाकिनं ( सोमं ) सञ्जर्गुराणः	२९८
देवेभ्यः	६७८	बर्हिः अनु प्रसर्माणः	२९६	वयोषाः	२८९
द्वैव्यं सहः	७५६	बहुधा समिद्धः	५५६	वराः ( व० व० )	६२०
द्योतनः	५४०	बुधः	१९८	वरुणः	३३९
द्रविणोदाः	३२३, ७३१	बृहद्विः	२८९	वर्षसः ( षष्ठी )	३३८
द्विवन्धुः	६४३	भगः	३३९	वषट्कृताः ( व० व० )	५३५
द्विमाता	१९७, १९८	भद्रः	३४२	वसर्हा	८४
द्विचर्तुनिः	६४६	भर्गः हनाम यस्य	६४०	वसव्यस्य ईशे	२३६
धनदाः	८१६	भ्राता	३९७	वसानः ओषधीः	२८९
धर्णसिः	२८२	भ्राता तृतीयः ( आदित्यस्य )	९९	वसानः माः	"
धर्ता प्रजायाः	६३५	मतिः	१९९	वसानः चारु	३३९
धर्मन्	७२२	मध्यमः	७८५	वसुः	२२८, ३५८
धामन्	३३५	मध्ये हितः	२९६	वसुपतिः वसूनाम्	४१३
नराशांसः	६०	मनुर्हितः	१४	वसूनां वसुपतिः	"
पञ्चयामः	६११	मन्द्रः अघासु	६४६	वह्निः	१६८, ३४८
पत्नीवान्	५३५	मन्युं परेषां प्रतिनुदन्	८०५	वाजं सनिता	६३५
परस्तात् शयुः	१९७	महः सौभगस्य ईशे	२३६	वाजी	६०
पलितः	२००	महत् ऋतम्	७१०	विदथस्य साधनम्	७२२
पुत्रः पूर्वः	५७७	महान् रोचनेन अन्तः चरन्	२००	विदथेषु सन्नाट्	१९८
पुरन्धिः	३६१	महे ( चतु० )	३३५	विदथ्यः	१७०
पुरस्तात्	५३६	मेधिरः	५१, ५४०, ७५६	विदुष्टरः	५०, ५१
पुरुत्रा	१९५	यजतः केतुः	७२१	विप्रः	५, १२, ३५२
पुरुध प्रसूतः	१८८	यज्ञः	४१, ७५६	विभावसुः	७२१
पुरोहितः	५१२, ७१९	यज्ञस्य केतुः	३६४	विभावा	३७१, ६४६
पुरोहितः उषसः	७२२	यज्ञस्य प्रसाधनः	६२२	विमृतः	१९५
पुर्वणीकः	४९७	यज्ञस्य रथ्यः	७२१	विशास्पतिः	८१६
पूर्वः पुत्रः	५७७	यतन् अरिम्	३३९	विशां अभयानां अधिक्षित्	७३४
पूर्वासु आक्षित्	१९६	यवीयुत्	६३५	विशां विश्पतिः	७२१
प्रजायाः धर्ता	६३५	यष्टा	६४३	विशां होता	"
प्रतिनुदन् परेषां मन्युम्	८०५	यहः	७२२	विश्वपतिः विशाम्	"
प्रथमः	७१९	युवत्योः अरतिः	३६४	विश्वभोजः	२४३
प्रथमा पुरोहितः	"	युवा	२९६	विश्वानरः	१०८
प्रयुतः	१९५	रथ्यः यज्ञस्य	७२१	विश्वा भुवनानि वेद	२०१
प्रसर्माणः बर्हिः अनु	२९६	रराणः	२८९	विश्वे ( व० व० )	५९१
प्रसाधनः यज्ञस्य	६२२	राजा	१९५	विष्णुः	२०१
प्रसूतः	१८८	रोचनेन महान् अन्तः चरन्	२००	विष्णुहा मध्ये हितः	२९१
प्रसूतः पुरुध	१८८	वक्त्रराजस्यः	४०२	वीळुहरः	७७
प्राचीनरश्मिः	५९९	वत्सः	१९७	वृषभः	२८
प्रियः	३३५	वनेषाट्	६४६		

वृषा	२९६, ७२१	सत्यतिः	४०५	सुधितः	४९८
वैतरणः	६४३	सनिता इध्मम्	६३५	सुपर्णः	७८५
वैद्युतं तेजः	३३५	सनिता वाजम्	"	सुप्रीतः	४९८
वैद्युताग्निः	"	सन्त्यः	३५२	सुमनाः	१९१, ८१६
वैश्वानरः	३५८	सप्ततन्तुः	६११	सुशंसः	४१४
शक्तिः अग्नेः-		समानः	१९५	सुशेव्यः	२९०
मायिनी	३३५	समिधानः	४२५, ५८२-५९१, ६०५	सुस्वरः	२९८
वृणाना	"	समिद्धः	१९४, ५०६, ५९२	सुहवः	४१४
शम्यां पित्रोः जातः	५७७	समिद्धः बहुधा	५५६	सनुः सहसः	३६४, ३८६
शायुः परस्तात्	१९७	सम्राट् विदथेषु	१९८	सौभगस्य ईशे	२३६
शक्तिभिः तुर्वेणिः	१४२	सर्वताता	१८८	स्थिरः	६४३
शिशुः	२९६	सविता	३३९	स्वक्षत्रः	३३५
शिशुः दिवः	३६४	सहः दैव्यम्	७५६	स्वयशाः	"
शुष्कासु शोचन्	७२१	सहसः सनुः	३६४, ३८६	हरिणीषु जर्भुरत्	७२१
शेवधः	६४६	सहसावन्	५०५	हव्यवाट्	६१०, ६११
शोचन् शुष्कासु	७२१	सहस्यः	५००	हव्याद्	४३९
शोचिष्केषाः	२४९	सहोभरिः	२९६	हितः विष्णुहा मध्ये	२९६
श्रेष्ठवर्चाः	४०२	साधनं विदथस्य	७२२	हुवानः	२८६
सक्षणः	२४३	सीदन् योनिं आ	५४०	हुवानः विश्वेभिः ओमभिः	२८९
सत्वा	३३८	सुकृतं इन्द्रस्य	७५६	होता १२, १४, ५१, १९८, २९६, ३७१,	
सजोषाः	१४२, २४३	सुक्षत्रः	३६३, ४०२	६१३, ६४०, ७७६	
सज्जर्भुराणः सुतेष्टुभं वयाकिनम्	२९८	सुजिह्वः	१०	होता विशाम्	७२१
सप्तः	५०, ५१	सुद्रविणः	६४७		

अमिजिह्वा	३, ५७, ५; २२७
उरुची	"
मधुमती	"
सुमेधा	"
अग्निदीप्तयः	३, ५७, ४; २२६
ऊर्णाः	"
दर्शता	"
भूरिवाराः	"
यजत्राः	"
अग्नीपर्जन्यौ	६, ५२, १६; ४२४
अन्यः इळां जनयत् [ अग्निः ]	"
अन्यः गर्भं जनयत् [ पर्जन्यः ]	"
सुहवा	"

अग्नि-वायु-आदित्यपदाधानवेतारः	१, १६४, २३; १२१
( सवनत्रय-छन्दस्त्रय-विधानं वा । )	
गायत्रे अधि गायत्रम्-अग्निपदम् ।	
त्रैष्टुभात् त्रैष्टुभं पदम्-वायुपदम् ।	
जगति आहितं जगत्-आदित्यपदम् ।	
अग्निवायुसूर्याः	३, ५६, ८; २२१ । १०, ६६, १०; ७१६ ।
	१०, ११४, २; ७८३
इषिराः	२२१
ऋतावानः	"
वृळभासः	"
निर्ऋतीः तिस्रः	७८३
वाजिनः	७१६
अग्नीषोमौ	१०, ६६, ७; ७१३



अदितिः १,८९,३,१०; २१,२८ । १०५,१९; ५६ । १०६,  
१,७; ५७,६३ । १०७,२-३; ६५-६६ । २,२९,३; १५३,  
३,५४,१८,२०; १८७,१८९ । ४,५५,१,३,७; २२९ ।  
२३१,२३५ । ५,४२,१-२; २६०-२६१ । ४६,३,६;  
३२२,३२५ । ४९,३; ३४२ । ५१,११,१४; ३५६,३५९ ।  
६,५०,१; ३७८ । ५१,३-५,११; ३९५-९७,४०३ । ७,  
३५,९; ४५७ । ३२,५; ४८५ । ४०,२,४,४८९,४९१ ।  
८,२५,१०; ५०९ । २७,५; ५१६ । १०,३६,३,५९६ ।  
६३,५,१०,१७; ६६५,६७०,६७५ । ६४,५,१३; ६८०,  
६८८ । ६५,१,९; ६९२,७०० । ६६,३-४; ७०९-१० ।  
९२,११,१४; ७३१,७३४ । १००,१-११; ७५१-६१

अदितिर्देवताया गुणबोधकपदानि ।

अनर्वा ४९१

उरुव्यचाः ३२५

दुवोयु ३९६

देवी २३५,३५६,३७८,४८९,४९१,५०९,५१६

पस्त्या २३१

मही ५१६

माता मित्रस्य ५२६

माता वरुणस्य ”

यज्ञिया १८७

सर्वतातिः ७५१-७६१

सुप्रणीतिः ६७०

सुसार्मा ”

सुहवा ४९१

अदितेः विभूतिमत्त्वं सकलजगदात्मत्वं वा २८

अदितिर्देवताया उपमासूची ।

सूनुं न माता २६१ प्रति मे स्तोमं जगृभ्यात् ।

अग्निः ७,३५,३; ४५१

अग्नी (पत्नीयजमानौ) ७,३९,१; ४८१ । ४२,१; ४९५

अग्नी देवताया उपमासूची ।

रथ्या इव पन्थाम् ४८१ भेजाते अग्नी ऋतम् ।

अश्वरः ८,१७,३; ५१४

अनात्मज्ञः (तत्परिदेवनम्) १,१६४,३७; १३५

निग्यः १३५

मनसा ( युक्तः ) १३५

संनद्धः ”

अनुमतिः १०,१६७,३; ८३३

अन्तरिक्षम् ३,५४,१९; १८८ । ३,८,८; २२२ । ५,४२,  
१६; २७४ । ७,३५,५; ४५३ । १०,६६,११; ७१७ ।  
१२८,२; ८०१ । ५३,५; १२११

उरु १८८

उरुलोकः ८०१

रजः ७१७

अर्षा नपात् १,१२२,४; ८५ । १८६,५; १४४ । २,३१,  
६; १६३ । ५,४१,१०; २४९ । ६,५०,१३; ३९० ।  
५२,१४; ४२२ । ७,३४,१५; ४४० । ३५,१३; ४६१ ।  
१०,९२,१३; ७३३

आशुहेमा १६३

गर्भः ऋणः भूम्यस्य २४९

दासु ३९०

पत्रिः ”

पेरुः ४६१

विश्वदेव्यः ७३३

वृष्णः भूम्यस्य गर्भः २४९

शिवः ४४०

सखा ”

अप्याः ७,३५,११; ४५९

अभिषाचः ७,३५,११; ४५९

अर्णवः १०,६६,११; ७१७

अर्यमा १,८९,३; २१ । ९०,१-३,९; २९-३१,३७ ।

१०५,६; ४३ । १०७,३; ६६ । १८६,२; १४१ । ३,५४,  
१८; १८७ । ४,५५,४,६; २३२,२३८ । ५,४१,२;  
२४१ । ४६,५; ३२४ । ६,५०,१; ३७८ । ५१,३;  
३२५ । ५२,११; ४१९ । ७,३५,२; ४५० । ३६,४;  
४६७ । ३९,५; ४८५ । ४०,२,४; ४८९,४९१ । ८,२७,  
१७; ५२८ । २८,२-३; ५३५-३६ । ८३,२,४; ५६०,  
५६२ । १०,३१,४; ५७१ । ३६,१; ५९४ । ६१,१७;  
६४३ । ६४,५; ६८० । ६५,१,९; ६९२,७०० ।  
९२,६; ७२६ । २३,४; ७३९ । १२६,१-७; ७९२-९८ ।  
१४१,२; ८१७ । १,१३६,६; १२६४

## अर्थमा देवताया गुणबोधकपदानि ।

( मित्रावरुणाभ्यां सहितत्वेन बहुवचम् । )

अतूर्तपन्थाः	६८०
अपबाधमानाः द्विषः	३०
अपाच्याः	५३६
अप्रमूराः	३०
अमृताः	”
अमृतस्य मन्त्राः	७३९
गोपाः	५३६
चर्षणीनां राजा	७९७
बुधः	१२६४
द्विषः अपबाधमानाः	३०
नेता	७९७
पुरुजातः	४५०
पुरुस्थः	६८०
प्रचेतसः	५६०
मन्त्राः	७३९
महः ( षष्ठी )	४३
यज्ञियः	१८७
युजः	५६०
राजानः अमृतस्य	७३९
राजा चर्षणीनाम्	७९७
वसवानाः	३०
वस्वः	”
वृधासः	५६०
घाम्	३७
सजोवसः	१४१, ५२८
सप्तहोता	६८०
सरातयः	५२८
सुकृतुः	४६७
सुशेवः	३७८
स्मद्रातिषाचः	५३५
अर्बन्तः	७, ३२, १२; ४६० । १०, ६४, ६; ६८१
मितद्रवः	६८१
धाजिनः	”
विश्वे	”
हवनश्रुतः	”

## उपमासूची ।

मेधसातौ इव ६८१ त्मना सहस्रसाः ।

अश्वः-श्याः १, १६४, २-३, १००-१०१ । १०, ११४, १०;

७९१

एकः १००

सप्त १०१

सप्तनामा १००

रथस्य घूर्णु युकासः ७९१

अश्विनौ १, ८९, ३-४, २१-२२ । १२२, ४-५, ८५-८६ ।  
 १८६, १०, १४२ । २, ३१, ४; १६१ । ३, २०, १, ५;  
 १६८-६९ । ५४, १६; १८५ । ५७, २; २२४ । ५, २६,  
 ९; २३९ । ४१, ३; २४२ । ४२, १८; २७६ । ४३, ८,  
 १७; २८४, २९३ । ४६, २, ४; ३२१, ३२३ । ४९, १,  
 ३४० । ५१, ८, ११; ३५३, ३५६ । ६, ४९, ५; ३६७ ।  
 ५०, १०; ३८७ । ७, ३५, ४; ४५२ । ३९, ४; ४८४ ।  
 ४०, ५; ४९२ । ४१, १; ४९४ । ४६, १; ५०६ । ८, २५,  
 १०; ५०९ । २७, ८; ५१९ । २९, ८; ५४६ । ८३, ७;  
 ५६५ । १०, ३५, ६; ५८५ । ३६, ६; ५९२ । ५२, २;  
 ६०९ । ६१, ३-४, १५; ६२९-३०, ६४१ । ६४, ३; ६७८ ।  
 ६५, १२; ७०३ । ६६, ५; ७११ । ९२, १३; ७३३ ।  
 ९३, ५-७, ७४०-४२ । १२८, ७, ८०६ । १८४, २; ८३८

## अश्विनौ देवताया गुणबोधकपदानि ।

अदन्धा	१८५
अपां वृषण्वसू	७४०
अमृता	२७६
अर्चिमन्ता	६४१
उभा	८०६
चारु ययोः नाम	१८५
दिवः नपाता	६३०
देवौ	७४१, ८३८
द्रवन्ता हवनेषु तिगमम्	६२९
द्रा	५४६
धिष्ण्या	२२
नपाता दिवः	६३०
नरा	३४०, ३६७, ३८७
नाम ययोः चारु	१८५

नासत्या	३२१, ३६७, ३८७, ४८४, ५०९, ६४१
पती	१६१
पान्ता	८५
पितरा	१८५
पुरुभुजा	३४०
पुंकरस्रजा	८३८
बन्धुपृच्छा	१८५
मन्वू	६४१
मयोभुवा	२८४
येष्ठा	२४२
रथः अभिनोः-	
तृजुजिः	५८५
मनसा युजानः	३६७
विष्वक्मान्	,,
रयिदौ रयीणाम्	१८५
रयीणां रयिदौ	,,
रराणा वृक्तबर्हिषे	६४१
रुद्रा	७४२
रौद्री	६४१
विप्रा	३८७
वृक्तबर्हिषे रराणा	६४१
वृषणा	२२४
वृषणसू अपाम्	७४०
व्यन्ता	८५
शुभस्पती	७४१
सरथा	२८४
सुहवा	७३३
सुहस्ता	२२४
हवनेषु व्रवन्ता	६२९
हितप्रयसा	६४१

**अभिधनौ देवताया उपमासूची ।**

धुरं आग्निः न नाभिमू	२८४	यातं अर्वाग् गन्तं निधिम् ।
वृत्तः न	२८४	शान्तमा गीः गन्तु हुवभ्ये ।
प्रवासा इष	५४६	प्र बसतः ।
मनः न	६२९	येषु हवनेषु तिग्मम् ।
ववन्वासा न	६३०	इषं अस्मृतभू ।

असुरः	५, ४१, ३, २४२ । १०, ५६, ६, ६१९
दिवः	२४२
स्वर्विद्	६१९

**उपमासूची ।**

अन्धांसि इव	२४२	असुराय मन्म प्र भरष्मम् ।
अस्तारः ( अस्तृ )	१०, ६४, ८, ६८३	
अहः	१०, १४, ९, १२६९	
अहिरुध्न्यः	१, १८६, ५, १४४ । २, ६१, ६, १६३ । ४, ५५, ६, २३४ । ५, ४१, १६, २५५ । ६, ४९, १४, ३७६ । ५०, १४, ३९१ । ७, ३५, १३, ४६१ । १०, ६४, ४, ६७९ । ६९, ११, ७१७ । ९२, १२, ७३२ । ९३, ५, ७४०	
उपमातिवनिः	२५५	
कविः	७३२	
अहोरात्रे	१, १२२, ४, ८५ । ३, ५५, ११, १५, २०२, २०६ । ४, ५५, ३, २३१ । ६, ४९, ३, ३६५	
अदब्धे	२३१	
अन्यत् गुह्यं अन्यत् आविः	२०६	
अन्यत् रोचते अन्यत् कृष्णम्	२०२	
अन्या स्तुभिः पिपिशे सूरः अन्या	३६५	
अरुषस्य दुहितरा	३६५	
अरुषी	२०२	
अहनी	२३१	
ऋच्यमाने	३६५	
नाना वपुषि चक्रति	२०२	
पथ्या	२०६	
पदे दस्मे अन्तः निहिते इव	२०६	
पावके	३६५	
मातरा	८५	
मिथस्तुरा	३६५	
विचरन्ती	३६५	
विरूपे	३६५	
विषूची	२०६	
श्यावी	२०२	
सध्रीचीना	२०६	
स्वसारौ	२०२	
<b>उपमासूची ।</b>		
पदे इव निहिते	२०६	दस्मे अन्तः ।

आत्मज्ञानाज्ञाने	१, १६४, ३९; १३७
जीवात्मनः पारमार्थिकं रूपम् ( सायनाचार्याः )	
आग्नेयः ( ऋषिः ) प्रतिक्षत्रः	५, ४६, १; ३२०
विद्वान्	३२०

## उपमासूची ।

हयः न ३२० विद्वान् अयुजि स्वयं धुरि ।

आदित्यः	१, १०५, १६; ५३ । १२२, ३; ८४ । १६४,
	१, ७-८, १०, ३१, ३३; ९९, १०५-६, १०८, १२९, १३१ ।
	३, ५५, १४; २०५ । ५, ४१, ९, २४८ । ६, ५१, १; ३९३ ।
	१०, ६१, १८, ६४४ । ६६, १३; ७१९ । १०९, १; ७७५

## आदित्यदेवताया गुणबोधकपदानि ।

अकूपारः	७७५
अदब्धः	३९३
अनिपद्यमानः	१२९
अनीकम्	७०
आचरन् पथिभिः	१२९
आप्त्यः	२४८
ऋतः	२०५, ३९३
गोपाः	१२९
चक्षुः त्यत्	३९३
चम्बोः उत्तानयोः योनिः	१३१
त्यन् चक्षुः	३९३
दर्शितः	"
नर्यः	२४८
पथिभिः आचरन्	१२९
पणितः	२४८
परिष्मा	८४
पलितः	९९
पिता	१०६, १३१
पुरोहितः प्रथमः	७१९
प्रथमः पुरोहितः	"
प्रियः मित्रयोः वरुणयोः	
यज्ञत्रः	२४८, ३९३
योनिः उत्तानयोः चम्बोः	१३१
वसानः विषूचीः	१२९
वसानः सध्रीचीः	"
वामः	९९, १०५

विः	१०५
विदपतिः	९९
विषूचीः वसानः	१२९
शुचिः	३९३
सध्रीचीः वसानः	१२९
सप्तपुत्रः	९९
होता	"

आदित्यसत्यम् ( दुर्ज्ञेयम् ) [ परमेश्वरस्य अविषयत्वम्, सायनाचार्याः । ]	१, १६४, ४-६; १०२-१०४
आदित्याः	१, १४, ३-४; ६-७ । १०६, २; ५८ । १०७, १-२; ६४-६५ । २, २९, १; १५१ । ३१, १; १५८ । ३, २०, ५; १६९ । ५४, २०, २०; १७९, १८९ । ८, ८; २२२ । ५, ५१, १०, १२; ३५५, ३५७ । ६, ५०, ११; ३८८ । ५१, ४-५; ३९६-९७ । ७, ३५, ६, १४; ४५४, ४६२ । ४४, १; ५०६ । ८, २७, ३, ६, २२; ५१४, ५१७, ५३३ । ८१, ५, ८; ५६३, ५६६ । १०, ३५, ९, ११-१२; ५८८, ५९०-९१ । १०, ३६, १; ५९३ । ६३, ३, ५, ७, १३, १७; ६६३, ६६५, ६६७, ६७३, ६७५ । ६५, १, २; ६९२, ७०० । ६६, ३-४, १२; ७०९-१०, ७१८ । १२६, ५, ७; ७९६, ७९८ । १२८, ९; ८०८ । १४१, ३; ८१८ । १५७, २-३; ८२४-२५ । ९८, १; १२२२

## आदित्यानां गुणबोधकपदानि ।

अग्निजिह्वाः	१७९
अदब्धाः	३९६
अग्निवर्हाः	६६३
अपरिहृता	६६५
इषिराः	१५१
ईशानासः वामस्य	५६३
उक्थशुष्माः	६६३
ऋद्दराः	१७९
कवयः	"
क्षयन्तः	३९६
तुराः	५१७
दातारः सुवसनस्य	३९६
दिव्याः देवाः	३८८, ७००
देवाः दिव्याः	३८८, ७००
धृतव्रताः	१५१

नरः	३९६, ५१७
पप्रथानाः	१७९
प्रचेतसः	५६३
मधुमत् पयः येभ्यः माता पिन्वते	६६३
महः	३९६
युवानः	१७९, ३९६
राजानः	३९६
रिशादसः	२९६, ५६३
वर्षदः	१५८
वामस्य ईशानासः	५६३
विश्वे	३९७, ६७५
वृषभराः	६६३
श्रवस्यवः	१५८
सजोषसः	५९०
सत्पतयः	३९६
सम्राजः	१७९, ५३३, ६६५
सुकत्राः	३९६
सुदानवः	५६६, ७१८
सुवसनस्य दातारः	३९६
सुवृधः	६६५
स्वप्रसः	६६३
हृषीवन्तः	१५८

**आदित्यानां उपमासूची ।**

पुत्रः न ५३३ बहुपाठ्यं आ वृणीमहे ।  
 आपः ३, ५४, १९; १८८ । ५५, २२;  
 २१३ । ५६, ४, ७; २१७, २२० ।  
 ५, ४१, ११-१२; २५०-५१ । ४६, ३;  
 ३२२ । ६, ५०, ७; ३८४ । ७, ३४,  
 २-३, २३, २५; ४२७-२८, ४४६,  
 ४४८ । ३५, ८; ४५६ । ४४, १; ५०६ ।  
 ८, ५४, ४; ५५४ । १०, ३६, १; ५९४ ।  
 ६४, ८-९; ६८३-६८४ । ६५, १३,  
 ७०४ । ६६, १०; ७१६ । १०९, १;  
 ७७५ । १३७, ६; ८१४ । १४, ९;  
 १२६९

**आपो देवताया गुणबोधक-  
पदानि ।**

अग्नेः बभ्रुहाणस्य परि स्तुचः	२५१
अमीवचातनीः	८१४

दे० [विश्वे देवाः] १९

क्षरन्तीः	४२७
जगतः विश्वस्य जनित्रीः	३८४
जनित्रीः विश्वस्य स्थातुः जगतः	"
देवीः	२१७, ६८४, ७७५
परि स्तुचः बभ्रुहाणस्य अग्नेः	२५१
पृथक् व्रजन्तीः	२१७
पृथ्वीः	४२८
प्रथमजाः	७७५
बभ्रुहाणस्य अग्नेः परि स्तुचः	२५१
भिषजः	३८४
भेषजीः	८१४
भेषजीः सर्वस्य	"
महीः	६८३
मातरः	६८४
मातृतमाः	३८४
मानुषीः	"
विश्वस्य जगतः जनित्रीः	"
विश्वस्य स्थातुः जनित्रीः	"
व्रजन्तीः पृथक्	२१७
शुभ्राः	२५१
समुद्रियः	७०४
सर्वस्य भेषजीः	८१४
सूदयित्वः	६८४
स्थातुः विश्वस्य जनित्रीः	३८४

**उपमासूची ।**

पुरो न २५१ शुभ्राः आपः शृण्वन्तु ।  
 इन्द्रवः १, १४, ४; ७  
 चमूषदः "  
 द्रप्साः "  
 मत्सराः "  
 मध्वः "  
 मादयिष्णवः "  
 इन्द्रः १, १४, ३-४, १०; ६-७, १३ ।  
 ८९, ५-६, २३-२४ । ९०, ४, ९; ३२,  
 ३७ । १०५, ८, ४५ । १०६, १, ६;  
 ५७, ६२ । १०७, २-३; ६५-६६ ।  
 १२१, १-१५, ६७-८१ । १६४, ३३;  
 १३१ । १८६, ६-८, १४५-४७ ।  
 २, ३१, ३; १६० । ३, ५५, १७; २०८

[ पर्जन्यात्मा ] । १८ [ कालात्मा ],  
 २०-२२; २०९, २११-१३ । ५७, १-  
 ३; २२३-२२५ । ४, ५५, ७, १०;  
 २३५, २३८ । ५, ४१, २; २४१ ।  
 ४२, ४-६, १३; २६३-६५, २७१ ।  
 ४३, ५; २८१ । ४४, २-२; २९४-२५ ।  
 ४५, १, ४; ३०२, ३१२ । ४६, २; ३२१ ।  
 ४८, ३; ३३७ [ सूर्यरूपः ] उत्तरार्धस्य  
 वा । ४९, ३; ३४२ । ५१, १०, १४;  
 ३५५, ३५९ । ६, २१, ९, ११; ३६१-  
 ३६२ । ५०, ६; ३८३ । ५१, ११;  
 ४०३ । ५२, ६, ११; ४१४, ४१९ ।  
 ७, ३४, ३-४; ४२८-२९ । ३५, ५-६;  
 ४५३-५४ । ३६, ४; ४६७ । ३७,  
 ३-८; ४७५-८० । ३९, ४-५; ४८४-  
 ८५ । ४०, २; ४८९ । ४१, १; ४९४ ।  
 ४२, ५; ४९९ । ४४, १; ५०६ । ८,  
 २७, ६, ८; ५१७, ५१९ । २९, ४;  
 ५४२ । ६२, ११; ५५८ । ८३, ७;  
 ५६५ । १०, ३१, १; ५६८ । ३५,  
 १०; ५८९ । ३६, १, ५; ५२४, ५२८ ।  
 ५२, ५; ६१२ । ५७, १; ६२१ । ६१,  
 ११-१३, १५, २१-२२; ६३७-६३९,  
 ६४१, ६४७-४८ । ६३, ९; १४; ६६२,  
 ६७४ । ६४, ७, १०, १२; ६८२, ६८५,  
 ६८७ । ६५, १, १०; ६९२, ७०१ ।  
 ६६, ३, ६; ७०९, ७१२ । ७२, ५-८, १४;  
 ७२५-७२८, ७३४ । ९३, ८-९, ११;  
 ७३३-४४, ७४६ । १००, १-२, ५-६,  
 ११-१२; ७५१-५२, ७५५-५६, ७६१-  
 ६२ । १०१, १, १२; ७६३, ७७४ ।  
 १२६, ५; ७९६ । १२८, २, ७-८;  
 ८०१, ८०६-८०७ । १४१, ५; ८२० ।  
 १५७, १-३; ८२३-२५ । १६७, ३;  
 ८३३ । ९८, १; १२२२ । १, १३६,  
 ६-७; १२६४-१२६५

इन्द्रदेवताया गुणबोधकपदानि ।  
 अंहोमुक् ६६९  
 अज्यर्च्य २६५



अद्विवस्	७६	जुजुषाणः	२८१	पर्जन्यः	७१२
अद्वि विष्णुः	३०९	जूजुवानः	७४३	पर्जन्यात्मा इन्द्रः	२०८
अनर्वा	६३९	ज्येष्ठतातिः	२९४	पात्रं नून्	६७
अन्यासु रोरवीति	२०८	तरणिः	७२	पायुः	४८०
अप्रतीतः	२६५	तद्गणः	१४६	पिता	१३१ ( उत्तरार्धः ), ७५५
अप्रयुच्छन्	२३५	तवीयान्	७२८	पुरन्दरः	१८४
अभिमातिषाहः	८०६	तस्थुषःपतिः	२३	पुरन्धिः	२६४, ४८४, ६८२
अभिष्टिः	७६२	तुरः-रासः	२६४, ५१७	पुरुषुः	८०७
अमृतः	२६४	तुरणः	७१	पुरुहूतः	७५, १८६, ८०७
अरुणीः राट्	६९	तुरः विशाम्	६९	प्रतीचीनः	२९४
अर्यः	८१	तुविष्टमः	१४५	प्रथमः	५१९
अवः शश्वताम्	७६१	त्राता	२३५, ८०६	प्रमतिः	७५५
अहा वि वर्तयन्	३३७	त्रिककुम्	७०	प्रमतिः सुतावताम्	७६१
अहा सं वर्तयन्	,,	त्रितः	१६३	बर्हिषद्	२९४
आशुः	२९४	त्रिबन्धुः	४७९	भगः	२०८
आहनाः	२७१	दस्मः	३४२	भद्रः	३४२
ईशानः	२३	दिव्यः	४८०	भरः	७५२
उद्व्यचाः	८०७	देवः	४५३	भीमः	७२८
ऋते ते नाम	२९५	देवानां शंसः	५६८	भुवनस्य पतिः	८०६
ऋभुः	६८	दैव्यः जनः	६६९	मघवा	८१, २८५, ४७५, ७५१, ८३३
ऋभुक्षाः	१६३, २४१, २६४, ४७६, ६८५, ७४३	धनानां सञ्जितः	२६४	मनुः	७५५
ऋभुभिः सखा	१८६	धाता धातृणाम्	८०६	मरुत्वान्	२९५, १२२२
कारुः	६३८	धातृणां धाता	,,	महः-हे ( चतु० )	२७१
कालात्मा इन्द्रः	२१९	धियंजिन्वः	२३	महिषः	६८
ऋतुप्रः	७६२	धृष्णुषेणः	१८४	मायाभिः परः	२९५
ऋतुप्रावा	७६१	नरः गोः	६८	मिनानः रूपा वक्षणासु	२७१
क्षमावान्	२०८	नगं सुरभिष्टमः	१४६	यजत्रः	६७, ५६८
गिर्वेणः	२८३	नर्यः	७८	यज्ञः	७५५
गृणानः	,,	नाम ऋते ते	२४५	योनिः उत्तानयोः चम्बोः	१३१
गोः नरः	६८	नार्षदः	६३९	रजसस्पतिः	४५३
घ्नन् वृत्राणि	५४२	नि दधाति रेतः अन्यस्मिन् यूथे	२०८	रथः इन्द्रस्य-	
चम्बोः उत्तानयोः योनिः	१३१	नृपतिः	६४८	अरिष्यन्	६७४
चर्षणिप्राः	१४५	नून् पात्रम्	६७	प्रातर्यावा	,,
चित्रभानुः	७६२	पतिः	७३४	रथयुक्	६८२
जगतः पतिः	२३	पतिः जगतः तस्थुषः च	२३	रराणः	६३८
जनः दैव्यः	६६९	पतिः भुवनस्य	८०६	राट् अरुणीः	६९
जयन्	२९४	पत्यमानः विश्वेः वीर्यैः	१८४	राजा	२०८, २२२
जरिता	७६१	परः मायाभिः	२९५	रूपा मिनानः वक्षणासु	२७१
जिष्णुः	२६५, ४५३	परिजमा	७२५	रेतः नि दधाति अन्यस्मिन् यूथे	२०८
				रोरवीति अन्यासु	,,

वक्षणासु रूपा मिनानः	२७१	सखा ऋभुभिः	१८६	रजिष्ठया रज्या पञ्च आ गोः ७६२ सुतूर्षति
वज्रः इन्द्रस्य-		सचित्	६८२	पर्यग्रं दुवस्युः ।
पार्थः	७८	सचेताः	॥	मूषः न शिश्रा ४५ व्यदन्ति मा आध्यः ।
मन्दी	॥	सजितः धनानाम्	२६४	राधः न ६३७ रेतः ऋतमित् तुरण्यन् ।
वृत्रहा	॥	सहसः सूनुः	३६२	शर्मसदः न वीराः २१२ पुरःसदः
वज्रं हस्ते बिभर्ति	५४२	सहसावान्	७४४	( मरुतः ) ।
वज्रबाहुः	६४८	साधुः	४७६	सपत्नीः इव ४५ पशवः अभितः तपन्ति ।
वज्री	४२९	सुकृतः	६६२	स्वर् न ६३९ त्रिपधस्थे देवाः निषेदुः ।
वाज्रिवान्	८०	सुकतुः	१६०, २९५	हितमित्रः न राजा २१२ उप क्षेति
वन्धः	३२	सुगोपाः	२९५, ४०३	पृथिवीम् ।
वसुः	७४४	सुतपाः	७५१	इन्द्र-अमी । ५, ४६, ३, ३२२ । ७, ३५,
वसोः वसुत्वा	६३८	सुतावतां प्रमतिः	७६१	१; ४४९ । १०, ६५, २; ६९३ ।
वसुत्वा वसोः	॥	सुत्रात्राः	४०३	१२८, ९; ८०८
वसूनि विन्दमानः	२११	सुनीथः	॥	तन्वा समोकसा मिथः हिन्वाना
वाजः	२६४	सुमेधाः	७०१	वृत्रहृत्पेषु सत्पती ६९३
वाजप्रमहः ( संबो० )	८१	सुरभिष्टमः नराम्	१४६	सत्पती वृत्रहृत्पेषु समोकसा तन्वा
विद्वान्	३६२	सुशरणः	२७१	हिन्वाना मिथः ६९३
विन्दमानः वसूनि	२११	सुधर्मा	४०३	इन्द्रा-पर्वता १, १२२, ३; ८४
विवर्तयन् अहा	३३७	सुहवः	६६९	इन्द्रा-पूषणा ७, ३५, १; ४४९
विशां तुरः	६९	सुनुः सहसः	३६२	इन्द्रा-मरुतः २, २९, ३, १५३
विश्वर्चषणिः	१६०	सूरः	७३, ७९	इन्द्रा-वरुणा ७, ३५, १; ४४९
विश्वधायाः	२१२	स्तवानः	३८३	रातहृषा ४४९
विश्वैः वीर्यैः पत्यमानः	१८४	स्तुतः	७५१	इन्द्र-वायू १, १३९, १; ९७ । १०, ६५,
विष्यन् आद्रिम्	३०९	स्वयशाः	४७६	९; ७०० । १४१, ४; ८१९
वीरः	२०९, २११, ३८३	स्वर्विद्	२९४	पुरीषिणा ७००
वीर्यैः विश्वैः पत्यमानः	१८४	स्वर्विरोचमानः	२९५	वृषभा ॥
वृजनः	२९४	स्ववान्	४०३	सुहवा ८१९
वृत्रस्नादः	७०१	हरिवान्	२६३, ४७६, ६४८	इन्द्रा-विष्णु ४, ५५, ४; २३२ । १०, ६६,
वृत्रहा	६२, १४५, १८४, ५६९	हरी इन्द्रस्य-		४; ७१०
वृत्राणि घ्नन्	५४२	धायू	४६७	इन्द्रा-सोमा ७, ३५, ६; ४४९
वृद्धभवाः	२७	प्रिया	॥	इन्द्र णी २, ३२, ८; १२६६
वृषभः	२०८	वाजिना	७०३	इन्द्रा ३, ५५, १४; २०५ । ५, ४१, १९-
वृषा	२२५, ५१९, ७२८	सुरथा	४६७	२०; २५८-२५९ । १०, ३६, ५;
घांसः देवानाम्	५६८	हर्यश्वः	४७७, ८०७	५९८
घाचीपतिः	६२	हस्ते वज्रं बिभर्ति	५४२	अभ्यूष्वाना २५८
घातकतुः	४५	हिरण्यबाहुः	४२९	उर्वशी ॥
घाक्षतां भवः	७६१	हूयमानः	२८१	ऊर्वा तस्थौ २०५
घरः	४६७	इन्द्रदेवताया उपमासूची ।		गुणाना २५८
संवर्तयन् अहा	३३७	उषसः न सूरः ७२ प्र रोचि अस्याः ।		त्र्यविं रेरिहाणा २०५

पद्या	२०५	पितृभ्यः आ जोहुवाना	३२८	सुभगे	१६२
पुरुरूपा वर्षूषि वस्ते	,,	पूर्वाः	१९२	उपमासूची ।	
बृहद्दिवा	२५८	प्रतीची	४८१	पत्नी इव ८३ पूर्वहृतिं वासृध्व्यै ।	
रेरिहाणा त्र्यविम्	२०५	प्रथमा	५८३	ऋतवः १, १६४, १५; ११३ । ५, ४६,	
इळाः (भूमिस्थानाः देवताः सायनाचार्याः)		प्रयुञ्जती	३२८	८; ३२७	
१, १८६, १; १४०		बोधयन्ती दुहितुः	,,	गुणबोधकपदानि ।	
उक्षाणः पद्म १, १०५, १०; ४७		भद्राः	५८४	ऋतुः जनीनाम्	३२७
मज्ञो दिवः मध्ये तस्थुः ४७		मघोनी	२३७	ऋषयः	११३
उर्वशी ५, ४१, १९-२०; २५८-२५९ ।		मनीषा	३२८	जनीनां ऋतुः	३२७
[ देवसंघः मरुद्गणः वा ]		मही	,,	देवजाः	११३
अभ्यूर्व्वाना आयोः प्रभृथस्य		माता	,,	यमाः षट्	,,
गृणाना बृहद्दिवा २५८		युवतिः	,,	षड् यमाः	,,
उल्लूः १०, १६५, ४; ८३१		रेवती	५८३	सार्कजानां सप्तथं एकजम्	,,
उषाः १, १०, ७; ३५ । ३, २०, १, ५;		वसाना व्युतं अत्कम्	८३	ऋत्विजः ७, ४३, २; ५०२ । ८, ५८, १;	
१६८-१६९ । ५५, १; १९२ । ४,		वाजिनीवती	२३७	५५५ । १०, १०१, १-११; ७६३-७६३ ।	
५५, ९; २३७ । ५, ४५, १-२; ३०९-		विभाति एका एव इदं सर्वम्	५५६	गुणबोधकपदानि ।	
३१० । ४७, १; ३२८ । ४८, २; ३३६ ।		विभातीः	४५८	अनूचानः	५५५
५१, ८; ३५३ । ६, ५२, ४; ४१२ ।		व्युतं अत्कं वसाना	८३	कल्पयन्तः यज्ञं बहुधा	,,
७, ३५, १०; ४५८ । ३९, १; ४८१ ।		प्रिया सूर्यस्य सुदशी	,,	कवयः	७६६
४२, ५; ४९९ । ८, २७, २; ५१३ ।		सिखते सूर्यस्य रश्मिभिः	५८४	धीराः	,,
५८, २; ५५६ । १०, ३५, २-६; ५८१-		सुदशी सूर्यस्य प्रिया	८३	बहवः	७६३
५८५ । १०, ६४, ३; ६७८ । १०१,		सूयता	२३७	बहुधा यज्ञं कल्पयन्तः	५५५
१, ७६३		सूर्यस्य रश्मिभिः सिखते	५८४	ब्राह्मणः	,,
उपादेवताया गुणबोधकपदानि ।		उषासानक्ते १, १२२, २; ८३ । १८६,		यज्ञं बहुधा कल्पयन्तः	,,
अत्कं व्युतं वसाना	८३	४; १४३ । २, ३१, ५; १६२ । ४, ५५,		युक्तः	,,
अनमीवाः	५८५	३; २३१ । ५, ४१, ७; २४६ । १०,		सखायः	७६३-७६३
अपरा	३३६	३६, १; ५९४		सचेतसः	५५५
अपाची	,,	गुणबोधकपदानि ।		सनीळाः	७६३
आ विद्यासन्ती	३२८	अदब्धे	२३१	समनसः	,,
उच्छन्ती	५८३	अगीजुवा जगताम्	१६२	उपमासूची ।	
उष्मा	,,	जगतां अपीजुवा	,,	अन्तः योना इव ७७३ चरति द्विजानिः ।	
एका एव इदं सर्वं विभाति	५५६	पुरुधा विदानि	८३	यवसा इव गत्वी ७७१ सा नः दुहीयत् ।	
गवां माता	३१०	बृहती	५९४	हेत्वः न सप्तिः ५०२ यज्ञः प्र एतु ।	
जानती	,,	मिथुदशा	१६२	ऋभवः ३, ५४, १२, १८; १८१, १८७ ।	
जायमाना	४१२	यङ्गी	२४६	५, ४२, १२, २७० । ४६, ४; ३२३ ।	
जूर्णिः	४८१	विदानि पुरुधा	८३	५१, १३; ३५८ । ७, ३५, १२; ४६० ।	
जोहुवाना पितृभ्यः आ	३२८	विदुषी विश्वम्	२४६	३६, ८; ४७१ । ३७, १-२; ४७३-	
दुहितुः बोधयन्ती	,,	विश्वं विदुषी	,,	४७४ । १०, ९३, ७; ७४२ । ६५, १०;	
देवी	१६९, ७६३	सुपेशसा	५९४	७०१ । ६६, १०; ७१६	

गुणबोधकपदानि ।

अपसः	२७०
ऊर्ध्वप्रावणः	१८१
ऋभुक्षणः	४७३-४७४
दमूनसः	२७०
दिवः धर्तारः	७१६
देवाः	३५८
धर्तारः दिवः	७१६
पुरन्धिः	४७१
पूषवन्तः	१८१
यक्षियासः	१८७
रातिषाचः	४७१
वाजः	"
वाजाः	४७३
विभ्वा	३२३
सुकृतः	४६०
सुक्षिप्राः	४७३
सुहस्ताः	२७०, ७०१, ७१६
स्वधावन्तः	४७४
स्वर्दशः	"
ऋभुक्षाः-क्षणः	१, १८६, १०; १४९ । ५, ४१, २; २४१ । ४२, ५, २६४ । ६, ५०, ११; ३८९ । १०, ६४, १०; ६८५ । १०, ९२, ११; ७३१ । ९३, ७-८; ७४२-७४३

गुणबोधकपदानि ।

अमृतासः	२६४
तुरासः	"
दैन्यः	३८९
पुरन्धिः	२६४
वाजः	२६४, ३८९
विभ्वा	३८९
विश्ववेदसः	७४२
ऋषयः ( पञ्च )	५, ४४, १२; ३०५
नामानि- १ तर्कः	"
२ बाहुवृक्तः	"
३ यजतः	"
४ ध्रुतवित्	"
५ सदापृगः	"

पञ्च नामानि	५, ४४, १०; ३०३
१ एषावदः, २ क्षत्रः, ३ मनसः, ४ यजतः, ५ सधिः च ।	
त्रयाणां नामानि-	५, ४४, ११; ३०४
१ मार्या, २ यजतः, ३ विश्ववारः च ।	
ऋषयः ( सप्त )	१०, १०२, ४; ७७८
तपसे ये निषेदुः	"
पूर्वे	"
सप्त	"
ओषधीः-धयः	१, ९०, ६; ३४ । ३, ५४, २१; १९० । ५५, २२; २१३ । ५७, ३; २२५ । ५, ४१, ८, ११; २४७, २५० । ४२, १६; २७४ । ६, २१, ९; ३६१ । ४२, १४; ३७६ । ५२, ६; ४१४ । ७, ३४, २३, २५, ४४६, ४४८ । ३५, ५, ७; ४५३, ४५५ । ८, २७, २; ५१३ । १०, ६६, १०; ७१६

गुणबोधकपदानि ।

जामयः	२२५
धेनवः	"
नमस्यन्तीः	"
पुत्रं वावशानाः	"
प्रस्वः	४५५
माध्वीः	३४
वावशानाः पुत्रम्	२२५
ककुदः	३, ५४, १४; १८३
जनित्रीः	"
युवतयः	"
ऋषवः ( ऋषिः )	१०, ३१, ११; ५७८
कृष्णः	"
नृषदः पुत्रः	"
पुत्रः नृषदः	"
वाजी	"
श्यावा	"
कपोतः	१०, १६५, १-५; ८२८-३२
इषितः	८२८-८२९
दूतः निर्ऋत्याः	८२८
निर्ऋत्याः दूतः	"
सकुनः	८२९
शिवः	"

कृष्णातुः १०, ६४, ८; ६८३	
क्षेत्रस्य पतिः १०, ६६, १३; ७१९	
गयः १०, ६४, १६; ६९१	
ऋतज्ञाः	६९१
कविः	"
चक्रानः द्रविणसः	"
द्रविणसः चक्रानः	"
द्रविणस्युः	"
विप्रः	"
तुवीरवान्	"
गायत्रम् ( साम ) १, १६४, २५; १२३	
गिरयः ५, ४१, ११; २५०	
वृक्षकेशाः	"
गुह्युः २, ३२, ८; १२६६	
गौः ( गवः ) १, १६४, १७, २६-२९, ४०; ११५, १२४-२७, १३८ । ७, ३५, १२; ४६० । १०, ६५, ६; ६९७ । १००, १०; ७६०	

### गुणबोधकपदानि ।

अध्या	१२५, १३८
अधिभ्रिता ध्वसनौ	१२७
अभीवृता येन ( वत्सेन )	"
अश्विभ्यां पयः दुहा	१२५
आचरन्ती	१३८
इच्छन्ती वत्सम्	१२५
दुहा पयः अश्विभ्याम्	"
दुहाना पयः	६९७
धेनुः	१२४
ध्वसनौ अधिभ्रिता	१२७
धर्मं सृक्काणं वावशाना	१२६
पयः दुहा अश्विभ्याम्	१२५
पयः दुह.ना	६९७
प्रभुवाणा	"
भगवती	१३८
वत्सं इच्छन्ती	१२५
( वत्सेन ) येन अभीवृता	१२७
वसुपत्नी	१२५

वावशाना सृक्काणं धर्मम्	१२६
विष्णुत् भवन्ती	१२७
व्रतनीः	६९७
सुदुघा	१२४
सूयवसाद्	१३८
सृक्काणं धर्मं अभि वावशाना	१२६
द्विकृष्वती	१२५
गोजाताः ७, ३५, १४; ४६२	
गोयाम्वा ( तान्व-दिदिक्षा ) १०, ९३, १५; ७५०	
गोरूपेण आदित्यरश्मिसमूहः गोरूपिणी आहुतिः वा । १, १६४, १७; ११५	
कद्रीची	११५
वत्सं अवः परेण पदा भिभ्रती	"
गो सवितारी वा मेघवायु १, १६४, २६; १२४	
'गो' पदानि-	
धेनुः	१२४
सुदुघा	"
'सवितृ' पदानि-	
अभीष्टः	१२४
गोधुक्	"
धर्मः	"
सुहस्तः	"
मा, माः ( देवपत्न्यः ) पत्नीः च ५, ४१, ६; २४५ । ४२, १२; २७० । ४३, ६; २८१ । ४६, २, ७-८; ३२१, ३२६-३२७ । ५०, ३; ३४७ । ६, ४९, ७; ३६९ । ५०, १३, १५; ३९०, ३९२ । ७, ३४, २०, २२-२३; ४४३, ४४५-४४६ । ३५, ६; ४५४ । १०, ६४, १०; ६८५ । ६६, ३, ७०९ । ९२, १४; ७१४ । ८, ८०, १०; १२०५	

### गुणबोधकपदानि ।

अधृष्टाः	३९२
अपां व्रते ( वर्तमानाः )	३२६
अरमतिः	२८२
इधुध्यवः	२४५
उशतीः	३२६
ऋतज्ञा	२८२
ऋतसापः	२४५
मा	२८२

माः	३२१, ३६९, ३९२, ४५४, ७०९, ७३४
जनयः	३२७, ३९०, ६८५
दशस्यन्तीः	२७०
देवपत्नीः	३२७
पत्नीनामानि-	३२७
अग्नायी	"
अश्विनी	"
इन्द्राणी	" १२६६
रोदसी	" ४४५
वरुणानी	" "
देवी	२८२
देवीः	३२६, १२०५
पत्नीः	२४५, ४४३
पार्थिवासः	३२६
पुरन्धीः	२४५
पत्नीः वृष्णः	२७०
बृहती	२८२
मही	"
राट्	३२७
रातह्वया	२८२
रातिषाचः	४४५
वरुत्रीः	"
वसवः	३९२
वस्वीः	३४७
विभ्वतष्टाः	२७०
विश्वः	७३४
वृष्णः पत्नीः	२७०
शुभ्राः	"
सुहवाः	३२६
स्तुतासः	३९२
हुतासः	"
प्रावाणः	१, ८९, ४, २२ । ७, ३५, ७, ४५५ । १०, ३६, ४, ५९७ । ६४, १५, ६९० । २२, १५, ७३५ । १००, ८-९, ७५८-७५९
अत्रयः	७५८
ऊर्ध्वः-र्धाः	७३५, ७५९

मधुषुद्	६९०, ७५८
मयोमुवः	२२
सोमसुनः	"
घर्मः	५, ४३, ७; २८३ = घर्म पात्रम् ।
	१०, १८१, ३; ८३६ । = हविः ।

उपमासूची ।

पितुः न पुत्रः उपसि प्रेष्ठः	२८३ घर्मः अग्निं आ असादि ।
वपावन्तं न	२८३ अग्निना तपन्तः अजन्ति ।
घर्मा	१०, ११४, १; ७८२ = अग्निः आदित्यश्च ।
चक्रम्	१०, १६४, २, ११; १००, १०९
अग्निः	१०९
अजरम्	१००
अनर्वम्	"
जराय न	१०९
त्रिनाभि	१००
द्वादशारम्	१०९
विश्वः भुवना यत्र अधि तस्थुः	१००
सप्त शतानि विशतिश्च पुत्राः मिथुनासः अत्र तस्थुः	१०९
चन्द्रमाः	१, १०५, १; ३८ । १०, ६४, ३; ६७८ । ९२, १४; ७३४
अक्तोः युवा	७३४
युवा अक्तोः	"
सुपर्णः	३८
जगत् ( साम )	१, १६४, २५; १२३
जनाः पञ्च	६, ५१, ११; ४०३ । १०, ५३, ४-५, १२१०-११
ऊर्जादः	१२१०
गोजाताः	१२११
यज्ञियासः	१२१०-१२११
सुगोपाः	४०३
सुनीथाः	"
सुशर्माणः	"
स्ववसः	"
जनयः ( जनिः )	१०, ६४, १०; ६८५
जिह्वा	१०, १३७, ७; ८१५
वाचः पुरोगवी	"
जीवात्म-परमात्मानौ	१, १६४, २०; ११८

द्वा सखाया समानं वृक्षं परि पस्वजाते	११८
सयुजा	"
सुपर्णा	"
जीवात्मा-सादु विष्पलं अति ।	११८
परमात्मा-अनश्नन् अभि चाकशीति ।	"
तत्त्वविद्	११४
कविः	"
तनयित्युः	१०, ६६, ११; ७१७
तन्यतुः	१०, ६५, १३; ७०४
पार्वारवी	"
ताक्ष्यः	१, ८९, ६; २४
अरिष्टनेमिः	"
तिष्यः	१०, ६४, ८; ६८३
त्वष्टाः १, १८६, ६; १४५ । २, ३१, ४; १६१ । ३, ५४, १२;	
१८१ । ५५, १९; २१० । ५, ४१, ८; २४७ । ४६, ४;	
३२३ । ६, ४९, ९; ३७१ । ५०, १३; ३९० । ५२, ११;	
४१९ । ७, ३४, २०-२२; ४४३-४४५ । ३५, ६; ४५४ ।	
८, २८, ३; ५४१ । १०, ६४, १०; ६८५ । ६६, ३; ७०९ ।	
९२, ११; ७३१ । १८४, १; ८३७	

## त्वष्टादेवताया गुणबोधकपदानि ।

अरमतिः	४४४
ऋतावान्	१८१
ऋभ्वा	३७१
देवः	१८१, २१०, ३७१, ७३१
देवेषु अन्तः निःहविः	५४१
निःहविः देवेषु अन्तः	"
पस्त्यानां यजतः	३७१
पिता	६८५
पोष्यावान्	२४७
प्रजाः विविधाः जजान	५१०
" " पुपोष	"
प्रथमभाक्	३७१
विभ्रत् आयसीं वासीं हस्ते	५४३
भुवनस्य सक्षणिः	१६१
यजतः पस्त्यानाम्	३७१
यशः	"

वभोधाः	३७१
वसूयुः	४४४
वासीं हस्ते विभ्रत्	५४३
विश्वरूपः	२१०
सक्षणिः भुवनस्य	१६१
सविता	२१०
सुकृत्	१८१
सुगभरितः	३७१
सुदत्रः	४४५
सुपाणिः	१८१, ३७१, ४४३
सुशरणः	४४५
सुहवः	३७१
स्ववान्	१८१
वक्षः	१, ८९, ३; २१
अस्त्रिधः	"
दधिक्राः ३, २०, १, ५; १६८-१६९ । ७, ४४, १; ५०६ ।	
१०, १०१, १; ७६३	
दिव्याः ७, ३५, ११, १४; ४५९, ४६२	
दिशः ( वा मेवाः )	३, ५५, १६; २०७
अप्रदुग्धाः	"
अशिन्धीः	"
धेनवः	"
नव्यानव्याः	"
भवन्तीः	"
युवतयः	"
शाशयाः	"
सवर्दुषाः	"
दीधितिः	१, १८६, ११; १५०
अपिप्राणी	"
यजत्रा	"
वसूयुः	"
सदनी	"
देवः	१, १०६, ७; ६३
अप्रयुच्छन्	"
देवगण-संघः वा १, १२२, ८; ८९ । ५, ४१, २०; २५९ । ६,	
५१, १२; ४०४ । ७, ४२, २; ४९६ । १०, ५७, ५; ६२५	

गुणबोधकपदानि ।		स्वधा	स्वधया गृभीतः	
जनः	८२	देहात्मानौ-वियग्ता, विपूजाना, शश्वन्ता,		७१, १७५-७९ । ५५, १२, २०, २०३,
जनः दैव्यः	६२५	१३६		२११ । ५६, १, ७; २१४, २२० ।
जनिमा देवानाम्	४९६	योः १, ८९, ४; २२ । ९०, ७, ३५ ।		३, ८, ८; २२२ । ५७, ४; २२६ । ४,
जन्म देवानाम्	४०४	१०५, १९; ५६ । १०६, ७; ६३ ।		५५, १, ३, ६; २२९, २३१, २३४ । ५,
देवानां जनिमा	४९६	१०७, ३; ६६ । १६४, ९, ३३; १०७,		४३, २, २७८ । ४२, ५; ३४४ । ५१,
देवानां जन्म	४०४	१३१ । ३, ५४, २-३, ९, १९; १७१-		११; ३५६ । ६, ५०, ३; ३८० । ५२,
दैव्यः जनः	६२५	१७२, १७८, १८८ । ५५, १२-१३;		१४; ४२२ । ७, ३४, २३-२४; ४४६-
पञ्चेभ्यः वाजिनीवान्	८९	२०३-२०४ । ५, ४१, ११; २५० ।		४४७ । ७, ३५, ३, ५; ४५१, ४५३ ।
महिमघः	"	४३, २; २७८ । ४५, २-३; ३१०-११ ।		३९, ७; ४८७ । ४०, २; ४८९ ।
महां सूरिः	"	४६, ३; ३२२ । ६, ५०, १३; ३९० ।		४४, १; ५०६ । १०, ३५, १-३; ५८०-
वाजिनीवान् पञ्चेभ्यः	"	५१, ५; ३९७ । ५२, २; ४१० । ७,		५८२ । ३६, १; ५९४ । ६३, ९; ६६९ ।
सूरिः अश्वःवतः रथिनः महाम्	"	३४, २३; ४४६ । ४३, १; ५०१ ।		६४, १४; ६८९ । ६५, ८; ६९९ ।
देवाः [ ' विश्वे देवाः ' द्रष्टव्यम् ]	"	१०, ३६, २; ५९५ । ५६, ३; ६१६ ।		६६, ४, ६; ७१०, ७१२ । ९२,
देवानां देवाः	७, ३५, १५; ४६३	६३, १०, ६७०		११-१२; ७३१-७३२ । ९३, १, १०;
अमृताः	"	घौर्देवताया गुणबोधकपदानि ।		७३६, ७४५ । १, १३६, ६; १२६४
ऋतज्ञाः	"	अनेहाः	६७०	द्यावापृथिवी ( रोदसी )
मनोः यजत्राः	"	अन्यस्यः वत्सं रिहती	२०४	देवताया गुणबोधकपदानि ।
यज्ञियानां देवानां यज्ञियाः	"	उरु	१७८	अदितिः
देवो देवः ५, ४२, १६; २७४ । ४३, १५;		ऋतावरी	५९५	अद्भुहा
२९१ । ८, २७, १३; ५२४		जनिता	१३१, १७८	अमृध्रे
सुहवः	२७४, २९१	दक्षिणायाः धुरि युक्ता	१०७	उभे
देवपत्नीः [ ' माः ' द्रष्टव्यम् ]		दुहिता	१८८	उर्वा
देवी ५, ४१, १८; २५७ । १०, १४१, २;		धेनुः	२०४	ऋतस्य योना
८१७		पन्थाः व्युतः	१७८	ऋतावरी
प्रवन्ती	२५७	पिता २२, ३५, १३१, १७८, २७८, ३९७		ऋतामृधा
मृळयन्ती	"	प्रचेतसः	५९५	क्षयतः समोकसा
सुदन्तुः	"	बन्धुः	१३१	चम्वा
देवीः ( तिष्ठः )	३, ५६, ५; २१८	महः	१७१, १७८	जागरूके
अप्याः	"	माता	१०७	दूरेअन्ते
ऋतावरीः	"	युक्ता दक्षिणायाः धुरि	"	देवपुत्रे
योषणाः	"	रिहती अन्यस्याः वत्सम्	२०४	देवान् भिभ्रती
विद्ये दिवः त्रिः आ पर्यमानाः	"	व्युतः पन्थाः	१७८	देवी
देवीः ( षट् )	१०, १२८, ५; ८०४	सुमिता	३१०	द्यावाक्षामा
देहात्मानौ ( देहात्म-जीवात्मानौ-				द्यावाभूमी
सायनाचार्याः ।) १, १६४, ३८; १३६				विषणे
देहः- आत्मा-				धेनु
अन्यं नि चिक्युः अन्यं न नि चिक्युः				परिक्षिता
मर्त्यैः अमर्त्यैः, मर्त्येन सयोनिः				पितरा
दे० [विश्वे देवाः] २०				पिता माता



पूर्वजावरी	६९९
बिभ्रती देवान्	१७७
बृहती	४५१
भवन्ती	१७६
भूरिरेतसा	७३१
मदन्ती	१७५
मधुवचा	२७८
मही	२११, ५८०, ५८२, ६८९, ७३६
मातरा	५८२, ६८९
मिथुनानि नाम	१७६
यशसा	२७८
युवती	१७६
योना ऋतस्य	१७५, ६९९
रोदसी	३८-५५, २१४, २२०, २२६, २८४, ३८०, ४४६, ७३६, १२६४
वदणाय सत्रते	६९९
विदृते	१७५
वियुते	१७६
वृषणा	७३२
शमीनहुषी	७३२
संविद.ने	१७५
सबर्दुषे	२०३
समान्या	१७६
समीची	२०३, २११
समोकसा क्षयतः	६९९
सत्रते वरुणाय	"
सुमेके	२२६
सुधुम्ने	३८०
सुहस्ता	२७८
स्वसारा	१७६

## द्यावापृथिवी ( रोदसी )

## देवताया उपमासूची ।

नारी यही न ७३६ रोदसी सर्वं नः ।
यथा वेः १७५ नाना चक्रानि सदनम् ।
समुद्रं न सञ्चरणे सनिष्यवः २३४ स्तुवीत
देवी अप्येभिः इष्टैः ।
यु-पृथिवी-अन्तरिक्षम् १०, ११४, २, ७८३
तिस्रः निर्ऋतीः ७८३

धर्ता ७, ३५, ३; ४५१
धर्मः १०, ५६, ३; ६१६
धाता ३, ५४, १३; १८२ । ७, ३५, ३; ४५१ । १०, १६७, ३; ८३३ । १८१, १-३, ८३४-३६ । १८४, १; ८३७
धिषणा ३, ५६, ६; २१९ । ५, ४१, ८; २४७ । १०, ३५, ७; ७८६
जनित्री रायः ५८६
धन्या २४७
रायः जनित्री ५८६
धीः ७, ३४, ९; ४३४
देवी "
धियः ७, ३५, ११; ४५९ । १०, ६५, १३-१४; ७०४ ७०५
धेनुः ३, ५७, १; २२३
अगोपाः "
चरन्ती "
पनितारः अस्याः इन्द्रः अग्निश्च "
प्रयुता "
मनीषा "
धेनवः ५, ४३, १; २७७ । ७, ३६, ३; ४६६ । ४२, १; ४९५
अमर्धन्तीः २७७
उदप्रुतः ४९५
तूर्ण्यर्थाः २७७
पयसा मध्वा (युक्ताः) "
बृहतीः "
मध्वा पयसा (युक्ताः) "
मयोमुवः "
सप्त "
सूराः ४६६
नफम् १, ९०, ७; ३५ । ७, ४२, ५; ४९९ । ८, २७, २; ५१३
नक्षत्राणि ३, ५४, १९; १८८
नवाः ५, ४१, १४; २५३ । ४२, १२; २६३ । ४३, १; २७७ । ४५, ३; ३१० । ४६, ६; ३२५ । ७, ३६, ६; ४६९ । १०, ६४, ८; ६८३

अभिषाताः २५३
अर्णाः "
आदोअर्णाः ३१०
गिरः २५३
चन्द्राग्राः "
त्रिःसप्त ६८३
द्यावः २५३
धन्वर्णसः ३१०
पत्नीः वृषणः २७०
पयसा स्वेन पीप्यःनाः ४६९
पीप्य नाः स्वेन पयसा "
यशसः "
वावसानाः "
विभ्रतष्टाः २६३
वृष्णः पत्नीः २७०
सप्ताः ६८३
सुवीतयः ३२५
सुदुधाः ४६९
सुधाराः "
नमः ६, ५१, ८-९; ४००-४०१
नरः ( 'नृ' बहुवचनम् ) ५, ५०, ३; ३४७
नरांसः ७, ३५, २; ४५० । १०, ६४, ३; ६७८ । ९२, ११; ७३१
चतुरङ्गः ७३१
शंसः ४५०
नाभानेदिष्टः ( मन्त्रद्रष्टा ) १०, ६१, १९; ६४५
निशाः = प्रजिनोः ५, ४५, १; ३०९
निर्ऋतिः ५, ४१, १६; २५५ । १०, ३६, २; ५९५ । ११४, २; ७८३
तिस्रः ७८३
तुर्विदत्रा ५९५
नोः ( देवी ) १०, ६३, १०; ६७०
अनागाः ६७०
अस्त्रवन्ती "
देवी "
स्वरित्रा "
पतवः सत्यस्य ७, ३५, १२; ४६०
पत्नीः [ 'देवपत्नीः (माः)' द्रष्टव्यम् ]

पन्थाः ३,५४,२१, १९० । ५, ५१,	
१४-१५, ३५९-३६० । ६, ५१, १६;	
४०८	
अनेहाः	४०८
पथ्या	३५९
पितृमान्	१९०
रेवती	३५९
सुगः	१९०
स्वस्तिका	४०८

उपमासूची ।

सूर्याचन्द्रमसौ इव ३६० पन्थां स्वस्तित  
अनु चरेम ।

परमात्मा (आदित्यः वा ) १, १६४, २१-  
२२, ३१; ११९-१२०, १२९

अनिपद्यमानः	१२९
आचरन् पथिभिः	"
इनः	११९
गोपाः	१२९
गोपाः विश्वस्य भुवनस्य	११९
धीरः	"
पतिभिः आचरन्	१२९
पिता	१२०
भुवनस्य विश्वस्य गोपाः	११९
मध्वदः	१२०
वसानः विषूचीः	१२९
वसानः सध्रीचीः	"
विषूचीः वसानः	"
सध्रीचीः वसानः	"
सुपर्णाः	११९-१२०
परमेश्वरस्य अविषयत्वम्	१, १६४,
४७, १०२-१०५	
पर्जन्यः १, १६४, ३३, १३१ । ५, ४२,	
१३-१४; २७१-२७२ । ६, ५२, ६;	
४१४ । ७, ३५, १०; ४५८ । ३६, ३,	
४६६ । ४२, १, ४९५ । १०, ६६, ६;	
७१२ । ९५, ५; ७२५	
अग्निमान्	२७२
आहनाः	२७१
इक्ष्वापती	२७२

उक्षमाणः रोदसी विद्युता	२७२
उदनिमान्	"
क्रन्दनुः	४९५
गर्भः दुहितुः	१३१
जठरे रोहवत्	७२५
जायमानः दिवः सवने	४६६
दिवः सवने जायमानः	"
दुहितुः गर्भः	१३१
पिता	१३१ ( उत्तरार्धः )
महे (चतुः)	२७१
मिनानः रूपा वक्षणासु	"
रुवन्	२७२
रूपा मिनानः वक्षणासु	२७१
रोदसी उक्षमाणः विद्युता	२७२
रोहवत् जठरे	७२५
वक्षणासु रूपा मिनानः	२७१
विद्युता रोदसी उक्षमाणः	२७२
वृषभः	४६६
सुशरणः	२७१
स्तनयन्	२७२
पर्जन्यवाता ६, ४२, ६; ३६८ । ५०, १२;	
३८९ । १०, ६५, ९; ७०० । ६६, १०;	
७१६	
पुरीषिणा	७००
वृषभा	३६८, ७००
पर्वतः-तासः ३, ५४, २०; १८९ ।	
५६, १; २१४ । ४, ५५, ५; २३३ ।	
५, ४१, ९; २४८ । ४५, ३; ३११ ।	
४६, ३, ६; ३२२, ३२५ । ६, २१, ९;	
३६१ । ४९, १४; ३७६ । ५२, १, ४;	
४०९, ४१२ । ७, ३४, २३; ४४६ । ३५,	
८; ४५६ । ३७, ८; ४८० (पर्वतः) ।	
८, ५४, ४; ५५४ । १०, ३५, २; ५८१ ।	
३६, १; ५९४ । ६४, ८; ६८३	
गुणबोधकपदानि ।	
इक्ष्वा मदन्तः	२०
तरिधवांसः	२१४
भ्रुवक्षेमासः	२०
भ्रुवयः	४५६

ध्रुवासः	४१२
मदन्तः इक्ष्वा	२०
वसवो न वीराः	२४८
सुभ्रवः	४०९
सुशस्तयः	३२५
उपमासूची ।	
वसवः न वीराः २४८ पर्वताः स्वै-	
तवः सन्तु ।	
पशुः ८, २७, २; ५१३	
पार्थिवाः ७, ३५, ११, १४; ४५९, ४६२	
पितरः १, १०९, ३; ५९ । ३, ५२, २;	
१९३ । ६, ५२, ४; ४१२ । ७, ३५, १२;	
४६० । १०, ५६, ४, ६; ६१७, ६१९ ।	
५७, ३, ५; ६२३, ६२५ । १०, १४,	
७-९; १२६७-१२६९	
पदज्ञाः	१९३
पूर्वै	"
सुप्रवचनाः	५९
पुरन्धिः ७, ३५, २, ४५० । ३९, ४; ४८४ ।	
१०, ६५, १३; ७०४	
पूषा १, १४, ३-४; ६-७ । ८९, ५-६;	
२३-२४ । ९०, ४-५; ३२-३३ ।	
१०६, ४; ६० । १२२, ५; ८६ ।	
१८६, १०; १४९ । २, ३१, ४; १६१ ।	
३, ५७, २; २२४ । ५, ४१, ४;	
२४३ । ४३, ९; २८५ । ४६, २-३, ५;	
३२१-३२२, ३२४ । ४९, ३; ३४२ ।	
५१, ११; ३५६ । ६, २१, ९; ३६१ ।	
४९, ८; ३७० । ५०, ५; ३८२ । ५१,	
११, ४०३ । ७, ३५, ९; ४५७ । ३६,	
८; ४७१ । ३९, २; ४८२ । ४०, ६;	
४९३ । ४१, १; ४९४ । ४४, १;	
५०६ । ८, २७, ८; ५१९ । २९, ६;	
५४४ । ५४, ४; ५५४ । १०, ६४,	
३, ७; ६७८, ६८२ । ६५, १; ६९२ ।	
६६, ५; ७११ । ९२, १३; ७३३ ।	
९८, १, १२२२	
पूषादेवताया गुणबोधकपदानि ।	
अदन्धः	२३
अध्यर्धयज्वा	३८२

अनर्षणः	३५६
अर्कः	३७०
असुरः	३५६
आधुणिः	४२३
कण्वहोता	२४३
क्षयद्वीरः	६०
चोदिता मतीनाम्	२८५
चोदिता वाजरय	"
तव्यसः ( षष्ठी )	"
तुरः	"
त्रितः	२४३
दिवः	"
दिव्यः	"
ब्रविणोदाः	२८५
निधीनां वेदः	५४४
नियुत्व न्	४८२
पथः पोपाय	५४४
पथस्पथः परिपतिः	३७०
परिपतिः पथस्पथः	"
पायुः	२३
पोप.य पथः	५४४
पुरन्धिः	१६१
मतीनां चोदिता	२८५
रक्षिता वेदसां वृधे	२३
वन्यः	३२
वाजस्य चोदिता	२८५
विदथ्यः	४७१
विश्वदेव्यः	७३३
विश्वभोजः	२४३
विश्ववेदाः	२४
वीरः	४७१
वृधे वेदसां रक्षिता	२३
वेदसां वृधे रक्षिता	"
सक्षणः	२४३
सचिन्	६८२
सचेताः	"
सजोषाः	२४३

## पूषादेवताया उपमासूची ।

यथा वेदसां असत् वृधे रक्षिता २३ पूषा

स्वस्तये पायुः ।	
पृथिवी १,८९,४; २२ । ९०,७; ३५ ।	
१०५,१९; ५६ । १०६,७; ६३ ।	
१०७,३; ६६ । १६४,८-९, ३३;	
१०६-१०७, १३१ । ३,५४,२-४, १९;	
१७१-१७३, १८८ । ५५, १२-१३,	
२२; २०३-२०४, २१३ । ३,८,८,	
२२२ । ५,४२, १६; २७४ । ४३, २,	
६५; २७८, २९१ । ४६, ३; ३२२ ।	
६, ५०, १३-१४; ३२०-३२१ ।	
५१, ५, ११; ३९७, ४०३ । ७, ३४,	
२३; ४४६ । ३५, ३; ४५१ । ३६, १,	
४६४ । ४३, १; ५०१ । ८, २७, २,	
५१३ । ५४, ४; ५५४ । १०, ३६, २,	
५२५ । ५६, २; ६१५ । ६३, १०,	
६७० । १०, ५३, ५; १२११	

## गुणबोधकपदानि ।

अधुक्	३९७
अपिन्वत ऋतस्य पयसा	२०४
इळा	"
उरूची	४५१
उर्षा	४६४
ऋतस्य पयसा अपिन्वत	२०४
ऋतावरी	५२५
गर्भरसा निविद्धा	१०६
गौः	१०७
तनूः तन्वं नयन्ती	६१५
दक्षिणा	१०७
दुहिता	१३१
नयन्ती तन्वं तनूः	६१५
निविद्धा गर्भरसा	१०६
पार्थिवं रजः	३५
प्रचेतसः	५९५
बन्धुः	१३१
बीभत्सुः	१०६
मधुमत्	३५
मही	१३१
माता २२, १०६-१०७, १३१, २०३,	
२७४, २९१ ३९७	

रजः पार्थिवम्	३५
विश्वरूप्यम्	१०७
सुगोपाः	४०३
सुनात्राः	"
सुनामा	६७०
सुशर्मा	४०३
स्व ( सु+अ ) वस्	"
पृग्निः	७, ३५, १३; ४६१
देवगोपाः	"
प्रजापतिः	१०, १८४, १; ८३७
प्रदिशः	७, ३५, ८; ४५६
चतस्रः	"
प्रमतिः (अमेः)	३, ५७, ६; २२८
असञ्चन्ती	"
चित्रा	"
विश्वजन्या	"
सुमतिः	"

## उपमासूची ।

पर्वतस्य इव धारा २२८ असञ्चन्ती ।	
प्रवाचनम् ( देवानाम् ) १०, ३५, ८; ५८७	
ऋतस्य प्रवाचनम्	"
प्रश्नाः १०, ११४, ९; ७९०	
प्रश्न-प्रतिवचनानि १, १६४, ३४-३५;	
१३२-१३३	
बर्हिः	७, ३९, २; ४८२
वृहत्	१०, १८१, २; ८३५
वृहदुक्थः	१०, ५६, ७; ६२०

## उपमासूची ।

नावा न क्षोदः ६२० प्रदिशः पृथिव्याः	
स्वस्तिभिः अति दुर्गाणि विश्वा ।	
वृहस्पतिः १, १४, ३-४; ६-७ । ८९, ६;	
२४ । ९०, ९; ३७ । १०५, १७; ५४ ।	
१०६, ५; ६१ । ३, २०, ५; १६९ ।	
५, ४२, ७-९; २६६-२६८ । ४३, १२ ।	
२८८ । ४६, ५; ३२४ । ५१, १२	
३५७ । १०, ३५, ११; ५९० । ३६,	
५, ५२८ । ६४, ४; १५; ६७९, ६९०	

१२, १०; ७३० । १००, ५; ७५५ ।  
१०९, ५; ७७९ । १२८, ७; ८०६ ।  
१४१, २-५; ८१७-८२० । १६७, ३;  
८३३ । ९८, १-३, ७; १२२२-  
१२२४, १२२८

गुणबोधकपदानि ।

अरमतिः ६९०  
अरुषः २८८  
दीदिवान् ”  
धनानां सनिता २६६  
नीलपृष्ठः २८८  
पुरुवसुः २६६  
प्रथमः ”  
बृहन् २८८  
रत्नधेयः २६६  
वेधाः २८८  
साम् ३७  
साम्भविष्ठः २६६  
सनिता धनानाम् ”  
सर्वगणः ३५७  
सादद्योनिः २८८  
हिरण्यवर्णः ”

उपमास्त्वही ।

जुष्टं न देवा ७७२ जाया अन्वविन्दन्  
बृहस्पतिः ।  
दूतः आ १२२३ देवः अजरः ।  
ब्रह्मा ७, ३५, ७, ४५५ । ३६, १; ४६४ ।  
८, ५८, २; ५५६ । १०, ६१, ७; ६३३ ।  
१०, ११४, ८; ७८९  
एकं वा इदं सर्वं वि बभूव ५५६  
ब्रह्मा ८, ५८, ३, ५५७ । १०, ५२, २,  
६०९ । १४७, ३, ८१८  
अतिरिक्तः ५५७  
केतुमान् ”  
कबोस्तिम्मात् ”  
त्रिचक्रः ”  
भूरिवारः ”  
रथः ”

समिद् ६०९  
सुखः ५५७  
सुषद् ”  
ब्रह्मजाया १०, १०९, ३-४; ७७७-७८  
उपनीता ब्राह्मणस्य ”  
जाया ”  
भीमा ”  
ब्रह्मणस्पतिः ५, ४२, ९, २६८ । ४६, ३;  
३२२ । ७, ४१, १; ४७४ । ४६, १;  
५०६ । ८, २७, १, ५१२ । १०, ६५,  
१; ६९२  
भगः १, १४, ३-४, ६-७ । ८९, ३;  
२१ । ९०, ४; ३२ । २, ३१, ४;  
१६१ । ३, २०, ५, १६९ । ५४, २१;  
१९० । ५६, ६; २१९ । ४, ५५, ५,  
१०; २३३, २३८ । ५, ४१, ४, ११,  
२४३, २५० । ४२, १, ५, २६०,  
२६४ । ४६, २-३, ६; ३२१-३२२,  
३२५ । ४८, ५; ३३९ । ४२, १, ३,  
३४०, ३४२ । ५१, ११; ३५६ ।  
६, ४९, १४; ३७६ । ५०, १, १३,  
३७८, ३९० । ५१, ३, ११, ३९५,  
४०३ । ७, ३५, २; ४५० । ३६, ८;  
४७१ । ३२, ४; ४८४ । ४०, २;  
४८९ । ४१, १; ४९४ । ४४, १,  
५०६ । १०, ३१, ४, ५७१ । ३५,  
१०-११; ५८२-५९० । ६३, ९;  
६६९ । ६४, १०; ६८५ । ६६, १०;  
७१६ । ९३, ४, ७; ७३९, ७४२ ।  
१४१, २; ८१७ । १, १३६, ६,  
१२६४  
भगो देवताया गुणबोधक-  
पदानि ।  
अविता धियः ४७१  
आश्वत्थतमः २४३  
कन्वहोता ”  
चिकित्वात् २५०  
प्राता २१९, २३८  
त्रितः २४३

दिवः २४३  
दिद्यः ”  
देवः २३३, ३४०  
धियः अविता ४७१  
पुरन्धिः ३७६  
बृहदिवा १६१  
रथः ६८५  
रत्नं विभजन् आयोः ३४०  
रथस्पतिः ६८५, ७४२  
रातिः ७१६  
वन्धः ३२  
विभक्ता ३२५  
विभजन् रत्नं आयोः ३४०  
विश्वभोजाः २४३  
शंसः ६८५  
सक्षणः २४३  
सजोषाः ”  
भवित्रम् ७, ३५, ९; ४५७  
भूतानि १०, १३७, ५, ८१३  
विश्वा ”  
भूमिः ७, ३६, ८; ४७१  
अरमतिः ”  
मही ”  
भृगवः १०, ९२, १०; ७३०  
मदः ५, ४४, ११, ३०४  
अदितिः ”  
कक्षयः ”  
श्येनः ”  
मनः ( मन आवर्तनम् । ) १०, ५७, ३-  
५, ६२३-६२५  
मनीषा ७, ३४, १, ४२६  
देवी ”  
शुक्रा ”  
मनीषिणः १०, ६४, १५, ६९०  
मनुष्याः १०, १०९, ६, ७८०  
मन्म १०, ३६, ५, ५९८  
सुप्रकेतम् ”  
मदतः १, १४, ३-४, ६-७ । २३, १०-१२,  
१६-१८ । ८२, ३, ७, २१, २५ ।

१०, ४-५; ३२-३३ । १०६, १, ५७ ।  
 १०७, २, ६५ । १२२, १, ८२ । १८६,  
 ८-९; १४७-१४८ । २, ३१, ३, १६० ।  
 ४१, १५; १६७ । ३, ५४, १३, २०;  
 १८२, १८९ । ५५, २१; २१२ । ४,  
 ५५, ५; २३३ । ५, २६, ९; २३९ ।  
 ४१, २, ५, ११, १३-१४, १६, २० ।  
 २४१, २४४, २५०, २५२-५३, २५५,  
 २५९ । ४२, १०, १५; २६९, २७३ ।  
 ४३, १०; २८६ । ४५, ४; ३१२ ।  
 ४६, २-३, ५; ३२१-३२२, ३२४ ।  
 ६, २१, ९; ३६१ । ४९, ६, ११-१२,  
 ३६८, ३७३-३७४ । ५०, ४-५, ११;  
 ३८१-३८२, ३८८ । ५२, २, ११;  
 ४१०, ४१२ । ७, ३४, १८-१९,  
 २४-२५; ४४१-४४२, ४४७-४४८ ।  
 ३५, ९; ४५७ । ३६, ७, ९, ४७०, ४७२ ।  
 ३९, ३, ५; ४८३, ४८५ । ४०, ३, ४९० ।  
 ४२, ५; ४९९ । ८, २५, १०-११;  
 ५०९-५१० । २७, १, ३, ५, ८, १२,  
 १५-१६, ५१२, ५१४, ५१६, ५१९,  
 ५२३, ५२६-५२७ । २८, ५; ५३८ ।  
 ५४, १; ५५३ । ८३, ७; ५६५ ।  
 १०, ३५, ६३; ५९२ । ३६, ४, ७;  
 ५९७, ६०० । ५२, २; ६०९ । ६३,  
 ९, १४; ६६९, ६७४ । ६४, ११-१३;  
 ६८६-८८ । ६५, १, ६९२ । ६६,  
 २-४; ७०८-७१० । ६२, ५-६, ९, ११,  
 ७२५-७२६, ७२९, ७३१ । ९३, ४, ९;  
 ७३९, ७४४ । १२६, ५; ७९६ ।  
 १२८, २; ८०१ । १३७, ५, ८१३ ।  
 १५७, ३; ८२५ । १, १३६, ७,  
 १२६५

‘ मरुतः ’ देवताया  
 गुणबोधकपदानि ।

अभिजिह्वाः	२५
अद्भुतः	५२६
अधृष्टाः	३८१
अयासः	१८२, २७३

अरिष्यन्तः	५१०
असुरस्य नीलयः	७२६
आलिधः	२१
इत्था वृधन्तः	३७३
उप्राः	१६
ऋतजाताः	१८२
ऋष्टयः सप्त तेषाम्	५३८
ऋष्टिमन्तः	१८२
ऋष्वः	६००
एवयावः	३३, ७२९
एवाः	२५२
कवयः	३६८, ३७३
क्राणाः	७२६
गणः मरुताम्	८१३
गणः मारुतः	६००
गोजाताः	३८८
जगतः स्थाता	३६८
जाताः विद्युतः अतः परि	१८
तवसः	३७४
तुरासः	१८२, ३७४
तुराणां एवाः	२४४
दधानाः वार्यम्	२५२
दस्माः	"
दिवः मर्याः	१८२
दिवः श्वेनासः	७२६
दिविक्षयः	३२४
द्युम्नानि सप्त तेषाम्	५३८
नक्षन्तः	३७३
नरः	१७, ३७३
नीलयः असुरस्य	७२६
परि जाताः विद्युतः अतः	१८
पावकः	६००
पुरःसदः	११२
पूषणः	७३९
पृश्निमातरः	६६, २७
पृषदन्नाः-श्वासः	२५, १४७, २७३, ४९०
मनषः	२५
मन्दसानाः	४७०
मरुता गणः	८१३

मरुतगणः	१६७, ७०८
मर्याः दिवः	१८१
महान्तः	२५०, २५२
महासेनासः	४४२
माघोनः	७०८
मारुतः गणः	६००
मारुतं शर्धः	५७, २७३, ३२१
मित्रयुजः	८, १४७
यजतम्	३२४
यज्ञियासः	१८२, ३७३
ययिन्-यी	७२५
युवानः	३७३
युवन्ववः	२७३
रथाः (रथवन्तः)	८, १४७
रायस्पोषः	६००
रिशादसः	८, १४७
रुद्रः	७२५
रुद्राः	६८६, ७०९, ७२६
रुद्रस्य सूतवः	२७३, ३८१
रुद्रियः	२५०
वन्ध्यासः	३२
वयश्चन	२५२
वसवः	३८१
वहयः	७४४
वाजिनः	४७०
वार्यं दधानाः	२५२
विद्येषु जगमयः	२५
विद्युत्स्थाः	१८१
विश्वे	४४७
विश्वकृष्टयः	७२६
विश्वभानवः	५१४
वीरः	३७४
वृजनः	७०८
वृद्धशवसः	५०९
वृद्धसेनः	१४७
शम्भू	६००
शर्धः मारुतम्	५७, २७३, ३२१
शर्मसदः	२१२
शुभंयावानः	२५
शुभ्राः	४८३

इयेवासः दिवः	७२६
श्रियः सप्त तेवाम्	५३८
सस्यश्रुतः	३६८
सप्त	५३८
सप्तः ऋष्टयः सुप्तानि श्रियः तेवाम् "	
समनसः	१४७
सहासः	४४७
सुदानवः	२५५, ५१०
सुप्रणीतयः	५५३
सुभ्यः	२५२
सुमन्त्रः	२५३
सुहवः	६००
सुनवः रुद्रस्य	२७३, ३८१
सूरचक्षसः	२५
स्थाता जगतः	३६८
स्पर्काः	४५७
हितासः	३८१
हुतासः	"

**उपमासुखी ।**

इषुध्या इव ८२ दिवः अस्तोषि असुरस्य वीरेः ।

जयतां इव १७ तन्यतुः मरुतां एति ।

पितृमान् इव क्षयः ६८६ रण्वः संदृष्टौ ।

यूया इव पञ्चराक्षिः अस्तम् ३७४ प्र तवसे सुराय अज ।

स्तुभिः न नाकम् ३७४ स पिष्टृष्टाति तन्नि श्रुतस्य ।

मही ५, ४१, १५; २५४

ऋजुवनिः "

ऋजुहस्ता "

माता "

रसा "

माता १०, ६४, १०; ६८५

दिवा "

वृहत् "

मित्रः १, १४, ३-४; ६ ७ । ८९, ३; २१।

९०, १-३, ९; २९-३१, ३७। १०५,

१९; ५६ । १०६, १, ७; ५७, ६३ ।

१०७, ३; ६६ । १२२, ७; ८८ । १३९,

१, ९७ । १८६, २; १४१ । २, २९, १;
१५१ । ३, ५४, १०; १७९ । ५५, ६;
१९७ । ४, ५५, १, ५, ७, १०; २२२,
२३३, २३५, २३८ । ५, २६, ९; २४१।
४१, २; २४१ । ४२, १-२; २६०-२६१।
४६, २, ५; ३२१, ३२४ । ४९, ३, ५;
३४२, ३४४। ६, २१, ९; ३६१। ४२, १;
३६३ । ५०, १; ३७८ । ५१, ३, १०;
३९५, ४०२ । ५२, ११; ४१९ । ७,
३६, २; ४६५। ३९, ५, ७, ४८५, ४८७।
४०, २, ४; ४८९, ४९१ । ८, २७, ६,
१५, १७; ५१७, ५२६, ५२८। २८, २-
३; ५३५-५३६ । ८३, २; ५६० ।
१०, ३१, २; ५७६ । ३५, १०, ५८२।
३६, १, १२-१३; ५९४, ६०५-६०६।
६३, ९; ६६९ । ६४, १२; ६८७।
६५, १, ५, ९; ६९२, ६९६, ७००। ९२,
६; ७२६ । ९३, ४; ७३९ । १०२, २;
७७६ । १२६, १-७; ७९२-७९८ ।
८५, १७; १२२१ । ९८, १; १२२२ ।
१, १३६, ६-७; १२६४-१२६५

मित्रस्य धामानि १, ८९, ३; २१

अन्वर्तिता	७७६
अपवाधमानाः द्विषः	३०
अप्रमूराः	"
अमृताः	"
अमृतस्य राजानः	७३९
ऋतधीतिः	४०२
ऋतावान्	४८७
गोपाः	५३६
वर्षणीनां राजा	७९७
अनं यतति	४६५
दस्यः	३४२
दिव्यं शर्धः	९७
द्विषः अपवाधमानाः	३०
नेता	७९७
प्रचेतसः	५६०
मुषाणः	४६५
भद्रः	३४२

मन्त्राः	७३९
यतति जनम्	४६५
युजः	५६०
राजानः अमृतस्य	७३९
राजा चर्षणीनाम्	७९७
वज्रमराजसत्यः	४०२
वसवानाः	३०
वस्वः	"
विद्वान्	२९
वृषासः	५६०
शाम्	३७
शार्धः दिव्यम्	९७
श्रेष्ठवर्चाः	४०२
सजोषसः	५२८
सत्यसवः	६०६
सम्राट्	६९३
सरातयः	५२८
सुक्षत्रः	३६३, ४०२
स्मद्रातिषावः	५३५

मित्रावरुणौ १, १२२, ६, ९-१०, १५; ८७, ९०-९१, ९६ । २, २९, ३; १५३ । ३१, १; १५८ । ३, २०, ५; १६९ । ५६, ७; २२० । ५, ४१, १; २४० । ४६, ३; ३२२ । ४७, ७; ३३४ । ५१, ९, १४; ३५४, ३५९ । ६, ४९, १; ३६३ । ७, ३५, ४; ४५२ । ३६, २; ४६५ । ४१, १; ४९४ । ४२, ५; ४९९ । ८, २९, ९; ५४७ । १०, ६१, १७, २३, २५; ६४३, ६४९, ६५१ । ९३, ६; ७४१ । ५१, २; १२०६

**मित्रावरुणौ देवताया गुणबोधकपदानि ।**

असुरा	४६५
उपमा	५४७
उचान्ता	४९९
दिवि द्वा सदः चक्राते	५४७
राजाना	३३०, ६४९
शुभस्यती	७४१
समाजा दिवि	५४७

सर्पिरासुती	५४७
सुपाणी	२२०
सुम्रयन्ता	३६३

## उपमासूची ।

इषं न ४६५ सुवृत्तिं कृष्ये ।  
धन्वा इव ७४१ दुरिता अति एति ।  
गातुः पूर्वा इव ६५१ सूनृताये वाशत् ।  
वयः न १५८ वस्मनस्परि प्र पत्न ।  
पशुषः वाजान् न २४० त्रासीषां नः ।  
सूरः न ९६ स्यूम गभस्तिः रथः अयैत् ।  
मेघः १, १६४, २६; १२४ । (मेघलक्षणा-  
धेनुः ) १६४, ३२, १३० । मध्यस्थानः  
वायुर्वा ।

धेनुः	१२४
परिवीतः मानुः येनौ	
बहुप्रजा	१३०
मातृयोनौ परिवीतः	"
सुदुषा	१२४
यजमान-ब्रह्मणो	१०, ११४, ३; ७८४
शृषणा	"
सुपर्णा	"

वजुः १०, १८१, ३; ८३६  
यज्ञः ७, ३४, ५७, ४३०-४३२ ।  
३५, ७; ४५५ । ४३, २; ५०२ ।  
१०, ६६, ६; ७१२ । ११४, ६-७,  
७८७-७८८

आप्नः	७८८
केतुः	४३१
तीर्थः	७८८
वीरः	४३१

देवतारहितमन्त्रे  
गुणबोधकपदानि ।

जीराध्वरः	५९९
दिविस्पृक्	"

## उपमासूची ।

वृषिबी न भूम ४३२ आरं विभक्ति ।  
वमः १०, ६४, ३; ६७८ । ९२, ११;

७३१ । १६५, ४; ८३१ । १४, ७-९; १२६७-१२६९	
कपोतः यस्य दूतः	८३१
दिवि ( -स्वः )	६७८
दूतः यस्य कपोतः	८३१
मदन् स्वधया	१२६७
मृत्युः	८३१
राजा	१२६७
स्वधया मदन्	"

रथः १, १६४, २-३; १००-१०१	
एकचक्रः	१००
एकः सप्तनामा अश्वः यं वहति	"
सप्त अश्वः यं वहन्ति	१०१
सप्तचक्रः	"
सप्तनामा एकः अश्वः यं वहति	१००
सप्त युजन्ति	"
रथन्तरं साम १, १६४, २५, १२३ । १०, १८१, १; ८३४	
रश्मयः ( सूर्यस्य, आदित्यस्य वा ) १, ९०, ८; ३६ । १०५, ९, ११; ४६, ४८ । १६४, ३, ७, १६; १०१, १०५, ११४ । १६४, २१-२२, ३६; ११९-१२०, १३४ । ५, ४४, ४; २९७ । ४७, २; ३२९ ( सूर्यो देवता )	

## गुणबोधकपदानि ।

अजिरासः	३२९
अनन्तासः	"
अप ईयमानाः	"
अभीशवः	२९७
अमृतस्य नामिं आ तस्थिवांसः	३२९
अर्जुनर्माः	१३४
आ तस्थिवांसः अमृतस्य नामिम्	३२९
ईयमानाः अपः	"
उच्चः	"
ऋतावृधः	२९७
गावः	३६
पन्थः	३२९
परिभुवः	१३४

भुवनस्य रेतः	१३४
मध्वदः	१२०
माध्याः	३६
यम्यः	२९७
रेतः भुवनस्य	१३४
विपश्चितः	"
सप्त	४६, १३४
सर्वशासाः	२९७
सुपर्णाः	४८, ११९-१२०
सुयन्तवः	२९७
सुयुजः	"
स्त्रियः सतीः पुंसः आहुः	११४
राका ५, ४२, १२; २७० । २, ३२, ८; १२६६	
दशस्यन्ती	२७०
बृहदिवा	"
शुभ्राः	"
राजानः	१०, १०२, ६, ७८०
सत्यं कृष्णानाः	"
रातिषाचः ७, ३५, ११; ४५९ । ४०, ६; ४९३ [ देवपत्न्यः ]	
रायः	७, ३५, २; ४५०
रुद्रा-प्राः १, १२२, २; ८२ । २, ३१, १; १५८ । ३, २०, ५; १६९ । ८, ८; २२२ । ५, ४१, २; २४१ । ४६, २; ३२१ । ५१, १३; ३५८ । ६, ४९, १०; ३७२ । ५०, १२; ३८९ । ७, ४०, ५; ४९२ । ४१, १; ४९४ । ८, २९, ५; ५४३ । ५४, ३; ५५३ । १०, ६१, १-२; ६२७-६२८ । ६४, ८; ६८३ । ६५, १; ६९२ । ६६, ३-४, १२; ७०९-७१०, ७१८ । २२, ९; ७२९ । २३, ४, ७; ७३९, ७४२ x । १२६, ५; ७९६ । १२८, ९; ८०८	

' रुद्रः ' देवताया  
गुणबोधकपदानि ।

अजरः	३७२
अप्याः	३८८
आयुषं सिमं हस्तो विभ्रत्	५४३

उग्रः	५४३, ७९६
ऋष्वः	३७२
क्षयद्वीरः	७२९
गूर्तवृचस्तमः	६२८
च्यवानः	"
जलाषः	४५४
जलाषभेषजः	५४३
तिग्मं आयुधं हस्ते बिभ्रत्	"
तूर्वयाणः	६२८
दभ्याय वन्वन्	"
दानाय वन्वन्	"
नृणां स्तुतः	७३९
नृभिः स्तवानः	४६८
पिता भुवनस्य	३७२
बिभ्रत् हस्ते तिग्मं आयुधम्	५४३
बृहन्	३७२
भुवनस्य पिता	"
मीद्वान्	८२, २४१
रुद्रा [द्विवचनत्वेन अश्विनोः विशेषणं अत्र वर्तते ]	७५२
वन्वन् दभ्याय	६२८
वन्वन् दानाय	"
शिकसे ( चतु० )	७२९
शिवः	"
शुचिः	५४३
सुदानवः	७१८
सुषुम्नः	३७२
स्तवानः नृभिः	४६८
स्तुतः नृणाम्	७३९
स्ववन्	७२९
हस्ते तिग्मं आयुधं बिभ्रत्	५४३

उपमासूची ।

क्षोदः न ६२८ रेत इत ऊति सिञ्चत् ।
रुद्रियः १०, ६४, ८; ६८३
रोदसी ( एकवचनम्-रुद्रस्य पत्नी ) । ६, ५०, ५; ३८२ । १०, ९२, ११, ७३१ ।
देवी ३८२
रोदसी (द्विवचनम् 'द्यावापृथिवी' इत्यर्थे ।) [ ' द्यावापृथिवी ' ऋष्यव्यम् ]
दे० [विश्वे देवाः] २१

वसतः ( गोः ) १, १६४, २९, १२७
वनस्पतिः १, ९०, ८; ३६ । ५, ४१, ८; २४७ । ४२, १६; २७४ । ७, ३४, २३; ४४६ । ८, २७, २; ५१३ । ५४, ४; ५५४ । १०, ६४, ८; ६८३
मधुमान् ३६
वना ५, ४१, ११; २५०
वनिनः ७, ३४, २५; ४४८ । ३५, ५; ४५३
वरुणः १, ८९, ३; २१ । ९०, १-३, ९; २९-३१, ३७ । १०५, ६, १५, १९; ४३, ५२, ५६ । १०६, १, ७; ५७, ६३ । १०७, ३; ६६ । १२२, ७; ८८ । १८६, २-३; १४१-१४२ । २, २९, १, ७; १५१, १५७ । ३, ५४, १०, १८; १७९, १८७ । ५५, ६; १९७ । ४, ५५, १, ५, ७, १०; २२९, २३२- २३३, २३५, २३८ । ५, २६, २; २३९ । ४१, २; २४१ । ४२, १-२; २६०- २६१ । ४३, २, ५; ३२१, ३२४ । ४९, ३, ५; ३४२, ३४४ । ६, २१, ९; ३६१ । ४९, १; ३६३ । ५०, १; ३७८ । ५१, ३, १०; ३९५, ४०२ । ७, ३४, १०-११, २४-२५; ४३५-४३६, ४४७- ४४८ । ३५, ६; ४५४ । ३६, २; ४६५ । ३९, ५, ७; ४८५, ४८७ । ४०, २, ४; ४८९, ४९१ । ८, २७, ३, ६-७, १५, १७; ५१४, ५१७-५१८, ५२६, ५२८ । २८, २-३; ५३५-५३६ । ८३, २, ४, ५६०, ५६२ । १०, ३१, ९; ५७६ । ३५, १०; ५८९ । ३६, १, १२-१३, ५९४, ६०५-६०६ । ६१, २४, २६, ६५०, ६५२ । ६३, ९; ६६२ । ६४, १२; ६८७ । ६५, १, ५, ९; ६९२, ६९६, ७०० । ६६, ५; ७११ । ९२, ६; ७२६ । ९३, ४; ७३९ । १०९, १-२; ७७५-७७६ । १२६, १-७; ७२२- ९८ । १६७, ३; ८३३ । ५१, ४, ६; १२०७-१२०८ । ८५, १७; १२२१ ।

९८, १; १२२२ । १, १३६, ६-७; १२६४-६५ । १०, १४, ७; १२६७
वरुणदेवताया गुणबोधकपदानि ।
अदब्धः ४६५
अदब्धानि व्रतानि यस्य १८७
अनुत्तं क्षत्रं अस्य ४३६
अन्वर्तिता ७७६
अपवाधमानः द्विपः ३१
अपाच्यः ५३६
अप्रमूराः महोभिः ३०
अमृतः ३१
अरिगूर्तः १४२
इनः ४६५
इन्द्रसखा ४४७
इषः पर्वत् १४२
उग्रः ४३५
ऋजुनीतिः २९
ऋतधीतिः ४०२
ऋतस्य नेता ४९१
ऋतावान् ४८७
क्षत्रं अनुत्तं (विश्वायु) अस्य ४३६
गातुवित् ५२
गुणानः ६५२
गोपाः ५३६
चर्षणीनां राजा ७९७
दस्मः ३४२
दाश्वान् ६९६
देवः १२६७
देववान् ६५२
ष्टुक्षः ४४७
द्विषः अपवाधमानः ३१
धृतव्रतः ५१४, ७११
नदीनां पेशाः ४३६
नव्यः ५२
नेता ७९७
नेता ऋतस्य ४९१
पतिः २३३
पदवीः ४६५
पर्वत् इषः १४२



पेशः नदीनाम्	४३६
प्रचेताः	५६०
भद्रः	३४२
मदन् स्वधया	१२६७
मन्त्रः	७३९
महोभिः अपमूराः	३०
मीढ्वान्	१२६४
युजः	५६०
राजा ४९१, ७३९, ८३३, १२६७	
राजा चर्षणीनाम्	७९७
राजा राष्ट्रानाम्	४३६
राष्ट्रानां राजा	"
वक्त्रराजसत्यः	४०२
वसव नः	३०
वसुः	"
विपः	६५०
विधायु क्षत्रं अस्य	४३६
वृधः	५६०
व्रतानि अदब्धानि अस्य	१८७
शम्	३७
श्रेष्ठवर्चाः	४०२
सजोषाः	५२८
सत्यसवः	६०६
सम्राट्	६९६
सरण्युः अस्य मूनुः अश्वः	६५०
सरस्वान्	७११
सलिलः	७७५
सहस्रचक्षाः	४३५
सुकीर्तिः	१४२
सुक्षत्रः	३६३, ४०२
सुवन्धुः	६५२
सुरातिः	५२८
सुशंसः	४५४
सूरिः	१४२
स्मद्रातिष चः	५३६
स्वधया मदन्	१२६७

## उपमासूची ।

अभिः वने न ५७६ शोकं व्यसृष्ट ।  
वसवः १, १०६, १-६; ५७-६२। २, ३१, १;

१५८ । ३, २०, ५, १६९ । ८८;  
२२२ । ५७, ४, २२४ । ४, ५५, १;  
२२९ । ५, ४१, १८; २५७ । ४९, ५;  
३४४ । ५१, १०; ३५५ । ६, ५०, ११;  
३८८ । ५१, ५; ३९७ । ७, ३५, ६,  
१४, ४५४, ४६२ । ३९, ३, ४८३ ।  
४८, ४; ५०७ । ८, ५४, ३, ५५३ ।  
१०, ६६, ३-४, १२; ७०९-७१०,  
७१८ । १००, ७, ९; ७५७, ७५९ ।  
१२६, ८; ७२९ । १२८, ९; ८०८ ।  
१०, ९८, १; १२२२

## गुणबोधकपदानि ।

जमयाः	४८३
देवाः	३८८, ४८३
पार्थिवासः	३८८
सुदानवः	५७-६२, ७१८
सुनीथाः	२२२

## उपमासूची ।

रथं न दुर्गात् ५७-६२ अंहसः नः  
निष्पिपर्तन ।  
वाक् १, १६४, ४१, १३९ । ७, ३६, ७,  
७४०  
अक्षरा ४७०  
अष्टापदी १३९  
एकपदी " "  
गौरीः " "  
चतुष्पदी " "  
चरन्ती ४७०  
तक्षती सलिलानि १३९  
द्विपदी " "  
नवपदी " "  
बभ्रुवुषी " "  
सलिलानि तक्षती " "  
सहस्राक्षरा " "  
वाजः-जाः १०, ३१, ५; ५७२ । ६४,  
१०, ६८५ । ९३, ७; ७४२

## उपमासूची ।

उषसां इव क्षा ५७२ इयं (स्तुतिः)भूयाः।  
वाजी (बृहदुक्कपुत्रः) । १०, ५६, १-३;

६१४-६१६  
वाजिनः (अभि-वायु-सूर्याः) । १०, ६६,  
१०; ७१६  
वातः १, ८२, ४, २२ । ९०, ६, ३४ ।  
१२२, ३; ८४ । १८६, १०; १४९ ।  
५, ४१, ४; २४३ । ४६, ४, ३२३ ।  
६, ५०, १२; ३८९ । ७, ३५, ४, ९;  
४५२, ४५७ । ३६, ३; ४६६ । ४०,  
६; ४९३ । ८, ५४, ४; ५५४ । १०,  
३१, २; ५७६ । ६४, ३, ६७८ ।  
१२८, २; ८०१ । १३७, २-३; ८१०-  
८११ । १४१, ५, ८२०

## गुणबोधकपदानि ।

अपां वृषण्वान्	८४
अस्त्रिधः	३२३
आश्वत्थतमः	२४३
इषिरः	४५२
कण्वहोता	२४३
त्रितः	२४३, ६७८
दिवः	२४३
दिव्यः	"
दूतः देवानाम्	८११
देवानां दूतः	"
ध्रजत्	४६६
परिजमा	४९३
मीढ्वान्	३८२
वातो द्वौ	८१०
विश्वमेवजः	८११
विश्वभोजः	२४३
सक्षणिः	"
सजोषाः	"
वाता-पर्जन्या	१०, ६६, १०; ७१६
महिषस्य तन्व्यतोः	"
वायुः १, १४, ३-४, १०; ६-७, १३ । १६४, १, २६, ३२; ९९, १२४, १३० ( मन्वस्थानः वायुः ) । ५, ४१, २, ६, १२, २४१, २४५, २५१ । ४२, १; २६० । ४३, ३, ९; २७९, २८५ । ५६, १०, १२; ३५५, ३५७ । ६, ४२, ४;	

३६६ । ७, ३२, २; ४८२ । ४०, २;  
४८९ । १०, ५६, १; ६१४ । ६४, ७,  
६८२ । ६५, १; ६९२ । ६६, ५; ७११ ।  
९२, १३; ७३३ । ९३, ४, ७; ७३२,  
७४२ । १००, २; ७५२ । १०२, १;  
७७५ । ११४, १, ७८२

**वायुः-गुणबोधकपदानि ।**

अर्तपन्थाः	२६०
अभीष्टः	१२४
अक्षः	९९
असुरः	२६०
( आदित्यस्य ) मध्यमः भ्राता	९९
आयुः	२४५
इषिरः	२५१
ऊर्जा पतिः	"
कविः	३६६
कन्दशिष्टिः	७५२
गोधुक्	१२४
घर्मः	"
चोदिता मतीनाम्	२८५
चोदिता वाजस्य	"
तथीयान्	"
तुरः	"
वेवः	२४५-२७५
कुतयामा	३६६
ब्रविणोदाः	२८५
नभस्तरियायान्	२५१
निधुता	३६६
नियुत्वान्	४८२
पञ्चोता	२६०
पत्यमानः	३६६
पनिता	२४५
परिजमा	२५१, ७३९, ७४२
परिबीतः मातुर्योनौ	१३०
पृषयोनिः	२६०
प्रयज्युः	३६६
बहुप्रजाः	१३०
बृहद्विः	३६६
भ्राता मध्यमः आदित्यस्य	९९

मतीनां चोदिता	२८५
मध्यमः भ्राता अस्य (आदित्यस्य)	९९
मयोभूः	२६०
मातरिश्वा	७७५, ७८२
मातुर्योनौ परिबीतः	१३०
रथप्राः	३६६
रथयुक्	२४५
वाजस्य चोदिता	२८५
विप्रः	२४५
विश्ववारः	३६६
विश्ववेदाः	७४२
शुचिपाः	७५२
सचित्	६८२
सचेताः	"
सुहस्तः	१२४
वास्तोष्पतिः ५, ४१, ८, २४७ । १०, ६१, ७-९, ६३३-६३५	
दभ्रचेताः	६३४
व्रतपाः	६३३

**उपमासूची ।**

वृषा न फेनं अस्यत् आजौ षड्भ स्मत्	
आ परैदप ।	
विद्युत्	१, १६४, २९; १२७
विद्वान् पथः	५, ४६, १; ३२०
पुर एता	"
विधाता ६, ५०, १२, ३८९ । १०, १६७, ३; ८३३	
विट् ( श् ) सर्वा- ५, २६, ९; २३९ । ८, २८, ३; ५३६	
देवाः [ 'विश्वे' इति उपपदरहितनिर्देशः ]	
१, ८९, १-२, ८-९; १९ २०, २६-२७ । ९०, १-३; २९-३१ । १०५, ३, ७, १२-१४, १७, ४०, ४२-४४, ४९- ५१, ५४ । १०६, २, ७; ५८, ६३ । १०७, २; ६५ । १२२, ५, ७; ८६, ८८ । १३९, १, ११; ९७-९८ । १६४, १०; १०८ । १८६, १०-११; १४९- १५० । २, २९, १-६, १५१-१५६ । ३१, २, ७; १५९, १६४ । ३, २०, १;	

१६८ । ५४, २, ५, २१; १७१, १७४,  
१९० । ५५, १-२२; १९२-२१३ ।  
५६, २; २१४ । ४, ५५, १-२; २२९-  
२३० । ५, २६, ९; २३९ । ४१, १७;  
२५६ । ४२, १७, २७५ । ४३, १६;  
२९२ । ४६, २; ३२१ । ४९, ५;  
३४४ । ५०, ३; ३४७ । ५१, १३;  
३५८ । ६, ४९, १४; ३७६ । ५०,  
१-२, ९, ११, १३; ३७८-७९, ३८६,  
३८८, ३९० । ५१, ६, ८-९, १२, १५  
३९८, ४००-४०१, ४०४, ४०७ । ५२,  
५, १५; ४१३, ४२३ । ७, ३४, १, ८-९,  
१२-१३, १५, १८-१९; ४२६, ४३३-  
४४, ४३७-३८, ४४०-४२ । ३५, ११;  
४५९ । ३९, ६; ४८६ । ४०, १; ४८८ ।  
४२, २-३, ६; ४९६-४९७, ५०० ।  
४३, १-५; ५०१-५०५ । ८, २, २७, १,  
९-११, १८; ५२१, ५२०-२२, ५२९ ।  
२८, १, ४; ५३४, ५२७ । ८३, १,  
३, ६, ९; ५५९, ५६१, ५६४, ५६७ ।  
१०, ३५, १, १०, १२, १४; ५८०,  
५८९, ५९१, ५९३ । ३६, २-१२;  
५९५-६०५ । ५२, ३-६; ६१०-६१३ ।  
५६, २-४; ६१५-६१७ । ६१, ७,  
२७, ६३३, ६५३ । १०, ६२, ७;  
६६० । ६३, १-२, ४, ८, १२, १४;  
६६१-६२, ६६४, ६६८, ६७२, ६७४ ।  
६४, १-२, १०-१२, १४; ६७६-७७,  
६८५-८७, ६८५ । ६५, ३-४, ७, ९, ११,  
१५; ५९४-९५, ६९८, ७००, ७०२,  
७०६, ६६३, १-२, ४, ६, ८-९, १४; ७०७-  
८, ७१०, ७१२, ७१४-१५, ७२० ।  
२२, ६, १०; ७२६, ७३० । ९३, २;  
७३७ । १०२, १, ३, ७; ७५१, ७५३,  
७५७ । १०२, ३-७; ७७७-८१ ।  
११४, १-३; ७८२-८४ । १२६, १, ८;  
७९२, ७९९ । १२८, २-३, ७; ८०१-  
२, ८०६ । १३७, १, ५; ८०९, ८१३ ।  
१४१, २; ८१७ । १५५, ५; ८२२ ।

१५७, ४-५; ८२६-८२७ । १६५, १-३; ८२८-३० । १, २७, १३; ११९९ । ४५, १०; १२०० । ९४, ८ । १२०१ । १६४, ५०; १२०२ । ७, १०४, ११; १२०३ । ८, ६३, १२; १२०४ । ८०, १०; १२०५ । १०, ५१, २, ४, ६, ८ । १२०६-९ । ५३, ४-५; १२१०-११ । ७२, १-९; १२१२-२० । ८५, १७; १२२१ । ९८, ४, ६; १२२५, १२२७ । १, १३६, ७; १२६५

विश्वेदेवाः ।

[ ' विश्वे ' इति उपपदसहितनिर्देशः । ]

१, ३, ७-९; १-३ । १४, १-१२; ४-१५ । २३, १०; १६ । ८९, ७; २५ । १२१, १-१५; ६७ ८१ [ इन्द्रः वा ] । १२२, ३, ११-१४; ८४, ९२-९५ । १८६, २-४; १४१-१४३ । २, ४१, १३-१५; १६५-६७ । ३, ५४, १७; १८६ । ५७, २, ५; २२४, २२७ । ४, ४४, ६; २९९ । ४५, ११; ३१९ । ४६, ६; ३३३ । ५१, १-३, ८, १३, ६५०-५३, ३५८ । ६, २१, ११; ३६२ । ४९, १५; ३७७ । ५०, १४-१५; ३९१-३९२ । ५१, ७; ३९९ । ५२, ७-८, १०, १३-१४, १७; ४१४-१५, ४१७, ४२१-२२, ४२५ । ७, ३५, ११; ४५९ । ३९, ४; ४८४ । ४८, ४; ५०७ । ५०, ३; ५०८ । ८, २७, २, ४-५, ११, १४, १२-२१; ५१३, ५१५-१६, ५२२, ५२५, ५३०-३२ । ३०, १-४; ५४९-५२ । ५४, ३; ५५३ । ६९, ११; ५५८ । १०, ३१, १-३, ६; ५६८-७०, ५७३ । ३३, १; ५७९ । ३५, ६३, ५९२ । ३६, १३; ६०६ । ४२, १-३; ६०८-९ । ६३, ६, ११; ६६२, ६७१ । ६५, १३-१४; ७०४-७०५ । ६६, ५, ११, १३; ७११, ७१७, ७१९ । ९३, ३, ७; ७३८, ७४२ । १२८, २, ४-५; ८०१, ८०३-४ । १५७,

१, ८२३ । ९८, ८ । १२२९  
' देवाः ' ' विश्वे देवाः ' च  
उभयोः मिलित्वा  
गुणबोधकपदानि ।  
अग्निजिह्वाः २५, ३६२, ३७९, ४२१, ६९८  
अग्निहोतारः ७१४  
अजम्नाः २३०  
अदब्धाः-सः ४०१, १९  
अदब्धधीतयः ३९५  
अदितेः अद्भ्यः परि पृथिव्या जाताः ६६२  
अदितेः अष्टौ पुत्रासः १२१९  
अद्रुहः ३, ५२०, ७१४  
अश्रुष्टाः ३९२  
अध्वन् यान्तः ५६४  
अध्वरं वावशानाः १६८  
अध्वरस्य प्रचेतसः ७०७  
अध्वराणां अभिप्रियः ७१४  
अनर्वाणः ६०४, ६७४  
अनागसः ६६४  
अनिमिषन्तः ”  
अन्तरिक्षे स्थ ४२१  
अपः जनयन्तः ७०२  
अपवाधमानाः द्विषः ३२  
अपरीतासः १९  
अपिप्रणी सदनी वस्युः च १५०  
अप्तुरः २  
अप्याः ३८८  
अप्रमूराः महोभिः ३०  
अप्रयुच्छन्तः ७१९  
अप्रायुवः १९  
अप्सु एकादश ९८  
अप्सु देवाः ७००  
अभिक्षतारः १५२  
अभिस्यवः ४०७, ५६७  
अभिप्रियः अश्वराणाम् ७१४  
अभिषाचः ७०५  
अमूराः २३०  
अमृताः ३१, ६५३, ७०५-७, ७११, ७१९, १२०७

अमृतबन्धवः १२१६  
अमृतस्य राजानः २२  
अमृतस्य सूनवः ४१७  
अर्भकः न अस्ति ५४९  
अर्भकाः ११९९  
अर्यः १९५  
अर्वन्तः ४२३  
अर्वाद्यः १५६  
अर्हणाः ६६४  
अश्वं जनयन्तः ७०२  
अष्टौ अदितेः पुत्रासः १२१९  
असुराः ५३१  
अस्त्रिधः ३  
अहिमायाः ६६४  
आपयः १५४  
आर्या व्रता विस्तृजन्तः ७०२  
आशिनाः ११९९  
इन्द्रज्येष्ठाः १६७, ४०७, ५६७, ७०७, १२०४  
इन्द्रप्रसूताः ७०८  
ईश्याः ११  
ईशानासः ९४  
ईशिरे भुवनस्य ६६८  
ईळाः १४०  
उद्भिदः १९  
उपस्थ ४२१  
उरुचक्षसः ४०१  
उद्यन्तः ४८४  
उषर्बुधः १२  
ऊमाः ४८४  
ऋतज्ञाः ७०५  
ऋतधीतयः २३०, ३५१  
ऋतसापः ३६२, ३७९, ७१४  
ऋतुभिः हवनश्रुतः ४१८  
ऋतस्य गोपाः ३९५  
ऋतस्य धाराः बुधानाः ५०४  
ऋतस्य पस्यसदः ४०१  
ऋतस्य रथ्यः ४७१, ५६१

ऋताश्रुतः १०, ३९१, ४१८, ६९४, ६९८, ७०७	पृथिव्याः अदितेः ६६२	निचेतारः ६५३
ऋतुहराः १७९	ज्योतिष्कृताः ७०७	निरुधानासः ८८
एकादश अप्सु ९८	ज्योतीरथाः ६६४	नृचक्षसः ६६४
एकादश दिवि ९८	तन्नां रथ्यः ३९८	एनीवन्तः १०
एकादश पृथिव्याम् ९८	तुराः-रासः ४०८, ५६८, ५९३	पर्वतासः १२०४
एहिमायासः ३	तुविजाताः ६६६	पर्वतान् जनयन्तः ७०२
ओमासः १	तूर्णयः ३	पार्थिवासः ३८८, ७००
ओषधीः जनयन्तः ७०२	त्रयः च त्रिंशत् च ५५०	पावकाः ३९५
कवयः १७९, १८६	त्रातारः ३७८	पुत्रासः अदितेः अष्टौ १२१९
कविशरताः ३९१	त्रिंशति परः त्रयः ५३४	पुष्टिं दध नाः प्रियरथे ८८
कुमारकः न ५४९	त्रिषु स्थन ४२	पूतदक्षाः ४०१
कृतवः १९	त्रीणि शता त्री सहस्राणि त्रिंशत् च ६१३	पृषरातयः १६७
क्षत्रियाः ७१४	दक्षपितरः ३७९	पृथिवीं जनयन्तः ७०२
क्षियन्तः ५६४	दक्षस्य रथ्यः ३९८	पृथिव्या एकादश ९८
गणः ३०५	दधानाः पुष्टिं प्रियरथे ८८	पृश्निमातरः २५
गो जनयन्तः ७०२	दशास्यन्तः ३८८	पृषदक्षाः "
गिरः ४८५	दस्माः २३०	प्रचेतसः ६६८, १२२१
गोजाताः ३८८	दाक्षांसः २	प्रचेतसः अप्वरस्य ७०७
गोपाः ४०७	दिवक्षसः ६९८	प्रयुजः जननाम् ५७९
गोपाः ऋतस्य ३९५	दिवः मध्ये तस्थुः ४७	प्रातर्यावीणः ३५२
घर्मस्वरसः २३४	दिवि एकादश ९८	प्रावितारः ५१३
चन्द्राः ४८७	दिवि सूर्यं रोहयन्तः ७०२	प्रियक्षत्राः ५२०
चर्षणीधृतः २	दिवेदिवे रक्षितारः १९	बृहन्तः ६०४
चित्रराक्षसः ६९४	दिव्याः ३८८, ७००	बृहच्छ्रवसः ७०७
जगतः मन्तवः विश्वस्य ६६८	दीधितिः विश्वेषां देवानाम् १५०	बृहद्विवा ७१४
जगमयः विदयेषु २५	दीर्घधृतः ७८३	ब्रह्म ७०२
जनः ३६३	बुहान्मः ऋतस्य धाराः ५०४	ब्रह्मकृताः ७११
जनः दैव्यः ६२५, ६६९	दैव्यः जनः ६२५, ६६९	भद्राः १९, १२१६
जनयन्तः अपः ७०२	द्यविस्थ ४२१	भुवना ईश्विरे १२२१
," अश्वम् "	द्विजन्मानः ३७९	मध्ये तस्थुः महो दिवः ४७
," ओषधीन् "	द्विषः अपबाधमानाः ३१	मनवः २५
," गाम् "	धृतव्रताः ६५१, ७१४	मनुप्रीतासः ६६१
," पर्वतान् "	ज्ञ अर्भकः ५४९	मनोः यजत्राः ७०५
," पृथिवीम् "	न कुमारकः "	मनोः यज्ञियाः ६०३
," ब्रह्म "	नभोजुषः ९२	मन्तवः विश्वस्य स्थातुः जगतश्च ६६८
," वनस्पतीन् "	नरः ४०१	मन्त्राः ३९१
अवानां प्रयुजः ५७९	नाम येषां चारु महत् १८६	मन्त्राः ९२
जाताः अद्भ्यः परि	नामानि विश्वा येषां नमस्थानि, यज्ञियानि, वन्यानि ६६२	मथोभुवः ४९३
		महयन्तः ६९५



प्रीताः इव ज्ञातयः ७२० अस्मे वसु कामं  
अव धूनुत ।  
यथा भुवनमग्नि यतयः १२१८ समुद्रे अत्र  
आ गृह्णन् सूर्यं अजभर्तन ।  
मनुष्वत् ५१ सप्तः होता विदुष्वरः ।  
रथः न वाजी ४२६ शुक्रा देवी प्र एतु ।  
रथीः इव अध्वानम् १२०८ भ्रातरः अर्थ-  
मत्तं अन्वावरीशुः ।  
राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य ७७७ न दूताय  
प्रद्ये तस्य एषा ।  
बनिनः न शाखाः ५०१ ब्रह्मणि विप्राः  
विश्वक् वि द्यभित्ति ।  
विं इव १५५ मा माधि पुत्रे प्रभीष्ट ।  
बृकः व तृष्णजं मृगम् ४०० आध्यः यन्तिः  
सप्तिः न रथयः १६४ यजत्रा धीति अदयाः ॥  
स्वर् न ४४२ तपन्ति शत्रुं भूमा ।  
विष्णुः १,२०,५,९; ३३,३७ । १६४,  
२६; १३४ । १८६, १०; १४९ ।  
३,५४,१४; १८३ १५५,१०; २०१ ।  
५,४६,२-४; ३२१-३२३ । ४९,३;  
३४२ । ५१,९; ३५४ । ६,२१,९;  
३६१ । ४९,१३; ३७५ । ५०,१२;  
३८९ । ७,३५,९; ४५७ । ३६,९;  
४७२। ३९,५; ४८५। ४०,५; ४२२।  
४४,१; ५०६ । ८,२५,१२; ५११ ।  
२७,८; ५१९। २९,७; ५४५। ५४,४;  
५५४ । ८३,७; ५६५ । १०,६५,१;  
६९२ । ६६,५; ७११ । ९२,११;  
७३१ । १२८,२; ८०१ । १४१,३,  
५; ८१८,८२० । १८१,१-३; ८३४-  
८३६ । १८४,१; ८३७ ।

' विष्णुः '-गुणबोधकपदानि ।

अन्नं	५११
अद्वेषः	१४९
उरुकमः	१४९, १८३
उरुगायः	५४५
एषः हविर्भिः	४९२
गोपाः	२०१
त्रीणि विचक्रमे	५४५

दधानः प्रिया अमृता धामानि	२०१
दस्मः	३४२
देवः	४९२
धामानि प्रिया अमृता दधानः	२०१
पाति परमं पाथः	'
पुरुदस्मः	१८३
भद्रः	३४२
भुवनानि विश्वा वेद	२०१
महिमा	७११
मद्विद्वान्	३८२, ४९२
विचक्रमे त्रीणि	५४५
वेद विश्वा भुवनानि	२०१
शम्	३७
सिन्धुः	५११
सुदानुः	'
स्वयावा	'
हविर्भिः एषः	४९२
वृकः ( अरुणः )	१,१०५,१८, ५५ ।
अरुणः	'

उपमासूची ।

तष्टा इव पृष्टयामयी ५५ उजिह्वीते	
	निचाय्य ।
वृषस्तुभः १०,६६,६; ७१२	
वृष्टिः १,१६४,९,३३; १०७,१३१	
गर्भः १०७, १३१	
माभिः	'
पुत्रः १०७	
वत्सः	'
वेदिः ७,३५,७; ४५५ । १०,११४,३;	
७८४	
घृतप्रतीका	७८४
चतुष्कपर्वा	'
युवतिः	'
वयुनानि वस्ते	'
वस्ते वयुनानि	'
सुपेशा	'
मजिनीः ( निशाः ) ५,४५,१; ३०९	
प्रतानि	७,३५,९; ४५७

शंसः ७,३५,९; ( प्र. पा. ) ४५० । २;	
( वृ. पा. ) ४५० । १०,३१,१; ५६८	
शंसः = नराशंसः। ( ४५० )	
सत्यस्य सुयमस्य शंसः ( ४५० )	
देवानां शंसः	
शमी ( गोत्वेन निरूपिता ) १०,३१,	
१०, ५७७	
शम्भुः । ७,३५,१०; ४५८	
शरीरम् १,१६४,३०; १२८	
अनत् १२८	
जीवम् "	
तुरगातु "	
पस्त्यानां मध्ये आ ध्वं ( शेते ) "	
शये "	
शर्यणावन्तः १०,३५,२; ५८१	
संवत्सरः १, १६४, ३, १०, १२-१४;	
१०१,१०८,११०-११२ । ३,५६,	
२५; २१५-२१८	

गुणबोधकपदानि ।

अक्षः मूरिभारः	१११
अजरम्	११२
अर्पितं सप्तचक्रे षळरे	११०
आश्रुतं रजसा	११२
चक्षुः सूर्यस्य	'
चक्रम्	१११-११२
त्रिपाजस्यः	२१६
त्रिमाता	२१८
त्र्यनीकः	२१६
श्रुधा प्रजावान्	'
द्वादशाकृतिः	११०
पञ्चपादः	'
पञ्चारः	१११
पिता	११०
पुरीषी	'
पुरुधा	२१६
प्रजावान् श्रुधा	'
माहिनावान्	'
रजसा आश्रुतम्	११२
रेतोधाः सप्ततीनाम्	२१६

विचक्षणम्	११०	बृहदिवा	२७०	१४१, ५; ८२०। १८१, १-३; ८१४-८३६
विदथेषु सम्राट्	२१८	मयस्करत्	२१	
विश्वरूपः	२१६	मही	६८४	
वृषभः	"	मीळहुषी	३८९	
शश्वतीनां रेतोधाः	"	यजता	२८७	
षठ्ठरम्	११०	वक्षणी	६८४	
सनाभिः	१११	वरूत्री	४९३	
सनेमि	११२	वाचं शग्मां उशती	२८७	
सप्तचक्रम्	११०	शग्मां वाचं उशती	"	
सम्राट् विदथेषु	२१८	शुभ्रा	२७०	
सूर्यस्य चक्षुः	११२	सप्तथी	४६९	
संसारः १, १६४, ३२; १३०		सिन्धुमाता	"	
परिवीतः मातुर्योनौ	१३०	सुभगा	२१	
बहुप्रजा	"	हवं जुजुषाणा	२८७	
मातुर्योनौ परिवीतः	"	सरस्वती ( वाक् )	६, ४९, ७; ३६९ ।	
सत्यस्य पतयः ( पतयः सत्यस्य ) ७,		७, ३९, ५; ४८५ ।		
३५, १२; ४६०		कन्या	३६९	
समुद्रः ६, ५०, १३-१४; ३९०-३९१ ।		चित्रायुः	"	
७, ३५, १३; ४६१ । १०, ६६, ११;		पार्वारवी	"	
७१७		वीरपत्नी	"	
सरमा ५, ४५, ७-८; ३१५-३१६		सविता १, १०६, ७; ६३ । १०७, ३;		
सरयुः १०, ६४, ९; ६८४		६६ । १६४, २६; १२४ । १८६, १;		
मही	६८४	१४० । २, ३१, ६; १६३ । ३, २०, ५;		
वक्षणी	"	१६९ । ५४, ११; १८० । ५५, १९;		
सरस्वती ( नदी ) १, ८९, ३; २१ । ३,		२१० । ५६, ६-७; २१९, २२० । ४,		
५४, १३; १८२ । ५, ४२, १२; २७० ।		५५, १०; २३८ । ५, ४२, ३, ५; २६२,		
४३, ११; २८७ । ४६, २; ३२१ ।		२६४ । ४६, ३; ३२२ । ४८, ५;		
६, ५०, १२; ३८९ । ५२, ६; ४१४ ।		३३९ । ४९, १-२, ४; ३४०-३४१,		
७, ३५, ११; ४५९ । ३६, ६; ४६९ ।		३४३ । ५०, १-२, ४-५; ३४५,		
४०, ३, ६; ४९०, ४२३ । ८, ५४, ४;		३४६, ३४८-३४९ । ६, २१, ९; ३६१ ।		
५५४ । १०, ६४, ९; ६८४ । ६५, १,		४९, १४; ३७६ । ५०, १, ८, १३;		
१३; ६९२, ७०४ । १४१, ५; ८२० ।		३७८, ३८५, ३९० । ७, ३५, १०;		
१८४, २; ८३८ । २, ३२, ८; १२६६		४५८ । ३७, ८; ४८० । ४०, १;		
गुणबोधकपदानि ।		४८८ । ८, २७, १२; ५२३ । १०, ३१,		
उसती शग्मां वाचम्	२८७	४, ५७१ । ३५, ७; ५८६ । ३६,		
घृताची	"	१२-१४, ६०५-६०७ । ६४, ७;		
जुजुषाणा हवम्	"	६८२ । ६६, ४; ७१० । ९३, ९;		
दशस्यन्ती	२७०	७४४ । १००, १, ३, ८-९; ७५१,		
पिन्वमाना	४१४	७५३, ७५८-७५९ । १२८, ७; ८०६ ।		
		सविता १, १०६, ७; ६३ । १०७, ३;		
		६६ । १६४, २६; १२४ । १८६, १;		
		१४० । २, ३१, ६; १६३ । ३, २०, ५;		
		१६९ । ५४, ११; १८० । ५५, १९;		
		२१० । ५६, ६-७; २१९, २२० । ४,		
		५५, १०; २३८ । ५, ४२, ३, ५; २६२,		
		२६४ । ४६, ३; ३२२ । ४८, ५;		
		३३९ । ४९, १-२, ४; ३४०-३४१,		
		३४३ । ५०, १-२, ४-५; ३४५,		
		३४६, ३४८-३४९ । ६, २१, ९; ३६१ ।		
		४९, १४; ३७६ । ५०, १, ८, १३;		
		३७८, ३८५, ३९० । ७, ३५, १०;		
		४५८ । ३७, ८; ४८० । ४०, १;		
		४८८ । ८, २७, १२; ५२३ । १०, ३१,		
		४, ५७१ । ३५, ७; ५८६ । ३६,		
		१२-१४, ६०५-६०७ । ६४, ७;		
		६८२ । ६६, ४; ७१० । ९३, ९;		
		७४४ । १००, १, ३, ८-९; ७५१,		
		७५३, ७५८-७५९ । १२८, ७; ८०६ ।		
		अनर्वा	३४३	
		अप्रयुच्छन्	६३	
		अभिमातिषाहः	८०६	
		अभीष्टः	१२४	
		असुरः	३४१	
		आयोः ज्येष्ठं रत्नं विमजन्	"	
		आयोः रत्नं विमजन्	३४०	
		ईक्ष्यः	७५९	
		उषसो न प्रतीकम्	३८५	
		ऊर्ध्वः	५२३	
		कवीनां कवितमः	२६२	
		गोधुक्	१२४	
		घर्मः	"	
		जजान पुरुधा प्रजाः	२१०	
		ज्येष्ठं रत्नं आयोः विमजन्	३४१	
		ज्ञाता	६३, ८०६	
		ज्ञायमाणः	३८५	
		त्रिः आ पत्यमानः विदथे	१८०	
		त्वष्टा	२१०	
		दत्रवान्	३८५	
		देवः ६३, १४०, १६९, २१०, २६२,		
		३४०-३४१, ३४५, ३४९, ३८५, ३९०,		
		४५८, ४८८, ६८२, ७४४, ७५३, ७५९		
		द्युतानः	८३६	
		धातृणां धाता	८०६	
		नृमणाः	३४८	
		भेता	३४५, ३४९	
		पतिः भुवनस्य	८०६	
		पायुः	७५९	
		पुपोष पुरुधा प्रजाः	२१०	
		प्रजाः पुरुधा जजान	"	
		प्रजाः पुरुधा पुपोष	"	
		भुवनस्य पतिः	८०६	
		वजतः	३८५	
		रत्नधा	५८६	
		रत्नं विमजन् आयोः	३४०-३४१	

रत्नी	४८८
रथस्पतिः	३४९
वरेण्यः	५२३
वाजी	८२०
विद्ये त्रिः आ पत्यमानः	१८०
विभजन् आयोः रत्नम्	३४०
विभजन् आयोः रत्नं ज्येष्ठम्	३४१
विश्वानरः	१४०
विश्वरूपः	२१०
सत्यसवः	६०६
सुजिह्वः	१८०
सुदंसस्	७१०
सुहस्तः	१२४
द्विःष्यपाणिः	१८०

उपमासूची ।

उषसः न प्रतीकम् ३८५ सविता देवः ।  
 रश्मि न ७४४ चर्षणीनां चक्रं नि योयुवे  
 साम १,१६४,२५; १२३  
 सिनीवाली १०,१८४,२; ८३८ । २,  
 ३२,८; १२६६  
 सिन्धुः-न्धवः १,९०,६; ३४ । १०५,  
 १२,१९; ४९,५६ । १०६,७; ६३ ।  
 १०७,३; ६६ । १२२,६; ८७ ।  
 ३,५६,५; २१८ । ४,५५,३; २३१ ।  
 ५, ४९, ४; ३४३ । ६,५२,४,६;  
 ४१२, ४१४ । ७,३५,८; ४५६ ।  
 ८, ५४, ४; ५५४ । १०, ३५, २,  
 ५८१ । ६४,९; ६८४ । ६५,१३;  
 ७०४ । ६६,११; ७१० । ९२,५,  
 ७२५

गुणबोधकपदानि ।

इषयन्तः	३४३
त्री षधस्याः	२१८
देवी	२३१
पिन्वमानाः	४१२
मही	६८४
मातरः	५८१
बकणीः	६८४
श्रोतुरातिः	८७

६० [विश्वेदेवाः] २२

सप्त	५५४
सुश्रोतुः	८७
सुकृतानि सुकृतां ७,३५,४; ४५२	
सुतम्बरः ( ऋषिः ) ५,४४,१३; ३०६	
उदञ्चनः	३०६
ऊधः विश्वासां धियाम्	,,
विश्वासां धियां ऊधः	,,
सत्पतिः	,,
सुमतिः आदित्यानाम् १,१०७,१; ६४	
अर्वाची	६४
वरिवोवितारा	,,
सुपर्णः १०,११४,४-५; ७८५-८६	
सुहवानि देवानाम् ७,३५,३; ४५१	
सूनूता १०,१४१,२; ८१७	

सूर्यः १,९०,८; ३६ । १०५,१२; ४९ ।  
 १०६,७; ६३ (सविता वा) । १६४,२५;  
 १२३ । २,३१,६; १६३ [सूर्यः  
 सायनाचार्याः] । ३,५४,६; १७५ ।  
 ५५,६-७; १९७-१९८ । ५,४४,४,  
 ७-१०; २९७,३००-३०३ । ४५,  
 १-२, ९-१०; ३०२-३१०, ३१७-  
 ३१८ । ४७, ३-७; ३३०-३३४ ।  
 ४८, ३; ३३७ [इन्द्रात्मा सूर्यः] ।  
 ४९, ३; ३४२ । ६,५०, २; ३७२ ।  
 ५१, १-२; ३९३-३९४ । ५२, ५;  
 ४१३ । ७, ३५, ८; ४५६ । ३६, १;  
 ४६४ । ४४, १; ५०६ । १०, ३१, ९;  
 ५७६ । ३५, २, ८; ५८१, ५८७ ।  
 ५६, १-२, ७; ६१४-६१५, ६२० ।  
 ६४, ३; ६७८ । १०, ९२, ७, १४, ७२७,  
 ७३४ । ११४, १; ७८२ । १४१,  
 ३; ८१८ । १८१, ३; ८३६ । १, १३६,  
 ६; १२६४

सूर्यः- गुणबोधकपदानि ।

अग्रः	३००
अजः	१६३
अन्वप्रं चरति	१९८
अप्रयुच्छन्	६३

अबन्धनः	१९७
अरुषः	३३०
अर्कः	७८२
अर्थः	३९४
अश्मा	३३०
अहा विवर्तयन्	३३७
अहा संवर्तयन्	,,
उक्षा	३३०
उच्चरन्	४१३
उरुचक्षाः	४५६
उस्रः	३४२
एकः	५५६
एकपात्	१६३
एकः वत्सः	१९७
कविः	१७५, ३००, ३१७
चरति अन्वप्रम्	१९८
जनित्रं परमं संवेशनम्	६१४
जनिवान्	३००
ज्योतिः तृतीयम्	६१४
ज्योतिः द्विवि	६१५
तृतीयं ज्योतिः	६१४
त्राता	६३
द्विवि ज्योतिः	६१५
दिवो मध्ये निहितः	३३०
देवः	६३, ३०९
देवानां जन्म सनुतः वेद	३९४
द्यौः	३३४, १२६४
द्विमाता	१९७-१९८
निहितः मध्ये दिवः	३३०
तृचक्षाः	१७५
परमं जनित्रं संवेशनम्	६१४
पश्यन् मर्तेषु ऋजु शुजिना	३९४
पुरस्तात् शयुः	१९७
पृथ्विः	३३०
बुधः	१९८
बृहन्	३३४, १२६४
मधुमान्	३६
युवा	३१७
रघुः	,,



वत्सः एकः	१९७
विदथानि त्रीणि वेद	३९४
विदथेषु सम्राट्	१९८
विप्रः	३९४
विवर्तयन् अहा	३३७
विश्वं अनु प्रभूतः	५५६
विश्वः उसाः स्पल्लत् एति	५८७
वृजिना पश्यन् मर्तेषु ऋजु	३९४
वृषा	३३३
वेद देवानां सनुतः जन्म	३९४
शयुः परस्तात्	१९७
श्येनः	३१७
संवर्तयन् अहा	३३७
संवेशनं परमं जनित्रत्	६१४
सप्तश्वः	३१७
समुद्रः	३३०
समुद्रः आसां स्तुतीनाम्	३०२
सम्राट् विदथेषु	१९८
सहसामानः	७८२
सुपर्णः	३३०
सुमहः	३७९
सूरः	३९४, ७२७
स्तुतीनां आसां समुद्रः	३०२
स्तेगः	५७६
स्वः	३०९
स्व.वसुः	३००
होता	१९८

## उपमासूची ।

अमर्ति न ३१० प्रियं वि सात् ।
उद्रा न नावम् ३१८ धीराः तं अनयन्त ।
रुक्मः न दिवः ३९३ उदिता व्ययौत् ।
सूर्यामासा १०, ६४, ३, ६७८ । ९२, १२, ७३२ । ९३, ५, ७४०
दिविक्षिता ७३२
विचरन्ता ,,
सदनाय सधन्या ,,
सोमः १, १४, ४ (इन्द्रवः), ७, १०, १३ । ८९, ३, २१ । २, ४१, १४; १६६ । ५, ४३, ४; २८० । ४६, ४; ३२३ ।

५१, ९, १२; ३५४, ३५७ । ६, ५१, १४; ४०६ । ५२, ३; ४११ । ७, ३५, ७; ४५५ । ४१, १; ४९४ । ८, २९, १; ५३९ । १०, ३५, २; ५८१ । ३६, ८; ६०१; ५२, २; ६०९ । ५७, ६; ६२६ । ६१, १६; ६४२ । ६५, १-२, १०; ६९२, ६९३, ७०१ । १००, ४; ७५४ । १०९, १-२; ७७५-७७६ । १२८, ५; ८०४ । १४१, ३; ८१८ । १६७, ३; ८३३ । १, ४५, १०; १२०० । १३६, ६; १२९४
---

## सोमदेवताया

## गुणबोधकपदानि ।

अंशुः	२८०
अजि हिरण्यम्	५३९
अध्वरश्रोः	६०१
अपां पेरुः	"
अभिज्ञस्तिपाः	४११
अद्वणीयमानः	७७६
आहुतिः देवानाम्	६०९
इन्द्रवः	७
इन्द्रियः	६०१
गिरिष्ठाः	२८०
गोपाः ब्रह्मणः	४११
घृतश्रीः	६९३
चमूषदः	७
जीवधन्यः	६०१
तिरो अह्वयः	१२००
तीव्रः	१६६
देवानां आहुतिः	६०९
देवान्यः	६०१
द्रप्सः	७
श्रीः भुवनस्य	३५७
बभ्रुः	५३९
ब्रह्मा	६०९
ब्रह्मणः गोपाः	४११
भुवनस्य पतिः	३५७
मत्सरः-राः	३६६, ७

मधुमान्	१६६
मधु सोम्यम्	१३
मध्वः	७
मध्वः रसः	२८०
मयोभू	७७५
मादयिष्णवः	७
युवा	५३९
राजा ६४२, ७५४, ७७६, ८०४, ८३३	
विप्रः	६४२
विषुणः	५३९
वि सेतुः	६४२
वेधाः	"
शुक्रः	२८०
सामिद्	६०९
सुररिमः	६०१
सुवानः	५८१
सुहवः	६०१
सूनरः	५३९
सोम्यं मधु	१३
स्तुतः	६४२
हिरण्यं अजि	५३९

## उपमासूची ।

मेमि न चक्रं अर्वातो
रघुद्रु ६४२ कक्षीवन्तं रेजयत् ।
सोमजामयः १०, ९२, १०, ७३०
सोमसूर्यचक्रप्रमणानि १, १६४, १९, ११७

## उपमासूची ।

धुरा न युक्ताः ११७ तानि रजसः वहन्ति ।
स्तोता १०, १३७, ४; ८१२
स्तोमः (देवस्तुतिः) १०, ९३, १२-१४; ७४७ ७४९

## उपमासूची ।

तना न सूर्ये ७४७ मे स्तोमं वावृधन्त ।
तष्टा इव अनपच्युतम् ७४७ मे स्तोमं वावृधन्त ।
नेमभिता न पौस्या ७४८ रावा युक्ता हिरण्यवी वावर्त ।
वृथा इव विष्टान्ता ७४८ हिरण्यवी वावर्त ।

संवननं न अद्वयम् ७४७ मे स्तोमं वावृधन्त ।	स्वरुणां मितयः	७, ३५, ७; ४५५	होता ७, ३९, १; ४८१ । १०, ३५, १०,
स्वः १०, ३६, १; ५९४ । ६५, १; ६९२ । ६६, ४, ७१०	स्वस्तिः	४, ५५, ३; २३१	५८९ । ६४, १५; ६९०
बृहत् ६९२, ७१०	हविष्कृतः	१०, ६६, ६; ७१२	इषितः ४८१
स्वधावान् (प्रश्नोत्तराणि) १०, ३१, ७-९; ५७४-५७६	वृषणः	"	सप्त ५८९
	हस्तौ	१०, १३७, ७; ८१५	होतारा दैव्या १०, ६६, १३; ७१९
	अनामयित्नु	"	पुरोहिता "
	दशघाखौ	"	प्रथमा "

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(२) यजुर्वेद-मन्त्राणाम् ।

अंवाः १०, ५; १३२५	आकृतिं प्रयुक्	१२८१	प्रयुक्त मनः मेधाम् १३३२, १२८१
अक्षरपंक्तिः छन्दः १५, ४; १३४८	"	१३३२	" वाचो विष्टितिम् १३३२
अक्षाः १०, २८; १३२९	आयुः	१२८५	" विज्ञानम् "
अभिः ८, १९; ८४९ । १४, ७, २०; ८५८-८५९ । १५, ५४; ८६२ । १७, ७३, ८७३ । १८, ७६, ८६४ । २७, ५२, ८७३ । ८, २७; १२४४ । १५, ५०, १२४९ । १७, ५६; १२५० । २०, १४; १२५३ । ३३, ७, १२६१ । ३३, ४८; १२६२ । ३, ९-१०, १२७९- १२८० । ४, ७; १२८१ । ५, २, ९, १२८३, १२८५ । ६, १६, २१, २६; १२८९, १२९२, १२९४ । ९, ३१; १३१९ । १०, ५, ९, २३; १३२५, १३२६, १३२८ । ११, ६६; १३३२ । १५, १५, ५२; १३५९, १३६५ । १८, ३७, १३६६ । २१, ६१; १३७५ । २३, १३, १३७७ । २६, १; १३८४ । २८, २३; १३८६ । ३२, १५; १३८९ । ३५, ३; १३९०	ऋषिः	१३७५	मनः मेधां प्रयुक् १२८१, १३३२
	ऋषीणां नपात्	"	मेधां मनः प्रयुक् " "
	गृहपतिः	१३२६, १३२८	वर्चः १२७९
	चित्तं प्रयुक्	१३३२	वाचो विष्टितिं प्रयुक् १३३२
	जातवेदाः	८७३	विज्ञानं प्रयुक् "
	जोष्टा	१२५०	वैश्वानरः ८५८, १२०, २, १३३२
	ज्योतिः	१२७९	सजूः रात्र्या १२८०
	तपस् दीक्षा	१२८१	' सवित्रा "
	दीक्षा तपः	"	सरस्वती पूषा १२८१
	देवः	८६४, १२८५, १३७५	सूर्यराशिः १३५९
	देवता	८५९	हरिकेशः "
	देवानां समिद्	१२४४	होता १३७५
	दैव्यः	१२५०	अभिः (भूः) ३, ५; १२७८
	धर्ता	"	अभिः (सोमः) ८, ५६; १३१०
	धामच्छद्	८६४	अमीषोमी २, १५; १२७४ । ६, ९; १२८७
	नभः नाम	१२८५	अमेः पुरीषम् १५, ३; १३४७
	पुरः (स्थः)	१३५९	अमेः भागः १४, २४; १३४४
	पूषा सरस्वती	१२८३	अध्व्या नामानि ८, ४३; १२४५
	प्रयुक् आकृतिम्	१२८१, १३३२	
	" चित्तम्	१३३२	
अंगिराः १२८५			
अनाभृष्टं ते नाम "			
असितग्रीवः १३७७			

अदितिः	१२४५	अनुसुप् छन्दः १४, १०, १८; १३३९,	१३३५ । २१, ४१-४३, ६०; १३७१-
इडा	"	१३४१ । १५, ५; १३४९	१३७४ । २८, ४; १३९३
काम्या	"	अन्तरिक्षम् ३६, १७; ८७५ । ४, ७,	गुणबोधकपदानि ।
चन्द्रा	"	१२८१ । ६, २१; १२९२ । ७, २,	अध्वर्यु ८५८
ज्योता	"	१२९५ । २६, १; १३८४	उभा १२६२
मही	"	अन्तरिक्षं छन्दः १४, १९; १३४२ ।	दंसोभिः सजुः १३३५
रन्ता	"	१५, ६; १३५०	नासत्या १२६२
विश्रुतिः	"	अन्तर्यामः ग्रहः ७, २७; १३०२	भिषजा १२५२, १२५४
सरस्वती	"	अन्धः ( सोमः ) ८, ५४; १३०८	अष्टाचत्वारिंशः विवर्तः १४, २३; १३४३
हव्या	"	अपानः २३, १८; १३७८	अष्टादशः प्रतृतिः १४, २३; १३४३
अङ्गाङ्गं छन्दः	१५, ५; १३४९	अपामार्गः ३५, ११; १३९१	असुः ( सोमः ) ८, ५८; १३१२
अंकुषं छन्दः	१५, ४; १३४८	अच्छः १२, ७४; १३३५	असुरः ( सोमः ) ८, ५५; १३०९
अजा	४, २६; १२८२	अथवोभिः सजुः "	अस्थि [ वसु ] २०, १३; १३६८
अजाः छन्दः	१४, १९; १३४२	अर्गमा १०, ५; १३२५	अस्रवयः छन्दः १४, १८; १३४१
अथर्वा ( सोमः )	८, ५६; १३१०	अर्वा २३, २०; १२५७	अहः १५, ६; १३५०
अदितिः ९, ३४; १३२२ । १०, ९; १३२६ ।	१४, ४८; १३६४	अवभृथः २०, १८; १३७०	अहोरात्रे ६, २१; १२९२
अदित्यै भागः	१४, २३; १३४९	निचुम्पुणः १३७०	आक्रमः १५, ९; १३५३
अधरारणिः	५, ४; १२८३	निचिरः "	आमीग्रम् ५, ३०; ८४३
अधिपतिः	१५, १०; ८६१	अश्वः २३, १३, १८-२०; १३७७,	वैश्वदेवम् "
अधिपतिः छन्दः	१४, ९; १३३८	१३७८-८० X	आप्रयणः ७, २४; १२९२ । २८; १३०३
अधीतम्	१५, ७; १३५१	अश्वः ( दक्षिणा ) ७, ४७; १३०६	आच्छच्छन्दः १५, ४-५; १३४८-४९
अध्वरः	६, २३; १२९३	अश्वः छन्दः १४, १९; १३४२	आज्यम् ५, ३५; ८४४ । ५, २; १२८३
तपसः तनूः	१२८२	अश्वकः १३७८	ज्योतिः ८४४
प्रजापतेः वर्णः	"	गणपतिः गणानाम् १३७९	विश्वरूपम् "
उरुशर्वा	१३२६	गणानां गणपतिः "	विश्वेषां देवानां समिद् "
उर्वशी	१२८३	गर्भधः "	आयुः १२८३
देवः	१२९३	निर्धनां निधिपतिः "	आत्मा प्रजापतिरूपेण ८, ९; १३०७
हविष्मान्	१२९३	प्रियाणां प्रियपतिः "	आदित्यः ३१, २१; १२६० । १५, १७;
अनः ( शवटम् )	१, ८; १२३४	राश्व्यः १३७७	१३६१ । २६, १; १३८४
देवानां वह्नितमम्	"	रेतोधाः १३८०	पश्चान् ( स्थः ) १२६०
" जुष्टतमम्	"	वाजी "	विश्वव्यचाः १३६१
" देवहृततमम्	"	वृषा १३७७, १३८०	आदित्याः १४, २०; ८५९ । २, ५;
" पथिततमम्	"	हयः १३०६	१२७३ । २२; १२७६ । ९, ६४;
वह्नितमं देवानाम्	"	अश्वस्तुतिः ९, ९; १३१४	१३२२ । ११, ५८; १३३१ । २३, ८;
" सन्निततमम्	"	अश्विनौ १४, ७; ८५८ । १९, १२;	१३७६ । १५, ६; १३५०
अनःपृष्टः छन्दः	१४, ९; १३३८	१२५२ । २१, ५३; १२५४ । ३३, ४८;	देवता ८५९
अनुपद्	१५, ८; १३५२	१२६२ । ६, ९; १२८७ । ९, ३१;	आदित्यानां भागः १४, २५; १३४५
		१३१९ । १०, ३१; १३३० । १२, ७४;	

आदिशः	६, १९; ८४५	१३६४ । २०, ३, ४१-४२, ६०;	निधिपतिः निधीनाम्	१३७९
अ.पः	६, २४; ८४६ । ३६, १७; ८७५।	१३६७, १३७१-७२, १३७४ । २८,	निधीनां निधिपतिः	"
	१, १२; १२७० । ४, ७; १२८१ ।	२३; १३८६ । ४३; १३८७ । ३२,	प्रियपतिः प्रियाणाम्	"
	६, २३, २६; १२९३, १२९४ । २०,	१५; १३८९ । ३८, ४; १३९३	प्रियाणां प्रियपतिः	"
	१८; १३७० २६, १; १३८४	देवः	रेतोधाः	"
अग्नेगुवः	१२७०	देवता	वाजी	"
अग्नेपुवः	"	धामच्छद्	वृषा	"
देवीः	१२७०, १२८१	बृहद्वाङ्	उक्थम्	१५, १०; ८६१
बृहतीः	१२८१	मघवान्	वैश्वदेवामिमांस्ते उक्थे	"
भागधेयीः	८४६	वयस्वान्	उक्थ्यम्	७, २८; १३०३
विश्वेषां देवानाम्	१२९३	वयोधाः	उक्थ्यग्रहः	७, २२; १३००
विश्वसम्भुवः	१२८१	विश्वीजाः	उखा	११, ५८, ६०, ६५; ८५४-५६ ।
विश्वेषां देवानां भागधेयीः	८४६	वृद्धध्रुवाः	११, ५८; १३३१	
ज्ञान्तिः	८७५	सुत्रामा	ध्रुवा अन्तरिक्षम्	१३३१
हविष्मतीः	१२९३	इन्द्रः मरुतश्च	ध्रुवा दिशः	"
आभिचारिकम्	७, १८; १२९८	इन्द्रः	ध्रुवा यौः	"
आयुः	५, २; १२८३	इन्द्राग्नी	ध्रुवा पृथिवी	"
आज्यम्	"	१३०१; १२, ५४; १३३४	उत्क्रमः	१५, ५; १३५३
आशीः	८, ६०; १२४६	उपमासूची ।	उत्क्रान्तिः	१५, ५, "
आश्विनं ग्रहः	७, २७; १३०२	कुमाराः विशिखाः इव	उत्तरारणिः	५, २; १२८३
आहवर्नियः	२, ५; १२७३	यत्र बाणः संपतन्ति ।	पुरुरवाः	"
हृध्मः	२, १; १२७२	इन्द्रः बृहस्पती	उदीची दिक् सम्राट्	१५, १३; १३५७
अमये जुष्टः	१२७२	इन्द्रावरुणौ	उद्दिशः	६, १९; ८४५
आखरेष्ठः	"	इन्द्राविष्णु	उद्गाताः	२३, २७; १३८२
कृष्णः	"	इन्द्रस्य भगः	उपमासूची ।	
जुष्टः अमये	"	इष्टका	गिरौ भारं हरन् इव	२३, २७; १३८२।
इन्द्रः	५, ३०, ८४३ । ८, १५; ८४८ ।	२६; ८६० । १५, १४; ८६१ । ५४;	ऊर्ध्वं एवं उच्छ्रयतात् ।	
	१४, २०; ८५९ । १८, ७६; ८६४ ।	८६२ । + १४, ९-१०, १७-१९, २३-	शीते वाते पुनन् इव	२३, २७; १३८२।
	२७, ५२; ८७३ । १९, १२; १२५२।	२६; १३३८-४६ । १५, ३-१९;	मध्वं एजतु ।	
	२१, ५३; १२५४ । २८, ११; १२५६।	१३४७-६३		
	२, २२; १२७६ । ५, ७; १२८४ । ७,	अधिपत्नी	उपभृत	२, १५; १२७४
	१५, २२-२३; १२९७, १३००-१३०१।	बृहती दिक्	उपांशुः ग्रहः	७, ३ १२९६ । २७; १३०२
	९, १०-१२; १३१५-१३१७। ९, ३३;	ईश्वरः	उपांशुसवनम् ( ग्रहः )	७, ३; १२९६ ।
	१३२१ । १०, ५; १३२५ । ९;	गणपतिः गणानाम्	२७; १३०२	
	१३२६ । २३; १३२८ । २८;	गणानां गणपतिः	उपावीः	६, ७; १२८६
	१३२९ । ३१; १३३० । १७, ४८;	गर्भधः	तृणविशेषः	"

+ अतोऽनन्तरं ' इष्टका ' आरोपित देवतानां नामानि स्वतंत्रतया संगृहीतानि वर्तन्ते ।

× ' उबट-महीधर-आम्ब्यकारमते एतयोः मन्त्रयोः ' अश्वः ' देवता । शतपथब्राह्मणतः ' ईश्वरः ' देवता ।

॥ शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता ' राष्ट्रीः ' ।

उर्वशी	५, २; १२८३	कृष्णाजिनम्	१, १४; १२७१	चर्म	१०, ५; १३२५
अधरारणिः	"	अदित्याः त्वक्	"	सोमस्व त्विषिः	"
उल्लखलम्	१, १४; १२७२	शर्म	"	उपमासूची ।	
अग्निः	१२७१	धुरो भ्रजः छन्दः	१५, ४; १३४८	तव इव १०, ५; १३२५ मे त्विषिः स्यात् ।	
प्रावा	"	गर्भाः पद्मविंशः	१४, २३; १३४३	चात्वालः (अग्निः) ७, २६; १२४२	
पृथुवृध्नः	"	गायत्री छन्दः १४, १०; १३३९ । १८;		५, ९; १२८५	
वानस्पत्यः	"	१३४१		देवानां उत्क्रमणम्	"
उषा	१२, ७४; १३३५	गिरः छन्दः	१५, ५; १३४९	छादिः छन्दः १४, ९; १३३८ १५, ५;	
सञ्जः अरुणीभिः	१३३५	गार्हपत्यः अग्निः	२, २०; १२७५	१३४९	
उषासानक्ते	२१, १७; ८६६	अदब्धायुः	"	छन्दासि	६, २१; १२२२
यही	८६६	अशीतमः	"	जागती छन्दः १४, १०, १८; १३३९,	
सुपेशसा	"	गौः छन्दः	१४, १९; १३४२	१३४१	
उष्णिक् छन्दः	१४, १०; १३३९ ।	गौः ( दक्षिणा )	७, ४७; १३०६	जनित्रं अग्नेः	५, २; १२८३
	१४, १८; १३४१	माः ( देवपत्न्यः )	३२, ४; १२६२	शकलम्	"
ऋक् ( वाक् )	३६, १; १३९२	मन्धिः	५, ३०; ८४३	जुहः	२, १५; १२७४
ऋतवः १४, ७; ८५८ । २, ३२; १२७७		इन्द्रस्य ध्रुवः	"	तनवः	१५, ७; ३३५१
षट्	१२७७	महः ( सोमपात्रम् ) ७, २१; ८४७ । ८,		तन्द्रं छन्दः १४, ९; १३३८ । १५, ५,	
घोरः ( हेमन्तः )	"	४७। ८५० । ७, १२; १२३९ । १७,		१३४९	
जीवः ( वर्षाः )	"	१२४० । २२; १२४१ । ३; १२९६		तृणम्	६, ७; १२८६
मन्युः ( शिशिरः )	"	मन्धिप्रहः	१२४०	उपावीः	"
रसः ( वसन्तः )	"	प्रावाणः ६, २६; १२९४ । ३८, १५;		तेजः	१५, ७-८; १३५१-५२
शोषः ( ग्रीष्मः )	"	१३९४		त्रयविंशः प्रतिष्ठा	१४, २३; १३४३
स्वधा ( शरद् )	"			त्रयोविंशः सम्भरणः	१४, २३; १३४३
पितृणां स्वरूपभूताः	"	उपमासूची ।		त्रिककुप् छन्दः	१५, ४; १३४८
ऋभवः	१४, २६; ८६०	विदुषः न यज्ञम् ६, २६; १२२४ शृणोतु		त्रिणव ओजः	१४, २३; १३४३
ऋभूणां मागः	१४, २६; १३४६	मे हवम् ।		त्रिवृत्	१५, ९; १३५३
ऋषयः	१५, १०; ८६१	घोषः	१०, ५; १३२५	त्रिवृत् आशुः	१४, २३; १३४३
एकविंशः क्रतुः	१४, २३; १३४३	चक्षुः	३६, १; १३९२	त्रिष्टुप् छन्दः १४, १०-१८, १३३९,	
एकविंशः धरणः	१४, २३; १३४३	चतुर्विंशः योनिः	१४, २३; १३४३	१३४१	
एवः छन्दः १५, ४-५; १३४८-१३४९		चतुष्टोमः धर्मम्	१४, २३; १३४३	त्वक्	२०, १३; १३६८
पेन्द्रवायवः महः	७, २७; १३०२	चतुर्विंशः ब्रह्मस्य विष्टपम् १४, २३;		आगतिः	"
ओषधयः	३६, १७; ८७५	१३४३		आनतिः	"
"	१५, ७; १३५१	चत्वारिंशः स्तोमः १५, ३;		त्वष्टा	६, ७; १२८६
ओषधिः	६, १५; १२८८	चन्द्रमाः १४, २०; ८५९ । २, २१;		देवः	"
ककुप् छन्दः १४, ९; १३३८ । १५, ४;		१२३६ । २३, १३; १३७७		दक्षिणाः ७, ४५, ४७; १३०४, १३०६	
१३४८		अटुष्णः	१३७७	दक्षिणाभिः	२, २०; १२७५
काथ्यं छन्दः	१५, ४; १३४८	देवः	१२३६	संवेद्यपतिः	"
कुम्भं प्रति षचनम्	२०, १७; १३६९	देवता	८५९	दक्षिणा दिक् (विराट्) १५, ११; १३५५	
कृषिः छन्दः	१४, १९; १३४२	ब्रह्मा	१३७७	दर्भौ ( वृषणौ )	५, २; १२८३
		मनसस्पतिः	१२३६		

दिसः	६, १९; ८४५
दुन्दुभिः	९, ११-१२; १३१६-१३१७
दूरोहणं छन्दः	१५, ५; १३४९
देवाः	४, ११; ८४२ । १४, ७; ८५८ । २०, ११; ८६५ । २, ७-११; १२३५- ३६ । ३, ११; १२३७ । ७, ३, १२, १७; १२३८-१२४० । ८, १८; १२४३ । ९, ३५-३६; १२४७-४८ । १५, ५०; १२४९ । १७, ५६; १२५० । १८, ६०; १२५१ । १९, १२; १२५२ । २०, १४; १२५३ । २६, १९; १२५५ । २८, ११; १२५६ । २९, २०; १२५७ । ३१, १४-१५, २१; १२५८- १२६० । ३३, ७, ४८, ८९; १२६१- १२६३ । ७, २२; १३०० । ९, ३५- ३६; १३२३-१३२४ । १७, ५२; १३६५ । २१, ६१; १३७५ । २३, ८; १३७६ । २६, २; १३८५ । २९, ४७; १३८८

गुणबोधकपदानि ।

अग्निनेत्राः	१३२३
आज्यपाः	१२५६
उत्तरासदः	१३२३
उपरिसदः	"
ऋतावृधः	१३८८
गात्रुविदः	१२३६
जुषाणाः	१२५६
त्रयाः एकादश	८६५
त्रयस्त्रिंशः	"
त्रीणि शता त्री सहस्राणि त्रिंशत्	
नव च	१२६१
दक्षंक्रतवः	८४२
दक्षिणासदः	१३२३
दुवस्वन्तः	१३२३
परमे व्योमन्	१२५१
पश्चात्सदः	१३२३
पुरःसदः	"
बृहस्पतिपुरोहिताः	८६५
मनोजाताः	८४२

मनोयुजः	८४२
मन्थिपाः	१२४०
मरीचिपाः	१२३८
मरुन्नेत्राः	१३२३
यमनेत्राः	"
वयोनाधाः	८५८
विश्वदेवनेत्राः	१२४७, १२४८, १३२३
शुक्रपाः	१२३९
सधःस्थाः	१२५१
सुराश्रसः	८६५
सोमनेत्राः	१३२३
अनेहसा	१३८८
विश्वशंभुवी	१३२६
शिवे	१३८८
द्यावापृथिवी	४, ७; १२८१ । ९, ७; १२८४ । ६, १६, २१; १२८९, १२९२ । १०, ९; १३२६ । २९, ४७ १३८८ । ३८, १५; १३९४
द्यौः	३६, १७; ८७५ । २६, १; १३८४। १५, ६; १३५०
द्यौः छन्दः	१४, १९; १३४२
द्राविशः वर्चः	१४, २३; १३४३
द्वेषः	६, १८; १२९०
धर्मः	१५, ६; १३५०
धाता	३२, १५; १३८९
धिषणाः	६, २६; १२९४
देवीः	"
धीः	४, ११; ८४२
दैवी	"
यज्ञवाहस्	"
वर्चोधाः	"
सुतीर्था	"
सुमृडीका	"
ध्रुवम्	७, २८; १३०३
नक्षत्राणि छन्दः	१४, १९; १३४२
नभः	६, २१; १२९२
दिव्यम्	"
नवदशः तपः	१४, २३; १३४३
निकायः छन्दः	१५, ५; १३४९

निर्ऋतिः	९, ३५; १३२३
वृचक्षाः सोमः	८, ५८; १३१२
वृचक्षसां भागः	१४, २४; १३४४
न्यप्रोधः	२३, १३; १३७७
पंक्तिः छन्दः	१४, १०, १८; १३३९, १३४१
पञ्चदश भान्तः	१४, २३; १३४३
पदपंक्तिः छन्दः	१५, ४; १३४८
पयः	३८, ५; १३९३
परमात्मा	२३, ६३; १३८३
प्रथमः	"
सुभूः	"
स्वयम्भूः	"
परमेष्ठी ( सोमः )	८, ५४; १३०८
परमेष्ठी छन्दः	१४, ९, १३३८
परिभूः छन्दः	१५, ४; १३४८
पर्जन्यः	१५, १९; १३६३
अर्वाग्वसुः	"
उपरि	"
वैष्णव्यौ	१२७०
पवित्रे ( दर्भौ )	१, १२; १२७०
पशुः	६, ९, १५; १२८७, १२८८
पितरः	२, ३२; १२७७ । १२, ४५, १३३३ । २९, ४७; १३८८ । ३५, १५; १३९४ ।
ऊर्ध्वबर्हिषः	१३९४
घर्मपावानः	"
सोम्यासः	१३८८
पितरः नाराशांसः ( सोमः )	८, ५; १३१२
पुरुषः ( जगद्धीजम् )	३१, १४-१५; १२५८-१२५९ । १३, ३८; १३३७
मध्ये अमेः	१३२७
वेतसः	"
हिरण्यः	"
उपमासूची ।	
सरितः न	१३, ३८; १३३७ घेनाः सम्यक् स्रवति ।
पुकरवाः ( उशरारतिः )	५, २; १२८३

पुष्करपत्रम्	१३, २; १३३६	प्रमा	१४, १८; १३४१	भक्षः ( सोमः )	८, ५८; १३१२
अग्नेः योनिः	"	प्रयुक्त	१५, ९; १३५३	भगः ३३, ४८; १२६२। १०, ५; १३२५	
अपां पृष्ठम्	"	प्रस्तरः	२, ५; १२७३	भुवः ( वायुः )	३, ५; १२७८
पुष्करे वर्धमानः	"	ऊर्गघ्नदाः	"	भूः ( अग्निः )	३, ५; १२७८
पूतभृदाहवनीयौ	७, २८; १३०३	स्वासस्थः	"	भ्रजः छन्दः	१५, ५; १३४९
पूषा ३३, ४८; १२६२। ६, ९; १२८७।		प्राची दिक् राज्ञी	१५, १०; १३५४	मज्जा	२०, १३; १३५८
२, ३२; १३२०। १०, ५, ९; १३२५-		प्राणः २३, १८; १३७८। ३६, १;		आनतिः	"
१३२६। १८, ३७; १३६६। २०, ३;		१३९२		मनः	३६, १; १३९२
१३६७। १२९, ४७; १३८८। ३५, १५;		बार्हिः २, १; १२७२। २, २२; १२७६		मनः छन्दः १४, २९; १३४२। १५, ४;	
१३९४		जुष्टं क्षुग्भ्यः	१२७२	१३४८	
विश्ववेदाः	१३२६	विवलं छन्दः	१४, ९; १३३८	मन्थी	७, १८; १२९८
पूषा ( सोमः )	८, ५४; १३०८	बृहत् छन्दः	१५, ५; १३४९	मन्थी ( सोमः )	८, ५७; १३११
पृथिवी ३६, १७; ८७५। ३, ५; १२७८।		बृहती छन्दः	१४, ९, १८; १३३८,	मयन्दं छन्दः	१४, ९; १३३८
५, ९; १२८५। १०, २३; १३२८।		१३४१		महतः १२, ७०; ८५७। १४, २०; ८५९।	
१५, ६; १३५०। २६, १; १३८४		बृहती दिक् अधिपत्नी	१५, १४; १३५८	३३, ४८; १२६२। २, २२; १२७६।	
अष्टमी	१३८४	बृहस्पतिः २, १२-१३; ८३९-८४०।		२, ३२; १३२०। १०, २१, २३;	
तप्तायनी	१२८५	१४, २०; ८५८। १५, १०; ८६१।		१३२७-१३२८	
देवयजनी	१२७८	१८, ७६; ८६४। ४, ७; १२८१।		देवता	८५९
भूः	"	९, १०-१२, ३२; १३१५-१३१७,		मारुतं सार्धः	१२६२
भूतसाधनी	१३८४	१३२०। १०, ५; १३२५। १२,		मा छन्दः	१४, १८; १३४१
माता	१३२८	५४; १३३४। १७, ४८; १३६४		मांसम्	२०, १३; १३७८
वितायनी	१२८५	देवः	८६४	उपनतिः	"
पृथिवी छन्दः	१४, १२; १३४२	देवता	८५८	मित्रः ३३, ४८; १२६२। ९, ३३; १३२१	
प्रच्छन्न छन्दः	१५, ५; १३४२	धामच्छद्	८६४	मित्रः ( सोमः )	८, ५५; १३०९
प्रजापतिः ९, २४, ३४; १३१८, १३२२।		प्रतिधर्ता हेतानाम्	८६१	मित्रस्य भागः	१४, २४; १३४१
१३, ९; १३२६। ११, ६६; १३३२।		हेतानां प्रतिधर्ता	"	मित्रावरुणौ ६, २१; १२९२। ७, २३;	
२३, ८, ६३; १३७६, १३८३। ३२,		ब्रह्मणस्पतिः ३३, ८९; १२६३। १७, ५२;		१३०१। १०, ९, २१; १३२६-१३२७	
१५; १३८९		१३६५		धृतव्रतौ	१३२६
प्रजानम्	१३१८	ब्रह्मा २, १२; ८३९। १८, ७६; ८६४।		मैत्रावरुणं प्रहः	७, २७; १३०२
मनुः	१३३२	३६, १७; ८७५। १०, २८; १३२९		यजमानः ( स्फ्यः )	१०, २८; १३२९
वाजस्य प्रसवः	१३१८	देवः	८६४	अभिभूः	"
सम्राट्	"	धामच्छद्	"	बहुकारः	"
प्रजापतिः ( सोमः )	८, ५४; १३०८	ब्राह्मणः	७, ४६; १३०५	भूयस्करः	"
प्रजापतिः छन्दः	१४, ९; १३३८	आर्षेयः	"	श्रेयस्करः	"
प्रतिपद्	१५, ८; १३५२	ऋषिः	"	यजमान-आशीः	३, ५; १२७८
प्रतिमा	१४, १८; १३४१	पितृमान्	"	उपमासूची।	
प्रतिरवाः	३८, १५; १३९४	पैतृमत्यः	"	यौः इव भूम्ना ३, ५; १२७८ अहं भूयासम्।	
प्रतीची दिक् सम्राट्	१५, २२; १३५६	सधातुदक्षिणः	"	पृथिवी इव वरिष्णा ३, ५; १२७८ अहं	
प्रदिशः	६, १९; ८४५	ब्राह्मणासः	२९, ४७; १३८८	भूयासम्।	

यजुः ( मनः )	३६, १; १३९२
यज्ञः ८, ६०; १२४६ । ६, २१; १२९२ । १५, १८; १३६२	
उत्तरात्	१३६२
संयद्भसुः	"
यन्ता	१८, ३७; १३६६
यमः	१२, ४५; १३३३
यमः ( सोमः )	८, ५७; १३११
यमस्यः भृत्याः	१२, ४५; १३३३
नूतनाः	"
पुराणाः	"
यवानां भागः	१४, २६; १३४६
यामः ( प्राणः )	३६, १; १३९२
रक्षः १, १४; १२७१ । ६, १६; १२८९	
रज्जुः	५, ३०; ८४३
इन्द्रस्य स्यूः	"
रथः	१०, २१; १३२७
इन्द्रस्य वज्रः	"
रथन्तरं छन्दः	१५, ५; १३४९
रात्रिः	१५, ६; १३५०
रायस्पोषः	१५, ७; १३५१
रुद्रः ३३, ४; १२६२ । १०, २८; १३२९	
सुशोवाः	"
रुद्रः ( सोमः )	८, ५८; १३१२
रुद्राः १४, २०; ८५९ । २, ५; १२७३ । ९, ३४; १३२२ । ११, ५८; १३३१ । २३, ८; १३७६	
देवता	८५९
लेपः	७, ३; १२३८
लोकं पृणा	१२, ५४; १३३४
धवाः	"
लोमानि	२०, १३; १३६८
प्रयतिः	"
घनस्पतिः	२१, ६०; १३७४
सूपस्थाः	"
देवः	"
घनस्पतयः ३६, १७; ८७५ । ९, १२; १३१७ । २८, ४३; १३८७	

वपाश्रपण्यौ	६, १६; १२८९
वयः छन्दः	१५, ५; १३४९
वयस्कृत् छन्दः	१५, ५, "
वरिवः छन्दः	१५, ४; १३४८
	१५, ५; १३४९
वरुणः १४, २०; ८५९ । ३३, ४८; १२६२ । ९, ३३; १३२१ । १०, २८; १३२२ । २०, १८; १३७० । २६, १; १३८४ । ३२, १५; १३८९	
देवता	८५९
सर्वाजाः	१३२९
वरुणः ( सोमः )	८, ५६; १३१०
वसा ६, १९; ८४५ । ६, १८; १२९०	
अन्तरिक्षस्य हविः	८४५
रेट्	१२९०
वसवः १४, २०; ८५९ । ८, १८; १२४३ । २, ५, २२; १२७३, १२७६ । ९, ३४; १३२२ । ११, ५८; १३३१ । २३, ८; १३७६ । १५, ६; १३५०	
देवता	८५९
भरमाणाः	१२४३
वहमानाः	"
वसूनां भागः	१४, २५; १३४५
वाक्	३६, १; १३९२
वाक् कल्याणी	२६, २; १३८५
वाक् छन्दः	१४, १९; १३४२
वातः	१४, २०; ८५९
देवता	"
वातः ( सोमः )	८, ५८; १३१२
वायुः २३, १३; १३७७ । २६, १; १३८४ । ३२, १५; १३८९ । ३५, ३; १३९०	
ऊर्ध्वनभाः	१२८९
दक्षिणा	१३६०
मारुतः	१२८९
विश्वकर्मा	१३६०
वायुः ( भुवः ) २, ५; १२७८ । ६, १६;	

१२८९ । १५, १६; १३६०	
वायुः ( सोमः )	८, ५७; १३११
वावाता*	२३, २६; १३८१
<b>उपमासूची ।</b>	
गिरौ भारं हरन् इव १३८१ ऊर्वा एनां उल्लापय ।	
शीते वाते पुनन् इव १३८१ अस्यै मध्यं एधताम् ।	
वासस् ( दक्षिणा ) ७, ९७; १३०६	
विदिशः	६, १९; ८४५
विधर्ता	१५, १०; ८६१
विधाः	१४, ७; ८५८
विधृता ( तृणद्वयम् )	२, ५; १२७३
विद्यत् छन्दः	१५, ५; १३४९
विराट् छन्दः १४, २०, १८; १३३९, १३४१	
विषधः छन्दः	१५, ५; १३४९
विश्वत्	१५, ९; १३५३
विशालं छन्दः १४, ९; १३३८ । १५, ५; १३४९	
विश्वकर्मा ( सोमः )	८, ५४; १३०८
विश्वे देवाः २, १३, १८; ८४०-८४१ । ५, ३०, ३५; ८४३-८४४ । ६, १९, २४; ८४५-८४६ । ७, २१; ८४७ । ८, १२, ४७, ५७; ८४९-८५१ । ८, ५८; ८५२ । ९, ३३; ८५३ । १०, ५८, ६०, ६५; ८५४-८५६ । १२, ७०; ८५७ । १४, ७, २०, २६; ८५८-८६० । १५, १४, ५४; ८६१-८६२ । १७, ७३; ८६३ । १८, ७६; ८६४ । २१, १७; ८६६ । २२, ५, २८; ८६७-८६८ । २४, २७; ८७० । २५, ५, ६; ८७१-८७२ । २७, ५२; ८७३ । २९, ६०; ८७४ । ३६, १७; ८७५ । ३९, ६; ८७६ । २, २२; १२७६ । ९, ३३; १३२१ । ११, ५८; १३३१ । ३६, १; १३९२ । ३८, १५; १३९४	

\* शतपथब्राह्मणमते अत्र देवता 'श्रीः' वै० [विश्वे देवाः] २३





भजुमता विश्वैः देवैः	८५७	३३, ३१, १३२५, १३२८, १३३० ।	शुकम्	१२८२	
ऊर्जस्वती	"	गुणबोधकपदानि ।	सखा इन्द्रस्य	१३३०	
पयसा पिन्वमाना	"	अंशुः	१२८४	सोमविकगी	४, २६; ११८२
सूनृता	३३, ८९; १२६३	अंशुषु न्युमः	८५१	सोमांशुः	७, ३; १२९६
देवी	"	अतिक्रुतः	१३३०	स्तोमः	१४, २३; ८६०
सूरः	१२, ७४; १३३५	अमृतम्	१२८२	त्रयस्त्रिंशः	"
सजूः एतशेन	"	इन्दुः	१३०७	स्तोमौ	१५, १०; ८६१
सूर्यः १४, २०; ८५९ । ३, ९-१०;		इन्द्रस्य युज्यः सखा	१३३०	त्रिगण त्रयस्त्रिंशौ	"
१२७९-८० । ६, २३; १२९३ । ३५,		इन्द्रियावान्	१३०७	रुभ्यः	१०, २; १३२९
३; १३९०		उर्जातः चमसेषु	८५२	इन्द्रस्य वज्रम्	"
जुषाणः	१२८०	चन्द्रः	१२८२	स्वर ( सूर्यः )	३, ५; १२७८
ज्योतिः	१२७९	चमसेषु उर्जातः	८५२	रविवृतिः	६, १५; १२८८
देवता	८५९	देवः	१२८४, १३०७	स्वरुः	६, २१; १२९२
सजूः रात्र्या	१२८०	देवाव्यः	१२४१	द्विरण्यम् ( दक्षिणा )	७, ४७; १३०६
सजूः सवित्रा	"	न्युमः अंशुषु	८५१	द्विरण्यं छन्दः	१४, १२; १३४२
सूर्यः ( स्वः )	३, ५; १२७८	पनीवान्	१३०७	हृदयम् ( पशु )	६, १८; १२९०
हविष्मान्	"	पवित्रेण पूतः	१३३०	होतारा देव्या	२१, ५३; १२५४
सोमः ८, ५७-५८; ८५१-५२ । ७, २२;		प्रत्यद्	"	होत्राः	७, १५; १२९७
१२४१ । ४, २६; १२८२ । ५ ७;		बृहस्पतिसुतः	१३०७	मध्वः	"
१२८४ । ६, २१, २६; १२९२,		राजा	१२९४	सुप्रीताः	"
१२९४ । ७, २; १२९५ । ८, ९, ५४;		वनस्पतिः	१३२८	सुहुताः	"
१३०७-८ । ९, ३१; १३१९ । १०, ५,		वायुः	१३३०	स्विष्टाः	"

विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

(३) अथर्ववेद-मन्त्राणाम् ।

अंशः	६, ४, २; ९३६	९८२ । २४, ८; १०४३ । ५, ३, ३;	३; ११८५-८६ । १२०, १; ११८७	
अग्निः १, ९, १-२; ८७७ ८७८ । २,		१०४४ । १, १६, १-२; १०४८-४९ ।	गुणबोधकपदानि ।	
३४, ३; ८८९ । ३, ८, १, ३; ९०२,		७, २४, १; १०६८ । १९, ९, ११-१२;	अधिपतिः	११७०
९०४ । ३, १५, ३-६, ८; ९१७-२०,		१०७९-८० ( बहुवच० ) । ४३, १;	अभिभूः	९५७
९२२ । ५, ८, १, ३; ९२३, ९२५ । ६,		१०८३ । २, १२, ८; १०९८ । २८, ५;	अ ज्येन वर्षयन्	११५९
३, २; ९३३ । ५, ३; ९३८ । ७३, १-२;		११०१ । ३, २२, ३; १११५ । १९, ११,	इद्धः सजातैः	९०४
९५१-५२ । ९७, १; ९५७ । ७०, ४-५;		६; ११२० । २७, ५, ७, १५; ११५९,	गार्हपत्यः	११८७
९६५-९६६ । ९, १६, २; ९७१ ( बहु-		११६१, ११६९ ( बहुवच० ) । ६, १०, १;	घोरः	९६६
वचनम्) । १९, १७, १; ९७२ । १८, १,		११७० । ५३, १; ११७९ । १०३, २-	जातवेदाः	१०९८

सुरीयः	१०४८
देवः	८८९, ९६५
प्रजया संररणः	८८९
यातुहा	१०४८
वर्धयन् आज्येन	११५९
वसुवान्	९८२
विश्वकर्मा	८८९
संररणः प्रजया	,,
सजातैः इन्द्रः	९०४

## उपमासूची ।

तिष्ठते अध्याय इव ९२२ विश्वाहा ते इत्  
सदं भेरम ।

अर्नाधोमा	६, ९३, ३; ११७८
अंगिरसः	२, १२, ४-५; १०९४-९५
आङ्गिरसानां आथाः पञ्चानुवाकाः	१९, २२, १; ११२१
अदितिः	३, ८, २; ९०३ । ६, ३१, १; ९३२ । ६, ४, १-२; ९३५-९३६ । ६८, २; ९४९ । २, २८, ५; ११०१ । ३, २२, १; १११३ । ६, १२, २; ११८८

## गुणबोधकपदानि ।

जनित्रम्	११८८
देवी	९०३
मध्यमेष्टाः सजातानाम्	,,
शरपुत्रा	,,
सजातानां मध्यमेष्टाः	,,

## उपमासूची ।

माता इव ११०१ अस्मै शर्म यच्छ ।

अनुमतिः	७, २४, १; १०६८
अन्तकः	१९, ९, ७; १०७५
अन्तरिक्षम्	६, ४०, १; ९३९ । १९, १५, ५; ९६८ । १७, २; ९७३ । १९, २; ९९३ । ५, ३, ३; १०४४ । १९, ९, १, ६४, १०६९, १०८२ । २, १२, १, १०९१ । १९, २७, ३; ११५७ [ बहुवचनम् ] । ६, १०, २; ११७१ । १२०, १-२; ११८७-८८

## गुणबोधकपदानि ।

उरु	१०६९, १०९१
उरुलोकः	१०४४
त्रीणि	११५७
भ्राता	११८८
अपां नपात्	६, ३, १, ३; ९३२, ९३४
अभिचाराः	१९, ९, ९; १०७७
अमृतम्	१९, १९, १०, १००१
अर्यमा	६, ४, २; ९३६ । १९, ९, ६; १०७४ । ६, १०३, १; ११८४
अध्विना	३, ४, ४; ८९८ । ६, ३, ३; ९३४ । ४, ३; ९३६ । १९, १६, २; ९७१ । २०, १; १००३ । ३, २२, ४; १११६ । १९, २७, १५; ११६९ । ६, १०३, १; ११८४
देवाः	९३४
पुष्करस्रजा	१११६
शुभस्पती	९३४
अष्टर्चाः	१९, २३, ५, १०११
अष्टादशर्चाः	१९, २३, १५; १०२१
अहः	१०, २०, ४; १००६
आदित्यः	१९, ९, १०; १०७८
आदित्याः	१, ९, १; ८७७ । ३, ८, ३; ९०४ । ६, ४८, १; ९४८ । ७४, ३; ९५६ । १९, १६, २; ९७१ । १७, ४; ९७५ । ६, ११४, १-२; १०६५-६६ । १९, २, ११; १०७९ । २, १२, ४; १०९४ । २, २७, १५; ११६९

## गुणबोधकपदानि ।

अहृणीयमानाः	९५६
उप्राः	,,
यजत्राः	१०६६
यज्ञवाहसः	,,

## उपमासूची ।

यथा आदित्याः अहृणीयमानाः वसुभिः  
महद्भिः संभूतुः ९५६ एवा इह इमान्  
जनान् संमनसः कृधि ।  
आपः ६, ६२, १, ९४२ । ६८, २, ९४९ ।  
१९, १७, ६; ९७७ । १८, ६; ९८७ ।

९, १; १०६९ । ४३, ७; १०८९ । ४, ८, १-७, ११४२-४८ । १९, २७, ३; ११५७ । २७, ९; ११६३
---

## गुणबोधकपदानि ।

इषिरः	९४२
उदन्वतीः	१०६९
ओषधीमतीः	९७७, ९८७
त्रिवृतः	११५७
दिव्याः	११४५-४७
पयस्वतीः	११४५, ११४७
परिष [स] स्वजानः व्याघ्रं सिंहम्	११४८

## उपमासूची ।

सुभुवः समुद्रं न ११४८ अप्पु अन्तः  
तस्थिवांसं द्विपिं न मर्भुज्यन्ते ।

आशाः	१९, १५, ६; ९६९
सर्वाः	,,
आशीः	२, ३४, ५; ८९१ । १९, २४, ५- ६; १०४०-४१ । २७, ८; ११६२
इन्द्रः	१, ९, १; ८७७ । ३, ३, २-३, ६; ८९२-९३, ८९५ । ४, १; ८९६ । ८, २; ९०३ । १०, १२, ९१३ । १५, १, ६; ९१५, ९२० । ५, ८, २, ४-९; ९२४, ९२६-३१ । ६ ४०, २-३; ९४०-४१ । ९७, १, ३; ९५७-९५८ । ९९, १-३; ९५९-९६१ । ७, ९८, १; ९६७ । १९, १६, १; ९७० । १७, ८; ९७९ । १८, ८; ९८९ । १९, ९; १००० । २०, ३; १००५ । २४, २, ७-८; १०३७, १०४२-४३ । १, १६, २; १०४९ । १९, १; १०५२ । २६, २; १०५७ । ७, २४, १; १०६८ । १९, ९, ६, १२; १०७४, १०८० । ४३, ६; १०८८ । २, १२, ३; १०९३ । २, ३६, ४; ११०२ । ३, १९, १-८; ११०५-१२ । १९, २७, १, ९; ११५५, ११६३ । ६, १०३, २-३; ११८५ ८६ । २०, १२८, ५; ११९६

**गुणबोधकपदानि ।**

अभिभूः	९५७
अरालिं नुदन्	९१५
ईशानः	"
उग्रः	९३१, ९५८-९५९
उपसद्यः	८९६
एकजः	९५९
एकराट्	८९६
ओजसा प्रमृणन्	९५८
गोजितः	"
ग्रामजितः	"
चेत्ता	९५९
जयन्	९५८
तवस्तरः	१०४२
दस्यूनां हन्ता	९१३
दूरे चित् सन्	८९२
धनदाः	९१५
नमस्यः	८९६
नुदन् अरालिम्	९१५
पुरएता	"
पुरुनामा	९५९
प्रमृणन् ओजसा	९५८
मघवान्	११०२, १११०, ११९६
मरुत्वान्	९७२, ९८९
महिमा	९१३
राजा	८९६
वज्रबाहुः	९५८
वणिक्	९१५
विप्रः	८९२
विश्वाम्पतिः	८९६
वीरः	९५८
वृत्रहा	९२९, ९३१
शचीपतिः	९१३, ९७०
सखा	१०५७
हन्ता दस्यूनाम्	९१३

**उपमासूची ।**

अग्निं वृकः इव ९१६ ( शत्रुं ) मथ्नीत ।  
यथा आस्त्ररः शृगाणां सुषदा बभूव ११०२  
एषा नारी संश्रिया अनिराधयन्ती अस्तु ।

यथा इन्द्रः अधस्पदं चक्रे ९३० तथा अहं  
अमून् अधरान् कण्वे ।  
कुलिशेन इव वृक्षम् १०९३ तं वृक्षामि ।  
इन्द्राग्नी ३, ३, ५; ८९४ । १९, १६, २;  
९७१ । २०, १; १००३ । २७, १५;  
११६९ । ६, १०३, १-३; ११८४-८६  
इन्द्राग्नी १, २७, १-४; ८८३-८८६

**उपमासूची ।**

वेणोः अद्गा इव ८८५ अभितः अथायवः  
असमृद्धाः ।  
इन्द्रापूषणा ६, ३, १; ९३२  
इन्द्रिशाणि १९, ९, ५; १०७३  
पञ्च " "  
ब्रह्मणा संशितानि " "  
मनः षष्ठानि " "  
संशितानि ब्रह्मणा " "  
ईश्वरः १, १९, १-४; १०५२-१०५५  
उत्तमाः १९, २२, १२; ११३२  
उत्तराः १९, २२, १३; ११३३  
उत्पाताः १९, ९, ७; १०७५  
पार्थिवान्तरिक्षाः १०७५  
उपोत्तमाः १९, २२, ११; ११३१  
उदगायः २, १२, १; १०९१  
अङ्गुतः " "  
उल्का १९, ९, ८-९; १०७६-७७  
उषासानक्ता ६, ३, ३; ९३४  
ऋषभः १९, २७, १; ११५५  
ऋषयः १९, २२, १४; ११३४  
एकर्चाः १९, २३, २०; १०२६  
एकादशर्चाः १९, २३, ८; १०१४  
एकानृचाः १९, २३, २२; १०२८  
एकाष्टका ३, १०, ५; ९०९ । १०, १२-  
१३; ९१३-९१४

**गुणबोधकपदानि ।**

इन्द्रपुत्रा	९१४
दुहिता प्रजापतेः	"
प्रजापतेर्दुहिता	"
सोमपुत्रा	"

एकोनविंशतिः १९, २३, १६; १०२२  
ओषधयः १९, १९, ५; ९९६ । ३, २३,  
६; १०६३ । १९, ९, १, १४; १०६९,  
१०८२ । २, ३६, ८; ११०४ [एकव.]

**गुणबोधकपदानि ।**

दैवीः	१०६३
यासां यौः पिता	"
,, पृथिवी माता	"
,, समुद्रः मूलम्	"
वीरधः	"
कृताकृतम्	१९, ९, २; १०७०
कृत्याः	१९, ९, ९; १०७७
क्षुद्राः १९, २३, ११; १०२७ । २२, ६; ११२६	
क्षेत्रस्य पत्नी	२, १२, १; १०९१
गणाः	१९, २२, १६; ११३६
गावः १९, ९, ८; १०७६ । १४, २, ५३- ५८; ११९०-११९५	
लोहित क्षीराः	१०७६
महाः १९, ९, ७, १०, १०७५; १०७८	
चान्द्रमसाः	१०७८
दिविचराः	१०७५
प्रावा	६, ३, २; ९३३
चक्षुः	६, १०, ३; १०७२
चन्द्रमाः चन्द्रः वा १, २७, १-४, ८८३-८८६। १९, १९, ४। ९९५ । ३, २३, १-६; १०५८-६३ । १९, ४३, ४; १०८६ (चन्द्रः) । ३, १९, १-८; ११०५- १२ । ४, ८, १-७; ११४२-४८ । ७, ११८, १; ११४९। १९, २७, २; ११५६ (चन्द्रः)। ५, २७, १-१५; ११५५-६९। ६, १९, १-३; ११७३-७५	

**गुणबोधकपदानि ।**

राजा	११४९
वृत्रहा	११५६
सोमः	११४९
चतुर्भुजः	१२, २३, १; १००७
चतुर्भुजार्चाः	१९, २३, ११; १०१७

जरिमा २,२८,३; १०९९  
जातवेदाः ३,१०,६; ९१० । १५,८;  
९२२ । ५,८,२; ९२४ । १९,१६,१;  
९७१ । ३,२२,४; २११६ । १९,२७,  
१५; ११६९

तृचाः १९,२३,१९; १०२५  
तृतीयाः शंखाः १९,२२,१०; ११३०  
त्रयोदशर्चाः १९,२३,१०; १०१६  
त्रिवृत् १९,२७,१-१५; ११५९-११६९  
त्वष्टा ३,८,२; ९०३ । ६,३,३; ९३४।  
६,४,१; ९३५

देवः ९३४  
दक्षिणाः ( दानानि ) १९,१९,६; ९९७  
दधत्यं सीसम् १,१६,२-४; १०४९-५१  
दवी ३,१०,७; ९११

## गुणबोधकपदानि ।

पूर्णा ९११  
यज्ञान् सम्भुञ्जती ,,  
सम्भुञ्जती यज्ञान् ,,  
सुपूर्णा ,,  
दशर्चाः १९,२३,७; १०१३  
दिवा १९,१५,६; ९६९ । १९,१९,३;  
९९४  
दिशः १९,२०,२; १००४  
देवाः [ पश्य 'विश्वे देवाः' । ]  
देवजनाः ६,१९,१; ११७३।  
९३,१; ११७६

देवताः १९,२७,१०; ११६४  
त्रयस्त्रिंशत् ,,  
देवयानाः पन्थानः ३,१५,२; ९१६  
देशोपसर्गाः १९,९,९; १०७७  
द्यौः ६,३,१; ९३२ । १९,९,१-१४,  
१०६९,१०८२ । २,२८,४; ११००।  
१९,११,६; ११२०। २७,३; ११५७।  
६,१०,३; ११७२। ५३,१; ११७९।  
१२०,१-२; ११८७-११८८

## गुणबोधकपदानि ।

निष्ठाः ११५७  
पिता ११८७,११८८

प्रचेताः ११७९  
बृहत् सादनम् ११२०  
शान्ता १०६९  
सादनं बृहत् ११२०  
द्यावापृथिवी ३,४,५; ८९९ । ६,३,२;  
९३३ । ४०,१; ९३९ । ६२,१;  
९४२ । १९,१५,५; ९६८ । १७,  
५; ९७६ । २०,४; १००६ । ३,२३,  
१-६; १०५८-६३ । २, १२, १, ५,  
१०९१, १०९५ । २, २८, ४; ११००

## गुणबोधकपदानि ।

उभे ८९९,९६८  
ऋतावरी ९४२  
पयसा पयस्वती ,,  
यज्ञिये ,,  
शिवे ८९९  
संविदाने ११००  
द्यौष्पिता ६,४,३; ९३७  
द्वादशर्चाः १९,२३,९; १०१५  
द्वितीयाः शङ्खाः १९,२२,९; ११२९  
धनपतिः २,३६,६; ११०३  
धाता ३,८,२; ९०३ । १९,२०,१;  
१००३ । १९,९,१२; १०८०  
धूमकेतुः १९,९,१०; १०७८  
धेनुः ३,१०,१; ९०८  
नक्तम् १९,१५,६; ९६९  
नक्षत्राणि १९,१९,४; ९९५। १९,९,९;  
१०७७ (एकवचनम्) । ६,१०,३;  
११७२  
उल्काभिरतम् १०७७  
नद्यः १९,१९,७; ९९८  
नवर्चाः १९,२३,६; १०१२  
नावाः १९,२७,४; ११५८  
त्रयः ,,  
निखाताः १९,९,९; १०७७  
वल्ग्याः ,,  
निर्गतिः ७,७०,१-२; ९६२-९६३ ।  
६,६३,१-२; ११८१-११८२  
देवी ११८१

निर्हतम् १९,९,८; १०७  
नीलनखाः १९,२२,४; ११२२  
पञ्चदशर्चाः १९,२३,१२; १०१२  
पञ्चर्चाः १९,२३,२; १०००  
पतत्रिणः १,१५,१-४; ८७९-८८८  
पत्नी क्षेत्रस्य २,१२,१; १०९  
पर्यायिकाः १९,२२,७; ११२५  
पर्जन्यः ६,४,१; ९३१  
पवमानः ६,१९,१-२; ११७३-११७५  
पशवः ३,१०,६; ९११

## गुणबोधकपदानि ।

ग्राम्याः ९१।  
विश्वरूपाः ,,  
सप्त ,,  
पशुपतिः २,३४,१; ८८।  
पितरः २,१२,४-५; १०९४-९५  
सोम्यासः १०९५  
पूर्वा रूपाणि १९,९,२; १०७।  
पूर्वा १,९,१; ८७७ । १९,२०,१  
१००३  
पृथक् सहस्रौ १९,२२,१९; ११३५  
पृथिवी ३,८,१; ९०२ । १९,१९,१  
९९२। १९,९,१,१,१४; १०६९,१०८२  
२,२८,४; ११०० । १९,२७,३  
११५७ [ बहुवचनम् ] । ६, १, १  
११७० । ५३,१; ११७९ । १२०,१  
११८७

## गुणबोधकपदानि ।

तिष्ठः ११५५  
प्रचेताः ११७५  
माता ११८५  
शान्ता १०६६  
प्रजाः १९,१९,११; १००५  
प्रजापतिः ३,१०,१३; ९१४। १५,६  
९२०। ६,६८,२; ९४९ । १९,१७  
९; ९८०। १८,९; ९९०। १९  
११; १००२। १९,२०,२; १००४  
७,२४,१; १०६८। १९,९,६,१२  
१०७४,१०८०

गुणबोधकपदानि ।

पतिः भुवनस्य	१००४
प्रजननवान्	९८०, ९९०
भुवनस्य पतिः	१००४
सत्यधर्मा	१०६८
प्रजापतेः दुहिता	३, १०, १३; ९१४
इन्द्रपुत्रा	”
सोमपुत्रा	”
प्रथमः ( शंखाः )	१९, २२, ८; ११२८
प्रदिशः ३, ४, २; ८९७ । १९, २०, २	१००४
देवीः	८९७
पञ्च	”
प्राजापत्यौ	१९, २३, २६; १०३२
प्रागः १९, २७, ७; ११६१ । ६, १०, २;	११७१
बृहस्पतिः ६, ७३, १-२; ९५१-९५२ ।	१९, १७, १०, ९८१ । १८, १०; ९९१ ।
२०, १; १००३ । २४, ४, ८; १०३९,	१०४३ । १९, ९, ६, ११; १०७४,
१०७९ । ३, २२, १-६; १११३-१८ ।	६, १०३, १; ११८४ । १४, २, ५३-
५८; ११९०-९५	
विश्वदेववान्	९९१
ब्रह्माः	१९, २७, ४; ११५८
त्रयः	”
ब्रह्म+ह्मा १९, १९, ८; ९९९ । २३,	१९; १०३५ । ९, १२; १०८०
( ब्रह्मा )। ४३, ८; १०९० ( ब्रह्मा )। २,	१२, ६-७; १०९६-९७ । १९, २२,
२०-२१; ११४०-११४१ ( ब्रह्मा )	
ब्रह्मचारिणः	१९, १९, ८; ९९९
ब्रह्मणस्पतिः ६, ४, १; ९३५। ५, ३; ९३८।	७४, १; ९५४ । १९, २४, १; १०३६
भगः ६, ४, २; ९३६ । ७४, १-२;	९५४-९५५ । १, २६, २; १०५७ ।
६, ५३, १; ११७९ । १०३, १, ११८४	
भवः	६, ९३, २; ११७७
भयम्	१९, ९, २; १०७०

भूतम्	१९, ९, २; १०७०
भूतानि विश्वा	६, १९, १; ११७३
भूतकृतः १९, १६, २; ९७१। २७, १५;	११६९
भूमिः १९, ९, ८; १०७६ । ६, १२०,	२; ११८०
तीर्थतः	१०७६
माता	११८०
वेप्यमान्त	१०७६
मङ्गलिकाः	१९, २३, २८; १०३४
मनः	१९, ९, ४; १०७२
परमेष्ठिन्	”
ब्रह्मसंशितम्	”
मनवः	६, १९, १; ११७३
मनुष्येष्वः	१, १९, २; १०५३
अस्ताः	”
अस्याः	”
देवीः	”
विश्वस्रः	”
शरवः	”
मरुतः ३, ४, ४; ८९८ । ६, ३, १; ९३२।	६, ४, २; ९३६ । ६, ७४, ३; ९५६ ।
७, ९८, १; ९६७ । ५, ३, ३; १०४४ ।	७, २४, १; १०६८ । २, १२, ६;
१०९६ । ३, १९, ६; १११० । ६, २३,	३; ११७८
इन्द्रवन्तः	१०४४
विश्ववेदसः	११७८
स्वर्काः	१०६८
महर्षयः	१९, २, ११; १०७९
देवाः	”
महाकाण्डः	१९, २३, १८; १०२४
महागणाः	१९, २२, १७; ११३७
मातरिश्वा १९, २०, २; १००४ । १९,	२७, ४; ११५८ [ बहुवचनम् ]।
त्रयः	११५८
मित्रः १, ९, १; ८७७ । ३, ८, १; ९०२;	६, ४, २; ९३६ । १९, १९, १; ९९२।
१९, ९, ६-७; १०७४-७५। २, २८, ५;	

११०१ । ३, २२, २; १११४ । ६,	
२०३, १; ११८४	
मित्रराजा	११०१
मित्रावरुणा ३, ४, ४; ८९८। १९, ११,	६; ११२०
उभा	८९८
मृत्युः १९, ९, १०; १०७८ । ६, ९३, १;	११७६ । ६, ६३, २-३; ११८२-८३
अघमारः	११७६
निर्ऋतः	”
बभ्रुः	”
यज्ञः ३, १०, ७; ९११ ( बहुवचनम् )।	६, ९७, १; ९५७ । १९, १९, ६; ९९७
अभिभूः	९५७
यमा १९, २०, १; १००३। ६, ९३, १;	११७६ । ६, ६३, २-३; ११८२-८३
मृत्युः	११८२
यमस्य सादनम्	२, १२, ७; १०९७
योनिः	३, २३, १-६; १०५८-६३
<b>उपमासूची ।</b>	
बाणः इव इषुधिम् १०५२, पुमान् गर्भः	
ते योनिं आ एतु ।	
राजा ३, ४, ६-७; ९००-९०१ । ४, ८,	१; ११४२ । ६, ९३, २; ११७७
राज्याभिषेकः ४, ८, १-७; ११४२-४८	
<b>उपमासूची ।</b>	
सुभुवः समुद्रं न ११४८ आसु अन्तः	
तस्थिवासं द्वीपिनं मर्मृज्यन्ते ।	
रात्रिः	३, १०, ७; ९११
राहुः	१९, ९, १०; १०७८
रुद्रः ६, ६८, १; ९४८ । १९, १७, ३;	९७४ । १९, १९, ३; १०५४ ( रुद्रः )।
१९, ९, १०, ११; १०७८-७९ । ३,	२२, २; १११४ ( रुद्रः )। ६, ९३, १-३;
११७६-७८	
तिमतेजसः	१०७८
रोहिताः	१९, २३, २३; १०२९
लोकाः	१९, ९, १२; १०८०

वनस्पतयः १९, ९, १४; १०८२ । ६,  
१०, १; ११७०  
वर्षासि ६, १०, २, ११७१  
वरुणः १, ९, १, ८७७ । ३, ३, ३; ८९३।  
४, ५; ८९९ । ८, १; ९०२ । ६, ४, २;  
९३६ । ६८, ३, ९५० । ७३, १-२;  
९५१-९५२ । १९, १७, ४; ९७५ ।  
१८, ४; ९८५ । २०, १, १००३ ।  
१, १६, २; १०४९ । १९, ९, ६-७;  
१०७४-७५ । २, २८, ५, ११०१ ।  
३, २२, २; १११४ । ७, ११८, १;  
११४२ । ६, ९३, ३; ११७८

## गुणबोधकपदानि ।

आदित्यवान् ९८५  
पूतदक्षः ११७८  
मित्रराजा ११०१  
राजा ८९३, ८९९, १००३  
वर्चः ३, २२, १-६; १११३-१८  
वसवः १, ९, १; ८७७। ६, ६८, १; ९४८।  
७३, १-२; ९५१-९५२ । ७४, ३;  
९५६ । ७, ९८, १; ९६७ (वसुः) ।  
१९, १७, १; ९७२ । ९, ११; १०७९।  
२, १२, ४, १०९४  
वाक् १९, ९, ३; १०७१  
देवी ”  
परमेष्ठिनी ”  
ब्रह्मसंशिता ”  
वातः १, १५, १-४; ८७९-८८२ (वाताः)।  
६, ६२, १; ९४२ । ५, ३, ३; १०४४।  
१९, २७, २; ११५६। २७, २; ११६१  
वृत्रहा ११५६  
वातगोपम् २, १२, १; १०९१  
वातापर्जन्यां ६, ९३, ३; ११७८  
वायुः २, ३४, ४; ८९०। ३, ८, १; ९०२।  
६, ६८, १; ९४८ । १९, १७, २, ९७३।  
१८, २; ९८३ । १२, २; ९९३ । ४३,  
२; १०८४ । २७, १; ११५५। ६,  
१०, २; ११७१ । ५३, १; ११७९  
अधिपतिः ११७१

अन्तरिक्षवान् ९८३  
देवः ८९०  
प्रजया संराराणः ”  
प्रजापतिः ”  
संराराणः प्रजया ”  
वास्तोष्पतिः ६, ७२, ३; ९५३  
विश्रुतिः १९, २३, १७; १०२३  
विदगाणाः १९, २२, १८; ११३८  
सर्वे अङ्गिरसः ”  
विवस्वान् १९, ९, ७; १०७५  
विश्वकर्मा १९, १७, ७; ९७८। १८, ७; ९८८  
सप्तऋषिवान् ”  
विश्वे देवाः १, ९, १; ८७७ । ३, ३, ५;  
८९४ । ३, ४, ४; ८९८ । ३, ८, ४;  
९०५। ७, ८, १; ९६७। १९, १०, १०;  
९८१ । १२, २०, ४; १००६। ५, ३,  
४, ६; १०४५, १०४७ । ६, ११४, ३;  
१०६७ । ७, २४, १; १०६८ । १९,  
९, १२, १४; १०८०, १०८२ । २,  
१२, ५; १०९५ । २८, ५; ११०१ ।  
३, १९, १-८; ११०५-१२ । ३, २२,  
१-५; १११३-१८ । ६, १२३, १-५;  
११५०-५४ । ६, ९३, ३; ११७८ ।  
१४, २, ५३-५८; ११९०-९५  
[ विश्वे देवाः केवलेन 'देवाः इति' पदेन  
निर्देशः ]। १, ९, २; ८७८ । २, ३४,  
२; ८८८ । ३, ३, २; ८९२ । ३, १०,  
७, ११-१२; ९११-९१३ । ३, १५,  
५-६; ९१९-९२० । ५, ८, ३; ९२५।  
६, ६४, १-३; ९४५-९४७। ६, ९७, १;  
९५७ । ७, ७०, २; ९६३ । १९,  
१९, १०; १००१ । २०, ३; १००५।  
२४, १; १०३६ । ५, ३, ३, ५;  
१०४४, १०४६ । १, १९, ४; १०५५।  
१, २६, १; १०५६ । ६, ५५, १;  
१०६४ । ६, ११४, १; १०६५। १२,  
९, ११-१२, १४; १०७९, १०८०,  
१०८२ । २, १२, २; १०९२ । ३,  
२२, २; १११४ । ११, ११, ५;

१११९ । ४, ८, २; ११४३ । ७,  
११८, १; ११४९ । १२, २७, ६-७;  
११६०-६१ । १९, २७, ११-१३;  
११६५-६७ । २०, १२८, ५; ११९६।  
२०, १३५, ४, १०; ११९७-९८

## गुणबोधकपदानि ।

अन्तरिक्षे एकादश ११६६  
अमृताः १११९  
इन्द्रज्येष्ठाः १११०  
इन्द्रैषिताः ९६३  
ऋतज्ञाः १११९  
ऋत्विजः देवानाम् ”  
एकादश अन्तरिक्षे ११६६  
एकादश दिवि ११६५  
एकादश पृथिव्याम् ११६७  
दिवि एकादश ११६५  
देवानां ऋत्विजः १११९  
देहिनाः १००५  
धुराजयः ”  
पृथिव्यां एकादश ११६७  
भ्राजन्तः ११६०  
मनोः यजत्राः १११९  
महर्षयः १०७२  
यजत्राः मनोः १११९  
यज्ञियासः ”  
विश्वेदेवाः ९६७  
विश्वधायसः १११४  
विश्ववेदसः ११६०, ११७८

## उपमासूची ।

यथा पूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते  
९४५ तथा मनांसि सं जानताम् ।  
यथा अहं विश्वाः पृतनाः अभि असानि  
९५७ एवा विश्वेभ्यो अभिहोत्रा इदं हविः ।  
विश्वरूपः ४, ८, ३; ११४४  
विश्वा भूतानि ६, १९, १; ११७३  
विषासहिः १२, २३, २७; १०३३  
विष्णुः ६, ३, १; ९३२ । ५, ३, ३; १०४४।  
१९, ९, ६; १०७४

वीर्यम्	१९, १९, ९; १०००
वृषा	१९, २७, १; ११५५
वेदाः	१९, ९, १२; १०८०
वैश्वानरः	३, १५, ७; ९२१ । ६, ६२, १; ९४२ । ६, ५३, २; ११८०
अदब्धः	११८०
तन्पाः	"
वैश्वानरी	६, ६२, २-३; ९४३-९४४
इडा	"
वैष्टपाः	१९, २७, ४; ११५८
त्रयः	"
त्राट्यौ	१९, २३, २५; १०३१
शंखाः तृतीयाः	१९, २२, १०; ११३०
शंखाः द्वितीयाः	१९, २२, ९; ११२९
( शंखाः ) प्रथमाः	१९, २२, ८; ११२८
शचीपतिः	१९, २७, १४; ११६८
शर्वः	६, ९३, २-२; ११७६-११७७
अस्ता	११७६
नीलशिखण्डः	"
शान्तयः	१९, ९, १४; १०८२
शान्तानि	१९, ९, १३; १०८१
शिखिनः	१९, २२, १५; ११३५
शुकः	६, ५३, १; ११७९
शृहन्	"
श्येनः	७, ७०, ३; ९६४
अजिराधिराजौ	"
संपातिनौ	"

**उपमासूची ।**

अजिराधिराजौ सम्पातिनौ श्येनौ इव ९६४	
यः कश्च नः अभि अघायति ।	
श्रोत्रम्	६, १०, १; ११७०
षट्पदाः	१९, २३, ३; १००९
षष्ठः	१९, २२, २; ११२२
षोडशार्चाः	१९, २३, १३; १०१९
सप्तशक्यः	६, ४०, १; ९३९ । १९, १७, ७, ९७८ । १९, ९, १२; १०८०
सप्तदशार्चाः	१९, २३, १४; १०२०
सप्तार्चाः	१९, २३, ४; १०१०
सप्तमाहमौ	१९, २२, ३; ११२३

दे०[विश्वे देवाः] २४

समुद्रः	१९, १९, ७; ९९८ । १९, २७, ३- ४; ११५७-११५८
चत्वारः	११५७
त्रयः	११५८
सरस्वती	६, ८, २; ९३३
देवी	"
सुभगा	"
सविता	३, ८, २-३; ९०३-९०४ । ३, १५, ६; ९२० । ६, ४०, १-२; ९३९-९४० । ६, ८, ३; ९४८, ९५० । ९९, ३; ९६१ । १९, १६, १; ९७० । २०, १; १००३ । २४, १, ८; १०३६, १०४३ । १, २६, २; १०५७ । ७, २४, १; १०६८ । १२, २७, ४; ११६८ । ६, १९, ३; ११७५ । ६, ५३, १; ११७९ । ६, १०३, १; ११८४
चित्रराधा	१०५७
देवः	१०३६
सत्यधर्मा	१०६८
सादनं यमस्य	२, १२, ७; १०९७
सामगाः	२, १२, ४; १०९४
तिस्रः अशीत्यः	"
सामनस्यम्	३, ८, ५-६; ९०६-९०७ । ६, ६४, १-३; ९४५-९४७ । ६, ७४, १-३; ९५४-९५६

**उपमासूची ।**

यथा अहृणीयमानाः उग्राः आदित्या  
वसुभिः महाङ्गैः संबभूवुः ९५६ एता इमान्  
जानान् इह संमनसः कृधि ।  
यथा पूर्वे संजानानाः देवाः भागं उपासते  
९४५ तथा सं वः मनसि जानताम् ।  
सिन्धवः १, १५, १-४; ८७९-८८२ ।  
६, ३, १; ९३२  
सप्त ९३२  
सांसं दधत्यम् १, १६, २-४; १०४९-५१

**उपमासूची ।**

यथा नः अवीरहा असः १०५१ (तथा)  
त्वा सीसेन विध्यामः ।

सूर्यः	१, ९, २; ८७८ । ६, ६२, ३; ९४४ । १९, १७, ५; ९७६ । १८, ५; ९८६ । १९, ३; ९९४ । २०, ४; १००६ । ४३, ३; १०८५ । २७, २, ४, ७; ११५६, ११५८ [ बहुवचनम् ], ११६१ । ६, १०, ३; ११७२
--------	--

**गुणबोधकपदानि ।**

अधिपतिः	११७२
गोप्तारः त्रयः	११५८
त्रयः गोप्तारः	"
द्यावापृथिवीवान्	९८६
विश्वतोमुखः	११६१
सूर्यौ	१२, २३, २४; १०३०
सोमः	३, ३, ३; ८९३ । ८, ३; ९०४ । १५, ६; ९२० । ६, ३, २; ९३३ । ५, ३; ९३८ । ४०, १; ९३९ । ६८, १, ३; ९४८, ९५० । ७३, १-२; ९५१- ९५२ । ९७, १; ९५७ । ९९, ३; ९६१ । १९, १७, ३; ९७४ । १८, ३; ९८४ । १९, ५; ९९६ । २०, १; १००३ । २४, ३-४, ८; १०३८-३९, १०४३ । ४३, ५; १०८७ । ७, ११८, १; ११४९ । १९, २७, २; ११५६ । ६, ५३, १; ११७९

**गुणबोधकपदानि ।**

अभिभूः	९५७
राजा	९४८, ९५०, १००३, १०३९, ११४९
रुद्रवान्	९८४
स्तोमः	१९, २७, ३; ११५७
त्रिवृत्	"
स्वर्गः	६, १२०, ३; ११८९
हरिताः	१९, २२, ५; ११२५
हिरण्यम्	१, ९, २; ८७८
होतारः	५, ३, ५; १०४६
देवाः	"



## विश्वे-देवाऽन्तर्गता देवताः

## (४) सामवेद-मन्त्राणाम् ।

अग्निः	१५०३-४; १४०२-३	गावः	४४२, १३९९	द्यावापृथिवी	६११, १३९७
सहस्रकृत	१४०२	विश्वधायसः शुचयः	”	पर्जन्यः	२९९, १३९५
अमथः विश्वे	१५०३-४; १४०२-३	त्वष्टा	२९९; १३९५	ब्रह्मणस्पतिः	”
अदितिः	२९९; १३९५	देवाः	३६८, ४४२, १८७२, १३९८-	मित्रः	४५५; १४०१
इन्द्रः	४५३, ४५५; १४००-१४०१	९९, १४०४		वरुणः	”
इन्द्रवृद्धस्पती	६११; १३९७	अरेपसः	१३९९	विश्वे देवाः	५९१; १३९६

## (५) विश्वे-देवाऽन्तर्गता यजुर्वेदीय

## नाना-देवताः ।

अंशः	१०, ५; १४२६	अर्माषोमौ	२४, ८, २३; १७६९, १८४८।	अनन्तः	३०, १९; २२५८
अंहारास्पतिः	२२, ३१; १६९३	२५, ५; २०२२		अनुमतिः	२४, ३२; १९०३। २९, ६०;
अकूपारः	२४, ३५; १९२१	अङ्गलयः	१८, २२; १४८५	२११२	
अक्षराजः	३०, १८; २२४५	अतिकृष्टः	३०, ५; २१२२	अनुष्टुम्	२४, १२; १७९३
अग्निः	१०, ५; १४१७ । १८, १६;	अतिच्छन्दः	२४, १३; १७९९	अन्तः	३०, १९; २२५७
१४५७ । १८, २२; १४७५ । २२,		अति यत्	२२, ८; १५४६	अन्तकः	३०, ७, १८; २१४२, २२५१ ।
६, २७; १४९२, १६९२ । २४, २, ६,		अथर्वाणः	३०, १५; २२१४	३९, १३; २३१५	
९, १४, २३, ३१; १७२९, १७५८,		अदितिः	१४, २९; १४४४ । १८, २२;	अन्तरम्	२५, २; १९७७
१७७३, १८००, १८४६, १८९४। २५,		१४८३ । २२, २०; १५५७ । २४,		अन्तरिक्षम्	१८, १८; १४७० । २२,
३-४; २०००, २००४। २९, ५८-६०;		५, २; १७५५, १७७६ । २५, २, ४, ८;		२७, २९; १६२५, १६५६ । २४, १०।	
२०८४, २१००, २१०३ । ३०, २१।		१९८८, २००८, २०५५, २०५७। २९,		२६, ३४; १७८०, १८६३, १९१४ ।	
२२७१ । ३९, १; २२८५		६०, २११०		२५, ८; २०५९ । ३०, २१; २२७४।	
अग्निः अनीकवान्	२४, १६; १८१३ ।	आदितिः मही	२२, २०; १५५८	३९, १; २२८६	
२९, ५९; २०९५		” सुमृचीका	२२, २०; १५५९	अन्त्यः	२२, ३२; १७०१
” गृहपतिः	२४, २४; १८५५	अधर्मः	३०, १०; २१६५	अन्त्यः मौवनः	९, २०; १४१४ । २२,
” वैश्वानरः	२९, ६०; २१११	आधिपतिः	९, २०; १४१६ । २२, ३०,	३२; १७०२	
अग्रामरुतः	२४, ७; १७६६	३२; १६७४, १७०४		अन्धाह्वयः	२५, ७; २०४४
अग्नाविष्णु	२४, ८; १७७०	अध्वा	२५, ३; १९९८	अन्यतोरण्यम्	३०, १९; २२६४

अपानः २२, २३, ३३; १५७४, १७०८  
 अर्षा मोदः २२, ६; १४९४  
 अपिजः ९, २०; १४०७ । २२, ३२;  
 १६९६  
 अपसरसः २४, ३७, १९३३  
 अभिभूः २२, ३०; १६७३  
 अभूतिः ३०, १७; २२४१  
 अभ्रः २२, २६; १६०६  
 अयवाः १४, ३१; १४५५  
 अयाः ३०, ८, २१४९  
 अरण्यम् २२, ३२, १९४३। २५, ३;  
 १९९९  
 अराधि ३०, ९; २१५७  
 अरिष्टिः ३०, १३; २२००  
 अर्कः १८, २२; १४७७  
 अर्णवः २२, २५; १६०१  
 अर्धमासाः २२, २८; १६३४ । २४,  
 ३७; १९२९  
 अर्षाः ३०, ११; २१७३  
 अर्षमा १०, ५; १४२८। २५, ४; २०१२  
 अर्षाची दिक् २२, २४, २७; १५८१,  
 १५८३, १५८५, १५८७, १५८९,  
 १५९१, १६३१  
 अवक्रतिः ३०, १२; २१९०  
 अवका २५, १; १९५४  
 अवक्रन्दः २२, ७; १५०५ । २५, १;  
 १९५९  
 अवस्परः ३०, १९; २२६२  
 अववर्षत् २२, २६; १६१२  
 अवस्फूर्जत् २२, २६; १६१०  
 अवाची दिक् २२, २४; १५९०  
 अषान्तरदिशः २४, २६; १७६६  
 अषारः ३०, १६; २२२८  
 अषार्याः २५, १; १९७०-७१  
 अशानिः २५, २; १९८१  
 अशिनौ २४, १, ३, २३, ३६; १७३१,  
 १७४३, १८४९, १९२५ । २५, ३;  
 २००२  
 अशमेधः १८, २२; १४८०

असुः २२, ३०; १६६७  
 अहः ( र् ) २४, २५, ३६; १८५६,  
 १९२३ । ३०, २१; २२७९  
 अहर्षतिः ९, २०; १४१०  
 अहर मुग्धः ९, २०; १४११  
 अहोरात्रे १४, ३०; १४४९  
 अहोरात्राणि २२, २८; १६३३  
 अहोरात्रयोः सन्धयः २४, २५; १८५८  
 आक्रमणम् २५, ३, ६; १९९५, २०४१  
 आक्रया ३०, ५; २१२०  
 आत्मा २२, ३३; १७१६  
 आदित्याः ११, ६०, ६५; १४३१, १४३८।  
 १४, ३०; १४५३ । २२, २८; १६४६।  
 २४, ६, २७, ३९; १७६१, १८६९,  
 १९४१ । २५, १, ६; १९६२, २०३५  
 आर्धि आर्धोतः २२, २०; १५५४  
 आध्यक्ष्यः ३०, ११; २१८२  
 आनन्दः ३०, ६, २०; २१२९, २२७०  
 आन्त्यायनः विन्शी ९, २०; १४१३  
 आपः २२, २५, २९; १५९२, १६६१ ।  
 २४, २१, ३७; १८३८, १९३१ । २५,  
 १-२, ५, ७, ९; १९६१, १९८३, २०२०,  
 २०४७, २०७३ । ३९, २; २२९३  
 आपिः ९, २०; १४०५  
 आयनः २२, ७; १५२४  
 आयासः ३९, ११; २२९७  
 आयुः २२, ३३; १७०६  
 आर्तवाः १४, २६; १४४५ । २२, २८,  
 १६३८  
 आर्तिः ३०, ९, १७; २१५४, २२४२  
 आशाः २२, २७; १६२९  
 आशिक्षा ३०, १०; २१७०  
 आर्षानः २२, ७; १५१४  
 आस्कन्दः ३०, १८; २२४९  
 इतरजनाः २४, ३६; १९२७  
 इदावत्सरः ३०, १५; २२१७  
 इद्वत्सरः ३०, १५; २२१८  
 इन्द्रः १०, ५; १४२३ । ११, ६०;  
 १४३३। १४, २९; १४४७ । १८,

१६-१८; १४५७-७४ । २२, ६, २७;  
 १४९८, १६२४ । २४, १, ३२, ४०,  
 १७३६, १९०२, १९४९ । २५, ३-५,  
 ८; १९९२, २००६, २०१४, २०२७,  
 २०५४ । २९, ५८, ६०; २०२०,  
 २१०४  
 इन्द्राणी २५, ४; २००९  
 इन्द्रामी २२, ५; १४८७ । २४, ४, ८,  
 १५, १७, २२; १७५१, १७६८, १८०९,  
 १८१९, १८४३ । २५, ५; २०१७ ।  
 २९, ५८; २०२२  
 इन्द्रावृहस्पती २४, ७; १७६४ । २५,  
 ६; २०३९  
 इन्द्राविष्णु २४, ७; १७६३  
 इरा ३०, ११; २१७८  
 इषः २१, ३१; १६८७  
 ईक्षमाणः २२, ८; १५४२  
 ईक्षितः ,, १५४३  
 ईर्यता ३०, ८; २१५०  
 ईशानः २४, २८; १८७२  
 उग्रं वर्षत् २२, २६; १६१३  
 उत्कूलनिकूट्याः ३०, १४; २२०८  
 उत्थितः २२, ८; १५३३  
 उत्सादः २५, १; १९५८  
 उत्सादाः ३०, १०; २१६२  
 उदकम् २२, २५; १५९४  
 उदानः २२, ३३; १७१०  
 उदीची २२, २४; १५८६  
 उद्गृहीतः २२, २६; १६१६  
 उद्गृह्णन् २२, २६; १६१५  
 उद्भावः २२, ८; १५२८  
 उद्भुतः २२, ८; १५२९  
 उद्यासः ३९, ११; २३०१  
 उपयामः २५, २; १९७५  
 उपजाः २५, ८; २०६४  
 उपविष्टः २२, ७; १५११  
 उपशिक्षा ३०, १०; २१७१  
 उपस्थावराः ३०, १६; २२२४  
 उपस्थितः २२, ७; १५२३

उर्वी	२२, २७; १६३०	क्षुध्	३०, १८; २२५२	तपस्यः	२२, ३०; १६९२	
उषाः	२४, ४; १७५२	क्षेमः	३०, १४; २२१७	तप्तः	३९, १२; २३०९	
उष्णिह्	२४, १२; १७२४	गणपतिः	२२, ३०; १६७२	तप्यत्	३९, १२; २३०७	
ऊर्जः	२२, ३१; १६८८	गणश्रीः	२२, ३०; १६७१	तप्यमानः	३९, १२; २३०८	
ऊर्ध्वा दिक्	२२, २४; १५८८	गन्धः	२२, ७; १५०८	तमस्	३०, ५; २११७	
ऋक्षीकाः	३०, ८; २१४४	गन्धर्वाः	२४, ३७; १९३०	तारकाः	२४, १०; १७८३	
ऋतवः २२, २८; १६३७ । २४, ३८; १९३५		गन्धर्वाप्सरसः	३०, ८; २१४६	तिष्ठन्त्यः	२२, २५; १५९५	
ऋतिः	३०, १३; २१९३	गायत्री	२४, १२; १७९०	तीर्थानि	३०, १६; २२२९	
ऋभवः	३०, १५; २२२१	गिरयः	२५, ८; २०६३	तुरीपः त्वष्टा	२२, २०; १५६७	
ऋषभः	२४, ३०; १८८६	गीतम्	३०, ६; २१२४	तुला	३०, १७; २२३७	
एकः	२२, ३४; १७२२	गुल्माः	२५, ८; २०६६	तेजस्	३०, ११; २१७७	
एकशतम्	२२, ३४; १७२५	गुहाः	३०, १६; २२३२	तेवनी	२५, २; १९८५	
ओषधयः २२, २८-२९; १६५४, १६६२		गेहम्	३०, ९; २१५४	त्वष्टा १८, १७; १४६६ । २२, २०; १५६६ । २४, १, ४, २४, २८, ३१; १७३४, १७५०, १८५२, १८७६, १८९५ । २५, ५; २०२६	त्वष्टा तुरीपः	२२, २०; १५६७
औपद्रव्यम्	३०, १३; २१९६	प्रिष्मः	२४, ११, २०; १७८५, १८३१	„ पुरुषः	२२, २०; १५६८	
कः २२, २०; १५५१ । २४, १५; १८१२ । २२, २०; १५५२		घृतम्	२५, ९; २०७२	त्रिष्टुभ्	२४, १२; १७९१	
ककुभ्	२४, १३; १७९७	घोषः १०, ५; १४२४ । ३०, १९; २२५६	घ्रातः	२२, ७; १५०९	त्रेता	३०, १८; २२४७
कतमः	२२, २०; १५५३	चक्रवाकौ	२५, ८; २०६१	त्र्यम्बकः	२४, १८; १८२५	
कपिञ्जलाः	२५, ३; १९९६	चक्षुः २२, २३, ३३; १५७६, १७१२ । २४, २९; १८७२	चक्षुः २२, २३, ३३; १५७६, १७१२ । २४, २९; १८७२	दक्षिणा दिक्	२२, २४; १५८२	
कर्णौ	२५, २; १९८४	चन्द्रः २२, २८-३०, १६११, १६५२, १६७७ । ३९, २; २२२१	चन्द्रः २२, २८-३०, १६११, १६५२, १६७७ । ३९, २; २२२१	दितिः	१८, २२; १४८३	
कर्म	३०, ७; २१३९	चन्द्रमाः २४, ३५; १९१७ । ३०, २१; २२७८	चन्द्रमाः २४, ३५; १९१७ । ३०, २१; २२७८	दिवा पतयत्	२२, ३०; १६८०	
कामः २४, ३९; १९४६ । ३०, ५; २१२१		चराचराणि	२२, २९; १६६५	दिशः १८, १८, २२; १४७४, १४८५ । २२, २७; १६२८ । २४, २६, ३१; १८६५, १८९३ । २५, ८; २०५६ । ३९, २; २२९०	द्विष्टम्	३०, ७; २१४०
कीलालः	३०, ११; २१७९	चाषाः	२५, ७; २०५१	दुष्कृतम्	३०, १८; २२५३	
कुर्वत्	२२, ८; १५४९	चित्तम्	२५, २; १९८७	देवाः सर्वे	२२, ५; १४९०	
कूजत्	२२, ७; १५१७	चित्तं विज्ञाता	२२, २०; १५५६	देवजामयः	२४, २४; १८५४	
कूप्याः	२२, २५; १५९८	चित्राणि	२५, ९; २०८०	देवानां पत्न्यः २४, ५, ९, २४; १७५७, १७७८, १८५३	देवलोकः	३०, १२; २१८७
कूर्माः	२५, ३; १९९४	जगती	२४, १२; १७९२	यौः १८, १८, २२; १४७१, १४८४ । २२, २७, २९; १६२७, १६५७ । २४, १०, २६; १७८१, १८६४ । २५, ८; २०६२ । ३०, २१, २२, ७५ । ३९, १; २२८८		
कूरमाः	२५, ७; २०५३	जम्बुकः	२५, ९; २०८३			
कृतः २२, ८; १५५० । ३०, १८; २२४६		जवः २२, ८; १५३४ । २५, ३; १९९७ । ३०, ११; २१७४	जवः २२, ८; १५३४ । २५, ३; १९९७ । ३०, ११; २१७४			
कृष्णः	२५, १; १९६८	जाप्रत्	२२, ७; १५१६			
कृतुः ९, २०; १४०८ । २२, ३२; १६९७		जीमूताः	२५, ८; २०५८			
कन्दत्	२२, ७; १५०४	ज्योतिः २२, ३०, ३३; १६७८, १७१८	ज्योतिः २२, ३०, ३३; १६७८, १७१८			
कुञ्ची	२५, ६; २०३८	तपस् २२, ३०; १६९१ । ३०, ५, ७; २११६, २१३३ । ३९, १२; २३२६	तपस् २२, ३०; १६९१ । ३०, ५, ७; २११६, २१३३ । ३९, १२; २३२६			
क्रोधः	३०, १४; २२०४					
क्रोशः	३०, १८; २२६१					
क्षत्रम्	३०, ५; २१२४					
क्षिप्रयेनः	२४, ३०; १८८७					

थावापृथिवी २२, २८; १६४० । २४,  
 १४, ३४; १८०७, १९१६ । २५, १, ५;  
 १९६५, २०३० । ३९, १३; २३२०  
 द्वा २२, ३४; १७२३  
 द्वापरः ३०, १८; २२४८  
 द्वारः ३०, १०; २१६५  
 धर्मः ३०, ६; २१२५  
 धाता १४, २८; १४४३ । १८, १७;  
 १४६४ । २४, ५, ९, ३१; १७५६,  
 १७७६, १८९२ । २५, ४; २०१३  
 धार्याः २२, १५; १६००  
 धावत् २२, ८; १५२७  
 धूमः २२, २६; १६०५  
 धैर्यम् ३०, ६; २१३२  
 नक्षत्राणि १८, १८; १४७३ । २२, २८-  
 २९; १६३२, १६६० । २५, ९;  
 २०८१ । ३०, २१; २२७७ । ३९, २,  
 २२९२  
 नक्षत्रियः २२, २८; १६३३  
 नड्वलाः ३०, १६; २२२६  
 नद्यः ३०, ८; २१४३  
 नदीपतिः २२, ३४; १९१५  
 नभः २२, ३१; १६८५ । २५, ८; २०६०  
 नभस्यः २२, ३१; १६८६  
 नरंघिषः पूषा २२, ८; १५६५  
 नरिष्ठा ३०, ६; २१२६  
 नर्मः ३०, ६, २०; २१२७, २२६५  
 नाकः वर्षिष्ठः ३०, १२; २१२६  
 नाभिः ३९, २; २२९५  
 नारकम् ३०, ५; २११८  
 नासिके २५, २; १९७४  
 निभूयपः विष्णुः २२, ८; १५६५  
 निमेषः २२, ८; १५४५  
 निर्ऋतिः २२, ३८; १९३९ । २५, २, ५;  
 १९८९, २०२१ । ३०, ९, १४; २१५६,  
 २२११  
 निविष्टः २२, ७; १५१०  
 निवेद्यः २५, २; १९७९  
 निषण्णः २२, ८; १५३२

निष्कृतिः ३०, ९; २१५८ । ३९, १२;  
 २३११  
 नीलङ्गः २४, ३०; १८८८  
 नीहारः २२, २६; १६२१ । २५, ९,  
 २०७५  
 नृत्तम् ३०, ६, २०; २१२३, २२६९  
 षक्क्तिः २४, १३; १७९८  
 पतिः भुवनस्य ९, २०; १४१५  
 पतिः भूतानाम् १४, २८; १४४२  
 पन्थाः २५, १; १९६४  
 पप्रोथः २२, ७; १५०७  
 परमेष्ठी १४, ३१; १४५६  
 परिह्वताः २२, २९; १६६४  
 परिवत्सरः ३०, ६५; २२१६  
 पर्जन्यः २४, ३, ६, २१, ३४; १७४७,  
 १७६२, १८३७, १९११  
 पर्वताः ३०, १६; २२१४  
 पवित्रम् ३०, १०; २१६८  
 पशुपतिः रुद्रः २४, ३; १७४४  
 पश्चादोषः ३०, १७; २२३८  
 पाप्मा ३०, ५, १८; २११९, २२५४  
 पारम् ३९, १६; २२२७  
 पार्याः २५, १; १९६९, १९७२  
 पावका सरस्वती २२, २०; १५६१  
 पितरः २४, ३८; १९३६  
 ,, अग्निष्वात्ताः २४, १८; १८२४  
 ,, बर्हिषदः ,, १८२३  
 ,, सोमवन्तः ,, १८२२  
 पिबति यत् २२, ८; १५४७  
 पिशाचाः ३०, ८; २१५१  
 पुरूरूपः त्वष्टा २२, २०; १५६८  
 पुरुष व्याघ्रः ३०, ८; २१४४  
 पुष्टिः ३०, ११; २१७५  
 पुष्पाणि २२, २८; १६५२  
 पूतः ३९, २; २२९६  
 पूषा १०, ५; १४२१ । १४, ३०; १४५१ ।  
 १८, १६; १४६१ । २२, २०; १५६३ ।  
 २४, ७, १४, ३२; १७६७, १८०४,  
 १९०० । २५, ३, ५, ७; २००१, २०२५,

२०४३ । २२, ५८-५९; २०८७, २०९७  
 पूषा नरन्धिषः २२, २०; १५६५  
 ,, प्रपथ्यः ,, ,, १५६४  
 पृथिवी १८, १८, २२; १४६९, १४८१ ।  
 २२, २७, २९; १६२४, १६५५ । २५,  
 ९; २०८२ । ३०, २१; २२७२ । ३९,  
 १; २२८४  
 प्रकामः ३०, १२; २१९२  
 प्रकामोघ ३०, ९; २१६०  
 प्रजा २५, ७; २०५०  
 प्रजापतिः १४, २८, ३१; १४४०, १४५६ ।  
 २२, ५, ३२; १४८६, १७०५ । २४, १,  
 २९-३१; १७२८, १८७७, १८८१,  
 १८९१ । २९, ६०; २१०९ । ३०,  
 २२; २२८१-८२  
 प्रज्ञानम् ३०, १०; २१६९  
 प्रतिश्रुत्का २४, ३२; १९०४ । ३०, १९,  
 २२५५  
 प्रतीची दिक् २२, २४; १५८४  
 प्रदराः २५, ७; २०५२  
 प्रपथ्यः पूषा २२, २०; १५६४  
 प्रबुद्धः २२, ७; १५१९  
 प्रभा ३०, १२; २१८४  
 प्रमद् ३०, ६; २१३०  
 प्रमुद् ३०, १०; २१६४  
 प्रयुजः ३०, ८; २१४७  
 प्रसवः २२, ३२; १६९५  
 प्राची दिक् २२, २४; १५८०  
 प्राणः १८, २२; १४७९ । २२, २३, ३३;  
 १५७३, १७०७  
 प्राणाः २५, २; १९९०  
 प्राणाः साधिपतिकाः ३९, १; २२८३  
 प्रायणः २२, ७; १५२५  
 प्रायश्चित्तिः ३९, ११; २३१२  
 प्रायासः ३९, ११; २२९८  
 प्रियः ३०, १३; २१९९  
 पुष्णत् २२, २६; १६१७  
 मुष्वा २२, २६; १६१९ । २५, ९; २०७७  
 प्रोथत् २२, ७; १५०६

फलानि	२२, २८; १६५३
बालम्	२२, ८; १५३५। २४, ३८; १९३७। २५, ६; २०४२। ३०, ९, १३; २१६२; २१९७
बाह्यः	२५, २; १९७८
बीभत्सा	३०, १७; २२३५
बृहती	२४, १३; १७९६
बृहती सरस्वती	२२, २०; १५६२
बृहस्पतिः	१०, ५; १४२२ । १४, २९; १४४८ । १८, १६; १४६२ । २२, ६; १४९९। २४, २, २८; १७४१, १८७५
बृहस्पतिः (वाचस्पतिः)	२४, ३४; १९१३। २५, ३-४; १९९३, २०११ । २९, ५८, ६०; २०८८, २१०७
ब्रह्मस्थ विष्टपम्	३०, १२; २१२७
ब्रह्म	२२, २२; १५७२ । ३०, ५; २११३। ३९, १३; २३१७
ब्रह्महत्या	३९, १३; २३१८
ब्रह्मणस्पतिः	१४, २८; १४४१
ब्रह्मा	२२, ३३; १७१७
भगः	१०, ५; १४२७
भद्रा	३०, ११; २१८०
भा	३०, १२; २१८३
शुवनस्य पतिः	९, २०; १४१५। २२, ३२; १७०४
भूतानि विश्वा	३०, १७; २२३९
भूतानां पतिः	१४, २८; १४४२
भूतिः	३०, १७; २२४०
भूमन्	३०, १३; २१९८
भूमिः	२४, १०, २६, ३३; १७७९, १८६२, १९०८
भेषजम्	३९, १२; २३१३
भौवनः आन्त्यः	९, २०; १४१४ । २२, ३२; १७०३
भैहस्	३०, १९-२०; २२६०, २२६८
मतिः	२४, ३९; १९४२
मधुः	२२, ३१; १६८१
मनः	२२, २३, ३३; १५७९, १७१५
मनः प्रजापतिः	२२, २०; १५५५

मनुष्यराजः	२४, ३०; १८८४
मनुष्यलोकः	३०, १२; २१८८
मन्युः	२४, ३३; १९०९ । ३०, १४; २२०३
मरीचिः	२५, ९; २०७४
मरुतः	१८, १७; १४६७ । २२, २८; १६४७ । २४, ४, १४-१५, ४०; १७४८, १८०५, १८११, १९५० । २५, ४, ६; २०१०, २०३२ । २९, ५८- ५९; २०२१, २०९९ । ३०, ५, २११५
मरुतः क्रांन्दिनः	२४, १६; १८१६
„ गृहमेधिनः	„ १८१५
„ सान्तपनाः	„ १८१४
„ स्वतवसः	„ १८१७
मर्यादा	३०, १०; २१७२
मलिम्लुचः	२२, ३०; १६७९
मशकाः	२५, ३; १९९१
मही अदितिः	२२, २०, १५५८
महेन्द्रः	२४, १७; १८२०
माधवः	२२, ३१; १६८२
माया	३०, ७; २१३४
मायुः	२४, ३२; १९०१
मासाः	२२, २८; १६३६ । २४, २५, ३७; १८५९, १९३२
मित्रः	१८, १७; १४६३ । २२, ६; १५०० । २४, ८, २१-२२, २८, ३३; १७७२, १८३९, १८४४, १८७३, १९०६ । २५, ५, २०१९
मित्रावरुणा	२४, २, २३; १७४२, १७७२, १८५० । २५, ६; २०४० । २९, ६०; २१०६
मुग्धं अहः	९, २०; १४११
मुग्धः वैनिंशिनः	९, २०; १४१२
मूर्त्रं करोति यत्	२२, ८; १५४८
मूर्धन्	२२, ३२; १६९९
मूलानि	२२, २८, १६४९
मृत्युः	२४, ३७; १९३४ । ३०, ७, १८; २१४१, २२५० । ३९, १३; २३१६

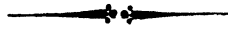
मृद्	२५, १; १९५५
मेघः	२२, २६; १६०७
मेघः	३०, १२; २१९१
मेधा	३०, ६; २१३१
मोदः अपाम्	२२, ६; १४९४
यज्ञः	२२, ३३; १७२१
यन्	२२, ८; १५२६
यमः	२४, ३, ३०; १७४५, १८८३ । २५, ४; २०१६ । ३०, १४-१५; २२१२-१३ । ३९, १३; २३१४
यमी	२५, ५; २०२९
यवाः	१४, ३१; १४५५
यातुधानाः	३०, ८; २१५२
यादस् (दः)	३०, २०; २२६७
योगः	३०, १४; २२०५
रक्षांसि	२४, ४०; १९४८ । २५, ९; २०७९
रश्मयः	२२, २८; १६४३
रात्रिः	२४, २५, ३६; १८५७, १९२६ । ३०, २१; २२८०
रुद्रः	२४, ३९; १९४४ । २५, ३; २००३
रुद्रः पशुपतिः	२४, ३; १७४४
रुद्राः	११, ६०, ६५; १४३०, १४३७ । १४, ३०; १४५३ । २२, २८; १६४५। २४, ३, ६, २७; १७४६, १७६०, १८६८ । २५, ६; २०३४
रूपम्	३०, ७; २१३५
रेष्मन् (ध्मा)	२५, २; १९९०
लोकाः स्वर्गः	३०, १३; २२०१
लोकाः सवै	३०, १२; २१८९
घत्सरः	३०, १५; २२१९
वनम्	३०, १९; २२६३
वनस्पतयः	२२, २८-२९; १६५१, १६६३। २४, २३, ३५; १८४७, १९१८
वपुस् (पुः)	३०, १४; २२०९
वहणः	११, ६०; १४३४ । १४, ३०; १४५०। १८, १७; १४६४। २२, ५, ९; १४९१, १५०१। २४, २, १५, २१-२२,

२८, ३०, ३८, १७३९, १८१०, १८४०,  
१८४५, १८७४, १८८२, १९४० ।  
२५, ४-५; २०१५, २०२८ । २९,  
५८-५९; २०९४, २१०२ । ३९, २;  
२२९४  
वर्णम् ३०, ९, १७; २१६१, २२३६  
वर्षत् ( न् ) २२, २६; १६११  
वर्षाः २४, ११, २०; १७८६, १८३२  
वर्षिष्ठः नाकः ३०, १२-१३; २१८६,  
२२०२  
वल्गत् २२, ७; १५१३  
वल्मीकाः २५, ८; २०६५  
वसन्तः २४, ११, २०; १७८४, १८३०  
वसुः ९, २०; १४०२ । २२, ३०; १६६८  
वसवः ११, ६०, ६५; १४२९, १४३६ ।  
१४, ३०; १४५३ । २२, २८; १६४४।  
२४, ६, २७, ३८; १७५९, १८६७,  
१९३८  
वाक् २२, २३, ३३; १५७८, १७१४ ।  
२४, ५, २९, ३१; १७५४, १८७८,  
१८९६  
वाजम् २२, ३२; १६९४। २५, १; १९६०  
वाजी २५, ७; २०४९  
वाजिनः २४, ७, ३९; १७६५, १९४५  
वातः २२, २६; १६०४ । २४, ३५;  
१९२० । २५, २; १९७३  
वायुः १४, ३०; १४५२ । २२, ५-६;  
१४८८, १४९६ । २४, १, ९, २२,  
३०, ३४; १७३५, १७७५, १८४२,  
१८८१, १९१२ । २५, ४, ६; २००५,  
२०३६ । ३०, २१; २२७३  
वारः ( र ) २२, २५, १५९३  
विचृतः २२, ७; १५२१  
विजृम्भमाणः ,, १५२०  
विष्णुत् २४, १०। १७८२ । २५, १,  
१९६६  
विद्योतमानः २२, २६; १६०८  
विधूतः २२, ८; १५३९  
विधून्वानः २२, ८; १५३८

विद्युतिः २५, ९; २०७१  
विनंशी आन्त्यायनः ९, २०; १४१३  
विभूः २२, ३०; १६६२  
वियासः ३९, ११; २३००  
विराट् २४, १३; १७२५  
विवर्तमानः २२, ८; १५३६  
विवस्वान् २२, ३०; १६७०  
वि,वक्तिः ३०१३; २१९५  
विद्युतः २२, ८; १५३७  
विश्वकर्मा २४, १७; १८२१  
विश्वे देवाः ११, ६०, १५; १४३२,  
१४३९। १८, १७; १४६८। २२, ५;  
१४८२ । २२, २८; १६४८। २४,  
५, १४, २७, ४०; १७५३, १८०६,  
१८७०, १९४७, १९५२ । २५, ५-६;  
२०३१, २०३३ । २९, ५८-६०;  
२०८९, २०९८, २१०५ । ३९, १३;  
२३१९  
विश्वानि भूतानि ३०, १७; २२३९  
विषमाः ३०, १६; २२३०  
विष्णुः ११, ६०; १४३५ । २२, ६;  
१४९७ । २४, १, ३६; १७३७,  
१९२८ । २५, ५; २०२४ । २२, २०;  
१५६९  
विष्णुः निभूयपः २२, २०; १५७०  
,, शिपिविष्टः ,, १५७१  
विहृतः २५, ७; २०४६  
वीक्षितः २२, ८; १५४४  
वीर्यम् ३०, ९; २१७६  
वृषणः २५, १, ७; १९६२, २०४८  
वैनंशिनः मुग्धः ९, २०; १४१२  
वैरहत्यः ३०, १३; २१९४  
वैशन्ताः ३०, १६; २२२५  
वैश्वानरः २५, ८; २०७०  
वैश्वानरः अग्निः २९, ६०; २१११  
वैश्वानराः विश्वे देवाः ११, ६०, ६५;  
१४३२, १४३९  
व्यस्तुविन् २२, ३२; १७००  
व्यानः २२, २३, ३३; १५७५, १७०९

व्युद्धिः ३०, १७; २२४३  
व्यृष्टिः २२, ३४; १७२६  
शक्वरयः १८, २२; १४८५  
शतम् २२, ३४; १७२४  
शब्दः ३०, १९; २२५२  
शयानः २२, ७; १५१५  
शरद् २४, ११, २०; १७८७, १८३३  
शरव्या २४, ४०; १९५१ । ३०, ७;  
२१३७  
शाखाः २२, २८; १६५०  
शादः २५, १; १९५३  
शार्दूलः २४, ३०; १८८५  
शिपिविष्टः विष्णुः २२, २०; १५७१  
शिशिरः २४, ११, २०; १७८९, १८३५  
शीकायत् २२, २६; १६१८  
शीघ्रं वर्षत् ,, ,, १६१४  
शीनः २५, ९; २०७६  
शीलम् ३०, १९; २२१०  
शुक ( च ) ३९, ११; २३०२  
शुकः २२, ३१; १६८३  
शुक्रः २५, १; १९६७  
शुचिः २२, ३१; १६८४  
शुनासीरः २३, १९; १८२७  
शुभम् ३०, ७; २१३६  
शुश्रूषमाणः २२, ८; १५४०  
शुकारः ,, १५३०  
शुकृतः ,, १५३१  
शुषः २२, ३०; १६७५  
शृण्वत् २२, ८; १५४१  
शोकः ३०, १४; २२०६। ३९, ११; २३०५  
शोचत् ,, २३०३  
शोचमानः ,, २३०४  
श्रेयस् ३०, ११; २१८१  
श्रोत्रम् २२, २३, ३३; १५७७, १७१३ ।  
२४, २९; १८८० । २५, २; १९८३  
श्लोकः १०, ५; १४२५  
संयासः ३९, ११; २२९९  
संवत्सरः १४, २९; १४४६ । २२, २८;  
१६३२। २४, २५; १८६०। ३०, १५;  
२२१५, २२२०

संशरः	३०, १७; २२४४	सर्पाः	२४, ३६; १९२४ । २५, ५, ७;	२००७ । २९, ५८; २०८६		
संसर्पः	२२, ३०; १६७६	२०२३, २०४५	सोमपूषणौ	२४, १; १७३२		
संहानः	२२, ७; १५२२	सर्पदेवजनाः	३०, ८; २१४८	स्तनयत्	२२, २६; १६०९	
सञ्चराः उक्ताः [पूर्व मंत्रोक्ताः]	२४, १५, १७, १९; १८०८, १८१८, १८२६	सर्वे लोकाः	३०, १२; २१८९	स्तनयित्तुः	२५, १; १९८०	
संज्ञानम्	३०, ९; २१५९	सविता	१०, ५; १४१९ । १८, १६;	स्तेगाः	२५, १; १९५६	
सत्	२५, २; १९७६	१४५९ । २२, ६; १४९५ । २४, २;	स्यन्दमानाः	२२, २५; १५९७		
सन्धितः	२२, ७; १५१२	१४, ३५; १७४०, १८०२, १९१९ ।	स्यन्त्यः	२२, २५; १५९६ । २५, ८;		
सन्धयः अहोरात्रयोः	२४, २५; १८५८	२९, ५८, ६०; २०९३, २१०८	२०६७	स्वनाः	३०, १६; २२३१	
सन्धिः	३०, ९; २१५३	सहस् (हाः)	२२, ३१; १६८९	स्वपत्	२२, ७; १५१६	
समाः	१८, १८; १४७२	सहस्यः	,, १६९०	स्वप्नः	३०, १०; २१६६	
समानः	२२, ३३; १७११	साध्याः	२४, २७; १८७१ । ३०, १५;	स्वर्	२२, ३२-३३; १६९८, १७१९	
समुद्रः	२२, २५; १६०२ । २४, २१, ३०, १८३६, १८८९ । २५, ८; २०६९	२२२२	सानूनि	३०, १६; २२३३	स्वर्गः	२२, ३४; १७३७
सरांसि	३०, १६; २२२३	सामृद्धीका अदितिः	२२, २०; १५५९	स्वर्गः लोकः	३०, १३; २२०१	
सरस्वान्	२४, ३३; १९१०	सूद्याः	२२, २५; १५९९	स्वापिः	९, २०; १४०६	
सरस्वती	१०, ५; १४२० । १८, १६; १४६० । २२, २०; १५६० । २४, १, ४, १४, ३३; १७३०, १७४९, १८०३, १९०७ । २५, १, ५; १९५७, २०१८ । २९, ५८-५९; २०८५, २१०१	सूर्यः	१८, २२; १४७८ । २२, २८-२९; १६४२, १६५८ । २४, १९, ३३; १८२९, १९०५ । ३०, २१; २२७६ । ३९, १; २२८९	ह्रसः	३०, ६, २०; २१२८, २२६६	
सरस्वती पावका	२२, २०; १५६१	सूर्य-यमौ	२४, १; १७३३	हिङ्गारः	२२, ७; १५०२	
,, वृद्धी	,, १५६२	सोमः	१०, ५; १४१८ । १४, ३१; १४५४ । १८, १६; १४५८ । २२, ६, २७; १४९३, १६२३ । २४, २, ९, १४, २२, २४, ३२; १७३८, १७७४, १८०१, १८४१, १८५१, १८९९ । २५, ४;	हिङ्कृतः	,, १५०३	
सरिरः	२२, २५; १६०३			हिमवान्	२४, ३०; १८९०	
सरीसृपाः	२२, २९; १६६६			हेतिः	३०, ७; २१३८	
				हेमन्तः	२४, ११, २०; १७८८, १८३४	
				हदाः	२५, ८; २०६८	
				द्वादुनीः	२२, २६; १६२० । २५, ९; २०७८	
				हीः	२४, ३५; १९२२	



## विश्वे-देवादेवता-मन्त्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अंशाय स्वाहा	१४२६	अग्नीषोमयोऽरुज्जितिमनूज्जेषं	१२७४	अत्यं हविः राचते सञ्च धातु च	२९६
अंशुरंशुष्टे देव सोम	१२८४	अग्नीषोमयोर्भासदौ	२०३७	अत्रैतानिन्द्र वृत्रहन्	९३१
अंशो भगो वरणो मित्रो	९३६	अग्नीषोमयोः षष्ठी	२०२२	अथर्वभ्योऽवतोकां	२२१४
अंशसस्पतये स्वाहा	१६२३	अग्नीषोमाभ्यां चाषान्	१८४८	अथैतानष्टौ विरूपानालभते	२२८१
अक्षराजाय कितवम्	२२४५	अग्नीषोमा वृषणा वाजसातये	७१३	अदत्रथा दयते वार्याणि	३४२
अम इन्द्र वरुण मित्र देवाः ३२१, १२६२		अग्ने अच्छा वदेह नः	८१६	अदितिः शीर्ष्णा	१९८७
अमये कूटरून्	१८४६	अग्ने तव त्यदुकथ्यं	५०	अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं महद्	७१०
अमये गायत्राय त्रिवृते	२१०३	अग्नेऽदब्धायोऽर्शातिम पाहि	१२७५	अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षम्	२८
अमये गृहपतये पारुष्णान्	१८५५	अग्नेः पक्षतिः	२००४	अदितिर्द्यजनिष्ट दक्ष या	१२१६
अमये गृहपतये स्वाहा	१३२८	अग्नेः पूर्वं भ्रातरौ अर्थमेतं	१२०८	अदितिश्च मे	१४८२
अमये त्वा मह्यं वरुणो ददातु	१३०६	अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा	१२३३	अदितिः श्मश्रु वपतु	९४९
अमयेऽनीकवते प्रथमजान्	१८१३	अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषाम्	८०५	अदित्यै पञ्चमी	२००८
अमयेऽनीकवते रोहितान्	२०९५	अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ	१२८३	अदित्यै पाजस्यम्	२०५५
अमये पीवानम्	२२७१	अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आधिपत्यं	१३४४	अदित्यै भसत्	२०५७
अमये वैश्वानराय द्वादशकपालः	२१११	अग्ने विश्वेभिरग्निभिः	१४०२	अदित्यै मह्यै स्वाहा	१५५८
अमये स्वाहा १४१७, १४९२, १६२२, २२८५		अग्ने सुतस्य पीतये	३५०	अदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुः	२११०
अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु	९८२	अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः	८७३	अदित्यै सुमृडीकायै स्वाहा	१५५९
अग्निमतिरुभ्याम्	२०००	अग्रते विष्णवे वयम्	५११	अदित्यै रवाहा	१५५७
अग्निमद्य होतारमवृणीत	१३८६	अङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे	१४८५	अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्ययतु	८९३
अग्निमुषसमश्विना दधिकां	१६८	अचिकित्वाश्रिकितुषश्चिदत्र	१०४	अद्भ्यः स्वाहा १५९२, १६६१, २२९३	
अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्थमा	६९२	अच्छा मही बृहती शंतमा गीः	२८४	अद्भ्यो मत्स्यान्	१८३८
अग्निरीशे वसव्यस्व	२३६	अच्छायं वो मरुतः श्लोक एतु	४७२	अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि	५८८
अग्निरुक्थे पुरोहितो	५१२	अच्छा विवक्त्रि म रोदसी सुमेके	२२६	अध गमन्ता नहुषो हवं सूरैः	९२
अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्	१३१९	अजिराधिराजौ श्येनौ	९६४	अध त्वमिन्द्र विद्धयस्मान्	६४८
अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते	३०८	अजिरासस्तदप ईयमानाः	३२९	अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु	७२
अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा	१२७९	अज्रे चिदस्मै कृणुया न्यश्चनं	५२९	अध यद् राजाना गविष्टौ	६४९
अग्निर्देवता वातो देवता	८५९	अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्राः	२८३	अध स्मा न उदवता सजोषसो	१५९
अग्निर्मां पानु वसुभिः पुरस्तात्	२७२	अतिकृष्टाय मागधम्	२१२२	अधा गाव उपमार्ति कनायाः	६४७
अग्निश्च पृथिवी च सन्नते	१३८४	अति धावतातिसरा	९२६	अधा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ	६५०
अग्निश्च म इन्द्रश्च मे	१४५७	अति नो विष्पिता पुरु	५६१	अधायि धीतिरससृप्रमंशाः	५७०
अग्निश्च मे	१४७५	अति वा यो मरुतो मन्यते नो	४१०	अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावा	६४६
अग्नीपर्जन्यावधत्तं धियं मे	४२४	अतीव यो मरुतो मन्यते नो	१०२६	अधि न इन्द्रैषां	५६५
		अतो न आ नूनतिथीन्	३४७		



अधिपतये स्वाहा १४१६, १६७४, १७०४	अप न्ययुः पौरुषेयं वधं १००३	आभि वो अर्चै पोष्यावतो नून २४७
अधिपत्यसि बृहती दिग् ८६१, १३५८	अपः ह्यृक्कण्ठेन १९८५	आभि वो देवीं धियं दधिध्वम् ४३४
अधीन्वन्न सप्तति च ७५०	अपयं गोपामनिपद्यमानम् १२९	अभीक आसां पदवीरबोधि २१७
अधोरामः सावित्रो २०९३	अपस्त ओषधीमतीर्ऋच्छन्तु ९८७	अभृत्यै स्वपनम् २२४१
अधोरामौ सावित्रौ २०९६	अपाघमप किल्बिषमप १३९१	अप्राय स्वाहा १६०६
अध्वर्यवश्चक्रवांसो मधूनि २७९	अपाङ् प्राङ्गिति स्वधया गृभीतो १३६	अमी ये देवा स्थन ४२, १३९८
अध्वानं बाहुभ्याम् १९९८	अपां चतुर्थी २०२०	अमी ये पञ्चोक्षणो ४७
अनच्छये तुरगातु जीवम् १२८	अपाञ्चौ त उभौ बाहू ९६५	अमी ये सप्त रश्मयः ४६
अनङ्वान् वयः पङ्क्तिरुच्छन्दो १३३९	अप दिन्द्रो अपादमिः ५५८	अमी ये युधमायन्ति ११८६
अनङ्वाहः पङ्क्त्यै १७९८	अपानाय स्वाहा १५७४	अमूः पारे पृदाक्वः ८८३
अनन्ताय मूकः २२५८	अपानेन नासिके १९७४	अयं यो होता किरु स यमस्य ६१०
अनामित्रं नो अधराद् ९४१	अपानो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा १७०८	अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता १२७
अनमीवा उषस आ चरन्तु नः ५८५	अपामीवां सविता साविषन्त्यम् ७५८	अयं सोमः सुदानवः १२००
अनु तदुर्वी रोदसी जिहाताम् ४४७	अपामीवामप विश्वामनाहुतिम् ६७२	अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधाः ६४२
अनु त्वा मही पाजसी अचक्रे ७७	अपामुद्रो १९३१	अयं हि नेता वरुण ऋतस्य ४२१
अनुमत्या अष्टाकपलः २११२	अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः १३३६	अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य १३६०
अनु वीरैरनु पुष्यास्म १२५५	अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे ६०१	अयं नाभा वदति वन्गु वो गृहे ६५७
अनूवाशेन बाह्यं १९७८	अपां मोदाय स्वाहा १४९४	अयमुत्तरात् संयद्ब्रह्मस्तस्य १३६२
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिः ३१५	अपिजाय स्वाहा १४०७, १६९६	अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य १३६३
अन्तकाय गोघातम् २२५१	अपि नह्यामि ते बाहू ९६६	अयं पञ्चद्विश्वव्यचास्तस्य १३६१
अन्तकाय श्वनिनम् २१४२	अपि पन्थामगन्महि ४०८	अयं पुरो हरिकेशः सूर्यारिमः १३५९
अन्तकाय स्वाहा २३१५	अपेत वीत वि च सर्पतातो १२६९, १३३३	अयस्मये हुपदे बेधिष इह ११८३
अन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे १४७०	अपो यूष्णा २०७३	अयेभ्यः कितवम् २१४२
अन्तरिक्षं पुरीतता २०५९	अपो वस्तिना २०४७	अरण्याय सृमरो १९४३
अन्तरिक्षाय पाङ्कत्रान् १८६३	अबुध्रमु ल्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ५८०	अराध्या एदिधिषुः पतिम् २१५७
अन्तरिक्षाय वःशानर्तिनम् २२७४	अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नो ९३९	अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते ६७३
अन्तरिक्षाय स्वाहा १६२६, १६५६, २२८६	अभयं नः करत्यन्तरिक्षम् ९६८	अरिष्ट्या अश्वसादः २२००
अन्ताय बहुवादिनम् २२५७	अभयं मित्रादभयममित्राद् ९६९	अरुणाञ्छरदे १७८७
अन्त्याय भौवनाय स्वाहा १४१४, १७०२	अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्च ३८३	अरुणो मा सकृद् वृकः ५५
अन्त्याय स्वाहा १७०१	अभि त्वा वर्चसासिचन् ११४७	अरुषस्य दुहितरा विरूपे ३६५
अन्धाहीन्स्थूलगुदया २०४४	आभि त्वेन्द्र वरिमतः ९५९	अर्कश्च मे १४७७
अन्यत एन्यो मैत्र्यः १७७२	अभि न इळा यूधस्य माता २५८	अर्चन्त एके महि साम ५४८
अन्यतोरण्याय दावपम् २२६४	अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं ४३०	अर्णवाय स्वाहा १६०१
अन्यवपोऽर्धमासानाम् १९२९	अभि प्रिया महतो या वो ५१७	अर्थमिद् वा उ अर्थिनः ३९
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय २०४	अभि प्रेहि माप वेनः ११४३	अर्थमाय बधिरम् २१६७
अप आस्येन १९६१	अभिभुवे स्वाहा १६७३	अर्थमासेभ्यः स्वाहा १६३५
अप त्यं वृजिनं रिपुम् ४०५	अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिशः १३२९	अर्थेभ्यो हस्तिपम् २१७३
	अभिभूर्यज्ञो अभिभूरग्निः ९५७	अर्थमणं बृहस्पतिम् ८२०
	अभि यं देवीं निर्ऋतिश्चिदीशे ४७९	अर्थमा णो अदितिर्यज्ञियासो १८७

अर्यम्णे स्वाहा	१४२८	अष्टा महो दिव आदो हरी इह	७४	आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्याः	४८५
अर्यम्णो नवमी	२०१२	अष्टौ पुत्रासो अदितेः	१२१९	आग्नेयः कृष्णग्रीवः	२०८४
अर्वाच्यै दिशे स्वाहा	१५८१, १५८३, १५८५, १५८७, १५८९, १५९१, १६३१	असपत्नं पुरस्तात् पश्चाच्चो	९७०, ११६८	आग्नेयः कृष्णोऽजः	२१००
अर्वाच्चो अद्या भवता यजत्रा	१५६	असवे स्वाहा	१६६७	आ प्रावभिरदन्त्येभिरक्तुभिः	३३७
अलज आन्तरीक्षः	१९१४	असावि ते जुजुषाणाय सोमः	२८१	आङ्गिरसानामाद्यैः	११२१
अवक्रत्यै वधायोपमन्धितारं	२१९०	असौ यः पन्था आदित्यो	५३	आ चष्ट आसां पाथो नदीनां	४३५
अवक्रां दन्तमूलैः	१९५४	अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो	५२१	आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः	१३४९
अवक्रन्दाय स्वाहा	१५०५	अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं	९७	आजुह्वानः सुप्रतीकः पुररताद्	८६३
अवक्रन्देन तालु	१९५९	अस्ना रक्षाःषि	२०७९	आ त एतु मनः पुनः	६२४
अवन्तु नः पितरः सुप्रवाचना	५९	अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भः	३११	आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे	१९१२
अवन्तु मामुषसो जायमाना	४१२	अस्माकं मित्रावरुणावतं रथम्	१५८	आतिष्ठन्तं पारि विश्वे अभूषन्	११४४
अवः परेण पर एनावरेण	११५	अस्मिन्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्	१२२७	आ तू विश्व हरिमीं द्रोहपस्थे	७७२
अवः परेण पितरं यो अस्य	११६	अस्मिन् वसु वसवो धारयन्तु	८७७	आ ते नयतु सविता नयतु	११०४
अवरस्पराय शङ्खधमम्	२२६२	अस्मे धेहि छुमतीं वाचमासन्	१२२४	आ ते योनिं गर्भ एतु	१०५९
अवलिता रौद्राः	१७४६	अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो	१२०४	आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे	१३०३
अववर्षते स्वाहा	१६१२	अस्मे प्रामाय प्रदिशश्चतस्रः	९४०	आत्मा यज्ञेन कल्पताः स्वहा	१७१६
अवसृष्टा परा पत शरब्धे	१११२	अस्य देवस्य मीळुषो वयाः	४९२	आ त्वा कप्वा अहूषत	५
अवस्कूर्जते स्वाहा	१६१०	अस्य देवाः प्रदिशि ज्योतिः	८७८	आ त्वा गन् राष्ट्रं सह वर्चसा	८९६
अवाच्यै दिशे स्वाहा	१५९०	अस्येदेषा सुमतिः पप्रथाना	५७३	आ त्वागमं शन्तातिभिः	८१२
अवाराय केवर्त	२२२८	अस्य मदे स्वयं दा क्रताय	७०	आथर्वगानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा	१००७
अवार्या इक्षवो	१९७०	अस्य वामस्य पलितस्य	९९	आ दधामि ते पदं	१०९८
अवार्याणि पक्षमाणि	१९७१	अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः	८९	आदित्यौ इमश्रुभिः	१९६३
अविज्ञाता अदित्यै	१७५५, १७७६	अहं सो अस्मि यः पुरा	४४	अदित्यानां तृतीया	२०३५
अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद्	८३५	अहं होता न्यसीदं यजीयान्	६०९	आदित्या रुद्रा वसवः गुनीथाः	२२२
अविष्टो अस्मान् विश्वासु विश्वु	४३७	अहं शुभ्रमि मनसा मनांसि	९०७	आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्त	४६२
अर्वाच्चो अग्निर्हव्याजमोभिः	४३९	अहर्पतये स्वहा	१४१०	आदित्यासो अति स्त्रियो	७९६
अर्वावृधद् वो अमृता अमन्दीद्	१२०५	अहोरात्रयोः सन्धिभ्यो	१८५८	आदि यास्वाऽऽच्छन्दन्तु जागतेन	१४३८
अशानि मस्तिष्केण	१९८१	अहोरात्रेभ्यः स्वाहा	१६३४	आदित्यास्त्वा धृपयन्तु जागतेन	१४३१
अशीतिभिस्तिष्ठभिः सामगोभिः	१०९४	अहं परावतानालभते	१८५६	आदित्येभ्यः स्वाहा	१६४६
अश्वमेधश्च मे	१४८०	अहे सुग्धाय स्वाहा	१४११	आदित्येभ्यो न्यङ्कन्	१८६९
अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते	१७२८	अहे शुक्रं पित्राक्षम्	२२७९	आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिः	८२५
अश्विना त्वाप्रे मित्रावरुणोभा	८९८	आर्की सूर्यस्य रोचनाद्	१२	आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान्	१२२३
अश्विनावःसाभ्याः	२००२	आकृतिमग्निं प्रयुजः स्वाहा	१३३२	आ दैव्यानि पार्थिव नि जन्म	२५३
अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै	१३३०	आकृत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा	१२८१	आ धर्णसिर्वृहदिवो रराणो	२८९
अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै	१३९३	आ क्रन्दय धनपते	११०३	आ धूर्त्वस्मै दधाताश्वान्	४२९
अश्विभ्यां मयूरान्	१८४९	आक्रमणः स्थाभ्याम्	१९९५, २०४१	आ धेनवः पयसा तूर्पर्यथा	२७७
अष्टर्षेभ्यः स्वाहा	१०११	आक्रयाया अयोगूं	२१२०	आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः	२०७
अष्टादशर्षेभ्यः स्वाहा	१०२१	आक्षित् पूर्वास्वपरा अनुवत्	१९६	आध्याक्षायानुक्षत्तारम्	२१८२
		आखुः कशो मान्यालस्ते	१९३६	आ न इळाभिर्विदधे सुशस्ति	१४०

आनन्दाय तलवम्	२२७०	आर्तवेभ्यः स्वाहा	१६३८	इन्द्र उक्थेन शवसा परुर्दधे	७५५
आनन्दाय त्रीषखं	२१२९	आर्त्यै जनवादिनं	२२४२	इन्द्रं कुत्सो वृत्रहर्णं शचीपतिं	६२
आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वान्	२८६	आर्त्यै परिवित्तं	२१५५	इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणाः	१६७
आ नो अद्य समनसो	५१६	आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन्	१२२६	इन्द्र ह्य मघवन् त्वावदिद् भुजे	७५१
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादा	२८७	आ वात वाहि भेषजं	८११	इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृच्छन्तु	९८९
आ नो देवः सविता त्रायमाणो	३८५	आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या	४६६	इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे दुहितासि	९१४
आ नो देवः सविता साविषद् वयः ७५३		आ वां येष्ठाऽश्विना हुवध्वै	२४२	इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा	७०८
आ नो देवानामुप वेतु शंसो	५६८	आविर्मर्या आवितो अग्निः	१३२६	इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि	९१५
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशान्तु	१२२५	आ वेधसं नीलवृष्टं बृहन्तं	२८८	इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमृतये	५७
आ नो बर्हिः सधमदे बृहद्दिवि	५८९	आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये	७७१	इन्द्रवायु बृहरपतिं	६, ८१९
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो	१९	आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं	६१२	इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयाय	१३०९
आ नो महीमरमतिं सजोषाः	२८२	आ वो रुवण्युमौशियो हुवध्वै	८६	इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता	२२४
आ नो राधांसि सवितः स्तवध्वै	४८०	आ वो वाहिष्ठो बहतु स्तवध्वै	४७३	इन्द्रस्त्वा धूपयतु	१४३३
आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्ताम्	३८१	आशाभ्यः स्वाहा	१६२९	इन्द्रस्य कोडो	२०५४
आ नो विश्व आस्त्रा गमन्तु देवाः १४१		आशिक्षायै प्रश्निनम्	२१७०	इन्द्रस्य गौरमृगः	१९०२
आ नो विश्वे सजोषसो	५५३	आशुक्लिष्टद्धान्तः पञ्चदशो व्योमा १३४३		इन्द्रस्य तृतीया	२००६
आप इद् वा उ भेषजाः	८१४	आश्विनावधोरामौ बाहोः	१७३१	इन्द्रस्य नु सुकृतं दैव्यं सहः	७५६
आपये स्वाहा	१४०५	आसीनाय स्वाहा	१५१४	इन्द्रस्य वज्रोऽसि मित्रावरुणयोः	१३२७
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि	२३३	आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्वै	२७८	इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य	८४३
आ पञ्चां गांसि पृथिवीं वनस्पतीन्	५६३	आ सूर्यो अरुहच्छुकमर्णो	३१८	इन्द्रस्यैकादशी	२०१४, २०२७
आपश्चिद्रस्मै पिन्वन्त पृथ्वीः	४२८	आ सूर्यो यातु सप्तश्वः	३१७	इन्द्राग्निभ्यां कुम्भान्	१८४३
आ पुत्रासो न मातरं विश्वत्राः	५०३	आस्क्रन्दाय सभास्थाणुं	२२४९	इन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि	१४८७
आपो मौषधीमर्तरेतस्या दिशः	९७७	इडया जुह्वतो वयं देवान्	९१२	इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिति स्वः	३२२
आ प्र द्रव परमस्याः परावतः	८९९	इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं	९१०	इन्द्राग्नी वृत्रहृत्पेषु सस्पती	६९३
आ प्र यात मरुतो विष्णो	५१९	इडे रन्ते हृष्ये काम्ये चन्द्रे	१२४५	इन्द्राग्न्योः पक्षतिः	२०१७
आ द्रक्षन् द्रक्षणो द्रक्षवर्चसी	१५७२	इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै	२५६	इन्द्राण्यै षष्ठी	२००९
आ मा पुष्टे च पोषे च	९११	इति स्तुतासो असथा रिशादसो	५५०	इन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां	२०३९
आ यत् साकं यशसो वावशानाः	४६९	इदं यत् परमेष्ठिनं मनः	१०७२	इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय	२१०४
आयनाय स्वाहा	१५२४	इदं वपुर्निवचनं जनासः	३३२	इन्द्राय सूकरः	१९४९
आ यज्ञः पत्नीर्गमन्त्यच्छा	४४३	इदं विष्कन्धं सहते	१०५०	इन्द्राय स्वपस्याय वेहद्	१७३६
अ.यमगन्तसविता क्षुरेण	९४८	इदं त एकं पर ऊ त एकं	६१४	इन्द्राय स्वाहा १४२३, १४९८, १६२४	
आ यातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः ९०२		इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया	१०९२	इन्द्रा याहि मे हवमिदं	९२४
आयासाय स्वाहा	२२९७	इहमिस्था रौषं गूर्तवचा	६२७	इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो	६६०
आयुर्मै पाहि प्राणं मे पाहि	१३४०	इदमिन्द्र शृणुहि सोमप	१०९३	इन्द्रेन्द्र मनुष्याः परेहि	९००
आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	१७०६	इदावत्सरायातीत्वरीम्	२२१७	इन्द्रे भुजं शशमानास आशत	७२७
आ युवानः कवयो यज्ञियासो	३७३	इदा हि व उपस्तुतिं	५२२	इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा	७५४
आयुषाऽऽयुःकृता जीवायुष्मान्	११६२	इदत्सरायातिष्कद्वरीं	२२१८	इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः	४१४
आरुण्योऽजो नकुलः शक्रा	१९००	इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन	९१७	इन्द्रो मा मरुत्वानेतस्या दिशः	९७९
आरेऽसावस्मदस्तु हेतिः	१०५६	इन्द्रं स्वपसा बहेन	१९९२	इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गयम्	७०९

इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः पत्यमानः	१८४	उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीः	३२७	उदीरय कवितमं कवीनाम्	२६२
इन्द्रो वीर्येणोदक्रामत्	१०००	उत ल्यजो मारुतं शर्ध आ गमद्	३२४	उदु त्यच्छुर्महि मित्रयोरौ	३९३
इमं रथमाधि ये सप्त तस्थुः	१०१	उत त्या मे यशसा श्वेतनायै	८५	उदु ष्य वः सविता सुप्रणीतयो	५२३
इमं वीरमनु हर्षध्वम्	९५८	उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता	६४१	उद्वृहीताय स्वाहा	१६१६
इमं वृषणं कृणुतैकमिन्नाम्	१३९६	उत त्या मे हवमा जग्म्यातं	३८७	उद्वृहते स्वाहा	१६१५
इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीमि	१७९	उत ल्ये देवी सुभगे मिथृहशा	१६२	उद्वर्षन्तां मघवन् वाजिनानि	१११०
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व	४९९	उत ल्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः	३२५	उद्वृध्यध्वं समनसः सखायः	७६३
इमं नो अग्ने अध्वरं होतः	४२०	उत ल्ये नो मरुतो मन्दसाना	४७०	उद्वृध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि	८६२
इममग्न आयुषे वर्चसे नय	११०१	उत त्वं सूनो सहसो नो अया	३८६	उयासाय स्वाहा	२३०१
इममजस्वामुभये अकृण्वत	७२२	उत देवा अवहितं	८०९	उद्वृशताय स्व'हा	१५२९
इमं महे विदथ्याय शूषं	१७०	उत यावागृथिर्वी क्षत्रमुक्	३८०	उद्वृशताय स्वाहा	१५२८
इमां वा मित्रावरुणा सुवृक्तिं	४६५	उत न ई त्वष्टा गन्त्वच्छा	१४५	उन्नत ऋषभो वामनस्त	१७६३
इमां च नः पृथिवीं विश्वधायाः	२१२	उत न ई मलयोऽश्वयोगाः	१४६	उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठः	१७६४
इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि	१०७३	उत न ई मरुतो वृद्धसेनाः	१४७	उप त्वा नमसा वयं होतः	९२१
इमा नु कं भुवना सीषधाम	८२३	उत न एषु नृषु श्रवो धुः	४४१	उपध्वस्ताः सावित्राः	१८०२
इमामग्ने शरणि मीमृषो नो	९१८	उत नो देवावश्विना शुभस्पती	७४१	उप नः सूनवो गिरः	४१७
इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी	१०७१	उत नो देव्यदितिः	५०९	उप नो देवा अवसा गमन्तु	६५
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः	१३३	उत नो धियो गोअघ्राः	३३	उपयामगृहीतोऽसि वृद्स्पति०	१३०७
इयं सा भूया उषसामिव क्षा	५७२	उत नो नक्तमपां वृषण्वसू	७४०	उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा	१३००
इयं सा वो अस्मे दीधितिर्वजत्राः	१५०	उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना	७४२	उपयामगृहीतोऽस्याप्रयणो	१२९९
इयं न उसा प्रथमा सुदेव्यं	५८३	उत नो विष्णुरुत वातो अश्विधो	३२३	उपयाममघेरणोष्ठेन	१९७५
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थम्	६४५	उत नोऽहिर्बुध्न्यो मयस्कः	१४४	उपलान् प्लीहा	२०६४
इरायै कानाशं	२१७८	उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोतु	३९१	उप व एषे नमसा जिगीषा	१४३
इर्यताया अकितवं	२१५०	उत माता वृहद् दिवा शृणोतु नः	६८५	उप व एषे बन्धेभिः शूषैः	२४६
इषाय स्वाहा	१६८७	उत वः शंसमुशिजामिव इमसि	१६३	उपविष्टाय स्वाहा	१५११
इष्कृताहावमवतं	७६८	उत स्य देवः सविता भगो नः	३९०	उपशिक्षाया अभिप्रत्रिनं	२१७१
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेद	१०५	उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिः	१६१	उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं	२६६
इहेदसाथ न परो गमाथेयो	९०५	उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिः	१६०	उपस्थावराभ्यो दाशं	२२२४
इहैव स्त माप याताध्यस्मत्	९५३	उत स्य न उशिजामुर्विया कविः	७३२	उपस्थिताय स्वाहा	१५२३
इहैव हवमा यात म इह	८८०	उतो हि वां पूर्व्या आविविद्रे	१७३	उप ह्ये सुदुषां धेनुमेतां	१२४
ईक्षमाणाय स्वाहा	१५४२	उत्कूलनिकूलभ्यस्त्रिष्ठिनं	२२०८	उप ह्ये सुदवं मारुतं गणं	६००
ईक्षिताय स्वाहा	१५४३	उत्तमेभ्यः स्वाहा	११३२	उपावीरस्युप देवान् दैवीः	१२८६
ईळते त्वामवस्यवः	८	उत्तरेभ्यः स्वाहा	११३३	उपोत्तमेभ्यः स्व.हा	११३१
ईशानाय परस्वत आलभते	१८७२	उत्थिताय स्वाहा	१५३३	उभाभ्यां देव सवितः	११७५
उक्ताः सञ्चराः १८०८, १८१८, १८१६		उत्सादेभ्यः कुब्जं	२१६३	उभे धुरौ वह्निरापिन्दमानो	७७३
उक्षाणो बृहत्या	१७९६	उदकाय स्वाहा	१५२४	उरुय्याचो नो महिषः शर्म यंसद्	८०७
उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः	३३०	उदस्य शुष्माद् भानुर्नार्त	४३२	उरौ देवा अनिषाधे स्याम २७५, २२२	२२२
उग्रं वर्षते स्वाहा	१६१३	उदानो यज्ञेन कल्पता स्वाहा	१७१०	उर्व्यै दिशे स्वाहा	१६३०
उत्त कर्षं नृषदः पुत्रमाहुः	५७८	उदीच्यै दिशे स्वाहा	१५८६	उलो हलिष्णो	१८९२

उवोचिथ हि मघवन् देष्णं	४७५	एकचैभ्यः स्वाहा	१०२६	एह यातु वरुणः सोमो	९५१
उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुः	१९२	एकविंशत्यास्तुवतैकशफाः	१४५०	ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यद्	१२९१
उषासानका बृहती सुपेशसा	५९४	एकशताय स्वाहा	१७२५	ऐन्द्रानः स० हितो	२०९२
उषे यद्वा सुपेशसा	८६६	एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश	७८५	ऐन्द्रोऽरुणो	२०९०
उषो मघोन्या वह	२३७	एकस्मै स्वाहा	१७२२	ऐभिरग्ने दुवो गिरो	४
उष्ट्रो घृणीवान् वाघ्रानसस्ते	१९४२	एकादशभिरस्तुवत ऋतवो	१४४५	ऐषु धावापृथिवी धातं महद्	७४५
ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो	१२६५	एकादशचैभ्यः स्वाहा	१०१४	ओमानमापो मानुधीरमृक्तं	३८४
ऊर्जं गावो यवसे पीवो अत्तन	७६०	एकानृचैभ्यः स्वाहा	१०२८	ओमासश्वर्षणीधृतो	१
ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वत	१४०१	एकाष्टका तपसा तप्यमाना	९१३	ओ श्रुष्टिर्विदध्या समेतु	४८८
ऊर्जाय स्वाहा	१६८८	एकोनविंशतिः स्वाहा	१०२२	ओषधीभ्यः स्वाहा	१६५४, १६६२
ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयताङ्गिरौ	१३८२	एष्यङ्को	१९२३	औपद्र० घ्रायानुक्षतारं	२१९६
ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय गिरौ	१३८१	एतं शार्धं धाम यस्य सुरैः	९३	कतमस्मै स्वाहा	१५५३
ऊर्ध्वै दिशे स्वाहा	१५८८	एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्ट्वं कृचित्	७४६	कथा कविस्तुवीरवान् कया गिरा	६७९
ऊर्ध्वो अभिः सुमतिं वस्वो अश्रेत्	४८१	एतं सधस्थाः परि वो ददामि	११५०	कथा दाशेम नमसा सुदानून्	२५५
ऊर्ध्वो प्रावा वसवोऽस्तु सोतरि	७५२	एतं जानाथ परमे व्योमन्	१२५१	कथा देवानां कतमस्य यामनि	६७६
ऋक्षल भिः कपिञ्जलान्	१९९६	एतं ते देव सवितर्यज्ञं	८३९	कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम	२५०
ऋक्षीकाभ्यो नैषादं	२१४४	एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये	७४७	कदित्थानुः पात्रं देवयतां	६७
ऋक्षो जतुः सुषिलीका	१९२७	एता ऐन्द्राग्नाः १७६८, १८०९, १८१९		कतु प्रियाय धान्ने मनामहे	३३५
ऋचं वाचं प्र पयो मनो यजुः	१३२२	एता धियं कृणवामा सखायो	३१४	कद् व ऋतस्य धर्णासि	४३
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदम्	८३२	एतान्यमे नवतिं सहस्रा	१२३२	कपृञ्जरः कपृथमुद् दधातन	७७४
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्	१३७	एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे	१२३१	कपोत उल्लूकः शशस्ते	१२३९
ऋजुनीती नो वरुणो	२९	एता वो वरम्युयता यजत्राः	१६४	कर्णाभ्यां श्रोत्रं	१९८३
ऋतधीतय आ गत	३५१	एताः शुनासीरीयाः	१८२७	कर्णा यामा	१७४५
ऋतये स्तेनहृदयं	२१९३	एतो न्वय सुध्यो भवाम	३१३	कर्मेण ज्याकारं	२१३९
ऋतस्यतेनादित्या यजत्रा	१०६६	एदं मरुतो अश्विना	२३९	कलविङ्को लोहिताहिः	१८९६
ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षान्	४०१	एनाङ्गूषेण वयमिन्द्रवन्तो	५६	कल्माषा आगिनाहताः	१७६६
ऋतस्य हि प्रसितर्योहरु व्यचो	७२४	एना व्याघ्रं परिष्वजानाः	११४८	कविर्नृचक्षा अभि भीमचष्ट	१७५
ऋतुभ्यः स्वाहा	१६३७	ऐन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा	५९८	कश्छन्दसां योगमा वेद धीरः	७९०
ऋते स विन्दते युधः	५२८	एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः	१३४८	कस्मै स्वाहा	१५५२
ऋभुभ्योऽजिनसन्धं	२२२१	एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा	६२१	कामाय पिकः	१२४६
ऋभुर्भुक्षुशा ऋभुर्विधतो मदः	७४३	एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो	५००	कामाय पूँश्चलम्	२१२१
ऋभूणां भागोऽसि विशेष्वां देवानाम्	८६०	एवा नपातो मम तस्य धीभिः	३९२	काय स्वाहा	१५५१
ऋश्यो मयूरः सुपर्णस्ते	१९३०	एवा नो अग्ने विश्वा दशस्य	५०५	कायास्तूपराः	१८१२
ऋषभाः ककुभे	१७९७	एवा प्लतेः सनुरवाँवृधद् वो	६७५	किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस	५७४
ऋषभाय गवथी	१८८६	एष ते देव नेता	३४९	किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां	४११
ऋषिभ्यः स्वाहा	११३४	एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व	१३२३	किमु शु वः कृणवामापरेण	१५३
एक एवाग्निर्बहुधा समिद्धः	५५६	एषः स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा	२७३	कीलालाय सुराकारं	२१७९
एकत्रिंशतास्तुवत प्रजाः	१४५५	एषा वः सा सत्या संवागभूद्	१३१७	कूर्धते स्वाहा	१५४९
एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त	१४४०	एषामहमायुधा सं स्यामि	११०९	कुलीका देवजामिभ्यो	१८५४

कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः	६८८	क्रोष्टा मायोः	१९०१	घृतेन सीता मधुना समज्यतां	८५७
कूजते स्वाहा	१५१८	क्वयिः कुटर्हदात्यौहस्ते	१९४५	घोषाय भषम्	२२५६
कूप्याभ्यः स्वाहा	१५९८	क्षत्राय राजन्यं	२११४	घोषाय स्वाहा	१४२४
कूर्माञ्छकैः	१९९४	क्षिप्रदेयनाय वर्तिका	१८८७	घ्राताय स्वाहा	१५०९
कृशमाञ्छकपिण्डैः	२०५३	क्षुदेभ्यः स्वाहा	१०२७, ११२६	चक्रवाकौ मतरनाभ्यां	२०६१
कृकवाकः सावित्रो	१९१९	क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं	२२५२	चक्षुर्थेनैव कल्पतां स्वाहा	१७१२
कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते	१९५१	क्षेमाय विमोक्तारम्	२२०७	चक्षुषे मशकान्	१८७९
कृगोमि ते प्राजापत्यम्	१०६२	खड्गो वैश्वदेवः	१९४७	चक्षुषे स्वाहा	१५७६
कृताय स्वाहा	१५५०	खड्गो वैश्वदेवः विश्वेषां देवानां	८७०	चतुर्दशार्चभ्यः स्वाहा	१०१७
कृतायाऽऽदिनवदशं	२२४६	गणपतये स्वाहा	१६७२	चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य	७८८
कृधी नो अह्नयो देव सवितः	७४४	गणश्रिये स्वाहा	१६७१	चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा	७८४
कृष्णप्रीव आग्नेयो रराटे	१७२९	गणानां त्वा गणपतिं हवामहे	१३७९	चत्वार ई बिभ्रति क्षेमयन्तो	३३१
कृष्णप्रीवः शितिकक्षो	१७५१	गणेभ्यः स्वाहा	११३६	चत्वारो मा मशशारस्य शिश्वः	९६
कृष्णप्रीवा आग्नेयाः	१७५८, १७७३, १८००	गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं	२१४६	चन्द्रमसे किलासम्	२२७८
कृष्णाञ्जिरल्पाञ्जिः	१७५२	गन्धाय स्वाहा	१५०८	चन्द्रमा अप्सवन्तरा	३८
कृष्णान् वर्षाभ्यो	१७८६	गर्भं धेहि सिनीवालि	८३८	चन्द्रमा नक्षत्रैरुदकाम्	९९५
कृष्णाः पृषन्तन्नैयम्बकाः	१८२५	गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कम्	१२२	चन्द्राय स्वाहा १६४१, १६५९, १६७७, २२९१	१६६५
कृष्णा बभ्रुनीकाशाः	१८२४	गिरा य एता युनजद्वरी त	४६७	चराचरेभ्यः स्वाहा	२०५१
कृष्णा भौमा	१७७९	गिरीन् ग्लाशिभिः	२०६३	चाषान् पितेन	१९८६
कृष्णा यद् गोष्वरुणीषु सीदद्	६३०	गीताय शैलूषं	२२२४	चित्तं मन्याभिः	७६२
कृष्णा वारुणाः	१८१०	गुहाभ्यः किरातं	२२३२	चित्रस्ते भातुः क्रतुप्रा अभिष्टिः	७६२
कृष्णाय स्वाहा	१९६८	गेहायोपपतिम्	२१५४	चित्राण्यज्ञैः	२०८०
कृष्णो रात्र्याः	१९२६	गोधा कालका दार्वाघाटस्ते	१९१८	जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद्	१२३
कृष्णोऽस्याखरेष्ठाऽन्ये त्वा	१२७२	गोभिष्ट्वा पात्वृषभो वृषा त्वा	११५५	जनो यो मित्रावरुणावभिधुग्	९०
को अद्धा वेद क इह प्र वोचद्	१७४	गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः	१८५३	जयतामिव तन्यतुः	१७
को ददर्श प्रथमं जायमानम्	१०२	गौरमीभेदनु वत्सं मिषन्तं	१२६	जरां सु गच्छ परि धत्स्व	१०४०
को नु वां मित्रावरुणावृतायन्	२४०	गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षति	१३९	जवं जङ्गाभ्याम्	१९९७
को मा ददर्श कतमः स देवो	१२०६	ग्लौभिर्गुन्मान्	२०६६	जवाय स्वाहा	१५३४
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ	६६६	ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं	२२६८	जवायाश्वपं	२१७४
को वृक्षाता वसवः को वरुता	२२९	प्रावाणः सोम नो हि कं	४०६	जवो यस्ते वाजिभिहितो	१३१४
कृतवे स्वाहा	१४०८, १६९७	प्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु	५९७	जहका वैष्णवी	१९२८
क्रतुप्रावा जरिता शश्वतामवः	७६१	प्रीष्माय कलविह्वान्	१८३१	जाप्रते स्वाहा	१५१७
क्रतूयन्ति कतवो ह्रसु धीतयो	६७७	घर्मश्च मे	१४७६	जानीत स्मैनं परमे व्योमन्	११५१
क्रन्दते स्वाहा	१५०४	घर्माय स्वाहा	२३१०	जाम्बलिनारण्यम्	१९९९
क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो	७२६	घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतुः	७८२	जिह्वाया उत्सादम्	१९५८
कुम्भी श्रोणिभ्याम्	२०३८	घृतं रसेन	२०७२	जीमूतान् हृदयौपशेन	२०५८
कुषाय निसरं	२२०४	घृतं घृतपावानः पिबत	८४५	जुम्बकाय स्वाहा	२०८३
कुषाय तूणवधम्	२२६१	घृतपृष्ठा मनोयुजो	९	जमया अत्र वसवो रन्त देवाः	४८३

ज्यार्यासमस्य यतुनस्य केतुना	३०१	ता नो रासन् रातिषाचो वसूनि	४४५	ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा	७३१
ज्योतिरसि विश्वरूपं	८४४	तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं	२१	ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही	६८९
ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता स्वाहा	१७१८	तान् यजत्राँ ऋतावृधः	१०	ते हि प्रजाया अभरन्त विश्वः	७३०
ज्योतिषे स्वाहा	१६७८	तामस्य रीतिं परशोरिव प्रति	३३८	ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः	४८४
ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं	५५७	तिग्ममेको विभर्ति हस्त आयुधं	५४३	ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ नः	४०९
त आदित्या आ गता सर्वतातये	५८,५९०	तिस्रभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत	१४४१	ते हि वसो वसवानाः	३०
त ऊ षु णो महो यजत्राः	६५३	तिस्रो दिवतिस्रः पृथिवीः	११५७	त्मना समस्तु दिनोत यज्ञं	४३१
तत् सु नः सविता भगः	२३८	तिस्रो देष्ट्राय निर्ऋतांरुपासते	७८३	त्रयस्त्रिंशतास्तुवत भूतानि	१४५६
तदद्य वाचः प्रथमं मसीय	१२१०	तिस्रो मातृस्त्रान् पितृन् बिभ्रदेकः	१०८	त्रयस्त्रिंशद् देवतास्त्रीणि च	११६४
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने ३३४, ११२०	११२०	तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा	१५९५	त्रया देवा एकादश	८६५
तदिन्वस्य परिषद्धानो अगमन्	६३९	तीक्ष्णीयांसः परशोरमेः	११०८	त्रयोदशभिरस्तुवत मासाः	१४४६
तद्धि वयं ऋणीमहे	७९३	तीर्थेभ्य आन्दं	२२२९	त्रयोदशर्चैभ्यः स्वाहा	१०१६
तद्वन्धुः सूरिर्दिवि ते धियंधा	६४४	तीव्रो नो मधुमाँ अयं	१६६	त्रयोविंशत्यास्तुवत क्षुद्राः	१४५१
तनुष्टे वाजिन् तन्वं नयन्ती	६१५	तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु	२४८	त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधात्	११७८
तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं	१३५१	तुभ्यं पयो यत् पितरावनीतां	७१	त्रायन्तामिह देवाः	८१३
तन्न इन्द्रस्तद् वरुणस्तदग्निः	६६	तुर्यवाह उष्णिहे	१७९४	त्रितः कूपेऽवहितो	५४
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निः	४४८	तुलायै वाणिजं	२२३७	त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूपः	२१६
तन्नो अनर्वा सविता वरुधं	३४३	तृचेभ्यः स्वाहा	१०२५	त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि	२१९
तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं	५९१	तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	११३०	त्रिरा दिवः सविता सोषवीति	२२०
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपः	४४६	ते अस्मभ्यं शर्म यंसन्	३१	त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि	२२१
तन्नो धातो मयोभु वातु भेषजं	२२	तेगान् दष्ट्राभ्यां	१९५६	त्रिवत्सा अनुष्टुभे	१७९३
तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अङ्गिरकैः	३७६	ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्राः	७३९	त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा	१३५३
तपन्ति शत्रुं स्वर्णं भूमा	४४२	तेजसेऽजपालम्	२१७७	त्रिः सप्त सखा नयो महीरपो	६८३
तपसे कौलालं	२१३३	ते ते देव नेतर्ये	३४६	त्रीणि शता त्री सहस्रप्यग्निर्द १३, १२६१	१३, १२६१
तपसे शूद्रं	२११६	तेदनीमधरकण्ठेन	१९८४	त्रीण्येक उरुगयो वि चक्रमे	५४५
तपसे स्वाहा १६९१, २३०६	१६९१, २३०६	ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन्	४०३	त्रीष्वाकांस्त्रिन्समुद्रांस्त्रीन्	११५८
तपस्याय स्वाहा	१६९२	ते नः सन्तु युजः सदा	५६०	त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीनाम्	२१८
तप्तायनी मेऽसि वित्तायनी मे	१२८५	ते नन्नाध्वं तेऽवत	५५१	त्रेतायै कल्पिनं	२२४७
तप्ताय स्वाहा	२३०९	ते नूनं नोऽयमूतये	७९४	त्रयवयो गायत्र्यै	१७९०
तप्यते स्वाहा	२३०७	ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं	६८१	त्वं सूरौ हरितो रामयो नृन्	७९
तप्यमानाय स्वाहा	२३०८	ते नो गोपा अपाच्याः	५३६	त्वं होता मनुर्हितो	१४
तमसे तस्करं	२११७	ते नो नावमुरुष्यत	५१०	त्वं नो अग्ने अग्निभिः	८२१
तमीशं नं जगतस्तस्थुषस्पति	२३	ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुः	२४१	त्वं नो अस्या इन्द्र दुर्हणायाः	८०
तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः	१२४९	ते नो रायो द्युमतो वाजवतो	३८८	त्वमायसं प्रति वर्तयो गोः	७५
तं प्रनथा पूर्वथा विश्वथेमथा	२९४	ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषाः	३८९	त्वमिन्द्र नर्यो यौ अबो नृन्	७८
तवोतिभिः सचमाना अरिष्ठा	२६७	तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषे	७७५	त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षाः	४७६
तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीम्	२५७	तेऽविन्दन् मनसा दीध्याना	८३६	त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां	१०९९
ता अन्तत वयुनं वीरवक्षणं	३३६	तेषां हि महा महतामनर्षणां	६९४	त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे	१४६६
ता उभौ चतुरः पदः संप्रसारय १३८०	१३८०	ते सीषपन्त जोषमा यजत्राः	५०४	त्वष्टा नो वैश्वं वचः	१३९५

त्वष्टा मे दैव्यं वचः	९३५	देवं वो अद्य सवितारमेधे	३४०	देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं	१३८७
त्वष्टारं वायुमृभवो य ओहते	७०१	देवंदेवं वोऽवसे	५२४	दैवीः षडुर्वारु नः कृणोत	१०४७
त्वष्टुर्दशमी	२०२६	देवलोकाय पेशितारं	२१८७	दैवी धियं मनामहे	८४२
त्वष्ट्र उष्ट्रान्	१८७६	देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः	२१०	दैव्याय धत्रे जोष्ट्र देवश्रीः	१२५०
त्वष्ट्रे कौलीकान्	१८५२	देवस्य त्वा सवितुः । अश्विनोः	१३६७	दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित	७१९
त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा	१५६७	देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे	१२८७	यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो	५८२
त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा	१५६८	देवस्य त्वा सवितुः । सरस्वत्यै	१३६६	यावापृथिवी अनु मा दीर्घायां	१०९५
त्वष्ट्रे स्वाहा	१५६६	देवस्याहꣳ सवितुः सवे	१३१५	यावापृथिवी उर्वन्तरिक्षं	१०९१
त्वां विशो वृणतां राज्याय	८९७	देवा अमृतेनोदकामस्तां	१००१	यावापृथिवी जनयन्नभि व्रता	७१५
त्वामद्य ऋष आर्षेय ऋषीणां	१३७५	देवा आज्यपा जुषाणाः	१२५६	यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा १६४०, २३२०	२३२०
त्वां पूर्वं ऋषयो गीर्भिरायन्	१२३०	देवा इदस्य हविरयमायन्	१२५७	यावापृथिवीयः कूर्मः	१९१६
त्वाष्ट्री लोमशसकथौ सकथ्यो	१७३४	देवा एतस्यामवदन्त पूर्वं	७७८	यावापृथिवी वर्तोभ्यां	१९६५
सृक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते	६८०	देवाः कपोत इषितो यदिच्छन्	८२८	यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं	२०३०
दक्षिणायै दिशे स्वाहा	१५८२	देवा गातुविदो ग तुं	१२३६	यौर्भे पिता जनिता नाभिरत्र	६३१
दक्षिणां वः प्रथममश्विनोषसम्	५०६	देवा ददत्वासुरं तद् वो अस्तु	११९८	यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः	८७५
दक्षिणमग्निमुषसं च देवीं	१६२	देवा देवानां भिषजा	१२५४	यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतसः	५९५
दमूनसो अपसो ये सुहस्ताः	२७०	देवानां युगे प्रथमे	१२१४	यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतमौ	११७९
दश क्षिपो युञ्जते बाहू आद्रि	२८०	देवानाꣳ समिदसि	१२४४	यौश्च म इन्द्रश्च मे	१४७१
दशर्चेभ्यः स्वाहा	१०१३	देवानां दूतः पुरुध प्रसूतो	१८८	यौश्च मे	१४८४
दिग्भ्यः स्वाहा	१६२८, २२९०	देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रो	११६३	यौष्टवा पिता पृथिवी माता	११००
दिग्भ्यो नकुलान्	१८६५	देवानां नु वयं जाना	१२१२	यौष्पितः पृथिवि मातरध्रुग्	३९७
दितिश्च मे	१४८३	देवान् दिवमगन् यज्ञस्ततो माः	१२४६	द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा	१०१५
दित्यवाहो जगत्यै	१७२२	देवान् वसिष्ठो अमृतान् ववन्दे	७०६	द्वादशारं नहि तज्जराय	१०९
दिवं वृक्षाभ्यां	२०६२	देवान् हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये	७०७	द्वापरायाधिकल्पिनम्	२२४८
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः	६९८	देवानामसि वह्नितमꣳ	१२३४	द्वाभ्याꣳ स्वाहा	१७२३
दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे	५८१	देवानामिदवो महत्	५५२	द्वाभ्यः स्नामꣳ	२१६५
दिवा पतयते स्वाहा	१६८०	देवानामुत्कमणमसि	१२४२	द्वाविमौ वातो वातः	८१०
दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना	५९९	देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः	३२६	द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया	११८
दिवे कशान्	१८६४	देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां	२०	द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा	११२९
दिवे खलतिꣳ	२२७५	देवाः पितरः पितरो देवाः	११५२	द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदम्	६१९
दिवे चक्षुषे नक्षत्रेभ्यः	११७२	देवा यज्ञमतन्वत भेषजं	१२५२	द्विमाता होता विदथेषु सप्राड्	१९८
दिवे स्वाहा १६२७, १६५७, २२८८		देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो	५२५	द्विरूपा अग्नीषोमीया	१७६९
दिवो मादित्या रक्षन्तु ९७१, ११६९		देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्तु	१२४०	धर्तारो दिव ऋभवः सुहस्ता	७१६
दिशश्च म इन्द्रश्च मे	१४७४	देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्तु	१२३९	धर्माय सभाचरं	२१२५
दिशां कङ्को	१८९४	देवीः षडुर्वारु नः कृणोत	८०४	धाता च म इन्द्रश्च मे	१४६५
दिशा जत्रवो	२०५६	देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्य	१२४१	धाता धातूणां भुवनस्य यस्पतिः	८०६
दिष्टाय रज्जुसजं	२१४०	देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यः	१२३८	धाता रातिः सवितेदं जुषन्ताम्	९०३
दुष्कृताय चरकाचार्यं	२२५३	देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु ६३, २३५		धातुर्दशमी	२०१३
दूरे चित्त सन्तमरुषास इन्द्रम्	८९२	देवो भगः सविता रायो अंशः	२६४	धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा	८६४
दे०[विश्वे देवाः] २६					



धायभ्यः स्वाहा	१६००	नर्माय पुँश्चलू	२२६५	नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैः	४८७
धवते स्वाहा	१५२७	नर्माय रेभ	२२२७	नू रोदसी अहिना बुध्वेन	२३४
धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षा	३१९	नवदशभिरस्तुवत शूद्रायौ	१४४९	नू सघानं दिव्यं नंशि देवाः	४०४
धिये समाधिना प्रावतं न	९३७	नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन्त	१४४४	नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा	६६४
धुक्त्वा आग्नेयी	१८९५	नवर्चेभ्यः स्वाहा	१०१२	नृताय सूतं	२१२३
धूमाय स्वाहा	१६०५	नवविश्वत्यास्तुवत वनस्पतयो	१४५४	नेतार ऊ षु णस्तिरो	७७७
धूम्रा आन्तरिक्षा	१७८०	न वि जानामि यदिवेदमस्मि	१३५	नैतावदेना परो अन्यदास्ति	५७५
धूम्रान् वसन्तायालभते	१७८४	न वो गुहा चक्रेम भूरि दुष्कृतं	७५७	पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां	१२११
धूम्रा बभ्रुनीकाशाः	१८२२	नव्यं तदुक्थ्यं हितं	४९	पञ्चदशभिरस्तुवत क्षत्रम्	१४४७
धृतव्रता आदित्या इषिरा	१५१	न हि वो अस्त्यर्भको	५४९	पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा	१०१८
धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो	७१४	नाके राजन् प्रति तिष्ठ तत्र	११५४	पद्यपादं पितरं द्वादशाकृतिं	११०
धेनवोऽतिच्छन्दसे	१७९९	नाक्रो मकरः कुलीपयः	१९२१	पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त	१४४२
धैर्याय तक्षाणम्	२१३२	नाना चक्राते यम्या वपुंषि	२०२	पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा	१००८
नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः	१०७७	नाभ्यै स्वाहा	२२९५	पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने	१११
नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे	१४७३	नारकाय वीरहणं	२११८	पद्मावयस्त्रिष्टुभे	१७९१
नक्षत्राणि रूपेण	२०८१	न वा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः	६२०	पञ्चविश्वत्यास्तुवतारण्याः	१४५२
नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा	१६३३	नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा	१८५	पत्नीव पूर्वहृतिं वानृधयथा	८३
नक्षत्रेभ्यः किर्मिरं	२२७७	नित्यश्चाक्रन्यातु स्वपतिर्दमूना	५७१	पथ एकः पीपाय तस्करो	५४४
नक्षत्रेभ्यः स्वाहा १६३२, १६६०, २२९२		निमेषाय स्वाहा	१५४५	पथस्पथः परिपति वचस्या	३७०
नक्षत्रवमरुणीः पूर्व्यं राट्	६९	निराहावान् कृणोतन	७६७	पथ्या रेवतीर्बहुधा विरूपाः	९०१
नड्वलाभ्यः शौक्लं	२२२६	निर्ऋतिं निर्जर्जल्येन	१९८८	पदे इव निहिते दरुमे अन्तः	२०६
न तमंहो न दुरितं	७९२	निर्ऋत्यै कोशकारौ	२२११	पदेपदे मे जरिमा नि धायि	२५४
न तद् दिवा न पृथिव्यानु मन्ये	४०९	निर्ऋत्यै पञ्चमी	२०२१	पथा वस्ते पुरुरूपा वपुंषि	२०५
न ता मिनन्ति मायिनो न धीराः	२१४	निर्ऋत्यै परिविविदानम्	२१५६	पन्थानं भ्रूभ्यां	१९६४
नदीभ्यः पौञ्जिष्ठम्	२१४३	निविष्टाय स्वाहा	१५१०	परः सो अस्तु तन्वा तना च	१२०३
न बहवः समशकन्	८८५	नि वेवेति पालितो दूत आसु	२००	परमेष्ठयभिधीतः प्रजापतिः	१३०८
नम उदर्येण	२०६०	विवेधं मूर्ध्ना	१९७९	परावतो ये दिधिषन्त आर्यं	६६१
नभसे स्वाहा	१६८५	निषण्णाय स्वाहा	१५३२	परिक्षिता पितरा पूर्वजावरी	६९९
नमस्याय स्वाहा	१६८६	निष्कृत्यै पेशस्कारी	२१५८	परि चिन्मत्तो ब्रविणं ममन्याद्	५६९
नभोरूपाः पार्जन्याः १७४७, १७६२		निष्कृत्यै स्वाहा	२३११	परि दश इन्द्रस्य बाहू	९६१
नम इद्रुग्रं नम आ विवासे	४००	निष्पिञ्चरीस्त ओषधीरुतापो	२१३	परि धत धत नो वर्चसेमं	१०३२
नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां	१२६४	नीचैः पयन्तामधरे भवन्तु	११०७	परिष्टवेभ्यः स्वाहा	१६६४
नमो देवेभ्यः	१२३५	नीलज्ञोः कृमिः	१८८८	परिवत्सरायाविजाताम्	२२१६
नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यो नमो	११९९	नीलनखेभ्यः स्वाहा	११२४	परीदं वासो अधिधाः स्वस्तये	१०४१
नमो वः पितरो रसाय	१२७७	नीहारमूष्मणा	२०७५	परीमं सोममायुषे महे	१०३८
नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिम्रतेजो	११८२	नीहाराय स्वाहा	१६२१	परीममिन्द्रमायुषे महे	१०३७
नरा वा शंसं पूषणमगोष्ठाम्	६७८	नू देवासो वरिवः कर्तना नो	५०७	परीमे गामनेषत	८२२
नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह	६०	नू नो रथिं रथ्यं चर्षणिप्रां	३७७	पर्जन्यवाता इषभा पृथिव्याः	३६८
नरिष्टाय भीमलं	२१२६	नू म आ वाचमुप याहि विद्वान्	३६२	पर्जन्याय मण्डकान्	१८३७

पर्जन्यावाता वृषभा पुरीषिणा	७००	पूर्वा देवा भवतु सुन्वतो रथो	१२०१	प्रजापतिर्मा प्रजननवान्सह	२८०
पर्यायिकेभ्यः स्वाहा	११२७	पूषणं वनिष्ठुना	२०४३	प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्	२१६२
पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्	२२३४	पूषणं दोभ्याम्	२००१	प्र तद् दुःशीमे पृथवानं वेने	७४९
पवमानः पुनातु मा ऋत्वे	११७४	पूषा च म इन्द्रश्च मे	१४६१	प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्य	२८५
पवित्राय भिषजं	२१६८	पूषा पश्चाक्षरेण पञ्च दिशः	१३२०	प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषत	४४४
पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः	१२७०	पूषा विष्णुर्हवनं मे सरस्वति	५५४	प्रतिपदासि प्रतिपदे त्वा	१३५२
पश्चादोषाय ग्लाविनं	२२३८	पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा	१५६५	प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्वान्	३४१
पश्चा यत् पश्चा वियुता बुधन्त	६३८	पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा	१५६४	प्रति मे स्तोममदितिर्जग्भ्यान्	२६१
पठवाहो विराजः	१७९५	पूष्णे स्वाहा	१५६३	प्रतिश्रुत्काया अर्तनं	२२५५
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन्	१०३	पूष्णो नवमी	२०२५	प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः	१९०४
पातं न इन्द्रापूषणा	९३२	पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः	१३२	प्रतीच्यै दिशे स्वाहा	१५८४
पातां नो देवाश्विना शुभस्पती	९३४	पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा	११३९	प्रत्यश्चमर्कमनयञ्छर्चाभिः	८२७
पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये	९३३	पृथिवी च म इन्द्रश्च मे	१४६९	प्रथमभाजं यशसं वयोधां	३७१
पाप्मने क्लीबम्	२११९	पृथिवी च मे	१४८१	प्रथमा ह व्युवास सा धेनुः	९०८
पाप्मने सैलगम्	२२५४	पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो	१३४२	प्रथमेभ्यः स्वाहा	११२८
पाराय मार्गारम्	२२२७	पृथिवीं त्वचा	२०८२	प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नाम	८३४
पार्या इक्षवः	१९७२	पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः	१०८२	प्रथिष्ठ यस्य वीरकर्मभिष्णद्	६३१
पार्याणि पक्ष्माणि	१९६९	पृथिव्यै पीठसर्पिणं	२२७२	प्रदरान् पायुना	२०५२
पार्श्वं विश्वेषां देवानामुत्तरम्	८७१	पृथिव्यै श्रोत्राय वनस्पतिभ्यो	११७०	प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्यो	७३३
पावीरवी कन्या चित्रायुः	३६९	पृथिव्यै स्वाहा	१६२५, १६५५, २२८४	प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे	१४८
पावीरवी तन्यतुरेकपादजो	७०४	पृथ्वी मारुताः	१८०५, १८११	प्र नो यच्छत्वर्थमा	८१७
पिता यत् स्वां दुहितरमधिष्कन्	६३३	पृथ्विस्तिरश्चीनपृथ्विः	१७४८	प्र पस्त्यामदितिं सिन्धुमर्कैः	२३१
पिद्वो न्यङ्कुः ककटस्ते	१९०३	पृथ्वी क्षुद्रपृथ्वी स्थूलपृथ्वी	१७४२	प्रप्रोथाय स्वाहा	१५०७
पिपर्तु मा तद्वत्स्य प्रवाचनं	५८७	पृथ्वी हेमन्ताय	१७८८	प्रवुद्धाय स्वाहा	१५१९
पिशङ्गाञ्छिशिरीय	१७८९	पृथ्वी मरुतः पृथ्वीमातरः	२५	प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त	४९५
पिशाचेभ्यो बिदलकारि	२१५१	पृष्टं यज्ञेन कल्पता स्वाहा	१७२०	प्र ब्रह्मैतु सदनाद्वत्स्य	४६४
पुनः प्राणः पुनरात्मानं न ऐतु	११८०	पृष्णः श्यामः	२०८७	प्रभाया अनर्थं	२१८४
पुनन्तु मा देवजनाः	११७३	पृष्णौ रजतनाभी	२०९७	प्र भ्रातृत्व सुदानवो	५६६
पुनर्दीय ब्रह्मजायां	७८१	प्रकामाय रजयित्रीम्	२१९२	प्रमदे कुमारीपुत्रं	२१३०
पुनर्नः पितरो मनो	६२५	प्रकामोद्याथोपसदं	२१६०	प्र मा युयुञ्जे प्रगुजो जनानां	५७९
पुनर्वै देवा अददुः	७८०	प्रकाशेनान्तरम्	१२७७	प्रमुञ्चन्तो भुवनस्य रेतो	८८८
पुमांसं पुत्रं जनय	१०६०	प्रजा स्वरेतसा	२०५०	प्रमुदे वामनं	२१६४
पुरा यत् सूरस्तमसो अर्पातेः	७६	प्रजानन्तः प्रति गृह्णन्तु पूर्वं	८९१	प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषां	२२३
पुरुषमृगश्चन्द्रमसो	१९१७	प्रजापतये च वायवे च	१८८१	प्र यज्ञ एतु हेत्वो न ससिः	५०२
पुरुषभ्याप्राय दुर्मदं	२१४५	प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि	१४८६	प्र याः सिद्धते सूर्यस्य रश्मिभिः	५८४
पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा	१८९७	प्रजापतये पुरुषान् हस्तिनः	१८७७	प्रयाजान् मे अनुयाजंश्च केवलान्	१२०९
पुष्टये गोपालं	२१७५	प्रजापतये स्वाहा	१७०५	प्रयुग्भ्य उन्मत्तं	२१४७
पुष्येभ्यः स्वाहा	१६५२	प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृच्छन्तु	२९०	प्रयुञ्जती दिव एति भ्रुवाणा	३२८
पूत्या स्वाहा	२२९६	प्रजापतिः प्रजाभिरुक्कामत्	१००२	प्र ये धामानि पूर्याण्यर्चान्	२३०

प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुः	३४४	प्रियाय प्रियवादिनम्	२१९१	बृहस्पतये स्वाहा	१४२२, १४९९
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवः	७२५	प्रीणीताश्वान् द्वितं जयाथ	७६९	बृहस्पतिः शकुनिसादेन	१९९३
प्र व एको मिमय भूर्यागो	१५५	पुष्णते स्वाहा	१६१७	बृहस्पतिनावसृष्टां० । तेजो गोषु	११९१
प्र व एते सुयुजो यामन्निष्ठये	२९७	पुष्वा अश्रुभिः	२०७७	बृहस्पतिनावसृष्टां० । पयो गोषु	११९४
प्र वः पान्तं रघुमन्यवोऽन्धो	८२	पुष्वाभ्यः स्वाहा	१६१९	बृहस्पतिनावसृष्टां० । भगो गोषु	११९२
प्र वः शंसाम्यद्गुहः	५२६	प्रेतं पादौ प्र स्फुरतं	८८६	बृहस्पतिनावसृष्टां० । यशो गोषु	११९३
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा	३६६	प्रेता जयता नर उग्रा वः	११११	बृहस्पतिनावसृष्टां० । रसो गोषु	११९५
प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषाम्	४८२	प्रेष्ठ वो अतिथिं गृणाषे	१४२	बृहस्पतिनावसृष्टां० । वर्चो गोषु	११९०
प्र वीराय प्र तवसे तुराय	३७४	प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्वैभिः	१२६७	बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृच्छन्तु	९९१
प्र वो भ्रियन्त इन्द्रवो	७	प्रेतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु	१२६३	बृहस्पतिर्मा विश्वेदेवैर्बुध्यायाः	९८१
प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं	४७१	प्रेषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं	२७४	बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे	१४६२
प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन्	५०१	प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं	१४९	बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि	१२२२
प्र वो रथि युक्ताश्वं भरध्वं	२४४	प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं	३६१	बृहस्पतेरष्टमी	२०११
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं	२४५	प्रोथते स्वाहा	१५०६	बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये	१३१६
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधि	६८२	प्रोह्यमाणः सोम आगतो	१३१०	बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि	६१
प्र शंतमा वरुणं दीधितिं गांः	२६०	प्लवो मद्भुर्मत्स्यस्ते नदीपतये	१९१५	ब्रह्मस्य विष्टपायामिषेकारं	२१८५
प्र शुक्रैतु देवी मनीषा	४२६	प्लीहाकर्णः शुष्ठाकर्णो	१७५०	ब्रह्म गामश्वं जनयन्त ओषधीः	७०२
प्र सक्ष्णो दिव्यः कण्वहोता	२४३	फलेभ्यः स्वाहा	१६५३	ब्रह्मचारी चरति वेविषद् विषः	७७९
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो	५२७	फलूलोहितोर्णां पलक्षी	१७४९	ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि	११४१
प्रसवाय स्वाहा	१६९५	खलस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे	७२३	ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारः	१२१३
प्र स विश्वेभिरग्निभिः	१४०३	बभ्रवः सौम्याः	१७७४, १८०१	ब्रह्मणे ब्राह्मणं	२११३
प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तम्	२७२	बभ्रवो धूमनीकाशाः	१८२३	ब्रह्मणे स्वाहा १०३५, ११४०, २३१७	२३१७
प्र सू न एत्वध्वरो	५१४	बभ्रुकानवान्तरदिशाभ्यः	१८६६	ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका	१०८०
प्र सू महे सुशरणाय मेधां	२७१	बभ्रुररणबभ्रुः शुक्रबभ्रुः	१७३९	ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदकामत्	९९९
प्रान्यै दिशे स्वाहा	१५८०	बभ्रुरेको विषुण सूनरो	५३९	ब्रह्महत्यायै स्वाहा	२३१८
प्राजापत्यश्चरुः	२१०९	बभ्रुः सौम्यः	२०८६	ब्रह्मा कृणोति वरुणो	५२
प्राजापत्याभ्यां स्वाहा	१०३२	बलं कुष्ठाभ्याम्	२०४२	ब्रह्मा यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७१७
प्राणश्च मे	१४७२	बलाय स्वाहा	१५३५	ब्राह्मणमथ विदेयं पितृमन्तं	१३०५
प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे	१३०२	बलायाजगरो	१९३७	ब्राह्मणासः पितरः सौम्यासः	१३८८
प्राणाय स्वाहा	१५७३	बलायाजुचरं	२१२७	भगाय स्वाहा	१४२७
प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा	१३७८	बलायोपदाम्	२१६२	भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः	२६
प्राणायान्तरिक्षाय वयोभ्यो	११७१	बहुरूपा वैश्वकर्मेणाः	१८२१	भद्राय गृहपते	२१८०
प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः	११६१	बहुरूपा वैश्वदेवाः	१८०६	भराय सु भरत भागमृत्विष्यं	७५२
प्राणो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७०७	बीभत्सायै पीत्कसं	२२३५	भरेधिन्द्रं सुहवं हवामहे	६६२
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे	४९४	बृहद् वयो बृहते तुभ्यममे	२९१	भर्गो ह नामोत यस्य देवाः	६४०
प्रायणाय स्वाहा	१५२५	बृहन्तो दिव्याः	१७८१	भायै दार्वाहारम्	२१८३
प्रायश्चित्त्यै स्वाहा	२३१२	बृहस्पतये गवयान्	१८७५	भुज्युमंहसः पिपृथो निरश्विना	७०३
प्रायासाय स्वाहा	२२९८	बृहस्पतये पाञ्चताय	२१०७	भुवनस्य पतये स्वाहा १४१५, १७०३	१७०३
प्रागृज्ञा माहेन्द्रा	१८९०	बृहस्पतये वाचस्पतये	-१९१३	भुवनस्य पितरं गीर्भिरामिः	३७२

भूतो भूतेषु पय आ दधाति	११४२	मरुता ५ सप्तमी	२०१०	मा वः प्राणं मा वोऽपानं	११६०
भूर्यै जागरणम्	२२४०	मरुता ५ स्कन्धा	२०३२	मासां करययो	१९३२
भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं	११८८	मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोः	२६५	मा सा ते अस्मत् सुमतिर्विं	८१
भूमे परिष्कन्दं	२१९८	मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः	१८१६	मासेभ्यः स्वाहा	१६३६
भूम्या अन्तं पर्येके चरन्ति	७९१	मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः	१८१४	मासेभ्यो दास्योहान्	१८५९
भूम्या आख्नालभते	१८६२	मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो	१८१७	माहं मघोनो वरुण प्रियस्य	१५७
भूर्जज्ञ उत्तानपदो	१२१५	मरुद्भ्यः स्वाहा	१६४७	मित्रः पृथिव्योदक्रामत्	९९२
भूर्भुवः स्वयौरिव भूम्ना	१२७८	मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो	१८१५	मित्रश्च म इन्द्रश्च मे	१४६३
भेषजाय स्वाहा	२३१३	मरुद्भ्यो वैश्यं	२११५	मित्रश्च वरुणश्चेन्द्रो रुद्रश्च	१११४
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा	६३६	मर्माणि ते वर्मणा छादयामि	११४९	मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च	४८९
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो	६३७	मर्यादायै प्रश्नविवाकम्	२१७२	मित्रस्य तृतीया	२०१९
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्दिः	६३५	मलिम्बुचाय स्वाहा	१६७९	मित्राय कुलीपयान्	१८३२
मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा	१०३४	मशकान् केसैः	१९९१	मित्राय गौरान्	१८७३
मण्डूको मूषिका तिसिरस्ते	१९२४	महत्काण्डाय स्वाहा	१०२४	मित्राय मद्रून्	१८४४
मधवे स्वाहा	१६८१	महत् तद् वः कवयश्चारु नाम	१८६	मित्राय शिक्ष वरुणाय दाशुषे	६९६
मधु नक्तमुतोषसो	३५	महदद्य महतामा ऋणीमहे	६०४	मित्राय स्वाहा	१५००
मधुमतीर्न इषस्कृधि यत् ते	१२९५	महसे वीणावादं	२२६०	मित्रावरुणाभ्यां कपोतान्	१८५०
मधुमाक्षो वनस्पतिः	३६	महागणेभ्यः स्वाहा	११३७	मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं	१३०१
मधु वाता ऋतायते	३४	महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी	७३६	मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यां	२१०६
मध्या यत् कर्त्तव्यमभवद्भीके	६३२	महि महे दिवे अर्चा पृथिव्यै	१७१	मित्रावरुणावन्गाभ्याम्	२०४०
मनसा होमैर्हरसा धृतेन	११७७	महिम्न एषां पितरश्चनेशिरै	६१७	मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृतं	१३२१
मनसे स्वाहा	१५७९	मही समैरश्चम्वा समीची	२११	मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी	३८२
मनस्त आप्यायतो वाक्त	१२८८	महो अग्नेः समिधानस्य शर्मणि	६०५	मुग्धाय वैन ५ शिनाय स्वाहा	१४१२
मनुष्यराजाय मर्कटः	१८८४	मह्यं यजन्तां मम यानीष्टा	१०४५	मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः	१३३८
मनुष्यलोकाय प्रकरितारं	२१८८	मह्यं यजन्तु मम यानि हव्या	८०३	मूर्धे स्वाहा	१६९९
मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य	८४०	मागधः पुंश्वली कितवः	२२८२	मूलेभ्यः स्वाहा	१६४९
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं	६२९	मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दः	१३४१	मृत्यवे गोव्यच्छम्	२२५०
मनो न्धा हुवामहे	६२३	माता च यत्र दुहिता च धेनू	२०३	मृत्यवे मृगयुम्	२१४१
मनो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	१७१५	माता पितरमृत आ भभाज	१०६	मृत्यवेऽसितः	१९३४
मन्दामहे दशतयस्य धासेः	९४	मातुष्पदे परमे शुक्र आयोः	२९०	मृत्यवे स्वाहा	२३१६
मन्द्रा कृणुष्वं धिय आ तनुष्वं	७६४	मात्र पूषन्नाष्टुण इरस्यो	४९३	शदं बस्यैः	१९५५
मन्यवेऽयस्तापं	२२०३	माघवाय स्वाहा	१६८२	मेघाय स्वाहा	१६०७
ममपु नः परिज्जमा बसर्हा	८४	मा नो विदन् विव्याधिनी	१०५२	मेदस्वता यजमानाः	१०६७
मम देवा विहवे सन्तु सर्वे	८०१, १०४४	मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा	३९८	मेधां मे वरुणो ददातु	१३८९
ममामे वचो विहवेष्वस्तु	८००	मा देवा दधिरे हव्यवाहम्	६११	मेधाय वासः पल्पूली	२१९१
मयि देवा इविणमा यजन्तां	८०२, १०४६	मा प्र गाम पथो वयं	६२१	मेधायै रथकारं	२१३१
मयुः प्राजापत्यः	१८९१	मायायै कर्मारं	२१३४	मो षु देवा अदः स्वः	४०
मरीचिर्विमुद्भिः	२०७४	मास्तः कल्पावः	२०९१, २०९९	मो षु णो अत्र जुहुरन्त देवाः	१९३
मरुतश्च म इन्द्रश्च मे	१४६७	मा व एनो अन्यकृतं भुजेम	३९९	य ई चकार न सो अस्य वेद	१३०

य ईश्वरे भुवनस्य प्रचेतसो	६६८	यथेन्द्र उद्वाचनं लब्ध्वा	९३०	या आपो दिव्याः पयसा	११४६
य ईशे पशुपतिः पशूनां	८८७	यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि	१३८५	यौ आवह उशतो देव	८४९
य उदाजन् पितरो गोमयं वसु	६५५	यदात्ति तस्मै स्वाहा	१५४६	या गुह्यार्था सिनीवाली	१२६६
य ऋतेन सूर्यमारोहयन् दिवि	६५६	यदद्य सूर उदिते	५३२	या गौर्यैर्तनि पर्येति निष्कृतं	६९७
य ओहते रक्षमो देववीतौ	२६९	यदद्य सूर्य उयति	५३०	या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्तिं	२२५
यः सपत्नो योऽपत्नो	१०५५	यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत यां	११८७	यातुधाना निर्ऋतिरादु रक्षस्ते	९६३
यच्छलमलौ भवति यज्ञदीपु	५०८	यदन्यासु वृषभो रोरवीति	२०८	यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम्	२१५२
यजन्ते अस्य सस्यं वयश्च	४६८	यदसावमुतो देवाः	९२५	या ते अग्ने पर्वतस्येव धारा	२२८
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां च	८१४	यदापो अध्व्या इति वरुणेति	१३७०	या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा	२२७
यज्ञं पृच्छाम्यवमं	४१	यदा वीरस्य रेवतो दुरोगे	४९८	यादसे शाबल्यां	२२६७
यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं विशां	७२१	यदि नो गां हंसि	१०५१	याद्गोव ददशे ताद्गुच्यते	२२९
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः	१२०२	यदि प्रेयुर्देवपुरा ब्रह्म	९२८	यानसावतिसरांश्चकार	९२९
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो	७३७	यदुल्लूको वदति मोघमेतद्	८३१	या नि कानि चिच्छान्तानि	१०८१
यज्ञो दक्षिणाभिरुक्कामत्	९९७	यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं	१२१	यानि चवार भुवनस्य यस्पतिः	१००४
यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम्	६४	यद् ग्रामे यदरण्ये यत् सभायां	१३६९	यानि भद्राणि बीजानि	१०६१
यज्ञो यज्ञेन कल्पताः स्वाहा	१७२१	यद्देवा अदः सलिले	१२१७	यां मे धियं मरुत इन्द्र देवाः	६८७
यते स्वाहा	१५२६	यद्देवा देवहेडनं देवासः १०६५, १२५३	१२२८	यावच्चतस्रः प्रदिशश्छुः	१११७
यत् कि चासौ मनसा यच्च	९६२	यद्देवापिः शंतनवे पुरोहितो	१२२८	यासां द्यौः पिता पृथिवी माता	१०६३
यत् ते तन्मन्त्रन्यन्त देवाः	१००५	यद्देवा यतयो यथा	१२१८	युक्ता म.ताऽऽसीद् धुरि दक्षिणायाः १०७	१०७
यत् ते देवीं निर्ऋतिरावयन्ध	११८१	यद् वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते	५३१	युक्त्वा ह्यक्षी रथे	१५
यत् ते वर्चो जातयेदो	१११६	यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्ने	१२२९	युनक्त सीरा वि युगा तनुभवं	७६५
यत् पिबति तस्मै स्वाहा	१५४७	यं देवासोऽवथ वाज्रमातौ ५९३, ६७४	५९३, ६७४	युवोर्ऋतं रोदसी सत्यमस्तु	१७२
यत् पुष्पेण हविषा देवाः	१२५८	यज्ञ इन्द्रो अखनद् यदग्निः	१०६८	युवोर्यदि सख्यायास्ते	६५१
यत्र बाणाः सम्पतन्ति	१३६४	यन्मूर्त्रं करोति तस्मै स्वाहा	१५४८	यूयं विश्वं परि पाथ	७९५
यत्र ब्रह्मविदो ० । आपो मा तत्र	१०८९	यममो पुरोदधिरे	९२७	यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ	४७४
यत्र ब्रह्मविदो ० । इन्द्रो मा तत्र	१०८८	यमस्य त्रयोदशी	२०१६	यूयं हि ष्टा सुदानवः	४०७, ५६७
यत्र ब्रह्मविदो ० । चन्द्रो मा तत्र	१०८६	यमाय कृष्णो	१८८३	यूयं देवाः प्रमतिर्यूयमोजो	१५२
यत्र ब्रह्मविदो ० । ब्रह्मा मा तत्र	१०९०	यमाय यमसूम्	२२१३	ये अग्नेः परि जज्ञिरे	६५९
यत्र ब्रह्मविदो यन्ति	१०८३	यमाय स्वाहा	२३१४	ये अर्वाखस्तां उ पराच आहुः	११७
यत्र ब्रह्मविदो ० । वासुर्मा तत्र	१०८४	यमायासूम्	२२१२	ये के च उमा महिनो अहिमाया	४२३
यत्र ब्रह्मविदो ० । सूर्यो मा तत्र	१०८५	यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः	५५५	ये प्राप्स्याः पशवो विश्वरूपाः	८९०
यत्र ब्रह्मविदो ० । सोमो मा तत्र	१०८७	यमो मृगुरघमारो निर्ऋथो	११७६	ये च देवा अयजन्ताथो	११९६
यत्र यज्ञिभिर्हितो	३४८	यम्यै त्रयोदशो	२०२९	ये त्रिंशति त्रयस्परौ	५३४
यत्रा मृपणां अमृतस्य भागम्	११९	यवानां भागोऽस्ययवानामाधिपत्यं	१३४६	ये देवा अग्निनेत्राः पुरःसदस्तेभ्यः	१३२४
यत्रा मृदादः सुकृतो मदन्ति	११८९	यशो मा वावापृथिवी	१३९७	ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ	११६६
यथाखरो मघवश्चाखरेष प्रियो	११०२	यस्ते हवं विवदत्	८९५	ये देवा दिव्येकादश स्थ	११६५
यथादित्या वसुभिः संबभूवुः	९५६	यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा	१२०	ये देवाः पृथिव्यामेकादश स्थ	११६७
यथा वशन्ति देवास्तथेदमन्	५३७	यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने	१३६५	ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो	१११९
यथा ह नद् वसवो गौर्यं चित्	७९९	यस्य कृष्णो हविर्गृहे	९३८	ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां	४६३

ये देवा विश्वदेवनेत्राः	१२४८	राश्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्	२२८०	वरुणाय चक्रवाकान्	१८४५
ये देवास इह स्थन	५५२	राश्र्यै सीचापूः	१८५७	वरुणाय नाकान्	१८४०
ये देवासो दिव्येकादश स्थ	९८	रिशादसः सत्पतीरदब्धान्	३९६	वरुणाय महिषान्	१८७४
ये नदीनां संस्रवन्ति	८८१	रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाः	१२६०	वरुणाय स्वाहा	१५०१, २२९४
येन देवं सवितारं परि	१०३६	रुद्रं रोराभ्याम्	२००३	वरुणायारण्यो मेघः	१८८२, १९४०
येन धनेन प्रपणं चरामि	९१९, ९२०	रुद्राणां द्वितीया	२०३४	वरुणो मादित्यैरेतस्या दिशः	९७५
येन वेहद् भभूविथ	१०५८	रुद्रास्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु त्रैष्टुभेन	१४३७	वरुणो मित्रो अर्गमा	५३५
येन हस्ती वर्चेसा संबभूव	१११५	रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन	१४३०	वर्णाय हिरण्यकारं	२२३६
ये नः सपत्ना अप ते भवन्तु	८०८	रुदेभ्यः स्वाहा	१६४५	वर्णाय नुरुधं	२१६१
येनावपत् सविता क्षुरेण	९५०	रुदेभ्यो रुहन्	१८६८	वर्म मे याव पृथिवी	१००६
ये पन्थानो बहवो देवयानाः	९१६, १०६४	रुरु रौद्रः	१९४४	वर्षते स्वाहा	१६११
ये बध्यमानमनु दीध्यानाः	८८९	रूपाय मणिकारं	२१३५	वर्षाभ्यस्तित्तिरीन्	१८३२
येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः	६६३	रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो	१३०४	वर्षाहृक्कृतूनाम्	१९३५
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः	६६७	रेभदत्र जनुषा पूर्वां अङ्किरा	७३५	वर्षिष्ठ्यं नाकाय परि	२१८६, २२०२
येऽमावास्यां रात्रिसुदस्थुः	१०४८	रेष्माणं स्तुपेन	१९९०	वल्गते स्वाहा	१५१३
ये यजत्रा य ईश्याः	११	रोहिण्यस्त्र्यवयो वाचे	१७५४	वल्मीकान् क्लोमभिः	२०६५
ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता	६५४	रोहिता रुद्राणां	१७६०	वशा यावापृथिवीयाः	१८०७
ये सर्षिषः संस्रवन्ति	८८२	रोहितेभ्यः स्वाहा	१०२९	वशा मैत्रावरुण्योः	१७७१
ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे	६०६	रोहितो धूमरोहितः	१७३८	वसन्ताय कपिञ्जलानालभते	१८३०
ये स्था मनोर्याज्ञियास्ते शृणोतन	६०३	रोहित् कृष्ण्णानो गोलात्तिका	१९३३	वभावस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदशं	१३२२
यो अद्य सेन्यो बधो	९६०	लोकं पृण छिद्रं पृणाथो	१३३४	वसवस्त्वा कृष्णन्तु गायत्रेण	१३३१
यो अवेन्तं जिघांसति	१४९१	लोपाश अश्विनः	१९२५	वसवस्त्वाऽऽच्छृन्दन्तु गायत्रेण	१४३६
योगाय योक्तारं	२२०५	लोमानि प्रयतिर्मम त्वञ्च	१३६८	वसवस्त्वाङ्गन्तु गायत्रेण छन्दसा	१३७६
योगेयोगे तवस्तरं	१०४२	वज्रमेको बिभर्ति हस्त आहितं	५४२	वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण	१४२९
यो जागार तमूचः कामयन्ते	३०७	वत्सतर्यः सारस्वत्यः	१८०३	वसवे स्वाहा	१४०९, १६६८
यो नः स्वो यो अरणः सजातः	१०५४	वत्सतयो देवानां पत्नीभ्यः	१७५७, १७७८	वसिष्ठासः पितृवद् वाचमकत	७२०
यो नः खोऽरणो यश्च	१४०४	वत्सराय विजर्जरां	२२१९	वसुभ्य ऋश्यानालभते	१८६७
योनिमेक आ ससाद द्योतनो	५४०	वनस्पतिभ्य उल्लकान्	१८४७	वसुभ्यः स्वाहा	१६४४
यो यज्ञस्य प्रसाधनः	६२२	वनस्पतिभ्यः स्वाहा	१६५१, १६६३	वसूनां कपिञ्जलः	१९३८
यो रजांसि विममे पार्थिवानि	३७५	वनाय वनपम्	२२६३	वसूनां भागोऽसि रुद्राणामाधिपत्यं	१३४५
यो वः शुष्मो हृदयेषु	९५२	वपुषे मानस्कृतं	२२०९	वाग्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा	१७१४
यो वो देवा घृतस्तुना	४१६	वयं वो वृक्तवर्हिषो	५१८	वाचे कुञ्चः	१८९८
रक्षसां भागोऽसि निरस्तं	१२८९	वयं सोम व्रणे तव	६२६	वाचे प्लुषीन्	१८७८
रणः संदष्टौ पितुर्मां इव क्षयो	६८६	वयं तद् वः सम्र ज आ वृर्णमहे	५३३	वाचे स्वाहा	१५७८
ररे हृद्यं मतिभिर्यज्ञियानां	४८६	वयग्निद् वः सुदानवः	५६४	वाजं हनुभ्याम्	१९६०
रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व	१३५०	वरुणं त आदित्यवन्तमृच्छन्तु	९८५	वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये	१३१८
रश्मिभ्यः स्वाहा	१६४३	वरुणश्च म इन्द्रश्च मे	१४६४	वाजाय स्वाहा	१६९४
राजा राष्ट्रानां पेषो नदीनाम्	४३६	वरुणस्त्वा धूपयतु	१४३४	वाजिनं शोपेन	२०४९
राश्र्यसि प्राची दिग्बसवस्ते	१३५४	वरुणस्य द्वादशी	२०१५, २०२८	वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः	६१६

वातं प्राणेन	१९७३	वि नो देवासो अद्भुहो	५२०	विश्वे देवाः शृणुतेमं हवमं मे	४२१
वाताय स्वाहा	१६०४	विभ्रेभिर्विप्र सन्त्य	३५२	विश्वे देवाः सह धीभिः पुरंध्या	७०५
वानस्पत्या प्रावाणो घोषमक्रत	९०९	विभिर्द्रो चरत एकया सह	५४६	विश्वे देवास आ गत	१६५, ४१५
वामना अनड्वाह आमवैष्णवाः	१७७०	विभुवे स्वाहा	१६६९	विश्वे देवासो अप्तुरः	२
वामं नो अस्त्वयमन्	५६२	वि मे पुरुत्रा पतयान्ति कामाः	१९४	विश्वे देवासो अस्त्रिधः	३
वामस्य हि प्रचेतसः	५६३	वियासाय स्वाहा	२३००	विश्वेभिः सोम्यं मधु	१३
वायवे चाण्डालम्	२२७३	विराडसि दक्षिणा दिग् रद्रास्ते	१३५५	विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते	८४७
वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि	१४८८	विरूपास इटषयस्ते	६५८	विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं	८५०
वायवे बलाकाः	१८४२	विवर्तमानाय स्वाहा	१५३६	विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं	८६७, १४८९
वायवे स्वाहा	१४९६, २२८७	विवस्वते स्वाहा	१६७०	विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान्	८६९, १८७०
वायव्यः श्वेतः पुच्छे	१७३५	विविक्त्यै क्षत्तारम्	२१९५	विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा	८६८, १६४८,
वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृच्छन्तु	९८३	विश्वताय स्वाहा	१५३७		२३१२
वायुः पुनातु सविता पुनातु	१३९०	विशामासामभयानामाधिकितं	७३४	विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः	८७४, २१०५
वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत्	९९३	विशोविश इड्यमध्वरेषु	३६४	विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिधमलं	२२३९
वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः	९७३	विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृच्छन्तु	९८८	विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये	६७१
वायुर्वा पचतैरवत्वसितप्रिवः	१३७७	विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिः	९७८	विश्वेषां देवानामुत्तरम्	२०३१
वायोः पुच्छम्	२०३६	विश्वदानीं सुमनसः स्याम	४१३	विश्वेषां देवानां पृषतः	१९५२
वायोर्विपक्षतिः	२००५	विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः	१२४७	विश्वेषां देवानां प्रथमा	८७२, २०३३
वारुणः कृष्ण एकशितिपात् पेतवः	२०९४	विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो	५९६	विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ	८४६
वारुणः पेतवः	२१०२	विश्वान् देवान् हवामहे	१६	विश्वेषामिरज्यवो देवानां	७३८
वारुण्यैः स्वाहा	१५९३	विश्वाहा ते सदमिद् भरेम	९२२	विश्वे हि ध्मा मनवे विश्वेदेसो	५१५
वारुणं येषां राया	७४८	विश्वा हि वो नमस्यामि वन्या	६६२	विश्वो देवस्य नेतुर्मतो	३४५
वाशीमेकौ विभर्ति हस्ते	५४१	विश्वे अय मरुतो विश्व ऊती	५९२	विषमेभ्यो मैन.ल५	२२३०
वासयसीव वेधसस्त्वं नः	४७८	विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः	३१६	विषासद्यै स्वाहा	१०३३
विंशतिः स्व हा	१०२३	विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे	१४६८	वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं	६९०
विच्युताय स्वाहा	१५२१	विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा आच्छन्दन्तु	८५६,	विष्वच्यतु कन्तती	८८४
विजृम्भमाणाय स्वाहा	१५२०		१४३९	विष्णवे निभूयपाय स्वाहा	१५७०
वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि	३३३	विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृष्णन्तु	८५४	विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा	१५७१
विदा चिन्तु महान्तो येष एवा	२५२	विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्तु	८५५,	विष्णवे स्वाहा	१४९७, १५६९
विदा दिवो विष्वज्जद्रिसुन्धैः	३०९		१४३२	विष्णुं स्तोमासः पुरदस्ममर्काः	१८३
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं	४२७	विश्वेदेते जनिमा सं विविकतो	१७७	विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः	२०१
विद्युतं कनीनकाभ्याः	१९६६, १९८२	विश्वे देवा अ५शुषु न्युप्तः	८५१, १३११	विष्णुर्योनि कल्पयतु	८३७
विद्युद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो	१८२	विश्वे देवा ऋतावृधः	४१८	विष्णुस्त्वा धूपयतुं	१४३५
विद्योतमानाय स्वाहा	१६०८	विश्वे देवा द्वादशाक्षरेण	८५३	विष्णुरेष्टमी	२०२४
विधूताय स्वाहा	१५३९	विश्वे देवा द्वादशे	८७६	विष्णुश्चो अस्मच्छरवः	१०५३
विधून्वानाय स्वाहा	१५३८	विश्वे देवा नो अथा स्वस्तये	३५८	विसर्माणं कृणुहि वित्तमेषां	२६८
विधृतिं नाभ्या	२०७१	विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञियाः	४२२	वि सूर्यो अमर्ति न श्रियं सादा	३१०
विनश्चिन आन्त्यायनाय स्वाहा	१४१३	विश्वे देवाश्चमसेषुनीतः	८५२, १३१२	वि कुतयो यथा पथा	१४००
वि नः पथा सुविताय	३२	विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह	६०८		

विहृत आन्त्रैः	२०४६	शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु	४५२	शीलायाजनीकारी	२२१०
वीक्षिताय स्वाहा	१५४४	शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु	४६१	शुकरूपा वाजिनाः	१७६५
वीणावादं पाणिभ्रं तृणवध्मं	२२६९	शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः	४५७	शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि	१२८२
वीमे देवा अक्रंसत	११९७	शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः	१०७८	शुक्राय स्वाहा	१६८३
वीरस्य नु स्वद्वयं जनासः	२०९	शं नो देवः सविता त्रायमाणः	४५८	शुक्लाय स्वाहा	१२६७
वीर्यायाविपालं	२१७६	शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु	४५९	शुचये स्वाहा	१६८४
वृषणमाण्डाभ्याम्	१९६२, २०४८	शं नो द्यावापृथिवी पूर्वद्वृतौ	४५३	शुचे स्वाहा	२३०२
वृषदꣳ शस्ते धात्रे	१८९३	शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु	४५१	शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो	१७४३
वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञियाः	७१२	शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु	४५०	शुनमस्मभ्यमृतये	७९८
वृषो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं	२४९	शं नो भूमिर्वैष्यमाना	१०७६	शुभे वपꣳ	२१३६
वेत्यमूर्जनिधान् वा अति स्पृधाः	३००	शं नो मित्रः शं वरुणः	३७	शुश्रूषमाणाय स्वाहा	१५४०
वेद यज्ञीणि विदधान्येषां	३९४	शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वान्	१०७५	शुकराय स्वाहा	१५३०
वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्यः	९२३	शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः	१०७४	शकृताय स्वाहा	१५३१
वैरहत्याय पिशुनं	२१९४	शबला वैष्टुताः	१७८२	शरस्येव युध्यतो अन्तमस्य	१९९
वैशन्ताभ्यो वैन्दं	२२२५	शब्दायाडम्बराघातं	२२५९	शषाय स्वाहा	१६७५
वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ	२०९८	शयानाय स्वाहा	१५१५	शृणोतु न ऊर्जा पतिर्गिरः सः	२५१
वैश्वानरं भस्मना	२०७०	शयुः परस्तादध नु द्विमाता	१९७	शृण्वते स्वाहा	१५४१
वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं	९४४	शरदे वर्तिका	१८३३	शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो	१८९
वैश्वानरीं सूनुतामा रभध्वं	९४३	शरव्याया इषुकारꣳ	२१३७	शोकाय स्वाहा	२३०५
वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु	९४२	शर्मास्यवधूतꣳ रक्षोऽवधूता	१२७१	शोकायाभिसर्तारं	२२०६
वैष्णवो वामनः	१७३७	शाखाभ्यः स्वाहा	१६५०	शोचते स्वाहा	२३०३
व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्थाम्	२३२	शादं दङ्गिः	१९५३	शोचमानाय स्वाहा	२३०४
व्यदशुविने स्वाहा	१७००	शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी	१०६९	श्यामाः पौष्णाः	१७६७, १८०४
व्याघ्रो अधि वैयाघ्रे	११४५	शान्तानि पूर्वरूपेणि शान्तं	१०७०	श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते	१७४४
व्यानाय स्वाहा	१५७५	शार्गः सृजयः शयः षड्करस्ते मैत्राः	१९०६	श्येन आसामदितिः कश्यो मदो	३०४
व्यानो यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा	१७०९	शार्दूलाय रोहिद्	१८८५	श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्वः	२९५
व्युष्टयै स्वाहा	१७२६	शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे	१९०९	श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा	८७
व्यूह्या अपगल्भꣳ	२२४३	शिखिभ्यः स्वाहा	११३५	श्रेयसे वित्तधम्	२१८१
व्येतु दिष्टुद् द्विषामशेवा	४३८	शितिपुष्ट्रो बार्हस्पत्यः	२०८८	श्रेष्ठं नो अथ सवितर्वरेण्यं	५८६
व्रजं कृणुष्वं स हि नो नृपाणो	७७०	शितिबाहुरन्यतः शितिबाहुः	१७४१	श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताꣳ स्वाहा	१७१३
व्रात्याभ्यां स्वाहा	१०३१	शितिभ्रवो वसूनाꣳ	१७५९	श्रोत्राय शृङ्गाः	१८८०
शं रुद्राः शं वसवः	१०७९	शितिरन्ध्रोऽन्यतः शितिरन्ध्रः	१७४०	श्रोत्राय स्वाहा	१५७७
शतमिन्तु शरदो अन्ति देवाः	२७	शिल्पा वैश्वदेवो	१७५३	श्लोकाय स्वाहा	१४२५
शताय स्वाहा	१७२४	शिल्पो वैश्वदेवः	२०८९	श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभः	१९४८
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः	४४९	शिवः कपोत इषितो नो अस्तु	८२९	श्वविद् भौमी	१२०८
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु	४५४	शिशिराय विककरान्	१८३५	श्वित्र आदित्यानाम्	१९४१
शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु	४६०	शीकायते स्वाहा	१६१८	श्वेता अवरोकिण आदित्यानां	१७६१
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु	४५६	शीघ्रं वर्षते स्वाहा	१६१४	श्वेता वायव्याः	१७७५, १८२८
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः	४५५	शीनं वसया	२०७६	श्वेताः सौर्याः	१८२९



स्वेतान् प्रीण्माय	१७८५	सदा गावः शुचयो विश्वधायराः	१३९९	समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं	१२९२
षट्त्रिंशच्च चतुरः कल्पयन्तः	७८७	सदापृणो यजतो वि द्विवो वधीद्	३०५	समुद्रः सिन्धूरजो अन्तरिक्षम्	७१७
षट्त्रिंशच्च स्वहा	१००९	सदा सुगः पितुर्मौ अस्तु पन्था	१९०	समुद्रमासामव तस्थे अप्रिमा	३०२
षड् भारौ एको अचरन् विभर्ति	२१५	सदुत्तरेण	१९७६	समुद्रमुदरेण	२०६९
षष्टाय स्वाहा	११२२	सदो द्वा चक्राते उपमा	५४७	समुद्राय शिशुमारानालभते	१८३६
षोडशचैभ्यः स्वाहा	१०१९	स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा	६४३	समुद्राय शिशुमारो	१८८९
षोडशी स्तोम ओजो द्रविणं	१३४७	सना पुराणमध्येम्यारात्	१७८	समुद्राय स्वाहा	१६०२
स इद् दानाय दभ्याय वन्वन्	६२८	सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद्	४७७	समुद्रो नदीभिदृक्कामत्	९९८
स ई वृषा न फेनमस्यदाजौ	६३४	सनेम तत् सुसनिता सनित्वभिः	६०२	समु वो यज्ञं महयन् नमोभिः	४९७
संयासाय स्वाहा	२२९९	सनेमि चक्रमजरं वि वावृत	११२	स मे वपुच्छदयदक्षिनोर्यो	३६७
संवत्सराय पर्यायिणीं	२२१५	सं ते मनो मनसा सं प्राणः	१२९०	सं परमान्समवमानथो	११८५
संवत्सराय पलिकनीम्	२२२०	संदानं वो बृहस्पतिः	११८४	सं बर्हिरकं हविषा घृतेन	९६७
संवत्सराय महतः सुपर्णान्	१८६१	सन्दिताय स्वाहा	१५१२	सं बर्हिरङ्कता हविषा घृतेन	१२७६
संवत्सराय स्वाहा	१६३९	सन्धये जारं	२१५३	सं मा तपन्त्यभितः	४५
सं वः पृच्यन्तां तन्वः	९५४	सन्नः सिन्धुरवभृथाय	१३१३	सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेनाः	१३३७
सं वो मनांसि सं व्रता	९०६	स पचामि स ददामि स यजे	११५३	सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुः	६६५
संशराय प्रच्छिदम्	२२४४	सप्तदशभिरस्तुवत प्राभ्याः पशवः	१४४८	सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते	१३५६
संशितं म इदं ब्रह्म	११०५	सप्तदशचैभ्यः स्वाहा	१०२०	सरस्वती च म इन्द्रश्च मे	१४६०
संस्पर्षाय स्वाहा	१६७६	सप्त प्राणानघौ मन्यस्तांस्ते	१०९७	सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिः	६८४
सं सं स्रवन्तु सिन्धवः	८७९	सप्तभिः पुत्रैरदितिः	१२२०	सरस्वते शुक्रः पुरुषवाक्	१९१०
संस्तवभागा स्थेषा बृहन्तः	८४१	सप्ताभिरस्तुवत सप्त ऋषयः	१४४३	सरस्वत्या अप्रजिह्वं	१९५७
संहानाय स्वाहा	१५२२	सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा	११२३	सरस्वत्यै निपक्षतिः	२०१८
सस्त्रासावस्मभ्यमस्तु रातिः	१०५७	सप्त युजन्ति रथमेकचक्रम्	१००	सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा	१५६१
स गृणानो अङ्गिर्देवानिति	६५२	सप्तचैभ्यः स्वाहा	१०१०	सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा	१५६२
संक्रोशैः प्राणान्	१२८९	सप्तविंशत्यास्तुवत द्यावापृथिवी	१४५३	सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्	१९०७
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेन	१२६८	सप्तानां सप्त ऋषयः	५३८	सरस्वत्यै स्वाहा	१४२०, १५६०
स जिह्वया चतुरनीक ऋजते	३३९	सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो	१३४	सरस्वान् धीभिर्वह्णो धृतव्रतः	७११
सज्जुब्दो अयवोभिः	१३३५	सप्तास्यासन् परिधयान्निः	१२५९	सरिराय स्वाहा	१६०३
सज्जुरादित्यैर्वसुभिः	३५५	स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाः	१२९७	सरीष्ट्येभ्यः स्वाहा	१६६६
सज्जुर्ऋतुभिः सज्जुर्विधाभिः	८५८	समदिवनोरवसा नूतनेन	२७६, २९३	सरुपा धात्रे	१७५६, १७७७
सज्जुर्देवेन सवित्रा सज्जुः	१२८०	समहमेषां राष्ट्रं स्यामि	११०६	सरोभ्यो धैवरम्	२२२३
सज्जुर्देवेभिरपां नपातं	४४०	समानी व आकृतिः समाना	९४७	सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्	२१४८
सज्जुर्मित्रावरुणाभ्यां	३५४	समानो मन्त्रः समितिः समानी	९४६	सर्पाणां सप्तमी	२०२३
सज्जुर्विश्वेभिर्देवेभिः	३५३	समानो यज्ञेन कल्पता स्वाहा	१७११	सर्पान् गुदाभिः	२०४५
संजम्भुराणस्तारुभिः सुतेगृभं	२९८	समानो राजा विमृतः पुरुषा	१९५	सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि	१४९०
सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं	९४५	समान्या वियुते दूरेअन्ते	१७६	सर्वेभ्योऽग्निरोभ्यो विदगणेभ्यः	११३८
संज्ञपनं वो मनसोऽथो	९५५	समाध्व म इन्द्रश्च मे	१४७२	सर्वेभ्यो लोक्रेभ्य उपसेकारं	२१८९
संज्ञानाय स्मरकारि	२१५९	समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात्	१२७३	सविता च म इन्द्रश्च मे	१४५२
सप्तो होता मनुष्यदा	५१	समिन्द्र णो मनसा नेषि	२६३, ८४८	सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात्	६०७

सवित्र औष्णिहाय त्रयस्त्रिंशाय	२१०८	सूर्याय ह्यक्षं	२२७६	स्वदस्व हव्या समिषो दिदीहि	१९१
सवित्रे स्वाहा	१४१९, १४९५	सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय	१२२१	स्वनेभ्यः पर्णकं	२२३१
स ब्राधतो नहुषो दंसुजतः	९१	सूर्यो दिवोदकामत्	९९४	स्वपते स्वाहा	१५१६
सहसे स्वाहा	१६८९	सूर्यो मा यावापृथिवीभ्यां	९७६	स्वप्रायान्धम्	२१६६
सहस्याय स्वाहा	१६९०	सेदुमो अस्तु मरुतः स शुष्मी	४९०	स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवाः	१३५७
सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था	७८९	सोम ओषधीभिरुदकामत्	९९६	स्वर्गाय लोकाय भागदुघं	२२०१
स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिः	३०३	सोम राजन् विश्वास्त्वं प्रजाः	१२९४	स्वर्गाय स्वाहा	१७२७
सहोभिर्विद्वं परि चक्रमू रजः	६१८	सोमं राजानमवसे	८१८	स्वर्णरमन्तरिक्षाणि रोचना	६९५
साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं	११३	सोमं ते रुद्रवन्तमृच्छन्तु	९८४	स्वर्धनेन कल्पतां स्वाहा	१७१९
साध्येभ्यः कुलुङ्गान्	१८७१	सोमश्च म इन्द्रश्च मे	१४५८	स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहे	३५७
साव्येभ्यश्चर्मम्रम्	२२२२	सोमस्त्वा पावोषधीभिर्नक्षत्रैः	११५६	स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः	२४
सानुभ्यो जम्भकं	२२३३	सोमस्य चतुर्थां	२००७	स्वस्ति नो मिमीतामग्निना भगः	३५६
सारस्वती मेधी	२०८५, २१०१	सोमस्य विबिरसि तवेव	१३२५	स्वस्ति पन्थामनु चरेम	३६०
सारस्वती मेघधस्ताद्धन्वोः	१७३०	सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि	८३३	स्वस्ति मित्रावरुणा	३५२
सिंहो मारुतः	१९५०	सोमाय कुलुङ्गः	१८९९	स्वाङ्कृतोऽसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो	१२२६
सिध्मास्तारकाः	१७८३	सोमाय लबानालभते	१८५१	स्वाहा चित्तं विज्ञाताय	१५५६
सिषक्नु न ऊर्जव्यस्य पुष्टेः	२५९	सोमाय स्वाहा १४१८, १४९३, १६२३	१६२३	स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः	१२३७
सीरा युञ्जन्ति कव्यो	७६६	सोमाय हृत्सानालभते	१८४१	स्वाहाऽऽधिमाधीताय	१५५४
सीसायाध्याह वरुणः	१०४९	सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाय दिशः	९७४	स्वापये स्वाहा	१४०६
सुकृत् सुपाणिः स्ववाँ ऋतावा	१८१	सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां	७७६	स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा	१३९४
सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा	४९६	सौमापौष्णः श्यामो नाभ्यां	१७३२	स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः	२२८३
सुगा वो देवाः सदना अकर्म	१२४३	सौरी बलाका	१९०५	स्वाहा मनः प्रजापतये	१५५५
सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितृन्	३७२	सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च	१७३३	स्विध्मा यद् वनधितिरपस्यात्	७३
सुतंभरो यजमानस्य सत्पतिः	३०६	स्तनयते स्वाहा	१६०९	हंसो वातस्य	१९२०
सुत्रामाणं पृथिवीं धामनेहसं	६७०	स्तनयित्नुं निर्बाधेन	१९८०	हत्वाय देवा असुरान् यदायन्	८२६
सुपर्ण विप्राः कव्यो वचोभिः	७८६	स्तरिर्वत् सूत सद्यो अज्यमाना	५७७	हये देवा यूयमिदापयः स्थ	१५४
सुपर्णः पार्जन्यः	१९११	स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ	४२५	हयो न विद्राँ अयुजि स्वयं धुरि	३२०
सुपर्णा एत आसते	४८	स्तुष उ वो मह ऋतस्य गोपान्	३९५	हरितेभ्यः स्वाहा	११२५
सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन् परीहि	१२२८	स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिः	३६३	हविष्मतीरिमा आपो	१२९३
सुभूः स्वयम्भूः प्रथमो	१३८३	स्तुषे सा वां वरुण मित्र रातिः	८८	हसाय कारिम्	२१२८, २२६६
सूक्ष्मेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैः	३१२	स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं	५७६	हस्काराद् विष्णुतस्परि	१८
सूद्याभ्यः स्वाहा	१५९९	स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणः	४१९	हस्ताभ्यां दशशास्त्राभ्यां	८१५
सूपस्था अथ देवो वनस्पतिः	१३७४	स्तोमं वो अथ रुद्राय शिक्वसे	७२९	हस्तिवर्चसं प्रथतां बृहद् यशो	१११३
सूयवसाद् भगवती हि भूयाः	१३८	स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः	११४	हस्ती मृगाणां सुषदाम्	१११८
सूरक्षिदा हरितो अस्य रीरमद्	७२८	स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा	१५९७	हस्तेनैव प्राह्य आधिरस्या	७७७
सूर्य ते यावापृथिवीवन्तमृच्छन्तु	९८६	स्याम वो मनवो देववीतये	७१८	हिङ्गाराय स्वाहा	१५०२
सूर्यश्च मे	१४७८	स्रवन्तीभ्यः स्वाहा	१५९६	हिङ्कृण्वती वसुपती वसूनां	१२५
सूर्याभ्यां स्वाहा	१०३०	स्वः स्वाहा	१६२८	हिङ्कृताय स्वाहा	१५०३
सूर्याय स्वाहा १६४२, १६५८, २२८९					

हिममते हस्ती	१८९०	होतिः पक्षिणी न दभाल्यस्मान्	८३०	हृदान् कुक्षिभ्याम्	२०६८
हिरण्यकर्णं मणिप्रविमर्णः	९५	हेस्यै धनुष्कारं	२१३८	ऋहादुनीभ्यः स्वाहा	१६२०
हिरण्यपाणिः सविता सुजिह्वः	१८०	हेमन्ताय ककरान्	१८३४	हादुनीर्दूषीक भिः	२०७८
हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो	१०४३	होता यक्षदशिनौ छागस्य वपायाः	१३७२	न्हियै शल्यकः	१९२२
हिराभिः स्रवन्तीः	२०६७	होता यक्षदशिनौ छागस्य हविषः	१३७३	हयन्तु त्वा प्रतिजनाः	८९४
हुवे वो देवीमदितिं नमोभिः	३७८	होता यक्षदशिनौ सरस्वतीमिन्द्रम्	१३७२	हयामि देवाँ अयातुरग्ने	४३३
हुवे सोमं सवितारं नमोभिः	९०४	होत्रादहं वरुण विभ्यदायं	१२०७		

इति विश्वे-देवादेवता समाप्ता ।













